भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक- रणवीर शास्त्री

वर्ष ११. अङ्क १ | २८ नवम्बर १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की साधारण सभा के माननीय सदस्यों की सेवा में

वार्षिक साधारण सभा की बैठक का ऐजण्डा (कार्य सूची)

माननीय महोदय, सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक साधारण अधिवेशन (चुनाव) दिनांक ११ दिसम्बर १९८३ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा कार्यालय दयानन्द मठ, रोहतक में होगा। अतः सभा के स्वीकृत प्रतिनिधि महानुभाव यथा समय पधार कर कृतार्थ करें।

विचारणीय विषय

१- गत अधिवेशन २१ मार्च ८२ की कार्यवाही की सम्पुष्टि।

२- गत वर्ष स्वर्गवास हुए आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ताओं को श्रद्धांजली।

३- सभा कार्यालय, वेदप्रचार विभाग, साहित्य विभाग, सर्वहितकारी, आर्य विद्या परिषद्, गुरुकुल कुरुक्षेत्र, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर, दयानन्द धमार्थऔषधालय अम्बाला शहर आदि के गत वर्ष के आय-व्यय की सम्पुष्टि तथा सम्वत् २०४० के प्रस्तावित आनुमानिक आय-व्यय की स्वीकृति।

४- वेद प्रचार द्वारा आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने पर विचार।

५- श्री पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन निर्माण को पूरा करने पर विचार।

असाधारण अधिवेशन

६- अन्तरंग सभा के प्रस्तावानुसार सभा के विधान की धारा १७ (क) के भाग ५ में संशोधन, "सभा के अधिकारी, अन्तरंग सदस्य, विद्या सभा हरियाणा विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी, राजार्य सभा के सदस्यों तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधियों का चुनाव ३ वर्ष के लिए होगा, परन्तु सभा का अधिवेशन वर्ष में एक बार सभा का वार्षिक कार्य वृत्तान्त तथा आय-व्यय (बजट) स्वीकार करने के लिए होगा।"

७- सम्वत् २०४०-४१ (सन् १९८३-८४) के लिए सभा के अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों, विद्या सभा हरयाणा, विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी न्याय सभा, राजार्य सभा तथा सार्वदेशिक सभा के लिए आगामी ३ वर्ष हेतु प्रतिनिधियों का निर्वाचन।

विशेष ज्ञातव्य

१- स्वीकृत प्रतिनिधियों को ऐजण्डा के साथ प्रवेश पत्र भी भेजा जा रहा है। प्रतिनिधि महानुभाव इस पर अपने आर्यसमाज के प्रधान अथवा मन्त्री के हस्ताक्षर करवाकर अपने साथ लाने का अवश्य कष्ट करें।

२- जिन आर्यसमाजों ने अभी तक सभा कार्यालय में अपने प्रतिनिधि फार्म, प्राप्तव्य वेदप्रचार दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे यथा शीघ्र प्रतिनिधि फार्म तथा प्राप्तव्य धन सभा कार्यालय में तुरन्त भेज देवें ताकि जांच पड़ताल के बाद उनके प्रतिनिधि नियमानुसार स्वीकार हो सकें और उन्हें प्रवेश पत्र भेजे जावें। बिना प्रवेश पत्र के किसी प्रतिनिधि को अधिवेशन में भाग लेने का अधिकार नहीं होगा।

३- सभापति की आज्ञा से कार्यवाही के कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

४- आवास तथा भोजन की व्यवस्था सभा की ओर से दयानन्द मठ, रोहतक में होगी। आवश्यकता के अनुसार सर्दी के वस्त्र अपने साथ लाने का कष्ट करें।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
दिनांक २६-११-१९८३ सभा मन्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सर्वहितकारी के गतांक में सूचना प्रकाशित हो चुकी है कि सभा का वार्षिक अधिवेशन ११ दिसम्बर ८३ रविवार को दयानन्द मठ रोहतक में हो रहा है।

सर्वहितकारी के इस अंक में साधारण अधिवेशन का ऐजण्डा प्रकाशित किया जा रहा है। सभा के स्वीकृत प्रतिनिधियों को डाक द्वारा ऐजण्डा तथा प्रवेश पत्र भेजा जा रहा है। कुछ आर्यसमाजों के प्रतिनिधि फार्म सभा कार्यालय में अधूरे भरे हुए प्राप्त हुए थे अथवा जिन आर्यसमाजों की ओर से प्राप्तव्य वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक शुल्क पूरा प्राप्त न होने के कारण उनके सम्बन्ध में कार्यवाही पूरा करने के लिए कार्यालय की ओर से पत्र लिख दिये गये थे। परन्तु अभी तक कुछ अधूरे भरे हुए प्रतिनिधि फार्म ठीक होकर कार्यालय में वापस प्राप्त नहीं हुए हैं और जिन आर्यसमाजों को प्राप्तव्य धन भेजने के लिए लिखा था, उनमें से भी कुछ आर्यसमाजों से अभी तक धन प्राप्त न हो सकने पर नियमानुसार उनके प्रतिनिधि फार्म स्वीकार नहीं हो सके।

अतः सभा से सम्बधित आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा प्रतिनिधियों से पुनः निवेदन है कि वे सभा द्वारा लिखे गये पत्रों के अनुसार प्रतिनिधि फार्मों को ठीक प्रकार भरकर तथा प्राप्तव्य धन राशि सभा कार्यालय में तुरन्त भेजने की कृपा करें, ताकि उनके भी प्रतिनिधियों को नियमानुसार स्वीकार करके चुनाव का ऐजण्डा तथा प्रवेश पत्र समय पर भेजे जा सकें। आशा है हरयाणा के आर्यसमाजें अपनी प्रान्तीय सभा को सहयोग देकर प्रदेश में आर्यसमाज के संगठन को और अधिक सुदृढ़ करेंगे और सभा के अधिवेशन में सम्मिलित होकर अपने सुझाव तथा सहयोग देंगे।

जिन आर्यसमाजों के पास किसी कारणवंश भेजे गये प्रतिनिधि फार्म गुम हो गये हों, वे सभा कार्यालय से सम्पर्क करके फार्म तथा आवश्यक जानकारी प्राप्त यथा शीघ्र कर लेवें। समय बहुत कम रह गया है। अतः आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वे नियमानुसार प्रतिनिधि फार्म भरकर तथा प्राप्तव्य धन राशि जमा करवा कर अपने प्रतिनिधियों को स्वीकार करवा लेवें तथा सभा के अधिवेशन में अपना योगदान देकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। भवदीय

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती द्वारा दिया गया

अध्यक्षीय भाषण

(गतांक से आगे)

महर्षि दयानन्द इस राष्ट्र को एकता के सूत्र में बांधने का संकल्प लेकर कार्य क्षेत्र में उतरे थे। आर्यसमाज ने इस तथ्य को सदा अपने सामने रखा और राष्ट्रीयता के लिये सतत् प्रयत्न किया परन्तु हमारा प्रयत्न कितना अधूरा है आज यह स्पष्ट है। अराष्ट्रीय शक्तियां आज देश में सिर उठा रही हैं। ईसाई लोग हिमाचल, देश के बिहार, पूर्व एवं मध्य भाग में षड्यन्त्रों में लिप्त है। मुस्लिम शक्तियां तेल के बल से यहां की जनता को धर्म परिवर्तन के लिये प्रेरित कर रही हैं। पंजाब का एक वर्ग विदेशी शक्तियों के प्रभाव में आकर राष्ट्र को हानि पहुंचा रहा है। इन सबका आर्यसमाज ही उत्तर दे सकता है और दे रहा है परन्तु इस सब कार्य के लिए हमारे पास जिस क्षमता और साधनों की आवश्यकता है वह पर्याप्त नहीं है, राष्ट्रविरोधी कार्यों की निन्दा व उसका विरोध आर्यसमाज को प्रखर व मुखर रूप में करना चाहिए।

आर्यसमाज सदा नैतिक मूल्यों की सुरक्षा करने के लिए यत्नशील रहा है परन्तु आज समाज के सामने नैतिक मूल्यों का घोर संकट आ गया है, कभी गाय की चर्बी के कारतूस १८५७ के स्वतन्त्रता संग्राम के प्रारम्भ के कारण बने परन्तु आज यहां न जाने कितने वर्षों ने शुद्धघृत और वनस्पति के नाम पर विदेशों से आयातित गाय की चर्बी को धर्म के साथ देते रहे है। इसके विरोध को एक चुनाव स्टण्ट से आगे नहीं बढ़ा सके। इसका उपाय तो केवल गोरक्षा है। गोकरुणानिधि लिखते हुये स्वामीजी महाराज ने सत्य लिखा है "गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश हो जाता है" देश के स्वास्थ्य को आयातित साधनों से समृद्ध नहीं किया जा सकता न ही आयातित संस्कृति से इस देश की अस्मिता को जीवित रक्खा जा सकता है। अतः धर्म की दृढ़ता के लिये नैतिक मूल्यों को समाज में मान्यता देनी ही होगी।

महर्षि दयानन्द ने वेद का पढ़ना पढ़ाना, सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म कहा था परन्तु वेद के बिना हम धार्मिक बनने की कल्पना कर रहे हैं। महर्षि जीवन के अन्तिम दिनों का उनका अधूरा रहा प्रमुख कार्य वेदभाष्य आज तक पूरा नहीं हो सका इसको हमें शीघ्र पूरा करना चाहिये। ऐसा कहना भी अनुचित होगा कि इस दिशा में कार्य नहीं हुआ, पर्याप्त कार्य हुआ है। बहुत कुछ करना है। स्वामी सत्यप्रकाशजी वेदों के अंग्रेजी अनुवाद का बड़ा कार्य सम्पन्न कर रहे हैं, प्रभु उनको शक्ति तथा आयु दे, कि वे इसको अच्छे रूप में पूरा कर सकें। वेद और वैदिक साहित्य के प्रचार प्रसार में आर्य संस्थाओं में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, परोपकारिणी सभा, गुरुकुल झज्जर, कन्या गुरुकुल नरेला, रामलाल कपूर ट्रस्ट, आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट, वेद संस्थान, गोविन्दराम हासानन्द विरजानन्द वैदिक शोध संस्थान आदि ने साहित्य के प्रचार प्रसार में जो कदम उठाया है वह प्रशंसनीय है। आर्यसमाज के क्षेत्र के अतिरिक्त स्वामी गंगेश्वरानन्दजी का स्मरण न करना भूल होगी जिन्होंने वेद को सुन्दर एवं शुद्ध रूप में प्रकाशित कर मन्दिरों में, संस्थानों में, देश विदेश में प्रतिष्ठित किया है, भले ही उनकी भाष्य शैली से हमारा मत वैभिन्य हो परन्तु उनका सत्प्रयत्न हमारे लिये अनुकरणीय है और उनका परिश्रम प्रशंसनीय।

परोपकारिणी सभा के पास महर्षि के हस्तलिखित ग्रन्थों का भण्डार है जो पुराना होकर धीरे धीरे जीर्ण शीर्ण हो रहा था उसके लिए सभा ने महर्षि के ग्रन्थों का पटलीकरण एवं माइक्रोफिल्मिंग कराकर अधिक सुरक्षित किया है। यह हमारे लिये अमूल्य निधि है। इसकी सुरक्षा और प्रकाशन के लिए सभा निरन्तर प्रयत्नशील रही है। श्री हरविलास जी शारदा ने संघर्ष काल में इसकी सुरक्षा का पूरा ध्यान रखा। स्वतन्त्रानन्दस्वामी, ब्रह्मदत्त जिज्ञासु, पं० युधिष्ठिर मीमांसक, डा. रघुवीर जी आदि ने इसका समय समय पर शोधकार्य के लिये उपयोग किया है, सूची आदि बनाकर व्यवस्थित भी किया है। आज उस पर शोध करने वाले विद्वानों की आवश्यकता है जो ऋषि के मन्तव्य को प्रकाशित कर सकें।

ग्रन्थों को चिरकाल तक सुरक्षित रखने के लिए ताम्र-पत्रों का प्रयोग बहुत प्राचीनकाल से होता रहा है इसी बात को लक्ष्य में रखकर हमने सत्यार्थप्रकाश को ताम्रपत्रों पर अंकित कराया है। सारा सत्यार्थ प्रकाश आज आप की प्रदर्शनी में रखा हुआ है यह एक ऐतिहासिक महत्व का कार्य हुआ है जिसमें आर्य जनता ने ढाई लाख रुपये से अधिक का योगदान दिया है उसी को पुस्तक रूप में भी प्रकाशित किया है जो आप को इस अवसर पर सुलभ हो सकेगा। इस प्रकार शताब्दी प्रसंग अनेक महत्वपूर्ण कारणों से अधिक स्मरणीय हो गया है।

महर्षि ने समग्र जीवन सत्य की खोज में लगाया जो सत्य पाया उसका स्वीकार कर पालन किया। उन्होंने सामाजिक उत्तराधिकार जहां आर्यसमाज को सौंपे वहां वैयक्तिक उत्तराधिकार परोपकारिणी सभा को दिए और वेदों के प्रकाशन वेदों का व्याख्यान, उपदेशक तैयार करना, देश के निर्बल अनाथ असहायों की रक्षा का दायित्व भी सभा को सौंपा। इन कार्यों को सभा ने सामर्थ्य भर करने का यत्न किया है परन्तु स्वामीजी की इच्छानुसार हम नहीं कर पाए हैं। फिर भी आपको यह जानकर हर्ष होगा कि परोपकारिणी सभा ने सर्वसम्मत प्रस्ताव स्वीकार कर ऋषि उद्यान में आर्ष परम्परा के संस्कृत विद्यालय की स्थापना का निश्चय किया है। प्रकाशन को भी गति दी है इस अवसर पर सभा ने डॉ. भवानीलाल भारतीय लिखित शोधपूर्ण जीवन चरित और स्वामी सत्यप्रकाशजी के निर्देशन में स्मृति ग्रन्थ एवं दयानन्द ग्रन्थमाला का सुन्दर प्रकाशन किया है। परन्तु लक्ष्य अभी बहुत दूर है। और उसके हम यत्नशील हैं।

स्वामीजी ने अजमेर की भिनाय कोठी में प्राण त्याग किये वह स्थान ऐतिहासिक महत्व का है। उस भवन का कुछ भाग प्राप्त किया है, शेष स्थान सरकार आर्यसमाज को सौंपने की स्वीकृति दे चुकी है। आशा है शीघ्र ही प्राप्त होजायगा। उनका अन्तिम संस्कार जिस श्मशान में हुआ था उसको भी विकसित करने की योजना है। स्वामी जी महाराज की इच्छानुसार दाहसंस्कार के बाद उनकी अस्थियों एवं भस्मि को अनासागर के तट पर स्थित ऋषि उद्यान में विकीर्ण किया गया था। श्री शाहपुराधीश श्री नाहरसिंह जी ने वह उद्यान परोपकारिणी सभा को प्रदान किया जिसमें आज एक भव्य यज्ञशाला आप देख रहे हैं। इस यज्ञशाला के निर्माण में परोपकारिणी सभा के मंत्री श्रीकरणजी शारदा ने जो उत्साहपूर्ण प्रयत्न किया है। उसके लिये वे प्रशंसा के योग्य हैं। सभी आर्यों ने इसके निर्माण में दिल खोल कर दान दिया है जिससे इसका यह भव्य रूप आपके सामने आ सका है। इस यज्ञ की अग्नि निर्वाण अर्ध शताब्दी के समय शाहपुराधीश के यहां से लाई गई थी जिसको महर्षि ने अपने वहां निवास के समय प्रज्वलित किया था उस अग्नि को राजा श्री नाहरसिंह जी फिर शाहपुराधीश श्री उम्मेदसिंह और अब राजकुमार श्री सुदर्शन देवजी निरन्तर प्रज्वलित किये हुए हैं। यहां इस यज्ञशाला में अधिक से अधिक लोग प्रतिदिन यज्ञ करें और अपनी आत्मा को प्रकाशित करें तभी इस यज्ञशाला की सार्थकता होगी।

आज परोपकारिणी सभा ने यहां एक शोध संस्थान स्थापित करने का निश्चय किया है, सभा का अपना पुस्तकालय है उसे और समृद्ध करने की आवश्यकता है। स्वामीजी महाराज द्वारा स्थापित प्रेस आज संस्कृत हिन्दी के मुद्रण में देश के विशिष्ट प्रेसों में स्थान रखता है। इसको आधुनिक बनाने के लिए धन की आवश्यकता है जिसे आर्य जनता ही पूरा कर सकती है, और करेगी ऐसा मेराविश्वास है। इस निर्वाण शताब्दी समारोह में जहां परोपकारिणी सभा ने प्रयत्न किया। और ५ वर्ष पूर्व इसका निश्चय किया, मध्य-मध्य में बहुत सी बाधायें और विघ्न भी आयें। यह भी अच्छा ही रहा जिसके कारण इसके गौरव में वृद्धि ही हुई। यतिमण्डल और उसके अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्दजी के प्रति मैं और समारोह समिति हृदय से कृतज्ञता व्यक्त करते हैं जिनके आशीर्वाद के बिना यह आयोजन सफल नहीं हो सकता था। यहां हो रहे चतुर्वेद पारायण यज्ञ का उत्तरदायित्व यतिमण्डल ने लिया और ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी ने उसे जिस गरिमा के साथ पूरा किया वह

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय

सभा का वार्षिक चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा जिसका पिछला चुनाव मार्च ८२ में सम्पन्न हुआ था, के प्रतिनिधियों का सभा के वार्षिक अधिवेशन को बाट जोहना स्वाभाविक ही है। विगत चार सितम्बर को वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न हो चुका होता यदि इसे स्थगित न किया जाता। यह वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज के निर्वाण का शताब्दी वर्ष है। अत: अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर यह आयोजन अजमेर में आयोजित था। यों तो प्रत्येक ऋषि भक्त का इस उपलक्ष्य में आयोजित समारोह को सफल बनाना दायित्व बनता था किन्तु हरयाणा के आर्यों तथा इनका संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को इस अवसर पर विशेष जिम्मेवारी थी क्योंकि शताब्दी समारोह के प्रधान एवं कार्यकारी प्रधान दोनों ही हरयाणा से थे, जो हमारे लिये गर्व की बात रही। अपने इसी दायित्व को अनुभव कर अन्तरंग सभा ने समारोह के अध्यक्ष एवं हरयाणा सभा के प्राण श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द सरस्वती को अपील पर सभा का वार्षिक अधिवेशन स्थगित कर दिया था तथा समारोह की सम्पन्नता के उपरान्त माननीय सभा प्रधान जी को नये सिरे से इसे निश्चित करने के लिये अधिकृत कर दिया था।

सभा प्रधान प्रो० शेर सिंह जी ने भी सहयोगियों द्वारा प्रदत्त अधिकार का सदुपयोग करने में किसी प्रकार की ढील नहीं दिखाई तथा सभा के वार्षिक अधिवेशन हेतु तिथि एवं स्थान की घोषणा कर दी। यह अधिवेशन आगामी ११ दिसम्बर को सभा कार्यालय रोहतक में ही सम्पन्न होगा जिसकी सूचना प्रान्त भर की उन आर्यसमाजों को जो हरयाणा सभा से सम्बद्ध हैं तथा जिनसे आये हुये प्रतिनिधि इस अधिवेशन में भाग लेते हैं, को विभिन्न समाचार माध्यमों द्वारा प्राप्त हो चुकी होगी। सभा का मुख पत्र होने के नाते सर्वहितकारी का तो इस विशेष तथा महत्वपूर्ण सूचना को सम्बद्ध लोगों तक पहुँचाना क्योंकि कर्त्तव्य बन जाता है, अत: सूचना मिलते ही इसे गत अंक के मुख पृष्ठ पर विशेष रूप से प्रकाशित कर अपने मान्य प्रतिनिधियों की सेवा में प्रेषित किया जा चुका है। इस अंक के मुख पृष्ठ पर तो इस अधिवेशन में विचारार्थ प्रस्तुत ऐजण्डा भी दे दिया गया है।

समय बहुत ही कम रह गया है। इस अंक के सम्बद्ध लोगों के हाथों में पहुंचने तक बड़ी मुश्किल से सम्भवतया दस ही दिन रह पायें। अभी बहुत सी आर्यसमाजें ऐसी रहती हैं जिनके यहाँ से वेद प्रचार, दशांश तथा प्रतिनिधि फार्म तक प्राप्त नहीं हुये हैं। यद्यपि आर्यसमाजों के अधिकारियों को इन्हीं कालमों द्वारा बार-बार इस कार्य के प्रति सचेत किया जाता रहा है। इस वर्ष क्योंकि प्रतिनिधियों का नये सिरे से चुनाव करके उनकी सूचना कार्यालय को दी जानी है, यहाँ अधिकारियों द्वारा उनकी जाँच पड़ताल कर इन्हें स्वीकार भी किया जाना है, अत: जरा उन आर्यसमाजों के अधिकारी जिन्होंने अभी तक यह कार्य सम्पन्न कर सभा को सूचित नहीं किया, इसे अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक लें। क्योंकि देर से प्राप्त प्रतिनिधियों को वैधानिक कारणों से स्वीकार न किये जाने की स्थिति में सम्बद्ध लोगों को अधिकारियों के प्रति सन्देह तथा शिकायत का होना आज के युग में साधारण सी बात है।

वार्षिक अधिवेशन का आयोजन क्योंकि विगत अवधि में लक्ष्यपूर्ति हेतु बनाई गई योजनाओं तथा उनकी पूर्ति हेतु किये गये प्रयत्नों के लेखे-जोखे के लिये ही होता है, अत: नये प्रतिनिधि महानुभाव इसके लिये नये सिरे से तैयार होकर आवेंगे तथा संगठन के सुदृढ़ीकरण के मार्ग में आने वाली जटिलताओं को दूर किये जाने के लिये उनके द्वारा दिये गये बहुमूल्य सुझावों का अधिकारी वर्ग भी संगठन के हित में पूरा-पूरा सदुपयोग करेगा, इस अवसर पर सर्वहितकारी की यही कामना है।

सर्वहितकारी ग्यारहवें वर्ष में

सर्वहितकारी के पाठकों को यह जानकर हर्ष होगा कि यह साप्ताहिक अपने उपलब्धिपूर्ण दस वर्ष पूरे कर ग्यारहवें वर्ष में इस अंक के साथ प्रवेश कर रहा है। आज से दस वर्ष पूर्व नवम्बर १९७३ में इसके प्रकाशक तथा मुद्रक आचार्य वेदव्रत जी शास्त्री ने जिन संघर्षपूर्ण परिस्थितियों में इसे जन्म दिया था, पत्र से उस रखने वाले पाठकों को वे परिस्थितियाँ भली भाँति याद होंगी। श्री शास्त्री जी ही इसके संस्थापक सम्पादक थे, अत: इस अवसर पर सर्वहितकारी उनके प्रति नत मस्तक हो अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता है। हरयाणा के वरिष्ठ पत्रकार श्री कपिलदेव जी शास्त्री ने क्योंकि उन दिनों जबकि यह नवजात शिशु की भाँति था, अपने लेखों की अंगुली पकड़ाकर इसे चलना सिखाया अत: सर्वहितकारी उनके प्रति भी आभार प्रदर्शित करता है तथा अपने लेखकों एवं पाठकों के प्रति आभार प्रदर्शित करना अपना धर्म मानता है, विशेषकर अपने उन आजीवन सदस्यों के प्रति जो लड़खड़ाती शैशवावस्था में इसका सम्बल बने थे।

परिस्थितियों से जूझता हुआ सर्वहितकारी विगत दस वर्ष की अपनी यात्रा पूरी कर जब ग्यारहवें वर्ष में प्रवेश करने चला है, तो इसके लिये यह प्रसन्नता की बात है कि आज इसका अपना भरा पूरा परिवार है। योग्य अधिकारियों का इसे संरक्षण प्राप्त है। आर्यजगत् के प्राय: सभी मनीषियों की आत्मीयता इसे विभिन्न अवसरों पर प्राप्त होती रहती है। गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के व्यवसायाध्यक्ष डा० हरि प्रकाश, पाँच भाई साबुन की ओर से लाला लक्षमन दास के अतिरिक्त आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली तथा महाशयां दी हट्टी की ओर से महाशय धर्मपाल आर्य ने विज्ञापनों के माध्यम से जो आर्थिक सहयोग इसे प्रदान किया है, उसका भी अपना ही महत्त्व है। सभा के उपदेशक पं० चन्द्र सेन जी वैदिक मिशनरी ने इसके पाठक-परिवार की सदस्य संख्या में जो उल्लेखनीय वृद्धि की है, अपने अन्य हितैषियों के साथ-साथ उसके लिये सर्वहितकारी अपने इन आर्य हितैषी के प्रति भी इस अवसर पर अपनी ओर से हित कामना करता है।

सर्वहितकारी क्योंकि 'सर्व-हितकारी' है, अत: सभी ओर से अपने लिये हित कामनाओं की अपेक्षा रखता हुआ सभी के लिये हितकारी होने की अपनी घोषणा को अपने जन्म दिवस पर दोहराना भी अपना कर्त्तव्य मानता है। इसके लिये इसे अन्य सभी पत्र-पत्रिकाओं की भाँति अपने प्रिय पाठकों के पुनीत सहयोग की सर्वाधिक आवश्यकता है क्योंकि इसमें प्रकाशित सामग्री इसके पाठकों के हितार्थ ही रहती है। अपने पाठकों से इसे इस अवसर पर इतना गिला भी करना है कि इसे आगे बढ़ने में सहयोग करने वाले उनके अमूल्य सुझावों तथा प्रतिक्रियाओं से प्राय: वंचित ही रहना पड़ता है। पाठकों की समालोचनाएं पत्रिका के लिये पथ-प्रदर्शिका का कार्य करती हैं। पत्रिका में वही प्रकाशित होता है जो उसके पाठक चाहते हैं। समय-समय पर अपनी पत्रिका में प्रकाशित की जाने वाली विशेषाविशेष सामग्री के सम्बन्ध में तीखी समालोचना यदि पाठक वर्ग की ओर से सम्पादक मण्डल को प्राप्त नहीं होती तो इससे पाठक वर्ग के तथा उदासीन होने का ही संकेत मिलता है। यह मानने में कोई संकोच नहीं होना चाहिये कि दस वर्ष के बाद भी यदि किन्हीं अंशों में सर्वहितकारी 'सर्व-हितकारी' नहीं बन पाया हो तो इसके लिये अन्यों के साथ-साथ पाठक भी उतना ही उत्तरदायी है? सर्वहितकारी 'सर्व-हितकारी बने', इस अवसर पर इससे सम्बद्ध प्रत्येक घटक को केवल इसके लिये कामना मात्र से ही काम नहीं लेना चाहिये बल्कि इसके ग्यारहवें जन्म दिवस पर इसे सर्वहितकारी बनाने हेतु कृत संकल्प होने की नितान्त आवश्यकता है।

—रणवीर

आचार्य विष्णु मित्र जी के लिये स्वास्थ्य कामना

आर्यसमाज के वरिष्ठ विद्वान् आचार्य विष्णु मित्र जी विद्यामार्तण्ड कई दिनों से हृदय रोग से पीड़ित होकर मेडिकल कालिज रोहतक में दाखिल हैं। प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार के अनुसार आचार्य जी हस्पताल के वार्ड न० ६ में अचेतावस्था में पड़े हैं। सर्वहितकारी दयालु देव से उनके शीघ्र स्वस्थ होने की प्रार्थना करता है।

प्रधान सम्पादक

महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर पर वेद परिषद् के अध्यक्ष

आचार्य विश्वश्रवा का अध्यक्षीय भाषण

समस्त आर्यजगत् से आए महर्षि के उत्तराधिकारी आर्यविद्वानों की सेवा में कुछ प्रसंग उपस्थित करता हूं।

१- महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने वेदभाष्य में जहां सायण आदि के भाष्यों का खण्डन किया वहां 'वेदार्थ यत्न' भाष्य का भी खण्डन किया है। यह वेदार्थ यत्न भाष्य महर्षि के भाष्य से पूर्व पूना में कुछ विद्वानों ने किया और प्रकाशित किया था। यह वेदार्थ यत्न ऋग्वेद का भाष्य महर्षि के ग्रन्थ संग्रह में परोपकारिणी सभा के पास सुरक्षित है।

२- महर्षि ने जब वेदार्थ यत्न का खण्डन किया तब उसके पक्ष पातियों ने महर्षि के ऋग्वेद भाष्य के खण्डन में एक भाष्य किया जिस का नाम प्रकृतार्थ वाहिनी है। यह ग्रन्थ सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्व-विद्यालय बनारस के सरस्वती भवन में है।

३- जब महर्षि ने यजुर्वेद पर भाष्य किया उसके खण्डन पर पं० उदयप्रकाश नारायण ने भी एक यजुर्वेद भाष्य प्रकाशित किया। उसमें महर्षि के भाष्य को दोषाकर भाष्य कह कर खण्डन किया। यह ग्रन्थ भी पत्राकार साइज में छपा था।

पं० उदयप्रकाश नारायण भी दण्डी विरजानन्द के शिष्य थे। वे अपने आप को वेद भाष्य में विरजानन्द शिष्य लिखते हैं। दण्डी विरजानन्द के प्रधान शिष्य पं० उदयप्रकाश नारायण थे। स्वामी दयानन्द सरस्वती के आने पर विरजानन्द जी का विशेष प्रेम उदयप्रकाश से हटकर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी पर हो गया इससे चिढ़ कर उदयप्रकाश नारायण स्वामी जी का शत्रु हो गया था।

४- सत्यार्थप्रकाश के खण्डन पर यथार्थप्रकाश, दयानन्द तिमिर भास्कर आदि अनेक ग्रन्थ प्रकाशित हुए। भास्कर प्रकाश ग्रन्थ दयानन्द तिमिर भास्कर के उत्तर में स्वामी तुलसीराम जी ने लिखा। वह उस समय के लिये ठीक था। पर वह पर्याप्त उत्तर नहीं है। अंग्रेजी भाषा में भी सत्यार्थप्रकाश के खण्डन पर ग्रन्थ हैं।

५- क) ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के खण्डन पर बरेली के महन्त ब्रह्मकुशल उदासीन ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिकेन्दु ग्रन्थ प्रकाशित किया। उसका कुछ उत्तर 'पराग' ग्रन्थ के नाम से छपा था 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिकेन्दुपराग'।

ख) दूसरा ग्रन्थ ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के खण्डन पर कनखल में भूमिकाधिक्कार नाम से प्रकाशित हुआ जिसका कुछ उत्तर पं हिजेन्द्रनाथ शास्त्री ने भूमिका प्रकाश नाम से दिया था।

ग) अब 'वेदार्थ पारिजात' नाम से करपात्री जी का ग्रन्थ दो हजार से अधिक पृष्ठ वाला प्रकाशित हुआ है जिसमें महर्षि के लिये अनेक अपशब्दों का प्रयोग है।

६- महर्षि के वेद भाष्यों के खण्डन पर जो कुछ प्रकाशित हुआ उस पर कुछ कार्य नहीं हुआ है।

७- वेदार्थ पारिजात पांच छ: वर्ष से प्रकाशित है इतने वर्षों से इस के उत्तर को टाला गया। सार्वदेशिक सभा ने उसके उत्तर की जो व्यवस्था की है वह पर्याप्त नहीं है। हमें डर है कि उसका अन्यथा परिणाम न हो। सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री को उसके उत्तर के लिये नियत किया था। आचार्य वैद्यनाथ जी ने जो स्कीम लिखी लाला रामगोपालशालवाले प्रधान सार्वदेशिक ने स्वीकार नहीं की अतः आचार्य वैद्यनाथ जी ने त्याग पत्र दे दिया।

८- इसी प्रकार सत्यार्थप्रकाश महाभाष्य के लिये भी सार्वदेशिक सभा की अन्तरंग ने आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री को नियत किया। स्कीम के स्वीकार न करने पर आचार्य वैद्यनाथ ने उससे भी त्याग पत्र दे दिया।

९- सत्यार्थप्रकाश महाभाष्य की योजना दीक्षानन्द जी ने समर्पणा-नन्द ट्रस्ट द्वारा पं० शिवकुमार शास्त्री द्वारा करना चाहा। यू. पी. सभा ने मुझे (आचार्य विश्वश्रवा व्यास को) संयोजक बनाकर करना चाहा। पर सबको सार्वदेशिक सभा ने मना किया और स्वयं भी नहीं किया।

१०- आर्यसमाज में नये-नये वेद भाष्यों के सम्बन्ध में जो आर्य विद्वानों ने प्रश्न किया है इस सम्बन्ध में मेरा विचार यह है कि महर्षि के वेद भाष्यों पर हमें परिश्रम करना चाहिये। हमारे वेदपरिषत् के संयोजक डा० सुदर्शनदेव जी ने महर्षि के वेद भाष्यों को सरल करने का प्रयत्न किया है। हमने ऋग्वेद महाभाष्यम् प्रकाशित करके दूसरा प्रकार दिखाया है। धातुपाठ और उणादि प्रत्ययों के आधार पर किये वेद भाष्यों की प्रामाणिकता नहीं हो सकेगी। इस प्रकार भाष्य करने से 'शन्नो देवी' मन्त्र का खिलौना अर्थ हो सकता है। जिन पर महर्षि का भाष्य नहीं है वहां महर्षि की चतुर्वेद विषय सूची का सहारा लेना चाहिये। ब्राह्मण ग्रन्थों का भी आश्रय लेकर वेद भाष्य करना होगा जैसे—'सुत्रामाणं' मन्त्र में वर्णित पदों का अर्थ ब्राह्मण ग्रन्थों में मिल जाता है।

देवी ह्येषानो यद्यज्ञः। ऋत्विज एवारित्राः। इत्यादि। उपर्युक्त सब काम तभी संभव है जब सप्तर्षि मण्डल की स्थापना आर्यसमाज में हो।

विशेष :—इस अध्यक्षीय भाषण पर सप्तर्षि मण्डल की स्थापना का प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया गया।

आचार्य जी द्वारा वेदों पर कार्य के लिए अपील पर तीन लाख रुपयों की प्राप्ति

इस महर्षि निर्वाण शताब्दी पर देश-देशान्तर से आये महर्षि के भक्त आर्यों के समक्ष में महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के वेद सम्बन्धी कार्यों के विषय में कुछ अज्ञात बातें रखता हूं जिससे आर्य जगत् अपरिचित है।

१- महर्षि को अनुमान था कि मेरी आयु चार सौ वर्ष या अधिक हो सकती है अतः वेद भाष्य प्रारम्भ करते समय उन्होंने अपनी लेखनी से लिखा कि—

(शेष पृष्ठ ५ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

एकैकस्य शतादुपरिकाल:

अर्थात् एक एक वेद पर भाष्य करने पर सौ वर्ष से अधिक समय संभावित है। यह विचार कर ऋग्वेद पर विस्तार से भाष्य लिखना प्रारम्भ किया। इस प्रकार जितना भाष्य किया वह परोपकारिणी जी के पास विद्यमान है।

२- फिर महर्षि को पता चल गया कि मेरी आयु सौ वर्ष भी नहीं है और अपनी लेखनी से लिखकर घोषणा कर दी कि—

शतावध्यागन्तुकोमृत्यु

अर्थात् सौ वर्ष के अन्दर ही मेरी मृत्यु हो जावेगी। यह विचार कर विस्तृत वेद भाष्य का कार्य त्याग दिया। और दूसरी शैली से वेद-भाष्य प्रारम्भ किया। जो यजुर्वेद का तो पूरा हो गया पर ऋग्वेद पर सप्तम मण्डल के इकसठ सूक्त के दूसरे मन्त्र तक ही हो पाया और महर्षि जी मोक्ष पधार गए।

३- इन वेद भाष्यों को प्रारम्भ करने से पूर्व महर्षि ने चारों वेदों का एक पूर्ण ग्रन्थ लिखा था जिस का नाम है।

चतुर्वेदविषय सूची

अर्थात् चारों वेदों में जो लगभग बीस हजार मन्त्र हैं प्रत्येक मन्त्र में किस विषय का वर्णन है इस पर यह ग्रन्थ है। बस यही ऋषित्व का कार्य है ऋषि समाधिस्थ होकर जब यह बता देवे कि इस मन्त्र में किस विषय का वर्णन है तो उस विषय को लेकर हम पण्डित लोग भी उस मन्त्र का भाष्य कर सकते हैं मन्त्र विषय का साक्षात्कार हमारा काम नहीं है। ऋषि का काम है।

४- दीवान बहादुर हरविलास जी शारदा ने जब मुझसे महर्षि के सामान को देखने और संभाल कर रखने को कहा तब यह ग्रन्थ महर्षि के सामान में मेरी निगाह पड़ा उसके पन्ने गल गए थे उसका फोटो कराया और प्रकाशित किया। पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक का भी इसको छापने का आग्रह था।

५- महर्षि ने ऋग्वेद पर जहां तक भाष्य किया था उसके अगले मन्त्र से भाष्य का कार्य पं० शिवशंकर का व्यतीर्थ और महामहोपाध्याय व आर्य मुनि जी ने किया, सामवेद पर भाष्य पं० तुलसी राम जी ने तथा अथर्ववेद पर भाष्य पं० क्षेमकरण दास त्रिवेदी ने किया। पर इन [illegible]नों ने अजमेर आकर महर्षि के कागजातों को नहीं देखा। यदि चतुर्वेद विषय सूची का इन विद्वानों को पता चल जाता तो उसका आश्रय लेकर यदि ये विद्वान् अपने अपने वेदभाष्य भी आर्ष कोटि को पहुंच जाते। अब हमें फिर से वेदों पर भाष्य करना होगा जिनपर ऋषि का भाष्य नहीं है।

६- मैं जब दूसरे देशों में जाता हूं लगभग एक लाख व्यक्ति मेरे सम्पर्क में हैं जिन्हें मैं वेदों के सम्बन्ध में जानकारी देता हूं वे वेद पढ़ना चाहते हैं पर उनकी भाषा में वेदों के अनुवाद नहीं है। अंग्रेजी भी धरती के थोड़े से टुकड़े पर ही बोली जाती है। इटली आदि में जब मुझे बोलना होता है तब दुभाषिया रखना पड़ता है वहां की जनता अंग्रेजी नहीं समझती। यही दूसरे देशों का हाल है। जो लाखों व्यक्ति वेदभक्त हैं उन्हें आर्यसमाज नहीं जानता और वे लोग आर्यसमाज को नहीं जानते हैं। इस समय तक आर्यसमाज दूसरे देशों में प्रवासी भारतीयों तक ही सीमित है किसी देश का मूल निवासी आर्यसमाजी नहीं है। फूल की गन्ध कहां तक आ रही है यह फूल को पता नहीं पर जहां तक गन्ध है वह फूल की ही है। अतः जहां तक वेदभक्त हैं सब महर्षि का ही प्रभाव है।

७- आर्य समाज में स्वतंत्र अंग्रेजी अनुवाद हुए हैं। पर महर्षि के वेदभाष्यों का अंग्रेजी अनुवाद भी नहीं प्रकाशित हुआ। पं० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड कुछ करके रख गए पर दश वर्ष बीतने पर भी केवल दो भाग ही छपे अन्य देशों की भाषाओं में हुआ ही क्या।

८- निर्वाचन वाली संस्थायें आर्यसमाजें प्रान्तीय सभाएं सार्वदेशिक सभा एक दो वर्ष में पूर्ण होने वाले आन्दोलनात्मक कार्यों को सफलतापूर्वक कर सकती हैं। स्थायी काम इनके द्वारा नहीं हो सकता यही विचार कर महर्षि ने हजारों आर्यसमाजों के होते हुए भी अपने जीवन के अन्तिम क्षणों में परोपकारिणी सभा की स्थापना की जिसमें २३ व्यक्ति सदा के लिए स्थिर हैं। यदि आर्यजनता ऋषि के बचे हुए वेदों पर भाष्य प्रामाणिक चतुर्वेदविषय सूची के आधार पर फिर से कराना चाहती है और संसार की सब भाषाओं में वेदों का अनुवाद कराकर सब संसार के लोगों को वेद पढ़ाना चाहती है तो आज परोपकारिणी सभा की झोली भर कर जाइए।

नोट :—आचार्य जी की इस अपील पर तीन लाख रुपया प्राप्त हुआ।

(पृष्ठ २ का शेष)

सदा स्मरणीय रहेगा। सार्वदेशिक सभा और इसके प्रधान लाला रामगोपालजी ने सम्मेलन की सफलता के लिए जिस सद्भावना व सहयोग का परिचय दिया, वह उनकी गरिमा के अनुकूल है। आर्यों का संगठन ऋषि के कार्य को पूरा नहीं करेगा तो दूसरा और कौन कर सकेगा। इसके अतिरिक्त आर्य प्रादेशिक सभा ने सम्मेलन का पूरा दायित्व ही सभाला और सम्मेलन को तन मन धन से रात-दिन जुट कर यह भव्य रूप प्रदान किया है। विशेष रूप से श्री रामनाथ सहगल देशराज बहल, प्रो० वेदव्यासजी, क्षितीश वेदालंकार, ठेकेदार रामलालजी मलिक ने व्यक्तिगत रूप से जो पुरुषार्थ किया उसको किन शब्दों में व्यक्त करूं मेरे पास शब्द नहीं।

मेरे अस्वस्थ होने के कारण समारोह समिति ने प्रो० शेरसिंहजी को कार्यकर्त्ता प्रधान चुना और हमारे कार्य की शिथिलता दूर हो गई। इतने थोड़े समय में इस आयोजन को सुन्दर रूप मिल सका है। आपका धन्यवाद किन शब्दों में करूं यह हमारे लिये बड़े गर्व की बात है कि ऐसे शान्त सुलझे हुए व्यक्ति हमें प्राप्त हैं।

परोपकारिणी सभा के सदस्य वेदभक्त चौ० प्रतापसिंहजी का सहयोग इस समारोह में बड़ा संबल रहा है। आप द्वारा वेद के विद्वानों का सम्मान, वैदिक साहित्य के प्रकाशन और पुस्तकालय समृद्धि की आपकी प्रेरणा हमें दयानन्द के वास्तविक कार्य को पूरा करने का बल प्रदान करती है।

समारोह को आर्यों ने अपना समारोह समझा व व्यक्तिगत कार्यों को छोड़कर समारोह की सफलता के लिए कई मास से निरन्तर प्रयास करते रहे धन संग्रह किया, समय दिया, पुरुषार्थ से कार्य को सफल बनाया ऐसे महानुभावों की लम्बी सूची है जिनके परिश्रम की सफलता को आप देख रहे हैं उनमें श्री पूनमचन्द आर्य, छोटूसिंहजी, श्रीकरणजी शारदा, पन्नालाल वाहेती प्रकाश कलाकार, जयसिंहजी मेहता, डा० श्री गोपाल बाहेती, प्रमुख हैं। साथ ही अजमेर के स्थानीय सज्जन जिन्होंने मनोयोग से कार्य के लिए परिश्रम किया है उनकी क्या प्रशंसा करूं यह तो उनका अपना कार्य है। उनके लिए साधुवाद व्यक्त करता हूं।

बाहर से आने वाले पद यात्रियों ने ग्राम-ग्राम जाकर जो शंखनाद किया है उनका उत्साह आदर्श है इसके लिये स्वामी दीक्षानन्दजी, स्वामी प्रेमानन्दजी, ब्र. आर्यनरेश, गुजरात की टोली के सदस्यों की ऋषि भक्ति, हमारी युवा पीढी का मार्ग दर्शन करेगी। इसके साथ ही आर्य वीर दल के एवं आर्य युवक परिषद् के स्वयंसेवकों का योगदान सराहनीय है। सभी स्वयं सेवकों को एवं ब्र. राजसिंह को साधुवाद देता हूं, जो यहां की व्यवस्था में अपना पूर्ण योगदान दे रहे हैं।

प्रत्येक प्रान्त की प्रान्तीय सभाओं ने, आर्यसमाजों ने, व्यक्तिशः लोगों ने जो सहायता व सहयोग दिया वह अविस्मरणीय है। विशेष रूप से हरयाणा के लोगों का जिन पर आज संकट है रोहतक, सोनीपत जिले जहां बाढ़ग्रस्त हैं फिर भी अपना सहयोग दिया व बढ़-चढ़ कर भाग लिया। उन सभी का जिनका सहयोग प्रत्यक्ष-परोक्ष, मनसा वाचा कर्मणा मिला आभारी हूं। आपका यहां स्वागत है। आशीर्वाद है। धन्यवाद।

यह शताब्दी वर्ष

लेखक —सोहन लाल शारदा शाहपुरा जिला भीलवाड़ा (राजस्थान)

"सभी आर्य समाजी पुरुष मेरे शिष्य हैं और उन्ही पर मेरा भरोसा है"। ये वचन महर्षि दयानन्द ने अपने अन्तिम समय जोधपुर की अवस्थिति के दिनो मे राव राजा जवान सिंह के एक प्रश्न के उत्तर में कहे थे। अत: हम आर्यसमाजियों का कर्त्तव्य है कि हम इस शताब्दी वर्ष पर महर्षि की विचार धाराओं के जो मन्तव्य उन्होंने अपने सभी पत्रों पुस्तकों मे लिखे हैं पालन कर, कराते हुये समाज एवम् राष्ट्रोन्नति में लग जावें। उनकी विचार धारा क्या है। जब हम महर्षि कृत ग्रन्थों का स्वाधाय करते है तो तुरन्त पता लग जाता है कि वे प्रथम ईश्वर विद्या श्री थे। उन्होने प्रभु भक्ति का सही सच्चा मार्ग बताते हुए प्रत्येक स्त्री पुरुष को आदेश दिया कि रात्रि के प्रथम प्रहर याने ४ बजे उठकर प्रथम हृदय मे परमेश्वर का चिन्तन करके धर्म और अर्थ का विचार करना और धर्म और अर्थ के अनुष्ठान वा उद्योग करने में यदि पीड़ा भी हो तो भी धर्म युक्त पुरुषार्थ को भी नहीं छोड़ना चाहिए। आगे लिखते हैं कि जिस परमेश्वर की कृपा दृष्टि और सहाय से महा कठिन कार्य भी सुगमता से सिद्ध हो सके। आगे यह भी आदेश दिया गया है कि संध्यायज्ञोपासनादि कर्म यथा विधि उचित समय पर किया करें।

यह स्वय सिद्ध है कि विगत पाच हजार वर्ष बाद याने महाराज कृष्ण महर्षि वेद व्यास जेमनी बाद एक महान विभूति सोते हुए आर्यों को जगाने के लिए आई और अपना कार्य सम्पूर्ण कर चली गई। अन्तिम समय में जैसा कि अपने एक बातचीत के दौरान में प० कमल नयन अजमेर को कहा था कि मैंने अपना कार्य पूरा कर दिया सत्यार्थ प्रकाश आदि सत् ग्रन्थ लिख चुका हूं। आप उन्हीं के अनुसार जीवन निर्माण करते हुए राष्ट्र एवम् समाज को समृद्ध बनाइये।

अत: हमारा कर्त्तव्य है कि हम महर्षि के आदर्शों का पालन करें। महर्षि का आदेश है कि माता पिता आचार्य बालकों को जिनकी उम्र ५ से आठ वर्ष तक की है स्नान आसन्न प्राणायाम आदि क्रिया है सीख जावे आगे चलकर इसी सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में कहा गया है कि प्राणायाम, मनसा परिक्रमा, उपस्थान, पूर्वक हे परमेश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना याने गायत्री जाप पद्धति को रीति सीख जावे। अत: हमें हमारे विद्यालयों, मन्दिरों में हमें प्रथम नियम १० पढ़ाते हुये सध्योपासन विधि पढ़ानी है जो भी सज्जन महाशय पढानी चाहें हमारे यहां से प्रकाशित संध्यायज्ञापासन विधि नित्य कर्म करने के लिए मगाकर पढ़ा सकते हैं। मुल्य सप्रेम भेंट डाक खर्च माफ है।

आगे इन्ही विद्यार्थियों को संस्कार विधि से ही सम्पूर्ण याने भूमिका प्राक्कथन के ११ श्लोक स्वस्तिवाचनम् शान्तिकरणम् व सामान्य प्रकरण सम्पूर्ण मङ्गलकार्य महावाम देव्यम् तक पढ़ाना है। यहां महर्षिका आदेश है कि इतना तो अवश्य पढ़ लेवे। इतना पढ चुकने पर यह लाभ होगा के जो पुरोहितों की समस्या समाजों में है हल हो जावे गी।

तदन्तर इन्हीं बालक विद्यार्थियों को आर्योद्देश्य रत्न माला स्वमन्व्यामन्त्व्य प्रकाश तथा वेदाङ्ग प्रकाश के प्रथम तीन भाग वर्णोच्चारणशिक्षा संस्कृत वाक्य प्रबोध व्यवहार भानु पढ़ाना है ताके वर्तमान में जो अराजकता अनुशासन हीनता विधान सभाओं लोक सभा वगैरा विशिष्ट जगह पर देखने को मिल रही है उनमें सुधार होकर राष्ट्र एवम् समाज की सर्वाङ्गीण उन्नती में सहायक हो सके।

इसके बाद कम से कम देश आज परस्थिति को देखते हुए ऐसे बालक विद्यार्थियों के सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास को पढ़ाना है। ताके विद्यार्थियों की रुचि राजनीतिकी ओर जग जाय इसी के लिए महर्षि के आदेश को ध्यान में रखना है कि जहां इसी समुल्लास के अन्त में लिखा है कि "विशेष वेद मनुस्मृति के सप्तम् अष्टम् नवम् अध्याय में तथा विदुर प्रजागर-शुक्र नीति और महाभारत शान्ति पर्व के राजधर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीति को धारण करके माण्डलिक अथवा सार्वभौम चक्रवर्ति राज्य करें"। आगे निष्काम कर्म योग के धारण कराते हुये कहा गया है कि वयं प्रजापतेः प्रजा अभूम। याने हम प्रजापति परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा हम उसके किंकर भृत्यवत हैं। वह कृपा करके अपनी सृष्टि में हमको राज्याधिकारी करें और हमारे हाथों से अपने न्याय की प्रवृति करावें। हम जब महर्षि कृत सभी ग्रन्थ पढायेंगे, पढ़ेगें मनन करके कार्य रुप में परिणित करेगें तभी हमारा शताब्दी महोत्सव मनाना सफल हो सकेगा।

तेरे जाने से जो तारीकी छायी थी महर्षि।
लाख दिये ले दीवाली उसे मिटाने आयी है।।

लेखक—यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास चन्द्र नगर, मुरादाबाद

महर्षि दयानन्द सरस्वती ऐसे प्रकाशस्तम्भ थे, जिनसे भूला-भटका मानव सुपथ के दर्शन करता है। इसी लिए वे मानवता के पथप्रदर्शक माने जाते हैं। मानवता की सी सच्ची एवं निष्कण्टक राह जो वे दर्शा गये हैं, उसका अपना ही महत्व है। वस्तुतः उस राह पर चल कर कोई भी व्यक्ति सहज में ही अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि कर सकता है। वे सही अर्थों में मानवता के प्रश्रयदाता थे। मानवता को उन पर मान है। ऐसे महामानव संसार के अज्ञान अन्धकार को हरने के लिये आया करते हैं। महर्षि की तमन्ना थी कि संसार में अज्ञान-अंधकार का नाम निशान न रहे क्योंकि—

"जब अंधेरा हो तो लाख ऐब उभर आते हैं, इस लिए तमन्ना है कि जग में अंधेरा न रहे।"

आत्मिक-ज्योति के प्रकाश के सहारे एक अकेले लंगोटबंध संन्यासी ने संसार भर के गहन तिमिर एवं अज्ञानअंधार को चुनौती डाली थी। आजीवन तिल-तिल जलकर प्रकाश को टिमटिमाती बाती को उसने बुझने नहीं दिया था। इस कार्य में उसे कितनी यातनायें सहनी पड़ी, कितने कष्ट उठाने पड़े, कितनी उत्पीड़ायें झेलनी पड़ी, यह कौन जान सकता है? जब कभी ईटों और पत्थरों की वर्षा होती तो उसे वह पुष्प वर्षा समझकर सह लेता, और जब कभी उसे विष के प्याले दिये जाते तो अमृत समझकर उसे वह पान कर लेता, जब कभी उसे कलंकित करने की कुचालें चली जाती, तो उनमें आनन्द की अनुभूति कर लेता, यहां तक कि प्राणों को हरने की नौबत आ जाती तो उसे हंसते-हंसते वरण कर लेता। पर इतना सब कुछ होते हुए भी उस महानानव ने अज्ञान-अहंकार के आगे हथियार कभी नहीं डाले। असत्य से समझौता उसने कभी नहीं किया। वह सत्य पथ का बटोही था, वह सत्य पथ का राही था, दुनियां को सत्य पथ दर्शा गया।

एक शती पूर्व दीपावली की शाम को अनन्त दियों के प्रकाश में यह दिव्य ज्योति अनन्त ज्योति में विलीन होने को चल पड़ी। और देखते ही देखते महाकाल में समा गयी। तभी संसार में सर्वत्र अंधेरा छा गया। घोर अमा का अंधेरा कि हाथ को हाथ न दिखाई दे। सौ लाखों दिए जलाकर दीवाली आन उपस्थित हुई किन्तु ज्योति में विलीन हो चुकी थी जिसके लिए कविवर नाथूराम शंकर शर्मा ने कहा था कि—

"शंकर दिया बुझाय के दीवाली को देह का, कैवल्य के विशाल बदन में लिला गया।"

क्रमश:

युग-पुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष-वैदिक संस्थान, नजीबाबाद (उ० प्र०)

सायंकाल का समय था और दीपमालिका का दिवस—लगभग साढ़े पांच बजे थे, उस समय प्रत्येक घर दीपकों से जगमगाने लगा था। उधर राजा साहब भिनाय की अजमेर स्थित कोठी में एक महान् दीप—ऐसा महान्, जिसने शताब्दियों से बुझे दीप—वेद ज्ञान को अपनी सम्पूर्ण योग्यता और सामर्थ्य से भूमण्डल पर प्रकाशित कर दिया था, निर्दयी काल के प्रबल झोंके से बुझ रहा था। बुझा तो वह दीप—किन्तु संसार को वह ज्योति देकर, वह अमर ज्योति, जो न केवल युगों युगों तक अपितु प्रलय काल तक अपनी प्रखर रश्मियों से सम्पूर्ण विश्व को, विश्व ब्रह्माण्ड और विश्व मानवता को न केवल प्रकाश प्रदान करेगी अपितु देदीप्यमान् बनाये रखेगी।

संसार के सभी झंझावात न केवल मोहमाया के अपितु मत-मतान्तरों के भी—उसे बुझाने दौड़े। परन्तु वह अडिग, निश्चल और अटल हिमालय की भान्ति खड़ा रहा और खड़ा रह कर विश्व-मानवता के हित में उस ज्योति की प्रखर और जाज्वल्यमान् उद्दीप रश्मियां बखेरता रहा। प्रत्येक पग पर उस तपःपूत ने यह प्रमाणित किया कि—

निन्दन्तु नीति निपुणाः यदि वा स्तुवन्तु
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

—नीति निपुण लोग निन्दा करें अथवा स्तुति, लक्ष्मी (धन) आये या जाये, चाहे आज ही मृत्यु हो या युगों के पश्चात् किन्तु धैर्यवान् लोग न्याय के पथ से कभी भी विचलित नहीं होते।

इस युग-पुरुष महान् तपस्वी वैदिक ऋषि को हम युग-प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम से स्मरण करते हैं। न केवल आज ही स्मरण करते हैं 'यावत् चन्द्रदिवाकरौ, जब तक चन्द्रमा और सूर्य आकाश में स्थित हैं—प्रबुद्ध जन सर्वदा उनके नाम पर श्रद्धोपेत होकर सिर झुकाते रहेंगे।

इतिहास के पृष्ठों में यहां तक दृष्टि जाती है, महर्षि दयानन्द हमें प्रथम महापुरुष दृष्टिगोचर होते हैं, जिन्होंने यह घोषणा की कि 'जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।" यह घोषणा उनके पूर्वाग्रह रहित होकर सत्य को स्वीकार करने की उनकी मनोवृत्ति की परिचायिका है। इसी मनोवृत्ति का परिचय उन्होंने आर्यसमाज की स्थापना करते हुए उसके चौथे नियम की यह भाषा बना कर दिया कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए।

सत्याग्रही उसी व्यक्ति को कहना सार्थक है, जो सत्य के लिए आग्रह करे, जो अपनी मनमानी बात—चाहे वह कितनी भी अन्याययुक्त हो—मनवाने के लिए अड़ा रहे, वह तो दुराग्रही ही है। महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्पूर्ण जीवन जो आद्योपान्त और उनके ग्रन्थों का अध्ययन करने के बाद हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं और पूर्ण दायित्व के साथ यह कह सकते हैं कि दुराग्रह उन्हें छू भी नहीं गया था। अपने और पराये का भेद-भाव उनके मन में था ही नहीं। पक्षपात उनके विचारों और जीवन में लेश भी, नाम-मात्र को भी नहीं था।

इस सब का कारण यदि खोजा जाए तो इसके अतिरिक्त दूसरा नहीं मिलेगा कि उन्होंने वेद का न केवल अध्ययन अपितु गहन अध्ययन किया था। वेद को संसार के किसी मापदण्ड, किसी भी विद्वान् के दृष्टिकोण से नहीं अपितु वेद के ही मापदण्ड और वेद के दृष्टिकोण से समझा था। वर्तमान युग के वेदवेत्ता कहलाने वालों में महर्षि दयानन्द की यही विशेषता है; यही उन का ऋषित्व है और इसी के कारण वह यह घोषणा करने में समर्थ हो सके कि "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है, और क्योंकि उन्होंने वेद को सब सत्य विद्याओं की पुस्तक समझा और घोषित किया एतदर्थमेव उन्होंने "वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म" भी बताया। इससे कोई भी बुद्धिमान् व्यक्ति इनकार नहीं करेगा कि जो "सत्य विद्याओं की पुस्तक है" संसार का कोई भी आर्य पुरुष, कोई भी श्रेष्ठ व्यक्ति उस पुस्तक के "पढ़ने पढ़ाने और सुनने सुनाने को परम् धर्म मानने में हिचकिचा नहीं सकता"।

ऋग्वेद में एक स्थल पर कहा गया है "ऋषिः स यो मनुर्हितः" ऋषि वह जो मनुष्य मात्र का हितकारी हो। महर्षि दयानन्द सरस्वती मनुष्यमात्र के हितकारी थे—इससे केवल वही व्यक्ति नकार कर सकता है, जो पूर्वाग्रह से ग्रसित हो। इससे बढ़कर महर्षि की मनुष्य मात्र की हितकारिणी प्रवृत्ति का और नया परिचय दिया जा सकता है कि उन्होंने अपने द्वारा संस्थापित संस्था आर्यसमाज का एक नियम ही यह बना दिया कि संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" संसार के उपकार में व्यक्ति का उपकार निहित है।

तथ्य यह है कि महर्षि की मनुष्यमात्र की हितकारिणी वृत्ति बनने का का भी उनका गहन विद्याध्ययन ही है। वेद में क्योंकि किसी वर्ग, किसी क्षेत्र आदि का पक्ष नहीं है; हमारा अभिप्राय है कि वेद न तो पक्षपातयुक्त ग्रन्थ है तथा न देश या वर्ग विशेष के लिए है अपितु वेद मनुष्य मात्र के लिए है, सार्वभौम है और सार्वकालिक है तथा मत-मतान्तर के आग्रह से रहित है। वेद मनुष्य को न तो मुसलमान बनाना चाहता है न हिन्दु, न पारसी न जैन, न बौद्ध न ईसाई और न मूसाई। वेद तो मनुष्य को मनुष्य देखना चाहता है और मनुष्यता ही संसार में सर्वजनीन तत्त्व है। वेद तो स्पष्ट शब्दों में 'मनुर्भव' मनुष्य बने का निर्देश करता है।

यह जो मनुष्य बनने का सन्देश है, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसी को वेद से प्राप्त किया और यही सूत्र लेकर संसार के उपकारार्थ आर्यसमाज की स्थापना की और स्व-जीवन को भी इसी कार्य में होम दिया। जीवन भर वेद-ज्ञान का प्रचार-प्रसार किया और अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्य समाज को वेद-आलोक प्रचार का दायित्व समर्पित कर दीपावली की सायंकाल के धीरे-धीरे टिमटिमाते दीपकों के प्रकाश में वह आधुनिक युग-प्रवर्तक और युग-पुरुष संसार से विदा हो गया।

अनेकों दीप जलाये उस युग-पुरुष ने अपनी तपस्या और साधना से। आज वह संसार में यद्यपि कहीं दिखायी नहीं देता किन्तु संसार का कोई ऐसा क्षेत्र नहीं—जहां उसकी छाप, उसकी जीवन-ज्योति की जाज्वल्यता और देदीप्यता का परिचय न दे रही हो।

आर्यों का सिंह नाद

गौ माता की रक्षा खातिर हम अपने शीश कटा देंगे।
तन-मन-धन अर्पित कर देंगे, और जीवन भेंट चढ़ा देंगे॥
गौ वध के बन्द कराने का हम ने है दृढ़ संकल्प किया।
इस प्रण के पूरा करने को अपना सर्वस्व लुटा देंगे॥
ऋषि वर का ऋण चुकाने को हम कार्य क्षेत्र में उतरे हैं।
हम तब आराम से बैठेंगे, जब कुछ कर के दिखला देंगे॥
सन्तान हैं, आर्य जाति की और मान हैं प्यारे भारत का।
माता की पीड़ा हर लेंगे इसका सम्मान बढ़ा देंगे॥
फिर घी के स्रोते उबलेंगे, सरिताएँ दूध की उछलेंगी।
प्राचीन काल की भाँति हम भारत को स्वर्ग बना देंगे॥
'प्रताप' 'शिवा' 'गोबिन्द सिंह' आदर्श पे अपने स्वामी के।
चल कर वीरों के दल के दल, पापों की भीत गिरा देंगे॥
धुन के पक्के हैं, 'नाज' हमीं, दुःख दर्द निरन्तर सहते हैं।
आपत्तियों से निर्भय हो कर, लड़ना सब को सिखला देंगे॥

स्वार्थी

मतलब भरी बातें बना कर हैं, लूटते।
सरसों हथेलियों पे जमा कर हैं, लूटते॥
आँखों में धूल झोंक कर 'नाज'-यो-दगा से 'नाज'।
दुनिया को सब्ज बाग दिखा कर हैं; लूटते॥

हृदय पिपासा

आरजुएँ जला चुका हूं मैं।
प्यास दिल की बुझा चुका हूँ मैं॥
दिल के दागों की रोशनी लेकर।
हर अन्धेरा मिटा चुका हूं मैं॥

पत्नी की सीख

मत पी तू शराब, खाना खराब होगा।
कहीं नाली में पड़ा होगा, मुंह में पेशाब होगा॥
इस घर की बगिया में, दो फूल खिलेंगे।
अगर मदिरा पियोगे तो बस शूल ही उगेंगे॥
मान मेरा कहना ओ मेरे सजना, कुटुम्ब खराब होगा।
कहीं नाली में पड़ा होगा, मुंह में बस पेशाब होगा॥
दिल की महफिल में शराब अन्दर तो 'अक्ल' बाहर होगी।
शराब करे खराब, घर भी और इज्जत खराब होगी॥
मदिरा छुटी, चोरी छुटी, घर भी आबाद होगा।
नहीं तो नाली में पड़ा होगा, मुंह में पेशाब होगा॥
मदिरा नहीं आंखों के आंसू पियो।
जीना है तो शराब छोड़ कर जियो॥
क्या है शराब ? तन-मन-धन तो बर्बाद होगा।
कहीं नाली में पड़ा होगा, मुंह में पेशाब होगा॥

—रामपाल शास्त्री
नानक चन्द डिग्री कालेज, मेरठ।

मित्र

वास्तव में है, मित्र, मित्र वही।
जो मुसीबत के वक्त काम आए॥
मूर्खों को तो कुछ कहो, लेकिन।
बुद्धिमानों को कौन समझाए ?॥
('नाज' सोनीपती)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—म० भरतसिंह वानप्रस्थ सभा मन्त्री, सम्पादक—डा० सुदर्शनदेव आचार्य, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क २ | ७ दिसम्बर १९८३ | वार्षिक मूल्य १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

राष्ट्र मण्डल के अध्यक्षों से अकालियों द्वारा की गई अपील राष्ट्र विरोधी है

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह का वक्तव्य

मैंने सन्त हरचन्दसिंह लोंगोवाल द्वारा समाचार पत्रों को जारी की गई—"अकालियों की राष्ट्र मण्डल देशों के नाम अपील" ध्यानपूर्वक पढ़ी है। सन्त लोंगोवाल ने अपनी इस अपील में मुख्य रूप से निम्न तीन बातों को उभार देने का ही प्रयत्न किया है :—

१- सिख अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की स्थापना एवं विस्तार के इच्छुक हैं जिस प्रकार से मुसलमानों को पाकिस्तान मिल गया उसी तरह सिख भी अपनी सामूहिक आवाज का प्रतिनिधित्व करने वाले अकाली दल के माध्यम से एक पृथक सत्ता सम्पन्न राज्य का दावा करते हैं।

२- मनुष्य को जीने के अधिकार जैसा सर्वाधिक प्राथमिक मानवीय अधिकार भी सिखों को सुलभ नहीं है।

३- सिखों पर चल रहा दमन चक्र उसी भयानक स्थिति को प्राप्त होता जा रहा है जिससे हिटलर द्वारा यहूदियों को यातनायें दी गई थी।

अकाली नेता अपने पृथक प्रभुता सम्पन्न राज्य के दावे का आधार राष्ट्रीय नेताओं के उन आश्वासनों को बनाते हैं, जो उन्होंने स्वतन्त्रता के समय अकालियों को दिये थे किन्तु अकालियों ने उन आश्वासनों की कोई परिभाषा आज तक नहीं की। मार्च १९४७ में 'खिजर हयात खां' के त्याग-पत्र के बाद जो घटनायें घटीं उनका मैं स्वयं निकट से साक्षी रहा हूं। रावलपिण्डी की तथाकथित उथल-पुथल के बाद अकाली नेता उखड़ चुके थे और जमने के मूड में थे। जिन्नाह से उनकी वार्ता भी असफल हो चुकी थी तथा ये देश विभाजन के लिए अन्ततोगत्वा सहमत हो चुके थे।

स्वतंत्रता प्राप्ति के समय तथा इसके बाद भी अकाली नेता स्वयं को हिन्दू समाज का अंग मानते रहे हैं, भारतीय संविधान इसकी साक्षी देता है। अकालियों ने भारत सरकार को विश्वास दिलाया था कि उनकी अन्तिम मांग मजहबी, रामदासियों तथा सिकलीगरों आदि को अनुसूचित जाति में सम्मिलित कराने की थी। उन्होंने पंजाबी सूबे की मांग भाषायी आधार पर ही की थी। १९५६ में उन्होंने रिजनल (क्षेत्रीय) फार्मूले को स्वीकार किया था। बम्बई प्रान्त को मराठी भाषी तथा गुजराती भाषी प्रान्तों के रूप में दो फाड़ कर दिये जाने के बाद उन्होंने अपनी पंजाबी सूबे की मांग को पुन: दोहराया। दूसरे भाषायी प्रान्तों की ही भान्ति उन्होंने पंजाबी भाषी प्रान्त चाहा था। सत्ता सम्पन्न खालिस्तान अर्थात् एक ऐसे राष्ट्र का विचार जहां पूर्णतया सिखों का ही बोलबाला हो, की उत्पत्ति भारत से बाहर हुई है जो बिल्कुल ताजा है। जो शक्तियां भारत को उलझनों में डालकर इसे व्याकुल करना चाहती हैं, अकालियों की इस मांग को उन्हीं शक्तियों ने भड़काया है।

दूसरी दो बातों का जहां तक सम्बन्ध है, हर आदमी अच्छी तरह जानता है कि तथाकथित अकाली उग्रवादियों ने बड़ी संख्या में पुलिस अधिकारियों, निरंकारियों तथा हिन्दुओं की हत्याएँ कीं। देहली गुरुद्वारा प्रबन्धक समिति के सूत्रों के अनुसार अकालियों के लोंगोवाल समर्थक तत्त्वों द्वारा देहली के गुरुद्वारों की आय उग्रवादियों को प्रदान कराई जा रही है। इन उग्रवादियों ने न केवल हिन्दुओं ही को बसों में से निकाला तथा मारा बल्कि जो सूचनायें मिली हैं, उनके अनुसार हिन्दुओं को पंजाब छोड़ने की चेतावनी देने वाले पंजाबी में हस्तलिखित विज्ञापन भी दीवारों पर चिपकाये जा चुके हैं। ऐसी घटनाओं का अर्थ गोयबल्स द्वारा अफवाहें फैलाकर हिटलर की सहायतार्थ अपनाये गये फासिस्ट हथकण्डों से किसी तरह कम नहीं है। पंजाब में भी यदि किसी को धमकी दी जाती है तो ये सिख नहीं बल्कि वही लोग हैं जो संत लोंगोवाल की छत्रछाया में मनमानी कर रहे तथाकथित आतंकवादियों के फासिस्ट हथकण्डों का शिकार हो चुके हैं।

जब तक अकाली अपनी मांगें प्रस्तुत कर उन्हें वापस लेने का जो नाटक करते रहे हैं उसका मात्र अभिप्राय अपने को मध्यमार्गी तथा न्यायसंगत सिद्ध करना रहा है। अकाली स्वयं रावी-व्यास जल सम्बन्धी निर्णय पर सर्वोच्चन्यायालय के किसी न्यायाधीश द्वारा पुनर्विचार की मांग करते रहे हैं। वे हरयाणा, पंजाब तथा केन्द्र की सरकार पर सर्वोच्च न्यायालय से उक्त मुकदमा वापिस लिये जाने का आरोप लगाते रहे हैं। अब जबकि रावीव्यास के जल वितरण का मामला सर्वोच्च न्यायालय ने अपने अन्तर्गत ले लिया है, अकाली इससे पीछे हट गये हैं। वे अपने सभी पुराने आत्मसमर्पणों तथा भूमि अधिकारों से सम्बन्धित प्रश्नों से भी पीछे हट चुके हैं। वास्तव में अकालियों की कोई न्यायोचित मांग नहीं है, उनकी तथाकथित मांगें मात्र छलावा हैं।

मुझे प्रसन्नता है कि प्रधानमंत्री ने तब तक अकालियों से कोई बात न करने का निश्चय किया है जब तक कि उनके द्वारा तथा उनके उग्रवादियों द्वारा पैदा की गई स्थिति पूर्णतया नियन्त्रण में नहीं आ जाती। देर से ही सही। हरयाणा रक्षा वाहिनी यह मांग सितम्बर १९८१ से अपने आरम्भिक काल से ही करती रही है। विगत जुलाई में आयोजित बन्द के माध्यम से भी हम भारत सरकार से अकालियों के साथ तब तक कोई बात न करने की मांग दृढ़ स्वरों में कर चुके हैं जब तक कि वे हिंसा, लूट तथा हत्याओं के सिलसिले को पूर्ण रूप से बन्द नहीं कर देते।

अम्बाला अग्निकांड की न्यायिक जांच हो : सत्यदेव

अम्बाला शहर, २७ नवम्बर : हरियाणा रक्षा वाहिनी के उपप्रधान सेवा निवृत्त आई. पी. एस. श्री सत्यदेव सिंह ने गत दिनों हिन्दू रक्षा समिति के श्री प्यारे लाल और श्री अनिल शर्मा की गिरफ्तारी की कड़ी निन्दा की है।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार बेगुनाह हिन्दुओं को जानबूझ कर झूठे केसों में फसा कर परेशान कर रही है।

उन्होंने मांग की कि गत दिनों वहां जिस एक कपड़े की दुकान को आग लगी थी उसकी न्यायिक जांच करवाई जाये ताकि असली दोषियों का पता चल सके और उनको कठोर से कठोर सजा दी जा सके।

दीर्घ-जीवन में योग का स्थान

—डा० सत्यव्रत सिद्धांतालंकार

मेरा यह अभिप्राय नहीं है कि बूढ़ा किसी भी उपाय से जवान हो सकता है, या आसनों अथवा योग के साधन से वृद्ध को युवा किया जा सकता है। कहावत प्रसिद्ध है कि जो जाकर न आये वह जवानी देखी, और जो आकर न जाये वह बुढ़ापा देखा। परन्तु इस बात में सन्देह नहीं कि आसनों, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य से, जो योग के अभिन्न अंग हैं, बुढ़ापे के कष्टों का निवारण किया जा सकता है। एक युवा का ऐसा जीवन हो सकता है जो बुढ़ापे से भी बदतर हो, और योगासनों, प्राणायाम तथा ब्रह्मचर्य द्वारा एक वृद्ध का ऐसा जीवन हो सकता है जिस को देखकर युवाव्यक्ति भी आंखें फाड़ते रह जायें।

बुढ़ापा क्या है? बचपन और जवानी में हमारे अंग-प्रत्यंगों में जो लचक होती है, जो इलेस्टिसिटी होती है, उसका कम हो जाना या न रहना ही बुढ़ापा है। बूढ़े व्यक्ति के हाथ-पैर-पीठ के जोड़ कड़े पड़ जाते हैं, उनमें लचक नहीं रहती, वह सहारे के बिना उठ-बैठ नहीं सकता, सीधा खड़ा नहीं हो सकता, लाठी का उसे सहारा लेना पड़ता है, हाथ-पैर के जोड़ों को, घुटनों को, पीठ को हिलाने से दर्द होने लगता है। हमें समझ लेना चाहिए कि इन सबका इलाज दवाइयों से क्षणिक ही हो सकता है, इनका इलाज जोड़ों का व्यायाम करते रहने से ही हो सकता है। जोड़ों के इन व्यायामों को एलापैथी में फिजियोथेरेपी कहा जाता है, योग की परिभाषा में इन्हें योगासन कहा जाता है, परन्तु फिजियो थेरेपी और योगासनों में भेद है। फिजियो थेरेपी तब की जाती है जब कष्ट सामने आ खड़ा हो, योगासन तब किये जाते हैं जब कष्ट का कहीं नाम भी न हो। फिजियो थेरेपी को उपचारात्मक कहा जा सकता है, योगासनों का उद्देश्य प्रतिरोधात्मक तथा उपचारात्मक दोनों हैं। हमारी संस्कृति में योग के इन आसनों को जीवन का अंग बना दिया गया है, ठीक इस तरह जैसे नित्य स्नान करना जीवन का अंग है।

जोड़ों के दर्दों का मुख्य कारण जोड़ों में यूरिक ऐसिड का जम जाना है। योगासनों से यह ऐसिड जमा नहीं होता। उदाहरणार्थ घुटनों के दर्द को लीजिए। पद्मासन करने से घुटनों का दर्द नहीं बन पाता। बन जाए तो चला जाता है, जोड़ों के दर्द का इलाज पद्मासन है एक दूसरे आसन से जिसका नाम सिद्ध पद्मासन है प्रोस्टेट ग्लैंड बढ़ने नहीं पाता। मैं स्वयं पद्मासन, सिद्ध पद्मासन आदि अनेक आसन प्रतिदिन करता हूं और ८६ वर्ष की अवस्था में न मुझे किसी जोड़ की शिकायत है, न प्रोस्टेट की। आसनों द्वारा शरीर को लचक का बनाए रखना ही युवा बने रहने का गुर है। आसन तो सैंकड़ों हैं, परन्तु सबके करने की जरूरत नहीं, आठ-दस आसनों से ही पूरा काम चल जाता है।

यूरिक एसिड के अतिरिक्त जीवन का दूसरा शत्रु कोलेस्टेरोल है। यह हमारे भोजन द्वारा-पूरी, परौठा, मांस, अण्डा, तले पदार्थ घी आदि द्वारा नस-नाड़ियों की दीवारों में चिपक कर उन्हें संकुचित कर देता है जिससे रुधिर के प्रवाह में तेजी आकर ब्लड प्रेशर हो जाता है, या कोलेस्टेरोल का धक्का हृदय-रोग उत्पन्न कर देता है। इसमें यौगिक-जीवन बड़ा सहायक है। योगी व्यक्ति चटोरपन को छोड़ देता है। वह ऐसी वस्तुओं का सेवन करता है जो पौष्टिक तो हों, परन्तु वसामय न हों। इसके अतिरिक्त शरीर के सब अंगों का घर्षण या मर्दन कोलेस्टेरोल के निवारण में बहुत सहायक है। जैसे बाल्टी में देर तक पड़ा पानी बाल्टी के भीतर केलसियम आदि की परत छोड़ देता है, उसे घिसा जाय तो वह परत छंट जाती है, आगे बनने नहीं पाती, वैसे प्रतिदिन शरीर की मालिश करने से नस-नाड़ियों में कोलेस्टेरोल जमने नहीं पाता, हार्ट-अटैक की शंका कम हो जाती है, शरीर की सूचक बनी रहती है। मैंने जहां मालिश पर बल दिया है, वहां भिन्न-भिन्न भोजनों पर भी विस्तार से जानना आवश्यक है जिससे पता चले कि किस भोजन में कोलेस्टेरोल है किसमें नहीं है, किस भोजन में कितनी केलोरी है ताकि जो स्त्री पुरुष मोटापा दूर करना चाहते हैं, पतला होना चाहते हैं, वे अपने भोजन के पदार्थों तथा उनकी मात्रा का स्वयं निर्णय कर सकें। आयुर्वेद में लिखा है—"तक्रं शक्रस्य दुर्लभम्"—तक्र या छाछ ऐसा द्रव्य पदार्थ है जो कोलेस्टेरोल को छांट देता है, आयु को बढ़ाता है। यही कारण है कि पंजाबी लोग जो चाय की जगह लस्सी के शौकीन हैं, भारत में सब से अधिक तन्दुरुस्त हैं और दीर्घजीवी हैं। पंजाबी के डील-डौल को देखकर झट समझ आ जाता है कि इसने या इसके बाप-दादा ने खूब लस्सी का प्रयोग किया है बल्गेरिया के लोग सब से अधिक दीर्घ-जीवी पाये गए हैं क्योंकि उनका मुख्य भोजन दही तथा लस्सी है। दही को वहां तथा यूरोप में योगार्ट कहा जाता है।

प्राय: समझा जाता है कि आसन कर लेना योग है। यह भ्रान्ति है। योग के मुख्य अंग आठ हैं। वे हैं—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान तथा समाधि। आसन तो योग का एक बटा आठवां (1/8) हिस्सा है। शरीर को युवा बनाये रखने के लिए जितना आसनों का महत्त्व है, उससे अधिक महत्त्व प्राणायाम का है। आसन तथा प्राणायाम भारत के ऋषियों के वृद्धावस्था को दूर करने तथा युवावस्था बनाए रखने के अद्भुत आविष्कार थे। युवावस्था का गुर आसनों तथा प्राणायाम में निहित है। लोग "डीप ब्रीदिंग" को प्राणायाम समझ लेते हैं। यह भ्रान्ति है। प्राणायाम को ऋषियों द्वारा आविष्कृत की हुई अपनी एक विधि है, टैकनीक है। इसमें भस्त्रक, पूरक, कुम्भक, रेचक तथा भ्रामरी प्राणायाम गिने जाते हैं। प्राणायाम का प्रभाव श्वास-संस्थान पर तथा रक्त-संचारण-संस्थान पड़ता है। जिससे फेफड़े तथा हृदय को बल मिलता है। कुम्भक प्राणायाम का प्रभाव पेट, आंतों, तिल्ली, गुर्दे आदि भीतर के सब अंगों को बलशाली बनाता है। इसी सिलसिले में एक आसन है जिसे योग-मुद्रा कहते हैं। योग-मुद्रा का उद्देश्य मस्तिष्क से लेकर सम्पूर्ण शरीर के प्रत्येक भीतरी अंग को बल देना है।

डा० के० के० दाते, जो अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के हृदय रोग-विशेषज्ञ थे, जिनका २२ अप्रैल '८३ को देहान्त हो गया, उन्होंने शवासन का विदेशों में इतना प्रचार किया कि बड़े-बड़े डाक्टर शवासन के भक्त हो गए। उन्होंने जो परीक्षण किये उनसे सिद्ध हो गया कि शवासन से ब्लड प्रेशर में कमी आ जाती है, रोगी औषधि लेना छोड़ देते हैं, परन्तु शवासन का अर्थ सिर्फ मुर्दे की तरह लेट जाना नहीं, मन को ध्यान में लगाते हुए दुनियावी विचारों को दिमाग से निकाल कर लेटना है जिसे योग में "प्रत्याहार" कहा है। लेटे-लेटे दुकानदारी करते रहने को शवासन नहीं कहते।

आल इण्डिया मेडिकल इन्स्टीट्यूट के हृदय-रोग विशेषज्ञ डा. भाटिया का कथन है कि यूरोप में ट्रान्सेन्डेन्टल मेडीटेशन द्वारा हाई ब्लड प्रेशर को नियन्त्रित करने के सफल परीक्षण हो रहे हैं।

आसन तथा प्राणायाम के अतिरिक्त भारतीय ऋषियों ने युवावस्था बनाए रखने के लिए एक तीसरा आविष्कार किया था जिसे "ब्रह्मचर्य" कहा जाता था। वेद में लिखा है—"ब्रह्मचर्येण तपसा: देवा: मृत्युं उपाघ्नत" —ब्रह्मचर्य रूपी तप से मृत्यु पर विजय प्राप्त किया जा सकता है।

इन सब बातों की विस्तृत चर्चा योग की पुस्तक में की गई है। युवावस्था में मनुष्य आसन न करने, प्राणायाम न करने, ब्रह्मचर्यपूर्वक न रहने से शरीर की लचक खो बैठता है। इन सब उपद्रवों को योग द्वारा तथा होम्योपैथिक औषधियों द्वारा शान्त किया जा सकता है।

(परोपकारी से साभार)

सम्पादकीय—

सम्माननीय प्रतिनिधियों से निवेदन

अगामी ११ दिसम्बर का दिन ज्यों-ज्यों समीप आता जा रहा है, यहां सभा कार्यालय में इस दिन आयोजित सभा के वार्षिक अधिवेशन तथा उसमें आगामी कार्यावधि हेतु सम्पन्न होने जारहे सभा-अधिकारियों के निर्वाचन के परिप्रेक्ष्य में गतिविधियां तेज होती जा रही हैं। हरयाणा प्रान्त के हर ओर-छोर की हर एक आर्यसमाज के प्रतिनिधि जिसका सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से है, इस अधिवेशन में भाग लेकर आर्यसमाज के मूल से रस पाकर बने हरयाणा सभा रूपी तने पर फूटी इसकी विभिन्न शाखा-प्रशाखा रूपी संस्थाओं एवं संस्थानों द्वारा विगत वर्ष में सम्पादित कार्य की विशद एवं जीवन्त समालोचना कर, इसके तात्विक विवेचनद्वारा वैदिक धर्म रूपी महाविटप को फैलने और फूलने हेतु निस्सन्देह सुअवसर प्रदान करायेंगे।

उन्नीसवीं शताब्दी में भारतीय पुनर्जागरण के प्रमुख उद्गाता ऋषि दयानन्द ने धर्म, समाज, राष्ट्र एवं संस्कृति के क्षेत्रों में जिस एक चतुर्मुखी क्रान्ति का सूत्रपात किया था, उसी क्रान्ति का नाम आर्यसमाज है। इसकी प्राथमिक इकाइयां अर्थात् हर स्थान की स्थानीय आर्यसमाजों ने क्रान्ति की उसी चिन्गारी को योजनाबद्ध रूप से हवा देने हेतु ही प्रान्तीय प्रतिनिधि सभाओं के रूप में ये प्रादेशिक संगठन बनाये हुए हैं। अतः अधिवेशन में भाग लेने के लिए पधारने वाले मान्य प्रतिनिधि यह सुझाव उक्त उद्देश्य की पूर्ति हेतु अधिकारियों द्वारा विगत में स्वीकार की गई योजनाओं तथा उनकी पूर्ति हेतु उन द्वारा की गई चेष्टाओं एवं उन द्वारा उपलब्ध हुई उपलब्धियों का आग्रहों से सर्वथा मुक्त हो समीक्षण करेंगे ऐसी आशा है लक्ष्य पूर्ति हेतु कार्य सम्पादन यों तो सभी आर्यों तथा विशेषकर सभा के अधिकारी वर्ग का कर्तव्य होता है किन्तु क्योंकि अधिकारी भी मनुष्य ही होते हैं अतः ऐसे में मनुष्यगत त्रुटियों का होना भी स्वाभाविक ही है। इसलिए आपके द्वारा की गई आलोचना मात्र आलोचना न होकर रचनात्मकता प्रदान करने वाली समालोचना होनी चाहिए। इसी में हरयाणा के आर्यों की प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियों का अमल-धवल चरित्र की पावन मन्दाकिनी में सतत स्नान करते रहना परिलक्षित हो सकेगा।

ऐसे अवसरों पर मान्य मनीषियों द्वारा अतीत पर विचार करते हुये वर्तमान का अधिग्रहण कर समुज्ज्वल भविष्य के संकल्प संजोते समय जहां उक्त बात का विशेष ध्यान रखना अतीव आवश्यक है वहीं मनन की वेलाओं एवं आत्म निरीक्षण की इन घड़ियों में 'गतानुगतिक-भावुकता' भी कथमपि श्लाघ्य नहीं है। 'तेजीयसां न दोषाय वह्नेः सर्वभुजो यथा' अर्थात् सर्वभुक् अग्नि की भान्ति तेजस्वी पुरुष दोषयुक्त पद्धति अपनाकर दूषित कार्य कर नहीं सकता अथवा 'ईश्वराणां वचः सत्यं तथैव चरितं क्वचित्' के अनुसार सर्वथ व्यक्ति के आचरण की ओर ध्यान न देकर उसके श्रीमुख से निस्सृत वचनों का ही अनुकरण एवं अनुसरण करते रहना चाहिए, ऐसी धारणा बना उसपर आग्रहवान् होने की मान्यता भी संगठन अथवा संस्था को अन्ततोगत्वा शिथिलता ही प्रदान कराने में सहयोग करती है। अतः इसका शिकार होने से बचना उतना ही आवश्यक है। इस दिन लिए गए निर्णयों का संगठन पर दूरगामी प्रभाव रहता है। 'संगठन ही सर्वोपरि है' इसे मानकर उसी का हित सबका हित है, ऐसा निश्चय करने का ही यह समय है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को अस्तित्व में आये नौ वर्ष ही तो हुए हैं। किस संघर्षपूर्ण परिस्थिति में इसका जन्म हुआ तथा किन-किन झंझावातों को इसने अपनी इस अल्पावस्था में झेला है, यह सब आपसे छुपा नहीं है। यह तो हरयाणा प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रूपी इस संगठन यज्ञ के पुरोधा श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी महाराज की रचना चातुरी ही थी कि शून्य से यात्रा प्रारम्भ कर आज यह भले ही मन्थर गति से, परन्तु साधन सम्पन्न होती जा रही है। किन्तु संघर्ष और चुनौतियों का दौर भी इसके साथ-साथ और तेज होता जा रहा है। अमेलों और झंझटों की दोमुही चक्की जिसे चला रहे हैं अपने तथा उसमें गल्ला डाल रहे हैं पराये, हमें न केवल दोफाड़ करने पर ही तुले है, अपितु पीसकर मैदा बना देने को कृतसंकल्प है। भावी पीढ़ी जिसके सम्बल बनने की पूरी सम्भावना थी, चरित्र से खिलवाड़ करती जा रही राजनीति की शिकार हो स्वधर्म, स्व-भाषा तथा स्व-संस्कृति से विमुख होती जा रही है।

प्रान्त भर के प्रतिनिधिगण जिस सदन का निर्माण करते हैं तथा जिसे साधारण सभा कहा जाता है, वस्तुतः वही आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा है। इसकी अन्तरंग सभा, अधिकारी वर्ग, विद्यार्य सभा, राजार्य सभा तथा न्यायार्य सभादि इसके अन्य प्रतिष्ठान संसार का उपकार करने हेतु, आप लोगों द्वारा चलाये जा रहे अभियान में आपके सहयोग एवं सहायता हेतु हैं। उसी साधारण सभा का यह असाधारण अधिवेशन होने जा रहा है आगामी ११ दिसम्बर १९८३ रविवार को सभा कार्यालय में। सर्वहितकारी साप्ताहिक क्योंकि सभा का मुख है, अतः अधिवेशन में सम्मिलन हेतु यहां सभा कार्यालय में पधारने पर आपको 'सुस्वागतम्' कहता है तथा आपसे इतना निवेदन करने की धृष्टता अवश्य करता है कि फिर से धर्म-विषयक घनीभूत होते जा रहे अन्धविश्वासों को उखाड़ने के लिए सपने संजो कर उन्हें साकार करने के लिए समुद्यत होने का ही यह दिन है।

—रणवीर

ए. एस. आई. रादौर का साम्प्रदायिक व्यवहार निन्दनीय

नौशहरा पुनुआं में हिन्दुओं के हत्याकाण्ड के विरुद्ध आयोजित बन्द के अवसर पर रादौरवासियों द्वारा निकाले गये शान्त जलूस पर वहां के ए एस. आई. ने अकारण डण्डे बरसाये। इसपर जब भीड़ क्रुद्ध हो गई तो हालात पर काबू पाये रखने की दृष्टि से जलूस के आयोजकों ने उस ए.एस.आई. को सुरक्षित रूप से जलूस से बाहर भेज दिया। वहां से मिली सूचनानुसार उक्त ए.एस.आई. जो सिख बतलाया जाता है, निकट के मोहल्ले (गुरुनानकपुरा) में पहुंचा और सिख नौजवानों को इकट्ठा कर उन्हें भड़काने के निन्दनीय कर्म पर उतारु होगया। इस पर सारे नगर में स्थिति तनावपूर्ण हो गई। सिख समुदाय की ओर से हिन्दुओं की बहन बेटियों को उठाने की तथा कस्बे को आग लगा देने की धमकियां दी जाने लगीं। अभी स्थिति उतनी तनाव ग्रस्त नहीं है पर सुनने में आया है कि दबाव के अन्तर्गत वहां के हिन्दुओं को जो सर्वथा निर्दोष हैं, गिरफ्तार करने की योजनायें बन रही हैं जो क्या बुझती आग में घी का काम नहीं करेंगी? हरयाणा सरकार समय रहते इस ओर आवश्यक पग उठायेगी ऐसी आशा है, अन्यथा स्थिति विस्फोटक हो सकती है।

महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
संयोजक हरयाणा रक्षा वाहिणी

मेला कपालमोचन भूमि पर यज्ञशाला का निर्माण शुरु

९ नवम्बर १९८३ को मेला कपाल मोचन स्थित सभा की भूमि पर आस-पास की आर्य समाजों के अधिकारियों की एक मीटिंग महाशय हरलाल जी आर्य सभा भजनोपदेशक की व्यवस्था में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर सम्पन्न हुए विशेष यज्ञ के ब्रह्मा श्रद्धेय स्वामी सदानन्द सरस्वती थे। छछरौला क्षेत्र के लोकप्रिय युवा नेता एवं विधायक श्री रोशनलाल आर्य ने मेला भूमि पर बनने वाली यज्ञशाला के निर्माण कार्य का अपने करकमलों से शुभारम्भ किया तथा ध्वजारोहण भी इन्हीं के हाथों हुआ।

मामचंद आर्य मंत्री

११ दिसम्बर को ११ बजे से पूर्व प्रतिनिधि रोहतक पहुंचें।

एकात्मता–यज्ञ और हिन्दू संगठन

(ले०—आचार्य प्रेमभिक्षु: वानप्रस्थ सम्पादक 'तपोभूमि', मथुरा)

भारत राष्ट्र, भारतीय समाज और भारतीय संस्कृति की रक्षा के लिये 'हिन्दू सङ्गठन' नितान्त आवश्यक है, क्योंकि उसके विगठन के कारण ही तथाकथित स्वतन्त्र भारत में भी गो-हत्या का जघन्य पाप होता है, वनस्पति घी आदि में गोचर्बी मिलाई जाती है, मातृ-भाषा हिन्दी का अपमान होता है, १२ प्रतिशत जनसंख्या वाले ८५ प्रतिशत जनसंख्या वालों पर हावी हैं, अनेक सीताओं का अपहरण होता है. अनेक द्रौपदियों का चीर-हरण होता है और कुल जन संख्या का ३० प्रतिशत ही मत प्राप्त करने वाले हम पर शासन करते हैं।

हिन्दू समाज में फूट है, आपसी विरोध है, बिखराव है और यह स्थिति आज से नहीं कुछ अंशों में महाभारत काल से ही आरम्भ हो गई थी इसी असङ्गठन, वैर-विरोध और फूट से ही हम हजारों वर्ष तक गुलाम रहे और इसी फूट विशा-चिनी के कारण अपने ही राष्ट्र में हमारी यह घोर दुर्दशा है। इस प्रकार असङ्गठन या आपसी फूट और बिखराव हिन्दू समाज का महारोग है। अतः विश्व हिन्दू परिषद्, हिन्दू सभा, विराट् हिन्दूसमाज या आर्यसमाज जो भी हिन्दू सङ्गठन को प्रेरणा करते हैं, हमारे परम हितैषी हैं।

हिन्दू समाज रोगी है, उसे फूट का महारोग है। पर जैसा कि हम जानते हैं कि किसी भी रोग की चिकित्सा के पहले रोग का निदान अर्थात् रोग के कारणों को जानना नितान्त आवश्यक है, वैसे ही हिन्दू समाज के 'असंगठन' रूपी महारोग का मूल कारण क्या है? यह देखना परमावश्यक है। इतिहास पर एक दृष्टि डालने से स्पष्ट हो जाता है कि जब से एक सत्य सनातन वैदिक धर्म के स्थान पर अनेक मत-पन्थ और सम्प्रदायों और एक ईश्वर की पूजा की जगह अनेक देवी-देवताओं की कल्पना हमारे यहाँ आई हम धार्मिक दृष्टि से बिखर गए. और जब से गुण-कर्माश्रित वैदिक वर्ण व्यवस्था के स्थान पर हमने जन्मगत जाति-पांत, छूआछात और ऊंच-नीच की विनाशकारी मान्यताओं को अपना लिया हमारे में सामाजिक बिखराव आ गया। इसके अतिरिक्त जब से हम धर्म के नाम पर वेद-विरुद्ध दार्शनिक मान्यताओं, अनेक-अनेक अन्ध विश्वासों, पाखण्डों, चमत्कारों, मिथ्यामाहात्म्यों और सामाजिक रूढ़ियों एवं कुरीतियों के शिकार बनें हमारी महान् आर्य (हिन्दू) जाति जर्जरित होकर इस घोर दुरवस्था को प्राप्त हो गई।

पर यह कैसे आश्चर्य की बात है कि हम रोग के कारणों को बिना दूर किये, इतना ही नहीं उन्हें और भी बढ़ावा देकर रोगी को स्वस्थ करना चाहते हैं। इस सन्दर्भ में मुझे कुं० सुखलाल 'आर्य मुसाफिर' की यह पंक्तियाँ याद आ रही हैं—

मुसाफिर वो नादां है मरने के काबिल,
जो रोग को ही दवा जानता है।

और सच में ही हमारी जाति मुर्दा हो गई है। पंजाब में, कश्मीर में, आसाम में कुछ होता रहे, हमें कोई कैसे ही तबाह करता रहे, हमारे पर जूं नहीं रेंगती! हिन्दू समाज को संगठित करने के लिये हमें अन्य रोगों के साथ उसके दो महारोगों-पहिले मत-पन्थ और सम्प्रदायों की बाढ़ और दूसरे जन्मगत जाति पांति के जंजाल को हटाना होगा। आज ये दोनों ही बढ़ रहे हैं। ब्रह्मा कुमारी मत, हंसा मत, वैष्णो देवी पन्थ, सन्तोषी माता पन्थ, जय गुरुदेव पन्थ, रजनीश पन्थ, सतसाई बाबा पन्थ, आनन्द मार्ग पन्थ और न जाने कितने मत-पन्थ बढ़ रहे हैं। इसी प्रकार जन्मगत जाति-भेद की कड़ियां और भी कड़ी हो रही हैं। और फल स्वरूप हिन्दू समाज असंगठित हो रहा है, उसका बिखराव बढ़ रहा है। हम विराट हिन्दू सम्मेलन आदि के नाम पर २-४ लाख या ५-७ लाख की भी भीड़ इकट्ठी करके इस धोखे के शिकार बन रहे हैं कि हिन्दू संगठित हो रहा है। क्या प्रयाग और हरिद्वार के कुम्भ पर इससे अधिक भीड़ इकट्ठी नहीं हो जाती? मीनाक्षीपुरम् आदि के हौवे से भीड़ इकट्ठीकर लेना और बात है संगठन दूसरी चीज है।

'एकात्मता यज्ञ' का उद्देश्य सम्पूर्ण हिन्दू समाज में एकता की अभिवृद्धि बताया गया है। पर क्या गंगाजल को गांव-गांव पहुंचाने भर से यह एकात्मता आ सकेगी? क्या गंगाजल के प्रति उसकी वास्तविक उपयोगिता की स्वीकृति से सर्वथा भिन्न अन्धविश्वास पहले ही कुछ कम था? श्रीराम ने आसुरी सभ्यता का सामना करने के लिए धनुष-बाण उठाया था। विविध प्रकार के अस्त्र-शस्त्रों का उपयोग महर्षि विश्वामित्र और महर्षि अगस्त्य के आश्रम में सीखा था। निषाद और भीलों को गले लगाया था, सम्पूर्ण वानर राष्ट्र में राष्ट्रीयता की ऊष्मा भरकर उसे खड़ा किया था। उन्होंने आसुरी सभ्यता का सामना करने के लिए इस प्रकार की अन्धविश्वास मूलक यात्रा निकालने का कोई उपक्रम नहीं किया था। राम एक धर्म ग्रन्थ वेद को मानने वाले वैदिक धर्मी थे। वे सन्ध्या-यज्ञ आदि पञ्च महायज्ञों का पालन करते थे। 'जपंतु परमं जपं' उस एक 'ओम्' का जप करते थे, अपने को आत्म-विश्वास पूर्वक 'आर्य' कहते थे, एक गुरुमन्त्र गायत्री का चिन्तन करते थे।

रामायण में हम पढ़ते हैं कि गणिका पुत्र वष्ठि महर्षि वशिष्ठ बन जाते हैं, बाल्माकि कहलाते हैं, विश्वामित्र क्षत्रिय कुल में जन्म लेकर भी राजर्षि और फिर ब्रह्मर्षि बनते हैं। दूसरी ओर रावण ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर, ऋषि-पुत्र होकर भी अनार्य या राक्षस कहलाता है। आखिर क्यों? क्योंकि उस समय 'वर्ण व्यवस्था' वेदानुकूल गुण-कर्म-स्वभाव पर आश्रित थी। श्री कृष्ण भी गीता में 'चातुर्वर्ण्यं मया सृष्टं गुण कर्म विभागशः' कह कर वर्ण—व्यवस्था को गुण-कर्माश्रित बनाते हैं। हमारे इतिहास ग्रन्थों और धर्म ग्रन्थों में 'पूजिय विप्र शील गुण हीना, शूद्र न पूजिय वेदप्रवीना' जैसी वेद-विरुद्ध मिलावटें कर दी गई हैं। चाहे वे रामायण में, महाभारत में अथवा मनुस्मृति आदि में कहीं भी हों उन्हें हमें साहस के साथ अलग करके एक तो जन्म मूलक जातिपांति की जगह गुण-कर्म स्वभावाश्रित शुद्ध 'वर्ण-व्यवस्था' को लाना होगा, दूसरे इन शताधिक मत-पन्थों की जगह एक वैदिक धर्म को अपनाना होगा और साथ ही अपनी राष्ट्रीय मृत्यु की कारण 'अनेकता में विशेषता' मानने की भ्रान्ति से बचना होगा तब सवर्ण और हरिजन जैसा वर्ग-भेद नहीं होगा, और तब सर्वत्र आर्य (हिन्दू) राष्ट्र का जय-जयकार होगा।

'विश्व हिन्दू परिषद्' ने 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' को अपना ध्येय वाक्य स्वीकार कर लिया है नमस्ते को अभिवादन और ओं (ओ३म्) को अपने ध्वज पर स्थान देकर उसे एकमात्र उपास्यदेव स्वीकार किया है। इसी क्रम में वेद को एकमेव धर्म ग्रन्थ और 'गायत्री' को गुरुमन्त्र स्वीकार करते हुए वैदिक वर्ण व्यवस्था को स्वीकृति देनी होगी। तब एक शूद्रकुल में उत्पन्न भी अपने गुणों और सत्कर्मों के कारण ब्राह्मणादि बन सकेगा और एक ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य कुलोत्पन्न आवश्यक गुणों के अभाव में शूद्र कहलायेगा। इस अवस्था में ब्राह्मणादि पर अंकुश रहेगा, शूद्रादि को उत्साह मिलेगा। सब में समता होगी, कहीं भी छूआछात और भेद-भाव नहीं होगा। न आरक्षण की समस्या होगी, न अन्य। तब राजनीति के इन धर्म निरपेक्षवादी खिलाड़ियों की 'फूट डालो और राज्य करो' की दुर्नीति भी समाप्त हो जायेगी। आर्य (हिन्दू) जाति के संगठन का, भारत के समुद्धार का और विश्व के कल्याण का एकमेव यही मार्ग है। 'नान्यः पन्था विद्यतेऽयनाय'

(शेष पृष्ठ ६ पर)

अजमेर में नया जहान देखा —२

(दीवान भीमसेन जी गुड़गांव)

पहली भेंट में निवेदन किया था कि अजमेर शताब्दी समारोह में महर्षि की आत्मा देखी। अतः इस लेख में यह कहने चला हूं, कि वहां महर्षि की आत्मा चारों ओर देखी। अच्छी प्रकार देखी बल्कि महर्षि की शान भी देखी। स्वागत करने, सत्कार देने का लेखा-जोखा उस महान् व्यक्तित्व के प्रति अनुकूल, प्रबन्ध कार्य-क्रम तथा करामात का सिलसिला देखा। देख-देख के यह कह डालने को, "ऐ महर्षि तेरी निराली शान का सामुहिक जज्बा देखा।" इतने बड़े समारोह को निभा देना खाला जी का घर नहीं था। सबसे प्रथम पण्डाल को ही लें। प्रबन्धकों द्वारा विशाल क्षेत्र योग्य मैदान का चुनाव लाखों की संख्या में समा लेने की क्षमता साधारण बात न थी। पण्डाल क्या था एक नगर सा लग रहा था। जिसमें एक ही प्रकार का कपड़ा एक ही प्रकार के झण्डे, एक ही प्रकार के जोड अनेक को एक ही विद्या अनुभव तथा विधि देखी। पण्डाल स्वयं ही एक अच्छे दिमाग़ का सुझाव था, फैलाव तथा फिटिंग थी। विस्तृत क्षेत्र ही महोत्सव की मुंह बोलती तस्वीर थी। फिर इतने बड़े पण्डाल को बिजली से पुरनूर कर देना, चिराग सा कर देना, टयूब लाइटों से सजा देना, मानो ऐसा लगता था जैसे प्रकाश का आकाश बना हो। भला हो राजस्थान सरकार का कि उसने एक ऐसे छोटे से बिजली घर का प्रबन्ध कर दिया था, कि स्वतन्त्रा से कार्य कार्यरत तथा थोड़ी सी देर के लिए भी बिजली फेल नहीं हुई।

हमारे यहां तो बिजली का लुप्त होना एक विचित्र खेल तमाशा है जिसे हम न चाहते हुए भी दृष्टि गोचर होते हैं। कड़वा घूंट पीकर रह जाना पड़ता है। और शर्म से सिर नीचा करना पड़ता है। पर कमाल उस महर्षि की शान का वहां नर-नारियों को यह बदमज़गी देखने को न मिली। बिजली का फेल न होना खालिस महर्षि का आर्शीवाद था जिसके परिणामत यात्री लोग न तंग हुए न निराश हुए न क्षुब्ध तथा न ही विघ्नता पूर्ण, सारे दिन सारी रात पण्डाल राजस्थानी दुल्हन की तरह सजा-सजाया शोभायमान था। यदि कहीं बिजली फेल हो जाती तो सारा पण्डाल अस्त-व्यस्त हो जाता। बदतमीजी का मैदान बन जाता। इस प्रकार योग्य प्रबन्ध से महर्षि की शान के अनुसार प्रबन्धकों द्वारा पण्डाल बना देना सजा देना बिजली से सुसज्जित कर देना इतना बड़ा कार्य था, जिसका वर्णन लेखनी से बाहर है। संक्षेप में इतना कह देना कि वह भी महर्षि की शान थी। महकमा के कर्मचारी अफसर सराहना के पात्र है जिन्होंने जनता को अच्छा उदाहरण पेश किया एवं महर्षि की आत्मा तथा उनकी महानता के दर्शन कराने का अवसर दिया। इसी तरह लाऊड स्पीकरों की नियुक्ति सेवा तथा प्रदर्शनी कोने २ से जाहिर थी। यह सब एक मुंहबोलती तस्वीर थी। एक महान् व्यक्तित्व को साक्षात करने का प्रयास तथा शान बना देना सचमुच एक अद्भुत् कला थी। एक कमाल था इन्हीं हालात और प्रबन्ध के लिए आर्य जनता शान्ति से बैठ पाई। सुन सुना पाई बिना किसी विघ्न के अपना अपना प्रवचन सुनने का लुत्फ उठा पाई और सौभाग्य प्राप्त कर सकी। मेरी इन उदगारों में रत्ती भर भी अत्युक्ति नहीं। जो कुछ भी कलम की नोक से लिख रहा हूं वह सदाक्त और वास्तविकता पर आधारित है। तथा स्वयं ही दृष्टी गोचर दृश्य अनुभव प्रस्तुत कर रहा हूं। ऐसे बहुत से अवसर देखे जबकि अंग्रेजी के मुहावरे के अनुसार पिनड्राप साइलेंस पाई गई। यह सारा विस्तार महर्षि की शान के अत्यन्त अनुकूल अपितु शान में दो पँख लगाते थे। यह अवस्था राजस्थान सरकार का तोहफा था। निस्वार्थ सेवा थी और विचार की कार्यकारिणी थी। इस जहान को निरालेपन से उचित करना प्रस्तुत करना मुझे बड़ा प्यारा लग रहा था। यह सब खूब देखा, खुद देख, स्वयं प्रभावित किया और शताब्दी में जहां महर्षि की सदात्मा देखी वहां उसकी शान को जिन्दा मिसाल देखी यह ख्यालात केवल लेख से ही नहीं अपितु वास्तविकताओं से पिरोय जा रहे है। लगा लगाया अधिवेशन देखा। विस्मयपूर्ण होकर देखा। उस रंग ढ़ग में महर्षि का जर्रा-जर्रा नवाज अजूबा देखा। इतने बड़े समारोह में शानदार प्रबन्ध ही था जो बिना किसी दुर्घटना के निर्वाण शताब्दी की महानता बना पाया। इसलिए तो दिल झूम उठा श्रद्धा से परिपूर्ण यह विचार लिपि बद्ध किए जा रहे हैं। किते कौम ते उपकार जहरा शान वालया ऋषि देवता स्वामी ऊंची शान वालेया। एवं ऋषि के प्रति अपनी कृतज्ञता तथा श्रद्धा को सम्मानित का सौभाग्य प्राप्त कर रहा हूं। समारोह की शान अजमेर वासियों ने खुब निभाई दिखाई, तथा पेश में जिस के बदले में आगन्तुकों की सरहाना विस्तृत प्रबंध सही तरह से महर्षि की शान के साथ था, योग्य था, उचित था। एक महान् आवश्यकता थी। असलियत के वस्त्र में सही आर्य में पेश करने की तस्वीर थी जो कुछ वहां प्राप्त हुआ अच्छा हुआ निर्विघ्न यज्ञ की समाप्ति हुई। सुंदर ढ़ंग सम्पन्न हुआ। तभी तो कहा कि अजमेर में एक नया जहान देखा दो लाख यात्रियों की आशा में बसाया नगर लगभग पांच लाख लोगों की संख्या को निभा पाने का एक वसीला देखा। अपनी अपनी आंखों देखा जो भुलाया नहीं जा सकता। न ही नजर अन्दाज किया जा सकता है। यह सारा वृतांत आर्य समाज के इतिहास का भाग बनेगा। स्मृति का विषय बनेगा, वास्तविकता का साक्षात्कार बनेगा जो सब मिलमिला कर महर्षि की निर्वाण शताब्दी का एक उदाहरण कहलाएंगा तथा मेरे बोल में मिल कर एक ही ध्वनि देगा कि अजमेर में निराला जहां देखा एक नई जमीन और नया आसमान देखा।

डाक विभाग की सुस्ती

रोहतक २३ नवम्बर आज यहां आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख पत्र सर्वहितकारी जो कि २१ नवम्बर १९८२ को भेजा गया था तथा दिनांक २३ नवम्बर १९८३ को सभा कार्यालय में वापिस आया है। इसे हम डाक तार विभाग की सुस्ती कहें या कुछ और ?

—रोहतास किशोर आर्य

आर्यसमाज की गतिविधियां

सिरसा में बाल दिवस मनाया गया

आय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा मे १४ नवम्बर को (बाल दिवस) भाषण प्रतियोगिता के रूप में बड़े हो धूमधाम से स्थानीय रोटरी कल्ब के सहयोग से मनाया गया। इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप मे ठाकुर बहादुरसिह जी M.L.A. हरयाणा विधान सभा एवं प्रो० सत्यवीरसिह विद्यालकार उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा उपस्थित थे। चल विजयो पहार राजकीय कन्या उच्च विद्यालय की छात्राओ ने प्राप्त किया। पुरस्कारो का वितरण प्रो० सत्यवीरसिह विद्यालकार सभा उपमन्त्री ने किया।

इस अवसर पर प्राचार्य श्री द्वारकाप्रसाद जिन्दल ने बालको को पंडित जवाहरलाल नेहरू व स्वामी दयानन्द के पथ पर चलने का आह्वान किया। विद्यालय प्रबन्धक डा० आर० एस० सांगवान तथा प्रो० सत्यवीर ने भी विद्यार्थियो को सम्बोधित किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार आर्य शिक्षण सस्थाएं स्वामी दयानन्द सरस्वती के सन्देश को गांव-गाव व नगर-नगर में फला सकती हैं।

आर्य समाज नगर सोनीपत का वार्षिक चुनाव

बाबू वेद प्रकाश एडवोकेट प्रधान, श्री पंजुराम आर्य उपप्रधान, श्री सत्य-देव शास्त्री मन्त्री, महासिह शास्त्री उपमन्त्री, कवरभान कोषाध्यक्ष, नित्यप्रिय पुस्ताकाध्यक्ष, देव प्रिय लेखानिरीक्षक।

वैदिक विवाह सम्पन्न

श्री रामपाल शास्त्री गांव निन्दाना (रोहतक) ने अपने योग्य सुपुत्र श्री जयप्रकाश शास्त्री का आयु० कुसुम सुपुत्री श्री कुडेराम गांव चिमनी से दि० २७।११।८३ को एक रुपया मात्र दान लेकर अनुकरण विवाह किया है। विवाह संस्कार श्री आचार्य राजकुमार शास्त्री ने विधि पूर्वक सम्पन्न कराया।

आर्यसमाज मन्दिरमार्ग नई दिल्ली का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग नई दिल्ली जो कि प्रादेशिक सभा की प्रमुख आर्य समाज है, और जिनके भवन में कई आर्य संस्थाओं के मुख्य कार्यालय है, का वार्षिकोत्सव ९-१० एवं ११ दिसम्बर ८३ को मनाया जाएगा। उत्सव से एक सप्ताह पूर्व से नित्य सांय ८ से ९ बजे तक स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज द्वारा वेद कथा एवं नित्य प्रात: ७ से ८ बजे तक श्री प० जैमनी जी शास्त्री एव पं० श्री दयाराम जी शास्त्री द्वारा गायत्री महायज्ञ करवाया जाएगा। शुक्रवार ९ दिसम्बर को स्त्री समाज का वार्षिकोत्सव शनिवार १० दिसम्बर को प्रात: दस बजे से २ बजे तक स्कूली बच्चो का सांस्कृतिक कार्यक्रम होगा, जिसकी अध्यक्षता हीरो साइकिल प्रा० लि० लुध्याना के डायरेक्टर श्री सत्यानद जी मुंजाल करगे उसी दिन सायकाल ७ बजे से अजमेर में मनाई गई महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह के बारे मे तैयार की गई फिल्म दिखाई जाएगी। रविवार ११ दिसम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। १० बजे से एक बजे तक विशेष उपदेश एवं प्रवचनों का कार्यक्रम होगा। एक बजे से दो बजे तक ऋषि लगर और उसके पश्चात् सांय ५ बजे तक केन्द्रीय आर्ययुवक परिषद् का सम्मेलन होगा। समस्त दिल्ली की आर्य समाजों से प्रार्थना है कि वे इस उत्सव में अवश्य पधारें।

कन्या गुरुकुल की स्थापना

ब्रह्मचारिणी कलावती ने अपनी जन्म भूमि गणियार त० नारनौल जि० महेन्द्रगढ़ में एक कन्या गुरुकुल की स्थापना की है। यह जिला महेन्द्रगढ़ का एकमात्र कन्या गुरुकुल है जिसका प्रथम स्थापना उत्सव ३०-३१ दिसम्बर तथा १ जनवरी १९८३ को होगा। —मन्त्री

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज झज्जर रोड रोहतक को एक योग्य पुरोहित की तत्काल आवश्यकता है। रहने के लिए मुफ्त आवास के अतिरिक्त योग्यतानुसार समुचित दक्षिणा दी जाएगी। शीघ्र सम्पर्क करें।

—डा० बैजनाथ कुन्द्रा

—प्रधान आर्य समाज झज्जर रोड रोहतक

शोक प्रस्ताव

दिनांक ११/११/८३ को महाशय श्यामसुन्दर आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जि० फरीदाबाद के कोषाध्यक्ष का दमारोग के कारण अचानक निधन हो गया। आप के निधन से आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर तथा इस क्षेत्र की सभी आर्य समाजों को भारी आघात पहुंचा है। आर्य समाज का दिवाना और महर्षि दयानन्द का पथ प्रशस्त करने वाला अस्त हो गया है जिसके स्थान की पूर्ति दुर्लभ है क्योंकि—आपका जीवन आरम्भ से ही आर्य समाज द्वारा सचालित आन्दोलनो में आहुतिय देते हुए बीता है। चाहे वह आन्दोलन निजाम हैदराबाद द्वारा सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी, हिन्दी रक्षा आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन रहे हैं। आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर व आर्य समाज हसनपुर के तो आप प्राण ही थे। तथा इस क्षेत्र के प्रथम स्वतन्त्रता सेनानी भी थे।

आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर की कार्य कारिणी शोक प्रकट करती है और दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई ईश्वर से प्रार्थना करती है कि उनके शोक संतप्त परिवार को इस हृदय विदारक दु:ख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे और दिवंगत आत्मा को सद्गति प्राप्त हो।

—मन्त्री आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जि० फरीदाबाद

(पृष्ठ ४ का शेष

देव दयानन्द की आँखें यही दिव्य दिन देखना चाहती थीं। इसी के लिए इन्होंने सौ वर्ष पूर्व आत्म बलिदान किया था और इसी के लिए उन्होंने एक क्रांतिकारी आन्दोलन के रूप में (किसी मत-पन्थ के रूप में नहीं) आर्यसमाज की स्थापना की थी। पर लगता है जैसे आर्यसमाज भी शेष हिन्दू समाज का दुमछल्ला बनकर रह गया है। आर्य जनों की भी तेजस्विता जगाकर इस दिशा में अपना कर्त्तव्य निभाना है। जन्मगत जाति भेद को क्रियात्मक रूप में मिटाकर 'शुद्धि-संगठन' का बिगुल बजाना है।

आयें, हम सभी आर्य (हिन्दू) भाई एक धर्म—वैदिक धर्म, एक देव-ओम्, एक धर्म ग्रन्थ-वेद, एक गुरुमन्त्र—गायत्री और एक अभि-वादन—नमस्ते को अपनाकर 'एकात्मता यज्ञ' को सफल करें और अपने आचरण से वह दिन लायें, जब—

कहेगा जगत् फिर से एक स्वर में सारा।
वही पूज्य भारत गुरु है हमारा॥

क्या आर्य समाज बलिदानियों को भूल रहा है

—ब्रह्मदत्त स्नातक ९।१४४ आर० के० पुरम नई दिल्ली-२२

मेरा इस प्रश्न का उत्तर हां में है। आर्य समाज एक विशिष्ट क्रान्तिकारी विचारधारा के लिए चलाया गया आंदोलन है। क्रान्ति के लिए बलिदान प्रथम आहुति है जो इसके प्रवर्त्तक ने अपने प्राणों से दी। इसके बाद शहीद ए आलम पं० लेखराम, महाशय रामचंद, महाशय धर्मपाल, भगत फूलसिंह एवं स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने अपने जीवन का बलिदान दिया। ये सब बलिदान साम्प्रदायिकता एवं जीर्ण-शीर्ण जाति प्रथा की बलि वेदी पर हुए। राजसभा के विरुद्ध भी आर्य समाज के लाला लाजपतराय और हजारों आर्य नर नारियों ने कारावास, जुर्माने और फांसी पर चढ़कर मूल्य दिया। पटियाला राज्य और धौलपुर रियासतों में भी आर्यों ने सविनय अवज्ञा और कारावास जुर्माने भुगते हैं। अपने धार्मिक अधिकार के लिए आर्य समाजियों को उस श्रेणी मे हमारी और हमारे नेताओं की शिथिलता के कारण उस आदोलन को अब तक (विचाराधीन) माना जा रहा है।

अब समय है कि प्रत्येक आर्य नर-नारी, युवक, व्यक्तिगत तौर पर अपनी समाजों, प्रतिनिधि सभाओं एवं जन प्रतिनिधियों के जरिए प्रस्ताव पास करके अपने राज्य की सरकारों एवं केन्द्रीय सरकार के गृहमंत्री को इस विषय में अविलम्ब अनुकूल निर्णय लेने पर विवश करें। इस अवसर को चूक जाने पर आर्य समाज की जीवनी शक्ति सदा के लिए लुप्त हो जाएगी। नेतृत्व को प्रेरित करना प्रत्येक आर्य का धर्म है और सारा उत्तरदायित्व उस पर छोड़ना सर्वथा अकर्मण्यता है।

इसके अतिरिक्त बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में आर्य समाज ने महात्मा नारायण स्वामी के नेतृत्व में अंग्रेजों के परम मित्र बलशाली निजाम (जिसे ब्रिटिश सरकार ने बाकायदा यह खिताब दे रखा था) कि रियासत में १० हजार सत्याग्रहियों (आर्य महिलाओं को इसमें तब भाग लेने से रोक दिया गया था) को भेजकर और जिसमें १४ व्यक्ति शहीद हुए थे अपनी तपस्या एवं संगठन शक्ति का परिचय दिया था। इसी प्रकार बाद में सिंध की मुस्लिम लीग सरकार के विरुद्ध आर्य समाज व समस्त राष्ट्रवादी तत्वों को साथ लेकर सत्याग्रह किया था। उक्त दोनों आंदोलन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में चलाए गए थे।

हैदराबाद सत्याग्रह में भाग लेने वाले १४ वर्ष के बालक वेंकटेश और २०-२५ वर्ष के युवाओं के अतिरिक्त प्रौढ़ एवं वृद्ध व्यक्ति थे। आज ४५ वर्ष के बाद उनमें से कुछ ही जीवित शेष हैं। श्रावणी के पूर्व पर मनाए जाने वाले समारोह में मुश्किल से १ प्रतिशत आर्य समाजियों को उन दिवंगतों एवं बलिदानियों का स्मरण या प्रेरणा आती है। जब समाज के घटक इनको भूल गए तो आज की समाज जिला उप समाएं, आर्य प्रतिनिधि समाएं, सार्वदेशिक सभा एवं परोपकारिणी सभा सभी कहां और कैसे इनको याद करेगी ? याद रखिए जो समूह या समाज अपने बलिदानियों को भुला देता या उपेक्षा करता है, वह स्वयं नष्ट हो जाता है।

हाल में स्वाधीनता सेनानियों का सम्मान-सहायता देने के बारे में भारत सरकार ने एक श्वेत पत्र जारी किया है। तदनुसार धार्मिक अधिकारों को पाने के लिए चलाए गए खिलाफत आंदोलन, गुरु का बाग, बब्बर अकाली आंदोलनों के अलावा काश्मीर रियासत में मुस्लिम कांफ्रेंस तथा जंगल सत्याग्रह नागपुर जैसे आंदोलनों में भाग लेने वालों को स्वाधीनता सेनानी माना जा चुका था। और तो और केरल की मुस्लिम लीग सरकार के बल पर चलने वाली राज्य सरकार के दबाव पर हिन्दुओं का नरसंहार करने वाले मोपलाओं (१९२१) को स्वाधीनता सेनानी माना गया। जबकि स्वाकारों एवं इत्तिहादुल मुसलमीन एवं निजाम शासन के अत्याचारों को सहने वाले हाल ही में एक सरकारी सूचना के अनुसार केन्द्रीय गृहमंत्रालय ने भूतपूर्व हैदराबाद राज्य के उन स्वतंत्रता सेनानियों को जिन्होंने राज्य के भारतीय संघ में एकीकरण के हेतु चलाए गए आंदोलन में भाग लिया था, उनके पेंशनों के आवेदानों की जांच के लिए समिति का गठन किया है। भूपूर्व हैदराबाद रियासत वर्तमान में आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों में विभाजित हो कर उनका अंग हो गई है। इस दृष्टि से इन तीनों राज्यों के एक एक सदस्यों को मिलाकर इन मामलों की जांच के लिए समिति बनी है और गृहमंत्रालय के स्वतंत्रता सेनानी प्रभाग के प्रभारी इसके संचालक नियुक्त किए गए हैं।

हाल ही में अजमेर में महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी पर सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन (५ नवम्बर ८३) में केन्द्रीय उद्योग मंत्री श्री नारायणदत्त तिवारी के भाषण के बाद वहा इस विषय में भी चर्चा हुई थी और उनकी सहमति से उक्त अवसर पर यह प्रस्ताव पारित किया गया कि हैदराबाद में १९३९ में आर्य समाज द्वारा चलाए गए आंदोलन को सामाजिक क्रान्ति एवं धार्मिक अधिकारों जो नागरिक स्वतंत्रता एवं राजनैतिक अधिकारों का प्रमुख अंग है, भी अन्य रियासतों की भांति भारत में विलय एव स्वाधीनता संग्राम का अंग माना जाय। इस सम्बन्ध में राष्ट्रीय पत्रों में प्रमुखता से समाचार प्रकाशित हुए हैं। अब समय आ गया है कि हैदराबाद में समाज द्वारा चलाए उक्त आंदोलन में जिसमें १० हजार पुरुष समस्त भारत से जेल में गए और १४ व्यक्ति शहीद हुए और सत्याग्रह की आधारभूत १४ मांगे सर्वथा स्वतंत्रता का अंग हैं, उनको भी इसमें शामिल किया जाय। देश की ६०० रियासतों का एकीकरण करने वाले लोह पुरुष एवं पूर्व गृहमंत्री सरदार वल्लभभाई पटेल ने विलय के अनन्तर प्रथम बार हैदराबाद पहुंचने पर सच ही कहा था, यदि आर्य समाज का १९३९ में हैदराबाद आंदोलन न हो तो हैदराबाद का विलय इतनी आसानी से न होता। इस घटना का विस्तृत विवरण हैदराबाद के शक्तिशाली नेता पं० नरेन्द्र जी की पुस्तक में दिया गया है।

अमृतदान और विषपान

लेखक—स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती

गुरुदेव दयानन्द आकर के, सत्य मार्ग पर चला गया।
हो करके विदा दिवाली को, घर घर में दीपक जला गया।।
देखा जो सूखा बाग पड़ा, कुमलाई थी डाली डाली।
इस बाग का माली बन करके, जीवन भर कीनी रखवाली।।
सरसब्ज किया आकर फिर से, वह पुष्प चमन में खिला गया।
होकर के विदा दिवाली को, घर घर में दीपक जला गया।।
इस देश की नारी जाति को, जूती सम समझा जाता था।
कहकर डण्डे की अधिकारी, अपमान कराया जाता था।।
नारी को वेद पढ़ाकर के वह ऊंचा दर्जा दिला गया।
होकर के विदा दिवाली को, घर घर में दीपक जला गया।।
मानव से मानव वंचित कर, दूर दूर चिल्लाते थे।
जो बने विधर्मी धर्म त्याग, चोटी अपनी कटवाते थे।।
वह उनको शुद्ध करा करके, भाई से भाई मिला गया।
हो करके विदा दिवाली को, घर-घर में दीपक जला गया।।
छल कपट से भोली जनता को, जो लूट लूट कर खाते थे।
गुरुडम भगती का पाठ पढ़ा पूजा अपनी करवाते थे।।
अज्ञान मिटा करके सारा, वह बड़ पाखण्ड को हिला गया।
हो करके विदा दिवाली को घर घर में दीपक जला गया।।
था दया का सागर दयानन्द, दया अन्त में दिखलाई।
प्राणों के घातक जगन्नाथ को, थैली धन की पकड़ाई।।
कहें "स्वरूपानन्द" जो ऋषि को, जहर दूध में पिला गया।
होकर के विदा दिवाली को घर घर में दीपक जला गया।।

विश्व हिन्दू परिषद् और आर्यसमाज कुछ मौलिक मतभेद और सिद्धान्त

महर्षि दयानन्द ने वेद को स्वतः प्रमाण स्वीकार करके वेदानुकूल जीवन पद्धति एवं एक ईश्वरवाद के प्राचीन सिद्धान्त को मानते हुए सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रतिपादन दिया—

दयानन्द की सूक्ष्म दृष्टि मत, पंथ, सम्प्रदाय और मजहब के दायरे से ऊपर उठकर मनुष्य मात्र को वैदिक धर्म के झण्डे के तले लाकर सुदृढ़ भित्ति पर आर्य धर्म की परम पुरातन गरिमा को प्रस्थापित कर उसी के प्रसार-प्रचार के लिए आर्यसमाज की स्थापना की थी। फलतः आर्य-समाज कोई धर्म; पंथ, सम्प्रदाय, मत अथवा मजहब नहीं—प्राचीनतम एवं वेदमूलक सत्य सनातन वैदिक धर्म के विशुद्ध सिद्धान्तों का प्रचार करने का एक आन्दोलन है।

अतः आर्यसमाज की विकृत हिन्दू समाज के मत-मतान्तरों में गणना करना न्याय संगत नहीं है।

विश्व हिन्दू परिषद्-नास्तिक; आस्तिक, मांसाहारी तथा शराबी द्वैत तथा अद्वैतवादी, शुद्धाहारी, एक ईश्वरवादी तथा अनेक देवतावाद को मानने वाले सबको हिन्दू धर्म का अंग मानकर सभी मतभेद रहते हुए भी एक करना चाहता है। जबकि आर्यसमाज कुछ मौलिक तथा वेद परक सिद्धान्तों को मानकर गंगा के उस जल को ही पवित्र मानता है जो गंगोतरी से निकल रहा है। आर्यसमाज हुगली के मिलावटी पानी को गंगा जल मानने को तैयार नहीं। उसकी दृष्टि में मानवमात्र को वेद के प्राचीनतम सिद्धान्तों के माध्यम से स्वच्छ-धार्मिक जीवन पद्धति की ओर ले जाना है जिसको स्वीकार करके विदेशी और विधर्मी विचारधारा का सामना किया जा सके। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

विश्व हिन्दू परिषद् को कोई निश्चित विचारधारा नहीं

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि भारतीय जनता पार्टी के राजनैतिक दल को बल देने के लिए ही विश्वहिन्दू परिषद् कार्य रत है। विश्वहिन्दू परिषद् जैन, बौद्ध, हिंसक तथा अहिंसक, एक ईश्वरवाद तथा अनेक देवतावाद ब्रह्मकुमारी, हसामत, बालयोगेश्वर, सांईबाबा; संतोषी माता, आचार्य रजनीश आदि योग और भोग सभी को हिन्दू धर्म का अंग मानता है।

वस्तुतः हिन्दू धर्म अपने आप में धर्म शास्त्र के आधार पर कोई निश्चित धार्मिक सगठन नहीं है। विश्वहिन्दू परिषद् अनेक मतभेदों एवं विभिन्न सिद्धान्तों एवं मान्यताओं की छाया में जर्जरीभूत-ऊंच-नीच, छूत-छात, जात-पात और प्रान्तीयता आदि के आवरण से ढके हुए मरीज रूपी हिन्दू धर्म जिसकी चर्चा वेद से लेकर विष्णु सहस्रनाम तक धार्मिक साहित्य में कहीं नहीं मिलती बिना सुधार किए उसी के सहारे हिन्दू जाति को ऊंचे शिखर पर ले जाने में प्रयत्नशील है। जबकि आर्य समाज रूढ़िवाद, पाखण्ड और ऊंच-नीच, छूत-छात आदि के मतभेदों को मिटाकर हिन्दू जाति रूपी शरीर को समस्त बीमारियों से मुक्त करके मजबूत नींव पर आर्य धर्म की पुरातन परम्परा की सुरक्षा करके इसे विदेशी और विधर्मी आक्रमणों से बचाकर स्वधर्म और स्वदेश की गौरवमई धारा में स्नान कराकर अमर करना चाहता है।

संक्षेप में आर्यसमाज गंगोतरी के पवित्र जल को ही गंगाजल मानता है, हुगली के दूषित और गंदे पानी को नहीं। यही भेद विश्व-हिन्दू परिषद् एवं आर्यसमाज में है।

यदि विश्वहिन्दू परिषद् जैसा संगठित समुदाय आर्यसमाज की विचारधारा मानकर परम पुरातन सत्य सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को अंगीकार कर ले तो शीघ्र देश और समाज का कल्याण हो सकता है। —शशिकान्त आर्य चीराखाना, चांदनी चौक, दिल्ली।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक-रणवीर शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३ १४ दिसम्बर १९८३ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

प्रो० शेरसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सर्वसम्मति से पुन. प्रधान निर्वाचित। वेदप्रचारादि के लिए ८४४९२० रु० का बजट स्वीकार किया गया।

रोहतक—११ दिसम्बर ८३ आज यहां सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक मे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक अधिवेशन में हरयाणा के कोने कोने से ५०७ प्रतिनिधियो ने भाग लिया। प्रदेश मे आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ करने तथा वेदप्रचार, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा, सर्वहितकारी साप्ताहिक, सिद्धान्ती स्मारक तथा साहित्य प्रकाशन आदि के ८४४९२० रु० का बजट स्वीकार किया गया।

आगामी वर्ष के लिए पूर्व रक्षा राज्यमंत्री प्रो० शेरसिंह को पुनः सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। शेष पदाधिकारियो, अन्तरंग सदस्यो को मनोनीत करने का अधिकार भी सर्वसम्मति से दिया गया। विचार विमर्श के पश्चात् उन्होने शेष अधिकारियो की निम्न प्रकार घोषणा की— १- प्रधान—प्रो० शेरसिंह २- उपप्रधान—चौ० माङ्गसिंह मलिक (कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत) ३- श्री रामानन्द सिंगला (पानीपत जि० करनाल) ४ श्री सत्यदेवसिंह (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) मन्त्री—डा० रणजीतसिंह (नारनौंद जि० हिसार) ६- उपमन्त्री—प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार (तिहाड जिला सोनीपत) ७- उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य (हरिसिंह कालोनी, रोहतक) पुस्तकाध्यक्ष—श्री बलदेवकृष्ण आर्य (होली मोहल्ला करनाल) कोषाध्यक्ष—कन्हैयालाल महता (नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद)।

अन्तरंग सदस्य

१०- स्वामी ओमानन्द सरस्वती (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) ११- स्वामी रामेश्वरानन्द (गुरुकुल गुरुकुल घरौंडा जि० करनाल) १२- डा० दलीपसिंह आर्य (पानीपत जि० करनाल) १३- मा० लछमनदास बल्लबगढ १४- श्री वेदव्रत शास्त्री (गुरुकुल झज्जर-रोहतक) १५- म० भरतसिंह वानप्रस्थी (झज्जर रोड रोहतक) १६- डा० हरिप्रकाश (कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी) १७- मा० पन्नालाल आर्य (कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी) १८- वैद्य रामलाल आर्य (यमुनानगर जि० अम्बाला) १९- श्री सत्यपाल आर्य (बंकमपुर जिला गुडगाव) २०- राजेन्द्रसिंह एडवोकेट (फरीदाबाद) २१- श्री बलदेवसिंह आर्य (सिरसा) २२- श्री सुमेरसिंह आर्य (स्वरूपगढ जि० भिवानी) २३- म० ताराचन्द आर्य (नारनौल जि० महेन्द्रगढ) २४- मा० बद्रीप्रसाद आर्य (जीन्द शहर) २५- श्री सुखराम आर्य (रेवाडी जि० महेन्द्रगढ) २६- श्री राजकुमार आर्य (नरवाना जिला जीन्द) २७- श्री पञ्चूराम आर्य (सोनीपत नगर) २८- श्री किशनसिंह एडवोकेट (कैथल जिला कुरुक्षेत्र) २९- म० फतहसिंह भण्डारी (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) ३०- श्री साधुराम आर्य (लाडवा जि० कुरुक्षेत्र) ३१- बहन सुभाषिणी देवी (कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत) ३२- श्री सुरेन्द्रसिंह (बेरी आसरा जिला रोहतक) ३३- प्रो० सत्यवीर शास्त्री (डालावास जि० भिवानी) ३४- प० फूलचन्द शर्मा निडर (भिवानी) ३५- श्री रमेश्वरदत्त मंगला एडवोकेट (पलवल जिला फरीदाबाद)।

विशेष आमन्त्रित

१- श्री भरतसिंह (दूबलधन जि० रोहतक) २- श्री राममेहर एडवोकेट (बाबरा मोहल्ला रोहतक ३ श्री रणबीरसिंह शास्त्री (आसन जिला रोहतक) ४- श्री रणबीरसिंह शास्त्री (गढी बाहर जि० रोहतक) ५- श्री सत्यवीरसिंह शास्त्री (गढी बाहर जि० रोहतक ६ रामचन्द्र आर्य (आर्यनगर सोनीपत) ७- श्री महेश्वरसिंह शास्त्री (कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत) ८ आचार्य ऋषिपाल (आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखी दादरी जि० भिवानी) ९- दीवान भीमसेन (न्यू कालोनी गुडगाव) १०- श्री हरिराम आर्य (कारौली जिला रोहतक) ११- श्री सत्यवीरसिंह आर्य (मदाना जि० रोहतक) १२- श्री भरतसिंह शास्त्री (लौहारू जि० भिवानी) १३- श्री सत्यदेव शास्त्री (सोनीपत नगर) १४- श्री प्रतापसिंह शास्त्री (जीन्द शहर) १५- प्रि० लाभसिंह (सिवाह त० पानीपत जि० करनाल) १६- ब्र० विरजानन्द (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) १७- श्री महावीरसिंह आर्य (बोहर जि० रोहतक) १८- ब्र० सत्यवीर (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) १९- मा० कंवलसिंह (चरखी दादरी जि० भिवानी) २०- डा० मनोहरलाल आर्य (कैथल जि० कुरुक्षेत्र) २१- मा० जिलेसिंह आर्य (खरक जाटान जि० रोहतक) २२ प० दरयावसिंह आर्य (रोहणा जि० रोहतक) २३- श्री रिसालसिंह एडवोकेट (झज्जर जि० रोहतक) २४- रिसलदार इन्द्रसिंह (घोड जि० रोहतक) २५- म० चन्दूलाल (गुगोढ जिला रोहतक) २६- ठाकुर प्रतापसिंह (वराणी जि० रोहतक) २७- श्री धर्मसिंह राठी एडवोकेट (मनाना करनाल) २८- डा० अमरसिंह (मदानाकलां जि० रोहतक) २९- स्वामी रुद्रवेश (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) ३०- मा० दीपचन्द आर्य (कासनी जि० रोहतक) ३१- चौ० गेन्दाराम (छोटा माडल टाउन यमुनानगर) ३२- बाबू दरयावसिंह सहवाग (बैरी मोहल्ला रोहतक) ३३- वैद्य ताराचन्द आर्य (खरखौदा जि० सोनीपत) ३४- श्री बनवारीलाल आर्य (बैरी मोहल्ला रोहतक)।

सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि

१- स्वामी ओमानन्द सरस्वती २- प्रो० शेरसिंह ३- प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार ४- श्री चन्द्रपाल राणा ५- श्री हरकिशन सिंह मलिक ६- महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ७- डा० रणजीतसिंह ८- श्री सत्यवीर आर्य ९- बाबू उदमीराम एडवोकेट १०- डा० योगानन्द ११- वैद्य भरतसिंह आर्य १२- श्री भरतसिंह शास्त्री १३- श्री सुखबीरसिंह आर्य १४- श्री सत्यवीर शास्त्री १५- श्री कृष्णलाल बधवा।

आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगडी हरिद्वार

१- स्वामी ओमानन्द सरस्वती २- प्रो० प्रकाशवीर विद्यालंकार ३- प्रो० शेरसिंह ४- डा० हरिप्रकाश ५- म० प्रभाकशोधा विद्यालंकार ६- श्री महेश्वरसिंह शास्त्री ७- डा० यज्ञवीर ८- प्रो० वेदव्रत विद्यालंकार ९- डा० रणजीतसिंह।

(शेष पृष्ठ ३ पर)

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की सफलता पर बधाई तथा धन्यवाद

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह ३ से ६ नवम्बर अजमेर में देशदेशान्तर और द्वीप द्वीपान्तरों को आर्य जनता ने मिलकर बड़े उत्साह से मनाया। इस लिए जो सफलता इस महोत्सव को हुई उसे शब्दों में न लेखनी लिख सकती, न ही वाणी इसका बखान कर सकती है। इसलिए आर्यजगत् पत्र ने लिखा "अजमेर में ३ से ६ नवम्बर तक महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह जिस शान के साथ सम्पन्न हुआ उसे देखकर प्रत्येक के मुंह से यही निकला "न भूतो न भविष्यति" अर्थात् ऐसा समारोह इससे पहले न कभी हुआ न कभी होगा।

परोपकारी पत्रिका में अपने सम्पादकीय लेख में २५ नवम्बर को पं० धर्मवीर जी स्नातक लिखते हैं। "समारोह को सफलता के लिए अब कुछ कहना वा लिखना आवश्यक नहीं यह तो आज जन-जन को चर्चा का विषय है। जिसने भी इस समारोह को देखा है उसके लिए यह जीवन की अविस्मरणीय घटना है। यह सफलता किसी व्यक्ति अथवा किसी एक संस्था की सफलता नहीं है यह तो आर्य जनता की, ऋषि भक्तों की सफलता है जिन्होंने अपने संकल्प को मूर्त रूप दिया। किसी भी क्षेत्र में काम करने वाले लोगों के लिए यह पाठ स्मरणीय होना चाहिए, उनकी सहायता के बिना सफलता की सीढ़ियां चढ़ जाना सरल कार्य नहीं है। जनता का पक्ष यह था कि यह समारोह अजमेर तथा दीपावली के शुभ अवसर पर मनाया जाय। इस संकल्प को जो दूरदर्शितापूर्ण था, समारोह के आयोजकों ने इसे स्वीकार किया जिससे देश की आर्य जनता ने तन मन धन से अभूतपूर्व सफलता प्रदान की। इसी प्रकार व्यक्तिगत अनेक पत्र इस विषय में अनेक सज्जनों के प्राप्त हुए। कुछ पत्रों के उद्धरण नीचे दे रहा हूं। आर्यप्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान जी का पत्र नीचे दे रहा हूं।

पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज,
गुरुकुल नरेला (दिल्ली)

सप्रेम नमस्ते;

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर की अभूतपूर्व सफलता आपके कुशल निर्देशन का ही फल है। आर्यजगत् के आप मूर्धन्य संन्यासी हैं। आपके त्यागमय जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर देश-विदेश के आर्य नर नारी धन्य हो गये। कृपया शताब्दी की पूर्ण सफलता के लिए मेरी हार्दिक बधाईयां स्वीकार करें।

सादर

भवदीय
कैलाशनाथसिंह
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश लखनऊ

श्री प्रो० महावीर जी देहली से लिखते हैं।

आदरणीय स्वामी जी महाराज,

सादर नमस्ते,

न केवल आर्य जगत् अपितु सभी देशवासी और विदेशवासी महर्षि दयानन्द के ऋणी हैं। आपने उस महापुरुष की निर्वाण शताब्दी का आयोजन किया। अतः आप सभी की ओर से बधाई के पात्र हैं।

महावीर
पश्चिमी विहार देहली-६३

लुधियाना से वैद्य कुन्दनलाल जी लिखते हैं।

ओ३म्

बी./ऐक्स ३५४ चौड़ी सड़क लुधियाना
२१-११-१९८३

आदरणीय स्वामी जी,

सादर नमस्ते,

आप सारे आर्यजगत् की ओर से बधाई के पात्र हैं कि आपने निर्वाण शताब्दी समारोह पर सुचारू रूप से हर प्रकार का प्रबन्ध किया, जिस से यह समारोह निहायत ही सफल रहा।

शुभचिन्तक
कुन्दनलाल वैद्य

पं० चन्द्रसेन आर्य वैदिक मिशनरी सोनीपत से लिखते हैं:—

आदर्श सुधारक
पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी महाराज,
चरण वन्दना,

आशा है आप आनन्द से होंगे।

अजमेर में निर्वाण शताब्दी जो मनाई गई और अति शोभा से हुई इस महान यज्ञ की महान सफलता का सेहरा आपको है। सारा विश्व आर्य संसार आपकी सराहना कर रहा है। आप स्वामी श्रद्धानन्द जी और महात्मा हंसराज जी से पीछे नहीं, बल्कि आगे बढ़ गये हैं। यह एक सच्चाई है। मैंने यहां से आने वाले सभी यात्रियों से यशोगान सुना है। मैं पुन: आपको लाख-लाख बधाई देता हूं। मान्य प्रो० शेरसिंह जी भी सारे आर्य जगत् में आपके कारण चमक उठे। मुझे इनकी लगनशीलता को देखकर स्व० आचार्य रामदेव जी याद आते हैं। इस शताब्दी की सफलता में सभी प्रान्तों की सभाओं में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का सब से आगे योगदान देने वालों में प्रधान है। इसका कारण भी आप हैं।

पवित्र चरणों का सेवक;
चन्द्रसेन आर्य वैदिक मिशनरी, ११/५३ दिल्ली रोड, सोनीपत

इसी प्रकार आर्य मर्यादा पत्रिका पंजाब आर्यमित्रमार्तण्ड राजस्थानादि आर्यपत्रों ने बधाई के लेख लिखे हैं। पत्र भी पर्याप्त संख्या में अनेक आर्य सज्जनों के सफलता पर बधाई के पत्र मिले हैं। लेखों और पत्रों में प्राय: अतिशयोक्ति तो होती ही है आदर और प्रेम की भावना से प्राय: अधिक ही लिखा जाता है। किन्तु यह एक सत्य है कि महर्षि निर्वाण शताब्दी की सफलता "न भूतो न भविष्यति" के अनुसार ही है। यहां तक जो व्यक्ति पहले अजमेर में इस समारोह की अभूतपूर्व सफलता को देखकर दान्तों तले अंगुली दबा कर रह गये। वहां क्या हुआ देखने वालों ने अपनी आंखों से देख लिया और इस समारोह की सफलता को देखकर आश्चर्यचकित रह गये। किन्तु यह सफलता मेरी या किसी अन्य व्यक्ति की नहीं न ही किसी संस्था विशेष परोपकारिणी सभा वा आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा की है। यह तो सफलता सारी आर्य जनता की है। अथवा महर्षि दयानन्द के सभी भक्तों की है। महर्षि दयानन्द जी महाराज जी का तप ही इसमें मुख्य सफलता का कारण है। सबसे अधिक सहयोग इसकी सफलता में आर्ययति मण्डल का है। जिसके प्रधान पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी महाराज एक विद्वान तपस्वी संन्यासी महात्मा हैं। इनके आदेश अनुसार सभी नैष्ठिक ब्रह्मचारियों वानप्रस्थियों तथा सन्यासी महात्माओं ने घोर तपस्या और पुरुषार्थ से सफल बनाया। सहयोगी सारी आर्य जनता है। सभी बधाई के पात्र हैं। मैं अकेला नहीं।

ओमानन्द सरस्वती
प्रधान
परोपकारिणी सभा

आर्यसमाज की गतिविधियां

टंकारा में ऋषि मेला २७, २८ एवं २९ फरवरी १९८४ को मनाया जाएगा

हर वर्ष की भांति टंकारा में ऋषि मेला आगामी २७, २८ एवं २९ फरवरी १९८४ को मनाया जाएगा। यह मेला ऋषि जन्मस्थली टंकारा में प्रतिवर्ष हर्षोल्लास एवं धूमधाम से मनाया जाता है। इस मेले में भारत एवं विदेशों से हजारों ऋषिभक्त काफी संख्या में पधारते हैं। वहां पधारने वाले ऋषिभक्तों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था ट्रस्ट द्वारा नि:शुल्क की जाती है। उत्सव के एक सप्ताह पूर्व से चतुर्वेद पारायण यज्ञ आरम्भ हो जाता है।

मेरी समस्त आर्यसमाजों से है कि वे ऋषि मेले के लिए अपनी तैयारी अभी से आरम्भ कर दें। इस समय टंकारा ट्रस्ट के तत्वावधान में वहां पर अनेक कार्य चल रहे हैं—अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गोशाला, महर्षि दयानन्द चित्रशाला, सार्वजनिक पुस्तकालय तथा वाचनालय, वेदप्रचार विभाग आदि। इन कार्यों पर एवं ऋषि मेले पर ट्रस्ट का प्रतिवर्ष काफी व्यय हो जाता है। आपसे यह भी प्रार्थना है कि टंकारा के लिए अधिक से अधिक राशि दान देने की कृपा करें। ये राशि 'महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा' सौराष्ट्र गुजरात-363650 के पते पर अथवा 'टंकारा सहायक समिति' दिल्ली के पते पर चैक/ड्राफ्ट (केवल खाते में) द्वारा भेज सकते हैं। ये राशि आप मनीआर्डर द्वारा भी टंकारा सहायक समिति के कार्यालय-आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग—नई दिल्ली के पते पर भेजने की कृपा करें।

रामनाथ सहगल मंत्री ट्रस्ट

आदर्श विवाह

ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश के चतुर्थ समुल्लास के प्रारम्भ में मनु का वचन उद्धृत करते हुए लिखा है कि अक्षय स्वर्ग अर्थात् मोक्ष की कामना वाले स्त्री पुरुष को गृहस्थ आश्रम का भली भांति पालन करना चाहिए, जो कि इस लोक में भी सुखदायक है। इस प्रकार वैदिक विवाह का प्रयोजन लोक एवं परलोक में नित्य सुख की प्राप्ति है, इस उदात्त भावना से ही गृहस्थ में प्रवेश करना चाहिए, जिसके लिए ब्रह्मचर्य आश्रम की उत्तम शिक्षा आवश्यक है। हरयाणा, दिल्ली, देहात एवं राजस्थान में अपने प्रारम्भिक जीवन में वैदिक धर्म का प्रचार व प्रसार करने वाले तथा वर्तमान कन्या गुरुकुल नरेला के मन्त्री श्री वैद्य कर्मवीर आर्य ने अपनी कन्या कु० शशीप्रभा शास्त्री एम. ए. को गुरुकुल नरेला में सुशिक्षित करवा कर उसका विवाह श्री मा० चरणसिंह जी एम. ए. अध्यापक राजकीय विद्यालय शाहदरा दिल्ली के सुपुत्र चिरंजीव श्री सुरेन्द्र मोहन इन्जीनियर के साथ वैदिक विधि पूर्वक 28-11-83 को करवाया। पाणि-ग्रहण संस्कार आर्यसमाज नरेला के पुरोहित द्वारा सम्पन्न किया गया। संस्कार के कार्य में दोनों पक्षों के सज्जनों ने बड़ी रुचि और प्रसन्नता प्रकट की।

प्रातःकाल यज्ञ के अन्त में कन्या गुरुकुल नरेला के कुलपति पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने अपने प्रवचन में कन्या को गृहस्थ धर्म का उपदेश एवं आशीर्वाद दिया तथा दयानन्द ग्रन्थमाला [दोनों भाग] उपहार के रूप में दिए। बाद में गुरुकुल की 200 कन्याओं एवं कुलवासियों को भोजन कराया गया। 1100 रु. कन्या गुरुकुल नरेला, 501) स्वामी ओमानन्द जी को ताम्रपत्र ग्रन्थों के लिए 101), आर्य समाज नरेला 101), आर्यसमाज नरेला कालोनी 101, आर्यसमाज बांकनेर 101), आर्यसमाज बेरी [हरयाणा] 101; श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती स्मारक, रोहतक 101; आर्य पुरोहित नरेला [दक्षिणा] 101; वर के पिता श्री मा० चरणसिंह एम. ए. ने कन्या गुरुकुल नरेला के लिए दान दिये एवं वर वधू के कल्याण हेतु परमात्मा से मंगल कामना करता हूं।

देवेन्द्रनाथ शास्त्री पुरोहित

पुस्तक समीक्षा

ओंकार महिमा

विगत सप्ताह सर्वहितकारी कार्यालय को सतत साहित्य सेवी श्री यशपाल आर्य बन्धु लिखित ओंकार महिमा नामक 28 पृष्ठों का एक ट्रैक्ट प्राप्त हुआ है। आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी, मुरादाबाद [उ० प्र०] ने इसे प्रकाशित कराया है। इस सम्बन्ध में पाठक को जो बोध है वह यह, कि इस युग में भी जबकि मंहगाई आसमान को छू रही है तथा लोग वर्षों पूर्व साधारण से खर्च में छपी पुस्तकों पर भी झूठी मोहरें लगा-लगाकर इनका मूल्य बढ़ाकर साहित्य से धनोपार्जन में जुटे हैं, पुस्तिका के प्रकाशक उक्त आर्यसमाज के अधिकारियों ने स्वाध्याय के प्रति पाठकों में सुरुचि उत्पन्न करने की दृष्टि से इस बहुमूल्य पुस्तिका को बिना मूल्य के ही पाठकों के हाथों तक पहुंचाने का उपक्रम किया है जिसके लिए निःसंदेह आर्यसमाज रेलवे हरथला कालोनी मुरादाबाद अपने अधिकारियों के माध्यम से बधाई एवं धन्यवाद दोनों का पात्र है। हां अधिकारियों ने सब पुस्तिका पाठकों के सौंपते समय इसके स्वाध्याय द्वारा लाभान्वित होने की दशा में आगामी प्रकाशन हेतु यथाशक्ति सहयोग की अपेक्षा है जिसे पाठक अवश्य पूरा करेंगे ऐसी आशा है।

(पृष्ठ १ का शेष)

आर्य विद्या सभा हरयाणा

१—स्वामी ओमानन्द ((गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक) २—चौ० सत्यवीर शास्त्री (डालावास जिला भिवानी) ३—श्री बलवानसिंह आर्य (टटौली जिला रोहतक) ४—श्री रामेहर एडवोकेट (रोहतक) ५—मा० खजुराम आर्य (आर्यनगर सोनीपत) ६—मा० निहालसिंह आर्य (दिसावर खेड़ी रोहतक) ७—श्री धर्मचन्द्र शास्त्री (कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत) ८—वैद्य रतिराम (होली मोहल्ला करनाल) ९—श्री मनुदेव शास्त्री (चरखीदादरी जि० भिवानी १०—श्री भद्रसेन शास्त्री (कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत ११—आचार्य ऋषिपाल आर्य (आर्य हिन्दी महाविद्यालय चरखीदादरी) १२—श्रीमती सत्यवती आर्या (जुआं जि० सोनीपत) १३—श्री छबीलदास आर्य (जीन्द शहर) १४—ब्र० विजयपाल (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) १५—ब्र० विरजानन्द (गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक) १६-श्री श्यामलाल आर्य (गुड़गांव) १७—सेठ रामभूर्ति (कैथल) १८—श्री कपिलदेव शास्त्री (कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत) १९—श्री धर्मदेव विद्यार्थी (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) २०—स्वामी जीवनानन्द (बेरी) २१- ब्र० जीवानन्द (गुरुकुल झज्जर) २२-ब्र० रामतीर्थ शास्त्री (गुरुकुल कुरुक्षेत्र) २३-मा० दीपचन्द (कासनी) २४-स्वामी विद्यानन्द (गुरुकुल गदपुरी जि० फरीदाबाद) २५-श्री धर्मसिंह राठी एडवोकेट (मनाना जि० करनाल) २६-आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र (पदेन) २७-आचार्य गुरुकुल भैंसवाल जि० सोनीपत (पदेन)

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरग सभा, विद्यासभा आदि को बैठक २५ दिसम्बर ८३ रविवार को प्रात: ११ बजे सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक में होनी निश्चित हुई है। सभी सदस्य पधारें। रणजीतसिंह सभामन्त्री

भूल सुधार

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के वार्षिक कार्य वृत्तांत में अन्तरग सदस्यो की सूची में श्री चन्द्रपाल राणा तथा सभा उपदेशकों की सूची में पं० धर्मचन्द विद्यालकार का नाम भूलवश प्रकाशित होने से रह गया जिसके लिए खेद है। कार्यालयाध्यक्ष

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन; दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह   सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री,   सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ६   १४ दिसम्बर १९८३   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे



श्रद्धानन्द उवाच

जीवन का मूल मन्त्र—श्रद्धा

मेरे अन्तःकरण में निराशा की लहर जब कभी उठती है उसी समय श्रद्धासागर में विलीन हो जाती है। मेरा जीवन आशातीत व्यतीत हुआ है। इसलिए जब तक दम में दम है तब तक मनुष्य को बेदम नहीं होना चाहिए। यह मेरा सिद्धान्त है।

(कल्याण मार्ग के पथिक की भूमिका से)

उठो ! चेतो !!

जगत् पिता तुम्हारे अन्दर विराजमान हैं। उनकी अनन्त शक्ति अपने अनन्त बल से तुम्हारी आत्मा को प्रकाश देने के लिये तैयार है। उसके प्राप्ति के साधन भी तुम्हारे अन्दर ही उपस्थित हैं फिर क्यों अज्ञान सागर में डूबे हुए हम सब इधर हाथ-पैर मार रहे हैं ? उठो ! चेतो !! अमूल्य समय व्यर्थ जा रहा है।

(धर्मोपदेश भाग १, पृष्ठ ५६।)

धर्महित मरना सिखा के चल दिए

(श्रद्धानन्द गुण-गान)

स्वामी स्वरूपानन्द जी

अधिष्ठाता वेद प्रचार दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, नयी दिल्ली

गोलियां सीने पै खा के चल दिये।
प्यास कातिल की बुझा के चल दिए।

रक्त से वैदिक बगीचा सींच कर।
धर्म हित मरना सिखा के चल दिए॥ १॥

झुक रही संगीन सीनों सामने।
कदम आगे को बढ़ा के चल दिए॥ २॥

गमाटट बगल में मंगल कर दिया।
कांगड़ी गुरुकुल बना के चल दिए॥ ३॥

जामा मस्जिद पै खड़े हो एक दिन।
वेद ध्वनि सबको सुना के चल दिए॥ ४॥

पाठ एकता का पढ़ाया आपने।
चक्र शुद्धि का चला के चल दिए॥ ५॥

भाई से भाई मिलाया था गले।
प्रेम की गंगा बहाके चल दिए॥ ६॥

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द सन्यासी

—स्वामी वेदमुनि परिव्राजक

अध्यक्ष वैदिक संस्थान नजीबाबाद उत्तरप्रदेश

ब्रिटिश सरकार द्वारा बनाये गये रोलट एक्ट का विरोध करने के लिए दिल्ली के लाल किले के सामने भीड़ का अत्यधिक जमघट देखकर ऐसा लगता था कि पूरी नगरी ही उमड़ पड़ी है। यद्यपि आयोजकों ने सभा के लिए चार बजे की घोषणा की थी किन्तु भीड़ दो बजे से ही एकत्र होनी प्रारम्भ हो गई थी। ठीक चार बजे सभा की कार्यवाही विधिवत् प्रारम्भ हो गई।

जिस समय सभा में स्वामी श्रद्धानन्द जी का भाषण हो रहा था सैनिकों को साथ लिए हुए दिल्ली का अंग्रेज मुख्य आयुक्त सभा स्थल पर पहुंचा। जनता चारों ओर बैठी थी और मध्य में मंच पर स्वामी जी खड़े हुये चारों ओर को घूम घूम कर भाषण कर रहे थे। जब मुख्य आयुक्त की ओर स्वामी जी का मुख हुआ तो उसने हाथ उठाकर स्वामी जी को नमस्ते करते हुए कहा कि "आप तो यहां हैं ही। मैं वापस चला जाऊं। स्वामी जी ने सहज स्वभाव से उत्तर दिया, 'आप जा सकते हैं' और मुख्य आयुक्त सावधानी की दृष्टि से कुछ सैनिक वहां छोड़कर वापस चला गया। यह घटना यह बतलाने को पर्याप्त है कि स्वामी श्रद्धानन्द जी का व्यक्तित्व कितना महान् था ? अंग्रेज उच्चाधिकारी भी यह समझते थे कि स्वामी जी की उपस्थिति में उनके दायित्व ले लेने पर कोई गड़बड़ी नहीं होगी। साथ ही स्वामी जी को भी दिल्ली की जनता का इतना विश्वास प्राप्त था कि उनके रहते दिल्ली की जनता कदापि गड़बड़ नहीं करेगी।

जब सभा समाप्त हुई और जनता नगर में पंक्तिबद्ध होकर जुलूस-समारोह के रूप में लौटने लगी तो दिल्ली के चान्दनी चौक नामक बाजार में नगरपालिका कार्यालय के सामने—जहां से एक ओर नई सड़क प्रारम्भ होती है और दूसरी ओर फतेहपुरी बाजार है—घण्टाघर के पास सैनिकों ने समारोह को आगे बढ़ने से रोक लिया। यह [illegible] कर स्वामी जी तुरन्त आगे बढ़े और सीना खोलकर बोले, 'इन संगीनों को इन लोगों की ओर उठाने से पहले मेरे सीने में भोंक दो।' गोरे सार्जेण्ट ने जब यह कहा कि आप आगे से हट जाइए। तो स्वामी जी कड़क कर बोले 'सन्यासी का पैर आगे बढ़कर पीछे नहीं हटा करता।' सार्जेण्ट ने समय को पहचाना और यह सोचकर कि यदि स्वामी जी को कुछ हो गया तो परिणाम भयंकर हो सकते हैं सैनिकों को पीछे हटा लिया और समारोह को आगे बढ़ जाने दिया। समारोह नगर के मुख्य बाजारों से भारत माता की जय और स्वामी श्रद्धानन्द जी की जय के घोष करता हुआ आगे बढ़ चला फिर मार्ग में उसे कहीं भी रोकने का प्रयत्न नहीं हुआ।

सन् १९१९ ईस्वी में जलियांवाले बाग अमृतसर नगर में डायर ओडवायर के भारतीय जनता पर भीषण गोली वर्षा और नृशंस अत्याचारों से त्रस्त पंजाब के उसी नगर अमृतसर में भारतीय राष्ट्रीय महा-

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रार्थना पुरुषार्थ और प्रारब्ध

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु; आर्य निवास चन्द्रनगर मुरादाबाद

न्यायकारी परमेश्वर की अटल कर्मफल व्यवस्था का प्राबल्य सिद्ध करते हुए जब हम प्रार्थना आदि से भी पाप क्षमा न हो सकने की बात कहते हैं तो कुछ लोग हताश एवं निराश होकर प्रार्थना की उपयोगिता में ही सन्देह करने लग जाते हैं और ऐसा कहने लगते हैं कि कृत कर्म का फल अवश्य मिलने से हमारे भाग्य अथवा प्रारब्ध की प्रार्थना से प्रबलता स्वयं सिद्ध है। अतः पाप क्षमा न होने से वर्तमान जीवन में पापों से उबरने का कोई अवसर ही नहीं रह जाता। क्योंकि जब प्रारब्ध का हमारे ऊपर आधिपत्य रहेगा तो फिर जन इस जन्म तो उबर सकते नहीं फिर प्रार्थना की क्या उपयोगिता है। प्रत्युत्तर में हमारा निवेदन है कि प्रार्थना से पाप क्षमा न होने पर भी हम प्रारब्ध को प्रार्थना से प्रबलता कदापि स्वीकार नहीं कर सकते। हमारी भली-भांति सोची समझी सुदृढ मान्यता है कि प्रारब्ध किसी भी दशा में प्रार्थना से सबल नहीं हो सकता। ऐसा क्यों? इसलिए कि जैसा कि हम पूर्व भी लिख आये हैं कि प्रार्थना कर्म अथवा पुरुषार्थ का द्योतक है। प्रार्थना का तात्पर्य ही उद्योग अथवा उपाय करना है न कि हाथ पर हाथ धर कर पुकारें लगाते रहना और फिर जैसी महर्षि दयानन्द की भी मान्यता है कि अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त ही ईश्वर से सहायता की इच्छा करनी योग्य होती है, तो फिर प्रार्थना भी पुरुषार्थ ही ठहरी और पुरुषार्थ सदा प्रारब्ध से प्रबल ही माना गया है। महर्षि दयानन्द स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश में सुस्पष्ट शब्दों में उद्घोषित कर रहे हैं कि 'पुरुषार्थ प्रारब्ध से बड़ा इसलिए है कि जिससे संचित प्रारब्ध बनते हैं, जिसके सुधरने से सब सुधरते और जिसके बिगड़ने से सब बिगड़ते हैं, इसीलिये प्रारब्ध की अपेक्षा पुरुषार्थ बड़ा है।' सच पूछिये तो जिसे हम भाग्य या प्रारब्ध कहा करते हैं, उसके भी तो निर्माता हम स्वयं ही हैं। हमारे अपने ही कर्म जब फलोन्मुख होने लगते हैं तो उसी को प्रारब्ध या भाग्य की संज्ञा दे दी जाती है। महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'विद्यार्थी जीवन रहस्य' पृष्ठ ४० में इस विषय को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि—'मनुष्य जब कर्म करता है और जब तक कर्म फल देने योग्य नहीं हो जाता तब तक कर्म की पहली हालत रहती है और इस रूप वाले कर्म को क्रियमाण कहते हैं और जब कर्म पूरा होकर फल देने योग्य होकर किये हुए कर्मों के भण्डार में जमा हो जाता है तब उसे संचित कहने लग जाते हैं और इन्हीं संचित कर्मों में से जिस कर्म का फल मिलने लगता है, उसी को प्रारब्ध कहने लगते हैं। अतः स्पष्ट हो गया कि प्रारब्ध मनुष्य के किये हुये कर्म ही के अनुरूप होता है। वह कोई ऐसी वस्तु नहीं है जो कहीं से लिख लिखाकर मनुष्य के सिर थोपी जाती हो। प्रारब्ध बनाने वाले अपने कर्म ही होते हैं। अतः सिद्ध है कि यह कर्म ही हैं जो हमारे भाग्य के निर्माता हैं और उन कर्मों के कर्त्ता हम स्वयं हैं। अतः हम स्वयं ही अपने भाग्य के निर्माता हुए। हमें यह भी सोचना चाहिये कि जब वैदिक सिद्धांतानुसार प्रत्येक कर्म का पूरा-पूरा फल दिया जाना अनिवार्य है और प्रार्थना भी एक कर्म ही है तो फिर प्रार्थना रूपी कर्म का ही फल क्यों नहीं मिलेगा? पाप क्षमा न होने पर भी प्रार्थना उसी कर्म का फल भी तो मिलेगा ही। फिर प्रार्थना क्यों न की जाये? और फिर यह कैसे मान लिया जाये कि उसकी कोई उपयोगिता है ही नहीं? महर्षि तो यहां तक लिख रहे हैं कि ईश्वर की प्रार्थना और अपने पुरुषार्थ के बिना किसी को शरीर, इन्द्रिय और आत्मा का परिपूर्ण सुख नहीं होता इससे उसका अनुष्ठान अवश्य करना चाहिए। (ऋग्वेद १-८१-६)

प्रार्थना हमारे प्रारब्ध को किस प्रकार प्रभावित करती है, यह भी जान लेना आवश्यक है। यह ठीक है कि पूर्वकृत कर्मों से बने भाग्य अथवा प्रारब्ध को भोगे बिना छुटकारा नहीं, किन्तु नवीन प्रारब्ध बनकर फलोन्मुख प्रारब्ध के बीच अथवा उसके आगे आकर खड़ा हो जाता है। महर्षि दयानन्द की ऐसी ही मान्यता है। बरेली में हुये पादरी स्काट से पुनर्जन्म सम्बन्धी शास्त्रार्थ में महर्षि ने स्पष्ट कहा था कि जैसे-जैसे जीव 'क्रियमाण कर्म नये नये करता जाता है उनका संचित और प्रारब्ध भी नया नया होता चला जाता है।' (देखें—शास्त्रार्थ संग्रह पृष्ठ १७१) यहां महर्षि स्पष्ट शब्दों में नवीन प्रारब्ध की बात स्वीकार कर रहे हैं। यदि ऐसा नहीं होता तो केवल यही कह सकते थे कि संचित भी नया नया होता चला जाता है। यही मूलतः वही दार्शनिक प्रश्न आ खड़ा होता है कि क्या आप अपने भोगों में कोई परिवर्तन कर सकते हैं कि नहीं? हमारी ही नहीं अनेकों आर्य विद्वानों की ऐसी मान्यता है कि हम पुरुषार्थ द्वारा अपने भोगों में परिवर्तन ला सकते हैं। आर्य दार्शनिक पंडित गंगाप्रसाद उपाध्याय जी तो यहां तक लिखते हैं कि 'अवश्य कर सकते हैं और करते हैं।' (देखें—कर्मफल सिद्धान्त पृष्ठ ७०) तीव्र संवेग से किये गये प्रबल कर्मों द्वारा निर्मित नवीन प्रारब्ध पूर्व प्रारब्ध का विरोध करता है और दोनों का फल अलग अलग होने पर भी कर्त्ता उनके उस प्रभाव से प्रायः बच जाया करता है। यह तो हम कह ही नहीं सकते कि उनका अपना प्रभाव कुछ भी नहीं हुआ किन्तु एक ही समय में एक ही साथ परस्पर विरोधी होने से उन दोनों की तीव्रता में कमी आ जाना स्वाभाविक है। आप विचारें तो सही कि पुरस्कार में प्राप्त राशि को जुर्माने में अदा कर देने से क्या कोई यह कह सकता है कि उस व्यक्ति को पुरस्कार नहीं दिया गया या उससे जुर्माना नहीं लिया गया। यह तो निश्चित है कि चाहे कितनी ही प्रार्थना क्यों न की जाये कृत कर्मों का फल अवश्यमेव भोगना पड़ता है। किन्तु जैसे कुपथ्य कर लेने के पश्चात् उपवास तथा औषध आदि के सेवन से हम उस कुपथ्य जन्य दुष्प्रभाव की भीषणता को भले ही कुछ कम करने में सफल हो जावें किन्तु यह किसी भी दशा में नहीं कह सकते कि उस कुपथ्य का हम पर कोई प्रभाव ही नहीं हुआ और न ही हम यह कह सकते हैं कि उपवास आदि नवीन कर्मों तथा औषध आदि का हम पर कोई प्रभाव नहीं हुआ। औषध सेवन तथा पथ्य पूर्व कुपथ्य रूपी कर्म के विरोध में होने से उसके प्रभाव को यदि कम करने में सफल हो सकते हैं तो फिर प्रार्थना प्रायश्चित आदि सुकर्म जो पाप कर्म के विरोध में किये जाते हैं पापों के दुष्प्रभाव को कम करने में सफल क्यों नहीं होंगे? अतः यह समझना कि प्रार्थना आदि द्वारा पाप क्षमा न होने पर प्रार्थना से प्रारब्ध प्रबल हैं, एक भूल ही कही जायेगी।

जहां तक प्रार्थना की उपयोगिता एवं व्यक्ति के इस जन्म में पापों से उबरने का प्रश्न है, हमें यही कहना है कि पाप क्षमा न होने पर भी प्रार्थना की अपनी विशेष उपयोगिता है एवं इस जन्म में भी पापों से उबरने में यह प्रबल सहायक ही सिद्ध होती है। महर्षि पूना प्रवचन में कहते हैं कि 'प्रार्थना से पश्चाताप होता है एवं आगे को पाप वासना का बल घट जाता है।' क्या पापमय जीवन से उबरने का इससे बढ़कर कोई अन्य प्रमाण हो सकता है। फिर भी यदि एक बार को यह भी मान लिया जाये कि पुरुषार्थ की अपेक्षा प्रारब्ध किसी अवस्था में प्रबल बैठ रहा है तो भी प्रार्थना की उपयोगिता किसी भी प्रकार से कम नहीं हो सकती, क्योंकि इतना जैसा कि पूर्व भी लिख आये हैं कि प्रार्थना हमारे आत्मिक बल को इतना बढा देती है कि सम्मुख आई घोरतम विपत्ति को भी व्यक्ति हंसते-हंसते सहन कर जाता है। भले ही वह विपत्ति प्रारब्ध जन्य हो या अन्य किसी कारण से। प्रार्थना द्वारा व्यक्ति उस विपत्ति का सामना करने का साहस बटोर लेता है। तभी तो वह प्रार्थना करता है कि—

दुःख में न हार मानु, सुख में तुझे न भुलूं।
ऐसा प्रभाव भरदे मेरे अधीर मन में॥

(शेष पृष्ठ ७ पर)

सम्पादकीय

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का चुनाव विषयक

श्री कपिलदेव शास्त्री का वक्तव्य झूठा तथा मनघड़न्त

जालन्धर से प्रकाशित 16 दिसम्बर 1983 के दैनिक पंजाब केसरी में श्री कपिलदेव शास्त्री का वक्तव्य पढ़ने को मिला। शास्त्री जी ने अपने वक्तव्य द्वारा जनता ओ भ्रम में डालने का असफल प्रयास किया है। उन्होंने अपने वक्तव्य में स्वयं स्वीकार किया है कि सभा के साथ 800 आर्यसमाज तथा 50 शिक्षण संस्थाएं सम्बन्धित हैं और सभा की सम्पत्ति 100 करोड़ की है। परन्तु उन्होने अपने वक्तव्य में अन्त मे यह लिखकर कि सभा केवल दयानन्द मठ रोहतक तक ही सीमित होकर रह गई है, अपनी ही बात को काट दिया है।

श्री कपिलदेव शास्त्री सभा के चुनाव के अवसर पर स्वयं उपस्थित नहीं थे। उन्होने मनघड़न्त वक्तव्य देकर स्वच्छ पत्रकारिता पर दाग लगाया है। हरयाणा सभा ने विभिन्न आर्यसमाजों के 716 प्रतिनिधियों को स्वीकार किया था, जिनमें से 507 प्रतिनिधियों ने अधिवेशन में भाग लेकर प्रो० शेरसिंह जी को सर्वसम्मति से प्रधान चुना और शेष पदाधिकारियों को मनोनीत करने का भी अधिकार देकर उनमें पूरा विश्वास प्रकट किया। अधिवेशन मे किसी भी प्रतिनिधि के साथ दुर्व्यवहार नहीं हुआ। प्रतिनिधियों ने प्रदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के लिए खुलकर अपने अपने सुझाव दिए। एक प्रस्ताव द्वारा उग्रवादी अकालियो के राष्ट्र विरोधी आन्दोलन का मुकाबला करने के लिए प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में संचालित हरयाणा रक्षा वाहिनी की गतिविधियो का जोरदार समर्थन किया गया। हरयाणा रक्षा वाहिनी के गठन से आर्यसमाज का सिर ऊंचा हुआ है। प्रो० शेरसिंह जी की सेवाओं का सभी प्रतिनिधियों ने हार्दिक धन्यवाद किया।

अत: श्री कपिलदेव शास्त्री का यह आरोप निराधार है कि उन्होने अपने राजनैतिक स्वार्थ के लिए आर्यसमाज के संगठन का दुरुपयोग किया है।

श्री शास्त्री जी की अपनी स्थिति जनता मे शून्य है। अपने गांव घड़वाल में सरपंच के चुनाव में वे हार गये और चुनाव में अनियमितता करने पर गिरफ्तार भी हुए। इसके पश्चात् सोनीपत लोकसभा उपचुनाव में प्रत्याशी बनकर नामांकन पत्र भरा किन्तु अन्त में जमानत जब्त होने के भय से नाम वापिस ले लिया। इसी प्रकार आप अपने समर्थकों के अभाव में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के चुनाव मे सम्मिलित नहीं हुए और निराश होकर व मानसिक सन्तुलन खोकर झूठे वक्तव्य दे रहे हैं। शास्त्री जी को अपनी भूल के लिए सार्वजनिक क्षमा याचना करनी चाहिए।

वेदव्रत शास्त्री
सम्पादक—सर्वहितकारी साप्ताहिक
एवं
अन्तरंग सदस्य आर्यप्रतिनिधि सभा

वेद प्रचार कार्य को गति प्रदान करें

आर्यसमाजों के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बद्ध हरयाणा प्रान्त की सभी आर्य समाजों के अधिकारियो से निवेदन है कि वे अपने यहाँ वेदप्रचार कार्य को यथा सम्भव गति देने के कार्य मे सभा का सहयोग करें। प्रान्त की प्रायः ऐसी समाजें (देहाती) हैं जिनमें एक वर्ष से भी ऊपर की अवधि बिना प्रचार के बीत जाती है। अधिकारियों को इस ओर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है। इस कार्य के लिए सभा के वेद प्रचार विभाग में सुलझे हुए विद्वान-वक्ता उपदेशक तथा मधुर गायक भजनोपदेशक हैं जिनकी सेवाएं अपनी आर्य समाजों तथा अपने आस-पास के क्षेत्रों की आर्य समाजों में प्रचार करवाने हेतु ली जा सकती हैं।

अत: अधिकारीवर्ग सुविधानुसार अपने यहाँ प्रचार की तिथियों का निश्चय कर अविलम्ब सूचित करने का कष्ट करें। स्मरण रहे, इसकी सूचना सभा को कम से कम तीन सप्ताह पहले अवश्य मिलनी चाहिए। सभा ने ऐसे भी जनता में द्रुत गति से घर करती जा रही अवैदिक मान्यताओं को निर्मूल करने के लिए प्रदेश मे वेद प्रचार की व्यापक योजना तैयार की है जिसके अन्तर्गत प्रचारक स्वय भी प्रचारार्थ समाजो में पहुंचेंगे। आशा है, अधिकारी वर्ग उनको हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर इस महत्वपूर्ण कार्य की सम्पन्नता में सभा का हाथ बंटायेगा।

सभी के सहयोग का इच्छुक
रणवीर शास्त्री, एम० ए०, विद्यावाचस्पति
अधिष्ठाता वेदप्रचार

विभिन्न नेताओं की दृष्टि में स्वामी श्रद्धानन्द

संकलनकर्ता—ब्र० महेन्द्रसिंह वाचस्पति
आ० स० बादशाहपुर (गुड़गाव)

स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मरण कौन भूल सकता है? उनका सच्चा स्मरण तो अस्पृश्यता को जड मूल से निकाल कर ही हो सकता है।

—महात्मा गान्धी

यह कांग्रेस स्वामी श्रद्धानन्द जी की कायरता और कपटपूर्ण हत्या पर रोष और क्षोभ प्रकट करती है। भारत माता के एक देशभक्त और वीर सपूत की दु:खद मृत्यु से ऐसी क्षति हुई है जिसकी पूर्ति सम्भव नहीं है। उनके जीवन की विशिष्टताएं अपने देश और धर्म की सेवा पर अर्पित रही उन्होने निर्भिकता और दृढ़ता के साथ असहायों, पतितो, दीन-दु:खियो को सहारा दिया।

—1926 के गोहाटी मे आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में महात्मा गान्धी द्वारा प्रस्तुत शोक प्रस्ताव।

यदि वर्तमान काल का कोई कलाकार ईशा की मूर्ति बनाने के लिए कोई जीवित माडल सामने रखना चाहे तो मैं इस भव्य मूर्ति की ओर इशारा करूंगा! यदि कोई चित्रकार मध्यकालीन सेन्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना मांगेगा तो मैं उसे इस जीवित मूर्ति के दर्शन करने की प्रेरणा करूंगा।

—ब्रिटेन के तत्कालीन प्रधान मन्त्री रैम्जे मैकडानल्ड

स्वामी श्रद्धानन्द मे निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी! लम्बा कद, शाही शक्ल, संन्यासी के वेश मे बहुत उग्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी, चमकती हुई आंखें और चेहरे पर कभी कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाले मन्यु की छाया का गुजारना—मैं इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूं? अक्सर यह मेरी आंखों के सामने आ जाती है।

—प्रथम प्रधान मन्त्री स्व० पं० जवाहरलाल नेहरु

स्वामी श्रद्धानन्द जी की याद आते ही 1919 का दृश्य मेरी आंखों के सामने खड़ा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में है, स्वामी जी छाती खोलकर सामने आ जाते हैं और कहते हैं "लो चलाओ गोलियां।" उनकी वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।

—प्रथम भूतपूर्व उपप्रधान मन्त्री स्व० वल्लभ भाई पटेल

स्वामी श्रद्धानन्द जी स्पष्टवादिता और निर्भिकता के मूर्तिमान स्वरुप थे। वह निर्भीकता जिस प्रखर ज्योति के साथ अंग्रेज सरकार के सामने चमकती थी उसी ज्योति के साथ औरो के मुकाबले में भी अपनी छटा दिखलाती थी। जो लोग काले कानून के विरोधी आन्दोलन के समय दिल्ली के चान्दनी चौक में भी मौजूद न थे उनके हृदय पर भी स्वामी जी की वह मूर्ति अमिट रूप से चित्रित है जो सीने को अंग्रेजी गोलियों और संगीनो के सामने खोलकर हृदय की शुद्धता और निर्भीकता दिखलाती है। उसी शुद्धता ने जामा मस्जिद मिम्बर पर से उपदेश करवाया और हिन्दू-मुस्लिम एकता का मनोरम दृश्य दिखलाया और उसी दृढ़ता, सत्य, निष्ठा, स्पष्टवादिता और निर्भीकता ने आततायी के हाथों शरीरपात भी करवाया। भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान पथ प्रदर्शक का है और जिनको उनके साक्षात्कार का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सका उनके लिए उनका जीवन वृतान्त पढ़ना ही मनुष्य की उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है। स्वामी जी ने गुरुकुल की स्थपना करके कुछ ब्रह्मचारियों के शिक्षण का ही प्रबन्ध नहीं किया बल्कि उनका जीवन सारे देश के लिए एक महान गुरुकुल का काम कर रहा है और करता रहेगा।

प्रथम राष्ट्रपति स्व० डा० राजेन्द्र प्रसाद

(पृष्ठ १ का शेष)

सभा (इण्डियन नेशनल कांग्रेस) का विशाल सम्मेलन कराकर आपने भारतीय जन मानस में जो अदम्य उत्साह और चेतना भरी, वह स्वर्णाक्षरों में लिखे जाने योग्य है।

क्षमा करेंगे मुझे पाठकगण—वह महात्मा गांधी— जिन्हें स्वाधीन भारत में राष्ट्रपिता की उपाधि से सम्मानित किया गया, उस समय पता नहीं वह भी कहां छिपे थे, जब स्वामी श्रद्धानन्द जी ने मोतीलाल नेहरू को इलाहाबाद से बुलाकर उस ऐतिहासिक अधिवेशन का अध्यक्ष बनाया और उनसे कहा कि "आप चिन्ता न करें, स्वागताध्यक्ष मैं हूं, सीने पर गोलियां मैं खाऊंगा।

जब स्वामी जी उस अधिवेशन की तैयारी में संलग्न थे, उस समय किसी के यह कहने पर कि "स्वामी जी ब्रिटिश सरकार से मुकाबला है" उस वीर संन्यासी ने तुरन्त उत्तर दिया था "मैं चुपका कैसे बैठ सकता हूं? बलवान् चाहे राजा भी क्यों न हो, उसके भी नाश का उपाय करें।

नारी-शिक्षा की आवश्यकता को अनुभव किया और घर में अपनी ही पुत्री को "ईसा-ईसा बोल, तेरा क्या लगेगा मोल, ईसा मेरा राम रमैया ईसा मेरा कृष्ण कन्हैया" गाते सुना—जो उस बालिका ने ईसाईयों के स्कूल में सीखा था, जहां वह पढ़ रही थी—तो लाला देवराज जी के सहयोग से जालन्धर नगर में कन्या विद्यालय की स्थापना की, जो अब कन्या महाविद्यालय के नाम से पश्चिमी भारत की महिला शिक्षा संस्थाओं में प्रमुख स्थान रखता है।

अपने गुरु और आर्य समाज के संस्थापक स्वनाम धन्य युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती का आदेश पालन करने के लिए लड़कों की शिक्षा के लिए प्राचीन भारतीय परम्परा के अनुसार गुरुकुल की स्थापना की। यह गुरुकुल अब भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय बन चुका है और "गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय" के नाम से हरिद्वार नगर के समीप गंगा की नहर के किनारे विशाल क्षेत्र में अपने अनेक महाविद्यालयों सहित भव्य भवनों में अब स्थित है।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के सुझाव पर ही अछूतोद्धार और राष्ट्रभाषा हिन्दी की समस्या कांग्रेस के कार्यक्रमों के अंग बने। परन्तु शुद्धि के प्रश्न पर आपका गांधी जी से मतभेद हो गया। आप चाहते थे कि शुद्धि के कार्य को भी कांग्रेस के कार्यक्रम का अंग बना लिया जाये। परन्तु गांधी जी इसके लिए तैयार नहीं थे अपितु वह तो स्वामी जी को भारतीयकरण के इस पवित्र और ठोस कार्य से रोकना चाहते थे, किन्तु स्वामी जी थे अपनी धुन के धनी अतः इसी प्रश्न पर कांग्रेस छोड़ कर पृथक हो गये। स्वामी जी की दृष्टि में शुद्धि का कार्य राष्ट्र की एकता और स्थायित्व के लिऐ अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा परम आवश्यक था।

कांग्रेस से पृथक होकर आपने अखिल भारतीय हिन्दू महासभा को संगठित किया। अखिल भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना की और अखिल भारतीय अछूतोद्धार सभा बनायी। दक्षिण भारत में ट्रावनकोर के मोपले मुसलमानों के विद्रोह के तुरन्त बाद वहां जाकर बलात् मुसलमान बनाये गये हिन्दुओं को शुद्ध कर पुनः वैदिक धर्म में वापस लिया तथा लूटे हुए और गृह विहीन हिन्दुओं के पुनर्वास आदि के कार्य में जुट गये।

भारत राष्ट्र और आर्य जाति की कोई भी समस्या श्रद्धानन्द जी के द्वारा उसकी उपेक्षा सम्भव ही नहीं थी। वह तुरन्त कार्य-क्षेत्र में अवतरित होते और दिन रात एक करके अटूट परिश्रम द्वारा समस्या का हल करते थे उनकी दृष्टि बड़ी दूरगामी थी। उनकी बात मानकर गांधी जी उस समय यदि कांग्रेस के कार्यक्रमों में शुद्धि का कार्यक्रम सम्मिलित करने को तैयार हो गये होते तो न तो पाकिस्तान बनता और न लाखों मनुष्यों की हत्यायें होतीं, न लाखों नारियों के सतीत्व हरण होते, न आये दिन पूर्व पश्चिम की सीमाओं पर युद्ध के बादल मंडराते रहते, न भारत में पंच मांगियों के समूह पनपते, न आये दिन सम्भल, मुरादाबाद, अलीगढ़, मेरठ और हैदराबाद के साम्प्रदायिक दंगे होते। यह सब गांधी जी और उनके अन्ध समर्थक कांग्रेस जनों की अदूरदर्शिता का ही परिणाम है।

स्वामी जी ने इसी राष्ट्रीयकरण के कार्य को करते हुए अन्त को अपनी जीवनाहुति भी दे दी। एक मुस्लिम युवती की शुद्धि के पश्चात् स्वामी जी महाराज नया बाजार दिल्ली स्थित उस समय के सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में अपनी लम्बी बीमारी के पश्चात् विश्राम कर रहे थे। अभी पूर्ण स्वस्थ भी नहीं हो पाये थे कि साम्प्रदायिक कठमुल्लाओं द्वारा दीन का गाज़ी बन जाने और जन्नत का पूर्ण अधिकारी हो जाने का लोभ दिया हुआ एक मुस्लिम मतान्ध युवक अब्दुल रशीद स्वामी जी के पास पहुँचा और उनसे पानी की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी के सेवक ने उसे गिलास में पानी दिया ही था कि उस कृतघ्न हत्यारे ने सेवक की दृष्टि उधर से हटते ही धांय धांय करके स्वामी जी पर वार किए और उन्हें चिर निद्रा में सुला दिया।

स्वामी जी सचमुच हुतात्मा थे। उन्होंने घर-द्वार, परिवार, सम्पत्ति सब की तो आहुति देश और जाति के लिए दी ही थी, अन्ततोगत्वा आत्माहुति भी दे दी और इस प्रकार भौतिक दृष्टि से मरकर भी अमर हो गए। सत्य है 'कीर्तियस्यसजीवति' जिसका यश संसार में है, वह मरा नहीं अपितु अमर है। आइए उस परम धाम प्राप्त अमर हुतात्मा से जीवन ज्योति प्राप्त कर हम भी अपने जीवन को जाज्वल्यमान् कर देश और जाति के लिए उपयोगी बनाकर सार्थक सिद्ध करें। अलमति-विस्तरेण।

पानीपत में आर्य युवक-समाज का अधिवेशन

३ नव० को आर्य युवक समाज का वार्षिक अधिवेशन श्री रामानन्द जी शिंगला की अध्यक्षता में हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री रामस्नेही आर्य थे। युवक समाज के संरक्षक श्री दिलीप सिंह आर्य ने युवक-समाज की गतिविधियों पर सन्तोष प्रकट किया।

श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य, प्रबन्धक आर्य बालभारती ने विजेता छात्रों को पुरस्कार वितरित किये। अध्यक्ष प्रो० अनिरुद्ध कुमार ने वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत की। इस समय आर्य नवयुवकों की नियमित सदस्य संख्या ७५ है।

नवयुवकों के इस संगठन की उन्नति का श्रेय श्री रामानन्द शिंगला व श्री दिलीपसिंह आर्य को है। आर्य कालिज के प्राध्यापक प्रो० अनिरुद्ध कुमार युवकों की उन्नति में निरन्तर सचेष्ट हैं।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ—

दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान जयन्ती

सम्मान्य बन्धुवर,

अमरहुतात्मा श्री श्रद्धानंद जी की बलिदान जयन्ती दिल्ली राज्य की समस्त आर्यसमाजों, शिक्षण संस्थाओं की ओर से, सम्मिलित रूप में आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में रविवार २५ दिसम्बर १९८३ को समारोहपूर्वक मनाई जा रही है। प्रातः ८ बजे श्रद्धानन्द बलिदान भवन में यज्ञ के पश्चात् १०-३० बजे श्रद्धानद बाजार से विशाल शोभा यात्रा प्रारम होगी, जो किला मैदान में सार्वजनिक श्रद्धांजलि सभा के रूप में परिणत हो जायेगी।

—सूर्यदेव आर्य महामन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल का चुनाव

१) स्वामी सुमेधानन्द (प्रधान) २) श्री कृष्ण लाल आर्य (वरिष्ठ उप-प्रधान) ३) श्री रमेश जीवन (उप-प्रधान) ४) श्रीमती चान्द रानी शर्मा (उप-प्रधान) ५) श्री चमनलाल शर्मा (महामन्त्री) ६) श्री मनोहर लाल आर्य (उप-मन्त्री) ७- श्री रामशरण दास (कोषाध्यक्ष) ८- श्री आचार्य रामानन्द (वेदप्रचार अधिष्ठाता) ९- श्री सुदर्शन कुमार कपूर (लेखा निरीक्षक)

शुभ कामनाओं के लिए धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न होने पर प्रदेश के अनेक महानुभावों ने सभा अधिकारियों को बधाई सन्देश तथा शुभ कामनायें भेजी हैं। सभी को व्यक्तिगत रूप में पत्र लिखना कठिन है। अतः सर्वहितकारी के माध्यम से सभी का आभार प्रकट कर रहा हूँ।

सभा का सर्वसम्मति से चुनाव प्रतिनिधि महानुभावों की सद्भावना तथा सहयोग से ही सम्पन्न हुआ है। अतः इस महत्त्वपूर्ण योगदान के लिए प्रतिनिधि ही बधाई के पात्र हैं। आशा है प्रतिनिधि गण पूर्व की भान्ति सभा के संचालन में तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

—सुजीतसिंह सभा मन्त्री

युवक समाज व देश उन्नति में योगदान दें

—राम गोपाल शाल वाले

नई दिल्ली, ११ दिसम्बर (रविवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग के वार्षिकोत्सव पर बोलते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले ने युवा शक्ति को आह्वान किया कि वे विलासिता से दूर हटकर समाज व देश की उन्नति के लिए जियें। आज की विषम परिस्थितियों में जब देश में अगवानों की बाढ़ आ रही है, विघटनकारी तत्वों से सरकार व आम आदमी परेशान है, धर्म परिवर्तन करके भारतीय संस्कृति पर आक्रमण किये जा रहे हैं, आर्य युवकों को शस्त्र व शास्त्र लेकर 'राष्ट्र रक्षा' का संकल्प करना चाहिये। श्री शाल वाले ने कहा पंजाब व देश के अन्य पीड़ित भागों में आर्यसमाज अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

डा० [illegible] आर्य की अध्यक्षता में आयोजित महासम्मेलन को श्री विजयकुमार आर्य, श्री राजु वैज्ञानिक, श्रीमती प्रेमशील महेन्द्रू, [illegible] राम पाल [illegible] व्यायामाचार्य आदियुवा नेताओं ने सम्बोधित किया।

—चन्द्र मोहन आर्य कार्यालय मंत्री

शाखानायक प्रशिक्षण शिविर

नई दिल्ली-फरीदाबाद सीमा पर स्थित गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में आगामी २८, २९, ३० दिसम्बर को तीन दिवसीय "शाखानायक प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन किया जा रहा है।

शीत शिविर में सम्मिलत होने के इच्छुक युवक केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् कार्यालय से सम्पर्क करें।

महर्षि दयानंद निर्वाण शताब्दी एवं मध्य-भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा रजत जयंती

आर्य समाज मंदिर संयोगितागंज इन्दौर का मैदान (पुराना हाट मैदान)

२५-१२-८३ रविवार से १८-१२-८३ बुधवार तक

महामहिम पं० भगवनदयालजी शर्मा राज्यपाल मध्यप्रदेश

श्री रामगोपालजी वानप्रस्थी प्रधान, सार्वदेशिक सभा दिल्ली, लक्ष्मीनारायणजी शर्मा भूतपूर्व सहकारिता मंत्री म. प्र. शासन, पं. वीरसेनजी वेदश्रमी, पूज्य महात्मा आर्य भिक्षुजी, ब्रह्मचारी आर्य नरेशजी, स्वामी कतव्यानदजी, डा अमरेशजी, भूतपूर्व डा. अमीर मोहम्मद अफजल उल उलमा, डा. वेदप्रतापजी वैदिक आदि विद्वान पधार रहे है।

(स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान पर्व पर)

शब्द-सुमनाञ्जलि

वह प्रभापूर्ण व देवोपम, किसकी छवि देख रहा अनुपम ?
जिसने झाँका भावी अतीत, नंगी आंखों से हो सभीत।
वह प्रथा पुरातन गुरुकुल की, नित नूतन कर फिर सरसाई
गंगा के पार, वह बिमल-धार, विद्यामृत की थी बरसायी।
शुद्धि का सुदर्शन-चक्र चला, काटी सदियों की [illegible]।
अपने को कहते जो हिन्दू, 'अस्पृश्य' बनाये निज बन्धु।
कैसा पुनीत था वह कार्य ? "तुम और नहीं हो अपने ही
तुम हो बस शुद्ध-प्रबुद्ध आर्य।" नारी को देखा बन्धन में;
निशिदिन निमग्न थी क्रन्दन में। अज्ञान-तिमिर की अमा-निशा,
जो व्याप रही थी चतुर्दिशा। किया विद्या का मुक्त द्वार,
शिक्षा-स्नात् गत मलाचार। स्वातन्त्र्य-समर के वीर अमर,
श्रद्धा से पूरित था तन-मन। तुम तेज-पुञ्ज, अग्नि स्वरूप,
अर्पित तुमको ये 'शब्द-सुमन'

—धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित' एम. ए.

आर्यसमाज प्रेम मोहल्ला तावडू जि० गुड़गांव का चुनाव

१- प्रधान—श्री मोतीराम जी अग्रवाल २- उप प्रधान—मा० तीर्थरामजी ३- मंत्री—श्री आदर्श गर्ग ४- उपमंत्री—श्री रामेश्वर जी ५- कोषाध्यक्ष—श्री हुकमचन्द जी अग्रवाल।

आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक वार्षिक चुनाव

प्रधान—डा० बैजनाथ कुन्द्रा उपप्रधान—महाशय हरद्वारीलाल उपमन्त्री—डा० विशम्भर नाथ रावल मन्त्री—श्री दरयावसिंह लडवाल (सेवानिवृत ए० ई० टी० ओ०) उपमन्त्री—श्री बलराज चुघ कोषाध्यक्ष—चौ० चरणसिंह (सेवानिवृत-डाक एवं तार विभाग) पुस्तकाध्यक्ष—श्री सज्जन कुमार निरीक्षक—श्री विद्या भूषण प्रबन्धक (आर्य नर्सरी स्कूल)—श्री रामलाल भाटिया कोषाध्यक्ष (आर्य नर्सरी स्कूल)—श्री इन्द्रजीत बजाज.

सभा के लिए प्रतिनिधि—सर्वश्री डा० बैजनाथ कुन्द्रा, नरेन्द्र आर्य, चौ० चरणसिंह, डा० विशम्भर नाथ रावल।

—दरयावसिंह मंत्री आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक।

मौलवी-महबुब महेन्द्रपाल आर्य बने

बरवाला (मेरठ) 1 दिसम्बर, 1983 वीरवार, मौलवी महबुब अपनी पत्नी व पाच बच्चों सहित वैदिक धर्म को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए एक विशाल समारोह मे मुस्लिम मत त्याग कर आर्य बने। शुद्धि उपरांत वे महेन्द्रपाल आर्य, पत्नि नुरजहा से शांतिदेवी तथा बच्चे क्रमश; नरेन्द्रपाल, सुरेन्द्रपाल, वीरेन्द्रपाल, देवेन्द्रपाल व बच्ची सावित्री बनी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान मे आयोजित यह शुद्धि समारोह व यज्ञ वेद मंत्रों के पाठ के साथ प्रारम्भ हुआ। इस अवसर पर महेन्द्रपाल ने मौलवी रहते हुए अपने अनुभवो के आधार पर कुरान व मुस्लिम समप्रदाय की संकीर्णताओं व बुराइयो पर प्रहार करते हुए वैदिक धर्म की विशालता व श्रेष्ठता को सिद्ध किया। स्वामी शक्तिवेश जी, स्वामी शिवानद जी व ग्राम प्रमुखों ने नव दीक्षित दम्पति को आशीर्वाद दिया। इस अवसर पर श्री अनिल कुमार आर्य महामंत्री केन्द्रीय युवक परिषद दिल्ली प्रदेश भी उपस्थित थे। अन्त मे एक सहभोज का भी आयोजन किया गया। श्रीकृष्णसिंह आर्य ने सारी व्यवस्था की।

चन्द्र मोहन आर्य
कार्यालय मंत्री

श्रीमती सुगुणीदेवी का आकस्मिक निधन

आर्य समाज हिसार के पूर्व इतिहास मे मान्यवर स्व० सेठ फतेहचन्द जी आर्य (बालसमन्द वाले) का अभूतपूर्व योगदान रहा है। इन्होने अपने संरक्षण एवं सौजन्य तथा कर्मठ कार्य कर्त्तव्य के माध्यम से स्थानीय समस्त शिक्षण संस्थाओ मे पूर्ण योगदान प्रदान कर सुदृढ किया। इस सारे कार्य का श्रेय माता श्रीमती सुगुणीदेवी को है। आपका व्यक्तिगत जीवन लाला जी की बहुमूल्य प्रेरणाओं को साकार रूप देता रहा है। वैदिक कर्मकाण्ड, ईश्वर विश्वास, आर्य महोपदेशको के प्रति श्रद्धाभाव, सकल लोक कल्याण की भावना, आर्य समाज के कार्यों में प्रगति एवं यज्ञ आदि आपके जीवन मे अपने पति के सानिध्य की धरोहर थी। अनाथ रक्षण, गो संवर्धन, आर्यसमाज द्वारा संचालित सभी आंदोलनों में सक्रियता, योग्य एवं निर्धन छात्र, छात्राओं की सहायता आपके जीवन की उदत्त भावनाएं थी। आर्य जगत् ख्याति प्राप्त वेदज्ञ साधु-सन्त एवं विद्वज्जन सप्ताह-सप्ताह प्रवचन करने हेतु आपके निवास पर रहकर आपके वृत्त आतिथ्य से अलंकृत होते रहे हैं।

मन्त्री
रविदत्त शास्त्री, एम० ए०

सिद्धान्ती भवन रोहतक के अतिथि गृह के लिए दान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साधारण अधिवेशन ११ दिसम्बर ८३ के शुभावसर पर सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक के अतिथि गृह जहां सभा के उपदेशक, भजनोपदेशक तथा आर्यसमाज के कार्यकर्ता आदि आकर विश्राम करते हैं, के लिए चौ० विजयकुमार चण्डीगढ़ ने ५ बिस्तरे, श्री पन्नालाल आर्य अम्बाला छावनी ने बिस्तरों के लिए २१०० रुपये दान भेजा है तथा बहन सुमित्रा देवी आर्या प्रधान आर्यसमाज बेरी जिला रोहतक ने २१ फोल्डिंग चारपाइयां दान मे देने की घोषणा की है।

सभा की ओर से दान दाताओं का बहुतबहुत धन्यवाद है।

—रणजीतसिंह सभा मन्त्री

हरयाणा के आर्य विद्यालयों में धार्मिक परीक्षा

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी हरयाणा स्थित आर्य विद्यालयों तथा गुरुकुलो में धर्मप्रवेशिका, धर्माधिकारी तथा धर्म ज्ञानी की परीक्षा १६ जनवरी १९८४ को होगी।

आर्य विद्या परिषद् (आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाण) की ओर से सभी विद्यालयो तथा गुरुकुलों में इस सम्बन्ध में परिपत्र, परीक्षा प्रवेश फार्म आदि भेज दिए गए हैं। जिन विद्यालयों में किसी कारण फार्म न मिले हों तो तुरन्त कार्यालय को पत्र लिखकर मंगवा लेवें। प्रवेश फार्म के साथ प्रश्न पत्र भेज दिए जावेंगे।

—वेद मित्र प्रस्तोता

आर्यसमाज अटाली जि० फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान—चौ० कुलदीप सिंह सरपंच (मैम्बर ब्लाक समिति बल्लबगढ़) उपप्रधान—रणबीरसिंह, मंत्री—श्री नानकचन्द, कोषाध्यक्ष—मास्टर हनुमानसिंह

आर्य समाज जवां जिला फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान—चौ० चन्दनसिंह, मंत्री—चौ० फूलसिंह, कोषाध्यक्ष—किशनसिंह, उपप्रधान—पं० सालिगराम।

आर्यसमाज जिला फरीदाबाद का चुनाव

प्रधान—सीसराम, उपप्रधान—मगलसिंह, मंत्री—सुरेन्द्रसिंह, कोषाध्यक्ष—दिवानसिंह।

आवश्यकता

उपरोक्त संस्था को एक अनुभवी संरक्षक तथा एक रिटायर्ड अध्यापक (J. B. T. B. A.) की आवश्यकता है तथा दो चार वानप्रस्थियों की भी आवश्यकता है जो प्रचार भी करे और अन्न आदि इकट्ठा करने में सहयोग कर सकें। सभी का उचित सम्मान किया जाएगा।

—कुलपति गुरुकुल ढ़िकाडला जिला करनाल

"वैदिक नीति अपनाओगे सुख पाओगे"

डा० बेताब अलीपुरी, सोनीपत

गम में भी तुम मुसकाओगे सुख पाओगे।
सच्ची राह जो दिखलाओगे सुख पाओगे।
मीठे स्वर में जब गाओगे सुख पाओगे।
ओइम् पताका लहराओगे सुख पाओगे।। वैदिक नीति......
सच्चाई को जानें इस पर जान गंवाएं,
सत्य मार्ग पर पग पग आगे बढते जाएं।
बलहारी हो देश की खातिर सीस कटाएं,
हर इक को यह समझाओगे सुख पाओगे।। वैदिक नीति......
फूट रही तो दिन में भी देखोगे तारे।
वक्त की है आवाज मिलो तुम दिल से सारे।
बिखरे है जो तिनका-तिनका उनको प्यारे,
बांध के जब तुम ले आओगे सुख पाओगे।। वैदिक नीति......
मानव को इक मान दिया है नत मस्तक हैं,
यज्ञ रूप भगवान दिया है नत मस्तक हैं।
वेदों ने जो ज्ञान दिया है नत मस्तक हैं,
अमृत रस जब बरसाओगे सुख पाओगे। वैदिक नीति......
कर कमलों से जोड़ जिसे हम पूज रहे हैं,
माल मुफ्त का खा खा कर हम सूख रहे हैं।
व्यर्थ की बातों में लेकिन हम बूझ रहे हैं,
इतना सबको समझाओगे सुख पाओगे।। वैदिक नीति......
हो बेताब अगर मुसकाए कितना शुभ है,
प्यार का अमृत रस जो बरसाए कितना शुभ है,
दिन का भूला वापिस आए कितना शुभ है,
लौट के वापिस घर आओगे सुख पाओगे।।
"वैदिक नीति अपनाओगे सुख पाओगे।।

ग्रामोत्थान कार्यक्रम

१४-१-८३ रविवार प्रातः १० बजे आर्यसमाज फतेहपुर (कुरुक्षेत्र) के तत्वाधान में जिला के पंचों सरपंचों, सभी धार्मिक सामाजिक संस्थाओं के देश भक्त समाजसेवियों की एक विचारगोष्ठि ग्रामोत्थान कार्यक्रम अर्थात शराब, दहेज जात-पातादि बुराईयां जो ग्रामों में फैल रही हैं के विषय में आर्यसमाज मंदिर फतेहपुर में होगी।

देशबन्धु आर्य
मन्त्री संयोजक गोष्ठि) आर्यसमाज फतेहपुर

कन्या गुरुकुल, हाथरस

कन्या गुरुकुल हाथरस का आगामी वार्षिकोत्सव ५, ६, ७, ८ फरवरी १९८४ को होगा। जनवरी १९८४ के प्रथम सप्ताह में नवीन कन्याओं का प्रवेश होगा। इस समय कन्या को प्रविष्ट कराने से उसका एक वर्ष बच सकता है।

—मुख्याधिष्ठात्री

श्रद्धानन्द को श्रद्धाञ्जलि

सुरेशकुमार शास्त्री, एम.ए.-I
हिन्दी विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़



२३ दिसम्बर का दिन भारतीय तथा आर्य इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन है। यह दिन हमें आत्म विवेचन के लिए प्रेरित करता है। अतः आईये, जरा मिलकर विचार करें कि क्या जो ज्योति उस कालजयी महापुरुष स्वामी श्रद्धानन्द ने जलाई थी उस ज्योति से हम लेशमात्र भी प्रकाश ले रहे हैं। वेद जो ज्ञान की ज्योतियों में सर्वोच्च ज्योति है उसकी एक किरण हमें आदेश देती है कि 'एता देवसेनाः सूर्य केतवः स चेतसः।

अमित्रान् नो जयन्तु स्वाहा। अथर्व का० ५/सू० ११/मं० १२।

अर्थात्—वीरो उठो! देव सेना की अगवानी करो। यह सूर्य अर्थात् प्रकाश का झण्डा लेकर हमारे शत्रुओं पर विजय प्राप्त करो। स्वामी श्रद्धानन्द ने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए घण्टाघर के सामने अपनी छाती को संगीनों के समक्ष तान दिया था। सम्भवतया इसी कारण उस समय आर्यसमाज इतना सुदृढ़ था। क्योंकि इसके वीर तथा नेता त्यागमय जीवन यापन करते हुए इस पौधे को सींचते थे। इसी आशय को दृष्टिगत रखते हुए किसी ने ठीक ही कहा था कि—

पुराने आर्यसमाजी नेता घर को उजाड़कर आर्यसमाज को बनाते थे परन्तु आधुनिक नेता आर्यसमाज को उजाड़ कर अपने घर को बनाते हैं। इस वाक्य के पूर्वार्द्ध को चरितार्थ करने में स्वामी श्रद्धानन्द का ज्वलन्त उदाहरण उपस्थित है। जब उन्होंने गुरुकुल कांगड़ी के लिए धन मांगने की अपील की तो सोचा कि जब तक मैं स्वयं त्याग नहीं करता मुझे दूसरों से माँगने का क्या अधिकार है? मेरे पास अब और तो कुछ नहीं रहा, जालन्धर का मकान तो है। बस यह विचार आते ही पहले अपने मकान के दान की घोषणा की और बाद में अपील। और उपरोक्त वाक्य के उत्तरार्द्ध को आजके तथाकथित आर्य नेता कर रहे हैं। उत्सव आदि के लिए जब दान एकत्रित करते हैं तो दूसरों से तो हजार-ग्यारह सौ की अपील करते हैं और स्वयं २१ रु० की रसीद कटवाते हैं। अरे उस सन्त ने तो अपने बच्चों तक की परवाह न करके उनको भी गुरुकुल में भर्ती करके आर्यसमाज के अर्पण किया और आज के नेताओं के बच्चों को यह भी नहीं पता कि आर्यसमाज कहते किसे हैं, सत्संगों में तो आना दूर रहा, आज के नेताओं का तो जीवन इस हरयाणवी लोकोक्ति के अनुसार है—'जहां देखा तवा परांत, वहीं गुजारी सारी रात'। इस बात की पुष्टि उस समय अधिक हुई जब मैं एक बार सोनीपत के आर्यसमाज माडल टाउन में गया तो वहां एक सज्जन ने मुझे सुनाया कि एक सज्जन यहां कथा करने आए तो वे बहुत अच्छा बोले और उनकी वक्तृत्व कला से प्रभावित होकर वहां के स्थानीय गीता मन्दिर से भी उनको निमन्त्रण मिला। वे उस निमन्त्रण पर कुछ दिन के पश्चात आए तो उन्होंने अपने हाथ से मूर्तियों को भोग लगाया और अपने हाथ से रेशमी वस्त्र पहनाए तथा उस मूर्ति के चरणों में सिर रखकर काफी लम्बी प्रार्थना की। वैसे वहां के आर्य समाजियों ने तो उन्हें बुलाना ही छोड़ दिया, जो इसके लिए बधाई के पात्र हैं। आज के राजनीतिक नेताओं की तरह जहां जैसी स्थिति देखी वैसा ही राग अलापना आरम्भ कर देते हैं। उच्च स्तर पर देखेंगे तो यह बेईमानी ही है।

"झुकने को हर दर पे सर को झुका दूं।
[illegible] का [illegible] इबादत नहीं है।"

स्वामी श्रद्धानन्द निराले वीर थे। शास्त्रकारों ने व्यक्ति वृत्ति की विविधता को देखकर वीर रस के चार भेद 'धर्मवीर, दयावीर, दानवीर और युद्धवीर' ये किये हैं। कोई धर्म के क्षेत्र में साहसी होता है, कोई पर-कष्ट हरण की चिन्ता में सर्वस्व की बाजी लगा देता है। कोई किसी की दरिद्रता दूर करने के लिए तथा देश-जाति की सेवार्थ अपने धन-सम्पदा को न्योछावर कर देता है। कोई राष्ट्र रक्षा के लिए युद्ध भूमि में जीवन तक स्वाहा कर देता है। किन्तु ऐसे उदाहरण बहुत कम मिलेंगे जिसमें ये चारों रस समाहित हों। यह विशेषता स्वामी श्रद्धानन्द में थी कि हर प्रकार की वीरता में सदा अग्रणी रहे। उनका सारा जीवन इस तथ्य का मुंह बोलता चित्र है। परन्तु आज के नेता सोचते हैं कि हम तो सिर्फ प्रधान या नेता बने रहें, काम कोई और करे। एक सज्जन ने मुझसे कहा कि आर्यसमाज में नवयुवक नहीं आते और पुराने उपदेशक जा रहे हैं, नया कोई तैयार नहीं हो रहा है। यह बात किसी इस एक की ही नहीं, लगभग सभी की यही मनःस्थिति है। वैसे यह बात कई जगह होती रहती थी परन्तु नरवाना में एक दिन खास तौर पर हुई और उस व्यक्ति ने आर्यसमाज के ऊपर काफी कुछ कहा। फिर मैंने उससे पूछा कि आपका बड़ा लड़का कितना पढ़ा है तथा क्या करता है तो उसने कहा कि दसवीं पास है और दुकान पर ही बैठता है तब फिर मैंने उसे जोर देकर कहा कि मैं अपनी जेब से उसका खर्चा दूंगा और आप उसे उपदेशक बनाएं और उसे आप आर्यसमाज के अर्पण करदें, जैसे स्वामी श्रद्धानन्द ने किये थे। तो फिर क्या था उस व्यक्ति के तो होश उड़ने लगे। लोग सोचते हैं कि आर्यसमाज के उपदेशक, पुरोहित तो किसी और के लड़के बनें। भूखे किसी और के बच्चे मरें और हम उनके ऊपर अपनी हुकम चलाते रहें। उन पुरोहितों को अपना नौकर मानें और जब उनसे पूछा जाये कि आप पुरोहित को देते क्या हैं तो बड़े गर्व से कहते हैं—'जो हम २०० रुपए देते हैं। अरे आज तो २०० रुपए में एक व्यक्ति को केवल सब्जी का भी काम नहीं चलता और अन्य सामान तो अलग रहा। आज इस पवित्र दिवस के उपलक्ष्य में हम संकल्प करें कि जो आर्यसमाज का नेता बनना चाहें पहले अपने बच्चों को आर्यसमाज में लायें। हम परिस्थितियों का बहाना न बनायें। बेंजमिन डिजरायली के शब्दों में—"मनुष्य परिस्थितियों का दास नहीं, परिस्थितियां ही उसकी दास हैं।" इस बात का ज्वलन्त उदाहरण उनका अपना जीवन है कि देश, धर्म और जाति से विदेशी होते हुए भी उन्होंने इंगलैंड का प्रधान मन्त्री बनकर दिखाया।

किसी उर्दू के कवि ने भी ठीक ही कहा है कि—
लोग कहते हैं बदलता है जमाना अकसर।
मर्द वे हैं जो जमाने को बदल देते हैं॥

स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपने समय में जमाने को बदल कर दिखा दिया था। अतः उस महात्मा को हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि यही होगी कि जिस पवित्र भावना से प्रेरित होकर उन्होंने आर्यसमाज के लिए सर्वस्व अर्पण किया, इस आर्यसमाज रूपी पौधे को अपने खून से सींचा, हम उस पौधे को अपने हाथों में कुल्हाड़ी लेकर न काटें इसे अबाध गति से बढ़ने दें। यही उनको हमारी सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

(पृष्ठ २ का शेष)

यहां एक बात और भी समझ लेनी आवश्यक है। वह यह कि प्रार्थना पुरुषार्थमय जीवन व्यतीत करते हुए भी यदि हमारे ऊपर विपत्तियों के पहाड़ टूट रहे हैं, तो यदि यह सत्कर्म भी न किये जायें तो हमारी क्या दशा होगी? हमारा सुदृढ़ विश्वास है कि प्रार्थना परायण व्यक्ति विपत्तियों से घबराता नहीं। वह उसमें अपने प्यारे प्रभु की कर्मफल व्यवस्था के दर्शन करता है और उसे सर्वात्मना शिरोधार्य करता है। वह कृत पापों के फल भोग से बचने को प्रार्थना नहीं करता, वह तो यही कहता है कि प्रभु ऐसी कृपा करो कि मैं फिर ऐसा पाप न कर सकूं। अतः प्रार्थना की अपनी उपयोगिता है। पाप क्षमा न होने पर भी प्रार्थना की उपयोगिता पर कोई आंच नहीं आती। पापमय जीवन से उबरने में प्रार्थना एक अमोघ अस्त्र है, एक प्रबल सहारा है। अतः प्रत्येक व्यक्ति को प्रार्थना परायण होना आवश्यक है।

गुण अनेक हैं मेल में

—बनवारीलाल 'शादां'
प्रधान, आर्यसमाज मोडल बस्ती नई दिल्ली ११०००५

गुण अनेक हैं मेल में, इसको शक्ति अपार।
जिससे निर्बल भी बने, महाशक्ति भण्डार॥

तिनके की क्या हैसियत, क्या उसकी औक़ात।
ताक़त पाकर संघ की, गज बांधे दिन रात॥

बून्द पड़ी आकाश से, होती लुप्त तुरन्त।
मिलकर बून्द बने नदी, पावें शक्ति अनन्त॥

सूत अकेला दीन मृदु, टूट हवा से जाय।
बनकर रस्सा संगठित, आन्धी भी सह जाय॥

एक एक ग्यारह बने, कन्धा जो मिल जाय।
एक निकाले एक से, हाथ शून्य ही आय॥

एक जुड़े जो एक से, तो भी दो बन जाय।
भाग किये ताकत घटे, एक मात्र रह जाए॥

पांच अंगुली हाथ की, जुदा जुदा बल हीन।
बन्धकर जो मुट्ठी बनी, उसकी शक्ति नवीन॥

ताना एक न सूत का, अंगुली को ढक पाय।
बाने के संग वस्त्र बन, सारा तन ढक जाय॥

सब फूलों के मेल से, गुथा प्रेम का हार।
हिया सुवासित यह करे, हर्षित हो परिवार॥

शादों, माला प्रेम की, सब को एक बनाय।
हरे अनेकता भिन्नता, आपसकी मिट जाय॥

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० न 23207/73 रजि० न० P/RTK 49 ८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ५ २८ दिसम्बर १९८३ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा हरयाणा रक्षा-वाहिनी के महत्वपूर्ण निश्चय

हरयाणा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह कुरुक्षेत्र में होगा। हरयाणा के सभी गुरुकुलों में एक रूपता तथा समान पाठ्यक्रम बनाया जावेगा। राष्ट्रद्रोही भिण्डरवाला तथा अन्य उग्रवादियों को तुरन्त गिरफ्तार करने की मांग। सभा का प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री से भेंट करेगा।

(कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा)

रोहतक—२५ दिसम्बर ८३—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा विद्या सभा हरयाणा की एक संयुक्त अन्तरंग सभा की बैठक २५ दिसम्बर ८३ रविवार को प्रातः ११ बजे सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता मे सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ रोहतक मे सम्पन्न हुई।

हरयाणा महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी कुरुक्षेत्र में

सभा के उप प्रधान एव गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान चौ० सत्यदेव सिंह के प्रस्ताव पर हरयाणा कार्यकर्ताओं ने इस समारोह को सफल करने के लिए पूर्ण सहयोग करने का विश्वास दिलाया है। कुरुक्षेत्र महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह ८,९,१० जून को कुरुक्षेत्र में मनाये जाने का निश्चय किया गया है। वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र के महर्षि दयानन्द वैदिक धाम म किट का निर्माण करके वेदप्रचार के लिए आय का साधन बनाया जाएगा। यहां प्रतिवर्ष मेले पर सभा की ओर से प्रचार कैम्प लगाया जाता है।

हरयाणा में गुरुकुलों का संगठन

हरयाणा में इस समय २५ ३० गुरुकुल चल रहे हैं परन्तु अभी तक उनमें समान पाठ्यक्रम नही है और परीक्षायें भिन्न भिन्न विश्वविद्यालयो द्वारा दिलाई जाती हैं। अत आर्य विद्या सभा हरयाणा की ओर से श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती हरयाणा के सभी गुरुकुलो के अधिकारियों से सम्पर्क करके गुरुकुलो मे एकरूपता तथा समान पाठ्यक्रम तैयार करने का यत्न करेंगे ताकि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को और अधिक लोकप्रिय बनाया जा सके। गुरुकुलो के स्नातको से वेदप्रचार विभाग में सहयोग लिया जावेगा। हरयाणा मे आर्यसमाज के संगठन तथा प्रचार कार्य को प्रभावशाली बनाने के लिए भजनमण्डलियो को दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर जिला अम्बाला में ट्रेनिंग दी जावेगी। इसी प्रकार अलवर (राजस्थान) में भी हरयाणा की भजनमण्डलियो को प्रशिक्षण शिविर में भेजकर वैदिक सिद्धान्तो की शिक्षा दिलाई जायेगी। सभा ने उपदेशकों, भजनोपदेशकों तथा कर्मचारियों के महगाई भत्ते में वृद्धि करने के लिए एक उपसमिति का गठन किया है। मेवात मण्डल जिला गुडगाव तथा फरीदाबाद में आर्यसमाज के प्रचार कार्य को तेज करने के लिए स्थायी रूप से एक भजनमण्डली की नियुक्ति की जावेगी। ताकि वहा प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की जा सके। स्मरण रहे वहा मुसलमान गुण्डे मौलवी तथा हिन्दू लडकियों का अपहरण करके राजनैतिक शरण ले रहे हैं। इस सम्बन्ध मे सभा की ओर से हरयाणा सरकार से भी इन तत्वो के विरुद्ध शीघ्र कठोर कार्यवाही करने की मांग की गई है।

श्री कपिलदेव शास्त्री विद्या सभा से पृथक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा का वार्षिक चुनाव सर्वसम्मति से बहुत ही सद्भावना के वातावरण में सम्पन्न हुआ था। परन्तु श्री कपिलदेव शास्त्री ने दैनिक पंजाब केसरी तथा हिन्द समाचार में अपना एक वक्तव्य छपवाकर सभा के सगठन को कमजोर करने का तथा झूठा प्रचार कर आर्य जनता को भ्रम मे डालकर शरारतपूर्ण कृत्य किया है। वे स्वय सभा के अधिवेशन मे सम्मिलित नही हुए तथापि सद्भावनावश उन्हे भी विद्या सभा का सदस्य मनोनीत कर दिया गया था। उनके द्वारा समाचारपत्रो मे सभा के विरुद्ध समाचार छपवाने के अन्तर्गत सभा ने सर्वसम्मति से निन्दा की है तथा उन्हें आर्य विद्यापरिषद् की सदस्यता से पृथक कर दिया गया।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक

अन्तरंग सभा की बैठक २५ दिसम्बर को दोपहर बाद २ बजे सिद्धान्ती भवन मे प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुई। रक्षा वाहिनी की अन्य शाखाओ के अधिकारियो के अतिरिक्त अबोहर फाजिल्का के नेता चौ० तेगराम जी पूर्व विधायक ने भी इस बैठक मे भाग लिया।

प्रो० शेरसिंह ने बैठक मे सदस्यो को बताया कि आज राष्ट्र को खण्डित करने के लिए विदेशी शक्तियां अरूणाचल तामिलनाडु, आसाम, जम्मू कशमीर तथा पजाब मे गडबडी करने का षडयन्त्र रच रही हैं। निर्धन वर्ग बेरोजगार व्यक्तियो को विदेशो मे रोजगार का लालच देकर उनका धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। पजाब मे अकाली उग्रवादी हिन्दूओ को बसो मे उतारकर उन्हें चुन २ कर कत्ल कर रहे हैं तथा हिंसक अपराधी गुरुद्वारो मे शरण ले रहे हैं। पजाब पुलिस उन्हे गिरफ्तार नही कर रही। पूर्व मुख्यमन्त्री सरदार दरबारासिंह तथा पजाब के वर्तमान राज्यपाल भी पजाब मे हिंसक गतिविधियो को रोकने मे असफल हो चुके हैं। राष्ट्रद्रोही सन्त भिण्डरवाला श्री गुरचरणसिंह टोहरा श्री तलवण्डी आदि अकाली नेताओ को तुरन्त गिरफ्तार करके उन्हें जेल में बन्द करना चाहिए। भारत सरकार को अकालियो के साथ समझौता की कोई बात नही करनी चाहिए क्योकि वे बार-२ समझौता करके मुकर जाते हैं।

एक अन्य प्रस्ताव पास करके निर्णय किया गया है कि —

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा हरयाणा रक्षा वाहिनी का एक प्रतिनिधि मण्डल शीघ्र ही भारत के प्रधान मन्त्री गृहमंत्री से भेंट कर के मांग करेगा कि प्रधानमन्त्री अपने पूर्व दिये गये एवार्ड को लागू करते हुए हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को तुरन्त हरयाणा मे सम्मिलित किया जावे। सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई कार्य स्वयं भारत सरकार अपने हाथ मे लेवे क्योकि नहर की खुदाई के लिए हरयाणा सरकार ने जो धन पजाब सरकार को दिया था, उसे पजाब के सरकारी कर्मचारियो को बिना कार्य कराये वेतन देकर खर्च कर दिया है पाकिस्तान को मुफ्त पानी जा रहा है जबकि हरयाणा की कृषि भूमि पानी के लिए तरस रही है। (शेष पृष्ठ ४ पर)

सस्वर मन्त्रोच्चारण की अनिवार्यता

ले०—पं० वीरसेन जी वेदश्रमी. वेद विज्ञानाचार्य,
वेद सदन, महारानी पथ, इन्दौर-४५२००७

वेद मन्त्रों का पाठ शुद्ध एवं सस्वर करें

ऋतं वदिष्यामि—ऋत अर्थात् सत्य, यथार्थ ज्ञानमय वेद है उनका यथावत् शुद्ध एवं सस्वर ही उच्चारण मे करूंगा—ऐसी प्रतिज्ञा आर्यों ने करनी चाहिये।

सत्यं वदिष्यामि—वेद सब सत्य विद्याओ का पुस्तक है। सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागने मे सर्वदा उद्यत रहना चाहिये अत: वेद मन्त्रों का शुद्ध तथा स्वर सहित उच्चारण करना ही चाहिये। वेदमन्त्रो का अशुद्ध और स्वर रहित उच्चारण अविद्या से अथवा अज्ञान से होता है। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिये। अत वेद मन्त्रो का जो सत्य स्वरूप है उसको शुद्ध बोलकर रक्षित और स्थापित करना चाहिये। उनको विकृत नही करना चाहिए।

वेद की सार्थकता सस्वर पाठ में है

महर्षि पतञ्जलि ने 'महाभाष्य में लिखा—दुष्ट: शब्द: स्वरतो वर्णतो वा मिथ्याप्रयुक्तो न तमर्थमाह—स वाग्वज्रो यजमानं हिनस्ति यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोपराधात्—अर्थात् शब्द यदि उदात्तादि मे या अक्षर रूप से अशुद्ध बोला जाता है तो वह अपने अर्थ को प्रकट नही करता है। वह अशुद्ध उच्चारित शब्द रूपी वज्र यजमान का ही नाश कर देता है अर्थात् वक्ता के इच्छित अर्थ को नष्ट कर यजमान के इष्ट रूपी फल की प्राप्ति में बाधक हो जाता है। जैसे इन्द्रशत्रु शब्द में स्वर के दोष से प्रयोक्ता ही पराभव को प्राप्त हुए थे। इतना स्पष्ट प्रतिपादन शुद्ध और सस्वर बोलने के लिए सभी शिक्षाग्रन्थों में ऋषि मुनियो ने किया है—और महर्षि स्वामी दयानन्द ने इसे अपने ग्रन्थो में उद्धृत कर मन्त्रो को शुद्ध तथा सस्वर बोलने का ही आदेश दिया है। अशुद्ध और स्वर रहित मन्त्रो के उच्चारण का कही भी प्रतिपादन नही किया है। अत. शुद्ध एवं सस्वर उच्चारण का प्रयत्न करना ही चाहिये।

सस्वर वेद पाठ के लिए प्रयत्न आवश्यक

मनमाने रूप मे अशुद्ध तथा स्वर रहित मन्त्र पाठ करने से अपने को धन्य मानने से अविद्या की ही वृद्धि हुई है और वेद के यथार्थ परम लाभ से आर्यजन वंचित ही रहे हैं। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पठन-पाठन विषय मे महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती लिखते हैं—वेदेष्वपि प्रयत्नेन सह स्व स्व स्थाने खलु स्वरवर्णोच्चारणं कर्तव्यम्। अन्यथा दुष्ट: शब्दो दु:खदोऽनर्थकश्च भवति—अर्थात् वेद मन्त्रों में भी प्रयत्न के साथ अपने-अपने स्थान पर जो जो स्वर और वर्ण हैं उनका उच्चारण करना ही चाहिये। इसके विपरीत करने से अशुद्ध और स्वर रहित बोला गया शब्द दु ख उत्पन्न करने वाला और प्रयोजन रहित होता है। इससे स्पष्ट सिद्ध होता है कि सुख उत्पन्न करने के लिए शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ करना आवश्यक है। क्या आपके यज्ञो में महर्षि के आदेशानुसार सस्वर मन्त्र बोले जाते हैं या भ्रष्ट पाठ से बोले जाते हैं—इस पर विचार करें।

स्वर दोषयुक्त मन्त्रोच्चारण से अपराध

यथेन्द्रशत्रु: स्वरतोपराधात्—इस, दृष्टान्त से महाभाष्यकार ने तथा प्राय: सभी शिक्षाग्रन्थों ने स्वर दोष से उत्पन्न अपराध और उसके अनिष्ट फल की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के पठन-पाठन विषय में इन्द्रशत्रु शब्द में अन्तोदात्त और आद्युदात्त स्वरो के भेद से अभिप्राय एवं प्रभाव भेद होता है इसका प्रतिपादन करते हुए महर्षि लिखते हैं कि—अत: कारणात् स्वरोच्चारणं वर्णोच्चारणं च यथावदेव कर्तव्यम्—अर्थात् इन्द्रशत्रु शब्द में स्वर के अपराध से अर्थ बदल जाने से उदात्तादि स्वरो का और वर्णों का यथावत् ही उच्चारण करना चहिए—अशुद्ध उच्चारण नहीं करना चाहिए।

उदात्तादि स्वरों के साथ मन्त्र पाठ करें

इसी प्रकार ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा विषय में महर्षि लिखते हैं कि — एवमेव व्याकरणादिभिर्वेदांगैर्वैदिकशब्दानामुदात्तादिस्वरविज्ञानं यथार्थं कर्तव्यमुच्चारणं च—अर्थात् इसी प्रकार व्याकरणादि वेदांगों से वैदिक शब्दों के उदात्तादि स्वर का ज्ञान निश्चयात्मक रूप से करना चाहिए और उनका उच्चारण भी। यदि विगत शताब्दी में यह कार्य नहीं किया है तो इस शताब्दी में शीघ्र करें और क्षति से बचें।

चारों वेदों की रीति से चार प्रकार का उच्चारण

महर्षि ने ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के प्रतिज्ञा विषय में लिखा है। प्रश्न—वेदों के चार विभाग क्यों किये हैं? उत्तर—भिन्न-भिन्न विद्या जताने के लिए अर्थात् जो तीन प्रकार की गान विद्या है एक तो यह कि उदात्त और षड्जादि स्वरों का उच्चारण ऐसी शीघ्रता से करना जैसा कि ऋग्वेद के स्वरों का उच्चारण द्रुत अर्थात् शीघ्र वृत्ति में होता है, दूसरी मध्यम वृत्ति जैसे यजुर्वेद के स्वरों का उच्चारण ऋग्वेद के मन्त्रों के दूने काल मे होता है, तीसरी विलम्बित वृत्ति है जिसमें प्रथम वृत्ति से तिगुना काल लगता है जैसा कि सामवेद के स्वरों के उच्चारण वा गान में, फिर इन्हीं तीनों वृत्तियों के मिलाने से अथर्ववेद का भी उच्चारण होता है—परन्तु इसका द्रुतवृत्ति में उच्चारण अधिक होता है। इसलिए चारो वेदों के चार विभाग हुए।

क्या महर्षि के आदेश के विपरीत आप सभी वेदो का एक ही रीति से उच्चारण करके अशुद्ध तथा अनार्ष पद्धति का प्रचलन तो नही कर रहे हैं? यदि करते हैं तो इस दोष से भी बचिये और सभी आर्यजनों को बचाइए।

संस्कार विधि में महर्षि का आदेश

संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण में लिखा है कि सब संस्कारो में मधुर स्वर से मन्त्रोच्चारण यजमान ही करे, न शीघ्र न विलम्ब से उच्चारण करे. किन्तु मध्य भाग जैसा कि जिस वेद का उच्चारण है करे। अर्थात् यजमान ही चारों वेदों की रीति से शुद्ध एवं सस्वर उच्चारण करे। क्या हमारे विद्वान् पुरोहित भी इस प्रकार से उच्चारण करने में समर्थ हैं? यदि नही तो शीघ्र ही ऋषि आदेश के अनुसार सस्वर मन्त्राभ्यास करें और यजमानो को भी सिखावें। अन्धेनैव नीयमाना यथान्धा :—की उक्ति को चरितार्थ न करें और तमसो मा ज्योतिर्गमय के आदेश पर चलें। कुछ यज्ञकर्ता वेदभेद से द्रुत, मध्य, विलम्बित वृत्ति से चारो वेदो के मन्त्रो का यदि उच्चारण करते हैं तो वे उदात्तादि स्वरो के उच्चारण अभ्यास से वंचित है। वह भी दोषपूर्ण है। कुछ गाकर भी उच्चारण करते हैं वह भी दोषपूर्ण है। क्योकि याज्ञवल्क्य शिक्षा में—गायन्नैव न कम्पयेत्—द्वारा मन्त्रो को गाने के रूप मे या ऊंचे नीचे यथेष्ट स्वरो में गान निषिद्ध माना है

एकश्रुति पाठ के बारे में भ्रान्त धारणा

कुछ लोगो ने सस्वर मन्त्रपाठ के न जानने से एकश्रुति पाठ की आड़ में गड़बड़ पाठ को एकश्रुति पाठ कहकर प्रचलित किया हुआ है। वास्तव में जो सस्वर पाठ जानता ही नहीं वह एक-श्रुति पाठ भी नही जानता और अपनी अज्ञानता को संरक्षण देकर आर्यों को भी भ्रमित करता है। एकश्रुति स्वर का यह तात्पर्य नही है कि स्वेच्छा से जैसा उच्चारण हो करते आवें। बिना स्वर जाने भी जो मन्त्र बोले जाते हैं उनमें भी स्वर तो लग ही जाते है। भेद यह है कि जैसा स्वर है उसके विपरीत या कभी अनुकूल स्वर तो बिना जाने लग ही जाता है परन्तु एक-श्रुति स्वर तो नही लग पाता। ऐसा पाठ अज्ञानता के कारण गडबडश्रुति पाठ है। नारदीय शिक्षा में—ऋक्सामयजुरङ्गानि ये यज्ञेषु प्रयुंजते—अविज्ञानाद्धि तेषां भवति विस्वर: —अर्थात् जो ऋग्यजु: साम के मन्त्रों का यज्ञों मे प्रयोग करते हैं—मन्त्र पाठ की रीति स्वरादि से अनभिज्ञ होने के कारण उनका विपरीत स्वर या अशुद्ध स्वर हो जाता है, उससे यजमान की आयु-प्रजा, पशु आदि धन का नाश होता है। अत: सस्वर मन्त्र पाठ यज्ञों मे भी आवश्यक है और जहां यज्ञ में एकश्रुति का विधान है वहां एकश्रुति से पाठ करना चाहिए। यह भी एक स्वर विशेष है। उदात्त उदात्तर अनुदात्त अनुदात्ततर, स्वरित स्वरितोदात्त और एकश्रुति इस रीति से सात स्वरों को महर्षि ने स्वर व्यवस्था प्रकरण भी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में लिखा है। बिना एकश्रुति के अभ्यास व ज्ञान के किसी भी रूप से उच्चारण करना एकश्रुति नहीं है। अत: एकश्रुति के नाम पर भ्रष्ट पाठ करना भी अपराध है।

सस्वर वेदपाठ की उपेक्षा तुरन्त बन्द करें और सस्वर वेद पाठ का शिविर लगावें

यह सब पढिये, विचारिये। आप शुद्ध और सस्वर वेदपाठ की उपेक्षा करते हुए स्वयं अज्ञान में रहेंगे और अन्यों को भी रखेंगे। शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ के शिविरों का आयोजन सार्वदेशिक सभा, आर्यसमाजों के उत्सव से पूर्व, गुरुकुलों, डी. ए. वी संस्थाओं को प्रतिवर्ष आयोजित करना चाहिए। अन्यथा शुद्ध व सस्वर मन्त्र पाठ प्रचलित नहीं होगा। आप अनेक व्याख्यान धुरन्धर और ब्रह्मादि पद को अलंकृत करने वाले ख्यातिप्राप्त विद्वान् भी शुद्ध रूप से गायत्री मन्त्र तथा नित्य के बोलने के प्रार्थना सन्ध्या हवन के मन्त्रों को शुद्ध नहीं बोल सकते हैं—फिर सस्वर पाठ की तो बात पृथक् है। ●

सम्पादकीय

चुनाव का प्यार और चुनाव की मार

प्रजातन्त्र में चुनाव की अपनी ही भूमिका है। यदि यह कह दिया जाए कि यही इस व्यवस्था का आधार है तो इसमें भी सम्भवतया कोई अतिशयोक्ति न हो। विश्व की सारी प्रजातान्त्रिक संस्थाओं में गतिशीलता इस चुनाव के द्वारा ही बनी रहती है तथा निःसन्देह गतिशीलता में ही प्रवाह है। अवरोध तो गतिहीनता का ही दूसरा नाम है। जन सेवकों द्वारा अपनी संस्था की सेवार्थ किये गए कार्यों की गरिमा तथा पूर्ति की परीक्षा भी इसी चुनाव रूपी कसौटी पर ही निर्भर करती है।

हरयाणा प्रान्त में पिछले कुछ समय से धार्मिक तथा राजनीतिक दोनों ही क्षेत्रों में चुनावों की व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा की जा रही थी। धार्मिक अथवा सांस्कृतिक क्षेत्र में तो इस प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ही मात्र ऐसी संस्था है जिसका अपना लोकतन्त्रीय स्वरूप है, जिसके अनुसार निश्चित अवधी की समाप्ति पर चुनाव अपेक्षित रहते हैं। ये चुनाव यहां ८३ के मार्च मास से ही अपेक्षित थे किन्तु संगठन के लिए क्योंकि प्रान्त के राजनीतिक हितों का ध्यान रखना भी सामयिक दृष्टि से उतना ही आवश्यक था अतः उस समय इनकी सम्पन्नता असम्भव जानकर सितम्बर मास के प्रारम्भ में इसके लिए समय निश्चित किया गया जो अजमेर में होने वाले महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की व्यस्तताओं में अधिकारी वर्ग के व्यस्त होने के कारण इस समारोह की सम्पन्नता तक के लिए स्थगित कर दिया गया।

अस्तु, इस समारोह की सफलतापूर्वक सम्पन्नता के उपरान्त इधर ११ दिसम्बर के लिए जैसे ही इसका निश्चय हुआ उधर हरयाणा प्रान्त के राजनीतिक क्षेत्र में भी लोक सभा की एक तथा विधान सभा की एक, इस प्रकार दो सीटों के लिए चिरप्रतीक्षित उप चुनाव के लिए भी २३ दिसम्बर के दिन की घोषणा हो गई। दोनों ही क्षेत्रों में चुनाव की गर्मी का बढ़ना स्वाभाविक था। ११ दिसम्बर के दिन हरयाणा सभा के अधिकारियों के निर्वाचन हेतु विशेष उत्साह की झलक स्पष्ट दिखाई पड़ी। ७०० से ऊपर स्वीकृत प्रतिनिधियों में से ५०० से ऊपर ने इस अधिवेशन में भाग लिया जो इस संस्था के विगत इतिहास में रिकार्ड है। प्रतिनिधियों ने आगामी एक वर्ष के लिए पुनः प्रो० शेरसिंह को सर्वसम्मति से प्रधान चुनकर अपनी टीम के अन्य साथियों की नियुक्ति के लिए भी उन्हें ही अधिकृत कर दिया। विगत अवधि में प्रोफैसर साहब द्वारा हरयाणा के धार्य सामाजिक क्षेत्र में तथा विशेषकर पंजाब में बढ़ते उग्रवाद तथा इसके सम्भावित कुप्रभाव से सहमे हुए हरयाणवी में जिस स्फूर्ति और साहस का संचार किया गया, प्रतिनिधियों ने अपने नेता के प्रति इसके लिए मानो इसी रूप में आभार प्रदर्शित किया।

दूसरी ओर राजनीतिक चुनावों में स्थिति ठीक इसके विपरीत रही। सोनीपत की संसदीय सीट पर परिणाम जो रहा वह भी कम विचारणीय नहीं है। जो कल तक मतदाताओं की श्रद्धा एवं स्नेह के पात्र थे चुनाव से पूर्व के उनके आचरण ने मतदाताओं के हृदयों से उन्हें निकाल दिया। एक ओर विश्वास जमा दूसरी ओर उखड़ गया।

पौधे के शिखर पर खिले फूल को यह समझने की नितान्त आवश्यकता है कि उसका खिलना व मुस्कराना जिस शक्ति से सम्भव हुआ वह शक्ति मूल से तना, टहनी, शाखा-प्रशाखा तथा पत्तों द्वारा ही उसे प्राप्त हुई है। यही मानने में उसका हित है। इसके विपरीत यदि वह इस भ्रान्त धारणा का शिकार हो बैठे कि उसी के दम से पौधे का अस्तित्व है तब इसे तो मनीषियों की भाषा में विनाशकाले विपरीत बुद्धि' ही कहा जायेगा। हां, पुष्प से पौधे की शोभा है, ऐसा पौधे तथा उसके घटकों को भी मानना चाहिए। हरयाणा के राजनीतिक उप-चुनाव में उन लोगों को जो जनता के हृदय मन्दिर में देवता समान प्रतिष्ठित थे, जो मात बनी है उसका मुख्य कारण 'हमसे ही उसका अस्तित्व है' के भ्रमपूर्ण विचार ही है। हमारे अस्तित्व में सबकी श्रद्धा का भी महत्वपूर्ण योगदान है, यदि अब भी इस सत्य को मान लिया जाये तो सुबह का भूला शाम को घर आ सकता है।

इधर अद्वितीय रचनाकार श्रद्धेय स्वामी ओमानन्दजी महाराज के संरक्षण में अपनी विशिष्ट कार्य पद्धति द्वारा धार्मिक जगत् में एक विशेष स्थान प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा सभा का पुनः प्रधान बनकर बना लिया है। हरयाणा की धर्म परायण जनता के लिए जहां यह शुभ संकेत है वहीं इस प्रदेश के राजनीतिक हितों की सुरक्षा के लिए भी इष्ट है। अपने सहयोगी अधिकारियों की जिस टीम की घोषणा उन्होंने की है, उसके भी सभी सदस्य प्रतीत की कसौटी पर कसे जा चुके हैं। प्रोफैसर साहब के पुराने साथी निवर्तमान मन्त्री महाशय भरतसिंह ने क्योंकि विगत मई में स्वामी ओमानन्द अभिनन्दन समारोह के अवसर पर ही अपने स्वास्थ्य को ध्यान में रखकर भविष्य में इस महत्वपूर्ण पद पर न आने की घोषणा कर दी थी अतः उनके स्थान पर हरयाणा के प्रख्यात शिक्षा शास्त्री डा० रणजीतसिंह नियुक्त हुये हैं। आप १९७९-८० की अवधि में भी इस पद पर कार्य कर चुके हैं, अतः नये नहीं हैं। संस्था की परिस्थितियों से भली भांति परिचित होने का लाभ संस्था को मिलेगा, इसकी पूरी आशा है।

चुनाव का प्रभाव सर्वहितकारी पर भी व्यापक पड़ा है। शिक्षा विद् अपने नये प्रधान सम्पादक से मनीषा तथा संचालक सम्पादक श्री वेदव्रत शास्त्री से कलेवर पाकर यह निश्चय ही पठितों में अपना स्थान बढ़ायेगा। धर्म तथा राजनीति के क्षेत्र में सम्पन्न इन चुनावों ने जिनको विजय दिलाई उन्हें बधाई, जिन्हें पराजय का मुंह देखना पड़ा आत्म-निरीक्षण द्वारा इसके कारणों को जानकर यथार्थ में उन्हें दूर करने की सामर्थ्य हेतु उनके लिए प्रभु से प्रार्थना तथा अपने पाठकों के लिए नव वर्ष की शुभ कामना करते हुए अभिवादन पूर्वक—

—रणवीर

दुःखद आर्य पत्रकार दिवंगत समाचार

२१ दिसम्बर (आकाशवाणी द्वारा)! आज प्रातः ८ बजे के मुख्य समाचार बुलेटिन से यह समाचार सुनकर दुःख हुआ कि प्रख्यात आर्य पत्रकार दयानन्द संस्थान के संस्थापक महात्मा वेद भिक्षु (पं० भारतेन्द्र-नाथ) का देहान्त हो गया। परोपकारी के विगत अंक द्वारा आर्य जगत् को उनके रुग्ण होने का समाचार मिला था। श्री भिक्षु जी पिछले एक सप्ताह से हस्पताल में उपचाराधीन थे। आप विभिन्न आर्य पत्रिकाओं के सम्पादक रहे तथा जन-ज्ञान साप्ताहिक से वर्तमान में सम्बद्ध थे। महात्मा वेद भिक्षु जी की पुत्रियां ही हैं जिनमें से एक आर्यसमाज के युवा विद्वान प्रो० धर्मवीर दयानन्द कालेज अजमेर के साथ विवाही हैं। श्री भिक्षु जी के यहां पुत्र नहीं है। श्रीमती पण्डिता राकेश रानी जो प्रसिद्ध हिन्दु नेतृ आपकी धर्मपत्नी हैं। सर्वहितकारी दिवंगत की सद्-गति के एवं शोक संतप्त परिजनों के लिए इस आघात को धैर्यपूर्वक सहन करते हुए ऋषिमिशन की सेवा में जुटे रहने हेतु दयालु देव से प्रार्थी हैं।

—सह सम्पादक

समाज का प्रचार

दिनांक २२ दिसम्बर १९८३ को ग्राम बालावास में सुबह ९-०० बजे डा० सुदर्शन देव आचार्य द्वारा यज्ञ किया गया और बहिन कला-वती के मधुर भजन व प्रवचन हुए जिसमें लोगों पर काफी प्रभाव पड़ा और गुरुकुल गणियार के लिए सभी ने दिल खोलकर दान दिया।

इसके पश्चात् ग्राम कवारी में आचार्य जी द्वारा सायं कालीन यज्ञ किया गया व रात्रि को आचार्य जी के प्रवचन व बहिन कलावती के मधुर भजन हुए यहां के निवासियों पर वैदिक प्रचार का काफी प्रभाव पड़ा तथा सभी ने दिल खोलकर दान दिया।

धतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
मन्त्री, आर्यसमाज, कवारी

धर्म के लुटेरों से सावधान,

आर्य समाज, उत्तम कालोनी, झज्जर मार्ग बहादुरगढ़ शहर द्वारा विज्ञापित

कई वर्षों से कई देशों के पादरी आकर दावा करते हैं कि उनका धर्म हो एक मात्र सच्चा धर्म है। ईसा मसीह ही एक मात्र परमात्मा का पुत्र है, जो सब मनुष्यों के पापों को अपने सिर लेकर फांसी पर चढ गया और उसपर ईमान लाने से सब रोग दूर हो सकते हैं। इस तरह रोग दूर करने के बहाने से ये लोग अमरीका के पैसे से बहादुरगढ़ शहर और गांवों से भोले भाले अनपढ़ लोगों को अपने पास जाकर उन से हिन्दु धर्म छुड़ा कर उन्हें ईसा की भेड़ बनाना चाहते हैं।

इन पादरियों से पूछा जा सकता है कि यदि ईसा का धर्म ही सच्चा है तो अमेरिका आदि सारे ईसाई देशों में लाखों की संख्या में ईसाई-धर्म से दुखी हुए हिप्पी लोग सच्ची शांति पाने के लिए भारत में आकर क्यों मारे मारे फिरते हैं? यदि तुम रोगों को दूर कर सकते हो तो ईसाई देशों में अस्पताल भयंकर रोगियों से क्यों भरे पड़े हैं? अमेरिका आदि में ईसाई लोग लाखों टन नींद की गोलियां खाये बिना सो भी नहीं सकते।

यदि ईसाई धर्म प्रेम और शान्ति की बात सिखाता है तो अमेरिका और अफ्रीका में अब भी गोरे ईसाई काले ईसाईयों का खून क्यों चूस रहे हैं? गोवा दमन आदि में जो हिन्दू ईसाई नहीं बने, उन्हें जोसुइटस पुर्तगाली ईसाईयों ने जिन्दा आग में जलाने और क्रूरता से मारने के पशुता पूर्ण कार्य क्यों किये? अब भी नागालैंड, मिजोरम, त्रिपुरा आदि राज्यों में ईसाई विद्रोही हिन्दू मन्दिरों को नष्ट करने और हिन्दुओं को मारने में क्यों लगे हैं? वे लोभ-लालच, छल-कपट और डराने धमकाने से हिन्दुओं का धर्म-परिवर्तन क्यों कर रहे हैं? जबकि उनके अपने ईसाई देशों में ही ईसाईमत खत्म हो रहा है स्पेन, पुर्तगाल, हालैण्ड जैसे देशों में हिन्दूओं को अपने मुर्दे तक भी जलाने की अनुमति नहीं दी जाती क्यों? क्या यह गोरे पादरी हिन्दुओं को इसी तरह ईसाई बनाकर भारत को फिर गुलाम बनाना और उसके कई टुकड़े करना चाहते हैं? हिन्दू इस षड्यन्त्र से सावधान रहें।

यदि ईसा परमात्मा का ही बेटा था, तो बताओ कि फांसी के समय ईसा रोता-चीखता क्यों मरा था? जबकि भारत में बन्दा-बीर-वैरागी महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा कितने ही क्रान्तिकारियों ने हंसते हुए मौत का स्वागत किया। बाईबिल में ईसा द्वारा दिखाये गये चमत्कारों की झूठी कहानियों के अतिरिक्त कौन सी ऐसी बढ़िया बातें हैं, जो हिन्दु धर्म के ग्रन्थों में नहीं हैं। खुद ईसाइयों में भी कैथोलिक और प्रोटेस्टेंट आदि अनेक मतों वाले आयरलैंड आदि में एक दूसरे का ही गला क्यों काट रहे हैं? यदि ईसा कुमारी के पेट से पैदा होने के कारण ईश्वर-पुत्र था, तो आज भी लाखों नाजायज पैदा होने वाले बच्चों को तुम अपना पैगम्बर क्यों नहीं मानते? तुम्हारी बाइबिल में जो हजारों झूठी गप्पें भरी हैं, जिनका कुछ नमूना महर्षि दयानन्द ने अपने जगत्-प्रसिद्ध ग्रन्थ 'सत्यार्थ-प्रकाश' में दिखाया है, क्या तुम्हारे पास उनका कुछ उत्तर है? क्या तुम लोग अपने सम्प्रदाय को सच्चा सिद्ध करने के लिए आर्य समाज से शास्त्रार्थ करने को तैयार हो?

आर्यो हिन्दुओ! सावधान हो जाओ और इन पादरियों के चंगुल से स्वयं बचो और अपने बच्चों और धर्म-भाइयों को भी बचाओ यदि तुम्हारा कोई रोग हनुमान आदि अपने तेतीस करोड़ देवताओं से दूर नहीं हो सकता, तो गो-मांस खाने वाले पीरों की कबरें पूजने और पादरियों से झाड़े लगवाने से भी वह कभी ठीक नहीं होगा यह हमारा दावा है। यदि कोई ऐसा होने का दावा करता है, तो हमारे सामने आवे एक ईश्वर पर विश्वास न रखकर अनेक देवी-देवताओं और पीर-फकीरों के आगे अपना माथा रगड़ने वाले यदि नास्तिक नहीं हैं, तो बताओ फिर नास्तिक कौन हैं?

इस लिए यदि अपने बच्चों का हित चाहते हो, उन्हें विधर्मी बनने से बचाना चाहते हो, तो 'सत्यार्थ-प्रकाश' पढो और पढाओ तथा आर्य समाज में जाकर शास्त्र सुनो धर्म का सच्चा ज्ञान प्राप्त करो।

टंकारा यात्रा के लिए स्पेशल ट्रेन-

नई दिल्ली १५-१२-८३ : महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म स्थली टंकारा में २७, २८, २९ फरवरी १९८४ को शिवरात्रि पर ऋषि बोधोत्सव समारोह मनाया जा रहा है। इस समारोह में भारतवर्ष के विद्वान् एवं सन्यासी भजनीक, टंकारा पहुंचकर स्वामी जी के चरणों में श्रद्धांजलि भेंट करेंगे।

उत्तर भारत से यात्रियों को टंकारा ले जाने के लिए एक स्पेशल ट्रेन का आयोजन टंकारा सहायक समिति दिल्ली के तत्वावधान में किया जा रहा है। यह स्पेशल ट्रेन २५ फरवरी ८४ को प्रातः १० बजे दिल्ली जंक्शन से चलकर अजमेर, ब्यावर, आबूरोड, मेसाना, सुरेन्द्र नगर, बीकानेर से होती हुई २७ फरवरी की प्रातः को राजकोट पहुंचेगी। राजकोट से टंकारा तक ले जाने के लिए बसों का प्रबन्ध किया जायेगा। इसी तरह वापस २९ फरवरी को टंकारा से राजकोट बसों में और फिर रेल द्वारा ऊपर लिखे गये प्रोग्राम के अनुसार—२ मार्च की प्रातः को दिल्ली लौट आयेगी। जो भाई और बहिनें इस यात्रा में जाना चाहें वे प्रति व्यक्ति २०० रु० तथा फस्ट क्लास का ५५० रु० जिसमें बसों का किराया भी सम्मिलित है टंकारा सहायक समिति दिल्ली के नाम से इसके कार्यालय आर्यसमाज (अनारकली) मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली-११०००१ के पते पर भेजने की कृपा करें। केवल एक ही स्पेशल ट्रेन है, इसलिए जैसी क्रम संख्या में सीटें बुक होंगी उन्हीं यात्रियों को ले जाया जायेगा।

टंकारा में ऋषि लंगर टंकारा ट्रस्ट की ओर से होगा। जो भाई बहिन टंकारा में ऋषि लंगर के लिए दान अथवा नकद आटा, चावल, दाल आदि देना चाहें वह भी समिति के कार्यालय को भिजवाने की कृपा करें।

—रामलाल मलिक संयोजक।

दयानन्दमठ रोहतक को रजाइयों का दान

चौ० विजयकुमार जी चण्डीगढ़ ने दयानन्दमठ रोहतक की अतिथि शाला के लिए भी ५ रजाइयाँ दान दी हैं।

स्मरण रहे इन्होंने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अतिथि भवन के लिए भी ५ रजाइयां दान की हैं। इनकी उदारता के लिए बहुत-२ धन्यवाद।

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ
मन्त्री दयानन्द मठ रोहतक

खेद प्रकाश

सर्वहितकारी का गत अंक २१ दिसम्बर का था जिस पर तीन विभिन्न तिथियां भूलवश छप गई हैं जिसके लिये खेद है।

—सम्पादक

(पृष्ठ १ का शेष)

भारत सरकार से यह भी मांग की जावेगी कि यमुनानगर, अम्बाला आदि स्थानों पर रक्षा वाहिनी तथा हिन्दू सुरक्षा समिति के जिन कार्यकर्ताओं को बिना कारण गिरफ्तार कर रखा है, उन्हें तुरन्त रिहा किया जावे।

हरयाणा रक्षा वाहिनी की सार्वजनिक सभायें

बैठक में निर्णय किया गया कि हरयाणा में जनमत तैयार करने के लिए ८ जनवरी को कुरुक्षेत्र तथा २२ जनवरी को सिरसा में कार्यकर्ताओं की बैठक तथा सार्वजनिक सभायें की जावेंगी। इसके बाद अबोहर फाजिल्का क्षेत्र में भी इसी प्रकार की सार्वजनिक बैठकें की जावेंगी और आवश्यकता हुई तो वहां रक्षा वाहिनी के कार्यकर्ता गिरफ्तारियां भी देंगे।

महर्षि दयानन्द और वेद

भगवान् "चैतन्य" एम०ए० साहित्यालंकार

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी मेरे विचार से आधुनिक युग मे एक ऐसे दिव्य पुरुष हैं जिन्होने आतुरता के साथ सत्य का प्रचार-प्रसार किया। झूठ और असत्य के साथ न तो उन्होंने स्वयं अपने जीवन में समझौता किया और न ही किसी भी मनुष्य को ऐसा करने का आदेश ही दिया। वे भी समन्वयवादी थे मगर उनका यह समन्वय केवल दिखावा मात्र या शाब्दिक जाल नहीं था बल्कि इसकी जड बहुत गहरी थी। उनके समन्वय का आधार भी सत्य ही था। उनके समक्ष जीवन में बहुत से ऐसे क्षण आए जब कोई भी पुरुष सत्य की मन मानी व्याख्या करके प्रलोभनों में फंस जाता मगर उस विलक्षण महापुरुष ने कहीं भी, कभी भी असत्य का मार्ग नही अपनाया। सत्य शब्द पर उन्होंने अपने उपदेशों मे भी अत्यधिक बल दिया है। उनका तो स्पष्ट और सीधा आदेश था कि सत्य को अपनाने और असत्य को त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। उन्होंने व्यक्तिगत रूप से तो यहा तक कह दिया था कि भले ही मुझे तोपो के मुंह से बांध दिया जाए या मेरी सभी उंगलियो को बत्तियो की तरह जला दिया जाए मगर फिर भी मैं सत्य का ही प्रतिपादन करूंगा। वे सत्य के कितने पक्षपाती थे इसका प्रमाण उनके जीवन की अनेक घटनाएं हैं। जिनमे से एक घटना बड़ी प्रसिद्ध है। कुछ लोगों ने महर्षि जी से निवेदन किया कि वे ईसाई मत की पोपलीलाओं का कठोरता के साथ खण्डन न करें क्योंकि इससे अंग्रेज कलेक्टर अप्रसन्न होगा। इस समय महर्षि ने गम्भीर गर्जना की थी "लोग कहते हैं सत्य का प्रकाश मत करो क्योंकि कलेक्टर कुपित (नाराज) हो जाएगा। कमिश्नर प्रसन्न नहीं रहेगा, गवर्नर पीड़ा पहुंचाएगा। अजी, चाहे चक्रवर्ती राजा ही अप्रसन्न क्यों न हो जाए हम तो सत्य ही कहेंगे।......वह शूरवीर पुरुष मुझे दिखाइए जो मेरी आत्मा को छिन्न-भिन्न करने का सामर्थ्य रखता हो। जब तक ऐसा पुरुष दृष्टिगोचर न होगा दयानन्द के लिए सत्य मे सन्देह करना स्वप्न में भी असम्भव है।"

महर्षि दयानन्द की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि उनका सत्य व्यक्ति निष्ठ न होकर सार्वभौमिक सत्य है। उनके सत्य का आधार ईश्वरीय ज्ञान वेद है। उन्होने स्पष्ट अक्षरों मे घोषणा कर रखी है कि उनकी बातो को केवल इस लिए सत्य न समझा जाए कि वे उनके द्वारा लिखी या कही गई बल्कि उन्हे इसलिए माना जाए कि वे वेद विहित हैं। उन्होंने वेदों का गहन अध्ययन करने के पश्चात् इस बात की घोषणा की कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। वेद ही वास्तविक धर्म पुस्तक है तथा ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण वही सर्वमान्य भी है। उन्होंने वेद को ईश्वरीय ज्ञान प्रतिपादित करने के लिए अनेकानेक तर्क एवं प्रमाण दिए हैं। जो उनके ग्रन्थो में द्रष्टव्य हैं। वेद ज्ञान ही सृष्टि का प्राचीनतम ज्ञान है, त्रिकालाबाधित एवं सनातन है तथा विज्ञान सम्मत है इसलिए सार्वभौमिक एवं ईश्वरीय है। महर्षि से पहले भी कुछ लोगों ने वेदो का भाष्य करने का प्रयास किया है। इनमें सायण महीधर एवं उव्वट आदि भारतीय तथा रूडौल्फ राथ, मैक्समूलर एवं मैक्डानल आदि पाश्चात्य विद्वान हैं। इन विद्वानो ने वेदों का वास्तविक अर्थ लोगों के समक्ष न रखकर पूर्वाग्रहों से ग्रसित एवं अपनी परम्पराओं को ही सिद्ध करने के लिए वेदो के मनमाने भाष्य प्रस्तुत किए हैं। मुख्य रूप से भारतीय विद्वानों ने कर्मकाण्ड एवं हिन्दु मान्यताओ को वेद विहित सिद्ध करने के लिए तथा पाश्चात्य विद्वानो ने विकास वाद आदि अपनी मान्यताओ को प्रबलता देने के लिए ही वेदों का भाष्य किया है। इस प्रकार इन लोगों ने अपने-अपने पूर्वाग्रहों से ग्रसित होकर वेदो के मनमाने भाष्य कर डाले। यदि और भी स्पष्ट शब्दों में कहा जाए तो भारतीय विद्वानों ने केवल स्वयं को वेदज्ञाता दर्शाने मात्र के लिए तथा पाश्चात्य विद्वानों ने हमारी अमूल्य संस्कृति को विकृत करने के लिए ही वेदों को हाथ में लिया था। प्रो० मैक्समूलर द्वारा अपनी पत्नी को लिखे गए एक पत्र से तो यह बात स्वयमेव हमारे सामने स्पष्ट रूप से आ जाती है। पत्र में लिखा था मुझे आशा है कि मैं उस काम (वेदों के सम्पादनादि) को पूरा कर दूंगा और मुझे निश्चय है कि यद्यपि मैं उसे देखने के लिए जीवित नहीं रहूंगा तो भी मेरा ऋग्वेद का संस्करण और वेदों का अनुवाद भारत के भाग्य और लाखों भारतीयों की आत्माओं के विकास पर प्रभाव डालने वाला होगा। यह (वेद) उनके धर्म का मूल है और मूल दिखा देना, उससे पिछले तीन हजार वर्षों में जो कुछ निकला है, उसको मूल सहित उखाड़ देने का सबसे उत्तम प्रकार है।"

यह थी पाश्चात्य विद्वानों की दुर्भावना जो उन्होंने वेदों के अर्थों को उलट-पुलट कर दिया। सायण, उव्वट एवं महीधर आदि के भाष्य केवल कर्मकाण्ड पर आधारित होने के कारण कितने अश्लील और घिनौने हैं इसकी विस्तृत चर्चा करनी तो बेकार है। महर्षि दयानन्द जी ने अपने ग्रन्थ "ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका" में नमूने के तौर पर यजुर्वेद का यह मन्त्र "गणानां त्वा गणपतिँ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिँ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिँ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमात्वम् जासि गर्भधम्॥" महीधर के भाष्य का दिग्दर्शन कराने के लिए दे रखा है जिसका अर्थ पाठक वहीं पढ़ें क्योंकि वह अत्यन्त अश्लील है। वेद के प्रति महर्षि की कितनी आस्था थी वेद का भाष्य प्रस्तुत करके उन्होंने हमारा कितना अधिक उपकार किया है। इसे शब्दो मे नही बांधा जा सकता है उनके समय मे वेदों का आधार लेकर धर्म के नाम पर क्या-क्या अत्याचार नही हो रहे थे? मूर्ति पूजा, पशुबलि, अवतारवाद, बहुदेवतावाद, स्त्री व शूद्र को वेद पढ़ने का अधिकार न देना, जाति-पाति यज्ञ तक मे पशुबलि आदि धर्म के नाम पर क्या-क्या अधर्म नही हो रहा था? मिथ्या धारणाओ के कारण वेद पढ़ना पढ़ाना लुप्त प्राय ही हो चुका था। हिन्दू लोग कहने लगे थे कि वेदों को तो भस्मासुर पाताल लोक को ले गया है। महर्षि दयानन्द ने जब यह अवस्था देखी तो उन्होंने पुनः ब्रह्मा एवं जैमिनि आदि ऋषियो की परम्परा को चलाकर हिन्दुओ के समक्ष वेदो के सही भाष्य का प्रस्तुतिकरण करके कहा कि मैं तुम्हारे आलस्य रूपी भस्मासुर को मारकर वेदों को पुनः ले आया हूं। इस प्रभु वाणी को पढ़ो, इस पर आचरण करो और भारत को पुनः विश्व गुरु के पद पर आसीन करो।

महर्षि का भाष्य कितना तर्क संगत एवं सारगर्भित है यह तो उसके अध्ययन से ही समझा जा सकता है लेकिन यहा अपने शब्दो मे न कह कर योगी अरविन्द जी के शब्दों में ही कहना चाहूंगा। वे लिखते हैं :—जहा तक वेदों को समझने का प्रश्न है; दयानन्द को इस बात के लिए स्मरण किया जाएगा कि वे पहले व्यक्ति थे जिनके हाथ मे वेदों की ठीक-ठीक अर्थ जानने की कुंजी आ गई थी। वेदो के अर्थो के विषय में सदियो से जो अव्यवस्था, अस्पष्टता तथा अज्ञान फैला हुआ था, उस सब को भेद कर सीधा वेदार्थ को देख लेने की आंख दयानन्द को ही मिली थी। उन्होंने अपनी पैनी दृष्टि से अज्ञाना अन्धकार को भेदकर सत्य पर अपनी दृष्टि जमा दी थी।" श्री अरविन्द जी के इन्ही शब्दों से महर्षि के वेदभाष्य की गरिमा आकी जा सकती है। यह वेद प्रतिपादित सत्य ही था जिसके लिए उन्होंने अपना समूचा जीवन लगा दिया था। व्याकरण सूर्य एवं वेदो के प्रकाण्ड विद्वान् गुरुवर विरजानन्द जी महाराज जी के चरणों मे बैठकर जिन आर्ष (वेदानुकूल) ग्रन्थों का गहन अध्ययन किया था, उन्हीं के प्रचार प्रसार के लिए दक्षिणा के रूप में अपना समूचा जीवन अर्पित कर दिया। असत्य के साथ समझौता करना उन्होंने सीखा ही नहीं था। बडे-बडे प्रलोभन रास्ते में आए मगर यह सत्य का व्रती सत्य पर ही अडिग रहा। ईसाई मुसलमान एवं पौराणिक तक व्यक्तिगत स्वार्थों के कारण उनके विरोधी हो गए मगर वे सबके भले के लिए प्रभु के वेद ज्ञान अनुमोदित सभी को सत्य धर्म का ही उपदेश देते रहे। स्वार्थियों का षड्यन्त्र सफल हुआ और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को विष देकर समाप्त कर दिया गया। मगर उनके समाप्त होने से सत्य समाप्त नही हो सका। यह ठीक है कि महर्षि जी के उठ जाने से वे वेदों का सम्पूर्ण भाष्य नही कर पाए तथा मानव जाति का बहुत भारी अहित हुआ मगर अपने पीछे वेदो मे प्रदत्त प्रभु की अमर-वाणी का प्रचार और प्रसार करते रहने के लिए आर्यसमाज नामक संस्था का गठन कर गए। यह संस्था अब भी अपना कार्य पूर्ण निष्ठा के साथ कर रही है। ऋषि दयानन्द ने अपने विचारों का नही बल्कि प्रभु के विचारो का प्रचार किया है। इस महापुरुष की एक और विलक्षण विशेषता यह भी है कि न किसी विशेष मत या संप्रदाय का गठन किया और न ही अवतार वाद या गुरुडम् प्रथा का प्रचलन ही किया बल्कि प्रभु द्वारा सृष्टि के प्रारम्भ में दिए गए सत्य सनातन वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया। कुछ अल्पबुद्धि लोग आर्यसमाज को भी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज की गति विधियां

सभा प्रधान प्रो. शेरसिंह के नाम बधाई पत्र

आदरणीय प्रोफैसर जी, सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के 11-12-83 को सर्व सम्मति से पुन: प्रधान चुने जाने पर लाख-लाख बधाई एवं शुभ कामनाएं भेजते हैं।

आपका पिछला कार्य क्षेत्र को देखते हुये इस बार प्रधान चुना जाना अति आवश्यक था। हमारे मन की भावना पूर्ण हो गई। आप जैसे कर्मठ, साहसी तथा लग्नशील व्यक्ति ही ऐसे पद पर होने ही चाहियें। जिससे आर्य क्षेत्र दिन दुगुनी रात चौगुनी उन्नति कर रहा है और करता रहेगा। आपके प्रयत्न से जो भी उन्नति कार्य हुये, जैसे आकाशवाणी रोहतक से वेद वाणी का प्रसार होना, कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज की दुकान एव कार्यालय बनाना, वर्तमान मे पंजाब मे सुलग रही आग से हरयाणा के बचाव हेतु हरयाणा रक्षा वाहिनी का संगठन करके रक्षा करना आदि अनेको कार्यों द्वारा आपने जो सेवा की है (ऋषि निर्वाण शताब्दी की सफलता मे आपका योगदान भी सराहनीय है)। इन सबको भुलाया नहीं जा सकता।

भविष्य मे भी आपसे यही आशा है कि अधिक से अधिक समय देते हुए सभा के कार्यों को सुचारु रूप से करते हुए चार चांद लगाओगे। आपसे एक विनम्र प्रार्थना है कि जो बात हमे सारे आर्यो को खटकती है, वह है गुरुकुलों का अलग-अलग अस्तिव होना। इसलिए आप अपने प्रयत्न एवं लग्न से सभी गुरुकुलो को एक करने का कार्य करें। सभी मे एक ही पाठ्य क्रम हो, एक ही पाठ विधि हो, एक ही यूनीवर्सीटी से सम्बन्धित हो, तथा हरयाणा और भारत सरकार से मान्यता हो, यदि ऐसा हो जाये तो वो दिन दूर नही कि हरयाणा प्रतिनिधि सभा का बोल बाला भारत में सर्वोपरि होगा और जनता की अधिक सेवा की जा सकेगी जिससे वैदिक संस्कार अधिक से अधिक होगा। यदि यह कार्य आप कर जाते हैं तो आर्य जनता आपको हमेशा याद रखेगी और आपका नाम स्वर्णक्षरो में लिखने योग्य होगा। हम फिर आशा करते हैं कि इस बिखरी हुई शक्ति को माला मे पिरो कर एक करेंगे। हम पुन आपको बधाई देते हैं। भगवान से प्रार्थना करते हैं कि परोपकारी कार्य के लिए शक्ति एवं स्वास्थ्य दे।

आपका शुभचिन्तक,
खजानसिंह आर्य (अध्यापक) मन्त्री आर्यसमाज
गांव व डा० आजनपुर, जिला कुरुक्षेत्र।

(पृष्ट ५ का शेष)

कई बार मत या सम्प्रदाय समझने की निकृष्ट भूल करने लग जाते हैं जब कि वास्तविकता यह है कि यह ईश्वर प्रतिपादित वैदिक धर्म (जो वास्तव मे धर्म है) को मानने और उसी का प्रचार करने वाली एक संस्था है जैसे महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आजीवन ईश्वरीय शिक्षाओं का प्रचार किया वैसे ही आर्यसमाज भी उसी इश्वरीय ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने के लिए कृत संकल्प और क्रियारत हो।

वेदों के वेद विरुद्ध एवं अनर्गल तथा अश्लील भाष्यों के कारण लोग वेद विमुख हो गए थे मगर अब महर्षि जी की अपार दया से लोगों की श्रद्धा पुन: वेदों की ओर लौटी है तथा देश विदेश में वेदों पर पुन: शोध कार्य होने लगा है। पाश्चात्य लोग भी अब वेदों को गडरियों के गीत कहने के स्थान पर शान्ति का स्रोत कहने लगे हैं, पौराणिक मत वाले भी अब वेदों के उद्धरण देने लगे हैं तथा आलस्य रूपी भस्मासुर को भगाकर सत्य का दर्शन करने की ओर कदम बढाने लगे हैं। आर्य (श्रेष्ठ) परिवारों में तो अब बच्चे, स्त्रियां एवं शूद्र भी प्रभु की वाणी का रसास्वादन करने लगे हैं। यज्ञों में पशु हिंसा का प्रचलन अब लगभग नही रहा। सभी बुद्धिजीवी महर्षि दयानन्द के वेद सम्बन्धी विचारो भी मुक्त कण्ठ से प्रशंसा कर रहे थे। पाखंडवाद मिट रहा है तथा लोग धर्म को भावत्मकता के स्थान पर क्रियात्मकता की ओर धीरे-धीरे मोड़ रहे हैं। इस सबका श्रेय देव दयानन्द को ही है। आर्यसमाज को अभी और भी अधिक काम करने की आवश्यकता है ताकि सभी वेद की छत्र-छाया में आकर सुख-शक्ति एवं समृद्धि प्राप्त करके, जडता को त्याग कर चेतनता का आह्वान कर सकें। मानव मात्र एक वेद की अमरवाणी के अनुसार अपना जीवन पवित्र और उच्च बन सकें। महर्षि की शैली में वेदों की सहज और भाष्य करने की आवश्यकता है ताकी अपने-अपने मान्य ग्रन्थो मे वर्णित न्यूनताओ को मत एवं सम्प्रदायवादी लोग त्यागकर प्रेम की एक माला में बिन्धकर एकता के सुत्र में बन्ध सकें। वेदों का पद्यानुवाद भी इस दिशा मे अत्यधिक सार्थक हो सकता है वेद वेद ज्ञान का प्रकाश ज्यों ज्यों फैलता चला जाएगा त्यों-त्यों वेद विरुद्ध अज्ञानान्धकार मिटता जाएगा और अन्तत समूचा विश्व आलोकित होकर आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बन जाएगा—प्रभु का प्यारा पुत्र बन जाएगा। यास्क ने आर्य का यही तो लक्षण बताया है "आर्य ईश्वर पुत्र।" ईश्वर पुत्रों का समूह ही आर्य समाज है। अपने समूह को बढाने के लिए लोगों को ईश्वरीय सत्य सनातन वैदिक धर्म अर्थात् वेद ज्ञान का प्रचार प्रसार करना होगा। कृण्वन्तोविश्वमार्यम का यही एक उपाय है। यही महर्षि दयानन्द जी का स्वप्न था। दयानन्द का स्वप्न वेद का स्वप्न है। दयानन्द का स्वप्पन वेद का सत्य है और वेद का सत्य ईश्वर का ज्ञान है। *

हैदराबाद में साम्प्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन

दक्षिण भारत मे मीनाक्षीपुरम के बाद मुसलमानो द्वारा तमिलनाडु के रामनाथपुरम मे ईस्लामीकरण का केन्द्र बनाये जाने एव देश मे साम्प्रदायिकता की आग भडकाने और विघटकारी तत्वो से देश बासियो को सावधान करने के लिए हैदराबाद और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरग एवं वार्षिक अधिवेशन के अवसर पर 17-18 दिसम्बर 1983 को सामप्रदायिकता विरोधी राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शाल वाले की अध्यक्षता मे राजधानी होटल के सभागार मे प्रारम्भ हुआ। सम्मेलन का का उद्घाटन भारत के भू० पू० जस्टिस श्री एच. आर. खन्ना ने किया। प्रमुख वक्ताओ मे भारत के सुप्रसिद्ध विधि वेत्ता डा. एम. एल. सिंघवी, प्रो. वेदव्यास, श्री धर्मवीर (भू. पू राज्यपाल), श्री रामचन्द्रराव बन्देमातरम, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री शेरसिंह तथा वीरेन्द्र ने अपने अपने विचार प्रकट किये।

सम्मेलन में देश के अन्दर अरब पेट्रो डालर के बल पर दक्षिण भारत में किए जा रहे इस्लामीकरण, आदिवासी एवं उ०पू० भारत मे ईसाईकरण, पंजाब उग्रवादियों के आन्दोलन से व्याप्त स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार प्रकट किए गये और साम्प्रदायिकता के इस फैलते हुए जहर के प्रति गहरी चिन्ता प्रकट की गई। सम्मेलन मे आर्यसमाज के शिष्ट मण्डल द्वारा रामनाथपुरम की रिपोर्ट पुष्टि की और उसे तत्काल भारत सरकार को प्रस्तुत कर प्रसारित करने पर बल दिया।

राष्ट्रीय सम्मेलन ने यह भी अनुभव किया कि भारत सरकार को देश की बहुसंख्यक हिन्दुओं की भावनाओं का आदर करना चाहिए और देश के सभी नागरिक चाहे वो किसी धर्म अथवा सम्प्रदाय का हो, उन्हें भारत के हितों के प्रति वफादार रहना चाहिए। जो लोग भारत में पैदा होकर यहां की मिट्टी में पलकर और अन्न खाकर भारत की अखण्डता एवं राष्ट्रीयता के विरुद्ध काम कर रहे हैं वे देश के मित्र नहीं हैं। सम्मेलन ने वोटों की राजनीति और अल्प संख्यक आयोग के गठन पर गहरा कटाक्ष करते हुए भारत सरकार से मांग की अल्पसंख्यक आयोग को तोडकर मानव अधिकार आयोग की स्थापना की जाए चुनावों में वोट प्राप्ति का आधार जातिगत भावना को भड़काकर धर्मनिरपेक्षता को सिध्दान्त के विरुद्ध आचरण न किया जाये।

सम्मेलन मे यह भी विचार प्रकट किया गया कि आज की विषम समस्याओ का समाधान भारत को आर्य राष्ट्र घोषित करने पर ही हो सकता है। राष्ट्रीय सम्मेलन में यह भी निश्चय किया गया कि इन हरिजनों एवं पिछड़े वनवासी जनजातियों के हितो की रक्षा का दायित्व भारत सरकार का कर्तव्य है। लोभ-लालच [illegible] पर बलात धर्म परिवर्तन किये गये लोगों की तुरन्त सरकारी सहायता बन्द की जानी चाहिये।

उठो एवं जागो !

—सोहनलाल शारदा, शाहपुरा (राज०)

भगवान् दयानन्द ने संस्कार-विधि में वर्णन किया है कि:—"सदा स्त्री-पुरुष दस बजे शयन और प्रातः चार बजे उठ प्रथम हृदय में परमेश्वर का चिन्तन करके (प्रातरग्नि०) आदि पाँच मन्त्रों से प्रार्थना करके शौच-स्नानादि क्रिया से निवृत्त होकर सन्ध्या यज्ञोपासनादि नित्यकर्म यथाविधि उचित समय में करें।" इस प्रकार वर्तने से बुद्धि पवित्र होती है और बुद्धि के पवित्र होने से महा कठिन कार्य भी सुगमता पूर्वक सिद्ध होते हैं। स्वयं भगवान् दयानन्द जब ५ वर्ष के थे तब विद्यारम्भ संस्कारोपरांत, ८ वर्ष की अवस्था तक पारिवारिक कर्मकाण्ड में आने योग्य मन्त्र, स्तोत्र रुद्राध्यायी कण्ठस्थ कर यज्ञोपवीत संस्कार पश्चात् विधिवत् गायत्री जाप करते हुए दो वर्ष में यजुर्वेद कण्ठस्थ कर पिता जी के आदेशानुसार शिवपुराण, शिवमहात्म्य को जानकर महाशिवरात्रि-पर्व पर चवदह वर्ष की आयु में महाव्रत धारण कर पूजा-पाठ में लग गये।

लेकिन वहां चूहे के उत्पात को देखकर पिता जी से प्रश्न किया कि 'क्या यह सच्चा शिव है ?' प्रत्युत्तर में पिता जी ने कहा कि "यह महान् शिव की प्रति-कृति मात्र है।" तब मन में संकल्प किया कि मैं सच्चे शिव की ही आराधना करूंगा। इसके पश्चात् जब पितामह, भगिनी एवं चाचा की मृत्यु को साक्षात् देखा तो मन में यह प्रश्न भी उत्पन्न हुआ कि यह जीवात्मा मरकर अन्त में कहां जाता है ? क्या मृत्यु से बचने का कोई उपाय है ? इन्हीं दोनों प्रश्नों का समाधान गुरुओं से चाहने पर भी किसी ने ठीक समाधान नहीं किया। फलस्वरूप २१ वर्ष की अवस्था में घर से अंधेरी रात्रि में नंगे पांव निकल गये और इन्हीं प्रश्नों के समाधान हेतु सम्पूर्ण भारत छान डाला। लेकिन इन प्रश्नों का समाधान कहीं पर भी प्राप्त नहीं हो सका। अन्त में समाधान मिला मथुरा में, गुरुवर दण्डी विरजानन्द के चरणों में। निरन्तर २॥ वर्ष पर्यन्त आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन कर सच्चा ज्ञान प्राप्त कर दक्षिणा में जीवन की आहुति समर्पण कर अवधूत बनकर सर्वं वै पूर्णं स्वाहा के सिद्धान्त को हृदयंगम करके लोक कल्याण के लिए चल दिये।

श्रेष्ठ पुरुषों के द्वारा ज्ञान प्राप्त करो

अब दयानन्द जहां अज्ञानीजनों को सत्य मार्ग पर चलने एवं आर्ष ग्रन्थों के पठन-पाठन पर बल देते हुए कई शास्त्रार्थ करने पर उद्यत हुये। सत्य-सनातन आर्ष-ग्रन्थों के प्रचार में उन्होंने अपना जीवन समर्पित कर दिया। जहां इन भाषणों, शास्त्रार्थों से कोई विशेष कार्य नहीं बनता प्रतीत हुआ तभी उन्होंने भावी पीढ़ी में वैदिक आर्ष-ज्ञान बढ़ाने हेतु जिस प्रकार आद्य जगद्गुरु शंकराचार्य ने सम्पूर्ण भारत की चारों दिशाओं में चार मठ स्थापित कर अवैदिक मतों को निर्मूल किया इसी प्रकार भगवान् दयानन्द ने भी पुनः वैदिक धर्म की स्थापना के लिये सम्पूर्ण भारत में आर्यसमाज की स्थापना कर अवैदिक मतों को निर्मूल करने का महान् कार्य प्रारम्भ किया। सर्वप्रथम बम्बई महानगर, पश्चात् देश-विदेश के कई स्थानों पर अपने जीवनकाल में ही आर्यसमाजें स्थापित कर, आर्ष-ज्ञान के प्रचार प्रसार में आर्यजन भी प्रवृत होने लगे और सच्चे शिव को प्राप्त करते हुए जन्म-मरण के बन्धन से मुक्त होने लगे। इसी विषय को अक्षुण्य बनाये रखने के लिये प्रथम पंचमहायज्ञविधि पुनः आर्याभिविनय, संस्कारविधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका, आर्योद्देश्य रत्नमाला, स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाशादि ग्रन्थों की संरचना की। साथ ही साथ भावी संतति को आर्य बनाने हेतु वेदांगप्रकाश १४ भाग व वेदभाष्य भी लिखते रहे।

परिणामस्वरूप महर्षिकृत ग्रन्थों के पठन पाठन से आर्यसमाज का प्रचार द्रुत गति से देश-विदेश में फैलने लगा। आर्यजनों की श्रद्धा वेद व आर्यसमाज पर अटूट हुई। स्थान-स्थान पर आर्यसमाज स्थापित कर महर्षिकृत आर्ष ग्रन्थ पठन-पाठन हेतु बड़े बड़े विद्यालय एवं गुरुकुलों की स्थापना कर आर्यजन आर्षज्ञान प्राप्त कर व कराके अपना एवं राष्ट्र का उद्धार करने में प्रवृत्त हुये। इन्हीं की सेवा, त्याग व बलिदानों से स्वराज्य मिला। लेकिन स्वराज्य प्राप्ति के साथ महर्षिकृत एवं आर्ष-ग्रन्थों का पठन-पाठन निरन्तर क्षयता की ओर जाने लगा। कारण यह हुआ अनेकानेक विद्वान् पण्डितों ने अपनी ढफली अपना राग अलापना आरम्भ किया। वैदिक साहित्य एवं विशेष रूप से संध्या व यज्ञ के नाम से अनेकानेक पुस्तकें प्रकाशित होने लगी। देखते ही देखते महर्षि कृत ग्रन्थों का स्थान इन अपूर्ण पुस्तकों ने ले लिया और इन अपूर्ण पुस्तकों को ही पढ़-पढ़ाकर प्रचार-प्रसार में पूर्ण सामर्थ्य से प्रवृत होने लगे। लेकिन कहा जाता है कि—'मर्ज बढ़ता ही गया, ज्यों-ज्यों दवा की।'

भावी पीढ़ी को आर्य बनाओ !

हमारे पास प्रचार का विपुल साधन समाज मन्दिर विद्यालय गुरुकुल वैदिक विचारधारा की कई पत्र-पत्रिकायें साथ में प्रचार के सभी आधुनिक वैज्ञानिक साधन टेप, रेकार्ड, ध्वनिविस्तारक यन्त्र, उपदेशक, पुरोहित, संन्यासी, वानप्रस्थ मण्डल प्रचार मात्रा में होते हुये भी कतिपय स्थानों को छोड़कर जैसी लग्न उत्साह भावना पूर्व के आर्यजनों में थी, वैसी अब नहीं रही। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण साप्ताहिक सत्संगों में देखने को मिलता है। जहां कि पुरोहित वा कुछ वृद्ध पुरुष यज्ञ करते कराते हुये मिलेंगे और सम्माननीय अधिकारी वर्ग अन्त में मात्र उपस्थिति भुगताने हेतु आते दिखाई देवेंगे। इसलिए आर्यसमाज के प्रबुद्ध मननशील हितेच्छु वर्ग के लिए अब यह चिन्ता का विषय बन रहा है। जिसका प्रत्यक्ष हमारी पत्र-पत्रिकाओं में बराबर देखने को मिल रहा है।

श्रेष्ठ पुरुषों महर्षि द्वारा ज्ञान को प्राप्त करें।

इससे बचने के लिए एक ही उपाय है महर्षिकृत ग्रन्थों का पठन-पाठन। इस शताब्दी के महापर्व पर हम व्रत लेकर जावें कि हमें कम से कम ५ आर्य विचारों के विद्यार्थी अवश्य ही तैयार करने हैं। यह कार्य तभी सम्भव हो सकेगा, जब हम महर्षिकृत ग्रन्थों का ही पठन-पाठन का संकल्प लेवेंगे। इसके लिए प्रथम ५ से ८ वर्ष के बालकों को आर्यसमाज के 10 नियम सक्षिप्त व्याख्या सहित पुनः पढ़ाना है नित्य सन्ध्या यज्ञोपासन विधि महर्षिकृत ग्रन्थानुसार। इसके लिए महर्षि का दिव्य संदेश यही है सत्यार्थप्रकाश के तृतीय समुल्लास में कि—'माता, पिता, आचार्य अर्थ सहित गायत्री संध्योपासन की जो स्नान आचमन, प्राणायाम को क्रिया है, सिखलावें।' इससे आगे संस्कार-विधि का सम्पूर्ण सामान्य प्रकरण भूमिका से मंगल-कार्य तक पढ़ाना है कि जिससे वर्तमान में जो पुरोहितों की समस्या उपस्थित है, उसका निराकरण हो सके। जहां महर्षि का यह सन्देश है कि—'इतना तो अवश्य ही पढ़ लेवें।' सो हमें संस्कार विधि से ही पढ़ाना है। अन्य पण्डितों वा प्रकाशकों की पद्धति से नहीं। क्योंकि संस्कार विधि ही पूर्ण एतद् विषयक ग्रन्थ है। अन्य इसी पर आधारित ग्रन्थ पूर्ण नहीं है। इतना पढ़ा देने के पश्चात् आर्योद्देश्य रत्नमाला, स्वमन्तव्या मन्तव्य प्रकाश के साथ ही साथ सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं षष्ठ समुल्लास और पढ़ाना है। वेदांगप्रकाश के सम्पूर्ण १४ भाग न्यून पढ़ावे तो प्रथम तीन भाग वर्णोच्चारण शिक्षा, संस्कृत वाक्य प्रबोध व्यवहारभानु अवश्य पढ़ानी है। जिससे व्यवहारिक, पारमार्थिक कर्त्तव्य कर्म का ज्ञान हो सके।

सत्यार्थप्रकाश षष्ठ समुल्लास पढ़ा देने से विद्यार्थियों की रुचि राजनीति की ओर लगकर धार्मिक बनते हुए समाज एवं राष्ट्र का कल्याण कर सके एवं शासन किस विधि से करने से वर्तमान में फैल रही अराजकता, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, अनैतिकता इत्यादि अवगुणों को दूर कर सकें। इस प्रकार राजनीति की ओर अग्रसर होने वाले छात्रों को इसी समुल्लास के अन्त में दिव्य सन्देश देते हुए महर्षि लिखते हैं कि—'वेद मनुस्मृति के सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय शुक्र नीति तथा विदुर प्रजागर और महाभारत के शान्ति पर्व के राजधर्म और आपद्धर्म आदि पुस्तकों में देखकर पूर्ण राजनीतिज्ञ बनकर माण्डलिक व चक्रवर्ती राज्य करें।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल समारोह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर पलवल शहर में आर्य वीर दल की ओर से 'अमर शहीद रामप्रसाद बिस्मिल' बलिदान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर श्री शिवराम विद्यावाचस्पति, श्री सत्यापाल आर्य, श्री अजीत कुमार आर्य, श्री रामेश्वरदत्त मंगला, श्री लक्ष्मीचन्द आर्य, वीरभान जी आर्य आदि के व्याख्यान हुए। संजीव मंगला मीनू यशपाल मंगला व अरुण आर्य की जोशीली कविताएं हुई।

संजीवकुमार मंगला
-मन्त्री आर्य वीर दल पलवल शहर

(पृष्ठ ७ का शेष)

इसके लिए इस महान् महर्षि 'निर्वाण शताब्दी वर्ष' में प्रत्येक मनीषी आर्य विद्वान् महानुभाव का यही कर्त्तव्य है कि उपरोक्त पुस्तकों के एतद् विषयक महत्त्वपूर्ण अंशों की सरल सुबोध टीकायें कर लागत मूल्य पर पुस्तकें विद्यार्थियों के पठन-पाठन के लिए प्रस्तुत करने का विचार लेकर जाये। वैदिक साम्राज्य स्थापित करने के लिए भगवान् दयानन्द के इस समुल्लास में दिये हुए दिव्य सन्देश को भी ध्यान में रखना है कि—'वय प्रजापते प्रजा अभूम (यजु० २८-२९) हम प्रजापति परमेश्वर की प्रजा और परमात्मा हमारा राजा हम उसके किंकर भृत्यवत है। वह कृपा करके अपनी सृष्टि मे हमको राज्याधिकारी करें और हमारे हाथो से अपने सत्य न्याय की प्रवृत्ति करावें।

अत: आर्यो, हमें नई पीढी को सुयोग्य, धार्मिक, ज्ञानी, आर्यपूर्ण, राजनीतिज्ञ बनाना है। अकर्मण्य बनकर हाथ पर हाथ धर कर नही बैठे रहना है। लेकिन ऐसे महाशय तैयार करना है जो आगे चलकर निष्काम कर्मयोग को जानकर विधानसभा, लोकसभा में जाकर देश में फैली हुई अराजकता, साम्प्रदायिकता, स्वार्थपरायणता को त्यागकर धार्मिक वैदिक साम्राज्य स्थापित करने में सहयोगी बन सकें। इसके लिए हमारे पास साधन तो प्रचुर मात्रा में हैं, केवल आवश्यकता है शुभ-संकल्पवान कर्मठ कार्यकर्त्ताओं की!

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजिस्टर्ड 23207/73 रजि० नं० P/RTK ..



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक— [illegible] शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ६ ७ जनवरी १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

वेदप्रचार कार्य में ढील न आने दें—

अधिकारियों से अत्यावश्यक निवेदन

आज चारों ओर मतों तथा पन्थों की बाढ़ आई हुई है। अवैदिक मान्यताएं भोली जनता के दिलों में फिर से जड़ पकड़ने लगी हैं। कर्म-फल तथा ईश्वरीय व्यवस्था से विश्वास उठाकर मनुष्य उग्रवाद के आश्रित होने लगा है। पुरुषार्थ के स्थान पर लोग लाटरी से जीवन बदलने को आतुर हैं। पाखण्ड और गुरुडम की आन्धी और वेगवती होकर चलने लगी है।

आर्यों को विचार करना चाहिए कि समय पाकर फिर से जो होने लगा है क्या उसका मुख्य कारण आर्यसमाजों द्वारा वेदप्रचार कार्य के प्रति उदासीन हो जाना नहीं है। प्रदेश के वे आर्यसमाज जहां प्रचार की धूम मचा करती थी जिनके उत्सवों की आस-पास के लोग उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा किया करते थे, आज प्रचार कार्य से न जाने किन परिस्थितियों वश ध्यान हटाये हुए हैं। देहाती और कस्बाई समाजों में प्रायः वर्षों से उत्सव अथवा कथा तो होने ही कहां से थे, सामान्य प्रचार भी शायद ही हो पाया हो। साधन-विहीन समाजों द्वारा इस कार्य में ढील का तो कोई कारण समझ में आने वाला हो सकता है किन्तु साधन सम्पन्न समाजों के अधिकारी भी न जाने क्यों इस कार्य की ओर ध्यान नहीं दे रहे हैं।

यही कारण है कि महात्मा भगत फूलसिंह, स्वामी ब्रह्मानन्द, लोह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी आत्मानन्द, दादा बस्तीराम, चौ० पीरूसिंह तथा चौ० ईश्वरसिंह व स्वामी नित्यानन्द जी की कर्मस्थली इस हरयाणा प्रान्त के गांव-गाव तथा नगर-नगर में आज आर्यसमाज के प्रचार में तो शिथिलता आती जा रही है तथा सत्संग के नाम पर ठगी की दुकाने चल निकलने लगी हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने प्रान्त भर में ऐसी अज्ञानजन्य रूढ़ियों, अन्धविश्वास तथा कुरीतियो को निर्मूल करने का बीड़ा उठाया है जो वेदप्रचार द्वारा ही सम्भव है। यह गुरुतर कार्य समाजों तथा उनके अधिकारियों के सहयोग से ही सम्पन्न हो सकेगा। हरयाणा प्रान्त की उन प्रत्येक ग्रामीण तथा शहरी समाजों के अधिकारियों को जहां पिछली लम्बी अवधि से प्रचार नहीं हो पाया, इस ओर तत्काल विशेष ध्यान देने की आवश्यता है।

इस काय के लिए सभा के पास अपने वेदप्रचार विभाग में योग्य पदेशक तथा भजनोपदेशक एवं भजनमण्डलियां हैं। सभा आवश्यकता को अनुभव करते हुए इस विभागको और विस्तार दे रही है। अत. कृपया उक्त समाजों के अधिकारी बिना किसी प्रकार की देर किये अपने यहां प्रचार उत्सव अथवा कथा की तिथियां निश्चित कर अधिष्ठाता वेदप्रचार को इस काय हेतु सूचित करें। ध्यान रहे तिथियो तथा मांगे गये प्रचारकों की सूचना कम से कम एक मास पूर्व अवश्य दी जाये। सभा इस अनिवाय काय मे आपका सहयोगकर प्रसन्नता अनुभव करेगी।

ससार का उपकार करने का प्रत्येक आय तथा उनके सगठन आर्य समाज का लक्ष्य वेदप्रचार द्वारा ही पूरा हो सकता है। इसी द्वारा उग्रवादी तथा विटनकारी तत्त्वों का सफाया सम्भव है जिसकी ओर अवलम्ब ध्यान दिया जाना आवश्यक है। प्रत्येक आर्य सभासद व अधिकारी इस कार्य मे सभा का सहयोग करेगा इसी आशा और विश्वास के साथ—

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा-हरयाणा का चुनाव वैधानिक है

सभा के पूर्व मंत्री म० भरतसिंह का वक्तव्य

आर्य प्रतिनिधि सभा के वार्षिक चुनाव के सम्बन्ध में स्वामी रामेश्वरानन्द का वक्तव्य कुछ समाचार-पत्रों में पढ़ने को मिला है। स्वामी जी स्वय सभा के चुनाव मे सम्मिलित हुए थे और उन्होंने अधिवेशन में भी समाचार पत्रों मे दिये वक्तव्य के अनुसार इस सम्बन्ध में प्रश्न उठाया था। सभा मन्त्री के रूप मे मैंने उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए स्पष्ट कर दिया था कि सभा की अन्तरंग सभा दिनांक ७-८-८३ में करनाल में नियत ४ सितम्बर का चुनाव स्थगित कर दिया गया था और आगामी चुनाव की तिथि तथा स्थान को नियत करने का अधिकार सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह को दे दिया गया था। उसी अधिकार के अनुसार सभा का चुनाव ११ दिसम्बर को सभा के मुख्य कार्यालय स्थान दयानन्दमठ रोहतक में रखा गया था। प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान के इस अधिकार की पुष्टि साधारण सभा में हो गई थी और अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक २५-१२-८३ में भी इसको सर्वसम्मति सम्पुष्ट किया गया है। स्वामी रामेश्वरानन्द जी साधारण सभा में संतुष्ट हो गये थे और उन्होंने सभा के चुनाव की कार्यवाही में भाग लेकर अपनी आपत्ति को स्वयं वापस ले लिया था। पता नहीं बाद में किस कारण स्वामी रामेश्वरानन्द ने इस प्रश्न को पुनः समाचार पत्रों में उठाया है?

हरयाणा सभा से सम्बन्धित जिन आर्यसमाजों ने अपने प्रतिनिधि भेजे थे, उन्हें नियमानुसार स्वीकार किया गया है। अतः बोगस प्रतिनिधि स्वीकार करने का आरोप निराधार है और वक्तव्य केवल भ्रम फैलाने के लिए है।

स्वामी जी का हरयाणा सभा के निर्माण में योगदान रहा है। अतः उन्हें समाचार पत्रों मे निराधार वक्तव्य देकर सभा के संगठन को कमजोर नहीं करना चाहिए।

ऋषि निर्माण शताब्दी कुरुक्षेत्र में

कुरुक्षेत्र, २८ दिसम्बर—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक बैठक सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी की अध्यक्षता में दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई जिसमें महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी को हरयाणा राज्यस्तर पर कुरुक्षेत्र में मनाने का निर्णय किया गया। चौ० सत्यदेव उपप्रधान आर्य प्रतिनिध सभा हरयाणा के अनुसार यह शताब्दी ८, ९, १० जून को अभूतपूर्व रूप से मनाई जाएगी। इसके प्रबन्ध एवं व्यवस्था हेतु शीघ्र ही एक राज्य स्तरीय उच्च कमेटी का गठन किया जाएगा। चौ० सत्यदेवसिंह के अनुसार आयप्रतिधि सभा हरयाणा और हरयाणा रक्षा वाहिनी को सयुक्त बैठक में यह मांग भी की गई कि कुरुक्षेत्र एक धार्मिक स्थान है जिससे हिन्दुओं की धार्मिक भावनायें जुड़ी हैं। अतः कुरुक्षेत्र को पवित्र नगर घोषित किया जाए और कुरुक्षेत्र में रेडियो स्टेशन एवं गीता स्थान बनाया जाये जहां से नित्य प्रति ३ घण्टे गीता एव वेदवाणी का पाठ किया जाए। उनके अनुसार ८ जनवरी को प्रातः १० बजे इस संदर्भ में एक बैठक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में बुलाई गई है जिसकी अध्यक्षता प्रो० शेरसिंह जी करेंगे। (दैनिक वीर प्रताप)

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के संस्थापक स्वामी श्रद्धानन्द

(डा० शान्तिस्वरूप शर्मा, पत्रकार कुरुक्षेत्र)

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द एक बड़े कर्मयोगी और देशभक्त थे, जिन्होंने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में इतना भारी काम किया कि जिसका यह देश सदा आभारी रहेगा। आपने कांगड़ी गुरुकुल की स्थापना करके भारत में प्राचीन शिक्षा प्रणाली की स्थापना करके आर्य संस्कृति का पुनर्उत्थान किया जो सदैव स्मरण रहेगा।

राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी जब अमरीका में सफलता के पश्चात् भारत लौटे तो वह गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार पहुँचे और उन्होंने महात्मा मुन्शीराम के चरणों को छूकर प्रणाम किया और कहा मैं महात्मा मुन्शीराम के चरणों में सर झुकाना अपना कर्त्तव्य समझता हूं। वह मेरे लिए पूजा के योग्य हैं। महात्मा मुन्शीराम जी संन्यास लेकर १९१६ में स्वामी श्रद्धानन्द बन चुके थे ने धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भारी काम किया जो स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ है।

सन् १९१९ में रोलट एक्ट के काले कानून का सारे भारत में भारी विरोध प्रकट किया गया और स्वामी जी ने देहली में जलूस को अगवाणी की। आप हजारों देशभक्तों को लेकर पहुंचे उस समय भारी जोश था। आपने मिलट्री को संगीनों के सामने अपनी छाती खोलकर ललकारते हुए कहा 'मैं खड़ा हूं मारो गोली' अंग्रेजी सरकार ने जब स्थिति बिगड़ती देखी तो अपनी सेना को पीछे हटा लिया। वह भारत को स्वतन्त्रता के लिए हिन्दू मुस्लिम संगठन को आवश्यक समझते थे। इसलिए उन्होंने जामा मस्जिद दिल्ली में मुसलमानों के भारी जनसमूह को स्वतन्त्रता के बारे सम्बोधित किया था।

अमृतसर के जलियांवाला बाग के खूनी कांड से सारे पंजाब में भारी आतंक फैला था उस समय स्वामी जी बड़े साहस के साथ वहां पहुंचे और दुःखी लोगों को ढारस बंधाई। ऐसे वातावरण में आपने घोषणा की कि अखिल भारतीय कांग्रेस का वार्षिक संमेलन अमृतसर में ही होगा। वह इस अधिवेशन की स्वागत कमेटी के अध्यक्ष बनाये गये। आपने सन् १९१९ के अधिवेशन का पहली बार स्वागत भाषण हिन्दी में पढ़ा था जो नई बात था। उस समय स्वामी जी के भाषण की गांधी जी ने भारी प्रशंसा की थी।

सन् १९२१ में आपने असहयोग आन्दोलन में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। गुरु के बाग आन्दोलन में आपको जेल यात्रा करनी पड़ी। आप सच्चे देशभक्त थे। आपने कहा था कि 'जो व्यक्ति परतन्त्रता के विरुद्ध भाग नहीं लेता वह देश घातक है। मैं ऋषि दयानन्द का शिष्य हूं जिसने देश भक्ति की शिक्षा दी है।'

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज एक क्रान्तिकारी नेता थे। उनका सारा जीवन ही क्रान्ति की कहानी है। उनका तप और त्याग सारे देश को हमेशा प्रेरणा स्रोत रहेगा। स्वामी जी क्रान्ति के पैदावार थे और क्रान्ति के प्रतीक बन गये। स्वतन्त्रता संग्राम के वह एक बड़े लीडर थे। देश उनका प्राण था और उन्होंने विदेशी राज्यों के विरुद्ध देश की स्वतन्त्रता संग्राम में अपने को झोंक दिया था। वह आदर्शवाद की जलती हुई चिंगारी थे।

भारत के पहले स्वतन्त्रता संग्राम से एक वर्ष पहले सन् १८५६ में फागुन की कृष्ण त्रयोदशी के दिन एक पुलिस अफसर श्री नानकचन्द जो अंग्रेजी सरकार का बड़ा वफादार था के घर एक बालक मुन्शीराम का जन्म हुआ जो सन्यास लेकर स्वामी श्रद्धानन्द बन गये और भारत की परतन्त्रता और समाज की कुरीतियों के अंधकार से टकरा गया जिन्होंने प्रत्येक क्षेत्र में अपने तप और त्याग से भारी क्रांति पैदा की।

मुन्शीराम के मां बाप उसे भारी प्यार करते थे। उसमें शराब, मांस और दूसरी बुराइयां पैदा हो गई और वह नास्तिक बन गया। माता पिता को भारी चिन्ता हुई परन्तु उन्हें उसके सुधार का कोई भी रास्ता नहीं दीखता था।

कांशी में उन दिनों एक जादूगर संन्यासी के नाम की धूम मची हुई थी। वह महान् तेजस्वी और तपस्वी महात्मा दयानन्द सरस्वती थे। मुन्शीराम की माता जी अपने बेटे को लेकर इस महान् संन्यासी के पास पहुंची परन्तु अधिक सत्संग न हो सका। मुन्शीराम के पिता बरेली तबदील कर दिये गये। कुछ दिनों के पश्चात् सन् १८७७ में स्वामी दयानन्द सरस्वती बरेली पहुँचे। वहां पर उन्होंने स्वामी जी का भाषण सुना। इसके बारे में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपनी आत्मकथा में लिखा है। पहले ही दिन के भाषण को कभी भूल नहीं सकता। एक घोर नास्तिक को आत्मिक बातों में मग्न कर देना ऋषि दयानन्द का ही काम था। मुन्शीराम ने तीन बार महर्षि दयानन्द जी से ईश्वर के अस्तित्व के बारे बात की और वह स्वामी जी की दलीलों का उत्तर न दे सके और उन पर स्वामी जी के तेज और व्यक्तित्व की ऐसी पड़ी और वह ईश्वर भक्त बन गये।

सन् १८८० में मुन्शीराम जी वकालत की शिक्षा लेने के लिए लाहौर पहुंचे वहां पर उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश और कई दूसरी महर्षि दयानन्द की लिखी पुस्तकों का अध्ययन किया जिनसे उनका जीवन ही बदल गया। वह स्वामी दयानन्द के भक्त बन गये और अपनी सारी सेवायें स्वामी जी के अर्पण कर दी। १८८३ में स्वामी जी के देहान्त होने के पश्चात् आर्यसमाज के प्लेट फार्म से धार्मिक और सामाजिक क्षेत्रों में भारी सेवायें की। आप एक उच्चकोटि के सच्चे सफल वकील थे परन्तु आपने समाज सेवा के लिए १९०१ में वकालत छोड़ दी।

आर्य संस्कृति के उत्थान के लिए आपने सन् १९०२ में हरिद्वार में गंगा तट पर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की जिसने १९१६ तक भारत में बहुत ऊँचा स्थान प्राप्त किया। यह देश भक्तों और क्रान्तिकारी पैदा करने वाली एकमात्र शिक्षा संस्था थी। आपने स्त्री शिक्षा के उत्थान के लिए कन्या विद्यालय जालन्धर में खोला। आपने सन् १९१६ में संन्यास धारण कर लिया था। आपको २३ दिसम्बर सन् १९२६ को एक धर्म में अंधे मुसलमान अब्दुल रशीद ने देहली में छुरा मारकर शहीद कर दिया था। स्वामी श्रद्धानन्द की देश भक्ति और सेवाओं को यह देश कभी नहीं भूल सकता और आने वाली पीढ़ियां इस महान् आत्मा से सदैव प्रेरणा लेती रहेगी। हम इन्हें अपनी श्रद्धांजलि भेंट करते हैं।

ऋषिवर मेरा तुम्हें प्रणाम

कवि० बनवारीलाल 'शादां' वैद्य

ऋषिवर मेरा तुम्हें प्रणाम
देश श्रो धर्म रक्षा हित तुमने वारे थे अपने प्राण ॥१॥
जग में हम निर्भय हो विचरें कायरपन दूर भगाया।
जीना कैसे मरना कैसे वेद पाठ हमें पढ़ाया।
ओ३म् ध्वजा घर घर फैराकर ज्ञान अमृत हमें पिलाया।
गुरु सम्मुख जो करी प्रतिज्ञा अपना प्रण पूर्ण निभाया।
अखिल विश्व को आर्य बनाने फूंका था जब शंख महान् ॥२॥
छुआ-छूत का भूत भगाकर बिछुड़े गले लगाये थे।
ईसाई और मुसलमानों से तुमने प्रान बचाये थे।
अनाचार श्रो कुरितयों को तुमने उन्हें मिटाये थे।
पाखण्डों के किले खड़े थे तुमने उनको ढाये थे।
सत्यार्थप्रकाश लिखकर तुमने दिया सत्य असत का ज्ञान ॥३॥
सारे जग को आर्य बनाने का गुर हमें सिखाया था।
अज्ञान अंधेरा जग से भागे आर्यसमाज बनाया था।
दस नियम बनाकर इसके इन पर हमें चलाया था।
भेद-भाव मिटाओ मन से ज्ञान का दीप जलाया था।
'शादां' जहर खिलाया जिसने तुमने दिया जीवन दान ॥४॥

सम्पादकीय

हरयाणा के ये सौ वर्ष पुराने आर्यसमाज

अप्रैल १८७५ में महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना सर्व प्रथम बम्बई महानगरी में की। इसके उपरान्त जहाँ कहीं भी प्रचारार्थ उनका जाना हुआ वहीं के आर्यजनों ने प्रचार से प्रभावित लोगों को आर्यसमाज के संगठन में आबद्ध कर स्वयं को संगठित करने के प्रयास को प्राथमिकता देनी प्रारम्भ कर दी। १८65 में आर्यसमाज की बम्बई में स्थापना से लेकर १८८३ में ऋषि के इह-लीला समाप्त कर परमधाम को प्रस्थान करने से पूर्व तक यह क्रम चलता रहा। इसी सिलसिले में स्वामी जी महाराज ने १८७७-७८ में पंजाब में वैदिक धर्म का प्रचार किया।

पंजाब की प्रचार यात्रा पूरी कर जब ऋषिवर वापस लौट रहे थे तो १७ जुलाई १८७८ के दिन वे अम्बाला में रुके। यद्यपि यहां का प्रवास बहुत संक्षिप्त था तो भी महर्षि यहां दर्शनार्थ आये श्रद्धालुओं से धर्मचर्चा करने से न चूके जिसका सीधा प्रभाव इस नगर के नागरिकों पर पड़ा किन्तु यहां पर आर्यसमाज की स्थापना इस समय न हो सकी। यह ऋषिवर का पहला हरयाणा प्रवास था जो स्वल्प था। दूसरी बार महाराज जी २५ दिसम्बर १८७८ को रिवाड़ी में प्रतिष्ठित रईस एवं जागीरदार राव युधिष्ठिरसिंह के निमन्त्रण पर पधारे। आप ९ जनवरी १८७९ तक रहे। ११ व्याख्यान आपने यहां दिये जिनके प्रभाव व परिणाम स्वरूप आपके प्रस्थान के पांच दिन बाद ही अर्थात् १४ जनवरी १८७९ को यहां आर्यसमाज स्थापित हो गया किन्तु कारणवश देर तक कायम न रह पाया। यही कारण है कि महर्षि के जीवन काल में स्थापित आर्य समाजों की सूची में रिवाड़ी का नाम नहीं है। १८७९ में यहां पर आरोपित इस बीज को अंकुरित होने में समय लगा जो १८९० में ही पुनः स्थापना के रूप में सम्भव हो सका।

महर्षि का हरयाणा प्रवास तो इतना ही संक्षिप्त सा रहा। इन दो स्थानों के अतिरिक्त हरयाणा के अन्य किसी नगर में उनका जाना क्योंकि न हो सका अतः हरयाणा के अम्बाला तथा रिवाड़ी के अतिरिक्त किसी भी नगर को महर्षि से प्रत्यक्ष प्रेरणा तथा मार्ग दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य भी न मिल सका। १८८३ में महर्षि के दिवंगत होने तक हरयाणा प्रान्त में आर्यसमाजों की स्थापना का सिलसिला आरम्भ हो चुका था। उपलब्ध जानकारी के अनुसार ऋषि के जीवनकाल में ही करनाल, कालका तथा पानीपत में आर्यसमाज स्थापित हो चुके थे। इन तीनों समाजों की स्थापना में महर्षि के शिष्य स्वामी आत्मानन्द तथा स्वामी ईश्वरानन्द जी का विशेष कर्तृत्व रहा जिसका विवरण निम्न प्रकार है—

१२ जुलाई १८८३ को स्वामी आत्मानन्द जी ने महर्षि को एक पत्र कालका से लिखा जिसमें उन्होंने यहाँ पर स्थापित आर्यसमाज की जानकारी देते हुए लिखा—"यहां से लाला खोशीराम मन्त्री आर्यसमाज की नमस्ते पहुंचे इसी के यत्न से यहां आर्यसमाज स्थापित हुई है। कालका के आर्यसमाज की स्थापना १८८३ में ही हुई इसका स्पष्ट उल्लेख 'आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का इतिहास' के पृष्ठ ७८ पर विद्यमान है। प्राप्त जानकारी के अनुसार यहां तो ऋषि के देहावसान के कुछ मास बाद मुसलमानों से शास्त्रार्थ भी हुआ था जिसमें आर्यों की विजय हुई थी।

हरयाणा के ऐतिहासिक नगर रोहतक का आर्यसमाज भी लगभग उतना ही पुराना है। 'आर्यसमाज का इतिहास' के लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालकार ने अपने अनुसन्धान के आधार पर इस समाज की स्थापना भी १८८४ से पूर्व ही स्वीकार की है। उनके अनुसार १८८४ में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय इस समाज के मन्त्री नियुक्त हुये थे जो इन दिनों यहां शिक्षा विभाग में सेवारत अपने पिता के पास मुख्त्यारी की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे।

करनाल में भी आर्यसमाज की स्थापना स्वामी आत्मानन्द जी के प्रयत्न स्वरूप ही हुई थी। इसका स्पष्ट संकेत उस पत्र से मिलता है जो इस समाज के प्रथम मन्त्री श्री गोपालसहाय ने ५ अक्तूबर १८८३ को ऋषिवर को लिखा था। उस पत्र में तत्कालीन मन्त्री जी ने लिखा था—"श्रीयुत् मान्यवर स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज, नमस्ते। विदित हो कि यहां श्री आत्मानन्द के उपदेश से आर्यसमाज की स्थापना हुई है और इस समाज में मुन्शी शिवप्रसाद साहब मजिस्ट्रेट व बाबू गोपालदास साहब इन्जीनियर करनाल प्रधान, उपप्रधान हैं इसलिये आपसे निवेदन करते हैं कि आप भी कृपा करके यहां सुशोभित हों कि यह महापापों का नगर है और ७ अक्तूबर को स्वामी आत्मानन्द जी यहां से जायेंगे। आप सदैवकाल इस समाज पर कृपा दृष्टि रखें।"

(मुन्शीराम—ऋषि दयानन्द का पत्र-व्यवहार पृष्ठ 307-8)

सितम्बर १८८३ में महर्षि के दूसरे शिष्य स्वामी ईश्वरानन्द ने उनको एक पत्र पानीपत से लिखा जिसमें वहां पर स्थापित आर्यसमाज की सूचना उन्हें दी। पत्र के अनुसार लाला चिरञ्जीलाल, श्री ज्वाला प्रसाद तथा लाला कसुम्भरीदास आदि सज्जनों ने इस समाज को स्थापित किये जाने में विशेष उत्साह दिखाया था। इतना ही नहीं, यहां तो पण्डित श्रीनिवास जी की नियुक्ति भी समाज के कार्य सम्पादन हेतु कर दी गई थी। यहां भी आर्यसमाज की स्थापना का श्रेय मुख्यतया स्वामी आत्मानन्द जी को ही है जो शिमला से कालका होते हुये यहां आये थे जिसका स्पष्ट उल्लेख महर्षि को लिखे गये स्वामी ईश्वरानन्द जी के उक्त पत्र में है।

कालका, पानीपत, करनाल तथा रोहतक के आर्यसमाजों के अधिकारियों तथा सभासदों की जानकारी में यह निवेदन करने का अभिप्राय इतना ही है कि इन स्थानों के लोग यह जानकर स्वयं को गौरवान्वित कर सकें कि उनके आर्यसमाज एक शताब्दी पूरी कर दूसरी शताब्दी में प्रवेश कर चुके हैं। विगत मास के अपने कालका प्रवास में वहां के अधिकारियों से इस विषय में हुई चर्चा के उपरान्त मुझे इसकी आवश्यकता अनुभव हुई। वहां के आर्यसमाजियों को जब यह जानकारी मिली तो वे लोग बेहद प्रसन्न हुये तथा श्री महेन्द्रलाल प्रधान एवं श्री सुरेन्द्रपाल मंत्री आर्यसमाज कालका ने निकट भविष्य में अपने यहां इस निमित्त शताब्दी समारोह के आयोजन की भी घोषणा की।

आर्यसमाज पानीपत का अधिकारी वर्ग इस सम्बन्ध में जागरूक होने के कारण पहले ही सचेष्ट है। मई में वहां शताब्दी समारोह धूमधाम से आयोजित किया जा रहा है जो प्रशंसनीय है। करनाल के आर्यजन इस सम्बन्ध में न जाने क्यों उदासीन हैं। उनके लिए यह समय किसी भी परिस्थितिजन्य उदासीनता का परित्याग कर शताब्दी समारोह के आयोजन के समय का निश्चय कर उसकी सफलता हेतु जुट जाने का है। यहां का यह आर्यसमाज जो वर्तमान में होली मोहल्ला के नाम से विख्यात है, सब प्रकार से साधन सम्पन्न होता हुआ भी किसी से पीछे है तो यह वहां के आर्यों के लिए शोभनीय नहीं है।

रोहतक (बाबरा मोहल्ला) के आर्यसमाज को भी इधर ध्यान देने की आवश्यकता है। हां, आर्यसमाज रिवाड़ी को तो अभी यह निश्चय ही करना है कि वह अपना शताब्दी समारोह आयोजित करे या १९९० में। उक्त पाँचों समाजों के अधिकारियों तथा सभासदों को अपने आर्य समाज के माध्यम से एक शताब्दी की यात्रा तय कर दूसरी शताब्दी में प्रवेश पर हार्दिक बधाई।

—रणवीर

आर्य विद्वानों से प्रार्थना

आर्य विद्वानों, लेखकों तथा कवि महानुभावों से प्रार्थना है कि सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ अपने खोजपूर्ण लेख तथा कविताएं आदि लिखकर भेजने की कृपा करें। लेख, सुलेख तथा वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार होने चाहिए।

सम्पादक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान् नमस्ते।

११ दिसम्बर १९८३ को महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की ओर से स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती एवं राय साहब चौधरी प्रतापसिंह जी ने आर्यसमाज अनारकली, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली में जब मेरा सम्मान किया तो मुझे अन्य सामग्री एवं ग्रन्थों के साथ परोपकारिणी सभा, अजमेर द्वारा प्रकाशित 'महर्षि दयानन्द निर्वाण शती स्मृति ग्रंथ' अर्थात् Dayahanda Commemoration Volume भी मिला। इसमें मेरा भी लेख है। ग्रन्थ उत्तम बना है। इसके लिये सभी सम्बद्ध महानुभाव बधाई के पात्र हैं।

उक्त ग्रन्थ के 'हिन्दी खंड' में पहला लेख श्री दीनानाथ सिंह आर्य का है जो महर्षि के जीवन के अन्तिम दिवस से सम्बन्धित है। लेख बड़े परिश्रम से लिखा गया है। उन्होंने अपने लेख के अन्तिम भाग में लिखा है कि श्री गोपालराव हरि जी ने अपने ग्रंथ में कहीं भी जोधपुर की विरोधी प्रवृत्तियों का उल्लेख नहीं किया, न नन्ही जान का, न नौकर द्वारा चोरी का। लेख के अन्त में श्री आर्य जी लिखते हैं—"जगन्नाथ रसोइये का नाम दूध के साथ कांच पीसकर दिया जाना और स्वामी जी का जगन्नाथ को रुपया देना तथा देश की सीमा से बाहर जाने की सलाह—ऐसी कथाएं हैं, जो लोक प्रचलित हैं—उनको पुष्टि करना भी कठिन है और अस्वीकार करना भी।"

महर्षि को विष दिये जाने के विषय में श्री गोपालराव हरि, देवेन्द्र बाबू एव जोधपुर के रावराजाओं के क्या विचार है, मैं इस विवाद में पड़ना नहीं चाहता, पर एक-दो तथ्य प्रस्तुत करना चाहता हूं। महर्षि का निर्वाण अक्टूबर १९८३ में हुआ और कुछ ही मास बाद अगले ही वर्ष १९८४ में मैक्समूलर ने अपने लेख में लिखा है कि उन्हें समाचार पत्रों में से संकेत देखने को मिले हैं कि स्वामी जी की मृत्यु उनके शत्रुओं द्वारा बिष देने से हुई है। ऐसा प्रतीत होता है कि इंग्लैंड में बैठे लोगों को भारत में ही रहने वालों की अपेक्षा भारत के विषय में अधिक जानकारी थी। इसका कारण भी स्पष्ट है क्योंकि उस समय इंग्लैण्ड का भारत पर राज्य था। यही नहीं, मैक्समूलर ने अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व अर्थात् १९९९ में स्वामी जी पर एक और लेख लिखा था, जिसमें स्वामी जी को जहर देने वाली बात को दुहराया है और अधिक स्पष्ट करते हुए लिखा है कि उन्हें बतलाया गया है कि जोधपुर की वेश्याओं के बहकावे पर किसी ब्राह्मण रसोइये द्वारा स्वामी जी को जहर दिया गया और उस ब्राह्मण रसोइये ने बाद में आत्महत्या कर ली थी। आगे मैक्समूलर महोदय लिखते हैं कि स्वामी जी की सहसा मृत्यु का यही कारण था, अन्यथा दयानन्द बहुत शक्तिशाली थे और उनमें नेतृत्व करने की क्षमता थी। ये बातें मैक्समूलर ने कहां-कहां लिखी हैं, इसकी पूरी जानकारी निर्वाण शताब्दी पर ही प्रकाशित मेरे ग्रन्थ "World Perspectives on SwaMi Dayananda Saraswati" में पृष्ठ संख्या 124 और 127 पर दी गई है। यह ग्रन्थ Cocdept ने छापा है और Daystar Publications, B-2/48A, Lawrence Road, New Delhi-110035. (फोन 7121169) से भी उपलब्ध है। डा० भवानीलाल भारतीय ने भी अपने ग्रन्थ 'नवजागरण' के पुरोधा: दयानन्द सरस्वती (१९८३ पृष्ठ ५२३) में मैक्समूलर के इन लेखों की ओर संकेत किया है। इन तथ्यों से स्पष्ट है कि महर्षि को विष देने वाली बात कल्पित नहीं है, बल्कि उसी समय ज्ञात तथ्यों पर आधारित है।

डा० गंगाराम गर्ग

११/१० वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार

हरयाणा में शुद्धि कार्य

हिन्दू समिति के मन्त्री स्वामी सेवानन्द के प्रयत्न से ग्राम ताहरपुर जिला करनाल श्री मैं ओमप्रकाश आर्य की अध्यक्षता में हवन के बाद श्री रियाज महमुद मूले जाट ने राजमल नाम धारण करके अपने परिवार के २८ सदस्यों सहित वैदिक धर्म में प्रवेश किया है।

इसी प्रकार ग्राम जटोला जिला फरीदाबाद में भी श्री रतनसिंह, श्री ईश्वरसिंह, श्री सूरतसिंह, श्री अतरसिंह मूले जाटों ने स्वेच्छापूर्वक अपने परिवारों सहित वैदिक धर्म में प्रवेश कर लिया है।

सभा कार्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला सम्पन्न

२९ दिसम्बर को सभा कार्यालय में एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कार्यालय कर्मचारियों को कार्यालय में कार्य करने की नई-नई तकनीकों से सभा मन्त्री डा० रणजीतसिंह तथा श्री दरियाव सिंह लडवाल भूतपूर्व सदस्य हरयाणा अधीनस्थ कर्मचारी चयन परिषद् ने अवगत कराया। कार्यालय कर्मचारियों के अनुसार यह कार्यशाला बहुत उपयोगी रही।

—सह सम्पादक

न भूतो न भविष्यति

अजमेर जैसा उत्सव न भूतो न भविष्यति।
वहाँ जैसा जमघट न भूतो न भविष्यति॥

आर्यों का मेला बड़ा ही शानदार था।
वायु मंडल भी वहां का बड़ा जानदार था।
कहते थे दर्शक वहां के न भूतो न भविष्यति॥

लाखों लोग वहां पहुँचे देश और विदेश से।
इन्दिरा जी भी वहाँ पहुंची वायुयान विशेष से।
बसों का वह आना जाना न भूतो न भविष्यति॥

केसरिया था बाना वहां आये नर नार का।
गूंज रहा था नारा वहां ऋषि जय-जयकार का।
सुनने वाले कहते थे न भूतो न भविष्यति॥

ओम् का झण्डा लहराया शुभ नीले आकाश में।
कर रहे अभिवादन आर्य वीर खड़े पास में।
तुमुल हर्षनाद जात: न भूतो न भविष्यति॥

चतुर्वेद-यज्ञ हुआ पूरे एक मास भर।
सस्वर वेद पाठ हुआ दोनों समय ताल पर।
सुगन्ध से भरपूर पवन न भूतो न भविष्यति॥

युवक, महिला, वेद शिक्षा सम्मेलन हुए वहां।
प्रचार देश-देश में वेदों का हो कैसे कहां।
निर्णय किया गया ऐसा न भूतो न भविष्यति॥

लंगर लगा था वहां पर प्यारे ऋषि के नाम का।
निःशुल्क भोजन करते न कोई काम था वहा दाम का।
ऐसा सुन्दर भोजनम् न भूतो न भविष्यति॥

दाल, रोटी, चावल और पूरी की बहार थी।
घीया, आलु, पेठे की सब्जी भी सरसार थी।
वहां जैसा सुन्दर वितरण न भूतो न भविष्यति॥

प्रबन्ध वहां उत्तम था पानी और प्रकाश का।
स्कूल, कालेज, होटल और तम्बु में आवास था।
पंडाल था सजा हुआ न भूतो न भविष्यति॥

शोभा यात्रा क्या थी मानो विश्व एक नीड़ था।
ओर था न छोर था एकत्रित हुई भीड़ का।
'हरि' ने देखा जो दृश्य न भूतो न भविष्यति॥

हरिदत्त वि० प्र०

बीयू १६०, विशाखा एन्कलेव दिल्ली–११००३४

वेद प्रचार विभाग का प्रचार कार्य

नवम्बर मास के प्रथम सप्ताह में अजमेर में आयोजित ऋषि दयानन्द निर्वाण शताब्दी तथा उससे निवृत्त होने के तत्काल बाद सभा के वार्षिक अधिवेशन की घोषणा और तैयारी ने यद्यपि सभा के इस विभाग को प्रभावित किया तथापि सभा से सम्बद्ध आर्यसमाजों में यत्र-तत्र उत्सव तथा प्रचार का आयोजन इन दिनों में होता रहा। अक्तूबर मास में खारवन जि० अम्बाला तथा मुवाना जि० जीन्द में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न हुए जिनमें सम्मिलित हो स्थानीय जनता ने वेदामृत पान किया। आर्यसमाज होडल, कन्या गुरुकुल पंचगांव (भिवानी) आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल, आर्यसमाज किशनपुरा माजरा (अम्बाला), आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप में उत्सव सम्पन्न हुए जिनमे सभा के उपदेशकों, भजन मण्डलियों तथा अधिकारियों ने सम्मिलित होकर धर्म प्रचार को गति प्रदान की। इसी प्रकार बेरी मेले पर भी सभा द्वारा प्रचार कैम्प लगाया गया।

नवम्बर में गोगाना कैथल आर्य समाज बल्लभगढ, आर्य समाज गांगटेहड़ी (जीन्द) तथा आर्य समाज कनाहवड (रोहतक) के वार्षिकोत्सव सभा की व्यवस्था में सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए तथा १८ से २० नवम्बर तक प्रसिद्ध मेला कपालमोचन (अम्बाला) मे भी सभा ने प्रचार कैम्प का आयोजन किया। दिसम्बर मास मे आर्य समाज लोप्पो (अम्बाला) तथा आर्यसमाज नलवा (हिसार) के वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुए। इसी मास मे २३ दिसम्बर को प्रान्त भर की प्राय सभी समाजो ने अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस मनाया। जिनमे आर्य वीरदल भिवानी तथा आर्य समाज खैल बाजार पानीपत द्वारा आयोजित समारोह में सभा के प्रचार विभाग का पूरा योगदान रहा। इसी मास में सभा की मण्डलियो द्वारा हिसार जिले में प्रचार किया गया। आर्यसमाज उकलाना मण्डी (हिसार) तथा झज्जर के आस-पास के क्षेत्र में विशेष रूप से प्रचार हुआ।

आगामी कार्य-क्रम

जनवरी ८४ में १३-१४ जनवरी को आर्यसमाज कासनी (रोहतक) तथा १२ से १४ जनवरी तक आर्य समाज जाखल मण्डी (हिसार) के वार्षिकोत्सव आयोजित हैं जिनमें श्री चन्द्रभानु एवं श्री ईश्वरसिंह तूफान की भजन मण्डलियां कासनी तथा नई रखी गई कंवर तेजपालसिंह की मण्डली मेरे साथ जाखल के उत्सव में सम्मिलित होगी। सभा के पूर्व मन्त्री महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ भी जाखल मण्डी पहुचेगे। फरवरी मास में १७-१८ तथा १९ को आर्यसमाज औरंगाबाद मीतरोल (फरीदाबाद का वार्षिक उत्सव सम्पन्न होगा जिसमें सभा के प्रचार-प्रसार विभाग का पूरा सहयोग रहेगा। इसी मास की २९वी तिथि को ऋषि बोधोत्सव (शिवरात्री) का पवित्र ऐतिहासिक दिवस भी आ रहा है। आशा है कि समाजें इस दिन को धूम-धाम पूर्वक मनायेंगी। सभा के वेद प्रचार विभाग से इस अवसर पर अपेक्षित सहयोग के लिए कृपया शीघ्रातिशीघ्र सूचित करें ताकि 'पहले आओ पहले पाओ' के आधार पर वहां की प्रचार व्यवस्था सुनिश्चित हो सके। —अधिष्ठाता वेदप्रचार

आर्यसमाज मन्दिर नीलोखेड़ी (करनाल) का प्रस्ताव

देश की वर्तमान अवस्था से विशेषतया पंजाब, चण्डीगढ़, देहली आदि में जो अकालियों व उनके उग्रवादी दलों ने नरसंहार की अमानवीय लड़ी लगा रखी है, की घोर निन्दा करते हैं। देश में विशेषतया इस प्रान्त में इसका बहुत बुरा प्रभाव पड रहा है, जिससे साम्प्रदायिक सद्भावना समाप्तप्राय हो रही है। अत: भारत सरकार से तथा देश की कर्णधार प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गांधी से तथा सम्बन्धित सरकारों से हम अनुरोध करते हैं कि वह बड़े से बड़ा कदम उठाकर कानून व शान्ति व्यवस्था को ठीक करें। अपराधियों को चाहे वह गुरुद्वारे अथवा मन्दिर में पकड कर कठोर सजा दें ताकि वे इस प्रकार की क्रूरता के कार्य न कर सकें। इस साम्प्रदायिक वातावरण से देश की अखण्डता के टूटने का जो डर उत्पन्न हो गया है भारत सरकार कठोरतम कदम उठा कर उनके इन प्रयासो को विफल कर दे। इन अमानुषिक कार्यो के कारण जिन निर्दोष व्यक्तियो की जान गई हैं उन्हें हुतात्मा मानते हुए सम्बद्ध परिवारों से अपनी मानसिक संवेदना प्रकट करते हैं व परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उन्हे शान्ति तथा धैर्य प्रदान करे।

मन्त्री
आर्यसमाज नीलोखेड़ी (करनाल)

रोहतक में

श्रद्धानन्द-बलिदान समारोह सम्पन्न

1 जनवरी 1984 को किला रोड पर रोहतक की केन्द्रीय आर्य सभा की ओर से महान स्वतन्त्रता सेनानी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस समारोहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर नगर के बहुत गण मान्यआर्य समाजियो ने स्वामी जी को अपनी श्रद्धाञ्जली समर्पित की जिनमे चौधरी निहालसिंह गुगनानी व चौधरी राममेहर सिंह एडवोकेट प्रमुख रहे। चौधरी राममेहर सिंह ने पंजाब के उग्रवादियो से शक्ति का वर्ताव करने के लिए सरकार को चेतावनी दी। प्रो0 रामविचार जी ने स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला। प्रो0 उत्तमचन्द 'शरर' ने आर्यों को जीने के योग्य बनने के लिए मजबूत होने की बात पर जोर दिया। सभा के प्रमुख वक्ता तपोनिष्ठ संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने स्वामी श्रद्धानन्द जी की कार्य–शैली को बताया कि वे अपने पास शक्तिशाली पहलवान रखते थे उनसे समय पर काम लिया करते थे। उन्होने स्वामी जी द्वारा शुरू किए गए शुद्धि कार्य को भी पूर्ण करने के लिए आर्यों का आह्वान किया। सभा की अध्यक्षता स्वामी जीवनानन्द सरस्वती ने की। इस अवसर पर आर्य कन्या-विद्यालय की छात्राओ ने भी बढ़ चढ कर भाग लिया। इस प्रकार से स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस समारोह सोल्लास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

धर्मचन्द्र विद्यालंकार 'समन्वित'
एम० ए०

वर्तमान में सभा का वेद प्रचार विभाग

जिसके अन्तर्गत निम्न महानुभावो की वैतनिक सेवाएं सभा को हर समय प्राप्त है —

१ पं० रणवीर शास्त्री-विद्याभास्कर, एम० ए०, विद्यावाचस्पति-अधिष्ठाता वेद प्रचार २. चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी, महोपदेशक ३. सुखदेव शास्त्री, उपदेशक ४. धर्मचन्द विद्यालकार, एम० ए०, उपदेशक ५ महाशय मुन्शीलाल, भजनोपदेशक, ६ महाशय शेरसिंह, भजनोपदेशक ७ महाशय बनारसी लाल, भजनोपदेशक ८. महाशय हरलाल, भजन मण्डली ९. महाशय चन्द्र भानु, भजन मण्डली १० महाशय ईश्वरसिंह तूफान, भजन मण्डली ११. महाशय सुमेरसिंह, भजन मण्डली १२ कंवर तेजपालसिंह भजन मण्डली।

इनके अतिरिक्त सभा का अधिकारी वर्ग भी समाजो द्वारा आमन्त्रित किये जाने पर आयोजित आयोजनों मे सहर्ष सम्मिलित होगा।

अधिष्ठाता वेदप्रचार

आर्यसमाज नलवा (हिसार) का उत्सव

दिनाक १९-२०-२१ दिसम्बार को डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रेरणा एवं श्री पुष्करलाल आर्य के पुरुषार्थ से आर्यसमाज नलवा का प्रथम वार्षिक महोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा० सुदर्शनदेव आचार्य, प्रो० रामविचार हिसार, प्रो० रतनसिंह गाजियाबाद, सत्यपाल शास्त्री हांसी, बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गणियार, श्री प० चिरंजीलाल आर्य भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि विद्वानों एव उपदेशको के प्रवचन, भाषण एव मनोहर भजनों से ग्राम झूम उठा। अन्तिम दिन श्री कवलसिंह के व्यायाम प्रदर्शन से युवको पर बड़ा प्रभाव पडा। यज्ञ मे ग्राम के नर-नारियों ने श्रद्धा से भाग लिया तथा धूम्रपान, मदिरापान, मांसभक्षण आदि दोषों के परित्याग का व्रत लिया। इस अवसर पर आर्यसमाज नलवा ने सभा को २००) दान दिया।

सहदेव आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नलवा

कन्या गुरुकुल गणियार की स्थापना

दिनांक ३१ दिसम्बर तथा १ जनवरी १९८४ को ग्राम गणियार (महेन्द्रगढ़) में कन्या गुरुकुल की स्थापना का महोत्सव बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। यहां आज से लगभग २० वर्ष पहले यह गुरुकुल चलता था किन्तु किन्ही कारणो से बन्द हो गया था। बहन कलावती शास्त्री ने इसे कन्या गुरुकुल का रूप देकर पुन: संचालन किया है। इस अवसर पर डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने यज्ञ के ब्रह्मा, महोत्सव के कार्यक्रम का संचालन तथा नवीन स्नान-घर के उद्घाटन आदि से महोत्सव की शोभा बढाई। बहन कलावती शास्त्री ने कन्या गुरुकुल की स्थापना का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर पंडित ब्रह्मदेव जी शास्त्री, पं० बेगराज, प० ताराचन्द वैदिक तोप, ओमप्रकाश, फ्रंटियर लक्ष्मीचन्द आर्य, प्रहलादसिंह बेकल आदि के भाषण एवं मनोहर भजन हुए। इस संस्था की स्थापना से महेन्द्रगढ क्षेत्र मे आर्यसमाज में एक नवजीवन का संचार हुआ है। यह संस्था आर्यसमाज के प्रचार का केन्द्र बनकर वैदिक धर्म के पवित्र वेद-प्रचार का कार्य करेगी।

ब्रह्मचारी ओमस्वरूप
व्यवस्थापक कन्या गुरुकुल गणियार

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज रादौर जिला कुरुक्षेत्र

संरक्षक—श्री रामकिशन बतरा, प्रधान—श्रीमती विद्यावती आर्या, उपप्रधान—श्री सत्यकाम आर्य, श्री कृष्णगोपालदत्त, मन्त्री—श्री जोगिन्द्र रावल, उपमन्त्री—श्री सुरेश आर्य, प्रचार मन्त्री—श्री वीरेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष—श्रीमती बिमला बंसल, पुस्तकाध्यक्ष— प्रकाशरानी आर्य

आर्यसमाज वार्ड न० 3 रादौर जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्री कृष्णचन्द आर्य, उपप्रधान—सुभाषचन्द सेठी, मन्त्री—श्री राजपाल, उपमन्त्री—श्री वीरेन्द्रआर्य, कोषाध्यक्ष—श्री करणसिंह निरीक्षक-स्वामी सेवकानन्द, पुस्तकाध्यक्ष—हरिश्चन्द्र

आर्यसमाज खारवण जिला अम्बाला

प्रधान—इन्द्रदत्त आर्य, उपप्रधान— प्रीतमसिंह आर्य, मन्त्री—कर्मवीर आर्य, उपमन्त्री—राजेश्वरप्रसाद आर्य, कोषाध्यक्ष—स्वर्णलाल आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—आर्य सत्यपाल विमल, लेखानिरीक्षक—अनिलकुमार आर्य, प्रचारमन्त्री—ओमप्रकाश आर्य, संरक्षक—रामलाल आर्य

आर्यसमाज जुडी जिला रोहतक

प्रधान-श्री श्योनारायण, उपप्रधान—श्री रामचन्द्र, मंत्री—श्री धर्मपाल, कोषाध्यक्ष—श्री सिहराम, प्रचारमन्त्री—सुबेदार श्योताजसिंह पुस्तकाध्यक्ष—श्री शिवलाल आर्य, लेखानिरीक्षक—रघुबीरसिंह आर्य

समाजों के अधिकारियों से आवश्यक निवेदन

पिछले कई दिनों से निरन्तर मिल रही सूचनाओं से ज्ञात होता है कि कुछ लोग ११ दिसम्बर ८३ को सभा कार्यालय में सर्वसम्मति से हुये चुनावके सम्बन्ध मे समाचार पत्रों द्वारा तथा सभा से सम्बद्ध समाजों में स्वय जा जाकर भ्रम फला रहे हैं। आप प्रतिनिधि भाई जो सैकडों को सख्या में प्रान्त के कोने-कोने से अपनी अपनी समाजों की ओर से इस अधिवेशन में सम्मिलित हुए थे, यद्यपि इस बात को भली भांति जानते हैं कि सारी कार्यवाही अत्यन्त सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुई तथा चुनाव का विषय आने पर प्रो० शेरसिंह जी के अतिरिक्त प्रधान पद हेतु अन्य किसी का भी नाम प्रस्तुत नही किया गया और इस प्रकार उनके सर्वसम्मत प्रधान चुने जाने के बाद अपने दूसरे सहयोगी अधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार भी साधारण सभा ने सर्वसम्मति से उन्हीं को दे दिया। उस समय जबकि कोई भी प्रतिनिधि इस सब पर आपत्ति करने के लिए वैधानिक रूप से अधिकृत था, किसी एक ने भी इस पर किसी प्रकार की आपत्ति न की। परिणाम स्वरूप अधिवेशन शान्त वातावरण में सम्पन्न हुआ। किन्तु खेद की बात है कि अब कुछ लोग न जाने किन कारणों से प्रेरित हुये समाजो में जाकर प्रतिनिधियों तथा अधिकारियो से बेतुकी और अप्रासंगिक बाते कर उनसे लिखित में तरह तरह की आपत्तिया करवाने की कुचेष्टा में जुटे हैं।

इस सम्बन्ध में आपको सचेत किया जाता है कि कृपया ऐसे लोगों को कुछ भी लिखकर न दें, जो लिखना हो सीधा सभा को लिखे। हां, इस प्रकार के लोगों की गतिविधियो पर सतर्कता पूर्वक ध्यान रखें जो इस नाजुक दौर में जबकि संगठन को और अधिक सुदृढ़ किये जाने की आवश्यकता है, क्षुद्र स्वार्थ के वशीभूत हुए इसे कमजोर करना चाहते हैं। ऐसे व्यक्तियों तथा उनकी गतिविधियों की तत्काल सभा को सूचना दें। इसमें दो मत नहीं हैं कि आपके विश्वासपूर्ण सहयोग से प्राप्त हुई शक्ति का भरपूर उपयोग संगठन को लक्ष्यपूर्ति हेतु सुदृढ़ करने में ही किया जायेगा।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

सर्वहितकारी परिवार की ओर से सर्वहितकारी सदस्यों को नव वर्ष की शुभ कामनायें।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आदर्श विवाह संस्कार

श्री बलवंतराय सुबेदार जे० सी० ८८६५३ एफ० ए० ए० सी० सुपुत्र श्री बाबूराम जी ग्राम बरौली नारायण गढ का शुभ विवाह कु० तारा कुमारी सुपुत्री श्री हिमालसिंह राय शिलांग निवासी के साथ आर्यसमाज मन्दिर में दिनांक १९-१२-८३ सोमवार सायंकाल ७ बजे वैदिक रीति से बिना किसी दहेज आदि के सम्पन्न हुआ। यह शुभ विवाह संस्कार आर्य समाज माडल टाउन यमुनानगर के पुरोहित श्री आचार्य सोनेराव जी ने कराया। इस अवसर पर आर्यसमाज जगाधरी वर्कशाप के सभी अधिकारी और कई सभासद सारे कार्यक्रम में उपस्थित रहे। सबने मिलकर नव वर-वधू को शुभ आशीर्वाद दिया। श्री बलवन्तराय सुबेदार जी और उनकी बहिन बहनोई जी ने ११६) (एक सौ सोलह) आर्यसमाज को दान दिये।

केशवदास आर्य

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस—

आर्यसमाज कालका (अम्बाला) में सम्पन्न

२५ दिसम्बर—आर्यसमाज कालका में अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस बड़ी श्रद्धा एवं उत्साहपूर्वक मनाया गया। प्रातः हवनयज्ञ से कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। तदुपरान्त आर्य कन्या उच्च विद्यालय के बच्चों तथा अध्यापिकाओं ने अपने भाषणों कविताओं द्वारा अमर बलिदानी को भावभीनी श्रद्धाञ्जली अर्पित की। इस अवसर पर श्री सुरेश कुमार शास्त्री का बड़ा ओजस्वी तथा मर्मस्पर्शी भाषण हुआ। इसके साथ ही आर्यसमाज की तरफ से स्कूल की अध्यापिकाओं तथा बच्चों को पुरस्कार देकर उत्साहित किया गया। अन्त में शुद्धि के चक्रवाहक की स्मृति में नगरवासियों के लिए प्रीतिभोज का भी आयोजन किया गया जिसमें नगर के काफी लोगों ने भाग लेकर रसास्वादन किया।

सुरेन्द्रपाल
मन्त्री आर्यसमाज कालका

पानीपत में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह

आर्यसमाज खेल बाजार पानीपत में १८-१२-८३ से २५-१२-८३ तक अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान सप्ताह बड़ी धूमधाम से मनाया गया जिसमें सभा के भजनीक सुमेरसिंह जी की भजन मण्डली के मनोहर भजन हुए तथा मूर्धन्य संन्यासी स्वामी निगमानन्द जी दीनानगर वालों के द्वारा वेदकथा हुई। २५-१२-८३ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्रद्धांजलि समारोह के रूप में आर्यसमाज मन्दिर खेल बाजार में मनाया गया जिसमें सर्वश्री उत्तमचन्द जी शरर, श्री सोमनाथ जी, डा० सहदेव वर्मा तथा स्वामी यमानन्द जी ने श्रद्धांजली अर्पित की। नगर की जनता ने सभी कार्यक्रमों में उत्साह से भाग लिया। नगर की सभी समाजों ने पूर्ण सहयोग दिया। सभा को ३००) दान दिया गया।

सुरेश आर्य
मन्त्री

अजमेर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर में २३ दिसम्बर ८३ को स्वामी श्रद्धानन्द जी का बलिदान दिवस श्री दत्तात्रेय जी आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर प्रो० कृष्णपालसिंह जी, प्रो० बुद्धिप्रकाश जी आर्य, प्रो० देवशर्मा जी तथा आचार्य गोविन्दसिंह जी आदि वक्ताओं ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के प्रेरणादायी जीवन एवं उनके देशभक्तिपूर्ण सेवा कार्यों पर प्रकाश डाला। श्री पन्नालाल जी पीयूष के मधुर भजन हुए।

श्री दत्तात्रेय जी आर्य ने इस अवसर पर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी की शहादत, निर्भीकता, स्वाधीनता संग्राम में उनके अमूल्य योगदान पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा गांधी जी स्वामी श्रद्धानन्द जी को अपना बड़ा भाई कहकर सम्बोधित करते थे। मिस्टर गांधी से उन्हें 'महात्मा गांधी' गुरुकुल कांगड़ी में आयोजित स्वागत समारोह में ही स्वामी जी द्वारा प्रयुक्त किया गया था। ऐसे निर्भीक शहीदों का जीवन सदैव राष्ट्रवासियों के लिए प्रेरणादायी बना रहेगा।

आर्यसमाज फतेहपुर में विचार गोष्ठि

खेद का विषय है कि आजादी के ३६ वर्ष उपरान्त भी हम देशप्रेमी शहीदों के स्वप्नों का भारत नहीं बना पाए हैं, विशेषकर हमारे ग्रामों, नगरों में धर्म के नाम पर फैला गुरुडम पाखण्ड के आधार पर पनपती जातियता दहेज प्रथा तथा विदेशियों के कुचक्र की हीन भावना से फैली शराब, जूआ तथा फैशन की आंधी ने जहां गांव के गरीब को और गरीब बनाया है वहां नौजवानों को चरित्रहीनता के कगार पर पहुंचा दिया है विषैली राजनीति के षड्यन्त्रों ने इन सभी बिमारियों को हवा देकर भाई-भाई को दुश्मन बना दिया है जिससे आसाम की आग, पंजाब की उठती समस्यायें आप जैसे धर्म प्रेमी देशभक्त को नहीं ललकारती? क्या आप का कर्त्तव्य नहीं कि देश, धर्म की इस जान लेवा, उलझी परिस्थितियों को सुलझाने में आपका कोई योगदान है?

अतः निश्चय हो आर्यसमाज फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में आयोजित सभी पंचों सरपंचों सभी धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं सभी देशभक्तों की एक विचार गोष्ठी उपरोक्त विषयों पर दिनांक १५ जनवरी १९८४ को प्रातः १० बजे आर्यसमाज मन्दिर फतेहपुर में आयोजित की जा रही है जिसमें किये निर्णयों को समस्त इलाके में लागू करने के प्रयास किए जावेंगे। आपसे पुनः प्रार्थना है कि आप अवश्य ही उक्त गोष्ठी में पधारकर पुण्य के भागी बने।

संयोजक देशबन्धु आर्य
मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर

दो शराबी भाइयों की जमानत

किसी गांव में दो शराबी सगे भाई रहते थे जो अपने पिता द्वारा संचित धन पर ऐश कर रहे थे। धीरे धीरे काम न करने तथा शराब की लत के कारण वे अत्यन्त निधन हो गये और इतने गरीब हो गये कि कृषि काय में बोने वाले बीज भी उनके पास नहीं रहे। गांव के अन्य लोगों ने उन्हे समझाया कि यदि अब होश आ गया हो तो गांव के मुखिया से कहो। वह फसल तैयार होने पर बीज का सवागुना वापसी की शर्त पर तुम्हें उधार बीज दे सकता है। यह सुनकर दानों मुखिया के पास गये परन्तु मुखिया उन्हें बीज देने को तैयार नहीं हुआ क्योंकि वह दोनो की आदतों को जानता था। निराश होकर दोनों पुन: उसी व्यक्ति के पास गये जिसने उन्हें यह सलाह दी थी। जब उसने दोनों की समस्याएं सुनी तो पहले वह तैयार नहीं हुआ परन्तु दोनों के बार बार गिड़गिड़ाने पर उसे दया आ गई। फलत: अपनी जमानत पर उसने उन्हें बीज दिला दिया। संयोगवश दोनों भाइयों की फसल उस वर्ष बड़ी जोरदार हुई जिसे दोनों पकने पर काटकर खलिहान ले गये। दोनों भाइयों को खेत का अनाज निकालते देखकर उनके पहले के शराबी दोस्त इनके आस-पास मंडराने लगे और उन्हें समझाने लगे कि, 'अरे यार! तुम्हारे पास क्या कमी है! इतना क्या खा सकोगे? क्यों नहीं पीने-पिलाने की पार्टी करते हो?' सुनकर दोनों पुन: बहक गये और शराब पीने लगे। आपस में ज्यादा पीने-पिलाने की होड़ लग जाने से अतिशीघ्र ही सारा का सारा अनाज बिक गया और अन्त में जब थोड़ा ही बचा तो आपस में झगडने लगे। इसे देख वहां गांव के लोग जुट गये।

इधर मुखिया जी का बकाया बीज गोदाम में नहीं पहुंचा था। फलत: उसने जमानतदार को तकाजा भिजवाया कि वह दोनों भाईयों पर बकाया बीज को उनके गोदाम में पहूंचाये। अत: बेचारा जमानतदार दोनों भाइयों के घर बीज की वसूली करने पहुंचा तो वे दोनों आपस में लड़ रहे थे और सारा गांव जुटा था। आये जमानतदार को देखकर दोनों में एक बोला कि, 'महाजन! आपके बकाये बीज को भी इसने शराब के बदले बेच दिया है। अत: बीज की जिम्मेदारी मेरी नहीं वरन् इसकी है।' सुनकर दूसरे ने यही बात कही। परन्तु जिम्मेदारी व्यक्ति बोला कि 'तुम दोनों में से किसने कितना लिया इससे मुझे मतलब नहीं। परन्तु चूंकि तुम दोनों की जिम्मेदारी है कि अपने अपने हिस्से का बीज दो।' इस पर दोनों ही जमानतदार पर बिगड़ पड़े और कहने लगे कि 'चूंकि शराब दूसरे ने पी है अत: मैं नहीं दूंगा।' जब यही बात एक दूसरे के लिए कहने लगे तो जमानतदार ने आंगन में शेष बचा अनाज बटोरना चाहा। इस पर दोनों बिगड़कर जमानतदार को पीटने लगे और यह मेरा है, यह मेरा है' चिल्लाने लगे। अन्ततोगत्वा यह मामला पीटे जाने पर जमानतदार ने ग्राम पंचायत के सामने रखा जिसका मुखिया ही सरपंच था। सारी बातें गम्भीरता से सुनकर मुखिया ने अपना निर्णय सुनाया और कहा कि 'चूंकि उक्त जमानतदार ने शराबियों की जमानत ली थी अत: कर्ज का जिम्मेदार जमानतदार है और शराबियों को यह कहकर मुक्त कर दिया कि यह तो शराबियों की आदत में शुमार है' हां, आखिर में अपने निर्णय में उसने यह भी कहा कि 'अब इन दोनो शराबियों को गांव के खान-पान से बहिष्कृत किया जाता है।' निर्णय सुनकर शराबी तो जरा भी विचलित नहीं हुए परन्तु जमानतदार पछता रहा था कि शराबी की जमानत लेकर उसने व्यर्थ आफत मोल ले ली। (मद्यनिषेध पत्रिका से साभार)

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे १५) मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देवें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८३



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ७ १४ जनवरी १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अघमर्षण सूक्त का आधिदैविक एवं आधिभौतक अर्थ

धर्मवीर विद्यालंकार, 5 अशोकनगर, पीलीभीत (उ० प्र०)

ओम् ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत ।
ततो रात्र्यजायत ततः समुद्रो अर्णवः ।। १ ।।

समुद्रादर्णवादधि संवत्सरो अजायत ।
अहोरात्राणि विदधद्विश्वस्य मिषतो वशी ।। २ ।।

सूर्याचन्द्रमसौ धाता यथापूर्वमकल्पयत् ।
दिवं च पृथिवीं चान्तरिक्षमथो स्वः ।। ३ ।।

ऋ० म० १० । सू० १९० । [मं० १-३]

अघमर्षण सूक्त के मन्त्रों का वर्तमान अर्थ निम्न कारणों से सन्तोषप्रद नहीं है :—

(१) सृष्टि उत्पत्ति का क्रम टूटता है।

(२) रात्रि, अहोरात्र संवत्सर का अर्थ क्रमशः रात, रातदिन, तथा वर्ष (कालगणना) सम्यक् प्रतीत नहीं होते। ये अर्थ सूर्य और पृथिवी की अपेक्षा रखते हैं। सृष्टि की उत्पत्ति के क्रम में ही सूर्य और पृथिवी की सृष्टि होगी।

(३) समुद्रोऽर्णवः का अर्थ वाष्पीय समुद्र भी संगत नहीं। जलीय वाष्प की उपस्थिति सृष्टि प्रारम्भ से पूर्व असंगत है।

(४) सृष्टि उत्पत्ति का उपादान कारण प्रकृति है। प्रकृतिसूचक शब्द, सूक्त में विद्यमान होना चाहिए।

(५) "प्रकृतेः महान्, महतोऽहंकार," आदि सृष्टिक्रम का भी प्रतिपादन सूक्त में मिलना चाहिए।

(६) प्रकृति जड़ है। उसमें परिवर्तन गति द्वारा ही सम्भव है। यह गति क्या है? उसका वर्णन इस सूक्त में मिलना चाहिए।

(७) सूक्त का देवता भाववृत्त है। परमाणुओं में वृत्ताकार गति होनी चाहिए। इसका द्योतक शब्द सूक्त में मिलना चाहिए।

प्रभु की असीम कृपा से, उपरिलिखित असंगतियों का समाधान प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता हूँ। इस सूक्त का यह आधिदैविक एवं आधिभौतिक अर्थ, वेदज्ञ विद्वानों की सेवा में नम्रतापूर्वक प्रस्तुत है। आप द्वारा बताई गई त्रुटियों, परिवर्तनों तथा संशोधनों का सहर्ष स्वागत करता हूँ।

(१) अभीद्धतप—परम पिता परमात्मा, जीवात्मा अपने पूर्वजन्मों के कर्मफल प्राप्त कर सके, इस निमित सृष्टि की रचना करते हैं। उस परमात्मदेव को "अभीद्ध तप" — अर्थात् ज्ञानपूर्वक कठोर कर्म का अबाध गति से होते रहना—के रूप में स्मरण किया है, जो सर्वथा सृष्टिरचना के सामर्थ्य के अनुकूल है।

(२) ऋत और सत्य- सृष्टि के निर्माण और रचना के अनन्तर उसके उपयोग के लिए प्रयुक्त होने वाले नियमो को यहां ऋत और सत्य (अर्थात् प्राकृतिक नियम और व्यावहारिक नियम) कहा है।

किसी वस्तु के अथवा संस्था के निर्माण से पूर्व मनुष्य भी दो प्रकार के नियमों का निश्चय करता है। एक प्रकार के नियम वस्तु निर्माण या संस्था के सगठन के सम्बन्ध में बनाता है। दूसरे नियम, वस्तु के उपयोग अथवा संस्था द्वारा किये जाने वाले कार्यों को पद्धति के सम्बन्ध में बनाता है। कुर्सी के निर्माण की प्रक्रिया के नियम और निर्मित कुर्सी के उपयोग के नियम अलग अलग होते हैं। इसी प्रकार सर्वप्रथम प्रभु ने सृष्टि रचना और रचित पदार्थों के उपभोग के नियमों पर विचार किया।

(३) रात्रि तथा समुद्रोऽर्णवः—तत्पश्चात् प्रभु ने जगत् की उत्पत्ति के उपादान करण "प्रकृति" की ओर ध्यान दिया। "रात्रि" का अर्थ मूल प्रकृति होता है। जड़ प्रकृति में उस अभीद्ध तप से "प्राण" का संचार हुआ। प्रकृति क्रमशः महत् और अहंकार के रूप में प्रकट हुई।

सूक्ष्मतम प्रकृति, का अव्यक्त के व्यक्त रूप में होना, महत् रूप है। और अधिक व्यक्त होकर एक एक परमाणु का पृथक् पृथक् होना, अहंकार रूप में प्रकट होने की अवस्था को इस सूक्त में "समुद्रोऽर्णवः" इन शब्दों से कहा गया है। अभिप्राय है संख्यातीत परमाणुओं का संघात, अर्थात् प्रकृति की अहंकारावस्था।

यजुर्वेद १७/२ में संख्याओं की गिनती के क्रम में "समुद्र" वह अन्तिम संख्या है, जो दस हजार खरब के समान है।

(४) अहोरात्र—यहां तक प्रकृति अपने ही रूप में अर्थात् अव्यक्त से व्यक्त में है। इसका अगला रूप पंचतन्मात्राओं में परिवर्तन होना है। पंचतन्मात्राओं में आने पर प्रकृति विभिन्न रूपों में प्रकट होगी। जड़ प्रकृति में यह परिवर्तन का कार्य 'अभीद्धतप' से प्राप्त प्राण (ताप =गति) द्वारा होता है। सृष्टि रचना अब "रयि और प्राण" से होती है। तप के प्रभाव से कुछ परमाणु प्राणशक्तिमय होंगे तथा दूसरे जड़

(शेष पृष्ठ ५ पर)

प्रार्थना कब प्रार्थना बनती है ?

लेखक–यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

'हर प्रार्थना, प्रार्थना नहीं होती''—इस तथ्य को बहुत कम लोग जानते हैं। तभी प्रायः लोगों को शिकायत रहती है कि हमारी प्रार्थना की सुनवाई नहीं होती। तब लोगों का ईश्वर विश्वास डगमगाने लगता है और नास्तिकता पनपने लगती है। पर हम भूल जाते हैं कि हमने यथार्थ प्रार्थना की ही नहीं क्योंकि हर प्रार्थना, प्रार्थना नहीं होती। यथार्थ प्रार्थना तो वही है कि जिसमें प्रकर्षता है, उत्कण्ठा एवं व्यग्रता है। यदि हमारी प्रार्थना में प्रकर्षता व्यग्रता एवं उत्कण्ठा नहीं हो तो वह अर्थना तो हो सकती है, पर प्रार्थना नहीं। प्रार्थना शब्द में 'प्र' उपसर्ग इसी बात का द्योतक है। 'प्र' उपसर्ग पूर्वक अर्थ धातु से प्रार्थना शब्द की सिद्धि होती है, ऐसा व्याकरण मानते हैं। 'प्र' का अर्थ है—प्रकर्षण अर्थात् तेजी से, विशेष उत्कण्ठा से, तीव्रता से, और अर्थना का अर्थ है चाहना (न कि मांगना) चाहने और मांगने में जो अन्तर है वह भी जान लेना आवश्यक है। मांगने में मांगने वाले को स्वयं कुछ भी नहीं करना होता, केवल मांगना भर होता है, जबकि चाहने में केवल मांगना नहीं स्वयं भी पुरुषार्थ करना होता है। मांगने में इच्छा शक्ति जिसे अंग्रेजी भाषा मे (Will Power) कहते हैं का उपयोग हो नहीं पाता। याचक को केवल अपनी याचना अथवा मांग प्रस्तुत करने के अतिरिक्त और कुछ करना नहीं होता। परन्तु चाहने में जहां प्रभु से सहायता की इच्छा की जाती है, वहां स्वयं भी पूर्ण पुरुषार्थ करना पड़ता है। साथ ही याचना मन में हीन भाव उत्पन्न करता है जबकि चाहना आत्म-गौरव एवं आत्मविश्वास। तभी कविवर रहीम को कहना पड़ा कि—''रहिमन याचकता गहे, बडे छोट हवै जात।''

अर्थात् मांगने से बड़ा व्यक्ति भी छोटा हो जाता है। महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी आदि प्रार्थनापरायण महामानवों ने प्रार्थना को याचना के रूप में कभी नहीं लिया। यह है भी ठीक क्योंकि प्रार्थना का अर्थ भी प्रकृष्ट अर्थ' अर्थात् उत्कृष्ट प्रयोजन है और उत्कृष्ट प्रयोजन के लिए पुरुषार्थ सदैव अपेक्षित हुआ ही करता है। तभी महर्षि दयानन्द ने लिखा कि—'अपने पूर्ण पुरुषार्थ के उपरान्त उत्तम कर्मों की सिद्धि के लिए परमेश्वर व किसी सामर्थ्य वाले मनुष्य के सहाय लेने का प्रार्थना कहते हैं।' (आर्योद्देश्य रत्नमाला) और महात्मा गांधी का कहना है कि—'प्रार्थना करना याचना करना नहीं। वह तो आत्मा की पुकार है' पण्डित चमुपति जी ठीक ही लिखते हैं कि—'उपासकों की परिभाषा में प्रार्थना और प्रतिज्ञा पर्याय है। हाथ पसारे हैं तो हाथ हिलाने भी स्वयं होंगे।' (देखें–सध्या रहस्य, पृष्ठ २५) इसी प्रकार पण्डित लेखराम आर्य मुसाफिर अपनी सुप्रसिद्ध पुस्तक 'कुलियात आर्य मुसाफिर' में लिखते हैं कि—'सच्ची प्रार्थना को संकल्प कहते हैं और सकल शुभ गुणों को धारण करने की इच्छा को कहते हैं।' वस्तुत प्रार्थना अपने हृदय के उद्गारों को अपने प्रभु के सम्मुख रखने की एक पवित्र प्रणाली है। श्री नित्यानन्द पटेल के अनुसार–'व्याकुलता भरे अन्त करण से जो पवित्र पुकारे उठती हैं, उन्हें ही प्रार्थना कहते हैं।' (प्रार्थना दीप पृष्ठ १७)

प्रार्थना कर्म का प्रतीक है। जिसमें पुरुषार्थ नहीं वह प्रार्थना भी नहीं। अतः प्रार्थना सदैव पुरुषार्थ पूर्वक की जानी चाहिये। पुरुषार्थहीन प्रार्थना प्रायः निष्फल जाती है। महर्षि दयानन्द तो पुरुषार्थ को प्रार्थना से अधिक महत्त्व देते हैं। उनका कथन है कि–'जो मनुष्य जिस बात की प्रार्थना करता है, उसको वैसा ही वर्तमान भी करना चाहिए अर्थात् जैसे सर्वोत्तम बुद्धि की प्राप्ति के लिए परमेश्वर की प्रार्थना करे उसके लिये जितना अपने से प्रयत्न हो सके उतना किया करे। अर्थात् अपने पुरुषार्थ के उपरान्त करनी योग्य है।' क्योंकि 'जो कोई गुड़ मीठा है ऐसा कहता है, उसको गुड प्राप्त व उसका स्वाद प्राप्त कभी नहीं होता और जो यत्न करता है, उसको शीघ्र वा विलम्ब से गुड़ मिल ही जाता हैं। इतना ही नहीं महर्षि तो यहां तक लिखते हैं कि–जो परमेश्वर के भरोसे आलसी होकर बैठे रहते हैं, वे महामूर्ख हैं क्योंकि जो परमेश्वर की पुरुषार्थ करने की आज्ञा है, उसको जो कोई तोड़ेगा वह सुख कभी न पावेगा।' (सप्तम समुल्लास) स्पष्ट है कि प्रार्थना में बन्धे दो हाथों की अपेक्षा पुरुषार्थ में लगा एक हाथ भी श्रेयस्कर ही है। अतः प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह पुरुषार्थ पूर्ण की जाती है।

प्रार्थना के सम्बन्ध में एक अन्य आवश्यक बात भी समझ लेनी चाहिये। वह यह है कि प्रार्थना सदैव हृदय से होनी चाहिये। वस्तुतः हृदय की तड़पन ही सच्ची प्रार्थना है। यदि हृदय में तड़प नहीं तो फिर प्रार्थना भी प्रार्थना नहीं। ध्यान रहे कि प्रार्थना में हृदय शून्य शब्दों की अपेक्षा शब्द शून्य हृदय श्रेष्ठ है क्योंकि ईश्वर केवल वही सुनता है कि जो हृदय बोलता है। यदि ऐसा न होता तो गूंगे, तुतले, अबोध बालक एवं मूढ जन उसे अपनी बात कैसे सुना सकते थे। याद रखें यदि आपका हृदय मूक है तो आप प्रभु को अपनी बात सुना ही नहीं सकते। वाणी के मूक होने पर भी ईश्वर मन के भावों को जान लेता है, पर मन में भाव ही नहीं तो ईश्वर कैसे जानेगा ? अतः स्पष्ट है कि प्रार्थना का मुख्य केन्द्र वाणी नहीं, हृदय है। इस सम्बन्ध में डा० राधाकृष्ण ठीक ही लिखते हैं कि—

"The principal centre of spiritual life is the heart. By inward prayer, we enable the heart to anticipate in the union with God" (Recovery of faith -page 149)

अर्थात् आध्यात्मिक जीवन का मुख्य केन्द्र हृदय है। आन्तरिक अर्थात् मौन प्रार्थना से हम हृदय को ईश्वर के साथ मेल के योग्य बनाते हैं और वह स्वयं को भूलकर प्रभु के चरणों में तल्लीन हो जाता है। जिस प्रकार प्रेमातिरेक में प्रेमी मूक हो जाता है, वैसे ही ईश्वर के प्रेम में तन्मय व्यक्ति भी मूक हो जाता है। वहां होंठ नहीं हिलते, मुख नहीं बोलता वरन् हृदय मुखरित हो उठता है। तब विश्वात्मा से आत्मा का अनुपम वार्तालाप होता है। हृदय का यह काम होठों से कभी भी नहीं हो सकता क्योंकि—

'दिल की हर बात कहीं लफजों में होती है बयां,
हर अफसाना कहीं ममनूने बयां होता है।'

निष्कर्ष यह कि प्रार्थना हृदय से की जानी योग्य है, तभी वह फलवती होती है। तभी वह प्रार्थना है। प्रार्थना सम्बन्धी उपर्युक्त विवेचन से यह नहीं समझ लेना चाहिये कि हम बोलकर प्राथना कर ही नहीं सकते। आप चाहें तो बोलकर भी प्रार्थना कर सकते हैं। हमारा तो केवल इतना ही कहना है कि आप जैसे भी प्रार्थना करें, आपके हृदय का उसमें पूर्ण सहयोग होना चाहिये। प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब हृदय के भाव स्वतः ही लग जायें। जो शब्द हमारे हृदय को न छूयें वे किस काम के ? अतः प्रार्थना के लिए न सुन्दर शब्दों की आवश्यकता है, न अलंकारिक प्रयोगों की। अस्त व्यस्त भाव, टूटी-फूटी भाषा में जब जब हृदय से फूट पड़े, प्रार्थना तभी प्रार्थना है। काश ! हम कर पायें ऐसी प्रार्थना।

दिल्ली में कार्यकर्त्ताओं की बैठक

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज की द्वितीय शताब्दियों के आगमन पर स्वागत समारोह व वैदिक महायज्ञ का आयोजन आगामी १ जून से १० जून १९८४ तक उत्तरी दिल्ली स्थित कमला नेहरू पार्क पुरानी सब्जी मण्डी में किया जायेगा।

इस सदर्भ में आगामी १५ जनवरी रविवार अपरान्ह ३ बजे आर्य समाज मन्दिर कबीर बस्ती, पुरानी सब्जी मण्डी में आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की आवश्यक बैठक रखी गई, ब्र० राजसिंह आर्य बैठक की अध्यक्षता करेंगे।

चन्द्रमोहन आर्य कार्यालय मन्त्री

हैदराबाद के सत्याग्रहियों की उपेक्षा क्यों ?

—ब्रह्मदत्त स्नातक—

एक सरकारी सूचना के अनुसार केन्द्रीय गृह मंत्रालय ने भूतपूर्व हैदराबाद राज्य के उन स्वतंत्रता सेनानियों की पेंशनों के आवेदनों की जांच के लिए समिति का गठन किया है जिन्होंने राज्य के भारतीय संघ में एकीकरण के हेतु चलाए गए आन्दालनों में भाग लिया था। भूतपूर्व हैदराबाद रियासत वर्तमान में आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक राज्यों में विभाजित होकर उनका अंग हो गई है। इस दृष्टि से इन तीनो राज्यों के एक-एक सदस्यों को मिलाकर इन मामलों की जांच के लिए समिति बनी है और गृह-मंत्रालय के स्वतंत्रता सेनानी प्रभाग के प्रभारी इसके संचालक नियुक्त किए गए हैं। हाल ही में भारत सरकार ने श्वेतपत्र जारी करके बताया है कि अगस्त ८३ तक पेंशन प्राप्त स्वाधीनता सैनिकों की संख्या १२७७४१ थी, और उस पर वार्षिक व्यय बढ़कर ३६ करोड रुपए तक पहुँच गया, पर उसमें आशा प्रकट की गई है कि अगले वर्षों में इन बूढ़ों के मरने पर व्यय तेजी से नीचे आएगा।

स्वामी दयानन्द निर्वाण शताब्दी पर अजमेर में हुए सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन में केन्द्रीय उदयोगमंत्री श्री नारायण दत्त तिवारी के भाषण के बाद वहां इस विषय में भी चर्चा हुई थी और उनकी सहमति से उक्त अवसर पर यह प्रस्ताव पारित किया गया कि हैदराबाद में १२३९ में आर्य समाज दवारा चलाए गए आन्दोलन को (सामाजिक क्रान्ति एवं धार्मिक अधिकारों, जो नागरिक स्वतंत्रता एवं राजनैतिक अधिकारों का प्रमुख अंग है, के लिए चलाया गया था) भी अन्य रियासतों की भांति भारत में विलय एवं स्वाधीनता संग्राम का अंग माना जाए। अब समय आ गया है कि हैदराबाद में समाज दवारा चलाए उक्त आन्दोलन में, जिसमें १० हजार पुरुष समस्त भारत से जेल में गए और १९ व्यक्ति शहीद हुए, और सत्याग्रह की आधारभूत १४ मांगें सर्वथा नागरिक एवं राजनैतिक स्वतंत्रता का अंग थीं, उनको भी इसमें शामिल किया जाए। देश की ६०० रियासतों का एकीकरण करने वाले लौह पुरुष एवं भूतपूर्व गृहमंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने विलय के अनन्तर प्रथम बार हैदराबाद पहुंचने पर सच ही कहा था —'यदि आर्य समाज का १९३९ में हैदराबाद में आन्दोलन न होता तो हैदराबाद का विलय इतनी आसानी से न होता। इस घटना का विस्तृत विवरण, हैदराबाद के शक्तिशाली नेता पं० नरेन्द्र जी की पुस्तक में दिया गया है।

रियासतों में जागृति

स्वतन्त्रता से पूर्व राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस या अन्य राजनैतिक दलों के समूचे भारत के एक तिहाई भाग देसी रियासतों में राजाओं और नवाबों के शासन छत्र के अन्तर्गत ही नागरिक, सामाजिक एवं राजनैतिक अधिकारों तथा संवैधानिक सुधारों को पाने के लिए अपना लक्ष्य निर्धारित कर रखा था। रियासतों में तब कांग्रेस या अन्य भारतीय दलों की शाखाएं व कार्यकर्ता कार्यरत नहीं थे और स्टेट कांग्रेस, प्रजा मण्डल जैसे सगठनों द्वारा यह काम किया जाता था। कांग्रेस, के वार्षिक अधिवेशन के साथ ही अखिल भारतीय रियासती प्रजा मंडल का छोटा-सा अधिवेशन होता था। पं० जवाहरलाल नेहरू इसके शुरु के दिनों में अध्यक्ष थे। राजस्थान के स्व० जयनारायण व्यास, काश्मीर के शेख अब्दुला, हैदराबाद के स्वामी रामानन्द तीर्थ आदि नेता रियासती प्रश्नों पर देश में एवं अपनी रियासतों में बराबर आन्दोलन व सत्याग्रह तब चलाते थे।

शेख अब्दुला उन दिनों मुस्लिम कांफ्रेंस के नाम से अपना धार्मिक एवं राजनैतिक आन्दोलन काश्मीर रियासत में चलाते थे और बाद में नेहरू जी की सलाह पर अपने सगठन का नाम मुस्लिम कांफ्रेंस से बदलकर नेशनल कांफ्रेंस कर दिया, यद्यपि उसका स्वरूप आज भी पूर्ववत ही बना हुआ है। नेहरू जी स्वयं कश्मीरी होने के कारण अपना पूरा सहयोग शेख अब्दुला को देते रहे। यहां तक कि महाराजा के शासन के विरुद्ध वहां जाकर अपनी गिरफ्तारी भी दी थी। डोगरा हिन्दू महाराजा के खिलाफ अपनी गैरसाम्प्रदायिकता दिखाना ही उसका लक्ष्य था।

भारत की रियासतों में जनसंख्या की दृष्टि से निजाम की हैदराबाद रियासत सबसे बड़ी थी। निजाम अंग्रेजों का सबसे बड़ा वफादार, भारतीय स्वाधीनता का शत्रु, विश्व के धनिकों में अग्रगण्य तथा इस्लाम एवं खिलाफत का अलम्बरदार था। भारत के साम्प्रदायिक मुस्लिमों का वह दृढ़ दुर्ग था। ९० प्र. श. प्रजा हिन्दू थी जो गरीबी की चरम सीमा से भी नीचे और पद-दलित थी। वहां की अधिकांश हिन्दू प्रजा और यहां तक कि कानों में सोने के कुण्डल पहने और माथे पर चन्दन तिलक लगाने वाले 'ब्रह्मन' (ब्राह्मण) कमीज-धोती के ऊपर पुछल्लेदार तुर्की व फंज टोपी आमतौर पर पहनते थे। अंग्रेज सरकार ने बाद में बरार (वर्तमान महाराष्ट्र का विदर्भ) भी निजाम नाम कर दिया था।

निजाम और उसके साम्प्रदायिकतावादी साथियों ने हैदराबाद में नागरिक या राजनैतिक अधिकारों अथवा संवैधानिक सुधारों के रास्ते में सदा रोड़ा अटकाया था। शासन के विरोध में मामला उठने पर उसके विरुद्ध अल्पमत की सहायता से दमन, हिंसा और उपद्रव करके वहां शांत कर दिया जाता था।

शासन सुधार के लिए संघर्ष

१९३८-३९ में ऐसे कठिन समय में बहुसंख्यक हिन्दुओं को राजनैतिक अधिकार अथवा वैधानिक सुधार की बात तो दूर, सामान्य नागरिक अधिकार भी प्राप्त नहीं थे। रजाकारों एवं इत्तिहादुल मुसलमीन जैसी संस्थाओं के माध्यम से प्रजा के दमन, हत्या और लूटपाट का दौरा चल रहा था। तब वहां के आर्यसमाज संगठन ने नागरिक सामान्य अधिकारों एवं शासन में सुधार के लिए शांत अहिंसक आन्दोलन चलाया। उक्त आन्दोलन में रियासत तथा समस्त भारत से ९ महीने में लगभग १० हजार व्यक्ति जेल में पहुंचे। १५ व्यक्तियों की मृत्यु हो गई। कुर्की जुर्माना आदि यातनाएं राज्य में एवं जेल के भीतर दी गईं। हैदराबाद के बैरिस्टर पं० विनायक राव, पं० बंसीलाल, पं० नरेन्द्रजी आदि इसके नेता थे।

उसी अवसर पर स्टेट कांग्रेस की ओर से स्वामी रामानन्द तीर्थ के नेतृत्व में लगभग ४०० व्यक्ति तथा हिन्दू महासभा एवं नागरिक स्वाधीनता समिति के संरक्षण में भी काफी लोगों ने सत्याग्रह किया। स्टेट कांग्रेस ने बाद में अपना आन्दोलन वापस ले लिया और जेल से छूट गए। वे मुसलमान शासक के विरुद्ध आन्दोलन के आक्षेप से बचते थे। तत्कालीन सी. पी. असेंबली के स्पीकर घनश्याम सिंह गुप्त और दिल्ली के लाला देशबंधु गुप्त जैसे कांग्रेसियों ने जो आर्य समाजी भी थे, इस हैदराबाद सत्याग्रह को महात्मा गांधी के परामर्श से शान्तिपूर्ण एवं असाम्प्रदायिक स्तर पर चलाया। निजाम द्वारा कतिपय सुधारों की घोषणा के बाद समझौता वार्ता होने के अनंतर यह सत्याग्रह ९ मास बाद १४ अगस्त १९३९ को रोक दिया गया और समस्त सत्याग्रही निजाम के जन्म दिन पर रिहा कर दिए गए। हैदराबाद केसरी पं० नरेन्द्रजी बाद में छूटे थे।

आजादी की पेशकश

कांग्रेस इतिहास के लेखक पट्टाभि सीतारामैय्या ने इस प्रसंग में लिखा कि १९३८-३९ के हरिपुरा और त्रिपुरी कांग्रेस अधिवेशनों में रियासतों के प्रश्न पर कार्य समिति में बहुत चर्चा हुई।

यह एक तथ्य है कि हैदराबाद के उस आर्य सत्याग्रह का समर्थन सभी राष्ट्रवादी तत्वों ने किया था। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी एवं राष्ट्रनायक जवाहरलाल नेहरू उसकी सफलता पर मुग्ध थे। सरदार पटेल ने इसके महत्व को भलीभांति समझा था और पुलिस कार्रवाई के बाद पहली बार वहां पहुंचने पर खुले आम यह घोषणा की थी कि निजामशाही को घुटने टिकवाने में भारत सरकार को जो पुलिस कार्रवाई करनी पड़ी, वह केवल आर्यसमाज के सत्याग्रह की पार्श्वभूमि के कारण ही तब सफल हुई।

समस्त देश में हैदराबाद ऐसी रियासत थी जिसने १९४७ में भारत में विलय को अस्वीकार करके स्वाधीनता की घोषणा कर दी थी। इसका प्रधानमंत्री मीर लायक अली और अंग्रेज कानूनी सलाहकार सबसे बड़े बाधक थे। ऐसी विकट परिस्थिति में भारत के एकीकरण के महान शिल्पी स्व. सरदार पटेल ने पुलिस कार्रवाई के द्वारा निजाम रियासत को भारत का अंग बनाया था। यह एक ऐतिहासिक घटना

(शेष पृष्ठ ५ पर)

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह को बधाई पत्र

आदरणीय प्रो० शेरसिंह जी, सादर नमस्ते।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के ११-१२-८३ को सर्वसम्मति से पुन: प्रधान चुने जाने पर लाख-लाख बधाई एवं शुभ कामनाएं भेजते हैं। आपका पिछला कार्य देखते हुए इस बार भी प्रधान चुना जाना जरूरी था, क्योंकि आपके मन में आर्यसमाज का कार्य करने की पूरी भावना है आपने समाजों को ऊंचा उठाने के लिए दिन और रात एक कर दी है और हरयाणा की आर्यसमाज दिन दुगनी और रात चौगनी तरक्की कर रही हैं। आपने पंजाब में सुलग रही आग से हरयाणा को बचाने के लिए रक्षा वाहिनी का संगठन कर दिया है। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी की सफलता में आपका योगदान भी सराहनीय है। इन सबको भुलाया नहीं जा सकता। जितना समय आपने समाजों के बारे में लगाया है उस कार्य करने से आपका नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा जा चुका है और हमेशा के लिए आपको याद हरयाणा को रहेगी और बाढ के बारे में भी आपने बहुत कार्य किया और आशा करते हैं कि आप भविष्य में आने वाले कार्यों को ज्यादा से ज्यादा उन्नति पर ले जाएंगे। भगवान् से प्रार्थना करते हैं कि परोपकारी कार्यों के लिए शक्ति एवं स्वास्थ्य दें।

मामचन्द मन्त्री आर्यसमाज चन्द्रारी (अम्बाला)

स्वामी भीष्म जी दिवंगत

१० दिसम्बर (शास्त्री) सौ वर्ष से ऊपर की आयु वाले वयोवृद्ध संन्यासी स्वामी भीष्म जी महाराज ८ जनवरी को प्रातः ३ बजे करनाल जिला के घरौण्डा कस्बा में जहां स्वामी जी विगत वर्षों से रह रहे थे, बीमारी के बाद निधन हो गया। आर्यसमाज में वर्तमान में सर्वाधिक आयु प्राप्त थे। इसी दिन दोपहर बाद ४ बजे आपका अन्तिम संस्कार घरौण्डा में पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया इससे पूर्व निकली शव यात्रा में हरयाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष चौ० वेदपाल तथा सांसद श्री चिरंजीलाल जी शर्मा सहित हजारों की संख्या में दूर निकट के आर्यजनों ने सम्मिलित होकर श्रद्धास्पद स्वामी को श्रद्धांजलि दी। एक सूचना के अनुसार स्वामी रामेश्वरानन्द भूतपूर्व सांसद ने आपकी चिता को अग्नि दी।

स्वामी भीष्म ने एक शताब्दी के आधे से भी अधिक भाग तक भजनोपदेशक के रूप में वैदिक धर्म का प्रचार किया। आप एक क्रान्तिकारी उपदेशक थे। स्वतन्त्रता संग्राम में आपका बढ-चढ कर योगदान रहा। स्वतन्त्रता प्राप्ति के उपरान्त भी आर्यसमाज द्वारा चलाये गये हिन्दी आन्दोलन तथा गोरक्षा आन्दोलन में आपने अग्रणी होकर कार्य किया। आपने आर्यजगत् को अच्छे-अच्छे भजनोपदेशक दिये जो आज की विषम स्थितियों में प्रचार कार्य में सर्वात्मना जुटे हैं। आज जैसे ही समाचार पत्र द्वारा स्वामी जी के निधन का समाचार ज्ञात हुआ, उन्हें श्रद्धांजलि भेंट करने हेतु शोक सभा हुई जिसमें कार्यालय के कर्मचारियों तथा उस समय उपस्थित अधिकारियों ने उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि भेंट की।

आर्यसमाज पाड़ा मोहल्ला का वार्षिक चुनाव

प्रधान—श्री गणेशीलाल शर्मा, उपप्रधान—श्री बाबूराम सांवरिया मन्त्री—श्री रोहतास किशोर सिंहल, उपमन्त्री—श्री रमेशचन्द्र सिन्धु, कोषाध्यक्ष—श्रीमती सरोज देवी, पुस्तकाध्यक्ष—मधुरानी, निरीक्षक—रामपाल

रोहतासकिशोर

वेदों का प्रचार करो

आर्यो है कर्तव्य तुम्हारा।
वेदों का प्रचार करो॥
वेद ज्योति जलाओ जग में।
अविद्या का अन्धकार हरो॥
वेद प्रभु की अमृत वाणी।
ज्ञान का भण्डार है जो॥
पढो पढाओ अमल करो सब।
जग में इसका विस्तार करो॥
इकवेदी द्विवेदी चतुर्वेदी हों।
ऐसे जन तैयार करो॥
द्वेष भाव सब दूर भगाकर।
प्रेम परस्पर प्यार करो॥
अग्रदूत बनकर क्रान्ति के।
फिर से देश सुधार करो॥
अनाचार और पाप मिटे सब।
वेदों को पढ उपचार करो॥
पर भाषा ना भेष बनाओ।
हिन्दी का सत्कार करो॥
पढ़ो लिखो हिन्दी संस्कृति की।
विनती यह स्वीकार करो॥
आर्यसमाज हो गांव नगर में।
प्रयत्न बारम्बार करो॥
ऋषि दयानन्द के सपने को।
'शादी' तुम साकार करो॥

श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी
१०२८२ मानि कपुरा नई दिल्ली

(पृष्ठ १ का शेष)

रह जाएंगे। धनात्मक तथा ऋणात्मक परमाणु के रूप में प्रकृति विभक्त होगी। जो परमाणु जड़ ही रहेंगे, उन्हें रयि और जो प्राणमय होते हैं, वे प्राण कहे जाते हैं। आज भी पाश्चात्य विज्ञान में इन्हें ELECTRON (प्राण) और NEUTRON या PROTON (रयि) कह सकते हैं। इस सूक्त में प्राण और रयि को अहोरात्र नाम दिया है।

(५) संवत्सर—पंचतन्मात्राओं की रचना से पूर्व, प्रभु ने, प्राणवान् परमाणु (इसे आगे प्राण कहेंगे) को गति को नियन्त्रित करने के उद्देश्य से जो गतिनियम बनाया, उसे इस सूक्त में संवत्सर कहा है।

संवत्सर का सामान्य भाषा में अर्थ वर्ष है। सूर्य के चारों ओर घूमती हुई पृथिवी जब पुन: उसी स्थान पर आ जाती है; जहां से उसकी गति आरम्भ हुई थी, उसे हम संवत्सर या वर्ष कहते हैं। (प्रारम्भिक स्थान, वर्ष में कोई भी दिन, मास, ऋतु मान सकते हैं, यहां हमने गति अथवा दूरी की गणना वर्ष अर्थात् समय से की है। आज का वैज्ञानिक भी नक्षत्रों की दूरी वर्षों (समय) में करता है। इसके साथ ही आज का वैज्ञानिक स्वीकार करता है कि ताप, विद्युत्, चुम्बक, गति आदि शक्तियां (POWERS) एक दूसरे में परिवर्तित होती हैं। पानी की गति से टरबाइन में गति देकर विद्युत उत्पन्न करते हैं। और बिजली द्वारा मोटर को गति देकर मशीनें चलाते हैं। इसी प्रकार संवत्सर शब्द यहां गति सूचक है। काल सूचक नहीं। समस्त शक्तियां "प्राण" शब्द से ग्रहण होती हैं। और शक्तियाँ "अभीद्ध तप" का गुण है।

अब संवत्सर के पदों पर ध्यान दीजिए। सं+वत्+सर। सृ, सरणे से सर शब्द सरकने अर्थ में है। "सरतीतिवत्" या "वर्तुलं सरति"। अर्थात् सरण करने के समान है। जैसे लट्टू का एक ही स्थान पर स्थिर है और गतिमान् है। अथवा वृत्त की परिधि में (कक्षा में) सरण करना। यहां पृथिवी की गति पर ध्यान दीजिए। पृथिवी अपने अक्ष पर लट्टू की तरह घूम रही है, जिससे दिन और रात होते हैं। फिर इसी प्रकार गति करती हुई, सूर्य के चारों ओर अपनी कक्षा (परिधि) में भी घूम रही है, जिससे ऋतुएं बनती हैं। इस गति को वेद में (यजुर्वेद अ. २७ म. ४५) परिवत्सर (परित: वर्तुलं सरति इति) कहा है। वहां संवत्सर, परिवत्सर, इदावत्सर, इद्वत्सर, वत्सर" शब्दों का प्रयोग हुआ है। इसी प्रकार सूर्य प्रकरण में भागवतपुराण स्कन्ध ५ अध्याय २३, श्लोक ७ में संवत्सर, परिवत्सर, इडावत्सर, अनुवत्सर वत्सर शब्द आए हैं। अनेक परमाणुओं का कई कक्षों में चारों ओर गतिकरना और आपस में न टकराना ही संवत्सर गति है।

पृथिवी के साथ साथ सूर्य के चारों ओर चन्द्र, मंगल, बुध वृहस्पति शुक्र आदि ग्रह भी लट्टू की तरह घूमते हुए अपनी अपनी कक्षा में घूम रहे हैं। आपस में टकराते नहीं। इस प्रकार की गति का नियम सवत्सर सौर्य-मण्डल में दिखाई देता है। समयबद्ध, गतिसीमाबद्ध गति ही संवत्सर हैं।

प्राण ने रयि के चारों ओर इसी संवत्सर गति से परिभ्रमण करना है। अत: पदार्थ रचना से पूर्व प्राण-रयि (अहोरात्र) को नियमित करने वाली संवत्सर गति का प्रभु ने पहले विचार किया।

यही पर इस सूक्त के देवता भाववृत्त पर विचार कर लेना उचित है। इसका अध्यात्मिक अर्थ न करते हुए, अधिदैविक अर्थ है—वृत्त की भावना अर्थात् विद्यमानता। वृत्त को अंग्रेजी में circle कहते हैं वृत्त-भावना को कहेंगे CIRCULATION यह सरकुलेशन अर्थात् वृत्त की परिधि (कक्ष) पर भ्रमण ही "संवत्सर" में प्रकट हुआ है।

रयि के चारों ओर प्राण के परिभ्रमण से सृष्टि रचना है, ऐसा आज का विज्ञान इस रूप में मानता है कि Electron परमाणु Neotron और Proton के चारों ओर गति करते है। आज विज्ञान अपूर्ण है। उसमें नित नये आविष्कारों से सिद्धान्तों में परिवर्तन हो रहा है। वेद का सिद्धान्त नित्य और शाश्वत सत्य है। प्राण और रयि के सिद्धान्त को और मूल प्रकृति एक है—के सिद्धान्त को आज का विज्ञान असत्य सिद्ध नहीं कर सका।

(६) विश्वस्य मिषतो वशी—"प्राण" और "रयि" परमाणुओं की संख्या, उनके वृत्तों की संख्या, उनकी गति SPEED के प्रत्येक क्षण का नियमन, प्रभु के वश में है।

(७) धाता यथापूर्वमकल्पयत्—वह परमात्मा ही इस सृष्टि को बना रहा है और धारण कर रहा है। उसने इस प्रकार की सृष्टि पहले भी कई कल्पों में बनाई है।

(८) सूर्य, चन्द्र, दिव, पृथिवी, अन्तरिक्ष, स्व: प्रभु ने ये छ: प्रकार के पदार्थ, ६ गुणों (रूप, रस, गन्ध, स्पर्श, शब्द, मनन) वाले बनाए। और प्राणी मनुष्य, पशु, पक्षी आदि के शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियों (चक्षु, जिह्वा, घ्राण, त्वच्, कान) और मन प्रदान किये। मन्त्र के ये ६ शब्द उत्पन्न पदार्थों के भेद बता रहे हैं।

ऋषि—अघमर्षण माधुच्छन्दस। सृष्टि का कर्ता; धर्ता और वशीकर्ता वह प्रभु है ऐसा जानकर मनुष्य पाप कर्म से निवृत्त होता है। अघ का मर्षण करता है, चूर चूर करता है, मसल देता है फिर प्राप्त करता है, जीवन माधुर्य का संगीत। तब बनता है अघमर्षण माधुच्छन्दस।

मधु शब्द बृहदारण्यक उपनिषद् की मधु विद्या की ओर भी संकेत करता है।

देवता—भाववृत्त है। आधिदैविक अर्थ "वृत्त की विद्यमानता" होने से परमाणुओं की वृत्ताकार भ्रमण-गति के नियम की ओर संकेत करता है।

साथ ही सत्कर्म में 'प्र+वृत्त" और दुष्कर्म से "नि+वृत्त" होने की ओर संकेत कर रहा है।

छन्द—प्रथम मन्त्र में ईश्वर की महिमा का स्तोत्र करते समय विराडनुष्टुप है। दूसरे मन्त्र में प्रकृति के परिवर्तन के वर्णन के समय अनुष्टुप है और तीसरे मन्त्र में सृष्टि वर्णन होने से निचृदनुष्टुप है।

इस प्रकार मन्त्रार्थ निम्न है :—

ज्ञान और प्रकाशस्वरूप प्रभु ने सृष्टि रचनाका संकल्प किया। पहले ऋत और सत्य नियमों का विचार किया। फिर अव्यक्त प्रकृति को व्यक्त (महान् तथा अहंकार) रूप दिया। फिर प्राण (तप) द्वारा परमाणुओं को प्राणवान् बना गति प्रदान की। इससे पूर्व परमाणुओं की गति, संख्या, कक्ष आदि को नियमित करने के निमित "संवत्सर" के नियम का निश्चय किया। उन परमाणुओं का, उनकी गति का और प्रत्येक क्षण में होने वाले परिवर्तन का नियन्त्रण प्रभु ही करते हैं, उनके ही वश में है। परमाणु के गतिशील होने पर प्रभु ने छ: प्रकार के पदार्थ ६ प्रकार के मूलभूत गुणों वाले, तथा मनुष्य शरीर में उनको ग्रहण ५, ज्ञानेन्द्रियां और मन की रचना की। ऐसी रचना प्रभु, पहले भी कई करने वाली कल्पों में करते रहे हैं।

(पृष्ठ ३ का शेष)

थी। हाल में भारत सरकार ने उक्त विलय आन्दोलन में भाग लेने वालों को भी स्वाधीनता सम्मान से अलंकृत करने का स्वागत योग्य निर्णय लिया है। इस सम्बन्ध में विलय से ९० वर्ष पूर्व जो संघर्ष-पत्या-ग्रहां चले, वे उस लक्ष्य की नींव थे। स्मरण रहे कि निजाम रियासत के निवासियों को जो उक्त १९३९ के आर्यसमाज सत्याग्रह में भाग ले चुके हैं, उनको केन्द्र के अतिरिक्त वर्तमान आन्ध्र प्रदेश, महाराष्ट्र तथा कर्नाटक की सरकारों ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान दे रखा है। भूतपूर्व निजाम रियासत अब इन तीन राज्यों में बंट गई है।

आज इस बात की आवश्यकता है कि भारत के अन्य भागों से जिनमें उत्तर प्रदेश, पंजाब, वर्तमान हरियाणा, बिहार राजस्थान, सिंध प्रान्त आदि से लोग गए थे और अभी जीवित हैं, उनको भी इस श्रेणी में रखा जाए।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर अजमेर में गत दिवाली पर मनायी गई। आर्य समाज का इतिहास देश सेवा और स्वाधीनता के प्रयत्नों से भरा पड़ा है। यह एक उचित एव क्रान्तिकारी कदम होगा कि शताब्दी वर्ष के उस अवसर पर उमेड के के जिला निजामा बाद (आन्ध्र प्रदेश) के सरकारी खजाने से २२ लाख रुपया वहां के आर्यवीरों ने लुटकर पाई-पाई कांग्रेस को दिया था। इसी प्रकार के एक वीर बाबूराव पवार थे, जिन्होंने निजाम पर बम फेका था, यूनिवर्सिटी के एक छात्र १४ कोड़े खाकर भी हर बार वन्दे मातरम बोलते गए। आज उनका नाम ही वन्दे मातरम रामचन्द्र राव पड़ गया और स्व० नरेन्द्र की भांति प्रमुख कार्यकर्त्ता है। ऐतिहासिक अवसर पर ४५ वर्ष से विस्मृत इन बलिदानी सत्याग्रहियों का सार्वजनिक सम्मान करके स्वामी दयानन्द की सच्ची श्रद्धांजलि भेंट की जाए। भारत सरकार द्वारा हाल में गठित सरकारी समिति अन्य संगठनों की भांति इस सम्बन्ध में आर्य समाज के विचाराधीन मामलों को निपटाए। हैदराबाद के इन लोगों को भी स्वाधीनता सेनानी की श्रेणी में रखें।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी पर प्रकाशित—

व्यक्ति से व्यक्तित्व

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर

जिस कार्य को मैं नहीं करना चाहता था आज वह कार्य करने पर मैं विवश हुआ हूँ। कई बार मैंने अपने द्वारा लिखित पुस्तकें आर्य पत्रों के सम्पादकों को समालोचना के लिए दी। कुछ पत्रों के सम्पादक मुझे स्नेहपूर्ण ढंग से कह दिया करते थे कि आप जो चाहते हैं स्वयं ही लिख दें। हम छाप देंगे। लौह पुरुष स्वामी स्वतन्त्रानन्द सरस्वती जैसे अद्भुत ग्रन्थ की समालोचना भी कुछ सम्पादक न कर सके। यह बात मुझे अखरती रही। आर्यसमाज के पुराने पत्रों की फाइलें देखिए आर्य पत्रकार बड़े ध्यान से आर्य लेखकों के साहित्य को पढ़कर समालोचना किया करते थे। पूज्य स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, प० धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, पं० गंगाप्रसाद उपाध्याय, आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति जैसी व्यस्त विभूतियों को जब कभी समालोचना के लिए किसी ने पुस्तक दी, आपने समय निकालकर पुस्तक अवश्य पढ़ी और उस पर लिखा।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी अजमेर पर मेरी पुस्तक 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' का विमोचन वीतराग श्री स्वामी सर्वानन्द जी ने किया। यह पुस्तक उन्हीं को मैंने समर्पित की है। ऋषि उद्यान अजमेर में ही कुछ वर्ष पूर्व उसकी कुछ पंक्तियां लिखकर इस पुस्तक को आरम्भ किया था और वहीं इसका विमोचन किया गया। शताब्दी पर इसे छपा हुआ देखना चाहता था इस कारण इसकी कुछ सामग्री छपने से रह भी गई।

मैंने कुछ पत्रों में समालोचना के लिए इसकी दो-दो प्रतियां दी परन्तु खेद है कि दो मास होने को हैं इस पुस्तक की समालोचना अभी तो देखने को नहीं मिली। न ही किसी ने इसकी किसी लेख में चर्चा की है। मान्य डा० भारतीय जी का सन्देश मिला कि वह परोपकारी में इसकी समालोचना भेज रहे हैं। अब मन में आया कि मैंने इसके छपने से पूर्व भी सर्वहितकारी में कुछ लिखा था। अब भी जी भरकर इस पर इसी में स्वयं ही कुछ लिख दूं।

जब मेरे द्वारा लिखित ग्रन्थ भी सब पुस्तक पुस्तिकाओं की समालोचना पत्रों में नहीं छपी तो इस नई पुस्तक पर यदि कुछ नहीं लिखा गया तो इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता। फिर मैं इस पर स्वयं ही कुछ लिखने के लिए इतना उत्सुक क्यों हूं? इसका मेरे पास एक ही उत्तर है

यह मेरी भावना का प्रश्न है

यह ग्रन्थ पूज्यपाद प० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय का विस्तृत जीवन चरित्र है। मैं उपाध्याय जी को अपना साहित्य पिता मानता हूं। मेरा ऐसा निश्चित मत है कि जब से सृष्टि बनी है किसी भी विद्वान् ने वैदिक धर्म व वैदिक दर्शन पर इतना नहीं लिखा जितना कि पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने। इसलिए ऐसे महान् मनीषी का, ऐसे दार्शनिक का, ऐसे ऋषि भक्त का, ऐसे आर्य नेता का, ऐसे महामानव का, ऐसे सच्चे आर्य का जीवन चरित्र सब मानवों के लिए, सब आर्यों के लिए और सब आस्तिकों के लिए अत्यन्त प्रेरणाप्रद है। सारा आर्य जगत् उनका ऋणी है और रहेगा। उनका खोजपूर्ण जीवन चरित्र लिखकर मैंने आर्य समाज को कृतघ्नता के पाप से बचाया है।

जिस विभूति ने प्रतिवर्ष कम से कम ५०० पृष्ठ आर्य धर्म पर लिखे और लगातार ६८ वर्ष तक लेखनी चलाता रहा, उस पूज्य पुरुष का कोई अच्छा जीवन चरित्र ही न मिले—यह बड़ी लज्जा की बात है। मुझे पता है कि सार्वदेशिक सभा जिसके पूज्य उपाध्याय जी वर्षों अधिकारी रहे—मेरे द्वारा लिखित इस जीवन चरित्र के प्रसार में कोई सहयोग न देगी। उ० प्र० सभा के बारे में भी कुछ कहना कठिन है। इसके उपाध्याय जी कई वर्ष प्रधान रहे फिर भी मैंने एक अभाव की पूर्ति कर दी है। इस ग्रन्थ के लेखन का एक इतिहास है। यह इतिहास भी मेरी भावना का प्रश्न है।

अब तक मैंने छोटी बड़ी कोई ४० पुस्तकें लिखी होंगी, जो छप चुकी हैं। 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' पुस्तक एक ऐसी पुस्तक है जिसके लिखने का संकल्प मैंने उस समय किया था जब मैंने अभी कोई ट्रैक्ट भी नहीं लिखा था। लेख तो तब भी लिखा करता था। मेरी चाह पूरी हो गई है, इसका मुझे बड़ा सन्तोष है। पूज्य उपाध्याय जी के जीवनकाल में ही मैंने उनका जीवन चरित्र लिखने का संकल्प किया था। प्यारे प्रभु को किन शब्दों में धन्यवाद दूं कि पूज्य महात्माओं, पूज्य विद्वानों के शुभ आशीर्वाद से मेरा स्वप्न आज साकार हो चुका है।

इस पुस्तक के लेखन में मुझे जिन महानुभावों से सहयोग मिला मैं उनका विशेष रूप से आभारी हूं विशेषकर श्री पं० शान्तिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी, प्रो० रामविचार जी, प्रो० श्रीप्रकाश जी तथा पुस्तक के प्रकाशक श्रीमान् वीरेन्द्रनाथ जी गुप्त मुरादाबाद। पं० शान्तिप्रकाश जी ने ही इसकी भूमिका लिखी है। श्री वीरेन्द्रनाथ जी ने धर्म भाव से इसका प्रकाशन किया है। वह पुस्तक प्रकाशक होते हुए भी धर्म प्रचार के लिए आर्य साहित्य छपवाते रहते हैं। ग्रन्थ के प्रूफ देखने में तो प्रेस में प्रमाद किया गया है तथापि मैंने चरित्र नायक के जीवन के प्रत्येक पहलु में खोजपूर्ण प्रकाश डालने में अपनी ओर से कोई कसर नहीं छोड़ी यह पुस्तक केवल उपाध्याय जी के जीवन का अध्ययन मात्र नहीं। आर्य समाज के इतिहास पर एक नया प्रकाश डालने वाली पुस्तक है। आर्य समाज के इतिहास व भारतीय नवजागरण का कोई भी शोधकर्त्ता इस पुस्तक की उपेक्षा नहीं कर सकेगा। ऐसा मेरा विश्वास है।

मैंने इस ग्रन्थ को घर में बैठकर दस बीस पुस्तकों व पत्रिकाओं को देखकर अथवा पांच दस व्यक्तियों से कुछ सामग्री किंवा संस्मरण मंगवा कर ही नहीं लिख डाला। इस पुस्तक को लिखने के लिए मैं उपाध्याय जी के जीवनकाल में ही सामग्री एकत्रित करने में जुट गया। देश के विभिन्न भागों में घूम-घूम कर उपाध्याय जी के बारे खोज करता रहा। वैसे तो उपाध्याय जी की आत्मकथा 'जीवन चक्र' को देखकर मैं आसानी से सौ दो सौ पृष्ठ लिख सकता था परन्तु जीवन चक्र में भी जहां पूज्य उपाध्याय जी कहीं किसी घटना का वर्णन करने में (स्मृति के कारण) चूक कर गये, मैंने सप्रमाण उस घटना का यथार्थ वर्णन कर दिया है।

उपाध्याय जी के आरम्भिक जीवन के लेखों व लुप्त गुप्त साहित्य की खोज कर करके फिर इस पुस्तक को लिखा है। मेरी खोज कैसी है? इसका एक उदाहरण देता हूं। उपाध्याय जी की जब शिक्षा आरम्भ हुई तो उन्हें 'खालिक बारी' नाम की एक पुस्तक पढ़ाई गई। यह उन्होंने स्वयं लिखा है। 'खालिक बारी' में क्या था? यह पुस्तक कैसी थी? मैंने इसके बारे में भी पर्याप्त खोज की। कहीं से कुछ भी पता न मिला। 'खालिक बारी' कोई आर्ष ग्रंथ तो है नहीं जो हमारे विद्वान् कुछ बता देते। मैंने देशाटन करते हुए यह पुस्तक खोज निकाली। अब यह मेरे पुस्तकालय में है।

महर्षि दयानन्द जी के पश्चात् किसी भी आर्य नेता के जीवन चरित्र में चरित्र नायक के पत्रों का इतना प्रयोग नहीं किया गया जितना कि इस पुस्तक में। डा० राधाकृष्ण आदि दार्शनिकों के दर्शन पर उन्हीं के शब्दों में पुस्तकें निकल चुकी हैं। मैंने इस पुस्तक में उपाध्याय जी के हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी के लेखों व पुस्तकों से दार्शनिक विचारों का भी संग्रह कर दिया है। उपाध्याय जी के गृहस्थ, हास्य विनोद, पत्र लेखन कला, शैली, साहित्य में सन्तति का योगदान उनके विद्यार्थी जीवन नेता के रूप में उनकी सेवायें व उनके तप, त्याग, सेवा, संयम, विनय आदि सब पहलुओं पर कुछ न कुछ लिखा है। आशा करता हूं कि शताब्दी पर प्रकाशित मेरी इस भेंट का आर्यजन पूरा पूरा लाभ उठाएंगे। वैसे उपाध्याय जी की जन्म शताब्दी पर भी मैंने उनका एक छोटा जीवन चरित्र लिखा था। 'व्यक्ति से व्यक्तित्व' का मूल्य १५) है।

विश्व हिन्दू परिषद नहीं ?
विश्व आर्य परिषद उपयुक्त है।

७ दिसम्बर १९८३ के इसी पत्र में एकात्म-यज्ञ और हिन्दू संगठन के शीर्षक लेख में विश्व हिन्दू परिषद् की लेखक महोदय ने बड़ी वकालत की है। बात यह है कि—आजकल के आर्यसमाजो और आर्य नेताओं का निज पर दृढ विश्वास हो नहीं कि हम वैदिक धर्म को मानने वाले हैं और हमारे कुछ वैदिक सिद्धान्त हैं जो ऋषि ने निज साहित्य द्वारा और समय-समय पर व्याख्यानों में समझाये हैं। उन सबको छोड़कर हम किसी भी लोभ, लालचवश या लीडरी के चक्कर में पड़कर इस दूषित नाम (हिन्दू) की रट लगाते हैं। जबकि हिन्दू का और वैदिक धर्मी (आर्य) का किसी भी प्रकार से पारस्परिक मेल नहीं खाता।

आर्य से हिन्दू एकदम बिल्कुल विलोम (उलटा) है फिर पता नहीं आय नेता इस हिन्दू शब्द का अर्थ आर्य क्यों करते हैं यथा—हिन्दू (आय) अथवा आर्य (हिन्दू) वे मानों अपने हाथों से या निज विचारो द्वारा सत्य सनातन वैदिक धर्म पर कुठाराघात करते हैं और महर्षि दयानन्द सरस्वती जी को भी वह लोग बड़ा धोखा दे रहे हैं। वे आर्यजन दो नावों में पैर रखकर पार होना चाहते हैं अर्थात् दोनों ओर ही अपनी लीडरी चमकाना चाहते हैं, आर्यसमाज में भी और हिन्दू संगठन में भी गंगा गये जब गंगादास, जमना गये तब जमनादास। हे आर्य सज्जनों! तनिक कानों का मैल निकाल कर ध्यान से सुनो ? आर्यसमाज केवल हिन्दू संगठन नहीं चाहता वह तो मनुष्यमात्र का संगठन चाहता है और वह केवल गाय का ही कल्याण नहीं अपितु जीव मात्र का कल्याण चाहता है। आधुनिक आर्यो ! आप उन दिग्विजयी विद्वानों से अधिक चतुर नहीं हैं जो आर्यसमाज की नींव के पत्थर हैं। यदि यह हिन्दू शब्द आर्य का पर्यायवाची होता तो वे विद्वान् इस पर कदापि शास्त्रार्थ नहीं करते और उन्होंने तो हिन्दू शब्द के अर्थ—काला, चोर, गुलाम, डाकू, मार्ग का लुटेरा, जंगली औरत, दवात (स्याही), तेरा बन्दो, मेरा बन्दी, काफिर, तलवार, जुल्फ, धोखा, धोखेबाज इत्यादि किये हैं। यहां मैंने यह थोड़े से हिन्दू शब्द के अर्थ लिखे हैं अधिक जानकारी के लिए देखो दिग्विजयो अमर हुतात्मा पं० लेखराम जी की कुलियात आर्य मुसाफिर प्रथम भाग आर्य हिन्दू और नमस्ते की खोज शीर्षक पृष्ठ १८० प्रकाशक हरयाणा साहित्य संस्थान गुरुकुल झज्जर सस्करण (नया है)।

सुनो भई आर्यो ! जब तक इस देश के निवासियों को हिन्दू नाम से प्यार है, और आगे रहेगा तब तक और इस ऋषिधरा को धरा निवासी हिन्दुस्तान या हिन्दूस्थान मानेंगे जब तक कदापि यहां पर मनुष्यों (हिन्दुओं) का संगठन नहीं हो सकता इन के कल्याण की तो बहुत दूर को बात है। यह मैं अपने पूर्ण निश्चय के साथ दृढ विश्वास से लिख रहा हूं और यह शतप्रतिशत एक सच्चाई है जिससे आधुनिक आर्य मुख मोड़ रहे हैं। आपने पढ़ा होगा कि यथा नाम तथा गुण। यह एक वैज्ञानिक सत्य है कि नाम का प्रभाव कम या ज्यादा व्यक्ति पर पड़ता अवश्य है। अत. नामकरण संस्कार करने वाले पुरोहित सुन्दर नाम और नाम में शक्तिशाली व्यंजनों का गठन किया करते हैं जिनका शुद्ध और सुन्दर यौगिक अर्थ निकले। इन सब तथ्यों को मानते हुए भी आप हिन्दू (चोर गुलाम, डाकू, काला आदि) का संगठन बनाना चाहते हैं। आप सब यह जानते हैं कि जब से आर्य का हिन्दू नाम पड़ा है तब से ही यह हिन्दू काम भी माड़े ही करता आ रहा है। इसलिये कि इन पर नाम के अर्थ का पूर्ण असर है। देखो! विश्वासघात इनमें अधिक दें लालची यह सबसे ज्यादा बेईमानी तो इनकी नस-नस में समाई पड़ी है।

दीन धर्म इनका कोई है नहीं ? पीर की कबर पर माथा यह घिस दें, कब्रिस्तान को यह पूजदें, मन्दिर में मुर्ति पूजन यह करते, लिंग पूजन का अधिक चाव इनको और योनि पूजन इनमें सबसे पुराना है। हर ईंट और पत्थर में इनका परमात्मा सशरीर वास करता है तथा हर वर्ष एवं हर प्रदेश में इनका ईश्वर कुवारियों के गर्भ से जन्म लेता है। सिद्धांत इनके कोई नहीं ? गाय का दूध भी पीते हैं और मांस भी खा जाते हैं। सुअर, गधे, कुत्ते, बिल्ले, मोर, मुर्गी, हिरण, खरगोश, तीतर, बटेर, मछली जो भी हाथ लगे सब कुछ हिन्दू जी के पेट में समा जाता है। शराब, हुक्का, बीड़ी, चरस, गांझा, अफीम, सुलफा इत्यादि पता नहीं इस हिन्दू ने क्या क्या नशे करने होते हैं और देखो! लड़की बेचकर जमीन यह खरीद लें और लड़की की शादी में लाखों रुपया यह खर्च कर दें तथा लड़कों की शादी में लाखों की मांग यह करदें और दहेज कम लाने पर उस बेचारी नव वधू को तेल छिड़क कर आग यह लगादें, जो अपना एक नया संसार बसाने की कामना लेकर इसके घर में आई थी अर्थात् हिन्दू के कोई ओर छोर नही। मैं तो महर्षि दयानन्द जी के मन्तव्य का दृष्टि से हिन्दू को पिशाच की संज्ञा देता हूं। आप लिखते हैं कि जिस के कोई दिवार न हो कोई ओर छोर न हो। दूध भी, शराब भी, मांस भी, हलवा भी जो भी आगे आवे वही अन्दर। लक्कड़ हजम पत्थर हजम और यह सब हिन्दू पर घटती है। इसलिए—हिन्दू विश्व परिषद् नहो ? आर्य विश्व परिषद् इसलिए—कि इनके पास वेद भगवान् के बताये हुये कुछ सिद्धान्त हैं, साधन है और नियम हैं। यथा—आर्यों का एक ईश्वर है, धर्म ग्रन्थ वेदज्ञान एक है, गुरु मन्त्र गायत्री मंत्र एक है, पञ्चमहायज्ञ परिपाटी एक है, भक्ति पथ (योग मार्ग) एक है, सब की सन्ध्या एक है, यज्ञोपवीत (केवल तीन तार का) सबका एक है, संस्कार १६ परिपाटी सब एक समान है। वर्ण व्यवस्था कर्म पर आधारित सबकी एक है, जीवन के चतुर्भाग (चार आश्रम) सबके समान हैं, मानवमात्र को कर्म करने पर उन्नति का समान अवसर दिया जाता है। यहां पर जन्म से जातपात का कोई बन्धन नहीं। राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्य सबका एक है, ओमृध्वज सबका एक है, समर्पण मन्त्र सबका एक है, शान्ति पाठ सबका एक है इसलिए अधिक न लिखते हुए मैं निवेदन करता हूं कि—वेदोऽखिलो धर्म मूलम्—अर्थात् वेद धर्म ही अखिल (समस्त, सारे) विश्व का मूल धर्म है। अतः समस्त मानव मात्र और प्राणी मात्र का इसी से कल्याण है, अन्य मतमतान्तरों से नहीं। इसलिए हिन्दू (चोर, गुलाम) आदि की विश्व परिषद् नहीं ? आर्य (आप्त, विद्वान् धर्मात्माओं की) विश्व परिषद् ही कल्याणकर है सर्व प्रकार से उपयुक्त है इसलिए आप सब आर्य सज्जनों से नम्र निवेदन है कि हिन्दू विश्व परिषद् का गुण-गान न करें अपितु हिन्दू से आर्य बनाए और वैदिक धर्म की वकालत किया करें जिससे बेचारे हिन्दू का कल्याण हो जाये।

नई दिल्ली में आर्य महासम्मेलन का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने भारत की राजधानी दिल्ली के समस्त क्षेत्रों मे व्यापक जनसम्पर्क करने के लिए एक व्यवस्थित योजना बनाई है। इसके अनुसार पूर्व वर्षों में जमनापार के शाहदरा के दिल्ली के पूर्ववर्ती क्षेत्रों और उत्तरी दिल्ली के माडल टाऊन गुजरावाला क्षेत्रों में दो वृहद् क्षेत्रीय महासम्मेलन हो चुके हैं। दोनों हो महासम्मेलन बहुत यशस्वी एवं सफल हो चुके हैं उसी स्वस्थ परम्परा के अनुरूप आगामी २४-२५ मार्च १९८४ के दिनों में मैडिकल इंस्टीचयुट के पास किदवईनगर के समीप दशहरे के मैदान में विराट् आर्य महासम्मेलन होगा। इस अवसर पर १८ मार्च ८४ को विराट् शोभायात्रा का भी आयोजन किया जायेगा और सभा के प्रचार वाहन द्वारा दक्षिण दिल्ली की प्रत्येक कालोनी एवं ग्राम में प्रचार व लघु साहित्य वितरण द्वारा जन-जागरण करके जनता को देश और धर्म की विस्फोटक स्थिति के प्रति जागरूक किया जाएगा। दिल्ली भर की समस्त समाजों विशेषतः दक्षिणी दिल्ली क्षेत्र की ५० के लगभग आर्यसमाजों तथा अन्य आर्य संस्थाओं का उत्तरदायित्व है कि इस आर्य महासम्मेलन को आर्थिक एवं दूसरी सहायता देने की व्यवस्था करेंगे।

मद्यपान

राज दरबार में मदिरापान का आयोजन हो रहा था। छाल एवं मृग-चर्म धारण किये धूल-धुसरित जटाधारी एक ब्राह्मण ने दरबार में प्रवेश किया। उसके ललाट पर अद्भुत तेज एवं अलौकिक आभा उमड रही थी। परन्तु उसके हाथ में सुरा-पात्र था। राजा ने सकुचित हो प्रणाम किया। अनुसरण रूप में दरबारी गणों ने भी उसकी चरण वन्दना की।

'हे राजन ! तुम्हें धर्म, न्याय एवं सत्य और बुराइयों की तनिक भी चिन्ता न हो, तो मेरा यह सुरा-पात्र खरीद लो।" उस विवेकशील ब्राह्मण ने कहा।

'योगीराज ! आपके सौदा करने का तरीका तो बहुत ही विचित्र है। सौदा करने वाले अपनी वस्तु की प्रशंसा करते हैं, उसके गुणों का बखान करते हैं परन्तु आप तो सारे अवगुणों का वर्णन करके सौदा कर रहे हैं। आप अनोखे सौदागर हैं।' राजा आश्चर्यचकित था।

'हे राजन ! इसमें न तो मधु है, न दधि है, न दूध है, न पवित्र जल है। इसमें विषमयी मदिरा है। जो पान करता है वह अपने वश में नहीं रहता। उसे सत्य, असत्य, न्याय, धर्म का ज्ञान नहीं रहता। जब वह मदहोश होकर लड़खड़ाता चलता है, बालक हंसी उड़ाते हैं और कभी-कभी पथ पर सुध-बुध खोकर गिर पड़ता है तो राहगीरों के व्यंग्य का निशाना बनता है। अच्छा होगा राजन ! तुम खरीद लो। इसका पान कर तुम भी राजपथ पर नग्न होकर नृत्य करोगे। तुम्हें पत्नी और कन्या में अन्तर दिखाई नहीं देगा। इसे पान करने पर गृह-कलह, सन्तान पर कुप्रभाव के साथ ही स्त्री भी अपने पति को निःसंकोच बुरा-भला कहती है। न इज्जत की, न फिकर अपमान की, इसे पान करने वाला इसकी रंगीनियों में खोकर दिशाहीन हो जाता है। इसके आचमन से बड़े-बड़े धनवान दरिद्र बन गये। साधारण व्यक्ति भूखा नंगा हो गया। राजाओं के राज्य मिट्टी में मिल गये। यह अभिशाप, अधर्म, अन्याय, कुशासन, पाप, शोषण की जननी है। उस तेजस्वी ब्राह्मण ने राजा को समझाया।

राजा चरणों में गिर पड़ा, और बोला—'गुरुदेव ! आपने मेरी आंखें खोल दी। मैं भी इन्हीं रंगीनियों में खोकर अपने कर्त्तव्य मार्ग में च्युत हो गया। मैं प्रतिज्ञा करता हूं कि आज से मदिरापान नहीं करूंगा और न राज्य में कोई करेगा। आपने मुझे कल्याणकारी शिक्षा दी है और इसी में मेरा तथा प्रजा का कल्याण है। अतः आप गुरुदक्षिणा स्वरूप राज्य का अर्द्धभाग स्वीकार करें। हे राजन ! मुझे तुम्हारी किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है। मैं सांसारिक माया से मुक्त हूं। मेरे पास स्वर्ग का वैभव मौजूद है। मैं तो तुम्हें पतन के गर्त से सावधान करने आया था। मदिरापान से शासक व प्रजा दोनों को ही हानि है।' इतना कहकर ब्राह्मण वेशधारी अलौकिक प्रकाश के साथ अदृश्य हो गये।

प्रेषक – हेमकुमार गुप्त

गुड़गांव में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में गुड़गांव की समस्त आर्य समाजों एवं आर्य शिक्षण संस्थाओं की ओर से दिनांक २५-१२-८३ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान समारोह मनाया गया। मुख्य अतिथियों के रूप में प्रो० बलराज मधोक दिल्ली तथा पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी सोनीपत ने स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालकर आर्य जनता को उनके द्वारा दिखाये गये मार्ग पर चलने का आह्वान किया। इसके अतिरिक्त गुड़गांव क्षेत्र के विधायक चौ० धर्मवीर जी गाबा ने भी महर्षि के अधूरे काम को अग्रसर करने की प्रेरणा की। सभा की अध्यक्षता श्री सत्यपाल आर्य गुड़गांव ने की। शान्तिपाठ के साथ समारोह की समाप्ती हो गई।

विद्याभूषण शास्त्री
महामन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० न० P/RTK 49



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक—रणधीर शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ८ २१ जनवरी १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

साम्प्रदायिकता की पराकाष्ठा

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक वैदिक संस्थान नजीबाबाद

गत १८ नवम्बर को नजीबाबाद नगर में मुन्सफी न्यायालय के उद्घाटन के अवसर पर होने वाला यज्ञ का कार्यक्रम इसलिये नहीं हो सका क्योंकि मुसलमान वकीलों ने उसका विरोध किया। विरोध करने का कारण साम्प्रदायिक मनोवृत्ति के अतिरिक्त और कुछ हो नहीं सकता।

न केवल भारतीय ही अपितु समस्त संसार जानता है कि यज्ञ भारतीय संस्कृति का अभिन्न और अनिवार्य अंग है। भारत में प्रत्येक शुभ कार्य यज्ञ से आरम्भ होता है। भारत की स्वाधीनता तिथि १५ अगस्त सन् १९४७ ई० से लेकर अद्यावधि चाहे राजकीय कल कारखाने आदि उद्योग धन्धे हों अथवा न्यायालय अथवा न्यायालयों और प्रशासन से सम्बन्धित अन्य भवन—सभी के उद्घाटन समारोह यज्ञ कार्य से प्रारम्भ होते हैं। यह पहला अवसर है कि जब आयोजकों ने साम्प्रदायिक दुराग्रहियों के कारण यज्ञ-कार्य को स्थगित कर दिया है। यह आयोजकों की निर्बलता उन्हें दुराग्रह के सामने झुकना नहीं चाहिए था। अधिक से अधिक यही होता कि विरोधी तत्त्व समारोह में सम्मिलित न होते। उनके सम्मिलित न होने से न तो उद्घाटन ही रुक सकता था और न मुन्सफी न्यायालय के न्यायिक कार्यों में बाधा पड़नी थी। वह न्यायालय में अपनी आजीविका के लिए वकालत करने पहुंचे हैं, न्यायालय अथवा किसी अन्य पर अहसान करने नहीं। आश्चर्य तो यह है कि सबसे पहले विरोध का प्रारम्भ करने वाले इन्द्रा कांग्रेस के जिले के एक बहुत बड़े नेता हैं।

पाठकगण ! यह पूर्वाग्रह-ग्रस्त साम्प्रदायिक दुराग्रह नहीं तो और क्या है ? उस यज्ञ में लगने वाली आहुतियों से फलने वाली सुगन्धि ने इन मुस्लिम वकीलों के नासिका छिद्रों से इनके शरीर में रोगों के कीटाणु तो पहुंचा नहीं देने थे। हां, यह बात अलग है कि जिसकी नासिका ही दुर्गन्धि-ग्रस्त होती है, उसे चन्दन आदि सुगन्धित पदार्थों में भी दुर्गन्ध ही आती है।

बात लगभग तीस वर्ष पुरानी है। शेरकोट नगर में पी० जे० एम० हाई स्कूल (अब इण्टर कालिज हो गया है) के उद्घाटन का यज्ञ हो रहा था। वहां के 'नगर क्षेत्र समिति' के भूतपूर्व अध्यक्ष मौलवी तसलीम अहमद—जो स्कूल समिति के वरिष्ठ उपाध्यक्ष भी थे—कहने लगे 'बड़ी बदबू फैला रखी है' मुझे उस समय यह बात ज्ञात न हो सकी। नहीं तो सबके सामने ही मौलवी साहब से पदार्थ-विद्या पर वार्तालाप होता। बाद में जब मुझे इस बात का पता चला तो मौलवी साहब की बुद्धि पर हंसी भी आई और खेद भी हुआ।

जो व्यक्ति सुगन्धि को भी दुर्गन्धि बतायें, उसकी समझ पर हंसी और खेद के अतिरिक्त और क्या हो सकता है ? वास्तविकता यह है कि जिस व्यक्ति ने जीवन भर मांस, अण्डे और मछलियों के पकाये जाने की दुर्गन्धि सूंघी हो, वह चन्दन, तुलसी, अगर, तगर, कपूर, गोला, किशमिश आदि शुद्ध घृत मिश्रित परम सुगन्धित पदार्थों की गन्ध को कैसे सहन कर सकता है ? और जिसकी नासिका में उक्त दुर्गन्धि बसी हुई हो, उसे सुगन्धि का पता कैसे चल सकता है ?

मौलवी तसलीम अहमद साहब तो अब दुनियां में नहीं हैं, खुदा उन्हें जन्नत नसीब करे। हमारे विचार से नजीबाबाद के यज्ञ का विरोध करने वाले वकीलों की नासिकाओं का कैमिस्ट्री की परीक्षण शाला में परीक्षण कराया जाना चाहिये जिससे यह पता चले कि इनकी नासिकाओं में ऐसे कौन से तत्त्व हैं जो उन्हें सुगन्धि नहीं सहने देते अथवा जिसके कारण यज्ञ गन्ध इनके शारीरिक तत्वों पर जाकर विपरीत प्रभाव डालती है तथा जिनके कारण रोगोत्पत्ति की सम्भावना हो सकती है। यदि इन यज्ञ विरोधियों में ऐसा कुछ न पाया जाये तो इनका यज्ञ से मानसिक सन्तुलन क्यों बिगड़ता है, इसके लिये मन चिकित्सकों के हवाले इन्हें कर दिया जाना चाहिये। यदि वह भी कोई मानसिक कारण इनमे न पायें तो निश्चित रूप से इनका यज्ञ विरोध साम्प्रदायिकता पर आधारित है और साम्प्रदायिकता का कारण यह है कि इस्लाम में यज्ञ विषयक कोई प्रावधान नहीं है।

मैं इस्लाम का अपमान नहीं करना चाहता किन्तु मेरी समझ के अनुसार यदि किसी मजहब में ऐसा प्रावधान नहीं है तो उसमें ऐसी उपयोगी प्रक्रियाओं को सम्मिलित कर लेना चाहिये। यदि किसी मजहब के लोग यह कहें कि यह सब हमारी शक्ति से बाहर है तो ऐसे बन्धुओं को मानवता के नाते हमारा यह सुझाव है कि वह ऐसे मजहब को छोड़ दें और यदि इसके लिए भी वह तैयार नहीं तो फिर हमारा नम्र निवेदन यह है कि वह चुपचाप और जैसे-तैसे अपना जीवन बितायें, ऐसी बातें करके शिक्षित और वैज्ञानिक मस्तिष्क के लोगों की दृष्टि में उपहास का पात्र न बनें। कुछ चर्चा वैज्ञानिक जगत् की भी इस प्रसंग में हम यहां कर देना चाहते हैं, जिससे हमारी बातों को तथ्यहीन और हवायी न समझ लिया जाये।

अभी तक जिस अमरीका के बड़े-बड़े नगरों में धुआं करना अपराध था, इस समय वहां भी यज्ञ-धूम्र से पर्यावरण प्रदूषण दूर करने अर्थात् वायुमण्डल शुद्ध करने के लिए यज्ञ उपयोगी ही नहीं अपितु एकमात्र उपाय माना जा रहा है। सन् १९८३ के प्रारम्भ में भारत के समस्त प्रमुख पत्र-पत्रिकायें अमरीका के इस विचार पर लगभग दो मास तक सम्पादकीय और अग्रलेख प्रकाशित करते रहे हैं। यह वास्तविकता है कि वायु-मण्डल-शोधन का इसके अतिरिक्त अन्य कोई वैज्ञानिक प्रकार हो ही नहीं सकता। अग्नि में जलने वाले प्रत्येक पदार्थ की शक्ति जल कर सहस्रों गुणा हो जाती है। उदाहरण के लिए एक व्यक्ति कई मिर्च खा लेता है किन्तु सिसकारी भी नहीं भरता। परन्तु एक मिर्च को आग मे डालकर जला देने से वह इतनी शक्तिशाली हो जाती है कि जितने लोगों की नासिका तक उसकी गन्ध पहुंचती है, वह सब उसकी धसक से परेशान हो जाते हैं।

मिर्च जैसी ही बात अन्य पदार्थों की भी है। सुगन्धित पदार्थों की गन्ध भी उसी प्रकार सहस्रों गुणा होकर आकाश मे फैल जाती है और न केवल मनुष्यों अपितु प्राणी मात्र के शरीर का स्पर्श कर तथा उनके नासिका छिद्रों से शरीर के भीतर जाकर रोगाणुओं का नाश करती और फेफड़ों को बल प्रदान करती है। इतना ही नहीं अपितु वनस्पतियों

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रार्थना कब प्रार्थना बनती है ?

लेखक—यशपाल आर्यबन्धु, आर्य निवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

गत लेख में हमने यह बतलाया था कि प्रार्थना तब प्रार्थना बनती है कि जब वह पुरुषार्थ पूर्वक की जाती है। साथ ही यह भी कि जब प्रार्थना हृदय से की जाती है, तभी वह यथार्थ प्रार्थना बनती है। इस संदर्भ में आगे यह कहना है कि प्रार्थना तब प्रार्थना बनती है कि जब हम निष्पाप होकर प्रार्थना करते हैं, क्योंकि पापों में लिप्त होकर प्रार्थना करना सर्वथा बेईमानी एवं निरर्थक है। हां पापों से बचने तथा पापमय जीवन से उबरने के लिए प्रार्थना का सहारा लेना उचित एवं समीचीन है। पापमय जीवन से उबरने एवं पापों से बचने के लिए ईश्वर से सहाय की इच्छा न की जायेगी तो फिर और किस के लिए और किस से की जायेगी ? किन्तु यदि हम प्रार्थना तो निष्पाप होने के लिए करें पर स्वयं पापों को छोड़ें नहीं तो हमारी प्रार्थना, प्रार्थना नहीं होगी। वह तो एक लोक दिखावा अथवा ढोंग प्रपंच ही होगा। वस्तुतः प्रार्थना है ही निष्पाप होने के लिए। यदि प्रार्थना करते हुए भी हम निष्पाप नहीं हो रहे तो निश्चय ही हमारी प्रार्थना अथवा हमारा आचरण दोषपूर्ण है। अपने दुर्गुणों एवं दोषों को जितना हम स्वयं जानते हैं, उतना शायद कोई और नहीं। अतः अपने दुर्गुणों एवं दोषों की सम्यक् पड़ताल करते हुए उन्हें छोड़ने के लिए स्वयं दृढ़ प्रतिज्ञ एवं कटिबद्ध होते हुए यदि हम ईश्वर से सहाय की इच्छा करके प्रार्थना करते है तो प्रार्थना वास्तविक प्रार्थना बन जाती है। ऐसी प्रार्थनायें हमारी पाप वासनाओं एवं वृत्तियों का शोधन कर हमारे दुर्गुण एवं दोषों को छुड़ाती हैं। कहा भी है—

विषय का विषधर जब डसे, तू ओम् जड़ी को चबा।
है नाग दमन यह औषधी, तू ढूंढ़न और न जा ॥
जब ही नाम हृदय धरयो और भयो पाप को नाश।
जैसे चिनगी आग की, परे पुरानी घास ॥

जिन प्रार्थनाओं में हम स्वयं को पतित एवं पापी कह-कह कर प्रभु को पतित पावन सिद्ध करने का यत्न करते रहते हैं, वे प्रार्थनायें भी वास्तविक प्रार्थनायें नहीं, क्योंकि जैसा कि पं० चमूपति जी का कथन है कि—'जिन प्रार्थनाओं में जीव अपने आपको पतित तथा पापी कहे और परमात्मा को पतित पावन और नित्य प्रति एक ही शब्दों में गिड़गिड़ा कर कहा करे, हे भगवन ! तू मुझे ऊपर उठा पर स्वयं उठने का यत्न न करे, वह प्रार्थनायें निरर्थक हैं। यदि आज भी मैं उतना ही पापी हूं जितना कल था, तो ईश्वर ने मेरी प्रार्थना नहीं सुनी और मेरा यह भ्रम कि वह पतितोद्धारक है निर्मूल सा है।' (देखें—संध्या रहस्य, पृष्ठ १५) वस्तुतः पाप का स्मरण पश्चाताप के लिए होना चाहिये। अपने आपको यों ही पापी कहते रहना कोई अच्छी बात नहीं। हमें सोचना चाहिये कि यदि हम हमेशा पापी ही हैं तो फिर उस निष्पाप प्रभु से हमारी मित्रता कैसे सम्भव है ? और ऐसी स्थिति में उसकी सहाय की आशा भी कैसे कर सकते हैं ? इसीलिये किसी कवि ने यथार्थ कहा है कि—

'का मुख ले विनती करूं; लाज आवत है मोहे।
तुम देखत अवगुण करूं, कैसे भाऊं तोहे ॥'

स्पष्ट है कि प्रार्थना एवं निष्पापता का घनिष्ट सम्बन्ध है। अतः प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह निष्पाप होकर की जाती है।

प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह विवेक पूर्वक की जाती है। अविवेक पूर्वक की गई प्रार्थना प्रार्थना नहीं। अतः हमें प्रार्थना सदैव विवेक पूर्वक करनी चाहिये। अविवेक पूर्वक की गई प्रार्थना तो प्रार्थना का उपहास मात्र है। हमें असम्भव एवं अस्वाभाविक बातों के लिये प्रार्थना कभी नहीं करनी चाहिये। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—'ऐसी प्रार्थना कभी न करनी चाहिये और न परमेश्वर उसको स्वीकार करता है कि जैसे हे परमेश्वर ! आप मेरे शत्रुओं का नाश, मुझको सब से बड़ा, मेरी ही प्रतिष्ठा और मेरे आधीन सब हो जायें इत्यादि, क्योंकि जब दोनों शत्रु एक दूसरे के नाश के लिये प्रार्थना करें तो क्या परमेश्वर दोनों का नाश कर दे ? जो कोई कहे कि जिसका प्रेम अधिक उसको प्रार्थना सफल हो जावे, तब हम कह सकते हैं कि जिसका प्रेम न्यून हो उसके शत्रु का भी न्यून नाश होना चाहिये। ऐसी मूर्खता की प्रार्थना करते करते ऐसी भी प्रार्थना करेगा—हे परमेश्वर ! आप हमको रोटी बनाकर खिलाइये, वस्त्र धो दीजिये और खेती बाड़ी भी कीजिये। (देखें स० प्र० सप्तम समुल्लास) इतना ही नहीं महर्षि का तो यहां तक कथन है कि—"परमेश्वर भी सबके उपकार करने की प्रार्थना में सहायक होता है, हानिकारक कर्म में नहीं।" अतः प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह विवेक पूर्वक की जाती है।

प्रार्थना करते समय इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये कि हमारी प्रार्थना उलाहनों आदि से सर्वथा रहित हो, क्योंकि उसे निर्दयी निष्ठुर तथा बेमिहर आदि उलाहने देने से क्या वह हम पर मेहरबान अथवा दयालु हो जायेगा ? साथ ही हमें प्रार्थना सदैव विश्वास पूर्वक करनी चाहिये। विश्वास—रहित प्रार्थना से प्रार्थना न करना ही श्रेयस्कर है। अतः प्रार्थना तभी प्रार्थना है कि जब वह उलाहनों से रहित एवं विश्वास से पूरित है। जब हम पुरुषार्थ पूर्वक निष्पाप होकर, विश्वास के साथ विवेक पूर्वक हृदय से प्रार्थना करते हैं तब हमारी प्रार्थना करते हैं तब हमारी प्रार्थना सच्ची प्रार्थना बन जाती है। तब वह हृदय की तड़पन एक सच्ची पुकार बन जाती है कि जिसमें कर्म और ज्ञान दोनों का सर्वथा मेल होता है। हमारे कर्म हमारी प्रार्थना के अनुकूल होते हैं। हम स्वयं प्रयत्न करते हुए प्रभु से सहाय की इच्छा करने लगते हैं। यही प्रार्थना का चरम उत्कर्ष एवं यथार्थ विधि है। यदि हम कर पाये तो।

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे १५) मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देवें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

सामयिकी—

"धर्म निरपेक्ष नहीं—धर्म सापेक्ष"

सुरेश कुमार शास्त्री, विद्याभास्कर एम. ए.-I
आर्य समाज कालका

१५ अगस्त १९४७ के दिन सदियों की पराधीनता के बाद भारत स्वाधीनता के पथ का पथिक बना। अभी यह स्वतन्त्रता अधूरी थी क्योंकि हमें तब तक दूसरों के द्वारा बिछाई गई पटड़ियों पर ही चलना पड़ रहा था। इसका कारण स्वतन्त्र भारत के शासकों एवं शासितों के पास उस आचार संहिता का अभाव था जिसके द्वारा प्राप्त की गई स्वतन्त्रता को स्थाई बनाकर राष्ट्र अविलम्ब प्रगति पथ पर अग्रसर होता। ३४ वर्ष पूर्व ठीक आज के दिन व्यवस्था की वह पटरी हमारे नेताओं द्वारा बिछा दी गई जिस पर राष्ट्र के रथ को इसे विकासोन्मुखी बनाये रखने के लिए चलना था। संवैधानिक व्यवस्था लागू हो गई जिसके द्वारा भारत के भावी स्वरूप को परिभाषित कर दिया गया। सौभाग्य से इस दिन हमें अपने ही द्वारा निर्धारित मार्ग पर चलने का सुअवसर प्राप्त हुआ, अतः गणतन्त्र दिवस के रुप में २६ जनवरी के दिन का राष्ट्रीय स्तर पर विशेष महत्त्व है।

हमें किस दिशा में जाना चाहिए, यह जानने के लिए आवश्यक है कि हम उस व्यवस्था का अध्ययन करें, जो इस दिन इस देश को प्राप्त हुई थी। वास्तव में तभी कोई इसका सही-सही मूल्यांकन कर सकेगा। इस दिन का इस रुप में मनाने का उद्देश्य हो प्राप्त स्वतन्त्रता को सुरक्षित रखकर राष्ट्रीय उन्नति में जुटे रहना है।

"राष्ट्रीय उन्नति" यह शब्द संविधान में जिस अर्थ में प्रयुक्त हुआ है वह यह है कि देश राजनैतिक दृष्टि से स्वतन्त्र हो इसमे प्रजातन्त्र पद्धति का शासन चलता हो जिसके अन्तर्गत राष्ट्रवासियों मे शिक्षा का प्रचुर प्रचार हो। शिक्षा देने वाले विद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या यथेष्ट हो, यहां तरह-तरह के आविष्कार होते हों और व्यावहारिक जीवन में उनसे पूरा लाभ उठाया जाता हो। देश में कृषि उपज खूब होती हो, खानों में अनेक प्रकार के खनिज पदार्थ निकाले जाते हो, उद्योगों द्वारा भाँति-भाँति की चीजें बनाई जाती हों जिनको विदेशों में बेचकर व्यापार द्वारा पर्याप्त पूंजी अर्जित की जा सके। देश वासियों के रहने के घर-ग्राम और नगर सुन्दर तथा साफ-सुथरे, खुले, हवा और रोशनीदार हों। नगरों और ग्रामो की सड़कें चौड़ी और सपाट हों। राज्य प्रबन्ध ऐसा हो कि प्रजा के लोग बाह्य एवं आन्तरिक सब प्रकार के भयों की आशंकाओं से मुक्त हो आपस मे प्रेम और शान्ति से रहते हों। उन्हें खाने-पीने और ओढ़ने-पहनने का बढ़िया और आवश्यकतानुसार मिल जाता हो तथा उनके स्वास्थ्य की पूरी चिन्ता शासन करता हो। भारतीय संविधान के अनुसार राष्ट्रीय उन्नति से जो कुछ अभिप्रेत है, वह यही है। इसी कारण भारतीय संविधान विश्व भर में आदर्श संविधान माना जाता है।

राष्ट्र के इस संवैधानिक पर्व पर संविधान के प्रति सभी राष्ट्रवासियों को श्रद्धान्वित होने की पवित्र प्रेरणा करते हुए संविधान निर्माण में इसके निर्माताओं द्वारा की गई एक घातक भूल को इंगित करना हम इस अवसर पर नितान्त आवश्यक समझते हैं। तत्कालीन नेताओं ने संविधान में भारत को धर्म निरपेक्ष अंगीकार किया है। जिसके अर्थ, भाव एवं प्रभाव से आज प्रत्येक देशवासी भली-भाँति परिचित है। राष्ट्रीय व्यवस्था में इस शब्द के समावेश से देश के नव शिक्षितो की एक बड़ी संख्या को धर्म विरोधी होने की प्रेरणा ही मिली है। इसी का परिणाम है कि आज हम अपनी उस सनातन धार्मिक संस्कृति से जिसके ऊपर हमे गर्व होना चाहिए था, धीरे-धीरे दूर हटते जा रहे हैं। विश्व भर को धर्म का पाठ पढ़ाने वाले भारतीयों ने धर्म का विरोध करना प्रारम्भ कर दिया है। आज धर्म को सब बुराईयों और दुर्गतियों की जड़ बतलाया जाने लगा है। व्याख्या की जाने लगी है कि किसी व्यक्ति के गले मे भारी पत्थर बांधकर किसी तालाब नदी कुएं आदि में फेंक दिया जाए तो वह कभी तैर कर ऊपर न आ सकेगा। इसी प्रकार यदि चाहते हो कि राष्ट्र की भी यही स्थिति हो और यह कभी उन्नति न करे तथा सदा पतन के गर्त मे गिरा रहे तो इसकी जनता के गले में भी धर्म का भारी पत्थर बाँध दो। इस प्रकार से संविधान मे उल्लिखित धर्म-निरपेक्ष शब्द से ही कुप्रेरित हुए भारतीयों का बहुमत आज धर्म को देश की स्वतन्त्रता और उन्नति का भारी शत्रु बतलाकर उसका विरोध करने में जुटा है।

आइये। आज के दिन विचार करें कि क्या धर्म वस्तुतः राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य और उन्नति मे बाधक है? इसके लिए देखना यह होगा कि धर्म शब्द का वास्तविक अर्थ क्या है? "धर्म" संस्कृत भाषा का एक ऐसा शब्द है जिसके व्यापक अर्थ हैं।

पाठकों के लिए यह विश्वास पूर्वक लिखा जा रहा कि इस शब्द का अनुवाद संसार की किसी भी दूसरी भाषा के एक शब्द में किया ही नहीं जा सकता है। "धारणाद्धर्मः" के अनुसार किसी वस्तु के वे गुण जिनसे वह अपने रुप में धारित, अर्थात् बनी रहती है को उसका धर्म कहा जाता है। इस यौगिक अर्थ के आधार पर प्रयोग की दृष्टि से व्यापक अर्थ हो जाते हैं। किसी वर्ण अथवा आश्रम के नियम और कर्त्तव्य उसके धर्म हैं। राज्य के नियम धर्म हैं। इसीलिए कानून की पुस्तकों को संस्कृत मे धर्म शास्त्र कहा जाता है। राज्य नियमों के अनुसार न्याय-कार्य धर्म है। न्यायाधीश अर्थात् जज को धर्माध्यक्ष अथवा धर्माधिकारी तथा न्यायालय को धर्माधिकरण कहा गया है। आत्मा, परमात्मा, कर्म फल और परलोक में विश्वास तथा इसके आधार पर परमात्मा की उपासना और तदनुकूल आचरण ही धर्म है। शास्त्र की दृष्टि में ऐसा किये बिना मनुष्य का वास्तव में धार्मिक बनना असम्भव है। ऐसा जीवन वस्तुत जीवन रहित है। इसके बिना व्यक्ति जीवन मे वास्तविक उन्नति और सच्ची सुख समृद्धि प्राप्त नहीं कर सकता। यदि धर्म के इस विस्तृत अर्थ पर दृष्टिपात कर लिया जावे तो किसी को यह कहने का साहस ही न हो सके कि धर्म राष्ट्र की स्वतन्त्रता और उन्नति मे बाधक है। इस रहस्य को जान लेना और भी आवश्यक है कि संसार का सबसे पुराना धर्म "सत्य सनातन वैदिक धर्म" जिसे भारत वर्ष का बहुमत अंगीकार किये है, वह मात्र परमात्मा में विश्वास रखने और उसकी उपासना करने ही को धर्म नहीं मानता।

यह पूर्ण धर्म नहीं, प्रत्युत उसका एक अंग मात्र है। शास्त्र कारों ने "यतोभ्युदय निःश्रेयस सिद्धिः स धर्मः" अर्थात् जिस आचरण से सांसारिक ऐश्वर्य का अभ्युदय और पुनः पुनः जन्मने तथा मरने के चक्र से छुटकारा हो, धर्म का यही लक्षण किया है।

वस्तुतः धर्म ही व्यक्ति को सर्व प्रकार की उन्नति के सोपान पर चढ़ाता हुआ उसे व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित न रखकर सब की उन्नति में अपनी उन्नति मानने का उदात्त दृष्टिकोण प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में इसे ही राष्ट्रीय उन्नति कहा जा सकता है जिसकी आज के दिन महती आवश्यकता है। गणतन्त्र दिवस मनाते हुए राष्ट्रवासी संविधान को धर्म निरपेक्ष के स्थान पर धर्म सापेक्ष करने हेतु सचेष्ट होगें तभी आत्म निरीक्षण द्वारा देश अतीत की त्रुटियों से शिक्षा ग्रहण कर वर्तमान के माध्यम से भविष्य को समुज्ज्वल कर पाने मे समर्थ हो सकेगा।

आर्य पर्व सूची १९८४

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा आर्यसमाजों की सूचना के लिए स्वीकृत आर्य पर्वों की सूची प्रतिवर्ष प्रकाशित किया करती है, सन् १९८४ की सूची इस प्रकार है—

१. मकर संक्रान्ति	पोष शु० ११, २०४०	१४-१-१९८४
२. बसंत पंचमी	माघ शु० ५, ,,	७-२-१९८४
३. सीताष्टमी	फा. कृ. ८, ,,	२४-२-१९८४
३. दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	फा. कृ. १३, ,,	२९-२-१९८४
५. वीर लेखराम तृतीया	फा. शु. ३ ,,	५-३-१९८४
६. नव सस्येष्टि (होली)	फा. शु. १५ ,,	१७-३-१९८४
७. नव संवत्सरोत्सव (आर्यसमाज स्थापना दिवस)	चैत्र शु. १ २०४१	२-४-१९८४
८. रामनवमी	चैत्र शु. ९ ,,	१०-४-१९८४
९. हरितृतीया	श्रावण शु. ३ ,,	२३-७-१९८४
१०. श्रावणी उपाक्रम	श्रा. शु. १५ ,,	११-८-१९८४
११. श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्र. कृ. ८ ,,	२०-८-१९८४
१२. विजय दशमी	आश्वि. शु. १० ,,	४-१०-१९८४
१३. गुरु विरजानन्द दिवस	आश्वि. शु. १५ ,,	९-१०-१९८४
१४ ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली)	कार्तिक कृ. १५ ,,	२४-१०-१९८४
१५. श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	पोष शु. १ ,,	२३-१२-१९८४

टिप्पणी—इन पर्वों को वैदिक धर्म के प्रचार और वैदिक संस्कृति के प्रसार का महान् साधन बनाना चाहिए।

देशी तिथियों के घट बढ जाने पर अंग्रेजी तिथियों में परिवर्तन हो सकता है।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

(पृष्ठ १ का शेष)

फलों और खेतों में खड़ी फसलों पर भी अपने प्रभाव से अनेक हानिकारक कीटाणुओं का नाश कर उन्हें अत्यन्त उपयोगी, लाभदायक और स्वास्थ्यप्रद बना देती है।

अमेरिका की राजधानी वाशिंगटन की 'अग्निहोत्री यूनिवर्सिटी फाइव फोल्ड पाथ' नामक संस्था ने 'अग्नि होत्री यूनिवर्सिटी' स्थापित करके अमेरिका, जर्मन आदि अनेक पाश्चात्य देशों में यज्ञ के परीक्षण किये हैं। 'फाइव फोल्ड पाथ' अर्थात् यज्ञ, दान, तप, कर्म, स्वाध्याय—यह एक दम वैदिक नाम उन्होंने स्वीकार किया है। इस यूनिवर्सिटी के सदस्यगण यज्ञ का मनोवैज्ञानिक प्रभाव विषय पर भी खोज कर रहे हैं। भारत में इन्दौर आदि नगरों के कालिजों तथा अन्य कई संस्थाओं में भी उनके यज्ञ विषय पर भाषण हो चुके हैं। उस संस्था ने जो परिणाम, यज्ञ के कृषि पर परीक्षणों से ज्ञात किये हैं, उन पर अब तक पांच परिपत्र भी प्रकाशित किये हैं। जर्मन के बर्थोल्ड मौनिक जेहले यज्ञ का भस्म को अनेक रूपों में चिकित्सार्थ प्रयोग करते हैं। श्री पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी ने तीन प्रमुख वर्तमान समस्यायें और उनका यज्ञ-विज्ञान द्वारा समाधान (थ्री मेन करेण्ट प्राब्लम्स एण्ड देयर सोल्यूशन थ्रू सांइस आफ यज्ञ) जर्मन के उक्त सज्जन को भेजी तो उसने वेदश्रमी जी को पत्र लिखा है, जो अभी गत २७ अगस्त ८३ ई० को उन्हें प्राप्त हुआ है। उस पुस्तक का जर्मनी में अनुवाद कर वह 'कौंसिल आफ यूरोप' को भेजना चाहते हैं।

इन्हीं पण्डित वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर निवासी के ब्रह्माण्डीय वायुमण्डल की वैदिक शुद्धिकरण प्रक्रिया यज्ञ (यज्ञ ए वैदिक प्यूरीफिकेशन प्रोजेक्ट आफ कास्मिक अटमोस्फियर) शीर्षक लेख का वह जर्मन भाषा में अनुवाद भी कर चुके हैं। इसके अतिरिक्त 'इन्जिनियर्स इण्डिया' की पत्रिका के विशेषांकों में भी पण्डित जी के जो लेख छप चुके हैं, उन दोनों लेखों का भी अंग्रेजी में अनुवाद कराकर उक्त सज्जन को भेजा है।

हमारा इन लेखों आदि की चर्चा करने का उद्देश्य यह है कि पाठकों को पता चले कि एक ओर तो संसार पर विज्ञान के बल पर प्रभुत्व जमाने और संसार में समुन्नत व अग्रणी गिने जाने वाले पश्चिमी राष्ट्रों के वैज्ञानिक यज्ञों की व्यवहारिक उपयोगिता पर अर्थात् पर्यावरण प्रदूषण, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आंधी-तूफान आदि से सुरक्षा वनस्पति व अनाज आदि की संरक्षा व अभिवृद्धि विषयक खोज करने में समय और धन का व्यय कर रहे हैं और दूसरी ओर यज्ञों की पवित्र भूमि भारत में एक ऐसा वर्ग भी उपस्थित है, जो यज्ञ जैसे पवित्र और परम वैज्ञानिक कार्यों का भी विरोध कर अपनी घोर साम्प्रदायिक मनोवृत्ति का परिचय देने में नहीं चूकता। वह कह सकते हैं कि यज्ञ इतना उपयोगी विज्ञान सिद्ध कार्य है तो हमें कोई आपत्ति नहीं किन्तु उसके साथ वेद मन्त्रों का पाठ क्यों ? इसका उत्तर यह है कि संसार में वेद ही ऐसा ग्रन्थ है कि जिसने आदि सृष्टि में ही मानव को यज्ञ का उपदेश दिया था तथा जिसके मन्त्रों में यज्ञ के लाभों का वर्णन है, ऐसी स्थिति में वेद के मन्त्र यज्ञ की प्रक्रियाओं में प्रयुक्त होने उचित और आवश्यक है। यज्ञ की प्रक्रियायें और उनमें प्रयुक्त होने वाले मन्त्र यज्ञ के भौतिक लाभों के साथ-साथ मानव के मानसिक बौद्धिक और चारित्रिक विकास की सामग्री हमारा अभिप्राय है मानव के आध्यात्मिक विकास की विषय वस्तु से भी ओत-प्रोत है।

गणतन्त्र दिवस

छब्बीस जनवरी का दिन आ गया सुहाना।
गौरव की बात है यह गौरव का है जमाना ॥
आती है याद हमको गरचे वही पुरानी।
फिर भी है ताजा दिल में बनकर नई कहानी ॥
पूरे किए थे हमने सारे पुराने वायदे।
पूरे हुए थे अरमां दिल के सभी इरादे ॥
हिन्दोस्तानियों के जज्बे जवां हुए हैं।
और अपनी अजमतों के ऊंचे निशां हुए हैं ॥
गैरों से हमने बिल्कुल पीछा छुड़ा लिए था।
जीने का अपने खुद ही सामां जुटा लिया था ॥
इस दिन सम्भाल ली थी जागीर हमने अपनी।
हाथों से अपने लिखी तकदीर हमने अपनी ॥
सन्देश मिल गया था सबको बराबरी का।
अधिकार भी मिला था सबको बराबरी का ॥
हिन्दोस्तां में कोई छोटा बड़ा नहीं है।
हकदार हैं बराबर अन्तर जरा नहीं है ॥
अपनी जमीन है यह और आसमान अपना।
दुनिया में हो गया है भारत महान् अपना ॥
ऊंचा रहे तिरंगा यह आस है हमारी।
जिसकी अदाएं हमको लगती हैं प्यारी-प्यारी ॥
भारत की आबरू है भारत की शान है यह।
भारत का मान है यह भारत की जान है यह ॥
साए में जिसके पल कर आगे को बढ़ रहे हैं।
और एक साथ चलकर आगे को बढ़ रहे हैं ॥
पैरों पे आप अपने मिलकर खड़े हुए हैं।
अपनी बहादुरी के झण्डे गड़े हुए हैं ॥
छब्बीस जनवरी का दिन है बड़ा मुबारक।
हर साल दे रहा है हमको सदा मुबारक ॥
आओ ! कि धाक अपनी दुनिया में फिर बिठाएं।
भारत को और ऊंचा ऐ "नाज" हम उठाएं ॥

'नाज' सोनीपती

आकाशवाणी रोहतक द्वारा गुड़गांव में शिक्षा विषय पर आयोजित गोष्ठी 'प्रश्न मंच' में आर्य नेता दीवान भीमसेन द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण

ओ३म् मेधां मे वरुणो ददातु, मेधामग्नि प्रजापतिः।

आज नव वर्ष का नव दिन हमारे लिए कैसे सुशोभित हो रहा है, जो आप छात्रगण, विद्वद्गण, श्रोतागण एवं प्रश्न मंच के अधिकारीगण इस प्रांगण को शिक्षा सम्बन्धी आशीर्वाद का प्रसाद देने हेतु सत्कृत कर रहे हैं। शिक्षा भगवान की सत्प्रेरणा, माता-पिता की दीक्षा तथा बुद्धि जीवियों का प्रताप है। शिशुवर्ग शिक्षा के झूले में झूलता है। समाज के हिंडोले में झूम झूम कर क्रीडा करता है। संसार की ऊँच-नीच में झूलता है। आस्था का विस्तार, प्रगति का उद्धार, संसार का सुधार तथा मानव-जीवन का भव्य सत्कार शिक्षा द्वारा प्रस्तुत होता है, बदलता हुआ मनुष्य का शरीर मौसम की तरह रूप-रेखा लेता है। मानवता शिक्षा की थपथपी से सुधरती है। इह लोक-परलोक शिक्षा से संवरते हैं।

"विद्या सा या विमुक्तये" एवं "विद्या ददाति विनयम्" अर्थात् विद्या वह है जो विमुक्ति एवं विनय प्रदान करे। शिक्षा कल्प वृक्ष है। शिक्षा संकल्प की जननी है। उन्नति-शिक्षा पर चढ़ने का सोपान है। वर्तमान युग में Science Technology में जो उथल-पुथल मचा दी है, वही शिक्षा पुरातनकाल में प्रकाशदायिनी, जीवन-यात्रा वाहिनी तथा गद-गद समारोह कारिणी हुआ करती थी। "आरनिस"—यह एक यूनानी शब्द है, जिसका अर्थ है "पृथ्वी"। इसी नाम से अब एक विमान विश्व-यात्रा पर निकला है, जिसका उद्देश्य है—अन्धकार भरी आंखों को प्रकाश प्रदान करना। वह आंखों का उड़ता हस्पताल नए साजो-सामान लाने जा रहा है। नये-से-नये तत्वज्ञान-विचार भविष्य अपनी गोद से प्रदान करने को संभल रहा है, पर शोक यह भी तो है कि शिक्षा जितनी बढ़ती जा रही है, अशिक्षा भी उसी अनुपात से पंख फैलाती जा रही है। कवि के शब्दों में—

रोशनी हो रही है जितनी, मन उतने हो रहे हैं मैले।
अन्धेरा छा जाएगा जहां में, गर यही रोशनी रहेगी॥

कारण यह कि नौटंकी है सुशिक्षा का पथ पौलिटीकल राजनीतिक होते जाने से एक धोखा-धड़ी बन रही है Coed Word पूर्व Vaicey of India ने मान लिया कि उन्होंने भारत से शिक्षा में धोखा किया था। काश! हमने शब्द के अर्थ समझने में मान लिया होता विलासिता से हट कर तपस्या निष्ठा की अग्नि में तप कर शिक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त किया होता। संसार यह सत्य जान ले कि Napoleon Bonaparte को एक ग्राम में शिक्षा प्राप्ति हेतु भेजा गया था। वहां वह ठहरे एक नाई के यहां। नाई की घरवाली उस सुन्दर युवक का प्रेम चाहती थी, पर वह नवयुवक समझ कर दूर हो गया। संयम, इन्द्रिय निग्रह और आत्मोत्सर्ग से अन्त में वह निज देश के जरनैल पद पर आसीन हुए। एक दिन वही जरनैल फिर उसी ग्राम में उस नाई और नाइन के सम्मुख पधारे। नाइन ने उसे पहचानने से इन्कार कर दिया, पर जरनैल बोल उठे यदि वह आत्म-संयम के रंग में न रंगे होते, तो आज यहां जरनैल के रूप में न आ सके होते।

प्रिय छात्रगण! माननीय विद्वद्गण, श्रद्धालु जन-समुदाय, स्मरण रहे कि डा० इकबाल के शब्दों में :—

"कोई काबिल हो तो हम शाने 'कई' देते हैं।
ढूंढने वालों को दुनिया भी नई देते हैं।

मेरा यह पहला ही अवसर है जो प्रश्न मंच के माध्यम से यहां पर आया हूं। भगवन् आपके लक्ष्य तथा आकांक्षाओं को सम्मानित करें। आकाशवाणी रोहतक का प्रयास शिशुवर्ग को उत्साहित करने का सौभाग्य तथा जनसाधारण में जागृति पैदा करने की दिशा में सराहनीय कदम है। देश भर में यही साधन सर्वप्रिय तथा प्रभाव-पूर्ण बन रहा है।

रिकार्डिंग सामग्री के उपरान्त

कहीं शिक्षा भी "एक और तमाशा देखा" जैसा खेल न बन जाए। प्रार्थना है कि शिक्षा का माध्यम यन्त्र-मन्त्र-तन्त्र अपनाया जाए ताकि मानवता की रूपरेखा बने। एक बालक पिता की गोद में एक अमेरिकन परिवार में अंगीठी पर आग से शीत-निवारण कर रहा था। सोने का समय हुआ। पिता ने सबको अंगीठी से उठकर बिस्तरे में जाने का प्रस्ताव किया, पर बालक बिगड़ गया और अपने प्रश्न का उत्तर प्राप्त करने का आग्रह करने लगा। प्रश्न यह था कि लकड़ी जलती क्यों और कैसे है? पहले तो पिता ने इस गम्भीर प्रश्न के उत्तर को टालना चाहा, पर बालक उत्तरप्राप्ति के लिए उत्सुक था। इसलिए पिता ने बताया कि पौध बनता सूर्य की ऊर्जा गर्मी से, प्रकाश पत्तों द्वारा प्रवेश कर के उसकी नस-नाड़ियों को शक्ति प्रदान करता है। इस प्रकार पौदा बड़ा होता है और वृक्ष बनता है, तना बनता है। सूखने लगता है। कटने लगता है। फिर सूखता है। टुकड़ों में कट-कटा अंगीठियों में पड़ता है। वहीं सूर्य की गर्मी अग्नि पकड़ती है तथा जलने का कार्य सम्पन्न होता है। बालक सन्तुष्ट हुआ और परिवार उठा सोने को। परन्तु उत्तर का स्तर हमारी शिक्षा सही शिक्षा का माध्यम करार (निश्चित) होता है। शिक्षा केवल प्रज्ञा-ज्ञान नहीं, अपितु सृष्टि भर के कार्यक्रम का ठीक अर्थों में पढ़ने का सौभाग्य देती है। संस्कृत (शुद्ध) होना ही शिक्षा का प्रमाणपत्र है। मैं एक बार चण्डीगढ़ से देहली दौरे पर चल रहा था कि एक अफसर के आदेश पर एक अमेरिकन महिला की कार भी साथ चल रही थी। बस स्टैंड से गुजरते मुझे दो पत्र अम्बाला से मिले। जिन्हें पढ़कर, टुकड़े कर फेंक ही रहा था, कि वह महिला बोल पड़ी कि यदि मैं अमेरिका में होती और आप भी वहीं पर होते और ऐसा करते, तो मैं तुम पर जुर्माना कर देती, क्योंकि कागज सड़क पर फेंकना जुर्म है। सामाजिक शिक्षा का उल्लंघन है तथा अशिक्षा का प्रमाण।

मुझे तुरन्त सोच आई अपनी इस भूल पर "सॉरी" शब्द में मैंने इस अपराध के लिए क्षमा मांगी। शिक्षा सुचारु रूप में नस-नाड़ी में समाकर किसी की सुशिक्षा का स्तर बनती है। मन तथा मस्तिष्क उसके अनुकूल प्रक्रिया करते हैं। कहते हैं श्री विश्वश्रवा नामक एक वैज्ञानिक जिसे महात्मा गान्धी राजर्षि कहते थे, मद्रास जाती रेलगाड़ी से उनके साथ सफर कर रहे थे। मद्रास से कुछ मील पूर्व गाड़ी रोकने वाली जंजीर खींचकर गाड़ी खड़ी करनी चाही। प्रथम श्रेणी के यात्रियों ने एतराज किया। डाक्टर (विश्वश्रवा) साहब ने उनके मना करने पर भी जंजीर (चेन) खींचकर गाड़ी खड़ी कर दी। गार्ड आदि के मौका पर पहुंचने और पूछ-ताछ करने पर डाक्टर साहब ने बताया कि उन्हें रेल दुर्घटना का आभास हो रहा था, अतः सुरक्षा हेतु उन्हें ऐसा करना पड़ा। किसी ने कहा कि डाक्टर श्रवा-ज्योतिषि थोड़े ही हैं, जो उन्होंने ऐसा किया। डाक्टर साहब ने उन्हें कहा कि पहियों की रेल से टक्कर की आवाज में भेद पड़ रहा था जिस से ज्ञात होता था कि कुछ मील की दूरी पर पटड़ी उखड़ रही रही है इस लिए मुझे विवश होकर जंजीर खींच कर गाड़ी को रोकना पड़ा। इन्क्वायरी पर डाक्टर साहब के कथन की पुष्टी हो गई। यही है वास्तविक शिक्षा का प्रमाण। पं० मदन मोहन मालवीय जी को वायसराय ने "सर" की पदवी से सम्मानित करना चाहा, पर मालवीय जी ने इन्कार कर दिया और कहा कि "पण्डित" शब्द उनके लिए अच्छा, रुचिकर एवं विवेकदायक है, जिसका अध्ययन शिशु वर्ग को एवं अध्यापक वर्ग को करना चाहिए तथा ईश्वरीय सृष्टि का सही (ठीक) उपासक होना चाहिए, ताकि मानवता के लिए श्रेयस्कर बन सके।

आर्यसमाज को गतिविधियां—

छात्र वैदिक संस्कृति के उच्चादर्श अपनाएं

—चौ० चरणसिंह

बागपत, १५ जनवरी (हि० स०) लोकदल अध्यक्ष चौ० चरणसिंह ने यहां छात्रों को आह्वान किया कि वे वैदिक धर्म के सिद्धान्तों के अनुरूप जीवन ढालें तथा तड़क-भड़क को जगह सादगी, मितव्ययिता तथा उच्च आदर्श अपनाकर देश व समाज की सेवा में योगदान करें। श्री चरणसिंह बड़ौत के जनता वैदिक इंटर कालेज के ६७ वें वार्षिकोत्सव समारोह को सम्बोधित कर रहे थे।

उन्होंने कहा कि पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण ही युवा पीढ़ी विलास तथा उच्छृंखल होती जा रही है। वैदिक संस्कृति व हमारे देश के उच्च आदर्शों को अपनाकर ही इस देश का कल्याण सम्भव है।

आदर्श दम्पति

सुप्रसिद्ध वयोवृद्ध आर्य नेता पं० देवव्रत धर्मेन्दु जी (संरक्षक परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली) एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती जाविश्री देवी जी ने सदैव सादे रहन-सहन, आडम्बर-रहित जीवन भर की पुरुषार्थ व धर्मानुसार राशि से अनेकों आर्य संस्थाओं में हजारों रुपये दान देकर छात्र-छात्राओं के उत्साहवर्द्धनार्थ पारितोषिक देने के लिए स्थिर निधियां स्थापित कर दी हैं। आपने पहले ही अपना गाजियाबाद का भवन सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को दान दे रखा है और आर्य अनाथालय पटौदी हाऊस दरियागंज में भी इस दम्पति ने अब एक सुन्दर मकान बनवा कर दे दिया है। नई दिल्ली चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर सूरज पर्वत द्वारा नवनिर्मित चन्द्र आश्रम गृह के निर्माणार्थ श्री धर्मेन्दु जी की धर्म पत्नी श्रीमती जाविश्री देवी जी ने अपने सारे स्वर्ण आभूषण बेचकर सारी राशि दान में दे दी है। इस आदर्श दम्पत्ति ने अपनी समस्त सम्पत्ति श्रीमती चन्द्रवती चौधरी स्मारक ट्रस्ट नई दिल्ली को वसीयत कर दी है जिसकी आय से छात्रावास, चन्द्र आर्य विद्या मन्दिर की छात्राओं की उच्च शिक्षा पर छात्रवृत्तियां एवं उनके विवाहों पर कन्या दान में आवश्यकतानुसार वस्तुएं देने की व्यवस्था की है। हम इस आदर्श दम्पत्ति के त्याग के लिए धन्यवाद देते हुए उनकी दीर्घ आयु एवं उत्तम स्वास्थ्य की प्रभु से प्रार्थना करते है।

कमल किशोर आर्य
महामन्त्री परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली
१०ए/१५, शक्ति नगर, दिल्ली—७

कुश्ती जीती

३ जनवरी से ५ जनवरी तक सिरसा के संजय स्टेडियम में जिला कुश्ती संघ ने विद्यालय स्तर पर कुश्तियों का आयोजन किया। इसमें आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा के छात्रों ने ५ प्रथम स्थान एवं ५ द्वितीय स्थान प्राप्त किए जो निम्न प्रकार हैं—

प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले छात्र—सुरेन्द्रकुमार, राधेश्याम, वेदपाल, नरेन्द्रकुमार, ओमप्रकाश

द्वितीय स्थान पाने वाले छात्र—अशोक कुमार, राजाराम, विक्रम कुमार, बेगराज, मदनलाल

प्रथम स्थान प्राप्त करने वालों को १००-१०० रुपये एवम् द्वितीय स्थान प्राप्त करने वालों को ७५-७५ रुपये के आकर्षक पुरस्कार दिये गये।

प्रिंसीपल

कन्या गुरुकुल को अनुकरणीय दान

स्वामी ओमानन्द जी की प्रेरणा से निम्नलिखित महानुभावों ने आर्य कन्या गुरुकुल "पंचगांव" जिला भिवानी के लिए दान दिया है। १—चौ० गौरीराम श्योराण पुत्र श्री कुरड़ाराम गांव बाढ़ड़ा (भिवानी) ने ५४१ रुपये २—चौ० दरियावसिंह एडवोकेट गांव गोपी (भिवानी) ने ५०१ रुपये तथा एक बोरी गेहूं

प्रबन्धक समिति की ओर से इन दानियों का धन्यवाद है। गुरुकुल को ५०१) या अधिक दान देने वाले दानी महानुभावों का नाम पत्थर पर खुदवा कर भवनों पर लगवाया जाएगा। आर्य जनता से अनुरोध है कि वह भिवानी जिले के एकमात्र कन्या गुरुकुल की अधिक से अधिक सहायता करे ताकि यह संस्था अपने पैरों पर खड़ी हो सके।

सेठ बनवारीलाल आर्य
प्रधान आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव (भिवानी)

नेपाल में आर्यसमाज का प्रचार

पूज्य स्वामी रत्नदेव जी कुलपति कन्या गुरुकुल खरल एवं आचार्या बहन दर्शना जी राजापुर मण्डो के निवासियों द्वारा दिसम्बर १९८३ को बुलाए गए। पं० चन्द्रभान जी की भजनमण्डली सहित कुछ कन्याओं को लेकर स्वामी जी तथा आचार्या जी वहां पहुंचे। ८ दिसम्बर से ११ दिसम्बर तक दिन और रात्रि में आर्यसमाज का प्रचार चलता रहा। इन्होंने वहां पर कुछ घरों में हवन कुण्ड भी बनाए।

पं० चन्द्रभान जी के मधुर भजनों, स्वामी जी के प्रवचनों और आचार्या जी के जोशीले भाषणों से वहां की जनता मुग्ध हो गई। वहां की जनता ने इनको अति आग्रह करके कहा कि आप प्रतिवर्ष यहां पर आर्यसमाज का प्रचार करें, हमारे बच्चों को अपनी संस्था में शिक्षा प्रदान करें।

वास्तव में सच्चा मार्ग प्राप्त हो सकता है तो केवलमात्र वैदिकधर्म से, अपने जीवन में सत्यपथ से भटका हुआ मनुष्य आर्यसमाज के प्रचार से आर्य सत्संग से सम्भल सकता है। आर्यसमाज अपने वैदिक प्रचार की धूम मचाए ताकि भारत देश फिर से स्वर्ग भूमि कहलाए।

ब्र० शान्ति आर्या नेपाल

आर्यसमाज रुदड़ोल जिला भिवानी

पूज्यपाद स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने गत वर्ष हमारे गांव रुदड़ोल में आर्यसमाज का गठन किया था। आप हरयाणा के प्रत्येक ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करके संगठन को मजबूत बना रहे हैं। अतः आर्यसमाज रुदड़ोल आपका बहुत ही आभारी है तथा आपका हार्दिक स्वागत करता है।

मन्त्री—छत्तरसिंह आर्य

शोक समाचार

१—आर्यसमाज नारनौल के कर्मठ सदस्य महाशय किशनचन्द जी के आकस्मिक निधन पर २५-१२-८३ को प्रातः यज्ञ के पश्चात् आर्य समाज की साधारण सभा ने म० किशनचन्द जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार जनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

२—आर्य वीर दल के पुराने कार्यकर्त्ता तथा आर्यसमाज नारनौल के सक्रिय सदस्य महाशय टेकचन्द जी की धर्मपत्नी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट किया और परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार जनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

वैद्य हरिचन्द आर्य
प्रधान आर्यसमाज नारनौल

एक और गुरुकुल विश्वविद्यालय चाहिए

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए० बी० एड०, संगठन मंत्री (कुरुक्षेत्र)

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने गुरुकुलों को ऐसी उद्योगशाला के रूप में स्वप्न संजोया था जिनमें वास्तविक इन्सानों का निर्माण हो तथा जो मनसा वाचा कर्मणा शुद्ध आर्य (श्रेष्ठ) हों जिनके मिलन से एक ऐसे वर्णविहीन समाज की रचना हो जो समता के आधार पर लोकतान्त्रिक रूप से परिपुष्ट हो अर्थात् जहां न कोई गरीब हो, न कोई अछूत हो तथा तमाम साम्प्रदायिक संकीर्णताओं से ऊपर उठकर केवल लोकहित में प्रवृत्त हो। इसी को उन्होंने २० वीं सदी के सर्वाधिक क्रान्तिकारी आन्दोलन आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य 'संसार का उपकार करना' निश्चित किया था। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु उन्होंने गुरुकुलों के रूप में कल्पना की कि 'चाहे वह राजकुमार हो या राजकुमारी हो, चाहे दरिद्र की सन्तान हो—सबको तुल्य वस्त्र, खान पान, आसन किये जायें।' इसका अर्थ है कि बालक में जन्म से ही ऐसे संस्कार प्रेषित किये जायें जिससे वह सच्चा आर्य बन सके।

सर्वप्रथम स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर स्वामी दयानन्द की कल्पना को मूर्त रूप दिया। गुरुकुलों की स्थापना कर जहां स्वामी जी ने लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली (भारतीय काले अंग्रेज बनाने का षड्यन्त्र) का मुंह तोड़ जवाब देकर भटके हुए भारतीयों को उनके गौरवशाली अतीत का ज्ञान करा कर देशभक्ति की शिक्षा देकर यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय रचनात्मक शिक्षा प्रणाली के जनक भी हो सकते हैं। उस समय की आवश्यकता के अनुरूप देशभक्ति की शिक्षा के केन्द्र के रूप में गुरुकुलों का निर्माण हुआ जिनमें निर्मित बमों (ब्रह्मचारी छात्रों) के धमाकों से अंग्रेज सल्तनत के परखचे उड़ गये। स्वामी जी ने गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के उपरान्त गुरुकुल कुरुक्षेत्र और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ आदि की भी स्थापना की जिनसे अनेक देशभक्त, साहित्यकार, उद्योगपति, राजनेता हमारे देश को मिले। तत्पश्चात् देश के कोने कोने में अनेकों गुरुकुलों की स्थापना हुई जिनकी भारतीय इतिहास को विशेष देन रहेगी। स्वामी श्रद्धानन्द ने इन गुरुकुलों में भारतीय इतिहास, संस्कृत भाषा, संगीत, कला, उद्योग, युद्ध तथा राजविद्या आदि की शिक्षा को प्रमुखता देकर शिक्षा के नये आयाम की स्थापना कर दूरदर्शिता का परिचय दिया।

वर्तमान गुरुकुल शिक्षा प्रणाली—

वर्तमान में सैंकड़ों गुरुकुल भारत भर में ही नहीं अपितु विदेश में भी चल रहे हैं जो गुरुकुलों की लोकप्रियता के द्योतक हैं परन्तु आजादी के बाद बदलती हुई देश की परिस्थितियों के अनुसार ये गुरुकुल अपने में सामयिक परिवर्तन नहीं कर पाये। देश की आजादी की उस समय देश को मूल तथा महती आवश्यकता थी। स्वदेशी शासन जिसे गुरुकुलों व आर्य संस्थाओं की उपलब्धि माना जाये तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी परन्तु क्या वर्तमान समय में गुरुकुल समय की आवश्यकता पूर्ति करते हैं? यह प्रश्न अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा विचारणीय है।

इस समय भारत भर में गुरुकुलों का असंगठित बिखराव है क्योंकि अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुलों की शिरोमणि पथ-प्रदर्शक संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय स्वयं सही पथ पर चल रही है या नहीं इसमें अतिशयोक्ति है। चाहे जो भी कारण हों यह कहा जा सकता है कि विश्वविद्यालय की विश्वसनीयता सन्देहास्पद है यद्यपि विश्वविद्यालय द्वारा प्रदत्त विद्याधिकारी समकक्ष दसवीं तथा इसी प्रकार अन्य परिक्षाओं को मान्यता भारत सरकार द्वारा है परन्तु गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय द्वारा संचालित जो गुरुकुल हरयाणा प्रदेश में चल रहे हैं तथा जिनमें गुरुकुल कांगड़ी पाठ्यक्रम के अर्न्तगत माध्यमिक शिक्षा परिषद् उत्तरप्रदेश का पाठ्यक्रम होता है उनके प्रमाण पत्र को हरयाणा शिक्षा बोर्ड के समकक्ष क्या वरीयता दी जाती है? यदि नहीं तो क्या बेचारे छात्रों का भविष्य निर्धारण उचित रूप से किया गया या नहीं? इसके अतिरिक्त हरयाणा में स्थित गुरुकुल के दसवीं पास छात्र को कालेज में प्रवेश पाने हेतु जो पापड़ बेलने पड़ते हैं वे भी किसी से छिपे नहीं। जहां गुरुकुलीय वातावरण का प्रश्न है संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि गुरुकुल अपने वास्तविक स्वरूप को खोते जा रहे हैं और उन्होंने पुराने डी० ए० वी० स्कूल कालेजों का स्थान प्राप्त करना आरम्भ कर दिया है ज्ञातव्य है कि डी० ए० वी० संस्थाओं ने भी स्वामी श्रद्धानन्द से प्रतिस्पर्धा कर पूर्व और पश्चिम सभ्यता के समन्वय का प्रतीक डी० ए० वी० शिक्षा प्रणाली को बनाया था कुछ वैसा ही स्वरूप गुरुकुल कांगड़ी से सम्बन्धित हरयाणावासी छात्रों का है यद्यपि डी० ए० वी० स्कूलों ने समय की आवश्यकतानुसार भौतिकवादी पब्लिक स्कूल शिक्षा प्रणाली को अपनाकर शिक्षा पर अपना वर्चस्व कायम करने का प्रयास किया है। वहीं दूसरी तरफ हरयाणा में स्थित कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित छात्रों की परेशानियों ने नया रूप ग्रहण किया है तथा कुछ नये प्रश्न पैदा कर दिये हैं जैसे गुरुकुल की नवम् तथा दशम् श्रेणी का पाठ्यक्रम हरयाणा शिक्षाबोर्ड से अधिक कठिन है। नवम् श्रेणी में भी कम्पार्टमेन्ट प्रणाली हानिकारक है। विद्याधिकारी (दशम्) के प्रमाण पत्र की हरयाणा की दसवीं के समकक्ष वरीयता का प्रश्न तथा कालेज में प्रवेश हेतु अत्यधिक झंझटों को उलझन आदि ऐसे प्रश्न हैं जो शीघ्र समाधान चाहते हैं। गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का दूसरा आदर्श रूप भी है जिसको सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता आर्यजगत् के उच्चकोटि के संन्यासी और प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के पुनरुद्धारक स्वामी ओमानन्द जी द्वारा संचालित गुरुकुल झज्जर (लड़कों के लिए) कन्या गुरुकुल नरेला (लड़कियों के लिए) दोनों ही आर्ष गुरुकुल शिक्षा पद्धति पर आधारित हैं। जहां से शास्त्री तथा आचार्य की उपाधि मिलती है। यद्यपि इन गुरुकुलों का उद्देश्य प्राचीन आर्ष शिक्षा प्रणाली की पुर्नस्थापना तथा संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तैयार करना है परन्तु इनको सरकार की उपेक्षित नीति के कारण संकट से जूझते रहना पड़ता है। फिर यहां से उपाधि प्राप्त स्नातकों की मान्यता का प्रश्न तथा प्राप्त उपाधि के आधार पर रोजगार की समस्या और सामाजिक उपेक्षा जैसी समस्याओं से उलझे रहना पड़ता है। अनेकों आर्ष प्रणाली के गुरुकुल इन झंझावातों में उलझे मन्थर गति से चल रहे हैं।

उपरोक्त दोनों प्रकार के गुरुकुलों का लक्ष्य यद्यपि एक ही है, परन्तु एक निश्चित दिशा के अभाव और सरकारी उपेक्षा के शिकार ये गुरुकुल अपनी छवि खोते प्रतीत हो रहे हैं। यह स्थिती उस समय और सकटमय हो जाती है जब इन्हें शिक्षा संस्था के अतिरिक्त बाल सुधार घर (Reformatary House) मानकर लोग अपने बिगड़े बालकों की आदतें सुधारने के लिए यहाँ छोड़ जाते हैं और वर्ष छः महिने में जब बालक सभ्य दिखाई देता है तो उसे अपने घर वापिस ले जाते हैं। इस प्रकार कैसा भी सार्थक उद्देश्य कदापि सफल नहीं हो सकता फिर भी गुरुकुलों के अधिकारी अपनी समाज सेवा की आदत से लाचार सरकार द्वारा (grant) अनुदान न मिलने पर भी रात दिन गले में झोली डाल इन ब्रह्मचारियों के लिए दान मांग-मांग कर निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था करते हैं तथा अपने लक्ष्य पूर्ति और उपलब्धि की ओर से निश्चिन्त हो कर ध्यान दे पाने में असमर्थ रह जाते हैं।

अगर यूं कहा जाये कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी छात्र, अध्यापक तथा अधिकारी सभी निश्चित शिक्षा प्रणाली के अभाव में साधन विहीन असंगठित अवस्था में संशय ग्रस्त से निःसहाय लक्ष्य प्राप्ति का असफल प्रयास कर रहे हैं। (क्रमशः)

आर्य उपदेशक पं० प्रेम श्रीधर अस्वस्थ

आर्यजगत् के विद्वान् युवक निर्भीक वक्ता एवं महोपदेशक श्री पं० प्रेमजी श्रीधर एम० ए० कुछ दिनों से अस्वस्थ हैं। चिकित्सकों के परामर्शानुसार उन्हें तीन मास का पूर्ण विश्राम चाहिए।

कृपया संस्थाएं तथा श्रद्धालु भाई बहिन उन्हें तीन मास तक किसी भी उत्सव अथवा कार्यक्रमों के लिए आमन्त्रित न करें। उनके सभी पूर्व निश्चित कार्यक्रम स्थगित किए जा रहे हैं।

महावीर बत्रा एम० ए०
मन्त्री आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली

हम गणतंत्र मनाएं

भारत का शुचि स्वाभिमान हम, आओ ! करें सुजागृत
प्रगति पथों पर बढ़ता जाए प्यारा भारत देश सतत
लाए फिर से दिव्य राष्ट्र में गौरव मण्डित दिवस विगत
निर्मित करें पुनः गौरव से भरा हुआ इतिहास महत
आओ ! हम भारत का, पूरा श्रृंगार कराएं।
अमर शहीदों के स्वप्नों का गणतंत्र मनाएं ॥

महाशक्तियों ने धरती पर फैलाया है युद्धोन्माद
हिरोशिमा नागासाकी है, उनको नहीं रहा अब याद
द्वेष घृणा हिंसा दानवता बढ़ी धरा पर चढ़ा प्रमाद
स्वार्थ वृत्तियों का वसुधा पर बढ़ा असीमित है उन्माद
सत्य अहिंसा तथा शांति का जग को पाठ पढ़ाएं।
अमर शहीदों के स्वप्नों का हम गणतंत्र मनाएं ॥

राम कृष्ण गौतम गांधी ने जो है मार्ग दिखाया।
दया विवेकानन्द सदृश ऋषि ने सन्देश सुनाया
भगत बोस बिस्मिल सावरकर ने जो शक्ति जगाया
लाल बाल औ पाल गोखले ने था हमें बताया
वसुन्धरा पर उन्हीं सुतत्वों को फिर हम फैलाएं।
अमर शहीदों के स्वप्नों का हम गणतंत्र मनाएं ॥

सत्य धर्म का, मानवता का, हो नूतन स्पन्दन
शान्ति सफलता सुख समृद्धि का हो फिर अभिनन्दन
जन जन में नवजीवन आए दूर हटे भूक्रन्दन
त्याग तपों का, बलिदानों का, हो वसुधा पर बन्धन
बने महान् हमारा भारत हम कर्त्तव्य निभाएं।
अमर शहीदों के स्वप्नों का हम गणतंत्र मनाए ॥

—राधेश्याम आर्य

नया वर्ष हो मंगलमय

महाशक्तियों को आए अब
निश्चय नव सद् बुद्धि।
बाधित हो अणु के अस्त्रों की
जग में अग्रिम वृद्धि।
मानवता की विजय पताका
लहरे अवनी अम्बर निर्भय
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

सर्वनाश हो दानवता का
मिटे धरणि शोषण उत्पीड़न।
भाग्योदय हो अब जन-जन का
आँख उनींदी का उन्मीलन।
विश्व शांति की जय का डंका
बजे निरापद शीघ्र अभय।
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

सुखी तथा समृद्धि शील हों
वसुधा के सब वासी।
रोग विहीन बनें निश्चित ही
सत्वर भूमि निवासी।
मिटे धरणि पर जो विस्तृत है
निर्ममता अन्याय अनय
नया वर्ष हो मंगलमय ॥

हरयाणा रक्षा वाहिनी का विशाल सम्मेलन २२ को

सिरसा, १३ जनवरी: हरयाणा रक्षा वाहिनी की सिरसा शाखा के प्रधान श्री नित्यानन्द के अनुसार वाहिनी का विशाल सम्मेलन २२ जनवरी को आर्यसमाज मन्दिर सिरसा में होगा जिसको हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो॰ शेरसिंह, स्वामी ओमानन्द जी तथा अन्य नेतागण सम्बोधित करेंगे। (वीर प्रताप से साभार)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं॰ जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73, रजि० नं० P/RTK

सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८३



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह,   सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री,   सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ६   २८ जनवरी १९८४   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का तुरन्त हरयाणा में सम्मिलित किये जावें।

सिरसा में हरयाणा रक्षा वाहिनी की जनसभा में आर्यनेताओं की मांग

२२ जनवरी रविवार को दिन के दो बजे से लेकर पांच बजे तक सिरसा शहर आर्यसमाज मन्दिर में हरयाणा रक्षा वाहिनी की सिरसा शाखा की ओर से एक जनसभा का आयोजन किया गया, जिसमें हरयाणा के दूर-दूर तक के तथा अबोहर फाजिल्का क्षेत्र तक से पहुंच कर लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभा का मुख्य मुद्दा उग्रवादी अकाली आन्दोलन से उत्पन्न संकट रहा। इस अवसर पर अबोहर फाजिल्का से आये वक्ताओं में सर्व श्री प्रो० राजेन्द्र जी 'जिज्ञासु' आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध युवा कवि सारस्वत मोहन "मनीषी" तथा प्रो० ब्रजलाल व महन्त स्वामी कृष्णदास प्रमुख थे। अबोहर फाजिल्का से आये हुए सभी वक्ताओं ने हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा का अभिन्न अंग बतलाते हुए उसे अविलम्ब हरयाणा को दिए जाने की मांग पर बल दिया। इस मांग को मनवाने के लिए उन्होंने हरयाणा के शूरवीर साहसी देशप्रेमी लोगों को ललकार भरी चुनौती दी और २६ जनवरी १९७० के इन्दिरा गांधी के एवार्ड को लागू करवाने के लिए तैयार हो जाने के लिए आह्वान किया। साथ ही केन्द्रीय सरकार के द्वारा अब तक इसको लागू न किये जाने पर भारी रोष व्यक्त किया गया और इसे सरकार की सरासर कमजोरी कहा गया। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु तो मानो हरयाणा के शौर्यपूर्ण इतिहास को उसके शूरवीरों को जगाने के लिए दोहरा रहे थे। उन्होंने अपने भाषण में बार-बार हरयाणा की वीरभूमि की प्रशंसा की और उनसे पंजाब से अपना हक प्राप्त करने के लिए जोरदार अपील की।

प्रो० सारस्वत मोहन 'मनीषी' ने पंजाब व देश की संकटासन्न स्थिति से सम्बन्धित ओजस्वी कविता सुनाई तथा अकालियों और केन्द्र सरकार पर खुलकर व्यंग्य वाणों की वर्षा करके अपना तीव्र क्षोभ व्यक्त किया। जनता पार्टी के प्रसिद्ध नेता कामरेड शंकरलाल ने भी सरकार को अकालियों से कड़ाई से निपटने की मांग की और अबोहर फाजिल्का को तुरन्त हरयाणा को दिए जाने की बात कही। उन्होंने चौ० देवीलाल की भी इस बात को लेकर आलोचना की कि वे स० प्रकाशसिंह बादल से दोस्ती होने के कारण हरयाणा के हितों के लिए उनके खिलाफ कुछ भी नहीं बोल रहे हैं। इनके बाद ने हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रचारमन्त्री और युवा आर्य नेता श्री धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए० ने हरयाणा रक्षा वाहिनी को सर्वदलीय मंच बताकर तथा प्रो० शेरसिंह द्वारा समय समय पर केन्द्र सरकार से बेझिझक न्यायोचित बात कहने पर हरयाणा रक्षा वाहिनी की किसी दल विशेष के प्रति प्रतिबद्धता के आरोप का करारा जवाब दिया। उन्होंने उग्रवादी आतंककारी अकाली आन्दोलन के लिए प्रमुख चार कारण गिनाये। सर्वप्रथम उन्होंने संविधान में प्रदत्त भाषायी व क्षेत्रीय अल्पसंख्यकों को विशेष सुविधाएं देने की व्यवस्था को दोषी ठहराया और अल्पसंख्यक आयोग को अविलम्ब भंग करने की केन्द्रीय सरकार से मांग की। दूसरा कारण उन्होंने विदेशी और देशी साम्प्रदायिक व साम्राज्यवादी शक्तियों को बताया जो कि भारत की अखण्डता को भंग करने पर तुली हुई हैं और राष्ट्रद्रोही उग्रवादियों को आश्रय दे रही हैं। तीसरा कारण उन्होंने अकालियों की नियत की कमी को बताया। उन्होंने कहा कि अकालियों को लोकतन्त्र में विश्वास नहीं रहा है वे जोर जबरदस्ती से अपनी नाजायज मांगें मनवाना चाहते हैं और देश-विदेशी राष्ट्रविरोधी शक्तियों के हाथों में खेल रहे हैं। उग्रवादियों के आतंक की निरन्तरता और अराजकता का कारण उन्होंने केन्द्रीय सरकार की शिथिलता को बताया। इसे चौथा कारण मानते हुए उन्होंने केन्द्रीय सरकार पर हरयाणा और पंजाब के हिन्दुओं के हितों की लगातार सरासर अनदेखी करने का आरोप लगाया। प्रचार मन्त्री ने उल्लेख किया कि १९५६ से लेकर अब तक कितने ही फैसले हरयाणा और पंजाब को लेकर दोनों राज्यों के बीच में हुए हैं लेकिन अकाली अपने द्वारा पहले माने हुए फैसलों को भी अमान्य करके बेईमानी कर रहे हैं। हरयाणा को उसके हिस्से से भी कम (३५ लाख एकड़ फुट) पानी देकर भी अकाली राजी नहीं हैं जबकि १५ लाख एकड़ फुट पानी हमारा मुफ्त में हर वर्ष पाकिस्तान को बेकार में जा रहा है। अकालियों को वह स्थिति तो स्वीकार है लेकिन अपने भाईयों को उनका उचित अधिकार देना स्वीकार नहीं। उन्होंने मांग की कि केन्द्रीय सरकार तुरन्त १९७० का एवार्ड लागू करके हरयाणा को अबोहर फाजिल्का तथा उसके हिस्से का पानी लिंक-नहर का स्वयं निर्माण कराके दें अन्यथा हरयाणा रक्षा वाहिनी हरयाणा व्यापी जन-आन्दोलन छेड़कर अकालियों और सरकार को अपना अधिकार देने के लिए बाध्य कर देगी। उन्होंने हिन्दू सिखों को एक मानते हुए हिंसक गतिविधियों के लिए सिखों को गुरुद्रोही बताया और उनसे शान्तिपूर्वक रास्ता अपनाने की अपील की।

इसके अतिरिक्त इस सभा में कार्यकर्ता श्री बलदेवसिंह आर्य, श्री रणजीतसिंह बलोई आदि ने सक्रिय रूप से भाग लेकर सफल बनाया। सभा की अध्यक्षता हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रांतीय संयोजक महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी ने की। अस्वस्थ होने के कारण प्रो० शेरसिंह इस सम्मेलन में नहीं पधार सके। यह जनसभा उत्साहपूर्वक वातावरण में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुई।

प्रिंसिपल

सर्वहितकारी को सहयोग देने वालों का धन्यवाद

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महोपदेशक पं० चन्द्रदेव वैदिक मिशनरी ने गत मास सर्वहितकारी के पुराने ग्राहकों से शुल्क प्राप्त करने तथा नये ग्राहक बनाने के लिए सिवानी जि० भिवानी, डबवाली जिला सिरसा का भ्रमण किया। श्री हनुमान आर्य सिवानी तथा श्री रामकिशन गुप्त डबवाली ने इस कार्य में पूर्ण सहयोग दिया। दोनों नगरों में ७५ के लगभग ग्राहक बने। श्री सत्यपाल जी बंसल फतेहाबाद ने भी सर्वहितकारी की प्रसार संख्या में वृद्धि करने में सराहनीय योगदान किया।

व्यवस्थापक

मद्यपान और अपराध

सामान्यतया मद्यपान से तात्पर्य शराब पीने से है, लेकिन विशिष्ट चर्चा में ऐसे ठोस एवं द्रव पदार्थ जिनके सेवन से नशे की अनुभूति होती है वे सभी पदार्थ मद्यपान की श्रेणी में आते हैं, इनमें मुख्य शराब, गांजा, भांग, अफीम, चरस, कोकीन तथा तम्बाकू हैं। इनके सेवन से मनुष्य की बुद्धि, मन, शरीर और, समस्त ज्ञान व कर्मेन्द्रियों पर एक विशेष प्रकार का घातक प्रभाव तुरन्त या धीरे-धीरे पड़ता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक विशेषज्ञ ने कहा है कि मद्यपान के तीन लक्षण होते हैं—

(1) मद्यपान की मात्रा निरन्तर बढ़ाते रहने की प्रवृत्ति।

(2) मादक वस्तुओं पर मानसिक और शारीरिक निर्भरता होना।

(3) अनिवार्य रूप से या मजबूरी के दर्जे किसी भी प्रकार से मादक वस्तु को प्राप्त करना।

जब कोई व्यक्ति सामाजिक मूल्यों के विरुद्ध कार्य करता है जिसके लिए दंड का विधान है, उसे हम अपराध कहते हैं। अपराध एक सापेक्षिक धारणा है। अपराध के बारे में कोई एक निश्चित धारणा नहीं है कि यही नाप-तोल प्रत्येक समाज में अपराधों को नापने के लिए होगा। अपराध की धारणा विभिन्न कालों तथा सभाओं में भिन्न-भिन्न हुआ करती है। भारतवर्ष में शराब पीना एक सामाजिक अपराध माना जाता है क्योंकि ऐसे आचरण भारतीय सामाजिक मूल्यों के विपरीत है।

बहुत से अपराधों का कारण मद्यपान ही होता है। पाश्चात्य देशों तथा भारत में जो अपराधी पाये गये हैं उनमें अधिकतर मद्यपान के आदी थे अर्थात् नशे की हालत में व्यक्ति अधिक अपराध करते हैं। शेल्डेन तथा ग्लूएक के अध्ययनों से पता चलता है कि अधिकांश अपराधी शराब या अन्य नशीली वस्तुओं का प्रयोग करते हैं। यही कारण है कि वे अपनी सामान्य बुद्धि का प्रयोग नहीं कर पाते हैं और अपराधी कार्यों में उलझ जाते हैं। नशा या मद्यपान मनुष्य की स्मरण-शक्ति का हनन करके उसे धूर्त व पापी बना देता है। मद्यपान करने वालों की आर्थिक दशा खराब हो जाती है जिसके कारण वह चोरी तथा डाका डालने के लिये तत्पर हो जाते हैं और इस क्रिया के दौरान हत्या और बलात्कार की पूरी सम्भावना रहती है। अतः हम कह सकते हैं कि मद्यपान करने वालों को संख्या चोरी, हत्या बलात्कार करने वाले अपराधियों में अधिक होती है।

श्री एस० पी० मिश्र ने अपनी पुस्तक अपराध शास्त्र के मूल तत्व, में प्रोफेसर टैफ्ट के कथन को उद्धृत करते हुए लिखा है कि तर्क और प्रकरणों के अध्ययन यह इंगित करते हैं कि बहुधा मद्यपान और अपराध में उचित कारणीय सम्बन्ध होता है।

'हिलो' का मत है कि यदि मद्यपान का पूर्ण निषेध कर दिया जाय तो अपराध में कम से कम २० प्रतिशत की कमी तो तुरन्त आयेगी। एक अन्य विद्वान् का मत है कि शराब न पीयें तो देश में (भारत में) प्रतिवर्ष १८ से २० हजार तक होने वाली मोटर दुर्घटनाएं रोकी जा सकती हैं।

क्षणिक आनन्द की अनुभूति के वास्ते मौत के घाट उतरने वालों की सूची काफी हद तक हृदयविदारक है। इनमें समस्त मृतकों का गुर्दा व जिगर जहरीली शराब के कारण खराब हो जाने से मृत्यु हुई थी।

एक अनुमान के अनुसार जहरीली शराब पीने से प्रतिवर्ष औसतन १००० लोग मरते हैं और इतने ही आंखों को ज्योति खो बैठते हैं। मरने वालों में वे लोग शामिल नहीं हैं जिन्हें जहरीली शराब-तिल तिलकर मारती है अर्थात् जो गुर्दे व जिगर की बीमारी से मरते हैं।

एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में डा० सुलीवन के कथन को उद्धृत करते हुए डा० के० के० मिश्र ने अपनी पुस्तक 'सामाजिक विघटन' में लिखा है कि मद्यपान से लगभग ५० प्रतिशत अपराध होते हैं। लाम्ब्रोसो के अनुसार जर्मनी में प्रथक्करण एवं तलाक का प्रमुख कारण मद्यपान है। आस्ट्रेलिया में कुल १७९ बलात्कारों तथा अन्य अपराधों में ४६ मद्यपान के कारण हुए थे। इस प्रकार मद्यपान के कारण अनेकों प्रकार के अपराध दिन-प्रतिदिन बढ़ते रहे हैं।

उपरोक्त विवरणों के अनुसार मद्यपान मनुष्य के जीवन को नरक बनाने में पूर्णतया सक्षम है और सबसे अफसोसनाक बात यह है कि सम्प्रति भारतवर्ष में मद्यपान का प्रचलन दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। अतएव निश्चय ही मद्यपान आज की चिन्ता का विषय है जिसका विकल्प ढूंढना आज के युग की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

गांधी जी ने मद्यपान की निन्दा करते हुए कहा था कि "पूर्ण मद्यनिषेध ही इसका एकमात्र विकल्प है"। भारतवर्ष में नशाबन्दी अथवा मद्यनिषेध के क्षेत्र में कोई शक्तिशाली कदम नहीं उठाया गया है। राज्यों ने अपने स्तर पर मद्यनिषेध कानून बनाये हैं।

संविधान में निर्देश दिये जाने के बाद भी पूर्ण मद्यनिषेध न लागू हो पाने के निम्नलिखित कारण हैं :—

१. मद्यपान के व्यापार से राज्य सरकारों को प्राप्त होने वाला राजस्व।

२. मद्यपान उद्योग में लगे श्रमिकों की समस्या।

३. मद्यपान के लती व्यक्तियों की पिपासा की शान्ति हेतु वैकल्पिक उपाय का अभाव।

४. जन समर्थन का अभाव।

बहुत ही दुःख के साथ कहना पड़ रहा है कि भारत के लोग जितना मद्यपान के दुष्परिणामों के प्रति चिन्तित हैं, उतना ही वे इसके विकल्प की तलाश में लापरवाह दिखाई पड़ते हैं। घटनाएं जब बढ़ती हैं तब स्थानीय दो-चार दुकानदारों को जेल में डाल दिया जाता है। दुकानें एक आधा महीने बन्द रहती हैं। मृतकों के परिजनों को कुछ धनराशि मिल जाती है। पत्र-पत्रिकाओं में खूब बयानबाजियां होती हैं और यदि जनाक्रोश काफी विकराल हुआ तो जांच कमेटी गठित कर दी जाती है और पुनः दुकानदार जेल छूट आकर अपनी मौत की दूकान फिर चलाने लगते हैं।

ऐसी विषम परिस्थितियों में क्यों न शराब के निर्माण पर ही पाबन्दी लगा दी जाये और जिस गन्ने के शीरे से जानलेवा शराब बनती है उससे हम पावर अल्कोहल बनायें जिससे देश के सारे यातायात के संसाधन संचालित हों और तेल के आयात पर होने वाली भारी धनराशि जन-कल्याण के अन्य कार्यों में लगायी जाये। अनुमान है कि यदि पूर्ण मद्यनिषेध लागू कर दिया जाये तो इससे १८ करोड़ लीटर अल्कोहल फालतू बचेगा, इसके अलावा खांडसारियों में जो शीरा बेकार हो जाता है उससे पांच करोड़ लीटर अल्कोहल प्राप्त किया जा सकता है।

दुनियां में ब्राजील एक ऐसा देश है जहां गन्ने के शीरे से पावर अल्कोहल सर्वाधिक बनाया जाता है। ब्राजील सरकार का डाक-तार विभाग अपनी सभी गाड़ियों को केवल पावर अल्कोहल से चला रहा है। इन गाड़ियों के रखरखाव का खर्चा तथा इंजन की दशा पेट्रोल के इन्जन के समान ही है। एक लाभ पेट्रोल की तुलना में अधिक यह है कि अल्कोहल चालित इन्जन गर्म नहीं होते तथा पेट्रोल की भांति हवा को प्रदूषित नहीं करते। डाक-तार विभाग (ब्राजील) की एक गाड़ी तो २ लाख कि० मी० से अधिक की दूरी केवल अल्कोहल इधन द्वारा तय कर चुकी है।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सिखों को भड़काने के लिए 'कौम' शब्द का दुरुपयोग

आज अकाली नेतृत्व कौम शब्द को किस राजनीतिक रंग में रंग रहा है। पचास वर्ष पूर्व तक पजाब मे व्यक्तिगत विवरण देते हुए क्या यह नहीं लिखा जाता रहा, सरदारसिंह वल्द रामसिंह कौम जाट धर्म मजहब सिख, बाशिंदा माल रोड, लाहौर। इस सारे संदर्भ में अकाली दल किस दोगलेपन से काम ले रहा है।

अभी पिछले दिनों हमारे राष्ट्रपति श्री जैलसिंह ने अकाली नेता श्री हरचन्दसिंह लौंगोवाल के इस कथन का कि 'सिख एक अलग कौम है' बड़े जोरदार शब्दों में खण्डन किया। उन्होंने कहा कि 'कौम' शब्द की बड़ी ही बेतुकी व्याख्या की जा रही है। अच्छा होता यदि लौंगवाल ने राष्ट्रत्व (नेशनहुड) की मूल धारणा का अध्ययन किया होता और दस गुरुओं या 'गुरु ग्रन्थ साहिब' के उपदेशों में से एक भी ऐसा शब्द उद्धृत किया होता जिससे सिखों को एक 'अलग कौम' बताया गया है।

जो सिख युवक अपने को अराजकतावादी या उग्रवादी कहना अधिक पसन्द करते हैं और दल खालसा या ऐसे ही किसी दूसरे नाम के संगठन के झण्डे तले हिंसात्मक कार्य कर रहे हैं। उनको भड़काने के लिए अकाली, भिंडरांवाले और दूसरे उग्रपंथी गुरु गोविन्दसिंह द्वारा प्रयोग में लाए गए 'कौम' शब्द का बार-बार दुरुपयोग कर रहे हैं, जिसके फलस्वरूप हमारे देश में आज हिंसा का ताण्डव हो रहा है। कहा जाता है कि ये युवक किसी विदेशी शक्ति की प्रेरणा और बहकावे के कारण ऐसा कर रहे हैं। ये पथभ्रष्ट युवक अमेरिकन ढंग के मनचले युवकों की तरह हैं, वे न तो उस देश के प्रति वफादार हैं जिनसे उन्हें दत्तक के रूप में अपनाया है, न ही उस देश के प्रति जिसके वे मूल निवासी हैं और न ही उस धर्म के प्रति जिसके वे अने को अनुयायी मानते हैं। श्री जैलसिंह ने स्पष्ट शब्दों में कहा कि ये पृथकतावादी युवक केवल 'सिख पथ' को कलंकित करना चाहते हैं।

कौम का अर्थ

'कौम' किसे कहते हैं? मुस्लिम और ब्रिटिश काल में कौम शब्द का प्रयोग केवल व्यक्ति के मूल सम्प्रदाय की पहचान के लिए किया जाता था। हर प्रकार के दस्तावेजों में चाहें यह पासपोर्ट हो या सम्पत्ति पत्र या शैक्षणिक आवेदन पत्र या, नौकरी के लिए लिखी गई अर्जी या हल्फनाम (एफीडेविट) लोगों को उसमें अपनी कौम का उल्लेख करना पड़ता था सिखसमुदाय के लोग अक्सर अपना परिचय इन शब्दों में लिखते थे– सरदारसिंह वल्द रामसिंह कौम जाट धर्म मजहब सिख राशिन्दा माल रोड लाहौर। सदियों की इस परम्परा के बावजूद आज सहसा कौम शब्द की व्याख्या एक राष्ट्र के रूप में की जाने लगी है, जो न तो व्युत्पत्ति और न ही प्रयोग की दृष्टि से सही है। यह न गुरु गोबिन्दसिंह के समय में सही था, न कभी बाद में। आज इसकी जो व्याख्या की जा रही है वह शुद्धतः राजनीतिक है और उसका उद्देश्य अमंगलकारी है।

यह उन असंतुष्ट सिखों के इरादे का भी द्योतक है जो साम्प्रदायिकता की आग फैलाकर नेता बनना चाहते हैं। श्री भिंडरावाले खोमेनी से प्रेरित हैं और उनकी पीठ पर विदेशी शक्ति का हाथ है। उन्होंने बी. बी. सी. के संवाददाता के सामने अलग कौम की जो बात कही थी और भारत सरकार पर सिखों के प्रति अत्याचार करने का जो आरोप लगाया था उससे उनकी राजनीतिक चाल बिल्कुल स्पष्ट हो जाती है। उनके जो साथी या दूसरे अराजकतावादी हिंसा की बातें या काम कर रहे हैं उनका विरोध करने में उन्होंने एक बार भी अपनी जबान नहीं खोली उन्होंने पंजाब के निवासियों के बीच शान्ति-स्थापना की कोई चेष्टा की।

यह दोगलापन

श्री लौंगोवाल स्वयं तो भारत में गुलाम नहीं बल्कि प्रथम श्रेणी के नागरिक की तरह रहना चाहते हैं, किन्तु पंजाब के गैर सिखों को वह गुलामों से भी बदतर रखना चाहते हैं और उन्हें जीवन यापन करने या पूजा करने तक के अधिकार से वंचित रखना चाहते हैं। यह न तो कोई बुनियाद विचार है न इसमे अलग राष्ट्रवाद की कोई छाया है। यह तो स्पष्ट रूप से समाज विरोधियों और देशद्रोहियों का दृष्टिकोण है। भिंडरावाले ऐसी उत्तेजक बातें बेधड़क कह सकते हैं, स्वयं यही बात प्रमाणित करती है वह एक प्रथम श्रेणी के प्रजातन्त्र के एक प्रथम श्रेणी के नागरिक हैं एक ऐसा प्रजातन्त्र जिसने उन्हें इस तरह बोलने की छूट दे रखी है।

सिखों के प्रारम्भिक गुरु

सिख (वस्तुत. शिष्य) ब्राह्मण हिन्दुओं से पृथक हुई एक जाति है। इस बात की पुष्टि उन गुरुओ के कार्य कलापों से होती है जो ब्राह्मण नामों को पूजते थे और जयदेव, रामानन्द और कबीर जैसे महान् वैष्णव अध्यात्मवादियों के भजन आदि से प्रेरणा ग्रहण करते थे। सिख पन्थ सदा ही सामाजिक सुधारो के लिए लड़ता रहा और उसने जाटों तथा गुजरों को अपनी जमात में स्थान दिया। सिख पन्थ के संस्थापक गुरु नानक स्वयं लाहौर के निकट तलवंडी के एक क्षेत्रीय परिवारों में जन्मे थे (१४६८)। उनके दो पुत्र थे– श्रीचन्द और लक्ष्मीदास किन्तु उन्होंने गुरु पद के लिए लेहना नाम के एक दूसरे क्षेत्रीय को प्रस्तावित किया था। यही बाद में अंगद कहलाए।

गुरु अंगद ने सिख सम्प्रदाय को एक ऐतिहासिक देन दी। उन्होंने 'ग्रन्थ साहिब' का आरम्भ किया जिसमें उन्होंने गुरुनानक के उपदेशो को सम्मिलित किया और कुछ अपने भजन भी जोड़े। इसे सिख समुदाय की बोली जाने वाली भाषा के निकट लाने के लिये उन्होंने शारदा लिपि की स्थापना की और उसे गुरुमुखी नाम दिया।

१५५२ में अपनी मृत्यु से पहले गुरु अंगद ने अपने पुत्रों को अपना उत्तराधिकारी न बनाकर अमरदास नाम के एक दूसरे क्षत्रिय को गुरुपद के लिए नामजद किया। रामदास के सुधार बड़े महत्त्वपूर्ण थे। उन्होंने भिन्न-२ जातियों के अपने शिष्यों (सिखों को एक साथ बैठकर भोजन करने का निर्देश दिया। १५७४ में उनकी मृत्यु हो गई और गुरु-पद वह अपने दामाद जेठा के लिए छोड़ गए। जेठा ने अपना नाम रामदास रखा उनकी सबसे बड़ी देन थी अमृतसर में १५७९ में स्वर्ण मन्दिर की स्थापना जो बादशाह अकबर द्वारा दी गई भूमि पर खड़ा किया गया।

१५८१ में उनकी मृत्यु हो गई। वंश-परम्परा के अनुसार उन्होंने अपने तीसरे पुत्र अर्जुनदेव को अपना उत्तराधिकारी बनाया। ध्यान रहे अंगद की ही भांति अर्जुन भी रामायण और महाभारत के नायकों के नाम हैं और देव शब्द जम्मू के एक पुराने राजपूतवंश का नाम है।

गुरु अर्जुनदेव ने अपने समय में शाहजादा खुसरो को अपने बाप जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह करने में सहायता दी। बादशाह ने उन पर २ लाख रुपये का जुर्माना किया, जिसे न अदा करने के फलस्वरूप वह १६०६ में मार डाले गए।

गुरु अर्जुनदेव अपने पुत्र और उत्तराधिकारी हरगोबिन्द के लिए यह आदेश छोड़ गए कि 'गद्दी' को शस्त्रों के बल पर कायम रखा जाए। गुरु-पद पर बैठते समय गुरु हरगोबिन्द को परम्परा के अनुसार पगड़ी और हार पहनाया गया किन्तु उन्होंने इनके साथ पर कड़ा और किरपान का प्रयोग किया। इसके कारण सिख सम्प्रदाय ने एक सैनिक समुदाय का रूप धारण किया। १६४५ में उनकी मृत्यु सतलुज के ऊपरी भाग में स्थित कीरतपुर नामक एक दूर-दराज के गांव में ही गई। शायद अमृतसर को वह अपने लिए सुरक्षित स्थान नहीं समझते थे।

गुरु हरगोबिन्द के पौत्र और उत्तराधिकारी हर राय ने भी राजनीति में हाथ डाला और दाराशिकोह को सहायता दी। १६६१ में उनकी मृत्यु हो गई और उनसे छोटे भाई हरकिशन, जो अभी बच्चे ही थे, उनके उत्तराधिकारी बने। १६६४ में उनकी मृत्यु के बाद सीधी वंशावली समाप्त हो गई और गुरु-पद हरगोबिन्द के दूसरे पुत्र तेग बहादुर को प्राप्त हुआ किन्तु इस्लाम स्वीकार न करने कारण बादशाह औरंगजेब ने १६७५ में उनकी हत्या करा दी।

(दैनिक वीरप्रताप से साभार)

पंजाब में तत्काल कड़ी कारंवाई की जाए :—भजनलाल

हमारे कार्यालय से नयी दिल्ली, २१ जनवरी। हरयाणा के मुख्यमंत्री श्री भजनलाल ने आज पंजाब के पृथकतावादी तत्वों को तीखी आलोचना करते हुए प्रधानमंत्री एवं सभी अन्य राष्ट्रीय नेताओं से आग्रह किया कि वे इन तत्वों के साथ सख्ती से निपटे।

श्री भजनलाल आज नयी दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में सम्पन्न राष्ट्रीय एकता परिषद् को संबोधित कर रहे थे। श्री भजनलाल ने कहा कि सरकार ने बहुत समय तक धैर्य से काम लिया है। अब समय आ गया है जब कारंवाई की हो जानी चाहिए।

उन्होंने क्षोभ व्यक्त किया कि धार्मिक स्थल आज हत्यारों एवं असामाजिक तत्वों को शरण-स्थली बन कर रह गये हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि इस स्थिति से निपटने के लिए सरकार को सहयोग प्रदान करना सभी राष्ट्रीय दलों का गुरुतर दायित्व है।

श्री भजनलाल ने आरोप लगाया कि अकाली नेता पंजाब समस्या का युक्तिसंगत हल नहीं चाहते बल्कि वे किसी भी प्रकार सत्ता हथियाना चाहते हैं। उन्होंने याद दिलाया कि शाह आयोग ने चंडीगढ़ ही नहीं अबोहर एवं फाजिल्का भी हरयाणा को दिये जाने की संस्तुति की थी, लेकिन बाद में प्रधानमंत्री ने व्यापक राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए चंडीगढ़ पंजाब को और अबोहर व फाजिल्का हरयाणा को दिये जाने का फैसला सुनाया।

श्री भजनलाल ने आश्चर्य व्यक्त किया कि अकाली नेता अब चंडीगढ़ के साथ-साथ अबोहर व फाजिल्का भी पंजाब को ही दिये जाने की मांग कर रहे हैं। उन्होंने दृढ़तापूर्वक कहा कि सभी दलों को इस मामले में हरियाणा के हितों का ध्यान रखना चाहिए। (दैनिक ट्रिब्यून)

अश्लीलता के खिलाफ अभाविप का जेहाद

रोहतक ११ जनवरी (जनसत्ता)। संचार माध्यमों में नारी के शोषण के खिलाफ और हरयाणा में नारी मुक्ति के समर्थन में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् आंदोलन छेड़ रही है।

अभाविप के प्रदेश कार्यालय मंत्री महेश जोशी ने बताया कि गंदे सिनेमा पोस्टरों, विज्ञापन बोर्डों, अश्लील लोक गीतों, साहित्य और विज्ञापनों के खिलाफ परिषद् के कार्यकर्ता पूरे प्रदेश भर में धरना देंगे और हस्ताक्षर अभियान करेंगे। विद्यार्थी परिषद गुप्त रोग विशेषज्ञ डाक्टरों और उनके विज्ञापनों के खिलाफ भी आवाज उठाएगी। उन्होंने बताया कि हरयाणा में दिखाई जा रही मलयालम की अश्लील फिल्मों के खिलाफ भी आंदोलन होगा। श्री जोशी ने कहा कि यदि ये गंदे पोस्टर और बोर्ड न हटाए गए तो परिषद् कार्यकर्ता इन्हें उखाड़ फेंकेंगे और उनकी होली जलाएंगे। छात्र नेता ने बताया कि महिलाओं की शिक्षण संस्थाओं और सिनेमा-घरों में छेड़छाड़ रोकने के लिए परिषद् अपने कार्यकर्ता तैनात करेगी। उन्होंने आरोप लगाया कि हरयाणा में छेड़छाड़ की घटनाएं बढ़ी हैं और कुछ लोग सिर्फ इसी मकसद से फिल्म देखने जाते हैं। सिनेमाघरों के प्रबंधकों को चिट्ठी भेजकर परिषद ने मांग की है कि वे फिल्मों के गंदे पोस्टर और चित्र न लगाएं और न ही गंदी फिल्में दिखाएं। यदि उन्होंने ऐसा नहीं किया तो गंदी फिल्मों का प्रदर्शन नहीं होने दिया जाएगा।

(पृष्ठ २ का शेष)

भारत भी इस दिशा में प्रयासरत है लेकिन गति बहुत धीमी है। जबकि इसकी मंजिल काफी दूर है भारत में पावर अल्कोहल उत्पन्न करने के केवल २ (दो) कारखाने बनाने का फैसला किया गया है। दोनों महाराष्ट्र में बनेंगे—एक औरंगाबाद के सिलोड़ नगर में और दूसरा जलगांव के कसोदा नगर में। एक कारखाने पर एक करोड़ की लागत आयेगी।

चीनी संस्थान की नियोजनानुसार पूरे देश की खपत के लिए पावर अल्कोहल तैयार करने के लिए ११00 सुगर काम्पलेक्स की आवश्यकता है। जिसमें ३२३ चीनी मिलों को यदि सुगर काम्पलेक्स में बदल दिया जाय तथा ७७७ चीनी संस्थान में एक अद्भुत क्रांति आ जायेगी। अनुमान है कि इन कारखानों से उतना पावर अल्कोहल उत्पन्न होगा कि जिससे हमारी गाड़ियां व पम्पिंग सेट्स व अन्य कल-कारखाने चलेंगे ही, विदेशी मुद्रा भी अर्जित कर सकेंगे।

यदि भारत सरकार इस दिशा में कदम बढाये तो अब जनता का सौभाग्योदय सुनिश्चित है। काफी हद तक मद्यपान बन्द हो जायेगा। तेल आयात की पूंजी को बचाकर हम मद्यनिषेध से होने वाले राजस्व के घाटे को पूरा कर लेंगे और सुगर काम्पलेक्स के जरिये मद्यपान में लगे श्रमिकों की रोजी-रोटी यथावत् बनी रहेगी। चूंकि मद्यपान के दुष्परिणामों एवं पावर अल्कोहल के चमत्कार से आम जनता को प्रत्यक्ष लाभ पहुंचेगा जिसके कारण पूर्ण मद्यनिषेध आन्दोलन में अपना सहयोग सहर्ष देगी।

बड़े हर्ष की बात है कि शराब पीने की इच्छा दमन करने वाली दवा की खोज हो गई है। इससे भारत में पूर्ण मद्यनिषेध लागू करने में आड़े आने वाली एक और समस्या का समाधान हो गया। सोवियत श्रमिक संघ के समाचार पत्र 'त्रूद' के अनुसार सोवियत विज्ञान अकादमी के औषधि विज्ञान संस्थान के वैज्ञानिकों के द्वारा 'इनमेकव' नामक इस दवा पर किये गये परीक्षणों के अच्छे परिणाम आये हैं। इसे अगले वर्ष तक आम उपयोग के लिए तैयार कर लिया जायेगा।

अतः इन परिस्थितियों में कोई कारण नहीं होता कि राज्य सरकारें पूर्ण मद्यनिषेध लागू करके बोड़े में तबाह होकर मरने वालों को बचा न सकें तथा मद्यपान के कारण होने वाले अपराधों पर नियंत्रण न पाया जा सके।

अन्त में पियक्कड़ों से—

'त्यागो राह मयखाने की अन्यथा ऐ पीने वालों,
तड़पन, कुत्ते की मौत, नशे का हरजाना है।'

—बालकृष्ण चौधरी

कटरा : भूड़घाट रोड, गांधीनगर, बस्ती।

(मद्य निषेध से साभार)

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज ऋषिनगर सोनीपत के लिए एक योग्य, विद्वान्, संस्कार कराने में निपुण तथा उपदेश कथा करने में दक्ष एवं वैदिक साहित्य का ज्ञाता होना चाहिए। हारमोनियम तथा संगीत जानने वाले को प्राथमिकता दी जावेगी। बिजली पानी निवास रहे निःशुल्क होगा। वेतन योग्यतानुसार। स्वयं मिलें अथवा पत्र व्यवहार करें।

—डाक्टर ब्रह्मदेव बतरा

प्रधान आर्यसमाज ऋषिनगर सोनीपत

गुरुकुल विश्वविद्यालय

(गतांक से आगे)

चूंकि स्वामी ओमानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठविधि को सरकार द्वारा उपेक्षा तथा असीमित साधनों के कारण मान्यता नहीं है और गुरुकुल कांगड़ी किन्हीं कारणों से तथा आपसी झगड़ों के कारण शिथिल प्रतीत होती है अतः अब समय है कि समस्त गुरुकुलों के अधिकारी, आचार्य समस्त मतभेद भुलाकर एक मंच पर बैठकर अपनी अपनी सामर्थ्यानुसार समयानुकूल एक दिशा प्रशस्त कर शिक्षा के नए क्षेत्र खोल दें। क्योंकि वर्तमान प्रचलित भारतीय स्कूलों की शिक्षा प्रणाली मूलतः लार्ड मैकाले की शिक्षा प्रणाली पर आधारित है और पब्लिक स्कूल या कान्वेंन्ट स्कूल तो पाश्चात्य शिक्षा के पोषक हैं। मात्र अंग्रेजी सीखने की आड़ में हम अपनी भारतीय विशेषतायें खोते जा रहे हैं केवल गुरुकुल का भारतीय वातावरण ही मात्र एक आशा है क्योंकि गुरुकुल का स्नातक किसी कीमत पर भ्रष्ट, रिश्वतखोर, बेइमान या दुराचारी नहीं हो सकता अर्थात् चरित्र जैसी पूंजी केवल गुरुकुल से प्राप्त हो सकती है परन्तु जैसे कोई गुरुकुल दसवीं श्रेणी तक है। आगामी शिक्षा छात्र को अन्यत्र पूरी करनी पड़ती है तो इस मध्यावधि में कालेज एवं समाज का वातावरण उस गुरुकुलिय छात्र को प्रभावित करता है तथा गुरुकुल से प्राप्त उसके संस्कार कालेज की हवा में काई की तरह कटने छटने लगते हैं और गुरुकुल की मेहनत व्यर्थ जाती है। संक्षेप में गुरुकुल शैक्षणिक या संस्कारगत शिक्षा परिस्थितिवश दे पाने में असमर्थ होते जा रहे हैं यद्यपि यह अभाव पूरा करने का सामर्थ्य अभी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में है तथा अब भी आर्य जगत् में ऐसे शिक्षा शास्त्री और चरित्र के धनी त्यागी व्यक्ति हैं जो अपनी तपस्या द्वारा पुनः गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को उपयोगी सिद्ध कर सकते हैं और देश को नई दिशा दे सकते हैं। आर्यवृन्द! यह वर्ष युगपुरुष दयानन्द बलिदान शताब्दी वर्ष है। गत दिनों अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अजमेर में शताब्दी मनाई गई तत्पश्चात् दिल्ली और अब सभी प्रान्त अलग अलग प्रान्तीय स्तर पर शताब्दी मना रहे हैं परन्तु क्या इस समय हम अपना आत्मनिरीक्षण कर दयानन्द को श्रद्धांजली देने के अनुरूप स्वामी दयानन्द और स्वामी श्रद्धानन्द के स्वप्नों को गुरुकुल में साकार नहीं कर सकते। विशेषतः मेरा निवेदन हरयाणा के आर्यों से है क्योंकि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा भी अपनी प्रान्तीय शताब्दी समारोह मनाने जा रही है क्या ही अच्छा हो यदि हरियाणा के आर्य नेता गुरुकुल कांगड़ी को प्रतिदिन की झक झक से बचकर अपनी शक्ति एक और गुरुकुल विश्वविद्यालय हरयाणा में स्थापित कर देश की शिक्षा प्रणाली में क्रान्ति कर दें और स्वामी दयानन्द और श्रद्धानन्द के स्वप्नों को साकार करने के लिए हरयाणा में फैले तमाम छोटे बड़े गुरुकुलों को एक सूत्र में पिरोकर किसी स्थान विशेष पर गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना कर सभी गुरुकुलों में एक ही समान पाठ्यक्रम तथा स्वच्छ प्रशासन प्रचलित करें। पाठ्यक्रम में शिल्पकला तथा संगीत कला को भी स्थान देवें जिससे भारत में फैली बेरोजगारी की समस्या का समाधान भी हो सके और गुरुकुलों से ही संगीत आदि की शिक्षा लेकर उपदेशक और भजनोपदेशक आर्य समाज का प्रचार प्रसार कर सकें। इस उद्देश्य हेतु इसी विश्वविद्यालय के अन्तर्गत भजनोपदेशक और उपदेशक महाविद्यालय तथा गुरुकुलों का संचालन किया जा सकता है। संगठन, प्रशासन एवं पाठ्यक्रम और साधनों आदि पर विचार करने के लिए आर्यजगत् के उच्च कोटि के विद्वान और आचार्य एक मंच पर बैठ कर इस दिशा में प्रयास करें तो निश्चय ही सफलता मिलेगी। मेरा विश्वास है कि यदि उद्भट्ट शिक्षा शास्त्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती तथा चौ. माड़ूसिंह जी पूर्वशिक्षा मन्त्री, संचालक गुरुकुल भैंसवाल और चौ. सत्यदेव सिंह पूर्व आई.पी.एस. प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र संयुक्त रूप से प्रयास करें तो 8, 9, 10 जून को ही हरयाणा की आर्य जनता को हरयाणा प्रान्तीय दयानन्द बलिदान शताब्दी के अवसर पर एक गुरुकुल विश्वविद्यालय की स्थापना और समारोह का उपहार दिया जा सकता है।

मुझे आशा ही नहीं, अपितु पूर्ण विश्वास है कि सभी गुरुकुलों के अधिकारी और आचार्य ऐसी अनेकों समस्याओं को अनुभव करते होंगे अतः क्यों न इन समस्याओं को मिटाने के लिए कृत संकल्प होकर इस योजना पर गम्भीरता से विचार करें।

मेरा आप सभी से अनुरोध है कि इस विषय में जो भी सुझाव आपके पास हों कृपया मुझे भी सूचित करें और सभी गुरुकुलों तथा आर्यसमाज के शीर्षस्थ नेताओं और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को भी इस विषय में पत्र लिखें और उद्देश्यपूर्ति हेतु ज्ञापन भी दें। और सभी आर्य समाजें अपने साप्ताहिक सत्संग में ऐसे ही राष्ट्रीय मुद्दों पर विचारगोष्ठियां कर अपने निष्कर्षों से आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा को भी अवगत कराते रहें तो निश्चय ही देश और समाज का कल्याण हो सकेगा।

—धर्मदेव विद्यार्थी एम.ए. बी.एड.
मुख्य संरक्षक, गुरुकुल कुरुक्षेत्र
संगठन मन्त्री, वेदप्रचार मण्डल
जि० कुरुक्षेत्र (हरयाणा)

वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का चुनाव

प्रधान—श्री कृष्णलाल वधवा कुरुक्षेत्र, उपप्रधान—ला० साधुराम एम.ए. लाडवा, ला० यशपाल आर्य ठोल, पं० उमेद शर्मा कैथल, महामन्त्री—चौ० बिशनसिंह एडवोकेट, टयोंठा, संगठन मन्त्री—श्री धर्मदेव विद्यार्थी गुरुकुल कुरुक्षेत्र, उपमन्त्री—चौ० खजानसिंह जाजनपुर, श्री विद्यासागर जी शाहबाद, श्री सत्यकाम आर्य रादौर, कोषाध्यक्ष—पं० देवव्रत जी आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र।

सदस्य कार्यकारिणी—१- चौ० सत्यदेव सिंह पूर्व एस.एस.पी, २- स्वामी रुद्रवेश, ३- श्री भागसिंह आर्य खेड़ी मटूवा, ४- डा० अमीरसिंह कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, ५- डा० सर्वदानन्द आर्य प्राचार्य डी० ए० वी० कालेज पुण्डरी, ६. डा० ताराचन्द कौल, ७. श्री देशबन्धु आर्य फतेहपुर, ८. डा० ओमप्रकाश विन्दलिश पेहवा, ९. श्री गिरधारीलाल आर्य कैथल, १०. श्री हीरासिंह सरपंच रसीना, ११. श्री प्रीतमपाल एडवोकेट कौण्डचौली, १२. श्री बीरबल रसीना, १३. श्री गणेशीलाल च्यांगला, १४. श्री अमृतसिंह इंजीनियर।

इसके अतिरिक्त कुरुक्षेत्र जिला की सभी आर्यसमाजों के प्रधान पदेन सदस्य होंगे।

—धर्मदेव विद्यार्थी
संगठन मन्त्री

शोक प्रस्ताव

वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित कुरुक्षेत्र जिला की सभी धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों की एक शोक सभा गुरुकुल क्षेत्र में हुई। जिसमें आर्यजगत के संन्यासी 125 वर्षीय स्वामी भीष्म जी महाराज की आकस्मिक मृत्यु पर 2 मिनट का मौन रखकर गहरा शोक प्रकट किया गया। बैठक में स्वामी जी द्वारा की गई आर्यसमाज और देश सेवा की भावना को आदर्श मानकर उसपर चलने की प्रेरणा स्वामी जी से प्राप्त करने का संकल्प किया गया।

—मन्त्री
वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज की गतिविधियां—

चमारियां (रोहतक) में विशाल शोभा यात्रा

१४ जनवरी- आज यहां ग्राम चमारियां जिला रोहतक के उच्च विद्यालय के प्राङ्गण में सक्रान्ति के शुभ अवसर पर एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया गया। यज्ञ की कार्यवाही श्री बलदेवसिंह आर्य, श्री नफेसिंह व श्री रामेश्वर ने पूर्ण करवाई। पूरे कार्यक्रम की अध्यक्षता मुख्याध्यापिका श्रीमती रामदेवी ने की। यज्ञ के बाद श्री महावीरसिंह शास्त्री ने समाज में कुरीतियों तथा शिक्षित लोगों द्वारा आंख मूंदकर विदेशी सभ्यता व पैसे के पीछे भागने की प्रवृत्ति की तीव्र भर्त्सना की। सक्रान्ति पर्व पर प्रकाश डालते हुए श्री शास्त्री जी ने कहा कि इस दिन हमें केवल अपने सम्बन्धियों की मान करके ही संतुष्ट नहीं होना चाहिये बल्कि किसी विद्वान् का निमन्त्रित करके उसके उपदेश सुनने चाहिएं तथा विद्वानों की मान पहले करनी चाहिए। दूसरे नम्बर पर हमें सामाजिक संस्थाओं व निर्धन लोगों को इस अवसर पर अन्न वस्त्र दान करने चाहिए। हम अपनी महान् परम्पराओं को भूलते जा रहे हैं। आज हमारे घरों में या तो चरित्रहीनता के अग्रदूत एक्टरों के चित्र सजे मिलते हैं या हमने फैशनपरस्ती करके खुद ही अपने या सम्बन्धियों के चित्र घरों में लगाने शुरु कर दिए हैं। हम अपने पूर्वजों के चित्र तक भी घर में नही लगाते जो हमारे और हमारे देश के लिए हसते हंसते जान तक दे गए। हम आज कुत्सित कहानी उपन्यास व पत्रिकाएं पढ़ते हैं। हम अपने महान् पूर्वजों की कहानियां, महान् कवि व लेखकों की कृतियां नहीं पढ़ेंगे तो क्या पाकिस्तान अमेरिका और इंग्लैण्ड वाले उन्हें पढ़ने आएंगे। श्री शास्त्री ने आज की अग्रेजी परस्त शिक्षा प्रणाली संचार साधनों के दुरुपयोग की तीव्र निन्दा करते हुए ग्रामीण जन-समूह का आह्वान कि वे अपनी सभ्यता, धर्म, भाषा, खान-पान व पहरावे को न छोड़ें। उन्होंने भयंकर आक्रोश भरे शब्दों में कहा कि देश की सभ्यता व धर्म से क्रूर खिलवाड़ करते हुए आज का दूरदर्शन, रेडियो, वीडीयो, फिल्म डिविजन व गन्दे साहित्य प्रकाशक लोग और राजनेता स्वय ही अपनी देश की महान् सभ्यता की क्रूर हत्या करने पर तुले हैं हमें अपनी सन्तानों को इनसे हर हालत में बचाने का कार्यक्रम अपनाना पड़ेगा और वह रास्ता आर्यसमाज ही दिखा सकता है।

इस अवसर पर ग्रामीण जनों व युवकों ने यज्ञोपवीत धारण कर सभी प्रकार की कुरीति छोड़ समाज के लिए काम करने का व्रत लिया।

मुख्याध्यापिका श्रीमती रामदेवी जी ने माता पिता को अपनी सन्तान का भविष्य बनाने की ओर ध्यान खींचते हुए कहा कि हम विद्यालय में और घर पर बालकों का भविष्य बनाएं और इसमें हमारा सहयोग लें और हमें सहयोग दें।

इस अवसर पर ग्रामीण जन व युवक विशेष रूप से उपस्थित थे जिनमें मास्टर बलदेव सिंह, मास्टर नफेसिंह, मास्टर रामेश्वर जी का विशेष सहयोग रहा। गांव के प्रतिष्ठित सज्जनों में श्री सुरतसिंह, श्री रामसिंह, श्री पृथीसिंह, श्री रामसरुप, श्री चुनीलाल, श्री प्रतापसिंह, श्री दीपचन्द, बहन क्रान्तिकारिणी राजबाई सुबेदार हवासिंह, श्री हरिराम, श्री धूपनसिंह, श्री सुरजमल, श्री केदारसिंह, श्री सूबेसिंह, श्री महेन्द्रसिंह श्री सुभाषचन्द्र। युवकों में शमशेर, प्रतापसिंह, सतनारायण, रणवीर महेन्द्र, राजेन्द्र आदि विशेष रुचि ले रहे थे। यज्ञ कार्यवाही के बाद यज्ञ स्थल से ही सभी ग्रामीणजनों, छात्रों का दल शोभा यात्रा में बदल गया। जो पताकाएं अभी तक यज्ञवेदी के इर्द-गिर्द स्थिरता से लहलहा रही थी वे अब जोशिले युवकों के कन्धों पर आ चुकी थी। सबसे आगे दो नवयुवक छात्र जसबीर व नरेश कन्धों पर दो ओ३म् ध्वजों से जुड़ा एक विशाल मोटा जिस पर चारों वेद स्वामी दयानन्द व अन्य महापुरुषों के चित्र तथा वेदमन्त्र अंकित थे उठाए हुए थे। पीछे ग्रामीण प्रतिष्ठित जन तथा उसके बाद पूरा ग्राम समूह था। युवक व वृद्ध जन तीव्र आक्रोश के साथ निम्नलिखित नारे लगा रहे थे—

दहेज ले जो मांसमीच है, वह लड़का बेच महानीच है।
शराब पीना छोड़ दो, शराब की बोतल तोड़ दो।
तम्बाकू का धूआं, है मौत का कुआं।
अंडा मुर्गा मांस खाते, जीव हत्या का पाप चढ़ाते।
बोतल चूहड़े की पी जाते, फिर भी जात-पात फैलाते।
गो चर्बी का घी खा जाते, फिर भी हिन्दू हैं कहलाते।
चाय चमार की पी जाते, फिर भी जात-पात बढाते।
अंग्रेजों ने चाय चलाई, दूध छोड़ कमजोरी आई।
पेट टाई अंग्रेज निशानी, धोती कुर्त्ता हिन्दुस्तानी।
चोटी कटा बन गया गाड़ा, पेंट फसा हो गया उघाड़ा।
१२०० का सूट सिमाया, लाज फिर भी नहीं ढक पाया।
अंग्रेजी घटाओ संस्कृत बढाओ, हिन्दुओ वैदिक धर्म को बचाओ।
अंग्रेजी बच्चों का खून चूसती, हिन्दी को सरकार नही पूछती।
बीड़ी सिगरेट छोड़ दो, हुक्के को भी तोड़ दो।
गन्दे नाच गाने आगे, शर्म हमारी ने ये खागे।

इस प्रकार के नारे लगाता जलूस जिस गली में भी गया लोगों ने उसका भरपूर स्वागत किया। ज्यों-ज्यों जलूस बढ रहा था ग्रामीण जन उसमें मिलते जा रहे थे। चमारियां के बाद जलूस पास के दूसरे गांव छिछरौली पहुंचा। वहां टिटौली व छिछरौली की क्रिकेट खेल रही टीमों ने जलूस का स्वागत किया। १५ मिनट के लिए यहां फिर शास्त्री जी का जोरदार भाषण हुआ। जलूस छिछरौली में नारे गुंजाता हुआ वापिस आ गया। छिछरौली के प्रमुख सज्जन श्री रामनारायण, महासिंह बनीसिंह, मीरसिंह, शोभराम, रणसिंह, रामकिशन आदि ने जयघोषों में सहयोग देकर विदा किया।

इसके बाद जलूस ने चमारियां में शराब के ठेके के सामने प्रदर्शन किया। ठेकेदार श्री राजेन्द्र ने लोगों को कहा कि मैं यह धन्धा जल्दी ही छोड़कर और धन्धा करूगा। उसने जलूस में सम्मिलित होकर शराब विरोधी नारे लगाए। यहीं पर जलूस समाप्त कर दिया गया शास्त्री जी ने सभी का धन्यवाद किया।

इसके बाद विद्यालय के प्रांगण में विशिष्ट ग्रामीण जनों की सभा हुई। सभा में प्रस्ताव पारित हुआ कि गांव में आर्यसमाज मन्दिर के लिए भूमि दान ली जाए। इसमें अखाड़ा पुस्तकालय व यज्ञशाला बनवाई जाए तथा यहां पर समय समय पर उत्सव हों।

बलदेवसिंह आर्य चमारियां

आर्य उच्चतर माध्यामिक विद्यालय सिरसा

दिनांक १५-१६ जनवरी को सिरसा नगर के सबय स्टेडियम में हरयाणा तरूण संघ ने खेलों का (Atheletic meet) आयोजन किया। इसमें हमारे विद्यालय का रामनिवास जुनियर वर्ग में और ओमप्रकाश सीनियर वर्ग में प्रथम रहा। टीम ट्राफी भी हमारे विद्यालय ने प्राप्त की। विद्यालय में कुल २० मैडल प्राप्त किए।

कलयुगी भगवानों एवं कल्पित सन्तोषी माता के झूठे चमत्कारों से सावधान

प्रिय धर्म प्रेमी बन्धुओं

अपने परिवारों में वेदमाता गायत्री मन्त्र की प्रार्थना उपासना संध्या हवन आदि प्रतिदिन प्रातः सायं सपरिवार करें तो आपका जीवन स्वर्गीय आनन्दमय होकर मानव जन्म सफल बनेगा। अन्यथा अविद्या अन्धकार में पड़कर इस अनमोल मनुष्य शरीर में पशुवत रहना उचित नहीं।

नीतिकारों ने सच कहा है—

येषां न विद्या न तपो न दानम्। ज्ञानं न शीलं न गुणों न धर्मः॥
ते मर्त्य लोके भुवि भार भूताः। मनुष्य रूपेण मृगा श्चरन्ति॥

आशय जिसमें न तो विद्या है, न तप है, न ही दान करने की वृत्ति है, न वास्तविक ज्ञान है और न ही शील-संतोष व धर्म भावना है, ऐसे मनुष्य तो इस पृथ्वी पर भार रूप से पशुओं की भांति ही विचरण करते हैं।

वर्तमान युग में अवैदिक मत मतान्तर पाखण्ड जाल फैलाकर भांति भांति के झूठे चमत्कारों द्वारा धर्म और भगवान के नामों की सस्ती दुकानें खोलकर मानव को अविद्या अन्धकार में पथ भ्रष्ट करके अपना आडम्बर स्वार्थी लोग करते रहते हैं। कुछ दिन पहले एक मुसलमान अनपढ फकीर सांईबाबा नाम से शिरडी ग्राम महाराष्ट्र में था, अभी कर्नाटक प्रान्त में 'सत्य साईं बाबा' अवतार हो गये हैं, इनके पूर्व हजूर बाबा स्वामी, ब्रह्माकुमारी, आनन्द मार्गी हंसामत; भगवान् रजनीश, बालयोगेश्वर कहे या (भोगेश्वर) खुदा का इकलौता बेटा ईसा मसीह अभी कुछ ही दिनों से नये अवतार जय गुरुदेव व संतोषी माता के नाम से घरों-घरों में बिना नाम पते के सभ्य परिवारों में १६ पोस्टकार्ड डलवा कर और शुक्रवार का रोजा (व्रत) तथा खटाई आदि न खाने का अज्ञानता का प्रचार योजनानुसार किया जा रहा है। अभी एक पत्र मेरे नाम से आया था उसमें तो और भी चमत्कारों तथा परिवारजनों को भयंकर डराने वाले समाचार आये। पत्र में लिखा था कि एक भक्त ने सन्तोषी माता को प्रसन्न करने के लिए १६ जगह पोस्टकार्ड डाले तो उसके घर में हजारों रुपयों के नये नोटों के बन्डल मिले। एक नास्तिक ने पत्र नहीं लिखे और सन्तोषी माता का घोर अपमान किया, उसको दस हजार का नुकसान हो गया और उसका इकलौता पुत्र मर गया। एक श्रद्धालु भक्त ने १६ जगह सन्तोषी माता के सन्देश के पत्र लिखे तो उसकी बांझ स्त्री के वृद्ध अवस्था में सुन्दर पुत्र हो गया। प्रायः सभी पत्रों में इस आशय के झूठे गपोड़े लिखे हुए आते रहते हैं इनसे सावधान रहें।

प्रिय बन्धुओ! अपने विवेकशील बुद्धि से विचार करो। इस प्रकार के अनर्गल झूठे और सृष्टि नियम के विपरीत बिना नाम से पत्र डालकर अज्ञानता का प्रचार किया जा रहा है। वास्तविक 'पुरुषार्थ' और पुरुषत्व के बिना धन लाभ या सन्तान का हो जाना तो असम्भव है, हाँ अपनी जन्म देने वाली माता, गोमाता, भारतमाता या ज्ञानदाता वेदमाता गायत्री मन्त्र की अर्थ सहित उपासना व जप-तप ध्यान से कोई भी मानव भक्ति भाव व श्रद्धापूर्वक करे तो उसकी मनोकामना तथा सुख सम्पत्ति अवश्य मिलती है।

उपरोक्त पाखण्ड अवतार तथा कल्पित सन्तोषी माता के भ्रम जाल से स्वयं बचें और अपने मित्र परिवारों को विशेषतया अज्ञानी भावुक माताओं को सावधान करें। ऐसे झूठे अनर्गल पत्रों की अग्नि देवता के भेंट चढाने में पुण्य ही होगा। मेरे पास आये ऐसे पत्रों को यज्ञ कुण्ड में डालकर स्वाहा किया है मेरे को किसी प्रकार का आघात या नुकसान आज तक नहीं हुआ भगवान् सबकी रक्षा करता है।

हाँ! अपने किए गए कर्मों का शुभ अशुभ फल अवश्य भोगना ही पड़ता है, योगेश्वर श्री कृष्ण जी ने अपने उपदेशों में बताया है इस पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

अवश्यमेव भोक्तव्यम्, कृतं कर्म शुभाशुभम्।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म, कल्प कोटि शतैरपि॥

इस वैदिक सिद्धान्त को उपरोक्त कोई भी तथाकथित अवतार बदल नहीं सकता जैसा जमीन में बीज बोवोगे वैसा ही फल लगेगा यह शाश्वत नियम है। महाभारत शान्ति पर्व में एक सुन्दर दृष्टान्त द्वारा मानव को समझाया है इसे ध्यान पूर्व मनन करें और उस पर आचरण करें।

यथा धेनु सहस्त्रेषु, वत्सो विन्दति मातरम्।
तथा पूर्व कृतं कर्म, कर्त्तारंमनु गच्छति॥

आशय—जैसे हजारों गौओं में भी बछड़ा अपनी मां को ही जाकर मिलता है इसी प्रकार कृत कर्म कर्त्ता को अवश्य ही जाकर पकड़ता है और उसका फल भोगना ही पड़ता है। मनुष्य अपने ही कर्मों से बन्धता है छूटता है हमें अपने कर्मों का फल अवश्य भोगना पड़ेगा अतः सावधान होकर हमें शुभ कर्म ही करने का अभ्यास करना चाहिये अपने ही कर्मों से हमें बुरे दिन न देखने पड़े ऐसा यत्न करना चाहिये।

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने अपने उपदेशों में लिखा है सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिये। सत्य और असत्य को समझाने व अपने व्यवहार में लाने के लिये महर्षि का अमर ग्रथ सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय अवश्य करे।

अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में १६-१-८४ को भीलवाड़ा निवासी श्री अजयकुमार गुप्त का शास्त्रीनगर भीलवाड़ा निवासनी अंजना देवी (कायस्थ) के साथ सामाजिक रूढियों को तोड़कर अत्यन्त सादगीपूर्ण वातावरण से आर्यसमाज मन्दिर में श्री आचार्य गोविन्दसिंह जी के पौरोहित्य में अन्तर्जातीय विवाह सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित आर्यसमाज के पदाधिकारियों ने वर-वधु के मंगलमय जीवन को शुभ कामना करते हुए आर्य साहित्य भेट किया।

अजमेर में पौरोहित्य प्रशिक्षण शिविर

आर्यसमाज के क्षेत्र में पुरोहितों की संख्या कम होती जा रही है। जो थोड़े बहुत लोग मिलते भी हैं, उनमें से बहुत कम लोग ऐसे है, जिन्हें अपने कार्य मे दक्ष कहा जा सकता है। इस कमी को पूरा करने के लिए महर्षि दयानन्द निर्वाण स्मारक न्यास अजमेर ने पुरोहितों को प्रशिक्षण देने का एक कार्यक्रम चलाने का निश्चय किया है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे ऐसे लोग भाग ले सकते है जो पौरोहित्य का कार्य कर रहे है अथवा जो पौरोहित्य का कार्य करना चाहते है। इसमें सध्या, हवन व जातकर्म, नामकरण, अन्न-प्राशन, चूड़ाकर्म उपनयन और विवाह संस्कारों का प्रशिक्षण दिया जायेगा। जो व्यक्ति इस प्रशिक्षण में भाग लेंगे, उनको नियत समय तक प्रशिक्षण स्थान पर पहुच जाना होगा और जब तक प्रशिक्षण समाप्त न हो जाय तब तक निश्चित दिनचर्या के अनुसार निष्ठापूर्वक प्रशिक्षण प्राप्त करना होगा। उनके भोजन और निवास की सम्पूर्ण व्यवस्था न्यास की ओर से होगी परन्तु मार्ग व्यय तथा स्टेशनरी का भार उनको स्वयं या उनको भेजने वाली संस्था को वहन करना होगा। यह प्रशिक्षण सर्वथा नि शुल्क होगा, परन्तु अभ्यार्थियों को पजीकरण शुल्क के रूप मे मात्र दो रुपये प्रशिक्षण के पहले दिन कार्यालय में जमा कराने होगे।

आपसे निवेदन है कि आप अपने क्षेत्र में पुरोहित कर्म करने वाले अथवा पौरोहित्य कर्म करने के इच्छुक व्यक्तियों को इस प्रशिक्षण कार्यक्रम मे भाग लेने की प्रेरणा देने की कृपा करें। यह और अधिक अच्छा होगा कि आप कुछ व्यक्तियों को आर्यसमाज की ओर से भी प्रेषित करें। आपके यहां से जितने व्यक्ति यहां आ रहे हों, उनके नाम तथा संख्या ३१ जनवरी १९८४ तक हमारे पास अवश्य भेज दे, जिससे उनके निवास आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। प्रशिक्षण कार्यक्रम १५-२-८४ को आरम्भ हो जायेगा और २०-२-८४ तक चलेगा।

नोट—प्रशिक्षण में पधारने वाले महानुभाव निम्नाकित वस्तुएं अपने साथ अवश्य लावें—

१—ओढ़ने बिछाने का ऋतु अनुकूल पूरा सामान

२—लोटा, थाली, कटोरी, दो दो सौ पेज की तीन कापियां और बाल पेन।

रामगोपालसिंह, कार्यक्रम व्यवस्थापक

भूदेव शास्त्री, मन्त्री

हरयाणा के सर्वोत्तम पत्रकार-१९८३

इंडियन एक्सप्रेस के कार्यालय संवाददाता, श्री राजन जैड को रोहतक सिटिजनस क्लब द्वारा 'हरयाणा के सर्वोत्तम पत्रकार-१९८३' से पुरस्कृत किया गया है। क्लब के अध्यक्ष, श्री जादीश अग्रवाल के अनुसार श्री जैड को नागरिकों के वास्ते राज्य की शक्तियों की आलोचनात्मक छानबीन के कारण इस पुरस्कार के लिए चुना गया है।

यह इनाम उन्हें फरवरी में रोहतक में एक जन समारोह में दिया जाएगा। सर्वहितकारी परिवार की ओर से पत्रकार मित्र को हार्दिक बधाई।

खेदप्रकाश

सर्वहितकारी के ७ जनवरी के अंक के पृष्ठ २ पर डा० शान्तिस्वरूप पत्रकार, कुरुक्षेत्र का एक लेख 'गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के संस्थापक—स्वामी श्रद्धानन्द' प्रकाशित हुआ था। इस लेख में यों तो तिथि आदि की कई विसंगतियां हैं किन्तु सबसे बड़ी भूल डा० साहब से यह हुई कि स्वामी जी को २३ दिसम्बर १९२६ को एक धर्म के अन्धे मुसलमान अब्दुल रशीद ने देहली में छुरा मारकर शहीद कर दिया था। स्वामी जी की हत्या छुरा मारकर नहीं प्रत्युत् गोली मारकर की गई थी। कारणवश सर्वहितकारी कार्यालय की दृष्टि से भी यह भूल विगत हो गई जिसके लिये खेद है।

रणवीर शास्त्री
—सह सम्पादक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, ... रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र'

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक— वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क १० ७ फरवरी १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अकालियों द्वारा खालिस्तान के संविधान की घोषणा देश द्रोह है

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की एक हंगामी बैठक २७ जनवरी १९८४ को सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह के नई दिल्ली निवास स्थान १४ एम साकेत पर सम्पन्न हुई। इस बैठक में अन्य आर्य नेताओं के अतिरिक्त आर्य जगत् के विख्यात आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती भी उपस्थित थे।

एक प्रस्ताव द्वारा भारत सरकार से आग्रह किया गया है कि अब समय आ गया है कि भारत के संविधान के विपरीत पृथक् खालिस्तान के संविधान को स्वर्ण मन्दिर में जारी करने की घोषणा करने वाले देश द्रोहियों तथा गुरु द्रोहियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करके उन्हें स्वर्ण मन्दिर से बलात् बाहर निकालकर जेलों में बन्द कर देना चाहिए। प्रस्ताव में आश्चर्य प्रकट किया है कि १९६४ में विश्व हिन्दू परिषद् का गठन किया गया था तो उसमे मा० तारासिंह तथा अकाली दल के प्रधान ज्ञानी भूतेन्द्रसिंह भी विश्व हिन्दू परिषद् बनाने वालों में शामिल थे। अब अकाली दल ने मांग की है कि भारतीय संविधान के २५ वें अनुच्छेद को समाप्त करके हिन्दुओं की सूची से बोधों जैनियों तथा सिखों को निकाल दिया जावे। मा० तारासिंह आदि यदि अपने आपको हिन्दू नहीं मानते तो वे हिन्दू परिषद् के गठन में शामिल क्यो होते? भारत के संविधान तथा उसके अनुच्छेद २५ के बनाने में सिख नेता भी शामिल थे।

प्रस्ताव में अकालियों को चेतावनी दी गई है कि वे तथाकथित खालिस्तान के नक्शे की सीमा हरयाणा, हिमाचल तथा राजस्थान के क्षेत्रों पर दावा करना छोड दें। हरयाणा की वीर जनता पूर्व की भान्ति राष्ट्र की सुरक्षा एकता के लिए राष्ट्र द्रोही अकालियों का मुंह तोड़ जबाब देगी। अब उग्रवादी अकाली पृथक खालिस्तान का संविधान बनाकर भारत के टुकड़े करने का नापाक षडयन्त्र रच रहे हैं। इनकी इस देश-द्रोही मांग के पीछे विदेशी ताकतों का हाथ है। सरदार स्वर्णसिंह ने एक बार ठीक ही कहा था कि अकालियों की मांग के कारण खालिस्तान केवल चार जिलो तक ही सीमित रह जाएगा क्योंकि हिमाचल, हरयाणा तथा राजस्थान अपने प्रदेशों की एक इंच भूमि भी खालिस्तान में किसी भी मूल्य पर सम्मिलित नहीं होने देंगे।

सर्वहितकारी का ऋषि बोधांक

शिवरात्रि के अवसर पर सर्वहितकारी की ओर से २८ फरवरी को ऋषि बोधांक प्रकाशित होगा। आर्य विद्वानों से निवेदन है कि वे इस सम्बन्ध में लेख तथा कविताएं पृष्ठ के एक ओर संक्षिप्त लिखकर २० फरवरी तक कार्यालय में भेजने की कृपा करें। आर्यसमाजों से भी निवेदन है कि इस विशेषांक की अधिक से अधिक प्रतियां मंगवा कर प्रचारार्थ वितरित करें। सम्पादक

अबोहर फाजिल्का लिए बिना पंजाब को चण्डीगढ नहीं देंगे —भजनलाल

चण्डीगढ १ फरवरी (परवाना प्रे. यू) हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल ने घोषणा की है कि पजाब और हरयाणा के मध्य क्षेत्रीय विवाद को निपटाने के लिए कोई नया फार्मूला उन्हें स्वीकार्य नहीं है। उन्होंने कहा कि इस सम्बन्ध में प्रधान मन्त्री श्रीमती गांधी द्वारा १९७० में दिए गए अवार्ड को लागू किया जाए या फिर चण्डीगढ को दोनों राज्यों में ५०-५० के आधार पर विभाजित कर दिया जाए। श्रीमती गांधी के एवार्ड के अनुसार चण्डीगढ पजाब को और अबोहर, फाजिल्का का क्षेत्र हरयाणा को दिया जाना है।

आज यहां संवाददाताओं से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि क्षेत्रीय विवाद के मामले मे हरयाणा अपने पूर्व स्टैण्ड पर अटल है तथा फाजिल्का व अबोहर के क्षेत्र को हरयाणा दिए बगैर चण्डीगढ पजाब को दिए जाने का प्रश्न ही नही उठता है।

श्री भजनलाल ने कहा कि अबोहर व फाजिल्का के मध्य भूमि सम्पर्क में बाधा बनने वाले पजाब के गांव कुन्डू खेडा को यदि हरयाणा को दे दिया जाए तो फिर 'गलियारा' दिए जाने का मामला स्वत: ही समाप्त हो जाएगा।

श्री भजनलाल नई दिल्ली के १५० पंजाबी बुद्धिजीवियों के उस बयान पर टिप्पणी कर रहे थे, जिसमें उन्होंने गलियारे के सिद्धान्त को खतरनाक बताया था। उन्होने कहा कि यह बात लोगों को भ्रमित करने के लिए कही जा रही है।

श्री भजनलाल ने कहा कि कुन्डूखेड़ा गांव पहले फाजिल्का तहसील का हिन्दी भाषी भाग था, जिसे बाद मे मुक्तसर तहसील में मिला दिया गया। उन्होंने उस कथित फार्मूले को एक हवाई बात बताया कि चण्डीगढ पंजाब को दिया जा रहा है जबकि फाजिल्का पजाब में ही रहेगा तथा अबोहर हरयाणा को दिया जा रहा है श्री भजनलाल ने कहा कि ऐसा कोई प्रस्ताव उनके ध्यान में नहीं है।

उन्होंने कहा कि प्रधान मन्त्री के १९७० के एवार्ड में अबोहर तथा फाजिल्का नगरों के साथ साथ इन क्षेत्रों के १०९ गाव तथा चण्डीगढ के निकटवर्ती तीन गांव हरयाणा को चण्डीगढ के बदले में दिए जाने थे।

सम्पर्क नहर

उन्होने कहा कि सतलुज यमुना सम्पर्क नहर परियोजना सगठन को खत्म करने का प्रश्न नही उठता। केन्द्र के तत्वावधान में परियोजना के निर्माण कार्य का मूल्यांकन करने के लिए शीघ्र ही बैठकें हो रही हैं।

(पंजाब केसरी से साभार)

वेदप्रचार का प्रथमसोपान

पं० वीरसेनजी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य महारानी पथ इंदौर

(१) वेद संरक्षण कार्य—प्रारम्भिक प्रयत्न

आर्यसमाज ने गत एक शताब्दी में वेदों के प्रचार का कार्य न किया होता तो भारत से वेद प्रत्यक्षतः विलुप्त ही हो जाते और उनके दर्शन भी दुर्लभ हो जाते। वेद के नाम पर अनेक ग्रन्थों का प्रचलन हो गया था। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वेद को पढ़ना पढ़ाना सब आर्यों का परम धर्म घोषित करके हमारे दैनिक कर्म में संध्या हवन, पंच महायज्ञ को प्रतिष्ठित करके वेदों को संरक्षण प्रदान किया। अन्यथा बाइबिल की प्रतिष्ठा अंग्रेजी शिक्षा से दीक्षित जनों में बढती जा रही थी। भारतवासी जन वेद को व्यवहार में भुला बैठे थे। कोई गीता को कोई रामायण को, कोई हनुमान चालीसा, शिव महिम्न, स्तोत्र, रामरक्ष स्तोत्र, विष्णु सहस्र नाम आदि को वेद मान बैठे थे। जिन वंशों में वेद की रक्षा परम्परा से होती थी उनकी सन्तानों ने भी वर्तमान काल में आर्थिक परिस्थिति के कारण अन्य विषयों का अध्ययन कर दिया तथा वेद को त्याग दिया।

(२) वेदाध्यन प्रचार—द्वितीय प्रयत्न

वेद के प्रचार मात्र की वृद्धि के लिए अग्रसर होकर आर्यसमाज ने वेदों का प्रचार अनेक प्रकार से किया। आर्यसमाज का शिक्षण संस्थाओं में नित्य सन्ध्याहवन, प्रार्थनायें वेदमन्त्रों से होने लगी। छोटे बड़े सभी में वेदों के प्रति रुचि बढ़ी और गायत्री मन्त्र घर-घर में आबालवृद्धों में प्रचलित हुआ। आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में पढ़ने आने वाले हिन्दू, सिक्ख, जैन, अछूत, मुसलमान, बालक बालिकाओं को अनेक वेद मन्त्र याद हो गये। अभी २ वर्ष पूर्व एक मुस्लिम विद्यार्थिनो का पत्र श्रीनगर से प्राप्त हुआ था उसमें लिखा था कि मैं यहां आर्य पाठशाला में पढती हू। सन्ध्या मुझे याद है और नित्य सन्ध्या भी करती हूं। मेरा ध्यान उसमें बहुत लगता है अतः सन्ध्या योग रहस्य की एक प्रति भेज दीजिये। इसी प्रकार आर्यसमाज के प्रभाव से वेदमन्त्रों का प्रचार बढा। जो गुरुमन्त्र गायत्री किसी को सुनने को नहीं मिलती थी आज उसी के प्रचार व साधना की अनेक संस्थायें कार्यरत हैं। यह सब आर्यसमाज के वेद प्रचार का ही प्रभाव है।

(३) मन्त्रोच्चारण एवं क्षन्तव्य स्थिति—

वेदप्रचार का प्रारम्भिक वह समय था। उस समय मन्त्रों के शुद्ध उच्चारण की ओर भी आर्यसमाज प्रयत्नशील रहा। पंजाब प्रांत, सिंध, बिलोचिस्थान, फ्रन्टियर, कशमीर आदि प्रान्तों में हिन्दी भाषा का अभाव था। उर्दू, गुरुमुखी आदि लिपि में सन्ध्या हवन आदि की पुस्तकों के माध्यम से जिसने वेदमन्त्रों का अभ्यास किया उनमें लिपि दोष से कुछ उच्चारण दोष भी हुए, परन्तु उनको उपेक्षित करके वेदों का प्रचार बढा। उस समय में सस्वर वेद मन्त्रों के उच्चारण को आर्यसमाज ने पूर्ण उपेक्षित कर दिया था। अतः सस्वर वेदमन्त्र पाठ का प्रचलन न हो सका तथा आर्यसमाज के प्रभाव के कारण गायत्री नाम पर जो बड़ी संस्थायें खुली उनमें भी सस्वर वेद पाठ का अभाव ही रहा। इस प्रकार आज स्वर रहित मन्त्र पाठ का ही प्रचलन हो तभी उससे विविध विद्या और विज्ञानों का प्रकाश होगा। अतः अब इस शताब्दी में आर्यसमाज सस्वर मन्त्र पर विशेष ध्यान दे। आर्यसमाज के ही ध्यान देने से अन्य संस्थायें भी सस्वर मन्त्र पाठ की ओर अग्रसर होंगी। अन्यथा नहीं।

(४) सस्वर मन्त्र पाठ का प्रचलन—तृतीय प्रयत्न

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है उसको शुद्ध और सस्वर पढ़ने से सत्य की रक्षा व प्रचार होगा। उसको अशुद्ध बोलने से चाहे वह वर्ण की दृष्टि से अशुद्ध हो या उदात्तादि स्वरों से अशुद्ध हो, असत्य ही होगा और अपने सत्य अर्थ को प्रकट करने में असमर्थ होगा तथा असत्य अर्थ को प्रकट करेगा। अतः शुद्ध एवं स्वर सहित मन्त्र पाठ प्रचलित करना अत्यन्त आवश्यक है। हमारे दैनिक व्यवहार में सन्ध्या, यज्ञ, उपासना, पाठ आदि में जो मन्त्र हैं उन्हीं का शुद्ध एवं सस्वर मन्त्र पाठ प्रथम प्रचलित करना चाहिये। जो विद्वान् माने जाते हैं और यज्ञों के ब्रह्मा भी बनते रहते हैं उनकी भी दैनिक मन्त्रों में अनेक अशुद्धियां होती हैं और वे इतनी अभ्यस्त एवं उपेक्षित हो गई हैं कि उनकी ओर किंचित् मात्र भी ध्यान नहीं जाता। ध्यान दिलाने पर ही त्रुटियां ज्ञात होंगी अन्यथा नहीं। अतः इनके शिक्षण के लिये सस्वर वेदपाठ शिक्षण शिविरों का व्यापक रूप से आयोजन हो और उनमें सभी को एक बार शिक्षणार्थ आना चाहिये। चाहे वे गुरुकुलों के आचार्य हों, समाजों के प्रधान हो, चाहे वे उपदेशक विद्यालयों के आचार्य ही क्यों न हों।

वानप्रस्थ संन्यास मण्डल ने भी इसमें अतिशीघ्र अग्रसर होना चाहिये। अन्यथा अशुद्ध पाठ और मनमाने स्वर रहित पाठ से कल्याण नहीं होगा। महा भाष्यकार ने लिखा है कि—यो हि अजानन् वै ब्राह्मणं हन्यात् सुरांवापिवेत सोऽपिमन्ये पतितः स्यात्–इन तथा पूर्व ऋषियों के वचनों का स्मरण कर अपने को क्षन्तव्य स्थिति में समझ लेने से उद्धार नहीं होगा। सन्ध्या हवनादि नित्य प्रयोग के मन्त्रों का शुद्ध एवं सस्वर ज्ञान प्राप्त करना ही होगा। इस निमित्त जो हमारे पास आना चाहें उसका स्वागत है।

(५) सस्वर वेद पाठ शिविरों का आयोजन हो—

दस-पन्द्रह दिन के शिक्षण से यह कमी बहुत कुछ दूर हो जावेगी और आप दोषों से बच जायेंगे। इस कार्य के लिए कोई बड़े संस्कृत ज्ञान की आवश्यकता नहीं। सामान्य व्यक्ति भी जो सुनने में समर्थ हो, सुने हुए को समझने में समर्थ तो तथा उसके अनुसार ध्वनि उच्चारित करने में समर्थ हो, चाहे वह बालक हो या वृद्ध, युवा किसी देश का हो सरलता से सीख सकता है। अब हम नहीं सीख सकते, हम संस्कृत नहीं जानते और सस्वर वेद पाठ सीखने में वर्षों लगेंगे यह विचार त्याग दीजिये। हमने सस्वर वेद पाठ शिक्षण शिविर इन्दौर में आयोजित किये तथा अन्यत्र भी। उनमें हमने अनुभव किया कि गायत्री मन्त्र, प्रार्थना के आठ मन्त्र स्वस्तिवाचन के मन्त्र प्रातः सूक्त के मन्त्र, संध्या व हवन के मन्त्र तो दस पन्द्रह दिनों में शुद्ध हो ही जाते हैं और कतिपय मन्त्रों का सस्वर पाठ भी आ जाता है। पुनः शिविर आयोजित होने पर भाग लेने से और प्रगति होगी। इस प्रकार प्रशिक्षित व्यक्तियों का समुदाय बढ़ने पर सस्वर एवं शुद्ध मन्त्र पाठ का प्रचार होता जावेगा।

(६) असत्य मान्यतायें त्यागें—चतुर्थ प्रयत्न

कुछ व्यक्तियों ने एक श्रुति पाठ नाम की आड़ में मनमाने दोष पूर्ण पाठ की वकालत की है–कुछ ने परमात्मा तो हमारा पिता है वह हमारी तोतली वाणी को सुनकर प्रसन्न ही होता है कहकर वेद मन्त्रों को अशुद्ध उच्चारण करने की भी वकालत की है। वह सब महर्षि दयानन्द और पूर्व ऋषियों के आदेशों के सर्वथा विपरीत एवं असत्य है-अमान्य है। क्षन्तव्य नहीं है। सत्य के ग्रहण और असत्य के त्यागने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। यही कल्याण का मार्ग है।

टंकारा के लिए आर्य यात्रा का कार्यक्रम

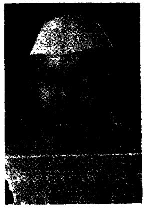
२७-२-८४ दिन के २ दो बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली से चलेंगे और १२-३-८४ यात्री देहली वापस आयेंगी। यात्री टंकारा के साथ-साथ दमन, बम्बई, गोवा महाबलेश्वर, अजन्ता एलोरा, इन्दौर, आगरा, मथुरा आदि भारत के ऐतिहासिक, रमणीक तथा सुन्दर स्थान देखेंगे, स्थान-स्थान पर आर्यसमाजें श्रद्धा से आपका हार्दिक स्वागत करेंगी।

आप आज ही केवल ३९५ रुपये देकर श्री गजेन्द्र जी मालवीय से अपनी सीटें आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई देहली से रिजर्व करा लें।

फोन ३४३७१८

७ फरवरी बसन्त पंचमी को चौ. छोटूराम जयन्ती समारोह में प्रो० शेरसिंह का भाषण


चौ० छोटूराम


प्रो० शेरसिंह

भारत के लोगों के हृदय में जिस महापुरुष के प्रति उनके अन्याय, शोषण और अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष चलाने के कारण श्रद्धा के भाव उत्पन्न हुए, उन महापुरुषों के साथ मनघड़न्त चामत्कारिक गाथायें जोड़कर उनको भगवान् का अवतार बनाकर ठगों ने अपनी दुकानें चला ली। यथार्थ से दूर जाकर, बढा चढाकर महापुरुषों को मनुष्य की कोटि से निकालकर जो लोग उन पर तथाकथित भक्ति और श्रद्धा के फूल बिखराते हैं, वे केवल श्रद्धालु और भोले लोगों को ठगने का रास्ता साफ करते हैं, उन ठगों से समाज को बचाना जरूरी है।

महर्षि दयानन्द, महात्मा गान्धी, गुरु गोविन्दसिंह इत्यादि को भी लोग आज भगवान् बनाने में लगे हैं। हांलाकि तीनों ने ही अपने अनुयाइयों को इस पाप से रोका। इससे बड़ा अन्याय इन महापुरुषों के साथ नही हो सकता। कुछ लोग यह अन्याय चौ० छोटूराम के साथ करने से भी नहीं चूकते। गुरु गोविन्दसिंह ने कहा था—

जो नर मोहि परमेश्वर उच्चरहिं, सो नर घोर नरक में परहिं।
हम हैं परम पुरुष के दासा, देखन आये जगत् तमाशा॥

साधारण मनुष्य और महापुरुष मे एक ही अन्तर है कि साधारण पुरुष जिस अन्याय, शोषण और अत्याचार से दु:खी है उसके विरुद्ध विद्रोह करने की तड़प और साहस अपने अन्दर नहीं जगा पाता। जो विद्रोह का झण्डा लेकर साथी मिल जायें तो उनसे मिलकर, और न मिलें तो अकेला ही मैदान में कूद पड़ता है और अपने प्राणों की बाजी लगाकर उस अन्याय, अत्याचार को मिटा देता है, वह अपने समय का महापुरुष हो जाता है। ससार में अन्याय व शोषण हर युग में चलता रहा है और हर युग में कोई न कोई माई का लाल उसके खिलाफ विद्रोही बनकर खड़ा हो जाता है।

सूदखोर पूंजी देने वाले लोग साधारण भोले और अनपढ़ लोगों से थोड़े से रुपये देकर उनका ब्याज पर ब्याज जोड़ते-जोड़ते कई गुणा बना डालते थे और फिर किसान की जमीन, मकान, बैल, गाय, भैंस, बछड़े यहां तक कि खाने का अन्न और चक्की, चूल्हे कुड़क करवा लेते थे। इस से दु:खी तो सभी थे परन्तु इस शोषण को खत्म करने की तड़प और सकल्प चौ० छोटूराम में पैदा हुआ। अपने परिवार के लोगों के साथ मिलकर सगठित होकर कानून बदलवाया और किसान का जमीन ही वापिस दिलवाई बल्कि जीविका के लिए जरुरी सामान और पशुओं अन्न आदि की कुड़की भी बन्द करवा दी। इसीलिए आप लोग उनको याद करते हैं।

पाखण्ड, धर्म के नाम पर खुली लूट और धर्म ग्रन्थों में मनमानी काट छांट करके लम्पट लोग समाज के भोले लोगों को दिन दहाड़े लूट रहे थे। सदियों से जमे हुए इन ठगो के शक्तिशाली गिरोह के खिलाफ बोलने की किसी मे हिम्मत नहीं थी। दयानन्द को साथी नहीं मिला तो अकेले ही पाखण्ड खण्डिनी लेकर मैदान में आ गये। ईंट पत्थर और जहर तक खाया, परन्तु पाखण्ड को उखाड़ फैंका।

दक्षिण अफ्रीका में गोरे लोग, काले तथा भारतवंशी लोगों के साथ नहीं बैठ सकते थे, अलग बस्तियों में रहते थे। दु:खी सभी थे, बोलने की हिम्मत किसी में नहीं थी। गांधी ने लातें खाईं, जूते खाये, फेंक दिये गये, परन्तु विद्रोही बनकर देश से हजारों मील दूर डट गये और अन्त में अंग्रेजों के साम्राज्य को समाप्त किया। अंग्रेजों के साम्राज्य में जहां सूरज कभी नहीं छिपता था, अब कभी-२ दिखाई देता है।

अन्याय, शोषण और अत्याचार के खिलाफ विद्रोह ही इन्सान को वास्तव में इन्सान बनाता है, यह विद्रोह की भावना मिट गई तो इन्सान भी मिट जायेगा। आज क्या हरयाणा में हम इन्सान के दर्शन कर पाते हैं। देश भर में चर्चा है, हरयाणा बदनाम है, कहीं विधायक बिकने की बात चलती है तो लोग कहते हैं यह हरयाणा थोड़ा ही है, विधायक इस प्रकार बिक जायेंगे। दु:ख की बात है कि बिकने वाली बिमारी विधायक से मेम्बर पंचायत तक चली गई और कहीं पार्लियामेण्ट मे चली गई तो देश ही बिक जायेगा। हरयाणा के लोग बिकने बिकाने में लगे हुए हैं और उधर अकाली और पंजाब के लोग इसका माल हड़पने में लगे हुए हैं। पंजाब में निरंकारी, निरंकारी कहकर हिन्दू, हिन्दू कहकर मारा जाता है तो हमारी इन्सानियत जागती है, खून खोलता है, और हम आवाज उठाते हैं। लेकिन क्या पंजाब में एक भी सिख या हिन्दू ने हरयाणा पर होने वाले अन्याय के लिए मुंह खोला जब डेढ साल तक अकाली आन्दोलन चलता रहा और पंजाब के ही बिचोलिया मैदान में आकर अकालियों से हरयाणा की कीमत पर सौदा करवाने लगे तो मैंने प्रधानमंत्री को चिठ्ठी लिखी कि अजीब हालत है जिसकी कीमत पर सौदा होने वाला है उसको फरीक ही नहीं माना जा रहा। हरयाणा क्या एक तरफा डिग्री को सहन कर जायेगा तब हरयाणा को फरीक माना। मैं हरयाणा राज्य के सभी दलों के नेताओं का धन्यवाद करता हूं कि उन सबने एक ही बोली बोली। लेकिन एक दो बार बोलने से तो बात नहीं बनती। श्री भजनलाल जो पिछले साल भी चण्डीगढ के बटवारे की बात करने लगे थे, अब फिर शुरु कर दी है। इसका मतलब है कहीं नीचे नीचे सौदा होने की बात चल रही है। क्या हरयाणा की जनता अपनी कीमत पर किया हुआ कोई सौदा मान जायेगी। हरयाणा की बात साफ है, या तो प्रधानमंत्री का फैसला मानो जिसका अकालियों ने दीवाली मनाकर स० गुरनामसिंह से स्वागत करवाया। नहीं करते तो शाह कमीशन ने हमको चण्डीगढ समेत खरड़ तहसील भी दी। खरड़ तहसील (समेत चंडीगढ) हमको मिले, बंटवारे का सवाल कहां से आ गया। खरड तहसील (चंडीगढ समेत) हमको देकर बाकी इलाकों का फैसला किसी कमीशन से करवा लें। परन्तु कोई कमीशन बिठाने से पहले, पिछले कमीशन के फैसले पर तो अमल करो, वरना कमीशनों की क्या कीमत है, कौन विश्वास करेगा कमीशनों पर।

लौंगोवाल कहते हैं कि वे देश से प्यार करते हैं, तो पाकिस्तान में रावी ब्यास का पानी कैसे जा रहा है और हरयाणा लिंक नहर न खुदने की वजह से अपने हिस्से के पानी से वंचित हैं। विश्व बैंक के फैसले के मुताबिक तो १९७१ के बाद एक बूंद पानी पाकिस्तान में नही जाना चाहिए था। परन्तु आज भी जितना पानी मुफ्त में पाकिस्तान को मिल रहा है उस पानी से पाकिस्तान मे ४० करोड़ रुपये की फसल एक वर्ष में पैदा हो सकती है। हरयाणा को पानी न मिलने से हरयाणा में एक अरब (१०० करोड़) रुपये की फसल का हर वर्ष नुकसान हो रहा है। लौंगोवाल से पूछना चाहता हू कि तुम्हारा नजदीकी कौन है, पाकिस्तान या हरयाणा? नहर के लिए हरयाणा से २०.५ करोड़ रुपया जमा करवा लिया, नहर तो बनाई नहीं सारा पैसा पंजाब के मुलाजिमों में बांट दिया। पंजाब के गवर्नर को चाहिए था कि एक कमेटी बनाते, भारत सरकार से कोई गैर पंजाबी अधिकारी, हरयाणा सरकार का अधिकारी और एक पंजाब का। यह कमेटी रिपोर्ट दे कि नहर की खुदाई सम्बन्धी कार्य में कितने लोगों ने कितने दिन काम किया। हरयाणा तो उतने का ही देनदार है बाकी हरयाणा का पैसा जमा रहना चाहिये। अब पंजाब वाले कह रहे हैं, बिना काम किये हरयाणा का

कहते हैं कि नहर की लाइन बदलो, पहाड़ के इलाके में से लाओ, जिसमें दस गुणा खर्च व दस साल लगेंगे। पंजाब के राज्यपाल इस बात में भी पंजाब के अफसरों की और अकालियों की हां में हां मिला रहे हैं। जब राज्यपाल किसी को भी न्याय दिलवाने में और लूटमार बचाने में फेल हो गये, तो इसी कारण से जब दरबारासिंह की सरकार बर्खास्त हुई तो क्या कारण है कि इस राज्यपाल को भी बर्खास्त न किया जाये। चुप रहने का समय नहीं है हरयाणा वालो, बोलो। चौ० छोटूराम भी तो यही कह गये थे कि बोलना सीख लो। क्या हमने सीखा ? अगर नहीं सीखा तो केवल श्रद्धा करने से क्या फायदा।

पंजाब का प्रसंग खत्म होने से पहले एक बात समझ लेनी चाहिए जैसे १९४७ में अंग्रेज पाकिस्तान बनाने पर तुला हुआ था, इसलिये जैसे उस समय जिन्नाह का विरोध और अंग्रेज का हिमायत में कोई सार्थकता नहीं थी, इसी प्रकार सिखों को हिन्दुओं से अलग करने और देश को फिर से विभाजित करने में अंग्रेज का ही हाथ है, इसलिए जगजीत सिंह चौहान, भिंडरवाला व लौंगोवाल की निन्दा और अंग्रेज तथा अमरीका की हिमायत की कोई सार्थकता नहीं है। ये तीनों और अन्य नेता चाहे अपना नाम कुछ भी रख ले, हिन्दू सिख को अलग करने में और देश को तोड़ने में सब एक हैं। ये सब कार्यवाहियां चाहे खालिस्तान बनाने की हो चाहे हिन्दू सिख को अलग करने के लिए भारत के संविधान के अनुच्छेद २५ को बदलने और संविधान को जलाने की हो, सब अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर के परिसर मे ही चल रही हैं, इसलिए इन सभी देशद्रोही और गुरुद्रोहियो की बातों मे न आकर, जरूरत पड़े तो फौज की मदद लेकर भी स्वर्ण मन्दिर से इन सबको निकालना चाहिए और राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के नीचे नजरबन्द करना चाहिए। भारत के अन्दर साम्प्रदायिक और बाहर के भारत विरोधी तत्वों के इस षडयन्त्र को समय रहते सख्ती से समाप्त करना चाहिए। प्रधानमन्त्री के यह कहने के बाद कि जब तक हिंसा की एक भी घटना होगी अकालियों से कोई बात नहीं की जायेगी, पर्दे के पीछे बातें और बातों के लिए दरवाजे खुले हैं की रट कैसी ?

दो बात किसान भाइयों से। आज किसान की आबादी बढते-बढते जमीन घटती जा रही है और उस थोड़ी थोड़ी जमीनों पर देश भर की सरकारों की कड़ी नजर है। हर शहर कस्बे और सड़क के साथ जमीनों का अन्धाधुन्ध अधिग्रहण (Acquiring) हो रहा है। सरकारों की इस नीति के कारण किसान उजड़ता जा रहा है और राजनेता, नौकरशाही उद्योगपति और प्लाट खरीदने वाले लोग करोड़पति होते जा रहे हैं। मैं समझ सकता हूं कि नहर, सड़क, रेल सरकारी दफ्तर आदि जमीन पर बनेंगे। उसके लिए जमीन का अधिग्रहण करो। लेकिन उसका मुआवजा तो पूरा मिले। आज पांच साल की रजिस्ट्रियों की औसत निकाल कर १५ फीसदी जोडकर किसान को मुआवजा मिलता है। सब जानते हैं कि टैक्स से बचने के लिए सब झूठी रजिस्ट्रियां होती हैं, १०० रुपये की जगह ६० रुपये दिखाये जाते हैं उस पर १५ फीसदी अगर जोड़ें तो ६९ रुपये बने। १०० रुपये की चीज के बदले ११५ रुपये की बजाय ६९ रुपये मिले। १०० रुपये पर ४६ रुपये का घाटा तो किसान ने यहीं खा लिया। जब सड़क नहर रेल आदि बनती है, विकास होता है तो जमीन की कीमत कई गुणा बढती है। उस बढती हुई कीमत का लाभ किसान को क्यों नहीं ? क्या वह इस देश का नागरिक नहीं है? या यह संविधान उस पर लागू नहीं होता। जमीन लो तो बाजार भाव से मुआवजा अब दो और बढी हुई कीमत के कारण उससे कम से कम दो गुणा १० किस्तों कीमत का २० प्रतिशत हर साल दिया जावे तभी तो अपने रोजगार से उखड़ा हुआ किसान अपने आपको फिर से बसा सकेगा।

नहर, सड़क, रेल इत्यादि के अलावा और किसी काम के लिए किसान की जमीन नहीं लेनी चाहिये जिस को उद्योग लगाना है या रहने के लिए घर बाना या बाजार बनाना है तो किसान से बात करो और उसकी इच्छानुसार जितनी जमीन जिस भाव पर वह दे, लेनी चाहिए। सरकारें इसमें बिचौलिया बनकर क्यों कमाये और क्यों किसी को कमवाये। क्या उद्योगपति किसान को अपनी पैदावार चौथाई कीमत पर दे देता है ? फिर सस्ते दामों पर उन लोगों को जमीन दिलाने की क्या तुक है ?

किसान को अपने इस अधिकार को मनवाने के लिए देश व्यापी संगठन और आन्दोलन करना पड़ेगा। कर्नाटक या महाराष्ट्र में अलग-अलग आन्दोलन चलाने से क्या मिलने वाला है जमीन अधिग्रहण का मामला सारे देश का मामला है।

इसी प्रकार किसान की उपज का उचित मूल्य की बात है। १९७२ में कृषि मन्त्रालय ने जिसमें मैं मन्त्री था, कृषि विश्वविद्यालयों से अलग-अलग फसलों की लागत का ब्योरेवार हिसाब (५ सालों की औसत) तैयार करने को कहा था ताकि उस पर २५ प्रतिशत लाभ लगा कर कीमत निश्चित की जाये। कृषि कीमत आयोग बिना हिसाब लगाये ही हर साल २-३ रुपये बढ़ाने की सिफारिश कर देता है। किसान के साथ यह मजाक बन्द होना चाहिए।

७० प्रतिशत से भी अधिक किसानों के पास ५ एकड़ से कम जमीन है और ८५ प्रतिशत के पास १० एकड़ से कम। हर पीढ़ी के बाद वह घटती जा रही है। इतनी थोड़ी जमीन पर बैलों से या मशीनों से अलग अलग खेती कैसे हो सकेगी। पहले जनसंख्या कम थी इसलिए कुछ भाई खेती पर और कुछ पुलिस फौज में नौकरी करके काम चलाते थे। अब आदमी बढ गये और जमीन कम हो गई, नौकरी बिकने लगी, फौज की नौकरी भी। मैंने बन्द करने की कोशिश की, थोड़ी सी सफलता मिली फिर हम तो रहे नहीं, गड़बड़ करने वाले नहीं रहे और इन चार सालों में कीमत ड्योढ़ी दुगनी हो गई। इसी तरह और नौकरियों का हाल है। किसान के बच्चों को रोजगार देना है तो छोटे छोटे उद्योग लगाने होंगे, उनके लिए पूंजी कहां से आये ? एक ही तो रास्ता है सहकारी समिति बनाओ, कुछ अपने हिस्से डालो और ४ या ५ गुणा सहकारी बैंक से लो मुझे क्षमा करें आज के प्रधान इस महकमे के अधिकतर अफसरों का का झूठा हिसाब तैयार करना है और समितियों के प्रधान कोषाध्यक्ष आदि से मिलकर पैसा हजम करने का है। सहकारी समितियों को अफसरों के चुंगल से निकालना होगा और यदि किसान अपने बच्चों को रोजगार देना चाहता है तो उसे इमानदार बनना होगा। बड़ी गलत धारणा लोगों के मन में घर कर गई है कि व्यापार और उद्योग धन्धे तो बेईमानी से ही चलते हैं। धन्धा चलाने वाले लोग आपस में बेईमानी करेंगे तो धन्धा नहीं चल सकता, दूसरों के साथ करने से जरुर बेईमानी का पैसा कमाया जा रहा है। बड़े बड़े उद्योगपति व्यापारी टेलिफोन पर जबानी करोड़ों का सौदा कर लेते हैं और उससे कोई नहीं मुकरता, मुकर जायें तो बाजार में साख खत्म और उसके साथ उद्योग और खत्म। किसान को यदि घर में ही बच्चों का रोजगार देना है तो धन्धे चालू करने होंगे। किसान को यह फैसला पचायतीतौर पर करके उसे ईमानदारी से निभाना पड़ेगा कि सहकारी समिति का पैसा खाना ऐसा ही पाप है जैसा लड़की का पैसा खाना। ऐसा किसान ने नहीं किया तो उसका भविष्य भारी खतरे में है। धन्धों के लिए पूंजी का एक ही स्रोत है सहकारी बैंक उसको अपनी मूर्खता और बेईमानी से बन्दकर लिया तो जीवन भर रोते रहो, कोई रास्ता नहीं है।

सारी पूंजी बैंक से तो मिलेगी नहीं अपनी भी जुटानी होगी। जब तक किसान शराब के दुर्व्यसन से छुटकारा नहीं पायेगा तो कमजोर चरित्रहीन भूखी आने वाली पीढी गरिमा का जीवन कैसे जायेगी। हरयाणा प्रदेश में अकेले में केवल किसान २०० करोड़ रुपये की शराब वर्ष भर में पी लेता है यह पैसा बच्चों को खिलाने, पिलाने, पढ़ाने और पूंजी जुटाने में लगाना होगा। किसान के दो ही इम्तिहान हैं, शराब बन्दी व सहकारी कामों के प्रबन्ध में ईमानदारी। इनमें फेल हो गया तो इनको मूर्ख बनाकर ठगने वाले बहुत आ जायेंगे। उनके चुंगल में फंसकर कितने दिन ही लुटते रहो। कल्याण तभी सम्भव है जब किसान अपनी कमाई को शराब आदि नशों में बर्बाद करने से बचायेगा और ईमानदार बनकर समितियों के द्वारा अनेकों छोटे-छोटे धन्धों में अपने शिक्षित और अर्द्धशिक्षित बच्चों को लगायेगा।

यमुनानगर में आदर्श विवाह

आर्यसमाज रेलवे रोड के उपमन्त्री तथा हिन्दी कवि श्री इन्द्रजीत देव की सुपुत्री कविता शास्त्री का विवाह संस्कार पिलानी निवासी श्री रामगोपाल आर्य के सुपुत्र डा० हरिशचन्द्र आर्य के साथ पूर्ण वैदिक रीति-नीति से जन्म के जाति बन्धन तोड़कर गुण कर्म व स्वभाव के आधार पर सम्पन्न हुआ। बैण्ड बाजा, बीडी सिगरेट, चाय, वनस्पति घी, घोडी व मुकुट सेहरा आदि बिल्कुल प्रयोग नहीं हुआ। पूरी बारात वेद मन्त्र बोलती हुई कन्या पक्ष के घर पहुंची तथा कन्या पक्ष की ओर से केवल वेद मन्त्रों तथा पुष्प हारों से ही स्वागत किया गया। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के आर्य विद्वान् स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं० युधिष्ठर मीमांसक, आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार तथा कुछ अन्य विद्वानों ने इस अवसर पर पधार कर वर-वधु को आशीर्वाद दिया। विवाह के कुछ दिन पूर्व से ही पं० भगवान चैतन्य द्वारा यज्ञ व पं० ओ३म् प्रकाश जी द्वारा भजनोपदेश होते रहे। २४-१२-८३ रात्रि को स्नेह मिलन सम्मेलन हुआ जिसमें वर एवं वधु के सम्बन्धियों का आपस में विधिवत् परिचय तथा माल्यार्पण का कार्यक्रम हुआ तथा स्वामी सत्यप्रकाश, पं० युधिष्ठर मीमासक एवं आचार्य रामप्रसाद वेदालंकार जी के गृहस्थ सम्बन्धी उपदेश हुए। विवाह संस्कार २४-११-८३ को प्रातः काल की शुभ वेला में बिना दहेज के आचार्य रामप्रसाद वेदालकार ने बड़ी योग्यता से सम्पन्न कराया जिसे देख सुनकर उपस्थित नर-नारी बहुत प्रभावित हुए। इस विवाह की चर्चा सभी जगह जमकर हो रही है। विवाह संस्कार क्या था मानो एक बहुत बड़ा धार्मिक समारोह हो रहा हो स्वामी सत्यप्रकाश, पं० युधिष्ठर मीमांसक एवं आचार्य रामप्रसाद जैसे चिन्तक मन्च पर विराजमान थे उन्हें देखकर ऐसा आभास होता था मानो श्री रामचन्द्र जी की बारात में मुनि विश्वामित्र व ऋषि वशिष्ठ स्वयं पधारे हों। इस अवसर पर वर पक्ष की ओर से दस हजार रुपये विभिन्न आर्य संस्थाओं को दान दिया गया तथा कन्या पक्ष की ओर से वैदिक साहित्य की पुस्तकें बांटी गई। विवाह में श्री रघुनाथ प्रियदर्शी व डा० सुरेन्द्र मन्थन आदि लेखक भी पधारे हुए थे। ब्र० आर्य नरेश, स्वा० दयानन्द विदेह, श्री महेन्द्र प्रताप शास्त्री, डा० पूजा देवी आदि के शुभ कामना सन्देश व आशीर्वचन भी वर वधु पक्ष की ओर से पढ़कर सुनाए गए। —मन्त्री आर्य समाज

आर्यसमाज कासनी जि. रोहतक का वार्षिकोत्व

प्रति वर्ष की भांति मक्र सक्रसंक्रान्ति पर्व पर १३, ६४ जनवरी १४ को आर्य समाज कासनी का ४२ वा वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। संक्राति का महत्व यज्ञ के उपरान्त सभा के उपदेशक पं० चन्द्रभानु जी ने खोलकर बताया। यज्ञोपवीत दिए गए। यज्ञ में सभी सज्जनों ने घृत श्रद्धा समान दिया। घृत की मात्रा अधिक होने से तमाम क्षेत्र सुगन्धित हो गया गया।

स्व० स्वामी नित्यानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला गया। उस निर्भय संन्यासी के जीवन से शिक्षा लेने के लिए प्रेरित किया गया। लोगों ने दिल खोलकर श्रद्धा समान दान दिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ढाकला चान्दोल सुरेहती में भी प्रचार कराया गया। सभी जगह आर्य समाज के प्रचार की बड़ाई की गई।

दीपचन्द आर्य

नारनौल में वेद प्रचार की धूम

सभा के भजनोपदेशक कुंवर तेजपाल जी आर्य ने नारनौल के विभिन्न मौहल्लों तथा नारनौल के समीपवर्ती ग्रामों में प्रभावशाली प्रचार कार्य किया। सभा को वेद प्रचारार्थ ५२८) तथा सर्वहितकारी के ५ नये ग्राहकों का वार्षिक शुल्क प्राप्त हुआ।

म० ताराचन्द आर्य

यति मण्डल की आवश्यक बैठक

यति मण्डल के सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि वैदिक धर्म के प्रचारार्थ भावी योजना को क्रियान्वित करने हेतु ३ ४-५ मार्च, १९८४ को महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक में एक आवश्यक बैठक का आयोजन पूज्यपाद श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आदेशानुसार किया गया है। कृपया सभी सदस्य, नैष्ठिक ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी, संन्यासी महात्मा समय पर पहुंचने का कष्ट करें। दूरस्थ सदस्यों हेतु मार्ग निम्न प्रकार रहेगा :—

दिल्ली अन्तर्राष्ट्रीय बस अड्डे से १३ नं० स्टैंड से झज्जर रेवाड़ी से झज्जर से गुरुकुल, रोहतक से झज्जर

झज्जर पहुंचने पर गुरुकुल तक तीनों दिन बसें व प्राईवेट गाड़ियां चलेंगी। भोजन व रहने की सुविधा गुरुकुल की ओर से रहेगी, ऋतु के अनुसार वस्त्र अपने साथ लाने का कष्ट करें।

ब्र० रामवीर आर्य
कृते—स्वामी ओमानन्द सरस्वती

गुरुकुल झज्जर का वार्षिकोत्सव

पूज्यपाद श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज की तपोभूमि और उन्ही के आचार्यत्व में सचालित महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर का ६९वां वार्षिकोत्सव बडी धूम-धाम के साथ ३ व ४ मार्च १९८४ शनिवार, रविवार को मनाया जा रहा है, जिसमे उच्चकोटि के साधु महात्माओं, राजनेताओं भजनोपदेशको को निमन्त्रित किया गया है। इस अवसर पर ब्रह्मचारियों के आश्चर्य चकित कर देने वाले व्यायाम प्रदर्शन भी देखेंगे, तथा दो कारों को एक साथ रोकना गले से लोहे का सरिया मोड़ना, हाथी को बाधने वाली लोहे की मोटी जजीर (बेल) को तोड़ना काच (शीशा) का हाथों से पीसना, तलवार भाला, मुगदर, लाठी दण्ड बैठक आसनादि विभिन्न कार्य-क्रमों को देखकर कुछ कर गुजरने की भावना लेकर लौटेंगे। प्रतिवर्ष की भाति इस वर्ष सामवेद पारायण यज्ञ भी होगा जिसकी पूर्णाहुति ४ मार्च को होगी, सभी धर्म प्रेमी बन्धुओं से प्रार्थना है कि अधिकाधिक संख्या में पहुच कर धर्म लाभ उठावें।

ब्र० विजयपाल आर्य

पलवल में लाला लाजपत राय जयन्ती

२८ जनवरी १९८४ को आर्य समाज मन्दिर पलवल शहर में सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल की ओर से अमर शहीद लाला लाजपत राय जयन्ती समारोह मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता महाशय सत्यपाल शर्मा, सह-सचालक सार्वदेशिक आर्य वीरदल हरयाणा प्रान्त ने की। सभा में श्री अजीत कुमार आर्य, श्री रमेश चन्द्र आर्य के व्याख्यान हुए तथा अरुण कुमार आर्य, संजीव आर्य, यशपाल आर्य, प्रकाश चन्द्र आर्य, प्रमोद आर्य तथा अनिल कुमार मंगला (बम्बई) की जोशीली कवितायें हुई। —अशोक कुमार

सिवानी में आर्यसमाज मन्दिर के लिए अपील

सभा के महोपदेशक प० चंद्रसेन वैदिक मिशनरी के अनथक परिश्रम के कारण सिवानी जिला भिवानी के आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिए श्री हरिशचन्द्र आर्य ने एक प्लाट में आर्यसमाज मंदिर बनाने हेतु उसकी रजिस्ट्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नाम करवा दी है। इस कार्य के लिए पं० चन्द्रसेन जी को एक सप्ताह सिवानी मे रहकर हनुमान जी आर्य, ला० बच्छोहर लाल अग्रवाल, श्री मेहरचन्द आर्य, श्री हेत राम लाठीवाल, श्री गौरीशंकर अग्रवल्ल, श्री अमरसिंह आर्य, श्री स्वर्णसिंह आर्य, विजय सिंह जाखड केदारसिंह, श्री कंवरभानु जी, श्री याद लाल आदि ने तन मन तथा धन से सहयोग देते हुए आर्य समाज मन्दिर के निर्माण को पूरा करने का वचन दिया है।

आशा है सिवानी तथा अन्य नगरों के दानी महानुभाव इस धार्मिक कार्य में दिल खोलकर दान देंगे। —सभा मन्त्री

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में

आर्य समाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

१-	कन्या गुरुकुल खानपुर जि० सोनीपत	११,१२ फरवरी १९८४
२-	आर्य समाज खानपुर जि० महेन्द्रगढ़	१२,१३ „
३-	आर्य समाज बणोन्दी जि० अम्बाला	११,१२ „
४-	आर्य समाज खरककलां जि० रोहतक	१७,१८,१९ „
५-	आर्य समाज मितरोल ओरंगाबाद जि० फरीदाबाद	१७,१८,१९ „
६-	गुरुकुल घोरणवास जि० हिसार	१८,१९ „
७-	आर्य समाज कारद जि० करनाल	२४,२५,२६ „
८-	आर्य समाज सोनीपत नगर (ऋषिबोधोत्सव)	२६ से २९ „
९-	आर्य समाज शाहाबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	२७,२८ „
१०-	आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग अम्बाला छावनी	२५ से २९ „
११-	आर्य समाज चबूतरो जि० अम्बाला	२७,२८,२९ „
१२-	आर्य समाज ताहरपुर जि० अम्बाला	१,२,३ मार्च
१३-	गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	२,३,४ „
१४-	आर्य समाज भुगांरका जि० महेन्द्रगढ़	३,४,५ „
१५-	आर्य समाज सफीदों मण्डी जि० जीन्द	९,१०,११ „
१६-	गुरुकुल गदपुरी जि० फरीदाबाद	९,१०,११ „
१७-	आर्य समाज सालवन जि० करनाल	१०,११,१२ „
१८-	आर्य समाज पाढ़ा जि० करनाल	९१०,११ „
१९-	आर्य पाठशाला मदीना दांगी जि० रोहतक	९,१०,११,१२ „
२०-	गुरुकुल घरोण्डा जि० करनाल	९,१०,११ „
२१-	आर्य समाज मग्धार जि० कुरुक्षेत्र	१६,१७,१८ „
२२-	आर्य समाज मुवाना जि० जीन्द	२३,२४,२५ „
२३-	आर्य समाज बला जि० करनाल	२४,२५,२६ „
२४-	आर्य समाज ठोल जि० कुरुक्षेत्र	२,३,४ अप्रैल
२५-	आर्य समाज नरवाना जि० जीन्द	६,७,८ „
२६-	आर्य समाज नई कालोनी गुड़गांव	१३,१४, १५ „

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

नारनौल से टंकारा के लिए स्पेशल बस

महर्षि दयानन्द की जन्म स्थली टंकारा में ता० २७-२८-२९ फरवरी को शिवरात्री पर ऋषि बोधोत्सव मनाया जा रहा है। इस समारोह में भारत के प्रसिद्ध विद्वान् एवं संन्यासी भजनीक टंकारा पहुंचकर स्वामी जी को श्रद्धान्जली भेंट करेंगे। इस उपलक्ष पे नारनौल से बस २४ फरवरी को चलकर शाहपुरा हल्दी घाटी राजकोट द्वारका पोरबन्द्र सोमनाथ मन्दिर जूनागढ़ होते हुए २७ फरवरी को टंकारा पहुंचेगी। वापसी १ मार्च को प्रातः ६ बजे चलकर माडिगढ़ आबू होते हुए २ मार्च को नारनौल पहुँचेगी। इच्छुक भाई बहनों से प्रार्थना है कि ३२० रुपया ता० १६ फरवरी तक आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष श्री अयोध्या प्रसाद जी के पास जमा करवा कर अपनी सीट बुक करवाने की कृपा करें।

वैद्य हरिचन्द्र आर्य प्रधान आर्य समाज नारनौल

टोहाना में बस स्टाप का उद्घाटन

आर्य समाज टोहाना के प्रसिद्ध नेता स्वर्गीय श्री भगवानदास दीवान की स्मृति मे टोहाना म हिसार चण्डीगढ़ मार्ग पर उपायुक्त हिसार ने अपने कर कमलों से एक बस स्टाप का उद्घाटन किया। स्वर्गीय दीवान जी के परिवार ने अपने खर्च से यह उपहार जनता को भेण्ट किया। इस अवसर पर स्थानीय नगर प्रशासक श्री आई. एस. अहलावत, आर्य समाज के अन्य सदस्य श्री बृजलाल गुप्त डा० रामनारायण ढींगरा तथा कुमारी रीता दीवान आदि ने श्री दीवान जी को श्रद्धांजलि भेण्ट की।

—नरेश

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष—

प्रो० शेरसिंह की सिंह-गर्जना

हरयाणा रक्षावाहिनी के अध्यक्ष व हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अपने एक वक्तव्य में कहा है कि हम हर हालत में अबोहर फाजिल्का लेकर ही दम लेंगे। यदि २८ जनवरी १९७१ के क्षेत्रिय एवार्ड और २१ दिसम्बर १९८१ के जल वितरण सन्बन्धी केन्द्रीय सरकार के फैसलों को अकाली मानकर भी नहीं मानते हैं तो वे फंसले निरस्त समझे जायेंगे और फिर हम १९५५ के शाह कमीशन के फैसले को ही मानेंगे, जिसके अनुसार अबोहर फाजिल्का और खरड तहसील (चण्डीगढ सहित) हरयाणा को मिलना चाहिए। हरयाणा सरकार की ओर से चण्डीगढ और अबोहर फाजिल्का को हरयाणा और पंजाब के बीच बांटने की जो बात चलाई जा रही है वह भी कोरी नासमझी है। पिछले सभी फैसले इनके विरूद्ध हैं। कन्दू खेड़ा गांव को पंजाब से लेकर उसके बदले में जो गांव देने की बातचीत की जा रही है यह भी हरयाणा के हितों के विरूद्ध हैं क्योंकि कंदूखेडा गांव तो हिन्दी भाषी होने के कारण पहले ही हमारा है! इसीलिए वह तो हमें मिलना ही चाहिए उसके बदले में कुछ देने का तो प्रश्न ही नहीं है। इतना ही नहीं लालडू बसी के २२ गांव जो खरड तहसील से तोड़ कर सुनाम तहसील में लगा दिये थे। वे भी हरयाणा को मिलने चाहिए क्योंकि वे विशुद्ध हिन्दी भाषा भाषी लोगों की आबादी वाले गांव हैं।

प्रो० साहब ने कहा कि यदि हरयाणा के हितों की अनदेखी करते हुए राज्य सरकार या केन्द्र सरकार द्वारा अकालियों के साथ सौदा किया गया तो हम उसे बिल्कुल भी मानने के लिए तैयार नहीं हैं। उन्होंने हरयाणा का साढे बीस करोड़ रुपया डकारने का पंजाब सरकार पर आरोप लगाते हुए तथा पंजाब की कानून व्यवस्था की बिगड़ती स्थिति पर प्रकाश डालते हुए पंजाब सरकार राज्यपाल श्री बी० डी० पाण्डे को अविलम्ब बर्खास्त करने की माँग की है। उन्होंने अपने हितों के लिए लड़ने के लिए हरयाणा की साहसी जनता से पुरजोर अपील भी की है।

भेंट कर्त्ता—धर्मचन्द विद्यालंकार एम० ए०

शोक समाचार

१—आर्यसमाज मुरथला जिला रोहतक के सक्रिय कार्यकर्त्ता म० रामजीलाल जी का २० दिसम्बर १९८३ को देहावसान हो गया। आप म० दयाराम आर्य के छोटे भ्राता थे।

२—आचार्य रामबीर शर्मा शास्त्री का २५ दिसम्बर ८३ को हृदय गति बन्द होने से ४० वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया। वे आर्यसमाज हापुड के पुस्तकाध्यक्ष थे। संस्कृत के विद्वान् थे। आप पं० जगदीशचन्द्र वसु पानीपत के छोटे भ्राता थे।

३—अबोहर के सुप्रसिद्ध नेता मा० तेगराम जी पूर्व विधायक की धर्मपत्नी श्रीमती सोमवती देवी का २० जनवरी ८४ को स्वर्गवास हो गया। उनकी स्मृति में २८ जनवरी को उनके निवास स्थान भैजर सुरेन्द्र मार्ग अबोहर में हवन यज्ञ की कार्यवाही के बाद एक शोक सभा आयोजित की गई।

४—आर्यसमाज कासण्डा जि० सोनीपत के वानप्रस्थी श्री प्रभुदयाल जी का २० जनवरी ८४ को देहान्त हो गया। उनकी स्मृति में शोक सभा हुई।

५—चौ० मंघूराम सोनीपत निवासी तथा उनकी धर्म पत्नी (श्री यज्ञपाल शास्त्री प्रधाना मोहल्ला रोहतक के ससुर तथा सास) का २७ दिसम्बर एवं २ जनवरी को निधन हो गया।

६—म० चन्द्रभानु जी ग्राम डरोली अहीर (नारनौल) का ३० जनवरी को निधन होने पर आर्यसमाज नारनौल में शोक प्रस्ताव पास किया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवगत आत्माओं को सद्गति तथा उनके वियोग में दुःखी परिवारों को दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सम्पादक

आर्यसमाज की गतिविधियां—

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का नया कितीमान

जिला कुरुक्षेत्र में गत दिनों सम्पन्न खेल विभाग हरयाणा के तत्वावधान में अर्न्तखाड़ा कुश्ती प्रतियोगिता में गुरुकुल कुरुक्षेत्र के २३ ब्रह्मचारी प्रथम ब्रह्मचारी द्वितीय स्थान प्राप्त कर कुल पुरस्कारों में से ६६ पुरस्कार प्राप्त कर नया कीतिमान स्थापित किया। इसकी सर्वत्र चर्चा है।

गुरुकुल में ६ से १० वर्ष के बालकों के प्रवेश १५ मार्च ८४ से आरम्भ हो रहे हैं। नि:शुल्क शिक्षा और आवास केवल भोजन मात्र के १००) मासिक तथा ८) वस्त्राधान हेतु इस प्रकार कुल १०८) मासिक शुल्क लिया जाता है। प्रवेश हेतु और अधिक जानकारी के लिए गुरुकुल कार्यालय से सम्पर्क करें।

८-१-८४ को वेदप्रचार मण्डल जि० कुरुक्षेत्र द्वारा जिला की धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक संगठनों के प्रतिनिधियों की एक बैठक गुरुकुल कुरुक्षेत्र में श्री कृष्णलाल बधवा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। इस बैठक में कुरुक्षेत्र के धार्मिक, सामाजिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व को स्वीकार करते हुए कुरुक्षेत्र को पवित्रनगर घोषित करने, वेद पाठ तथा गीता पाठ को प्रसारित करने के लिए आकाशवाणी के केन्द्र की स्थापना करने, १९४७ के बाद बनने वाले मजारों की जांच करने के प्रस्ताव पारित किये गये। इसके पश्चात् एक शिष्टमण्डल जिसमें सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, उपप्रधान चौ० सत्यदेव जी, श्री अमरसिंह एडवोकेट, चौ० प्रीतमपाल एडवोकेट, स० गुरुदयालसिंह, प्रो० भागसिंह आय, श्री विश्वनाथ आदि नेताओं सहित १०० महानुभावों ने उपायुक्त महोदय को एक ज्ञापन प्रस्तुत किया।

(धर्मदेव आर्य विद्यार्थी मन्त्री जि० वेदप्रचार मण्डल)

आर्यसमाज मन्दिर सैक्टर ३२ चंडीगढ की अपील

चण्डीगढ प्रशासन ने २ कनाल भूमि अलाट की है। इस भूमि में यज्ञशाला, पाकशाला, सत्संग भवन, औषधालय, धर्मशाला का निर्माण को पूरा करने के लिए दानियों से अपील की गई है। अत: दानी महानुभाव अधिक से अधिक धन राशि भेजकर सहयोग प्रदान करें। मन्त्री

आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली की यज्ञशाला का शिलान्यास

मकर सक्रान्ति के पावन पर्व पर १४-१५ जनवरी ८४ को स्वामी जीवनानन्द जी ने आर्यसमाज मन्दिर का शिलान्यास किया। यज्ञशाला निर्माण की अपील पर १० हजार रु. नकद प्राप्त हो गये।

गुरुकुल प्रभाताश्रम का सफल आयोजन

मकर सक्रान्ति पर्व पर १४ जनवरी ८४ को विशेष समारोह श्री मनोहरलाल की अध्यक्षता में हुआ। मेरठ के समीप के नरनारी भारी संख्या में उपस्थित हुए। इस अवसर पर मुख्य अतिथि आर्यप्रतिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी थे। स्व० पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार की विद्वान् सुपुत्री पं० प्रभातशोभा विद्यालंकृता, पंडित इन्द्राज आर्य मन्त्री उ. प्र. आर्यप्रतिनिधि सभा के व्याख्यान हुए। शोभा जी ने "नादान लोगों ने उस योगी का भेद न पाया" को सस्वर गाकर अपने पिता जी की याद को ताजा कर दिया। प्रो० शेरसिंह जी ने धर्म की सुन्दर व्याख्या के साथ-साथ दक्षिण और पजाब की संकट पूर्ण परिस्थितियों पर प्रकाश डाला। अन्त में गुरुकुल के आचार्य स्वामी विवेकानन्द जी के अध्यात्मिक प्रवचन एवं संयोजक श्री इन्द्राज जी के धन्यवाद ज्ञापन के साथ कार्यवाही समाप्त हुई। इस अवसर पर प्रो० शेरसिंह जी के परिवार की ओर से ५ हजार रु. का दान भी दिया गया।

आर्यसमाज शान्ताकुंज बम्बई का वार्षिकोत्सव

२२ से २९ जनवरी तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर स्वामी जीवनानन्द जी, पं० राजगुरु शर्मा आदि विद्वानों के प्रवचन हुए। वेद सम्मेलन, महिला सम्मेलन तथा योग प्रदर्शन भी हुए।

हिसार में स्वामी मुनीश्वरानन्द जी का निर्वाण दिवस

स्वामी मुनीश्वरानन्द जी पूर्व ज्ञानचन्द जी एम० ए० का निर्वाण दिवस दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में दिनांक ११-२-८४ को प्रातः ८ से १२ बजे तक मान्यवर श्री एम. एल. वर्मा एडमिनिस्ट्रेटर की अध्यक्षता में सम्पन्न होगा। इस अवसर पर आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

सत्यप्रिय शास्त्री एम. ए. साहित्याचार्य प्राचार्य

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत शताब्दी समारोह

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत की स्थापना को एक सौ वर्ष पूर्ण हो चुके हैं। इस उपलक्ष्य में शताब्दी समारोह का भव्य आयोजन किया जा रहा है।

शताब्दी समारोह में आर्यसमाज पानीपत ने अनेक योजनाओं को कार्यान्वित करने का निश्चय किया है। जैसे—संस्कृत पाठशाला की स्थापना, पुरोहित कक्षाएं चलाना, वानप्रस्थ आश्रम का सचालन, वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत करना, विद्वत्सम्मेलन का आयोजन करना, अन्य-मतावलम्बियों से सैद्धान्तिक विचार विमर्श करना, आर्यसमाज पानीपत का इतिहास तथा स्मारिका प्रकाशित करना, एक सैद्धान्तिक मैगजीन अंग्रेजी में प्रकाशित करना, पानीपत नगर व आस पास के ग्रामों में वेद प्रचार करना आदि कार्य सम्मिलित हैं

दिलीपसिंह आर्य प्रधान   रामानन्द शिगला संयोजक

प्रौढ़ शिक्षा पर आकाशवाणी पर वार्ता

श्री सुखदेव शास्त्री की आकाशवाणी के रोहतक केन्द्र से "प्रौढ़ शिक्षा की आवश्यकता" पर १० फरवरी को रात के ७ बजे वार्ता सुनिये।

रणवीर शास्त्री
सह-सम्पादक

नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है

प्रतापसिंह परवाना

गुरु गोविन्दसिंह ने हिन्द की खातिर अपने पिता को वारा है।
जिसका साक्षी आज तलक यह शीशगंज गुरुद्वारा है।
गुरुओं ने इतिहास हमारा देकर खून सवारा है।
वह इतिहास न मिटने देंगे प्राणों से जो प्यारा है।
देश के कोने-कोने से गुरु सिखों ने ललकारा है।
नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है ॥

गुरु नानक ने हर वर्ग वर्ग के लोगों को अपनाया था।
एक नूर से सब जग उपज्या वाणी में फरमाया था।
ना को बैरी नाहिं बेगाना हमको यह समझाया था।
मजलूमों की सेवा करने का ऊँचा पाठ पढ़ाया था।
भूल गया उपदेश गुरु के कैसा तू नाकारा है ?
नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है ॥

दशम पिता के लाल बड़े दो लड़े थे लाख हजारों से।
गूंजी थी चमकौर की धरती दोनों के जयकारों से।
आती है आवाज आज भी सरहिन्द की दीवारों से।
किस की खातिर जान गंवा गये पूछो चांद सितारों से।
एक बाप के हम दो बेटे फिर कैसा यह बटवारा है ?
नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है ॥

जनेऊ-तिलक न मिटने दूंगा दशम गुरु ने फरमान किया।
हिन्दुओं की रक्षा के हित था सिखों का निर्माण किया।
मूर्तियों को तोड़ा तूने मन्दिरों को वीरान किया।
इतिहास न तुझको माफ करेगा तूने जो यह अपमान किया।
हमें हैं मन्दिर उतने ही प्यारे जितना यह गुरुद्वारा है।
नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है ॥

एक देश है, एक कौम है, फिर क्यों ये भड़काते हैं।
किसके कहने में ये आकर आपस में लड़वाते हैं।
पीकर लहू भाइयों का क्यों अपनी प्यास बुझाते हैं।
करते हैं कमजोर देश को क्योंकि पैसा पाते हैं।
चन्द सिखों की खातिर तूने अपनों को ही मारा है।
नहीं चाहिये खालिस्तान हिन्दुस्तान हमारा है ॥

(असली भारत से साभार)

दहेज पर रोक के प्रशंसनीय निर्णय

नरवाना, २ फरवरी (नि. स.) यहां नगर में एक सर्वजातीय विशाल सभा चोपड़ापती में हुई जिसमें नरवाना, दबलेन, धर्मगढ़, समालपुर, मोहलखेड़ा के लोग भारी संख्या में शामिल हुए और इसके अध्यक्ष चौ० ओमप्रकाश चोपड़ा एडवोकेट मनोनीत किए गए। इस विशाल सभा में सर्वसम्मति से लिए गए निर्णय अनुसार शादी में दहेज प्रथा और किसी प्रकार का दिखावे पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया। शादी में टेलिविजन, कार, स्कूटर, फ्रिज, कूलर आदि विलासिता की वस्तुएं देने पर रोक लगा दी गई और बारात में केवल ११ से २१ तक ही व्यक्ति होंगे और इस अवसर पर शराब पीने व बाजा बजाने पर पूर्ण रोक लगा दी गई। इसके अलावा लड़के की सगाई के समय आमन्त्रित लोगों के लिए फल और मिठाई का खर्च लड़के वाले स्वयं करेंगे और शगुन में भी केवल १०१ रुपये से अधिक न देना होगा।

पंचायत के उपरोक्त निर्णय तोड़ने वाले को एक हजार रुपया और बिना उचित कारण सगाई तोड़ने तथा शादी के बाद लड़के व लड़की को छोड़ने पर उस परिवार को ११००० रुपया जुर्माना तथा सामाजिक बहिष्कार होगा। इसके साथ उस परिवार से दोबारा रिश्ता करने वालों को भी ग्यारह हजार रुपया जुर्माना किया जाएगा और सामाजिक बहिष्कार किया जाएगा। (दैनिक वीर प्रताप से साभार)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 ... फोन ... मुद्रित संख्या ...



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री, सह-सम्पादक—रणवीर शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ११ १४ फरवरी १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द की सूक्ष्मदर्शिनी बुद्धि का चमत्कार—आज्य का अर्थ विज्ञान

लेखक—आचार्य वेदपाल एम० ए० रिसर्च फैलो पंजाब विश्वविद्यालय

महर्षि दयानन्द रचित वेदव्याख्या ग्रन्थों में शब्द के विचित्र अर्थ स्थाने स्थाने दृष्टिगोचर होते हैं, इस अर्थ वैचित्र्य को देखकर प्रायः अध्येता स्वामी दयानन्द को शब्दार्थ करने में सर्वथा अनियन्त्रित स्वच्छन्दचारी समझ बैठते हैं। यद्यपि जब स्वामी ने वेदभाष्य आदि ग्रन्थ लिखने प्रारम्भ किये और उन्होंने अग्नि का अर्थ परमात्मा, विद्वान् आदि किये तो तदानीन्तनतम तथा कथित वैदिक पंडित बोखला उठे परन्तु जब कुछ काल पश्चात् इन्हीं पौराणिक सम्प्रदाय के पंडितों ने कुछ गहरी दृष्टि से वैदिक साहित्य का आलोकन किया तो उनकी समझ में आ गया कि स्वामी दयानन्द ने ये सब अर्थ अपनी कल्पना से नहीं किये अपितु इस प्रकार के अर्थ प्राचीन वेद व्याख्याकारों ने भी प्रस्तुत किये हैं परन्तु आज भी महर्षि दयानन्द के वेदभाष्य तथा अन्य ग्रन्थों में शब्दों के कुछ ऐसे विचित्र अर्थ उपलब्ध होते हैं जो पाठकों को आश्चर्य में डाल देते हैं तथा स्वामी दयानन्द की गम्भीर अध्ययनशीलता के प्रति अश्रद्धालु मनों में यह शंका हठात् उत्पन्न हो जाती है कि स्वामी दयानन्द शब्दों के अर्थ करने में किसी भी शास्त्रीय व्यवस्था का पालन नहीं करते। यद्यपि ऐसे सैकड़ों शब्द महर्षि दयानन्द कृत व्याख्या ग्रन्थों में है तथापि स्थालीपुलाकन्याय से विज्ञ पाठकों के समक्ष एक शब्द के अर्थ की परीक्षा प्रस्तुत लेख में करना चाहता हूं वह है 'आज्य' जिसका अर्थ स्वामी जी महाराज अनेकधा विज्ञान किया है। आज्य का अर्थ सामान्येन एक विशेष विधि से निर्मित घी होता है जिसका निर्देश आपस्तम्ब श्रौत सूत्रकार ने इस प्रकार किया है—

"श्वेतां श्वेतवत्सामास्तयो तो दुहन्ति तत् स्वयं मूर्तं संयोगेन परिमहन्ति तत् स्वयं मथितमातये विषर्जन्ति तत् स्वयं विलीनमाज्यं भवति"[2] अर्थात् श्वेतवत्सा श्वेत गौ के दूध को चमड़े के पात्र में दोहकर जमावे और बिना मथे रथ में बांधकर रथ को दौड़ावे इस प्रकार बिना मथे स्वयं आगत नवनीत को धूप में तपाने पर जो घी तैयार होता है उसको आज्य कहते हैं।

वैयाकरण और आज्य

व्याकरण शास्त्र के अपेक्षित ज्ञान के अभाव में कुछ विद्वान् आज्य शब्द को गव्य की भांति तद्धितप्रत्ययान्त मानकर आज्य का अर्थ बकरी का घी समझ बैठते हैं। वास्तविकता यह है कि आज्य शब्द कृदन्त है। कात्यायन के वार्तिक सूत्र[3] के अनुसार आज्य शब्द ... की अञ्जु धातु से सिद्ध होता है जिसके अर्थ पाणिनि ने व्यक्ति, म्रक्षण, कान्ति और गति दिये हैं स्वामी दयानन्द ने पञ्चमहायज्ञविधि में अञ्ज धातु से ही आज्य को निष्पादित किया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में जि धातु से भी आज्य शब्द को व्युत्पन्न माना गया प्रतीत होता है।[4] अतः यह सर्वथा निर्भ्रान्त सिद्ध है कि आज्य शब्द बकरी के घी के अर्थ में बिल्कुल नहीं है। इसलिये कोशकार वामन आप्टे ने आज्य का अर्थ "Clearified Butter Ghee" दिया है तथा घृत और आज्य की भिन्नता दर्शाते हुए लिखा "It is often distingushed from" घृत सामान्य रूप से जमे हुए घी को घृत तथा उष्ण के किये हुए घी को आज्य कहा जाता है।

शतपथ ब्राह्मण में आज्य शब्द विज्ञान का प्रतीक

शतपथ ब्राह्मण के पंचम काण्डस्थ राजसूय याग के एक प्रसंग में आज्य का स्वरूप इत्थं प्रकट किया है।

"आतच्य दधि विनाटे आसिच्य यथं युक्ता आवध्य देदीयित्वा आह तद् यत् स्वयमुदितं नवनीतं तदाज्यं भवति। वरुण्यं वाँ एतद् यन्मथितमेतत् मंत्र यत् स्वयं मुदितम् तस्मात् स्वयमुदितमाज्यं भवति"।[5]

1. द्रष्टव्य—क. पञ्चमहायज्ञविधि में पितृयज्ञ प्रकरण में आज्य या शब्द ख. द. यजु. २१—४०, २—१२, २८—१ भाष्य
2. आपस्तम्ब श्रौत सूत्र १८-११-३-६
3. आङ् पूर्वादञ्जेः संज्ञायामुपसंख्यानम् (काशिका ३-१-१०९)
4. द्र. ऐतरेय ब्राह्मण २-३६
5. शतपथ ब्राह्मण ५-३-२-६

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सभा मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी अस्वस्थ



डा० रणजीतसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री डा० रणजीतसिंह ७ फरवरी को चौ० छोटूराम की जयन्ती में सम्मिलित होकर जब अपने निवास होत्री भवन माडल टाउन रोहतक पहुचे तो अचानक पेट दर्द मे पीडित हो गये। जब औषधादि के सेवन से आराम न हुआ तो उन्हें ९ फरवरी को स्थानीय मैडीकल हस्तपाल में प्रविष्ट करवाना पड़ा। वे वार्ड नं० 7 में हैं। सूचना मिलते ही स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, श्री नवाबसिंह गणक, म० भगतसिह वानप्रस्थ आदि उन्हें देखने हस्पताल में गये। सभा प्रधान प्रो० शेरसिह जी ने भी उनके स्वास्थ्य की जानकारी लेने हेतु मा० दीपचन्द जी को दिल्ली से रोहतक भेजा।

परमात्मा से प्रार्थना है कि सभा मन्त्री को शीघ्र स्वस्थ करें।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

परमात्मा सुख की वर्षा करता है

लेखक—धर्मवीर विद्यालंकार

मनुष्य प्रतिदिन अनुभव करता है कि यह संसार दुःख से परिपूर्ण है और सुख क्षणिक है। दुःख से छुटकारा पाने का प्रयत्न मनुष्य जीवन भर करता है। योग दर्शन का सूत्र—'दु खात्यन्तनिवृत्तिः योगः' भी यही कह रहा है कि सुख चाहते हो तो दुःख को सर्वथा दूर करिए।

योगदर्शन का एक सूत्र है—'योगश्चित्तवृत्ति निरोधः'। अर्थात् चित्तवृत्तियों के प्रभाव को रोकना, चित्त को स्थिर करना योग है। अभिप्राय यह है कि चित्त की इच्छाओं की पूर्ति न होने पर दुःख होता है। उन इच्छाओं का संयमन ही दुःख को समीप नहीं आने देता।

समस्त प्रकार की इच्छाओं की निवृत्ति योगी ही करेंगे। जनसाधारण जो संसार में कर्म कर जीवन यात्रा का निर्वाह कर रहे हैं। उनकी समस्त इच्छाएं एकदम नष्ट करना संगत नहीं। इच्छा तो करनी ही होगी। उस अवस्था में विचार करना है कि किस प्रकार की इच्छाएं मनुष्य करे? इच्छाएं शुभ हों, कल्याणकारिणी हों। अपने निजी हित में हों, समाज के हित में हो और किसी के लिए अमंगलकारी न हों

अगर मुझे किसी ने हानि पहुंचाई है तो उसको कोई हानि करे। इससे मेरा कष्ट निवारण तो न होगा। मात्र बदले की भावना को सन्तुष्टि होगी। बदला की भावना शुभ इच्छा नहीं है। मेरे किसी दोष के कारण मुझे दण्ड दिया गया है तो उचित है कि मैं शिक्षा ग्रहण कर अपने दोष का परित्याग करूं। न कि बदले की भावना मन में लाऊं। अगर बिना कारण शरारतवश या भयभीत करने के उद्देश्य से मुझे कष्ट पहुंचाया गया है, तो उस दुष्ट की शरारत दूर करने के या आतंकित करने की रुचि दूर करने के उद्देश्य से उसे दण्ड देना उचित है। यहां भी बदले की भावना नहीं होनी चाहिए। इसका सात्विक उदाहरण है माता पिता गुरु द्वारा पुत्र: शिष्य को दण्ड देना। उनमें कल्याण की भावना होती है बदले की नहीं। इस प्रकार के विवेचन का अभ्यास मन को होना चाहिए कि मेरी इच्छा–चाहे कितनी ही छोटी हो अथवा महती–शुभ ही है अशुभ नहीं।

मनुष्य (जीव) अल्पज्ञ है। इच्छाओं की पूर्ति में आने वाली बाधाओं का पूर्वाभास उसे नहीं होता। एकदेशीय होने से वह समय, स्थान और दिशा से बन्धा है। जरा विचारिये। वह बड़े प्रसन्नचित से भोजन के लिए बैठा है। स्वादिष्ट विविध व्यंजनों से भरा थाल उसके सामने परोसा गया है। प्रभु का स्मरण कर वह प्रथम ग्रास तोड़ता ही है कि मुहल्ले में शोर मचता है। अत्यन्त भयंकर काण्ड हो गया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने घर से बाहिर जुट गया है। ऐसी विपत्ति के समय भोजन करने को मन ही नहीं करता। उस स्वादिष्ट भोजन को छोड़ मुहल्ले की विपत्ति को दूर करने के उद्देश्य से बलवती प्रेरणा से मनुष्य आसन से उठ जाता है। देखिए, चित्त प्रसन्न था भूख लगी थी, मनचाहा भोजन भी मिल गया। घर का वातावरण भी शान्त था फिर भी मनुष्य वह भोजन न पा सका। पत्नी विचारती है कि अगर यह पता होता तो ५-१० मिनट पहले ही भोजन परोस देती। बस यही पता होता ही तो इस अल्पज्ञ, एकदेशीय, शरीरधारी जीव के वश की बात नहीं है। यह बात वश में है, उस सर्वव्यापक (आपः) परमपिता परमात्मा के। ऐसी अथवा इससे भी दारुण भयंकर घटनायें प्रतिदिन संसार में होती रहती हैं। व्यापार में अप्रत्याशित घाटा या लाभ, प्रियजन की असामयिक मृत्यु या दर्शन असम्भावित दुर्घटना या सुघटना, असम्भव बातें, आश्चर्यजनक वार्ताएं आदि प्रतिदिन सुनाई देते हैं।

परमपिता परमात्मा न्यायकारी और दयालु है, सर्वव्यापक सर्वान्तर्यामी भी है। वह समस्त स्थानों में उपस्थित है, समस्त समयों में—भूत, वर्तमान और भविष्य में उपस्थित था, है और होगा। वह समस्त दिशाओं में विद्यमान है। वह परमात्मा स्थान समय व दिशाओं के बन्धन में नहीं है। मात्र वही जानता है कि अमुक मनुष्य पर, अमुक स्थान पर अमुक समय पर, अमुक दिशा से विपत्ति आने वाली है। अगर मनुष्य ने सत्कर्म किए हैं, पुण्य अर्जित किया है तो न्यायकारी प्रभु उस आने वाली विपत्ति से बचाव करा सकता है अथवा प्राप्त होने वाली सम्पत्ति (सुख) की प्राप्ति में सहायक हो सकता है। उसी समय वह सर्वान्तर्यामी यह भी देख समझ रहा है कि हमारी इच्छा शुभ है, दिव्य है। तब मनुष्य के जीवन में सुख ही सुख बरसने की अनुभूति होती हैं। इसे ही कहते हैं कि प्रभु छप्पर फाड़ कर देते हैं। इस भाव को निम्न वेदमन्त्र में कहा है—

> ओ३म्। शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये।
> शं योरभिस्रवन्तु नः॥

अर्थ—"वह सर्वव्यापक, सर्वप्रकाशक परमात्मा हमारे कल्याण के लिए हमारी शुभ मनोवांछित इच्छाओं की पूर्ति करता है। सर्वव्यापक परमात्मा उस इच्छा पूर्ति में आने वाली आपत्तियों से रक्षा करता है। इस प्रकार हमारे चारों ओर कल्याणकारी सुख की वर्षा करता है।"

इस मन्त्र के निरन्तर अर्थसहित जप से परम सुख, शान्ति, मानसिक एवं आत्मिक बल मिलता है।

वरेण्य तेज और नं०

मनुष्य जीवन में विपत्तियों पर सफलतापूर्वक विजय पा सके और प्राप्त उत्तम सुखों का सदुपयोग भी कर सके, इस हेतु शुभ एवं अशुभ इच्छाओं का स्पष्ट, सम्यक, विवेकज्ञान का प्राप्त होना आवश्यक है। बिना ज्ञान के, सत्यज्ञान के मानव को पता ही नहीं चल पाता कि उसे जो वस्तु, सज्जन अथवा समय (अवसर) प्राप्त हुआ है, उससे उसे सुख मिलने वाला है अथवा कष्ट। प्रायः मनुष्य को पछताते हो देखा गया है। जिस वस्तु का उपभोग मानव स्वेच्छा से, सुरुचि से, हितकारी समझ कर रहा होता है, वह परिणाम में कष्टदायक सिद्ध होती है। भारवि कवि ने अपने महाकाव्य की रातार्जुनीयम् में इस बात को निम्न प्रकार से कहा है—

> आपातरम्याः विषयाः पर्यन्तपरितापिनः

अर्थ—संसार में सुन्दर आकर्षक दिखाई देने वाले इन्द्रियों के विषय (रूप, रस, गन्ध, शब्द, स्पर्श) परिणाम में कष्टदायक होते हैं।

जगत् के प्राणि-मात्र के हित की कामना पर उपकार की भावना के अनुरूप संसार भर के दुःखों, कुरीतियों, दुर्गुण-दुर्व्यसनों का सही-सही सत्यज्ञान प्रकाशित करते हुए, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश नामक ग्रन्थ लिखा है। इसका अनुशीलन कर उच्चकोटि की ज्ञान-चक्षुएं खुली और उन्हें असीम आश्चर्यजनक आनन्द की अनुभूति हुई। सहस्रों साधारण मानवों ने भी जीवन संघर्ष में अभूतपूर्व जीवन मूल्यों का ज्ञान प्राप्त कर सुख पाया। यह है यथार्थ सत्यज्ञान का परिणाम।

यह तो उच्चकोटि की बात है। सामान्य जीवन में भी हम प्रतिदिन अनेक बार अनेक मानवों को आपस में सावधान करते हुए पाते हैं। हे! भाई तुम्हारे में बुद्धि नहीं है क्या? मामूली सा काम ठीक न कर सके। बुद्धि से काम करो। अनेक अवसरों पर जैसे कि पैर फिसल जाने पर, कपड़ा फट जाने पर, दाल या दूध या रोटी जल जाने पर, भोजन स्वादिष्ट न बनने पर, कपड़ा साफ न होने पर घर या कार्यालय में सामान का अस्त-व्यस्त रूप होने पर छोटे छोटे अनेकों कार्यों में बुद्धि द्वारा कार्य करने के लिए उपदेश देने में तत्पर रहते हैं। हम स्वयं अपने द्वारा किये गए कार्यों के समय बुद्धिपूर्वक करने का ध्यान नहीं देते।

ज्ञान के लाभ सर्वविदित हैं। व्यापार में, उद्योग में, कला में, शिक्षा में व्यवहारकुशलता में ज्ञान की प्रथम आवश्यकता है। मानव जीवन का प्रथम चरण २५ वर्ष तक ज्ञान प्राप्ति अथवा बुद्धि विकास का ही काल हमारे पूर्वज ऋषियों ने निर्धारित किया है। अपरिचित स्थान में, अपरिचित लोगों के मध्य ज्ञान का ही एकमात्र सहारा होता है। इसे परम दैवत माना है। सर्वेषामेव दानानाम् ब्रह्मदानम् विशिष्यते।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

त्रिपक्षीय वार्ता में हरयाणा को भी बुलाया जाए—शेरसिंह

नई दिल्ली, ११ फरवरी (यू.) भूतपूर्व केन्द्रीय मंत्री और हरयाणा रक्षा वाहिनी के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री से आग्रह किया है कि पंजाब समस्या पर प्रस्तावित त्रिपक्षीय वार्ता में हरयाणा का प्रतिनिधि भी आमन्त्रित किया जाये।

श्रीमती इन्दिरा गांधी को लिखे पत्र में उन्होंने कहा है कि समस्या के उचित समाधान के लिए दो ही विकल्प है। या तो दोनों राज्यों के प्रतिनिधियों में सीधी वार्ता हो या फिर सरकार और राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधि दोनों पक्षों को स्वीकार्य किसी न्यायपूर्ण हल पर पहुंचने के लिए दोनों पक्षों की बात सुने।

उन्होंने कहा कि पहले विकल्प पर अमल होने की कोई संभावना नहीं क्योंकि अकालियों की मांगें अत्यन्त अनुचित हैं और रवैया बहुत अड़ियल। दूसरे विकल्प की स्थिति में सौहार्द्र बातचीत तभी सम्भव हो सकती है जब दोनों पक्षों को एक साथ बुलाया जाए और उन्हें अपना दृष्टिकोण पेश करने की अनुमति दी जाये तथा दोनों पर जिरह की जाये। यदि जरूरत हो तो सरकार और राजनीतिक पार्टियों के प्रतिनिधियों की उपस्थिति में जिरह हो।

उन्होंने इस बात पर खेद प्रकट किया कि देश के महान् नेता अकालियों की अनुचित मांगों के प्रति जरा भी चिंतित नहीं हैं और वे हरयाणा के न्यायपूर्ण पक्ष पर जरा भी ध्यान नहीं दे रहे। अकाली हमेशा से दबाव और धमकियों द्वारा अनुचित मांगें मनवाने में यकीन रखते आए हैं।

अकालियों से हमारी सीधी बात हो—भजनलाल

चण्डीगढ ११ फरवरी (परवाना) हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री भजनलाल ने गत दिवस करनाल के पास नीलोखेडी में एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए केन्द्रीय गृहमन्त्री श्री सेठी से मांग की कि अकालियों से हमारी सीधी बातचीत कराई जाए।

श्री भजनलाल ने केन्द्र सरकार व पंजाब के राज्यपाल श्री बी. डी. पांडे से भी मांग की है कि पंजाब में हुए हत्याकांडों की जांच की जाए। उन्होंने इन घटनाओं के पीछे विदेशी शक्तियों का हाथ होने का आरोप लगाया जो कि भारत को ब्लैक मेल करना चाहती हैं।

करनाल व कुरुक्षेत्र के प्रमुख मिल नेताओं ने क्षेत्रीय व जल विवाद के मामले में श्री भजनलाल का समर्थन किया है।

(पंजाब केसरी से साभार)

त्रिपक्षीय बातचीत में हरयाणा सरकार दावे रखेगी

चंडीगढ, १२ फरवरी (जनसत्ता) पंजाब समस्या पर होने वाली बातचीत में उठने वाले जल और क्षेत्रीय बंटवारे के मुद्दे पर हरयाणा ने अपने रूख में कोई परिवर्तन नहीं किया है।

मुख्यमंत्री भजनलाल और राज्य के विपक्षी नेता अपनी इस मांग पर दृढ हैं कि हरयाणा को रावी व्यास के पानी में उसका उचित हिस्सा मिलना चाहिए। उनका कहना है कि पंजाब को चंडीगढ तथा अबोहर फाजिल्का दोनों नहीं मिल सकते।

विपक्षी दल चंडीगढ के बंटवारे के मुख्यमन्त्री के प्रस्ताव के बारे में पूरी तरह सहमत नहीं लगते। भाजपा नेता गगनसेन ने कहा है कि गलत हो या ठीक ११७० के प्रधानमन्त्री के फैसले को माना जाना चाहिए। इस फसले में अबोहर-फाजिल्का की जगह चंडीगढ को पंजाब को देने की बात कही गई थी। भजनलाल ने कहा कि चंडीगढ को आधे-आध बांट देना चाहिए। अबोहर फाजिल्का में भी भाषा के आधार पर ही बंटवारा होना चाहिए।

राज्य जनता पार्टी के नेता देवीलाल भी क्षेत्रीय विवाद पर झुकने को तैयार नहीं लगते। कुछ दिन पहले उन्होंने यहां कहा कि सिरसा जिले से लगा अबोहर फाजिल्का हरयाणा को मिलने चाहिएं। यहां की बोली बागडी है जो हरयाणवी और राजस्थानी का मिश्रण है। उन्होंने कहा कि अगर यहाँ भाषाई सर्वेक्षण कराया गया तो अधिकांश लोग बागड़ी बोलने वाले मिलेंगे न कि पंजाबी।

हरयाणा लोकदल का रूख भी नरम नहीं लगता। लोकदल भी क्षेत्रीय सवाल पर समझौता करने को तयार नहीं है। उसके प्रदेश अध्यक्ष मनोराम गोदारा भी इसी इलाके से हैं और वे अबोहर फाजिल्का के भाषाई और सांस्कृति जीवन से पूर्णत परिचित है। लोकदल के राष्ट्रीय अध्यक्ष चौधरी चरणसिंह भी हरयाणा के हितों के बचाने के पक्ष में हैं।

नदियों के जल बटवारे के प्रश्न पर भी विपक्षी और शासक दलों का रूख भी नहीं बदला है। मुख्यमंत्री वर्तमान बटवारे के बिना छेड़छाड़ किए मामले को पचाट को सौंपने को तैयार हैं वे सतलुज यमुना लिंक नहर की वर्तमान ३८ लाख फीट एकड की क्षमता को ४२ लाख फीट एकड तक बढ़ाना चाहते हैं। उन्हें भरोसा है कि पंचाट हरयाणा की हिस्सेदारी ४२ लाख फीट एकड तक कर देगा। इसके लिए पहले से ही बड़ी नहर बनाकर रखने को जरूरत है।

विपक्षी दल भी इस मुद्दे पर थोडा भी झुकने को तैयार नहीं है। वे तो राज्य सरकार की सतलुज-यमुना लिंक नहर पूरी नहीं करा पाने के लिए भी निंदा कर रहे हैं। समझौते के अनुसार यह काम ३१ दिसम्बर १९७१ तक ही पूरा हो जाना था। वे तो इस देरी के लिए मुख्यमन्त्री से इस्तीफे की माग भी कर रहे हैं। नहर से मिलने वाले पानी से रोहतक और भिवानी जिलों को फायदा होगा जो विपक्षी दलों के गढ माने जाते हैं। इससे यहां १५० करोड़ के अन्न की पैदावार बढ़ेगी। इस प्रकार जल बटवारे के मुद्दे पर भी सुलह समझौते के लिए हरयाणा झुकता नहीं लगता।

मुख्यमन्त्री ने पहले ही घोषणा कर दी है कि वे केन्द्र को अपने राज्य के प्रस्ताव भेजने से पहले राज्य के विपक्षी दलों से बातचीत करेंगे। अभी तक तो यही लगता है कि अगर यह बातचीत हुई तो काफी गरमा-गरमी होगी। शासक दल को यह भरोसा है कि केन्द्र सरकार अकाली मांगों के दबाव में हरयाणा के हितों की बलि नहीं चढाएगी दल को १२ मार्च से होने वाले बजट सत्र में भी विरोधी दलों की चुनौती का सामना करना है। इंका राज्यसभा के दोनों सीटों के लिए भी चुनाव लड़ रही है। लेकिन विधान सभा में विपक्षी दलों की स्थिति के अनुसार एक सीट विपक्ष को मिलेगी। अगर त्रिपक्षीय बातचीत में कुछ गडबड़ फैसला होगा तो राज्य में शासक और विपक्षी दोनों लोग आन्दोलन करेंगे।

(जनसत्ता से साभार)

हम चंडीगढ़ का बटवारा नहीं मानेंगे

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक—१३ फरवरी, हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं न्याय प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आज भारत सरकार तथा विपक्षी दलों के प्रतिनिधियों से मिलकर स्पष्ट कर दिया है कि हरयाणा की जनता चण्डीगढ का विभाजन स्वीकार नहीं करेगी। शाह-कमीशन ने हिन्दी भाषी क्षेत्र होने के कारण चण्डीगढ हरयाणा को देने का निर्णय दिया था। १९७० में प्रधान मन्त्री ने चण्डीगढ के बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा में मिलाने का ऐवार्ड दिया था। हमें दोनों निर्णय स्वीकार हैं, परन्तु अकाली समझौता करके मुकरते रहते हैं। हम अपने पानी का भी हक लेकर रहेंगे।

वैदिक यति मण्डल की आवश्यक बैठक

इस पत्र के माध्यम से सभी सदस्यों को सूचित किया जाता है कि १ व २ मार्च १९८४ का महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक में वैदिक यति मण्डल की आवश्यक बैठक का आयोजन किया गया है, जिस में गत बैठक के लिए गये निर्णयों के अनुसार भावी योजना को क्रियान्वित करना है। गत बैठक जो अजमेर में हुई थी उस समय जो सुझाव सदस्यों द्वारा रखे गये थे और कुछ बाद में भी आए हैं उन सब पर काफी विचार विमर्श हुआ है और कुछ करना है।

इस बैठक के बाद ५ मार्च १९८४ सोमवर से हमारी एक पदयात्रा महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर से आरम्भ होगी जो वहां से पश्चिम की ओर रोहतक और भिवानी जिले के ग्रामों में प्रचार करते हुए लोहारू तक जायेगी, जहां पर पूज्यपाद स्व० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज पर अत्याचारी लोहारू नवाब की लाठियों और कुल्हाड़ियों की वर्षा हुई थी। इस पद-यात्रा में हमारे साथ एक सप्ताह हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो॰ शेरसिंह जी भी रहेंगे।

अध्यक्ष—सर्वानन्द सरस्वती   संयोजक—ओमानन्द सरस्वती

आर्यसमाज कंवारी (हिसार) का उत्सव

आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार का वार्षिक महोत्सव दिनांक ३-४-५ फरवरी को बड़े उल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर शिक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, समाज सुधार सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन आदि सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, स्वामी इन्द्रवेश संसद् सदस्य, जगबीर एडवोकेट, बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल खरणियार, डा० बारूराम, पं० हरिचन्द, पं० ईश्वरसिंह, मुन्शी लाल भजनमण्डली आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, पण्डित सुलतानसिंह भजनमण्डली हांसी के भाषण, प्रवचन एवं भजन हुए। महायज्ञ के अवसर पर युवक युवतियों ने यज्ञोपवीत धारण करके वैदिक धर्म की दीक्षा ली। गुरुकुल झज्जर के ब्रह्मचारी रामबीर जी ने सरीया मोड़ना, कांच पीसना, बेल तोड़ना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, दो कार रोकना आदि ब्रह्मचर्य के बल प्रदर्शन से दर्शकों को आश्चर्यचकित किया। इस आयोजन में निकटवर्ती क्षेत्र के हजारों नर-नारियों ने भाग लिया। आर्यसमाज कंवारी ने सभा को २०० रु० वेदप्रचार दिया। महोत्सव का बड़ा अच्छा प्रभाव रहा।

अत्तरसिंह आर्य मन्त्री
आर्यसमाज कंवारी (हिसार)

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति द्वारा गुरुकुलों का निरीक्षण

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री हरद्वारी लाल ने गत सप्ताह कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत का निरीक्षण किया। वे गुरुकुल के वातावरण से बहुत प्रभावित हुए। स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के निमन्त्रण पर २१ फरवरी को आप गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक पधार रहे हैं। स्वामी जी ने उनसे अनुरोध किया है कि आर्ष पाठ्यविधि को मान्यता देकर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को प्रोत्साहन देवें।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

हरयाणा में गुरुकुलों को सरकारी मदद

हिसार, १३ फरवरी (निस) हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने घोषणा की है कि राज्य में गुरुकुल शिक्षा की पुरानी प्रणाली को प्रोत्साहन दिया जायेगा। हर साल लगभग २० गुरुकुलों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराई जायेगी। मुख्यमन्त्री ने यहाँ से १३ कि० मीटर दूर घोरणवास गुरुकुल में कल कहा कि शुरु में प्रत्येक गुरुकुल को २५ हजार रु० वार्षिक दिये जावेंगे।

(दैनिक ट्रिब्यून १४ फरवरी)

(पृष्ठ १ का शेष)

शतपथसन्दर्भ से विस्पष्ट ज्ञात होता है कि जो नवनीत मथकर (ताडना के द्वारा) तैयार किया जाता है वह वरुण देवताक होता है। तथा जो स्वयं ऊपर आता है वह मित्र देवता वाला होता है। आचार्य सायण ने प्रकृत सन्दर्भ के ऊपर टिप्पणी करते हुए लिखा है 'यन्मन्थनं-निष्पन्नमाज्यं तद् वरुण्यम् उपद्रवकारिणो वरुणस्य योग्यं न तु सर्व-सुहृदो मित्रस्य, यत्तु उदीरितरूपं स्वमुदितं तन्मन्थनरूपस्य हिंसनविरहात् मैत्रम्'

उपरिकृत विश्लेषणों से विस्पष्ट है कि आज्य का सम्बन्ध हिंसादि से रहित सर्वसुहृत् मित्र देवता के साथ है। मित्र तथा वरुण के स्वरूप का विवादन शतपथकार ने अनेकत्र किया है यहां कुछ ब्राह्मण वचन पाठकों के विचारार्थ प्रस्तुत है जिनसे मित्र एवं वरुण का वास्तविक अर्थ उद्भासित हो जायेगा

१. मित्र एव क्रतुः। वरुणो दक्षः। ब्रह्म वै मित्रः। क्षत्रं वरुणः अभिगन्तेव ब्रह्म कर्ता क्षत्रियः।[6]
२. न क्षत्रं वरुण ऋते ब्रह्मणो मित्रात्। यद्ध किं च वरुणः कर्म चक्रे अप्रसूतं ब्रह्मणा मित्रेण न वास्मै तत् समानृधे।[7]
३. स यत् ततो वरुणः कर्म चक्रे प्रसूतं ब्रह्मणा मित्रेण स हैवास्मै तदानृधे।[8]

इन शतपथ वचनों के आलोक में निःसंकोच भाव से कहा जा सकता है कि वरुण क्षत्रिय देवता है जो मित्र ब्राह्मण देवता के आदेश का अनुवर्ती होकर ही समृद्धि को प्राप्त करता है। मित्र सदैव शान्त भाव से ज्ञानोपदेश द्वारा सन्मार्ग का दिखाता है। वरुण देव उन लोगों को अनुशासन में रखते हैं जो ब्राह्मण के उपदेश से अपने आपको मर्यादा में नहीं रख सकते। इसलिये वरुण के पाशों का वर्णन वैदिक साहित्य में बहुत्र दृष्टिगोचर होता है।[9]

पूर्वोक्त ब्राह्मण वचनों से स्पष्ट होता है कि आज्य ज्ञान विज्ञान से सम्बन्ध रखने वाले ब्राह्मण का अथवा उसके विज्ञान का प्रतीक माना गया है। ब्राह्मण ग्रन्थों में प्रतीक शैली का निर्वहण इस पद्धति से किया गया प्रतीत होता है कि प्रतीक शब्द जहां प्रसिद्ध अर्थ के द्वारा विशेष भाव को प्रकाशित करने में समर्थ होता है वहां अपने धातुज अर्थ के द्वारा भी उसी अर्थ को प्रकाशित करने में युक्त होता है। प्रकृत में आज्य शब्द दोनों तरह से विज्ञान के अर्थ को घोषित करता है। जिस प्रकार बिना हिंसा के (ताडना के) तैयार होता है ठीक इसी प्रकार यथार्थ ज्ञान भी ताडना से कदापि किसी की बुद्धि में उत्पन्न नहीं किया जा सकता और न ही यथार्थ बोध के बिना कोई पुरुष निःश्रेयस को प्राप्त कर सकता है। इसीलिये संस्कार विधि के सामान्य यज्ञ प्रकरण में १२ आज्याहुतियां जिन मन्त्रों से दी जाती है उनमें ज्ञान के देवता अग्निशब्द गम्य परमेश्वर से प्रार्थना की गई है तथा हठात् धर्म में रखने वाले वरुण देवता से भी प्रार्थना की है कि हे वरुण देव परमात्मन हमें ऐसा ज्ञान का प्रकाश दो कि हम धर्म कार्यों को बन्धन से नहीं अपितु अपने हार्दिक भावों से सहजतया अनुष्ठान कर सकें। यही भाव इन मन्त्रों द्वारा आज्याहुति देने का प्रतीत होता है।

इस प्रकार यौगिक तथा प्रतीक शैली, दोनों द्वारा ही आज्य का अर्थ विज्ञान सर्वथा संगत हो जाता है। स्वामी दयानन्द ने अपनी सूक्ष्म प्रज्ञा द्वारा ब्राह्मणादि प्राचीन वेद व्याख्यान ग्रन्थों की इस व्याख्या शैली को पकड़ लिया और उन्होंने निःसंकोच भाव से आज्य का अर्थ विज्ञान कर दिया। पर जिन लोगों ने गम्भीरता से इन प्राचीन वेद व्याख्यान ग्रन्थों का अनुशीलन नहीं किया वे लोग महर्षि के अर्थों को उनकी अपनी कल्पना समझकर महर्षि का उपहास करने में प्रवृत्त हो जाते हैं। ठीक ही कहा है—

न वेत्ति यो यस्य गुण प्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति।

6. शतपथ ब्राह्मण ४-१-४-१
7. शतपथ ब्राह्मण ४-१-४-४
8. शतपथ ब्राह्मण ४-१-४-५
9. क. वरुण पाशो वा एषोऽन्तर्भवहि। शतपथ ३-६-३-२०
ख. वारुणी वा एषा रज्जुः शतपथ ३-७-४-१

आर्यसमाज की गतिविधियां—

जि० कुरुक्षेत्र में ग्राम उत्थान कार्यक्रम

१५-१-८४ को आर्यसमाज फतेहपुर (कुरुक्षेत्र) के तत्वावधान में दहेज, शराब और भ्रष्टाचार पर एक विचार गोष्ठी श्री सर्वदानन्द आर्य प्रिंसीपल, डी० ए० वी० कालेज पुण्डरी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें पुण्डरी ब्लाक की पंचायतों और आर्यसमाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। इसमें सर्वसम्मति से निम्नलिखित निर्णय लिये गए और इनको समस्त देहात में लागू करने का फैसला किया गया।

१. लड़के के दसूठन पर कोई मगन नहीं होना चाहिये और समारोह पर कम से कम खर्च हो।

२. भात में पांच से अधिक व्यक्तियों पर रोक हो और थाली में १०१) से अधिक नहीं होने चाहियें।

३ लडके या लड़की को देखने के लिए पांच से अधिक व्यक्तियों के जाने पर रोक हो।

४. सगाई पर टीके का एक रु० हो और पिता, दादा, सम्बन्धियों की मिलनी भी एक रु० से होनी चाहिये।

५ विवाह शादी में दहेज के लेन देन तथा दिखावे पर पूर्णतः रोक हो

६. विवाह शादी में भाजी और परोसी की प्रथा बन्द होनी चाहिये।

७. सगाई और शादी के बीच की सभी रस्में समाप्त हों।

८. बारातियों की संख्या पांच से अधिक नहीं होनी चाहिए इस अवसर पर बाजा गाजा, नाच-गान और शराब पीने पर पूर्णतः प्रतिबन्ध हो। बारात दिन की होनी चाहिए, जहां तक हो सके रात्रिकालीन विवाहों में अनावश्यक बिजली व प्रकाश व्यवस्था समाप्त होनी चाहिये विवाह के पश्चात् रिसैप्शन की प्रथा समाप्त हो।

९. लड़की के विवाह में कन्यादान का केवल १ रु० हो।

१० लडकी को केवल अपनी सास, सुसर और दादस के कपड़े ले जाने की व्यवस्था होनी चाहिये।

११. बिना उचित कारण सगाई तोड़ने वाले तथा विवाह उपरान्त लड़की या लडके को छोडने, अनुचित व्यवहार करने वाले पक्ष और उसके परिवार का सामाजिक बहिष्कार करने की व्यवस्था हो। इस प्रकार किसी भी लड़के की पुनः अपनी लड़की देने वाले पर भी प्रतिबन्ध हो।

१२. मृत्यु काज प्रथा बिल्कुल समाप्त होनी चाहिये।

१३. गांव में शराब पीने वालों पर जुर्माना और बताने वाले को इनाम की व्यवस्था होनी चाहिये।

१४. गांव में शराब के ठेकों को उठाने के लिए पंचायतों से सरकार को प्रस्ताव पास करके भेजने चाहियें और ठेकों का घेराव/धरना देने की व्यवस्था होनी चाहिये।

१५. घरों में देशी शराब निकालने और नशीली वस्तुओं की बिक्री पर पाबन्दी होनी चाहिए।

१६. रिश्वत लेने और देने पर प्रतिबन्ध हो। इस प्रथा को समाप्त करने के लिए ग्राम स्तर पर संघर्ष समितियां बनें।

१७. गांव के सभी झगड़ों का फैसला पंचायत स्तर पर होना चाहिए।

१८. लड़के की शादी की आयु २५ वर्ष और लड़की १६ की वर्ष होनी चाहिये।

आप सभी महानुभाव से प्रार्थना है कि अपने गांव में/बिरादरी में उपरोक्त फैसलों को लागु करके एक आदर्श समाज बनाने में सहयोग दें।

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज मोती चौक रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ

प्रधान—स्वामी भजनानन्द, उपप्रधान—श्री मेघराज, श्री पोलियामल, उपमन्त्री—श्री रामनिवास, कोषाध्यक्ष—श्री रामचन्द आर्य, लेखा निरीक्षक—श्री ओंकार, प्रचारमन्त्री—श्री कृष्णचन्द, संयोजक—श्री रामेश्वरदयाल

आर्यसमाज शिवाजी नगर गुड़गांव

प्रधान—श्री चन्दनसिंह, उपप्रधान—श्री—गणपतराय, श्री कन्हैया लाल आर्य, मन्त्री—श्री किशनचन्द चुटानी, उपमन्त्री—श्री विद्याभूषण शास्त्री, कोषाध्यक्ष—श्री सुखदेव कपूर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द

आर्यसमाज बामला जिला अम्बाला

प्रधान—मा० राजपाल, उपप्रधान—रामस्वरूप, मन्त्री—श्री सोमनाथ, उपमन्त्री—श्री शेरसिंह, प्रचारमन्त्री—श्री भरतसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री सुरेशकुमार।

आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव

प्रधान—श्री मुन्शीराम, उपप्रधान—श्री सत्यपाल आर्य, महामन्त्री—श्री किशनचन्द, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश आर्य कोषाध्यक्ष—श्री सोमनाथ लेखानिरीक्षक—श्री यशपाल, भंडारी—श्री विद्याभूषण शास्त्री

आर्यसमाज नागदा जि० उज्जैन (मध्यप्रदेश)

संरक्षक—श्री द० न० माखरिया, प्रधान—श्री ट० प० सिंह, उपप्रधान—श्री सेवाराम आर्य, श्री अशोक गोरा, श्री रामसिंह चौहान, मन्त्री—श्री जौधसिंह राठौर, उपमन्त्री—श्री नरेन्द्र देवड़ा, कोषाध्यक्ष—श्री रामेश्वर तवर, पुस्तकाध्यक्ष—श्री गोर्धनलाल आर्य, आर्य वीर दल अधिष्ठाता—श्री लक्ष्मीनारायण कड़लूसा निरंजन।

आर्यसमाज सिवानी जिला भिवानी

प्रधान—श्री हेतराम, उपप्रधान—श्री स्वर्णसिंह आर्य, मन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र आर्य, उपमन्त्री व पुस्तकाध्यक्ष—श्री हनुमान आर्य, कोषाध्यक्ष श्री गौरी शंकर आर्य, श्री हनुमान ने आर्यसमाज मन्दिर के लिए एक कमरा १२×१२ का बनाने का वचन दिया।

आर्यसमाज कौल जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान - डा० ताराचन्द, मन्त्री—श्री ईश्वरसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री रामसिंह

आर्यसमाज रसीना जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—चौधरी हीरासिंह सरपंच, मन्त्री—श्री रामपाल आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री सुमेरचन्द आर्य

आर्यसमाज कंवारी जि० हिसार

प्रधान—श्री अत्तरसिंह क्रान्तिकारी, उपप्रधान—श्री अमरसिंह, मन्त्री—श्री इन्द्रसिंह, उपमन्त्री—श्री वीरसेन, कोषाध्यक्ष—श्री रामेश्वर दास, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिसिंह, लेखानिरीक्षक—श्री ओमप्रकाश

आर्यसमाज जीन्द शहर

प्रधान—वैद्य श्रीराम आर्य, उपप्रधान—श्री छबीलदास आर्य, म० लक्ष्मण दास, मन्त्री—श्री कृष्णदेव शास्त्री, उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्रसिंह एडवोकेट, श्री सौदागरमल आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री धर्मवीर आर्य; पुस्तकाध्यक्ष—श्री टिकायाराम आर्य, लेखानिरीक्ष—श्री सत्यप्रकाश आर्य

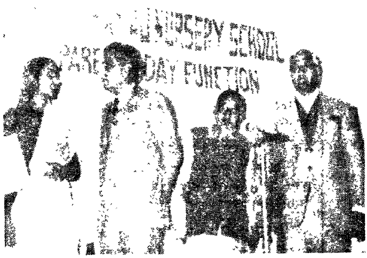
वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत

वैदिक यज्ञ समिति सोनीपत के तत्वावधान में वार्षिक ऋग्वेदीय महायज्ञ १९-२-८४ से २८-२-८४ तक संघ मैदान सोनीपत में आयोजित किया जा रहा है।

विश्व कल्याण की भावना से किये जा रहे इस विशाल यज्ञ के ब्रह्मा श्रद्धेय पंडित मदनमोहन जी विद्यासागर होंगे। वेदपाठ हेतु माननीय आचार्य हरिदेव जी दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर दिल्ली अपने ब्रह्मचारियों सहित पधारेंगे। उनका शुद्ध सस्वर वेदपाठ अपने आप में एक आदर्श है।

उपदेशक—प्रसिद्ध दार्शनिक वेदाचार्य प० विश्वबन्धु जी शास्त्री एवं स्वामी विजयानन्द जी महाराज संचालक कन्या गुरुकुल चितौड़गढ।

आर्यसमाज नर्सरी स्कूल करनाल में अभिभावक दिवस सम्पन्न





आर्यसमाज नर्सरी स्कूल होली मोहल्ला करनाल का "अभिभावक दिवस" १५ जनवरी को बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस दिन स्कूल का सारा आंगन तथा गैलरी अभिभावकों और दर्शकों से खचाखच भरा हुआ था।

सम्माननीय वित्त मन्त्री चौ० कटारसिंह जी की अध्यक्षता में यह कार्य सम्पन्न हुआ। इसकी एक विशेषता यह भी थी कि इसके सभी कार्यक्रम देशभक्ति से प्रेरित थे। जिन बच्चों ने भाग लिया वे सब दस साल से कम की आयु के थे। दर्शकों तथा मन्त्री महोदय ने इसकी बहुत सराहना की। मन्त्री महोदय ने अपने वक्तव्य में कहा कि यहाँ पर स्कूल की जगह बहुत तंग है इसलिये आर्यसमाज की प्रबन्धक कमेटी कोई उपयुक्त जगह देख ले तो उसके लिए सरकार से मैं कम से कम दामों पर जगह दिलवाने का प्रयत्न करूंगा। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने निजी कोष से एक हजार रुपये इस दिवस पर खर्च के लिए और १०० रुपये अपनी जेब से देशभक्ति की एक कव्वाली प्रस्तुत करने वाले बच्चों को दिए।

इस सारे कार्य को सफल बनाने में स्कूल के प्रबन्धक चौ० रत्नसिंह लाठर, आर्यसमाज के मन्त्री श्री हरीश गुलाटी, कोषाध्यक्ष श्री लक्ष्मीनारायण राजपाल, आर० डी० आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की मुख्याध्यापिका श्रीमती राज अरोड़ा, आर्य नर्सरी स्कूल की मुख्याध्यापिका कुमारी मंजू शर्मा और विशेष रूप से कुमारी वीना अरोड़ा और कुमारी कमला मलिक ने रात-दिन एक करके इसमें पूरा योगदान दिया।

प्रेमपाल सन्धु
प्रधान आर्यसमाज नर्सरी स्कूल,
करनाल

डी० ए० वी० कालेज का शुभ संकल्प

गत दिवस डा० सर्वदानन्द जी प्राचार्य डी० ए० वी० कालिज पुण्डरी के छात्रों में आर्यसमाज के प्रति रुचि पैदा करने के लिए तथा शराब और दहेज के विरुद्ध युवाओं को प्रेरणा हेतु कालिज प्रांगण में एक कार्यक्रम का आयोजन किया जिसमें आर्य जगत् के क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी ने अपने भजनों द्वारा युवाओं के समक्ष समाज की दुर्व्यवस्था का चित्र खेंचकर शराब और दहेज की बुराइयों पर प्रकाश डाला। वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने आह्वान किया कि शराब से पनपी तमाम कुव्यवस्था दहेज आदि बुराईयों के विरोध में युवा शक्ति को संगठित होकर मैदान में आना चाहिए। उनके क्रान्तिकारी भाषणों ने युवाओं के हृदय में कुछ कर गुजरने की तड़प पैदा की। उनके आह्वान पर उपस्थित ४०० छात्र छात्राओं ने जोशीले स्वर में दहेज न लेने की प्रतिज्ञा दांया हाथ उठाकर की तथा सभी से दहेज और शराब विरोधी हस्ताक्षर कराये गये। युवाओं में इतना जोश था कि अनेकों युवाओं ने अपने-२ गांव में आर्य समाज की स्थापना करने का निश्चय किया। अन्त में प्रो० प्रेम लुभाए ने वेदप्रचार मण्डल के इस आयोजन पर धन्यवाद किया। कालिज के प्रिंसीपल डा० सर्वदानन्द जी ने इस आन्दोलन के लिए अपने को समर्पित कर क्रान्तिकारी शुरुआत की।

मन्त्री वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा शताब्दी पर

शराब तथा दहेज विरोधी हस्ताक्षर अभियान

शराब तथा दहेज आदि कुरीतियों को रोकने के लिए आर्यसमाज फतेहपुर द्वारा पुण्डरी ब्लाक के सभी पंचों सरपंचों की एक पंचायत शराब तथा दहेज विरोधी ब्लाक स्तरीय समिति बनाकर उसका संयोजक श्री देशबन्धु आर्य व प्रधान डा० सर्वदानन्द को बनाया गया। वेदप्रचार मण्डल के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने कहा कि शीघ्र जिला के अन्य ब्लाकों में भी ऐसी समितियां बना दी जाएगी तथा राज्य स्तर पर शराब और दहेज विरोधी एक लाख हस्ताक्षर करवा कर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा आयोजित हरयाणा प्रान्तीय शताब्दी समारोह में राष्ट्र को समर्पित किये जायेंगे। शराब और दहेज विरोधी हस्ताक्षर फार्म गुरुकुल से प्राप्त किये जा सकते हैं। बैठक में आशा व्यक्त की गई कि राज्य की सभी आर्यसमाजें तथा अन्य शिक्षण संस्थायें इस सामाजिक कुरीति विरोधी आन्दोलन में सहयोग करें।

रोहतक में ऋषि बोधोत्सव पर कवि दरबार

आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक नगर की ओर से ऋषि बोधोत्सव २९ फरवरी १९८४ बुधवार को एक विशाल कवि दरबार रात्रि के ७ बजे से ११ बजे तक भिवानी स्टैण्ड पर सहोत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है जिसमें उच्चकोटि के कवि बेदार जी, मनीषी जी, काका हाथरसी मिगलानी जी, मुसाफिर जी आदि इस कवि दरबार में पहुंच रहे हैं।

मा० मेघराज आर्य कोषाध्यक्ष

ऋषि की मूर्ति अवश्य स्थापित होनी चाहिए

पं० फूलचन्द्र शर्मा 'विडर' भिवानी

२८ दिसम्बर को सार्वदेशिक में महर्षि दयानन्द की मूर्ति लगाने पर श्री केशवदेव जो आर्य ने अपना तीव्र विरोध प्रकट किया है। आर्य विद्वानों तथा विचारकों को ठीक जानकारी के लिए इस विषय पर मैं भी अपने विचार प्रकट करता हूँ, जो इस प्रकार हैं—मेरे विचार में श्री केशवदेव जी अभी तक यह नहीं जानते हैं कि मूर्ति पूजा होती क्या है सुनिए—

पौराणिक लोग पहले से तैयारी करके किसी मूर्ति के सामने खड़े होकर शंख घड़ियालादि बजाते, उसके सामने खाने पीने का पदार्थ धरते उसे वस्त्र तथा माला आदि पहनाते हाथ जोड़ते सिर झुकाते तथा दंडवत् होते हैं। इसका नाम मूर्ति पूजा है। ऋषि के तथा अपने माता पिता आदि के चित्र या मूर्ति को देखकर अथवा उनके जीवन चरित्रों को पढ़ते समय उनकी महता त्याग और अच्छाइयों को याद करके यदि स्वयं रोना आ जाए अथवा उस समय उनकी मूर्ति के सम्मुख हाथ भी जुड़ जाएं तथा मस्तक भी झुक जाए तो यह मूर्ति पूजा कदापि नहीं है। परन्तु ऐसे सज्जन अथवा ऐसे भक्त की भावुकता की प्रशंसा करनी चाहिए। ऋषि के चित्र को देखकर तथा उनके जीवन को पढ़ते समय मुझे अनेक बार रोना आया है और मैं बार बार फूट-फूट कर रोया हूं। इस रोने में जो आनन्द आता है उसे मैं ही जानता हूं। बताया नहीं जा सकता। पचासों साल की बात हो गई। एक धनाढ्य व्यक्ति जो ऋषि भक्त थे (अब वे नहीं रहे) वे मुझे उस समय ५० हजार रुपये ऋषि की मूर्ति की स्थापनार्थ देते थे मैंने उस समय सा० दे० सभा को लिखा भी था कि स्थान बढ़िया से बढ़िया जो उचित हो देख लिया जाए और वहां ऋषि की बढ़िया से बढ़िया मूर्ति लगाई जाए। उसका सारा व्यय मैं दिलवाऊँगा। परन्तु उस समय भी श्री केशवदेव जैसे कच्ची समझ वाले आर्यों के विरोध के कारण मैं इसमें सफल न हो सका था। अब मैंने सुना है कि ऋषि निर्वाण शताब्दी पर ऋषि उद्यान अजमेर में ऋषि की मूर्ति स्थापना का विचार आया है। मेरी समझ में यह कार्य अब से पहले ही कभी का हो जाना चाहिए था। अब तो अवश्य हो ही जाना चाहिए। मैं इस प्रस्ताव का अत्यन्त बलपूर्वक समर्थन करता हूं।

मैं श्री केशवदेव तथा ऐसे ही सभी आर्यों से दो बातें कहना चाहता हूँ—यह कि महर्षि के गुणों से प्रभावित होकर कोई पौराणिक यदि अपने मकान या मन्दिर में उनकी मूर्ति रखकर उसकी पूजा करता है तो उसे आप कैसे रोकेंगे और क्यों रोकेंगे? आजकल उनके मन्दिरों में महर्षि की मूर्ति लगाई भी जा चुकी है और उनकी पूजा भी की जाती है। आपको तो एक पौराणिक को ऋषि की मूर्ति की पूजा करते देख कर उल्टा प्रसन्न होना चाहिए।

आर्य समाजियों की बात का ऋषि की मूर्ति बनाने से आर्य भी उसकी पूजा कर सकते हैं। सो यह गलत है कि कोई आर्य मूर्ति पूजा करे या तो वह (आर्य) मूर्ति पूजा कर नहीं सकता या वह आर्य नहीं है जो मूर्ति पूजा करता है। परन्तु मूर्ति पूजा करने और मूर्ति पूजा होने में जो भेद है। उसे आप समझें क्योंकि मूर्ति पूजा करना और बात है और मूर्ति पूजा होना और बात है। आर्यों से यदि भावुकता में मूर्ति या चित्र पूजा होती है तो होने दो वह तो होनी ही चाहिए और उसे कदापि रोकना नहीं चाहिए।

आर्यों में एक यह भी प्रश्न आता है कि ऋषि की मूर्ति बनाने में उस पर कव्वे चील आदि बैठेंगे और उसकी खराब मिट्टी होगी इत्यादि। इस पर हम कहेंगे कि आप ऐसा सोचकर यह दर्शा रहे हैं कि आपका मूर्ति पूजा में विश्वास है। वरना मूर्ति तो मूर्ति है। उस पर तो कव्वे बैठेंगे ही। यदि आपकी मूर्ति पर कव्वे आदि बैठे देखकर दुःख होता है तो उसे अपने घर में रखकर उसकी पूजा भी कीजिए और मूर्ति को साफ और पवित्र रखने के लिए उस पर शीशे आदि के ढक्कन लगाए जा सकते हैं। आजकल ऐसा किया भी जाने लगा है।

आश्चर्य यह है कि आप ऋषि के चित्र को ठीक समझते हैं पर ऋषि की मूर्ति को नहीं। जहां तक जड़ पूजा का सम्बन्ध है। चित्र और मूर्ति में कोई भेद नहीं है। एक कागज की है तो दूसरी पत्थर की। यदि जड़ पूजा नहीं होनी चाहिए तो दोनों की ही नहीं होनी चाहिए और हो सकती है तो दोनों की ही हो सकती है। क्या पौराणिक लोग चित्र की पूजा नहीं करते और उस पर चयन आदि नहीं लगाते, माला आदि नहीं पहनाते तथा भोग आदि नहीं लगाते?

ऋषि की मूर्ति की पूजा को रोकने के लिए उसके नीचे यह लिखा जा सकता है कि यह ऋषि मूर्ति पूजा के विरोधी इस मूर्ति की पूजा न करें। हमारा मुल उद्देश्य जड़ पुजा को रोकना है। सो न तो ऋषि की मूर्ति की पूजा न होने से जड पूजा रुकेगी और न ही ऋषि की मूर्ति की पूजा होने से जड़ पुजा बढ़ेगी। जड़ पूजा रोकने के तो दूसरे उपाय हैं जिन्हें आर्यसमाज कर ही रहा है।

माता सोमवती का निधन

अबोहर के भूतपूर्व विधायक व स्वाधीनता सेनानी श्री मास्टर तेगराम जी की धर्मपत्नी श्रीमती सोमवती का २०-१-८४ को निधन हो गया। आपने अपना इकलौता वीर सुपुत मेजर सुरेन्द्र प्रसाद सन् १९६५ के भारत पाक युद्ध में मातृभूमि को भेंट कर दिया। शहीद सुरेन्द्र प्रसाद की माता का जन्म किरठल जि० मेरठ के एक आर्य परिवार में हुआ था। आपकी शिक्षा कन्या महाविद्यालय जालंधर, प्रयाग के महिला विद्यापीठ वा उदयपुर में हुई। आप बहुत सरल स्वभाव की सीधी सादी किसान महिला थी। २९ जनवरी को उनके अन्तिम शोक दिवस पर दूर-दूर से आए वक्ताओं ने उनको श्रद्धांजलि भेंट की।

राजेन्द्र जिज्ञासु

ऐ जिन्दगी के राही हिम्मत न हारना

ऐ जिन्दगी के राही, हिम्मत न हारना।
बीतेगी रात गम का, बदलेगा ये जमाना।
ऐ जिन्दगी के राही, हिम्मत न हारना।।

क्यों रात की स्याही तुझको डरा रही है।
हारे हुए मुसाफिर मंजिल बुला रही है।
ऐ जिन्दगी के राही हिम्मत न हारना।।

जब जायेगा यहां से कुछ भी साथ न होगा।
दो गज कफन का टुकड़ा तेरा लिबास होगा।
ऐ जिन्दगी के राही हिम्मत न हारना।।

धन को ठुकरा कर प्रेम को जोड़ तू।
स्वार्थ मन त्यागकर सर्वहितकारी बन तू।
ऐ जिन्गी के राही हिम्मत न हारना।।

उम्मीदों का दामन तेरे हाथों से न छूटे
दम टूट जाये लेकिन कर्त्तव्य कभी न छूटे
ऐ जिन्दगी के राही हिम्मत न हारना।।

मौत का छोड़ दामन जीने का कर बाहाना
किसी भी कठनाइयों में तू न कभी डगमगाना
ऐ जिन्दगी के राही हिम्मत न हारना।।

अनिल मंगला 'पिंकी'

(पृष्ठ १ का शेष)

ज्ञान-विज्ञान से मनुष्यमात्र का कल्याण होता है, वही ज्ञान दुष्टों के द्वारा सर्वसाधारण पर वज्रपात करता है। अणुशक्ति से जहां शांति पूर्ण हितकारी कार्यों का सम्पादन होता है, वहां नर-संहार भी होता है। उपग्रहों के माध्यम से भूगर्भज्ञान वायुमण्डल के परिवर्तन का ज्ञान और दूर-दर्शन में सहयोग हो रहे हैं, वहीं जासूसी के कार्य भी हो रहे हैं। रूस और अमेरिका के सैकड़ों उपग्रह प्रत्येक स्थल की घटना मनुष्यों की आपसी बातचीत क्रिया-कलाप एवं हाव-भाव तक की सूचना दे रहे हैं। पलभर में प्रलय मचा देने वाले मिसाइल निशाने पर लगा दिये हैं। आज कोई भी सुरक्षित नहीं। आज ज्ञान असुरों के हाथ में है।

परमात्मा हमारे कर्मों का न्यायसंगत फल, दयाभाव से प्रेरित हो, अवश्य देता है। अतः पुण्यकर्मों में अपनी बुद्धि की प्रवृत्ति आवश्यक है। यह प्रवृत्ति परमपिता परमात्मा के वरेण्य भर्ग को धारण करने से ही सम्भव है। इसको प्राप्त करने की प्रार्थना ही गायत्री /सावित्री वेदमन्त्र में है—ओ३म्। भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यम्, भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।।

अर्थ परमात्मा सत्स्वरूप चित्स्वरूप और आनन्द-स्वरूप है। सारे ससार को उत्पन्न करने वाले दिव्य शक्ति वाले परमात्मा के वरण करने के योग्य मगलकारी तेज को हम धारण करते हैं। वह तेज हम सबकी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करे।

इस मन्त्र में नः शब्द अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इस शब्द के विस्तृत अर्थ की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। हम मात्र अपने का ग्रहण करते हैं इस शब्द से हमारे समस्त बन्धु-बांधव, इष्टमित्र, सहायक, हितचिन्तकों का ग्रहण तो करना ही चाहिए। इनके साथ ही शत्रु, विरोधी, अहित चिन्तक एवं शरारती और दुष्ट तथा दलित वर्ग का भी ग्रहण करना चाहिए। शिक्षा ग्रहण में जड़ बुद्धि छात्र समाज का दलित और दुष्ट वर्ग तथा प्रतिदिन परेशान करने वाला पड़ोसी (जिसमें पाकिस्तान भी शामिल है) के लिए प्रार्थना करते हैं कि उनकी बुद्धियों को भी सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें, ताकि निर्बल बुद्धिमान बने, दुष्ट दुष्टता छोड़े, शरारती शरारत त्यागे, दलित वर्ग सम्पन्न साहसी बने। यही इस 'नः' का वास्तविक विस्तृत अर्थ है। अगर हम जीवन की कठिनतम अवस्थाओं को सरलता और सफलता से विजय करना चाहते हैं, जीवन में लाभ, सन्तोष, शान्ति, आत्मिक एवं मानसिक बल पाना चाहते हैं तो इन दो मंत्रों का अर्थसहित चिन्तन अवश्य प्रतिदिन करना चाहिए।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक, वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK.49 फोन ८८१२ सृष्टि संवत् १,६६,०८५३,



ओ३म्

सर्व कारी

न्तो विश्वमार्यम्

रोहतक

'आर्य प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक मुखपत्र'

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क १४ ७ मार्च १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

शिवरात्रि पर २९ फरवरी को सांय ८ बजे आकाशवाणी रोहतक से प्रसारित वार्ता

महर्षि दयानन्द और समाज सुधार

डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द सरस्वती का बचपन का नाम मूलशंकर था। मूलशंकर के पिता श्रीकृष्ण जी तिवाड़ी कट्टर शिवभक्त थे इसलिए उन्होंने अपने पुत्र का नाम मूलशकर रखा। वे अपने लाडले बेटे को अपने ही समान शंकर का कट्टर उपासक बनाना चाहते थे। इसलिये वे मूलशंकर को बचपन से ही शिव की महिमा सुनाते और बतलाते कि यह शिव ही संसार का कर्त्ता-धर्त्ता और संहार करने वाला है। यह श्रेष्ठ जनों का कल्याण करने से शिव और दुष्टों को रुलाने वाला होने से रुद्र कहाता है। बालक मूलशंकर ने पूज्य पिता जी के कथन को अक्षरशः सत्य समझा।

जब मूलशंकर १४ (चौदह) वर्ष के थे तब शिवभक्त पिता ने शिव रात्रि के दिन मूलशंकर से शिवरात्रि का व्रत कराया। बालक के मन में लालसा थी कि व्रत रखने से संसार के कर्त्ता शिव के दर्शन होंगे। अतः बालक मूलशंकर ने बड़ी श्रद्धा और भक्ति के साथ महाशिवरात्रि का व्रत रखा। मन्दिर में घटी इतिहास प्रसिद्ध घटना से यह शिवरात्रि बोध रात्रि के रूप में बदल गई और बालक मूलशंकर के मन में सच्चे शिव के दर्शन पाने की उत्कट इच्छा जागरित हो गई। बालक मूलशंकर के चाचा तथा उनकी प्यारी बहिन की असामयिक मृत्यु ने भी उनकी इस इच्छा काअग्नि में हवा का काम किया। उन्हें संसार असार दिखाई देने लगा। वे सच्चे शिव को प्राप्त करने के लिए साधु, सन्त एवं योगी जनों की तलाश में वन-पर्वतों में घूमते रहे। अन्त में ब्रह्मचर्य योगाभ्यास और वेदों के अध्ययन से उन्होंने अपने हृदय में सच्चे शिव के परम आनन्द को प्राप्त कर महर्षि पद पाया और बतलाया कि 'सब सत्य विद्या और जो पदार्थ विद्या से जाने जाते हैं उन सबका आदि मूल परमेश्वर है। वह सच्चा शिव अर्थात् ईश्वर सच्चिदानन्द स्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है। उसी की उपासना सब मनुष्यों को करनी योग्य है। उस शिव का अपना मुख्य एवं निज नाम 'ओ३म्' है। यही नाम ईश्वर के सब नामों का वाचक एव ग्राहक है। ओंकार को छोड़कर ईश्वर के सब नाम एकांगी हैं। महर्षि ने वर्गभेद एवं जातिभेद आदि से ऊपर उठकर मानवमात्र के लिए एक ओंकार की उपासना का विधान किया और सच्चे शिव की उपासना को समाज सुधार का मूलमन्त्र बतलाया। जिस समाज के उपास्य देव अलग-२ हैं वह समाज कभी संघठित नहीं रह सकता। वह एक दिशा में आगे नहीं बढ सकता। इसलिये किसी भी समाज एव राष्ट्र को संगठित एव सुदृढ़ बनाने का मूल मन्त्र एक उपास्य देव है। ओंकार ही एक ऐसा उपास्य देव है जिसे आज भी भारत के नाना मत-मतान्तरों में विश्वास रखने वाले लोग किसी ने किसी रूप में उसे स्वीकार करते हैं और ईश्वर के इस नाम पर सब आध्यात्मिक जगत् एकमत है।

जिस समाज का धर्म-ग्रन्थ एक नहीं वह समाज भी कभी मिलकर नहीं चल सकता। इस सार को समझ कर महर्षि ने संसार के आदि पुस्तक वेदों को ही समाज के श्रेष्ठ पुरुषों के लिए धर्म-ग्रन्थ ठहराया और बतलाया कि 'वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है'।

महर्षि का विश्वास है कि वेद किसी मानव की रचना नहीं अपितु यह पवित्र ईश्वरीय ज्ञान है। जिसे परमपिता परमात्मा सृष्टि के प्रारम्भ में मानवमात्र के कल्याण के लिए अग्नि आदि ऋषियों के हृदय में प्रकाशित करता है। वेद ज्ञान के माध्यम से ही मानव शिक्षा के क्षेत्र में प्रवेश करने में समर्थ होता है। मानव ने ब्राह्मण उपनिषद् गीता आदि जितने भी ग्रन्थों की रचना की है वह सब वेद की ही व्याख्या करते हैं। उन्हें वेद के प्रमाण से ही प्रमाण माना जाता है। वेद स्वतः प्रमाण हैं और शेष मानव रचित ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। आज भारत के नाना मत-मतान्तरों में विश्वास रखने वाले लोग वेद में अगाध श्रद्धा रखते हैं। वेद के आदेश को शिरोधार्य मानकर उसके अनुष्ठान के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। अतः महर्षि ने वेद के नाम पर भारत के श्रेष्ठ समाज को संगठित करने का अत्युत्तम प्रयास किया। जो मतवादी लोग अपने अपने धर्म-ग्रन्थों को लेकर समाज में लड़ते झगड़ते हैं, प्रीतिपूर्व नहीं, रहते, वे बड़ी भारी भूल में हैं। समस्त समाज का आदि पवित्र ग्रन्थ वेद है। समय समय पर आने वाले महापुरुषों ने वेद के मन्तव्यों को ही अपनी-अपनी भाषा में समझाने का प्रयास किया है। वेद के किसी मन्तव्य को समझने-समझाने में कोई अन्तर रह गया है तो उस पर भी परस्पर विवाद नहीं करना चाहिए अपितु समाज के विद्वान् व साधारण नर-नारी भी सत्य को ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा तैयार रहें। हठ और दुराग्रह में पड़कर समाज के वातावरण को अस्वस्थ एवं अशान्त न बनावें। किसी भी कार्य को करने से पूर्व सत्य असत्य का अवश्य विचार करें और मानवमात्र से प्रीतिपूर्वक व्यवहार करें। समाज के श्रेष्ठ पुरुष समाज की शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति में सदा प्रयत्नशील रहें। समाज का कोई नर-नारी शरीर आत्मा और समाज की दृष्टि से दीन हीन न हों। महर्षि ने ऐसे उत्तम मानव समाज के निर्माण के लिए सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में एक प्राचीन शिक्षा पद्धति का विधान किया है। वे लिखते हैं—जब आठ वर्ष के हों लड़कों को लड़कों की और लड़कियों को लड़कियों की पाठशाला में भेज देवें। जो अध्यापक पुरुष व स्त्री दुष्टाचारी हों उनसे शिक्षा न दिलावें किन्तु जो पूर्ण विद्यायुक्त धार्मिक हों वे ही पढ़ाने और शिक्षा देने योग्य हैं। विद्या पढ़ने का स्थान एकान्तर देश में होना चाहिए। लड़के और लड़कियों की पाठशाला दो कोस एक दूसरे से दूर होनी चाहिए जब तक वे ब्रह्मचारी या ब्रह्मचारिणी रहें तब तक स्त्री व पुरुष का दर्शन, स्पर्शन एकान्त सेवन भाषण विषय कथा आदि से अलग रहें। (क्रमश)

शिव-शंकर-दयानन्द

(पं० वोरसेन जो वेदश्रमो, वेदविज्ञानाचार्य, वेदसदन, महारानो रोड, इन्दौर)

(गतांक से आगे)

वह बोली मेरी मूक सेवा में सैकड़ों वर्षों से सहस्रों देव और दानव लगे हैं। ऋषि, महात्माओं का भी आश्रय देती है और चोर, डाकू तथा हिंसक प्राणियों को भी। दोनों ही मेरे अमृतमय जल से जीवन प्राप्त करते हैं। नित्य मेरे पास आते हैं। उनका प्रतिबिम्ब मुझ में पड़ता है और महान् नील आकाश का भी पड़ता है। इससे मैं सबको महानता के माप दण्ड रूप से हूं।

मैं उस महर्षि के दिव्य शरीर को शीतल जल से नित्य स्नान कराती थी। उनके पवित्र शरीर में अपनी रज को अनुलिप्त किया करती थी। उनको स्वच्छ निर्मल जल पिलाती थी। अनेक योग क्रियाओं के साधन के लिए सुरम्य स्थान एवं साधन प्रदान किया करती थी। उनको तपस्या को परिपक्व करने के लिए अनेक सिद्ध योगी जनों से उनको भेंट कराती थी। मैं उनकी तपस्या से प्रसन्न थी। उनके विचारों से गर्वित थी और उनकी ब्रह्मचर्य व्रत साधना से उन्नत भाल कर रही थी। पांच सहस्र वर्ष पश्चात् ऐसे महात्मा, सिद्ध व महर्षि को मैंने देखा था। अनेक साधु, सन्यासी, महात्मा मेरी सेवा में आये। कोई केवल विद्वान् था, कोई ज्ञानी ही था, कोई केवल योगी ही था और कोई केवल तपस्वी ही था। परन्तु ज्ञान तप व योग से पवित्र और उन्नत सर्वगुण सम्पन्न परोपकारी तथा प्राणिमात्र का हितैषी महर्षि के सिवाय कोई दृष्टिगोचर नहीं हुआ इसी से मैंने उसे महान् माना। निस्सन्देह वह महान् ही था।

नर्मदा के दोनों किनारों पर खड़े सजग प्रहरी अमरकंटक और विंध्य पर्वतों से भी मैंने पूछा कि तुमने भी मेरे गुरुदेव को अपनी गुफाओं और कन्दराओं में आश्रय दिया था। उनको तुमने अनेक तत्त्वज्ञानियों व योगियों से मिलाया था। अनेक बार समाधि की साधना में निमग्न करने के लिए ऋषि, महर्षियों की तपस्याओं से परिभूत स्थलों को तुमने प्रदान किया था। तुम्हारे उत्तुंग शृंगों पर चढ़कर उस महर्षि ने चतुर्दिक विस्तृत वसुंधरा के सौंदर्य का निरीक्षण किया था और उस छवि में प्रभु के दर्शन किये थे। प्रभु के दर्शन की मस्ती में मस्त होकर मेरे महर्षि निर्भय होकर तुम्हारी उपत्यकाओं में विचरण करते फिरते थे। क्या तुम उनके बारे में आज अपना मौन भंग करते हुए कुछ बतलाओगे कि वह महर्षि क्या महान् थे ?

वे दोनों पुलकित हो गए। उनके पुलकित होते ही उनके नेत्रों से प्रेमाश्रु रूपी अनेक निर्झर झर्झरित होकर मधुर शब्द करने लगे। रोमांच रूप में उन पर्वतों के शैल शिखर रूप में आगे बढ़कर उन्नत रूप में हो गए। कुछ मृतिका भी उभर कर गिरी। शैलों के उभर आने और भूतल के गिरने से अनेकों गुफाएं दिखने लगी। वे सब साक्षी रूप से बोलने लगी वह महर्षि महान् तपस्वी था। वह महान् योगी था। वह महान् युग पुरुष था। सहस्रों वर्ष से ही नहीं अपितु अनेक युगों का इतिहास हमारे ही अंक में निर्मित होता रहा है। राग-द्वेष बुद्धि हमारे में नहीं है। हमारी भित्तिकायें यथार्थ चित्रण की साक्षी हैं। इन कन्दराओं में प्रवेश करके महर्षि ने अपनी हृदय गुहा में उस प्रभु के—'भर्गो देवस्य धीमहि' का साक्षात्कार किया था। प्रभु के परम तेजस्वी तेज को प्राप्त कर उन्होंने हमारे युगों के अन्धकार को दूर किया था और प्रभु के दिव्य प्रकाश की छटा से हमें आलोकित किया था।

अब वह महर्षि कहाँ हैं ? हमारे अन्धकार को दूर कर वे मनुष्यों की हृदय गुहा के अन्धकार को नष्ट करने के संकल्प से चल पड़े थे। क्या वे अब फिर इन कन्दराओं में आवेंगे ? यदि नहीं, तो तुम्हीं आओ। तुम ज्ञानवान हो, नेत्रवान हो और हृदय युक्त हो। तुमने उनके उपदेशों को सुना होगा तुमने उनको वाणी का अपने नेत्रों से अध्ययन किया होगा और अपने विशाल हृदय में उसका स्थान दिया होगा। मेरी गुहा यद्यपि तुम्हारी गुहा से बहुत बड़ी है परन्तु उसमें विश्व नहीं समा सकता। उस महर्षि ने इन गुहाओं में प्रवेश करके अपनी हृदय गुहा में विश्व को समा दिया था यही तो गागर में सागर था। इस प्रकार हमें उन्होंने विश्व की विशालता से भी विशाल बना दिया था। यही तो उस महर्षि की महानता थी। यदि तुम भी अपने हृदय की विशालता से हमें महान् बना सकते हो तो आओ तुम्हारा स्वागत है। तुम अपने को उनका शिष्य कहते हो, आओ अपने गुरु के पवित्र स्थान में विराजो, परन्तु मेरा हृदय संकुचित था उसमें विश्व समा नहीं सकता था घोर अन्धकार था इसलिए उन कन्दराओं में घुसने का साहस न हुआ।

झरने बोले—हमारा पानी पीकर उन्होंने विश्व को तृप्त किया था और अपने हृदय से विशाल ज्ञान रूपी झरना प्रवाहित किया था। तुमने उसमें स्नान करके अपने को पवित्र कर लिया है। यदि नहीं तो आओ यहां से तृप्त हो जाओ। हमसे तृप्त होकर यदि तुम विश्व को तृप्त नहीं कर सकते तो हमारा निर्झरण व्यर्थ है। ऐसा कहकर क्रमशः एक एक निर्झर सूखता चला। शैल शिखर संकुचित हो गये। गुहायें बन्द हो गई। चारों ओर सूखे ठूंठ दिखने लगे। तीव्र गर्मी पड़ने लगी। मैं अपने प्राणों को बचाने के लिए भागा। अनन्त समुद्र की ओर दौड़ा।

विशाल एवं अनन्त समुद्र की उत्ताल तरंगे अठखेलियां कर रही थी। मैंने तरंगों से पूछा—तुम इस किनारे से विहार करती हुई, वायु से विलोडित होती हुई, सूर्य की किरणों से विविध वर्णों से आलोकित होती हुई, चन्द्र एवं तारों गणों के प्रतिबिम्ब से सुन्दर, सुसज्जित परिधान युक्त होकर सुदूर के देशों में भी जाती हो। अनेक देशों और संस्कृतियों का तुमने निरीक्षण किया है। तुम्हारे वक्षस्थल पर युगों को स्मृतियां और इतिहास के परिधान हैं। तुम उस महर्षि के बारे में क्या अनुभूति रखती हो ?

तरंगे वेग से उठी। दौड़ दौड़ कर मेरे पास आने लगी और जाने लगी। मानो वे मुझ से कह रही थी यदि उस महर्षि को विशालता देखनी है और समझनी है तो आओ, हमारे मध्य में आओ। समुद्र की विशालता और गम्भीरता से भी विशाल तथा गंभीर वह महर्षि था। मैं उन तरंगों के साथ चल न सकता था। मेरी विवशता देखकर वे बोली—

हम एक देश से दूसरे देश, एक द्वीप से दूसरे द्वीप और एक महाद्वीप से दूसरे महाद्वीप गई हैं। सातों समुद्रों का मन्थन किया है। हर द्वीप के किनारे हम अहर्निश, नाचती, उछलती और कौतुक करती रही हैं। तुमने देखा कि महर्षि दयानन्द ने जो ज्योति भारत में उत्पन्न की है उसका प्रकाश हमें सुदूर द्वीपों में भी दृष्टिगोचर हुआ। अफ्रीका, मारीशस, ट्रिनिडाड, फीजी, न्यूजीलैण्ड, अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस, जर्मनी अरब, इराक, ब्रह्मा, स्याम आदि देशों में उनकी विजय पताका फहराती हुई देखी। इससे हम कहती हैं कि दयानन्द महान् थे। उनकी महानता समुद्र नहीं नाप सकता। समुद्र को सामर्थ्य से बाहर हैं।

तुम पृथ्वी एवं अन्तरिक्ष में विचरण करने वाले वायु से पूछो — अग्नि की प्रचन्ड ज्वालाओं से पूछो जो किसी न किसी रूप में सबके गृहों में वास करती है और अपनी व्यापन शीतलता से एक एक स्थान के शब्द और रूप को सर्वत्र प्रसारित व व्याप्त कर देती है।

मैंने वासुदेव से पूछा, अग्निदेव से पूछा। उन्होंने भी कहा कि उसकी महानता कैसे प्रकट करूं ? सर्वत्र दयानन्द की महिमा का यशोगान हो रहा है और उनके सत्य + अर्थ + प्रकाश से अज्ञानान्धकार भागता रहा है। जिनके हृदय और बुद्धि में युगों से जड़ता है अन्धकार घुसा हुआ था, वहां भी महर्षि की ज्ञान रश्मियों से उन मिथ्या विश्वासों का अन्त होता जा रहा है। समस्त विश्व उनके ज्ञान से आलोकित हो रहा है। उसकी महानता अपार है, अनन्त है।

(क्रमशः)

महर्षि का वेदभाष्य

बहिन कविता आर्या उत्तर दें

डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दिनांक १ जनवरी १९८४ के सार्वदेशिक (साप्ताहिक) में बहिन कविता आर्या का एक लेख 'मनोवृत्तियों का दोहरा प्रदर्शन' नाम से प्रकाशित हुआ है, जिसमें बहिन आर्या ने गत वर्ष दयानन्द वैदिक शोध पीठ चण्डीगढ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय द्वारा आयोजित 'वेदार्थ पद्धति और महर्षि दयानन्द' नामक गोष्ठी की चर्चा की है। उन्होंने सम्पादक सर्वहितकारी एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के प्रमुख विद्वान् के नाम से मुझ पर यह आक्षेप लगाया है कि मैंने आर्यसमाज में अपनी दोहरी मनोवृत्ति का प्रदर्शन किया है अर्थात् एक ओर तो महर्षि के वेदभाष्य पर 'भाष्य भास्कर' नामक व्याख्या लिखी है जो आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट दिल्ली से प्रकाशित हुई है तथा दूसरी ओर उक्त गोष्ठी में सायणभाष्य की प्रशंसा तथा महर्षि के वेदभाष्य की निन्दा की है। इससे पूर्व भी बहिन कविता आर्या ने पत्र व्यवहार तथा परोपकारी आदि पत्रिकाओं के माध्यम से इसी बात को आर्य विद्वानों के सामने रखने का प्रयास किया था। महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में व्यक्तिगत रूप में भी मुझ से चर्चा की थी। मैंने इससे पूर्व पत्रव्यहार दयानन्द सन्देश पत्रिका तथा अजमेर में व्यक्तिगत रूप में भी महर्षि के वेदभाष्य के सम्बन्ध में मेरा जो मत है उसे स्पष्ट कर दिया था। किन्तु समझ में नहीं आता कि इतने पर भी यह लेख लिखने की उन्हें क्यों आवश्यकता हुई ?

चण्डीगढ़ की विद्वद्-गोष्ठी में वेदभाष्य के सम्बन्ध में मैंने जो लेख पढ़ा था वह आर्य प्रतिनिधि सभा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी में यथावत् छपा है। उस पर कविता आर्या के अतिरिक्त किसी भी वैदिक विद्वान् ने आपत्ति नहीं उठाई। उसमें वैदिक विद्वानों से महर्षि के वेद भाष्य के सम्बन्ध में जो प्रश्न किए गए हैं उनका भी स्वयं कविता आर्या तथा अन्य किसी भी वैदिक विद्वान् ने आज तक उत्तर नहीं दिया। उस गोष्ठी में भी जो मैंने महर्षि के वेदभाष्य के सम्बन्ध में दो प्रश्न रखे थे वहां भी किसी विद्वान् का साहस नहीं हुआ कि कोई उनका उत्तर देता। गोष्ठी के संयोजक विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय ने उन्हें 'यक्ष प्रश्न' की संज्ञा देकर वार्ता को आगे बढ़ाया। क्या ही अच्छा होता कि बहिन कविता आर्या जिन विद्वानों की मूल प्रेरणा से मेरे विरुद्ध आर्य पत्र पत्रिकाओं में लेख लिख रही है, और मुझ पर दोहरे व्यक्तित्व का मिथ्या आरोप लगा रही है, इसके स्थान पर मेरे उन प्रश्नों का उत्तर आर्य पत्र पत्रिकाओं में प्रकाशित करती। वे दोनों प्रश्न निम्नलिखित हैं। आशा है बहिन कविता आर्या, उनके प्रेरक वैदिक विद्वान् तथा अन्य भी आर्य विद्वान् इन वेदभाष्य सम्बन्धी प्रश्नों का उत्तर देने का कष्ट करेंगे।

१—महर्षि ने ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका में लिखा है कि मन्त्रों का अर्थ प्रकरण के अनुसार करना चाहिए। महर्षि वेदभाष्य में इन्द्र आदि देवताओं के राजा, विद्वान् अध्यापक, उपदेशक, सेनापति, सभापति आदि विभिन्न अर्थ करके मन्त्रार्थ करते जाते हैं। पहले मन्त्र का अर्थ राजा परक है, दूसरे मन्त्र का अर्थ अध्यापक परक और तीसरे मन्त्र का अर्थ उपदेशक परक है। जब पाठक एक इन्द्र आदि देवता वाले सूक्त के मन्त्रों का इस प्रकार से अर्थ पढ़ता है तब वह किसी प्रकरण विशेष का अनुभव नहीं करता।

२—महर्षि के वेदभाष्य में पूर्व सूक्त की उत्तर सूक्त के साथ तथा पूर्व अध्याय की उत्तर अध्याय के साथ संगति का वर्णन है, किन्तु वेद भाष्य का पाठक संगति-वाक्य में कथित विषयों के आधार पर पूर्वापर विषय की संगति नहीं देखता।

वेदभाष्य पर मेरा कार्य—

महर्षि के वेदभाष्य में प्रकरण में पूर्वापर सूक्त तथा अध्याय की संगति का विषय आर्य विद्वानों के लिए गम्भीर रूप से विचारणीय है। इस प्रश्न को श्रद्धा, भक्ति एवं निष्ठा आदि के नाम पर तिरोहित नहीं किया जा सकता।

महर्षि के वेदभाष्य में स्वतन्त्र रूप से मन्त्रों का अर्थ अत्युत्तम है। महर्षि का वेदभाष्य मूल रूप में संस्कृत भाषा में है। वहां मन्त्रभूमिका, पदार्थ, अन्वय और भावार्थ नामक चार सन्दर्भ विशेष हैं। जब तक मन्त्र के पदार्थ को अन्वय में डालकर न पढ़ा जाए तब तक मन्त्र का स्पष्ट अभिप्राय पाठक के सामने प्रस्तुत नहीं होता। महर्षि के वेदभाष्य में इस असुविधा को दूर करने के लिए मैंने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के माध्यम से महर्षि के वेदभाष्य पर 'भास्कर' नामक व्याख्या लिखी। इसमें मन्त्र भूमिका, पदार्थ, अन्वय और भावार्थ इन सभी सन्दर्भों का एक सुन्दर सामञ्जस्य दर्शाने का प्रयास किया गया है। मन्त्र में बतलाए अलंकार को भी खोला है। पाठकों की सुविधा के लिए महर्षि के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में व्याख्यात मन्त्र की व्याख्या भी सम्बद्ध मन्त्र के साथ उद्धृत कर दी है।

सायण आदि कृतभाष्य

सायण उवट महीधर आदिकृत वेदभाष्यों के सम्बन्ध में मेरा मत है कि उनका किया किसी भी मन्त्र का अर्थ शुद्ध नहीं। इसका मूल कारण यह है कि उन्होंने वेदार्थ के मौलिक सन्दर्भ देवतार्थ की उपेक्षा करके मन्त्रार्थ किया है। जबकि महर्षिकृत वेदभाष्य का मूलाधार देवतार्थ है। सायण आदि वेदभाष्यकारों के अग्नि, वायु, इन्द्र, वरुण आदि देवता स्वर्गवासी शक्ति विशेष हैं जिनका वेदमन्त्रों के द्वारा यज्ञ आदि में आह्वान किया किया जाता है और महर्षिकृत वेदभाष्य के अग्नि आदि देवता, ईश्वर, राजा, विद्वान्, अध्यापक, उपदेशक, सभापति, सेनाध्यक्ष, सूर्य, विद्युत, चन्द्र आदि आध्यात्मिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं भौतिक क्षेत्र के विशिष्ट व्यक्ति एवं पदार्थ हैं। यह सायण आदि कृत भाष्य में तथा महर्षि के वेदभाष्य में आकाश-पाताल का अन्तर है।

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट

यह ट्रस्ट लगभग बीस वर्ष से महर्षि के द्वारा लिखित साहित्य तथा उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों के समर्थन में ही कार्य कर रहा है। दयानन्द-सन्देश पत्रिका के माध्यम से अवैदिक मान्यताओं का खण्डन तथा वैदिक मान्यताओं का सप्रमाण मण्डन करता है। महर्षिकृत वेद भाष्य के आधार पर ईश्वरवाद, राजनीति, शिक्षा-पद्धति, राज्य-व्यवस्था सेनाप्रबन्ध, समाज-व्यवस्था, कृषि विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि के अनुसन्धान की योजना आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के विद्वन्मन्डल के अधीन चालू है।

कार्य करने की आवश्यकता

महर्षि ने अपने जीवन-काल में जिन वैदिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया है उनके समर्थन में कार्य करने की बहुत आवश्यकता है। वेदों की अपौरुषेयता, नित्यता, सब सत्य विद्याओं के पुस्तक वेद, शिक्षा-पद्धति, वर्णव्यवस्था, आश्रम व्यवस्था, वैदिक राजधर्म, ईश्वर का सच्चा स्वरूप, विद्या, अविद्या, बन्ध, मोक्ष, सृष्टि-उत्पत्ति, आचार-अनाचार आदि विषयों पर अभी पर्याप्त कार्य करने का आवश्यकता है। आशा है बहिन कविता आर्या तथा अन्य आर्य विद्वान् इन विषयों पर महर्षि के वेदभाष्य के प्रकाश में कार्य कर जनता को लाभान्वित करेंगे।

गाजियाबाद का वार्षिक उत्सव

शम्भुदयाल दयानन्द वैदिक सन्यास आश्रम, महर्षि दयानन्द नगर, गाजियाबाद का २७ वां वार्षिक यज्ञ महोत्सव ८ अप्रैल से १५ अप्रैल तक समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा।

इस शुभावसर पर ऋग्वेद के मन्त्रों से प्रातः सायं बृहद यज्ञ और आश्रम निवासी संन्यासी महात्माओं के अतिरिक्त सर्वश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती तथा स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती के शिक्षाप्रद प्रवचन व श्री हरिदत्त जी भजनोपदेशक के मनोहर भजन होंगे।

स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती आश्रमाचार्य

न्यूयार्क में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी महोत्सव

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी महोत्सव न्यूयार्क नगर में २९ व ३० अक्तूबर १९८३ को हिन्दू मन्दिर फ्लशिंग के सांस्कृतिक केन्द्र में बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया। इस महोत्सव की निम्न विशेषतायें थी—

१—यह आयोजन न्यूयार्क व न्यूजर्सी की ६ आर्यसमाजों का सम्मिलित आयोजन था।

२—न्यूयार्क व न्यूजर्सी के लगभग समस्त धर्म मन्दिरों, संस्थानों, संन्यासियों व महापुरुषों ने न सिर्फ इस आयोजन की संरक्षता ग्रहण की वरन समस्त कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया व महर्षि दयानन्द के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। इस आयोजन में हिन्दू, सिख व जैन इत्यादि सब भाइयों ने भाग लिया।

कार्यक्रम शनिवार २९ अक्तूबर को प्रातः दस बजे प्रारम्भ हुआ। दस बजे से १२ बजे तक वेद सम्मेलन कार्यक्रम चला। इस सम्मेलन की निम्न विशेषताएं उल्लेखनीय हैं।

१—सम्मेलन का प्रारम्भ चारों वेदों से संकलित मन्त्रों के मनोहारी उद्घोष के साथ हुआ। यह उद्घोष देवियों द्वारा किया गया।

२—सामवेद उद्गाता ने सामवेद की तीन विभिन्न शाखाओं को सामवेद गान प्रणालियों द्वारा आधे घण्टे तक सामगान करके जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

३—संन्यासियों विद्वानों ने वेद, सामवेद व यज्ञ के विभिन्न अंगों पर प्रकाश डाला। वेद सम्मेलन के पश्चात् सम्पूर्ण सामवेद के मन्त्रों के साथ एक बृहत यज्ञ किया गया। यह यज्ञ १२ घन्टे तक इस प्रकार चलता रहा:—

शनिवार २९ अक्तूबर को सायं १ बजे से रात्रि ८ बजे तक, अगले दिन प्रातः ६ बजे से सायं २ बजे तक। इस यज्ञ में शुद्ध वेद पाठ और अन्य वक्ताओं के कारण आश्चर्यजनक से जनता बड़ी संख्या में बड़ी श्रद्धा के साथ लगातार १२ घण्टे तक भाग लेती रही। यह आंखों को चौंक देने वाली घटना थी।

सामवेद की पूर्णाहुति के पश्चात् अपराह्न ३० अक्तूबर को महर्षि दयानन्द के जीवन विषयक एक फिल्म २ बजे से ३ बजे तक दिखलाई गई। उसके बाद उसी दिन सायं ३ से ६ बजे तक एक सभा कार्यक्रम चला, जिसमें समस्त सन्यासियों, संरक्षकों व अन्य विद्वानों ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलियां अर्पित की तथा इस बात पर बल दिया कि यहां आर्यसमाज प्रसार व वेद प्रचार की बड़ा आवश्यकता है। अमरीका की वैयक्तिक व सामाजिक समस्याओं के सही समाधान की वेद ही एकमात्र कुञ्जी हैं।

सभा में वीतराग श्री चिन्मय जी और उनके लगभग २५ अमेरीकन शिष्य व शिष्याओं ने महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए बंगाली व अंग्रेजी गान ध्वनि के साथ गाये। उस समय के अतुलनीय दिव्य वातावरण का वर्णन अवर्णनीय हैं। उस समय सारी जनता मन्त्र मुग्ध होकर बड़ी उत्कृष्ट पवित्रता का अनुभव कर रही थी।

स्वामी डा० राममूर्ति जी ने कहा कि मेरे पूर्वज और मैं प्रारम्भ में महर्षि दयानन्द के सक्रिय कट्टर विरोधी थे, लेकिन ज्यों ज्यों मैं महर्षि दयानन्द की विद्वता उनके दर्शन व जीवन का अवगाहन करता गया त्यों-त्यों अधिकाधिक मैं उनके प्रति नतमस्तक होता गया। आज मैं सम्पूर्ण सत्यप्रकाशक ऋषि के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

समस्त आयोजन में बार-बार पवित्र वेदध्वनि गूंजरित होती रही और उसी महाध्वनि के साथ आयोजन समाप्त हुआ। इस आयोजन की प्रतिध्वनि अमेरीका के वातावरण में लम्बे काल तक गूंजती रहेगी।

धर्मजीत जिज्ञासु मन्त्री आर्यसमाज, न्यूयार्क

गुरुकुल कुरुक्षेत्र में प्रवेशारम्भ

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र हरयाणा प्रदेश का ही नहीं अपितु सम्पूर्ण भारतवर्ष का सुप्रसिद्ध तथा उच्चकोटि का गुरुकुल है। प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी गुरुकुल में केवल प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणी में प्रवेश १५ मार्च से १ अप्रैल तक आरम्भ हो रहे हैं। सीमित स्थान होने के कारण आपको चाहिए कि अपने प्रिय बालक को यथाशीघ्र गुरुकुल में प्रवेश दिलायें क्योंकि—

१—गुरुकुल की प्रथम श्रेणी में भारत एवं विदेशी छात्रों के लिए केवल ६० स्थान हैं तथा द्वितीय एवं तृतीय श्रेणी में क्रमशः १० स्थान ही शेष हैं।

२—शिक्षा में उच्चस्तर हेतु गुरुकुल में २० प्रशिक्षित अध्यापक हैं।

३—बालकों की देख रेख हेतु ५ संरक्षक हैं जो समान प्रेम भाव से बालकों का पालन पोषण करते हैं अर्थात् प्रति १३ बालकों के लिए एक अध्यापक है।

४—क्रिडा आदि क्षेत्र में गुरुकुल के ब्रह्मचारी प्रदेश एवं राष्ट्रीय स्तर तक भाग लेते हैं क्योंकि क्रिडा आदि की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है।

५—बालकों को स्वतन्त्र नैतिक चरित्र निर्माण हेतु विशेष क्रियात्मक प्रयोग कर प्रोत्साहित किया जाता है।

६—सांस्कृतिक कार्यक्रम के प्रशिक्षण हेतु विशेष व्यवस्था है।

७—गुरुकुल में हरयाणा तथा गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की परीक्षाओं को भारत भर में मान्यता प्राप्त है।

अधिक जानकारी हेतु गुरुकुल कुरुक्षेत्र के कार्यालय से सम्पर्क करें।

सत्यदेवसिंह पूर्व आई० पी० एस०
प्रधान गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

खोडमूजरा (दिल्लो माजरा) जिला कुरुक्षेत्र

प्रधान—जयपाल, उपप्रधान—अनन्तराम सरपंच, मन्त्री-श्रीकृष्ण उपमन्त्री—जयभगवान, प्रचारमन्त्री-श्रीचन्द, कोषाध्यक्ष-बनवारीलाल पुस्तकाध्यक्ष—महेन्द्रपाल, निरोक्षक—चौ० उदेयसिंह

अन्तरंग सदस्य

चौधरी नारायणसिंह, चौ० नन्दकिशोर, चौ० प्रतापसिंह, चौधरी हीरालाल, चौ० मूलचन्द, चौ० सांवलिया राम, श्री राधेश्याम

कोटड़ा खास जिला अम्बाला

प्रधान—श्री मेहरचन्द, उपप्रधान-गुरनामसिंह, मन्त्री—श्री महेश; उपमन्त्री—श्री ओमप्रकाश, कोषाध्यक्ष—श्री राजकिशन, पुस्तकाध्यक्ष-श्री मोहासिंह, प्रचारमन्त्री-हरिचन्द मिस्त्री

अन्तरंग सदस्य—

सोरणसिंह, सोकूराम, सत्यपाल, मदनलाल

फूंसगढ पा० इन्दरी जिला करनाल

प्रधान-चौ० यशपाल, उपप्रधान-चौ० देशराज, मन्त्री-चौ० नाथीराम उपमन्त्री—चौ० सुरेशकुमार सरपंच, कोषाध्यक्ष-चौ० अमरसिंह जी, पुस्तकाध्यक्ष-चौ रामप्रकाश जो, प्रचारमन्त्री-खमोचन्द

अन्तरंग सदस्य—

शेरसिंह जा, ईश्वरसिंह, रणवीरसिंह, राजपाल, रणवीर, रामेश्वर महिन्द्रपाल, रोशनलाल, सोमप्रकाश (सोमप्रकाश से शराब छुडवाई है)

सफीदों (जीन्द रोड़)

प्रधान-चौ० जयपालसिंह, मन्त्री-फूलचन्द, कोषाध्यक्ष-जयभगवान संरक्षक—श्री कुलवन्तराय

कनालसी भागपुर पो० महरमाजरा जिला अम्बाला

प्रधान—सुरेन्द्रकुमार, उपप्रधान-पुरेन्द्रलाल एडवोकेट, मन्त्री—बलबीरसिंह, उपमन्त्री —श्री केहरसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री ईलमचन्द जी, पुस्तकाध्यक्ष—लक्ष्मचन्द, प्रचारमन्त्री—कृष्णपाल, सोमप्रकाश आर्य

अन्तरंग सदस्य—

श्री बृजपाल, अनिलकुमार, श्री प्रमालसिंह, श्री लालसिंह, श्री रामचन्द्र सरपंच, श्री रमेशचन्द्र

आर्यसमाज कारद जिला करनाल

प्रधान—श्री प्रभुदयाल, उपप्रधान—श्री रामकिशन, श्री सुरजमल, मन्त्री-श्री ईश्वरसिंह आर्य, उपमन्त्री—श्री रामभज, कोषाध्यक्ष—श्री रणवीरसिंह, प्रचारमन्त्री—श्री रामचन्द्र, पुस्तकाध्यक्ष एवं लेखानिरीक्षक—श्री सत्यपाल आर्य

विरजानन्द के चेले ने

टंकारा में जन्म लिया, अम्बा शंकर का जाया।
१४ वर्ष का मूल हो गया, पर्व शिवरात का आया॥
शिवजी खुद ही दर्शन देंगे पिता जी ने बतलाया।
शिव के दर्शन कर लूं मैं भी, उसके मन में आया॥
ध्यान लगा गया बैठ, रात का पहर तीसरा आया।
जितने भी थे सभी पुजारी, नींद ने उन्हें दबाया॥
मूल ध्यान में बैठा था, नाली से चूहा आया।
मेवे फल और मिठाई जो थी, सभी को उसने खाया॥
मल मूत्र भी कर गया ना, शिवजी कुछ कर पाया।
जगी चेतना उस बालक की उसके मन में आया॥

दोहा

सोचा मन में बालक ने कि यह भगवान् निराला है।
स्व रक्षा कर सका नहीं दूसरों का क्या रखवाला है॥
शंका दूर भगाने हेतु पिता जी को जगाया है।
सोज्या क्यूं बकवास करे यूं कह कर धमकाया है॥
'सहदेव' त्याग दिया घर को उस महर्षि अलबेले ने।
जग को वेद प्रकाश दिया उस विरजानन्द के चेले ने॥

फार्म-४ सर्वहितकारी विषयक विवरण

१-प्रकाशन स्थान	सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक
२-प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
३-मुद्रक का नाम	वेदव्रत शास्त्री आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, दयानन्द मठ रोहतक
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
४-सम्पादक का नाम	डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री
क्या भारत का नागरिक है ?	हाँ
५-उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक सांझेदार या हिस्सेदार हों।	आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ रोहतक

मैं वेदव्रत शास्त्री एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

प्रकाशक के हस्ताक्षर
वेदव्रत शास्त्री

सभा को आय कर में छूट

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को आयकर विभाग हरयाणा के आयुक्त महोदय रोहतक ने अपने पत्र क्रमसंख्या F No. 228(21A) 78 79/J दिनांक 6-2-1984 को सभा को दान भेजने वाले महानुभावों को आयकर में 13-4-1981 से 12-4-1984 तक छूट का प्रमाण पत्र दे दिया है।

अतः सभा से सम्बन्धित आर्यसमाजें तथा संस्थाएं इस छूट का लाभ उठावें और दान प्राप्त करने में सभा कार्यालय से सम्पर्क करें।

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

वैदिक धर्म प्रचारार्थ यतीमंडल की पदयात्रा शुरु

गुरुकुल झज्जर के उत्सव के पश्चात् ५ मार्च से वैदिकयती के कार्यकर्त्ताओं की एक पदयात्रा आरम्भ हो गई। ४ मार्च को सिलानी में सभा की भजनमण्डली प० सुमेरसिंह आर्य द्वारा प्रभावशाली प्रचार हुआ। ग्रामवासियों ने आर्यसमाज के जयघोषों के साथ स्वागत किया। पदयात्री जत्था ५ मार्च को कासनी, ढाकला, सुरहती ६ मार्च को मातनहेल, सासरौली, स्वरूपगढ होता हुआ ७ मार्च को दादरी पहुँचेगा और ८ मार्च को दादरी से रूदडौल, दूधवा और ९ मार्च को रूदडौल से डालावास तथा काण्डरोली में प्रचार करेगा।

१० मार्च को मार्ग में आने वाले ग्रामों में प्रचार करता हुआ लोहारू पहुंच जावेगा। इस पदयात्रा में श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती स्वामी सोमानन्द जी, वानप्रस्थी महानन्द, प्यारेलाल, ब्र० हंसराज आर्य ब्रह्मचारी रामवीर, श्री देवमित्र पं० ईश्वर सभा भजनोपदेशक आदि सम्मिलित हैं।

सर्वहितकारी की धूम

आपके साप्ताहिक पत्र 'सर्वहितकारी' का ऋषि-बोध विशेषांक प्राप्त हुआ। विशेषांक वास्तव में संग्रहणीय एवं पठनीय था। सभी लेख शिक्षाप्रद एवं प्रेरणादायक थे। पं० वीरसेन जी वेदश्रमी का लेख शिव शंकर दयानन्द तो विशेष रूप से पठनीय रहा। इस पत्र के विशेषांकों की बड़ी धूम रहती है। यह विशेषांक भी अपनी उस शान के अनुरूप निकला है। सर्वहितकारी वास्तव में सदाचार तथा नवनिर्माण का एकमात्र पत्र है जो स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष रूप से जनता की सेवा कर रहा है। इस विशेषांक की सफलता के लिए आप विशेष बधाई के पात्र हैं।

रामकुमार आर्य पुस्तकाध्यक्ष
आर्यसमाज दुल्लागढ गोहाणा (सोनीपत)

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न समाचार

१—आर्यसमाज कारद जि० करनाल

२४ से २६ फरवरी को वार्षिक उत्सव पर ऋषि बोध दिवस धूम-धाम से मनाया गया। सभा के उपदेशक पं० धर्मचन्द विद्यालंकार के व्याख्यान तथा भजनोपदेशक पं० सुमेरसिंह आर्य एवं पं० मुन्शीलाल के भजनों का बहुत प्रभाव रहा।

२—आर्यसमाज नबर सोनीपत

२६ से २८ फरवरी तक ऋषि बोधोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ अवसर पर प० विश्वबन्धु शास्त्री के प्रवचन एवं सभा के भजनोपदेशक पं० शेरसिंह के संगीत हुए।

३—सर छोटूराम धर्मशाला रोहतक

२९ फरवरी को छोटूरामधर्मशाला रोहतक में ऋषि बोधोत्सव कवि दरबार के रूप में धूमधाम से मनाया गया। इस शुभावसर पर श्री सत्यपाल बेदार, श्री मनोहरलाल मन्नवर, श्री नाजसोनीपत, श्री दयाल चन्द मिगलानी की ऋषि जीवनी तथा राष्ट्र रक्षा पर मनोहर कविताएं हुई। श्री रामेहर एडवोकेट ने स्वामी जी को श्रद्धांजलि भेंट की। आर्य केन्द्रीय सभा द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को आकाशवाणी रोहतक से भी हरयाणा दर्शन में प्रसारित किया गया।

४—गुरुकुल कुरुक्षेत्र

२९-२-८४ को ऋषि बोधोत्सव को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में समारोहपूर्वक मनाया गया जिसकी अध्यक्षता गुरुकुल प्रबन्ध समिति के प्रधान तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान चौ० सत्यदेवसिंह जी ने की तथा आचार्य सत्यप्रिय जी लाडवा का सारगर्भित व्याख्यान हुआ और स्वामी रुद्रवेश जी क्रान्तिकारी के भजन हुए तथा सामूहिक सत्संग आज का मुख्य आकर्षण रहा।

५—आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा

२९-२-८४ को सिरसा नगर के आर्यसमाज मन्दिर में महाशिवरात्रि ऋषि निर्वाण उत्सव के रूप मे मनाई गई। इसमें ऋषि दयानन्द की स्तुति में गीत एवं भाषण स्कूलों के बच्चों द्वारा प्रस्तुत किए गए। इस कार्यक्रम में आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के बच्चों ने बढचढ कर भाग लिया। संजीव वर्मा, राजेश महेश्वरी तथा कृष्णलाल के भाषण और राजेश शंकर, प्रेम आदि के गीत प्रशंसनीय रहे। ये सभी विद्यार्थी आर्य उच्चतर माध्यामिक विद्यालय के थे। कार्यक्रम संचालक श्री रणजोतसिंह ने विद्यालय के प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद जिन्दल का हार्दिक धन्यवाद किया।

वैदिक यतिमण्डल पदयात्रा समाचार

महा विद्यालय गुरुकुल झज्जर का ६९ वां वार्षिकोत्सव बहुत ही हर्षोल्लास के वातावरण में सम्पन्न हुआ। महाविद्यालय में १-२ मार्च को श्री स्वामी सत्यप्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता मे वैदिक यति मण्डल की तीन बैठकें सम्पन्न हुई, पूर्व बैठक जो अजमेर में हुई थी उसमें लिए गए निर्णयों के अनुसार गुरुकुल झज्जर का उत्सव सम्पन्न होते ही ४ मार्च को सायंकाल से ही पदयात्रा आरम्भ हुई जिसमें २६ व्यक्तियों ने भाग लिया। इस पदयात्रा की अध्यक्षता यति मण्डल के महामन्त्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज दयानन्द मठ दीनानगर कर रहे हैं। इन पदयात्रियों का पहला पड़ाव गुरुकुल के समीपवर्ती सिलानी ग्राम में रहा। ग्राम के लोगों ने इन साधु महात्माओं का बहुत ही भाव पूर्ण स्वागत किया। रात्रि में हजारों लोगो ने प्रचार सुना और ५ मार्च को प्रातः ही बहुत ही श्रद्धापूर्वक यज्ञ और यज्ञोपवीत संस्कार सम्पन्न हुए। ग्रामवासियों ने जब अपने इन पूज्य महात्माओं का आतिथ्य करके जयघोषों के साथ भावभीनी विदाई दी तो यह दृश्य दर्शनीय था। सब लोग श्रद्धापूर्वक हाथ जोड़े प्रेमाश्रु आंखों में लिए हुए पुनः आने की प्रार्थना कर रहे थे। उन्होंने दो हजार रुपये के लगभग इस अवसर पर दान एकत्रित करके गुरुकुल को दिया। इससे बाद बाबरा, डावला होते हुए श्री फतेहसिंह भण्डारी के गांव रैय्या में पहुंचे तो उन्होंने १०१ रुपये की माला श्री स्वामी ओमानन्द जी को पहनाकर सब पदयात्रियों का भव्य स्वागत किया और प्रचार करवाया फिर अगले गांव हसनपुर में भी स्वागत और प्रचार इसी तरह हुआ। कासनी में मा० दीपचन्द जी ने १०१ रुपये की माला पहनाकर व जलपान कराकर अच्छा स्वागत किया और प्रचार कराया। अन्तिम गन्तव्य स्थल ग्राम ढाकला था जहाँ पर सभी पदयात्रियों का ग्रामवासियो द्वारा भव्य स्वागत किया गया और रात्रि में बहुत ही जोरदार प्रचार हुआ। इन सब स्थलों पर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज के बहुत अच्छे और लम्बे प्रेरणादायक भाषण हुये। ६ मार्च को प्रातः हो बहुत जोरदार ६ किलो देरी घृत से तथा सामग्री से हवन हुआ और युवकों ने यज्ञोपवीत लिये। ढाकले से आगे चान्दोल जो मूले जाटों से शुद्ध किया हुआ ग्राम है वहां प्रचार करते हुए आगे मातनहेल में प्रचार हुआ। यह पदयात्रा २० मार्च को समाप्त होगी।

ब्र० रामवीर
गुरुकुल झज्जर

खालिस्तान न बनने देंगे

कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली

ऋषि-मुनियों की पुण्यभूमि यह भारतवर्ष हमें प्यारा है।
देकर सच्चा ज्ञान जिन्होंने दूर किया यहां अंधियारा है।।
इसी भूमि पर रामकृष्ण और दयानन्द से ऋषि पधारे।
विविध कष्ट सहकर जीवन में आर्य जाति के बने सहारे।।
नानक-गुरु गोविन्दसिंह दस गुरुओं ने यहां जन्म लिया था।
देशभक्ति और आर्य संगठन का सबने सन्देश दिया था।।
वेदी कुल के थे गुरुनानक कह गये वेद पढ़ो तुम सारे।
एक ईश्वर की भक्ति करो और एक ओंकार जपो तुम प्यारे।।
आर्य जिन्हें हिन्दू कहते हैं दुःख संकट से उन्हें बचाया।
दुष्टों से टक्कर लेने को यहां एक सिख पन्थ चलाया।।
गौ-ब्राह्मण-मन्दों की रक्षा करने का संकल्प लिया था।
देश जाति की रक्षा हित अपने को बलिदान किया था।।
वे थे आर्य वीर भारत के त्याग—तपस्या उनकी भारी।
अत्याचारों के आगे वे कभी झुके नहीं हिम्मत न हारी।।
उनका जन्म-दिवस मनाना हम सबका यह सहापर्व है।
शूरवीरता लिखकर उनकी हमें आज भी बड़ा गर्व है।।
उन गुरुओं और महर्षियों का रक्त हमारे अन्दर बहता।
हिन्दू-सिख सब एक जाति है पृथक् ऐसा कौन है कहता।।
एक वृक्ष की दो शाखाएं किन्तु सभी का एक मूल है।
सिख जाति एक पृथक् जाति है ऐसा कहना महाभूल है।।
एक हैं हम सब एक रहेंगे मिलकर देश का काम करेंगे।
भाई-२ का रक्त बहाकर जाति को नहीं बदनाम करेंगे।।
ग्रन्थ साहब में नहीं लिखा मानव-मानव का दमन करे।
किसी निरपराध को निर्भय लूटे अथवा हनन करे।।
गुरुओं का आदेश जिन्होंने ठुकरा कर यह पाप किया है।
ग्रन्थ साहब का यों बेशक अपमान भी अपने आप किया है।।
अपने को हिन्दू न बताकर क्या कुछ अच्छा सबक सिखाया।
संविधान को जला-फाड़ कर राष्ट्र-द्रोह प्रत्यक्ष दिखाया।।
क्षमा नहीं इतिहास करेगा सदा-सदा बदनाम रहेंगे।
यह कलंक धोया न जाएगा इसका भी परिणाम सहेंगे।।
उग्रवाद अथवा पृथकवाद उनका षड्यन्त्र अधूरा होगा।
भारत को खंडित करने का स्वप्न न उनका पूरा होगा।।
'छाजूराम' देश अपने का हम न कभी अपमान सहेंगे।
आर्य वीर भारत के अन्दर खालिस्तान न बनने देंगे।।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्यसमाज कृष्णनगर भिवानी का प्रस्ताव

जबकि आज देश में सत्ता को हथियाने और स्थिर रखने के लिए भ्रष्टाचार, अनाचार व दुराचार को एक अमोघ अस्त्र के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। ऐसे में आन्ध्र प्रदेश के माननीय मुख्यमन्त्री श्री एन० टी० रामा राव का अपने एक सहयोगी मन्त्री श्री रामचन्द्रन के भ्रष्टाचार का पर्दाफाश कर उसे पदच्युत करना, एक अपूर्व सराहनीय कार्य है।

इस अनुपम सहासिक पग के लिए, जो वास्तव में सच्ची देशभक्ति और जनसेवा का प्रतीक है, यह सभा श्री रामा राव का हार्दिक धन्यवाद करती है और परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि देश में ऐसे ही निर्भीक पवित्र और देशभक्त राजनेता हमारे प्रशासक हों साथ ही यह सभा देश के अन्य प्रमुख प्रशासकों से श्री रामा राव के पवित्र आचरण पर चलने का अनुग्रह करती है।

२. यह सभा पंजाब की दुःखद घटनाओं के लिए केन्द्रीय सरकार व पंजाब प्रशासन को दोषी ठहराती है। जो सरकार देशवासियों को जान व माल की रक्षा नहीं कर सकती उसे नैतिक रूप से सत्ता में बने रहने का कोई अधिकार नहीं।

३. पंजाब में निर्दोष हिन्दू जनता के कत्ले आम को रोकने के लिए सरकार को कड़े से कड़ा पग उठाना चाहिए। हर मूल्य पर स्वर्ण मन्दिर से कातिलों और अपराधियों को बाहर निकालकर उन्हें दण्डित करना चाहिए।

४. स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को कायम रखने के लिए भी उसके अन्दर जाकर भिन्डरा वाला व अन्य अपराधियों को पकड़ना चाहिए।

आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा के समाचार

१—दिनांक १४-२-८४ संजय स्टेडियम में सिरसा जिला के सभी उच्च एवं उच्चतर विद्यालयों की ओर से वार्षिक खेल उत्सव सम्पन्न हुआ। इसमें आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल के चार विद्यार्थियों ललितकुमार रामनिवास, मोहनलाल व रामेश्वर ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रथम स्थान प्राप्त किया। इन चारों विद्यार्थियों को २१-२१ रुपये के पुरस्कार से पुरस्कृत किया।

२—दिनांक १८-२-८४ को आर्य हायर सैकेण्ड्री स्कूल में नवम् कक्षा के विद्यार्थियों की ओर से दसवीं व ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को भाव-भीनी विदाई दी गई। दसवीं व ग्यारहवीं के छात्रों ने मिलकर स्टाफ रूम के लिए एक सोफासेट और १४ कुर्सियां दी। इस अवसर पर विद्यालय प्रबन्ध समिति के सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम में अनेक छात्रों ने भाग लिया। मुकेश, संजीव, राजेशमहेश्वरी, कृष्ण आदि प्रमुख हैं। अध्यापकों की ओर से श्री दलीपसिंह, श्री बलवन्तसिंह व श्री रवि सेठी जी ने भाग लिया। कार्यक्रम के अन्त में प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद जिन्दल ने विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे भारत के भावी नागरिक हैं। अथक परिश्रम करें। जीवन में कुछ बनने के लिए लक्ष्य निश्चित करें और उस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए मन लगाकर अध्ययन करें। प्रिंसिपल महोदय ने प्रबन्ध समिति के सदस्यगण का हार्दिक स्वागत किया।

प्रिंसिपल
द्वारका प्रसाद जिन्दल

कुरुक्षेत्र में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक

दिनांक १९-२-८४ को वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का अर्ध-वार्षिक अधिवेशन गुरुकुल कुरुक्षेत्र में मण्डलाध्यक्ष श्री कृष्णलाल वधवा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। भारी वर्षा ओलों तथा हिंसक वातावरण की दोहरी मार खाते हुए जिला भर से प्रतिनिधि सम्मेलन में पहुंचे हुए थे। बैठक का वातावरण उस समय और अधिक उत्साहपूर्ण बन गया जब सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी एवं महाशय भरतसिंह जी भी सम्मेलन में पधारे। वेदप्रचार मण्डल के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने सदन को बताया कि आर्य जगत् के क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी द्वारा वेद प्रचार मण्डल ने समस्त आर्थिक कठिनाईयों के बावजूद भी ४१ गांवों ६७ जलसे किये हैं और लोगों में आर्यसमाज के प्रति भारी रुचि है। मण्डल ने शराब तथा दहेज विरोधी हस्ताक्षर अभियान चलाया है।

बैठक में प्रचार कार्य तीव्र करने के लिए समस्त जिला को ३० उपमण्डलों में बांट दिया। शीघ्र ही उपमण्डल स्तर पर बड़े जलसे करने का भी निर्णय लिया गया है। आर्यजनों ने प्रचार को और प्रभावी बनाने हेतु एक प्रचार वाहन (जीप) लेने का भी निर्णय किया है। बैठक में कैथल में हुई पुलिस फायरिंग की निन्दा की गई तथा शहीद आर्य छात्र यशपाल के परिवार के प्रति संवेदना प्रकट कर इस काण्ड की न्यायिक जांच कराने की मांग की गई। सम्मेलन आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान चौ० सत्यदेवसिंह ने आर्यसमाज के संगठन पर बल देते हुए नई आर्यसमाजों के गठन को अनिवार्य बताया तथा आर्यजनों को इस कार्य हेतु तन-मन-धन से सहायता करने की अपील की।

बैठक को सम्बोधित करते हुए प्रो० शेरसिंह जी प्रधान हरयाणा रक्षा वाहिनी ने देश की ताजा स्थिति को प्रस्तुत किया तथा बढ़ती हुई हिंसात्मक घटनाओं पर चिन्ता प्रकट करते हुए सरकार को उग्रवादियों से सख्ती से निपटने की सलाह दी। उन्होंने गांवों से आये लोगों को देश की अखण्डता हेतु कार्य करने को कहा।

धर्मदेव विद्यार्थी
संगठन मन्त्री

गुरुकुल कुरुक्षेत्र का वार्षिकोत्सव

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित विद्या विहार गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ७३ वां वार्षिकोत्सव ५-६-७-८ अप्रैल को कुलभूमि में उत्साहपूर्वक मनाया जायेगा। उत्सव पर राज्य स्तरीय भाषण एवं वाद विवाद प्रतियोगिता, राज्य स्तरीय दो दिवसीय योगासन प्रतियोगिता, विशाल दंगल तथा राज्य स्तरीय गऊ-प्रदर्शिनी के अतिरिक्त १०० ट्रक्टरों मोटर साईकिलों का ऐतिहासिक जलुस मुख्य आकर्षण होंगे।

गौ रक्षार्थ श्री धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित पुस्तक 'उन्नत गो पालन का विमोचन भी किया जायेगा।

इस अवसर पर युवा सम्मेलन, देश रक्षा सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन आर्यसमाज के प्रचारार्थ समय दान सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए आर्य जगत् के तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द जी, स्वामी निरंजनदेव तीर्थ, लाला रामगोपाल शाल वाले, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रो० शेरसिंह जी पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री आदि को विशेष रूप से आमन्त्रित किया गया है। आर्य जगत् के क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी एवं प्रसिद्ध भजन मण्डलियां भी पधार रही हैं।

इस अवसर पर नये ब्रह्मचारियों का उपनयन संस्कार भी होगा।

सत्यदेवसिंह पूर्व आई० पी० एस०

आर्यवीर दल प्रशिक्षण शिविर

कुरुक्षेत्र जिला की सभी आर्यसमाजों के मुख्यालय वेदप्रचार मंडल द्वारा २० मार्च से ८ अप्रैल १९८४ तक एक योग शिविर का आयोजन गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सार्वदेशिक आर्यवीर दल के सहायक प्रधान संचालक डा० देवव्रत जी आचार्य के निर्देशन में आयोजित किया जा रहा जिसमें जुडो, कराटे, आसन प्राणायाम, लाठी, छुरी, बर्छी, भाला आदि का सैनिक प्रशिक्षण के अतिरिक्त अनेकों गम्भीर बिमारियों की निःशुल्क चिकित्सा भी की जायेगी तथा राष्ट्रीय समस्याओं के निवारण हेतु भी मार्गदर्शन दिया जायेगा। निःशुल्क प्रवेश आवास प्रशिक्षण सुविधा केवल ४ रुपये प्रतिदिन भोजन शुल्क लिया जायेगा। इच्छुक आर्य वीरों को १० मार्च तक अपने आवेदन पत्र गुरुकुल कार्यालय में भेज देने चाहिएं।

संयोजक धर्मदेव विद्यार्थी

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान नमस्ते

सर्वहितकारी के १४ फरवरी ८४ के अंक में पृष्ठ ७ पर प्रकाशित 'ऋषि की मूर्ति अवश्य स्थापित होनी चाहिये' शीर्षकान्तर्गत पं० फूलचंद्र शर्मा के विचार पढे।

इसी तारतम्य में आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित पुस्तक "दयानन्द शास्त्रार्थ संग्रह तथा विशेष शंका समाधान" में पृष्ठ २५४-२५५ पर "कविराज शामलदास जी उदयपुर से वार्तालाप—अगस्त १८८२" में महर्षि दयानन्द जी का विचार भी सर्वहितकारी के सुधी पाठकों के समक्ष रखना समीचीन होगा।

उपर्युक्त वार्तालाप इस प्रकार—

शामलदास ने कहा—

एक दिन मैंने निवेदन किया कि आपका स्मारक चिह्न बनना चाहिये।

महर्षि ने कहा—कि नहीं, प्रत्युत मेरी भस्मी किसी खेत में डाल देना, काम आयेगी। कोई स्मारक न बनाना, ऐसा न हो कि मेरी मूर्तिपूजा आरम्भ हो जाय।

इससे सिद्ध है कि स्वामी जी अपनी मूर्ति (प्रस्तर प्रतिमा) बनवाने के विरुद्ध थे। वे जानते थे कि आगे चलकर इससे मूर्तिपूजा को विशेष बल मिलेगा।

देव दयानन्द के भक्तों को भी इस सम्बन्ध में सोच समझकर निर्णय करना चाहिये।

शंकरलाल कोटवानी नागदा

विवाह संस्कार पर आर्य संस्थाओं को दान

श्री महाशय नत्थासिह जी आर्य भजनोपदेशक के सुपुत्र श्री विजयपाल आर्य गांव बदरपुर जिला करनाल निवासी का शुभ विवाह चौधरी रामप्रकाश नम्बरदार लाठर करनाल निवासी की सुपुत्री सुनीता के साथ वैदिक रीति से १२ फरवरी १९८४ को श्री धर्मवीर शास्त्री गुरुकुल घरौण्डा व नन्दकिशोर शास्त्री करनाल द्वारा सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर आचार्य श्री स्वामी रामेश्वरानन्द सरस्वती, श्री वेदपाल जी डिप्टिस्पीकर हरयाणा सरकार तथा अनेक व्यक्तियों ने उपस्थित होकर दम्पति महानुभावों को आशीर्वाद दिया तथा महाशय नत्थासिह जी ने नीचे लिखी संस्थाओं को दान भी दिया। ५१ रुपये हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा रोहतक, ३१ रुपये गुरुकुल घरौण्डा, २१ रुपये आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल, २१ रुपये आर्यसमाज दयालपुरा करनाल, २१ रुपये श्रद्धानन्द अनाथालय करनाल एतदर्थ महाशय जी को सब संस्थाओं की ओर से धन्यवाद दिया जाता है तथा भगवान् से प्रार्थना है कि दम्पती महानुभाव को चिरंजीवी व सौभाग्य शाली बनायें।

मन्त्री आर्यसमाज बदरपुर (करनाल)

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे १५) मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देवें। व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक

सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क १५ १४ मार्च १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

होली का हुरदंगा है

—निर्भय हाथरसी

सरे आम कुछ भी करदें गुण्डों की यह औकात हुई।
उग्रवाद के सांपों द्वारा घर में घुसकर घात हुई।
निन्दनीय उद्दण्डों को भी दण्ड नहीं दे पाते हैं।
संविधान को अपमानित करना मामूली बात हुई।
गन्दे नाले से गन्दी यमुना के कारण गङ्गा है।
होली का हुरदङ्गा है।

तिकड़म, ढोंग, फरेब, झूठ, छल-छन्द, छद्म, मक्कारी से।
चोर बजारी बात कर रही है हंसकर व्यापारी से।
चारों ओर जलालत ही है ऐसी पतली हालत है—
हार गया है सदाचार भी, अब तो भ्रष्टाचारी से।
पुण्यात्मा निर्बल दुर्बल है, पापी-पापी चंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

सभी पुराने सम्बन्धों को तोड़ दिया है अब सबने।
अपना नाता हुरदंगों से जोड़ दिया है अब सबने।
जग-जीवन राम के भरोसे छोड़ दिया है अब सबने।
होली में जनता का खून निचोड़ दिया है अब सबने।
सत्ता की सुन्दरी को ललचाया कालिया-भुजंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

नेता अभिनेता सा देखा अभिनय करना सीख लिया।
हर अधिकारी से अपना भण्डार भरना सीख लिया।
रानी मिली महारानी सी राजकुमार गंवार मिले—
मन्त्री सन्त्री सबने अपना ही दुःख हरना सिख लिया।
कोई भी ढंग में न देखा जो देखा बेढगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

आग उगलता 'आसामी' जब मरने को बेताब मिला।
भाई( ) ही खून बहाता हत्यारा पंजाब मिला।
सन्तों के करतब तो अब हत्यारों जैसे लगते हैं—
चारों ओर जहां भी देखा वातावरण खराब मिला।
कहने को त्योहार भले ही लेकिन दगंमदङ्गा है।
होली का हुरदङ्गा है।

पुलिस प्रशासन में अबला की लाज लुटी है थानों में।
हत्यारे छुप कर जा बैठे हैं धार्मिक स्थानों में।
अधिकारी ही कर्त्तव्यों की हत्या करते मिलते हैं—
अन्तर नहीं दिखाई देता साधु और शैतान में।
सर्वाधिक परिधान पहिनने वाला सबसे नंगा है
होली का हुरदङ्गा है।

नाम सदाचारी है लेकिन सदाचार का नाम नहीं।
किया ब्रह्मचारी ने भी क्या अपराधी का काम नहीं ?
लोकतन्त्र है किन्तु तान्त्रिकों के तन्त्रों में बन्दी है—
बाबा स्वामी भगवानों पर लगती यहां लगाम नहीं।
पता नहीं चलने पाता है नेता है कि लफंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

'शान' उलटकर 'नशा' बना पर हुई नशे की मांग बड़ी।
नशा हुआ तो अचरज क्या कुत्ते बिल्ली की टांग लड़ी।
छोटे से छोटे से लेकर बड़े बड़े अधिकारी तक—
सभी नशे में झूम रहे हैं हर कुंए में भांग पड़ी।
भंग अभंग अलाप रही हर कोई भूत अधनंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

चपरासी से हाकिम मांगे चपरासी व्यापारी से।
कोई भी पार्टी हो मांग रही है चोर बजारी से।
हाथ जोड़कर खड़े हुए हैं निर्वाचन में नेता जी—
दिल्ली लिये कटोरा मांग रही है दुनियादारी से।
दाता कोई नहीं दीखता हर प्राणी भिखमंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

जन जीवन में स्वार्थ भाव से जन जीवन जंजाली है।
नीयत नहीं किसी की भरती पेट सभी का खाली है।
नेताओं की तिकड़म से या जनता की ना समझी से—
मतवालों के मत से मतवालों ने गद्दी पाली है।
मत-वाला मतवाला सत्ताधारी मस्त मलंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

हर टोले में टुच्चों, मुच्चों, लुच्चों की भी टोली है।
सबके ही हाथों में विध्वंसक रंगों की झोली है।
घर-आंगन में गली-मुहल्लों सड़कों और चौराहों पर
यत्र तत्र सर्वत्र जहां भी देखो खूनी होली है।
इतने रंग चढे हैं सबका ही चेहरा बदरंगा है।
होली का हुरदङ्गा है।

(पाक्षिक जुगनू से साभार)

भारतीय संविधान जलाने की कड़ी भर्त्सना

आर्यसमाज अजमेर ने अपनी एक सभा में सर्वसम्मति से प्रस्ताव पारित कर अकालियों द्वारा भारतीय पवित्र संविधान को जलाने की कुकृति की कड़ी आलोचना की है साथ ही प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति, गृह मन्त्री एव पंजाब राज्य के राज्यपाल को प्रस्ताव की प्रतियां भेजकर पंजाब में निर्दोष एवं मासूम निर्मम हत्याओं को शीघ्रातिशीघ्र रोकने की मांग कीहै अन्यथा यह आग देश में फैल जाने की चेतावनी दी है।

सर्वहितकारी की धूम

सर्वहितकारी के लेख काफी सारगर्भित और ऐन-मौके के अनुसार होते हैं जिनको पढ़कर पाठक प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकता। इस के लिए आप सचमुच बधाई केपात्र हो।

भागसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज भदूवा
डाकखाना-कौल, जिला कुरुक्षेत्र

शिव-शंकर-दयानन्द

(पं० वोरसेन जी वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य, वेदसदन, महारानी रोड, इन्दौर)

(गतांक से आगे)

पांच सहस्र वर्षों से हम दोनों का शुद्ध स्वरूप नष्ट हो गया था। लोग आह्वानीयग्नि का भूल गये थे। हमें सुगन्धित, पुष्टि कारक एवं आरोग्य वर्धक आहुतियां तथा यथेच्छ केशर कस्तूरी युक्त पान करने को पूर्वकाल में प्राप्त होती थी। नाना प्रकार के मिष्ठान, मोहन भोग एवं स्थालीपाक से हम दोनों को तृप्त किया जाता था जिससे हम दोनों परिपुष्ट होकर विश्व को आरोग्यता सवृष्टि एवं बलैश्वर्य से सम्पन्न कराते रहते थे। 'परस्परं भावयन्तः श्रेयः परमवाप्स्यथ' यह हमारी अमोघ प्रतिज्ञा थी और आशीर्वाद था। उस समय भोजन से पूर्व हमारे द्वारा बलिवैश्वदेव यज्ञ होता था और बिना हमें आहुति दिये कोई भोजन ग्रहण नहीं करता था। बिना यज्ञ का भोजन चोरी और पाप का समझ कर अग्राह्य समझा था। पूर्व काल में ऐसी हमारी प्रतिष्ठा और पूजा थी।

परन्तु जबसे उपरोक्त प्रकार से हमारी पूजा अर्थात् सेवा नष्ट हो गई तो हमें हवि रूपी भोजन मिलना बन्द हो गया और हमारा परिपालन नष्ट हो गया। इनके विपरीत अभक्ष्य मांसादि की आहुतियां दी जाने लगी। इस प्रकार हमें अपवित्र कर दिया गया था। परिणाम स्वरूप विश्व महामारी प्लेग और क्षयादि रोगों एवं अकाल, अवृष्टि आदि से आक्रान्त हो गया। ऐसे समय में महर्षि ने आकर मेरे आह्वानीय स्वरूप को यज्ञ करना सब का अधिकार घोषित करके पुनः हमारी प्रतिष्ठा कराई और वायु को भी शुद्ध होने का अवसर दिया। इस प्रकार हम दोनों का महर्षि ने उद्धार किया। क्या यह उसकी महानता न थी ?

वह देखो नगाधिराज, हिमालय, शुभ्र हिम से आच्छादित, जबसे सृष्टि उत्पन्न हुई है, खड़े हैं। उन्होंने सबको देखा है और देख भी रहे हैं। हमारे वायु के झोंके वहां विलीन हो जाते हैं। अग्नि वहां शीतल पड़ जाती हैं। आदि सृष्टि में जहां मानव ने जन्म लिया है। इन्द्र और शिव, विष्णु और भारत वहीं विहार करते थे। ऋषि मुनि वहीं वेदों की ऋचाओं का साक्षात्कार करते थे। मुनि और तपस्वी वहीं अपने तप की साधना करते थे। वह महर्षि वहां भी तपस्या करने गया था, उनसे भी पूछना।

यह सुन, मैं उनके भी पास गया और पूछा—हे नगाधिराज ! तुमने अपनी शरण में अनेक ऋषि मुनियों को रखा। क्या तुम मेरे महर्षि को अधिक काल तक न रख सके। तुमने अलखनंदा को पार करते हुए उस तपस्वी को अपने हिम खण्डों के प्रहारों से छार-छार क्यों कर दिया था, तुमने अपने मार्ग शून्य, कंटकाकीर्ण, सिंह, व्याघ्रादि पशुओं से संयुक्त निर्जन वनों में उसे क्यों भटकाया था ? तुमने क्षुधा और तृष्णा से व्याकुल कर, उसे मूर्छित करके उसके प्राण लेने का क्यों प्रयत्न किया था ?

हिमालय बोला—मैं शान्त हूं। मुझ में क्रोध नहीं। द्वेष नहीं। सृष्टि के प्रारम्भ से ही सबको अपनी गोद में लिए बैठा हूं। उनको सर्व प्रकार की भोज्य सामग्री दे रहा हूं। तप के लिए मेरा शान्त, शीतल स्थान सदा से विख्यात है। महर्षि दयानन्द भी अन्यों की भांति तपस्या करने आये थे। उनकी तपस्या के तेज से मेरी शीतलता नष्ट होने की प्रतीक्षा में थी। मेरा हिम परिधान शुष्क होने की संभावना में था। मैंने धर्मराज युधिष्ठिर को भी अपने हिम में विलीन कर दिया था। महा बलिष्ठ भीम को भी हिमावृत करके सदा के लिए शान्त कर दिया था। अत्यन्त पराक्रमी अर्जुन को भी हिमसात् कर दिया था। अलखनन्दा के हिम प्रवाह में मेरा और उनका तपस्या में साधमुख्य था। मैं अपनी महानता के आगे किसी को नहीं मानता था। इसलिये अलखनन्द में मैं उन्हें विलीन कर देना चाहता था।

परन्तु वे मेरे प्रहारों को सहते ही रहे और मुझे अपनी पराजय स्वीकार करनी पड़ी। इसी से मैं कहता हूं वे महान् थे। भूमंडल पर आज तक ऐसा पुरुष नहीं हुआ। संसार आज माने या न माने परन्तु आगे के युगों में मानव उसके महत्त्व को समझेगा। मैंने तो उन्हें अपना आशीर्वाद निम्न शब्दों में दिया है—

यावदादित्यस्तपति यावद्भ्राजति चन्द्रमा ।
यावद्वायुः प्लवयति तावज्जीव जया जय ॥

इसलिये देखो—कलकल निनादिनी गंगा और यमुना, झेलम और रावी, सिन्धु और ब्रह्मपुत्र नदियां उसी का यशोगान करती हुई भारत-भू पर विचरण कर रही हैं। तुम उनसे महर्षि के बारे में पूछो। वनों में पक्षीगण अपने कलरवों से उसी महर्षि का यशोगान कर रहे हैं। तुम उनसे महर्षि के बारे में पूछो। नगर नगर, प्रान्त प्रान्त, देश विदेश में में आये समाजें अपना उन्नत मस्तक किए हुए उनकी धवल कीर्ति दिग-दिगन्त में व्याप्त कर रही हैं।

मैं गंगा के पास गया। वह तीव्र गति से कहीं जा रही थी। हजारों लोग उसकी स्तुति कर रहे थे, पर वह किसी की भी कुछ न सुनती हुई अपने ही नाद में मस्त थी।

मैंने कहा—हे गंगे ! तू सबको शीतलता देने वाली है, पवित्र करने वाली है, अमृतरूपा है। मुझको भी शीतलता प्रदान कर, तृप्त कर और पवित्र कर। पृथ्वी, पर्वत, नदी, ताल, वृक्ष सब पवित्र देखें। इतने पवित्र कि उनकी देवता तुल्य पूजा और सत्कार हो रहा है, परन्तु मानव का हृदय, मानव की बुद्धि अपवित्र और अन्धकारमया ही बनी हुई है। हजारों वर्षों से तुम बह रही हो। पापनाशिनी कही जाती हो। तुम्हारी स्तुति पुराणों में सब देवता करते सुने गये हैं। क्या तुमने अभी तक इस मानव जाति को नहीं तारा? इसके हृदय को पवित्र नहीं किया ? इसकी बुद्धि को निर्मलता प्रदान नहीं की ?

गंगा बोली—भक्त! सब आते हैं, मुझ में स्नान करके चले जाते हैं। उसी से अपने को कृतकृत्य समझते हैं और मुक्त मानते हैं। कोई ज्ञान पिपासा वाला आवे तो मैं उसको मार्ग बताऊं कि इस धरा पर एक ज्ञान गंगा भी व्यापक विष्णु रूपी परमात्मा से वेद के रूप में प्रादुर्भूत हुई है और उसको इस युग में शिव-शंकर दयानन्द ने अपने सिर पर धारण कर मृत्यलोक के उद्धार और उनके जीवों को मोक्ष साधना के हित इस धरा पर प्रवाहित कर दिया है। उसमें मज्जन करने से जन्म जन्मान्तरों के अविद्याजन्म कुसंस्कार, अधर्म, अज्ञानरूपी पापों का नाश होकर इनसे मोक्ष तत्काल प्राप्त होता है और जीव आनन्द में विचरण करने लगता है। उस ज्ञान गंगा ने हजारों और लाखों को तारा है। तू भी तर जा। चिर शान्ति, चिर आनन्द, चिर मोक्ष दायिनी वह वेदरूपी ज्ञान गंगा है। मुझसे तो क्षणिक भौतिक शीतलता और तृप्ति प्राप्त होगी। अतः उसी ज्ञान गंगा में मज्जन कर और गोते लगा। उसी शिव शंकर दयानन्द की जय बोल, उसकी ज्ञान रूपी गंगा की जय बोल। एक बार अपने उद्धार के लिए उस सच्चे शिव शंकर की ज्ञान गंगा में गोता लगा ले और जोर से उस महर्षि की जय बोल।

मैंने तुरन्त ही महर्षि दयानन्द की जय के घोष लगाये। प्रसन्न होकर गंगा पुनः बोली—सर्वदेव, ऋषि, पितर, साध्य, मुनि, यती, योगी जीवित अवस्था में मेरी शरण में आते हैं। मरने के बाद भी उन्हें मेरी शरण में आना पड़ता है अतः उनके स्थल एवं सूक्ष्म शरीर, मन और आत्मा में प्रविष्ट होकर उनसे परिचित हूं। सहस्रों योगी यती ऋषि मुनियों ने मेरे प्रवाह में खड़े होकर मन्त्रों की साधना एवं तपस्या की हैं। महर्षि दयानन्द के गुरु विरजानन्द जी ने भी मेरे प्रवाह में खड़े होकर गायत्री की उपासना की थी और महर्षि दयानन्द ने भी अनेक प्रकार से मेरे साथ रहकर तप का अनुष्ठान किया है। वे मेरी रेत को ब्रह्मचर्य से दीप्त योग से पवित्र एवं तेजस्वी शरीर पर लगाते थे। पद्मासन लगाकर वे मेरी धारा में गंभीर जल में नीचे के तल में बैठकर ध्यान मग्न होते थे। मैं उन पर से प्रवाहित होती रहती थी। मेरे तीव्र प्रवाह में कौन ठहर सकता था ? परन्तु वह बाल ब्रह्मचारी मेरे हिम सदृश शीतल और

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शिवरात्रि पर २९ फरवरी को सांय ८ बजे आकाशवाणी रोहतक से प्रसारित वार्ता

महर्षि दयानन्द और समाज सुधार

डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(गतांक से आगे)

अध्यापक लोग उनको इन बातों से बचावें जिससे उत्तम विद्या, शिक्षा, शील स्वभाव, शरीर और आत्मा के बल से युक्त होकर आनन्द को नित्य बढ़ा सकें। वहां सबको तुल्य वस्त्र खानपान आसन दिये जायें। चाहे वे राजकुमार या राजकुमारी हों, चाहे दरिद्र की सन्तान हों सबको तपस्वी होना चाहिये। इसमें राजनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सकें। पाठशाला में अवश्य भेज देवें जो न भेजे वह दण्डनीय हो।

उच्चकोटि के मानव समाज के निर्माण में महर्षि ने नर और नारी दोनों के लिए शिक्षा को बहुत ऊंचा स्थान दिया है। वे शिक्षा को मानव मात्र के लिए अनिवार्य मानते हैं। उत्तम शिक्षा के लिए उच्च-कोटि के चरित्रवान् विद्वान् अध्यापकों का होना अनिवार्य समझते हैं। ऐसे अध्यापक और अध्यापिकाएं ही श्रेष्ठ नागरिकों का निर्माण कर सकते हैं। देश के शिक्षा संस्थान नगर-ग्राम के दूषित वातावरण से दूर एकान्त रमणीय स्थान पर बनाए जाएं। महर्षि सह-शिक्षा के विरोधी हैं परन्तु वे स्त्री शिक्षा के प्रबल समर्थक हैं। देश के शिक्षणालयों में राजकुमार तथा निर्धन की सन्तान के प्रति शिक्षा, वस्त्र तथा खानपान आदि में किसी प्रकार के भेदभाव को महर्षि अच्छा नहीं समझते अपितु सब के प्रति तुल्य व्यवहार का विधान करते हैं जिससे एक आचार्य के कुल में शिक्षा प्राप्त करने वाले बालक और बालिकाएं स्वयं को सामाजिक दृष्टि से ऊंचा और नीचा न समझें। निर्धन के सन्तान के मन में हीन भावना से दीनता और राजकुमार के मन उच्चभावना से अभिमान का उदय होकर परस्पर घृणा व द्वेष का जन्म न हो। वे अपने आचार्यकुल को अपने ही पिता का घर समझें। कृष्ण और सुदामा के समान प्रीति पूर्वक रहते हुए शिक्षा प्राप्त करें।

आज का मानव समाज जाति-पाति, वर्ग, भाषा, प्रान्त आदि के भेद से अनेक खण्डों में बंटा हुआ है। इन्हीं बनावटी विभाजनों को लेकर राष्ट्र में आए दिन झगड़े होते रहते हैं एक बिरादरी से दूसरी बिरादरी से, एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त से, एक भाषा से दूसरी भाषा से उलझी रहती हैं। ऐसे समाज को कोई अच्छा समाज नहीं कहा जा सकता। महर्षि ने समाज के इस भयंकर रोग को वर्णव्यवस्था के महौषध से दूर करने का प्रयास किया है। उनका कहना है कि मानव ही एक जाति है। उस जाति का जन्म के आधार पर कोई वर्गीकरण नहीं किया जा सकता क्योंकि एक विद्वान् के घर पर मूर्ख का भी जन्म हो जाता है और मूर्ख के घर में विद्वान् भी उत्पन्न हो सकता है। मानव जाति का वर्गीकरण उसके कर्म के आधार पर किया जाना चाहिए। आज की भाषा में हम समाज के इस वर्गीकरण को शिक्षक, रक्षक, व्यापारी और सेवक कह सकते हैं। इस व्यवस्था का सबसे बड़ा लाभ यह है कि मानव मात्र के लिए कर्म के आधार पर सबकी उन्नति के मार्ग खुले हैं। जन्म के आधार पर किसी की उन्नति में कोई बाधा नहीं। यह सब व्यवस्था शिक्षणालय के प्रबन्ध कर्त्ता एवं आचार्य लोगों के अधीन है।

महर्षि समाज में विवाह सम्बन्ध का मूल आधार वर्ण-व्यवस्था को ही मानते हैं। राष्ट्र में शिक्षक, रक्षक आदि लोग अपने अपने वर्णों में ही विवाह सम्बन्ध करें। विवाह सम्बन्ध में माता पिता की अपेक्षा आचार्य को प्रमुख स्थान दिया है। जो ब्रह्मचारी और ब्रह्मचारिणीयां शिक्षा के उपरान्त गृहस्थाश्रम में प्रवेश करना चाहें उनके गुण, कर्म व स्वभाव के अनुसार आचार्य तथा माता पिता आदि लोग सब व्यवस्था करें। उस सब व्यवस्था का विधान महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश में किया है। विवाह में महर्षि ने स्वयंवर पद्धति को ऊंचा स्थान दिया है। लड़का और लड़की अपने जीवन साथी को अपनी इच्छा से वरण करें। यह स्वयंवर पद्धति दहेज प्रथा महामारी की अचूक औषध है। आजकल के अशिक्षित माता-पिता लड़का लड़की की बजाए दहेज के साथ सम्बन्ध करते हैं। समाज में यह रोग दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। इससे सारा समाज अत्यन्त व्याकुल है। नारी जाति तो इस रोग से दम तोड़ रही है। आचार्य अथवा विद्वान् माता-पिता के अधीन स्वयंवर सम्बन्ध हो इस दुष्प्रथा का अन्त कर सकता है।

जब तक कोई राष्ट्र पराधीन है तब तक वह समाज-सुधार के कार्य नहीं कर सकता। अतः महर्षि ने भारतवर्ष को अंग्रेज शासन की पराधीनता से मुक्त होने का शंखनाद किया और सत्यार्थप्रकाश में लिखा विदेशी राजा चाहे माता-पिता के सदृश हो फिर भी अच्छा नहीं। इस लिए महर्षि ने अपने राष्ट्र के संचालन के लिए उच्चकोटि का राष्ट्रीय संविधान बनाया। जिसमें विद्या सभा, धर्मसभा और राजसभा की रचना का आदेश दिया। राष्ट्र की विद्यासभा समाज में विद्या की उत्तम व्यवस्था करें। समाज का कोई नागरिक अनपढ़ न हो। राष्ट्र की धर्म सभा समाज में न्याय व्यवस्था को स्थापित करे। किसी नागरिक के साथ अन्याय और अत्याचार न हो। सबको धर्म अर्थात् न्याय मिले। सब देशों की राजसभा समस्त भूमण्डल में एक चक्रवर्ती राज्य की स्थापना करें। सब देशों के राजा लोग राजसभा के माध्यम से मिलकर देशों की समस्याओं का समाधान करें। कोई देश आपस में युद्ध, विवाद, झगड़े, बखेड़े आदि न करें अपितु वसुदैव कुटम्बकम्' समस्त भूमण्डल को अपना एक कुटम्ब समझें। राजा लोग सब दुर्व्यसनों से अलग रहकर पुत्र के समान प्रजा का पालन करें।

आज महर्षि दयानन्द तथा महात्मा गान्धी आदि सन्तों के आशीर्वाद और सुभाष, भगतसिंह आदि वीरों के बलिदान से अपना प्यारा भारतवर्ष स्वतन्त्र है। अपना राज्य है। अपनी सब व्यवस्था है। आज प्रशासन एवं प्रजा दोनों मिलकर समाज सुधार के कार्यों को बड़ी सरलता से कर सकते हैं। आज महर्षि दयानन्द के उपदेशों से प्रेरणा लेकर हम एक उत्तम समाज का निर्माण करें। समाज के नर नारी आस्तिक और सदाचारी हों। पवित्र वेदमन्त्रों तथा सन्तजनों की पावन वाणी का प्रातः घर-घर में उच्चारण हो। कोई चोर, डाकू, जार और व्यभिचारी न हो। कोई जुआरी और मद्यमांस का सेवन करने वाला न हो। हम वेद की पवित्र शिक्षा का प्रकाश घर घर में पहुंचाएं। अन्धविश्वास तथा रूढिवाद से अलग होकर बुद्धिवाद का प्रसार करें। अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करें। समाज को अज्ञान, अन्याय और अभाव के दुःख से मुक्त करें। अनाथों को गले लगावें। विधवाओं के आंसू पोंछें। नारी जाति का पूर्ण सम्मान करें। जाति-पाति के बनावटी भेदों को भूलकर सब प्रेम से रहें।

ऋषि दयानन्द बोध उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज अजमेर के तत्वावधान में ऋषि दयानन्द बोध दिवस अजमेर नगर सुधार न्यास के अध्यक्ष श्री माणकचन्द जी सोगानी की अध्यक्षता में समारोह पूर्वक आयोजित हुआ जिसमें आर्यसमाज अजमेर के प्रधान दत्तात्रेय आर्य, प्रो० कृष्णपालसिंह, प्रो० बुद्धिप्रकाश आर्य के ऋषि बोध दिवस सम्बन्धी प्रवचन हुए तथा दयानन्द बाल सदन एवं जियालाल कन्या के स्कूलों के बालक बालिकाओं के भजन सम्पन्न हुए। इससे पूर्व बृहत यज्ञ सम्पन्न हुआ।

एक ऐतिहासिक समाचार

Times of India Bombay में एक स्थाई स्तम्भ A Hundred Years Ago प्रकाशित होता है। १०० वर्ष पूर्व इस पत्र में क्या मुख्य समाचार प्रकाशित हुआ था, उसे इस स्तम्भ में प्रकाशित किया जाता है। टाईम्स आफ इण्डिया ११ जनवरी १९८४ में १०० वर्ष पूर्व अर्थात् ११ जनवरी १८८४ को जो मुख्य समाचार प्रकाशित हुआ था। नीचे दिया जा रहा है इसमें प्रो० मैक्समूलर ने महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण पर अपनी श्रद्धांजलि इस प्रकार दी है—

A Hundred Years Ago

From The Time of India Friday, January 11, 1884
A GREAT RELIGIOUS REFORMER.
BY PROFESSOR MAXMULLER

The Indian newspapers contain the announcement of the death of Dayanada Saravati. Most English readers, even some old Indians, will ask who was Dayananda Sarsvati?—a question that betray as great a want of familiarity with the social and religious life of India as if among us any one were to ask who was Dr. Puscy ? Dayananda Sarsvati was the founder and leader of Arya Samaj, one of the most influential of the modren sects in India. He was a curinus mixture in some respects not unlike Dr. Pusey. He was a scholar, to begin with, deeply read in the theological literature of his country up to a certain point he was a refomer, and was in consequence exposed to much obloquy and persecution during his life, so much so that it is hinted in the papers that his death was due to poison administered by his enemies. He was opposed to many of the abuses that had crept in, as he well knew, during the later periods of the religious growth of India, and of which, as is known now, no trace can be found in the ancient sacred books of the Brahman the Vedas. He was opposed to idol-worship, he repudiated caste and advocated female education and widow marriage. In his public disputation with the most learned pandits at Benares and elsewhere, he was genearlly supposed to have been victorious, though often the aid of the police had to be called in to protect him from the blows of his conquered foes He took his stand on the Vedas.

सेवाभाव से कार्य करने वालों की आवश्यकता

गुरुकुल डिकाडला जिला करनाल में सेवाभाव से कार्य करने वाले कार्यकर्त्ताओं अथवा सेवानिवृत अध्यापकों की आवश्यकता है। वानप्रस्थियों को प्राथमिकता दी जावेगी। भोजन, दूध, दक्षिणा तथा आवास आदि की सुविधा दी जावेगी।

आचार्य आर्ष संस्कृत महाविद्यालय
डिकाडला जिला करनाल

वेदप्रचार मण्डल की सोनीपत में बैठक

आर्य वेदप्रचार मण्डल सोनीपत की एक विशेष सभा दिनांक १८-३-१९८४ (रविवार) दिन के १ बजे आर्यसमाज नगर सोनीपत में होनी निश्चित हुई है जिसमें मण्डल के भावी कार्यक्रमों पर विचार होगा।

देवदत

आ गई होली

मिटाकर भेद आपस के, बनाकर संगठन टोली।
हटाकर गम व रंजिश को, लो खेलो खेल यह होली॥
मिलालो मन से अब मन को, भुलाकर गलतियां सारी।
सुहानी आ गई प्यारी, बरस भर बाद फिर होली॥
लगाओ माथे पे चन्दन, पहनाओ हार फूलों का।
भिगोओ प्रेम के रंग से, सुनाओ प्रेम की बोली॥
रहो मिलकर सदा ऐसे, गले का हार हो जाओ।
मन को साफ करलो अब, मनाओ प्रेम की होली॥
गलतियां तो मानव से, सदा होती हैं होंगी भी।
न खेलो बाहरी होली, लगाओ प्रेम की रोली॥
गले लगते बड़े छोटे, मिटाते द्वेष आपस के।
इकट्ठा बैठना उठना, सिखाती आके होली॥
न हो यह भावना मन में, कि यह ऊंचा वो नीचा।
भुलाओ और भूलो सब, कभी जो भूल है होली॥
खेलो प्रेम से मिलकर, बनाओ संगठन टोली।
रंगीली आ गई 'शादां' रंगीली आ गई होली॥

कवि० बनवारीलाल 'शादां' वैद्य
श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी
१०८०२ मानि कपुरा नई दिल्ली

(पृष्ठ २ का शेष)

तीव्र प्रवाह के आघातों को सहने में अद्वितीय था। वह महर्षि था। ब्रह्मर्षि था। अनुपम था। अप्रतिम ब्रह्मतेज धारी था। वह इस युग का ब्रह्मा था। व्यास था। शंकर था। आचार्यों का आचार्य था। योगीश्वर था। आनन्दकन्द, दयामय, आनन्द-स्वरूप था। वही एकमात्र सत्पथ का प्रदर्शक था। उसी की शरण में जाओ। उसी का उपदेश ग्रहण करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का वैदिक सन्मार्ग प्राप्त करो।

यद्यपि आज महर्षि दयानन्द का पांच भौतिक शरीर नहीं है तथापि उनके द्वारा स्थापित आर्यसमाज और उसके सभासद संसार में उनकी कीर्ति को अमर करने में सदा अग्रसर होते रहेंगे और ऋषि दयानन्द का यश सर्वत्र व्याप्त होता रहेगा।

शोक समाचार

१—आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र के प्रधान एवं सभा के अन्तरंग सदस्य श्री साधुराम आर्य के ज्येष्ठ पुत्र श्री नाथीराम का अचानक २४ फरवरी को निधन हो गया। वे भी अपने पिता जी की भांति आर्यसमाज के कार्यों में योगदान करते रहते थे। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके दुःखी परिवार को इस वियोग को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

२—आर्यसमाज रामामण्डी (पंजाब) के पूर्व प्रधान श्री देवराज जी ३ मार्च को प्रातः वे घूमने के लिए जा रहे थे उस समय अज्ञात उग्रवादियों ने उन्हें ६ गोलियां चलाकर शहीद कर दिया। विडम्बना है कि उनकी सुपुत्री की शादी ५ मार्च को थी। इस प्रकार वे अपनी सुपुत्री के पीले हाथ भी नहीं कर सके। वानप्रस्थी ओमप्रकाश ने उनकी सुपुत्री के विवाह संस्कार का प्रबन्ध किया।

बारात में कुल ५ बाराती आये और किसी प्रकार का दहेज आदि नहीं लिया। उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों के प्रति सर्वत्र रोष फैल रहा है।

सभा मन्त्री

दहेज के विरुद्ध जाट्ट खाप के क्रान्तिकारी फैसले

हांसी, ९ मार्च (एस)। यहां से २४ किलोमीटर दूर जाट्ट खाप के ८० गांवों के केन्द्रीय गांव धनाना में इन गांवों के आठ हजार प्रतिनिधियों की एक जनसभा गत दिवस हुई।

इस जाट्ट खाप ने दहेज जैसी महामारी के विरुद्ध क्रांतिकारी निर्णय लिये हैं। उनके अनुसार बारात में ५ से २५ तक बाराती जा सकेंगे। लड़के की रोक केवल एक रुपये से होगी। बारात को भोजन के साथ केवल दो प्रकार की मिठाई ही परोसी जा सकेगी। टी० वी०, फ्रिज, कूलर ही नहीं सोफा सैट, पलंग आदि वस्तुएं दहेज में देने पर भी खाप ने पाबन्दी लगा दी है। यह भी निर्णय लिया गया कि इस खाप के किसी गांव में यदि कोई वहू जल मरती है या आत्महत्या कर लेती है तो उसकी सूचना पुलिस को ग्राम पंचायत देगी। स्वयं पंचायत कोई निर्णय नहीं लेगी। यह फैसले तुरन्त लागू कर दिए गए हैं। विश्वस्त सूचना के अनुसार १० विवाह इन निर्णयों के अनुसार हो भी चुके हैं।

पंचग्राम में यज्ञ का आयोजन

दिनांक ४ मार्च रविवार को स्वर्गीय महाशय शिवनारायण आर्य की आत्मा की शान्ति के लिए उनके गांव पंचगांव में महाशय जी के बड़े सुपुत्र सूबेदार यज्ञपाल (धर्मशिक्षक) द्वारा वैदिक रीति से यज्ञ करवाया गया जिसमें समस्त परिवारजन और उनके इष्ट मित्रों ने भाग लिया।

निम्नलिखित संस्थाओं को दान दिया गया—

१—आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव	५१ रुपये
२—महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर	५१ ,,
३—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा	५१ ,,

वेदव्रत शास्त्री

आज का युवक

संजीव आर्य 'मोनू' पलवल

पता नहीं आज का युवक,
कहाँ जा रहा है।
भूलकर वैदिक सिद्धान्तों को,
मदिरा मांस अपना रहा है॥

नहीं है चिन्ता उसको,
अपनी व देश की।
इच्छा रखता है लेकिन मन में,
घूमने विदेश की॥

'टाइम' को 'टैम' तथा;
'एक्सरे' को कहता 'एक्सरा'।
अपनी मातृभाषा को छोड़;
पर भाषा पर जाता है मरा॥

लम्बे बाल बढ़े नाखून,
और पसन्द है डिस्को डाँस।
अपनाने को भारतीय सभ्यता,
नहीं करता पसन्द कोई चाँस॥

खड़े रहने के लिए उसके,
गलियां हैं या मकान की छत।
भूलकर बलिदान शहीदों के,
लिख रहा है प्यार के खत॥

बहुत हो लिया अब तो, लगा देश हित में भी ध्यान।
कहलाएगा तू भी एक दिन, भारत माँ का पुत्र महान्॥

हरयाणा के नागरिकों से होली न मनाने की अपील

आजकल पंजाब में अकाली उग्रवादियों द्वारा साम्प्रदायिकता की भयंकर आग भड़काई जा रही है और सैकड़ों निर्दोष लोग इसी कारण मारे जा चुके हैं। हरयाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री वेदपाल तथा बहन शान्ति देवी विधायिका पर भी घातक आक्रमण अत्यन्त निन्दनीय है। यह हिंसक गतिविधियां निरन्तर जारी है। अकाली नेता भारत के विधान की प्रतियां जलाकर उसका अपमान कर रहे हैं।

होली मनाने के लिए जो उल्लास और हर्ष का वातावरण होना चाहिए उसका नितान्त अभाव है और उसकी बजाय वैमनस्य और घृणा का दूषित वातावरण बन चुका है। अतः इन दुःखदाई परिस्थितियों को दृष्टि में रखते हुए मेरी अपील है कि हरयाणा की जनता इस वर्ष होली का पर्व न मनायें।

सतलुज यमुना लिंक नहर न बनने के कारण हरयाणा को १०० करोड़ रुपये वार्षिक घाटा उठाना पड़ रहा है। पंजाब के अकाली पाकिस्तान को तो मुफ्त में पानी देकर सौदा बाजी कर रहे हैं, परन्तु हरयाणा की खुशहाली रोकने के लिए नहर की खुदाई में बाधाएं खड़ी करके हरयाणा को हानि पहुँचा रहे हैं।

जो निर्णय चण्डीगढ़ और अबोहर फाजिल्का के बारे में हुए थे, उन पर अमल न करना भी हरयाणा के साथ घोर अन्याय है। इसलिए हरयाणा के नागरिकों को विशेष रूप से होली नहीं मनानी चाहिए। होली का पर्व मिलन का पर्व है। इस अवसर पर सब देशवासियों को संकल्प लेना चाहिए कि वे राष्ट्रद्रोही तत्त्वों की गतिविधियों को और अधिक नहीं चलने देंगे और राष्ट्र की एकता व सुदृढता के लिए मिलकर जी-जान से क्रियाशील हो जावेंगे।

शेरसिंह
अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

आर्यसमाजों तथा गुरुकुलों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज पाढ़ा जिला करनाल		१३, १४, १५ मार्च
,,	आहूलाना जिला सोनीपत	१४, १५, १६ ,,
,,	मलाहर जि० कुरुक्षेत्र	१६, १७, १८ ,,
,,	मण्धार ,,	१६, १७, १८ ,,
,,	बेरी (मेला प्रचार)	१६ से २२ ,,
,,	गुरुकुल डिकाडला जिला करनाल	२३, २४, २५ ,,
,,	सोहना जिला गुड़गांव	२३, २४, २५ ,,
,,	बला जिला करनाल	२४, २५, २६ ,,
,,	मुवाना जिला जीन्द	२३, २४, २५ ,,
,,	कोसली जिला रोहतक	२४, २५, २६ ,,
,,	मटायल ,,	२६, ३०, ३१ ,,
दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर		२६, ३०, ३१ मार्च १ अप्रैल
आर्यसमाज पुनाहाना जिला गुड़गांव		३०, ३१ ,, १ ,,
कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जिला करनाल		३०, ३१ ,, १ ,,

होली न मनाने की अपील

१० मार्च (शनिवार) केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश ने एक निर्णय में समस्त भारतीयों व मानवता प्रेमी लोगों को होली न मनाने की अपील की है।

परिषद् के अध्यक्ष ब्र० राजसिंह आर्य व महामन्त्री श्री अनिल कुमार ने एक संयुक्त वक्तव्य में देशद्रोही उपद्रवी तत्त्वों द्वारा जगह-जगह संविधान की प्रतियां जलाने के कृत्य की कड़ी भर्त्सना की है। युवाओं को आह्वान करते हुए उन्होंने कहा-जब तक निर्दोष लोगों के भीषण संहार का ताण्डव नृत्य जारी है और नित्य कई बहनों के सिन्दूर मिट रहे हैं और माताओं की गोद सूनी हो रही हैं ऐसी स्थिति में रंग-गुलाल खेलने की कल्पना पाषाणहृदय व्यक्ति ही कर सकते हैं।

उन्होंने कहा कि यह सब सरकार की नपुंसकतावादि नीति के कारण ही खेल खेला जा रहा है। सरकार से मांग की गई कि अपराधियों को गिरफ्तार करने के लिए तुरन्त गुरुद्वारों में पुलिस को प्रवेश करने का आदेश दिया जाये तथा इन तथाकथित उग्रवादियों को गिरफ्तार करके सार्वजनिक रूप से फांसी दी जाए। उन्होंने कहा कि देश की अखण्डता से खिलवाड़ करने की इजाजत किसी को किसी भी कीमत पर नहीं दी जा सकती।

सिरसा में सुलेख प्रतियोगिता

२१ जनवरी १९८४ को सिरसा की एक संस्था कलासौरभ ने स्थानीय विद्यालय आर० एस० डी० हाई स्कूल में सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया। इसमें सिरसा नगर के सभी विद्यालयों के २५० छात्रों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में आर्य उच्चतरमाध्यमिक विद्यालयसिरसा के छात्र वेदपाल ने द्वितीय स्थान ग्रहण किया एक अन्य छात्र राजीव वर्मा ने छटा स्थान प्राप्त किया। दोनों छात्रों का विद्यालय प्रिंसिपल श्री द्वारकाप्रसाद जिन्दल ने सम्मान किया तथा श्री नन्द बल्लभ शास्त्री श्री मदनलाल ग्रोवर व श्री कलाधर शास्त्री का हार्दिक धन्यवाद किया। क्योंकि इन तीनों अध्यापकों ने इन बच्चों को तैयार किया था।

देश को जरुरत है ऐसे नौजवानों की

कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री नई दिल्ली

जरुरत देश को है ऐसे नौजवानों की।
वीर मर्दानों को देश के दीवानों की॥

पश्चिमी सभ्यता से हो रही जो हानियां हैं।
हो रही नष्ट जवानों की ये जवानियां हैं।
नष्ट इससे हुई राजाओं की राजधानियां हैं।
किये जौहर जिन्होंने अब कहां वे रानियां हैं॥
शिवाजी और दयानन्द जैसे चरित्रवानों की। जरुरत...

सिखाकर पाक को भारत से जो लड़ाना चाहें।
शिष्य होकर जो पाठ गुरु को पढ़ाना चाहें।
देश भारत को जो भी शक्तियां मिटाना चाहें।
सिंह को आज शृगालों से जो पिटाना चाहें॥
होश ठिकाने लगादे ऐसे पहलवानों की जरुरत...

देखो आसाम और पंजाब में क्या हो रहा है।
स्वार्थ निद्रा में नेता देश का यह सो रहा है।
अकाली दल जो बीज दुःख के यहां बो रहा है।
मिला जो सुख उसे भी हाथों से वह खो रहा है॥
चले न उसकी अब तलवारों या कृपाणों की जरुरत...

चल रहा धर्म परिवर्तन का चक्र आज यहां।
फैलती जा रही है कोढ़ में अब खाज यहां।
हिन्द में हिन्दुओं का सो रहा समाज जहां।
जगाता फिरता उसे आर्यसमाज वहां॥
करे जो शुद्धियां ईसाई मुसलमानों की जरुरत...

हो रहे गजनवी तैयार यहां आने के लिए।
लूटने देश को और तुमको मिटाने के लिए।
बचेंगे कैसे ये मन्दिर शिवाले घर तुम्हारे।
बनेंगी मस्जिदें उन पर अल्लाह अकबर के नारे।
नहीं यह धरती निर्बलों की—है बलवानों की जरुरत...

उठो जागो पड़े क्यों सो रहे ऐ नौजवानो।
आज आजादी पड़ी देश की खतरे में जानो।
तजो आलस्य उठो मिटने की न मन में ठानो।
देश भारत को 'छाजूराम' बचालो मर्दानो॥
घड़ी है अब तुम्हारे सच्चे इम्तहानों की। जरुरत...

ग्राम बालावास में शराब का ठेका

हर आदमी जानता है कि शराब पीने से क्या हानियां होती है।
पर मेरा विश्वास है कुछ एक ही जानते हैं कि शराब बुरी है।
तभी तो वो इससे दूर भागते हैं जैसे सर्प से हर कोई दूर भागता है पर शराब से कोई कोई और अगर कोई कोशिश करे तो भी स्वार्थी तत्त्व उन्हें गिराने के लिए भरसक कोशिश कर रहे हैं ताकि ये पिछड़े हुए लोग कभी ऊपर न उठ सकें।

इसी का परिणाम है कि ग्राम बालावास जो मात्र २०० घरों की बस्ती है उसमें एक पीढ़ी नाशक दवा यानि शराब का ठेका खुलने जा रहा है ताकि पिछड़े देहातियों का ये स्वार्थी तत्त्व खून चूसते रहे और ये गरीब सम्भल न सकें ताकि उन्हें ये चेतना न आ जाए कि—

खुल रहे हर ग्राम में ठेके शराब के।
आग लगने जा रही है घर को चिराग से।
देख तो ले कम से कम ये कौन है 'दलाल'
पहचान ले निकला है जो चेहरा मकान से॥

इन असामाजिक व स्वार्थी तत्त्वों को ये डर है कि अगर देहात का पिछड़ापन दूर हो गया तो हम बेनकाब हो जाएंगे। आज हालत ये है कि इस गांव के पास पड़ोस के सारे गांवों के विरोध के बावजूद ये स्वार्थी लोग अपना उल्लू सीधा चाहते हैं उन्हें देश या समाज से कोई मतलब नहीं।

सब आर्य नेताओं व आर्यसमाजों और आर्य जनता से हमारा निवेदन है कि वे ऐसे काले कारनामों के विरुद्ध एक जुट होकर खड़े हों ताकि हमारा व हमारी भावी पीढ़ी का भविष्य सुरक्षित रह सके।

अतरसिंह आर्य
प्रधान आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार

आर्यसमाज को गतिविधियां— महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय द्वारा आर्ष पाठविधि को मान्यता



महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति चौ० हरद्वारीलाल जो ३ मार्च १९८४ का गुरुकुल झज्जर के वार्षिक महोत्सव पर महर्षि दयानन्द द्वारा सत्यार्थप्रकाश में लिखी प्राचीन आर्ष पाठविधि (जो श्रीमद्दयानन्दार्षविद्यापीठ गुरुकुल झज्जर द्वारा ३२ गुरुकुलों में प्रचलित है) को मान्यता को घोषणा कर रहे हैं। पास में गुरुकुल झज्जर के आचार्य स्वामी ओमानन्द जी, कुलपति प्रो० शेरसिंह जी, डाक्टर तुलसीराम जी, चौ० रामेहर जो एडवोकेट आदि बैठे हुए हैं।

वेदव्रत शास्त्री मन्त्री गुरुकुल झज्जर

७ व्यक्तियों के मुसलमान परिवारों द्वारा वैदिक धर्म की दीक्षा

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री बलवीरसिंह चौहान के वैदिक धर्म के प्रचार के फलस्वरूप आर्यसमाज कासगज में सब अधिकारियों को उपस्थिति में श्री नाजरखां ग्राम—परतारा, जिला अलीगढ निवासी ने अपने ७ व्यक्तियो के परिवार के सभी सदस्यों के साथ वदिक धर्म में प्रवेश लिया। शुद्धि संस्कार श्री प० आचार्य रामचन्द शर्मा एव रामप्रसाद मिश्र द्वारा सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में उपस्थित सभी महानुभावों के समक्ष नाम इस प्रकार परिवर्तित किये गये। ये सभी गहलोत राजपूत वशज हैं। मुगलकाल में ये मुसलमान बनाये गये थे। परिवर्तित नाम इस प्रकार हैं—

नाजरखां—नाजिरसिंह, असगारो बेगम—आशा देवो, नपोसा बेगम उर्मिला देवो, भूरेखां—भूरेसिंह, मुन्नाखां महेन्द्रसिंह, भूरो - शोला देवो, कल्याणखां—कल्याणसिंह

—मन्त्री शुद्धि सभा

उज्जैन आर्यसमाज में सीता अष्टमी पर व्याख्यान

उज्जैन। प्राय: प्रत्येक परिवार में मतभेद व विघटन का वातावरण बनता जा रहा है। अधिकाशत: महिलाओ में सहनशीलता में आ रही कमी इस प्रकार के वातावरण के निर्माण में घातक भूमिका निभा रही है। इस सन्दर्भ में भगवान् श्री रामचन्द्र की धमपत्नी भगवती सीता का आदर्श आज के युग की प्रत्येक नारी के लिए अनुकरणीय कदम सिद्ध होगा, क्योंकि सीता जी का चरित्र ललित, दिव्य, मृदु और मधुर गुणों की राशि रहा है। नारी जाति के इन गुणों का विकास जैसा सीता जी में देखा जाता है वसा और कहीं नहीं है। सीता जी दया का अवतार, प्रेम की परम धारा, सौन्दर्य की प्रतिमा और मधुरता की मूर्ति रही है। ये उद्बोधन गत २४ फरवरी को सीता अष्टमी के अवसर पर डा० मणीन्द्र कुमार व्यास ने आर्यसमाज में प्रकट किए। डा० व्यास ने आगे बताया किया कि वर्तमान परिपेक्ष में सीता जी के जन्म दिन के साथ ही उनके चरित्र को भुलाया जा रहा है। अनेकों उदाहरणों को देते हुए सीता के अनुपम चरित्र का उल्लेख करते हुए उनकी पति भक्ति, पारिवारिक प्रेम व सहचर्य की भावना, उत्कृष्टतम सहनशीलता, साध्वी जीवन, पुत्र वात्सल्यता, ऋषि भक्ति, पतिव्रता आदि की भावनाओं की सर्वोत्तम पराकाष्ठा का प्रतिपादित किया।

डा० मणीन्द्र कुमार व्यास

भारत पाक सद्भावना टीम गुरुकुल में

बिहार कराटे सेन्टर के तत्वावधान में धनबाद से एक चार सदस्यीय भारत-पाक सद्भावना दल आज दिल्ली से यमुनानगर जाते समय यहां गुरुकुल कुरुक्षेत्र में कुछ समय के लिए ठहरे। इस दल के नेता श्री इन्द्रप्रकाश लाम्बा ब्लैक बलट विजेता इसी गुरुकुल में अपनी प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं वे अपने साथियों सर्वश्री पंजाब के विरेन्द्रसिंह जुडो विशेषज्ञ तथा मणीपुर के शरदसिंह के मोटर साईकिलों पर पधारे तो उनके सम्मान में आयोजित समारोह में बोलते हुए श्री लाम्बा ने अपने बीते दिनों को याद कर भावुक होकर बताया कि मैं यहां एक कराटे केन्द्र भी चलाने की इच्छा रखता हूं। स्वामी रुद्रवेश क्रान्तिकारी भजनोपदेशक के भजनो को सुनकर दल अत्यधिक प्रभावित था तथा उन्होंने अप्रैल में होने वाले गुरुकुल के उत्सव पर कराटे प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन का भी वचन दिया। गुरुकुल के मुख्य संरक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने उनका भावभिना स्वागत किया तथा गुरुकुल के पुराने प्रतिभाशाली छात्रों का एक स्नातक मण्डल बनाने का आग्रह किया। इस दल के नेता श्री इन्द्रप्रकाश लाम्बा ने अपने नाम के साथ आर्य लगाने का सुझाव प्रसन्नता से मान लिया तथा अपने को गुरुकुल कुरुक्षेत्र का ऋणी बताया। अन्त में उन्होंने सद्भावना के प्रतीक चिन्ह गुरुकुल प्रबन्ध सभा के प्रधान चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व एस० एस० पा० श्री धर्मदेव विद्यर्थी एवं स्वामी रुद्रवेश को भेंट किये।

आचार्य गुरुकुल कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज चबूतरों जि० अम्बाला का सफल उत्सव

२७, २८ व २९ फरवरी को वार्षिक उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर पं० रणवीर जी शास्त्री, पं० गुरुदत्त मुनि के प्रवचन तथा प० हरलाल जी, पं० हरिश्चन्द जी, पं० रूबेलसिंह, पण्डित लक्ष्मण आर्य के प्रभावशाली भजन हुए। ब्रह्मचारी रामस्वरूप आर्य ने यौगिक कार्यक्रम दिखाकर सभी को चकित कर दिया।

परमात्मा की असीम कृपा से आर्यसमाज के उपमन्त्री श्री वीरसिंह जी के घर पर २९ फरवरी को उस समय पुत्र ने जन्म लिया जबकि प० हरिश्चन्द जी के भजन हो रहे थे। स्मरण रहे श्री वीरसिंह जी के पूर्व पुत्र का गत वर्ष स्वर्गवास हो जाने से वे बहुत परेशान थे। इस शुभ सूचना पर सारे ग्राम में प्रसन्नता की लहर दौड़ गई। आर्यसमाज की ओर से सभा को ५०१) वेदप्रचार के लिए दान दिया गया।

मामचन्द आर्य मन्त्री

आओ ! देश और धर्म बचाओ

योग प्रशिक्षण शिविर

मान्यवर महोदय,

प्रसन्नता का विषय है कि आपके सदप्रयास एवं सहयोग से वेद प्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र द्वारा आर्यसमाज का प्रचार प्रसार अबाध गति से हो रहा है। इसी शृंखला में युवाओं को वैदिक सिद्धान्तों तथा आर्य समाज में दीक्षित करने के लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र में दिनांक २१ मार्च से ८ अप्रैल तक प्रख्यात व्यायामाचार्य स्वामी डा० देवव्रत जी आचार्य पी० एच० डी० आयुर्वेदाचार्य, व्याकरणाचार्य के कुशल मार्ग दर्शन में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें क्रियाएं आसन प्राणायाम, बाक्सिंग, जुडो कराटे, लाठी, भाला, त्रिशूल, छुरी का क्रियात्मक सैनिक प्रशिक्षण तथा देश की सामाजिक, धार्मिक गम्भीर समस्याओं के समाधानार्थ मार्ग दर्शन दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त नजला, दमा, गठिया, कटि पीड़ा, गर्दन पीड़ा उच्च तथा निम्न रक्त चाप हृदय रोग आदि विभिन्न शारीरिक रोगों की चिकित्सा की भी व्यवस्था की जाएगी। नि.शुल्क प्रवेश एवं आवास सुविधा। केवल भोजन शुल्क हररोज ४ रुपये मात्र होगा।

देश और धर्म की रक्षार्थ प्रशिक्षण का यह एक स्वर्णिम अवसर है अतः हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने व्यक्तिगत प्रभाव से अपनी संस्था आर्यसमाज गुरुकुल, स्कूल, कालेज से कम से कम पांच व्यक्तियों/छात्रों को इस शिविर में भाग लेने हेतु अवश्य भेजें। चाहे इसके लिए आपको किसी का आर्थिक सहयोग क्यों न करना पड़े। हमें आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सदृश उत्साही व्यक्ति इस विषय में पीछे न रहकर स्वयं भी भाग लेंगे तथा औरों को भी प्रेरणा देंगे।

धर्मदेव विद्यार्थी संयोजक

पंजाब में हत्याकाण्ड

होली महोत्सव न मनाने की अपील

गत २९ फरवरी को दिल्ली के कोटला फिरोजशाह मैदान में आयोजित महर्षि दयानन्द बोधोत्सव दिवस समारोह में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने पंजाब में हो रहे नर-संहार पर गहरी चिन्ता प्रकट करते हुए कहा कि धर्म और सम्प्रदाय के नाम पर षड्यन्त्रकारी तत्वों द्वारा निर्दोष व्यक्तियों की निर्मम हत्याओं का यह सिलसिला राष्ट्र और समाज के लिए कलंक है। पंजाब में इस समय खून की होली खेली जा रही है। सारा राष्ट्र इस अशोभनीय और घृणित कार्य से स्तब्ध है। विदेशी सह पर अलगाववादी तत्त्व हत्या और लूटपाट का जो घिनौना कार्य कर रहे हैं, उससे हिन्दू और सिख सम्बन्धों पर गहरी चोट पहुंची है। ऐसे कार्यों की देश प्रेमी लोगों को कड़ी निन्दा करनी चाहिए और सरकार को इन गुण्डा तत्त्वों को पकड़-२ कर सख्ती से कुचल देना चाहिए।

श्री शालवाले ने विशाल जनसभा में अपील की कि इस वर्ष होली महोत्सव न मनाया जाए। पंजाब में खून बह रहा है, माताओं और बहिनों के माथे का सिंदूर धुल रहा है, बच्चों के साये उठ रहे हैं, ऐसी स्थिति में देश के दूसरे भागों में गुलाल व रंग की होली महोत्सव का आयोजन उचित नहीं।

आर्य विद्वानों से निवेदन

आर्य विद्वानों, लेखकों तथा कवि महानुभावों से प्रार्थना है कि सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ अपने खोजपूर्ण लेख तथा कविताएं आदि लिखकर भेजने की कृपा करें। लेख, सुलेख तथा वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार होने चाहिए।

सम्पादक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49. फ़ोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क १७ २८ मार्च १९८४ वार्षिक शुल्क १२) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्यसमाज स्थापना-अंक—

आर्यसमाज क्या है?

(स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

इस वर्ष २ अप्रैल को आर्यसमाज स्थापना दिवस आ रहा है अतः आर्यसमाज क्या है ? इस सम्बन्ध में एक लेखमाला आरम्भ की जा रही है। इसके लेखक आर्य जगत् के एक प्रमुख सन्यासी स्वामी वेदमुनि परिव्राजक हैं। आशा है सर्वहितकारी के पाठक इसको पढ़कर चिन्तन करेंगे। सम्पादक

किसी संस्था को समझने के लिए उसके संस्थापक को समझना अत्यावश्यक है। यही बात आर्यसमाज के विषय में भी चरितार्थ होती है। आर्यसमाज को समझना हो तो पहले आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती को समझना होगा। महर्षि दयानन्द को समझे बिना आर्यसमाज को नहीं समझा जा सकता।

महर्षि दयानन्द को समझने के लिए आवश्यक है उनके मन्तव्यों को समझना। किसी व्यक्ति को—चाहे वह साधारण हो अथवा असाधारण—तब तक नहीं समझा जा सकता, जब तक उसके मन्तव्यों को न समझ लिया जाय।

जिन महापुरुषों ने अपने पीछे अपना कुछ साहित्य छोड़ा है, उन्हें समझने के लिए उनके साहित्य का अध्ययन करना अत्यावश्यक है। उनके साहित्य में उनका दृष्टिकोण होता है और वह दृष्टिकोण उनके ग्रन्थों के अध्ययन से अध्ययन करने वाले को प्राप्त हो जाता है।

यदि किसी महापुरुष का साहित्य उपलब्ध न हो तो उसका जीवन चरित भी उस महापुरुष के मन्तव्यों की जानकारी करा देता है परन्तु तब—जब किसी निष्पक्ष लेखक के द्वारा वह लिखा गया हो। यदि किसी पक्षपाती तथा मतवादी स्वार्थी लेखक द्वारा वह लिखा गया है तो लेखक द्वारा स्व-मान्यताओं का मिश्रण कर दिया गया होगा तथा स्व-स्वार्थों की सिद्धि के लिए उसमें अनेक अनर्गल बातें भर दी गई होंगी। ऐसी स्थिति मे कभी कभी तो वास्तविकता का पता लगाना और तथ्यों को जानना तथा समझ पाना अत्यन्त कठिन हो जाता है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित के विषय में ऐसी बात नहीं है। एक तो उसका प्रारम्भिक कुछ अंश स्वय महर्षि द्वारा वर्णित है। दूसरे जो महर्षि चरित के सर्वप्रथम लेखक थे, वह न तो कभी महर्षि दयानन्द के सम्पर्क में आये थे और न उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज से उन का कोई सम्बन्ध था। सम्बन्ध तो क्या वह आर्यसमाज से परिचित तक भी नहीं थे और महर्षि दयानन्द के विषय में ही कुछ जानते थे।

महर्षि के देह-त्याग के पश्चात् श्री केशव चन्द्रसेन बंगाली से उन्हें महर्षि के विषय में, उनके व्यक्तित्व और कर्त्तव्य के विषय में कुछ जानकारी हुई, जिसे सुनकर उन्हें ऋषिवर के विषय में विशद जानकारी प्राप्त करने की धुन सवार हो गई। यह भी संयोग ही कहिये अथवा दैवयोग कि जिन केशव चन्द्रसेन ने उस व्यक्ति को ऋषि दयानन्द के विषय में जानकारी दी, वह भी आर्यसमाजी नहीं थे अपितु ब्राह्मसमाज के नेता थे। उस ब्रह्म समाज के नेता, जिसकी आलोचना महर्षि दयानन्द ने अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में की है।

ऋषि दयानन्द के जीवन की खोज में उस बंगाली युवक ने अपनी जीवनभर की अर्जित की हुई सम्पत्ति होम दी। जहां जहां ऋषि के जाने का और जिस जिस से भेंट व वार्ता होने का उसे पता चलता गया, वह युवक वहां-वहीं गया और उन लोगों से मिला, जिनसे महर्षि की भेंट और वार्तालाप हुआ था। इस प्रकार उसने तथ्यों की जानकारी प्राप्त कर ऋषिवर को जीवन-गाथा का सकलन किया। यद्यपि इस कार्य में उसके स्वास्थ्य का भी विनाश हो गया। जिस व्यक्ति ने अपना स्वास्थ्य और जीवन भर की कमाई इस कार्य के लिए होम दी, वह स्वार्थी तो हो ही नहीं सकता। ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज से उसका सम्बन्ध तो क्या परिचय भी नहीं था इसलिए पक्षपाती भी वह नहीं था। उस धुन के धनी युवक का नाम था देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय।

ऐसी स्थिति में—जब न तो लेखक का स्वार्थ हो और न उसके मन में पक्षपात हो—अपने चरित्र नामक के जीवन चरित में न तो वह अपनी मान्यतायें भर सकता है और न अनर्गल बातों का प्रवेश कर सकता है। वह तो सत्य का खोजी और तथ्यों का अन्वेषक होता है अतः वास्तविकता का ही वर्णन करता है। हां, कभी-कभी किसी व्यक्ति विशेष के द्वारा किसी बात को अपने स्वभाव के अनुसार बढा-चढा कर कहने के कारण कुछ भ्रान्तियां हो जाना सम्भव हो सकता है किन्तु ऐसी सम्भावनायें कम ही होती हैं और यदि कुछ हो भी जाये तो भी उनसे तथ्यों पर पर्दा नहीं पड़ सकता अपितु ध्यानपूर्वक आद्योपान्त पढ़ने से तथ्य उजागर हो ही जाता है।

इतने पर भी महर्षि दयानन्द का विपुल साहित्य उपलब्ध है, जिस का अधिकाश भाग उनके जीवनकाल में ही प्रकाशित हो चुका था। सहस्रशः पृष्ठों और विविध विषयों के अनेक ग्रन्थों के रूप में लिखे गये उनके साहित्य के अध्ययन से उनके मन्तव्यों का पता लग जाता है। उन मन्तव्यो के अनुसार ही आर्यसमाज का कार्यक्रम है। अभिप्राय यह है कि उन मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्यसमाज की स्थापना की थी। इस प्रकार से आर्यसमाज अपने संस्थापक महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार का संस्थान है और उसे इसी रूप में समझा जाना चाहिये। जो लोग आर्यसमाज को इस रूप मे नहीं समझते, वह भूल करते हैं—महती भूल—ऐसी भूल जो न तो उनके स्वयं के लिए हितकारक है और न मानव-समाज की हितसाधक।

यदि आर्यसमाज के सदस्य बन जाने वाले व्यक्ति भी इस भूल में हैं तो और भी खेदजनक बात है और साथ ही भय यह है कि आर्य समाज में ऐसे लोगों की संख्या-वृद्धि हो जाने से आर्यसमाज पथ भ्रष्ट हो जायेगा। वर्तमान समय में ऐसा परिलक्षित भी होने लगा है और उसका कारण भी उपर्युक्त प्रकार के सदस्यों की आर्यसमाज में भरती व संख्या वृद्धि होना ही है।

इस प्रकार के सदस्यों की संख्या-वृद्धि हो जाने से आर्यसमाजों की संख्या की वृद्धि भी हो जाएगी किन्तु वह ऋषि दयानन्द की आर्यसमाजें न होंगी। वह या तो मतवादियों की, साम्प्रदायिक दृष्टिकोण वालों की आर्यसमाजें होंगी और या फिर ऐसे लोगों की आर्यसमाजें होंगी-जिन्हें कहीं न कहीं, किसी न किसी प्रकार एकत्र होकर अपना समय बिताना था किसी अन्य नाम से न सही-आर्यसमाज के नाम से ही सही। एक क्षेत्र मिल गया, जन-सम्पर्क हुआ, जन-सहयोग भी मिला, नेतागिरी का मार्ग भी खुला और इस प्रकार व्यापक रूप में मन बहलाव होने लगा। न स्वयं के जीवन में सुधार आया और न स्व परिवार के-समाज सुधार की तो बात ही क्या कहनी।

आर्यसमाज क्लब नहीं है—

ऐसे लोग कहीं भी जायें। किसी भी संस्था में जायें। किसी भी नाम से संगठित हों। मन-बहलाव के साधनों तक ही सीमित रहते हैं। खेल, नाटक, भोज इत्यादि उनका मिशन होता है। उनके सामने न सिद्धांत होता है न तथ्यान्वेषण। न वह तथ्य और सिद्धान्त को जानते हैं और न जानना चाहते हैं। भोज अर्थात् खाने पीने के नाम पर धन वो वह बढ़-चढ़ कर देते हैं और इस कार्य के लिए परिश्रम भी करते हैं, फिर खाने-पीने में पीछे रहने का तो प्रश्न ही क्या।

सांस्कृतिक कार्यक्रमों के नाम पर आर्यसमाज मन्दिर में नाटकों और लड़कियों के नृत्यों के आयोजन भी बहुत बढ़चढ़ कर करते हैं और कराते हैं और आगे बढ़ें तो किसी राजनीतिक नेता का स्वागत समारोह समाज भवन में करा दिया, उसे मान-पत्र दे दिया और बस छुट्टी।

यह सब कार्य क्लबों के हैं, आर्यसमाजों के नहीं। इनसे आर्यसमाज का दूर का भी सम्बन्ध नहीं। यह सब कार्य उन्हीं लोगों के द्वारा होते हैं, जिन्होंने न तो ऋषि दयानन्द का जीवन चरित पढ़ा है और न उनके ग्रन्थों का अध्ययन किया है अर्थात् जिन्होंने ऋषिवर के मन्तव्यों को नहीं समझा। कहना यह चाहिये कि ऐसे लोग आर्यसमाज के सदस्य तो जिस किसी प्रकार बन गये किन्तु आर्यसमाजी नहीं बने। आर्यसमाज को केवल क्लब की भावना से ही स्वीकार किया और इसी भावना से उसके मञ्च का उपयोग करते हैं।

आर्यसमाज सम्प्रदाय नहीं है—

दूसरी प्रकार के लोग वह हैं, जो आर्यसमाज को एक सम्प्रदाय मात्र समझते हैं। इन्होंने भी न तो ऋषिवर दयानन्द का जीवन चरित पढ़ा और न उनके द्वारा लिखे हुए ग्रन्थ को ही पढ़ा। पढ़ना क्या। ऋषि के ग्रन्थ न देखे और न उन्हें यह पता कि उन्होंने कोई ग्रंथ लिखा है। कुछ को ऋषि के लिखने की जानकारी तो है किन्तु उनके मुख्य ग्रन्थों-संस्कार विधि और सत्यार्थप्रकाश के नाम तक ज्ञात नहीं।

ऐसे लोग आर्यसमाज को केवल हवन-सम्प्रदाय समझते हैं। नई दिल्ली में एक आर्यसमाज के कोषाध्यक्ष महोदय कहने लगे "स्वामी जी हम तो यज्ञ............।" मैंने उनकी बात को मध्य में ही काटकर कहा, "आप तो यज्ञ क्या, यज्ञ शब्द के अर्थ भी नहीं जानते। केवल घी-सामग्री जला लेने का नाम यज्ञ नहीं है।" भला जिसे यज्ञ शब्द के अर्थ नहीं आते वह यज्ञ कैसे हो सकता है। 'यजमानो वै यज्ञः' यजमान को यज्ञ होना ही चाहिये। परन्तु जो व्यक्ति यज्ञ शब्द के अर्थ तक नहीं जानता वह यज्ञ (अग्निहोत्र) की प्रक्रियाओं की संगति नहीं लगा सकता, उन्हें समझने और उनकी संगति लगाने की योग्यता से दूर; वह यज्ञ कैसे हो जायेगा। उसका जीवन यज्ञमय कदापि नहीं बन सकता। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक। वह यह समझता है कि आर्यसमाज हवन करने वालों का संगठन है और किसी प्रकार उसके मस्तिष्क में यह बात बैठ गई है कि हवन करना धर्म है और इसके करने से मोक्ष या स्वर्ग की अर्थात् परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है। बस वह हवन में श्रद्धा रखने लगा-वह श्रद्धा, जो वास्तव में नाममात्र की श्रद्धा है, पर वास्तव में श्रद्धा नहीं अपितु अन्धविश्वास है।

हवन करना श्रेष्ठ कर्म है—महान् श्रेष्ठ कर्म और तथ्य यह है कि हवन मानव मात्र के द्वारा किया जाना चाहिये। इससे सुगन्ध का प्रसारण और दुर्गन्ध का निवारण होकर न केवल मनुष्य जाति का अपितु प्राणिमात्र का लाभ और हित सिद्ध होता है। यह परोपकार का परमोत्कृष्ट साधन है। परन्तु सुगन्ध का प्रसारण तो अग्नि होत्र की क्रियाओं को बिना किये सुगन्धित द्रव्यों को जलाकर भी किया जा सकता है। जब सुगन्ध का प्रसारण होगा तो उसके परिणामस्वरूप दुर्गन्ध का निवारण भी हो ही जाएगा, परन्तु यज्ञ का एक अंश अर्थात् सुगन्धि फैलाने का यज्ञ (शुभ कर्म) हो जाएगा किन्तु यज्ञमय जीवन 'यजमानो वै यज्ञः' जो यज्ञ का वास्तविक लाभ है, वह नहीं हो पाएगा। साम्प्रदायिक भावना व अभिरुचि की पूर्ति भी हो जायगी—केवल घी सामग्री जलाने से न सही, साथ में वेदमन्त्रों को बोलकर सही—किन्तु धार्मिक जीवन नहीं बन पाएगा। वह तो तभी बनेगा, जब विधि पूर्वक यज्ञ करते हुए यज्ञ में प्रयुक्त मन्त्रों के अर्थों और प्रक्रियाओं को भी समझने का प्रयत्न किया जाएगा।

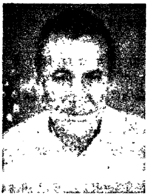
एक बात इस सन्दर्भ में ध्यान देने की यह है कि संन्यासी को यज्ञ से मुक्त रखा गया है। यज्ञ करना धर्म है तो संन्यासी को क्या धर्मात्मा नहीं होना चाहिए, परन्तु उसके कन्धे से तो यज्ञ का उपवीत (यज्ञोपवीत) भी संन्यास की दीक्षा के समय ही उतर वालिया जाता है। वास्तविकता यह है कि सन्ध्या और हवन (ब्रह्म यज्ञ और देव यज्ञ) बाह्य क्रम हैं। संन्यासी इन्हें पढ़ने के बाद ही बनता है। अब उसका जीवन यज्ञमय, परोपकार परायण बन गया है। अब उसे यह पाठ्यक्रम पढ़ने की आवश्यकता नहीं रही। अन्य लोगों को अभी इसे पढ़ना है। यदि साम्प्रदायिक भावना से यज्ञ किया जाता है तो विद्यार्थी इस पाठ्यक्रम को ठीक अर्थों में नहीं पढ़ पाता अतएव अनुत्तीर्ण रहता है। उपर्युक्त प्रकार की सूझ-बूझ और अभिरुचि वाले व्यक्ति सही अर्थों में आर्यसमाज को नहीं समझ पाते और अन्त तक साम्प्रदायिक कहिये या मतवादी ही बने रहते हैं।

एक बार पंजाब प्रदेश की एक आर्यसमाज के प्रधान ने आर्यसमाज भवन में दैनिक यज्ञ के प्रसंग में कहा कि 'यदि यहां आकर नित्य यज्ञ न करें तो आर्यसमाज बनाना ही व्यर्थ हुआ।' मैंने उनसे निवेदन किया कि यह आर्यसमाज नहीं है। वह बिगड़ कर बोले "मैं बाइस साल पाकिस्तान में (पाकिस्तान बनने से पहले उस क्षेत्र में जो पाकिस्तान में चला गया है) आर्यसमाज का प्रधान रहा हूं और अब छः वर्ष से यहां भी प्रधान हूं। मैं आर्यसमाज को नहीं समझता।" मैंने कहा 'मुझे तो आश्चर्य है कि आप २८ वर्ष आर्यसमाज के प्रधान रहकर यह भी नहीं जान सके कि आर्यसमाज किसे कहते हैं।'

जो व्यक्ति २८ वर्ष की लम्बी अवधि तक आर्यसमाज के प्रधान जैसे उत्तरदायी पद पर रहकर आर्यसमाज के अर्थ नहीं समझ सका और जिसे आर्यसमाज तथा आर्यसमाज मन्दिर का अन्तर ज्ञात नहीं, जो हवन को ही सन्ध्या समझता है, क्या वह आर्यसमाजी कहलाने का अधिकारी है? नहीं। कदापि नहीं। वह तो साम्प्रदायिक है, नितान्त साम्प्रदायिक और आर्यसमाज भवन में साम्प्रदायिक भावना से ही आकर दैनिक हवन में सम्मिलित होता है। वह आर्यसमाज के मन्तव्यों को समझने की योग्यता नहीं रखता, आर्यसमाज के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ऐसे व्यक्ति से कोई आशा रखना दुराशा मात्र है।

(क्रमशः)

श्री हरद्वारीलाल कुलपति महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक को हार्दिक धन्यवाद



चौ० हरद्वारीलाल जी

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के विद्वान् कुलपति श्री चौधरी हरद्वारीलाल का शिक्षण संस्थाओं से स्वाभाविक अनुराग है। वे दिनांक २१ फरवरी १९८४ को श्री चौ० रामेहर एडवोकेट की प्रेरणा पर उनके साथ हरयाणा प्रान्त की प्राचीन आर्ष शिक्षापद्धति की प्रसिद्ध शिक्षा संस्था गुरुकुल झज्जर (रोहतक) को देखने के लिए पधारे। इस अवसर पर गुरुकुल के कुलपति एवं सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी भी उपस्थित थे। गुरुकुल के मुख्याधिष्ठाता एवं आचार्य श्रद्धेय स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने गुरुकुल की यज्ञशाला, गोशाला, औषधालय (फार्मेसी), पुरातत्व विभाग, पुस्तकालय आदि सब विभाग दिखलाए और कुलपति ने बड़ी तत्परता से उन्हें देखा। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने आसन तथा मलखम्भ आदि की प्राचीन व्यायामकला का भी प्रदर्शन किया।

महाविद्यालय परिवार की सभा में कुलपति महोदय को एक मानपत्र दिया गया। ब्रह्मचारियों ने छान्दोमयी भाषा में स्तुतिपाठ भी किया। गुरुकुल के दो ब्रह्मचारी ऐसे हैं जिन्हें सम्पूर्ण यजुर्वेद व सामवेद कण्ठस्थ हैं। कुलपति महोदय ने स्वयं वेद-पुस्तक लेकर कण्ठस्थ वेदपाठ की परीक्षा ली। ब्रह्मचारियों ने परीक्षा में उत्तीर्ण होकर सबको आश्चर्य चकित कर दिया।

माननीय कुलपति ने अपने संक्षिप्त भाषण में कहा कि मुझे गुरुकुल में अब से बहुत दिन पहले आना चाहिए था। संस्कृत साहित्य और प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध में जितना कार्य यहां हो रहा है तथा हो सकता है उतना किसी विश्वविद्यालय में नहीं हो रहा। मेरी इच्छा है कि मैं यहां आकर कई दिन रहूं और गुरुकुल को भली भांति देखूं। आपने गुरुकुल की पाठविधि की मान्यता का भी आश्वासन दिया।

दिनांक २३ फरवरी १९८४ को श्री राममेहर जी एडवोकेट के नेतृत्व मे गुरुकुल का एक शिष्ट-मण्डल गुरुकुल की पाठविधि की मान्यता के सम्बन्ध में कुलपति महोदय से विश्वविद्यालय में मिला। जिसमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती, ब्र० रामकोर, वेदव्रत शास्त्री मन्त्री गुरुकुल झज्जर, सत्यवीर शास्त्री सदस्य एस० सी० महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, स्वामी वेदानन्द वेदवागीश प्रस्तोता श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ और इन पंक्तियों का लेखक (सुदर्शनदेव आचार्य) ये महानुभाव सम्मिलित थे। उपकुलपति ने शिष्टमण्डल से बड़े सम्मानपूर्वक विचार विमर्श किया और सुझाव दिया कि अच्छा यह रहेगा कि विश्वविद्यालय आपकी विद्यापीठ को मान्यता मात्र ही न दे अपितु अन्य शिक्षण-संस्थाओं के समान अपनी एक प्राचीन आर्ष पद्धति की सम्बद्ध शिक्षण-संस्था मान ले। इससे विश्वविद्यालय से प्राप्त होने वाली सब सुविधाएं आर्ष विद्यापीठ को मिलती रहेंगी। शिष्ट मण्डल ने कुलपति महोदय के इस महत्त्वपूर्ण सुझाव का हृदय से स्वागत किया और बहुत आभार अभिव्यक्त किया।

दिनांक ३ मार्च १९८४ को मान्य कुलपति महोदय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) के वार्षिक महोत्सव पर भी पधारे। १००० रुपये गुरुकुल को दान के साथ साथ श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ को विश्वविद्यालय रोहतक की एक सम्बद्ध संस्था बनाने की घोषणा की।

श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ कार्यालय गुरुकुल झज्जर (रोहतक) के अधीन भारत के विभिन्न प्रान्तों में बालक और बालिकाओं के २७ गुरुकुल चल रहे हैं। जिनमें प्राचीन आश्रम रीति एवं शिक्षा पद्धति से संस्कृत साहित्य, पाणिनीय व्याकरण, सम्पूर्ण महाभाष्य, वेद, दर्शन, उपनिषद्, इतिहास, भूगोल आदि विषय बड़ी योग्यता के साथ पढ़ाए जाते हैं। इन संस्थाओं के स्नातक और स्नातिकाएं भारत के एक विशेष प्रकार के नागरिक होते हैं जो आजीवन सभी प्रकार के व्यसनों से दूर रहकर राष्ट्र के उच्च चरित्र-निर्माण में अपना सर्वस्व लगाये रहते हैं।

श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ को केन्द्र तथा हरयाणा सरकार से अस्थायी मान्यता मिलती रहती थी। जिससे उक्त स्नातक और स्नातिकाओं को सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टि से एक दयनीय अवस्था में रहना पड़ता था। माननीय कुलपति ने इस समस्या का समाधान करके जहां विद्यापीठ के स्नातक और स्नातिकाओं को लाभान्वित किया है वहां महर्षि की पाठविधि के इस उच्चतम मान से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के नाम को भी सार्थक बनाया है। इस प्रशंसनीय कार्य के लिए कुलपति महोदय का जितना धन्यवाद किया जाए उतना थोड़ा है।

डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हरयाणा के आर्यसमाजों के नाम पत्र

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि गांव बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका खोला गया है जबकि गांव की पंचायत तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं ने इस शराब के ठेके को रद्द करवाने के लिए प्रस्ताव पास किया है और शिष्ट मण्डल सम्बन्धित अधिकारियों से भी मिला है परन्तु सरकार की ओर से अभी तक कोई भी कार्यवाही नहीं की गई।

शराब के ठेके के खुलने से गांव बालावास तथा उसके समीप के गांव कवारो, धनाना आदि में शराब की बिक्री तथा उसके प्रचार का बहुत बुरा प्रभाव पड़ रहा है और भ्रष्टाचार बढ़ रहा है।

आपसे निवेदन है कि इस ठेके के विरोध में अपने आर्यसमाज की ओर से प्रस्ताव पास करके निम्न स्थानों पर उनकी प्रतियां भेजने का कष्ट करें।

१- प्रधानमन्त्री, भारत सरकार, नई दिल्ली
२- मुख्य मन्त्री, हरयाणा सरकार, चण्डीगढ़
३। कराधान व आबकारी मन्त्री, हरयाणा सरकार, चण्डीगढ़
४- जिलाधीश, हिसार
५- मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

नोट—यदि किसी अन्य ग्राम में शराब का ठेका स्थानीय पंचायत के प्रस्ताव के विरुद्ध खुला हुआ हो तो उसे भी बन्द करवाने के लिए अपने आर्यसमाज का प्रस्ताव पास करके इसी प्रकार की प्रतियां ऊपर लिखित अधिकारियों को भेजने का कष्ट करें।

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक गुरुकुल कुरुक्षेत्र के उत्सव पर रविवार ८ अप्रैल को १ बजे होनी निश्चित हुई है। इस बैठक में महत्त्वपूर्ण विषयों पर विचार किया जाएगा।

सभा मन्त्री

सर्वहितकारी के पाठकों को सूचना

सर्वहितकारी के आगामी अंकों में "१०० वर्ष से पहले को" बात नामक शीर्षक से आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द सरस्वती से सम्बन्धित कुछ घटनाओं की झांकियां पाठकों की जानकारी के लिए प्रकाशित की जायेंगी।

सम्पादक

आर्यसमाज की गतिविधियां—

दोदूवा के मूलेजाटों द्वारा वैदिक धर्म की दीक्षा

ग्राम दोदूवा जिला सोनीपत में १२, १३ मार्च को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाज का प्रथम उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थी, भूतपूर्व इमाम बितिया (बिहार) श्री जयप्रकाश आर्य, सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी, भजनोपदेशक पं० हरिश्चन्द्र जी एवं पं० बिरन्जीलाल जी आदि विद्वानों ने वैदिक धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डाला है।

हिन्दू शुद्धि सीमित के प्रधान श्री ओमप्रकाश आर्य (समालखा) प्रचारमन्त्री स्वामी सेवानन्द जी कार्यकर्ता पं० चन्द्रस्वरूप टिटोली, श्री दीपचन्द पूर्व सरपंच सिनाना, श्री बलवन्तसिंह, महाशय पिरथीसिंह, प्रहलादसिंह आदि ने उत्सव को सफल करने के लिए बहुत परिश्रम किया। वैदिक धर्म प्रचार के प्रभाव के कारण इस ग्राम के ७५ मूलेजाट परिवारों के ५६७ सदस्यों ने स्वेच्छा से वैदिक धर्म ग्रहण करते हुए यज्ञ के अवसर पर यज्ञोपवीत धारण किया। ग्राम में प्रतिवर्ष वैदिक धर्म के प्रचारार्थ आर्यसमाज की स्थापना भी की गई।

स्मरण रहे इस ग्राम के अनेक जाट परिवारों ने औरंगजेब के समय में इस्लाम धर्म ग्रहण कर लिया था, परन्तु उन्होंने वैदिक धर्म की रीति रिवाजों को चालू रखा, परन्तु नामों में कुछ परिवर्तन हो गया था। वैदिक धर्म की दीक्षा लेने के पश्चात् उनके नामकरण निम्न प्रकार किये—

१. फता—फतेसिंह २. हुकमा—हुकमसिंह ३. कमरू—कंवरसिंह ४. अलीशेर—शेरसिंह .५. रामफल—रामफलसिंह ६. सुबा—सुबेसिंह ७. छोटा—छोटूराम ८. टेका—टेकराम ९ हुकमा—हुकमसिंह १०. सरफू—स्वरूपसिंह ११. कवरा—कवरसिंह १२. रतनू—रतनसिंह १३. सरीफ—स्वरूपसिंह १४. फतन—फतेहसिंह १५. कमरू—कंवलसिंह १६. सारजू—सूरतसिंह १७. जमालू—अजमेरसिंह १८. मांगा—मांगेराम १९. इंदू—जगदीश २०. असरफ—सूरतसिंह २१. फकीरा—फकीरसिंह २२. अलमू अलमसिंह २३. पाला—पालेराम २४. समा—समेसिंह २५. दीनू—दीनदयाल २६. मंगतू-मंगतराम २७. रकमू-रतनसिंह २८. ज्ञानी—ज्ञानीराम २९. यूसफ—भलेराम ३०. मेहरू—मेहरसिंह ३१—दीनू—दीनदयाल ३२. ईलाह—अमरसिंह ३३—कमरू—कंवलसिंह ३४. हुकमा—हुकमसिंह ३५ जेल—जिलेसिंह ३६. नूरा—नाहरसिंह ३७. नजरू—नजरसिंह ३८. ईलाहीबक्श—धनपतसिंह ३९. शेरू—शेरसिंह ४०. जमना—जमनादास ४१. मुन्शो—मुन्शीराम ४२. तारा—ताराचन्द ४३. होशियारा—होशियार सिंह ४४. कवरु—कवरसिंह ४५. भगत—भगतसिंह ४६ जबरा—चतरसिंह ४७ भरतू—भरतसिंह ४८. जिले—जिलेसिंह ४९. अमरू—अमरसिंह ५०. अलीमोहम्मद—लहरीसिंह ५१ फता—फतेहसिंह ५२. समा—समेसिंह ५३. सूबा—सूबेसिंह ५४. लुकमान—दलीपसिंह ५५. सूरजा—सूरजमल ५६. अमरू—अमरसिंह ५७. जीवनू—जीवनसिंह ५८. सूबा—सूबेसिंह ५९. नूरा—नरसिंह ६०. मामुदीन—मामन ६१- अमरदीन—अमर सिंह ६२- लहरो—लहरसिंह ६३- दरया—दरयावसिंह ६४- सूरता—सूरत सिंह ६५- धरमू—धर्मसिंह ६६- धरमा—धरमसिंह ६७- न्यादर—न्यादर सिंह ६८- खजाना—खजानसिंह ६९- चन्दरु—चन्द्रसिंह ७०- जिले—जिलेसिंह ७१- अलमू—गंगाराम ७२- लखमा—लखमीचन्द ७३- सूरता—सूरतमल ७४- टीका—टीकाराम ७५- कमरुदीन—कंवलसिंह।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

ग्राम बालावास में शराब का ठेका रद्द किया जावे

—डा० रणजीत सिंह

रोहतक २२ मार्च-आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के महामन्त्री डा० रणजीतसिंह जी ने ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका रद्द करवाने के लिए हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल जी को पत्र लिखा है और मांग की है कि ग्राम बालावास के अतिरिक्त ग्राम कंवारी नलवा, धमाना आदि गांवों की जनता ने यह ठेका तुरन्त समाप्त न होने पर भारी रोष प्रकट किया है क्योंकि इस प्रकार शराब की बिक्री से भ्रष्टाचार को प्रोत्साहन मिलता है।

डा० रणजीतसिंह जी ने मुख्यमन्त्री जी से आग्रह किया है कि वहां जनता की धार्मिक भावनाओं को दृष्टि में रखते हुए तथा उस क्षेत्र की नैतिक भलाई के लिए शराब के ठेके को तुरन्त रद्द करें ताकि जनता का रोष समाप्त हो सके।

अप्रैल मास में आर्यसमाजों के उत्सव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में अप्रैल मास में निम्नलिखित गुरुकुलों एवं आर्यसमाजों के उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार कार्यक्रम निश्चित हुआ है—

कन्या गुरुकुल मोरमाजरा जि० करनाल	३०-३१ मार्च १ अप्रैल
पुनाहाना जि० गुड़गांव	३०-३१ „ १ „
चरखी-दादरी जिला भिवानी	३०-३१ „ १ „
गोहना जिला सोनीपत	१ „
खेड़ी आसरा जिला रोहतक	२ से ५ „
ठोल जिला कुरुक्षेत्र	२ से ४ „
थानेसर जि० „	२ से ८ „
गुरुकुल कुरुक्षेत्र	७ से १० „
जगाधरी जिला अम्बाला	६-७-८ „
नरवाना जि० जीन्द	६-७-८ „
घरौण्डा जिला करनाल	६-७-८ „
नारंग जिला सिरमौर (हिमाचल प्रदेश)	१३ से १५ „
साबापुर जिला अम्बाला	१३ से १५ „
नई कालोनी गुड़गांव	२० से २२ „
सोनीपत शहर	२३ से २६ „

गुरुकुल गदपुरी का महोत्सव सम्पन्न

श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ गदपुरी जिला फरीदाबाद का ४७ वां वार्षिक महोत्सव ९-१०-११ मार्च ८४ को बड़ी धूमधाम के साथ समारोह पूर्वक मनाया गया। श्री बेगराज जी, श्री धर्मवीर जी वर्मा, श्री सहदेव बेधड़क, श्री तेजपालसिंह प्रचारक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के भजनों की धूम रही। सभा के भजनोपदेशक श्री तेजपालसिंह को जनता ने आग्रह पूर्वक सुना और तारीफ की। इसके लिए सभा भी बधाई की पात्र है।

—मुख्याधिष्ठाता

कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आर्यसमाज की धूम

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र द्वारा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में आर्यसमाज का प्रचार धूमधाम से चल रहा है। विधि विभाग के छात्रावास नरहरी छात्रावास तथा प्रताप छात्रावासों में प्रतिदिन रात्रि को तीन दिन तक जलसे किये गये। नौजवान आर्यसमाज का प्रचार सुनकर आर्यसमाज में आने को तड़प उठे। श्री मेहरसिंह ला. कालेज जगदीश बाक्सर, सतप्रकाश पहलवान, विजय शेर आदि के प्रयत्न तथा श्री धर्मदेव विद्यार्थी की प्रेरणा से ऐसा विशाल कार्यक्रम विश्वविद्यालय में मनाया गया। आचार्य देवव्रत जी ने भी युवाओं को आर्यसमाज में आने की प्रेरणा दी। रात के १ बजे तक खुले मैदान में युवाओं का ठाठे मारता समुद्र देखकर हृदय भावविभोर हुए बिना न रहेगा। यहां से योग शिविर में भारी संख्या में युवक भाग लेंगे। इसके अतिरिक्त कलाल माजरा, उमरी, पलवल, बोपुर, रामनगर खेड़ी, फतुहपुर तथा सिखों के गांव कम्बला में भी प्रचार किया गया है। सिखों ने प्रचार को उत्साह पूर्वक सुना तथा आर्यसमाज के सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम में श्री हरीपाल, हुकमसिंह, देवासिंह आदि का सहयोग सराहनीय रहा।

अकालियों की हरकतें सहन नहीं की जाएंगी

—चौधरी भजनलाल

नई दिल्ली, २५ मार्च (जनसत्ता) हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने पंजाब के अकाली नेताओं द्वारा संविधान की प्रतियां जलाए जाने की आलोचना करते हुए कहा कि देश उनकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को सहन नहीं करेगा। भजनलाल ने कहा कि अकाली नेता सीमा तथा जल विवाद को सम्मानजनक रूप से सुलझाने में कोई दिलचस्पी नहीं ले रहे। भजनलाल आज सर छोटूराम आर्य महाविद्यालय सोनीपत के दीक्षान्त समारोह में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा कि कुछ पड़ोसी देश और बड़ी ताकतें यहां अशांत वातावरण पैदा करने के लिए राष्ट्र विरोधी तत्वों को शह दे रही है। भजनलाल ने शान्ति प्रिय हरयाणावासियों से अपील की कि वे पंजाब में घट रही हिंसक घटनाओं से बचकर रहें क्योंकि राष्ट्र विरोधी तत्व हरयाणा में गड़बड़ी फैलाने चाहते हैं। उन्होंने कहा कि हरयाणा में गड़बड़ी करने नहीं दी जायेगी।

इससे पहले सोनीपत के सभी जाट शिक्षा संस्थाओं के प्रबन्धकों, छात्रों ने पंजाब के अकालियों और उग्रवादियों द्वारा लगातार धमकियों के बावजूद हरयाणा के हितों को सुरक्षित रखने का उल्लेखनीय सफलता के लिए मुख्यमन्त्री को बधाई दी।

मुख्य मन्त्री ने सर छोटूराम महाविद्यालय की कमजोर आर्थिक स्थिति को मद्देनजर रखते हुए ५ लाख रुपये का अनुदान देने की घोषणा की। उन्होंने स्नातकों को उपाधियां और छात्रों को पुरस्कार भी वितरित किए। (जनसत्ता से साभार)

श्री क्षेमचन्द्र सुमन एवं पं० विनयचन्द्र पद्मश्री से अलंकृत

सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार महाविद्यालय ज्वालापुर के स्नातक पं० क्षेमचन्द्र सुमन को राष्ट्रपति द्वारा पदमश्री से अलंकृत करने पर दिल्ली की चित्रकला संगम संस्था की ओर से कांस्टीट्यूशन क्लब के हाल में स्वागत किया गया। इस अवसर पर श्री सुमन ने हिन्दी के राष्ट्रीय स्वरूप का विशद वर्णन करते हुए आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती उनकी संस्था और अन्य प्रान्तों के मनीषियों द्वारा हिन्दी की सेवाओं का विशेष उल्लेख किया। श्री सुमन आर्यसमाज के सक्रिय कार्यकर्त्ता रहे हैं।

इसी प्रकार गांधर्व महाविद्यालय दिल्ली के संस्थापक एवं शास्त्रीय संगीत परम्परा के प्रतिष्ठापक पं० विनयचन्द्र मौद्गल्य को उनकी संगीत साधना व प्रचार के कार्यों के लिए संगम के प्रधान यशपाल जैन, सभाध्यक्ष कैप्टन भगवानसिंह आई० एस० ए० रिटायर्ड ने भूरि-२ प्रशंसा की।

हिन्दी पत्रकार ब्रह्मदत्त स्नातक ने भर्तृहरि द्वारा उक्त साहित्य संगीतकला के महत्त्व का उल्लेख करते हुए साहित्य व संगीत के प्रतीक दोनों सम्मानितों का त्रिवेणी कला संगम द्वारा कलापक्ष को जोड़कर सचमुच त्रिवेणी संगम के निर्माण को शुभसंयोग बताया।

पं० विनयचन्द्र गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा ले चुके हैं और स्वर्गीय पण्डित बुद्धदेव विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द) जी के लघुभ्राता एवं गुरुकुल के अंग्रेजी अध्यापक स्व० पण्डित रामचन्द्र के पुत्र हैं।

इस अवसर पर प्रख्यात आर्यसमाजी और राजनैतिक कार्यकर्त्ता स्व० लाला देशबन्धु गुप्त के पुत्र व अखिल भारतीय समाचार पत्र सम्पादक सम्मेलन के अध्यक्ष श्री विश्वबन्धु गुप्त को राज्यसभा का सदस्य बनने पर बधाई दी गई। उन्होंने दोनों विद्वानों को संगम की ओर से शाल एवं मयूराकृति की कलापूर्ण कृति भी भेंट की।

उपस्थित साहित्यकारों तथा प्रशासकों के जलपान के बाद कार्यवाही समाप्त हुई। इस प्रकार उस अवसर के सम्मानित तीनों व्यक्तियों का आर्यसमाज से गहरा सम्बन्ध रहा है।

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह के संयोजक श्री रामानन्द जी के अनुसार मई मास में होने वाली समारोह की तिथियां अब ६ से १४ अक्तूबर ८४ को निश्चित की गई हैं। उनका आर्यसमाजों से आग्रह है कि इन तिथियों में अपने उत्सव न रखें और इस समारोह में सम्मिलित होकर सहयोग प्रदान करें।

वैदिक यति मण्डल की हरयाणा में ऐतिहासिक पदयात्रा सम्पन्न

जैसा कि आप गतांक में सिलानी से मातनहेल तक का वर्णन पढ़ चुके। उसी प्रकार से यह पदयात्रा जब मातनहेल में पहुंची तो डाक्टर विजयकुमार, ईश्वरसिंह व महाशय जागेराम जी के सुपुत्र व अन्य बहुत से ग्रामवासियों ने इन पदयात्रियों का ग्राम से बाहर ही भव्य स्वागत किया और जयघोषों के साथ गांव की गलियों में प्रभात फेरी सी करते हुए म० सुखचैन जी नम्बरदार के घर पहुंचे जहां सबके ठहरने और भोजन का प्रबन्ध था। सायं कालीन सब नित्य कर्म करके ग्राम के मध्ये रात्रि १२ बजे तक प्रचार हुआ जिसे हजारों ग्रामवासियों ने बहुत ही पूर्वक सुना। रात्रि को शान्तिपाठ व जयकारों के साथ समाप्त हुई और सब शयन हेतु चले गये।

प्रातः नित्य कर्मों के पश्चात् गांव में प्रभात फेरी करते हुए सभा स्थल पर गये, जहां हवन, प्रचार और यज्ञोपवीत संस्कार हुए। ५५ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत (जनेऊ) लिए और ३०६) गुरुकुल हेतु दान प्राप्त हुआ। यज्ञोपरान्त भोजनादि करके ठीठ ग्राम में पहुँचे जहां मास्टर हरिसिंह जी आदि ने सबका स्वागत किया और प्रचार करवाया ५१) दान भी इस गांव से मिला। यहां के नर नारियों ने प्रचार बहुत ध्यान से सुना। यहां दो घण्टे प्रचार करके ग्राम मिलकपुर पहुंचे, जहां होशियारसिंह व मनफूलसिंह जी आदि ग्रामवासियों ने सबका स्वागत किया और दूध पिलाया तथा प्रचार भी करवाया गया और ५०) दान भी दिया गया। मिलकपुर से प्रचार करके ग्राम ईसलोटा में पहुंचे तो सैकड़ों लोगों ने इन पदयात्रियों का जय घोषों के साथ स्वागत किया व प्रचार सुना और दान भी दिया। यहां से प्रचार करके यह काफिला ग्राम स्वरूपगढ में श्री चौ० सुमेरसिंह जी आर्य के घर पहुंचा, जहां सबके ठहरने और भोजन का प्रबन्ध था। यहां भी रात्रि में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली पं० ईश्वरसिंह तूफान, महाशय प्यारे लाल तथा श्री जयपालसिंह जी के भजन व प्रचार १२ बजे तक होता रहा जिसे गांव वालों ने बहुत ही पसन्द किया। प्रातःकाल गांव के बीच में यज्ञ हुआ। यज्ञ के पश्चात् पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज का यज्ञ और यज्ञोपवीत की महत्ता पर बहुत ही प्रेरणादायक प्रवचन हुआ जिसके परिणाम स्वरूप १६० व्यक्तियों ने जनेऊ लिए, सबको एक-एक पुस्तक मुफ्त पढ़ने हेतु दी। यज्ञ, यज्ञोपवीत, भजन और उपदेश के पश्चात् श्री चौ० सुमेरसिंह जी आर्य जो गुरुकुल झज्जर के भूतपूर्व प्रधान हैं। उन्होंने १०००) दान स्वरूप यति मण्डल को दिये। श्री चौ० साहब ने दोनों समय सबको बहुत ही अच्छा भोजन कराया जिसमें खीर और हलवा था।

(क्रमशः)

कल्याण का मार्ग

आचार्य देवव्रत एम० ए०

(गतांक से आगे)

उद्योगिन पुरुषसिहमुपैति लक्ष्मी
दैवेन देयमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं विहाय कुरु पौरुषमात्मशक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यतिकोऽत्र दोषः॥
उद्यमः साहस धैर्य बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत्॥
काष्ठादग्निर्जायते मथ्यमानो भूमिस्तोयं खन्यमाना ददाति।
सोत्साहानां नास्त्यसाध्यं नराणां मार्गारब्धाः सर्वयत्नाः फलन्ति॥
उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः॥

संस्कृत के इन श्लोकों में उद्यम की महत्ता का सुन्दर चित्रण किया है।

उद्योग के द्वारा जिस उद्देश्य की ओर चलते हैं वह अवश्य प्राप्त होता है। जब हम भाग्य का रोना रोते हैं तो कर्त्तव्य को भूल जाते हैं। अपनी शक्ति को भी भुला देते हैं किन्तु कर्त्तव्यशील पुरुष पुरुषार्थ के आधार पर आगे ही बढता है। दैव को भुलाकर शक्ति का प्रयोग करो यही आदेश है। क्योंकि जब मनुष्य सत्य के पथ पर चलता है तो उसे सम्भालने वाला उद्यम होना चाहिये इसके अभाव में पतन अवश्यम्भावी है किन्तु उद्यम उसके पास ही रहता है जिसके पास ऋत हो। ऋत और सत्य संसार में प्रलय के उपरान्त (दोनों) साथ ही आये। प्रकृति का पहला परिणाम ही सत्य है। वह सत्व प्रधान तत्व होता है। उसी समय भगवान् का ज्ञान होता है। उसे ही वेदज्ञान कहते हैं, क्योंकि वहां से प्रकाश प्राप्त होता है। जब हम संशय से निर्णय अवस्था पर आते हैं उस समय ऋतंभरा प्रज्ञा उत्पन्न होती है। उसके द्वारा ही हम अपने पथ पर दृढ़ रह सकते हैं। उद्यम को कार्यशील बनाने के लिए तथा अपनाने की शक्ति प्राप्त करने के लिए ऋत का सहारा लेना पड़ता है क्योंकि ऋत के द्वारा विचार शीलता प्राप्त होती है। इसीलिए तो बृहत् के पश्चात् मन्त्र में ऋत की आवश्यकता बतलाई है।

मन्त्र आगे बतलाता है कि ऋत को प्राप्त करने के लिए उग्र की आवश्यकता है। उग्र कहते हैं उत्कट इच्छा को। उत्कट इच्छा ही ऋत की प्राप्ति का साधन है। महत्त्वकांक्षा इसी का दूसरा नाम है जिस राष्ट्र के नागरिकों में महत्त्वाकांक्षा का अभाव होता है वे प्रायः दूसरों के दास हो जाते हैं। उनमें दीनता एवं कायरता की भावना रहती है विजय उनसे कोसों दूर रहती है। वे अपने को दीन हीन ही समझे रहते हैं। जो व्यक्ति 'कार्यं वा साधयेयं शरीर वा पातेयेयं' के आदर्श को सम्मुख रखकर कार्य में जुटते हैं वे कठिनाईयों में भी विचलित नहीं होते। सफलता उसके चरणों को चूमा करती है। जब तक उत्कट भावना के द्वारा ध्येय के प्रति दृढता उत्पन्न नहीं की जाती तब तक हम ऋत के प्रकाश से दूर रहते हैं। हमें अन्धकार ही चारों ओर से घेरे रहता है। इसलिए ऋत के प्रकाश को प्राप्त करके उसे अपने समीप रखने के लिए उग्रता को धारण करना पड़ेगा। उग्रता से कठोरता का जन्म होता है और फिर इससे अडिग भावना का प्रादुर्भाव होता है। किन्तु उग्रता के फलस्वरूप कठोरता से क्रोध का भी जन्म होता है और यह उत्थान के स्थान में पतन का कारण बन जाता है। यहां ऐसी उग्रता अभिप्रेत नहीं; तभी तो मन्त्र मे उग्र के आगे 'दीक्षा' का विधान किया गया है। अपने ध्येय के प्रति अविचलित रहना ही उग्रता से तात्पर्य है। उत्कट इच्छा से ध्येय की प्राप्ति के लिए लगे रहना चाहिये।

सत्य का सुन्दर प्रकाश आंखों से देख लिया, उद्यम से प्राप्त करके आगे कदम बढ़ाया किसी प्रकार पथ से भटक न जाएं अतः वेदज्ञान की जाज्वल्यमान ज्योति को अपना प्रदर्शक बनाया और पथ पर दृढ रहने के लिए उग्रता को धारण किया तब वह दीक्षित हो जाता है। दीक्षा के अर्थ हैं व्रत को धारण करना। अध्ययन के लिए गुरु के समीप आकर उनके बताये आदेशों का पालन करना। देखी व सुनी हुई जीवन निर्माण की बातों को हृदय पर अंकित करना। दीक्षा प्राप्त करने के लिए उत्तम भावना से गुरु के समीप किसी आदेश पालन का व्रत लें। दीक्षा के बाद जिन नियमों के पालन का व्रत वह अग्नि को साक्षी करके समाज के सामने लेता है उनमें कठिनाई बहुत आती है। समाज मनुष्य को पीछे ढकेलता है। ऐसी स्थिति में यदि यह व्रत और नियमों पर अटल रहते हुए संसार के थपेड़ों को भी सहते हुए आगे ही बढता गया तो वह सफलता को वरण कर लेता है, इसलिए मन्त्र ने कहा कि उसके लिए तप करना पड़ेगा। तप के बहुत अंग हैं किन्तु जो विरोधी भावना आवें उन्हें झटक कर दूर किया जाए। विरोधी तत्वों के आने पर अपने स्थान से विचलित न हो, इसमें जो भी आपदायें एवं कष्ट आवें उन्हें सहन करे यही तो तप है। महर्षि का जीवन तप का ज्वलन्त उदाहरण है। भीष्म पितामह का जीवन भी यही उदाहरण प्रस्तुत करता है। राम और कृष्ण का जीवन भी तप के उदाहरणों से भरपूर है। तप ही मनुष्य को ध्येय तक पहुंचाने का साधन है। सफलता के अभिलाषी तप के क्षेत्र में अपने को पीछे नहीं हटाते, बल्कि उसके द्वारा अपने दोषों को भस्मसात कर लेते हैं किन्तु तप के लिए भी कोई सहारा चाहिये। हमारे सामने कोई मधुर फल दिखाई दे रहा हो जो तप के पश्चात् हमें मिलेगा। तभी हम तप के कठोर अनुष्ठान को महान् कष्ट सहकर भी पालन करने में दृढ रह सकते हैं। मन्त्र कहता है कि तप के अनुष्ठान के पश्चात् बड़ा ही मधुर फल खाने को मिलेगा, सारे कष्ट दूर हो जायेंगे और उसके खाने में जो आनन्द आएगा ऐसा आनन्द अन्यत्र मिलना असम्भव ही है व उस फल को प्राप्त करना ही मानव जीवन का परम उद्देश्य है। वह है ब्रह्म। उसकी प्राप्ति के पश्चात् कुछ प्राप्त करना शेष नहीं रहता। ब्रह्म की समीपता सारे कष्टों को दूरकर देती है एवं आनन्द से भरपूर कर देती है। मनुष्य ब्रह्म लोक का प्राणी बन जाता है किन्तु यह मधुर फल आकर फिर हम से पृथक् हो जाये तो हम जैसा अभागा कौन रहेगा। प्रायः मनुष्य सफलता प्राप्ति पर अभिमान से अन्धा हो जाता है और अपने कर्त्तव्यों को छोड़ देता है। यह कार्य हीनता ही उसके पतन का कारण होती है तभी तो मन्त्र ने आदेश दिया कि यज्ञ को न छोड़ो श्रेष्ठतम कार्यों का अनुष्ठान करते रहो तो फिर ब्रह्म से कभी अलग नहीं होना पड़ेगा। निष्काम भाव से परोपकार में रत रहना यही तो ब्रह्म की समीपता को चिरस्थायी बनाने का सुन्दर साधन है। मनुष्य के हृदय में प्राणिमात्र के लिए कल्याण की कामना होनी चाहिये। प्राणि मात्र की आत्मा में अपनी आत्मा को एवं अपनी आत्मा में प्राणिमात्र की आत्मा को अनुभव करके एक रसता एवं रूपता की भावना से अपना हृदय ओत-प्रोत कर ले तो वह ब्रह्म को साक्षात् अनुभव करेगा। इन गुणों के सहारे पृथ्वी टिकी हुई है। इन गुणों से भूषित व्यक्ति ही मातृभूमि के सच्चे सपूत होते हैं जो भूतकाल से प्रेरणा लेकर केवल वर्तमान का ही निर्माण नहीं करते बल्कि भविष्य की भी सुदृढ नींव रख देते हैं। अतः मातृभूमि की सच्ची सेवा के लिए हम मन्त्र में बतलाये गये गुणों को धारण करें तभी वह हमारे लिए विशाल लोकों का संपादन करेगी और वही हमारे भूत एवं भविष्य की स्वामिनी होगी।

राष्ट्र आज पुकार रहा है अपने सुपुत्रों को राष्ट्र द्रोहियों ने हमें ललकारा है। क्या हम उनकी चुनौतियों का उत्तर देने के लिए बलिदान के लिए तैयार हैं?

यदि हां तो फिर देरी किस लिये,
भारत के शेर क्यों करी देर, क्या होगा फेर,
जब लुट मिट जाओगे।

सर से कफन बांधकर वीरों रणभूमि में कूद पड़ो तभी राष्ट्र बच सकता है और यदि राष्ट्र नहीं बचा तो तुम्हारे लिए इस पृथ्वी पर कोई जगह नहीं।

स्वामी दयानन्द की नवीन जीवन गाथा

नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती

लेखक—डा० जयदत्त शास्त्री, प्राध्यापक संस्कृत विभाग, कुमाऊं विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा (उ० प्र०)

(गतांक से आगे)

स्वामी जी ने आर्यसमाज के संगठन को प्रजातन्त्र के जिन उदार मूल्यों पर स्थापित किया, वह भी उसकी लोकप्रियता का कारण बना। आर्य समाज के सम्पर्क में आने वालों ने अनुभव किया कि यहां न तो महन्तवाद है और न किसी प्रकार का गुरुडम। आर्यसमाज में व्यक्ति की स्वतन्त्रता तथा सामाजिक अनुशासन को समान महत्त्व दिया गया था। यहां तो वेद के उन सार्वभौम सार्वकालिक आदर्शों पर ही बल दिया जाता था, जो अतीत में सर्वमान्य रहे थे तथा जिनका परिपालन कर मनुष्य अपने वर्तमान को सुखद और भविष्य को अधिक गौरवमय बना सकता था। (पृष्ठ ३३३)

बंगाल में जन्म लेकर पल्लवित होने वाला ब्रह्मसमाज का नवोदय आन्दोलन जहां पश्चिमी शिक्षा तथा यूरोपीय संसर्ग की देन था, वहां दयानन्द का चिन्तन एवं कर्तृत्व विशुद्ध भारतीय मनीषा का वरदान था। (पृष्ठ ३३४)

स्वामी जी सामाजिक और राष्ट्रीय एकता के लिए धार्मिक एकता तथा उपासनागत ऐक्य को अत्यन्त आवश्यक समझते थे। उनका सुदृढ विचार था कि जब से बृहत्तर हिन्दू समाज में उपास्य देवों तथा उपासना प्रणालियों की अनेकता का सूत्रपात हुआ, उसी दिन से उसका सामाजिक संगठन भी छिन्न भिन्न होने लग गया था। वे धर्म और उपासना के क्षेत्र में भी एकता लाने के पक्षपाती थे। उन्हें इस बात को देखकर अत्यन्त पीड़ा होती थी कि हिन्दुओं का पूज्य और उपास्य न तो एक देवता है और न उपासना का साधन कोई एक मन्त्र या पद्धति। (पृष्ठ ३४३)

जिस मूला मिस्त्री के खेतों में शिविर स्थापित कर स्वामी जी अपना धर्म प्रचार कर रहे थे, उसने एक दिन महाराज से जिज्ञासावश पूछा कि मूर्तिपूजा के सम्बन्ध में उनके मन में इतना विरक्तिभाव कब और कैसे उत्पन्न हुआ तथा इस प्रथा के खण्डन के पीछे कौन कौन सी प्रेरणायें कार्य कर रही हैं। उत्तर में स्वामी जी ने स्पष्ट किया कि मैं तो प्रारम्भ से ही मूर्तिपूजा को पूर्ण पाखण्ड तथा ईश्वरोपासना के मार्ग में प्रबल बाधक मानता रहा हूं। किन्तु बाद में मैंने देखा कि मेरे गुरुवर दण्डी विरजानन्द भी इस पाखण्डपूर्ण पद्धति के कट्टर विरोधी हैं और यह आशा करते हैं कि उनका कोई योग्य शिष्य आगे जाकर जड़पूजा के अनाचार से देशवासियों को मुक्त करेगा, तो मैं इस आदेश का पालन हेतु कृतप्रतिज्ञ हुआ। (पृष्ठ ३५६)

दयानन्द ने राजस्थान प्रवास की योजना को एक विशिष्ट लक्ष्य की पूर्ति के लिए क्रियान्वित करना चाहा था। उनके जीवन का संध्या काल उपस्थित होने वाला है। वैदिक ज्योति को अशेष धरातल पर विकीर्ण करने वाला यह ज्योतिष्मान् मार्तण्ड अपने सम्पूर्ण ताप और उष्मा से वसुन्धरा को सुपुष्ट कर मानो अब कालरात्रि का ग्रास बनने ही जा रहा है। जीवन नाटक के इस अन्तिम अंक के लिए दयानन्द ने राजस्थान के रंगमंच को ही क्यों चुना? (पृष्ठ ४८३)

दयानन्द जानते थे कि इस्लाम और ईसाइयत के प्रचारक गण हिन्दू धर्म में प्रचलित रूढियों, अन्धविश्वासों तथा अनेक मूर्खतापूर्ण विधिविधानों की ओट में पिछड़े वर्ग के लोगों को मत परिवर्तन की प्रेरणा देते रहते हैं। उनका कहना था कि जो स्वयं कांच के घरों में निवास करते हैं, उन्हें दूसरों पर पत्थर फेंकने का क्या अधिकार है? इसी तथ्य को लक्ष्य में रखकर उन्होंने ईसाइयत एव इस्लाम की तथ्यपूर्ण आलोचना की, मानो संकेत कर दिया कि उनकी स्थिति भी हिन्दू धर्म के उन अनुयायियों से किसी भी प्रकार भिन्न नहीं है, जो अपनी कमजोरियों के कारण पादरियों और मौलवियों की आलोचना के शिकार बनते हैं। (पृष्ठ ५६५)

उपासना, धर्म अध्यात्म एवं दर्शन के क्षेत्र में दयानन्द की सर्वोपरि देन तो यही है कि वे पुरातन विश्वासों, धारणाओं तथा पद्धतियों से केवल इसीलिए चिपटे रहने का उपदेश नहीं देते कि ये प्राचीन हैं; अतः हमारे लिए मान्य तथा आचरणीय हैं। वे मनुष्य के विवेक को जागृत करना चाहते हैं जिन वेदों को सर्वोपरि प्रमाण मानने के लिए उन्हें दोषी ठहराया जाता है, उन वेदों के प्रति भी वे मानवजाति का विश्वास इसीलिए जगाना चाहते है, क्योंकि दयानन्द वेदों को पूर्णतया बुद्धिसगत, तर्कयुक्त एव सृष्टि रचना के शाश्वत नियमों के सर्वथा अनुकूल मानते हैं। (पृष्ठ ५९८)

इस प्रकार महर्षि दयानन्द के न केवल जीवनकृत अपितु मान्य सिद्धान्तों का भी सुन्दर विश्लेषण डा० भवानीलाल जी की लेखनी से हुआ, जो उनकी परिष्कृत बुद्धि का परिचायक है। यह ग्रन्थ विद्यालयों और पुस्तकालयों मे अवश्य क्रय करने योग्य है। निश्चय ही इसको पढ़ने वाला आधुनिक काल के एक अद्भुत और अनुपम वेदज्ञ, लोककल्याणार्थ सन्यासी के उदात्त जीवन से प्रेरणा पाकर स्व-पर-कल्याण में प्रवृत्त होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

आर्य विद्वानों से निवेदन

आर्य विद्वानों, लेखकों तथा कवि महानुभावों से प्रार्थना है कि सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ अपने खोजपूर्ण लेख तथा कविताएं आदि लिखकर भेजने की कृपा करें। लेख, सुलेख तथा वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार होने चाहिए।

सम्पादक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक



होलिकोत्सव महायज्ञ का विकृत रूप है

–स्वामी ओमानन्द

उज्जैन। वर्तमान परिवेश में होलिकोत्सव हमें प्राचीन वैदिककाल की स्मृति कराता है जबकि यज्ञ प्रधान संस्कृति हुआ करती थी और वर्ष के अन्त में आल्हादकारक वातावरण के मध्य में महायज्ञ का आयोजन किया जाता था। ये विचार प्रकट करते हुए आर्यसमाज जालंधर के पुरोहित प० उमेशकुमार शास्त्री ने होलिकोत्सव पर आयोजित नव सत्येष्टि यज्ञ के अवसर पर प्रकट किए।

प० शास्त्री ने आगे बताया कि प्रारंभ से ही आर्य संस्कृति में यह परम्परा चली आ रही है कि शुभ कार्यों के अवसर पर यज्ञ किया जावे। वर्ष के अन्त में इस प्रकार के महायज्ञ प्रत्येक क्षेत्र में आयोजित किए जाते रहे हैं जिनमें मोहल्ले भर के व्यक्ति यज्ञ में आहुति प्रदान करते थे। इन्हीं विचारों को आगे बढाते हुए हरयाणा से पधारे स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने बताया कि आजकल होलिकोत्सव पर किये जाने वाले आयोजन महायज्ञ के स्वरूप के मात्र द्योतक हो रह गए हैं। यज्ञ में मंत्रों के द्वारा आहुति प्रदान की जाती है किन्तु आजकल का होलिकोत्सव कार्यक्रम भाव कार्य रह गया है वह भी मन्त्र विहीन। जिस कार्य में व्यवस्थित मनन या विचार न हो वह कार्य फलदायी नहीं होता है। जैसा कि बताया जा चुका है कि यज्ञ आदि कार्य सुख व दुःख दोनों ही अवसरों पर किए जाते हैं। किन्तु होलिकोत्सव में वर्तमान समय में विकृत रूप दीख पड़ता है जो कि दुर्भाग्यपूर्ण है। कार्यक्रम का उपसंहार करते हुए श्री ओमप्रकाश अग्रवाल ने नव सस्येष्टि यज्ञ की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व प्राकृतिक गतिविधियों से जुड़ा हुआ है। हमारे देश में वर्ष भर में दो फसलें मुख्य होती हैं जिसमें गेहूँ व चने की फसल मुख्य है। सर्वप्रथम यज्ञ जैसे परहितकारी कार्य में अन्न समर्पित किए जाने की परम्परा रही है। तब ही तो अब भी गेहूँ व चने (होले) इस महायज्ञ की अग्नि में समर्पित किए जाते हैं। नवान्न समर्पित करके ही उसका उपयोग किया जाता था।

श्री अग्रवाल ने आगे बताया कि राग रंग के इस आल्हादकारी पर्व का आज स्वरूप एकदम घटिया स्तर का हो गया है। आज पंजाब में रंग की होली के बजाय खून की वीभत्स होली खेली जा रही है जो कि महान् दुःख की बात है।

पंजाब की घटनाओं ने आज देश के समक्ष चिंतनीय प्रश्न उत्पन्न कर दिया है। कई निर्दोषों की जानें इस खून की होली में जा रही हैं। इस ओर आत्मावलोचन अत्यन्त आवश्यक है। इस आल्हाद के अवसर पर हमारे सामने दुःखद समस्या खड़ी हुई है। रागरंग का प्रयोग इस वर्ष हमें न करते हुए इस ज्वलन्त समस्या पर विचार करते हुए रंग न खेलना चाहिये।

आर्यसमाज मन्दिर उज्जैन में ये व्याख्यान होलिकोत्सव पर आयोजित नव सस्येष्टि यज्ञ के अवसर पर दिनांक १६-३-८४ को प्रातःकाल हुए।

डा० मणीन्द्रकुमार

दिल्ली में महात्मा हंसराज दिवस

महात्मा हंसराज दिवस हर साल समस्त आर्य जनता की ओर से मनाया जाता है। यह इस वर्ष १५ अप्रैल को मनाया जाना था, पर अब वह किन्हीं विशेष कारणों से २२ अप्रैल रविवार को प्रातः १० से १२ बजे तक तालकटोरा गार्डन के इंडोर स्टेडियम में मनाया जाएगा। उस प्रातःकाल १० बजे तालकटोरा गार्डन के इंडोर स्टेडियम में अवश्य पहुंचने की कृपा करें।

रामनाथ सहगल



आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० सं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क १८ ७ अप्रैल १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

श्री रामनवमी वा श्री रामजयन्ती
चैत्र सुदी नवमी

जय जय मर्यादापुरुषोत्तम धर्म धुरन्धर।
जय जय एकादर्श भूमिपति महावीर वर॥
नाशन म्लेच्छाचार दलन दल प्रबल निशाचार।
करन यथोचित प्रजा प्रचारन दरन दुःख उर॥
(पं० बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमघन' कृत)

भारतीय इतिवृत्त के इस निशाकाल के तिमिरावृत नभोमण्डल में कई ऐसी ज्योतियां जगमगा रही हैं, जो इस संसार मरुस्थली के मार्गभ्रष्ट पथिकों को पथप्रदर्शन करके अपनी जीवनयात्रा को पूरी करने में सहायता देती रहती हैं परन्तु उन में इक्ष्वाकु कुल-कुमुदचन्द्र श्री रामचन्द्र जी का सर्वोत्कृष्ट-समुज्ज्वल प्रकाश ही इस कड़ी मंजिल को अन्त तक पहुंचाने या पूरी करने में सहायक और सबसे बढ़कर पथप्रदर्शक है। यूं तो इस चमकती हुई ताराओं की संख्या संख्यातीत है, पर उनमें सर्वनयनाभिराम श्री रामचन्द्र जी का प्रकृष्ट प्रकाश ही सर्वातिशायी और सर्वव्यापी है। यदि इस घनघोर अन्धियारी रात्रि में जगद्वन्द्य श्री राम के आदर्श जीवन की जाज्वल्यमान शीतल किरणावली का प्रकाश प्रसार न पाता, तो भारतीय यात्री का कहीं ठिकाना न था। इस सूचिभेद्य अन्धकार में उनको न जाने कहां से कहां भटकना पड़ता।

इस समय भारत के शृंखलाबद्ध इतिहास की अप्राप्यता में यदि भारतीय अपना मस्तक समुन्नत जातियों के समक्ष ऊंचा उठाकर चल सकते हैं, तो महात्मा राम के आदर्श चरित की विद्यमानता में। यदि प्राचीनतम ऐतिहासिक जाति होने का गौरव उनको प्राप्त है, तो सूर्य-कुल-कमल-दिवाकर राम की अनुकरणीय पावनी जीवनी की प्रस्तुति से। यदि भारताभिजनों को धार्मिक सत्यवक्ता, सत्यसन्ध, धर्म और कृतज्ञ होने का अभिमान है, तो प्राचीन भारत के धर्मप्राण तथा गौरवसर्वस्व श्रीराम के पवित्र चरित्र की विराजमानता से।

यदि पूर्ण परिश्रम से संसार के समस्त स्मरणीय जनों की जीवनियां एकत्र की जायें तो हमको उनमें से किसी एक जीवनी में वह सर्वगुणराशि एकत्र न मिल सकेगी, जिससे सर्वगुणागार श्रीराम का जीवन भरपूर है। आज हमारे पास भगवान् रामचन्द्र का ही एक ऐसा आदर्श चरित्र उपस्थित है जो अन्य महात्माओं के बचे बचाये उपलब्ध चरित्रों से सर्वश्रेष्ठ और सबसे बढ़कर शिक्षाप्रद है। वस्तुतः श्रीराम का जीवन सर्वमर्यादाओं का ऐसा उत्तम आदर्श है कि मर्यादापुरुषोत्तम की उपाधि केवल उनके लिए रूढ़ हो गई है। जब किसी को सुराज्य का उदाहरण देना होता है तो 'रामराज्य' का प्रयोग किया जाता है।

केवल लोकमर्यादा की अक्षुण्ण स्थिति बनी रखने के लिए निष्काम कर्म करते रहने के वैदिक धर्म के सिद्धान्त का पूर्णरूप से पालन करके प्रातः स्मरणीय श्री रामचन्द्र ने ही दिखलाया था।

आहूतस्याभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।
न मया लक्षितस्तस्य स्वल्पोऽप्याकारविभ्रमः॥
(वाल्मीकिरामायण)

अर्थ—'राज्याभिषेकार्थ बुलाये हुए और वन के लिए विदा किए हुए रामचन्द्र के मुख के आकार में मैंने कुछ भी अन्तर नहीं देखा।' आदिकवि वाल्मीकि का यह शब्द चित्र निष्काम कर्मवीर श्री रामचन्द्र जी का ही यथार्थ चित्र था। वास्तव में वह स्वकुलदीपक, मातृमोदवर्द्धक तथा पितृनिदेशपालक पुत्र; एकपत्नीव्रतनिरत, प्राणप्रियाभार्यासखा, सुहृद्दुःखविमोचक मित्र, लोकसंग्राहक, प्रजापालक, नरेश, सन्तानवत्सलपिता और संसार-मर्यादाव्यवस्थापक, परोपकारक; पुरुषरत्न का एकत्र एकीकृत सन्निवेश, सूर्यवंश प्रभाकर, कौसल्योल्लासकारक, दशरथानन्दवर्धन, जानकी जीवन सुग्रीवसुहृद्, अखिलार्थनिषेवितपादपद्म, साकेताधीश्वर, महाराजाधिराज, भगवान् रामचन्द्र में ही पाया जाता है।

दक्षिणापथ के सुदूरवर्ती, अविद्यान्धकारपूर्ण महाकान्तार में वैदिक आर्य सभ्यता का प्रकाश प्राधान्येन सर्वप्रथम लोकदिग्विजयी श्री राम ने ही पहुँचाया था। यद्यपि इससे पूर्व अगस्त्य ऋषि ने वैदिक सभ्यता के आलोक को दक्षिण में फैलाने का यत्न किया था परन्तु उसको उससे पूर्ण आलोकित सूर्यकुल-रविराम ने ही कहा था। महाराज रामचन्द्र के दक्षिणविजय से पूर्व विन्ध्याचल पार का महाकान्तार इन्द्रियलोलुप, अनेक कदाचारदत्तचित्त, नररक्त-पिपासु राक्षसों का लीलानिकेतन बना हुआ था, उनमें सर्वत्र उन्हीं का एकाधिपत्य वर्तमान था, वा यत्र-तत्र (कहीं कहीं) वानर वंश के एक-दो छोटे राज्य विद्यमान थे। इन्हीं वानरों का एक राज्य पम्पापुरी (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी के उद्गम स्थान पर चन्द्रदुर्ग के निकट) में वानरराज बाली की अध्यक्षता में उपस्थित था। परन्तु उसके राज-परिवार में धर्मपराङ्मुखता के कारण धन कलत्र को लक्ष्य करके गृह-कलह मचा हुआ था और उसके फलस्वरूप वानरराज बाली का कनिष्ठ भ्राता सुग्रीव अपने मित्र हनुमान के साथ अपने ज्येष्ठ भ्राता से भयहोकर ऋष्यमूक (वर्तमान मैसूर राज्य में उत्तरीय पेनर नदी का उद्गम स्थान चन्द्रदुर्ग पर्वत) पर जा छिपा था। इन्हीं वानरों और राक्षसों को वाल्मीकि रामायण के अन्तिम आधुनिक संस्करण में अलौकिक योनि राक्षस तथा ऋक्ष (रीछ) बतलाया गया है और उनके आकारों को असाधारण और भयंकर चित्रित किया गया है।

श्री रामचन्द्र ने पितृ आज्ञा को शिर धरकर अयोध्या के महासाम्राज्य को त्यागकर और इसी महाकांतार दण्डकारण्य में निर्वासित होकर अपने प्रेम और सदुपदेश से उक्त वानर जाति को अपना मित्र बनाया और सुग्रीव से सौहार्द की स्थापना करके उसके धनकलत्रापहारी भ्राता बाली को मारकर उसका राज्य सुग्रीव को दिया था। अत्याचारी राक्षसों के दमन के लिए महावीर हनुमान के सेनापतित्व में उन्हीं वानरों की अपनी संगठन शक्ति से प्रबल और सुशिक्षित सेना सन्नद्ध की। उसी सेना की सहायता से लंकाद्वीप के अतुल बलशाली तथा महा पराक्रमी राक्षस जाति के साम्राज्य का उसके अधीश्वर प्रबल प्रतापी अनाचारी रावणसहित विध्वंस किया किन्तु श्री रामचन्द्र सदृश और दिग्विजेता का विजय साम्राज्य विस्तार वा सम्पत्तिसञ्चालनार्थ नहीं था। उन्होंने विजित प्रदेश में धर्म की विजय-वैजयन्ती उड़ाकर भूतपूर्व लंकेश्वर रावण के स्थान में उसके अनुज, धर्मपरायण विभीषण को ही प्रजा पालनार्थ अभिषिक्त कर दिया। इस प्रकार दक्षिण पथ में आर्य सभ्यता का प्रसार करके अपनी वनवास यात्रा की अवधि पूर्ण होने पर श्री रामचन्द्र जी अपनी पैतृक राजधानी अयोध्या में लौट आए और स्वपितृपरम्परागत साकेत राज्य के सिंहासन पर अभिषिक्त होकर यावज्जीवन नृपति-धर्म का पालन करते रहे।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

आर्यसमाज स्थापना-दिवस—

आर्यसमाज क्या है?

(स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, अध्यक्ष—वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उत्तर प्रदेश)

[गतांक से आगे]

मेरा अभिप्राय कदापि नहीं है कि आर्यसमाज मन्दिर में यज्ञ न किया जाए किन्तु मैं यह कहना चाहता हूँ कि आर्यसमाज मन्दिर आर्य समाज नामक संस्था कार्यालय है, आर्यसमाजियों का सभा भवन है। घर में तो यज्ञ किया न जाय—जिसका स्वयं आर्यसमाज के संस्थापक ऋषिवर दयानन्द ने 'पञ्च महायज्ञ विधि, संस्कार विधि, सत्यार्थप्रकाश और ऋग्वेदादि भाष्यभूमिका' में वर्णन व विधान किया है—आर्यसमाज मन्दिर में आकर यज्ञ कर लिया जाए। क्या यह ऋषिवर दयानन्द के विधान के विरुद्ध नितान्त साम्प्रदायिक भावना नहीं है और क्या यह ऋषि दयानन्द के दृष्टिकोण (अन्ध-परम्परा के खण्डन) के विरुद्ध उलटा उस ऋषि के ही विधान में "काबे में कुफ्र" के समान अन्ध-परम्परा चलाना नहीं है और क्या इस प्रकार की भावना, अभिरुचि और दृष्टिकोण रखने वाले लोग आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी हैं?

वास्तविकता यह है कि आर्यसमाजी बनने वाले लोग पौराणिक घरों से ही आते हैं। उनके वही अन्ध-परम्परा वाले अन्ध-विश्वासी संस्कार होते हैं। यदि आर्यसमाज में प्रवेश के समय ही उन्हें महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन चरित अथवा वैचारिक क्रान्ति का स्रोत उनका सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश पढ़ने को मिल जाता या फिर जो सत्यार्थप्रकाश को पढ़कर ही आर्यसमाजी बनते हैं तो उनके अन्ध-विश्वासी संस्कार समाप्त हो जाते हैं और वह अन्ध परम्पराओं से सर्वथा मुक्त हो जाते हैं।

इसका कारण यह है कि वह महर्षि के दृष्टिकोण और आर्यसमाज को समझ गये होते हैं। ऐसे लोग कहीं भी जाएं, किसी भी क्षेत्र में रहें—वह न तो कभी अन्ध-विश्वासों में फंसते हैं और न किसी के कहने से बहकते हैं। वास्तविक अर्थों में वही आर्यसमाजी कहलाने के अधिकारी होते हैं।

आर्यसमाज सभी का हितैषी है।

जो लोग आर्यसमाजी नहीं बने हैं, वह आर्य समाज को अपना विरोधी समझते हैं। चाहे वह हिन्दू हों अथवा मुसलमान, ईसाई हों, जैनी हों, सिख, पारसी आदि कोई भी हों। परन्तु इसमें लेशमात्र भी सत्यता नहीं है। सत्य तो यह है कि आर्यसमाज सभी लोगों का, समस्त संसार का, विश्व ब्रह्माण्ड का और न केवल मनुष्यमात्र का अपितु प्राणिमात्र का हितैषी है।

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में "संसार का उपकार करना इस संस्था का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।"

विज्ञ पाठक विचार करें कि संसार का उपकार करना जिस संस्था का मुख्य उद्देश्य है, वह संसार की हितैषी हुई अथवा नहीं और फिर संसार के उपकार की बात कहना एक अलग बात है किन्तु उपकार कैसे हो सकता है; यह दूसरी बात है। आर्यसमाज के स्वनाम धन्य संस्थापक ने तो संसार के उपकार का अर्थात् उपकार के सूत्र भी आर्यसमाज के उपर्युक्त नियम में ही बता दिये हैं।

प्रथम सूत्र है शारीरिक उन्नति करना। शारीरिक से अभिप्राय है स्वास्थ्य सम्बन्धी। आर्यसमाज गुरुकुल शिक्षा पद्धति द्वारा बालकों से ब्रह्मचर्य का पालन कराके और जीवन में संयम पूर्वक रहने के संस्कार डालकर शारीरिक उन्नति का सूत्र लागू करना चाहता है। इस प्रकार से शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट मानवों का निर्माण होगा। स्वस्थ मानव सन्तानोत्पत्ति करने और वह भी स्वस्थ सन्तान की उत्पत्ति करने में समर्थ होता है।

इस नियम का दूसरा सूत्र है आत्मिक उन्नति करना। गुरुकुलीय शिक्षा के द्वारा बालक-बालिकाओं में आध्यात्मिक भूख जागृत की जाती है। उन्हें ईश्वर का ध्यान अर्थात् सन्ध्या करनी सिखाई जाती है और वास्तविक स्वरूप की जानकारी कराई जाती है।

महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज के दूसरे नियम में परमात्मा के स्वरूप की संक्षिप्त जानकारी करा दी है, वह नियम निम्नलिखित हैं-

ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामि, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्त्ता है, उसी की उपासना करनी योग्य है।

विश्व मानवता परमात्मा के नाम पर भटक रही है। ऋषि दयानन्द के उक्त नियम में बताया है कि वह सत्-चित्-आनन्द स्वरूप है। सत् वह सदा रहता है और उसमें कभी कोई परिवर्तन नहीं होता तथा वह चित्-चेतन है, ज्ञानी है और आनन्दमय है अथवा वह परमपिता परमात्मा स्वयं केवल सदा रहने से ही सत् नहीं है अपितु उसका स्वरूप भी सत्—सदा एक जैसा, एक रस रहने वाला है, अपरिणामी है, अपरिवर्तनशील है, वह चेतन है, उसकी चेतना सर्वज्ञानमय है अथवा उसमें प्रत्येक विषय का सर्वांगपूर्ण ज्ञान निहित है। उसे कभी भी, किसी काल में कदापि भी और किसी भी प्रकार की आधि तथा व्याधि दुःख तथा क्लेश नहीं प्राप्त होते। वह जिस प्रकार स्वरूप से सत् और स्वरूप चित् है, उसी प्रकार स्वरूप से ही आनन्द है, आनन्दस्वरूप है। आनन्द का जहां तक प्रश्न है वह देखने (दर्शन करने) की नहीं अपितु समझने तथा अनुभव करने की वस्तु है अतएव उसके दर्शन का नहीं, उसे समझने और उसकी अनुभूति करने का प्रयत्न करना चाहिए। यह अनुभूति नेत्रों का नहीं—मन का विषय है अत- आनन्दानुभूति मन में ही होती है। नेत्र आदि इन्द्रियां इसका प्रत्यक्ष नहीं कर पाती।

उक्त नियम में दूसरी बात बताई है परमात्मा के निराकार होने की। निराकार (निः—आकार) आकार रहित अथवा जिसका कोई आकार, कोई डील-डौल न हो और डील-डौल न होगा तब—जब शरीर न होगा। इसका अर्थ यह है कि वह शरीरधारी नहीं है। जब वह शरीरधारी नहीं है अथवा उसकी कोई आकृति नहीं है तो उसकी कोई मूर्ति भी नहीं बनाई जा सकती। इससे यह सिद्ध हुआ कि उसकी मूर्ति बनाना नासमझी है अतएव मूर्तिपूजा निरथक है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

बर्सियां बरस रही हैं, इन्हें रोको

वियुक्त (बिछुड़ी हुई) आत्माओं की बर्सी मना लेना एक नई अनुचित प्रथा (कुरीति) बढ़ती जा रही है। आर्यसमाज ने महर्षि के आदेश पर श्राद्ध थाम लिए थे, पर अब नई रूपरेखा श्राद्धों की तरह खेल खेल रही है। खासतौर पर आर्यसमाजों के लोकल प्रतिनिधि अपना नाम कमाने हेतु यह रस्म पूरी कर रहे हैं। आर्यसमाजों के पुरोहित यज्ञ करा रहे हैं। श्राद्धों की तरह भोज 'आर्य' शब्द वाले पथ के अग्रणी स्वयं हवन कराते हैं। दक्षिणा चलती है। दान भी दिये जाते हैं। जिस कुप्रथा को महर्षि ने मनसा-वाचा-कर्मणा पूरी शक्ति से दबोचा था, वह कुरीति फिर सिर उठा रही है। जात-पात का नया रूप निकला। जातियां उपजातियां बरसाती कीड़े-मकोड़ों की भांति बढ़ गई हैं। 'आर्य' शब्द भी सम्प्रदाय के स्थान पर व्यक्ति की एक निशानी बन गया था। जिन हालात ने महर्षि को 'पाखण्ड-खण्डिनी' पताका उठाने को विवश किया था, वह नई रूपरेखा तथा नये नाम में उभर रही है। उस समय के बखिड़े समाज की अवनति तथा अधोगति के उत्तरदायी ठहराए गए थे। अब वही कुप्रथाएं, फैशन नए रङ्ग में फिर हिन्दू-समाज को, आर्यों को भ्रान्ति में डाले जा रहा है।

अतः आवश्यकता है इस बात की, कि आर्य मञ्चों पर, सत्संगों, उत्सवों में इन रोगों—कुरीतियों का समूलोन्मूलन करने का भरसक प्रयत्न किया जाए। ऐसी कुप्रथाओं के प्रणेताओं के इरादों को पस्त (गिराया हीन) किया जाए। जुल्म यह है कि प्रधान-प्रधानाएं स्वयं अपने सम्बन्धियों की बर्सियां मनाने में उत्सुक यहां तक कि आर्यसमाज के मन्दिरों में यह सभाएं आयोजित की जाती हैं। किसी सभासद में इतना साहस नहीं होता, कि इनके विरुद्ध आवाज बुलन्द करे और इन्हें बन्द कराए। अब यह भी सभासद लोग ही कह रहे हैं कि पुण्य-स्मृति (पवित्र याद) मानने में क्या हर्ज है?

मुझे याद है रोहतक में स्वर्गीय डा० विद्यासागर जी को स्वर्गीया धर्मपत्नी की प्रथम बर्सी मनाई गई। मुझे भी बुलाया गया। मुझे वहां बोलना भी पड़ा। आचार्य प्रियव्रत भी पधारे हुए थे। अन्य संन्यासी भी। आखिर एक नेता ने अपने वक्तव्य के दौरान कह ही दिया—"डा० साहब, हम आपके मान में आ तो गए हैं, पर यह प्रथा आर्य-सिद्धान्तों के विरुद्ध है। ऐसा होना नहीं चाहिए।" परिणामतः आगामी वर्ष डाक्टर साहब ने बर्सी न मनाई। साधारण समझ की बात है कि एक आत्मा जो कब की पृथक् हो चुकी है, आज उस की याद में 'शोक-स्मृति' आदि को स्थान देना कहां की अकलमन्दी है। इन कुप्रथाओं को समाप्त करना ही उचित है, अन्यथा ये सामाजिक जीवन को घाट उतारेंगी। पुरोहित लोगों को चढ़ावा आदि बदलते युग की निशानी है, जो बद से बदतर हो जाने का दावा रखती है।

बर्सियों पर न पहुंचने वाले सामाजिक तन्तु से कट रहे हैं, चाहे वे असूल की खातिर कतराते हों, पर बर्सी मनाने वाले तो अपनी प्रतिष्ठा, अपनी कला तथा अपनी नेतागिरी का ठेका लिए हैं, चाहे उस वियुक्त आत्मा से उसका व्यवहार कैसा था, पर अब तो शान, तड़क-भड़क से बर्सी मनाने वाले की है। इसकी सर्वप्रियता तथा सम्मान का माप-दण्ड है। फिर आर्य मन्दिरों में कुप्रथा का मनाया जाना, मन्दिरों को अपवित्र करना, अपराधी बनाना तथा उनकी मान-मर्यादा को मिट्टी में मिलाने के तुल्य है।

बर्सी वाले दिन प्रसाद, खाना-पीना—समारोह पुराने समय के श्राद्ध की तस्वीर बनती जा रही है। आर्य जनता जब तक इन बर्सियों के विरुद्ध कड़ा कदम नहीं उठाएगी, पाबन्द नहीं होगी, दूसरों को पाबन्द न करेगी, शक्ल नहीं बदलेगी, तब तक ये काम रुकने वाले नहीं। समाज में कुप्रथा एक जर्म (कीटाणु) है, जो उत्तरोत्तर बढ़ता जाता है, क्योंकि जर्म का बढ़ना प्राकृतिक है जो खुले आम बढ़ावे में ही रमा जाता है। देश तथा समाज पहले ही फंस रहा है। घातक लोग देश हानि में अग्रसर हैं। हमें अपने सामाजिक सुधारों की दिशा में अपने हाथों को हथियार बनाकर क्रियाशील होना पड़ेगा। यदि हम ऐसा कर पाए तो ये कुरीतियां अपनी मौत आप ही मर जाएंगी, दम तोड़ जाएगी यह हमारा पुनीत कर्त्तव्य ही नहीं, प्रत्युत धर्म है कि हम कुप्रथाओं से बचने की सुरक्षा का प्रण निभाएं। पदों (ओहदों) में पददलित होकर देश समाज एवं के सुमति के शत्रु न बने। इतने महामहिम ऋषिवर के आदेशों की अवहेलना किंवा विरोध न करें। यही बड़ी सेवा तथा ऋषि निर्वाण-उत्सव को श्रद्धांजलि है।

भीमसेन दीवान शान्ता कुंज
नई कालोनी, गुड़गावां

आर्य नशाबन्दी सम्मेलन बालावास (हिसार)

दिनांक २-४-८४ को हिसार से तोशाम रोड़ पर स्थित ग्राम बालावास में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से एक आर्य नशाबन्दी सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह सम्मेलन स्थानीय शराबबन्दी समिति के प्रधान श्री अत्तरसिंह जी आर्य क्रान्तिकारी, प्रधान आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार के आह्वान पर किया गया। ग्राम बालावास में गांव की चौपाल में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की प्रसिद्ध गायक पं० ईश्वरसिंह जी की भजनमण्डली द्वारा शराबबन्दी के लिए प्रचार कार्य किया गया। सभा के प्रचारक श्री कुलवन्तराय जी तथा डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ने ग्राम सभा को सम्बोधित किया। २-४-८४ को जिन्दल धर्मशाला में निकटवर्ती लगभग १० गांव की पंचायतों की एक सामूहिक सभा हुई, जिसमें ओमप्रकाश जी बहल, पं० ईश्वरसिंह जी, प० गुसाईराम जी कंवारी आदि ने प्रेरक भाषण और उद्बोधक भजनों के माध्यम से सुरापान के दोषों पर प्रकाश डाला। प्रो० शेरसिंह हरयाणा सभा के प्रधान ने अपने भाषण में बतलाया कि बालावास के भाइयों ने शराब के विरुद्ध आवाज उठा कर आर्यसमाज को जगाया है। हम तो समझते थे कि आर्य वीरों की नशोंमें खून नहीं रहा, किन्तु भाई अत्तरसिंह आदि ने आर्यनेता तथा समस्त आर्यसमाज को एक शराबबन्दी आन्दोलन के लिए प्रेरित किया है। राजशक्ति से लोकशक्ति बहुत बड़ी है। आर्यसमाज का इतिहास इस बात का साक्षी है कि लोक आन्दोलन के माध्यम से आर्यसमाज ने राजशक्ति और बड़े बड़े नवाबों को झुकाया और परास्त किया है। आर्यसमाज शीघ्र ही एक ऐसा कार्यक्रम तैयार करके जनता के समक्ष प्रस्तुत करेगा कि केवल बालावास मे ही नहीं अपितु हरयाणा के किसी ग्राम में ठेका नहीं रहेगा। यह नशाबन्दी समिति स्वामी ओमानन्द सरस्वती के नेतृत्व में बनाई जाएगी। दिनांक ८-४-८४ को आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरङ्ग की बैठक में इसका निर्णय लिया जाएगा।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने भारतीय इतिहास के आधार पर बतलाया कि शराब पीने से यदुवंश का नाश हो गया। कपूरसिंह फोगाट (दादरी) तथा मंगलाराम डालावास आदि के हजारों उजड़ते घरों को मैंने बसाया। यदुवंश का नाश शराब ने किया और कौरवों का नाश जूए ने किया। हमारी सरकार शराब भी पिला रही है और जूआ (लाटरी) भी खिला रही है। यह देश कैसे बच सकेगा। शराबी सज्जनसिंह ने अपनी लड़की से व्यभिचार किया। शराबी बेटों ने अपने पिता को कतल कर दिया। शराब से जमीनें बिक जाएंगी। बच्चे भूखे मर जाएंगे। शराब पीने वाला किसान खेती नहीं कर सकता, अध्यापक पढ़ा नहीं सकता, विद्यार्थी पढ़ नहीं सकता। भरतपुर का किला शराब की भेंट हो गया। लोगों ने हाथ उठाकर शराब न पीने की प्रतिज्ञा की।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी

पुस्तक समालोचना

पुस्तक का नाम—नित्यसन्ध्यायज्ञोपासनविधिः। संकलनकर्त्ता—सोहनलाल शारदा, स्वाध्यायमण्डल शाहपुरा (जिला भीलवाड़ा) राजस्थान, मूल्य—सप्रेम भेंट। पृष्ठसंख्या-२०

यह उपर्लिखित पुस्तिका सर्वहितकारी पत्रिका में समालोचनार्थ प्राप्त हुई। पुस्तिका का कागज और प्रकाशन आदि उत्तम है। लेखक ने यह पुस्तक बिना मूल्य वितरण के लिए प्रचारार्थ प्रकाशित की यह बहुत अच्छी बात है। इस पुस्तका में निम्नलिखित सुधार अपेक्षित हैं—

१—'प्रातरग्निम्' आदि जागरण मन्त्रों का भाषा में अर्थ दिया जाए।

२—संकल्प उच्चारण में 'कर्म अहम् क्रियते' के स्थान पर 'कर्म मया क्रियते' शुद्ध करें (पृष्ठ २)

३—पूर्वोक्त रीति से प्राणायाम की क्रिया करनी जाए (पृष्ठ ५) पुस्तिका में पहिले प्राणायाम की क्रिया का कोई संकेत नहीं इसलिए भाषा को ठीक किया जाए।

४—पृष्ठ ७ पर प्राणायाम की क्रिया का वर्णन है। यह प्राणायाम मन्त्र के साथ हो तो अच्छा है।

५—सन्ध्या के मन्त्रों का अर्थ भी दिया जाना चाहिए जैसाकि महर्षि ने पंचमहायज्ञ विधि में दिया है।

६—पृष्ठ ११ पर गायत्री मन्त्र के अर्थ-ज्ञान का कथन है किन्तु गायत्री मन्त्र का पुस्तिका में अर्थ नहीं दिया गया है। अर्थ चाहिए।

७—'पलास' शब्द के स्थान पर 'पलाश' पाठ चाहिए (पृष्ठ १३)

८—इति नित्यसन्ध्या-अग्निहोत्रविधिः समाप्तः (पृष्ठ १६) सन्ध्या समाप्ति का निर्देश पहिले पृष्ठ १२ पर किया जा चुका है अतः यहां 'नित्य अग्निहोत्र विधिः समाप्तः' लिखना उचित है।

९—प्रार्थना मन्त्रों (पृ० १६) का भी अर्थ देना चाहिए।

१०—यज्ञ प्रार्थना आदि भी हो तो अच्छा है।

डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

अकाली पहले खुद को अलग कौम मानना बन्द करें प्रो० शेरसिंह

ग्वालियर ४ अप्रैल (वार्ता)। पूर्व केन्द्रीय मन्त्री प्रो० शेरसिंह ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद २५ के संशोधन करने के सवाल पर अकाली नेताओं से तभी बातचीत की जानी चाहिए जब वे अपने को अलग कौम मानना बन्द कर दें और आनन्दपुर साहब प्रस्ताव वापिस ले लें।

प्रो० साहब ने कल यहां संवाददातों को बताया कि साथ ही इस बाबत सभी पक्षों से परामर्श किया जाना चाहिए।

(दैनिक जनसत्ता)

गुरुकुल डिकाडला का उत्सव सम्पन्न

२३, २४, २५ मार्च १९८४ को गुरुकुल डिकाडला (करनाल) का वार्षिक महोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस शुभावसर पर पूज्य स्वामी ओमानन्द, स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी शक्तिवेश, स्वामी रत्नदेव प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री रामानन्द सिंगला पानीपत, भजनोपदेशक श्री नरदेव भरतपुर (राजस्थान) श्री चिरंजी लाल जी व बहन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गणियार (महेन्द्रगढ) पधारे। १३ मार्च को ईनामी दंगल की अध्यक्षता स्वामी शक्तिवेश जी ने की तथा ईनाम भी अपनी जेब से दिये।

२४ को शुगर मिल शामली के मैनेजिंग डायरेक्टर लाला राजेन्द्र लाल जी ने नव-निर्मित छात्रावास का उद्घाटन तथा गांव आट्टा के [illegible] ओमप्रकाश की माता भरतोदेवी द्वारा स्नानागार एवं प्याऊ का उद्घाटन पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने किया। शुद्धि सभा के प्रधान बाबू [illegible] प्रकाश समालखा ने गौशाला के मुख्य द्वार हेतु २० हजार का चैक ब्र० ओमस्वरूप संचालक गुरुकुल डिकाडला को दिया। गांव आट्टा के हा० लाला रामधारी सुपुत्र श्री मांगेराम जी ने गुरुकुल के बाहर एक धर्मार्थ औषधालय के भवन बनाने की घोषणा की। अन्य कई महानुभावों ने भी ११००-११०० व ५००-५०० रुपये गुरुकुल को दान दिया।

आर्य विद्वानों से निवेदन

आर्य विद्वानों, लेखकों तथा कवि महानुभावों से प्रार्थना है कि सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ अपने खोजपूर्ण लेख तथा कविताएं आदि लिखकर भेजने की कृपा करें। लेख, सुलेख तथा वैदिक सिद्धान्तों के अनुसार होने चाहिए।

सम्पादक सर्वहितकारी
सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ रोहतक

(पृष्ठ १ का शेष)

इस लघुनिबन्ध में पुण्यश्लोक, विश्वविश्रुतकीर्ति, लोकाभिराम श्री राम की पुण्यगाथा कहां तक वर्णन की जा सकती है। काव्य उनके यशोगान से भरे पड़े हैं। भारतीय कवियों ने अपनी उच्च कल्पना का पूर्ण परिचय देकर शब्द चित्र के जितने मनोरम और सुन्दर स्वरूप बनाए हैं, देववाणी के सिद्ध सारस्वतों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का जितना चमत्कार दिखलाया है, उनमें से अधिकांश में राम के पथप्रदर्शक पावन चरित्र का वर्णन पाया जाता है। भाषाकवियों की भी जिह्वा उनका यश वर्णन करने में नहीं थकती।

हमारे लिए इससे अधिक सौभाग्य और क्या हो सकता है कि हम ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्शचरित्र की सन्तान हैं। उन्हीं पवित्र नाम राम के जन्म दिन शुभतिथि चैत्र सुदी नवमी है। हमारे पूर्वजों ने हम पर यह भी एक बड़ा उपकार किया है कि इस लोकाभ्युदयकारक के जन्म की तिथि इस चैत्र शुक्ला नवमी को हम तक अविच्छिन्न रूप से पहुंचा दिया है। परन्तु आजकल अज्ञानान्धकार में निमग्न आर्य सन्तान रामनवमी प्रभृति जन्मोत्सव को लाभप्रद रीति से नहीं मानते और उनके वास्तविक उद्देश्यों को भूलकर अनशन आदि वृथा रूढ़ियों में फंस गये हैं। शिक्षा से आलोकित हृदय सुधारकों और वैदिकधर्मावलम्बी आर्य महाशयों का कर्त्तव्य है कि लुप्त प्राय विशुद्ध वीर-पूजा की प्रथा का पुनरुद्धार करें और अपने आदर्श महापुरुषों की जन्मतिथियों और स्मारकों को शिक्षाप्रद प्रकारों से मनाएं तथा सर्वसाधारण के लिए पथ प्रदर्शक बनें। आज के दिन मर्यादापुरुषोत्तम रामचन्द्र के चरित्र के अध्ययन वा स्वाध्याय के लिए रामायण की कथा को प्रचारित करना चाहिए। यज्ञ और दान का शुभानुष्ठान होना चाहिये और अपने पूर्व पुरुषों के पदचिन्हों पर चलते हुए धर्म के तीनों स्कन्ध यज्ञ, अध्ययन और दान के विशेष आचरण में ही ऐसे शुभ दिनों को बिताना चाहिये; जिससे कि हम अपनी उन्नति करते हुए अन्यों के उद्धार के हेतु बन सकें।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

वैदिक आश्रम गुगोढ का वार्षिकोत्सव

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी होलिकोत्सव पर दिनांक १६ मार्च १९८४ को वैदिक आश्रम गुगोढ़ का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से सम्पन्न हुआ।

प्रातः ८ बजे से १२ बजे तक स्वामी सत्यानन्द जी की अध्यक्षता में यज्ञ तथा प्रवचन का कार्यक्रम सुचारु रूप से चलता रहा, जिसमें यजमान श्री लालसिंह जी ग्राम लूली वाले रहे। प्रवचन में श्रीआचार्य सुरेन्द्र जी लूली, श्री भगवानदास जी आर्य, श्री फतेहसिंह जी सिद्धान्त शास्त्री तथा बहन मोरापति के सारगर्भित उपदेश हुए। अन्त में श्री वीरकुमार जी ने देशद्रोही ताकतों के विरोध में संगठित होने तथा सामाजिक बुराइयों से दूर रहने का आह्वान किया।

दोपहर १ बजे से ४ बजे तक श्री ब्र० विजयपाल जी व्यायामाचार्य ने अद्भुत व्यायाम प्रदर्शन किया, जिसकी अध्यक्षता विकास खण्ड अधिकारी जाटूसाना, श्री राव रङ्गराव ने की। जनता पर इसका बड़ा असर पड़ा।

चार बजे के बाद परम्परा के अनुसार होली गायन का कार्यक्रम चला। अन्त में ब्र० चन्द्रलाल जी तथा मास्टर रामनिवास जी ने सभी अभ्यागतों महानुभावों का धन्यवाद किया। ग्राम पंचायत व माताओं बहनों ने भी इसमें बड़ा योगदान दिया।

—आश्रम संचालक

उत्सव स्थगित

कन्या गुरुकुल गणियार (महेन्द्रगढ) का उत्सव जो १३-१४-१५ अप्रैल १९८४ को होना निश्चित हुआ था वह कन्याओं की परीक्षा अति निकट होने के कारण स्थगित कर दिया है। परीक्षा के बाद पुनः तिथियां निश्चित की जाएंगी।

कलावती आर्या

प्रभात आश्रम के बढते कदम

गुरुकुल प्रभात आश्रम भोला झाल मेरठ के ब्र० सत्यदेव निगमालंकार ने सरस्वती परिषद् गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार द्वारा आयोजित ७-३-१९८४ को भाषण प्रतियोगिता में सर्वप्रथम कीर्तिमान स्थान प्राप्त कर गुरुकुल का गौरव बढाया।

आचार्य प्रभात आश्रम भोलाझाल मेरठ

मुस्लिम युवक की शुद्धि

स्थानीय आर्यसमाज अजमेर में रविवारीय साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर मुस्लिम युवक मोहम्मद अली की स्वेच्छा से प्रार्थना करने पर हिन्दू (वैदिक) धर्म में प्रवेश प्रदान कर शुद्धि की गई। शुद्धि संस्कार श्री आचार्य गोविन्दसिंह जी ने कराया। शुद्धि के पश्चात् उनका नाम मोहनीश रखा गया।

अन्त में समाज की ओर से उनका फूल मालाएं पहनाकर स्वागत किया गया। रासासिंह मन्त्री

तपोवन का आध्यात्मिक मेला २३ अप्रैल से

देहरादून २८ मार्च। वैदिक साधन आश्रम तपोवन का वार्षिक बृहद् यज्ञ तथा योग-साधना-शिविर दिनांक २३ से २९ अप्रैल तक चलेगा। स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, योगाचार्य स्वामी सत्यपति जी व महात्मा बलदेव जी (चान्दपुर) पधार रहे हैं। यज्ञ के ब्रह्मा महात्मा दयानन्द जी वानप्रस्थ होंगे। उल्लेखनीय है कि तपोवन का यह वार्षिक सत्संग एक विशाल मेले की परम्परा का निर्माण कर चुका है और दूरस्थ प्रदेशों से सैकड़ों श्रद्धालु स्त्री पुरुष इसमें सम्मिलित होते हैं। तपोवन वैसे भी दर्शनीय स्थान है। देवदत्त बाली

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह कांगड़ा (हिमाचल में)

महर्षि दयानन्द सरस्वती के क्रान्तिकारी कार्य समस्त मानव जाति के प्रति प्रेम व उनका उद्धार, देशभक्ति, स्त्रियों व दलितों पर उपकार सत्य के प्रचार आदि आदि कार्य आज सूर्य के प्रकाश की तरह सर्व विदित हैं।

महर्षि ने सत्य सनातन पवित्र वैदिक धर्म पर विरोधियों द्वारा आक्षेपों को झूठा सिद्ध कर आर्य जाति को आत्म विश्वास और सम्मान दिलाया। धर्म से पतित लोगों को वापस आर्य जाति में लाने का अभियान चलाया।

ससार के लाखों महान् पुरुषों ने मुक्त कण्ठ से महर्षि की महानता और परोपकारों को [illegible] है।

उस महान [illegible] निर्वाण शताब्दी मनाने तथा उनके मानव कल्याण के कार्यों [illegible] आगे [illegible] ने के लिए (विशेष कर आज की भयानक स्थिति में जबकि [illegible] कारी, देशद्रोही शक्तियां सिर उठा रही हैं और सब ओर लोग निराश दिखाई दे रहे हैं) हिमाचल के आर्यों ने कांगड़ा नगर में १-२-३ जून १९८४ को एक बृहद् समारोह का आयोजन किया है। इस अवसर पर वेद मन्त्रों से महान् यज्ञ का भी आयोजन किया जा रहा है।

इस पुण्य अवसर पर आर्यजगत् के गण्य-मान्य संन्यासी, नेता और उपदेशक पधारेंगे और लगभग ८-१० हजार लोग समारोह में भाग लेने के लिए आयेंगे। स्वामी सुमेधानन्द

प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा (हिमाचल प्रदेश)

आर्यसमाज मेरठ शहर का प्रस्ताव

आर्यसमाज मन्दिर मेरठ शहर में एकत्रित यह विशाल जनसभा पंजाब में हो रहे नरसंहार पर गहरी चिन्ता व्यक्त करती है। धर्म और सम्प्रदाय की आड़ में विघटनकारी अराष्ट्रीय उग्रवादियों द्वारा निर्दोष व्यक्तियों की निर्मम हत्याओं की यह सभा घोर निन्दा करती है। इन हत्याओं के कारण हिन्दू, सिख जो सगे भाइयों से भी अधिक हैं, के बीच मधुर सम्बन्धों में भी दरार पड़ गई है। इस प्रकार की हत्याएं समाज और मानवता के लिए घोर कलंक है। विदेशी इशारों पर अलगाववादी तत्त्व हत्या और लूट-पाट का जो घिनौना कार्य कर रहे हैं वह सर्वथा निन्दनीय है।

यह जनसभा सरकार से अनुरोध करती है कि इन विघटनकारी तत्त्वों को सख्ती से कुचल दे ताकि राष्ट्रीय एकता स्थिर रह सके तथा पाकिस्तान की सीमा पर बसा हुआ पंजाब सौहार्दय और एकता का आदर्श स्थापित कर सके।

यह जनसभा राष्ट्रवादी हिन्दुओं और सिखों से अपील करती है कि वे किसी भी विघटनकारी विदेशी अराष्ट्रीय लोगों का शिकार न बनें अपितु परस्पर के सौहादार्य और प्रेम से इन विघटनकारी षड्यन्त्रों को विफल कर दें। साथ ही धर्म-स्थलों को इसी प्रकार के अराष्ट्रीय तत्त्वों से मुक्ति दिलावें।

मन्त्री आर्यसमाज बुढाना गेट, मेरठ शहर

नागदा में यजुर्वेद परायण महायज्ञ

आर्यसमाज नागदा के तत्वावधान में ग्राम मकड़ावन की रामबाड़ी में रामनवमी के उपलक्ष में दिनांक ९ तथा १० अप्रैल १९८४ को यजुर्वेद परायण महायज्ञ एवं प्रवचन का आयोजन किया जा रहा है। यज्ञ सम्पन्न कराने हेतु पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती पधार रहे हैं। स्वामी जी पिछले ४५ वर्षों से केवल फलाहार करते हैं, तथा देशविदेश में घुमकर वैदिक विचारों का प्रचार करते हैं।

महापुरुषों की दृष्टि में

आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द और सत्यार्थ-प्रकाश

१—इस युग में देववाणी का उद्धार स्वामी जी ने ही किया है—इससे भारत में क्रान्ति हो रही है।

—शिवकुमार जी शास्त्री महामहोपाध्याय

२) महर्षि दयानन्द भारत के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में, श्रेष्ठ पुरुषों में एक थे। उनका ब्रह्मचर्य, उनकी विचार स्वतन्त्रता, उन का सबके प्रति प्रेम, उनकी कार्यकुशलता इत्यादि गुण लोगों को मुग्ध करते थे। —महात्मा गांधी

३) मैं स्वामी जी को हिन्दू जाति का रक्षक मानता हूँ, उन्होंने गिरती हुई जाति को बचा लिया, लोगों की आंखें खोल दी।

—लाला मोतीचन्द्र सी० आ० ई०

४) केवल स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं। मैंने संसार में केवल उन्हीं को एकमात्र अपना गुरु माना है।

—पंजाब केसरी लाला लाजपतराय

५) स्वामी दयानन्द ने हिन्दू युवकों के हृदय में त्याग, परोपकार और देशभक्ति की ज्योति जगा दी। —लाला हरदयाल एम० ए०

६) वेदों के विषय में स्वामी जी का मत कितना ग्राह्य है; मैं कह नहीं सकता, किन्तु मैं उनको (Greatest Social Rerformer) सबसे महान् समाज सुधारक मानता हूं।

—महामना गोपालकृष्ण गोखले

७) आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्त्व के अज्ञान से मुक्तकर भारत को और पवित्रता की जागृति में लाने वाले गुरुवर दयानन्द को बार बार प्रणाम है। —रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'कवीन्द्र'

८) स्वामी दयानन्द नवीन युग के पथ प्रदर्शकों में से एक हैं यदि उन्हें इस गणना में सर्वोत्तम स्थान दें तो लेशमात्र भी अतिशयोक्ति न होगी। —राजाश्री दुर्गानारायणसिंह बहादुर

९) स्वामी दयानन्द जैसे परमोदार पर संकीर्णता का दोष लगाना भ्रमात्मक और अयुक्त है। मैं आर्यसमाज को आदरणीय समझ उसे पूज्य दृष्टि से देखता हूं। श्री एन० सी० केलकर

१०) स्वामी दयानन्द केवल आर्यसमाजियों के लिए ही नहीं वरन् सारी दुनियां भर के लिए पूज्य हैं। —माता कस्तूरबाई

११) आर्यसमाज ने हमारी मातृभूमि के उद्धार के लिए बहुत कुछ किया है, अतएव यह हमारी चिरकृतज्ञता का पात्र है।

—डा० पी० सी० राय

१२) इसमें सन्देह नहीं कि महर्षि दयानन्द की दिव्य प्रेरणा से भारत में आर्यसमाज ने बहुत प्रशंसनीय कार्य किये।

—श्री माधवराव सप्रे

१३) स्वामी दयानन्द विचित्र प्रतिभाशाली पुरुष थे। हिन्दू समाज में विशेषकर उत्तरी भारत में समस्त जागृति का श्रेय उनको है।

—लो० बालगंगाधर तिलक

१४) स्वामी दयानन्द पूर्वजन्म में संस्कारी आत्मा थे। आर्य धर्म के तत्त्व को यथार्थ रूप में संसार के सम्मुख रखने में स्वामी जी ने कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया है। हिन्दू समाज इस विषय में सदैव उनका कृतज्ञ रहेगा। —जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे

१५) वेदों के भाष्य के विषय में हमें विश्वास है कि अन्तिम सर्वाङ्ग सम्पूर्ण भाष्य चाहे जो हो परन्तु भाष्य की सच्ची चाबी के आविष्कर्ताओं में श्री स्वामी दयानन्द जी को सबसे प्रथम मान दिया जाएगा।

—योगी अरविन्द घोष

१६) जिसे स्वामी दयानन्द जी ने सच्चाई समझा उसे स्वतन्त्रता पूर्वक स्वीकार किया, जिसे निकृष्ट और मिथ्या समझा उसे निर्भयता पूर्वक सबके सामने रख दिया। —रेवरेण्ड टी० जी० पाल

१७) महर्षि दयानन्द ने अपने विद्याबल, कर्मबल और तपोबल से सारी निर्बलताओं; अकर्मण्यताओं और बुराइयों को दूर कर दिया। हिन्दुओं को सत्या और वैदानुयायी बनाया।

—श्री पीरमुहम्मद यूनिस

१८) स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म को हमारे सामने इस भांति रखा कि हम उस पर बुद्धि से विचार कर सकें।

—मौलाना अब्दुल बुखारी

१९) वर्तमान समय में संस्कृत का एक ही बड़ा विद्वान्, साहित्य का पुतला, वेदों के महत्त्व को समझने वाला, अत्यन्त प्रबल नैयायिक यदि भारत में हुआ तो वह महर्षि दयानन्द सरस्वती था।

—डा० स्टाक डी० डी०

२०) यह सत्य है कि स्वामी शंकराचार्य के अनन्तर भारत में स्वामी दयानन्द से अधिक संस्कृत का विद्वान्, उनसे बढ़कर प्रत्येक बुराई को उखाड़ने वाला उनसे अधिक कथनशक्ति वाला दार्शनिक उत्पन्न नहीं हुआ। —मैडम ब्लवट्स्की

२१) स्वामी दयानन्द मृत्यु पर्यन्त निर्भय रहे और मृत्यु आई तो उन्होंने मुस्कराते हुए उसका स्वागत किया। वे प्रसन्नतापूर्वक चोटों को सहते, पर किसी दूसरे को चोट पहुँचाने में घृणा करते थे।

—महात्मा एण्ड्रयूज

२२) निस्सन्देह स्वामी जी एक महान् पुरुष, संस्कृत के गम्भीर विद्वान्, उत्कृष्ट साहस और स्वावलम्बन से युक्त मनुष्यों के नेता थे।

—कर्नल आलकाट

(क्रमशः)

कविता आर्या 'वाचक्नवी' (साहित्यशास्त्री, प्रभाकर)

चुना निर्माणोद्योग, यमुनानगर (अम्बाला)

आर्यसमाज एक सामान्य परिचय

यशपाल आर्यबन्धु, प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज मुरादाबाद

आर्यसमाज सामान्य शाब्दिक अर्थों में श्रेष्ठ गुण, कर्म, स्वभाव वाले प्रगतिशील व्यक्तियों के समूह का नाम है, किन्तु जिस समाज की चर्चा हम यहाँ करने जा रहे हैं, वह महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा विशेष उद्देश्य से संस्थापित समाज विशेष है। उसका सुविख्यात पंजीकृत नाम आर्यसमाज है। यद्यपि यह समाज विशेष (आर्यसमाज) भी श्रेष्ठ व्यक्तियों का ही समूह है तथापि यह श्रेष्ठ व्यक्तियों का एक व्यवस्थित एवं संगठित समूह है जो कतिपय निश्चित उद्देश्यों एवं कार्यक्रमों को लेकर गठित हुआ है और जिसके निश्चित नियम एवं व्यवस्थित संगठन है, वह समाज, समाज नहीं जिसमें कोई व्यवस्था, नियम अथवा उद्देश्य न हो। उद्देश्य, नियम एवं व्यवस्था से विहीन समाज की कल्पना नहीं की जा सकती। आप उसे भीड़, झुण्ड अथवा समूह तो कह सकते हैं पर समाज नहीं। श्रेष्ठ पुरुषों का हो क्यों न हो, किसी उद्देश्य रहित, अनियमित अथवा अव्यवस्थित समूह को आर्यसमाज कदापि नहीं कहा जा सकता। आर्यसमाज तो श्रेष्ठ व्यक्तियों के एक संगठित एवं व्यवस्थित समूह का नाम है जिसकी आस्था उसके उद्देश्यात्मक दस नियमों पर है एवं जिसका आचरण वेदानुसार सत्पुरुषों जैसा है।

कोई भी व्यक्ति जो इसके नियमों, उद्देश्यों, मन्तव्यों, सिद्धान्तों को मानने एवं तदनुसार आचरण करने की प्रतिज्ञा कर सदाचारपूर्वक जीवन व्यतीत करता हो, इसका सदस्य बन सकता है। नियमानुसार उसे अपनी आय का शतांश आर्यसमाज को सदस्यता शुल्क के रूप में देना होता है। आर्यसमाज का कोई भी सदस्य जो अपने आचरण से गिर जाता है। वह संगठन से पृथक् भी किया जा सकता है। तात्पर्य यह कि आर्य समाज का सदस्य बनने के लिए केवल मान्यतायें एवं आस्थायें ही पर्याप्त नहीं, आचरण भी आवश्यक है अपितु यूं कहना चाहिये कि प्रमुख है। आर्यसमाज के नियम भी दो प्रकार के हैं। एक उद्देश्यात्मक दूसरे संगठनात्मक। उद्देश्यात्मक नियम जो गिनती में केवल दस बदले नहीं जा सकते किन्तु संगठनात्मक नियम देश, काल, परिस्थिति के अनुसार बदले जा सकते हैं। आर्यसमाज का संगठन पूर्ण प्रजातंत्रात्मक है। अन्य मतों पंथों के विपरीत आर्यसमाज के संगठन में इसके संस्थापक का कोई संगठनात्मक पद अथवा स्थान नहीं है। तात्पर्य यह कि जैसा अन्य मतों में संस्थापक का एकछत्र अधिकार, आधिपत्य एवं विशेष गुरु गद्दी रहता है, वैसा आर्यसमाज के संगठन में कहीं नहीं। यही इसकी विशेषता है। यही कारण है कि आर्यसमाज भी कोई मत, मजहब, पंथ अथवा सम्प्रदाय नहीं अपितु साम्प्रदायिकता की संकीर्णता से स्वयं ऊपर उठा हुआ एवं मतों पंथों के रगड़े-झगड़े मिटाने वाला विशुद्ध मानवतावादी बौद्धिक आन्दोलन है। आर्यसमाज के मूलाधार भी उसके संस्थापक द्वारा लिखित ग्रन्थ नहीं अपितु शाश्वत ईश्वरीय वाणी वेद है। इसके संस्थापक ने भी अपने ग्रन्थों में वेदों की ही यथार्थ व्याख्या की है और उसके सत्य अर्थों का ही प्रकाश किया है। साथ ही वेद के नाम पर प्रचलित मिथ्या मान्यताओं और धारणाओं का युक्तियुक्त निराकरण किया है। आर्यसमाज के लिए प्रमाण स्वरूप भी वेद आदि सत्य ग्रंथ हैं। आर्यों के लिए पढ़ने-पढ़ाने सुनने-सुनाने के लिए भी संस्थापक के ग्रन्थ न होकर सत्य विद्याओं का पुस्तक वेद को ही परम धर्म के रूप में स्वीकारा गया है। महर्षि दयानन्द एवं अन्य वैदिक ऋषियों के ग्रन्थ तो वेदों तक पहुँचने एवं उन्हें ठीक ढंग से समझने के लिए हैं। वेद की रक्षा एवं प्रचार-प्रसार के लिए ही महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की थी।

आर्यसमाज के उद्देश्यात्मक दस नियम यद्यपि महर्षि दयानन्द की प्रखर प्रज्ञा की देन है तथापि आर्यसमाज की मान्यतायें महर्षि दयानन्द द्वारा कल्पित नहीं। ब्रह्मा से लेकर जैमिनी मुनि पर्यन्त ऋषि महर्षियों की जो-जो मान्यतायें रही हैं, आर्यसमाज की वही मान्यतायें हैं। महर्षि ने उन्हीं वैदिक मान्यताओं को व्यवस्थित एवं व्याख्यात किया है। संसार वेद और वैदिक मान्यताओं का भूल चुका था। महर्षि दयानन्द और उनके द्वारा संस्थापित आर्यसमाज ने ही संसार का ध्यान इस ओर दिलाया। अतः आर्यसमाज विशुद्ध वैदिक आन्दोलन है। संसार को वेद के झण्डे तले लाना एवं वैदिक पथ दर्शाना ही इसका उद्देश्य है। हमारा विश्वास है कि संसार के उपकार करने का इससे बढ़कर अन्य कोई तरीका है नहीं और आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य भी संसार का उपकार करना ही है। वेद पथ पर चलकर ही मानव अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि कर सकता है।

आर्यसमाज एक आस्तिक समाज है। पर यह ईश्वर के किसी कपोल कल्पित मिथ्या स्वरूप को नहीं मानता। यह ईश्वर के वेदप्रतिपादित स्वरूप को ही मानता है। इसकी यह भी मान्यता है कि वेद प्रतिपादित स्वरूप ही ईश्वर का सच्चा स्वरूप है। आर्यसमाज चार वेद संहिताओं को ही अपौरुषेय ईश्वरीय ज्ञान मानता है। उसकी यह भी मान्यता है कि ईश्वर का ज्ञान भी ईश्वर को ही भांति नित्य है। सृष्टि के आदि में ईश्वर जीवों के कल्याण के लिए इसका प्रकाश करता है। आर्यसमाज वेदों को सभी सत्य विद्याओं का पुस्तक एवं समस्त ज्ञान-विज्ञान का मूल मानता है। आर्यसमाज अविद्या के नाश और विद्या की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील है। आर्यसमाज एक ऐसा संगठन है कि जो सबसे प्रीतिपूर्वक धर्मानुसार यथायोग्य बरताव करता है। साथ ही असत्य को छोड़ने और सत्य को ग्रहण करने के लिए तत्पर रहता है। उसका विश्वास है कि काम सत्य और असत्य को परख करके ही करने चाहिये। संसार के उपकार को अपना मुख्य उद्देश्य मानने वाला आर्य समाज सबकी शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति चाहता है। उसकी मान्यता है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में संतुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का वैदिक जयघोष गुंजाने वाले आर्यसमाज विश्व को आर्य बनाने का एक महा अभियान है। आर्यसमाज मानव को मानवता का पाठ पढ़ाता है। आर्यसमाज धर्म के विशुद्ध धर्म का प्रचार करता है। आर्यसमाज की मान्यता है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने आचरण एवं व्यवहार से आर्य शब्द के गौरव को बढ़ाने वाला हो, घटाने वाला नहीं। आर्यसमाज चाहता है कि प्रत्येक मनुष्य विवेकशील बने और मानवता के मूल्य को पहचाने। आर्यसमाज ऐसी खान है जहाँ चरित्र-वान् एवं सदाचारी नर रत्न उत्पन्न किये जाते हैं। आर्यसमाज वह विचारधारा है जो भूले भटके मानव को बुद्धिवादी चिन्तन देता है। यह वह रोशनी का मीनार है जो भूले भटके राही को सुपथ दर्शाता है। संक्षेप में आर्यसमाज वह बुद्धिवादी वैदिक आन्दोलन है जो विश्व को आर्यत्व का पाठ पढ़ाकर मानवता की सच्ची राह दिखाना चाहता है। यह वैदिक धर्म का प्रतिनिधि, प्रतीक व रक्षक है।

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क नहीं भेजा है, उनसे निवेदन है कि वे १५) मनीआर्डर द्वारा शीघ्र भेज देवें।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

(पृष्ठ २ का शेष)

आगे कहा है कि वह सर्वशक्तिमान् है अथवा अपने कर्त्तव्य कर्मों में उसे किसी के सहयोग और सहायता की आवश्यकता नहीं होती। न तो व्यक्ति के सहयोग और सहायता की आवश्यकता होती है और न किसी उपकरण की ही आवश्यकता पड़ती है।

वह न्यायकारी है अथवा जो जैसा करता है, वैसा ही वह उसे फल देता है। न वह किसी को छूट देता है और न अकारण दुःख रूप दण्ड तथा सुखरूप पुरस्कार प्रदान करता है।

वह दयालु है, उसके स्वभाव में निर्दयता नहीं है। वह अजन्मा है, उसका न कभी जन्म हुआ और न होगा। कुछ लोग परमात्मा को अवतार लेने वाला अथवा समय समय पर जन्म धारण करने वाला कहते हैं, यह उनकी भ्रान्ति है। वह कहते हैं कि वह दुष्टों के संहार के लिए जन्म लेता है। परमपिता परमात्मा बिना जन्म लिए अशरीरी रहते हुए जड़-चेतनमय विश्व ब्रह्माण्ड को उत्पन्न कर इस इतनी विशाल सृष्टि को व्यवस्था बनाये रखकर उसका सञ्चालन कर सकता है और जीवात्माओं द्वारा मानव शरीर धारण कर किये गये समस्त अच्छे बुरे कर्मों की व्यवस्था रखकर उनमें से प्रत्येक को स्व-स्व कर्मानुसार विविध योनियों और जन्म-जन्मान्तरों में भेजकर यथायोग्य कर्म-फल रूपी भोग प्रदान करता है, वह अपने ही उत्पन्न किये किसी व्यक्ति को मारने के लिए जन्म ले अथवा बिना शरीर धारण किए उसे मार भी न सके, यह नितान्त नासमझी की बात है। वह अजन्मा है, अजन्मा ही रहेगा। न उसने कभी जन्म धारण किया है और न भविष्य में कभी जन्म लेगा।

वह परमात्मा अनन्त है अथवा उसका कभी अन्त नहीं होगा। वह पहले भी था, सृष्टि की उत्पत्ति से पहले भी था, वर्तमान में भी है और भविष्य में भी रहेगा। अनन्त का दूसरा अर्थ है जिसका कहीं अन्त अथवा सीमा न हो। कभी वह कहीं समाप्त होने वाला नहीं। प्रत्येक क्षेत्र, प्रत्येक स्थान पर वह है और सदा रहता है। बड़ी से बड़ी और लम्बी से लम्बी दूरी पर भी वह उपस्थित है एतदर्थ वह अनन्त है और क्योंकि कहीं भी, बड़ी से बड़ी दूरी पर भी अनन्त न होने के कारण उसकी सीमा कहीं नहीं है अतः वह अनन्त तो है ही, असीम भी है।

परमात्मा निर्विकार है। उसमें विकार, विकृत अथवा बिगाड़ नहीं होता। वह सदैव एक रस बना रहता है। प्रलयकाल में जैसा था, अब भी वैसा ही है और भविष्य में भी ऐसा ही—जैसा अब है—ज्यों का त्यों बना रहेगा।

वह अनादि है। उस परमदेव का आदि अथवा प्रारम्भ कभी नहीं था, इसी कारण से उसे अनादि तत्त्व कहा जाता है। उसकी उपमा का अथवा उस जैसे गुण-कर्म-स्वभाव युक्त अन्य कोई तत्त्व नहीं है, इस कारण से वह अनुपम है।

वह सर्वाधार, सबका आधार, सबका आश्रय, सबका सहारा और सबका धारण करने वाला है। विश्व ब्रह्माण्ड को उसी ने धारण किया हुआ है। सर्वेश्वर=सबका ईश्वर, सबका शासक तो है ही, किन्तु सब का सबसे श्रेष्ठ शासक अथवा न केवल समस्त देशों की प्रजा का शासक अपितु समस्त देशों के शासकों का भी शासक है। मनुष्यों का ही शासक नहीं अपितु समस्त जड़-चेतनादिकों का शासक है। सम्पूर्ण जड़-चेतन समस्त चर-अचर जगत् पर उसी का शासन है इसीलिए वह सर्वेश्वर कहलाता है।

(क्रमशः)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २१ २८ अप्रैल १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

शराबबन्दी आन्दोलन

नई कालोनी गुड़गांव में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन

जिला गुड़गांव में दस शराब के ठेकों पर स्वयं सेवकों द्वारा धरने देने की तैयारी आरम्भ

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

गुड़गांव २० अप्रैल—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव का १० वां वार्षिक उत्सव सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी द्वारा ध्वजारोहण के साथ धूमधाम से आरम्भ हुआ। इससे पूर्व दिनांक १६ अप्रैल से आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी परिव्राजक द्वारा प्रातः यज्ञ तथा रात्रि को वेद कथा एवं सभा की नवयुवक प्रभावशाली मण्डली कुंवर तेजपाल के मधुर भजन होते रहे। प्रतिदिन प्रातः आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रभातफेरी भी निकाली गई।

२० अप्रैल को दोपहर बाद २-३० बजे सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ओ३म्ध्वज लहराते हुए आर्य जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि ओ३म् के झण्डे के नीचे एकत्रित होकर ही विश्व का कल्याण हो सकता है। आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द ने वेदमार्ग दिखा कर महान् उपकार किया है। अतः हमें ओ३म् के झण्डे की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने को सदा तैयार रहना चाहिए। आपने अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह की उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए कहा कि एक विदेशी विद्वान् जो कि इस समारोह में सम्मिलित हुआ था, ने ऋषि के ग्रन्थों को पढ़कर मुझे पत्र लिखा है कि ऋषि ने एक ओ३म् की उपासना व एकमात्र वेद धर्मग्रन्थ पर आस्था रखने का आह्वान करके हिन्दुओं को एक लड़ी में परोने का महत्त्वपूर्ण यत्न किया है।

ध्वजारोहण के पश्चात् सभा के भजनोपदेशक कुंवर तेजपाल के प्रभावशाली भजन हुए और सभा प्रधान जी की अध्यक्षता में शराबबन्दी सम्मेलन आरम्भ हुआ। इस अवसर पर नवयुवक विद्वान् ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी, सभा के उपदेशक पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी आदि विद्वानों ने उपस्थित जनता को शराब मांस तथा अन्य नशीली वस्तुओं का परित्याग करने का अनुरोध किया। आर्यसमाज की ओर से शराबबन्दी सम्मेलन में भाग लेने के लिए गुड़गांव के सभी आर्यसमाजों तथा निकट के ग्रामों के सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को भी आमन्त्रित किया था। प्रो० शेरसिंह जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यकर्त्ताओं से आह्वान किया कि शराब जैसी भयंकर सामाजिक बुराई को जड़ से उखाड़ने का समय आ गया है। नगर तथा ग्रामों में शराब के ठेकों की वृद्धि हो रही है। सरकार अपनी राजस्व की आय बढ़ाने के लालच में जनता के चारित्रिक-पतन, भ्रष्टाचार फैलाने का कारण बन रही है। सरकार भूल जाती है कि शराब की बिक्री से जितनी आय होती है, उससे अधिक शराब के सेवन करने के कारण अन्य हानियां सड़क दुर्घटना, मुकद्दमेबाजी, बलात्कार कार्यकुशलता में ढील आदि बुराइयों से अधिक हानि होती है। आपने बताया कि एक अनुमान से एक ग्राम के शराब के ठेके पर लगभग ५ लाख रुपये की शराब की बिक्री होती है। यह रकम गरीब किसान, मजदूर, दस्तकार और छोटे कारोबारी की जेब से निकलकर शराब के ठेकेदार के खजाने में जमा हो जाती हैं। इस प्रकार ठेकेदार मालामाल तथा पीने वाले कंगाल होते जा रहे हैं। यदि यही स्थिति जारी रही तो शीघ्र ही गांव का जमींदार कहलाने वाला व्यक्ति बेबिसवेदार तथा दिन रात मजदूरी करने वाला मजदूर दर-दर की ठोकरें खाने वाला रह जायेगा। इस सामाजिक बुराई को केवल आर्य समाज ही दूर कर सकता है क्योंकि राजनैतिक दल अपने वोट बटोरने की होड़ में शराब पर पाबन्दी लगाने को तैयार नहीं है। अतः आर्य समाज के सभी कार्यकर्त्ताओं को एक जुट होकर शराबबन्दी आन्दोलन में कूदना होगा और जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए हैं, वहां धरना देकर शराब की बिक्री बन्द कराने का कार्यक्रम बनावें। इस वर्ष जिला गुड़गांव के १० ठेकों को समाप्त करने का यत्न करें। आगामी वर्ष में ग्राम की पंचायतों से पूर्व ही प्रस्ताव पास करवाकर सरकार को भेजे जावेंगे। सभा की ओर से हरयाणा की प्रमुख आर्यसमाजों के पास शराब बन्दी कार्यक्रम के विज्ञापन छपवाकर भेज दिये गये हैं। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को शराब के ठेको वाले गांव की पंचायतों से सम्पर्क करके वहां धरना देने की तैयारी अभी से आरम्भ कर देनी चाहिए। वातावरण तैयार करने के लिए जहां प्रचार की आवश्यकता पड़ेगी वहां सभा के उपदेशक तथा प्रचारक भेजे जावेंगे। शराब की हानियों से सम्बन्धित साहित्य का वितरण किया जायेगा। आर्यसमाज की ओर से इस अवसर पर सभा अधा ' जी को (१००) भेंट किये गये।

आर्यसमाज के उत्सव दिनांक २१ तथा २२ अप्रैल को महिला व चरित्र निर्माण आदि सम्मेलनों का आयोजन किया गया। इनमें दीवान भीमसेन जी, डा० विद्याभूषण जी तनेजा, ब्र० आर्य नरेश जी, स्वामी विज्ञानानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, श्री किशनचन्द चुटानी, श्री धर्मवीर विधायक, डा० जयदेव आदि के व्याख्यान हुए। आर्यसमाज के सभी कार्यकर्त्ताओं ने उत्सव को सफल करने के लिए दिन रात परिश्रम किया। बाहर से आने वालों के लिए ऋषि लंगर का भी अच्छा प्रबन्ध था।

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल का चुनाव

आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल की साधारण सभा दिनांक २९ अप्रैल को प्रातः सत्संग की कार्यवाही के पश्चात् प्रातः ९ बजे होगी, जिसमें आर्यसमाज के अधिकारियों तथा अन्तरंग सदस्यों आदि का चुनाव किया जायेगा।

रतनसिंह राठर प्रधान

यादवों की तीर्थयात्रा

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

ततो जिगमिषन्तस्ते वृष्ण्यन्धकमहारथाः ।
सान्तःपुरास्तदा तीर्थयात्रामैच्छन् नरर्षभाः ॥७॥

तत्पश्चात् पुरुषश्रेष्ठ वृष्णि और अन्धक महारथियों ने अपनी स्त्रियों के साथ उस समय तीर्थयात्रा करने का विचार किया। अब उन में द्वारका को छोड़कर अन्यत्र जाने की इच्छा हो गई थी।

ततः सैनिकवीश्च निर्ययुर्नगराद्बहिः ।
यानैरश्वैर्गजैश्चैव श्रीमन्तस्तिग्मतेजसः ॥९॥

इसके पश्चात् सैनिकों के समुदाय जो शोभासम्पन्न और प्रचण्ड तेजस्वी थे। रथ, घोड़े और हाथियों पर सवार होकर नगर से बाहर निकले।

ततो भोज्यं च भक्ष्यं च पेयं चान्धकवृष्णयः ।
बहु नानाविधं चक्रुर्मद्यं मांसमनेकशः ॥८॥

अब अन्धकों और वृष्णियों ने नाना प्रकार के भक्ष्य, भोज्य पेय मद्य और भांति-भांति के मांस तयार कराये।

ततः प्रभासे न्यवसन् यथोद्दिष्ट यथागृहम् ।
प्रभूतभक्ष्यपेयास्ते सदारा यादवास्तदा ॥१०॥

उस समय स्त्रियों सहित समस्त यदुवंशी प्रभासक्षेत्र में पहुँचकर अपने अपने अनुकूल घरों में ठहर गये। उनके साथ खाने-पीने को बहुत सामग्री थी।

यादवों के उत्पात

ब्राह्मणार्थेषु यत्सिद्धमन्नं तेषां महात्मनाम् ।
तद् वानरेभ्यः प्रददुः सुरागन्धसमन्वितम् ॥

उन महामनस्वी यादवों के यहां ब्राह्मणों को जिमाने के लिए जो अन्न पकाकर तैयार किया गया था उसमें मदिरा मिलाकर उसके गन्ध से युक्त भोजन को उन्होंने वानरों को बाँट दिया।

ततस्तूर्यशताकीर्णं नटनर्तकसङ्कुलम् ।
प्रावर्तत महापानं प्रभासे तिग्मतेजसाम् ॥१५॥

तदनन्तर वहां सैकड़ों प्रकार के बाजे बजने लगे। सब ओर नटों और नर्तकों का नृत्य होने लगा। इस प्रकार प्रभासक्षेत्र में प्रचण्ड, तेजस्वी यादवों का यह महापान (मद्यपान) आरम्भ हुआ।

कृष्णस्य सन्निधौ रामः सहितः कृतवर्मणा ।
अपिबद्युयुधानश्च गदो बभ्रुस्तथैव च ॥१६॥

श्रीकृष्ण के पास में ही कृतवर्मा, बलराम, सात्यकि गद और बभ्रु मद्य पीने लगे। योगिराज श्रीकृष्ण जी से भी भय लज्जा जाती रही। नशे में पागल हो गये और—

ततः परिषदो मध्ये युयुधानो मदोत्कटः ।
अब्रवीत् कृतवर्माणमवहास्यावमान्य च ॥१७॥

मद्य पीते पीते सात्यकि मद से उन्मत्त हो उठा और यादवों की उस सभा में कृतवर्मा का उपहास तथा अपमान करते हुए इस प्रकार कहा—

कः क्षत्रियोऽहन्यमानः सुप्तान् हन्यान्मृतानिव ।
तन्न मृष्यन्ति हार्दिक्य ! यादवा यत्त्वया कृतम् ॥१८॥

हार्दिक्य ! तेरे अतिरिक्त कौन दूसरा ऐसा क्षत्रिय होगा, जो अपने ऊपर आघात न होते हुए भी रात में मुर्दों के समान अचेत पड़े (सोते हुए) मनुष्यों का हत्या करेगा। तूने जो अपराध किया है, उसे यदुवंशी कभी क्षमा न करेंगे।

इत्युक्ते युयुधानेन पूजयामास तद्वचः ।
प्रद्युम्नो रथिनां श्रेष्ठो हार्दिक्यमवमान्य च ॥१९॥

सात्यकि के ऐसा कहने पर रथियों में श्रेष्ठ प्रद्युम्न ने कृतवर्मा का तिरस्कार कर सात्यकि के उपर्युक्त वचन की प्रशंसा एवं अनुमोदन किया।

फिर कृतवर्मा ने अति कुपित होकर सात्यकि का अपमान किया और कहा—

भूरिश्रवाश्छिन्नबाहुर्युद्धे प्रायगतस्त्वया ।
वधेन सुनृशंसेन कथं वीरेण पातितः ॥२१॥

अरे युद्ध में भूरिश्रवा की भुजा कट गई थी और वे मरणान्त उपवास का निश्चय करके पृथ्वी पर बैठ गये थे, उस अवस्था में तूने वीर कहलाकर भी उनकी क्रूरतापूर्ण हत्या क्यों की ?

इससे भगवान् कृष्ण को भी क्रोध आ गया। उसी समय सात्यकि ने सत्राजित के पास जो स्यमन्तक मणि थी, उसकी कथा सुनाई अर्थात् मणि के लोभ से ही कृतवर्मा ने सत्राजित का वध किया था। इससे सत्यभामा क्रोध से पागल हो श्रीकृष्ण की गोद में गिर पड़ी। इससे श्रीकृष्ण जी बड़े कुपित हो उठे, फिर सात्यकि ने श्रीकृष्ण के पास से दौड़ कर "शिरः क्रुद्धश्चिच्छेद कृतवर्मणः" क्रोधित हो, खड्ग से कृतवर्मा का शिर काट लिया ॥२८॥ और फिर औरों का भी वध करने लगे श्रीकृष्ण जी उसको रोकने के लिए दौड़े किन्तु भोज-अन्धक वीरों ने एकमत होकर सात्यकि को चारों ओर से घेर लिया। श्रीकृष्ण जी महाविनाश का समय जान कुपित नहीं हुए।

ते तु पानमदाविष्टाश्चोदिताः कालधर्मणा ।
युयुधानमथाभ्यघ्नन्नुच्छिष्टैर्भाजनैस्तदा ॥३२॥

वे सबके सब मदिरापान जनित मद के आवेश से उन्मत्त हो उठे थे। इधर कालधर्मा मृत्यु भी प्रेरित कर रहा था। इसलिये वे झूठे बर्तनों की सात्यकि पर आघात (चोट) करने लगे। सात्यकि को बचाने के लिए रुक्मिणीनन्दन प्रद्युम्न बीच में कूद पड़े। दोनों वीर बड़े परिश्रम से घोर युद्ध करते रहे।

स भोजैः स संयुक्तः सात्यकिश्चान्धकैः सह ।
व्यायच्छमानौ तौ वीरौ बाहुद्रविणशालिनौ ॥३३॥

प्रद्युम्न भोजों से भिड़ गये और सात्यकि अन्धकों के साथ जूझने लगे। अपनी भुजाओं के बल से सुशोभित होने वाले वे दोनों वीर बड़े परिश्रम के साथ विरोधियों का सामना करते रहे।

बहुत्वान्निहतौ तत्र उभौ कृष्णस्य पश्यतः ।
हतं दृष्ट्वा च शैनेयं पुत्रं च यदुनन्दनः ॥३५॥
जघान कृष्णस्तांस्तेन ये ये प्रमुखतोऽभवन् ।

परन्तु विपक्षियों की संख्या बहुत थी, इसलिये वे दोनों श्रीकृष्ण के देखते-देखते उनके हाथ से मार डाले गये। सात्यकि और और अपने पुत्र को मारा गया देख श्रीकृष्ण जी ने जो जो प्रमुख व्यक्ति उनके सम्मुख आये थे, वे सब मार डाले। वे परस्पर सब कट मरे।

अवधीत् पितरं पुत्रः पिता पुत्रं च भारत ।
मत्ताः परिपतन्ति स्म योधयन्तः परस्परम् ॥४१॥

वे मद्य के नशे में पागल होकर एक दूसरे पर ऐसे पिल पड़े कि शत्रु मित्र की पहचान भी न रही। यहां तक कि मद्य के मद में पिता ने पुत्र को और पुत्र ने पिता को मार डाला।

साम्बं च निहतं दृष्ट्वा चारुदेष्णं च माधवः ।
प्रद्युम्नं चानिरुद्धं च ततश्चुक्रोध भारत ॥४४॥
गदं वीक्ष्य शयानं च भृशं कोपसमन्वितः ।
स निःशेषं तदा चक्रे शार्ङ्गचक्रगदाधरः ॥४५॥

भारत ! श्रीकृष्ण ने जब अपने पुत्र साम्ब, चारुदेष्ण और प्रद्युम्न को तथा पोते अनिरुद्ध को भी मारा गया देखा, अपने छोटे भाई गद को रणशय्या पर पड़ा देखा, तब उनकी कोपाग्नि भड़क उठी, फिर शार्ङ्ग, धनुष, चक्र और गदा धारण करने वाले श्रीकृष्ण ने उस समय शेष रहे समस्त यादवों का संहार कर डाला। फिर बभ्रु और दारुक श्रीकृष्ण जी को साथ ले बलराम जी की खोज में चल पड़े। कुछ दूर चलने पर बलराम जी को एक वृक्ष के नीचे एकान्त में बैठे ध्यान करते

(शेष पृष्ठ ४ पर)

कुछ तड़प कुछ झड़प

लेखक—प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर

केरल में वैदिक धर्मप्रचार

१९६४ ई० से आचार्य नरेन्द्र भूषण जी केरल में वैदिक धर्म प्रचार का पवित्र कार्य कर रहे हैं। इन बीस वर्षों में उन्होंने धर्म रक्षा तथा जाति रक्षा के पवित्र कार्य को करते हुए अनेक प्रकार की असह्य यातनाएं सहन की हैं। पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के आशीर्वाद से हम कुछ मित्र उनको थोड़ा बहुत सहयोग देते चले आ रहे हैं। कार्य की नीति व शैली की दृष्टि से आचार्य नरेन्द्र भूषण जी ने इस काल में कई भूलें की होंगी परन्तु वह अपनी धुन व लग्न से अपने प्रदेश में आर्य समाज की एक धाक जमा चुके हैं। संगठन की दृष्टि से अभी हमारा सिर मुंह वहां भले ही नहीं बन पाया तथापि आर्य विचार धारा बड़ी शान से फैल रही है।

वर्ष १९८३ ई० में नरेन्द्र जी ने एक सहस्र विधर्मी भाई बहिनों को शुद्ध किया। इस वर्ष भी कई बड़ी बड़ी शुद्धियां हो चुकी हैं। फरवरी मास में ही ३६० व्यक्ति शुद्ध हुए। इस कार्य में चण्डीगढ़ के श्री केसर दास जी आर्य और सैक्टर २२ आर्यसमाज के कई सज्जन विशेष सहयोग करते हैं।

मद्रास नगर में एक 'सद्ग्रंथ मेला' रखा गया। आर्यजगत् को यह समाचार देते हुए मुझे गर्व व हर्ष होता है कि इस मेले के प्रबन्धकों ने इसकी सफलता के लिए आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को विशेष रूप से धन्यवाद दिया है। इस मेले में बीसियों प्रकाशकों व संस्थाओं ने अपना साहित्य भेजा उत्तर भारत में आर्यों को इसका पता तक न लगा। केरल से भी केवल वैदिक मिशन केरल का साहित्य वहां आचार्य नरेन्द्र भूषण जी ने पहुंचा दिया। वैसे केरल से भी और किसी संस्था का साहित्य वहां नहीं था। आर्यसमाज की शान नरेन्द्र भूषण जी के पुरुषार्थ से बन गई प्रबन्धकों ने जो पत्र नरेन्द्र भूषण जी को लिखा उसे पढ़कर मैं गद्गद् हो गया।

केरल में आजकल उत्सव हो रहे हैं। प्रत्येक बड़े धार्मिक समारोह में प्रत्येक बड़े मठ और मन्दिर में आचार्य नरेन्द्र भूषण जी को आमन्त्रित किया जाता है। उन्होंने गत मास लिखा था कि मैं निरन्तर यात्रा पर हूं।

हमारे वैदिक मिशन ने दो कार्य और भी आरम्भ कर दिये हैं। पत्राचार द्वारा संस्कृत परीक्षाएं तथा पत्राचार द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार व परीक्षाएं। आशा करनी चाहिए कि आचार्य नरेन्द्र भूषण जी जिन्हें एक मलयाली विद्वान् ने A man of miracles 'चमत्कारी पुरुष' की संज्ञा दी है—इस पवित्र प्रयास में भी सफल होंगे। आर्य जनता जितना आर्थिक सहयोग देगी उतना ही कार्य हम कर पायेंगे।

महर्षि का बलिदान—

प्रि० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित (अब स्वामी विद्यानन्द जी) ने प्रि० श्रीराम शर्मा का झण्डा उठाया है। वह अपने हठ को नहीं छोड़ेंगे। हम उन्हें यह दुराग्रह छोड़ने के लिए अब कुछ न कहेंगे, परन्तु आर्य जनता व समस्त ऋषि भक्तों से अनुरोध करेंगे कि पूरे दल बल से वह सत्य की रक्षा करें। महर्षि के बलिदान के ऐतिहासिक तथ्य के सम्बन्ध में किसी को विषैला प्रचार करने का दुःसाहस न करने दें। पंजाब की स्थिति ऐसी बन चुकी है कि पता नहीं कब किस पर प्रहार हो। हम जीते रहे तो ऐसे सब लोगों से निपट लेंगे अन्यथा आर्य जनता ऋषि के विषपान के बारे ऐसे दुराग्रही महानुभावों के भ्रान्त प्रचार के बारे तीन विशेष तथ्य नोट करलें—

(१) महर्षि का पता करने जो सबसे पहला आर्य जोधपुर गया था उसका नाम श्री जेठमल सोढा था। उसने "दयानन्द दिग्विजयी स्वामी" नाम से एक काव्य ऋषि जीवन पर रचा था। उसमें उसने स्पष्ट लिखा था कि ऋषि जी के रोम रोम में विष प्रविष्ट कर गया। यह काव्य मेरे पास है। यही ऋषि जीवन पर प्रथम हिन्दी काव्य है। जेठमल सरीखे सत्य पर समर्पित आर्य पुरुष की साक्षी से बड़ी साक्षी क्या हो सकती है?

(२) महाराजा प्रतापसिंह ने डा० दीवानचन्द जी को पं० लेखराम जी वाला चरित्र छपने से पूर्व कहा और सारा जीवन यह कहता रहा कि दुख है कि ऋषि को विष हमारे जोधपुर में दिया गया। यह कथन मैं दिखा सकता हूं। जोधपुर अजमेर, उदयपुर के सब तत्कालीन इतिहासकारों ने तभी ऐसा कहा व लिखा व माना।

दीक्षित जी की यह बात सर्वथा बेतुकी है कि तब पत्रों में कहां छपा कि विष दिया गया। मैं बार बार दिखा चुका हूं कि 'शुभचिन्तक' में छपा था। आर्यो! और नोट कर लें कि 'आर्य समाचार' मेरठ में तभी छप गया कि ऋषि को मारा गया। विष दिया गया। मैंने 'सार्वदेशिक' अभी एक लेख भेजा था सम्भवतः उसमें भूल से 'आर्यसमाचार' की बजाय 'आर्य दर्पण' लिखा गया। सुविज्ञ पाठक यह नोट कर लें। इलाज भी उलट पुलट किये गये। षड्यन्त्रकारियों ने क्या किया इसका वर्णन क्या करें। जोधपुर में एक तानाशाही राज था, जिसको धर्म कर्म में रुचि नहीं थी। यह जो लिखा व कहा जाता है कि प्रतापसिंह ऋषि भक्त था—काला झूठ है। वह कपटी था। अंग्रेज भक्त था। उसने भास्करानन्द जैसे लफंगे से यज्ञोपवीत लिया था, ऋषि से तो यज्ञोपवीत भी न लिया इसी लफंगे को अमरीका में प्रचार करने भेजा। मैं पूरे दायित्व से लिखता हूं और सत्य का प्रकाश करता हूं प्यारे लेखराम बलिदानी के पवित्र रक्त को स्मरण करते हुए लिखता हूं कि भास्करानन्द लफंगा था ऐसे लफंगे जिस राज के धर्म गुरु हों, जहां प० लेखराम जी जैसे दिल जले धर्मवीर का पीछा गुप्तचर करें—उस राज्य के बारे में आप क्या कहेंगे? यह भी झूठ है कि प्रतापसिंह ने ही सर्वप्रथम राज्य में स्वदेशी गणवेश चालू की। मैंने प्रतापसिंह के प्रशासन संभालने से पूर्व का एक ग्रुप फोटो (राज्य के उच्च अधिकारियों व सैनिकों का) जोधपुर में श्री भैरोंसिंह जी आर्य के पास देखा है। उसमें सब जन स्वदेशी वेश में थे। प्रतापसिंह बाद में ऋषि को विष दिये जाने पर दुःख प्रकट करता था परन्तु इसने किसी को दण्डित न किया। इसको सब पता था कि षड्यन्त्र में कौन कौन भागीदार है। आर्यसमाचार मेरठ का वह अंक समय आने पर दिखा दूंगा।

वीर चाहिए—विप्र चाहिए

मैंने कुछ मेरठ शताब्दी पर कहा था कि आर्यसमाज को वीर चाहिए विप्र चाहिए। देश जाति को सर्वनाश से बचाना है तो यह Public School और Model School न बचा सकेंगे। आर्य वीर दल, आर्य युवक समाजें, आर्य कुमार सभाएं स्थान स्थान पर स्थापित करें। अधिक से अधिक लोग प्रचार की लग्न से घरबार का त्याग करें। बिना तपस्या व बलिदान के कुछ न बनेगा। उठो! चेतो।

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है, परन्तु कुछ महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः विवश होकर उनके पास आगामी अंक से सर्वहितकारी भेजना बन्द करना पड़ रहा है।

**व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक**

मई में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव तथा शराबबन्दी सम्मेलन

हरयाणा में मई मास में निम्नलिखित आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव हो रहे हैं। इनमें शराबबन्दी सम्मेलन तथा शराब के ठेकों पर धरने की तैयारी के लिए कार्यकर्ताओं की बैठकें भी आयोजित की जावेंगी। इन अवसरों पर आर्यसमाज के विद्वानों के अतिरिक्त सभा के अधिकारी एवं उपदेशक, भजनीक पधारेंगे।

आर्यसमाज रेवाडी जिला महेन्द्रगढ	५, ६ मई
,, दयालपुर करनाल	४, ५, ६ ,,
,, लोहारू जिला भिवानी	११, १२, १३ ,,
,, नांगल ,,	१४ से १६ ,,
,, आर्यनगर (बाढड़ा) जिला भिवानी	१९, २० ,,
,, प्रभाना मोहल्ला रोहतक	१८ से २० ,,
आर्य वीर दल रोहतक	२५ से २७ ,,
आर्यसमाज सेक्टर ३२ चण्डीगढ	२५ से २७ ,,
,, गन्नौर शहर जिला सोनीपत	२५ से २७ ,,
,, बराौन्दी जिला अम्बाला	२५ से २७ ,,
,, फूसगढ़ जि० करनाल	२५ से २७ ,,

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज नारनौल जि० महेन्द्रगढ

प्रधान—श्री हरिश्चन्द आर्य, मन्त्री—महाशय मोतीराम, कोषाध्यक्ष—लाला अजुध्याप्रसाद, उपप्रधान—डा० मूलचन्द, उपमन्त्री—मास्टर छाजूराम

आर्यसमाज जगाधरी जि० अम्बाला

प्रधान—श्री सुभाष पाहूजा, उपप्रधान—श्री सुन्दरलाल, श्री सत्य प्रकाश मित्तल, मन्त्री—बैजनाथ दुग्गल, उपमन्त्री—इन्द्रसेन गुप्ता, श्री त्रिलोकचन्द रुहेला, कोषाध्यक्ष—श्री देशपाल नागपाल, प्रचारमन्त्री—श्री जगदीशलाल मदान, पुस्तकाध्यक्ष—श्री हरिदत्त महता, लेखा-निरीक्षक—श्री लक्ष्मीदास आर्य

आर्य कन्या पाठशाला जगाधरी की उपसमिति

प्रधान—श्री सुभाष पाहूजा, प्रबन्धक—श्री विजयसिंह शास्त्री, उपप्रबन्धक—श्रीमती देवराज मल्ला, कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्रकुमार मित्तल।

आर्यसमाज लोपों जिला अम्बाला

प्रधान—श्री ओमप्रकाश, उपप्रधान—श्री रणवीरसिंह, मन्त्री—श्री बादीराम, उपमन्त्री—श्री धर्मपाल, कोषाध्यक्ष—श्री मनोहरलाल प्रचारमन्त्री—पं० मदनलाल, पुस्तकाध्यक्ष—बनारसीदास आर्य।

आर्यसमाज मन्दिर (किश्नपुरा) मण्डी गन्नौर द्वारा आदर्श विवाह सम्पन्न

आर्यसमाज मन्दिर (किश्नपुरा) मण्डी गन्नौर जिला सोनीपत की ओर से श्री हरिश्चन्द्र बत्रा मन्त्री द्वारा श्री अशोककुमार सुपुत्र श्री स्वर्गीय रामजीदास एवं आयुष्मति मोना कुमारी सुपुत्री श्री विशनप्रकाश का शुभ विवाह संस्कार सम्पन्न कराया गया। यह एक अन्तर्जातीय आदर्श विवाह १५-४-८४ को हुआ जिसमें किसी प्रकार का कोई दहेज नहीं लिया गया। विवाह पश्चात् एक चाय पार्टी लड़की वालों की तरफ से दी गई थी जिसमें बहुत कम राशि व्यय की गई। तरुण संगम गन्नौर के संयोजक श्री हरिमोहन पाराशर ने भी इस विवाह को सफलतापूर्वक पूरा योगदान दिया।

योग से बरसात

रोहतक, २५ अप्रैल (जनसत्ता) जिले के अमराना गांव के प्राथमिक शिक्षक रामनारायण ने दावा किया है कि वे योग से बारिश करवा देंगे, लेकिन इस पर पांच हजार रुपए खर्च होंगे।

वे केवल योग बल से पानी बरसा ही नहीं सकते बल्कि रोक भी सकते हैं। इस पर केवल दो रु० रोज का खर्च ही आएगा।

श्री रामनारायण ने दावा किया है कि अगर पानी बरसना और रुकना नहीं हुआ तो वे पैसे वापस कर देंगे। उन्होंने कहा कि १४ फरवरी से योग साधना शुरू किया था और दावा किया था कि २० फरवरी तक बारिश होगी। आकाशवाणी ने घोषणा की थी कि २७ फरवरी तक बारिश नहीं होगी। उन्होंने कृषि मन्त्री राव वीरेन्द्रसिंह को भी यह लिखकर बता दिया था। बारिश २० फरवरी को हुई थी।

श्री रामनारायण ने दावा किया है कि वे वेदों के ज्ञाता हैं। जिस किसी को भी पानी चाहिए या पानी रुकवाना चाहे वह उनसे सम्पर्क कर सकता है।

(पृष्ठ ३ का शेष)

हुए देखा। तत्पश्चात् श्रीकृष्ण ने दारुक को अर्जुन के पास हस्तिनापुर भेज दिया और बभ्रु को स्त्रियों की रक्षार्थ द्वारका जाने का आज्ञा दी। बभ्रु मदिरा के मद से आतुर और भाई-बन्धुओं के वध से शोक पीड़ित भी था। एक व्याध के बाण के अकस्मात् आघात से उसकी मृत्यु हो गई। श्रीकृष्ण स्त्रियों की सुरक्षा का प्रबन्ध करने के लिए द्वारका चले गये। वहां सब व्यवस्था अपने पूज्य पिता वसुदेव को सौंप उनके चरणों का स्पर्श कर वन को चल पड़े। इससे पूर्व स्त्रियों तथा बालकों को सान्त्वना देकर शान्त किया। जंगल में जाकर बलराम जी से मिलने के लिए चले किन्तु बलराम जी परमधाम को सिधार चुके थे। तत्पश्चात् वे भी वन में विचरने लगे।

एक दिन श्रीकृष्ण जी योगयुक्त होकर सो रहे थे। उसी समय भूल से व्याध के बाण से पैर में आघात हुआ फिर श्रीकृष्ण जी महाराज भी परमधाम चले गये।

इस प्रकार यदुवंश का सर्वनाश मद्य के कारण हुआ। उस नाश का वर्णन वीर अर्जुन स्वयं महर्षि व्यास के सन्मुख इस प्रकार करता है—

मौसले वृष्णिवीराणां विनाशो ब्रह्मशापजः।
बभूव वीरान्तकरः प्रभासे लोमहर्षणः ॥८॥
एते शूरा महात्मानः सिंहदर्पा महाबलाः।
भोजवृष्ण्यन्धका ब्रह्मन्नन्योऽन्यं तैर्हतं युधि ॥९॥
गदापरिघशक्तीनां सहाः परिघबाहवः।
त एरकाभिर्निहता पश्य कालस्य पर्ययम् ॥१०॥
हतं पञ्चशतं तेषां सहस्रं बाहुशालिनाम् ॥११॥
निधनं समनुप्राप्तं समासाद्येतरेतरम्।
पुनः पुनर्न मृष्यामि विनाशममितौजसाम् ॥१२॥

मौसलपर्व ८ वां अध्याय।

ब्राह्मणों के शाप से मौसल युद्ध में वृष्णिवंशी वीरों का विनाश हो गया। बड़े बड़े वीरों का अन्त कर देने वाला वह रोमाञ्चकारी युद्ध प्रभास क्षेत्र में घटित हुआ था।

ब्राह्मन्! भोज वृष्णि और अंधक वंश के ये महामनस्वी शूरवीर सिंह के समान दर्पशाली और महाबलवान् थे, परन्तु वे गृह युद्ध में एक दूसरे के द्वारा परस्पर मार डाले गये। जो गदा, परिघ और शक्तियों की मार सह सकते थे, वे परिघ के समान सुदृढ बाहुओं वाले यदुवंशी वीर क्षत्रिय एरका (पटेरा) तृण विशेष के द्वारा मारे गये, यह समय का उलट-फेर तो देखिये।

(क्रमशः)

नारी संसार

माता-निर्माता

यशपाल आर्यबन्धु, प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज मुरादाबाद

माता को निर्माता कहा गया है किन्तु केवल जन्म देकर ही वह निर्माता नहीं बन सकती क्योंकि शारीरिक निर्माण उसके उदर में होता हुआ भी उसके द्वारा नहीं हो रहा होता। यदि वह ही उदरस्थ बच्चे का निर्माण कर रही होती तो उसे इस बात का भी पूर्ण ज्ञान होना चाहिए था कि भीतर क्या बन रहा है और कैसे बन रहा है? गोरा बन रहा है या काला। लड़का बन रहा है या लड़की? पर वह इन सब से सर्वथा अनभिज्ञ होती है। फिर माता निर्माता कैसी? वस्तुतः निर्माण संस्कारों के निर्माण से माता निर्माता होती है। पर जो माता निर्माण की विधि न जाने वह निर्माता कैसे हो सकती है? सोचें तो सही आप अपना बहुमूल्य स्वर्ण लेकर सुनार के पास ही जाते हैं, लोहार के पास नहीं जाते। बहुमूल्य वस्त्र लेकर दर्जी के पास जाते हैं, चर्मकार के पास नहीं। ऐसा क्यों? इसलिए कि स्वर्णकार ही आभूषण बनाने की विधि जानता है, लोहार नहीं। दर्जी ही कपड़ा सिलने की विधि जानता है, चर्मकार नहीं। तात्पर्य यह है कि जो विधि जानता है वही निर्माण कर सकता है। पर यहां बड़ी विचित्र बात है। कोई विधि जाने न जाने उसे निर्माण करना है। फिर एक अनाड़ी एवं अनजान से जैसा निर्माण हो सकता है, वैसा हो तो होगा और हो भी यही रहा है। क्या निर्माण करना है यह भी तो कोई नहीं बताता। आप स्वर्ण ले जाकर जब स्वर्णकार को देते हैं तो यह भी बता देते हैं कि हमें अमुक-अमुक आभूषण बनवाने हैं और जब कपड़ा दर्जी के पास ले जाते हैं तो उसे भी बता दिया जाता है कि अमुक अमुक वस्तु सिलानी हैं पर संतति निर्माण का तो भगवान् ही मालिक है। तभी किसी कवि ने ठीक ही कहा है कि—

सभी कुछ हो रहा है इस तरक्की के जमाने में
मगर यह क्या गजब है आदमी इन्सान नहीं होता।

दुःख है आज पशु पक्षियों की नसलें तथा फूलों फलों की किस्में सुधारने की तो बढ़-चढ़ कर योजनायें बन रही हैं, पर मानव को मानव बनाने की योजना कहीं नहीं बन रही। जबकि वेद का सुस्पष्ट आदेश है कि मनुर्भव अर्थात् मनुष्य बन। वेद का यह आदेश पशु पक्षियों के लिए तो है नहीं, और न ही पशु पक्षी मनुष्य बन ही सकते हैं। फिर मानव का मानव बनने का यह आदेश कैसा? स्पष्ट है कि मनुष्य का चोला ग्रहण कर लेने मात्र से कोई मानव नहीं बन जाता। उसे संस्कारों से मानव बनाना पड़ता है। तभी वेद का यह आदेश सार्थक सिद्ध होता है। माता को यही करना होता है। दुःख है कि उसे इस बात का ज्ञान ही नहीं कि मुझे अपनी सन्तान को एक सच्चा इन्सान बनाना है एक श्रेष्ठ मानव बनाना है। दूसरे शब्दों में एक आर्य बनाना है। यदि उसे किसी प्रकार इसका बोध हो भी जाय तो जब तक श्रेष्ठ मानव के निर्माण की यथार्थ विधि को नहीं जान जाती वह श्रेष्ठ मानव का निर्माण कर ही नहीं सकती। अतः आवश्यकता इस बात की है कि माता को माता बनने से पूर्व अनुभवी विदुषी मातायें मानव निर्माण की प्रक्रिया एवं विधि का समुचित ज्ञान करा दें।

मानव का वास्तविक निर्माण संस्कारों के द्वारा ही हुआ करता है और संस्कार भी सर्वाधिक माता के द्वारा बच्चे पर पड़ा करते हैं। यह एक सर्वसम्मत बात है। सत्य तो यह है कि १६ संस्कार मानव निर्माण की एक शतवर्षीय अनुपम योजना है। वैदिक संस्कृति में इसका महत्व इसी से स्पष्ट है कि मानव जीवन का कोई भी काल संस्कार शून्य नहीं है। गर्भ से ही मनुष्य संस्कारों में पलता है, शैशव से यौवन तक संस्कारों में पनपता है और प्रौढ़ावस्था से अन्तिम अवस्था तक इन में ही सन्निहित होता है। संस्कारों से जीवन में आध्यात्मिकता का संचार, जीवन के प्रति आस्था और धर्म के लिए नई प्रेरणायें मिलती हैं। संस्कार अति प्राचीन काल से ही भारतीय पारिवारिक जीवन की आधारशिला रहे हैं पर आज के युग में इनका लोप हो ही गया है जो मानव के निर्माण में बहुत बड़ी बाधा बनकर खड़ा हुआ है।

मानव के लिए जिन सत्संकल्पों, सत्प्रेरणाओं एवं सद्भावनाओं की आवश्यकता हुआ करती है, उन्हीं को मानव मन में वपन करने का नाम संस्कार है। संस्कार शब्द स्वतः ही किसी कृत्य को सुयोग्य ढंग से सम्पादित होने का द्योतक है। यह शब्द बता रहा है कि कोई वस्तु पहले विकृत अवस्था में थी जिसका परिष्कार एवं संस्कार किया गया है। संस्कारों के सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द का कथन है कि "मनुष्यों के शरीर और आत्मा के उत्तम होने के लिए निषेक अर्थात् गर्भाधान से लेके श्मशानान्त अर्थात् अन्त्येष्टि मृत्यु के पश्चात् मृतक शरीर की विधि पूर्वक दाह करने पर्यन्त १६ संस्कार होते हैं।" इतना ही नहीं महर्षि जी तो यहां तक लिखते हैं कि जैसे सब पदार्थों को उत्कृष्ट करने की विद्या है इसी प्रकार सन्तान को उत्कृष्ट करने की यही विद्या है। दुःख है आज लोग इस विद्या को भूले बैठे हैं। इससे सर्वथा अनभिज्ञ हैं। फिर भला सन्तान का निर्माण कैसे कर सकते हैं? अतः आवश्यकता इस बात की है कि सन्तति निर्माण की कला को जाना जाये।

जाति वैसी ही बना करती है जैसी कि मातायें उसे बनाना चाहती हैं। फ्रांसीसी सम्राट नेपोलियन बोनापार्ट का यथार्थ कथन था कि—Nations are what mothers make them. Give me good mothrs and I shall give you a good nation. अर्थात् जाति या राष्ट्र वैसे ही बना करते हैं जैसी मातायें उसे बनाती हैं। अतः तुम मुझे अच्छी मातायें दो, मैं तुम्हें अच्छा राष्ट्र दूंगा। वस्तुतः राष्ट्र के निर्माण में माता की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका है और वह अपनी भूमिका तभी निभा सकती है कि जब माता बनने से पूर्व उसे उसकी सम्पूर्ण प्रक्रिया एवं विधि का सम्यक् ज्ञान करा दिया जाये। इसके लिए उसका सुशिक्षिता होना परम आवश्यक है। इसीलिए आर्यसमाज स्त्री शिक्षा पर इतना अधिक बल देता है। पर स्त्री की शिक्षा उसके विशेष दायित्व को दृष्टि में रखकर दी जानी चाहिये। अकबर इलाहाबादी का यथार्थ कथन है कि—तालीम दुख्तरां जरूरी तो है मगर, खतुने खानां हो महफिल की परी न हो क्या आज की नारी अपने इस दायित्व को पहचानेगी?

महर्षि दयानन्द सरस्वती छात्रावास

उपरोक्त छात्रावास का शिलान्यास चौ० कटारसिंह छोकर वित्त मन्त्री हरयाणा ने १४-४-८४ को गुरुकुल ढिकाडला (करनाल) में किया। मन्त्री महोदय ने एक लाख दस हजार रुपये अनुदान की भी घोषणा की और गुरुकुल में प्रगति होने की सराहना की। संचालक

गुरुकुल ढिकाडला करनाल

आर्यसमाज की गतिविधियां—

१—आर्यसमाज कोसली जिला रोहतक का प्रस्ताव

हमें पता चला है कि ग्राम वालावास जिला हिसार में शराब काठेका खोला गया जिससे पचायत व इलाका नाराज हैं। हरयाणा सरकार तथा भारत सरकार को आर्यसमाज क्षत्र कोसली को तरफ से चेतावनी दी जाती है कि अगर ठेका नही हटाया तो आर्यसमाज कोसलो को कोई और कदम उठाना पडेगा जिसमें हम सभी आर्य बन्धु बड़े से बड़ा बलिदान करने के लिए तैयार हैं।

मन्त्री अशोककुमार आर्य कोसली

२—आर्यसमाज नारनौल (महेन्द्रगढ़)

ज्ञात हुआ है कि ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका खोला गया है। इस ठेके से बालावास तथा निकट के ग्राम नलवा कवारो आदि पर बुरा प्रभाव पड भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। जबकि गांव की पंचायत तथा सामाजिक सस्थाओं ने प्रस्ताव पास कर बन्द कराने को प्रार्थना है तथा शिष्ट मण्डल सम्बन्धित अधिकारियों से भी मिला है, पर अभी तक इस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई है। आर्यसमाज नारनौल इस घिनोने कृत्य पर गहरा दुःख प्रकट करता है और आर्यसमाज नारनोल की साधारण सभा हरयाणा सरकार से सानुरोध प्रार्थना करती है कि इस ठेके को तुरन्त रद्द करने की कृपा करें।

३—आर्यसमाज कंवारी जिला हिसार

१८-४-८४ को आर्यसमाज कंवारी की बैठक प्रधान श्री अत्तरसिंह आर्य की अध्यक्षता में हुई जिसमें ग्राम बालावास में खुले शराब के ठेके के विरुद्ध विरोध प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया। हरयाणा सरकार को चाहिये कि शराब का ठेका तुरन्त बन्द कर देवे इसी में जनता तथा सरकार को भलाई है।

आसन जिला रोहतक में शराब का ठेका समाप्त

आसन गांव की पंचायत के प्रयत्न करने से शराब का ठेका समाप्त होगया है। इसमें विशेषकर सरपंच श्री सरुपलाल जी आर्य व सुखदेव शास्त्री ने बड़ा प्रयत्न करके इसे बन्द करवाया।

आर्यप्रतिनिधि सभा राजस्थान का अधिवेशन संपंन

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान जयपुर का वार्षिक अधिवेशन दिनांक १४ व १५ अप्रैल को श्री छोटूसिह जी एडवोकेट की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। जयपुर में हुए इस अधिवेशन मे १८५ आर्य प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

१५ अप्रैल को साधारण सभा में प्रतिनिधि सभा राजस्थान का निर्वाचन हुआ, जिसमे सर्वसम्मति से श्री छोटूसिह एडवोकेट अध्यक्ष, सर्वश्री दत्तात्रेय वाब्ले, श्री आचार्य भगवानदेव, श्री नेतोराम शर्मा उपाध्यक्ष व श्री जेठमल आर्य मन्त्री और श्री हेतराम आर्य कोषाध्यक्ष चुने गए।

टंकारा उपदेशक विद्यालय में प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द ट्रस्ट द्वारा संचालित अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय मे विद्यार्थियों का प्रवेश १ से १५ जुलाई तक खुला रहेगा। अध्ययन काल ४ वर्ष का होगा, जिसकी समाप्ति पर 'सिद्धान्ताचार्य' का प्रमाण प्रपत्र प्रदान किया जाता है। प्रवेश पाने के लिए १० वी कक्षा का उत्तीर्ण होना अनिवार्य है। पत्र व्यवहार के लिए —महर्षि दयानन्द उपदेशक विद्यालय टकारा, राजकोट (गुजरात) से सम्पर्क करें।

पं० रामचन्द्र आर्य मुसाफिर का निधन

आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के प्रति अनन्य निष्ठावान तथा उपदेष्टा पं० रामचन्द्र आर्य का ८६ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनके निधन पर डी० ए० वी० स्कूल, विरानन्द स्कूल आदि में शोक सभाएं आयोजित कर शोक श्रद्धांजलियां व्यक्त को गई।

रोहतक में महात्मा हंसराज दिवस समारोह संपंन

रोहतक २२ अप्रैल को स्थानीय भगतसिंह पार्क में महात्मा हंसराज दिवस आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक के प्रधान स्वामी जीवनानन्द जो की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रो० रामविचार जी, प्रो० उत्तमचन्द जी शरर, प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी, श्री जयप्रकाश आर्य (पूर्व इमामबेतीया) तथा कु० सुनीता आर्या (ग्राम बोहर) के आर्य समाज तथा महात्मा हंसराज को जोवनी पर व्याख्यान हुए तथा श्री गुलाबसिंह राघव के मनोहर संगीत हुए।

इस अवसर एक प्रस्ताव द्वारा पंजाब मे का जा रहो निर्दोष हत्याओं को रोकने के लिए गुरुद्वारों में छापे मारकर अपराधियों को पकड़कर जेलों में बन्द किया जाये और देशद्रोहियों से निपटने का कार्य सेना को तुरन्त सौप दिया जाये।

रोहतक मे ८४ गांव की पंचायत

२२-४-८४ को डेहरो मोहल्ला की चोपाल में ८४ गांव की पंचायत हुई। पंचायत को अध्यक्षता कप्तान महतावसिंह ने की। इस अवसर पर सर्वसम्मति से निर्णय किए गये—

१—सगाई १ रुपये से होगो, २—१०० रुपये दान के होंगे, ३—१०० रुपये भात के होंगे, ४—११ रुपये पाटड़ा फेर के होगे, ५—११ रुपये बापे के होंगे, ६—विवाह शादी में बाजा बजाना शराब पीकर नाचने पर पूर्ण प्रतिबन्ध होगा, ७—अगली पिछलो की तिथलों को पूर्ण प्रतिबन्ध होगा। ८—विवाह शादी में फिजूल खर्ची जैसे सोफा सेट घड़ी साईकिल टेलीविजन आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगा दिया है।

पंचायत के नियम तोड़ने पर ११००० रुपये का जुर्माना और सामाजिक बहिष्कार किया जा सकता है।

गुरुकुलों की समस्याओं का एक ही हल है

(गतांक से आगे)

कमेटी के सदस्यों में से उस सज्जन ने जिन्होंने शंका की कि यहां की यज्ञशालाएं सूनी पड़ी रहती हैं इस समस्या का हल सुझाया। उन्होंने कहा कि गुरुकुल को विश्वविद्यालय की मान्यता उसकी अपनी विशेषता के कारण दी गई थी। यह विशेषता वहां से शुरू होती है जहां से बालक गुरुकुल में प्रवेश करता है। गुरुकुल का विद्यालय विभाग उसी प्रकार विश्वविद्याल का अंग हैं जिस प्रकार गुरुकुल का कालेज विभाग अंग है या जिस प्रकार पैर सम्पूर्ण शरीर का अंग है। गुरुकुल विश्वविद्यालय को दी जाने वाली ग्रान्ट के लिए आपको यह प्रयत्न करना चाहिए कि गुरुकुल का विद्यालय विभाग तथा कन्या गुरुकुल इन दोनों को गुरुकुल विश्वविद्यालय का अभिन्न अंग माना जाए ताकि दोनों विभागों को आर्थिक अनुदान से इतने उच्च-स्तर पर लाया जा सके जिस कारण आपके गुरुकुल के वातावरण में पढ़े हुए छात्रों तथा छात्राओं से सारा विश्वविद्यालय भर जाए और आपको बाहर से छात्र लेने की आवश्यकता न रहे, इसी प्रकार आप अपनी संस्कृति तथा अपनेपन का कायम रख सकते हैं, अन्यथा बाहर से छात्र भरती करते करते किसी समय आप नाममात्र के गुरुकुल कहलायेंगे, आपका अपनापन नष्ट हो जाएगा अनुदानों से आप एक बड़ी युनिवर्सिटी बन जायेंगे, परन्तु भीतर से खोखले हो जायेंगे।

इस सिलसिले में उन्होंने अलीगढ यूनिवर्सिटी तथा जामिया मिलिया का दृष्टांत दिया। ये संस्थायें स्वतन्त्र रूप से केन्द्र द्वारा शासित हैं। इनके विद्यालय विभाग भी केन्द्र द्वारा विश्वविद्याय को प्रदत्त अनुदानों से चलते हैं। इनकी अपनी अपनी विशेषता है जिसे प्रजातान्त्रिक राज्य में बनाये रखना राजनीतिक सिद्धान्त है। राजनीति में अल्पसंख्यक लोगों या सिद्धान्तों को राज्य से पूर्ण संरक्षण प्राप्त होता है। गुरुकुल पद्धति में लड़के लड़कियों का एक साथ रहकर पढ़ना निषिद्ध है। यह हमारे सिद्धान्त का अंग है इसमें किसी को दखल देने का अधिकार नहीं है। इसलिए अगर गुरुकुल के संचालक सिद्धान्त के आधार पर लड़कियों के गुरुकुल को एक अन्य परिसर में रखते हैं तो इस आधार पर उन्हें निरन्तर मिलने वाली सरकारी सहायता से वंचित नहीं किया जा सकता। गुरुकुल विश्वविद्यालय को सैद्धान्तिक रूप से एक 'युनिट' मानकर उसे विद्यालय विभाग, कन्या गुरुकुल विभाग तथा कालेज विभाग के तौर पर यूनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन से अथवा केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्रालय से अन्य केन्द्रीय विद्यालयों की तरह गुरुकुलीय पद्धति की शिक्षा तथा जीवन विधि को ध्यान में रखते हुए भरपूर आर्थिक सहायता मिलनी चाहिए ताकि भारत भर के गुरुकुल एक दृढ नींव पर खड़े होकर एक सूत्र में बन्ध सकें। हमें गुरुकुल विश्वविद्यालय के लिए हमारे फीडिंग गुरुकुल सहायक होंगे ताकि हमारा विश्वविद्यालय उन गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त छात्रों से इतना भर जाये कि हमें बाहर से छात्रों को लेने की आवश्यकता ही न रहे।

इस दिशा में गुरुकुल के संचालकों को सक्रियता से, तत्परता से तथा बार बार आवेदन पत्र देकर और मिलके जुलके से प्रयत्न करने की आवश्यकता है ताकि गुरुकुल शिक्षा-पद्धति शिक्षा के जगत् में अपना स्थिर स्थान बना सके। इस समस्या को हल करने के लिए साधिकार कमेटी बना देनी चाहिए जो सिर्फ इस समस्या को हल करे क्योंकि गुरुकुलों के अध्यापकों का असंतोष दूर करने का यही एक मार्ग है कि उन्हें विशेष पद्धति का अनुसरण करने के कारण गुरुकुल विश्वविद्यालय के यूनिट का अंग स्वीकार किया जाए।

सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार विजिटर (परिद्रष्टा)
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार

नकटाई पहन के नाक कटाई

कविराज छाजूराम शर्मा शास्त्री

हरदम बू भरे ही रहें और बाबू जी नाम लिया है घराई।
पहन के पेन्ट बने पेन्टबाज यों लोगों पै लेते हैं धाक जमाई।
पूछा हमने यह गले में है क्या तब बोले इसे कहते नकटाई।
नकटाई का अर्थ है बाबू जी क्या और क्यों इसको है गले लटकाई॥

बाबू जी हुए शर्मिन्दा तभी लगे कहने पता हमी नहीं भाई।
हम बोले बने तुम बाबू जी क्यो यह तुम्हारी रही बबुआई।
ईसा की फांसी की है यह नकल 'छाजूराम' गुलामी का चिन्ह बताई।
तजि सभ्यता आर्यावर्त की यह नकटाई पहन के नाक कटाई॥

पत्र को लेटर जो न कहो और पानी को वाटर बोला न जोई।
डैडी पिता का व माता को मम्मी जो बहन को सिस्टर बोली न कोई।
करोगे पेशाब जो बैठिके तो सर्वत्र तुम्हारी हंसी यहां होई।
हिन्दी ही पढ़ो 'छाजूराम' तुम्हें समझेंगे पढ़े अंग्रेजी न कोई॥

अति कड़वा न हो करेला जो तो समझो नीम पै चढ़ा नहीं है।
पुरुष पराई जो आस तकै अपने पैरों वह खड़ा नहीं है।
जो काम बड़प्पन के न करे वह किसी भांति भी बड़ा नहीं है।
अभिमान न हो 'छाजूराम' जिसे अच्छी अंग्रेजी वह पढ़ा नहीं है॥

आर्य वीरांगना दल का गठन

सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा के अन्तर्गत हरयाणा प्रान्त में वीरांगना दल का गठन किया है। इसके लिए आर्यसमाज कुञ्जपुरा में बहन सुषमार्या के नेतृत्व में २९ मई से ३ जून तक, ४ जून से १० जून तक आर्यसमाज माडल टाउन पानीपत में तथा ११ जून से १७ जून तक रोहतक में शिविर लगाये जायेंगे। इस प्रकार के कई और भी शिविर लगाये जायेंगे।

वेदप्रकाश आर्य
सार्वदेशिक आर्यवीर दल हरयाणा

कांगड़ा में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी

हिमाचल प्रदेश में आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य प्रादेशिक उप-सभा आपसी सहयोग से १, २, ३ जून १९८३ को प्रदेश के कांगड़ा नगर में 'महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह' बड़े भव्य रूप से मना रही हैं। इस शुभ अवसर पर आर्यजगत् के मूर्धन्य सन्यासी, महोपदेशक तथा भजनोपदेशक ज्ञान का अमृत वर्षा करेंगे। इस समारोह के उपलक्ष्य में सात दिन यज्ञ का भी आयोजन किया गया है।

चमनलाल शर्मा
मन्त्री हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा

नशाखोरी और दहेज के खिलाफ पंचायतें

भिवानी, २० अप्रैल (जनसत्ता)। जिले के ग्रामीण इलाकों में सुधार लाने के लिए ग्राम पचायतें मैदान में उतर आई हैं। वे शादियों के दिखावे और नशाखोरी पर पाबन्दी लगाने जा रही हैं।

शादियों में खर्चीले दिखावे पर पाबन्दी लगाने के मामले में बताया गया है कि एक बार रिश्ता तय होने के बाद लड़की या लड़के वाला जो भी उसे तोडेगा उस पर ११ हजार रुपए जुर्माना किया जाएगा।

इसी तरह बहू को जलाकर मारने के मामले में जो भी कसूरवार पाया जायेगा उसे भी ११ हजार रुपये जुर्माना देना होगा। बारात में २५ व्यक्तियों से ज्यादा नहीं आ सकेंगे। शादी के मौके पर बारात में नाच-गाने पर भी पाबन्दी लगा दी गई। दहेज और भात में १०१ रुपये से ज्यादा नही दिया जाएगा।

इसी तरह लड़का पैदा होने पर दसौठन की रस्म में एक सौ रु० से ज्यादा नहीं दिए जाए गे। टीके में केवल एक रुपया हो लड़के को देना होगा।

गांव में शराब पीने पर भी पाबंदी लगा दी गई है। इन आदेशों को न मानने पर पंचायत की ओर से ५० रुपये जुर्माना किया जाएगा। कई पंचायतों ने तो चाय पीने पर भी पाबन्दी लगा दी है। जिन गांवों में चाय पीने पर पावन्दी लगा दी गई है उनके नाम हैं–बहड़, चहड़, खुर्द घेरला, मिथी, मोरका, सुपुंरा, कला और गड़वा। यहां से ४० किलो मीटर दूर ओबरा गांव की पंचायत ने शराब पीने वालों को पकड़ने का एक निराला तरीका इजाद किया है।

शराब पीने वाली टोली या अकेले पीने वाले की खबर जो भी पंचायत को देगा उस आदमी को ११ रुपये इनाम दिया जाएगा और टोली में या अकेले शराब पीने वालों की धरपकड़ की जाएगी।

ऐसी ही घटना ओबराय गांव में हुई। जब एक जमीदार की पत्नी ने गाव में आकर पंचायत को सूचित किया कि उसका पति खेत के अपने मकान में अपने यारों के साथ बैठा शराब पी रहा है तो पंचायत फौरन हरकत में आई और शराब पीने वाले को पकड़ लिया।

ओबरा गांव की पचायत ने अपने ही गांव के एक चौ० चन्द्रभान को भी नहीं बक्शा। चन्द्रभान पूर्व विधायक और पचायत समिति के सदस्य हैं। शराब पीने पर उन पर सौ रुपये जुर्माना किया गया और वसूल भी फौरन किया गया।

गाव मंढया, जुई, धनाना, और झोझू में इस बाबत कई पंचायतों के सम्मेलन हो चुके है जिसमें यह प्रस्ताव पास करके पाबन्दियां लगा दी गई हैं। अब हर गांव में पंचायतें बुलाकर फैसले लागू किए जा रहे हैं। भिवानी के पास के गांव में तो पंचायत ने नशीले पदार्थ, अफीम आदि बेचने पर भी पाबंदी लगा दी है।

(जनसत्ता से साभार)

हत्याओं के विरोध में कड़ी कार्यवाही की मांग

लगभग दो वर्षों से पंजाब में निरन्तर निर्दोष लोगों की हत्या तथा लुटमार चल रही है। उग्रवादियों के आतंक से प्रदेश भर में भारी भय एवं रोष व्याप्त है। सारा प्रदेश एक बड़ा जेलखाना बन के रह गया है। हालत यहां तक आ पहुंची है कि सरकार अपने अधिकारियों एवं कर्मचारियों की भी सुरक्षा नहीं कर पा रही है। अतः देश की सुरक्षा, सद्भाव, विधि और व्यवस्था बनाये रखने के लिए केन्द्रीय सरकार को निश्चित समय में निर्देश दिये जाये। अर्जुंदेव आर्य हिसार



आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २२ ७ मई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

सोनीपत शराबबन्दी सम्मेलन में प्रो० शेरसिंह, चौ० राममेहर एडवोकेट तथा श्री वेदप्रकाश संशनजज आदि आर्य नेताओं के भाषण

२८ अप्रैल को आर्यसमाज सोनीपतगनर के वार्षिक उत्सव के अवसर पर नेहरू पार्क में शराबबन्दी सम्मेलन श्री वेदप्रकाश सेवानिवृत सैशनजज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधिसभा हरयाणा के प्रधान प्रो. शेरसिंहने उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर में पधारे एक विदेशी विद्वान् ने अपने देश में ऋषि दयानन्द के प्रभाव का उल्लेख किया तथा भारत में फैल रहे भ्रष्टाचार शराबखोरी आदि सामाजिक बुराइयों पर दुःख प्रकट किया। यह हमारे लिए एक चुनौती है। भ्रष्टाचार तथा शराबखोरी की सामाजिक बुराईयों का केवल आर्यसमाज ही मुकाबला कर सकता है। अतः आर्य जनता को शताब्दी समारोह की स्मृति में शराब के ठेकों को असफल करने के लिए ठोस कार्यक्रम आरम्भ करना चाहिए। यदि हमने हरयाणा प्रदेश में शराब के ठेकों को समाप्त न किया तो भ्रष्टाचार दिन प्रतिदिन बढ़ता जाएगा। गरीब किसान मजदूर अपनी खून पसीने की कमाई से शराब पीकर कर्जदार बन रहे हैं, परन्तु सरकारी अधिकारी रिश्वत में प्राप्त धन से शराब पीकर भ्रष्टाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। आज प्रायः सरकारी कर्मचारी बिना रिश्वत लिए कोई कार्य करने को तैयार नहीं है। हमारे भेजे गये प्रतिनिधि मन्त्री तथा विधायक भी इस सामाजिक बुराई से नहीं बचे हैं। अतः छोटे कर्मचारी भ्रष्ट तरीके अपनाने से नहीं डरते। साधारण व्यक्ति आर्यसमाज से आशाएं लगाये बैठा है कि इस बुराई से आर्यसमाज ही टक्कर ले सकता है।

आपने आर्यसमाज के अधिकारियों से आग्रह किया कि अपने नगर तथा ग्रामों में शराबबन्दी उपसमितियां बनाकर शराब के ठेकों पर धरना देवें। शराब खरीदने वालों को शराब से होने वाली बुराइयों से सावधान करें। इस प्रकार शराब की बिक्री बन्द होने पर ठेकेदार स्वयं भाग जायेंगे और आगामी वर्ष पंचायतों से प्रस्ताव पास करवाकर ठेका न उठाने के लिए सरकार को बाध्य किया जाएगा।

चौ० राममेहर एडवोकेट ने सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह के कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि आर्यसमाज आरम्भ से ही सामाजिक बुराइयों का विरोध करता रहा है। आर्यसमाज के पुराने भजनीकोंदादा बस्तीराम, चौः ईश्वरसिंह, स्वामी नित्यानन्द, चौः पृथ्वीसिंह बेधड़क आदि ने भजनों द्वारा बहुत सुधार किया है। आर्यसमाज के सुविख्यात नेता पं० प्रकाशवीर शास्त्री का स्मरण करते हुए आपने कहा कि यदि वे आज जीवित होते तो वे इस काय में हमारा मार्ग दर्शन करते और शराबबन्दी आन्दोलन में शीघ्र सफलता मिल जाती।

श्री वेदप्रकाश जी सेवानिवृत संशनजज ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सभा प्रधान जी को विश्वास दिलाया कि हम तन मन तथा धन से इस आन्दोलन में सहयोग करेंगे। आपने आर्यसमाज की ओर से सभा प्रधान जी को १०११ रु० की थैली भेंट की।

शराबबन्दी आन्दोलन की गतिविधियां

१—सोनीपत में आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की बैठक

आर्यसमाज सोनीपत नगर के उत्सव के अवसर पर २९ अप्रैल को दोपहर बाद २ बजे चौ० सूरजमल आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल सोनीपत की अध्यक्षता में सोनीपत के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक सम्पन्न हुई। इसमें निश्चय किया गया कि २० मई रात्रि ८-३० बजे सोनीपत के स्थानीय आर्यसमाजों की एक सयुक्त बैठक में केन्द्रीय आर्यसमाज का गठन किया जायेगा और उसके माध्यम से सोनीपत जिले में शराब के ठेके आदि बन्द कराने की योजना बनाई जायेगी। इसी बैठक में आर्यसमाज भठगांव के मन्त्री श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने अपने ग्राम में शराब के ठेके पर धरना देने तथा आर्यसमाज का उत्सव करने की तैयारी के लिए सूचना दी। सोनीपत की बैठक के पश्चात् वेदप्रचार मण्डल की बैठक २७ मई को भठगांव में रखने का निश्चय किया गया। है।

२—बादली में शराब के ठेके पर धरने की तैयारी

सभा के भजनोपदेशक पं० मुन्शीराम ने आर्यसमाज बादली जि० रोहतक के अधिकारियों से सम्पर्क करके ग्राम के ठेके को समाप्त कराने के लिए धरना देने की प्रेरणा दी आर्यसमाज के अधिकारियों से शीघ्र ही गांव की पंचायत तथा आर्यसमाज का प्रस्ताव कराने का कार्यक्रम तैयार किया है ताकि धरने की तैयारी की जाये। इसी प्रकार की बैठक झज्जर में आर्यसमाज के नेता चौ० रिसालसिंह एडवोकेट ने भी शराब बन्दी आन्दोलन में सहयोग देने के लिए आमन्त्रित की है।

३—तहसील जगाधरी में नशाबन्दी प्रचार

आर्यसमाज चबूतरों तहसील जगाधरी के मन्त्री श्री मामचन्द आर्य ने अपने पत्र द्वारा सूचित किया है कि तहसील जगाधरी के जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, उनमें सभा की भजन मण्डली द्वारा शराब के विरुद्ध प्रचार कार्यक्रम बनाकर उनमें धरना देने की तैयारी की जा रही है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

पांच लाख यदुवंशियों का नाश

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

अपने बाहुबल से शोभा पाने वाले पांच लाख वीर आपस में ही लड़-भिड़ कर मर मिटे। उन अमित तेजस्वी वीरों के विनाश का दुःख मुझसे किसी प्रकार नहीं सहा जाता। इस दुःख से दुःखी होकर अर्जुन जैसे वीर का मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड़ गया, उसने यह कहा—यशस्वी श्रीकृष्ण और यदुवंशियों के परलोक गमन से यह जान पड़ता है कि मानो समुद्र सूख गया, पर्वत हिलने लगे, आकाश फट पड़ा और अग्नि के स्वभाव में शीतलता आ गई। असम्भव सम्भव हो गया। श्रीकृष्ण का निधन हो गया, मुझे इस पर विश्वास नहीं होता। यथार्थ बात यही थी कि वह बहुत घबराया हुआ था और उसने यहां तक कह डाला—

न चेह स्थातुमिच्छामि लोके कृष्णं बिना कृतः।
इतः कष्टतरं चान्यच्छृणु तद्वै तपोधन ॥३५॥

मैं इस संसार में श्रीकृष्ण के बिना नहीं रहना चाहता और इसके अतिरिक्त जो दूसरी घटना घटी वह इससे भी अधिक कष्टदायक है। आप, उसे सुनिये।

यदुवंशियों की स्त्रियों को लूट

मनो मे दीर्यते येन चिन्तयानस्य व मुहुः।
पश्यतो वृष्णिदाराश्च मम ब्रह्मन् सहस्रशः ॥१६
आभीरैरनुसृत्याजौ हृताः पञ्चनदालयैः।
धनुरादाय तत्राहं नाशकं तस्य पूरणे ॥१७॥
यथा पुरा च मे वीर्यं भुजयोर्न तथाभवत्।
अस्त्राणि मे प्रणष्टानि विविधानि महामुने ॥१८॥
शराश्च क्षयमापन्नाः क्षणेनेव समन्ततः।
पुरुषश्चाप्रमेयात्मा शङ्खचक्रगदाधरः ॥१९॥

जब मैं उस घटना का चिन्तन करता हूं तो बार बार मेरा मन विदीर्ण होने लगता है। हे ब्रह्मर्षि पञ्जाब के आभीरों ने मुझ से युद्ध ठान कर मेरे देखते देखते वृष्णिवंश की हजारों स्त्रियों का अपहरण कर लिया। मैंने धनुष लेकर उनका सामना करना चाहा, परन्तु मैं उसे चढ़ा न सका। मेरी भुजाओं में पहले जैसा बल था, वैसा अब नहीं रहा। महामुने! मेरी नाना प्रकार के अस्त्रों की विद्या विलुप्त हो गई। मेरे सभी बाण सभी ओर जाकर क्षणभर में नष्ट हो गये।

इस प्रकार इस मद्यपान के कारण यदुवंशियों का सर्वनाश हो गया। उनकी द्वारकापुरी जो धन धान्य से भरी थी, वह भी समुद्र में डूब गई। जिन यदुवंशियों का एक विशाल गणराज्य था, उनमें से कुछ बाल, वृद्ध तथा वृद्धा स्त्रियां ही शेष रह गई थी, जिन्हें अर्जुन ने जहां तहां बसा दिया।

भोजराज के परिवार और कृतवर्मा के पुत्र को मार्तिकावत नगर में बसा दिया जो कुरुक्षेत्र प्रदेश में था। धर्मात्मा अर्जुन ने सात्यकि के प्रिय पुत्र यौयुधानि को सरस्वती के तटवर्ती प्रदेश का अधिकारी एवं निवासी बना दिया और वृद्धों व बालकों को उनके साथ कर दिया।

इन्द्रप्रस्थे ददौ राज्यं वज्राय परवीरहा

शूरवीरों का संहार करने वाले वीर अर्जुन ने श्रीकृष्ण के पौत्र वज्र को इन्द्रप्रस्थ का राज्य दे दिया और उसके कुल के समस्त वृद्धों, बालकों तथा अन्य स्त्रियों को वहीं पर बसा दिया। यदुवंशियों के सर्वनाश से दुःखी होकर पांचों पाण्डव द्रौपदी सहित महर्षि व्यास की आज्ञानुसार अपने पौत्र परीक्षित को हस्तिनापुर राज्य का स्वामी बनाकर तपस्या करने के लिए वन में चले गये और वे भी (युधिष्ठिर को छोड़कर सभी पाण्डव) हिम—बरफ में दबकर मर गये।

इस प्रकार कुरुकुल और यदुकुल दोनों का विनाश जूए और शराब के कारण हुआ।

इसी प्रकार सुरा और सुन्दरी के पाश में फंसकर अरब, तुर्क, मुगल मराठे, राजपूत और जाट आदि राज्यों व वंशों का सर्वनाश किस प्रकार हुआ, उसका दिग्दर्शन पाठक अगले अंक में करेंगे।

(क्रमशः)

पापिन शराब को बन्द करो

प्रिय मित्रो! यह वह आर्यावर्त देश है जिसमें हमारे पूर्वज शराब, मांस आदि का नाम तक भी नहीं लिया करते थे। शराब पीने वाले को राक्षस समझते थे। आर्यावर्त देश में चोरी, जारी, शराब, मांस तक का नाम नहीं था। तुमने उन ऋषियों के पवित्र आर्यावर्त (भारत) देश को अब शराब के पंजों में फंसा दिया है। हमारी बुद्धि नष्ट होने लगी है। अपनी मातृभाषा का लोप करने लगे। दूसरे मजहबों की भाषा को अपनाने लगे हैं, जो भी मनुष्य अपनी मर्यादा व धर्म को छोड़ देता है धर्म उसको पहले छोड़ देता है और दुःख का कारण बन जाया करता है। इस जालिम शराब ने बड़े बड़े राजाओं के और अच्छे अच्छे खानदानों के घर उजाड़ दिये हैं जिनके परिणाम आपके सामने मौजूद हैं। फिर भी आप उनको समझ नहीं पाते हैं पता नहीं आपको बुद्धि पर क्या पर्दा छाया हुआ है? जब मनुष्य शराब को पी लेता है तो बुद्धि बाहर आ जाती है क्योंकि यह बुद्धि की खुराक नहीं है। उसको अपना कोई भी नजर नहीं आता। वह किसी से भी शर्म नहीं करता, वह राक्षस बन जाता है। शराब शरीर व बुद्धि की दुश्मन है इसलिए इसको पीना पाप माना गया है। यह आर्यावर्त देश महाभारत के युद्ध से पहले सारे संसार में शिरोमणि देशों में से एक था परन्तु हमारी आपस की फूट और इस शराब के सेवन से विनाश हुआ है। इस शराब की जगह आर्यावर्त देश में दोनों समय यज्ञ हवन होते थे। दोनों समय ऋषि मुनि वेदों के मन्त्रों द्वारा सन्ध्या किया करते थे। सब अपने नियम में बन्धे हुए थे। परन्तु इस जालिम शराब ने हमारा कोई भी नियम नहीं छोड़ा है। मेरा देश इस शराब ने कमजोर कर दिया है जो हमारी खून पसीने की कमाई है वह शराब के सेवन से जारही है।

हम अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा व वस्त्र आदि से तंग होते जा रहे हैं और अपनी मातृभाषा संस्कृत को भी छोड़ते जा रहे हैं। प्रिय मित्रगणों! यदि आपने अपना सुख से जीवन बिताना है और अपने बच्चों पर दया है तो इस जालिम शराब को छोड़ दो। इसकी जगह अपने घरों में यज्ञ हवन करो जो भी मनुष्य शराब पीता है समझलीजिए कि अपने बच्चों का खून पीता है। इससे बच्चे भी महा दुःख उठाते हैं। प्रिय मित्रो! इस पापिन शराब को छोड़ दो और जगह जगह इसके बन्द करने का प्रचार करो।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज के छठे नियम में लिखा है "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है" अर्थात् शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति करना आर्य वीरो उस महर्षि के बताये हुए नियमों का पालन करो।

रामचन्द आर्य मन्त्री आर्यसमाज चबूतरी
पो०—चौली जिला अम्बाला

आर्यसमाज नारनौल में अन्तर्जातीय विवाह संपन्न

२१-४-८४ को श्री ब्रजेन्द्र कुमार वर्मा आयु २९ वर्ष से श्रीमती जगजीतकौर मल्होत्रा आयु लगभग २१ वर्ष इन्होंने अपनी इच्छा से बिना किसी दहेज के विवाह किया। विवाह संस्कार तथा आशीर्वाद वैद्य हरिश्चन्द्र आर्य प्रधान ने दिया।

मन्त्री
मा० मोतीराम आर्य

सिखों की अलगाव प्रवृति व आर्यसमाज

राजवीर शास्त्री सम्पादक दयानन्द सन्देश

१७ अप्रेल १९८४ के 'नवभारत टाइम्स' दैनिक हिन्दी पत्र के ४ पृष्ठ पर अपने को इतिहास का महान् विद्वान् मानने वाले श्री महीपसिंह जी ने आर्यसमाज और संस्थापक महर्षि दयानन्द के प्रति जो दुर्भावना पूर्ण लेख लिखा है, उनको वह निकटवर्ती अतीत से भी अनभिज्ञता को प्रकट करता है। लेखक ने पंजाब में सिखों में जो पृथक्तावाद की प्रवृत्ति बढ़ती हुई दिखाई दे रही है, उसका अन्यतम कारण सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्यसमाज को स्वीकार किया है, किन्तु यह लेखक को महाभ्रान्ति है। क्योंकि इस प्रवृत्ति का मूल कारण साम्राज्यवाद मूलक कतिपय तथाकथित राजनैतिकों का स्वार्थ तथा पंजाबी भाषा को सिख सम्प्रदाय का अंग मानकर उसका हिन्दी भाषी लोगों पर बलात् थोपना है, जिसके परिणाम स्वरूप अनेक आन्दोलनों को जन्म मिला और पंजाब को जनता में पारस्परिक वैमनस्य उत्पन्न हुआ। लेखक ने अतीत के गर्भ में छिपी यथार्थता को छिपाकर और सिख सम्प्रदाय के विदेशों में गये स्वम्भू सिख संविधानों के निर्माताओं एवं राष्ट्रपति बनने के स्वप्नों में डूबे व्यक्तियों के समस्त देशघातक काले कारनामों को ओझल रखकर जो आर्यसमाज पर मिथ्या दोषारोपण किया है, यह वैसे ही है, जैसे लोक कहावत है—'कुम्हार की कुम्हारी पर तो पार बसाई नही, गदही के जाकर कान ऐंठने लगा।' लेखक का कलुषितवृत्ति का परिचायक लेख इस प्रकार है—

(क) 'पंजाब में हिन्दू और सिखों के बीच धार्मिक अलगाव की खुली घोषणा उन्नीसवीं सदी के अन्त में 'सत्यार्थप्रकाश' (स्वामी दयानन्द) और हम हिन्दू नहीं (ले. भाई कान्हसिंह) के प्रकाशन से प्रारम्भ हो गई थी।'

(ख) 'सिखों में अलगाव की भावना के लिए अंग्रेजों और आर्य समाज को दोषी ठहराया था। सिखों में अलगाव कौम होने की भावना अंग्रेजों ने जितनी पैदा की, उससे ज्यादा आर्यसमाज को आक्रामकता और उद्दण्डता ने की।' श्री जोशी के इस कथन में काफी सच्चाई है। सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज के तीव्रखण्डनात्मक रवैये का पंजाब में सीधा प्रभाव मुसलमानों और सिखों पर पड़ा।

यह लेखक का मिथ्या दोषारोपण वैसे ही दुर्भाग्यपूर्ण है, जैसे कोई नादान व उद्दण्ड बालक अपने हितैषी माता-पिता तथा गुरुजनों के अन्तर्निहित हितभावना किन्तु बाह्य क्रोध मूलक प्राकृति को देखकर कुपित हो जाये और उद्दण्डतावश कुछ भी प्रलाप करने लगे। अथवा जिसका मानसिक सन्तुलन बिगड़ गया हो, वह उन्मत्त व्यक्ति सुगन्धित पुष्पमाला को भी सर्प समझकर उतारकर फेंकने लगे। यथार्थ में महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज ने तो देश की पृथक्ता मूलक प्रवृत्तियों के मूल कारणों को नष्ट करने का सदा ही बढ़-चढ़ कर कार्य किया है और समस्त मत-मतान्तर वालों के घृणा व वैर मूलक दोषों को दूर करके परस्पर स्नेह मूलक शाश्वत सत्यों की श्रृंखलाओं से जोड़ने का ही कार्य किया है। लेखक सदृश विद्वान् व्यक्तियों को पूर्वाग्रहरहित एवं मत मतान्तरवाद की दलदल से ऊपर उठकर निम्नलिखित बातों का निष्पक्ष भाव से चिन्तन करना चाहिये—

(१) महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज के उपदेशों का सबसे अधिक प्रभाव पञ्जाब की जनता पर पड़ा। इसीलिए पंजाब को आर्यसमाज का गढ़ माना जाता रहा है। यदि ये उपदेश अलगाव मूलक होते तो अधिक संख्या सिख सम्प्रदाय वाले इस प्रदेश में इतना अधिक प्रभाव कदापि नहीं होता।

(२) महर्षि दयानन्द ने बहुत ही उदारमना होकर समस्त मत-मतान्तर वालों के जहां दोषों का दिग्दर्शन कराया है, वहां उनके उत्तम गुणों की प्रशंसा भी की है और ऐसा करना प्रत्येक निष्पक्ष सत्य के अन्वेष्टा सुधारक का परम कर्त्तव्य भी है। महर्षि ने अपने इन भावों को स्पष्ट करते हुए लिखा है—

'इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें। क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है।'

(अनुभूमिका ११ वां समुल्लास)

(३) महर्षि दयानन्द ने जहां सिख सम्प्रदाय के कतिपय दोषों को गिनाया है, वहां गुणों की प्रशंसा भी की है। देखिये—

(क) नानक जी का आशय तो अच्छा था।

(ख) कहीं कहीं वेद के लिए अच्छा भी कहा है

(ग) उस समय पंजाब संस्कृत विद्या से रहित मुसलमानों से पीड़ित था, उस समय उन्होंने कुछ लोगों को बचाया।

(घ) इसमें उनके चेलों का दोष है नानक जी का नहीं।

(ङ) जो नानक जी ने कुछ भक्ति विशेष ईश्वर की सिखी दी थी, उसे करते आते तो अच्छा था।

(च) इनमें गोबिन्दसिंह जी शूरवीर हुए।

(छ) यह रीति गोबिन्दसिंह जी ने अपनी बुद्धिमत्ता से उस समय के लिए की थी।

(४) आर्यसमाज के प्रचार कार्य का मुख्यकेन्द्र पञ्जाब क्यों बना? इसका कारण वैदिक धर्म तथा गुरुनानक के उपदेशों की बहुत कुछ समानता भी है। जैसे नानक जी ने उपदेश दिया है—'ओ सत्यनाम कर्त्ता पुरुष निर्भो निर्वैर अकालमूर्त अजोनि०। अर्थात् परमेश्वर का सत्यनाम ओम् है। वह सृष्टि कर्त्ता पुरुष भय तथा वैर से रहित है। वह काल और योनि में नहीं आता। वह प्रकाशमान है। वह शाश्वत सत्य सत्ता है। उसी का जप करना चाहिये इत्यादि। इसी प्रकार—जो कोई होत भयो जग सयाना। तिन तिन अपना पन्थ चलाना। सम्प्रदायवाद की निन्दा गुरुगोबिन्दसिंह जी ने भी है।

(क्रमशः)

बालावास में शराब का ठेका बन्द कराने के लिए आर्यसमाजों के प्रस्ताव

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निर्देशन पर निम्नलिखित ओर आर्यसमाजो ने प्रस्ताव पारित करके उचित कार्यवाही के लिए हरयाणा के मुख्यमन्त्री, हरयाणा के कराधान एवं आबकारी मन्त्री को चण्डीगढ़ तथा जिलाधीश हिसार व भारत के प्रधान मन्त्री को नई दिल्ली इसकी प्रतियां भेजते हुए शराब का ठेका तुरन्त समाप्त करने का अनुरोध किया है—

(१) आर्यसमाज रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़ (२) आर्यसमाज गुड़गांव छावनी (३) आर्यसमाज बराड़ा जिला अम्बाला (४) आर्यसमाज सोनीपतनगर (५) आर्यसमाज जीन्द शहर

महर्षि दयानन्द फिल्म पर रोक की मांग

दिनांक २९-४-८४ को आर्यसमाज जीन्द शहर की साधारण सभा में इस बात पर विचार हुआ कि महर्षि दयानन्द विषयक प्रस्तावित फिल्म का निर्माण रोक दिया जाए। क्योंकि महर्षि पर फिल्म आदि बनाना उनके आदर्शों तथा वैदिक मर्यादाओं और मान्यताओं के प्रतिकूल है। कोई भी व्यक्ति इस प्रकार का अवैदिक कृत्य न करे। क्योंकि इस प्रकार का फिल्मीकरण महर्षि दयानन्द सरस्वती की गरिमा के प्रतिकूल है।

कृष्ण शास्त्री

मन्त्री—आर्यसमाज जीन्द शहर

आर्यसमाज की गतिविधियां—

भापड़ोदा जि० रोहतक में पंचायत निर्णय

२५-४-८४ को गांव भापड़ोदा जिला रोहतक में १३ गांवों की पंचायत में कप्तान चेतराम सरपच गांव सराय को अध्यक्षता में निम्नलिखित निर्णय किये गये।

१) लड़का को देखने दो आदमी जायेंगे।
२) लड़की को १ रुपये से पुचकारा जायेगा।
३) लड़की वाला लड़के वाले को २ रुपये देगा।
४) सगाई एक से एक सौ रुपये तक होगी।
५) लग्न पर दादस या मास को एक तियल होगी।
६) २५ बाराती बिना बाजे के होंगे और शराब पर प्रतिबन्ध होगा।
७) सवारियों का किराया लड़के वाला वहन करेगा।
८) माला सिर्फ फूलों की डाली जायेगी।
९) १०० रु० दान के होंगे, १ रुपया थापे का होगा।
१०) घड़ी, साईकिल, टेलिविजन, फ्रिज आदि पर प्रतिबन्ध लगा दिया है
११) मुंह दिखाई जो शहरों को तरह गांव में प्रचलित हो गई थी उस पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।
१२) लड़के के जन्मदिन पर एक रुपया लिया जा सकता है।
१३) दुसर में ५० सूट दे सकता है और ननद को एक तियल होगी।
१४) मकर सक्रांति के अवसर पर कम्बलों पर प्रतिबन्ध लगा दिया है।
१५) सिधारा आदि पर पूर्ण प्रतिबन्ध है।
१६) भात के १०० रुपये होंगे और १०० रुपये माला के होंगे।
१७) ५ रु लोटे में डाले जायेंगे, कुटुम्ब की मान्यता १ रुपये से होगी।
१८) जो लाल पीला पगड़ा वालों राजस्थानियों को गाय देगा उस पर एक हजार रुपये जुर्माना किया जायेगा और बताने वाले को १०० रुपये इनाम तथा बाकी गौशाला के कार्यों में व्यय किया जायेगा।

विदेश में वैदिक धर्म प्रचार

मान्य भाई श्री केदारसिंह आर्य, सादर नमस्ते।

अभी अभी आपका स्नेहासिक्त कृपा पत्र मिला। पुरानी सभी स्मृतियां सहसा खिल उठी। आपका तथा भाई नवाबसिंह जी का स्नेह सदैव मेरी जीवन यात्रा का सम्बल रहा है तथा आगे भी इसी प्रकार रहेगा। आपने मुझे इस दूरी पर स्मरण किया, तदर्थ आभारी हूं। आशा है यदा-कदा पत्र डालते रहेंगे।

सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ अपनी गतिविधियां अवश्य भेजूंगा। अभी मैं वैदिक शिविर से लौटा हूं। यह शिविर अत्यधिक सफल रहा है। इसके तीन विभाग थे ७ वर्ष से ११ वर्ष तक, १२ से २० वर्ष तक और २० वर्ष से ऊपर। १० विषय विचारार्थ संगोष्ठी में रखे गए थे जिन पर एक सप्ताह तक विचार विमर्श हुआ। इन युवक युवतियों में भारतीय और अफ्रीकी दोनों देशों के प्रभागी थे। भाषण तथा सभी कार्यवाही अंग्रेजी में ही चली। इन बच्चों को आर्यसमाज और वैदिक सिद्धान्तों का ज्ञान ही न था। पहली बार दयानन्द की जीवनी, वैदिक सिद्धान्त, संस्कार विधि, हवन सन्ध्या, आर्यसमाज का इतिहास। ब्रह्मचर्य आत्मसंयम आदि विषयों पर खुलकर बातचीत हुई। मुख्य रूप से हर एक विषय पर तुलनात्मक चर्चा ही लाभप्रद रही। बच्चों ने वैदिक विवाह और पश्चिम के विवाह पर तथा ब्रह्मचर्य की वर्तमान युग में आवश्यकता पर खूब प्रश्न किए। Free Sex से और सहशिक्षा से क्या हानियां हैं, यह पहली बार उन्होंने सुना। एक व्याख्यान मेरा उस शिविर स्थान के निकट शहर 'किटाली' के City-Council-Hall में भी हुआ। विषय था—"Vedic Religion as Universal Brotherhood"—City Mayor ने इसे Preside किया था। मैं दो घण्टे बोला और फिर आधे घण्टे तक प्रश्न हुए। बड़ा अच्छा Tempo बना। लोग मुझे छोड़ते ही न थे। प्रश्न और जिज्ञासाएं बढ़ती जा रही थी। मुख्यत: यहां के अफ्रीकन (Block-Natives) ही अधिक थे। उनमें ९९% लोग ईसाई हैं। मेरी बात बाइबिल की कसौटी पर कस कर देखते थे। Biblo के Brotherhood को वेद के Brotherhood से जब मैंने प्रस्तुत कर कहा कि वेद भगवान् तो कहते हैं—"मातृभूमि पुत्रोऽहम् पृथिव्या"—This Earth ss my Mother and I am his son." इसमें भारत, अफ्रीका, इंगलण्ड, अमेरिका सभी की सीमाएं टूट गई हैं और विश्व मानव भाई बन गए हैं। ऐसा सिद्धान्त विश्वभर के किसी धर्म ने प्रचारित नहीं किया। वे सभी सुनकर दंग रह गए। वेद भगवान् का ऐसा सन्देश सभी को निकट ला रहा है।

आपका भाई

Dr. Vediram Shrrma, M. A, Ph D.
Post Box 40243
Nairobi–Kenya (East Africa)

सम्पादक के नाम पत्र

सर्वहितकारी में नकटाई के विरोध में श्री खाजूराम शर्मा शास्त्री की कविता पढ़कर प्रसन्नता हुई। इस प्रचारोपयोगी कविता पर लेखक तथा सर्वहितकारी के प्रकाशक बधाई के पात्र हैं।

फूलचन्द शर्मा निडर
प्रधान आर्यसमाज घण्टाघर भिवानी

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह

जैसाकि सभी जानते हैं सामाजिक सुधार, धर्मप्रचार तथा सांस्कृतिक गतिविधियों को अग्रसर करने में आर्यसमाज पानीपत का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। यहां पर अनेक शास्त्रार्थ सैद्धान्तिक चर्चाएं तथा शुद्धि आन्दोलन की गतिविधियां निरन्तर समाज तथा जनसाधारण में चेतना जागृत करती रही है। स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज जैसे त्यागी तपस्वी संन्यासी अपने प्रवचनों से पानीपत की जनता को आर्यसमाज के माध्यम से तृप्त कर चुके हैं। शास्त्रार्थ महारथी पं० रामचन्द्र देहलवी विद्वत शिरोमणि प० देवेन्द्रनाथ शास्त्री, तेजस्वी वक्ता पं० बुद्धदेव जी विद्यालंकार जैसे देश के जाने माने विद्वान् अपने प्रेरणाप्रद भाषणों से यहां की जनता के मन को मोहित कर चुके हैं।

हरयाणा के जाने माने वीतरागी भक्त फूलसिंह जैसी विभूति इसी समाज की देन है। इस आर्यसमाज की स्थापना सन् १८८३ ई० में महर्षि दयानन्द सरस्वती के ही समय में हो चुकी थी। प्रसिद्ध देशभक्त राष्ट्रीय नेता लाला देशबन्धु गुप्त आर्यसमाज पानीपत के प्राण रहे हैं—उनके समय में इस समाज ने अद्भुत उन्नति की थी। यह समाज देश की अग्रणी समाज में मानी जाती रही है।

आगामी अक्तूबर की ६ तारीख से १४ तारीख तक इस समाज का शताब्दी समारोह बड़े धूमधाम से मनाया जा रहा है, जिसकी तैयारी अभी से प्रारम्भ हो गई है। क्रमश:

सहदेव वर्मा कार्यालय मन्त्री

गुरुकुल झज्जर में प्रवेश सूचना

आप सबको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में से जून तक प्रवेश आरम्भ है। ऋषि दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि (जिसकी परीक्षायें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक लेता है) के नि:शुल्क शिक्षण केन्द्र में चरित्रवान्, विद्वान् व सर्वांगीण विकास के लिए अपने बच्चों को प्रवेश कराकर लाभ उठावें।

आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल
झज्जर जिला रोहतक

आर्यसमाजों के उत्सव समाचार

आर्यसमाज सोनीपत नगर

वार्षिक उत्सव २७, २८, २९ अप्रैल को सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० ओमप्रकाश शास्त्री, दयानन्द महिला महाविद्यालय कुरुक्षेत्र की आचार्या रूपरेखा जी आर्या, सभा उपदेशक पं० धर्मचन्द विद्यालंकार, पं० सुखदेव शास्त्री आदि के व्याख्यान एवं पं० तेजपाल आर्य पंडित सत्यपाल पथिक के प्रभाव शाली भजन हुए। ऋषि लंगर का भी प्रबन्ध किया गया था, जिसमें हजारों नरनारियों ने भोजन किया।

सत्यदेव शर्मा शास्त्री मन्त्री

आर्यसमाज लोपों जिला अम्बाला

वार्षिक उत्सव १३ से १५ अप्रैल तक सभा के भजनोपदेशक पंडित हरिश्चन्द जी, पंडित बनारसीलाल एवं चौधरी लक्ष्मनसिंह के प्रभाव-शाली भजन हुए। १३ अप्रैल को नगर कीर्तन भी निकला गया। जनता पर आर्यसमाज का बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा।

मन्त्री आर्यसमाज

नारग (हिमाचल प्रदेश)

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में वार्षिक उत्सव १३ से १५ अप्रैल को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। सभा के उपदेशक प० धर्मचन्द विद्यालंकार, प० सुरेशकुमार शास्त्री के व्याख्यान तथा पंडित हरलाल जी, पंडित शेरसिंह जी के मनोहर भजन हुए।

मन्त्री आर्यसमाज

कुरुक्षेत्र वेदप्रचार मण्डल द्वारा प्रचार

वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र द्वारा गत दिनों में ऐसे गांव में प्रचार किया जहां कभी आर्यसमाज का प्रचार शायद ही हुआ होगा। लाडवा क्षेत्र के धानीखेड़ी, अरजेडी, घनौरा, गुढ़ा गांवों में हुए प्रचार ने लोगों को आर्यसमाज की ओर से आकर्षित किया है। क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी रुद्रवेश और ब्र० रामनिवास के मधुर भजन सुनने लोग उमड़ पड़ते हैं। क्योडक गांव में श्री ज्ञानसिंह आर्य के प्रयास से दो दिन प्रचार किया गया तथा रावणहेड़ा में आर्यसमाज का प्रचार पहली बार हुआ। प्रसिद्ध गांव पाई में दूसरी बार प्रचार किया जिसमें वहां के युवा सरपंच श्री राजेन्द्रसिंह का सहयोग सराहनीय रहा। स्वामी रुद्रवेश जी के साथ चौ० बिशनसिंह, प्रो० भागसिंह आर्य व श्री धर्मदेव विद्यार्थी भी आर्यसमाज के प्रचार प्रसार हेतु पहुंचते हैं।

उन्नत गोपालन पुस्तक का विमोचन

गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा आयोजित क्षेत्रीय महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह में आर्यजगत् के उच्चकोटि के सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी ने श्री धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा लिखित पुस्तक का विमोचन किया तथा स्वामी जी ने उन्नत गोपालन पुस्तक के लेखक श्री धर्मदेव विद्यार्थी के अनुसार इस पुस्तक में गाय के ब्याने तथा पालन पोषण सम्बन्धी प्रत्येक प्रकार की जानकारी है। इसकी भूमिका भी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा लिखी गई है। पुस्तक का मूल्य ८ रुपये है जो उचित रियायत पर गुरुकुल कुरुक्षेत्र से प्राप्त की जा सकती है।

आर्यसमाज फतेहपुर जि० कुरुक्षेत्र

आर्यसमाज फतेहपुर का वार्षिकोत्सव ३०, ३१ अप्रैल को धूमधाम से सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर स्वामी कर्मपाल जी की अध्यक्षता में एक सर्वखाप पंचायत का भी आयोजन किया गया। वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र के तत्वावधान में स्वामी रुद्रवेश जी के क्रान्तिकारी भजनों तथा चौ० बिशनसिंह एडवोकेट प्रो० भागसिंह आर्य तथा आचार्य देवव्रत जी और धर्मदेव विद्यार्थी के प्रेरणादायक व्याख्यानों ने नवजागरण जैसा कार्य किया। उत्तरप्रदेश से स्वामी निरंजनदेव तीर्थ के धार्मिक प्रवचनों का प्रभाव जनता पर अच्छा रहा।

आर्यसमाज फरल जिला कुरुक्षेत्र

३, ४, ५ अप्रैल को आर्यसमाज फरल का वार्षिकोत्सव हर्षोल्लास से मनाया गया। ऐतिहासिक फलगुतीर्थ पर स्थित आर्यसमाज मन्दिर में नित्य प्रति धर्मोपदेश तथा भजन होते रहे जिनमें प० चिरंजीलाल जी, पं० ओमप्रकाश वर्मा के मधुर भजन हुए तथा व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ।

अन्तिम दिन आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान श्री सत्यदेवसिंह जी पूर्व एम० एल० ए० तथा वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के संगठन मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी के पहुंचने पर आर्यसमाज के अधिकारी अत्याधिक प्रसन्न हुए। श्री सत्यदेवसिंह जी ने पचयज्ञ पर प्रभावशाली व्याख्यान देते हुए इसे अपने जीवन में लागू करने पर जोर दिया। इस अवसर पर चौ० बिशनसिंह जी का भी प्रभावशाली व्याख्यान हुआ।

आर्यसमाज कौल जिला कुरुक्षेत्र

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के प्रयास से नवस्थापित आर्य समाज कौल का प्रथम वार्षिकोत्सव १३, १४ मार्च तक धूमधाम से मनाया गया। ज्ञातव्य है कि प्रसिद्ध सनातनी पंडित माधवाचार्य जी इसी गांव के रहने वाले थे। अतः इस पौराणिक गढ़ को तोड़ना अपने में एक अभूतपूर्व कार्य है जिसका श्रेय लग्नशील आर्य डा० ताराचन्द जी प्रधान तथा मन्त्री ईश्वरसिंह जी को है। स्वामी रुद्रवेश के क्रान्तिकारी भजनों ने गांव में फैले धार्मिक पाखण्ड को झकझोर कर रख दिया। श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान द्वारा कौल में आर्यसमाज मन्दिर बनाने की अपील की जिस पर तुरन्त ही स्वामी सिहराम जी ने इस प्रयोजन हेतु ११०० रुपये दान की घोषणा की। आशा है वहां शीघ्र ही आर्यसमाज मन्दिर बन जायेगा। चौ० बिशनसिंह जी तथा प्रो० भागसिंह जी के भाषणों में जनता ने अपूर्व रुचि ली। इस प्रथम उत्सव पर ३ हजार से ५ हजार व्यक्तियों की उपस्थित का अनुमान है।

ग्राम बालावास में शराब के ठेके के सामने धरना जारी

राजस्व की लालची हरयाणा सरकार ने ग्राम बालावास तथा निकट के २५ ग्रामों की पंचायतों (जनता) की भावनाओं को ठुकरा कर जबरन शराब का ठेका खोल दिया है। उसे बन्द कराने के लिए इन ग्रामों की पंचायतों ने १४-४-८४ से धरना आरम्भ कर रखा रखा है। धरने पर हर समय दिन रात २०-२५ आदमी रहते हैं। जो वहां से शराब न खरीदने न ही पीने की प्रार्थना करते हैं। धरने का कार्यक्रम पूर्णतया सफलता से चल रहा है। जनता में इस ठेके का उठाने बारे काफी रोष है। सायंकाल धरने पर सत्संग में महिलायें भी भाग लेती हैं। बच्चे शराब विरोधी नारे भी लगाते हैं। २६-४-८४ को सायंकाल धरने पर एक जलसे का आयोजन भी किया गया जिसमें निम्नलिखित नेता सहयोग के लिए पधारे। वयोवृद्ध ८५ वर्षीय नेता दादा गणेशीलाल जी श्री बलभद्रराय तायल पूर्व वित्तमन्त्री हरयाणा सरकार, श्री जयनारायण वर्मा, श्री कामरेड बाबुनन्द, पंडित अशोककुमार परदेसी नोडर श्री सत्यपाल मरहठा प्रधान नवजागरण साहित्य संस्था (नारनौंद) स्वामी जगतमुनि, महाशय भरतसिंह, महाशय मन्शीराम आदि के मधुर भजन भी हुए। उपरोक्त नेताओं ने इस ठेके को तुरन्त बन्द करवाने के बारे में अपने ठोस विचार रखे और पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराब बन्दी समिति

अग्निहोत्र एक वैज्ञानिक प्रक्रिया

आचार्य सत्यश्याम पाठक

'घर की मुर्गी दाल बराबर' ऐसी कहावत हम प्रायः सुनते रहते हैं। बहुतबार उसे हम व्यावहारिक दृष्टिकोण से चरितार्थ हुआ देखते हैं। कुछ ऐसा ही अनुभव अग्निहोत्र के विषय में आ रहा है। भारतीय ऋषिमुनि, साधु, सन्त, विद्वत् समाज जिन्होंने कि इस ओर हम भारतीयों का ध्यान केन्द्रित किया और केन्द्रित ही नहीं अपितु उससे होने वाले लाभो का विशद विवरण भी दे दिया, और इसे दिनचर्या का अविभाज्य अंग भी बनाया।

आज की पढ़ी लिखी पीढ़ी इसे एक धार्मिक कर्मकाण्ड आडम्बर एवं ढकोसलामात्र कहकर द्रव्य एवं धन का विनाश जैसे आरोप लगा कर तिरस्कार की दृष्टि से देखते हैं।

पाश्चिमात्य और भारतीय वैज्ञानिक अग्निहोत्र को वैज्ञानिक दृष्टि कोण से आंक रहे हैं। उससे होने वाले लाभ पर सन्तुष्ट होकर आगे अनुसधान ही जारी रख रहे हैं।

अमेरिका के मानस शास्त्रज्ञ श्री बेरी राथनर अग्निहोत्र को मानसिक तनाव, अपस्मार, मतिमाद्य जैसे रोगो पर अच्छा उपाय बतलाते हैं। अम्बाजोगाई (महाराष्ट्र) मे अग्निहोत्र का तीन बच्चो पर प्रयोग करके देखा गया। प्रातः साय अग्निहोत्र किया जाता रहा, जिसके प्रभाव से उनका बुद्धि गुणांक (आई० क्यू०) बढ़ा एव सुधार के अच्छे लक्षण दिखाई दिए।

जर्मनी में एक औषधी अभ्यास केन्द्र है, जो अग्निहोत्र की भस्म से विविध औषधियां बनाता है। त्वचा, नेत्ररोग, सर्दी, गलग्रन्थी, स्नायु वेदना पर प्रभावी औषधियां वह केन्द्र बना चुका है। संशोधन अभी भी जारी है।

प्रा० भुजबल महात्मा फुले कृषि विद्यापीठ भी इसी पर संशोधन कर रहे हैं। होम की राख का प्रयोग उन्होने खेतो में किया। नासिक जिले के पिपल गांव मे अगूरों की फसल पर उनका परीक्षण सफल रहा। अगूरों के बीजांकुरों को जहां छः मास लगते हैं, वहां इस होम की भस्म से २१ दिन में बीजांकुरण होता दिखाई दिया। बेरी राथनर ने बताया कि बाल्टीमोर (अमेरिका) में निश्चित कृषि भूमि में १९७८ से दोनों समय अग्निहोत्र का प्रयोग जारी है।

सूक्ष्मजीव वैज्ञानिक डा अरविन्द मांडेकर ने अग्निहोत्र के धुवे का विश्लेषण किया। उनका कहना है कि इस धुवे में सूक्ष्मजीवाणुरोधक करने वाला फार्मलडी हाईड एव अन्य अवरोधक सत्व होते हैं। प्रयोग करने के पश्चात् उन्होने जाना कि कमरे में सूक्ष्म जीवाणु की संख्या अग्निहोत्र के पश्चात् ९० प्रतिशत कम हुई। इस अग्निहोत्र को वायु शोधक कहा गया है।

विज्ञान ने यह सिद्ध किया है कि वायु में जो धुलिकण उड़ती है, वही आक्सीजन और हाईड्रोजन को मिलाकर पानी बनाने के लिए जामुन का काम करती है। यज्ञों का उद्देश्य जल बरसाना भी है। हवा का कार्बोलिक एसिड जो वृक्षों के खाने से बच जाती है और धुल के रूप में रह जाती है, उसे बरसात का पानी नीचे खेंच लाता है, और वह भी वृक्षों के लिए खाद बन जाता है। इस तरह से कार्बन पानी बरसाते व वृक्षों की खुराक बनने में सहायता करता है। कार्बन युक्त वायु मनुष्य के लिए हानियुक्त नहीं है, वैसे भी वृक्ष कार्बन को खाते हैं और आक्सीजन देते हैं। अतः यज्ञों पर कार्बन फैलाने का अभियोग नही लग सकता।

मनोवैज्ञानिक, कृषिवैज्ञानिक एवं जीवाणुवैज्ञानिक इस अग्निहोत्र के प्रकरण मे बहुत अधिक आशावादी नज़र आते हैं और उन्हें दृढ़ विश्वास है कि इसमें ईप्सीत सफलता भी मिलेगी। धर्मशास्त्र ग्रथों एवं आयुर्वेदिक ग्रन्थो में भी इस पर विशद् प्रकाश डाला गया है।

हम आशा करते हैं कि अग्निहोत्र से होने वाले लाभ से हमें निश्चित ही लाभ उठाना श्रेयस्कर ठहरेगा। इस पर हो रहे संशोधन निश्चित ही नास्ति पक्षियों के लिए एक चुनौती है।

सरकार पंजाब के बारे में सुखद भ्रांति छोड़े

प्रो० शेरसिंह

नई दिल्ली, ३० अप्रैल हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रोफेसर शेरसिंह ने आज केन्द्रीय सरकार से अनुरोध किया कि वह पजाब की स्थिति से कड़ाई व चतुराई से निपटे और वहां की घटनाओं को इस आशा में मौन दर्शक बनकर न देखती रहे कि अकाली दल की आंतरिक लड़ाई से मोर्चा विफल हो जायेगा।

आज यहां जारी एक बयान में प्रो० शेरसिंह ने कहा कि अकालियों के मध्य लड़ाई से स्थिति और पेचीदा हो सकती है और सरकार के लिए बातचीत द्वारा समस्या का समाधान करना बहुत कठिन हो जायेगा।

उन्होंने कहा कि सन्त हरचंदसिंह लौंगोवाल का हाल ही का बयान जिसमें उन्होंने सी० आर० पी० द्वारा मारे गये आतंकवादियों का बदला लेने की धमकी दी है, सरकार की आंख खोलने के लिए काफी होना चाहिए जोकि अभी भी समझौते की उमीद लगाए बैठी है। उन्होंने कहा कि सभी राष्ट्रीय नेताओं की अपीलों के बावजूद सत लौंगोवाल धारा २५ जलाने पर बजिद रहे थे। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि भाखड़ा से बिजली के आबंटन मे हरयाणा स भेदभाव किया जा रहा है। (पंजाब केसरी से साभार)

आर्यवीर दल हरयाणा द्वारा शिविरों का कार्यक्रम

प्रान्तीय आर्य वीर दल की आवश्यक बैठक जो दिनांक २२ अप्रैल १९८४ को प्रो० उत्तमचन्द जी शरर की अध्यक्षता में हुई उसमें ग्रीष्मावकाश में निम्नलिखित शिविर विभिन्न स्थानों पर लगाये जाने का निर्णय लिया गया।

१५ मई से २० मई तक गांव किशनपुरा माजरा (यमुनानगर) २७ मई से ३ जून तक आर्यसमाज नरवाणा, ८ जून से १० जून तक आर्यसमाज कम्बोपुरा (करनाल), ११ जून से १७ जून तक आर्यसमाज न्यू कालोनी पलवल, १५ जून से १७ जून तक आर्यसमाज दादूपुर करनाल, २४ जून से १ जुलाई तक आर्यसमाज माडल टाउन करनाल।

आर्य वीरांगना दल के शिविर

२८ मई से ३ जून तक आर्यसमाज कुंजपुरा करनाल, ४ जून से १० जून तक रोहतक।

अगला आठवां प्रान्तीय आर्यवीर महासम्मेलन १३, १४ अक्तूबर को पानीपत में होगा, जिसकी तैयारियां अभी से आरम्भ कर दी हैं। यह सम्मेलन आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के शताब्दी समारोह के साथ मनाया जायेगा।

वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा

गायों की रक्षा आवश्यक है

गाय को देहात में पूज्य माना जाता है क्योंकि उससे गरीब लोगों को किसान को आर्थिक समस्या तथा पारिवारिक समस्या सिद्ध होती है। भारत के दूरदर्शी नेता इस महत्व का आवश्यकता को समझते थे और अब भी समझते हैं।

महर्षि दयानन्द, महात्मा गांधी, सन्त विनोबा जीवन पर्यन्त बोध कर तथा अपने ग्रन्थों में लिखकर इसे प्रकट करते रहे हैं। गायों की रक्षा कराने के लिए उन्होंने अनेक प्रयत्न किये। बम्बई में देवनार संसार में दूसरे नम्बर का कतल स्थान माना जाता है। विनोबा जी ने उसकतल स्थान को हटवाने के लिए सत्याग्रह करवाया। जिस सत्याग्रह में हजारों सत्याग्रही गोमाता या निरीह पशुओं की रक्षा के लिए जेलों में गये।

इस कार्य में हरयाणा प्रान्त भी पीछे नहीं रहा। उससे भी अनेक वीर सत्याग्रही जेलों में पहुंचे। आर्यसमाज का भी इस सत्याग्रह में पूर्ण सहयोग रहा है। गुरुकुलों की भी इस कार्य में पूर्ण सहानुभूति रही है और है। गुरुकुल खानपुर का मैं छोटा सा सेवक भी जेल में गया जिससे पशुओं की रक्षा हो सके।

हमारी सरकार का कर्तव्य है गरीब पशुओं के मारने के स्थल बन्द होने चाहियें। यह आर्यों की भूमि है। स्वतन्त्र भारत से जल्दी से जल्दी यह कलंक दूर हो तभी हम दयानन्द का काम पूरा कर सकेंगे।

गोमाता के गुण

गौ माता मानव की माता, सबको करे भलाई।
हिन्दू मुस्लिम सिख ईसाई पारसी जैनी भाई॥
दूध दही घी मलाई मक्खन छाछ हुवे बलकारी।
बच्चा जच्चा जवान बूढा रोगी पुरुष अरु नारी।
बल बुद्धि को खूब बढावे हर मोसम में हितकर।
हर मोसम के भोजन बनते पूरी शाक मिठाई॥

सोचो प्यारे इसकी सारी चीजें बड़ी काम की।
हड्डी का तो खाद बनता है जूती बने चाम की।
खुर चर्बी सींगों से वस्तु बनती घने दाम की।
गोबर से चुल्हा लिपता है पेशाब से एक दवाई॥

ऋषि मुनि अरु विद्वानों ने गोमाता गुण गाया।
विधान बना तब गांधी जी ने विशेष नियम बनवाया।
प्रधान मन्त्री मुरार जी ने था विश्वास दिलाया।
इन्दिरा जी ने विनोबा जी के काम की करी बड़ाई॥

कांग्रेस के नेताओं ने मिलकर बात विचारी।
दो बैलों के निशान से ही निश्चित जीत हमारी।
जनता ने भी बड़े प्रेम से उन पर पर्ची डारी।
गायों के जायों से ही वह जीती गई लड़ाई॥

पश्चिम के धन्धे धन के लोभी नेता बने हमारे।
देहात का धन्धा चौपट करके विदेशों में पहुँचारे।
चमड़ा अरु गोमांस भेजकर डालर तेल मंगा रहे।
इस भारत को ले डूबेगी ऐसी पाप कमाई॥

दुनियां में नम्बर दो का है बम्बई में कतलखाना
अनगिनत बैल और बछड़े कटते हैं रोजाना।
सन्त विनोबा चाहते थे इस देश से कलंक मिटाना।
रामस्वरूप भी गये जेल में बनकर एक सिपाही॥

श्री रामस्वरूप वानप्रस्थ
सेवक—कन्या गुरुकुल खानपुर कलां

ग्राम कंवारी (हिसार) में दहेज सम्बन्धी निर्णय

३-४-८४ को ग्राम कंवारी में दहेज रूपी दानव से लड़ने के लिए सातवास की एकविशाल पंचायत का आयोजन हुआ जिसमें सख्ती बड़ी से ये निर्णय लिया गया कि सातबास के सम्पर्क आने वाले सभी आसपास के १५-२० गांवों में दहेज/विवाह सगाई सम्बन्धी लिये गये इस निर्णय पर सख्ती से कार्यवाही की जायेगी और भाई चारे के प्रतिकूल कार्यवाही करने वाले के खिलाफ भाईचारा पंचायत सख्त कार्यवाही करेगी।

मुख्य निर्णय निम्नलिखित हैं—

(१) लड़की (विवाहोपरान्त) छोड़ने या न भेजने पर ११००० रु० दोषी पक्ष को दण्ड। (२) सगाई मिलनी व अन्य छोटी मोटी सब रस्में १-१ रुपये से पूरी की जाएंगी। (३) विवाह में ५ से २५ बाराती से अधिक न होंगे। वाहन खर्च वर पक्ष वहन करें। (४) १०० रु० दान व अन्य रस्में १-१ रु० से पूरा की जाएंगी। (५) बर्तन फर्नीचर आभूषण वस्त्र विलासिता के उपयोग में आने वाली वस्तुए इत्यादि न दी जाएंगी (६) पांच सूट लड़की को एक दादस व एक सास के लिए दिया जा सकता है। (७) अन्य बहुत सी कुरीतियों रस्मों को भी सुनियोजित कर दिया गया है अन्ततः इन कुरीतियों का उल्लंघन करने वालों को ११०० रुपये दण्ड व लाई गई वस्तुएं वापस की जाएंगी। निर्णयों के बाद श्री नेकीराम सुलतानपुर ने बड़े ही पुरजोर शब्दों में ग्रामीण लोगों को दहेज के लालच को छोड़ने के लिए कहा

उन्होंने दहेज के लालची लोगों को लानत देते हुए पूछा कि क्या आप सब इस दहेज प्रथा से सब तंग नहीं हैं? अगर हैं तो क्या आप इसे छोड़ना चाहते हो? कहो, हाँ तो फिर क्यों चन्द जर के टुकड़ों में बिके बैठे हो। इस थोड़े से धन से क्या आपकी उमर कट जाएगी? अगर नहीं तो फिर क्यों इसे मां बाप व बेटा बेटी समझकर सीने से चिपकाए बैठे हो। आज से ही सब ये कसम उठा लो कि हम न दहेज लेंगे और न देंगे। पेट अपनी नेक कमाई से भरेगा। दूसरों के टुकड़ों का लालच मत करो। उनकी बात को सर्वसम्मति से माना गया तथा जो कोई हाल ही में कुछ नियम के विरुद्ध लाया था उसे वापिस पहुंचाने का निश्चय किया।

इसके उपरान्त श्री अतरसिंह आर्य कंवारी ने सातवास की पंचायत को कड़े शब्दों में कहा कि बालावास में शराब के ठेके को बन्द करने के लिए ठोस कदम उठाए तथा शीघ्रातिशीघ्र शराबबन्दी का निर्णय ले लिया जाए ताकि हमारा विनाश न हो पाए। क्योंकि शराब ही सब बुराइयों का मूल है। इस सम्बन्ध में १०-४-८४ को बालावास में एक विशाल पंचायत का आयोजन होगा। ऐसा आश्वासन सब पंचायतों की तरफ से दिया गया। आशा है हरयाणा ही नहीं हर भारतवासी ऐसा ही निश्चय कर लेगा।

इन्द्रसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कंवारी

सौ वर्ष से पहले की बात

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

स्वामी दयानन्द सरस्वती एक दिन भाषण करते हुए लोगों को कहने लगे—तुम अपनी बुद्धि से काम नहीं लेते। दूसरों की आंखों से देखते हो और उनकी बताई बातों को वेद-वाक्य मान लेते हो। तुम लोगों के समान एक राजा था। उसे एक ठग मिला और कहने लगा—राजन्! मैं एक ऐसा कपड़ा बना सकता हूँ जो केवल निर्दोष माता पिता की सन्तान को ही दिखाई दे सकता है। यह कपड़ा देखने में अत्यन्त सुन्दर होगा और न कभी फटेगा और न कभी पुराना होगा। राजा के मन में आया यदि ऐसा कपड़ा मिल जाए तो आनन्द रहेगा।

राजा ठग कि बातों में आ गया और ऐसे विचित्र कपड़ों को प्राप्त करने की इच्छा प्रकट की क्योंकि उसे अपने माता पिता के निर्दोष होने का पूर्ण विश्वास था।

कुछ दिनों के बाद ठग राजा से बोला—लो वे अद्भुत कपड़े तैयार हो गए हैं आप इन्हें मेरे साथ एकान्त में चलकर पहन लीजिए। राजा ने अपने बहुमूल्य वस्त्र उतार कर ठग को दे दिए। ठग ने फिर यों ही इधर-उधर हाथ फिराकर कहा—महाराज! मैंने आपको विचित्र वस्त्र पहना दिए हैं। अब आप स्वच्छन्दता पूर्वक इधर-उधर घूमें। राजा अपने आपको वस्त्र हीन देखकर अपनी मूर्खता नहीं मान रहा था, अपितु इससे अपनी मां का चरित्र दोष समझने लगा।

सबसे पहले वह रनिवास में गया। रानी ने उसे नंगा-धड़ंगा आते देखा तो वह शर्म के मारे पसीना-पसीना हो गई। उसने सोचा कि यह मेरे विचित्र और दिव्य कपड़ों को नहीं देख रही और मुझे नंगा समझ रही है। अतः यह भी मेरी मां की भांति चरित्रहीन है।

इसके बाद राजा सभा भवन में गया। राजा को वस्त्रहीन देख कर सभासद चकित हो गए। परन्तु मन्त्री बड़ा बुद्धिमान् था। उसने भांप लिया कि राजा को किसी ठग ने धोखा देकर ठग लिया है। उसने हाथ जोड़कर राजा से कहा राजन्! आपके वस्त्र विदेशी हैं। एक स्वदेशी कौपीन धारण कर लें तो अच्छा हो। इससे राजा को वास्तविकता का बोध हुआ।

स्वामी जी ने कहा—आप लोग स्वार्थियों के बहकाने में आकर नंगे राजा की भांति अपने देश और जाति की हंसी मत उड़वाओ। धर्म के ठेकेदार ठग की भांति स्वार्थ सिद्धि के लिए अन्धविश्वासों की गहरी खाई में ढकेल रहे हैं।

डा० रामरंग बाठला के निधन पर शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज कच्चा बाजार राम बाग रोड़ अम्बाला छावनी तथा उससे सम्बन्धित दोनों शिक्षण संस्थाओं (लक्ष्मी देवी आर्या गर्ल्ज हाई स्कूल तथा दयानन्द आर्य पुत्री पाठशाला) की ओर से स्वर्गीय डा० रामरङ्ग बाठला जी मैनेजर के आकस्मिक निधन पर प्रातः ९ बजे एक शोक सभा हुई। इस सभा में श्रद्धांजलियां अर्पित की और ऐसे कर्मठ तथा ईमानदार व्यक्ति को जो संस्था को कमी हुई वह कभी पूरी नहीं होगी। दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना की गई तथा यह भी प्रार्थना की गई कि ईश्वर इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति उनके परिवार को प्रदान करे।

शान्ति देवी आर्या

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन; दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि०,नं 23207/73 रजि०नं० HRTK 49 फोन ४८१२१ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी

रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहि... मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २३ १४ मई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

मैं तुझे कैसे पुकारूं?

यशपाल आर्यबन्धु, प्रचारमन्त्री, आर्यसमाज मुरादाबाद

सुना है तुझे पुकारने पर तू अवश्यमेव सुनता है एवं सहायता करता है। पर मैं कब से तुझे पुकार रहा हूँ, तू मेरी टेर क्यों नहीं सुनता? क्या मुझ से तुम्हें प्रीति नहीं या फिर मेरी पुकार तुझ तक पहुंच नहीं पाती। पहुंचे भी कैसे? जब मैं पुकारने की विधि जानूं तब न। लगता है जैसे—पुकारूं के तौर तरीकों से बेखबर, मैं तुझे पुकारता गया। परिणाम जो होना था, वही हुआ। जैसे—

रोज जाते हैं उनकी महफल में, फिर भी सामना नहीं होता

तुमने कहा था कि नामी को नाम से पुकारो और फिर तुमने निज नाम भी बता दिया था किन्तु मेरे मुख से तेरा निज नाम तो कभी निकला ही नहीं। सदा अंट शंट नामों से ही मैं तुझे पुकारता रहा। फिर तू सुनता कैसे? और जब तूने नहीं सुनी तो मैं तुझे कोसने लगा। तेरी अवमानना करने लगा और घोर नास्तिक बन गया। फिर दर दर की ठोकरें खाने और दुःख उठाने के सिवा मेरे लिए शेष बचा ही क्या?

यह भी सुना है कि तू हृदय मन्दिर में निवास करता है, किन्तु मैं तो सदा इधर उधर ही ढूंढता रहा। मुझे क्या पता था कि तू मन मन्दिर में विराज रहा है। मैंने अपने हृदय में कभी झांक कर देखा ही नहीं, फिर मुलाकात होती तो कैसे? और यदि कभी भूले से मैंने हृदय मन्दिर में झांक भी लिया तो मैं तुझे पहचान ही नहीं पाया। पास रहते हुए भी तू मुझ से दूर रहा और जल में रहकर भी मैं प्यासा ही रहा। पास रहते हुए भी सर्वथा अपरिचित, सर्वथा अनजान कैसी विडम्बना है? वस्तुतः—

कौन कहता है मुलाकात नहीं होती, रोज मिलते हैं पर बात नहीं होती। कितना नादान निकला मैं? कितना अन्जान कि कोई कल्पना भी नहीं कर सकता दुःख है—

खानाये दिल में छिपा था मुझे मालूम न था।
पर्दा गफलत का पड़ा था मुझे मालूम न था॥
मिस्ले आहू के मैं सरमर्दा फिरा सहरा में।
नाफ में नाफ छिपा था मुझे मालूम न था॥

कहते हैं कि भगवान् केवल एक ही भाषा जानता है और वह भाषा है हृदय की भाषा। यदि उसे अपनी बात सुनानी है तो हृदय की भाषा बोलनी ही होगी। हृदय में जब व्यग्रता, व्याकुलता, उत्कण्ठा एवं तड़प होगी तो हृदय स्वतः ही मुखरित हो उठेगा। कहते हैं-परमात्मा केवल वही सुनता है जो हृदय बोलता है और यदि हृदय ही गूंगा हो तो फिर परमात्मा सुनेगा ही क्या? जब मेरा हृदय ही गूंगा हो तो फिर उसे मैं अपनी बात सुनाऊं ही कैसे? सन्त कवि दादू ठीक ही कहते हैं—

'दादू पीड़ न उपजि, न हम करि पुकार, ताते साहिब न मिला दादू एती बार।' मैं तुझे सदैव हृदय-हीन शब्द सुनाता रहा जब कि तू शब्द—हीन हृदय सुना करता है जो मेरे से बन न पाया। फिर बात कैसे होती, मुलाकात कैसे होती? यह तो मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि तुझे सुनने के लिए न तो सुन्दर शब्दों की आवश्यकता होती है न सुललित भाषा की। बस हृदय में व्यग्रता, व्याकुलता, उत्कण्ठा, तड़प तथा एक मिलन की चाह उत्पन्न करने की आवश्यकता होती है, जो अपने से नहीं बन पाई। फिर मैं तेरे दर्शन कैसे कर पाता? पर नाथ!

नहीं हूं जानता भगवन् विनय कैसे सुनाऊं मैं,
विधि से सर्वथा अनभिज्ञ कहां से सीख आऊं मैं?

और सत्य तो यह है कि—

शऊरे सजदा नहीं है मुझको, तुम मेरे सजदे की लाज रखना।

प्रभु! मेरे हृदय में ऐसी तड़प, ऐसी व्यग्रता, ऐसी उत्कण्ठा, ऐसी लगन पैदा कर कि मेरा हृदय बोल उठे और फिर मुझे ऐसी दृष्टि प्रदान कर कि मैं हृदय मन्दिर में बैठे तुझे पहचान सकूं। प्रभु ऐसी कृपा करो कि मैं हृदय का काम कभी भी अपने होठों से न लूं। जब तू अनबोले बोलों को ही जान लेता है तो फिर बोलने की आवश्यकता ही क्या है? और फिर सत्य तो यह है कि—

दिल की हर बात कहीं लफ्जों में होती है बयां?
हर अफसाना कहीं ममनूने बयां होता है?

आओ प्रभु! मेरे हृदय में समा जाओ, मेरी आंखों में समा जाओ। अब तो यही कामना है, यही इच्छा है, यही बिनती है, यही प्रार्थना है।

विरह कमण्डल कर लिये वैरागी दो नयन
मांगे दरस मधुकरी छके रहें दिन रैन।

और प्रभु मैं तुझ से क्या मांगू?

तुझ से मांगू मैं तुझ ही को कि सब कुछ मिल जाये।
सौ सवालों से फकत यह इक सवाल अच्छा है॥

इसलिए—

तमन्ना है कि हम तुम से तुम्हीं को मांग लें साहिब।
हमारी आरजू तुम हो हमारा मुद्आ तुम हो॥

इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं चाहिये।

अनोखी तलब है अजब आरजू है, तुम्ही से तुम्हें मांगना चाहता हूं।

और प्रभु! यह भी सुना है कि—

तुझे फजल करते नहीं लगती बार,
न मायूस हो तुझ से उम्मीदवार।

और

चुपके चुपके जो सदस दिल से किया करता है,
उसको निश्चय ही वह मनजूर किया करता है।
बारमाहे ईश से मायूस न हो हरगिज,
तू तो इन्सान है वह चींटी की सुना करता है॥

शराब से सर्वनाश

विदेशीय आक्रमणकारी और हमारा पराजय

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

हमारे भारत देश पर राजा मुहम्मद बिन कासिम महमूद गजनवी और मुहम्मद गोरी ने आक्रमण किये, हमारा पराजय हुआ और हम अपनी स्वाधीनता छिनवा बैठे। हमारी हार के अनेक कारण हैं। मुख्य कारणों में से कुछ कारण निम्नलिखित हैं।

उत्तर भारत की सर्वसाधारण जनता का राजनैतिक पतन होगया था और उसमें व्यभिचार की मात्रा बहुत बढ गई थी। परिणाम स्वरूप उनकी युद्धकला का पतन हो गया था। व्यभिचारी कभी योद्धा नहीं होते। हिन्दुओं के प्रसिद्ध मन्दिरों कोणार्क, खजुराहो, पुरी, चितौड़ तथा उदयपुर आदि में बाहर भीतर जो अश्लील नग्न मूर्तियां दिखाई देती हैं वे जनता के चरित्र के अध-पतन की साक्षी हैं। वे उस समय के व्यभिचार का नंगा नाच है। दूसरा कारण यह कि आक्रमकारी उस समय कुरान की शिक्षा का कट्टरता से पालन करते थे और कुरान में शराब पीने को मनाही है, इसलिए उस समय के मुसलमान आक्रमणकारी शराब नहीं पीते थे।

उधर शराब और व्यभिचार ने हिन्दू राजा और प्रजा को खोखला कर दिया था। इसके अतिरिक्त वे युद्ध कला में हिन्दुओं से अधिक दक्ष थे। उनके अच्छे घोड़े थे और घुड़सवार सैनिक लम्बी तलवार और लम्बे भालों द्वारा बहुत तेजी और चालाकी से हिन्दू सेनाओं पर धुवांधार बाणवर्षा द्वारा आक्रमण करते थे। उनकी सेनायें बड़ी बड़ी थी। उनके सेनापति हिन्दू सेनापतियों की अपेक्षा अधिक थे, वे बड़े संगठित थे और हिन्दू राजाओं में आपस में फूट थी। अरब तथा तुर्क विजय को लक्ष्य बनाकर युद्ध करते थे और युद्ध के समय निन्दित से निन्दित साधनों को कार्य में लाना अनुचित नहीं समझते थे। हिन्दू राजा शत्रु की दुर्बलता से लाभ उठाना नहीं चाहते थे और न ही छल कपट का प्रयोग करते थे। अरब तथा तुर्क इन कार्यों में अत्यन्त कुशल थे। उपर्युक्त कारणों से हिन्दू राजाओं का पराजय हुआ। इनके पराजय का इससे भी मुख्य कारण शराब और विलासितापूर्ण व्यभिचार का जीवन था। इसी से इनका सर्वनाश हुआ।

महमूद गजनवी तो भारत के धन धान्य को लूटकर अपने देश को लौट गया, किन्तु मुहम्मद गोरी के उत्तराधिकारी ऐबक आदि ने भारत पर शासन किया। गुलाम, खिलजी, तुगलक, सैय्यद, लोधी आदि अनेक मुस्लिम वंशों का राज्य १२०६ ई० में प्रारम्भ होकर १५२६ ई० तक समाप्त हो जाता है। इसका मुख्य कारण मुस्लिम बादशाहों का विलासितापूर्ण जीवन था। जैसे खिलजी वंश का बादशाह अलाउद्दीन एक माना हुआ शासक था। उसने कितने ही राज्यों को केवल उनकी सुन्दर रानियों को अपनी बेगम बनाने के लिए युद्ध करके नष्ट किया। उसके विषय में लिखा है कि वह अत्यधिक विलासी और व्यभिचारी था। उसी के कारण उसका स्वास्थ्य नष्ट हो गया, उसे रुग्ण होकर शैय्या की शरण लेनी पड़ी। उसकी स्त्री तथा पुत्रों ने भी तनिक चिन्ता न की, अतः उसके रोग ने पहले से भी अधिक भीषणता रूप धारण कर लिया। उसकी रानी और पुत्र खिजर खां महलों में आमोद-प्रमोद से समय बिता रहे थे। उन्हें बादशाह की कोई परवाह न थी, क्योंकि उन्हें अपने भोगविलास से अवकाश नहीं मिलता था। इसने अपने लड़के और रानी को कैद में डलवा दिया। ऐसी अवस्था में इसके राज्य में चितौड़, देवगिरि आदि में हिन्दू राजाओं ने पुनः अपनी स्वतन्त्रता की घोषणा कर दी और तुर्की सेना को अपने राज्य से बाहर खदेड़ दिया। अलाउद्दीन की दशा और भी खराब हो गई, खराब होने से उसकी मृत्यु हो गई।

इसी प्रकार सभी वंशों के बादशाहों की दशा थी। इसलिये इन वंशों का शासन शीघ्र ही समाप्त हो गया और इन विलासी मुस्लिम बादशाहों का राज्य समाप्त करके मुगल राज्य का संस्थापक बाबर दिल्ली और आगरे के तख्त का स्वामी बन गया। उसके उत्थान पतन की कहानी अगले अंक में पढ़िये।

इन सबके सर्वनाश का कारण शराब और विलासी जीवन था।

क्रमशः

शराबबन्दी आन्दोलन के लिए दान सूची

आर्यसमाज बादली जिला रोहतक	५१ रुपये
(पं० मुन्शीराम भजनोपदेशक द्वारा)	
आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षेत्र	१०१ ,,
,, बोडसूजरा दिल्ली का माजरा जि. कुरुक्षेत्र	१०१ ,,
,, नारायणगढ़ जिला अम्बाला	१५१ ,,
श्री सुन्दरलाल उपप्रधान आर्यसमाज जगाधरी (अम्बाला)	३० ,,
श्री विद्यासागर भारद्वाज जगाधरी ,,	११ ,,
श्री वन्देमातरम जगाधरी ,,	५ ,,
प्रबन्धक उषा मेटल जगाधरी ,,	३१ ,,
प्रधान आर्यसमाज जगाधरी जिला अम्बाला	७१ ,,
आर्यसमाज छोटा माडल टाऊन यमुनानगर जिला अम्बाला	५१ ,,
मन्त्री आर्यसमाज रेलवे रोड ,, ,, ,,	१०१ ,,
ला० हरिराम मोहल्ला शमशान ,, ,, ,,	५० ,,
आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	१०१ ,,
ला० रुलियाराम सर्राफ थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	२१ ,,
(पं० हरिश्चन्द्र आर्य भजनोपदेशक द्वारा)	

सभी दान दाताओं का सभा की ओर से धन्यवाद।

सभा मन्त्री

अध्ययन एवं योग प्रशिक्षण शिविर

वैदिक साधन आश्रम, नालापानी, तपोवन देहरादून में दिनांक १६ मई १९८४ से जुलाई १९८४ तक योग दर्शन, न्याय दर्शन का संस्कृत एवं आर्यभाषा (हिन्दी) में अध्ययन, संस्कृत भाषा का अध्ययन, आसन प्रशिक्षण तथा क्रियात्मक योग प्रशिक्षण होगा। इस डेढ़ मास के शिक्षण शिविर के अध्यक्ष होंगे, पूज्यपाद योगाचार्य श्री स्वामी सत्यपति जी परिव्राजक। अनुशासन में रहना अनिवार्य होगा। भोजन के पात्र बिस्तर पुस्तकें, टार्च आदि सभी शिविरार्थि अपने साथ लावें। पुस्तकों में सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका, आर्योद्देश्यरत्नमाला, व्यवहारभानुः, न्यायदर्शन आदि लावें। शिविर में भाग लेने वाले महानुभाव शिविर स्थल पर १५ मई सायंकाल तक अवश्य पहुंच जावें तथा अपनी सूचना यथाशीघ्र पत्र द्वारा शिविर स्थल पर भेजें।

गुरुकुल झज्जर में प्रवेश सूचना

आप सबको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त और महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित महाविद्यालय गुरुकुल झज्जर में से जून तक प्रवेश आरम्भ है। ऋषि दयानन्द जी द्वारा निर्दिष्ट आर्ष पाठविधि (जिसकी परीक्षायें महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक लेता है) के निःशुल्क शिक्षण केन्द्र में चरित्रवान्, विद्वान् व सर्वांगीण विकास के लिए अपने बच्चों को प्रवेश कराकर लाभ उठावें।

आचार्य महाविद्यालय गुरुकुल
झज्जर जिला रोहतक

सिखों की अलगाव प्रवृति व आर्यसमाज

राजवीर शास्त्री सम्पादक दयानन्द सन्देश

(गतांक से आगे)

इस प्रकार एक परमेश्वर की सत्ता को मानकर कल्पित विभिन्न देवी-देवताओं को न मानना, परमेश्वर के सत्यनाम ओम् का ही जप करना और अन्य सम्प्रदायिक नामों का जप न करना, और परमेश्वर का जन्म आदि बन्धन में आकर अवतारादि न मानना तथा ईश्वरभक्ति के क्षेत्र में सर्वाधिक पाखण्डों का मूल कारण मूर्ति-पूजा इत्यादि को मौलिक सिद्धान्तों की समानता ही पंजाब में वैदिक धर्म के प्रचार का मुख्य कारण बनी।

(५) आर्यसमाज और सिखों में परस्पर कितना सौहार्दभाव अतीत में रहा है, इसका भली भांति बोध अतीत पर दृष्टि डालने से होता है। किन्तु सत्ता की भयावह कुटिल भूख और भाषावाद के कण्टिले जञ्जाल ने उसे सर्वथा ही नष्ट कर दिया, जिसे कोई भी निष्पक्ष व्यक्ति छिपा नहीं सकता। अतीत के गर्भ में छिपी निम्न ऐतिहासिक घटनायें इस बात के ज्वलन्त उदाहरण हैं—

(क) १९१९ ई० में सिखों का 'गुरु का बाग' विषय पर जब आन्दोलन चला था, उस समय आर्यसमाज के मूर्धन्य नेता अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली से जाकर न केवल आन्दोलन में ही भाग लिया था, प्रत्युत अपनी गिरफ्तारी भी दी थी।

(ख) १९३२ ई० में शहीद गञ्ज मजिस्द के केस में आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री दिवान बद्रीदास ने उस के में सिखों की ओर से बिना किसी फीस के न केवल पैरवी को थी, प्रत्युत उस केस में प्रिवी कांउसिल तक लड़कर जीत दिलायी थी और उस समय सिखों के प्रमुख नेता श्री मा० तारासिंह ने दिवान बद्रीदास जी का अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर में जो अभूतपूर्व सार्वजनिक सम्मान किया था, क्या उसे भुलाया जा सकता है ?

क्या इस प्रकार की पारस्परिक सौहार्दपूर्ण ऐतिहासिक घटनाओं को देखते हुए भी कोई कृतघ्न व्यक्ति यह कहने का साहस कर सकता है कि सिखों के अलगाववादी प्रवृति का कारण आर्यसमाज है ?

(६) श्री बलराज मधोक का स्पष्टीकरण

२७ अप्रेल ८४ के नवभारत टाईम्स में छपे 'पंजाब का संकट अकाली मानसिकता' नामक लेख में आपने प्रमाण देकर स्पष्ट किया है—

(क) पंजाब में केशधारी सिखों, गैर सिखों तथा हिन्दुओं में दूरी पैदा करने का दोष स्वामी दयानन्द द्वारा रचित सत्यार्थप्रकाश और आर्यसमाज पर मढ़ना भी गलत और तथ्यों के विपरीत है। सत्यार्थ प्रकाश की रचना १८७४ में हुई। इसकी भाषा हिन्दी है। इसके ग्यारहवें समुल्लास में अन्य हिन्दू पन्थों के साथ साथ पंजाब के नानक पन्थ की भी संक्षिप्त समीक्षा की गई है। महर्षि दयानन्द एक निर्भीक सत्यवादी और विद्वान् संन्यासी थे। उन्होंने जो कुछ लिखा है वह तथ्य और तर्क के आधार पर लिखा है। उन्होंने गुरुनानकदेव और गुरुगोबिन्दसिंह का उल्लेख आदर से किया है। उनका उद्देश्य प्रकाश डालना था, वैमनस्य पैदा करना नहीं। पंजाब के अनेक सिख भी आर्यसमाजी बने, उनमें शहीदे आजम सरदार भगतसिंह के पिता सरदार किशनसिंह भी थे।

(ख) अकाली मानसिकता के दुष्परिणाम—

पंजाब संकट का मूल कारण अकालियों की मानसिक संकीर्णता रही है, और अतीत इतिवृत्त भी इस बात का ज्वलन्त उदाहरण है कि इस दुष्प्रवृत्ति के सदैव दुष्परिणाम हुए हैं। इस रहस्य पर प्रकाश डालते हुए लेखक लिखता है —'अकाली मानसिकता की जड़ें पुरानी हैं। यह शुरु उस समय हुई जब वीर बन्दा वैरागी गुरु गोबिन्दसिंह जी से प्रेरणा लेकर पंजाब में उनके अधूरे काम को पूरा करने में लगे हुए थे। वे खालसा सेना के सेनानायक थे, गुरु नहीं। 'राज करेगा खालसा' यह भाई नन्दसिंह द्वारा लिखित एक दोहे का प्रथम भाग है, इसका प्रयोग उन्होंने ही पहिले पहल अपनी खालसा सेना के जयघोष के रूप में किया था। परन्तु क्योंकि वे विधिवत् केशधारी खालसा नहीं थे, इसलिए उन के कुछ केशधारी साथियों को उनका बढता हुआ प्रभाव अच्छा नहीं लगा। फलस्वरूप उन्होंने उनको धोखा दिया और वे मुगलों के हाथों में पड़ गये। स्वयं उनके पुत्र और उनके ४०० साथियों के बलिदान को यह अकाली मानसिकता से शहादत मानने को भी तैयार नहीं थी। इसके कारण वीर बन्दा वैरागी का पंजाब को मुस्लिम दासता से मुक्त करने का काम अधूरा रह गया।

(दूसरा उदाहरण) महाराजा रणजीतसिंह की सेना के सेनापति और मन्त्री केशधारी भी थे और सहजधारी (गैर केशधारी) भी।...... परन्तु अकाली मानसिकता वाले कुछ सिखों को रणजीतसिंह के दरबार में राजा ध्यानसिंह जैसे गैर केशधारी सिखों का वर्चस्व नहीं भाता था। १८३९ में महाराजा रणजीतसिंह के निधन के बाद उन्होंने पंजाब की सत्ता इन (गैर केशधारी) लोगों के हाथ से छीनने के लिए जो 'बरछा गर्दी' शुरु की, उसने महाराजा रणजीतसिंह की उपलब्धियों पर पानी फेर दिया और अंग्रेजों को पंजाब पर अधिकार करने का अवसर प्रदान किया। (नवभारत टाइम्स से साभार)

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी श्रीनगर में

आधुनिक युग के महान् राष्ट्रवादी, महान् समाज सुधारक, नारी और अछूतों के परमोद्धारक, अद्वितीय वेदज्ञ व महानतम बलिदानी, युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द की बलिदान शताब्दी २७, २८, २९ जुलाई १९८४ को श्रीनगर (काश्मीर) में जम्मू काश्मीर आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में समारोह पूर्वक मनाई जा रही है, जिसमें आर्यजगत् के उच्चकोटि के विद्वान्, सन्यासी महात्मा, उपदेशक व भजनोपदेशक पधार रहे हैं। भारतीय गणराज्य में जम्मू काश्मीर प्रदेश का विशिष्ट स्थान है। महर्षि कश्यप की इस पवित्र भूमि को राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने हिन्दू मुस्लिम एकता का प्रकाश स्तम्भ माना है। मनोहारी प्राकृतिक सौन्दर्य के लिए तो यह विश्व भर में 'धरती के स्वर्ग' के नाम से प्रसिद्ध है। जुलाई एवं अगस्त मास में काश्मीर घाटी का सौन्दर्य अपने पूरे यौवन पर होता है तथा लाखों देशी और विदेशी पर्यटकों को प्रतिवर्ष आकर्षित करता है। कभी यह स्थल वेद के पठन-पाठन में अग्रणी होने के कारण 'छोटी काशी' के नाम से विख्यात था प्रदेश में सर्वोत्कृष्ट स्थान होने के कारण ही प्रतिनिधि सभा ने श्रीनगर में यह महान् समारोह मनाने का निश्चय किया है। जम्मू काश्मीर के मुख्य मन्त्री डा० फारुख अब्दुल्ला २७ जुलाई १९८४ को इस समारोह का उद्घाटन करेंगे आपने अपनी राज्य सरकार की ओर से पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन भी दिया है।

आप अपने नगर से बस द्वारा सीधे श्रीनगर पहुंच सकते हैं। अगर आप रेलगाड़ी से आना चाहें तो जम्मू तक उससे आ सकते हैं। जम्मू से आगे बस का ही मार्ग है अतः रेलगाड़ी से आने वाले प्रतिनिधियों की संख्या, गाड़ी का नाम तथा जम्मू पहुंचने की तिथि आदि की सूचना १५ जुलाई तक सम्पर्क कार्यालय में पहुँच जानी चाहिये ताकि उनके बस द्वारा श्रीनगर प्रस्थान का समुचित व्यवस्था हो सके। जम्मू से श्रीनगर का मार्ग ९-१० घण्टे का है इसलिए सभी बसें प्रातःकाल ही प्रस्थान कर जाती हैं। रेलवे स्टेशन तथा बसों अड्डों पर प्रतिनिधियों की सहायता के लिए हमारे स्वयंसेवक उपस्थित रहेंगे। शोभायात्रा के अपने अपने ओ३म्ध्वज, साटी तथा केसरिया पगड़ी अथवा टोपी आदि साथ लावें। घाटी के दर्शनीय स्थलों में गुलमर्ग, सोनामार्ग, पहलगाम, डलझील, चश्मा शाही, चश्मा वेरीनाग, शालीमार एवं निशात आदि प्रमुख हैं।

डा० योगेन्द्र कुमार
प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू काश्मीर पुरानी मंडी जम्मू

ऋषि लंगर हेतु अन्न संग्रह करने की अपील

आपको भली प्रकार से ज्ञात है कि गत लगभग ३० वर्षों से दयानन्दमठ रोहतक में ऋषि लंगर (भण्डारा) चल रहा है, जिसमें आर्यसमाज के साधु, संन्यासी, वानप्रस्थी, उपदेशक, आर्यसमाज की भजन मण्डलियां और जिले तथा जिले से बाहर के आये हुए आर्यसमाजी अतिथियों के लिए भोजन का प्रबन्ध और रात्रि को विश्राम करने का प्रबन्ध है। १९५० के बाद आर्यसमाज के द्वारा जितने भी आन्दोलन हुए हैं उदाहरण के रूप में हिन्दी आन्दोलन १९५७, गोहत्या निषेध आन्दोलन, शराबबन्दी आन्दोलन आदि का हरयाणा का मुख्य केन्द्र दयानन्द मठ ही रहा है। १९६६ का चण्डीगढ़ का आन्दोलन का मुख्य कार्यालय भी दयानन्दमठ ही था। दयानन्द मठ न केवल आन्दोलन का गढ़ रहा है अपितु सामूहिक पंजाब में आर्य प्रतिनिधि सभा का उपकार्यालय भी इसी स्थान पर रहता रहा है और १९७५ जब से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का विभाजन हुआ है वह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख्य कार्यालय भी इसी में है। यहीं पर नित्य प्रति प्रातःकाल संध्या हवन यज्ञ और कथा होती है। नगर के आर्य वीर दल की शाखा भी नित्य प्रति यहीं लगती है। इसके अतिरिक्त हरयाणा रक्षा वाहिनी आदि के जिनमें हरयाणा के हितों की रक्षा की जाती है, का केन्द्र भी यही स्थान रहता रहा है। जबकि बैठकों का सारा प्रबन्ध दयानन्द मठ में होता है और उन सब बैठकों का भोजनादि का प्रबन्ध भी यही पर होता है। ऋषि लंगर के लिए केवल फसल के ऊपर अनाज (गेहूं) हम अपने ग्रामीण आर्य भाईयों से इकट्ठा करते हैं। हमारा वर्ष का सारा अन्न २०-२५ बोरी होता है।

अतः किसानों से निवेदन है कि आप अपने ग्राम के आर्य और अन्य दानी महानुभावों से न्यून से न्यून ५ बोरी गेहूं अवश्य इकट्ठा करके भिजवायें। इस कार्य के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के कार्यकर्ता या दयानन्दमठ के कार्यकर्ता आपकी सेवा में पत्र लेकर उपस्थित होंगे। गेहूं के अतिरिक्त दाल सब्जी लकड़ी और भोजन का सारा प्रबन्ध दयानन्दमठ और आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा ही करता है। आशा है आप इस महान् यज्ञ में अपनी आहूति अवश्य डालेंगे।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

प्रवेश सूचना

श्री स्वामी आत्मानन्द जी द्वारा संस्थापित श्रीमद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय यमुनानगर (शादीपुर) जिला अम्बाला में छात्रों को प्रवेश तिथि २० जून ८४ से ३० जून ८४ तक है। इस महाविद्यालय का एक मात्र उद्देश्य वैदिक धर्म प्रचारक, उपदेशक एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान् तैयार करना है। प्रवेशार्थी की योग्यता कम से कम आठवीं कक्षा या उसके समकक्ष होना अनिवार्य है। विद्यार्थी को भोजन, आवास शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है।

प्रधानाचार्य
श्री मद्दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय
यमुनानगर (शादीपुर) जिला अम्बाला

महाविद्यालय हाथरस जि० अलीगढ़ उ. प्र.

१ जुलाई १९८४ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास। सब का सीधा-साधा एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन नगर से दूर, स्वास्थ्यप्रद जलवायु। शरारती और न पढ़ने वाले छोटी कन्याओं का विशेष प्रबन्ध। सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म संगीत, नैतिकता, गृह कार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दुध, नाश्तों सहित भोजन शुल्क ९० रुपये मात्र। नियमावली मंगवायें।

मुख्याधिष्ठात्री

मदिरा से रहना होशियार!

बताता रहता हूं कि मदिरा से रहना होशियार।
यही वह जहर है जिसने सतयुग में भी फैलाया व्यभिचार॥

न हसरत इससे करना प्यार,
कभी शैतान कभी हैवान,
बनाती असुर कराती मार।

हाय इस पर भी रहे अचेत।
कौन सा बन जाता व्यवहार।
पत्नियां सिसक रहीं सब ओर,
और बहिनों का हो व्यापार।
मदिरा से रहना होशियार॥

सुखा देती यह सदा शरीर,
मचाती कितना हाहाकार,
देखते ही 'हसरत' को निए,
हूक कर देती बंटाढार।
मदिरा से रहना होशियार॥

अरे! तुम क्यों होते बेहोश,
मनाते हो पीकर त्योहार,
सिसकता रोता है परिवार,
मगर है तुमको क्या दरकार।
मदिरा से रहना होशियार॥

अभी तो मस्ती में भरपूर,
जवानी का लेते आधार,
कभी तो होगे तुम कमजोर,
तभी सोचोगे लोकाचार।
मदिरा से रहना होशियार॥

बताते इसको सब बेकार,
सभी धर्मों की है फटकार,
क्यों तुम डूबे हो भरपूर,
मेरी राय करो स्वीकार।
मदिरा से रहना होशियार॥

भयंकर बीमारी के साथ,
अचानक हो तबाह घरबार,
आंख खुलती है नशा धकेल,
धोखा लगता है संसार।
मदिरा से रहना होशियार॥

इसी से समझता हूं अभी,
कभी मत तुम शराब से प्यार,
पकड़ लो मद्यनिषेध की राह,
त्याग दो मादकता चटकार।
मदिरा से रहना होशियार॥

—बी० पी० रायजादा 'हसरत'
अवैतनिक मद्यनिषेध प्रचारक,
द्वारा जिला आबकारी अधिकारी; खीरी

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है, परन्तु कुछ महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः विवश होकर उनके पास आगामी अंक से सर्वहितकारी भेजना बन्द करना पड़ रहा है।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

पंजाब के आतंकवाद की निन्दा

आज १३-५-८४ को (रोहतक) हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ज्ञानी प्रतापसिंह और सुप्रसिद्ध पत्रकार रमेशचन्द की हत्या पर गम्भीर चिन्ता प्रकट की है और उग्रवादियों की हिंसात्मक आतंकवादी गतिविधियों की उन्होंने कटु भर्त्सना की। प्रो० साहब ने सरकार पर बरसते हुए कहा कि सरकार जब तक आंतकवादियों की धमकियों के सामने झुकेगी मामला उलझा ही रहेगा। उन्होंने कहा कि पंजाब समस्या का समाधान वार्ता से सम्भव नहीं है क्योंकि आंतकवादियों के लिए बातचीत का कोई मूल्य नहीं है। उन्होंने मानवता और समझदारी को कतई ताक पर रख छोड़ा है।

सभा प्रधान ने आगे कहा कि आखिर अकालियों से बात करने का सरकार के पास आधार क्या है? जिस लोगोंवाल से बातचीत चलाने के लिए सरकार इतनी खुशामद बार-२ कर रही है। उसने ज्ञानी प्रताप सिंह और श्री रमेशचन्द की हत्या की भर्त्सना तक नही की। यदि वे इसको अमानवीय कृत्य समझते तो सरदार जीवनसिंह उमरानांगल की तरह खुलकर कहते जिस प्रकार से वे आंतकवादियों को अविलम्ब गुरुद्वारों से निकालने के लिए कह रहे हैं। ऐसी अवस्था में उससे बात करने की तुक भी क्या है?

प्रो० साहब ने आगे कहा कि अकालियों ने पहले भी चण्डीगढ और अबोहर फाजिलका पर दो-दो बार फैसले किये हैं आज उन सब पर पानी फिर गया है। तब आगे उनसे समझौते या फैसले की बात करने से उन फैसलो को अकालियों द्वारा अमल लाये जाने की गारंटी क्या है? जिस पर भी सरकार का उनको बातचीत के लिए राजी करना सरकार की साख पर प्रश्न-चिन्ह लगा देता है। एतएव ऐसे विषाक्त वातावरण में फैसले की कोई भी बात निरर्थक है। वह ऐसे ही है जैसे कि शतुर्मुर्ग पर हमला हो तो वह रेत में अपनी चोंच दबाकर बैठ जाए। अब तो एकमात्र हल उग्रवादियों की आंतकवादी साम्प्रदायिक और विघटनकारी प्रवृत्तियों से सख्ती से निपटना है। इसलिए सरकार अविलम्ब अपराधियों की शरणस्थलियों पर छापा मारकर स्थिति पर काबु पाये नहीं तो स्थिति इसी तरह से और भी बेहतर होती जायेगी।

प्रो० शेरसिंह ने पंजाब सरकार और हरयाणा तथा राजस्थान सरकार के नये फैसले की कड़ी आलोचना की है। उनका कहना है कि जब तक हरयाणा या पंजाब को हिस्से का पानी उन्हें न मिल जाये तब तक कोई भी फैसला करना अपने उतावलेपन और कमजोरी को जाहिर करना है। इसलिए उन्होंने किसी भी फसले से पूर्व पीछे के फैसलों पर अमल की बात कही है और अग्रिम फैसले के लिए पंजाब के लिए वे दो शर्तें लगा देना जरुरी मानते हैं—

१) हरयाणा के हिस्से के पानी के लिए सतलुज-व्यास यमुना-लिंक नहर के निर्माण को अविलम्ब पूर्ण कराया जाये।

२) रोपड़, हरीके और फिरोजपुर के हैडवर्क्स पर केन्द्र द्वारा स्थापित भाखडा-सतलुज बोर्ड का नियन्त्रण कायम किया जाये।

उपरोक्त दो शर्तों का पंजाब द्वारा मान लिए जाने पर ही आगे कोई बात चल सकती है। अन्यथा इस तरह के अधकचरे समझौते हरयाणा के लिए सदा घाटे के सौदे रहे हैं। अतः हरयाणा व राजस्थान सरकार को दृढता पूर्वक अपना पक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। तभी उनके प्रादेशिक हितों की सुरक्षा हो सकती है। नहीं तो अकाली पीछे की तरह सभी फैसलों की धज्जियां उड़ाते रहेंगे।

भेंटकर्ता—धर्मचन्द विद्यालंकार

रोहतक में शहीद रमेशचन्द को श्रद्धांजलि

रोहतक १२ मई—(कार्यालय संवाददाता) आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला के उत्सव पर स्थानीय भगतसिंह पार्क में चौधरी राममेहर एडवोकेट ने पंजाब केसरी, हिन्द समाचार तथा जगवाणी के सम्पादक एवं शहीद जगतनारायण के सुपुत्र श्री रमेशचन्द को उग्रवादियों द्वारा शहीद किये जाने पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए कहा कि आर्यसमाज की विचार धारा रखने वाला बड़े से बड़ा बलिदान देने को तैयार रहता है, परन्तु अपने सिद्धान्तों को नहीं छोड़ता। श्री रमेश जी अपने पिता जी की भांति निडर पत्रकार थे।

आज के दुखदायी दिन पर शहीद भगतसिंह की बहन अमरकौर ने भी अपनी जीवन यात्रा समाप्त करते हुए नवयुवकों को राष्ट्ररक्षा हेतु तैयार रहने का आह्वान किया। चौ० राममेहर के प्रस्ताव पर दोनों दिवंगत नेताओं को मौन श्रद्धांजलि दी गई। सुप्रसिद्ध पत्रकार श्री नरेन्द्र सम्पादक प्रताप ने इस अवसर पर भारत सरकार को पंजाब में नरसंहार को रोकने के लिए कड़ा पग उठाने का परामर्श दिया और उग्रवादी अकालियों की अनुचित मांगें रद्द करने का सुझाव दिया। आपने स्मरण करवाया कि अकाली एक के बाद नई मांगें खड़ी करके समस्या को हल नहीं होने देते। वे समझौताकरके मुकर जाते हैं।

अतः अकालियों से किसी भी मूल्य पर अब वार्ता नहीं करनी चाहिए। आपने भारत का संविधान जलाने वालों को रिहा करने पर सरकार की आलोचना करते हुए कहा कि देश के गद्दारों के आगे सरकार झुक रही है। चण्डीगढ तथा अबोहर फाजिलका हरयाणा को मिलने चाहिए, परन्तु लगता है कि सरकार अकालियों के दबाव में आकर हरयाणा के हितों की रक्षा नही करेगी।

श्री हरकिशनलाल भगत सूचना एवं प्रसारण मन्त्री को ज्ञापन

संस्कृत सभी भाषाओं की जननी भाषा है। सभी भाषाएं संस्कृत से ही निकली हैं। भारत के महामहिम राष्ट्रपति माननीय ज्ञानी जैल सिंह महोदय ने भी स्वयं यह स्वीकारा है कि भारतीय संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाएं संस्कृत की ही देन है। परन्तु दूरदर्शन द्वारा संस्कृत से बहुत ज्यादा सौतेला व्यवहार किया जा रहा है। दूरदर्शन कभी कोई भी कार्यक्रम संस्कृत में नहीं देता। अगर दूरदर्शन अपने राष्ट्रीय प्रसारण में संस्कृत में भी कोई कार्यक्रम देने लगे तो बहुत से लोगों की रुचि संस्कृत में बढ जाएगी। अतः जिस प्रकार आकाशवाणी से संस्कृत में समाचार प्रसारित किए जाते हैं उसी प्रकार दूरदर्शन से राष्ट्रीय प्रसारण में संस्कृत में समाचार प्रसारित किए जाएं जिससे कि लोगों की संस्कृत में रुचि बढ़े तथा उन्हें एकता के सूत्र में पिरोया जा सके।

सुरेशचन्द गुप्ता
नायक आर्य वीर दल पलवल

डा० रणजीतसिंह जी का सफल आप्रेशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी का मेडिकल हस्पताल रोहतक में दिनांक ११ मई को पेट का आप्रेशन किया गया है।


डा० रणजीतसिंह

परमात्मा की कृपा से आप्रेशन सफल रहा, परन्तु अभी पूर्ण विश्राम के लिए लगभग ३ सप्ताह मेडिकल में ही रहना पड़ेगा। वे वार्ड १ कक्ष ७ में प्रविष्ट हैं। इस कारण आपने एक मास तक अपने सारे कार्यक्रम रद्द कर दिये हैं।

चौ: हरकिशन मलिक सेवानिवृत सेशनजज

आप गत वर्ष दिल्ली से सेशनजज के पद से सेवा निवृत हो गये हैं और अब शेष जीवन आर्यसमाज के प्रचार प्रसार कार्यों में लगा रहे हैं। आपने अपनी ३० लाख रुपये की सम्पत्ति का परोपकारी ट्रस्ट बना दिया है और वैदिक साहित्य का प्रकाशन तथा प्रचार कर रहे हैं।


चौ० हरकिशनसिंह मलिक

आपने जून मास का समय सभा को वेदप्रचार कार्य के लिए निःशुल्क दिया है। जो आर्यसमाजें इन्हें अपने उत्सवों आदि पर आमन्त्रित करना चाहें वे सभा के कार्यालय से पत्र व्यवहार करें।

लोग सिगरेट पिएंगे तो फेफड़े गलेंगे

नई दिल्ली, ६ मई (प्रेट्र)। विश्व स्वास्थ्य संगठन के विशेषज्ञों का कहना है कि कई विकासशील देशों में सिगरेट को खपत काफो बढ़ रही है। इससे एक दशक के भीतर फेफड़े का कैंसर उग्र रूप धारण कर लेगा।

हाल ही में प्रकाशित एक रिपोर्ट में इन विशेषज्ञों ने कहा है कि सिगरेट के विज्ञापनों पर रोक न लगाने, लोगों को स्वास्थ्य के खतरे के बारे में न बताने और जनचेतना के राष्ट्रीय कार्यक्रम न होने से फेफड़े का कैंसर एक दशक के भीतर बहुत तेजी से फैल जाएगा।

विशेषज्ञों के अनुसार सिगरेट पीने की आदत को बढ़ावा देने के लिए बड़े आकर्षक विज्ञापन दिए जाते हैं। इससे तीसरी दुनियां के देशों की जीवन चर्या ही बदल गई है। रिपोर्ट में कहा गया है कि चीन और भारत में एक चौथाई से लेकर एक तिहाई पुरुष १८ से २० वर्ष तक की उम्र में तम्बाकु पीने के आदि हो जाते हैं।

१९६३ और १९७५ के बीच चीन के सबसे बड़े शहर शंघाई में फेफड़े के कैंसर से पीड़ित लोगों की संख्या दुगनी हो गई।

मलेशिया में १९७७ में तबाकु कम्पनियों ने अपने विज्ञापनों पर लगभग ५० लाख डालर खर्च किया। दरअसल सिगरेट कम्पनियों के प्रचार का तरीका इतना लुभावना होता है कि लोगों में इसका बड़ा गहरा असर होता है। लोग धुम्रपान की देशी चीजों को छोड़कर सिगरेट की तरफ ही दौड़ पड़ते हैं।

विशेषज्ञों के अनुसार इन सबका नतीजा यह हुआ है कि प्रायः सभी देशों में ५० प्रतिशत से अधिक वयस्क पुरुष किसी ने किसी प्रकार का तंबाकू खाते हैं।

हाल ही में आयोजित धूम्रपान और स्वास्थ्य विश्व सम्मेलन के महासचिव डा० कुंत बोमगार्टनर का कहना है कि विकासशील देशों में में अब किशोरियां भी धूम्रपान करने लगी हैं।

विशेषज्ञों का कहना है कि हर साल फेफड़े के कैंसर के ५१०,००० मामले सामने आते हैं। इतना ही नहीं इस बीमारी से हर साल दस लाख से अधिक लोगों की असामयिक मौत होती है।

रिपोर्ट में धूम्रपान को फेफड़े के कैंसर का ही कारण नहीं बताया गया है बल्कि उसे अन्य बीमारियों का कारण भी कहा गया है।

रिपोर्ट में कहा गया है कि तंबाकू पर लगे करों से सरकार को काफी आय होती है लेकिन देश को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ती है।

रिपोर्ट के अनुसार विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों की सिगरेटों में तार और निकोटीन अधिक पाए जाते हैं जो काफी नुकसानदेह है।

(जनसत्ता से साभार)

एक सामयिक राष्ट्रीय रचना

—निर्भय हाथरसी

अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है॥
जिन हाथों में देश धर्म रक्षा का दारमदार है।
उन हाथों में बरछी भाला और कृपाण कटार है।
सारे देश के हर प्राणी के मन में यही विचार है।
'सच्चा सिख सरदार कभी क्या हो सकता गद्दार है?
अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है॥"
सच्चा शिष्य वही है जिसको गुरुवाणी का ध्यान हो।
जाति पाति से मुक्त सभी का जीवन एक समान हो।
गुरु के बन्दे 'पंज-पियारों' ने हमको समझा दिया—
शुद्ध खालसा पन्थ का मतलब है कि आत्म बलिदान हो।
आज उसी के द्वारा क्यों निर्दोषों का सहार है।
अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है॥
दुखियारे जीवों का दुःख हरना सिखों का धर्म है।
निर्बल तन मन को धीरज धरना सिखों का धर्म है।
केश कड़ा कंघा कृपाण कच्छा के पंच ककार स—
शोषित पीड़ित की रक्षा करना सिखों का धर्म है।
गुरु नानक से गोविन्दसिंह तक सबका हो यह सार है।
अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है॥
फूट करा दी किसी पड़ोसी ने ऐसी परिवार में।
सबका जीवन भटक रहा है हिंसा की मझधार में।
'हिन्दू सिख' प्रगति की गति में बढ़े हुए दो पांव थे—
वह दोनों लड़खड़ा रहे हैं आपस की तकरार में।
बिना विचारे सोचे समझे केवल मारामार है।
अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है॥
गुरुओं का सम्मान बढ़ाना हम सबका कर्त्तव्य है।
संस्कृति के सरदार कहाना हम सबका कर्त्तव्य है।
अपने हों कि पराये हों सब हत्यारों के हाथ से—
अमृतसर की शान बचाना हम सबका कर्त्तव्य है।
है सच्चा सरदार वही जिसको भारत से प्यार है।
अमृतसर के अमृतसर में अमृत हो तो सार है।
अमृतसर में मौत मिले तो अमृतसर बेकार है।

(जुगनू पाक्षिक से साभार)

वैदिक यति मण्डल की हरयाणा में ऐतिहासिक पदयात्रा सम्पन्न

[गतांक से आगे]

आप सब सर्वहितकारी के पाठकों ने पढ़ा होगा कि वैदिक यति मण्डल के पदयात्री भिवानी जिले में चन्दानी ग्राम में प्रचार करते मिशनरी भावना से बढ़ रहे थे, सभी पदयात्रियों के हृदय में एक उत्साह था, उमङ्ग थी अपनी वृद्धावस्था को भूलकर वे एक नवयुवक की तरह चल रहे थे। चनेनी से जब ये यात्री माई के लिए चले तो इस ग्राम के लोगों में उत्साह की एक लहर सी थी वे और सुनना चाहते थे लेकिन निश्चित कार्यक्रम के अनुसार सबका आगे बढ़ना था, माई में प्रचार हुआ, यहा के लोगों ने प्रचार को बड़े अच्छे ढंग से सुना, यहा प्रचार करके हम सब रुदड़ोल की ओर बढ़े।

जब यह पदयात्रियों का मिशनरी जत्था रुदड़ोल की सीमा पर पहुंचा तो वहां युवकों और बच्चों ने इन सबका स्वागत किया और इनके साथ ही अपने गांव में पहुंचे, गांव में जयघोष करते हुए बाहर आ गये और स्वामी ओमानन्द जी महाराज की प्रतीक्षा करने लगे तभी वे भी अपनी गाड़ी से आ पहुँचे, गांव के सैकड़ों युवकों तथा बच्चों ने इन सबका भावभीना स्वागत किया। जब सारे गांव के लोग मिलकर स्वामी ओमानन्द जी महाराज की जय हो, अमर रहे के नारे लगाते थे तो देखते ही बनता था। यहां के निवासियों में विशेष रूप से नवयुवकों में बड़ी ही चेतना देखने को मिली। यहां के युवकों व बच्चों आदि सभी में आर्यसमाज के प्रति विशेष रुचि देखने को मिली, रात्रि में गांवों में बहुत ही अच्छे तरीके से प्रचार हुआ। सभी नर नारियों ने प्रचार में उत्साह पूर्वक भाग लिया है।

प्रातः ग्राम पंचायत भवन में यज्ञ हुआ। यज्ञ में भी युवकों का उत्साह दर्शनीय ही था। दो सौ (२००) के लगभग आर्य वीरों ने यज्ञोपवीत लिए। गांव में आर्यसमाज बनाने पर विचार हुआ। एक दानी ने एक किला भूमि जिसमें कुआं भी है दान देने को पहले ही कह रखा था परन्तु बाद में वह न जाने क्यों दूसरी जगह देने को कहने लगा। अब गांव के पास ही सरपंच की कोशिश से अच्छी जगह मिल गई है, यहां का सरपंच भी युवक और विशुद्ध आर्य विचारों का है। यज्ञोपरान्त लेखक का व्यायाम प्रदर्शन हुआ जिसे देखने के लिए आस पास के ग्रामों से भी लोग आये थे और बहुत ही लालायित थे। यहां पर जलनेति सूत्रनेति आदि यौगिक क्रियायें भी करके दिखाई गई। शक्ति के प्रदर्शन भी हुए जिन्हें देखकर यहां के युवकों में और भी अधिक उत्साह बढ़ गया तथा उनके हृदय में अपने और समाज के प्रति कुछ कर गुजरने की भावनायें हिलारे लेने लगी। ग्रामवासियों ने जहां मुझे धन देकर सम्मानित किया वहां पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज को भी २०२) रुपये के नोटों की माला पहनाई। यहां पर श्री कंवलसिंह जी के घर पर भोजन करके हम सब रामबास पहुंचे, जहां स्कूल में हमारी पहले से ही प्रतीक्षा हो रही थी, वहां पर प्रचार हुआ और ५१) की माला पूज्य स्वामी ओमानन्द जी को और ५१) की माला श्री स्वामी सोमानन्द जी को पहनाई गई। यहां पर भी प्रचार को लोगों ने खूब सुना। यहां के बाद हम दगड़ोली गये, दगड़ोली में जयघोषों के साथ प्रभातफेरी सी करके हम गांव के मध्य में छाया देखकर बैठ गये और किया प्रचार शुरु। जब महाशय जयपाल जी ने ये भजन गाया कि "सुनो सुनो रे भाइयो शराब जैसी बुरी चीज नहीं, पढ़ देखो इतिहास करेगी पीने वालों का नाश" तो महिला उठकर कहने लगी कि यहां के लोगों को अच्छी तरह समझाओ ये नहीं मानते किसी की, हमारा तो घर बरबाद कर दिया। ऐसे ही इनके बच्चे बनेंगे। जब ये पता चल गया कि इस गांव के लोग अधिक शराबी हैं तो पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज ने इसी विषय पर बहुत ही हृदयस्पर्शी भाषण दिया और शराब से होने वाली हानियों को अच्छी तरह समझाया और अन्त में अपनी झोली फैलाकर मार्मिक शब्दों में ये अपील की कि ये शराब जैसी बुरी आदत आज मेरी इस खाली झोली में डाल दो और अपने ऊपर दया न करते हो तो उन नन्हे मुन्ने अपने प्यारे बच्चों पर तो दया करो जो नंगे भूखे तुम्हारी ओर दया की दृष्टि से निहार रहे हैं।

इन शब्दों ने कुछ जादू सा किया परिणाम स्वरूप अनेकों ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञायें की और एक व्यक्ति ने तो सबके बीच में खड़े होकर तथा दोनों हाथ ऊपर करके कहा कि आचार्य जी! आज आप की बात समझ में आ गई आज के बाद मैं कभी शराब नहीं पीऊंगा। ये वह व्यक्ति था जो गांव में सबसे बदनाम शराबी था, जो किसी की मानता ही नहीं था, बहुतों ने समझाया परन्तु किसी की न मानी। आज जब सबके मध्य खड़े होकर कहा तो लोगों को विश्वास हो गया कि अब छोड़ देगा और उसने छोड़ भी दी। ये वही व्यक्ति था जिसकी पत्नी ने सबके बीच में कहा था कि—'आन गाम आला नै समझाओ स्वामी जी! आन के टाबर भूखा मरे से आर ये शराब को छोड़ता ना। जब उस व्यक्ति ने ऐसा कह दिया तो वह देवी स्वामी जी के पास आई और बड़ा धन्यवाद किया तथा फिर आने के लिए कहने लगी कि—आन ने बार बार सम्भालते रहोगे तै और भी घणाय सुधर जागं। यहां पर प्रचार करके कादमा पहुंचे, वहां पर स्कूल में ही भोजन और ठहरने का प्रबन्ध था। सायंकाल भोजनोपरान्त रात्रि में देर तक प्रचार होता रहा, कुछ शरारती बच्चे थे उन्हें अध्यापकों ने ठीक कर दिया और प्रचार अच्छे ढंग से होता रहा।

ब्र० रामवीर गुरुकुल झज्जर

(क्रमशः)

अमृत धार बहाना है

राधेश्याम आर्य विद्यावाचस्पति सुलतानपुर

हे आर्य वीर! तुम बढ़े चलो,
नूतन संसार बसाना है।
भू पर फैली दानवता जो,
निर्भय उसे हटाना है।
जर्जर रीति रिवाजों में नव,
प्राण फूंकना सत्वर।
स्वच्छ समाज बनाना है फिर,
पाखण्डों को तुम्हें मिटाकर।

आगे बढ़ कर वीर जयी बन,
करो दनुजता पर प्रतिघात।
भ्रष्टाचारों के गढ़ पर तुम,
करो निरन्तर बज्र निपात।
विकल हुए पीड़ित लोगों को,
तुम्हें सान्त्वना देना।
शोषित अभिशापित लोगों की,
विह्वलता हर लेना।

हो वैचारिक क्रान्तिधरा पर,
मानवता का सतत विकास।
सुख समृद्धि सफलता छाए,
फैले भू पर हर्षोल्लास।
जन-गण-मन में आज हमें,
फिर भ्रातृभाव बढ़ाना है।
ऋषि मुनियों की अमृत सतति
अमृत धार बहाना है॥

विश्व में विविध शान्ति यज्ञ से ही सम्भव

लेखक श्री प० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य

१—शिव संकल्पमस्तु (यजु० ३६-१)

आज विश्व में सर्वत्र अशान्ति ही अशान्ति उत्तरोत्तर बढ़ रही है। अशान्ति का मूल कारण मन तत्व से है। यह अशान्ति स्वार्थ, द्वेषादि दुर्भावनाओं अर्थात् अमंगल विचारों से उत्पन्न है। अतः मानव के मन तत्व में शिवसंकल्प का उदय होना आवश्यक है। समानं मनः सहचित्तमेषाम् (ऋग्वेद) की भावना का प्रयत्न करना चाहिए।

२—यव से स्वाहा (यजु० २२-२३)

पृथ्वी में बीजों के बोने से पृथ्वी हरी-भरी अन्न फलादि से पूर्ण हो जाती है। इसी प्रकार समष्टि मन तत्व में यदि द्वेषभाव प्रसारित होता है तो अशान्ति एवं युद्ध का उन्माद उत्पन्न हो जाता है। यदि शान्ति के सद्विचारों का, प्रेम के विचारों का प्रसारण किया जावेगा तो विश्व में शान्ति और प्रेम का व्यवहार उत्पन्न होगा। अतः दुरितानि परासुव दुष्टभावों विरोधी कार्यों का त्याग करना आवश्यक है।

३—मनो यज्ञेन कल्पताम् (यजु० १८-२९)

यह कार्य सामूहिक संकल्प शक्ति, प्रार्थना द्वारा सफल होता है, जब इसमें यज्ञ द्वारा पर्यावरण को शुद्ध और पुष्ट करने के लिए वेद मन्त्रों की ध्वनि शक्ति के साथ आहुति शक्ति संयुक्त हो जाती है तो उस का प्रभाव शीघ्र विश्वव्यापी हो जाता है जिससे सा मा शान्तिरेधि—मानवमात्र में शान्ति की वृद्धि होने लगती है।

४—वसोः पवित्रमसि द्यौरसि (यजु० १-२)

यज्ञ पवित्रकर्त्ता है तथा हजारों प्रकार से पवित्रकर्त्ता है। जिस प्रकार से द्युलोक में सूर्य प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रकाश को उत्पन्न करता है उसी प्रकार यज्ञ भी सूर्य समान प्रकाशित होकर सर्वत्र प्रभाव उत्पन्न करता है अतः निःसंकोच भाव से, श्रद्धापूर्वक दृढ़ संकल्प से, विश्व शान्ति के लिए यज्ञ का अनुष्ठान करना चाहिये—अवश्य विश्वशान्ति होगी।

५—परमेण धाम्ना दृंहस्व मा ह्वाः (यजु० १-२)

वह यज्ञ विश्व के उत्कृष्ट मण्डल, परिधियों में, अन्तरिक्ष की विविध कक्षाओं में स्थित होकर पृथ्वी मण्डल के मानसतत्व व भौतिक पदार्थों को प्रभावित करता है—जैसे आजकल पृथ्वी से भूउपग्रह नियत दूरी की अन्तरिक्ष कक्षाओं में स्थिर करके उससे प्रतिक्षण लाभ की प्राप्ति की जाती है। इसी प्रकार यज्ञ भी अन्तरिक्ष और द्युलोक की कक्षाओं, परिधियों में स्थापित होकर उसका प्रसारण भूमण्डल के चेतन एवं जड़ जगत् को प्रभावित करता है। अतः मा ह्वाः (यजु० १-२) उस यज्ञ का त्याग कभी मत करो उसका अनुष्ठान अवश्य करो। यह विश्व को आयु और पोषण प्रदान करेगा (यजु० १-४)

६—गायत्रेण त्वा छन्दसा सादयामि (यजु० १३-५३)

यज्ञ गायत्री मन्त्र के छन्दों से, त्रिष्टुप् छन्दों के मन्त्रों से, जगती छन्द के मन्त्रों से, अनुष्टुप् छन्द के मन्त्रों से अन्तरिक्ष और द्युलोक की विविध कक्षाओं में स्थापित किया जाता है। वेद का यज्ञ विज्ञान स्पष्ट निर्देश दे रहा है कि विश्व शान्ति के लिए यज्ञों का अनुष्ठान करें-अवश्य सफलता प्राप्त होगी। राजनीतिक, साम्प्रदायिक, जाति मूलक, राष्ट्रगत विद्वेष मन में शिव-संकल्प के उदय होने से ही शान्त होंगे-पूर्ण शान्त होंगे तो प्राकृतिक प्रकोप आंधी, तूफान, बाढ़, सूखा आदि भी यज्ञ के प्रभाव से स्वतः शान्त होंगे। मा वि द्विषाव है-द्वेष भावों का उन्मूलन होगा—शान्तिरेव शान्तिः—सर्वत्र शान्ति ही शान्ति प्रसारित होगी।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० न० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २४ २१ मई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

महर्षि दयानन्द पर फिल्म का विरोध करें

श्री भगवानदेव संसत्सदस्य महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने जा रहे हैं—इस समाचार से देश भर के आर्यसमाजों तथा आर्य पुरुषों में रोष की लहर फैल गई है। इस समस्या पर विचार करने के लिए महर्षि दयानन्द की परोपकारिणी सभा की एक बैठक दिल्ली में ६ मई को हुई। बैठक में श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती, स्वामी सत्यप्रकाश जी सरस्वती, स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती, महात्मा आर्यभिक्षु जी, प्रो० शेरसिंह, डाक्टर भवानीलाल जी भारतीय, प्रो० रत्नसिंह जी, श्री क्षितीश वेदालंकार, रायसाहब चौ० प्रतापसिंह जी तथा श्री रामनाथ सहगल आदि प्रमुख नेता तथा विद्वान् उपस्थित थे। विचारान्तर निम्न-लिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकार हुआ—

रामलीला के सन्दर्भ में राव कर्णसिंह की भर्त्सना करते हुए महर्षि दयानन्द ने कहा था—"आपके सम्मुख आपके पूज्य महापुरुषों के रूप भर कर मलिन मनुष्य आते हैं और आप लोग बैठे बैठे देखा करते हैं। उस समय आपको लज्जा नहीं आती। किसी साधारण पुरुष के माता पिता का रूप भर के कोई नचावे तो उसे कितना बुरा लगता है। परन्तु आप कुलीन लोग अपने मान्य महापुरुषों के स्वांग भरते हैं और प्रसन्न होते हैं।"

पुन: रामलीला के सन्दर्भ में लखनऊ के सेठ बृजलाल के एक प्रश्न का उत्तर देते हुए स्वामी जी ने कहा था—"रामलीला देखना हजार हत्याओं के समान पाप है।"

ला० कालीचरण के नाम १६ अक्तूबर १८८२ को लिखे अपने पत्र में स्वामी जी ने लिखा था—"तुम आर्यसमाज के पत्र में नाटक मत छापो। यह आर्यसमाज है, भडुआ समाज नहीं जो तुम नाटक छापते हो। यह भडुआपन की बात है। इसलिए ऐसा करना उचित नहीं।"

महर्षि दयानन्द के उक्त वचनों के होते हुए स्वयं महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाये जाने और किसी के द्वारा उनका रूप भरे जाने को आर्यसमाज सहन नहीं कर सकता। ऐसा करना महर्षि दयानन्द जैसे देव पुरुष का घोर अपमान करना होगा जो अन्तत: आर्यसमाज के लिए घातक सिद्ध होगा। अत: यह सभा निश्चय करती है कि महर्षि दयानन्द पर फिल्म निर्माण को रोकने के लिए हर सम्भव उपाय से प्रयत्न किया जाये।

यह सभा यह भी निश्चय करती है कि इस सम्बन्ध में आन्दोलन को व्यापक रूप देने और आवश्यक कार्यवाही करने का अधिकार स्वामी विद्यानन्द सरस्वती को दिया जाये।

महर्षि दयानन्द की वसीयत के अनुसार उनकी उत्तराधिकारिणी सभा के आदेश को ध्यान में रखते हुए आर्यसमाज के समस्त विद्वानों, नेताओं और महर्षि के नामलेवा सभी आर्यजनों का यह परम कर्त्तव्य है कि वे अपने महान् गुरु के मान की रक्षा के लिये कटिबद्ध हो जाये और अपने अपने स्तर पर, अपने अपने ढंग से फिल्म निर्माण की योजना को विफल करने का भरसक प्रयास करें और फिल्म बन जाने की अवस्था में उसके प्रदर्शन को रोकने के लिए हर संभव उपाय अपनायें।

इस आशा का प्रस्ताव पारित कर सूचना तथा प्रसारण मन्त्री, प्रधान मन्त्री, राष्ट्रपति तथा फिल्म सेंसर बोर्ड को भेजे और अपनी कार्यवाही की सूचना मुझे डी-१४/१६, माडल टाऊन दिल्ली के पते पर देते रहें।

स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आर्य जनता सावधान

समाचार पत्रों से यह विदित हुआ है कि श्री भगवानदेव शर्मा एम० पी० महर्षि दयानन्द की फिल्म बना रहे हैं और स्वामी दयानन्द का पार्ट वे स्वयं कर रहे हैं। वे आजकल अपने नाम के साथ आचार्य शब्द लिख रहे हैं। क्योंकि संन्यास से पूर्व मेरा नाम आचार्य भगवानदेव के नाम से सारे आर्य जगत् को विदित रहा है, क्योंकि मैं बहुत वर्षों से गुरुकुल झज्जर का आचार्य चला आ रहा हूं। संन्यास के पश्चात् मेरा नाम स्वामी ओमानन्द सरस्वती हो गया है यह भी सारे आर्य जगत् को विदित है। अनेक आर्य भाईयों के पत्र मेरे पास आये हैं और वे पूछते हैं कि स्वामी दयानन्द की फिल्म आप बना रहे हैं? मैं आरम्भ से ही स्वामी दयानन्द की फिल्म बनाने का कट्टर विरोधी हूं। सार्वदेशिक सभा की बैठकों में भी मैंने इसका डटकर विरोध किया। इसलिए किसी आर्य भाई को भ्रम में नहीं रहना चाहिए। स्वामी दयानन्द के फिल्म बनाने का जैसे मैं पहले विरोधी था, आज भी वैसा ही विरोधी हूं। इस आर्य सिद्धान्त के विरुद्ध कार्य को कोई आर्यसमाज ठीक नहीं समझता। इसलिए महर्षि दयानन्द के फिल्म बनाने का दुस्साहस हो नहीं करना चाहिए।

ओमानन्द सरस्वती
प्रधान—परोपकारिणी सभा

शराबबन्दी आन्दोलन की तैयारी के लिए

आर्यसमाजों के उत्सवों पर आर्यनेताओं के व्याख्यान

हरयाणा में शराबबन्दी आन्दोलन को सफल करने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से आर्यसमाजों के उत्सवों पर शराब बन्दी सम्मेलन तथा कार्यकर्त्ताओं की बैठकों का आयोजन किया जा रहा है।

गत सप्ताह में ४, ५ मई को आर्यसमाज रेवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़ में स्वामी ओमानन्द सरस्वती, सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा उपदेशक पं० चन्द्रसेन, पं० सुरेशकुमार शास्त्री के व्याख्यान तथा पं० तेजपाल की मण्डली के भजन हुए। इसी प्रकार १२, १३ मई को आर्यसमाज लोहारू जिला भिवानी के उत्सव पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती, प्रो० शेरसिंह, चौधरी हीरानन्द आर्य विधायक, प्रो० ओमकुमार आर्य, श्री भरतसिंह शास्त्री, पंडित सुरेशकुमार शास्त्री के व्याख्यान तथा पंडित हरिश्चन्द्र, पं० तेजपाल के भजन हुए। शराब की बढ़ती हुई बिक्री को रोकने के लिए कार्यकर्त्ताओं को शराब के ठेकों पर धरना देने की प्रेरणा की गई।

शराब से सर्वनाश

शराब से मुगलों का सर्वनाश

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

मुगल राज्य के नाश का बड़ा कारण यह था कि भारत में आने के पश्चात् ऊंचे दरजे के मुसलमान सरदार सुरा और सुन्दरी के चक्र में पड़कर निर्बल हो गये थे। मुगल वंश इसका जन्म दाता था। बाबर में अनेक गुण थे, परन्तु वह शराब पीने में किसी से पीछे न था। उस का प्रकृति प्रेम मदिरा प्रेम का सखा बना हुआ था। फतेहपुर सीकरी में जब राणा सांगा के तीरों ने उसके नाक में दम कर दिया, तब खुदा को प्रसन्न करने और अपने भयभीत सैनिकों को उत्साहित करने के लिए उसने शराब की बोतलें और मूल्यवान प्याले तोड़ दिये। इस नाटक का उस समय सैनिकों पर अच्छा प्रभाव पड़ा, किन्तु युद्ध के जीत जाने पर बोतलें वापिस आगई और पीने के प्याले भी उपस्थित हो गये। फिर से शराब की धारायें बहने लगी। इसी कारण बाबर के समान उसका पुत्र हुमायूं न वैसा शासक था न वैसा योद्धा।

अकबर बड़ा समझदार और दूरदर्शी शासक माना जाता है किन्तु वह भी शराब पीता था। परन्तु सम्भवतः उसका नशा कभी गले से ऊपर नहीं पहुंचा। अर्थात् उसके शराब पीने का ज्ञान बाहर के लोगों को नहीं होता था। वह विलासी था, किन्तु अपने राज्य को विषयलोलुप होकर बिगड़ने नहीं देता था। वह अपने आप पर्दाफास नहीं होने देता था।

जहांगीर के जीवन में शराब रागरङ्ग और विषयभोग को शासन के अन्य कार्यों के समान अङ्गीकार किया गया। कोई सीमा मर्यादा नहीं रही थी। जहांगीर दिनचढ़े उठता था। थोड़ी देर माला फेरने के पश्चात् प्रजा को दर्शन देकर दो घण्टे के लिए सो जाता था। दोपहर के समय भोजन करके कई घण्टे के लिए वह रणिवास में चला जाता था। दोपहर के पश्चात् हाथियों का युद्ध मनोरञ्जन के देखने में जुट जाता, फिर भोजन का समय आ जाता था। फिर भोजन के पीछे शराब पीता था। वह भोजन पचाने के लिए पर्याप्त मात्रा में पीता था। फिर भोज में उठकर मित्रमण्डली के साथ पृथक् भवन में शराब का दौर प्रारम्भ होता था। उसमें बादशाह पांच प्याले शराब के चढ़ाता था। शराब के पीछे अफीम की बारी आती थी और अफीम से नींद आ जाती थी, वह तब ताड़ी जाती थी जब रात का भोजन तैयार हो जाता था। यह तो उसकी साधारण दिनचर्या थी। किन्तु जब कभी महफिल जमती थी और शराब का दौर चलता था तो जहांगीर उसमें सिर तक डूब जाता था। प्रायः उसे बेहोशी की अवस्था में उठाकर चारपाई पर डालना पड़ता था। इस शराब की बुरी आदत ने उसकी इच्छाशक्ति को इतना निर्बल कर दिया था कि वह जीवन के उत्तर भाग में नूरजहां का दास (गुलाम) बनकर ही रहा। राज्य कार्य नूरजहां की इच्छा से ही होता था। जहांगीर तो नूरजहां का आज्ञाकारी सेवक था।

शाहजहां पहले दूरदर्शी योद्धा और राजनीतिज्ञ समझा जाता था। पर गद्दी पर बैठने के कुछ समय पीछे साम्राज्य के ऐश्वर्य ने उसे विलासिता की ओर झुका दिया। उसकी भी लगभग जहांगीर जैसी दशा हो गई। भेद केवल इतना था कि जहांगीर के कार्य को नूरजहां बेगम सम्भाल लेती थी। शाहजहां के कार्य को कोई संभालने वाला न था। उसके बेटे सब अयोग्य निकले, उसके बुढ़ापे को सुखी नहीं बना सके एक विषयासक्त बूढ़े को दुःख ही दुःख सहने पड़े।

औरंगजेब शराब से बचा हुआ था। उसका आचार अन्य मुगल बादशाहों से कुछ अच्छा था, यह कुछ इतिहासकारों का मत है। शराब कभी कभी वह भी पीता था। उसके हरम में उसकी एक बेगम प्रतिदिन शराब पीती थी जो दाराशिकोह की क्रय की हुई विदेशी सुन्दर स्त्री जाजियाना नाम की थी। औरंगजेब उसके वशीभूत था। उसकी उंगलियों पर नाचता था, वही इसे शराब पिलाती थी। हो सकता है इसमें सत्य का अंश न हो। प्रकट रूप में तो वह शराब का बड़ा विरोधी था, किन्तु उसके कितने ही सरदार शराब=सुरा में अवश्य डूबे हुए थे। उस की धर्मान्धता के कारण प्रजा तथा राज्याधिकारी किसी की दशा नहीं सुधरी।

औरंगजेब के पीछे तो मुगल वंशजों के चरित्र बहुत ही निर्बल व गन्दे हो गये। न उनमें शक्ति रही न शुद्धता। राजा का प्रभाव प्रजा पर पड़ता है। जहांगीर के समय से नवाबों के महलों में सुरा और सुन्दरियों का राज्य था। शाहजहां के समय तक पहुंचते-पहुंचते बाबर के साथ आये हुए कठोर और वीर सैनिकों के वंशज मद्य और स्त्रियों के दास बन चुके थे। वे युद्धक्षेत्र के लिये सर्वथा अयोग्य हो चुके थे। वे सब प्रजा और राजा की चिन्ता छोड़ धन, भोगविलास तथा स्वार्थ में फंसे हुए थे। सैनिकों वाला कोई गुण इनमें शेष नहीं रह गया था। जिनके बाप दादा ने तलवार से दिल्ली और आगरा पर विजय प्राप्त किया था, वे रात दिन वेश्याओं के साथ मद्यपान और विलासिता में अपने वीरतादि गुणों को समाप्त कर रहे थे।

मुहम्मदशाह रंगीला और जहांदारशाह के समान मुगल बादशाह पैदा हो गये जो युद्धभूमि में भी सुनहले हौदों पर बैठकर जाते थे। पूरे हरम (बेगमों की फौज) को साथ रखते, झिलमिलाते खेमों में सोते थे और दूसरों के कन्धों पर रखकर बन्दूक चलाकर जीतना चाहते थे। शत्रु के आने पर हाथी के हौदों, स्त्रियों और खेमों में छिप जाते थे। ऐसी दशा होने पर आश्चर्य यही है कि मुगल साम्राज्य इतने दिनों तक कैसे रह गया। शराब और विलासी जीवन के कारण राजकुमारों में ईर्ष्या, लोभादि इतने दुर्गुण आ गये थे कि वे माता-पिता, भाई-बन्धु सबको मार स्वयं राजगद्दी के स्वामी बनना चाहते थे।

अकबर बादशाह के समय शाहजादा सलीम (जहांगीर) ने इलाहाबाद में अपने पिता के जीवनकाल में ही अपने स्वतन्त्र बादशाह होने का दावा खड़ा कर दिया था। अपने नाम के सिक्के तक भी ढलवा कर चालू कर दिये थे। अफसरों की नियुक्ति और स्वतन्त्र होने की आज्ञायें चालू कर दी थी। वह तो अकबर का तेज था, जिसने शाहजहां की भांति बड़ा तथा कैदी होने से बचा दिया। बादशाह होने पर तो जहांगीर इतना निर्भय वा निर्लज्ज हो गया था कि उसने अपने सिक्कों पर शराब का प्याला अपने हाथ में लिए हुए के चित्र अंकित कराये। इसकी सन्तान की बड़ी दुर्गति हुई। उसका बड़ा लड़का खुसरो जो लोकप्रिय था जन्म भर कैद रहा। क्योंकि जहांगीर अपनी छाया से भी डरता था। चूंकि वह स्वयं अपने पिता के साथ द्रोह कर चुका था। अन्त में इसने अपने बड़े लड़के की आंखें सिलवा दी और उसे अपने दूसरे विश्वासपात्र राजकुमार खुर्रम को सौंप दिया, वह दक्षिण विजय के लिये जा रहा था। भाई की कैद में वह शीघ्र ही मर गया। थोड़े दिन पश्चात् जहांगीर शाहजहां को छोड़कर तीसरे लड़के परवेज से प्रेम करने लगा। खुर्रम ने विद्रोह कर दिया। परन्तु वह पराजित हुआ और जहांगीर की मृत्यु के पश्चात् गद्दी पर बैठा। किन्तु भाई की हत्या और पिता के विरुद्ध विद्रोह का पाप शाहजहां के सिर चढ़ चुका था। अपने कर्मों का फल सभी भोगते हैं। वह दुर्दिन था जब शराबी जहांगीर ने पिता के विरुद्ध द्रोह किया, उसी दिन मुगल साम्राज्य की कब्र खुदनी आरम्भ हो गई थी। जहांगीर ने उसका फल भोगा। शाहजहां ने विद्रोह किया। शाहजहां ने भी अपनी करनी का फल पाया, क्योंकि औरंगजेब ने न केवल विद्रोह किन्तु अपने पिता को कैद भी कर दिया और शाहजहां सात वर्ष तक कैद में भूखा-प्यासा रहकर तड़प तड़प कर मरा। औरंगजेब ने सब भाईयों को मौत के घाट उतार दिया। छोटे मुरादबख्श को तो ग्वालियर के दुर्ग में पोस्त के डोडे पिला-पिला तड़पा-तड़पा कर मार डाला। इसका फल औरंगजेब ने भी भोगा।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

जरा इधर तो देखिए

आज सारे ही देश का ध्यान पंजाब की अमानवीय गतिविधियों पर लगा हुआ है। कुछ गुरुद्रोही एवं देशद्रोही लोग मानवता की अर्थी उठाने में लगे हैं और देश को खण्ड-खण्ड करने पर तुले हुए हैं। यह समस्या कोई आज नई नहीं है इसके बड़े मूलगर्भ हैं। स्वतन्त्रता प्राप्ति से पूर्व जब १९४० में मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए पाकिस्तान की मांग उठाई थी उसी समय से यह बात हमारे सिख भाईयों ने भी उठानी शुरु कर दी थी कि हम भी अलग कौम हैं इसलिए हमें भी पृथक् खालिस्तान या सिखस्तान मिलना चाहिए; लेकिन उस समय उनकी यह बात स्वतन्त्रता प्राप्ति के वातावरण में चल नहीं पाई थी। आज उग्रवादी लोग फिर उसी बात को उठाकर आतंकवाद फैला रहे हैं। पंजाब में पिछले दो वर्षों में जो कुछ हुआ है उसकी यहां चर्चा करना व्यर्थ है कहना न होगा कि आज सभी भारतवासी इस संकट से परिचित और भयभीत है। ऐसी स्थिति में सरकार अपनी शिथिलता और तुष्टिकरण की दो मुंही नीति को त्याग कर कब इस उग्रवाद का डटकर मुकाबला करेगी यह देखना है। अस्तु।

पंजाब में अब भी और जो भी हुआ है हरयाणा के लोगों ने ने सदैव पंजाब के हिन्दुओं के लिए भरपूर आवाज उठाई है। वह चाहे धरनों के माध्यम से हो या प्रदर्शन के रूप में हो। यही लोकतान्त्रिक तरीके अपने रोष को प्रकट करने के लिए वैध हैं जो हमने किए हैं। अभी अभी हिन्द समाचार समूह के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी की नृसंस हत्या की भी सारे देश के अन्य लोगों और प्रदेशों की तरह हरयाणे ने भी पूरजोर कटु भर्त्सना की है। हरयाणा पंजाब के लोगों के चैन अमन और सुरक्षा के लिए हर कुर्बानी देने के लिए तत्पर रहा है और आगे भी है। यह मैं इसलिए नहीं लिख रहा हूं कि हम हरयाणा के लोग पंजाब के भयाक्रान्त लोगों से सहानुभूति दिखाकर उन पर कोई एसाहन कर रहे है अपितु यह तो हमारा मानवीय और नैतिक दायित्व है। फिर भी एक बात जो हमें पुनः पुनः महसूस होती है वह यह कि पंजाब के भाई हमसे तो सभी तरह का सहयोग चाहते हैं लेकिन हमारी तरफ भी क्या कभी वे मुंह उठाकर देखते हैं ? आज अकालियों का आन्दोलन विशुद्ध राजनैतिक रह गया है क्योंकि उनकी तथाकथित धार्मिक मांगें पहले ही मानी जा चुकी हैं अब तो केवल क्षत्रीय और जल विवाद बाकी है। उनसे भी पहले समझौते और फैसले कई बार हो चुके हैं। लेकिन अकाली भाई आज उन सभी से मुकरते जा रहे हैं। मुख्य मुद्दा चण्डीगढ़ और अबोहर-फाजिल्का का है इसको निपटाने के लिए २९ जनवरी १९७० को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने स्वयं अपने एवार्ड में चण्डीगढ़ पंजाब को और अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को दिया था। अकालियों ने उस समय इस एवार्ड को मानकर दिवाली मनाई थी। लेकिन आज उसी फैसले को नकार कर वे खून की होली मना रहे हैं। दूसरा विषय जल वितरण का था। रावी-व्यास का ३५ लाख मीलियन एकड़ फुट पानी हरयाणा को काट-पीट कर फैसले में दिया गया लेकिन आज तक वह भी हरयाणा को नहीं मिला है। अकाली नेता आज हमारी संपर्क नहर को नहीं खुदने देते। कहने का तात्पर्य यह है कि जहां तक अकालियों की राजनैतिक मांगों का सवाल है वे मांगें सारे पंजाब के लोगों ने अपनी मांगें मान ली हैं। उसमें उन्होंने अगले पिछले सभी फैसलों को ताक पर रख छोड़ा है। इससे हरयाणा के साथ न्याय होता है या अन्याय इसका भी उन्हें मलाल नहीं है। जिन पंजाब के हिन्दू भाईयों के लिए हम सभी तरह से सहायता के लिए तैयार रहते हैं वे भी आज हमारे न्यायोचित अधिकार की अनदेखी कर रहे हैं। इसी का हमको सर्वाधिक खेद है। ऐसी स्थिति में पंजाब के न्यायप्रिय व शान्तिप्रिय लोगों को सही समय पर सही बात कहनी चाहिए। प्रान्तवाद की संकीर्ण सीमा से ऊपर उठकर जहां हमें राष्ट्र की एकता और अखण्डता की सुरक्षा करनी है वहीं पर किसी दूसरे प्रदेश के हितों का भी पूरा-२ ध्यान रखना चाहिए। रावी व्यास नदियों का फालतू पानी पाकिस्तान को मुफ्त जा रहा है परन्तु पंजाब इस पानी को हरयाणा को देने को तैयार नहीं है। न तु देश को लाभ और हरयाणा को हानि रहे। आखिर हरयाणा कब तक यह करोड़ों का वार्षिक घाटा उठाता रहेगा ? अकाली तो सभी तरह से अपनी मन मानी करना चाहते हैं। इस समय उनके लिए न्याय और अन्याय के लिए कोई भेद नहीं रह गया है। इसीलिए वे अपने को उग्रवादियों और पृथकतावादियों से अलग भी नहीं कर पा रहे हैं। परन्तु विवेकशील लोगों को तो सभी के हितों का ख्याल रखना चाहिए। जब पंजाब के सारे लोग वे चाहे किसी भी सम्प्रदाय और राजनैतिक दल के क्यों न हों ? अकालियों की अनुचित राजनैतिक मांगों पर भी एक हैं तो क्या हरयाणा के लोग इसका प्रतिवाद नहीं करेंगे ?

ऐसी स्थिति में उचित यही है कि आतंकवाद की तो सभी को पूरजोर निन्दा करनी ही चाहिए और सरकार की नपुंसकता पर उस का स्यापा भी करना चाहिए कि वह गुरुद्वारों में पुलिस को क्यों नहीं भेजती। लेकिन जहां तक अन्तंप्रान्तीय विवादों का विषय है वहां पर हमें उदारमना होकर सत्य का पक्ष लेना चाहिए। पंजाब और देश के अन्य न्यायप्रिय लोगों से हमारी यही विनम्र अपील है कि वे हरयाणा के साथ हो रहे अन्याय के विरुद्ध आवाज उठायें और ऐसे किसी समझौते का अकालियों के दबाव में आकर समर्थन न करें जिस से हरयाणा को घाटा उठाना पड़े।

धर्मचन्द्र विद्यालंकार एम० ए०

हजारों बह गए इन बोतलों के बन्द पानी में

इतिहास के पन्नों में लिखी—
थिरकती, मचलती,
होठों की प्यास,
कब बुझ पायी है ?
केवल एक मृगतृष्णा है
अधर में लटके प्रश्नों की भांति अधूरी,
इसमें कब पूर्णतया आयी है ?
क्या इसे पूरा कर सकेगा—
एक अदना सा मानव
लगातार बोतल का जहर पीकर,
जानकर कि प्यास अमिट है
न बुझी है न बुझ पायेगी।

कुछ व्यक्ति हैं जिनका खून बेचकर
पेट भरने का प्रश्न अधूरा है।
और कुछ मिटा रहे हैं अपने आपको
जान-बूझ कर
अतीत के सहारे लटकते इस वर्तमान
को देख कर
मैं सोचने लगता हूं उस भीड़ के बारे में
जो ठेके के सामने खड़ी होती है—
और उनकी आंखों में तैर रहा होता है
उनका भविष्य,
और देश का भविष्य उनके कंधों पर
टिका लड़खड़ा रहा है।
मुझे फिर ध्यान आती हैं वे पंक्तियां—
हजारों बह गये इन बोतलों के
बन्द पानी में।

—ओमसिंह वर्मा
—द्वारा [illegible] सिवोली, मेरठ, उ० प्र०
मद्य-निषेध से साभार

पंजाब के आतंकवाद के विरुद्ध

रोहतक में हड़ताल तथा जलूस

रोहतक १५ मई, को पंजाब केसरी के सम्पादक श्री रमेशचन्द्र की उग्रवादियों द्वारा निर्मम हत्या करने पर रोष प्रकट करने के लिए रोहतक में पूर्ण हड़ताल रही। दुर्गाभवन से जिलाधीश को ज्ञापन देने के लिए धारा १४४ तोड़कर एक जलूस निकाला गया। इस जलूस पर पुलीस ने लाठी चार्ज किया और ३०० के लगभग प्रदर्शनकारियों को गिरफ्तार किया, जिन्हें बाद में रिहा कर दिया गया। गिरफ्तारी देने वालों में स्वामी धर्मदेव भी सम्मिलित थे।

इससे पूर्व हड़ताल हरयाणा के अन्य नगरों अम्बाला, यमुनानगर, करनाल तथा पानीपत में भी हुई थी। पानीपत में ३ सिख युवक किसी पर हमला करने मोटरसाइकल पर जा रहे थे। भीड़ ने उनका पीछा किया तथा दो को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया।

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत का प्रस्ताव

आर्यसमाज पानीपत की यह साधारण सभा प्रसिद्ध पत्रकार श्री रमेशचन्द्र जी सुपुत्र स्वर्गीय ला० जगतनारायण जी की जघन्य हत्या पर गहरे दुःख को प्रकट करती है। श्री रमेशचन्द्र बड़े लोकप्रिय और सफल पत्रकार थे। अपने पिता की तरह आप भी उग्रवादियों द्वारा बलिदान हो गये। आये दिन पंजाब में निहत्थे निरपराध लोगों की हत्याओं से यह सभा भारी चिन्ता को व्यक्त करती है। राष्ट्रपति एवं भारत सरकार से अनुरोध करती है कि स्थिति और बिगड़ने से पहले उग्रवादियों को पकड़कर जनता को चैन की सांस दिलाये अन्यथा देश भर में भयानक परिणाम हो सकते हैं। यह सभा श्री रमेशचन्द्र के पारिवारिकजनों को अपनी संवेदना प्रकट करती है और दिवंगत की आत्मा की सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करती है।

मन्त्री

आर्यसमाज नरवाना का प्रस्ताव

आर्यसमाज नरवाना की एक विशेष बैठक दिनांक १३-५-८४ को सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से हिन्द-समाचार पत्र समूह के मुख्य सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी की निर्मम हत्या पर गहरा दुःख व्यक्त किया गया। प्रस्ताव में यह कहा गया कि इस प्रकार से निष्पक्ष एवं अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालों की हत्या प्रेस व स्वतन्त्रता की हत्या है। सरकार को चाहिए कि श्री रमेशचन्द्र जी के हत्यारों को तुरन्त गिरफ्तार किया जाए।

आर्यसमाज नरवाना तथा सभी सम्बन्धित संस्थाएं इस दुखद अवसर पर शोक सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना व्यक्त करते हैं।

आर्यसमाज के सदस्यों द्वारा पौराणिक पंडितों से संस्कार करवाना हानिकारक

गत दिनों यह देखने में आया है कि आर्यसमाज के सदस्य आर्य समाजों में नियुक्त विद्वान् पुरोहितों से संस्कार आदि न कराकर आर्य मर्यादाओं का खुला उल्लघंन कर रहे हैं और पौराणिकों द्वारा अपने घरों में हर प्रकार के संस्कार करवाते हैं, जो कि आर्यसमाज और आर्य सिद्धान्तों के प्रबल विरोधी हैं। पुरोहित का पद आर्यसमाज में सर्वोच्च पद है। पुरोहित आर्य सदस्यों का कुल पुरोहित होता है। पुरोहित से संस्कार न करवाकर न केवल पुरोहित का अपमान करना अपितु समस्त आर्यसमाज का अपमान करना है। इस प्रकार आर्य परिवारों में पौराणिक संस्कार पड़ने से आर्यसमाज की हानि होगी।

मन्त्री आर्यसमाज जीन्द शहर

कन्या गुरुकुल नरेला का उत्सव

कन्या गुरुकुल नरेला का २७ वां वार्षिक महोत्सव दिनांक २६-२७ मई १९८४ को कुलभूमि में समारोह पूर्वक मनाया जायेगा। इस शुभ अवसर पर अनेक संन्यासी, महात्मा, विद्वान्, उपदेशक, भजनोपदेशक एवं माननीय राष्ट्रीय नेता पधार कर उपदेशामृत पान करायेंगे। ब्रह्मचारिणियों द्वारा यजुर्वेद का पारायण यज्ञ एक सप्ताह में सम्पन्न होगा जिसकी पूर्णाहुति रविवार प्रातः होगी। कन्याओं द्वारा योगासन लाठी, तलवार संचालन का प्रदर्शन भी होगा। जनता से अनुरोध है कि उत्सव के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर नवजीवन लाभ प्राप्त करें।

कु० सुमित्रा आर्या (आचार्या)

(पृष्ठ २ का शेष)

वह जीवन भर अपने पुत्रों से अशान्त और उद्विग्न रहा। सारे राजकुमार सन्देह के पात्र बने रहे। कुछ जेल में सड़ा दिए अथवा कहीं दूर के संग्राम में भेजे गये। इस अव्यवस्था की दल दल में पड़ (फंस) कर साम्राज्य के प्राण संकट में पड़ रहे थे। गृहकलह में राजवंश नष्ट होता चला गया और ज्यों ज्यों समय व्यतीत होता गया, मुगल बादशाह केवल कठपुतली रह गये और जो इनके सामन्त थे, वे स्वामी और राज-निर्माता बन गये। मुगल बादशाहों का तख्त कठपुतलियों का खेल बन गया। किसी राजकुमार का कान पकड़कर गद्दी पर बिठा दिया, किसी का कान पकड़कर गद्दी से उतार जेल में डाल दिया या मौत के घाट उतार दिया। शराबियों की सन्तान, मुगल बादशाहों के राजकुमारों के साथ यह विचित्र खेल खेला गया।

जब नादिरशाह जैसा लुटेरा गडरिया आया तो दिल्ली के तख्त के स्वामी बादशाह मुहम्मदशाह रंगीला शराब पी, जनाने कपड़े पहन महलों में नाच रहा था। नादिर ने दिल्ली को लूट लिया। कत्ले आम किया। स्वयं तख्ते ताऊस (मयूरसिंहासन) पर बैठा और मुगल बादशाह को अपने पैरों में नीचे बैठाया। सारी बेगमों को नंगा करके आभूषण छीन उनको अपने सैनिकों में बांट दिया। नादिरशाह दिल्ली से जो लूट का माल ले गया, इतिहास में उसकी सूची इस प्रकार मिलती है—

नकद तथा सोना चांदी	३० करोड़ रुपये की
जवाहरात	२५ ,, ,, के
तख्ते ताऊस व अन्य मूल्यवान पदार्थ	९ ,, ,, ,,
कारीगरों की बहुमूल्य वस्तुयें	२ ,, ,, की
युद्ध सामग्री	४ ,, ,, ,,
योग	७० करोड़ रुपये

इसके अतिरिक्त ३०० हाथी और दस हजार घोड़े थे।

इस प्रकार नादिरशाह की विदाई के साथ साथ स्वतन्त्र मुगल साम्राज्य भी विदा हो गया। मुहम्मदशाह ने खुद कहा था—"राज की बागडोर मेरे हाथ से निकल चुकी है।"

नादिरशाह के चले जाने पर दिल्ली की शक्ति इतनी निर्बल हो गई थी कि प्रायः सभी प्रान्त स्वतन्त्र से हो गये थे। दिल्ली की सीमा से मिलते हुए प्रदेशों पर भी मुगल बादशाह का पूर्ण अधिकार नहीं था। जाट और गुजरों के भय के मारे दिल्ली के पास की बस्तियां और मार्ग शाही खजाने तथा सेना के लिए भी दुर्गम हो रहे थे। जिन मुगलों का सारे भारतवर्ष पर एक छत्र राज्य था, उनका नामोनिशान मिट गया। उनके बेटे पोते आज दिल्ली में कबूतर उड़ाते हैं। किसी ने ठीक ही कहा है—

हे शराब (इश्क) तूने अकसर कौमों को खा के छोड़ा।
जिस घर से शिर उठाया उसको मिटा के छोड़ा॥
राजाओं के राज्य छीने बादशाहों के ताज छीने।
गरदनकशों को अकसर नीचा दिखा के छोड़ा॥

क्रमशः

कन्या गुरुकुल गणियार की प्रवेश सूचना

वैदिक काल में नारी का सामाजिक जनमान एवं पूजा का स्थान माना है। प्राचीन काल की गार्गी, मैत्रेयी, विदुला, दुर्गा, अपाला, घोषा आदि स्त्रियां शस्त्र एवं शास्त्रों की रक्षिता कहलाई हैं। उसी विचार धारा की पुर्नस्थना करने हेतु आदित्य ब्रह्मचारिणी कलावती शास्त्री एम० ए० ने १ सन् १९७४ को पूज्य स्वामी ओम् जी महाराज की अध्यक्षता में कन्या गुरुकुल गणियार की स्थापना की है। यह गुरुकुल रिवाड़ी से ३० किलोमीटर दूर रिवाड़ी-नारनौल रोड पर नन्दपुरा बस स्टैंड के निकट है। इस गुरुकुल में आठवीं एवं दसवीं कक्षा उत्तीर्ण कन्याओं को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक की कक्षाओं तक के अध्ययन की उत्तम व्यवस्था है। यहां सभी विषय पढ़ाये जाते हैं, साथ-साथ संगीत, भाषण, कला, योग शिक्षा तथा हस्तकला के प्रशिक्षण की उत्तम व्यवस्था है। प्रवेश अप्रैल से प्रारम्भ हो चुका है। स्थान सीमित है। अतः कन्यायें शीघ्र प्रवेश ले लेवें। विशेष जानकारी के लिए आचार्या से सम्पर्क करें।

दयानन्द हैं हमारे पिता

दयानन्द हैं पिता हमारे
आर्यसमाज हमारी माता।
आर्यजनों का सदा रहा है
आपस में भ्राता का नाता॥

मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षन्
मा स्वसारमुत स्वसा।
अनुव्रतः पितुः पुत्रो
मात्रा भवतु संमनाः॥

यह है उच्चादर्श हमारा
जो हमको प्राणों से प्यारा।
सकल विश्व को आर्य बनाना
यह है पावन लक्ष्य हमारा॥

अपने और पराये की तो
गणना करते हैं लघु जन ही।
सारी वसुधा कुटुम्ब अपना
यह कहते हैं उदार जन ही॥

अतः विश्व को उपकृत करना
हो पावन उद्देश्य हमारा।
शारीरिक, आत्मिक, सामाजिक
इन तीनों उन्नतियों द्वारा॥

वेद अध्ययन अध्यापन
अरु सुनना तथा सुनाना।
तदनुकूल आचरण बनाकर
जीवन सफल बनाना॥

आर्यों का यह परम धर्म है
यही धर्म का परम मर्म है।
पाखण्डों से दूर रहें हम
दुष्कर्मों से हमें शर्म है॥

कभी कुपथ पर पग न धरेंगे
कायर बनकर नहीं रहेंगे।
दयानन्द ऋषिराज अमर हैं
'अमरचन्द' सन्मार्ग गहेंगे॥

—ब्रह्मचारी अमरचन्द शर्मा
श्रीमद्दयानन्द गुरुकुल विद्यापीठ
गदपुरी (फरीदाबाद)

मद्यनिषेध सूक्तियां

समुद्र की अपेक्षा शराब ने अधिक मानवों को डुबाया है।
—पब्लियस साइरस

यह तो हद दरजे की बेवकूफी और नालायकी है कि अपना रुपया खर्च कर और बदले में सिर्फ बेहोशी और बदहवासी हाथ लगे।
—सन्तसिंह वल्लुवर

जिन लोगों को शराब पीने की घृणित आदत पड़ी हुई है, सुन्दरी लज्जा उनसे मुंह फेर लेती है।
—सन्त तिरुवल्लुवर

संसार की सारी सेनायें मिलकर इतने मानवों और इतनी सम्पत्ति को नष्ट नहीं करती जितनी शराब पीने की आदत।
—मिल्टन

मदिरा का उपयोग तो स्वयं को भुलाने के लिए है, स्मरण करने के लिये नहीं और जीवन का सृजनात्मक विकास अपनेपन की चेतना में ही सम्भव है।
—महादेवी वर्मा

जहां शैतान खुद नहीं पहुंच सकता वहां मदिरा को भेज देता है।
—अज्ञात

जब शराब मनुष्य में प्रवेश करती है, तो बुद्धि को बाहर निकाल देती है।
—अज्ञात

युद्ध, दुर्भिक्ष तथा महामारी—इन तीनों ने मिलकर मनुष्य-जाति को इतनी हानि नहीं पहुंचाई जितनी की अकेली मदिरा ने पहुंचाई है।
—ग्लैडस्टन

मदिरा और यौवन आग पर आग है।
—फोल्डिंग

आर्यसमाज सोहना जिला गुड़गांव के समाचार

१—आर्यसमाज सोहना के अन्तरग सदस्यों की बैठक १३-५-१९८४ को दयानन्द वैदिक पाठशाला में हुई जिसमें महर्षि दयानन्द के जीवन पर बनने वाली फिल्म का विरोध किया गया और आर्यसमाज के कर्णधारणों से प्रार्थना की गई कि इस कार्य से आर्यसमाज के सिद्धान्तों की हानि होगी।

२—सोहना आर्यसमाज की इस बैठक में स्वर्गीय रमेशचन्द्र जी की उग्रवादियों द्वारा की गई हत्या की निन्दा की गई और प्रशासन से मांग की गई कि अपराधियों को तुरन्त पकड़ा जाये और पंजाब की स्थिति पर काबू किया जाये।

३—आर्यसमाज सोहना के पदाधिकारियों का निर्वाचन सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान—ला० ग्यासीराम आर्य, उपप्रधान—मेघराज आर्य, ओम-प्रकाश बजाज, मुख्यसचिव—रामकिशन आर्य, सचिव—नन्दकिशोर आर्य कोषाध्यक्ष—श्री धर्मवीर आर्य, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण, सहमन्त्री श्री मदनलाल, लेखानिरीक्षक—श्री श्यामसुन्दर

वैदिक यति मण्डल की हरयाणा में ऐतिहासिक पदयात्रा सम्पन्न

(गतांक से आगे)

प्रातः ही नित्य कर्मोपरान्त यज्ञ हुआ। सौ के लगभग यज्ञोपवीत छात्रों द्वारा ग्रहण किए गये। उन्हें श्री स्वामी जी महाराज द्वारा एक-एक पुस्तक फ्री भेंट की गई। यज्ञ के बाद व्यायाम प्रदर्शन भी हुआ। छात्र छात्राओं ने योगासन, दण्ड बैठक के विविध प्रकार देखकर तथा कुछ यौगिक क्रियाओं को देखकर बहुत आश्चर्य प्रकट किया और कुछों ने तो मुझे देखकर ही अभ्यास करना प्रारम्भ कर दिया। एक छात्र को तो बड़ी परेशानी का मुकाबला करना पड़ा, दैव योग से मैं वहां पहुंच गया और उसे सम्भाल लिया। स्कूल में हमारे भोजन का प्रबन्ध था; परीक्षायें भी हो रही था, अतः छात्रों का हमारी ओर ध्यान आकृष्ट न हो इसलिए वहां से हम शीघ्र ही अगले ग्राम काण्ड़ा तथा बड़ेसरा में प्रचार करते हुए चान्दवास पहुंचे, वहां पर जमकर प्रचार हुआ और लोगों ने बड़े उत्साह से सुना। इसके बाद हमारा आज का अन्तिम पड़ाव ग्राम बेरला में था वहां हम सरपंच के पास उसके फार्म पर गये उन्होंने हमारा स्वागत वहां के देशी मेवे बेरों से किया, बड़े ही मधुर बेर थे, लेकिन सरपंच वहां नहीं मिला, गांव में बताया गया। गांव में भी न मिला तो स्कूल का मुख्याध्यापक स्वामी जी का शिष्य था उसे पूछा वह भी छुट्टी पर था। अतः बिना किसी के जाने भिक्षा मांगकर खाई और प्रचार शुरु कर दिया। स्कूल में प्रचार एक शराबी अध्यापक ने होने नहीं दिया। उसके साथ कुछ गर्मा गर्मी भी हो गई। अन्ततः स्कूल के बाहर एक कुएं के ऊपर बैठकर प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया। कुछ उत्साही युवकों ने प्रचार कार्य की व्यवस्था में हमारा सहयोग दिया और लोगों को बड़े प्यार से अपनी बातें कही, सबको अच्छी लगी, तभी ब्र० ऋषिपाल जी, आचार्य महाविद्यालय दादरी आ गये, उनके सहयोग से प्रातःकाल की सब व्यवस्थायें ठीक हो गई। यज्ञोपरान्त १५० व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत लिए और भोजन कराकर हमारा स्वागत किया और भावभीनी विदाई दी।

बेरला से हम अगले गांव जेवली में गये वहां पर सब ग्रामवासियों ने हमारा प्रचार बहुत ध्यान से सुना। यहां पर प्रचार करने के बाद हम प्रो० सत्यवीर जो मनुदेव जी शास्त्री जो दोनों ही गुरुकुल झज्जर के योग्य स्नातक हैं, उनके गांव डालावास में गये वहां पर चौ: मंगलाराम जी ने प्रचार करवाया, जो कि पुराने रईस थे और इन्हें शराब पीने की बुरी आदत पड़ गई थी, अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध शराबी थे। देवयोग से एक दिन आचार्य भगवानदेव जी इनके गांव में चले गये वहां उन्होंने अपने विचार रखे तो लोगों ने कहा कि उन्हें भी समझाओ, आचार्य जी ने कहा चलो उनके पास हो चलते हैं। आचार्य जी का नाम व प्रसिद्धि सबने सुन ही रखी थी। वे उनके घर पहुंच गये। जब आचार्य जी वहां गये तो चौधरी मंगलाराम व उनके साथी शराब पीने की तैयारी में थे उनके हाथों में बोतल और गिलास थे। जब उन्होंने देखा तो चौधरी मंगलाराम जी ने वे छुपा दिये, लेकिन आचार्य जी ने तो मौके पर देख ही लिया था। आचार्य जी ने बड़े उन्हें बड़े प्यार से शराब से होने वाली हानियां बताकर छोड़ने को कहा तो चौ० साहब ने स्वीकार कर लिया और आगे चलकर छोड़ भी दिया। अपने बच्चों को गुरुकुलों में पढ़ाया, सब बच्चे योग्य हैं और स्वयं पक्के आर्यसमाजी हैं, तथा पास में ही चल रहे पञ्चगामा कन्या गुरुकुल में अपना पूरा सहयोग देते हैं। हमें भी अपने प्रपौत्र के हाथ से ५१ रु० दान दिये।

डालावास से चलकर हम सब पंचगामा गुरुकुल में आये, वहां पर आचार्या जी तो थी नहीं लेकिन गुरुकुल के मन्त्री मा० हरिसिंह जी हमारे साथ थे। उन्होंने हम सबको अपने खेत से हरे चने फाड़ कर खिलाये जो कि मौसम का फल है। हरे चने खाकर सब अपने में ताजगी अनुभव कर रहे थे, क्योंकि बालूरेत में और ऊपर से गर्मी में चलकर थक से गये थे। वहां से चलकर पञ्चगामा में प्रचार किया। वहां पर श्री ब्र० आनन्दकुमार सुपुत्र श्री यज्ञपाल जी धर्म गुरु ने हमारा बहुत आतिथ्य किया अखरोट [illegible] पिलाया और प्रचार करवाया। पञ्चगामा के बाद हम गोपी में गये। वहां पर मा० हरिसिंह जी ने प्रचार कराया सब ग्रामवासियों ने अच्छी प्रकार से प्रचार सुना और पुनः आने का निमन्त्रण दिया।

गोपी में प्रचार करने के बाद हम जयघोष करते हुए ककड़ोली में पहुंचे, वहां पर मा० जुगतीराम जी हमारी पहले से ही प्रतीक्षा कर रहे थे। उन्हीं के यहां हम सबका भोजन का प्रबन्ध था। भोजनोपरान्त रात्रि में देर तक प्रचार होता रहा, प्रातः यज्ञ हुआ और १६० व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये। सबको एक एक पुस्तक भेंट स्वरूप दी गई। भजनोपदेश के बाद शान्तिपाठ व जयघोषों के साथ वहां की कार्यवाही समाप्त करके श्री सुलतानसिंह जी के यहां भोजन करके हम अगले गांव उमरावास में गये वहां भी सब ग्रामवासियों ने हमारा प्रचार सुना और १०३) रुपये दक्षिणा भी दी। उमरावास से बोहका, कालूवास, छपार में प्रचार करते हुए हम रात्रि में देर से रातीवास पहुंचे, जहां पर हमारी प्रतीक्षा मा० कुन्दनसिंह जी आर्य पहले से ही कर रहे थे। छपार में गाड़ी खराब होने असुविधा हुई। मा० जी के घर पर ही हम सबके भोजन का प्रबन्ध था। भोजनोपरान्त रात्रि में देर तक प्रचार हुआ। प्रातः हवन करके १२५ व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये उन्हें पुस्तक भी भेंट की गई। यज्ञोपरान्त लेखक का व्यायाम प्रदर्शन हुआ। व्यायाम प्रदर्शन को देखने के लिए मानो सारा ही गांव आ गया था। बड़े उत्साह से प्रदर्शन देखा और करने वाले को कुछ रुपये और ५ किलो शुद्ध देशी घी ग्रामवासियों ने दान में दिया। प्रचार में भी कुछ धन दिया गया था। यहां पर मा० कुन्दनसिंह जी आर्य का सहयोग ही श्लाघ्य रहा।

ब्र० रामवीर गुरुकुल झज्जर

क्रमशः

आर्यसमाज करोल बाग का उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज करोल बाग का ५४ वां महोत्सव बड़ी धूमधाम से २२ से ३० अप्रैल १९८४ तक मनाया गया, जिसमें बृहद् यज्ञ के साथ प्रातः श्री जैमिनि शास्त्री के उपदेश और रात्रि में आर्यजगत् के प्रसिद्ध वेदोपदेष्टा श्री शिवकुमार शास्त्री काव्यतीर्थ के प्रभावशाली प्रवचन हुए।

"वर्तमान सन्दर्भ में ऋषि दयानन्द के विचारों की उपयोगिता" पर विशेष सम्मेलन श्री लाला रामगोपाल जी शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें प्रो० बलराज मधोक, डाक्टर वेदप्रताप वैदिक सहसम्पादक नवभारत टाइम्स, श्री देवीदास जी आर्य प्रधान केन्द्रीय सभा कानपुर और डा० महावीर पूर्व सांसद के गम्भीर एवं प्रभावशाली ढंग से विचारोत्तेजक व्याख्यानों महर्षि दयानन्द के विचारों के उपयोगों की विस्तृत व्याख्या एवं साहस के साथ योजना सहित सार्थकता सहित अनिवार्यता सिद्ध की।

यज्ञ की पूर्णाहुति के साथ पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, श्री जैमिनि जी शास्त्री, आचार्य हरिदत्त शास्त्री, डा० सत्यपाल जी शास्त्री मेरठ के आध्यात्मिक और सामाजिक विषयों पर प्रभावशाली विचार सुनकर आर्यसमाज की गतिविधियों को सामाजिक क्षेत्र में तीव्रतर किया जावे, ऐसी प्रेरणा मिली। निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर का चलचित्र द्वारा टी० वी० पर प्रदर्शन सफल रहा। महिला सम्मेलन और लंगर का कार्यक्रम भी प्रशंसनीय रहा। सभी बैठकों में उपस्थिति प्रशंसनीय रही।

दयालचन्द गुप्ता
कार्यालय मन्त्री आर्यसमाज करोल बाग
नई दिल्ली-५

आर्यसमाज की गतिविधियां—

बालावास में शराब के ठेके पर धरना एवं वेदप्रचार

दिनांक १४ अप्रेल से ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका समाप्त करने के लिए धरना चल रहा है। ६ से १० मई तक धरने के स्थान पर वेदप्रचार का आयोजन किया गया। प्रथम दो दिन स्वामी जगतमुनि के भजन तथा उपदेश हुए। ८, ९ मई को वेदप्रचार मण्डल हांसी की ओर से पंडित सुलतानसिंह के भजन तथा श्री भरतलाल जी पुरोहित, पंडित खुशीराम के शराब से होने वाली बुराइयों पर प्रकाश डाला। ९, १० मई को प्रातः यज्ञ पर शराब पीने वालों ने भविष्य में न पीने का संकल्प किया और रात्रि को सभा के भजनोपदेशक पंडित हरिश्चन्द जी के रात्रि को शराब के खण्डन पर प्रभावशाली भजन हुए। इस कार्यक्रम में महिलाएं भी उत्साह पूर्वक भाग ले रही हैं। श्री धीरसिंह सरपंच तथा ग्रामों के पंच एवं निकट के ग्रामों के आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ता प्रारम्भ से ही दिन रात धरने पर बैठकर शराब खरीदने वालों को समझा बुझाकर वापिस भेज रहे हैं। सायंकाल ग्राम के बच्चे शराब विरोधी "बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं" "शराब का ठेका बन्द करो" आदि गलियों में नारे लगाते हैं। इस प्रकार ठेकेदार के नाक में दम कर रखा है।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे इस ठेके को शीघ्र बन्द करवाने के लिए तन मन तथा धन से सहयोग देकर इस आन्दोलन को सफल करें।

सभा मन्त्री

दो महत्त्वपूर्ण पंचायतों के निर्णय

दिनांक १२-५-८४ सायं ६ बजे ग्राम कंवारी में सातबास व निकट वृत्ति गावों की पंचायतों का आयोजन गांव बालावास में शराब का ठेका उठाने बारे श्री प्रतापसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज कवारी ने किया श्री देशराज (उमरा) की अध्यक्षता में ये सभा हुई। दो चार अवैध भ्रष्ट तत्त्व इस ठेके पर धरने को उठाना चाहते थे। इस बारे प्रधान जी और डाक्टर बारूराम (उमरा) मा. पृथ्वीसिंह (सुलतानपुर) मा. रघुवीर सिंह (बालावास) ने पूरजोर शब्दों में कहा कि शराब बुरी है। शराब ने हमारा सर्वनाश कर दिया है। इतिहास भी साक्षी है। ये शराब का ठेका अवश्य उठेगा जब तक ये ठेका न उठे तब तक हम धारना जारी रखेंगे। हमारी सब भाईयों से प्रार्थना है कि न इस ठेके से शराब खरीदे न ही अपने २ गांव में कोई कट्टे गिराये।

दूसरी पंचायत

दिनांक १३-५-८४ को ग्राम धमाना में सुबह दस बजे सातबास व निकटवृति २० गांवों की पंचायत राव तुलाराम नम्बरदार धमाना और राव मातादीन बढ़ोली (महेन्द्रगढ) एक बहू (लड़की) छोड़ने के विवाद को निपटाने बारे हुई। ये सभा सुबेदार राव जयनारायण (मिलकपुर) की अध्यक्षता में हुई। तुला राम का लड़का और मातादीन की लड़की थी जो तीन साल से आपसी झगड़े के कारण वह लड़की अपने पिता के घर बैठी थी लड़के ने दूसरी शादी कर ली थी। विवाद सीमा लांघ चुका था लेकिन भगवान् की कृपा से आपसी बातचीत के बाद आज दोनों पक्षों ने अपनी गलती मानी और लड़की को नम्बरदार ने अपने घर लाना स्वीकार किया। सभा में विशेष रूप से देशराज आर्य, डाक्टर बारूराम, कामरेड पृथ्वीसिंह, हैडमास्टर अमरचन्द आदि ने अपने सुझाव व विचार रखे। इस सभा में भी बाद में शराब के ठेके को बन्द कराने बारे चर्चा हुई।

प्रतापसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराबबन्दी समिति

बहादुरगढ में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर

आत्मशुद्धि आश्रम में हर वर्ष की भांति २५ जून से १ जुलाई तक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर का आयोजन और इस वर्ष शान्ति-महायज्ञ, मानव धर्म सम्मेलन; चरित्र निर्माण सम्मेलन, नशाबन्दी सम्मेलन; हिन्दू आर्य जागरण सम्मेलन बहादुरगढ नगर में शोभायात्रा आदि की व्यवस्था अत्यन्त उत्साह के साथ की जा रही है। इस शुभावसर पर अनेकों व्यायामाचार्यों, वक्ता, साधु-सन्त-संन्यासियों, नेताओं गायकों को आमन्त्रित किया गया है।

शिविर में पूर्ण रूप से भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी, युवक, ऋतु अनुसार बिस्तर, थाली, लोटा, कटोरी, चम्मच, कापी, पैंसिल, कदानुसार लाठी दो लंगोट, तोलिया, खाकी नेकर, सफेद बनियान, कपडे के जूते अवश्य साथ लेकर आयें। भोजन तथा स्थान का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। शिविर शुल्क २१) रुपये और अपना पूरा पता आश्रम के पते पर २० जून तक भेज देवें।

अपने बच्चों को शिविर में अवश्य भेजने का कष्ट करें, जिससे आपके लाडले, प्रभु भक्त, देश भक्त और माता पिता के आज्ञाकारी बन सकें, उत्तम स्वास्थ्य प्राप्ति का ज्ञान प्राप्त कर निरोग रह सकें।

स्वामी धर्ममुनि

विवाह सम्पन्न

श्री वचनसिंह जी आर्य मकड़ौली कलाँ निवासी ने अपनी दो सुपुत्रियों का विवाह संस्कार सु० श्री सौ० दर्शना व्याकरणाचार्या (स्नातिका कन्या गुरुकुल नरेला) का खानपुर कलाँ निवासी श्री रामकुमार बी० ए० बी० एड० के साथ तथा सु० श्री सौ० यशवन्ता का खाण्डाखेड़ी निवासी श्री रमेशकुमार के साथ पूर्ण वैदिक विधि से सम्पन्न कराया। संस्कार वैदिक विद्वान् पं० सुखदेव शास्त्री तथा पं० दयानन्द जी व्याकरणाचार्य ने सम्पन्न कराया। इस शुभ अवसर पर वर वधु पक्ष की ओर से कन्या गुरुकुल नरेला को १०१–१०१ रुपये तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को कन्या पक्ष की ओर से ५१ रुपये तथा खानपु कलां निवासी वर पक्ष की ओर से ११ रुपये दान स्वरूप प्रदान किये गये। संस्कार का ग्रामवासियों पर बहुत ही सुन्दर प्रभाव पड़ा।

आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि जून मास में अपने आर्यसमाजों के उत्सवों की तिथियां नियत कराने के लिए सभा को पत्र लिखकर तिथियां सुरक्षित करा लेवे। उत्सवों पर शराब बन्दी तथा स्वामी दयानन्द पर फिल्म के निर्माण पर पाबन्दी लगवाने के लिए प्रस्ताव करके इसकी प्रतियां सरकार तथा सभा को भेजें।

सभा मन्त्री

आठवीं कक्षा का शानदार परिणाम

आर्य उच्चतर मा० विद्यालय सिरसा का आठवीं कक्षा का परिणाम उत्साहवर्धक रहा। इस वर्ष विद्यालय के छात्रों ने पिछले वर्षों के सभी रिकार्ड तोड़ डाले। इसका श्रेय प्रबन्ध समिति प्रिंसिपल द्वारका प्रसाद जिन्दल एवं योग्य स्टाफ पर है। नगर में यह विद्यालय परिणाम की दृष्टि से दूसरे स्थान पर है।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

करनाल में वेदप्रचार समारोह सम्पन्न

४-५-६ मई ८४ को रामनगर करनाल में स्वामी सच्चिदानन्द जी की अध्यक्षता में वेदप्रचार समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया। ६ मई को जबकि हज़ारों की संख्या में लोग उपस्थित थे। आपके आदेश पत्र संख्या २४४७ दिनांक २६-४-८४ को भेजे गये एक विज्ञापन के अनुसार शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन भी किया गया जिसमें नरदेव शास्त्री, डॉ० गणेशदास जी अरोड़ा, लाला लाजपतराय मन्त्री ने अपने भाषणों में शराब की बुराईयों तथा सामाजिक बुराईयों के बारे में बताया। सर्वसम्मति से लोगों के हाथ खड़े कराकर शराब न पीने तथा शराब के ठेकों को बन्द कराने का प्रस्ताव पास करवाया गया।

नरदेव शास्त्री
प्रधान वेदप्रचार समारोह करनाल

शीघ्र आवश्यकता है

शान्तानन्द आश्रम हेतु निम्नलिखित पदों के लिए आवेदन पत्र आमन्त्रित हैं—

१—बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने हेतु एक शास्त्री की आवश्यकता है, जिसे आर्ष ग्रन्थों का अच्छा ज्ञान हो। आवास एवं भोजन के अतिरिक्त ४०० रुपये प्रतिमाह। आयु २१ से ४० तक।

२—वानप्रस्थ अथवा संन्यासी का पद—बच्चों को संध्या हवन सिखाना तथा व्यायाम और धार्मिक शिक्षा द्वारा आर्य वीर दल तैयार करना।
इसके अतिरिक्त पदयात्रियों के साथ ५ किलोमीटर तक पदयात्राओं का मार्ग दर्शन करना। आवास एवं भोजन के अतिरिक्त आवश्यक खर्च। आयुमान ५५ वर्ष तक।

३—आवश्यकता है एक पाचक की जो १० व्यक्तियों का भोजन बना सके। आवास एवं भोजन के अतिरिक्त २०० रु० प्रतिमाह।

नोट—२८ मई ८४ तक अपने आवेदन पत्र भेज देवें। इसके बाद के प्रार्थना पत्रों पर विचार नहीं किया जाएगा। साक्षातकार हेतु मंडल की समिति द्वारा विचार करने के बाद पत्र डालकर आवेदन कर्त्ता को स्वयं के खर्च पर आमन्त्रित कर लिया जाएगा।

आवेदन निम्नलिखित पते पर करें।

पदमचन्द आर्य
मन्त्री वेदप्रचार मण्डल मेवात—नगीना, जिला गुड़गांव

महाविद्यालय हाथरस जि० अलीगढ़ उ. प्र.

१ जुलाई १९८४ से नया वर्ष। शिशु कक्षा से बी० ए० एवं आचार्य तक की निःशुल्क शिक्षा। गुरुकुल पद्धति पर निःशुल्क छात्रावास। सब का सीधा-सादा एकसा रहन-सहन, कड़ा अनुशासन नगर से दूर, स्वास्थ्यप्रद जलवायु। शरारती और न पढ़ने वाली छोटी कन्याओं का विशेष प्रबन्ध। सामान्य विषयों के अतिरिक्त धर्म संगीत, नैतिकता, गृह कार्यों की भी अनिवार्य शिक्षा। देशी घी, दूध, नाश्तों सहित भोजन शुल्क ६० रुपये मात्र। नियमावली मंगवायें।

अक्षयकुमारी शास्त्री
मुख्याधिष्ठात्री

शिक्षा, आवास तथा भोजन की निःशुल्क व्यवस्था वाले

गुरुकुल आर्यनगर हिसार में नवीन छात्रों का प्रवेश

गुरुकुल आर्यनगर हिसार में नवीन छात्रों का प्रवेश आरम्भ हो चुका है। प्रवेशार्थी की आयु १० वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी का है। अन्तिम परीक्षा विद्याधिकारी मैट्रिक तथा विशारद के समकक्ष मान्यता प्राप्त है। इसके अतिरिक्त प्राज्ञ, विशारद एवं शास्त्री कक्षाओं हेतु विशेष प्रबन्ध है। शिक्षा आवास तथा भोजन सर्वथा निःशुल्क है। प्रवेश की अन्तिम तिथि ३० जून १९८४ है। शीघ्रता करें क्योंकि स्थान सीमित हैं। जलवायु उत्तम तथा स्वास्थ्यवर्धक है। गुरुकुल हिसार शहर से ३ मील की दूरी पर बालसमन्द मार्ग के समीप नहर के किनारे एक ऊँचे स्थान पर स्थित है। नियम पत्र निम्न पते पर निःशुल्क प्राप्त करें।

आचार्य
गुरुकुल आर्यनगर
पो०—कुरड़ी, जिला—हिसार (हरयाणा)



उत्तम स्वास्थ्य के लिए

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

हरिद्वार

की औषधियां सेवन करें।

शाखा कार्यालय :-
६३ गली राजा केदारनाथ,
चावड़ी बाजार, दिल्ली—६
(स्थानीय विक्रेताओं एवं सुपर बाजार से खरीदें) फोन नं० २६१८३८

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० सं० P/R'   फोन ४८१२



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क २५   २८ मई १९८४   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

पंजाब में आतंकवाद के विरुद्ध तथा हरयाणा के हितों की रक्षा पर विचारार्थ

हरयाणा के राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक कार्यकर्त्ताओं की रोहतक में बैठक

पंजाब में आतंकवाद चरम सीमा लांघ रहा है। उग्रवादी अकाली जिन्हें भी अपने मार्ग का कांटा समझते हैं, उन्हें गोलियों से भुन कर शहीद कर रहे हैं। पंजाब सरकार अपराधियों को पकड़ने में विफल है। अकाली इस प्रकार अपनी अनुचित मांगें मनवाने के लिए भारत सरकार पर दबाव डाल रहे हैं और उधर अकालियों के ऐजेन्ट भारत सरकार के साथ उनका समझौता करवाने का यत्न कर रहे हैं। इसी कारण भारतीय संविधान को जलाने के अपराध में जिन्हें जेलों में बन्द किया गया था उन्हें बिना शर्त रिहा कर दिया गया है। लगता है कि इस आतंकवाद के वातावरण में अकालियों के साथ समझौता होने वाला है और इस समझौते में हरयाणा के हितों की उपेक्षा हो सकती है। हमें जागरूक रहना होगा।

अतः २ जून शनिवार को प्रातः १० बजे दयानन्द मठ, रोहतक में हरयाणा के सभी राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं एवं कार्यकर्त्ताओं की एक आवश्यक बैठक रखी गई है ताकि वर्तमान संकट का मुकाबला करने के लिए सांझा कार्यक्रम तैयार किया जावे।

आपने सदा ही हरयाणा के हितों की रक्षा कार्यों में सहयोग किया है। अतः आप अपना अमूल्य समय निकाल कर अपने साथियों के साथ इस आवश्यक बैठक में पधारें तथा अपने सुझाव देकर पंजाब में की जा रही निर्दोष व्यक्तियों की हत्याओं को रुकवाने और हरयाणा के हितों की रक्षा में अपना योगदान अवश्य दीजिए।

इस बैठक में हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का के नेता श्री मा० तेगराम जी पूर्व विधायक (एम० एल० ए०) अपने अन्य सहयोगियों के साथ पहुंच रहे हैं।

आपके सहयोग का इच्छुक
स० भरतसिंह वानप्रस्थी

हरयाणा ने अपना पक्ष दोहराया

चंडीगढ़, २९ मई। हरयाणा के मुख्य मन्त्री भजनलाल ने आज भूतपूर्व विदेश मन्त्री श्री स्वर्णसिंह, जपा. नेता डा० सुब्रह्मण्यम स्वामी तथा कुछ प्रतिपक्षी नेताओं का यह सुझाव ठुकरा दिया कि चण्डीगढ़ तत्काल पंजाब को दे दिया जावे तथा शेष क्षेत्रीय विवाद एक ट्रिब्यूनल को सौंप दिए जाने चाहिएं।

सुझाव को अत्यधिक गैर जिम्मेदार तथा अनुचित बताते हुए मुख्यमन्त्री ने आज यहां पत्रकारों को बताया कि जब तक फाजिल्का और अबोहर के क्षेत्र हरयाणा को नहीं दिये जाते, तब तक हरयाणा चण्डीगढ़ को नहीं छोड़ेगा।

उन्होंने कहा कि हरयाणा को नई राजधानी बनाने के लिए कहने की अपेक्षा पंजाब को रणजीतगढ़ या पटियाला में अपनी राजधानी बनानी चाहिए।

श्री भजनलाल ने कहा कि पंजाब या तो चण्डीगढ़ सहित सारी खरड़ तहसील हरयाणा को देने की शाहआयोग की सिफारिश स्वीकार करे या १९७० का प्रधान मन्त्री का एवार्ड लागू करे जिसमें चण्डीगढ़ के बदले में फाजिल्का व अबोहर हरयाणा को साथ ही देने का प्रावधान है।

गलियारा थ्यूरी को रद्द करते हुए मुख्यमन्त्री ने कहा कि हिन्दी भाषी क्षेत्रों का सम्पर्क तोड़ने के लिए कंडूखेड़ा शरारतपूर्ण ढंग से मुक्तसर तहसील को दे दिया गया। उन्होंने कहा कि हरयाणा कंडूखेड़ा के लिए अपना एक गांव पंजाब को देने को तैयार है।

(दैनिक ट्रिब्यून से)

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों के कार्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में जून मास में निम्नलिखित आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव हो रहे हैं, इनमें सभा के अधिकारी, उपदेशक तथा भजनोपदेशक पधारेंगे। इन अवसरों पर वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा शराबबन्दी सम्मेलनों का आयोजन किया गया है—

आर्यसमाज फूंसगढ जिला करनाल	२९, ३०, ३१ मई
,, कोटड़ा जिला अम्बाला	१, २, ३ जून
,, दहकोरा जि० रोहतक	१, २, ३ ,,
,, मिर्जापुर बाछोद जिला महेन्द्रगढ	१, २, ३ ,,
,, ईशरहेड़ी जि० कुरुक्षेत्र	८, ९, १० ,,
,, भुसलाना जिला जीन्द	,, ,, ,, ,,
,, सालवन ,, करनाल	,, ,, ,, ,,
,, बेरा ,, ,,	११, १२, १३ ,,

जो आर्यसमाजें जून मास में अपने उत्सव रखना चाहते हैं वे ऊपर लिखित तिथियों को छोड़कर अपनी तिथियां नियत करके शीघ्र सभा कार्यालय को सूचित करें ताकि समय पर प्रबन्ध किया जा सके।

सभा मन्त्री

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है, परन्तु कुछ महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः विवश होकर उनके पास आगामी अंक से सर्वहितकारी भेजना बन्द करना पड़ रहा है।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

शराब से सर्वनाश

अन्य मुस्लिम राज्यों का शराब से सर्वनाश

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

जैसे दक्षिण में बीजापुर और गोलकुण्डा दो मुस्लिम स्वाधीन राज्य थे। गोलकुण्डा की राजधानी हैदराबाद एक प्रकार की कामपुरी बनी हुई थी। उस नगर में २० हजार वेश्यायें थीं और अनगिनत शराब घर थे। विलासिता का ऐसा भीषण नृत्य अवध के अन्तिम दिनों को छोड़ कर शायद ही कभी दिखाई दिया हो। अद्भुत यही था कि गोलकुण्डा के शासक ऐसी विलासिता में बहकर इतने दिनों तक जीवित कैसे रहे। सम्पूर्ण शासन गन्दा और निर्बल हो चुका था। औरंगजेब ने इस पर आक्रमण करके इस राज्य को समाप्त कर दिया। विषयी लम्पटों के राज्यों का यही परिणाम होता है। प्रायः ऐसे ही अनेक मुस्लिम राज्य सुरा और सुन्दरी के चक्र में आकर नष्ट-भ्रष्ट हो गये।

मुगल काल के अन्तिम दिनों में जब मराठा साम्राज्य का अभ्युदय हुआ, वह तब तक खूब फला-फूला जब तक कि सुरा और सुन्दरी के चक्र में नहीं पड़ा। ज्योंही इनका स्पर्श उसके सरदारों तथा अन्य प्रतिष्ठित जनों ने किया, त्यों ही यह राज्य भी पतन की ओर जाना प्रारम्भ हो गया।

शराब से मराठों का सर्वनाश

तीस वर्ष के लगातार परिश्रम और कठिन उद्योग के द्वारा छत्रपति शिवाजी ने जो राज्य बनाया था, उसका विवरण प्रसिद्ध इतिहासकार श्री यदुनाथ सरकार आदि इस प्रकार देते हैं। पहले उनके अपने देश जिसे मराठी में "स्वराज" और फारसी में पुराना राज कहते थे, पर उनका अधिकार और क्षमता स्थाई रूप से थी और उसको सब मानते थे। उसका विस्तार सूरत शहर से साठ मील दक्षिण में कोली देश से लेकर गोवा के दक्षिण में कारवार शहर तक था। इस बीच में पश्चिम किनारे पर केवल पुर्तगालियों के दो प्रदेश गोवा और दमन छूट जाते थे। इस देश की पूर्वीय सीमा की रेखा बगलाना होती हुई दक्षिण की ओर नासिक और पूना जिले के मध्य भाग को भेदती हुई सतारा और कोल्हापुर जिलों में घूमकर उत्तर कर्नाटक के किनारे गंगावती नदी पर जाकर समाप्त होती थी। अपनी मृत्यु से दो वर्ष पूर्व शिवाजी ने पश्चिमी कर्नाटक में बेलगांव से पूर्व तुंगभद्रा नदी के तटवर्ती कोपल आदि जिलों पर भी अधिकार कर लिया था। इसके तीन भाग तीन सूबेदारों के आधीन थे। १—देश या खास महाराष्ट्र पेशवा के आधीन था। २—कोंकण अर्थात् सह्याद्रि के पश्चिम का प्रदेश अण्णाजी दत्तो के आधीन था। ३—दक्षिणी महाराष्ट्र और पश्चिमी कर्नाटक दत्ताजी पन्त के आधीन था।

यद्यपि कर्नाटक अर्थात् मद्रास के दिग्विजय के फलस्वरूप जिंजी, वेलूर आदि जिले उनके हाथ में आ गये थे, परन्तु उन पर उनका स्थाई अधिकार नहीं हो पाया था। जितनी भूमि पर उनकी सेना अधिकार कर सकती थी अथवा राजस्व (कर) वसूल करती थी उतने ही से सन्तोष करना पड़ता था। उनकी मृत्यु से पहले वर्तमान बेलगांव और धारवाड़ जिलों में तथा सोन्दा और बिदनौर राज्यों में युद्ध चल रहा था। वहां उनकी सत्ता डावांडोल अवस्था में थी।

इन सब स्थानों के बाहर आसपास के पड़ोसी प्रदेशों से उनकी सेना प्रतिवर्ष शरद् ऋतु से छः मास चौथ (कर) वसूल किया करती थी वह एक प्रकार की लूट ही थी। क्योंकि प्रदेशों की रक्षा करना मराठे लोग अपना कर्तव्य नहीं समझते थे।

मराठों के दुर्ग

मराठा इतिहास के अनुसार शिवाजी के अधिकार में कुल मिलाकर दो सौ अस्सी दुर्ग थे। प्रायः मराठे इन्हीं दुर्गों में रहकर ही आक्रमणों का प्रतिरोध करते थे। मराठा साम्राज्य इन्हीं दुर्गों की सुदृढ़ शृंखला से बन्धा हुआ था। संकट के समय ये दुर्ग देश के प्रमुख रक्षक का कार्य करते थे। विशाल मुगल सेना इन दुर्गों की ही सुदृढ़ता के सम्मुख निरुपाय होकर पड़ी रहती थी। इसीलिए नये दुर्गों का निर्माण तथा पुराने दुर्गों के जीर्णोद्धार के लिए शिवाजी ने अत्यधिक धन व्यय किया। क्योंकि शिवाजी ने दुर्गों की जितनी उपयोगिता की आशा की थी, ये उस से कहीं अधिक उपयोगी सिद्ध हुये। आक्रमण करने की योजनायें भी इन दुर्गों की स्थिति को ध्यान में रखकर ही बनाई जाती थीं। अपनी वीरता और युद्धकौशल के कारण शिवाजी एक विशाल साम्राज्य का स्वामी बन गया।

इस विशाल साम्राज्य के अतिरिक्त शिवाजी के राजस्व और धन भण्डार का विवरण इस प्रकार है।

राजस्व और धनभण्डार

सन् १६९४ ई० में शिवाजी के सभासद् कृष्णाजी अनन्त ने लिखा था कि उनके स्वामी छत्रपति का राजस्व (कर) प्रतिवर्ष एक करोड़ होण और चौथ ८० लाख होण तक थी। होण सोने की छोटी मुद्रा होती थी। उसका मूल्य पहले चार रु० के बराबर था और पीछे पाँच रु. के बराबर हो गया था। इस प्रकार इन दोनों को मिलाकर शिवाजी की आय प्रतिवर्ष सात से लेकर नौ करोड़ रुपये तक होती थी। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके भण्डार में जो धन सम्पत्ति मिली, उसमें सोने के सिक्कों (मोहरों) की संख्या छः लाख और पचास हजार होण थी। इसके अतिरिक्त साढे बारह खण्डी वजन के सोने के डले थे। चांदी के १७ लाख रु० थे और ५० खण्डी वजन की चांदी थी। इनको छोड़कर हीरा, मणि, मुक्ता आदि रत्न लाखों के मूल्य के थे। एक खण्डी कलकत्ते के ७ मन से कम ६-८ मन के बराबर होती थी।

इस प्रकार शिवाजी महाराज ने अपनी सन्तान के लिए धन-सम्पत्ति से परिपूर्ण राज्य छोड़ा था।

क्रमशः

बन नहीं सकता है खालिस्तान

—निर्भय हाथरसी

कर रहे शैतानियां जो लोग झूठी शान में,
वे समझ लें खूब, सर्वस्व हानि है अभिमान में।
घर के हों, बाहर के हों, रखलें सभी यह ध्यान में —
बन नहीं सकता है खालिस्तान हिन्दुस्तान में।

शान्त रहना चाहते हैं, मान से सम्मान से;
किन्तु दब करके न रहना है किसी अहसान से।
शान्ति का जो अर्थ कायरता समझते हों यहां—
कान देकर बात सुन लेना हमारी ध्यान से।

बिच्छुओं को छेड़ मत देना कहीं अनजान में?
घर के हों, बाहर के हों, रखलें सभी यह ध्यान में—
बन नहीं सकता है खालिस्तान हिन्दुस्तान में।

यह नहीं कहते, कि हिन्दुस्तां से डरना दोस्तो!
फिर भी इसके साथ गुस्ताखी न करना दोस्तों!
तुम जिओ, हमको भी जीने दो वतन के वास्ते—
दिल मिला कर यह सभी तो रहलो, वरना दोस्तो!

लाश का चेहरा भी आयेगा नहीं पहिचान में।
घर के हों, बाहर के हों, रखलें सभी यह ध्यान में—
बन नहीं सकता है खालिस्तान हिन्दुस्तान में।
सीरतों से कुछ समझलो, नीयतों से नेक हैं।

हममें साहस-वीर्य के संग; ज्ञान और विवेक हैं।
फूट कितनी भी हो हममें; किन्तु झुक सकते नहीं—
घर में हम चाहे अनेक हों; किन्तु बाहर एक हैं।

प्रधानमन्त्री के नाम खुला पत्र

माननीया प्रधानमन्त्री जी,

इससे पूर्व मैंने २६ अप्रैल ८४ के पत्र द्वारा आपका ध्यान पंजाब की वर्तमान समस्या की ओर आकृष्ट किया था। पंजाब की बिगड़ती हुई स्थिति से राष्ट्रीय एकता तथा साम्प्रदायिक सद्भावना को खतरा बढ़ता जा रहा है। पंजाब वाले हरयाणा तथा राजस्थान को उनके उचित भाग की बिजली नहीं दे रहे हैं। इसके साथ साथ पंजाब हरयाणा तथा राजस्थान के मध्य किए गए बिजली-सप्लाई-सम्बन्धी समझौते को बार बार भंग किया गया है। आशा थी कि यह मामला सुप्रीमकोर्ट के बाद सुलझ जाएगा। रोपड़, फिरोजपुर तथा हरीके-हैड वर्क्स के नियन्त्रण में भी तीनों प्रान्तों का बराबर अधिकार होना चाहिए। पंजाब वालों ने सदा ही जोर-जबरदस्ती की नीति अपनायी है, जो बात उन्हें पसन्द आती है केवल उसे तो वे मान लेते हैं बाकी बातें नहीं मानते अतः वे सामूहिक रूप से किए गए समझौते क्यों मानने लगे? बिजली सप्लाई तथा जल वितरण सम्बन्धी सभी वित्तीय तथा प्रबन्धक विभागों में नियमानुसार ही अधिकार होना चाहिए। पिछले पांच वर्षों से विशेषकर बिजली के प्रयोग में असंवैधानिक रूप से अन्याय हुआ है। यद्यपि बिजली एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है तथापि अनियमित पावर-कट एक नियम-सा बन गया है, यदा-कदा ही सामान्य रूप से बिजली की सप्लाई चलती है। यदि कोई प्रान्त अपने मनमाने अधिकार से या समझौते का उल्लंघन करके अधिक बिजली प्राप्त करता है तो मतलब हुआ शक्तिवाले के सामने झुकना तथा जो उदण्डता करे उसे पुरस्कार देना और जो शान्तिपूर्वक रहे उसे दण्डित करना।

हिंसा तथा धमकियों के सामने झुकना ठीक नहीं है। गत वर्षों में अकालियों के सामने सरकार अनेक बार झुकी है। यदि शाह-कमीशन चण्डीगढ़ को पंजाब के लिए दे देता तो क्या इतनी देरी की जा सकती थी? क्या केन्द्रीय सम्पत्ति का स्थानान्तरण एक दिन भी रोका जा सकता है? फाजिल्का और अबोहर का हस्तान्तरण का निर्णय यदि पंजाब के हक में होता तो क्या अभी तक रुका रह सकता था? यदि हरयाणा में होकर पंजाब को नहर जाती तो क्या निर्माण कार्य रुक सकता था? शान्ति से कष्ट झेलने वालों को आगामी हानि सहन करने के लिए तथा उदण्डता एवं हिंसा करने वालों के साथ सहमति करने के लिये कहा जाता है? पंजाब के सभी प्रमुख बुद्धिजीवी हरयाणा वालों को सलाह देते हैं कि अकालियों की अन्यायपूर्ण तथा अनुचित मांगों को स्वीकार होने देवें ताकि पंजाब में शान्ति स्थापित हो सके।

चण्डीगढ़, फाजिल्का और अबोहर के बारे में तथाकथित बुद्धिमानों के द्वारा दिए जाने वाले सुझाव ठीक नहीं हैं। अनुचित मांगों के सामने घुटने टेकने से समस्या हल नहीं हो सकती।

देश में साम्प्रदायिक शक्तियां तथा बाहर भारत-विरोधी शक्तियां इस देश की अखण्डता को नष्ट करने के लिये षड्यन्त्र कर रही हैं। आज पंजाब में और उसके समीपवर्ती क्षेत्रों में जो कुछ हो रहा है वह बहुत ट्रेण्ड लोगों की बुद्धिपूर्वक बनाई गई योजना है। यदि अकालियों की अनुचित मांगें मान भी लीं गईं तो कोई एक सन्त मान भी लेगा तो दूसरा सन्त फिर उसे अस्वीकार कर देगा। २५ वें संवैधानिक अनुच्छेद के हटाने के समान और नई मांगें रखी जाएंगी। अनुचित बातों के मानने से हिंसक उग्रवादी लोगों को प्रोत्साहन मिलता है। अब तक कोई ठोस कार्यवाही न करने के कारण ही पंजाब की स्थिति बिगड़ती जा रही है। प्रतिदिन हत्या, लूटपाट और उपद्रव होते रहते हैं। आवश्यकता इस बात की है कि समाज विरोधी तथा राष्ट्र विरोधी शक्तियों का सफाया किया जाये, चाहे वे स्वर्ण मन्दिर में हों या बाहर कहीं भी हों। सुरक्षा अधिकारियों को इन शरारती तत्वों से निपटने की खुली छूट दी जानी चाहिये जिससे कि वे अपनी शक्ति का समुचित समय पर प्रयोग कर सकें। जब तक शान्ति और सद्भाव का वातावरण न बने और अकाली अपनी भांति दूसरों के अधिकारों को उचित महत्त्व तथा मान्यता न दें तब तक उनसे बातचीत नहीं करनी चाहिए।

प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

आर्य वीर राष्ट्र रक्षा के लिए तैयार रहें

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक २६ मई (कार्यालय संवाददाता) आज यहां स्थानीय भगतसिंह पार्क में आर्यवीर दल के तत्वावधान में राष्ट्र रक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पं० सत्यपाल पथिक के मधुर भजन राष्ट्रीय गीत हुए। सम्मेलन में आचार्य विक्रम जी ने अपने व्याख्यान में पंजाब में प्रतिदिन की जा रही हत्याओं पर दुःख प्रकट करते हुए कहा कि पंजाब में जनता की रक्षा वाली पुलीस ही हत्या करने में सांझीदार है। अतः आत्म रक्षा के लिए हथियार रखना आवश्यक हो गया है। अतः पंजाब में सिखों की भान्ति हिन्दुओं को भी हथियार रखने होंगे।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने अध्यक्षीय भाषण में बोलते हुए आर्य वीर दल के स्वयंसेवकों का आह्वान करते हुए कहा कि अब समय आ गया है कि राष्ट्र की रक्षा के लिए आर्यवीरों को संघटित होकर मैदान में कूदना चाहिए। पंजाब में आतंक का वातावरण है। अकालियों को विदेशी ताकतें हथियार तथा धन की सहायता दी जा रही है। नदियों का पानी मुफ्त में पाकिस्तान को दिया रहा है और हरयाणा को पानी तथा बिजली की सप्लाई बन्द करने की धमकियां दी जा रही हैं। सरकार अकालियों की अनुचित मांगें मानकर उनके सामने घुटने टेक रही है। आर्य वीर दल को जलूस निकालने की सुविधा नहीं दी गई और अकालियों की बार बार देशद्रोही मांगें मानकर राष्ट्र को कमजोर किया जा रहा है। आज आर्यसमाज की ओर जनता आशा लगाये बैठी है। इस सम्मेलन से पूर्व एक सप्ताह तक पं० ओम्प्रकाश जी आर्य (जालन्धर) ने वेदकथा द्वारा आर्यों को राष्ट्र रक्षा के प्रति सचेत किया।

गुरुकुल की समस्या का एक ही हल

सरकारी अनुदान ठुकरा दें

(धर्मवीर विद्यालंकार, ५ अशोक नगर पीलीभीत)

सर्वहितकारी साप्ताहिक रोहतक, आर्यसन्देश साप्ताहिक दिल्ली तथा आर्यमर्यादा साप्ताहिक जालन्धर में आदरणीय सत्यव्रत जी, सिद्धांतालंकार का लेख 'गुरुकुलों की समस्याओं का एक ही हल' छपा है। आदरणीय लेखक गुरुकुल कांगड़ी के प्रारम्भिक वर्षों के बहुत पुराने स्नातक हैं। आपने गुरुकुल का जीवन स्वयं जिया है। आप १९३६-४१ तक गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के मुख्याधिष्ठाता भी रहे हैं। १९६१ से १९६५ तक के समय में आप इसी गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे हैं। १९८१ से आप इसी गुरुकुल के परिद्रष्टा (विजिटर) हैं। आप इस गुरुकुल की प्रबन्ध एवं व्यवस्था के विविध पहलुओं का गहरा अनुभव रखते हैं।

आपने अपने लेख में गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का प्राचीन व अर्वाचीन जो चित्र प्रस्तुत किया है, वह सर्वथा सत्य है, और यथार्थ पर आधारित है। पुरातन गुरुकुल की आठ विशेषताएं आपने बताई हैं। उनमें ब्रह्मचर्यनिष्ठ तपोमय जीवन और गुरु व शिष्य का निरन्तर सहचर्य मुख्य हैं। शेष विशेषताएं इन्हीं में समाहित हो जाती हैं। वर्तमान काल में ये विशेषताएं गुरुकुल कांगड़ी के विद्यालय विभाग में तो हैं, किन्तु विश्वविद्यालय विभाग में तिलमात्र भी नहीं हैं। यह कटुसत्य आपने अपने लेख में स्वीकार किया है। इसके साथ ही इस 'कटु-सत्य' का एकमात्र उपाय आपने सुझाया है कि विद्यालय विभाग को सरकार (विश्वविद्यालय अनुदान आयोग अथवा केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय) द्वारा भरपूर आर्थिक सहायता मिलनी चाहिये।

वर्तमान दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति के कारणों पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने से आदरणीय परिद्रष्टा द्वारा सुझाया गया एकमात्र हल उचित प्रतीत नहीं होता।

यह स्पष्ट है कि सरकारी धन जिस क्षेत्र में पहुंचा है—अर्थात् विश्वविद्यालय विभाग में—वहीं पर पुरातन, वैदिक गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति व उसकी परम्पराएं सर्वथा ध्वस्त हो गई हैं।

इस अनुदान प्राप्ति से पूर्व विश्वविद्यालय विभाग एवं विद्यालय विभाग एक थे, एक दूसरे के पूरक थे, एक ही परिसर में थे और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के अंग थे। इस अनुदान ने सबसे प्रथम इनको द्विधा विभक्त कर दिया।

आज के गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों व शिक्षकेतर कर्मचारियों में से ९९ % की आर्यसमाज तथा गुरुकुलीय शिक्षा पद्धति के प्रति सर्वथा आस्था नहीं है। प्राध्यापकों व कर्मचारियों की संख्या पहले से चार गुनी है और पहले जैसा चरित्र एक प्रतिशत है। अध्ययन अध्यापन की प्रवृत्ति लुप्त हो चुकी है। एक प्राध्यापक प्रतिदिन २ या ३ पीरियड पढ़ाते हैं और पढ़ाने के बाद चाहे महाविद्यालय अभी लगा हो तुरन्त बाहिर चले जाते हैं। न तो छात्रों की सहायता करते हैं, न ही स्वयं पुस्तकालय में बैठकर स्वाध्याय करते हैं। अनुदान प्राप्ति के पूर्व के काल में उपाध्याय, महाविद्यालय में ८ पीरियट तो पढ़ाते ही थे, आश्रम में भी जाकर ब्रह्मचारियों को पढ़ाते थे। कठिन शब्दों को समझाते थे। इसके अतिरिक्त सायंकाल में छात्रों के साथ हाकी, फुटबाल, बालीबाल आदि खेलते थे—अथवा गंगा में तैरने के अभ्यास कराते थे। ऋषिकेश से गुरुकुल तक तैरते हुए आते थे। वन भ्रमण और सरस्वती यात्राओं का निशान तक नहीं है। आश्रम में एक भी छात्र निवास नहीं कर रहा। छात्रों के दो महाविद्यालयों के आश्रमों में पी० ए० सी० के जवान रहते हैं और जिला सहारनपुर का पी० ए० सी० का कार्यालय चलता है।

आज तो प्राध्यापकों का और कर्मचारियों का आकर्षक वेतन तथा उससे भी अधिक आकर्षण श्रम अथवा स्वाध्याय का अभाव है।

छात्रों की स्थिति इससे भी खराब है। विश्वविद्यालय में सामान्य आयु वाले छात्र नहीं हैं। अधिक आयु वाले, कार्यरत, गृहस्थ अथवा किसी आश्रम के साधु सन्त यहां छात्र हैं। हरिद्वार के एक मुंसिफ मजिस्ट्रेट भी नियमित छात्र हैं। ब्रह्मचर्य को समाप्त कर गृहस्थ में प्रविष्ट व्यक्ति गुरुकुलीय परम्परा का छात्र कैसे हो सकता है?

ऐसे भी प्राध्यापक तथा शिक्षकेतर कर्मचारी काफी संख्या में हैं, जो तम्बाखू, मद्य, मांस का भरपूर सेवन करते हैं। ७-५-८४ को गुरुकुल परिसर में एक अधिकारी की कन्या का विवाह हुआ। गुरुकुल परिसर में विवाह होना गुरुकुलीय परम्परा में नहीं है। फिर इस विवाह के अवसर पर शराब का वितरण भी हुआ। अगर विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों और कर्मचारियों को गुरुकुल सम्बन्धी नियमों तथा परम्पराओं की बात कहें तो झगड़ा, हड़ताल का सामना करना पड़ेगा। परीक्षा में खुले आम नकल होती है। झूठे प्रमाण-पत्र दिये जाते हैं। झूठे बिलों द्वारा भुगतान साधारण बात है। आदरणीय कुलपति महोदय का एक ही काम है कि दिल्ली स्थित आयोग से अधिकाधिक धनराशि लाएं। अतः वे गुरुकुल परिसर में मास में मात्र ५/७ दिन रहते हैं।

यह सत्य है कि अनुदान इसलिये मिलना आरम्भ हुआ कि गुरुकुल अपना स्वरूप बनाए रखेगा। मगर गुरुकुल इस धनराशि को पाकर अपना स्वरूप नहीं बचा पाया। स्वर्गीय इन्द्र जी विद्यावाचस्पति तथा आदरणीय सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार के कुलपतित्व में ऐसा प्रयत्न किया गया कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की उपाधि को स्वतन्त्र भारत की प्रभुता—सम्पन्न सरकार द्वारा मान्यता मिल जाए। वह अथक परिश्रम से मिल गई। यह भी विचार हुआ कि स्वतन्त्र भारत की सरकार अपनी सरकार है। अतः इससे आर्थिक सहायता भी मिलनी चाहिए।

क्रमशः

आवश्यकता है

पौराणिक तीर्थराज पुष्कर में वैदिक धर्म प्रचार हेतु वैदिक सत्संग आश्रम पुष्कर के विकास कार्यों में सहयोगी संस्कृत अंग्रेजी भाषा के जानकार वानप्रस्थी या आर्य संन्यासी की आवश्यकता है। भोजन; आवास आदि की व्यवस्था आश्रम की ओर से होगी। जो आर्य महानुभाव अपनी सेवाएं देना चाहता हो कृपया निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

प्रधान

आर्यसमाज अजमेर

महर्षि दयानन्द का उपकार

महर्षि दयानन्द देश का उपकार कर गया।
जाते जाते वेदों का प्रचार कर गया।
मेरे ऋषि की यही है निशानी।
जीवन की घटनाओं से आंखों में आता पानी
आर्यसमाज बनाकर सबका उद्धार कर गया। जाते……

वेदों का नाम तक थे भूले हुए।
गहरी नींद में थे हम भूले हुए।
सबको जगाकर हमें हुश्यार कर गया। जाते……

संस्कृत मातृभाषा जो थी खोई हुई।
पाखण्डियों की घोर घटायें थी छाई हुई।
सबको आर्य बनाकर वेदों का अधिकार दे गया। जाते……

धर्म की डूबती किश्ती थी बचाई।
बहनों ने गुरुकुल की शिक्षा थी पाई।
जगह-जगह 'ओ३म्' का प्रचार कर गया। जाते……॥

भामचन्द आर्य

मन्त्री आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला

'सम्राट्' से परहेज क्यों ?

डा० सुरेन्द्रसिंह कादियान एम० ए० पी.एच० डी०

आर्यसमाज की अधिकांश पत्रिकाएं प्रसार संख्या की दृष्टि से दो हजार की लांघ नहीं सकी हैं। इसके कई कारण गिनाए जा सकते हैं। यथा गम्भीर सामग्री की प्रचुरता, मनोरंजक सामग्री का अभाव, सामयिक विषयों और ज्वलंत समस्याओं के प्रति उदासीनता, उबाने वाले रद्दी अखबारी कागज का प्रयोग, साज-सज्जा के प्रति अनभिज्ञता, अशुद्ध छपाई आदि आदि। किन्तु जो बात मेरे अनुभव में आई है, जिससे आर्यसमाज के अस्तित्व पर सब पर कुठाराघात हो रहा है और जिस पर आर्यसमाज के नेता व चिन्तक विशेष ध्यान नहीं दे रहे हैं वह यह है कि आर्यसमाज के बुद्धिजीवियों, पढ़े लिखों में जहां स्वाध्याय का निरंतर ह्रास हो रहा है वहां उसी गति से पत्र-पत्रिकाओं का निःशुल्क प्राप्त करने अथवा पढ़ने की बीमारी बढ़ती जा रही है।

आज ऐसे कितने आर्यसमाज और आर्य परिवार हैं जिनमें नियमित रूप से आर्यसमाज की एकाध पत्रिका मंगाई या पढ़ी जाती हो? यदि इस प्रकार का सर्वेक्षण कराया जाए तो दो प्रतिशत से अधिक के आंकड़े उपलब्ध नहीं हो सकते। दुर्भाग्य से ऐसी कोई प्रतिनिधि सभा, या समृद्ध आर्यसमाज नहीं है जहां आर्यसमाज की सभी पत्रिकाएं आती हों। यह इस कारण नहीं कि किसी पत्रिका में ऊपर गिनाए गए दोषों में से एक अथवा अधिक दोष हैं बल्कि इसका कारण है कि स्वाध्याय की कमी मुफ्तखोरी की बढोतरी हो रही है। इसका एक ताजा उदाहरण देना अप्रासंगिक न होगा।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के अवसर पर आर्य साहित्य अकादमी, दिल्ली ने 'सम्राट्' नामक मासिक पत्रिका निकालनी आरम्भ की जिसके अब तक छः अंक निकल चुके हैं। यह पत्रिका उक्त दोषों से सर्वथा नहीं तो लगभग मुक्त अवश्य है और शायद इसी कारण आर्यसमाज के हर वर्ग ने उसकी प्रशंसा की है। लेकिन विचारशील पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि प्रत्येक दृष्टि से बेजोड़ और प्रशंसनीय 'सम्राट्' को अजमेर में एकत्रित लाखों की भीड़ में केवल ग्यारह वार्षिक ग्राहक मिल सके जबकि अनुमान कम से कम पांच सौ ग्राहकों का लगाया गया था। शताब्दी समारोह में इसकी केवल अस्सी प्रतियां अर्थात् प्रतिदिन की केवल बीस प्रतियां विद्वानों को सादर भेंट की गई, और लगभग इतनी ही प्रतियां प्रचारार्थ मित्रों-परिचितों में निःशुल्क बांटी गई। कुल मिलाकर नतीजा यह निकला कि स्टाल किराया कठिनता से चुकाया गया, दिल्ली से अजमेर का मार्ग व्यय भोजन व चायपान का खर्च भविष्य के लिए छोड़ दिया गया। पिछले छः महीनों में 'सम्राट्' की ग्राहक संख्या सौ से ऊपर नहीं पहुंच सकी है और उसकी आधे से अधिक प्रतियां नमूने के रूप में भेजी जा रही हैं। एक अंक पर लगभग ढाई हजार का खर्चा आ रहा है किन्तु आमदनी न के बराबर है।

विचारशील पाठक विचार करें कि यह स्थिति क्या किसी भी आर्य समाज या आर्यसमाजी के लिए गौरवपूर्ण बात मानी जा सकती है? अकेले 'सम्राट्' ही नहीं बल्कि आर्यसमाज की लगभग प्रत्येक पत्रिका इस दयनीय दशा से गुजर रही है।

जिन लोगों को पत्रिका निकालने का अनुभव है, वे जानते हैं कि पत्रिका का प्रकाशन कितना व्यय-साध्य समय-साध्य और श्रम-साध्य कार्य है। सम्राट् के बारे में विशेष बात यह है कि बीस-पच्चीस लोगों के आर्थिक अनुदान से इसे निकाला जा रहा है और विचित्र बात यह है कि इन सहयोगियों में आधे से अधिक ऐसे हैं जो आर्य समाजी नहीं हैं। स्पष्ट है कि सम्राट् के प्रति जिस प्रकार की उदासीनता आर्यसमाज, शिक्षण संस्थाएं और आर्य परिवार दिखा रहे हैं उस से ये गैर आर्यसमाजी सहयोगी भी हताश हैं, सकते में आ गए हैं कि सम्राट् को अच्छे आकार-प्रकार; सुन्दर साज-सज्जा; शुद्ध मुद्रण, सामयिक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक सामग्री से भरपूर बनाने पर भी अपेक्षित ग्राहक संख्या क्यों नहीं मिल रही है?

सम्राट् को इस ध्येय से निकाला गया है कि आर्यसमाज की विचारधारा और ऋषिवर दयानन्द की कीर्ति को उन लोगों तक पहुंचाया जा सके जो 'सरिता' सरीखी कुख्यात पत्रिका हाथ में लेकर हर्षातिरेक का शिकार हो बैठते हैं और भारतीय मनीषा को जड़मूल से उखाड़ फेंकने के लिए कमर कस लेते हैं। किन्तु अफसोस! आर्यजन इस भावना को समझ नहीं रहे हैं और सम्राट् उनकी उपेक्षा का शिकार बन रहा है। हम समझने में असमर्थ हैं कि सम्राट् सरीखी सुन्दर पत्रिका के लिए ७ पैसे प्रतिदिन व्यय करने में किसी को क्या संकोच हो सकता है?

कोई भी सहृदय आर्यसमाजी यह नहीं चाहेगा कि एक अच्छी पत्रिका का प्रकाशन इस कारण बन्द हो जाए कि उसे आर्यसमाजियों की उदासीनता, मुफ्तखोरी, अरुचि या स्वाध्याय की कमी का शिकार होना पड़ा। सम्राट् जैसी सर्वांग सुन्दर पत्रिका यदि आर्यसमाज के हाथ से निकल गई तो निश्चय ही हमें उसके लिए पछताना पड़ेगा। यह आर्य समाज का सौभाग्य है कि उसे अनायास ही सम्राट् सरीखी अनुपम पत्रिका मिल गई है जिसकी चर्चा आर्यसमाज में ही नही बाहर के क्षेत्रों में भी होने लगी हैं। पाठक महानुभावों से मेरी प्रार्थना है कि वे शीघ्र ही सम्पादक सम्राट् ७११७ पहाड़ी धीरज, दिल्ली—११०००६ के पास २५ रुपये मनीआर्डर द्वारा भेजकर इसका ग्राहक बनें। इतना ही नहीं बल्कि उन्हें यह भी प्रयास करना चाहिये कि अपनी आर्यसमाज और अपने मित्रों-सम्बन्धियों को भी इसका वार्षिक ग्राहक बनाए। आपके इस सहयोग से सम्राट् को शक्ति मिलेगी, गति मिलेगी और यह 'सरिता' सरीखी पत्रिका और धर्म एवं राष्ट्र विरोधी तत्त्वों को निर्णायक टक्कर देने में समर्थ और सफल होगा।

आशा है सुधीजन पाठक मेरी इस प्रार्थना को केवल शब्दाडम्बर न समझकर इसके मर्म को समझेंगे और पच्चीस रुपये का क्षणिक लोभ न कर शीघ्र ही अपना वार्षिक शुल्क भेजने का सौजन्य दिखायेंगे जिससे सम्राट् अपने उद्देश्य को प्राप्त करते हुए आर्यसमाज की गरिमा को बढ़ा सके और इसके प्रकाशकों का उत्साहवर्द्धन हो।

सभा की रसीद गुम होने की सूचना

मैं आर्यसमाज लोहारू के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित ११ से १३ मई में हुआ था। वहां से मेरा सामान चोरी हो गया है उसी में सभा की रसीद बुक भी थी जिसका नम्बर ११५०१ से शुरु होता था। वह ११५०१ से ११५६७ तक कटी हुई है। उसके बाद की खाली है। जिसे भी मिले निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

सुरेशकुमार शास्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा;
दयानन्द मठ रोहतक

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्य वीर दल के शिविर में आर्यसमाज अजमेर के ११ आर्य नवयुवक

राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में माऊण्ट आबू पर आयोजित होने वाले राजस्थान एवं गुजरात प्रांतीय शिविर में आर्यसमाज अजमेर की ओर से ११ आर्य युवकों को प्रशिक्षण हेतु भेजा गया है। यह शिविर १५ मई से १५ जून ८४ तक एक मास के लिए आयोजित है।

स्व० रमेशचन्द्र के निधन पर शोक सभा

हिन्द समाचार समूह के प्रधान संपादक; प्रख्यात आर्यनेता एवं पंजाब के जाने माने राष्ट्रवादी तथा निर्भीक पत्रकार, 'पंजाब केसरी' के प्रधान सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी के निधन पर आर्यसमाज अजमेर के साप्ताहिक सत्संग के बाद एक शोक सभा आयोजित की गई जिसमें विभिन्न वक्ताओं ने दिवंगत आत्मा को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए राष्ट्रद्रोही आंतकवादियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही करने के लिये केन्द्र सरकार व पंजाब सरकार से मांग की है।

आचार्य गोविन्दसिंह
उपमन्त्री आर्यसमाज अजमेर

आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक का प्रस्ताव

१३-५-८४ को आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक के वार्षिकोत्सवके उपलक्ष्य में भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष प्रो० बलराज की अध्यक्षता में आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक का राष्ट्रीय एकता सम्मेलन पंजाब के हिन्दू नेता व पंजाब केसरी के यशस्वी सम्पादक श्री रमेशचन्द्र जी की हत्या पर गहरा शोक प्रकट करता है। यह सम्मेलन उन उग्रवादियों की घोर निन्दा करता है जो पंजाब में हिंसा का वातावरण बना रहे हैं। यह सम्मेलन भारत सरकार की भी आलोचना करता है जो पंजाब में हिंसा के वातावरण को रोक नहीं पा रही। देश में कानून व्यवस्था को बनाये रखने का उत्तरदायित्व सरकार पर है और सरकार अपने उस दायित्व को पूरा करने में असमर्थ रही है। श्री रमेशचन्द्र जी की हत्या कमजोरी का प्रमाण है।

यह सम्मेलन अपने प्रिय नेता श्री रमेशचन्द्र के प्रति अपनी विनम्र श्रद्धांजलि व्यक्त करता है।

गुरुदत्त
मन्त्री आर्यसमाज प्रधाना मोहल्ला रोहतक

वैद्य भरतसिंह आर्य की पत्नी का निधन

रोहतक के प्रमुख आर्य नेता वैद्य भरतसिंह आर्य की धर्मपत्नी का लम्बी बिमारी के पश्चात् २१ मई को निधन हो गया। उनकी आयु ५८ वर्ष थी। वे बहुत ही धार्मिक, सेवा भावी देवी थी। उनकी अन्त्येष्टि में रोहतक नगर के गणमान्य नेता उपस्थित हुए। अन्त्येष्टि संस्कार सभा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी तथा आचार्य प्रेस के संचालक आचार्य वेदव्रत शास्त्री ने पूर्ण वैदिक रीति से करवाया।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर का हिसाब किया जा रहा है। अतः जिन आर्यसमाजों अथवा कार्यकर्त्ताओं के पास शताब्दी समारोह के लिए धन संग्रह की रसीद बुकें अब पड़ी हैं उन्हें तुरन्त सभा कार्यालय दयानन्दमठ रोहतक में अथवा स्वामी ओमानन्द जी महाराज के पास जमा करवाने का कष्ट करें।

सभा मन्त्री

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान् जी, सेवा में निवेदन है जब से स्वामी ओमानन्द जी के कारावबन्दी लेख प्रारम्भ हुए हैं तब से आपका साप्ताहिक समाचार पत्र पढ़ने के काबिल हो गया है। इसलिए उच्चकोटि के लेख वास्तव में प्रशसनीय होते हैं। डा० रणजीतसिंह का आप्रेशन सफल हुआ। इस लिये मैं उनको बधाई देता हूँ। आपके समाचार पत्र के बिकने के बारे में मुझे बड़ी खुशी है। सभी लेख पढ़नीय होते हैं। आशा है कि आपके सम्पादकत्व में यह पत्र लगातार तरक्की करता रहेगा। इसके पाठक बढ़ते रहेंगे।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

अन्य राज्यों को जाने वाला पानी तथा बिजली रोकेंगे

अकाली दल के प्रधान सन्त हरचरणसिंह की धमकी

अमृतसर २३ मई-अकाली दल ने अपनी राजनैतिक और धार्मिक मांगों के समर्थन में अपने २२ मास पुराने आन्दोलन को तेज करने आगामी ३ जून से असहयोग आन्दोलन शुरु करने का निर्णय किया है। आन्दोलन के प्रथम चरण में किसानों से कहा जायेगा कि वे पानी का आबियाना और भूराजस्व अदा न करें। दल के कार्यकर्त्ता अन्य राज्यों को अनाज का निर्यात भी रोकेंगे। सन्त लोंगोवाल ने यह भी धमकी दी है कि अकालियों की मांगें पूरी न की गई तो दूसरे चरण में पार्टी कार्य-कर्त्ता पंजाब से जाने वाली अन्य राज्यों को बिजली तथा नहरी पानी के बहाव को रोकेंगे।

विवाह शादियों में फिजूलखर्ची रोकने की पंचायतें

विवाह शादियों के अवसर पर फिजूल खर्ची रोकने के लिए हरयाणा प्रदेश में आजकल ग्रामों में पंचायतें हो रही हैं। इसी उद्देश्य से २० मई को धनखड़ खाप की एक पंचायत ग्राम ढाकला में सम्पन्न हुई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने ग्रामीण जनता से अपील करते हुए कहा कि इस मंहगाई के युग में विवाह शादी के अवसरों पर ५ से बाराती तथा १ रुपये का लेन देन प्रारम्भ करें। शराब, बाजा तथा अन्य फिजूल खर्च से दूर रहें। पंचायत के नियमों को लागू करवाने के लिए एक कार्यकारिणी के गठन का सुझाव दिया। इसी प्रकार की एक पंचायत २१ अप्रैल को कादयान खाप तथा सतगावां खाप की एक पंचायत बेरी में भी हो चुकी है।

दीपचन्द आर्य

भारतीय जनसंचार संस्थान का हिन्दी पत्रकारिता पाठ्यक्रम

नई दिल्ली, मई। भारतीय जनसंचार संस्थान २६ जून से ६ जुलाई १९८४ तक उन युवा स्नातकों के लिए हिन्दी पत्रकारिता पाठ्यक्रम कर रहा है, जो किसी न किसी रूप में पिछले तीन वर्षों से पत्रकारिता से जुड़े हुये हैं या जिन्होंने पत्रकारिता की कोई उपाधि या प्रमाण पत्र लिया है। इस पाठ्यक्रम में दैनिक समाचारपत्रों के लिए सम्पादन और रिपोटिंग करने पर बल दिया जायेगा। संस्थान के पास आवास नहीं है। अतः आवास और भोजन की व्यवस्था स्वयं प्रशिक्षु को करनी है। सनी आर्डर अनुभाग अधिकारी (लेखा) के नाम भेजें। जबकि दिल्ली में भुगतान योग्य बैंक ड्राफ्ट पर केवल "भारतीय जन संचार संस्थान" लिखें। शुल्क (२०० रुपया) का ड्राफ्ट और अर्जी रजिस्ट्रार के नाम २ जून तक भेजनी है। ब्यौरे के लिये डा० रामजीलाल जांगिड, पाठ्यक्रम निदेशक, भारतीय जन संचार संस्थान, डी—१३, साउथ एक्सटेंशन भाग-२, नई दिल्ली से सम्पर्क करें।

गऊ माता की रक्षा करो

गऊ को भी माता के नाम से पुकारा गया है। माता तीन प्रकार की होती हैं। एक माता वह जो जन्म देती है दूसरी धरती माता तीसरी गऊ को भी माता कहते हैं। जब आर्यों का भूमन्डल पर चक्रवर्ती राज्य था; तब आर्य लोग इसकी पूजा करते थे और इसकी रक्षा करते थे इस का दूध पीते थे। आर्यावर्त देश में इसी के दूध से बलवान् व बुद्धिवान् होते थे। हर व्यक्ति अपने नियम धर्म में बन्धा हुआ था। इसी के घी से यज्ञ हवन किया करते थे। देश के अन्दर बिमारी का नाम तक न था। हवन से समय पर वर्षा होती थी। आर्यावर्त देश की देवियाँ भी बलवान होती थी। अपने पतिव्रत धर्म का पालन करती थी युद्धभूमि में जाकर दुश्मन का लहू पिया करती थी, परन्तु आपस की फूट से देश गुलाम हुआ। गऊ की पूजा छूट गई इस जगह पर भैंस पशु का प्रयोग हुआ। और इसके दूध से हमारी बुद्धि ने भी काम करना कम कर दिया। भैंस हमारे देश का पशु नहीं है यह पशु मिश्र देश का है। जबसे मुस्लिम राज्य आया तब से भैंस के दूध का प्रयोग हुआ। इससे पहले भैंस तक का नाम नहीं था और इसी का दूध पीने से हमारे में द्वेष बढ़ गया भाई भाई को देखना नहीं चाहते। इसका कारण यही है कि हमने गऊ की रक्षा व इसका दूध पीना कम कर दिया। अब आपको भैंस व गऊ के दूध की परीक्षा करवाते हैं। देखिए भैंस का दूध भारीपन पर होता है जो शरीर के अन्दर सुस्ती पैदा करता है, शरीर में आलस्य पैदा हो जाता है। बुद्धि काम करना कम कर देती है। अब देखिए इसके झोटों को दो या तीन को एक ही जगह पर बान्धिये वे आपस में लड़ना व झोड़ना शुरु कर देते हैं। पांच मिनट भी एक जगह पर नहीं ठहर पाते और भैंस के सामने इसके झोटों पर किसी तरह का कोई हमला कर देवे तो यह अपने झोटों की रक्षा नहीं कर पाती है। ये सारा भैंस के दूध का परिणाम है।

अब देखिए गऊ का दूध पीने में हल्का और स्वादिष्ट होता है जो आपस में प्रेम भाव पैदा करता है। अब इसके बछड़े को चाहे कितनों को ही एक जगह पर बान्धिए ये आपस में प्रेम करना शुरु कर देते हैं और इसके बछड़ों पर हमला तो करके देखो यह विकराल रूप से शत्रु पर हमला कर देगी जब तक इसमें प्राण और जीवन है तब तक यह अपने बछड़े पर किसी प्रकार का हमला नहीं होने देगी। ये सारा गऊ के दूध का असर है। प्रिय आर्य वीरो गऊओं को भारी से भारी तादाद में पालना शुरु करो अगर आपने अपने बच्चों को बुद्धिवान् व बलवान् बनाना है। तुम आर्यावर्त देश के निवासी हो। इसी आर्यावर्त देश में कृष्ण जी भी गऊओं को चराते थे और इनकी रक्षा करते थे। उस समय आबादी ३२ करोड़ की थी और ९६ करोड़ गऊ थी। प्रत्येक के हिस्से तीन गऊ दूध पीने के लिए आती थी। फाहियान ने भी अपनी पुस्तक में लिखा है कि आर्यावर्त देश में दूध की प्याऊ लगती है। इस देश में घी दूध आदि खूब खाते पीते थे और ब्रह्मचर्य का पालन करके अपने देश को और धर्म की रक्षा करते थे। आज भी अगर तुम उसी प्रकार गऊ के घी व दूध से ब्रह्मचर्य का पालन करें तो भीमबली जैसे योद्धा बन सकते हैं। प्रिय मित्रगणों गऊ की सेवा करो।

मामचन्द आर्य
मन्त्री आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला

ग्रामीण वैदिक यज्ञ प्रचार समिति का गठन

नागदा जंक्शन निकटस्थ ग्राम बड़ा चिराला में दिनांक ७ मई ८४ को सम्पन्न यजुर्वेद महायज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर ग्रामीण वैदिक यज्ञ प्रचार समिति का गठन किया गया। समिति के संयोजक श्री सेवाराम जी आर्य उपप्रधान आर्यसमाज नागदा ने बताया कि आर्यसमाज को अपने प्रचार के लिए अब शहर से गांवों की ओर बढ़ना चाहिए। समाज में व्याप्त अन्धविश्वास रूढ़िवाद तथा जात-पात और ऊंच-नीच की भावना को समाप्त कर वैदिक समाजवाद का रास्ता आर्यसमाज ही दिखा सकता है। गांव की धर्मप्राण जनता को धोखेबाज लोग धर्म के नाम पर छल-कपट और तरह के डर भय दिखाकर लूट रहे हैं। देश की समस्त आर्यसमाजों को चाहिए कि अपने आसपास के गांव में जाकर वेदप्रचार करें। शहरों में बड़े बड़े उत्सव और जलसे करने की बजाय आर्यसमाज को अपना प्रचार कार्य गांवों में मिशन की भावना से करना होगा। तभी महर्षि दयानन्द का दिव्य स्वप्न साकार होगा। ज्ञातव्य है कि समिति संयोजक श्री सेवाराम जी आर्य गांवों में वेदप्रचार का कार्य पिछले काफी वर्ष से कर रहे हैं। उन्हीं की प्रेरणा पर ५ मई से ७ मई को चिरोली में ८-९ को खरमोद खुर्द में, १० से १२ को मेरखा में, १३ से १५ को आकया में, १७ से १९ को धिनोदा में, २१ से २३ को भौलाना में, २४ से २६ को चिकली में, २९-३० मई उन्हेल में यजुर्वेद महायज्ञ का आयोजन किया गया है। हमने प्रेरणा लेकर आर्य तथा आर्य समाजों को ग्रामों में वैदिक यज्ञ का आयोजन कर वेदप्रचार करना चाहिये।

मन्त्री आर्यसमाज नागदा

इस रम में क्या रखा है,
तू झूम प्यार की मस्ती में

—उपेन्द्र कुमार 'शचि'

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल खुशी की बस्ती में॥

वहां नफरत है वहां गाली है,
वहां धोखा है, वहां गाली है।
जीवन दायिनी जिसे मानता,
वही जहर की प्याली है॥

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल खुशी की बस्ती में॥

शराब पियेगा तुझमें क्या दम,
वह तो तुमको पीती है।
प्रेम स्नेह सभी की दुश्मन,
सारे पापों की चहेती है॥

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल खुशी की बस्ती में॥

नाली में पड़ा भी टर्राता,
क्या तू अच्छा लगता होगा?
हर पल गम की दुनिया में खोया,
कैसा लगता होगा?

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल खुशी की बस्ती में॥

सुन इन बेचारों की चीखें,
बापू बापू चिल्लाते हैं।
पानी न पिया है पत्नी ने,
देख अधर मुरझाते हैं।

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल खुशी की बस्ती में॥

मयखाने को छोड़ चला आ,
तेरे बच्चे तुझे बुलाते हैं।
माता-पिता बहन औ पत्नी,
सब तुझको राह दिखाते हैं।

इस रम में क्या रखा है, तू झूम प्यार की मस्ती में।
इसके गम में क्या रखा है, तू मचल प्यार की बस्ती में॥

(मद्य-निषेध से साभार)

सौ वर्ष से पहले की बात

एक दिन सुखवासी लाल साध स्वामी दयानन्द सरस्वती के लिए कढ़ी और भात बनवाकर लाया। स्वामी जी ने प्रसन्नता पूर्वक साध द्वारा लाए गए भोजन को ग्रहण किया। ब्राह्मण लोग साध सम्प्रदाय के अनुयायियों को पतित और नीच समझते थे। ब्राह्मणों ने स्वामी जी से कहा—कि आप भ्रष्ट हो गए, क्योंकि आपने साध के घर का और हाथ से छुआ भोजन कर लिया। यह बात सुनकर मुस्कराते हुए स्वामी जी ने उत्तर दिया कि भोजन दो प्रकार से भ्रष्ट होता है। एक तो यदि किसी को दुःख देकर भोजन के लिए द्रव्य प्राप्त किया जाए और उससे अन्न आदि खरीदकर भोजन बनाया जाए। दूसरे भोजन में कोई मलिन वस्तु गिर जाए।

साध लोगों का परिश्रम का पैसा और उसमें कोई मलिन वस्तु भी नहीं पड़ी। अतः उनका भोजन पवित्र है और इस प्रकार के भोजन करने से कोई भी भ्रष्ट नहीं होता।

भोजन के विषय में स्वामी जी से सम्बन्धित एक अन्य घटना इस प्रकार है कि एक दिन एक नाई अपने घर से स्वामी जी के लिए भोजन बनाकर लाया। इस भोजन को स्वामी जी ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इस पर लोगों ने उनसे कहा—स्वामी जी यह तो नाई की रोटी हैं, इस भोजन को करके आप भ्रष्ट हो गए। स्वामी जी ने तत्काल उत्तर दिया यह रोटी नाई की नहीं अपितु गेहूं की है। आप लोग भी गेहूं की रोटी खाते हैं। इस उत्तर को सुनकर लोग अवाक् रह गए। जिस समय स्वामी जी ने ये विचार प्रकट किए थे, उस समय हिन्दुओं में सर्वत्र छूत-छात और ऊंच-नीच का भेद भाव नस-नस में समाया हुआ था।

परणजोतसिंह सभा मन्त्री

सारी धरती आर्य बनाएंगे

राधेश्याम 'आर्य' विद्यावाचस्पति मुसाफिरखाना सुलतानपुर

आर्य पुत्र हम सारी धरती आर्य बनाएंगे।
ऋषि दयानन्द के पदचिन्हों पर स्वय चलगे, विश्व चलाएंगे॥

गूंजेंगी फिर से धरती पर,
वेदों की मधुर ऋचाएं।
सामगान की स्वरलहरी से,
गूंजित गिरि मालाएं।

भू-पर डंका वेदों का, हम पुनः बजाएंगे।
ऋषि दयानन्द के पदचिन्हों पर……॥

दम्भ द्वेष मिथ्या हिंसा का
भागे घना अन्धेरा।
शान्ति सफलता शुचिता का,
फिर आए नवल सबेरा॥

वैदिक धर्म ध्वजा, अम्बर में हम फहराएंगे।
ऋषि दयानन्द के पदचिन्हों पर…………॥

वर्णाश्रम का पालन हो,
अज्ञान — अविद्या छूटे।
आज विषमताओं का बन्धन—
जन-जन कटिका टूटे।

प्रणव निनाद ध्वनि पर, नभ में, पुनः गुंजाएंगे।
ऋषि दयानन्द के पद चिन्हों पर……―……॥

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से मुद्रित होकर सर्वहितकारी कार्यालय पं॰ जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 सृष्टि संवत् १,९६,०८,५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २६ ७ जून १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

अकालियों ने यदि हरयाणा की बिजली, पानी रोका तो हरयाणावासी भी पंजाब में जाने वाले पैट्रोल, डीजल, कोयला लोहा आदि १५ जून से रोक देंगे।

२ जून को रोहतक में हरयाणा रक्षा वाहिनी की बैठक के महत्त्वपूर्ण निश्चय

रोहतक २ जून (कार्यालय संवाददाता द्वारा) आज यहां दयानन्द मठ में हरयाणा रक्षा वाहिनी की प्रातः दस बजे एक हंगामी बैठक प्रो० शेरसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में हरयाणा के कोने-कोने से जिन प्रमुख कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया, उनके नाम इस प्रकार हैं—

१–प्रिंसिपल नित्यानन्द जी सिरसा, २–महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्दमठ रोहतक, ३—श्री प्रतापसिंह शास्त्री जीन्द, ४– मा. तेगराम पूर्व विधायक अबोहर (पंजाब), ५—स्वामी धर्मानन्द जसराना, ६—ब्रह्मचारी धर्मदेव रोहतक, ७—श्री रामचन्द शास्त्री सोनीपत, ८—चौ: निहालचन्द उपप्रधान आर्य प्रादेशिक उपसभा हरयाणा, ९—चौ: हरस्वरूप बूरा पूर्व विधायक महम चौबीसी, १०—श्री धर्मचन्द विद्यालंकार पलवल, ११—श्री सुखवीरसिंह आर्य बल्लबगढ जिला फरीदाबाद, १२–मा० लालमणि आर्य टटेसर (दिल्ली) १३—श्री भरतसिंह दूबलधन १४—प्रिंसिपल गुगनसिंह मोखरा, १५—प्रो० सत्यवीरसिंह विद्यालंकार हिसार, १६—चौधरी धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक पानीपत जि. करनाल १७—आचार्य वेदव्रत शास्त्री रोहतक, १८—श्री रत्नसिंह आर्य प्रचारक १९—श्री रतनप्रकाश आर्य महम, २०—श्री अर्जुनदेव आर्य उपदेशक दहकोरा, २१—चौ: दरयावसिंह पूर्व पंचायत अधिकारी, २२—श्री सुरेश कुमार शास्त्री कालका (जिला अम्बाला, २३– मिस्त्री रामबक्स स्वतन्त्रता सेनानी गोहाना, २४–मुन्शीराम भजनोपदेशक जहांगीरपुर, २५–श्री दरयावसिंह लडवाल मन्त्री आर्यसमाज झज्जर रोड रोहतक, २६—म० बनवारीलाल आर्य डेरी मोहल्ला रोहतक, २७—जयदेवसिंह मन्त्री आर्यसमाज आसन, २८—डा० स्वरूपसिंह बलियाना, २९—मा. दीपचन्द प्रधान आर्यसमाज कासनी, ३०—श्री बलवानसिंह आर्य नरवाना आदि ने भाग लिया।

बैठक की कार्यवाही आरम्भ करते हुए हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने वर्तमान परिस्थितियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए बताया कि उग्रवादी अकालियों ने हिंसा, लूटमार, आगजनी से पंजाब में भयंकर आतंकवाद फैला रखा है और वे इस प्रकार भारत सरकार पर दबाव डालकर अपनी अनुचित तथा हरयाणा विरोधी मांगें मनवाना चाहते हैं। पंजाब में शासन नाममात्र का रह गया है। प्रमुख नेताओं की हत्यायें जारी हैं। साधारण जनता भयभीत है। भारत सरकार शान्ति स्थापित करने के लिए अकाली नेताओं से बार बार समझौता करने की अपील करके कमजोरी दिखा रही है। इस प्रकार उग्रवादियों को प्रोत्साहन मिल रहा है। यदि इस हिंसात्मक वातावरण में उनसे समझौता कर भी लिया गया तो कोई गारन्टी नहीं कि वे उस पर स्थिर रहें क्योंकि वे पूर्व किये गये समझौतों से मुकर चुके हैं। अतः हम हरयाणावासियों को सामूहिक रूप में उनकी मांगों का विरोध करने के लिए ठोस पग उठाना चाहिए अन्यथा समझौता करते समय हरयाणा के हितों की उपेक्षा हो सकती है।

प्रो० शेरसिंह के प्रस्ताव का समर्थन चौ: निहालचन्द, चौधरी हरस्वरूप बूरा: प्रिंसिपल नित्यानन्द, श्री सुखवीरसिंह आर्य, श्री रामचंद आर्य, चौधरी धर्मसिंह राठी, मा० तेगराम आदि नेताओं ने किया।

उपस्थित सभी कार्यकर्त्ताओं ने भी हरयाणा के हितों की रक्षा के लिए तन, मन तथा धन से सहयोग करने का विश्वास दिलाया।

विचार विमर्श के पश्चात् निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए—

१—श्री रमेशचन्द्र जी प्रधान सम्पादक, पंजाब केसरी, ज्ञानी प्रतापसिंह तथा अम्बाला और पंजाब में आतंकवादियो द्वारा कतल किये गये सभी लोगो को अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारों के लिए संवेदना प्रकट करती हैं। सरकार से मांग करते हैं कि आतंकवादियो द्वारा सभी मारे जाने वाले लोगों के परिवारों को मुआवजा दिया जाये।

२—मई के पहले सप्ताह में रोपड़ बिजली घर के लिए पानी देने का जो फैसला हरयाणा, पंजाब और राजस्थान सरकारों ने किया है। वह हरयाणा के हितो के खिलाफ है। नहर की खुदाई के कामों को तेजी से चलाने तथा रोपड़ फिरोजपुर, हरीके के हैडवर्क्स का नियन्त्रण का भाखड़ा व्यास प्रबन्ध बोर्ड को सौंपे बिना पंजाब के साथ कोई फैसला नही करना चाहिये था। उस फैसले में आनन्दपुर साहब तथा रोपड़ बिजली परियोजनाओं के लिए वहन किया है उसी अनुपात से बिजली पानी उसे दिया जाये।

अकालियों ने ३ जून से हरयाणा का पानी और बिजली बन्द करने के लिए अपने कार्यक्रम मे निर्णय किया है। यदि हरयाणा का पानी व बिजली रोके गये तो पंजाब में जाने वाले पैट्रोल, डिजल, कोयला, लोहा इत्यादि हरयाणा के लोग १५ जून से हरयाणा क्षेत्र में से नहीं जाने देंगे और साथ ही पंजाब से आने वाले वाहनों को भी रोका जायेगा।

३— २९ जनवरी १९७० का प्रधानमन्त्री का निर्णय जिसके अनुसार फाजिल्का, अबोहर हरयाणा को दिया गया था, तुरन्त लागू किया जाय। पंजाब को चण्डीगढ किसी हालत मे नहीं दिया जाना चाहिये। यदि फाजिल्का अबोहर के सम्बन्ध में फैसले को बदलने का प्रयास किया गया तो हरयाणा के लोग उसका जोरदार प्रतिकार करेंगे।

४—आतंकवादियों को राष्ट्र विरोधी और कतले आम की घृणित कार्यवाहियों की, यह बैठक घोर निन्दा करती है। सरकार से अनुरोध करती है कि उग्रवादियों को स्वर्ण मन्दिर से निकाला जाये और अर्द्ध फौजी (पैरा मिल्टिरी) संघठनों बी. एस. एफ. तथा सी. आर. पी. एफ. को खुली छुट्टी दी जाये ताकि वे इन राष्ट्र विरोधी तथा समाज विरोधी तत्वों का सफाया कर सके।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

शराब से सर्वनाश

शिवाजी की विशाल सेना

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

राज्य स्थापन के आरम्भ में शिवाजी के आधीन एक सहस्र अथवा १२०० पंदल सैनिक और दो हजार घुड़सवार थे। फिर सैन्यदल बढ़ते-बढ़ते उनके जीवन के अन्तिम काल तक निम्नलिखित संख्या तक पहुंच गया था—

४५ हजार पदाति=पैदल सेना २९ दलों में २९ सेनापतियों के आधीन।

६० हजार घुड़सवार ३१ सेनापतियों के आधीन।

१ लाख मावले सैनिक ३६ सेनापतियों के आधीन।

शिवाजी के पास अपने निज के १२६० हाथी, ३ हजार ऊंट और ३७ हजार घोड़े थे। शिवाजी इस विशाल सेना के शौर्य के कारण एक वैभवशाली विशाल साम्राज्य का स्वामी बना। शिवाजी के कीर्ति-प्रकाश से भारत का गगन-मण्डल उज्ज्वल हो उठा था। उत्तर और दक्षिण भारत का चक्रवर्ती सम्राट् शहंशाह औरंगजेब अतुल ऐश्वर्य और विपुल सैन्यबल का अधिकारी होते हुए भी बीजापुर के एक साधारण जागीरदार शाह जी के इस त्याज्य पुत्र शिवाजी को किसी प्रकार नहीं दबा सका। जब औरंगजेब को अपनी हार के समाचार मिलते, तो उसे सुनकर निरुपाय हो चुप रह जाता था। एकान्त में जाकर अपने विश्वस्त मन्त्रियों से पूछता कि शिवाजी को दबाने के लिए अब किस सेनापति को भेजा जाये? प्रायः सभी महारथी तो दक्षिण से हारकर लौट आये। वह बड़ा दुःखी और विवश था। शिवाजी की याद औरंगजेब को जीवनभर कांटे के समान चुभती रही। मरने से पहले बादशाह ने अपने लड़के को जो अन्तिम उपदेश दिया था, उसमें लिखा था—"देश की सब खबरें रखना, यह राज काज का सबसे बड़ा अङ्ग है। एक क्षण की उपेक्षा जीवनभर मन को कष्ट देती रहती है। देखो इसी उपेक्षा के कारण अभागा शिवाजी हमारे हाथ से निकल गया, उसी का परिणाम यह है कि हमको मरते दम तक यह परिश्रम और अशान्ति भोगनी पड़ी।'

अपनी आश्चर्यजनक सफलता और अतुल प्रसिद्धि से मण्डित हो शिवाजी उस युग में समूचे भारतवर्ष के हिन्दुओं की दृष्टि में एक नवीन आशापूर्ण नक्षत्र के समान देख पड़े थे। केवल वही एक ऐसा व्यक्ति था जो हिन्दुओं की जाति, गौ माता, तिलक, चोटी, जनेऊ तथा धर्म का रक्षक था। सब लोग उन्हीं की ओर आशा की टकटकी लगाये देखते थे। उन्हीं के नाम पर समग्र आर्यजाति गर्व से अपना सिर ऊंचा कर सकती थी।

इस प्रसंग में भूषण कवि ने यथोचित ही कहा था—

राखी हिन्दुवानी, हिन्दुवान के तिलक राख्यो,
स्मृति पुरान राखे, बेद-विधि सुनी मैं,
राखी रजपूती, रजधानी राखी राजन की,
धरा में धरम राख्यो गुन राख्यो गुनी मैं।
भूषन सुकवि जीति हद्द मरहट्टन की,
देस—देश की कीरति बखानी तब सुनी मैं।
साह के सपूत सिवराज, समसेर तेरी,
दिल्ली दल दाबिकै दिवाल राखी दुनी मैं॥

एक साधारण जमींदार का पुत्र अपने उच्च चरित्र के कारण ही इतना यशस्वी और विशाल साम्राज्य का स्वामी बना।

शिवाजी का चरित्र

शिवाजी का चरित्र अनेक गुणों से भरा था। उनकी मातृभक्ति सन्तान प्रीति, इन्द्रियनिग्रह, धर्मानुराग, साधु सन्तों के प्रति भक्ति विलासी जीवन से घृणा, श्रमशीलता और सब सम्प्रदायों के ऊपर उदारभाव उस युग के किसी राजवंश में हो नहीं, अनेक गृहस्थों के घरों में भी अतुलनीय था। वे अपने राज्य की सारी शक्ति लगाकर स्त्रियों के सतीत्व की रक्षा करते थे और अपनी सेना की उद्दण्डता का दमन करके सब धर्मों के उपासनागृहों और शास्त्रों के प्रति सम्मानादि और साधु-सन्तों का पालन-पोषण करते थे। वे निष्ठावान् भक्त हिन्दू थे। भजन, कीर्तन सुनने के लिये अधीर रहते थे। गौ ब्राह्मण के प्रतिपालक और साधु सन्यासियों की पद-सेवा में संलग्न रहते थे।

मुसलमान इतिहासकार खाफीखां ने भी शिवाजी के सच्चरित्र में पर स्त्री को माता के समान मानना, दया, दाक्षिण्य और सब धर्मों को समान प्रतिष्ठा से देखना आदि दुर्लभ गुणों की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है। वैसे तो शिवाजी निरक्षर, गवार बालक था, उसने गुणों के कारण कितनी साधारण साधन सामग्री लेकर चारों ओर के कैसे भिन्न-भिन्न प्रतापी शत्रुओं से लड़कर अपने को साथ ही साथ उस मराठा जाति के स्वाधीनता के आसन पर बैठाया था, यह कहानी भारत के इतिहास में अमर रहेगी। किन्तु शिवाजी आंख मूंदते ही उसका यह विशाल साम्राज्य कैसे छिन्न-भिन्न हो गया, यह कथा अब आपको बतानी है।

शिवाजी की सन्तान

शिवाजी के जीवन काल में उसके राज्य की बहुत सुन्दर व्यवस्था थी और प्रजा भी खूब सुख सम्पन्न थी। किन्तु शिवाजी के स्वर्ग सिधारते ही विशाल मराठा साम्राज्य चूर-चूर हो गया और साथ ही प्रजा की भी दुर्गति हो गई। योग्य शासक का अभाव तथा अच्छे प्रतिनिधि का न मिलना ही इसका मुख्य कारण था।

अपने बड़े लड़के की दुश्चरित्रता एवं दुर्बुद्धि की बात सोचकर शिवाजी अपने राज्य और वंश के भविष्यत् के सम्बन्ध में बहुत हताश हो गये थे। उनके उपदेशों और मीठी बातों का कुछ भी फल न हुआ। शिवाजी ने अपने पुत्र को अपने विशाल राज्य के सब महल, किले, धन, भण्डार, हाथी, घोड़े तथा सेना की सूची दिखाई और सज्जन व उच्चाकांक्षी राजा बनने के लिए उसे अनेक उपदेश दिए। शम्भू जी ने अपने पिता की बातें चुपचाप सुनी और अन्त में कहा—"आपकी जैसी इच्छा है, वही हो।" अपनी मृत्यु के पश्चात् महाराष्ट्र राज्य की क्या दशा होगी, यह बात शिवाजी को स्पष्ट दिखाई दे गई थी। इसी दुर्भावना और चिन्ता ने उनके आयु का ह्रास किया। शम्भू जी फिर पनहाले के दुर्ग में कैद रखे गये।

(क्रमशः)

हरयाणा वासियो! चेतो!

फिजूलखर्ची, अपव्यय, सौदेबाजी, लूट और अन्याय के विरुद्ध खड़े हो जाओ।

बरबादी और गिरावट का रास्ता छोड़ो! कल्याण का मार्ग अपनाओ!

(प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा तथा हरयाणा रक्षावाहिनी)

फिजूलखर्ची अपव्यय और सौदेबाजी

शादी आबादी के लिए होती है, बरबादी के लिए नहीं। विवाह दो व्यक्तियों को जोड़ने के लिए होता है जो मिलकर अपना जीवन सुखी और समाज के लिए उपयोगी बना सकें। यह दो परिवारों का मिलन है उनको एक दूसरे का सहायक और मित्र बनाने के लिए। यदि शादी में फिजूलखर्ची और अपव्यय के कारण परिवार कर्जे के नीचे दब गया तो सुख कैसे मिलेगा और दम्पति समाज के लिए उपयोगी कैसे हो सकेगा। दोनों परिवार अगर सौदेबाजी पर उतर आयें और एक दूसरे को नीचा दिखाने की कोशिश करें तो सहयोग और मित्रता कहां हुई यह तो लड़ाई और शत्रुता हो गई।

इसीलिए सर्वखाप पंचायत ने शादी की रस्म को इतना सरल बनाया ताकि गरीब से गरीब आदमी भी इज्जत से अपनी लड़की की विदाई कर सके। केवल 5 बाराती जायें और दहेज तथा दिखावा पूर्णतया बन्द। अपने सामर्थ्यानुसार लड़की को माता-पिता बिना दिखावा किये अवश्य दें। इन नियमों में जितनी छूट और नरमी की जायेगी, उतनी ही हानि होगी, लाभ नहीं। सर्वखाप पंचायत के नियमों के पालन में ही समाज का और सब व्यक्तियों का कल्याण है। पंचायतें इन नियमों को मजबूती से लागू करें।

लूट

हरयाणा प्रदेश में वर्ष भर में 300 करोड़ रुपये की शराब पी जाती है। 250 करोड़ की शराब तो किसान, मजदूर तथा छोटे कारोबारी पी जाते हैं। हर गांव से औसतन 5 लाख रुपये शराब के ठेकेदार की जेब में चले जाते हैं। गरीब किसान और मजदूर आदि ही अपने पैसे से शराब पीते हैं। सरकारी अफसर और राजनेता तो रिश्वत की शराब पीते हैं, और धनी लोग आयकर की छूट के खर्च के हिसाब में डालकर, सरकार के पैसे से पीते हैं। गाढ़े पसीने की कमाई शराब के ठेकेदार की भेंट चढ़ती है और घरवाली और बच्चे खाने, ओढ़ने, पहिनने के लिए तरसते रहते हैं। शराब के कारण लोगों का स्वास्थ्य, गांव का चलन, चरित्र बुरी तरह बिगड़ चुके हैं। शराब पीने वालों के परिवार और उनके अपने कल्याण और गांव के चलन को सुधारने के लिए पंचायतों को मैदान में उतरना चाहिए। प्यार से समझाकर, जरूरत पड़े तो जुर्माने करके भी शराब की अत्यन्त बुरी आदत से ग्रामों और नगरों को मुक्त करना चाहिए।

राजस्थान के उत्तरी जिलों झुंझुनूं, चूरू, सीकर आदि में शराब और चाय बिल्कुल बन्द कर दी गई हैं, पीने और पिलाने वालों पर जुर्माना किया जाता है। गढ़वाल की जनता ने भी शराब बन्द कर दी है, महिलाओं ने पुरुषों को रोकने का बीड़ा उठा लिया है। इम्फाल (मनीपुर) में महिलायें रात को 10 बजे से 3 बजे तक टार्च लेकर निकलती हैं और शराब पीने वालों को घसीट कर थाने में बन्द करवाती हैं। पिछड़े कहलाने वाले प्रदेश चेत गये। हरयाणा क्या सोता ही रहेगा? जगह-जगह पंचायतें करके यह लूट बन्द करो।

हरयाणा से अन्याय

हरयाणा अलग प्रदेश बनकर भारत के नक्शे पर आया। इसकी आमदनी का सारा पैसा इसके विकास पर लगा तो हरयाणा एक-दो प्रान्तों को छोड़कर सबसे आगे निकल गया। हरयाणा के पास भरपूर साधन और मेहनती लोग हैं, वे यदि अपने अधिकारों के लिए खड़े हो जायें और अन्याय को सहन करना बन्द कर दें तो हरयाणा भारत में नम्बर एक का प्रान्त बन सकता है।

शाह कमीशन ने चण्डीगढ़ हरयाणा को दिया। केन्द्रीय सरकार ने अकालियों के सामने झुककर अपने अधिकार में लेकर पंजाब और हरयाणा दोनों की राजधानी वहां रखी। यदि शाह कमीशन चण्डीगढ़ पंजाब को देने की सिफारिश करता तो क्या यह हो सकता था?

सन्त फतहसिंह की जलने की धमकी से डरकर चण्डीगढ़ पंजाब को दे दिया। हरयाणा में चेतना के कारण सन्त को फाजिल्का अबोहर को पेशकश करनी पड़ी, उन्होंने मेरे पास अपने दो सन्देशवाहक भेजे। फाजिल्का अबोहर हरयाणा को और चण्डीगढ़ पंजाब को देने का प्रधानमन्त्री का फैसला हो गया। 14 वर्ष बीतने पर भी फाजिल्का अबोहर हरयाणा को नहीं दिया गया। चण्डीगढ़ हरयाणा ने खाली नहीं किया, फाजिल्का अबोहर मिलने पर ही खाली करने का मेरा विचार सबने मान लिया (धन्यवाद)। परन्तु अब अकालियों के अत्याचारों से पीड़ित हमारे पंजाब के हिन्दू भाई भी फाजिल्का अबोहर और चण्डीगढ़ दोनों ही पंजाब को देने की अकालियों की मांग की वकालत कर रहे हैं। क्या पंजाब के हक में किया गया कोई फैसला बदलवाया जा सकता था, या उस पर अमल रोका जा सकता था?

1976 में रावी व्यास के पानी का फैसला हुआ। पंजाब ने मान लिया, परन्तु अमल नहीं होने दिया। हरयाणा में पानी लाने के लिए नहर नहीं बनने दी। 1981 में हरयाणा को मजबूर करके 1976 का फैसला बदल दिया, और हरयाणा को प्रतिनिश्चित पानी उपलब्ध होने पर जहां पंजाब से अधिक पानी मिलता, इस फैसले के अनुसार उल्टा हो गया। पंजाब को हरयाणा से 13 लाख एकड़ फुट पानी अधिक मिल गया। क्या पंजाब ऐसा होने देता? पानी पाकिस्तान में जा रहा है और हरयाणा की नहर का काम ठप्प है। 15 करोड़ रुपया पंजाब के कर्मचारी और अधिकारी बिना कुछ काम किए हजम कर गये। व्यास परियोजना पर जो पैसा खर्च हुआ, हरयाणा अपने हिस्से का वह पैसा भारत सरकार को हर साल दे रहा है और पानी के लिए तरस रहा है। इससे दयनीय दशा किसी की हो सकती है क्या? क्या इसे सहन करना चाहिये?

भाखड़ा की बिजली का खर्चा हरयाणा ने दिया 47% और बिजली मिल रही है 39%। ऐसा किसी और के साथ देश में हो रहा है क्या? व्यास परियोजना की बिजली की भी यही हालत नजर आती है। केन्द्रीय सरकार और हरयाणा सरकार इसका कारण बार-बार कहने पर भी नहीं बताती। पंजाब को रोपड़ के बिजली घर के लिए पानी की जरूरत पड़ी तो हरयाणा और राजस्थान के हाथ मरोड़ कर इसी मास के आरम्भ में हस्ताक्षर करवा लिये, दोनों का बिजली में कितना हिस्सा होगा, उसका कोई फैसला नहीं। अकाली सब कुछ लेकर भी "मैं न मानूं" ही कहे जा रहे हैं।

हरयाणा वासियों से मेरी नम्र प्रार्थना है कि वे अपनी बुराइयां समाप्त करें और अपने अधिकारों के लिए खड़े हो जायें।

आर्यसमाज की गतिविधियां—

आर्यसमाज के प्रतिनिधि मण्डल द्वारा श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट

नई दिल्ली ३० मई। आर्यसमाज का एक प्रभावशाली शिष्टमण्डल सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में प्रधान मन्त्री श्रीमती गान्धी से आज प्रातः मिला। प्रतिनिधि मण्डल में प्रो० शेरसिंह भूतपूर्व मन्त्री भारत सरकार, श्री ओमप्रकाश त्यागी सभा मन्त्री एवं भूतपूर्व सांसद, पं० शिवकुमार शास्त्री भूतपूर्व सांसद, श्री सोमनाथ मरवाह सीनियर एडवोकेट तथा प्रो० वेदव्यास सीनियर एडवोकेट (दिल्ली), श्री वटुकृष्ण वर्मन एडवोकेट कलकत्ता के अतिरिक्त कई मुख्य आर्यनेता सम्मिलित थे।

प्रतिनिधि मण्डल ने उनसे प्रार्थना की कि पंजाब की समस्या ने खतरनाक शक्ल अख्तियार कर ली है जिससे कि देश की सार्वभौम सत्ता व एकता खतरे में पड़ गई है। अतः इसको हल करने के लिए ज्यादा प्रभावशाली कदम उठाने चाहिएं।

प्रतिनिधि मण्डल ने जोर देकर कहा कि आतंकवादी और उनके समर्थक पंजाब में सरकार की सत्ता को खुले तौर पर चैलेन्ज कर रहे हैं और कानून पालन करने वाले नागरिकों का विश्वास सरकार के ऊपर से उठ चुका है कि वह उनके जानमाल की रक्षा कर भी सकेगी? वस्तुतः नरमदलीय व उग्रवादियों दोनों का लक्ष्य खालिस्तान का निर्माण है और इसके लिये वे सब प्रकार के तरीकों का काम में लाने के लिये दृढ़ हैं। देश के सार्वभौम सत्ता की रक्षा और कानून तथा व्यवस्था को बनाए रखने की अन्तिम जिम्मेदारी सरकार की है।

प्रतिनिधि मण्डल का निश्चित मत है कि आतंकवादियों से निपटने के लिये हल्के तरीके अब नहीं अपनाने चाहियें। इन लोगों ने पंजाब में आतंक का राज फैला रखा है। इस सम्बन्ध में यदि दृढ़ता से काम नहीं लिया गया तो सारा देश आतंकवाद की चपेट में आ जायेगा।

प्रतिनिधि मण्डल की मांग—

१—पंजाब को या तो सेना के सुपुर्द कर दिया जाये अथवा देश का संवैधानिक प्रजातान्त्रिक ढांचे को बचाने के लिए तुरन्त आपात स्थिति घोषित की जाये।

२—पंजाब के प्रशासन में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया जाना चाहिये जिससे कि स्थिति से अच्छी तरह निपटा जा सके।

३—यदि श्रीमती गांधी और ज्ञानी जैलसिंह दोनों पंजाब में जा सकें तो अच्छा होगा इससे प्रशासन और आम जनता दोनों का विश्वास फिर से जम जायगा।

४—३ जून के बाद आर्यसमाज के एक प्रतिनिधि मण्डल को पंजाब में दौरा करने की अनुमति दी जाय।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा, दिल्ली

ग्राम बालावास में शराब के ठेके पर धरने का अद्भुत दृश्य एवं वेदप्रचार

दिनांक १४ अप्रैल से ठेके पर धरना विधिवत चल रहा है। हरयाणा सरकार ने २५ गांवों की भावनाओं को ठुकरा कर शिक्षण संस्थाओं के बीच में जबरन शराब का ठेका खोल दिया है। धरने का दृश्य देखते ही बनता है। ठेके के सामने जी. टी. रोड़ को छोड़ कर दो बड़ी छाने १० ओ३म् के झण्डे लहरा रहे हैं। दो लम्बे बांसों पर विरोध के काले झण्डे लहरा रहे हैं। शराब विरोधी नारे लिख कर कई चार्ट लगा रखे हैं। दस मटके हर समय शीतल जल के भरे रहते हैं। सैकड़ों नरनारी प्रतिदिन रोड़ पर आते जाते गर्मी में जल पीते हैं। हर समय २०-२५ आदमी धरने पर रहते हैं। धरने व सत्संग में महिलायें भी बढ़ चढ़ कर भाग ले रही हैं। मिट्ठूराम पहलवान प्रधान हरचन्द आर्य व मोहनलाल आर्य मैदान में डटे हुये हैं। बाहर से धरने पर आने वालों के लिये वहीं ऋषि लंगर चलता है।

१३-५-८४ को सायं एक बजे माटाडोर लेकर जयकिशनदास आर्य प्रधान आर्यसमाज हांसी के नेतृत्व में एक जत्था धरने पर पहुंचा साथ में विश्व हिन्दू परिषद् के मुख्य अधिकारी व सदस्य भी थे। सिर पर केसरिया पगड़ी हाथ में ओ३म् के झण्डे लेकर साथ में सैकड़ों बच्चों को लेकर गांवों की गलियों में शराब विरोधी व आर्यसमाज अमर रहे, के नारे लगाये। गांवों की महिलायें छतों पर चढ़कर जलूस को देख रही थी। हांसी समाज का बहुत ही सहरानीय प्रोग्राम रहा।

दिनांक २४-५-८४ से २७-५-८४ तक धरने पर वेद प्रचार का आयोजन किया गया जिसमें स्वामी अग्निदेव जी भीष्म (हिसार) महात्मा अग्निदेव जी, महात्मा तिलकराज वानप्रस्थ (मुजफ्फरनगर) मा. सत्यपाल मरेहठा के उपदेश व पंडित खुशीराम, पं० सुलतानसिंह जी वेदप्रचार मण्डल हांसी के शिक्षाप्रद भजन हुये।

कर्नल श्रीचन्द प्रधान टेही व समसाण खाप जिसमें १२५ गांव हैं। मा० शेरसिंह जी प्रधान अध्यापक संघ भिवानी सर्वोदय नेता रामस्वरूप के नेतृत्व में एक शिष्टमण्डल हिसार से धरने पर पहुंचा। उपरोक्त आगन्तुकों ने कहा कि जब तक ये ठेका नहीं उठेगा तब तक हम पूर्ण सहयोग देते रहेंगे।

अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराबबन्दी समिति

कन्या गुरुकुल देहरादून में प्रवेश सूचना

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित अनिवार्य आश्रम पद्धति पर चलने वाली अखिल भारतीय शिक्षण संस्था है। मध्य कक्षा से १४ कक्षा तक शिक्षा दी जाती है।

उच्च प्रशिक्षित शिक्षिका वर्ग, पुस्तकालय नैतिक शिक्षा, चित्र-कला, साइंस, संगीत, गृह विज्ञान, सांस्कृतिक गति विधि संस्था की आधारभूत विशेषताएं हैं। विस्तृत खेल के मैदान आधुनिक सुविधाओं सहित बड़े छात्रावास तीसरी कक्षा से संस्कृत एवं अंग्रेजी प्रारम्भ। निर्धन तथा सुयोग्य छात्राओं के लिए छात्रवृत्ति देने की भी सुविधा है। मैट्रिक एवं इण्टर उत्तीर्ण कन्यायें भी प्रथम वर्ष तथा तृतीय वर्ष में प्रविष्ट हो सकती हैं। शिक्षा निःशुल्क दी जाती है। १ जुलाई से नवीन कन्याओं का दाखिला शुरु है। प्रवेश के इच्छुक महानुभाव ५ रुपये भेज कर नियमावली मंगा सकते हैं।

भवदीया
आचार्या दमयन्ती कपूर

सभा की रसीद गुम होने की सूचना

मैं आर्यसमाज लोहारू के वार्षिकोत्सव में सम्मिलित ११ से १३ मई में हुआ था। वहां से मेरा सामान चोरी हो गया है उसी में सभा की रसीद बुक भी थी जिसका नम्बर ११५०१ से शुरु होता था। वह ११५०१ से ११५६७ तक कटी हुई है। उसके बाद की खाली है। जिसे भी मिले निम्न पते पर भेजने का कष्ट करें।

सुरेशकुमार शास्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा,
दयानन्द मठ रोहतक

वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र का ऐतिहासिक अधिवेशन

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र द्वारा गत वर्ष में युगपुरुष महर्षि दयानन्द के क्रान्तिकारी वैदिक नाद को घर घर तक पहुंचाने के लिए नए आर्यसमाजों की स्थापना कर देहात भर में सैंकड़ों जलसों द्वारा शराब तथा दहेज विरोधी अभियान एवं लोक कल्याणकारी कार्य तथा महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी की सफलता पर आपको बधाई देते हुए हर्ष अनुभव करते हैं।

देश की निरन्तर बिगड़ती, धार्मिक व नैतिक परिस्थितियों में आर्य समाज की महत्वपूर्ण जबरदस्त भूमिका पर विचार करने के लिए जि० भर के समस्त आर्यसमाजों की प्रतिनिधि सभा वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का वार्षिक अधिवेशन तथा चुनाव १० जून अपरान्ह २ बजे गुरुकुल कुरुक्षेत्र में किया जा रहा है जिसमें आगामी वर्ष के कार्यक्रम पर विचार कर एक सर्वांगीण कार्यक्रम बनाया जायेगा।

इस अवसर पर नवनिर्मित महर्षि दयानन्द वैदिक धाम में (गीता स्कूल के सामने) दयानन्द मार्केट का उद्घाटन तथा भव्य यज्ञशाला की आधारशिला रखने के लिए मण्डल द्वारा आयोजित सा० आ० वीर दल प्रशिक्षण शिविर (२० मई से १० जून) को दीक्षान्त समारोह दस जून सायं ५ बजे विशाल आर्य महासम्मेलन के रूप में होगा, जिसमें देश भर से आये सैंकड़ों आर्य वीरों का अभूतपूर्व प्रदर्शन होगा। इस अवसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती मुख्य वक्ता होंगे।

बिशनसिंह एडवोकेट
महामन्त्री

विशाल आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में वैदिक साधन आश्रम, नालापानी, (तपोवन) देहरादून में महात्मा दयानन्द के संरक्षण में १६ से २४ जून तक बड़े पैमाने पर 'आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर' का आयोजन किया जा रहा है। शिविर शुल्क ४० रुपये मात्र है। दस दिवसीय इस शिविर में सफेद कमीज, पैन्ट निक्कर (वेशभूषा) व आवश्यक सामग्री साथ लायें।

चन्द्रमोहन आर्य
कार्यालय मन्त्री

शोक समाचार

१—महाशय नेकीराम जी रूदडोल वाले जि० भिवानी पिछले सप्ताह देहान्त हो गया। वे निर्भीक आर्य पुरुष थे। रूदडोल ग्रामीणों को उन्होंने जागृत कर भूमि का मालिक बनवाया। शिक्षा के प्रति उनका बड़ा प्यार था। अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाई। आर्यसमाज का प्रचार अपने खेती-बाड़ी के काम को छोड़कर करते थे। १९४४ से डायरी लिखने का व्रत लेकर आज तक की सब घटनाओं को लिखकर इलाके का इतिहास बना दिया है।

प्रभु से प्रार्थना है कि इनकी आत्मा को शान्ति दे तथा परिवार वालों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति दे। बड़े बुजर्गों के गुणों को हम अपनी शक्ति भर नई पीढ़ी तक पहुंचाने में सकें।

दीपचन्द आर्य

२—आर्यसमाज जूवां जि० सोनीपत के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री लक्ष्मीचन्द की धर्मपत्नी का निधन गत सप्ताह लम्बी बिमारी के बाद हो गया। उसकी आयु ४८ वर्ष थी। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा शोक संतप्त परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

केदारसिंह आर्य

उपकुलपति चौ: हरद्वारीलाल का धन्यवाद

२७ मई को कन्या गुरुकुल नरेला के वार्षिकोत्सव पर हुये शिक्षा सम्मेलन पर निम्न प्रस्ताव पारित किया गया—

महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के उपकुलपति सन्त मनीषी श्री हरद्वारीलाल ने उक्त विश्वविद्यालय के साथ संयुक्त महर्षि दयानन्द के नाम को सार्थक करने, महर्षि के कार्यों को अग्रसर करने के लिये विश्वविद्यालय के परिसर में महर्षि दयानन्द की अत्युच्च प्रतिकृति (स्टैच्यू) स्थापित करने, संस्कार विधि के अनुसार एक सुन्दर यज्ञशाला का निर्माण करने एवं श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ झज्जर गुरुकुल की मध्यमा, शास्त्री, आचार्य परीक्षाओं को स्वयं संचालित कर प्रमाण पत्र तथा डिग्री प्रदान करने सम्बन्धी जो निर्णय लिए हैं; तदर्थ यह शिक्षा सम्मेलन उनके प्रति आभार प्रकट करता है और हृदय से धन्यवाद देता है।

कर्मवीर आर्य
मन्त्री कन्या गुरुकुल नरेला

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज ब्याना जिला करनाल

प्रधान—चौ० राजबीरसिंह, उपप्रधान—चौधरी जयसिंह, मन्त्री—चौधरी लालसिंह आर्य, उपमन्त्री—चौधरी श्यामलाल, कोषाध्यक्ष-चौ० बलबीरसिंह, पुस्तकाध्यक्ष—चौ० राजसिंह।

आर्यसमाज समाज साबापुर जिला अम्बाला

प्रधान—श्री प्यारेलाल, उपप्रधान—साधुराम, मन्त्री—भानुराम उपमन्त्री-जयप्रकाश, कोषाध्यक्ष-फूलसिंह।

आर्यसमाज खरककलां जिला रोहतक

प्रधान-श्री मनोराम, मन्त्री—सुबेदार रघुवीरसिंह, कोषाध्यक्ष—श्री महावीरसिंह।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन मन्दिर मार्ग नई दिल्ली

प्रधान—पंडित मुनिशंकर वानप्रस्थ, मन्त्री—श्री रामभगतसिंह कोषाध्यक्ष-श्रीमती सरला गुप्ता।

आर्यसमाज प्रेमनगर अम्बाला

प्रधान-श्री नत्थूराम, मन्त्री—चक्रवर्ती गोसाई, उपप्रधान—श्री हरिसिंह, कोषाध्यक्ष-विनोदकुमार, पुरोहित—पिशोरीलाल
प्रधाना-श्रीमती कान्तादेवी, लायबेरियन-विजयकुमार

आर्यसमाज हाली मोहल्ला करनाल

प्रधान—श्री मा. सुन्दरसिंह, मन्त्री-महाराज कृष्ण चोपड़ा, उप प्रधान—श्री रतनसिंह लाठर, श्री रुलियाराम, नरदेव जी शास्त्री, वैद्य रतिराम, डा० जयचन्द मिगलानी, उपमन्त्री—श्री लक्ष्मीनारायण काठपालिया, श्री सुरेन्द्र कुमार काठपालिया, प्रचारमन्त्री—श्री हरिश्चन्द कोषाध्यक्ष—मा० जसवन्तसिंह, लेखानिरीक्षक—चौ० ज्ञानसिंह पुस्तकाध्यक्ष – मा० धर्मचन्द जी।

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज	ईशरगढ जि० कुरुक्षेत्र	८, ९, १० जून
,,	सारवन जिला अम्बाला	,, ,, ,, ,,
,,	मुसलाना जिला जीन्द	,, ,, ,, ,,
,,	खेड़ीसुलतान जिला रोहतक	९, १०, ११ ,,
,,	बेगा जिला सोनीपत	११, १२, १३ ,,

जो आर्यसमाजें अपने उत्सव अथवा वेदप्रचार सप्ताह जून, जुलाई तथा अगस्त में मनाना चाहते हैं, वे अपनी तिथियां नियत करके शीघ्र सभा को पत्र लिखने का कष्ट करें। ताकि समय पर प्रबन्ध किया जा सके।

सभा मन्त्री

भारत की राष्ट्रीय धारा और भारतीय मुसलमान

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष—वैदिक संस्थान,
नजीबाबाद (उत्तर प्रदेश)

दो वर्ष पहले की बात है कि दिल्ली के तीन दिवसीय 'मुस्लिम युवक सम्मेलन' की समाप्ति पर "नवभारत टाइम्स" के सम्पादक महोदय ने ६ जनवरी १९८२ के अंक में अपनी सम्पादकीय टिप्पणी में लिखा था कि मुस्लिम युवक सम्मेलन की आवश्यकता और उद्देश्य क्या था ? यह तो स्पष्ट नहीं अपितु उसके संयोजक ने सम्मेलन के बाद जो कुछ बताया, उसमें इतना तो स्पष्ट है कि मुस्लिम युवकों को राष्ट्रीय धारा में एकाकार होने और भारतीय मुस्लिम समाज को घर में और घर से बाहर शेष समाज के साथ कदम मिलाकर चलने को प्रेरित करने पर विचार नहीं किया गया। इस समाज की प्रत्येक समस्या पर इस प्रकार विचार किया, जैसे वह एक पृथक् इकाई है और इस पृथक्ता की रक्षा करने के लिए उसे प्रत्येक मोर्चे पर संघर्ष करना होगा।

वास्तविकता यह है कि भारत के मुसलमान कभी भी भारतीय समाज का अंग बनकर नहीं रहे। भारतीय इतिहास में कोई पृष्ठ ऐसा नहीं है, जो मुस्लिम वर्ग को भारतीय समाज का अंग प्रमाणित करता हो, फिर चाहे वह भारत के मुस्लिम साम्राज्यकाल का इतिहास हो अथवा ब्रिटिश काल का। इतिहास साक्षी है कि मुस्लिम साम्राज्यकाल में भी शासन मुसलमानों के विषय में दूसरे ढंग से सोचता था और हिन्दुओं के विषय में दूसरे ढंग से। ब्रिटिश काल में भी यही स्थिति रही। इस्लाम की भारत में उपस्थिति और मुस्लिम शासन के प्रारम्भ से लेकर ब्रिटिश काल के अन्त १५ अगस्त सन् १९४७ तक एक सहस्र वर्ष की अवधि में इस वर्ग के लोग अपने को पृथक् समाज मानने के अभ्यस्त हो गये हैं।

मुसलमान शासकों ने तो अपने को उच्च सिद्ध करने और साथ ही इस्लाम को अपने साम्राज्य की शक्ति बनाये रखने के लिए मुसलमानों को भारत की राष्ट्रीय धारा में नहीं मिलने दिया। नीति का दृष्टि से अपने साम्राज्य की शक्ति को परिपुष्ट बनाये रखने के लिए समय समय पर मुस्लिम शासकों ने कुछ हिन्दुओं को भी अपनी सेनाओं और दरबार में कुछ सम्मान देकर प्रयुक्त किया।

ब्रिटिश शासकों ने भी 'फोड़ो और राज्य करो' की नीति अपना कर मुसलमानों को हिन्दू समाज से दूर रखा और निरन्तर उस दूरी को और लम्बी करने के लिये प्रयत्नशील रहें। अंग्रेजो के इस प्रयत्न के कारण ही मुस्लिम लीग का जन्म हुआ और द्विराष्ट्र-सिद्धान्त को मान्यता प्रबल हुई तथा उसके फलस्वरूप मुसलमानों के लिए पाकिस्तान राष्ट्र-गृह बनाकर दे दिया गया।

दुर्भाग्य भारत का यह रहा कि यहां के नेताओं ने अपने को उच्च-कोटि का मानवतावादी सिद्ध करने के व्यामोह में प्रत्यक्ष प्रमाण और क्रियात्मक रूप में भारत में पृथक् मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान बन जाने पर उस सत्यता को स्वीकार नहीं किया। विचित्रता तो यह है कि द्विराष्ट्र सिद्धान्त को दस्तावेज पर हस्ताक्षर करके भी भारत के नेताओं ने अपनी हवायी उड़ानें बन्द नहीं की। यदि इन लोगों ने ईमानदारी से तथ्य को स्वीकार करने का साहस दिखाया होता तो उसी समय आबादी का भी परिवर्तन हो जाता और जिस मान्यता को लेकर बटवारा हुआ था, उसके अनुसार सभी हिन्दू इधर होते और सब मुसलमान उधर। यद्यपि तब मोहम्मद अली जिन्हा ने यह स्पष्ट कहा था कि पहले आबादी का परिवर्तन कर लिया जाये, बाद में सेना का बटवारा किया जाये। यदि ऐसा नहीं किया तो बेतहाशा रक्त पात होगा क्योंकि दोनों ओर की भावनायें भड़की हुई हैं।

प्रश्न यह है कि पाकिस्तान बना ही मुसलमानों के लिए था तो फिर मुसलमान वहीं क्यों नहीं बसाये जाने चाहियें थे। हमारे नेताओं का कहना था कि मौलाना आजाद जैसे मुसलमान कांग्रेस में रहे हैं अतः वह राष्ट्रवादी हैं। इनके विचार में आजाद आदि कतिपय मुसलमानों के कारण मुस्लिम लीग को छोड़कर शेष मुसलमान राष्ट्रवादी बने हुए थे। बात न तो तभी ऐसी थी और न अब ही ऐसी है। सर्वसाधारण मुसलमान तब भी पाकिस्तान के पक्ष में था और आज भी यही स्थिति है।

वास्तविकता तो यह है कि स्वयं मौलाना आजाद भी भारत के हित में पाकिस्तान के विरोधी नहीं थे अपितु वह पाकिस्तान को मुसलमानों के हित में नहीं समझते थे। एक बार जब ट्रेन में यात्रा करते हुए मुस्लिम विश्वविद्यालय अलीगढ़ के छात्रों ने मौलाना आजाद की दाढ़ी नोंची तो उसके बाद पत्रकारों से वार्तालाप करते हुए उन्होंने कहा था कि मैं पाकिस्तान का इसलिये विरोधी हूं क्योंकि मैं पाकिस्तान को मुसलमानों के हित में नहीं समझता। यदि मुझे पाकिस्तान बनने में मुसलमानों का हित दिखाई देता तो मैं सबसे पहला व्यक्ति होता, जो पाकिस्तान का समर्थक होता।

यदि जिन्ना और आजाद के दृष्टिकोण और कार्यकलाप पर गम्भीरता से विचार किया जाये तो यह स्पष्ट है कि जिन्ना ने पाकिस्तान के रूप में मुसलमान को भारत उपमहाद्वीप में एक राष्ट्र-गृह बनाकर दिया तो मौलाना आजाद ने पाकिस्तान के विरोध और कांग्रेस की ओट में भारत में रहकर भारत के इस्लामीकरण का मार्ग प्रशस्त किया।

इतना सब होने पर भी भारत का एक और बड़ा दुर्भाग्य यह रहा कि स्वाधीनता के गत ३६ वर्षों में इस देश के ना समझ नेताओं ने न तो कोई ऐसा अवसर ही छोड़ा और न कोई ऐसा कार्य करने से छोड़ा, जिससे मुसलमानों में अलगाव की भावना पनपती और दृढ़ से दृढ़तर होती है। इसका परिणाम प्रत्येक पग पर सामने आ रहा है।

परिवार नियोजन को मुसलमान कुफ्र और इस्लाम के विरुद्ध समझता है। वह अपनी संख्या वृद्धि कर भारत में एक और पाकिस्तान बनाने की योजना में लगा है। इस विषय के विशेषज्ञों का मत है कि यदि मुसलमान परिवार नियोजन से दूर रहे और इस प्रकार केवल हिन्दुओं की ही नसबन्दी होती रही और मुसलमानों को भारत में चार चार पत्नियां रखने की छूट रही तो सन् २००० ई० में भारत में मुसलमानों की संख्या ५१% हो जायेगी।

इतने पर अरब देशों के धन के बल पर वह हरिजनों को इस्लाम में दीक्षित कर लेना चाहते हैं और इस कार्य के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। अब कोई भारत के राजनीतिक नेताओं को पूछे कि जब ऐसा होगा, तब आप लोगों को क्या स्थिति होगी ? क्या भारत के सत्ता पिपासु नेता इस ओर ध्यान देंगे ?

(पृष्ठ १ का शेष)

आज उग्रवादियों की हिंसक और राष्ट्रविरोधी कार्यवाहियों से राष्ट्र की एकता को खतरा हो गया है और विदेशी शक्तियां इनको सहारा देकर देश को कमजोर करना और सम्भव हो सके तो तोड़ना चाहते हैं। इसलिए राष्ट्र की एकता और सुदृढ़ता के लिए ठोस और मजबूत कदम अविलम्ब उठाने चाहियें।

५—चौधरी देवीलाल जी के उस वक्तव्य की जिसमें उन्होंने अकालियों को सत्ता सौंपने की बात कही है, यह बैठक भर्त्सना करती है। उनका यह वक्तव्य प्रजातन्त्र विरोधी तो है ही, साथ ही हरयाणा विरोधी भी है। क्योंकि चौधरी देवीलाल उन अकालियों को सत्ता सौंपना चाहते हैं जो हरयाणा का सतलुज, रावी, व्यास के पानी और बिजली में अधिकार नहीं मानते तथा हरयाणा में आने वाले बिजली पानी को रोकना चाहते हैं और नहर को खुदाई को रोके हुए हैं। अकालियों और उग्रवादियों की गतिविधियां राष्ट्र विरोधी हैं। ऐसे लोगों को राज सौंपने की बात राष्ट्र-विरोधी ही है।

गुरुकुल की समस्या का एक ही हल

सरकारी अनुदान ठुकरा दें

(धर्मवीर विद्यालंकार, ५ अशोक नगर पीलीभीत)

[गतांक से आगे]

इन दो महानुभावों ने सदा यह ध्यान रखा कि सरकारी धनराशि लेते हुए सरकार की किसी ऐसी शर्त को स्वीकार नहीं किया, जिससे गुरुकुल का अपना स्पष्ट राष्ट्रीय, सांस्कृतिक स्वरूप नष्ट हो जाय। ऐसा प्रतीत होता है कि बाद में आने वालों का मनोबल, ध्येय निष्ठा ऊंची नहीं थी। उनका उद्देश्य सरकार से किसी भी शर्त पर धन पाना था। उसके परिणाम स्वरूप पाठविधि में संस्कृत और वेद के विषयों में कमी की गई, आश्रम निवास और महाविद्यालय परिवेश आवश्यक नहीं रहा। व्रताभ्यास समाप्त कर दिया गया। गुरु-शिष्य का निरन्तर सहचर्य समाप्त हुआ। वेदालंकार, विद्यालंकार के साथ बी० ए० की उपाधि आरम्भ हुई। वाचस्पति के स्थान पर एम० ए०, विद्यामार्तण्ड के स्थान पर पी-एच० डी० उपाधि मिलने लगी। अवाञ्छनीय तत्व प्रवेश पा एम० ए० पी-एच० डी० होने लगे।

अब अध्यापकों की, कर्मचारियों की नियुक्ति, विमुक्ति, वेतन-वितरण सरकार करती है, तो सभा का नियन्त्रण समाप्त हो गया। वे तो सरकार के आधीन हैं, विद्या सभा के नहीं। विद्या सभा का स्थान सीनेट ने ले लिया है। नियुक्ति के समय सरकारी पदाधिकारियों का प्रबल प्रभाव होने से योग्य, विद्वान् व्यक्ति की नियुक्ति सम्भव नहीं।

इस सरकारी अनुदान को पाकर हम गुरुकुल का अपना स्वरूप नहीं बचा पाए और भविष्य में पुनः स्थापित कर पाना भी सम्भव नहीं तो इस अनुदान को ठुकरा देना ही श्रेयस्कर है।

अगर गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की ऊपरलिखित अतीव शोचनीय दशा में विद्यालय विभाग को प्रभावित करना अभीष्ट हैं, विद्यालय विभाग में बची हुई कुछ पुरातन परम्पराओं एवं वातावरण को भी समाप्त करना चाहते हैं, ओर विद्यालय विभाग के आश्रम में भी किसी सरकारी अधिकारी का कोई कार्यालय खुलवाना चाहते हैं तो अवश्य इसे भी सरकारी अनुदान से लाभान्वित (?) कराईये। परन्तु ऐसा आदरणीय सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार को अभीष्ट नहीं है, ऐसा मेरा विश्वास है। आश्चर्य है कि विद्वान्, अनुभवी, तपोनिष्ठ, धार्मिक, परोपकारी लेखक से वर्तमान दशा का यथार्थ कारण कैसे ओझल हो गया। चाहिये तो यह कि पहले विकृत विश्वविद्यालय की दशा का सुधार हो जाय। अगर सुधार हो जाय तो सरकारी अनुदान विद्यालय विभाग को दिलाया जाय। अन्यथा सरकारी अनुदान को विश्वविद्यालय के लिए भी ठुकरा दिया जाय। ऐसा करना ही होगा।

ऐसी स्थिति में एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न भयावह रूप में आ खड़ा होता है। वह यह कि इतनी धनराशि को ठुकरा देने पर विश्वविद्यालय कैसे चलेगा? इसका समाधान है, अत्यन्त अनावश्यक खर्चों को कम करके तथा अन्य पवित्र साधनों को अपना करके, उसका विस्तार यहां आवश्यक नहीं। इस प्रकार गुरुकुल अपने शुद्ध एवं सुसंस्कृत स्वरूप में निर्मलता की सुरभि सर्वत्र प्रसारित कर यशस्वी बनेगा।

श्रीमती विद्यावती का देहावसान

दिनांक १५ मई को रात ७ बजे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् श्री धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती का हृदय गति रुक जाने से ७९ वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका निधन समाचार सुनकर समूचे आर्यजगत् में शोक की लहर दौड़ गई। उनका अन्त्येष्टि संस्कार निगम बोधघाट, पर महात्मा प्रभु आश्रित जी के सुपुत्र श्री यशपत शास्त्री ने वैदिक रीति से सम्पन्न कराया। अन्तिम दर्शन करने वालों में विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिनमें प्रमुख रूप से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले, सभा मन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री थे। चिता को अग्नि उनके सुपुत्र श्री वासभूषण न्यूज एडीटर पी० टी० आई० दिल्ली ने दी। श्रीमती विद्यावती माननीय धर्मदेव विद्यामार्तण्ड की विदुषी तथा समाजसेविका धर्मपत्नी थी। स्वामी श्रद्धानन्द जी के आदेश पर जब पण्डित जी दक्षिण भारत में हिन्दी तथा वैदिक धर्म के प्रचार के लिए गये तो उनकी धर्मपत्नी ने भी वहां स्त्रियों में कन्नड़ भाषा सीखकर प्रचार किया। वह संगीत की मर्मज्ञ थी। उसी को माध्यम बनाकर उन्होंने प्रचार में सफलता प्राप्त की। उन्होंने सोम सुधा तथा अन्य पुस्तकों की रचना की। उनकी धर्म के प्रति अगाध श्रद्धा थी। श्रीमती विद्यावती प्रेम तपस्या सादगी दान दया की प्रति मूर्ति थी।

ब्र० नन्दकिशोर एम० ए०, विद्यावाचस्पति

सर्वहितकारी और शराब

अनिलकुमार मंगला 'पिंकी' (बम्बई)

हाथ ना लगाना शराब को।
अलबिदा करो तुम शराब को।
नष्ट कर दे वो मानवता को।
तुम खाने न दो इमान को।
सर्वहितकारी जगाये हमको॥

हाथों में लो वीणा ओ३म् की।
फिर मशाल जलाओ शराब की।
बहा दो नदियां दुध शहद की।
इंधन जलाओ शराब की।
सर्वहितकारी बरसात करे ज्ञान की॥

शराब के गर्क में दिल जो गिरा आपका।
जलकर दाग लग गया उस पर आलस्य का।
निर्बल कर दे हमें ये साथी है सुस्ती का।
विजय न सुहाय इसे दुश्मन है ये चुस्ती का।
सर्वहितकारी दुश्मन है शराब का॥

घुटने टेक देता सामने मौत के।
कौन तड़पा नहीं नशें से शराब के।
राह पर चलो तुम सर्वहितकारी के।
अमर हस्ती रहो तुम दुनियां में चोटी के।
सर्वहितकारी चलाये मार्ग पर सच्चाई के॥

शराब है इन्सान का कलंक।
स्वर्ग को बना दे ये नरक।
बनो तुम सर्वहितकारी के लायक।
अपनाने न दो दूसरों को शराबी शौक।
सर्वहितकारी पवित्र बनाये मिटाकर कलंक॥

गुरुकुल कुरुक्षेत्र की कार्यकारिणी का प्रशंनीय निर्णय

दिनांक २०-५-१९८४ को गुरुकुल कुरुक्षेत्र की कार्यकारिणी ने अपनी बैठक में एक महत्त्वपूर्ण निर्णय लिया है कि हम वैदिक धर्मी हैं। महर्षि दयानन्द ने बालकों की उन्नति के लिए गुरुकुलों और उसकी शिक्षा प्रणाली का विधान किया है; इसलिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र गुरुकुल ही रहेगा, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा इसे स्कूल कदापि नहीं बनने देगी।

अपने गुरुकुल को गुरुकुलत्व प्रदान करने के लिए दूसरा स्तुत्य निश्चय यह किया है कि इस गुरुकुल में जो बच्चे भविष्य में प्रविष्ट होंगे, उनके संरक्षकों, अभिभावकों व माता-पिताओं को प्रेरित किया जायेगा कि वे अपने बालकों को महर्षि दयानन्द द्वारा निर्दिष्ट पाठविधि से पढ़ावें। ऐसे आचरण पर गुरुकुल उनसे केवल आधा भोजन १२०) के स्थान पर ६०) मासिक शुल्क ग्रहण करेगा, यह सुविधा पाने के वे भी अधिकारी हैं, जिनके पुत्र पहले से ही इस गुरुकुल में प्रविष्ट हैं और अपनी शिक्षा की दिशा परिवर्तित कर महर्षि दयानन्द की पाठविधि अपनाना चाहेंगे।

इस भावना को क्रियान्वित करने के लिए कार्यकारिणी ने जुलाई १९८४ से छठी कक्षा से अपना पाठ्यक्रम श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर द्वारा संचालित स्वीकार कर लिया है जिसे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक ने मान्यता देकर अपना आर्ष संस्कृत विभाग बना लिया है। वेदानन्द वेद वागीश

रेवारी जाति के ५० हजार लोगों ने चाय छोड़ी

पाली (राजस्थान) चाय आज गांव-गांव में तथा गरीब से गरीब व्यक्ति के घर में पहुंच चुकी है। मेहमान आने पर उन्हें सबसे पहले चाय देकर उनका स्वागत किया जाता है लेकिन पाली व जालोर जिले के रेवारी जाति के लगभग ५० हजार लोगों ने अपनी एक पंचायत में निर्णय लिया है कि वे अब अपने घरों में चाय नहीं बनाएंगे और न ही बाहर पिएंगे। जबकि इससे पूर्व रेवारी जाति में चाय का बहुत प्रचलन था।

चाय पर पाबन्दी के पीछे एक घटना बताई जाती है जिसमें जालोर जिले के आहोर गांव के पास एक ढाणी में मालाराम नामक रेवारी के घर मेहमान आये तो उसकी पत्नी ने गांव के होटल से अपने घर चाय मंगाई। चूंकि मालाराम की पत्नी के पास पैसे नही थे तो उसको चाय उधार देने से इन्कार कर दिया। इस पर उस महिला ने अपने गले के सोने के फूल दुकानदार को देकर चाय लाई और मेहमानों को पिलाई। शाम को उसका पति आया तो उससे पैसे लेकर होटल मालिक को देने लगी और अपना सोने का फूल उससे मांगा इस पर दुकानदार की नीयत खराब हो गई और उसने सोने का फूल देने से इन्कार कर दिया।

मालाराम को पत्नी ने यह बात रेवारी के पंचों के सामने रखी। पंचों ने सारी घटना पर विचार करने के बाद चाय पीने-पिलाने पर प्रतिबन्ध लगाने का फैसला किया। रेवारी पंचों का फैसला २० अन्य गांवों में भी पहुंचाया गया जहां के लगभग ५० हजार रेवारी जाति के लोगों ने चाय पीनी पिलानी छोड़ दी।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

[illegible] द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क २७ १४ जून १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

पंजाब को सेना के हवाले कर दिये जाने पर आर्यनेताओं द्वारा स्वागत

दिल्ली ३ जून १९८४—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा की बैठक आर्यसमाज मन्दिर दीवानहाल दिल्ली में श्री रामगोपाल वानप्रस्थ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। इस बैठक में आन्ध्रप्रदेश, बंगाल, बिहार, राजस्थान, पंजाब, हिमाचल, जम्मू-कश्मीर, उत्तरप्रदेश, दिल्ली, महाराष्ट्र तथा आर्य प्रादेशिक सभा के सदस्यों और वरिष्ठ आर्य नेताओं ने भाग लिया।

इस अवसर पर पंजाब की स्थिति के सन्दर्भ में एक प्रस्ताव में आतंकवादियों की हिंसक कार्यवाहियों से निपटने तथा अमृतसर स्थित धार्मिक स्थानों से सेना द्वारा उग्रवादियों को बलात् पकड़कर सैनिक हिरासत में बन्द करने के पग का स्वागत किया गया है। सैनिक कार्य-[illegible] उग्रवादियों के नेता जरनलसिंह भिण्डरवाला तथा उनके सैकड़ा [illegible] और ६० के लगभग सैनिक भी शहीद हुए। सार्वदेशिक [illegible] की एकता की रक्षा करते हुए शहीद सैनिकों को श्रद्धां-[illegible] है और जहां जहां धार्मिक स्थानों में अपराधी छिपे हुए [illegible] सेना द्वारा इसी प्रकार बाहर निकालकर जेलों में बन्द किया जाये और राष्ट्र विरोधी आन्दोलन को कुचल दिया जाये।

स्वामी ओमानन्द जी तथा प्रो० शेरसिंह जी द्वारा सैनिक कार्यवाही का स्वागत

आर्यसमाज मिर्जापुर बाछोद निकट नारनौल के वार्षिक उत्सव के अवसर पर ३ जून को एक सार्वजनिक सभा में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने सेना द्वारा अमृतसर में धार्मिक स्थान जहां उग्रवादियों ने विदेशों की सहायता से हथियार जमा कर रखे थे और पंजाब में निर्दोष कार्यकर्त्ताओं की लगातार २ वर्ष से हत्यायें कर रहे थे, उनके ठिकाने समाप्त करने पर सेना के जवानों की कार्यवाही का स्वागत किया है और भारत सरकार से मांग की है कि सेना को आतंकवाद समाप्त करने पर ही पंजाब से हटाया जाये और हरयाणा की जनता को न्याय दिलाने के लिए १९७० का ऐवार्ड लागू किया जाये और अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र तुरन्त हरयाणा में शामिल किये जायें शाह कमीशन ने चण्डीगढ़ तथा खरड़ तहसील को भी हिन्दी क्षेत्र मानकर हरयाणा को दिये जाने का निर्णय दिया था।

दोनों आर्य नेताओं ने प्रधान मन्त्री से आग्रह किया कि हरयाणा की प्यासी धरती को उसके हक का पानी देने के लिए सतलुज यमुना लिंक नहर की खुदाई का कार्य भी सेना की देखरेख में शीघ्र पूरा किया जाये। अकालियों ने यदि हरयाणा का पानी तथा बिजली को रोका तो हरयाणा की जनता इसका डटकर मुकाबला करेगी।

इस उत्सव पर सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसेन वैदिक मिशनरी का व्याख्यान तथा पं० तेजपाल के भी राष्ट्र रक्षा पर भजन हुए। आर्यसमाज की ओर से सभा को वेद प्रचार तथा शराबबन्दी आन्दोलन के लिए ५०१) की थैली भेंट की गई।

चौ: चरणसिंह की सेना को बधाई

(हमारे विशेष संवाददाता द्वारा) नई दिल्ली, ८ जून। लोकदल के अध्यक्ष श्री चरणसिंह ने सुझाव दिया है कि सरकार पंजाब पर निगरानी में कोई ढील न दे जिससे कि स्थिति बिगड़े नहीं और जल्द से जल्द सामान्य हो जाए।

यहां आज एक वक्तव्य में श्री चरणसिंह ने अमृतसर के स्वर्ण मन्दिर परिसर में स्थिति को काबू मे लाने के लिए सेना को बधाई दी।

श्री चरणसिंह ने मत व्यक्त किया है कि पंजाब पुलीस और जिन लोगों को पाकिस्तान से लगी हमारी सीमा की चौकसी की जिम्मेदारी सौंपी गई, वे उग्रवादियों द्वारा की गई तैयारी एवं उनके द्वारा आधुनिक हथियारों से सेना के प्रतिरोध के जिम्मेदार हैं।

उन्होंने कहा है कि स्थिति का एक और चिन्तनीय पहलू है जिसे ध्यान में रखा जाना चाहिये। देश भर में सिख बुद्धिजीवियों और नेताओं ने कुछ अपवादों को छोड़कर न केवल मौन साध रखा है बल्कि उग्रवादियों की गतिविधियों को अपना नैतिक समर्थन भी दिया है। इसकी उन्हें चिन्ता नहीं है कि देश के लिए इसका क्या परिणाम होगा।

भजनलाल की बधाई

हमारे कार्यालय द्वारा चण्डीगढ़, ७ जून। हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने कल रात भारतीय सेना को इस बात के लिए बधाई दी कि उसने पंजाब में आतंकवाद समाप्त करने के लिए प्रधानमन्त्री द्वारा सौंपा गया कार्य पूरा कर लिया है।

उन्होंने कहा कि सेना की कार्रवाई इसलिये विशेष रूप से प्रशंसनीय है कि उसने स्वर्ण मन्दिर पर एक भी गोली नहीं चलाई और अपने जवानों की जान के रूप में भारी मूल्य चुका कर उसकी पवित्रता बनाये रखी। उन्होंने कहा कि इसके विपरीत आतंकवादी स्वर्ण मन्दिर परिसर की पवित्रता भंग करते रहे।

श्री भजनलाल ने कहा कि श्रीमती गांधी के पास यह कार्य सेना को सौंपने के अलावा कोई चारा नहीं रह गया था क्योंकि राष्ट्र विरोधी गतिविधियां बन्द करने तथा विदेशी ताकतों के हाथों में न खेलने की उनकी अपीलों की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया।

उन्होंने इस मामले की गहराई से जांच की मांग की कि स्वर्ण मन्दिर परिसर में इतने आधुनिक हथियार कैसे जमा किये गये।

शराब से सर्वनाश

शम्भू जी की कैद का कारण

(स्वामी ओमानन्द सरस्वती)

(गतांक से आगे)

शिवाजी के बड़े लड़के शम्भू जी मानो पिता के पाप के फलस्वरूप जन्मे थे। २१ वर्ष की आयु में वे उद्धत, मनमौजी, नशेबाज और लम्पट हो गये थे। एक सधवा ब्राह्मणी का धर्म नष्ट करने के कारण न्याय परायण पिता के आदेशों से पनहाला किले में बन्द कर दिए गए थे। वहां से शम्भू जी अपनी स्त्री येसूबाई को साथ ले चुपचाप भागकर दिलेरखां (औरंगजेब के सेनापति) से १३ दिसम्बर १६७८ को जा मिले। शम्भू जी को पाकर तो दिलेरखां मारे खुशी के फूल गया। इसी बीच में मानो उसने सारा दाक्षिणात्य जीता हो, ऐसी उछलकूद करने लगा। उसने यह खुशखबरी बादशाह के पास भेजी। औरंगजेब की ओर से शम्भू जी को सात हजार की मनसबदारी, राजा की उपाधि और एक हाथी दिया गया। उसके बाद दोनों बीजापुर का अधिकार लेने चले। उपर्युक्त वर्णन यदुनाथ सरकार ने अपने पुस्तक "शिवा जी" में दिया है।

दिलेरखां हिन्दुओं पर बहुत अत्याचार करता था। वह शम्भू जी के मना करने पर नहीं माना। इससे दुःखी हो ४ दिसम्बर १६७९ ई० को अपनी स्त्री सहित छिपकर भाग आया और पनहाला दुर्ग जहां पर वह कैद था, पहुँच गया। शिवाजी ने इस कुकर्मी पुत्र को अपने जीवन काल में इसी दुर्ग में कड़े पहरे में बन्दी रखा, क्योंकि वे जानते थे कि शम्भू जी व सम्भा जी मेरा उत्तराधिकारी होने की योग्यता नहीं रखता वे यह भी जानते थे कि भ्रष्टचरित्र और दुराचरण के कारण वह उसके महान् कार्य को उचित रूप से सचालित करने में असमर्थ है।

शिवाजी की मृत्यु के पश्चात् मन्त्रियों ने शम्भू को पद-हीन करके शिवाजी के कनिष्ठ पुत्र राजाराम को सिंहासन पर बैठाने का निश्चय कर लिया। किन्तु वे एक भूल कर गये, उन्होंने सेनापति हमीरराव मोहिते को मन्त्रणा में सम्मिलित नहीं किया। यदि वे उसे अपने विश्वास में ले लेते, तो उनकी योजना पूर्ण हो जाती। इसके विपरीत शम्भू जी ने सेना का सहयोग प्राप्त करने में सफलता प्राप्त कर ली और उसकी सहायता पा, पनहाला दुर्ग के कारागार से निकल भागने में सफल हो गया। सेना की शक्ति से उसको विजय प्राप्त हुआ और उसने अपनी क्रूरता के खेल प्रत्यक्ष कर डाले।

सर्वप्रथम अपनी सौतेली मां (मौसी) को जीवित ही दीवार में चिनवाकर भूखों मार डाला। दूसरा वृद्ध पेशवा को कारागार में झोंक दिया। तीसरे वृद्ध सचिव और सुमन्त को भी बन्दी बनाया और शिवाजी के निजी वृद्ध मन्त्री को मौत के घाट उतार दिया। इसी प्रकार उसके सम्पूर्ण शासनकाल में क्रूरता पूर्ण कृत्यों की पिशाच लीला होती रही। जिसके फलस्वरूप उसने शीघ्र ही स्वयं को उन महत्त्वपूर्ण सरदारों की स्वामीभक्ति एवं सहानुभूति से वंचित कर लिया जो उसके पिता के अनन्य सहायक रहे थे। उसने अपने सगे छोटे भाई राजाराम को भी कारागार में डाल दिया। वह इससे अधिक नीच कार्य और क्या कर सकता था।

इन क्रूरतापूर्ण कृत्यों के होते हुए भी मराठों ने यह अनुभव किया कि वह (शम्भू) शिवाजी द्वारा स्थापित मराठा साम्राज्य के सम्मान को अक्षुण्ण रखेगा व पड़ोसी राज्यों को सिर नहीं उठाने देगा। परन्तु उनकी आशायें पूर्ण न हो सकी। सम्भा जी वीर था किन्तु वह सुरा (शराब) और कामिनी के जाल में इतना जकड़ा गया कि उसकी सारी स्वाभाविक वीरता विलासिता के समुद्र में डूब गई और अपने एकमात्र विश्वस्त प्रियपात्र कलुष के परामर्श से प्रेरित होकर वह भूतों, पिशाचों को सिद्ध करने के प्रयत्नों में लीन हो गया। अपने पिता द्वारा स्थापित समस्त प्रशासनिक एवं सैनिक व्यवस्थायें उसके द्वारा उपेक्षित कर दी गई। सैनिकों को नियमित रूप से वेतन नहीं मिलता था। पर्वतीय दुर्गों की न तो मरम्मत की जाती थी, न ही उनकी सुरक्षा का कोई उचित प्रबन्ध था। सर्वत्र अराजकता छा गई थी। औरंगजेब ऐसे सुअवसर की खोज में था। उसने पूर्णरूप से सुसज्जित तीन लाख सैनिकों की विशाल सेना को साथ लेकर दक्षिण की ओर इस दृढ संकल्प के साथ प्रस्थान किया कि इस बार वह दक्षिण के हिन्दू एवं मुसलमान शासकों को अपने आधीन करके मुगल सम्राटों के चिरसंचित अभिलाषा को पूर्ण करने में सफलता प्राप्त करेगा। इस महान् और असाध्य माने जाने वाले कार्य की पूर्ति के लिए औरंगजेब ने भारत की सम्पूर्ण धन-जन शक्ति तथा एक ओर काबुल तथा कन्धार से लेकर दूसरी ओर बंगाल तक के समस्त साधनों को एकत्रित किया था, जिनका संचालन उसके योग्यतम हिन्दू और मुस्लिम सेनापतियों के हाथ में था। इसी समय औरंगजेब का एक सुपुत्र रुष्ट होकर सम्भा जी से आ मिला था। परन्तु इस महान् संकट से त्राण पाने का यह सुनहरा अवसर भी सम्भा जी ने छोड़ दिया। शिवाजी के पुराने मन्त्री औरंगजेब की इन तैयारियों को देखकर अत्यधिक चिन्तित हुए। उन्होंने शम्भू जी को सिर पर खड़ी महती विपत्ति के प्रति सचेष्ट करने के लिए बहुतेरे प्रयत्न किए। पर सुरा-सुन्दरी के अथाह सागर में डूबे शम्भू जी के कानों पर जूँ भी न रेंगी। उधर औरंगजेब की सेनायें दक्षिण की ओर विजयपताका फहराती हुई बढती ही आ रही थी। अपने दक्षिण अभियान के तीन वर्षों में ही औरंगजेब ने गोलकुण्डा पर अधिकार कर लिया था और बीजापुर की स्वतन्त्रता भी छीन ली था। अब मुगल सेनायें मराठे राज में घुसी। उन दिनों शम्भू जी महीनों तक मदिरा और मोहिनी के जाल में फंसा रहता था, उसे राजपाट की कोई चिन्ता न रहती था, मरहट्टे सरदार चेतावनी देते तो उन्हें दण्ड दिया जाता था। कविकुलेश के कुसंग से विनाश के गढे में नीचे से नीचे डूबता जा रहा था। यही कारण था कि वीर होते हुए भी शम्भा जी न तो बने हुए राज्य को सम्भाल सका, न ही उसकी वृद्धि व विकास कर सका। जिस समय औरंगजेब बीजापुर और गोलकुण्डे के राज्यों को उजाड़ रहा था तब भी शम्भा जी की आंख नहीं खुली। वह तो अपने नीच साथी कविकुलेश की देख-रेख में संगमेश्वर के महलों में कामकला के क्रियात्मक पाठ पढ़ रहा था। संगमेश्वर का स्थान महाराष्ट्र के अभेद्य नगरों से बहुत दूर अलकनन्दा और वरुणा नदियों के संगम पर सुन्दर जंगलों से घिरा हुआ था। वहां कुलेश ने प्रमोद भवन और उपवन बनाकर मराठा राज्य के गौरव की चिता तैयार कर दी थी। अभी औरंगजेब के पास लड़ने के लिये समय नहीं है, ऐसा विश्वास करके चौमासे के दिन भोग-विलास में बिताने के लिए शम्भू जी संगमेश्वर में चला गया। वहां पापी कुलेश के प्रयत्न से नित्य नई शराब और सुन्दर से सुन्दर कामिनी जुटाई जाने लगी। शम्भा जी विलासिता के जल में सिर तक डूब गया। चौमासा गुजर गया। कार्तिक आया और चला गया, माघ का महिना आ पहुंचा, पर सम्भा जी को आमोद-प्रमोद से छुट्टी न मिली, वह उसी अरक्षित स्थान पर पड़ा रहा। औरंगजेब ने एक शेख निजाम हैदराबादी को जो वीर और साहसी था, अपना सेनापति बनाकर पनहाला के दुर्ग पर अधिकार करने के लिए भेज दिया। उसे कोल्हापुर में ही सम्भा जी की कामलीलाओं का पता चल गया। दक्षिण की भयंकर शक्ति को समूल उखाड़ने का शुभ अवसर पाकर शेख निजाम ने थोड़े से साहसी वीर घुड़सवारों को लेकर जंगल के मार्ग से संगमेश्वर पर चढाई कर दी। कुछ दिन-रात चलके अकस्मात् वहां पहुंच गये। जिस समय मुगल घुड़सवार मृत्यु का सन्देश लिए शम्भू जी की ओर बढते आ रहे थे, उस समय शिवाजी का वह अयोग्य उत्तराधिकारी एक मराठा सरदार की नवविवाहिता सुन्दरी पर मार्ग में डाका डालकर अपनी कामवासना की तृप्ति के लिए प्रजा का शत्रु बना रहा था। इस समय कविकुलेश सम्भा जी का सबसे बड़ा मित्र व मन्त्री बना हुआ था। वह उत्तर भारत का था। उसके नीच कर्मों के कारण दक्षिणी सरदारों के हृदय में इसके प्रति असन्तोष की ज्वाला जल रही थी। शम्भा जी का दरबार और घर उस के बन्धनों से बंधा हुआ था, फिर [illegible] वे क्या करते। क्रमशः

महाराष्ट्र का मस्ताना आर्यवीर

(ओमानन्द सरस्वती, गुरुकुल झज्जर)

लगभग ४६ वर्ष पुरानी हैदराबाद जेल की घटना मेरी आन्तरिक चक्षु दृष्टि गोचर हुई, जब मेरे पास निलङ्गा से श्री बापूराव बाघमारे का दुःखप्रद तार कुछ दिन पूर्व मिला उसमें यह दुःखद सूचना थी श्री पूज्य वानप्रस्थी आनन्दमुनि जी (श्री शेषराव बाघमारे) परलोक सिधार गये। पुरानी घटना इस प्रकार है। नवाब हैदराबाद उस्मान अली के अत्याचारों को समाप्त करने के लिए आर्यसमाज के नेताओं के आदेश से १२ हजार आर्य वीरों ने हैदराबाद राज्य की सब जेलें भर दी थी। विवश होकर नवाब को अस्थाई जेलघर बनवाने पड़े। ऐसे ही एक हैदराबाद की कैम्प जेल में हम सौ से अधिक सत्याग्रही बन्द थे। सभी आर्य भाई दोनों समय प्रातः सायं यज्ञ-सन्ध्या वन्दना परस्पर मिलकर बड़े प्रेम से करते थे। प्रातः विद्वत् शिरोमणि प० मुक्तिराम जी (स्वामी आत्मानन्द जी महाराज) द्वारा महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश की कथा सुनने का प्रतिदिन सौभाग्य मिलता था। अपना भोजन उन दिनों हम सब मिलकर स्वयं ही पकाते थे। हमें एक वर्ष इस सख्त कैद का दण्ड मिला था। जिसके कारण यम के दूत अर्थात् नवाब हैदराबाद के पुलिस के सिपाही प्रातःकाल भोजन पर बैठते ही जेल का दरवाजा खोलते ही आ धमकते थे, और जोर से चिल्ला-२ कर हम आर्य सत्याग्रहियों को धमकाने लगते थे। जल्दी रोटी खाकर काम पर चलो। कभी मिट्टी खुदवाते और हमसे तुलवा कर दूर डलवाते। कभी पत्थर तुलवाते कभी पत्थर तुड़वाते और कभी-२ चक्की पिसवाते थे।

एक दिन काम करवाने के लिए हमें जेल से बाहर ले गये। उस दिन कार्य करने वालों में मेरा भी नम्बर पड़ा था। जब हम मिट्टी ढो रहे थे तो एक सत्याग्रही ने मुझे संकेत से बताया कि यह लम्बा तगड़ा काले कपड़े पहने हुए पहलवान के समान शरीर वाला शेषराव हाई कोर्ट का वकील निलङ्गे वाला प्रसिद्ध आर्य नेता है। नाम पहले ही मैंने इनका सुन रखा था। उनके दर्शन करके जहाँ हर्ष हुआ, वहाँ यह देखकर बड़ा दुःख भी हुआ कि इतने बड़े नेता हाई कोर्ट के वकील से भी मजदूरों के समान मिट्टी डलवाई जा रही है। इतना ही नहीं अत्याचारी नवाब ने हैदराबाद के आर्य नेताओं पर अनेक बार जुल्म ढा रखे थे। मिट्टी ढोते समय आते जाते कई बार मेरा श्री शेषराव जी से नमस्ते के पश्चात् वार्तालाप भी हुआ। उसी से ज्ञात हुआ कि उनको भूमि के नीचे अन्धेरी कोठरी में अर्थात् तहखाने में कैद कर रखा है। चौबीस घण्टे अनेक प्रकार की यातनाएं देने के लिए उसी में बन्द रहना पड़ता है। उसी में मल-मूत्र का त्याग खाना-पीना, सोना सब कुछ करना पड़ता है और अकेले ही जैसे फांसी होने वाले कैदी को रखा जाता है। न उनसे कोई मिल सकता है न ही सुख दुःख के समाचार बाहर जा सकते हैं। अर्थात् कैद तनहाई (अकेले की) कर रखी थी। यदि वे उस दिन न मिलते तो मुझे भी उनके कष्टों का कोई ज्ञान न होता। जब मैंने उनसे कहा कि आप समान आर्य नेताओं पर भी ये नवाब बड़े अत्याचार कर रहा है, तो वे मुस्कराये और हंस पड़े और यही कहा कि हंस-२ कर ही इस अत्याचारी के साथ टक्कर लेनी है। वहाँ नवाब की ओर से कितने घृणित अत्याचार हो रहे थे उसकी एक सच्ची घटना मैं अपनी आंखों देखी लिखता हूं। हमारा आर्य सत्याग्रही जत्था उस्मानाबाद की जेल में भेज दिया गया। जब हम प्रातःकाल शौचालय में शौच गये तो देखा अस्थाई शौचालय जेल के प्रबन्धकों ने वहाँ बना रखा था, न कोई पर्दा था न कोई सफाई का प्रबन्ध था। लोहे के डिब्बे मल-मूत्र से ठसा-ठस भरे हुए थे। दुर्गन्ध से सब कुछ सड़ रहा था। सबकी आंखों को वह बीभत्स दृश्य खटकता था। उसी समय दो तीन व्यक्ति उन डिब्बों को उठा-२ कर कुछ दूरी पर डालकर खाली कर रहे थे। इन व्यक्तियों के गले में यज्ञोपवीत थे। इनको देखकर मैंने भी एक डिब्बा उठाया और उसे खाली करके यथास्थान रख कर के शौच से निवृत्त हुआ।

स्नान सन्ध्यादि से निवृत्त होकर भोजन के समय जब भोजन करने लगे तो उन्हीं यज्ञोपवीत धारी व्यक्तियों के पुनः दर्शन हुए, जो प्रातःकाल मल-मूत्र के डिब्बे उठा रहे थे। मैंने साहस करके उनसे पूछ ही लिया कि क्या आप भी आर्य सत्याग्रही हैं। उन्होंने निषेध कर दिया। हम तो विचाराधीन (हवालाती) कैदी हैं। मैंने पूछा आप किस अपराध में जेल आए हैं। उन्होंने जब अपना परिचय दिया तो ज्ञात हुआ कि वे आर्यसमाज के मन्त्री प्रधानादि अधिकारी हैं। उन पर डाके के मुकदमे चलाकर डाकू बनाकर जेल में डाला हुआ है। वे बहुत वर्षों से जेल में यातनाएं भोग रहे हैं। अभी उनकी पेशी ही नहीं लगी अर्थात् वे अदालत में अभी उपस्थित ही नहीं हुए और ये मल मूत्रादि उठाना घृणित कार्य उनसे बलपूर्वक कराया जा रहा है। एक दो के पीट-२ कर दाँत भी तोड़ दिये गये थे।

इन अत्याचारों के कारण वे यौवन में ही बूढ़े दिखाई देने लगे थे। इतने पर भी वे आर्यवीर मस्त थे और सब अत्याचारों को धैर्यपूर्वक सहन कर रहे थे। आर्यसमाज के सत्याग्रह के विषय में महात्मा गान्धी के ये शब्द—कि आर्यों का सत्याग्रह यह पहला सत्याग्रह है किन्तु यह हिमालय के साथ टक्कर है। आर्य सत्याग्रह से पूर्व हैदराबाद राज्य में कांग्रेस ने भी छोटा सा सत्याग्रह किया था और वे अपनी पराजय मानकर जेलों से आ गये थे। किन्तु आर्यसमाज के सत्याग्रही श्री शेषराव जी के समान लोहे के बने वीर और धीर थे। सब प्रकार के नवाब के अत्याचार सहे। एक दर्जन से अधिक आर्य वीरों ने अपने प्राणों का बलिदान देकर हुतात्माओं (शहीदों) में नाम लिखवाए। बारह हजार आर्य वीरों ने अपने छः हजार मन रक्त (खून) की भेंट चढ़ाई। अर्थात् किसी भी सत्याग्रही का जेल में २० सेर से कम भार नहीं घटा। इसी महान् बलिदान के कारण नवाब हैदराबाद का हिमालय रूपी शासन आर्यों की टक्कर से चकनाचूर हो गया। उसने अपनी पराजय स्वीकार की आर्यों की मांगों को पूरा करने का वचन दिया और अपने जन्म दिवस पर सब सत्याग्रहियों को हलवा खिलाकर और मार्ग व्यय देकर विदा किया। श्री शेषराव जी आर्य वीर के साथ मेरी घनिष्ठ मित्रता और अटूट सम्बन्ध हो जायेगा मुझे यह उस समय ज्ञात नहीं था। उस समय मैं भी २६-२७ वर्ष का युवक था। जेल जाने से पूर्व शोलापुर आर्य सत्याग्रही शिविर में पूज्यपाद स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज और आर्य नेता भाई बन्सीलाल वकील के दर्शन कर आशीर्वाद लिया और जेल में जाने से पूर्व पहले दिन बारसी में ब्रह्मचारी हरिशरण आदि हम सब ने परस्पर कुश्ती की थी। जेल में भी व्यायाम कबड्डी कुश्ती आदि करते थे, किन्तु साढ़े चार महीने के कारागृह के पश्चात् लौटे तो निर्बलता ने इतना दबा लिया था कि उठते-बैठते अन्धेरी आता था। प्रायः सभी सत्याग्रहियों की यही अवस्था थी। भाई बन्सीलाल जी के कारण श्री शेषराव जी बाघमारे के घर जब मैं पहली बार अपनी प्रचार यात्रा में निलङ्गा उनके ग्राम में गया तो उनसे यथार्थ में पूरा परिचय हुआ जो आगे चलकर घनिष्ठ मित्रता और अटूट सम्बन्ध के रूप में बदल गया। उस यात्रा में ब्र० हरिशरण भी मेरे साथ थे।

हैदराबाद का नवाब कितना अत्याचारी था इसका परिचय ऊपर की घटनाओं से पाठकों को मिल ही गया होगा, किन्तु यह पढ़कर पाठकों को बड़ा आश्चर्य होगा कि नवाब हैदराबाद ने आर्यसमाज निलङ्गा के आर्यसमाज मन्दिर को सर्वथा तुड़वा कर ढाह दिया था और उसे भूमि के साथ कर दिया था। सत्याग्रह के पीछे आर्य वीर शेषराव के अटूट धैर्य और वीरता के आगे नवाब को झुकना पड़ा और पुनः अपनी लागत से आर्यसमाज मन्दिर का निर्माण करना पड़ा यह नवाब

की बड़ी भारी पराजय थी। जब हम निलङ्गा भाई बन्शीलाल जी के साथ श्री वीरवर शेषराव के घर ठहरे थे तो हमने आपस में विचार किया कि सारे भारत वर्ष में ही ऐसी अवस्था आई हुई है कि आर्य (हिन्दू) और मुसलमानों के झगड़े और लड़ाइयां होंगी। उस के लिए हमें तैयार रहना चाहिए। उसी समय शेषराव जी ने कहा हम चुप-चाप नहीं बैठे, तैयारी कर रहे हैं और हमें अपनी रायफल जो किसी सुरक्षित स्थान पर रखी थी लाकर दिखाई। इससे हमें विश्वास हो गया कि भविष्य में आने वाली आपत्ति से टक्कर लेने की तैयारी कर रहे हैं। इनके नेतृत्व में अन्य आर्य भाई भी अस्त्र शस्त्र इकट्ठे करने और उनके प्रशिक्षण में लगे हुए थे। श्री शेषराव जी से मैंने पूछा कि आपको बाघमारे क्यों कहते हैं, तो उन्होंने अपनी दोनों घटना बाघ का डण्डे से मारने की सुनाई, और वह जगल में स्थान भी दिखाया जहां बाघ के साथ इनका युद्ध हुआ था। घटना का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है। बाघ ने गाय के बछड़े को मारने के लिए पकड रखा था। उसके आर्तनाद सुनकर बाघमारे और इनके साथी इधर दौड़े और ज्यों ही इन्होंने बछड़े को छुड़ाने का प्रयत्न किया तो उस बाघ ने बछड़े को छोड़कर शेषराव जी पर आक्रमण किया। शेषराव जी का पैर का पंजा बाघ के मुख में आ गया। शेषराव जी पहलवान थे ही उन्होंने बलपूर्वक अपने पंजे को भूमि पर टिका कर दबा दिया और मार-२ दण्डे उसका कचूमर निकाल दिया। बाघ के प्राण पखेरु उड़ गये। मरता-२ बाघ इनके पैर को बुरी तरह जख्मी कर गया। आर-पार दांत हो गये। जिसके निशान उनके पंजे पर अन्त तक शेष रहे। इसी प्रकार एक दूसरा बाघ भी इन्होंने डण्डे से ही मारा था। इन बाघों के मारने के कारण इनकी वीरता को चार चांद लग गये। बाघमारे उपाधि लोगों ने इनकी वीरता के कारण बिना मांगे ही प्रदान कर दी। अब तो इनका परिवार बाघमारे के नाम से सारे महाराष्ट्र तथा सम्पूर्ण आर्यजगत् में प्रसिद्ध हो चुका है। इस वीर ने अपने जीवन में अपने सेवा कार्यों के कारण जो यश और कीर्ति कमाई वह नीचे की पंक्तियों में पाठकों को पढ़ने को मिलेगी। श्री बाघमारे जी का आर्यसमाज निलङ्गा अन्य आर्यसमाजों से निराला ही रहा है।

इस समाज में व्यायामशाला अथवा अखाड़ा सदैव चलता रहा है। निलङ्गा आर्यसमाज का कोई सदस्य यदि आर्यसमाज में व्यायाम करने के लिए नहीं आता था तो उस समय प्रतिदिन २ आने जुर्माना देना पड़ता था। स्वयं शेषराव जी हजारों दण्ड बैठक प्रतिदिन करते थे। भाई बन्शीलाल जी का दायां हाथ बनकर आर्यसमाज का प्रचार दिन-रात सारे हैदराबाद राज्य में करते थे। इसी कारण छोटे-२ ग्रामों में भी इनके पुरुषार्थ से आर्यसमाजों की स्थापना हो गई थी। भाई बन्शीलाल ने दो गुरुकुल आर्ष पाठविधि के खोल रखे थे। उनमें भी श्री शेषराव जी सब प्रकार का सहयोग देते थे। इस प्रकार सारा जीवन आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार में ही बिताते थे। भाई बन्शीलाल की मृत्यु के पश्चात् आर्यसमाज के सारे कार्य का भार श्री बाघमारे जी के सिर पर पड़ गया। पुलिस एक्सन दिनों में भी श्री शेषराव जी ने खूब बढ-चढ कर भाग लिया। उस समय आर्यसमाजी परिवार सभी जेल में थे अथवा अपना घरबार छोड़कर हैदराबाद राज्य से बाहर आगये थे। सरदार पटेल को जिस प्रकार वीरता से हैदराबाद के आर्य वीरों ने सहयोग दिया उसका इतिहास तो लिखने के लिए एक विस्तृत पुस्तक चाहिए। पुलिस एक्सन से पूर्व हैदराबाद स्टेट के पचासों गांवों को जीतकर अधिकार में करने वाले इन्हीं आर्यों की वीर सेना थी। इन्हीं कारणों के कारण जब पुलिस एक्सन के पश्चात् हैदराबाद का राज्य नवाब के पंजे से निकलकर सरदार पटेल की कृपा से स्वतन्त्र भारत का अङ्ग बन गया तब मराठावाडे की जनता ने देशभक्त वीर शेषराव को एम. एल. ए. चुनकर राजनीतिक सेवा करने का सुअवसर प्रदान किया। आर्यसमाज की सेवा के कारण वे आर्य प्रतिनिधिसभा हैदराबाद के प्रधान चुने गये। और जब आर्य प्रतिनिधि सभा हैदराबाद तीन भागों में विभाजित हो गयी, उसी समय से आप आर्य प्रतिनिधि सभा महाराष्ट्र के प्रधान चले आ रहे थे। आप में एक विशेष गुण यह था कि समय आने पर आपने वर्ण आश्रम मर्यादा के अनुसार वानप्रस्थाश्रम में प्रवेश कर लिया था। तभी से आप आनन्दमुनि नाम से वैदिक धर्म के प्रचार में रत थे। आप अकेले ही नहीं बल्कि इष्ट मित्रों सहित वानप्रस्थी बन गये। लगभग एक दर्जन से अधिक इनके सगे सम्बन्धी मित्रगण वानप्रस्थी व संन्यासी बनकर रात दिन आर्यसमाज के प्रचार में अब भी जुटे हुए हैं। इन्होंने सच्चा आर्यसमाजी बनकर अपने सारे पौराणिक परिवार को ही कट्टर आर्यसमाजी बना डाला। इनकी बहन और धर्मपत्नी ने भी वानप्रस्थ आश्रम में प्रवेश करके सभी आर्य भाइयों के आगे आदर्श उपस्थित किया है। इनके छोटे भाई पुलिस में बहुत बड़े अफसर थे। श्री बापूराव बाघमारे अपनी पत्नी सहित वानप्रस्थी व संन्यासियों के सदृश वैदिक धर्म के प्रचार में जुटे हुए हैं। श्री आनन्दमुनि जी अनेक बार कन्या गुरुकुल नरेला में भी परिवार सहित पधारे। अजमेर निर्वाण शताब्दी में भी परिवार सहित बढ-चढ़ कर भाग लिया। महाराष्ट्र प्रतिनिधि सभा ने खूब बढ़-चढ़ करके सहयोग दिया। इनके छोटे भ्राता बापूराव जी बाघमारे सेवा करने के लिए एक मास पूर्व ही यज्ञ में पहुँच गये थे। अपनी इन सेवाओं के कारण वे स्वयं तो अमर हो ही गये साथ ही अपने परिवार व सगे सम्बन्धियों को भी अमर कर गये। उनका यह स्वप्न कि हम मारवाड़े में चालीस सुशिक्षित डाक्टर इञ्जीनियर वैद्यों को वानप्रस्थी व संन्यासी बनाकर घर-२ में आर्यसमाज को पहुँचा देंगे, अधूरा रह गया इसे पूरा करने की शक्ति उनके छोटे भाई बाघमारे को भगवान् प्रदान करें। यही सर्वशक्तिमान् ईश्वर से मेरी प्रार्थना है।

फूट डालो और राज करो

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक अध्यक्ष – वैदिक संस्थान, नजीबाद (उ. प्र.)

"नवभारत टाइम्स" के १५ मई के अंक में प्रथम पृष्ठ के आठवें स्तम्भ में "अल्प संख्यक आयोग की सिफारिस नामंजूर" शीर्षक से सूचना प्रकाशन हुई है कि अल्प संख्यक आयोग की इस सिफारिस को सरकार ने नामंजूर कर दिया है कि एक राष्ट्रीय एकात्मक व मानव अधिकार आयोग की स्थापना की जाय। आयोग का मत था कि इस तरह का आयोग राष्ट्रीय एकता व धर्म निरपेक्ष परम्पराओं को बढ़ावा देगा और अल्प संख्यकों सहित देश के सभी वर्गों के लोगों के मानवीय अधिकारों की रक्षा करेगा। यह रिपोर्ट लोक सभा के पिछले अधिवेशन में पेश की गयी थी।"

भारत के नेताओं को अपने राजनीतिक गुरु अंग्रेजों से विरासत में "फोड़ो और राज करो" की शिक्षा प्राप्त हुयी है। जिस दिन से भारत स्वाधीन हुआ है ऐसा एक भी उदाहरण नहीं दिया जा सकता जब अभागे भारत के स्वार्थी नेताओं ने फूट डालने के सूत्र का उपयोग न किया हो। चाहे वह जातिवादी प्रश्न हो, भाषायी प्रश्न हो अथवा धार्मिक प्रश्न हो।

ऐसे स्वार्थी नेताओं से यह आशा करना नितान्त मूर्खता है कि वह राष्ट्रीय एकात्मता और मानव अधिकार सम्बन्धी किसी विचार को सहन कर लेंगे। जो आयोग बनाया ही गया था फूट डालने तथा धार्मिक आधार पर पड़ी फूट की खाई को और चौड़ा करने के लिए—उसके द्वारा दिया गया "राष्ट्रीय एकात्मक तथा मानव अधिकार आयोग" का सुझाव उस आयोग के सदस्यों की सदाशयता तथा नितान्त राष्ट्रीयवादी मनोवृत्ति का परिचायक है, साथ ही सरकार द्वारा उसको अस्वीकृत किया जाना सत्ता सम्पन्न दल के सत्ता-पिपासु नेताओं की राष्ट्रघाती "फूट डालो और राज्य करो" की नीति का परिचायक है। ऐसी स्थिति में भारत-राष्ट्र में कभी राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास होगा और राष्ट्रीय एकता स्थापित होगी, यह आशा करना दुराशा मात्र है।

मानव अधिकारों की बात यदि भारत में चल निकले तो भारत के राष्ट्रीय स्तर के नेताओं में कोई बिरला ही होगा जो बचेगा अन्यथा सभी दण्ड के भागी होंगे। "मत्त्वा कर्माणि सीव्यति इति मनुष्यः" के अनुसार विचार कर कार्य करने वाले को मानव (मनुष्य) कहते हैं। जिस दिन भारत के मतदाता में विचार कर कार्य करने की योग्यता आयेगी उसी दिन भारत के सुख-सौभाग्य का उदय होगा। वास्तविक राष्ट्रीय मनोवृत्ति उज्ज्वल होकर सामने आयेगी और ठीक अर्थों में भारत 'स्वतन्त्र' होगा। कारण कि तब स्वकियों, अपनों के तन्त्र में होगा, अभी तो जन्म के भारतीय किन्तु मनोवृत्ति के परायों, परकीयों के तन्त्र में फंसा होने से "परतन्त्र" है।

अनमोल शिक्षाप्रद वचन

(स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती वेदप्रचार अधिष्ठाता दि० प्र० सभा)

१—किसी को कुसंग से हटाकर सत्संग की ओर ले जाना ही उसे जीवन दान देना है।

२—अगर किसी की सहायता करना चाहते हो तो उसे आलस्य प्रमाद से बचाने की कोशिश करो।

३—प्रत्येक सहायता का मूल्य पृथक् पृथक् है। सर्वश्रेष्ठ बहुमूल्य सहायता दूसरों को आत्मिक उन्नति की ओर ले जाना है।

४—जब तुम पर कोई भूल हो जाये तो क्षमायाचना मांगने में संकोच न करो।

५—जो अवगुण तुम्हारी उन्नति में बाधक है उसे अपने में से बहिष्कृत कर दो नहीं तो उन्नति का मार्ग रुक जायेगा।

६—तुम दूसरों की प्रसन्नता पर अपनी प्रसन्नता न्योछावर कर दो तो तुम परेशान कदाचित् नहीं होंगे।

७—आप अगर सत्य की ओर पग बढ़ाते चलेंगे तो जो उलझनें व बाधायें आयेंगी वह सभी धुंए के पहाड़ के समान विलीन हो जायेगी।

८—असत्य में बाहर से तो प्रसन्नता दृष्टिगोचर होती है परन्तु भीतर अशान्ति रहती है।

आर्यसमाज फूंसगढ में वेदप्रचार की धूम

फूंसगढ (इन्द्री) जिला करनाल के नव गठित आर्यसमाज का वार्षिक उत्सव २८, २९, ३० मई को समारोह पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के पूर्व उपदेशक पंडित धर्मचन्द्र विद्यालंकार के ओजस्वी व्याख्यान हुए। प० हरिश्चन्द्र आर्य, पं० हरलाल जी, पं० शेरसिंह, पं० सुमेरसिंह की भजन मण्डलियों के प्रभावशाली भजन हुए। २९ मई को दोपहर बाद हरयाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष आर्य नेता चौ० वेदपाल जी पधारे। उन्होंने कहा कि देश को ईश्वर भक्त और देश भक्तों की जरुरत है। उन्होंने आर्यसमाज फूंसगढ का विधिवत् उद्घाटन किया और पुस्तकालय के लिए ११०० रुपये का निजीकोष से अनुदान प्रदान करने की घोषणा की। गांव के ११ युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किये और कई युवकों ने शराब छोड़ने की महाघोर प्रतिज्ञा की। ब्रह्मचारी श्री रामस्वरूप के यौगिक खेल हुये और सांकल तोड़ना, सरिया आंख पर रखकर मोडना आदि प्रदर्शन हुये। आर्यसमाज फूंसगढ ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को ५०१ रु. वेदप्रचार में दान दिया।

मन्त्री आर्यसमाज

अकालियों ने आर्यसमाज मन्दिर जला डाला

उत्तेजित सिखों की भीड़ ने श्रीनगर में हजूरीबाग आर्यसमाज मन्दिर को आग लगाकर जला डाला। आर्यसमाज के मन्त्री श्री राजेन्द्र गुप्त भी झुलस गए, जिन्हें अस्पताल में दाखिल किया गया है।

उत्तेजित सिखों ने राष्ट्रविरोधी तथा केन्द्र सरकार के खिलाफ नारे लगाते हुए आर्यसमाज मन्दिर पर हमला कर आग लगा दी। इस से पहले उन्होंने तोड़फोड़ भी की। सनातन धर्म भवन को भी आग लगा दी गई। उपद्रवियों में कुछ ऐसे तत्व भी थे, जो पाकिस्तान समर्थक नारे लगा रहे थे।

आर्यसमाज के इतिहास का विमोचन

सार्वभौम आर्य महासम्मेलन, लन्दन के प्रधान पण्डित सत्यदेव भारद्वाज वेदालंकार शनिवार ३० जून १९८४ को सायंकाल ५ बजे आर्य समाज (अनारकली), मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में आर्यसमाज का इतिहास (सम्पादक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार) के अब तक प्रकाशित हुए तीनों भागों को औपचारिक रूप से विश्व की आर्य जनता की सेवा में समर्पित करेंगे। साथ ही देश के अनेक मान्य विद्वान् संन्यासी एवं आर्य नेता आर्यसमाज का विस्तृत इतिहास सम्पादित करने की इस महत्त्वपूर्ण योजना की सफलता के लिए आशीर्वाद प्रदान करेंगे। सानुरोध प्रार्थना है कि आप इष्ट मित्रों के साथ इस समारोह में सम्मिलित होने की कृपा करें।

दर्शनाभिलाषी

सुशीलादेवी शास्त्राणी अमरनाथ विद्यालंकार रामनाथ सहगल
सत्यदेव विद्यालंकार योगीन्द्रनाथ अवस्थी क्षितीशकुमार वेदालंकार
हरिप्रकाश मनोहर विद्यालंकार अजय मल्ला

आर्य स्वाध्याय केन्द्र
ए-१/३२, सफदरजंग इन्कलेव, नई दिल्ली-२९
फोन : ६०१५३६

शोक प्रस्ताव

म० छोटूराम प्रधान आर्यसमाज आसोदा जिला रोहतक का १-६-८४ को निधन हो गया। उनकी आयु ९२ वर्ष की थी। उन्होंने ५० वर्ष तक आर्यसमाज की सेवा की।

उपमन्त्री वेदपाल

शराब विरोधी भजन

दारू जैसी चीज बुरी ना तज दो इस बीमारी ने।
बच्चों तक का खून पी लिया देखो इस हत्यारी ने॥
लहू पीकर मदिरा रूपी यहां मन बहलाया जाता है,
धी बेटी को बेच के इज्जत ब्याज चुकाया जाता है,
लुच्चे-गुण्डे गिरे नीच को घर बैठाया जाता है;
दो घूंट पीकर दारू उसे खास बताया जाता है,
बेटी तक की शान गई इस पीने की लाचारी में।
बच्चों तक का……

सत्तर किले वालों को बर्तन गिरवी धरते देखा है,
दारू पीने वालों को यहां भूखे मरते देखा है,
सातबास में इज्जत थी उसे पीकर गिरते देखा है,
उनके बच्चों को कपड़े बान नंगे फिरते देखा है,
थी इज्जत वाली क्यूंकर पत्थर पड़गये अकल तुम्हारी में॥
बच्चों तक का……

तुम बतलाओ इस दारू में कुणबा घाणी हुई के ना,
एक पियक्कड़ नर के कारण कुल की हानि हुई के ना,
बिना बात के बने बतंगड़ बड़ी कहानी हुई के ना,
सच्च बतलाओ पीने से कुछ आनी जानी हुई के ना,
दो भाइयों के जूत बजादे खो दे रिश्तेदारी ने,
बच्चों तक का……

पीनी प्यानी छोड़ दियो अब मत ज्यादा नुकसान करो,
हाथ जोड़ के अर्ज करै हम बच्चों पर अहसान करो;
फूकण ने धन कढ़ते आवे ज्यादा हो तो दान करो,
किसे धर्म में दारू पीना लिखा हो तो प्रमाण करो;
कहै इन्द्रसिंह दलाल छोड़ दो पीनी गांव कवारी मे॥
बच्चों तक का……

प्रेषक—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी

सौ वर्ष से पहले की बात

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

थियासोफिकल सोसायटी के प्रधान कर्नल अल्काट ने अमेरिका से १८ फरवरी सन् १८७८ को पत्र स्वामी दयानन्द सरस्वती के नाम लिखा था। इस पत्र के कुछ अंश पाठकों की जानकारी के लिए उद्धृत किये जाते हैं।

आध्यात्मिक ज्ञान के जिज्ञासु कुछ अमेरिकन तथा अन्य विद्यार्थी अपने का आपके चरणों में समर्पित करके यह निवेदन करते हैं कि आप इनके मनों में ज्ञान का प्रकाश करें। तीन वर्ष हुए उन्होंने अपनी एक संस्था बनाई थी, जिसका नाम थियोसोफिकल सोसायटी है। क्योंकि इन लोगों ने ईसाई धर्म में ऐसी कोई बात नहीं पाई जिससे बुद्धि और तर्क का सन्तोष हो सके। इन लोगों ने साथ में यह भी देखा कि ईसायत के विकृत सिद्धान्त किस प्रकार बुरे प्रभाव उत्पन्न कर रहे हैं। उसके पुरोहित (पादरी) कितने दम्भी, लोभी और कामुक हैं और ईसाई जगत् का कितना पतन हो गया है। वे अब ज्ञान के प्रकाश के लिए पूर्व दिशा की ओर देख रहे हैं।

थियोसोफिकल सोसायटी के इस आचरण की सहासिकता के कारण जनता का ध्यान हमारी ओर आकर्षित हुआ है। हमें केवल सहासिक युवकों की ही आवश्यकता नहीं है, अपितु बुद्धिमान् और प्रतिष्ठित व्यक्तियों की सहायता की अपेक्षा है। इस कारण हम आपके चरणों में उसी प्रकार आते हैं जैसे पिता के चरणों में पुत्र आता है और आपसे प्रार्थना करते हैं कि हमारे गुरु हमारी ओर देखिए और हमें बताइये कि हमें क्या करना चाहिए? आप हमें परामर्श दीजिए और सहायता प्रदान कीजिए। हमारी सोसायटी के सदस्यों की पहुंच समाचार पत्रों तक है। हम चाहते हैं कि समस्त ईसाई जगत् प्राच्य जगत् (भारत) के मन्तव्यों और विचारों का उनके वास्तविक रूप में प्रचार करे। प्राच्य ज्ञान के तथाकथित विद्वान् संस्कृत एवं अन्य प्राचीन भाषाओं को पढ़कर वेदों तथा अन्य पवित्र ग्रंथों का जिस प्रकार अनुवाद करते हैं, उसमें उनके अर्थों का अनर्थ हो जाता है। हम चाहते हैं कि सुयोग्य पण्डितों द्वारा भाष्य तथा शुद्ध अनुवाद कराके इन्हें मुद्रित और प्रकाशित किया जाए।

हम अपने आपको आपके मार्ग निर्देशन में रखते हैं जिस पवित्र उद्देश्य की पूर्ति में आप संलग्न हैं, सम्भवतः उसमें हम प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप में आपके सहायक हो सकेंगे। महोदय!......हमारे अन्तःकरण में देखिए, आप पाएंगे कि हमारा कथन सत्य है। देखिए, आपकी सेवा में हम नम्रता से प्रस्तुत हो रहे हैं, अभिमान से नहीं। हम आपका परामर्श मानने के लिए और आप द्वारा प्रदर्शित मार्ग पर चलकर कर्त्तव्य पालन के लिए तैयार हैं

२१ अप्रैल १८७८ को स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इस पत्र का जो उत्तर अल्काट को भेजा वह संस्कृत में था। उप पत्र का सारांश इस प्रकार है—

सर्वशक्तिमान् ईश्वर की कृपा से पांच हजार वर्ष पश्चात् अब पुनः अमेरिका और भारत में सम्बन्ध स्थापित हो रहा है। मुझे आपके साथ पत्र व्यवहार करना सहर्ष स्वीकृत है। अपनी सामर्थ्य के अनुसार आपको सहायता देता रहूंगा। ईसाई धर्म के विषय में जो विचार आपने प्रकट किए हैं मेरे भी वही विचार हैं। जैसे कि केवल एक परमेश्वर हैं, वैसे ही मनुष्य मात्र का एक धर्म होना चाहिए। यह एक धर्म यह प्रतिपादित करता है कि एक ईश्वर की उपासना की जाए, उसकी आज्ञाओं का पालन किया जाए। सबका उपकार किया जाए और सबके प्रति न्यायपूर्ण पक्षपात रहित व्यवहार किया जाए। यह धर्म सनातन वेद विद्या देने वाला है और सभी को इसका अनुसरण करना चाहिए। परमेश्वर से मेरी प्रार्थना है कि उसकी कृपा तथा मनुष्यों के प्रयत्न द्वारा यह सत्य सनातन वैदिक धर्म सब मनुष्यों में स्थापित हो जाए।

चित्त और संस्कारों का सम्बन्ध

बहन कविता आर्या ने स्वामी रामेश्वरानन्द जी के लेख के आधार पर यह जानने की इच्छा प्रकट की है कि संस्कारों का प्रभाव चित्त पर रहता है अथवा चेतन आत्मा पर। श्रद्धेय स्वामी जी तथा आर्य विद्वानों से निवेदन है कि चित्त, संस्कार तथा उनका प्रभाव विषय पर सर्वहितकारी में अपने मार्जित विचार भेजने का अनुग्रह करें।

सुदर्शनदेव आचार्य

सितम्बर—३ (सम्भवतः) सर्वहितकारी में महर्षि दयानन्द के विचार शीर्षक के अन्तर्गत श्रद्धेय स्वामी रामेश्वरानन्द जी की टिप्पणी पढ़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ जिसमें स्वामी जी ने परोपकारी पत्रिका में व्याख्यात अग्नेनय—मन्त्र की व्याख्या की समालोचना में अपने उद्गार प्रकट किए हैं। कोई शंका अथवा आपत्ति उस विषय में उठा रही हूँ—ऐसा न समझें, अपितु केवल जिज्ञासा के वशीभूत हो यत्किञ्चित् निवेदन किया चाहता हूं। आशा है श्रद्धेय स्वामी जी इस हेतु समाधान प्रस्तुत कर अनुगृहीत करेंगे।

जहां तक चित्त पर जन्म जन्मान्तरों के संस्कारों के अंकन का प्रश्न है, वहां विचारणीय है कि परोपकारी ने ऐसा तो नहीं लिखा कि उन संस्कारों के विषय में मैं जानता भी हूँ। व्याख्याकार तो चित्त पर संस्कारों का अंकित होना इस मान्यता के आधार पर कह रहा है कि वर्तमान जीवन पुरुषार्थ और संस्कारों का परिणाम है।

एक वर्ग ऐसा है जो केवल वर्तमान कार्यशक्ति में विश्वास करता है, जैसे कम्युनिस्ट भाई व दूसरा वर्ग वह भी है जो केवल भाग्यवादी है। इस वर्ग में भारत भर के अनेक बन्धु आ जाते हैं। इन दोनों से परे आर्यसमाज ही एक ऐसा वर्ग है जो न तो केवल पुरुषार्थ की बात कहता है और न भाग्य (हमारे शब्दों में कर्मफल) की। वैदिक मर्यादानुसार पुरुषार्थ फल के साथ ही साथ पूर्वकृत कर्मों के अनुसार लाभ वा हानि की प्राप्ति होती है।

हम अपने पूर्वकृत कर्मों तदनुसार संस्कारों इत्यादि को नहीं जानते परन्तु उनका प्रभाव तो वर्तमान जीवन पर ईश्वर प्रदत्त होता ही है। स्व० महात्मा नारायण स्वामी जी ने 'मृत्यु और परलोक' में तो ऐसी भी चर्चा की है कि कई बार हमें असम्बद्ध प्रतीत होने वा हमारे लिए अज्ञात विषयों से सम्बन्धी स्वप्न आते हैं। वे निरर्थक भी हो सकते हैं किन्तु ऐसा हमारे पूर्वजन्म के संस्कारों के प्रभाव के परिणामस्वरूप भी हो सकता है। अब चेतन पर उनका प्रभाव वहां चर्चित है। कभी कभी स्वप्नों का सत्य होना भी केवल कोरी गप्प है—ऐसा नहीं माना अपितु इसकी पुष्टि ही की गई है।

सृष्टि-रचनाक्रम की दृष्टि से देख तो मूल प्रकृति महदादि तत्त्व और तदुपरान्त षोडश विकार इत्यादि क्रम से यही स्पष्ट है कि चित्त जड़ है। इस कारण आपका यह कथन समीचीन प्रतीत होता है कि जड़ प्रभावशून्य होते हैं।

मेरा कहने का आशय केवल इतना भर है कि संस्कारों के प्रभाव को हम झुठला नहीं सकते। यद्यपि यह सत्य है कि वे हमें स्मरण नहीं रह सकते क्योंकि स्मरण का सम्बन्ध बुद्धि से है, जो जड़ है, तथापि ईश्वरीय विधानासार उन संस्कारों के प्रतिफल में भी लाभ हानि या अन्य भोग्य हमें प्राप्त होते हैं, साथ ही वर्तमान में कृत पुरुषार्थ भी एक विशिष्ट व मुख्य भूमिका अभिनीत करता है। इतना तो सभी वैदिक धर्मी जानते-मानते हैं। इस ज्ञान परम्परा को आधार बनाकर परोपकारी का व्याख्याकार चित्त पर मलिन संस्कारों की बात कह रहा प्रतीत होता है—ऐसा मेरा विचार है। हां, शब्द प्रयोग में चूक लगती है। आपसे आग्रह है कि अगर कहीं अनुचित अप्रासंगिक वा आधारहीन कह गई हूं तो उसे निर्दिष्ट कर इस विषय में मेरी शंका का समुचित समाधान कीजिएगा। आपकी महती कृपा होगी। यह पुनः निवेदन है कि यह चर्चा 'आपत्ति' रूप में मान्य न होकर केवल 'जिज्ञासामात्र' के रूप में स्वीकार्य हो।

कविता आर्या यमुनानगर

आर्यजगत् की गतिविधियां—

बहिन लक्ष्मीदेवी अभिनन्दन-ग्रन्थ

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होना स्वाभाविक है कि हरयाणा की प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी दान वीराङ्गना बहिन लक्ष्मीदेवी (रोहणा) के अभिनन्दन ग्रन्थ का सम्पादन कार्य प्रारम्भ हो गया है। आदरणीय बहिन जी ने अपना जीवन समाज को समर्पित करके समाज सेवा का पुण्य कार्य किया है। अतः जिन बहनों तथा भाइयों का बहिन जी से विशेष सम्पर्क रहा है वे अपने विचार लेख, कविता, शुभकामना आदि रूप में यथाशीघ्र लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का अनुग्रह करें। आर्य विद्वान् तथा आर्य विदुषियां नारी जाति के सम्बन्ध में सार-गर्भित लेख भी भेज सकती हैं।

सुदर्शनदेव आचार्य
सम्पादक
बहिन लक्ष्मीदेवी अभिनन्दन-ग्रन्थ
८०/३२ हरिसिंह कालोनी, रोहतक

कन्या गुरुकुल गणियार में कन्या छात्रावास

शिलान्यास समारोह

दिनांक ३ जून १९८४ को कन्या गुरुकुल गणियार (महेन्द्रगढ) में कन्या छात्रावास शिलान्यास समारोह बड़े उल्लास पूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ। प्रातःकाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री डा. सुदर्शनदेव आचार्य ने एक बृहद् यज्ञ कराया। श्री बनवारीलाल हितैषी तथा कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के भाषण एवं भजन हुए।

तपोमूर्ति स्वामी खेतानाथ जी कन्या छात्रावास का शिलान्यास वेदमन्त्रों के मधुर उच्चारण के साथ किया। गुरुकुल की आचार्या बहिन कलावती शास्त्री ने गुरुकुल का भावी कार्यक्रम तथा गुरुकुल के अधि-कारियों का परिचय कराया। ब्रह्मचारी ओमस्वरूप, महाशय सुखराम, छोटेलाल ठेकेदार आदि महानुभावों ने गुरुकुल की तन, मन, धन से सहायता करने का संकल्प दोहराया। इस संस्था के लिए रेवाड़ी क्षेत्र के आर्यों में बड़ा प्यार और उल्लास है।

राजबहादुर
मन्त्री कन्या गुरुकुल गणियार

पुरोहित की आवश्यकता

आर्यसमाज रामनगर रोहतक रोड़ जीन्द के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। शास्त्री/आचार्य/सिद्धान्तशिरोमणि आदि योग्यता अपेक्षित है। आवास, बिजली, पानी आदि की सब व्यवस्था निःशुल्क है। मासिक वेतन योग्यता के अनुसार दिया जायेगा। अधो-हस्ताक्षरी से पत्र व्यवहार करें अथवा व्यक्तिगत सम्पर्क करें।

इन्द्रसिंह शास्त्री
प्रधान—आर्यसमाज रामनगर, जीन्द

आर्य वीर दल शिविर नरवाना

हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल के तत्वावधान में आर्यवीरों का एक शिविर आर्यसमाज नरवाना में २७-५-८४ से ३-६-८४ तक लगाया गया। इसमें लगभग ५० आर्य वीर शामिल हुए। श्री भूपेन्द्र जी तथा श्री बलवानसिंह इन दो शिक्षकों ने आर्य वीरों को योगासन, लाठी चलाना, स्तूप निर्माणादि के आकर्षक खेल सिखाये। हरयाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल के उत्साही मन्त्री श्री वेदप्रकाश जी आर्य तथा जिला जीन्द के मण्डलपति प्रो० ओमकुमार आर्य ने आर्यवीरों को बौद्धिक विषयों की सामग्री प्रदान की तथा उन्हें चरित्र निर्माण, उत्तम संस्कार ग्रहण करने को प्रेरित किया। ३-६-८४ के समापन समारोह में स्वामी योगानन्द जी (कालवा) ने भी आर्य वीरों को सम्बोधित किया। स्था-नीय आर्यसमाज के सभी पदाधिकारियों स्त्री समाज तथा आर्य स्कूल के प्राचार्य श्री भल्ला व प्रवक्ता आचार्य विजयसिंह जी ने इस आयोजन को सफल बनाने में पूरा सहयोग दिया। आवास, भोजन आदि की व्यवस्था अत्यन्त ही उत्तम एवं सराहनीय थी। आर्य वीर अच्छे संस्कार लेकर शिविर से विदा हुये। उपमण्डलपति व नरवाना समाज के कर्मठ मन्त्री श्री रामकुमार आर्य ने आश्वासन दिया कि ऐसे उपयोगी शिविर साल में दो बार लगवाने की कोशिश करेंगे।

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री को मातृ शोक

डा० रणजीतसिंह जी की पूज्या माता माड़ीदेवी जी का २ जून को ८१ वर्ष की आयु में ग्राम नारनौन्द जिला हिसार में निधन हो गया। आप दो ढाई वर्ष से बीमार थी। आपने आर्यसमाज तथा समाज सुधार कार्यों में बहुत ही लग्न से कार्य किया है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें और उनके परिवार को इस वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

सत्यवीर विद्यालंकार
सभा उपमन्त्री

शोक प्रस्ताव

रविवार २१ जेष्ठ सम्वत् २०४१ तदनुसार ३-६-८४ आर्यसमाज शाहबाद मारकण्डा जिला कुरुक्षेत्र के साप्ताहिक सत्संग में श्री विद्या-सागर मन्त्री आर्यसमाज की मृत्यु पर शोक प्रकट करके प्रस्ताव पारित किया तथा उनके सामाजिक कार्यों को सराहना करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गई। दिवंगत आत्मा की सद्गति हेतु भगवान्‌से प्रार्थना की गई। उनके दुःखी परिवार के सभी सदस्यों तथा सम्बन्धियों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

जीवनदास प्रधान

अपने बच्चों को धार्मिक बनाये

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षा में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसके लेखक सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

कन्या गुरुकुल महाविद्यालय खरल (जीन्द) में प्रवेश आरम्भ

आपको सूचित किया जाता है कि कन्या गुरुकुल खरल में १५ जून से उच्च विद्यालय में अर्थात् प्रथमा से दशम श्रेणी तक प्रवेश आरम्भ हैं एवं दसवी के पश्चात् ग्याहरवीं (Prep Art), विशारद शास्त्री के प्रवेश ३० जून तक चलेंगे।

उच्च विद्यालय तक स्थाई मान्यता हरयाणा बोर्ड से प्राप्त है। शास्त्री की श्रेणीयां चार वर्ष से प्राईवेट ही चल रही हैं। परीक्षा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की होती है। सभी परीक्षा परिणाम उत्तम रहते हैं। खेलों का भी विशेष प्रबन्ध है। छात्रावास सुचारु रूप से चल रहा है। आरम्भ में प्रवेश शुल्क १६३ रु० लगता है फिर प्रतिमाह ५० रुपये भोजन शुल्क लगता है। प्रवेश हेतु विशेष सम्पर्क आचार्या से करें।

बससेवा—नरवाना से खरल के लिए बस प्रातःकाल साढे ६ बजे, साढे ७ बजे, दस बजे। दोपहर को १२ बजे, ढाई बजे और सायकाल को साढे पांच बजे जाती हैं। सभी बसें गुरुकुल के पास ही आती हैं।

आचार्या ब्र० दर्शना देवी

गुरुकुल करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से स्थायी मान्यता प्राप्त) में नये छात्रों का प्रवेश १८ जून से आरम्भ है। सरकारी स्कूलों में पढ़ाये जाने वाले गणित अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ धर्मशिक्षा भी अनिवार्य रूप में पढ़ाई जाती हैं।

निःशुल्क शिक्षा, हिन्दी माध्यम, योग्य एवं परिश्रमी अध्यापक, स्वच्छ वातावरण, भोजन-दूध-आवास की मात्र १० रुपये मासिक पर समुचित व्यवस्था इस गुरुकुल को अपनी विशेषतायें हैं। प्रवेश के लिये छात्र का हिन्दी माध्यम से कक्षा ५ पास होना जरुरी है।

आचार्य
गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय
करतारपुर, जिला जालन्धर (पंजाब)

हम आर्य बन न सके

किसी यतीम को आंखों में हम बिठा न सके।
चुरा ली आंख कि दिल में कोई समा न सके॥
किसी गरीब को ढारिस जरा बन्धा न सके।
किसी भी रोते हुए को कभी हंसा न सके॥
अछूत जो थे, उन्हें हम गले लगा न सके।
किसी भी बिछड़े हुए मित्र को मिला न सके॥
जो आए राह पे आगे कदम बढ़ा न सके।
रुके तो ऐसे रुके कि पांव तक हिला न सके॥
किए वे काम कि दुनियां को मुंह दिखा न सके।
दिये बुझा तो सके हैं मगर जला न सके॥
जो अपना फर्ज था उसको कभी निभा न सके।
हम आर्य बन न विश्व को बना न सके॥
अमल के सांचे में ढलना हमें नहीं आया।
सदा बहार से खेले बहार ला न सके॥
हजार हैफ ! युवा काल मे भी हम ऐ 'नाज'
लगी थी आग जो सीने में वह बुझा न सके॥

'नाज' सोनोपती

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ३० ७ जुलाई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

असर होने तक

प्रभाष जोशी सम्पादक जनसत्ता

सिखों के पांच प्रमुख ग्रंथियों ने अपने समुदाय और सरकार को पशोपेश में डाल दिया है। पंद्रह जुलाई को जो शहीदी दिवस मनाने का आह्वान उन्होंने दुनियां भर के सिखों से किया है उसके शहीद कौन हैं? वे जो अमृतसर में सैनिक कार्रवाई में मारे गये। यानी सन्त भिंडरां वाले, सेना से निकाले गए जनरल शुबेगसिंह, मरजीवड़ों की फौज के नायक अमरीकसिंह, बब्बर खालसा के लोग और वे तमाम आतंकवादी जिन्होंने स्वर्ण मन्दिर को पंथ के नाम पर देशी-विदेशी हथियारों का अड्डा, लड़ाई का मोर्चा और देशद्रोह का गढ़ बना दिया था।

कोई महिने भर से पूछा जा रहा है और अभी तक इसका जवाब नहीं मिला है कि स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता किसने भंग की? आतंकवादियों ने या सेना ने? सारी दुनिया को अब मालूम है कि आतंकवादी वहां क्या करते थे और सेना ने वहां क्या किया। सिर्फ इसलिए कि वे सिख थे आतंकवादियों के कारण स्वर्ण मन्दिर अपवित्र नहीं हुआ था और सिर्फ इसलिये कि सेना भारतीय थी वह अपवित्र हो गया। हम जानते हैं कि सिखों की धार्मिक भावनाओं को चोट पहुंची है और घायल लोगों से ज्यादा नीर-क्षीर विवेक की उम्मीद नहीं की जा सकती।

लेकिन एक समाज समझदारी के सवाल से इतनी बुरी तरह आंख मींच कर देश और दुनिया की सहानुभूति कैसे पा सकता है? सभी धर्मों के तीर्थों की पवित्रता के कुछ मानदंड हैं। यह कैसे हो सकता है कि उस धर्म के लोग तो उन मानदण्डों को बिना हिचक तोड़ें और दूसरे उनका पालन करें? जो मानते हैं कि सेना के स्वर्ण मन्दिर में घुसने से उसकी पवित्रता भंग हुई वे अभी तक बता नहीं पाए हैं कि कैसे?

अब यह फतवा दे दिया गया है कि सैनिक कार्रवाई में मरे लोग शहीद थे जिनकी याद में दुनियां भर के सिखों को एक दिन मनाना है। एक सिख सेनापति ने पिछली एक शाम गुस्से से पूछा—शहीद कौन है? मेरा वह सैनिक जो हरमंदिर साहिब से चीनी मशीनगनों की गोलियों से इसलिए छलनी हो गया कि उसे जवाबी गोली नहीं चलानी थी? या वह आतंकवादी जो हरमंदिर साहिब में घुसकर गुरुग्रंथ साहिब की जगह से गोलियां चला रहा था? स्वर्णमन्दिर की पवित्रता की रक्षा करते हुए कौन शहीद हुआ? मेरा सैनिक या वह आतंकवादी?

या जैसा कि प्रीतमसिंह ने इंडियन एक्सप्रेस में चिट्ठी लिखकर पूछा है—ज्ञानी प्रतापसिंह, डो० आई० जी० अटवाल, पत्रकार सुमीतसिंह सांसद विश्वनाथ तिवारी और सम्पादक रमेशचन्द्र और उनके जैसे सैंकड़ों बेकसूर सिख और हिन्दू भी आतंकवादियों की गोलियों से मरे हैं। अब उनकी बात कोई क्यों नहीं करता? इनके परिवार वाले भी पूछ सकते हैं कि शहीद कौन हैं? ये निहत्थे बेकसूर लोग या वे कायर जो चोरी चुपके आकर मशीनगनों से अन्धा-धुन्ध गोलियां चला कर भाग गए।

आम लोगो के मन में शहीद वह है जो कोई महान् कार्य करता हुआ नायक की तरह जान दे दे। क्या आतंकवादी इस कसौटी पर खरे उतरेंगे? यह ठीक है कि मरने के बाद भिंडरांवाले उन लोगों के लिए भी संत हो गए हैं जो पहले उन्हें सिरफिरा हत्यारा मानते थे। लेकिन क्या वे अब यह भी मान लेंगे कि जिन सिखों की आतंकवादियों ने हत्या की वे सब पन्थ से गद्दारी कर रहे थे? और अगर मरने के बाद सन्त भिंडरांवाले और उनके चेले शहीद बन गए तो वे क्यों नहीं जो आतंकवादियों की गोलियों से मरे? १५ जुलाई के शहीदी दिवस पर उनको याद क्यों नहीं की जाए?

शहीदी दिवस के आह्वान ने सेना और उसके बाहर के भी सिखों को दो फाड़ कर दिया है। मुख्य ग्रन्थियों को मालूम है कि भारतीय सेना में जो दस लाख सैनिक और अफसर हैं उनमें से एक लाख हैं। यानी भारतीय सेना के दस प्रतिशत लोग सिख हैं। इन्हीं में वे लगभग दो हजार रंगरूट शामिल है जो स्वर्ण मन्दिर मे सेना के घुसने की खबर पाकर गुस्सा होकर अमृतसर की तरफ भागे और इन्ही में लेफ्टिनेंट जनरल दयाल और ब्राड़ और दूसरे सैनिक भी हैं जिन्होने स्वर्ण मन्दिर की कार्रवाई में भाग लिया। अगर सैनिक कार्रवाई में मारे गए शहीद हैं तो जो सेना में हैं वे क्या हैं?

ये लोग सेना में कोई जबरदस्ती अपनी मर्जी के खिलाफ और भाड़े के टट्टू के नाते नहीं गए हैं। ये पुश्तैनी सैनिक हैं और सेना में आकर देश के लिए लड़ना इनके लिए गौरव का जीवन जीना है। ये भी सिख के नाते स्वर्ण मन्दिर को पवित्र और गरिमामय देखना चाहते हैं और इनमें से ज्यादातर मानते हैं कि उनके सबसे बड़े तीर्थ को पवित्रता आतंकवादी भंग कर रहे थे जो सेना ने वापिस स्थापित की। ये कैसे मानेंगे कि आतंकवादी शहीद थे और उनके अपने सिख सैनिक नहीं जिन्होंने गोलियां खाई पर हरमंदिर साहिब पर गोलियां नहीं चलाई। सेना के प्रवेश से स्वर्ण मन्दिर अगर अपवित्र हुआ और उसकी कार्रवाई से मरे लोग शहीद हैं तो जो सिख सेना में हैं और जिन्होंने कार्रवाई में भाग लिया वे अपने आपको कहां और क्या मानें?

सिख भारत की आबादी के कुल दो प्रतिशत हैं। लेकिन अगर तीनों सेनाओं में सिखों की गिनती की जाए तो सात भारतीय सैनिकों में से एक सिख है। यानी आबादी के दो प्रतिशत सिखों का सेना में प्रतिशत लगभग १५ है। अकाली दल और दूसरी सिख संस्थाएं भी मांग करती रही हैं कि यह प्रतिशत और बढाया जाना चाहिए। सिखों को देश अपनी सैनिक भुजा मानता रहा है। सिर्फ इसलिए नहीं कि वही लड़ने वाले लोग हैं। देश में आखिर राजपूत हैं जो खालसा की स्थापना के सैंकड़ों साल पहले से सेना में रहते आए हैं और जिनका पेशा और धर्म ही देश की रक्षा करना है। मराठे हैं, जो गुरिल्ला युद्ध में मुगलों और अंग्रेजों से जूझते रहे जिन्होंने राज्य कायम किया, दिल्ली में बोलबाला रखा व पानीपत तक जाकर लड़े। आंध्र के लोग हैं जो लड़ने में किसी से कम नहीं हैं। हरयाणा के जाट हैं, गुजरात के गुजर हैं और कई लोग हैं जो अंग्रेजों की 'मार्शल रेस' वाली थ्योरी को झूठी साबित कर चुके हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शराब से सर्वनाश

शराब से भरतपुर राज्य का सर्वनाश

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

भरतपुर राज्य जाति, धन, सम्पदा, बल एवं प्रताप आदि वैभव से परिपूर्ण था। उस वैभव के समय डोग के प्रसिद्ध महलों के कारीगरीपूर्ण भवन बने थे। ये महल समस्त भारत में अपने सौन्दर्य के लिए परम विख्यात हैं। महलों के फव्वारों को देखकर अंग्रेज इन्जीनियरों का भी शिर भारतीय शिल्पकारों की जल कल क्रिया विज्ञान कुशलता के आगे श्रद्धा से झुक जाता है।

महाराजा सूरजमल की शूरवीरता से प्रभावित होकर उस समय का प्रसिद्ध फ्रांसीसी तोपची समरू अवध नवाब की नौकरी छोड़ अपनी सेना तथा तोपों सहित महाराजा की सेवा में आ गया था। सूरजमल ने फर्रुखनगर, रेवाड़ी और बहादुरगढ आदि स्थानों को अपने अधिकार में कर लिया था, और उनने दिल्ली राजधानी में अपने को फौजदार (सेनापति) नाम से घोषित किए जाने के लिए प्रस्ताव किया। झगड़ा बढ गया। महाराजा सूरजमल ने ससैन्य दिल्ली पर चढाई कर दी और अपनी सेना के डेरे शाहदरा में डाल दिए। एक दिन महाराजा सूरजमल थोड़े से अश्वारोहियों के साथ बादशाह के सुरक्षित जंगल में शिकार खेलने गये। वहाँ किसी प्रकार मुगलों को पता चल गया, बड़ी संख्या में उनकी सेना आ गई, उन्हें घेर लिया और मुगलों के छलबल से महाराजा सूरजमल अपने साथियों सहित वीर-गति को प्राप्त हुए।

सुजान सूरजमल महान् प्रतापी राजाओं की पंक्ति में नीतिज्ञ धर्मज्ञ तथा लोक व्यवहार में कुशल थे। अपने पूर्वज वीरों को सदैव चिरंजीव रखने का कार्य अपने पीछे छोड़ गये। उनकी अटल कीर्तियावत् चन्द्र सूर्य बनी रहेगी। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र नाहरसिंह ने उसी समय दिल्ली पर चढ़ाई की, किन्तु विजयश्री प्राप्त नहीं हुई। वे भरतपुर लौट आवे।

उनके पश्चात् उनके पुत्र जवाहरसिंह सिंहासन पर बैठे। यह वीर तो अपने पिता से भी अधिक था, किन्तु उनके समान नीति-निपुण नहीं था।

महाराजा जवाहरसिंह

महाराजा जवाहरसिंह स्वभाव के उग्र और हठी थे। उन्होंने अपने पिता का बदला लेने के लिए बहुतबड़ी सेना केसाथ दिल्ली पर चढ़ाई कर दी और दिल्ली को खूब जी भरकर लूटा और स्मारक रूप में अष्टधाती फाटक - किवाड़ भरतपुर ले गये, जो भरतपुर दुर्ग के उत्तरीय फाटक पर लगे हैं। मल्हारराव के धोखा देने के कारण सन्धि हो गई। दिल्ली से धन-धान्य लूटकर भरतपुर लौट आये। महाराजा जवाहरसिंह ने अपने पिता के राज्य का विस्तार ही किया किन्तु जयपुर राज्य से युद्ध होने के कारण दोनों राज्यों की बड़ी हानि हुई। जयपुर के राजा माधोसिंह की तो युद्ध समाप्ति के पांचवें दिन मृत्यु हो गई। महाराजा जवाहरसिंह १७६७ ई० में एक भेद द्वारा धोखे से मार दिये गये। महाराजा जवाहर सिंह के कोई सन्तान नहीं थी अतः उनके छोटे भाई रतनसिंह डोग में उनकी राजगद्दी पर बैठे।

महाराजा रतनसिंह

इन्होंने ९-१० मास राज्य किया। ये एक अति रसिक वृत्ति के मनुष्य थे। इनको नाच-रंग और शिकार का अधिक व्यसन था। होली के दिनों में एक लाख मन गुलाल बनवाकर दो महिने तक नाच रंग में मस्त रहते थे। मानो जहां इनके पूर्वजों ने रण-रंग में बारूद के धूयें से बादल काले किए थे, वहां यह रंग रेलियों में गुलाल उड़ाकर बादल लाल करके रंग बदल रहे थे। वैसे तो वीर वंश में होने के कारण महाराजा रतनसिंह वीर भावना के थे, किन्तु कुसंग के कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया था।

राज्य की ओर उनका इतनी ही देर ध्यान जाता था कि जितनी देर उन्हें कुसंगियों से छुटकारा हो जाता था। इस प्रकार के मनुष्य उन्हें सूर्य को बादलों की भांति घेरे रहते थे और विवेक बुद्धि से शासन करने के स्थान पर मनोरंजन और कुशासन की क्रियायें की जाती थी। जो राजा स्वस्थचित्त होकर अपने राज्य के हानि लाभ को नहीं विचारेगा, स्वार्थियों द्वारा उसकी हानि हो जाना साधारण बात है।

इसे सभी लेखकों ने अयोग्य और व्यभिचारी लिखा है। सुरा और सुन्दरी के चक्र में आकर इसने भरतपुर राज्य को रसातल को ओर चालू कर दिया। यह बहुत ही निर्बल शासक था। यदि उस समय इसके भाई भतीजे जोरदार न होते तो भरतपुर राज्य के शत्रु भरतपुर पर आक्रमण किए बिना न रहते। जिस प्रकार मुगल बादशाह जहांदारशाह और छत्रपति शिवाजी का पुत्र शम्भू थे, उसी प्रकार महाराजा रतनसिंह सुरा और सुन्दरी के चक्र में फंसा हुआ अपने तथा भरतपुर राज्य के नाश का कारण बना। वह ९ मास के पश्चात् वृन्दावन जैसे तीर्थ में शराब पीकर वेश्याओं का नाच देख रहा था वहाँ उसे एक गोसाई ने कत्ल कर दिया। इसके पश्चात् भरतपुर राज्य में गृह-कलह प्रारम्भ हो गया। तदनन्तर दो वर्ष के आयु का राजकुमार केहरसिंह गद्दी पर बैठा। उधर नवलसिंह और रणजीतसिंह दोनों भाइयों में परस्पर युद्ध प्रारम्भ हो गया। भरतपुर राज्य उन्नति के स्थान पर अवनति को प्राप्त होने लगा। यदि महाराजा शराबी तथा व्यभिचारी न होता तो क्यों तो वह गोसाई के द्वारा मारा जाता और क्यों उसका दो वर्षीय राजकुमार गद्दी पर बैठता। व्यभिचारी की सन्तान होने से चेचक निकलने से वह भी शीघ्र ही मर गया। नवलसिंह तथा रणजीतसिंह के घरेलू युद्ध ने कोष खाली कर दिया और दुर्बलता आ गई; फिर अंग्रेजों के साथ महाराजा रणजीतसिंह के चार पाँच युद्ध हुए, जिससे भरतपुर राज्य का सारा वैभव समाप्त हो गया। अन्त में विवश होकर उसे अंग्रेजों के साथ सन्धि करनी पड़ी।

इसके पश्चात् सूरजमल तथा जवाहरसिंह के समान कोई प्रतापी राजा नहीं हुआ। इसलिए भरतपुर राज्य, विस्तार व उन्नति के स्थान पर ह्रास और अवनति ही करता चला गया। एक शराबी और व्यभिचारी राजा रतनसिंह के पश्चात् यह प्रसिद्ध जाट राज्य रसातल को चला गया और विदेशियों का दास बनकर रह गया।

इस प्रकार चूड़ामन और सूरजमल के वंश का केवल नाम शेष रह गया। न वीरता रही और न ही वह विशाल वैभवशाली राज्य। विलासिता ने बड़े-२ वंशों और साम्राज्यों को मिट्टी में मिला दिया।

शराब ने जिस प्रकार यादवों, मुस्लिम सुलतानों, मुगलों, मरहटों और जाटों का सर्वनाश किया उसी प्रकार राजपूतों को भी उसने अछूता नहीं छोड़ा। इसका विवरण आप अगले अंक में पढ़िये।

(क्रमशः)

श्री लक्ष्मण कात्रे नये वायु सेना अध्यक्ष

नई दिल्ली, १ जुलाई (वार्ता)। एयर मार्शल लक्ष्मण महादेव कात्रे नये वायुसेनाध्यक्ष नियुक्त किये गये हैं। एयर मार्शल कात्रे इस समय हिन्दुस्तान एयरोनाटिक्स लिमिटेड (हाल) के अध्यक्ष हैं। वे एयर चीफ मार्शल दिलबागसिंह के स्थान पर यह पद ग्रहण करेंगे। श्री दिलबागसिंह वायुसेनाध्यक्ष के रूप में अपना कार्यकाल पूरा करने के बाद ३० अगस्त ८४ को अवकाश ग्रहण करेंगे।

एयर मार्शल कात्रे को एयर चीफ मार्शल की पदवी दी गई है। ४ सितम्बर ८४ को पदभार ग्रहण करेंगे। यह घोषणा आज यहां अधिकारिक तौर पर की गई।

प्रधान मन्त्री के नाम खुला पत्र

आदरणीया प्रधान मन्त्री महोदया

आपसे भिन्न भिन्न सम्प्रदाय के लोग जो आपकी कोठी पर मिलने आये और उनसे जो संक्षिप्त बातें आपने माफी चाहते हुए लहजे में की कि विवशता की अवस्था में सेना ने हरमन्दिर साहब के अन्दर प्रवेश होकर कार्यवाही करनी पड़ी और जो आपने जख्मों पर मरहम लगाने का शब्द प्रयोग किया उसने आम लोगों के दिमागों पर भ्रान्ति उत्पन्न कर दी और उन्होंने यह सोचना आरम्भ कर दिया कि आप अपने दिमाग की गहराई से यह अनुभव करती हैं कि सिखों के दिल और दिमाग पर गहरी चोट लगी है।

सच्चाई यह है कि अकालियों और गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के नेताओं ने आपकी अपील का तिरस्कार किया जो आपने आतंकवादियों को आत्म-समर्पण करने के लिए की थी जिन्होंने लूटमार और कत्लो-गारत मचा रखी थी। बल्कि इसके विपरीत उन्होंने आधुनिक हथियारों की तस्करी और तेज कर दी और हरमन्दिर साहब को जो कि सिखों का सबसे बड़ा धार्मिक स्थान माना जाता है उसको एक छावनी में तब्दील कर दिया।

आतंकवादियों और अलगाववादियों ने हरमन्दिर साहब से सिर्फ खालिस्तान का विधान ही प्रकाशित किया बल्कि उन्होंने हिन्दुओं, पुलिस कर्मचारियों और पत्रकारों को मारने की योजना और तेज कर दी। बेसक वे घिनौने कारनामे हिन्दू और सिखों के दरम्यान बड़े पैमाने पर झगड़ा करवाने में सफल न हुए लेकिन वे प्रशासन को सामान्नातर करने में और पजाब के प्रत्यक गांव और कस्बे में आतंक फैलाने में सफल जरुर हुए। यदि इन स्थितियों को कुछ समय के लिए और चलने दिया जाता तो विदेशी ताकतों का वह खेल जो वो राष्ट्र की एकता को भंग करने और देश को खण्डित करने का खेलना चाहते थे सफल हो जाता है। कोई भी सरकार ऐसी स्थितियों को अधिक समय तक सहन नहीं कर सकती और राष्ट्र की एकता और अखण्डता का जोखिम नहीं ले सकती। सरकार ने पंजाब में सैनिक कार्यवाही करके भोले भाले लोगों की जान-माल व सम्मान की रक्षा की और राष्ट्र की एकता को खण्डित होने से बचाया। सरकार ने बेसक देर के बाद किया लेकिन जो काम किया बिल्कुल ठीक किया। आतकवादियों ने जो पंजाब के प्रशासन और भोले भाले लोगो पर जो अत्यचार ढाये थे वर्तमान स्थितियों में सेना की पजाब और हरमन्दिर साहब में नियुक्ति उनके जख्मों को राहत देगी। सेना के जवानों ने गोलियों के सामने अपने सीने तानकर जो कि हरमन्दिर साहब के अन्दर से आ रही थी और जवाब में कोई गोली न चलाकर मन्दिर की पवित्रता को कायम रखते आतंकवा-दियों को जोकि पन्थ के दुश्मन और देशद्रोही थे जिन्होंने पवित्र स्थान को अपवित्र कर रखा था। बाहर निकालकर सही अर्थों में राहत बख्शी :

आतंकवादियों ने जो जख्म पंजाब और समूची कौम पर किये थे उनकी राहत का काम उस वक्त तक जारी रहना चाहिये जब तक कि तमाम आतंकवादी और उनकी गतिविधियां जड़ से उखाड़ न दी जायें। हरमन्दिर साहब के अन्दर से प्रतिदिन हथियार और गोला बारुद बरा-मन्द होता है और अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र के कागज भी मिलते हैं। गुरुद्वारा बंगला साहब दिल्ली में राष्ट्रीय ध्वज गद्दारों के हाथों जलाया जाता है। प्रधानमन्त्री के क्षमायाचना के लहजे से और भिन्न भिन्न राजनैतिक दलों के वक्तव्यों से अकाली शक्तिशाली हो गये और उन्होने हरमन्दिर साहब से सेना को हटाने के लिए कह रहे हैं और साथ ही साथ धमकी भी दी है कि अगर १५ जुलाई तक सेना हरमन्दिर साहब से न हटाई गई तो अकाली शहीदी जत्थे भेजेंगे। सरकार के सख्त कदम उठाने से वे घबरा गये हैं और अब उन्होंने वही अपना पुराना हरबा अपने आप को मध्य और उग्रवादी दो हिस्सों में बांटने का अख्तियार किया है।

मुझे आशा है कि सरकार और तमाम लोग अब उनके हथकण्डों से पूर्ण रूपेण परिचित हो गये हैं और उनके बहकावे में नहीं आयेंगे। दल के वरिष्ठ नेता होने के कारण यदि वे सरकार को चेतावनी देने के निर्णय के विरुद्ध थे क्षमा नहीं किया जा सकता। यदि वे अपने आपको अलग थलग अनुभव करते तो वे अगले दिन तरदीदी ब्यान दे सकते थे लेकिन उन्होने कारणयोग, दृष्टिकोण सिर्फ सरकार के कठोर कदम उठाने के बाद अपनाया है। यदि राष्ट्र के विभाजन के विषय में अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र के गहरे प्रमाण मिलने के बाद और प्रतिदिन हथियार और गोलाबारुद की गुरुद्वारो से बरामदगी के बावजूद और राष्ट्रीयध्वज को बंगला साहब गुरुद्वारा में जलाये जाने के बाद भी यदि कुछ नेतागण चाहते हैं कि सेना को पजाब और हरमन्दिर साहब से हटा लिया जाये, पंजाब और हरमन्दिर साहब को फिर से दूबारा आतकवादियों और राष्ट्रविरोधी ताकतों के रहमो कर्म (कृपा दृष्टि) पर छोड़ दिया जाये तो निश्चित रूप से मुझे उनकी सुझबूझ और बुद्धि पर सन्देह पैदा होता है न कि उनकी राष्ट्रीय भावनाओ पर। यदि बजाय उन नौजवानों को श्रद्धांजलि अर्पित करने जिन्होने बहुत ही संयम से काम लेते हुए और अनुशासन में रहते हुए गुरु गोबिन्दसिंह के साहबजादों गुरु तेगबहादुर और भाई मतीदास की तरह हरमन्दिर साहब की पवित्रता को बचाया और उन गद्दारो, आतकवादियों से जिन्होने उस पवित्र स्थान से गोलियां चलाकर अपवित्र कर दिया, उन नौजवानों ने बड़ी भारी कुर्बानी दी। कुछ हमारे देश के और कुछ बाहर के नेतागण सेना के विरुद्ध साधारण शासन को शक्तिहीन करने को प्राथमिकता देते हैं। हर बुद्धिजीव चाहे वह देश का रहने वाला हो या बाहर का उनके इस कथन की आलो-चना अवश्य करेगा या करनी पड़ेगी।

जहां तक फारूक अब्दूला के मन्त्रीमण्डल को बर्खास्त करने का प्रश्न है। मेरे मित्रों को फारुख अब्दूला का वह कथन ध्यान से पढ़ना चाहिये जिसमें उन्होने श्रीमती इन्दिरागांधी को कहा था कि यदि वह अकालियों की समस्या हल करना चाहती है तो उनको उसके पास जा कर प्रार्थना करनी चाहिये। क्या यह कथन बिना किसी सन्देह के, इस बात को प्रमाणित नहीं करता कि फारूख अब्दूला के अकालियों के साथ कितने गहरे आन्तरिक सम्बन्ध थे और इसी तरह पाकिस्तान के साथ भी। इस बात से और इसके पश्चात् ६ जून के बाद जो घटनायें काश्मीर में हुई ये प्रमाणित करती हैं कि फारूख का मुख्यमन्त्री बना रहना भारत के लिए खतरनाक होता।

चाहे कोई भी कारण हो तथापि ऐसे ऐतिहासिक अवसर पर नैशनल कोनफ्रेंस के १२ विधायकों ने फारूख अब्दूला की सरकार से समर्थन वापिस लेकर राष्ट्र की एक बड़ी सेवा की है। जितने भी वरिष्ठ राजनैतिक नेतागण हैं चाहे वे किसी भी पार्टी से सम्बन्ध रखते हों उनसे यह आशा की जाती है कि सबसे पहले देश के हितों को प्राथमि-कता दें बजाय पार्टी के हितों के। यदि देश के इतिहास के इस बूरे समय में जो लोग ऐसा नहीं करते वे अपने कार्य में विफल हो जाते हैं। देश का हित यह मांगता है कि इसके तमाम नेतागण चाहे वे किसी भी विचारधारा के हो उनको दूरदर्शी, दृष्टिकोण से कार्य करना चाहिये।

मैं इस विषय में साफतौर से कुछ नेतागणों के नाम यहा प्रकट करना चाहूँगा जिनके विरुद्ध कानून के अनुसार उचित कार्यवाही की जाये। श्री सुब्रह्मण्यम स्वामी ५ दिन तक हरमन्दिर साहब में अकालियों के आदरणीय अतिथि के रूप में रहे। जबकि कोई भी आदमी हर-मन्दिर साहब में प्रवेश होने का जोखिम लेने के लिए तैयार नहीं था। जब वे अमृतसर मे वापिस आये तो मैने सह्मण्यम स्वामी से पूछा कि वे मुझे बतलाये कि उन्होंने हरमन्दिर साहब में क्या देखा और उनकी सन्त जी से क्या बात हुई वे चुपके से पार्लियामेंट के सेन्ट्रल हाल से भाग गया। मेरे दिमाग में किसी प्रकार का सन्देह नहीं है कि स्वामी इस खेल के अन्दर था और उसने बतौर बिचोलिये का भी काम किया।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

हरयाणा की देश प्रेमी और धर्म प्रेमी जनता तथा आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं से अपील

साम्प्रदायिक शक्तियों और विदेशी ताकतों के षड्यन्त्र के कारण पंजाब में आतंकवादियों और देशद्रोहियों द्वारा निरपराध हिन्दुओं, निरंकारियों तथा पुलीस कर्मचारियों की हत्यायें की जाती रही। अकालियों और उग्रवादियों ने जो लबादा ओढ रखा था, कुछ तथाकथित धार्मिक और आर्थिक राजनैतिक मांगों का वह अब जनता के सामने ही नहीं, बल्कि सारी दुनियां के सामने अकालियों का देशद्रोही रूप खुलकर सामने आ गया।

स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को बहाल करने और देश की एकता को सुरक्षित करने के लिए भारत सरकार को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। सेना के जवानों और अफसरों ने जिस अनुशासन संयम और वीरता का प्रदर्शन किया वह भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गया। यह गर्व की बात है कि राष्ट्र की एकता के इस महान् यज्ञ में आहुति देने वाले अधिकतर जवान हरयाणा में जन्मे थे जहां हमारे अनेकों जवान बलिदान हुए वहां बहुत से बुरी तरह घायल भी हुए। परन्तु उन्होंने राष्ट्र के टुकड़े होने से बचा दिया और राष्ट्र द्रोहियों के नापाक षड्यन्त्र को विफल कर दिया।

हताहत जवानों के परिवारों की सहायता के लिए सरकारी और जनता के नाम अपील निकली है। हरयाणा की जनता को अपने वीरों के परिवारों की सहायता के लिए दिल खोलकर धन देना चाहिये और इन परिवारों के पुनर्वास में सहायक होकर अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। इस उद्देश्य के लिए सभा ने एक निधि स्थापित करने का निर्णय किया है। १०० रुपये या इससे अधिक राशि देने वाले भाइयों के नाम हम सर्वहितकारी में प्रकाशित करेंगे। शिक्षा संस्थाओं तथा आर्यसमाजों की राशियां भी सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

सहायता की राशि सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों द्वारा नकद, मनीआर्डर या चैकों द्वारा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक अथवा सभा के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैया लाल जी महत्ता की ई-४१ नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद के पते पर भी भेजी जा सकती है। अधिक से अधिक धन १० अगस्त तक एकत्रित करके भेजने के लिए हम सबसे प्रार्थना करते हैं ताकि स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त के पर्व पर जवानों के परिवारों को पहली किस्त के रूप में हम कुछ भेंट कर सकें।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान—परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष—हरयाणा रक्षा वाहिनी
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

प्रो० शेरसिंह की प्रधानमन्त्री से भेंट

हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने ५ जुलाई को प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी से भेंट करके दरबार साहब अमृतसर में सैनिक कार्यवाही करने तथा जम्मू-कश्मीर की फारूक सरकार को हटाने पर उन्हें बधाई दी। प्रो. साहब ने प्रधान मन्त्री से अनुरोध किया है कि उग्रवादियों के दबाव में आकर उनकी किसी भी अनुचित मांग को स्वीकार न करें। आपने अबोहर फाजिल्का के हिन्दी भाषी क्षेत्र हरयाणा में तुरन्त मिलाने पर भी जोर देते हुए कहा कि राष्ट्रहित को दृष्टि में रखते हुए हरयाणा की सीमा पाकिस्तान से मिलनी चाहिए ताकि राष्ट्र-द्रोहियों की घुसपेट को रोका जा सके।

प्रो० शेरसिंह ने सिख उग्रवादियों तथा पाकिस्तान समर्थकों द्वारा श्रीनगर आर्यसमाज मन्दिर जलाने वालों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही तथा सरकार से इसकी क्षतिपूर्ति की भी मांग की है।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आर्यसमाजों से निवेदन

प्रधान मन्त्री तथा जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री को अपने आर्यसमाज की ओर से प्रस्ताव भेजते हुए आर्यसमाज तथा कन्या विद्यालय हजूरीबाग श्रीनगर की ५० लाख रुपये की उग्रवादियों द्वारा की गई हानि की क्षति पूर्ति की मांग करें। सभा मन्त्री

(पृष्ठ ३ का शेष)

इन तमाम आदमियों में से केवल श्री वी० एम० तारकण्डे (जो किशहरी हकूक का चैम्पियन माना जाता है) श्री रामजेठमलानी ही सिर्फ ऐसा वकील था जिसने श्री सन्त हरचरणसिंह लौंगोवाल और गुरचरणसिंह टोहरा की (हैबियस कोरपस) के तहत रिहा करने की अर्जी दी। श्री खुराना ही गरीब अकेला न था जिन्होंने कि श्री जेठमलानी से उसके (राष्ट्रविरोधी) कार्य करने की वजह से त्यागपत्र की मांग की थी लेकिन उसे बड़ी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी: क्योंकि यह एक जानी मानी सच्चाई पर आधारित है कि श्री जेठमलानी के यू० एस० ए० के साथ काफी पुराने और गहरा सम्बन्ध है और श्री अटलबिहारी बाजपेयी श्री जेठ-मलानी को अपने से दूर रखना सहन नहीं कर सकता था।

जार्ज फरनान्डिस और बीजूपटनायक के सम्बन्ध पाकिस्तान में जनरल जिया के साथ थे। जिस समय हरमन्दिर साहब को एक छावनी में परिवर्तित करने की तैयारी शिखर पर थी। मैं यह जानना चाहूँगा कि वे क्या कारण है जिनकी बिना पर सरकार इन शरीफ आदमियों पर कोई कार्यवाही नहीं कर रही है। मेरी राय में श्री जेठमलानी के विरुद्ध कोई कार्यवाही उसकी अर्जी पर सुप्रीम कोर्ट के निर्णय के पश्चात् ही की जानी चाहिए।

मेरी यह भी प्रार्थना है कि उन तमाम अकालियों को नेशनल सैक्यूरिटी आर्डिनेंस के तहत गिरफ्तार किया जावे, जिन्होंने इस बैठक में भाग लिया और जिसमें सरकार को चेतावनी देने का निर्णय किया गया कि हरमन्दिर साहब से सेना को तुरन्त हटा लिया जाए अन्यथा…

कुछ अकाली नेताओं ने इसके बाद जो ब्यान-बाजी की है उसको नजर अन्दाज किया जाये, क्योंकि ये ब्यान-बाजी बतौर एक हरबे के प्रयोग करने के रूप में ही है। अपने कुछ सहयोगियों की सहानुभूति प्राप्त करने के लिए ताकि वे सरकार से बातचीत आरम्भ करने के लिए दबाव डाल सकें, जोकि खुद आखता मोडिरेट और रिजनेबल नेता होने का दावा करते हैं। यदि सेना को १५ जुलाई से पहले हटा लिया गया तो इससे देश के गद्दारों और आतंकवादियों का उत्साह बढ़ जायेगा। सेना को सिर्फ उसी समय हटाना चाहिये जब साधारण प्रशासन ठीक ढंग से लागू हो जाए और इस अवस्था में हो जाए कि कानून व्यवस्था लागू हो सके और स्थिति नियन्त्रण में हो जावे।

सेना ने जो बहादुर कारनामे पवित्र स्थान की पवित्रता को कायम रखने और देश की एकता को बचाने तथा मजबूत करने के लिए प्रशंसनीय हैं।

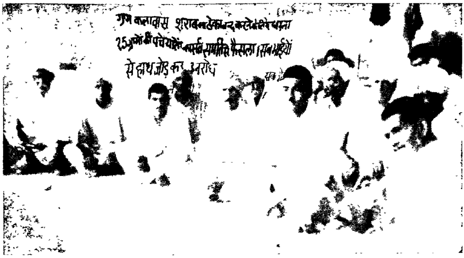
मैं गौरव से कह सकता हूं कि अधिकतर जवान जिन्होंने अपनी जानें कौम (देश) पर कुर्बान कर दी, वे हरयाणा के रहने वाले थे। हरयाणा को एक बार फिर अपनी मातृभूमि की एकता और अखंडता को कायम रखने के लिए अपनी जानें कुर्बान करने का अवसर प्राप्त हुआ।

मैं फिर आग्रह करता हूं कि धीरे धीरे एक्सन लेने की बजाय देश के तमाम धार्मिक स्थानों की पूर्णरूपेण तलाशी ली जाये। हथियार और दूसरी कोई सामग्री जो भी वहां पर मिले उसे बरामद किया जाये ताकि हरमन्दिर साहब जैसी परिस्थितियां देश में पुनः उत्पन्न न हो सकें।

मैं यह और आग्रह करूंगा कि तमाम साम्प्रदायिक; राजनैतिक दल जैसे–हिन्दू महासभा, मुस्लिम लीग, अकाली दल आदि पर पाबन्दी लगा दी जाये और इन्हें अवैध पार्टी करार दिया जाये और ऐसे संगठनों को चुनाव में भाग लेने से वंचित कर दिया जावे।

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष—हरयाणा रक्षा वाहिनी

ग्राम बालावास में धरने पर वेदप्रचार



ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके पर धरने का दृश्य बड़े चित्र में हैं श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी, ग्राम के सरपच, वीरसिंह मिठू पहलवान, हरचन्द आर्य, श्री मोहनलाल आर्य, श्री रामपत नलवा आदि धरने पर बैठे हैं। दूसरे छोटे चित्र में ग्राम की स्त्रियाँ भी धरने पर बठी दिखाई दे रही हैं।



ग्राम बालावास जिला हिसार में १४ अप्रैल से शराब के ठेके को समाप्त करने हेतु धरना निरन्तर चल रहा है। धरने पर आर्य जगत् के प्रसिद्ध भजनोपदेशक प० चन्द्र-भानु जी (जीन्द) के दिनांक २९-३० मई को शिक्षाप्रद भजन व उपदेश हुए। प्रचार मे निकटवर्ती गांव से भी साईकिलों और पैदल चलकर सकड़ों लोग पधारे। ३०-६-८४ को प्रातः यज्ञ किया गया। यज्ञ पर बहन लजावन्ती आर्या बहन मुनेहरी आर्या के साथ घृत व सामग्री लेकर बहनें पधारी। महिलाएँ प्रचार और यज्ञ पर श्रद्धा से बढ चढ कर सहयोग दे रही हैं। श्री वीरसिंह सदाच व निहालसिंह आर्य ने यज्ञ पर पुरजोर शब्दों में कहा कि जब तक ये ठेका यहां से नहीं उठेगा हम धरना जारी रखगे। प० जी ने गृहस्थियों के लिये पंच यज्ञ करने पर जोर दिया। प्रभु कृपा से ३०-६-८४ को १२ बजे कुछ वर्षा हुई। लोगों में यज्ञ के प्रति श्रद्धा बढी। सभा का भजन मण्डली पंडित तेजपाल आर्य तथा उपदेशक पं० अर्जुनदेव का भी ५ जुलाई से वेदप्रचार तथा शराबबन्दी प्रचार कार्य आरम्भ हो गया है।

मन्त्री

मैं भी भिंडरांवाला से घबराता था —भजनलाल

सोनीपत ४ जुलाई (नि. स.) हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री भजनलाल ने गत दिवस जिले के कई गांवों में जनसभाओं में भाषण दिया और उग्रवादियों की देश-द्रोही कार्यवाहियों की कटु आलोचना की और लोगों से अपील की कि वह उनके विरुद्ध अपनी लडाई जारी रखें और सरकार के पक्ष का समर्थन करें। उन्होंने कहा कि उग्रवादियों के तीन सौ सिखों की हत्या की, जो भिंडरांवाले का विरोध करते थे। इस कारण भिंडरांवाले ने न केवल स्वर्ण मन्दिर के अन्दर आतंक मचा रखा था बल्कि पंजाब में जगह जगह पर बेगुनाहों की हत्याएं करा रहा था।

श्री भजनलाल ने कहा कि वह भी उसके आतंक से घबराते थे और जब वह अपनी कार के आगे पीछे सिखों को मोटर-साईकिल पर बैठे देखते थे, तो वह कुछ क्षणों के लिए घबरा जाते थे। उन्होंने कहा कि यह हालत आजकल सब जगह सिखों को देखकर होती है—क्योंकि भिंडरांवाला की कार्यवाही से सारे सिखों का सिर शर्म से झुक गया है।

गांव जुआं में श्री भजनलाल ने लोगों की लगभग २० मांगों को पूरा करने की घोषणा की, जिसमें लड़कियों के मिडल स्कूल को हाई स्कूल बनाने तथा सटावली से जुआं तक की पक्की सड़क बनाना शामिल हैं। मुख्यमन्त्री ने ग्राम की व्यायामशाला के नाम भी ११००० रुपया अनुदान दिया। (पंजाब केसरी नई दिल्ली)

आर्यसमाज हिसार में वेद सप्ताह

आर्यसमाज नागोरी गेट, हिसार ५ अगस्त से १२ अगस्त १९८४ तक नगर के विभिन्न भागों में वेद प्रचार सप्ताह मना रहा है। उसमें प्रतिदिन रात्रि को आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड उपकुलपति कन्या गुरुकुल खानपुर कलां व गुरुकुल भैंसवाल कलां का वेद प्रवचन तथा श्री वेदपाल भजनोपदेशक के भजन होंगे।

प्रतापसिंह शास्त्री

अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को देने की मांग

रोहतक, २७ जून (निस)। भाजपा नेता डा० मगलसेन ने मांग की है कि देश की सुरक्षा के दृष्टिगत सीमा से लगते अबोहर फाजिल्का क्षेत्र तुरन्त हरयाणा के हवाले किये जायें। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान की ओर से खतरे और पजाब में आतंकवादियों की गतिविधियों के कारण फाजिल्का अबोहर को हरयाणा मे शामिल करके सीमा के इस भाग को सुरक्षित कर लेना देश के हित में होगा।

डा० मगलसेन ने पंजाब की स्थिति से राजनीतिक लाभ उठाने की कांग्रेस (इ) की कोशिशों की निन्दा की और कहा कि खालिस्तान की मांग करने वाले सभी अकाली नेताओं पर राष्ट्रद्रोह के मुकद्दमे चलाये जाने चाहिएं। उन्होंने सभी अलगाववादी तत्वों का सामाजिक बहिष्कार करने तथा साम्प्रदायिक सौहार्द बनाये रखने की अपील की।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

(पृष्ठ १ का शेष)

(पृष्ठ १ का शेष)

इन सब लोगों से होड़ करते हुए सिख सेना में आते हैं तथा संख्या और दर्जे दोनों में गौरव की जगह पाते हैं। आखिर गुरु को सेना में भेजे गए लड़ाकू बेटे हिन्दू परिवारों से ही गए थे। ऐसी हमारी सेना हमारे सभी धार्मिक समुदायों के लोगों की गौरव संस्था है। वह सरकार या इन्दिरा गांधी की कांग्रेस पार्टी नहीं है जिसके खिलाफ अकाली या उग्रवादी सिख चाहे जो कहें? सिखों को समझना चाहिए कि सेना और उसकी कारवाई के खिलाफ बोलकर उनके नेता किसे अपना बता रहे हैं। उन सिखों को जो सेनाओं में हैं या उन आतंकवादियों को जिनके कारनामों से मनुष्यता का सिर शर्म से झुक जाता है? इसीलिए शहीदी दिवस का आह्वान सिखों को दो फाड़ करता है और उनके हितों के खिलाफ है।

सरकार की दुविधा यह है कि उसने अपने अनिश्चय और सिख समुदाय की भावनाओं के ख्याल से आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई में देर की। पिछले महीने के अन्त तक पूरा पंजाब अराजकता और आतंक में कांप रहा था। सिख कुछ तो सन्त भिंडरांवाले के धार्मिक नेता होने के कारण, कुछ मरजीवड़ों के डर से और कुछ खुद अपने अपराध भाव के कारण ज्यादातर चुप रहे। पर देश के दूसरे हिस्सों से लगातार मांग हो रही थी कि आतंकवादियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाए। यह मांग सिर्फ हिन्दू सम्प्रदायवादियों की नहीं थी जो बेकसूर हिन्दुओं की हत्याओं का बदला चाहते थे। मांग वे सब समुदाय और राजनैतिक पार्टियां भी कर रही थीं जो संविधान का सम्मान और देश की अखंडता में विश्वास करती है। खुद सरकार बावजूद अपने राजनीतिक हिसाब के कार्रवाई के लिए मजबूर थी क्योंकि सन्त भिंडरांवाले उसकी सत्ता को चुनौती दिए हुए थे। सरकार अगर अब और लकवे में पड़ी रहती तो देश को टूटते और हिन्दुओं तथा सिखों को पूरे देश में मारकाट करते हुए देखती।

उसे मालूम था कि कोई भी सख्त कार्रवाई स्वर्ण मन्दिर में ही करनी होगी और उससे सिखों के मन पर चोट लगेगी। लेकिन इसके सिवाय कोई चारा नहीं था। अब उसकी कार्रवाई से पंजाब नहीं पूरे देश में राहत की भावना है पर सिख गुस्से में हैं और दुखी हैं। ज्ञानी जैल सिंह और श्रीमती इन्दिरा गांधी ही नहीं सरकार के कई लोग सिखों का गुस्सा उतारने और उनके घावों पर मरहम लगाने की कोशिश कर रहे हैं। लेकिन कुछ सिख जिस तरह अपना गुस्सा निकाल रहे हैं उससे दूसरे लोगों के दिलों में भी चोट पहुँचती है। धार्मिक आतंकवाद के मरजीवड़ों ने जिन परिवारों को बर्बाद किया है उनकी नजर में सेना ने ठीक काम किया है और सैनिक ही शहीद हुए हैं।

फिर देश के सब लोगों ने अपना नीर-क्षीर विवेक नहीं खोया है। उन्हें सिखों के साथ पूरी हमदर्दी हो सकती है लेकिन वे यह भी मानते हैं कि सन्त भिंडरांवाले जैसा धार्मिक आतंकवाद देश के दूसरे समुदायों उनकी एकता और अखंडता के खिलाफ था। इसलिये उसे ठीक बताना और सैनिक कार्रवाई में मारे गए आतंकवादियों को शहीद मानना नैतिक, धार्मिक और राजनीतिक रूप से गलत है। देश के ९९ प्रतिशत से ज्यादा लोगों के लिए भिंडरांवाले सन्त नहीं थे न उनके मरजीवड़ों को शहादत मिली है। अगर सिखों की भावनाओं और चोटों का ख्याल रखना है तो इन लोगों की भी भावनाएं हैं और भले ही ये लोग उतने उत्तेजित न हों जितने कुछ सिख हैं—इनका विवेक तो उनके पास है और उसका सम्मान भी सरकार और देश को करना पड़ेगा।

सैनिक कार्रवाई ने न केवल आतंकवादियों की रीढ़ तोड़ी है अकाली नेतृत्व की राजनीतिक जमीन भी खिसका दी है। लेकिन इसका दोष सेना या इन्दिरा गांधी को नहीं दिया जा सकता। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी को खूब अच्छी तरह मालूम था कि स्वर्ण मन्दिर और दूसरे गुरुद्वारों में आतंकवादी क्या कर रहे थे। लेकिन उसने न सिर्फ उन्हें खुला छोड़ दिया बल्कि संरक्षण भी दिया। अकाल तख्त अगर लड़ाई के मोर्चे का किला बन गया था तो इसका दोष टोहड़ा का नहीं है? सारे अकाली नेता जानते थे कि आतंकवादी आखिर उन्हें निगल जाएंगे। प्राइवेट बातचीत में वे कहते भी थे कि सरकार को चाहिए कि उनसे सीधे निपटे। सन्त लोंगोवाल के आग्रह पर ही अकाल तख्त ने आतंकवादियों से स्वर्ण मन्दिर में खून-खच्चर रोकने की अपील की थी। हर अकाली नेता जानता था कि सन्त भिंडरांवाले का रास्ता खालिस्तान की तरफ जाता है और उसे बनने देने को देश तैयार नहीं होगा। फिर भी वे आतंकवादियों को राजनीतिक कवच देते रहे। उनके आतंक का इस्तेमाल सरकार से अपनी बातचीत में करते रहे। आतंकवादियों के खिलाफ सरकार की हर कार्रवाई की उन्होंने भर्त्सना की। लेकिन आतंकवादियों के खिलाफ न बोले न कोई कदम उठाया।

शिरोमणि कमेटी और अकाली दल के नेता खुद आतंकवादियों की धमकियों के आगे मजबूर थे। उनमें दम नहीं था कि किसी भी सही बात के लिए आतंकवादियों के खिलाफ कोई स्टैंड ले सकें। लेकिन अगर यही उनका दमखम और सैद्धान्तिकता थी तो किसी दिन तो पोल खुलनी ही थी। अब सिख लोग उनसे बेहद नाराज हैं। इतने कि अगर वे जेल में नहीं होते तो उनका जीना दूभर हो जाता। लोग कहते हैं कि जान बचाने के लिए अकाली नेता गिरफ्तार हुए। सरकार ने अध्यादेश निकालकर और सुप्रीम कोर्ट ने उनकी रिहाई का मामला आगे खिसका कर उनके साथ रहम ही किया है। दो मुंही बातों, जोड़तोड़ और सौदेबाजी पर नेतागिरी करने वालों के लिए ऐसा मौका तो आता ही है कि न माया मिलती है न राम। आज अगर वे बदनाम और बेअसर हैं तो इसमें दोष उन्हीं का है।

लेकिन आतंकवादी और अकाली नेतृत्व के हट जाने से एक ऐसी नेतृत्व शून्यता आ गई है जो खतरनाक है। सिख समुदाय को शक्तिशाली नेतृत्व ही इस संकट से उबार सकता है। इस शून्य को धार्मिक नेतृत्व फिलहाल भर सकता है क्योंकि धार्मिक घटनाओं पर ही चोट हुई है। लेकिन शहीदी दिवस का आह्वान सेना तत्काल हटाये जाने की मांग और लोगों को सरकार व सेना के खिलाफ उकसाने से धार्मिक नेतृत्व हालत को सुधार नहीं पाएगा। मुख्य ग्रंथियों को वह सब भी देखना और समझना पड़ेगा जो पूरा देश देख व समझ रहा है और जो आतंकवादियों के समर्थन में नहीं है। शहीदी दिवस अगर मनाना है तो जो सैनिक स्वर्ण मन्दिर में मरे और जो चार सौ से ज्यादा सिख हिन्दू आतंकवादियों के शिकार हुए उन्हें भुलाया नहीं जा सकता। आज जब अकाली दल और शिरोमणि कमेटी के लोग मिलें तो वे सोचें कि सैनिक कार्रवाई के अनिवार्य होने की जिम्मेदारी उनकी भी है और अब उन्हें भी सिखों के घावों पर मरहम लगाने में हाथ बटाना है। सरकार और सेना के खिलाफ आग उगलकर वे उग्रवाद के रास्ते ही जाएंगे, अपने समाज को एक करके समझदारी और संपन्नता की तरफ नहीं बढ़ा सकेंगे।

(जनसत्ता से साभार)

महर्षि दयानन्द पर फिल्म निर्माण के सम्बन्ध में निर्णय करने का अधिकार किसे ?

कुछ स्वार्थी तत्वों द्वारा महर्षि दयानन्द के स्पष्ट आदेशों की अवहेलना करते हुए जानबूझ कर उनके पवित्र जीवन को कलंकित करने तथा आर्यजनों की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए महर्षि दयानन्द पर फिल्म बनाने का कुत्सित प्रयास किया जा रहा है। इस फिल्म के प्रयोजन व स्वरूप पर टिप्पणी करते हुए अंग्रेजी के महत्त्व पूर्ण पत्र India Today ने अपने मार्च ८४ के अंक में लिखा है—

"For good measure and commercial value Bhagwan Dev is throwing in a couple of songs and dances and will of coures keep the party flag flying with a view to inspiring messages from the 20-point programme."

उपर्युक्त शब्दों से यह स्पष्ट हो जाता है कि विश्व सिन्धी सम्मेलन की तरह यह फिल्म भी किसके इशारे और सहयोग से बनाई जा रही है। आर्य जनता में इस समाचार से सर्वत्र रोष की लहर दौड़ रही है और वह इस योजना को विफल करने के लिए कुछ भी कसर नहीं उठा रखेगी।

महर्षि दयानन्द की मान रक्षा की सबसे अधिक जिम्मेदारी स्वयं महर्षि द्वारा अपनी उत्तराधिकारिणी के रूप में नियुक्त परोपकारिणी सभा पर है। उक्त सभा पहले ही सर्वसम्मति से निर्णय कर चुकी है कि जिन स्वामी दयानन्द के अनुसार किसी के द्वारा किसी महापुरुष का रूप भर कर मंच पर आना घोर लज्जा की बात है और जिसे देखना हजार हत्याओं के समान पाप है, फिल्म के माध्यम से स्वयं उन्हीं का रूप धरा जाना जघन्य अपराध है।

इस विषय में निर्णय करने का वैसा ही अधिकार वैदिक यति मण्डल का है जिसमें महर्षि दयानन्द के पथ के अनुगामी वे असाधारण लोग हैं जिनके न कोई व्यावसायिक स्वार्थ हैं और न राजनैतिक महत्त्व कांक्षायें। वैदिक यति मण्डल ने एक स्वर से उक्त फिल्म के बनाये जाने की भर्त्सना करते हुए इसके विरुद्ध प्रचण्ड आन्दोलन करने का निर्णय किया है। व्यक्तिशः अब तक निम्नलिखित संन्यासी महानुभाव इसके विरुद्ध अपना आक्रोश व्यक्त कर चुके हैं।

स्वामी सर्वानन्द सरस्वती, स्वामी ओमानन्द सरस्वती; स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती, स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती, स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती, स्वामी सत्यपति सरस्वती, स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती, स्वामी वेदानन्द सरस्वती, स्वामी आत्मानन्द तीर्थ, स्वामी प्रेमानन्द सरस्वती, स्वामी यज्ञानन्द सरस्वती, स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती, महात्मा दयानन्द जी, महात्मा आर्यभिक्षु जी।

गो-हत्या पर प्रतिबन्ध के लिए सत्याग्रह

शिमला २७ जून (ह स)। अखिल भारतीय कृषि गोसेवा संघ ने गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगवाने तथा सांसदों के ग्रामीण जनता (जो कुल आबादी का ८० प्रतिशत है) के सही प्रतिनिधियों के रूप में काम करने के लिए उन पर दबाव डालने हेतु सत्याग्रह शुरु किया है।

संघ के कार्यवाहक अध्यक्ष राधाकृष्ण बजाज ने आज यहां पत्रकारों को बताया कि इस उद्देश्य के समर्थन में सांसदों के हस्ताक्षर लेने के लिए संघ प्रत्येक सोमवार को उनके पास जत्थे भेज रहा है। चौधरी चरणसिंह की धर्मपत्नी श्रीमती गायत्री देवी सहित अब तक ११ सांसदों के हस्ताक्षर करवाये जा चुके हैं।

उन्होंने बताया कि इस उद्देश्य के समर्थन में यदि हस्ताक्षर अभियान से सांसदों के रवैये में कोई अन्तर न आया तो उन्हें इस्तीफे देने पर बाध्य करने के लिये सत्याग्रह तेज किया जायेगा।

(दैनिक हिन्दुस्तान समाचार से)

महर्षि दयानन्द वैदिकधाम कुरुक्षेत्र में यज्ञशाला की आधार-शीला रखने के शुभावसर पर दान प्राप्त

स्वामी ओमानन्द सरस्वती गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१०१)
स्वामी श्रद्धानन्द आर्यसमाज लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	१००)
चौ० रामसिंह ग्राम रायपुर ,, ,,	१०१)
श्रीमती मनोहरी देवी ग्राम रायपुर ,, ,,	१०१)
आर्य वीर सैनिक आर्य वीर दल राजस्थान	५१)
श्री सुभाष मिगलानी पानीपत जिला करनाल	११)
महाशय मामचन्द आर्य थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	११)
चौ० रामजीलाल आर्य जिला कुरुक्षेत्र	११)
चौधरी रणधीरसिंह ग्राम अमीन जिला कुरुक्षेत्र	११)
श्री रामकिशन सेठी थानेसर ,, ,,	११)
भानजा मा० बीरूराम आर्य थानेसर जिला कुरुक्षेत्र	५)

आशा है अन्य दानी महानुभाव भी यज्ञशाला के निर्माण में अपना योगदान करते हुए अपने दान की राशि मनीआर्डर या ड्राफ्ट द्वारा भेज कर यश के भागी बनेंगे।

मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा रोहतक

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्यसमाज पानीपत

प्रधान—लाला दलीपसिंह आर्य, उपप्रधान—ला० रामानन्द जी सिंगला, उपप्रधान—ला० रामगोपाल जी एडवोकेट, मन्त्री—श्री ठाकुर दास जी बतरा, प्रचारमन्त्री-श्री दीपचन्द निर्मोही, उपमन्त्री-श्रीगुरबचन सिंह, कोषाध्यक्ष श्री कुलभूषण, पुस्तकाध्यक्ष—श्री आदित्यप्रकाश

आर्यसमाज हसनपुर जिला फरीदाबाद

प्रधान—श्री धर्मपाल आर्य, उपप्रधान—श्री रामनिवास; मन्त्री—श्री वीरेन्द्रकुमार आर्य, उपमन्त्री—श्री प्यारेलाल आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री बालकिशन आर्य, पुस्तकाध्यक्ष-श्री मोहनश्याम आर्य, भण्डारी—श्री धनेशक कुमार आर्य।

आर्यसमाज (वैदिक संत्सग सभा हिसार)

प्रधान श्रीमती जनक बतरा, उपप्रधान—श्री चुन्नीलाल लाम्बा महामन्त्री अर्जुनदेव आर्य, मन्त्री—प्रीतमलाल 'राजपाल', कोषाध्यक्ष—पूर्णचन्द पुरथी, सहायक कोषाध्यक्ष—प्रेमकुमार गाबा, प्रचारमन्त्री—रामेश्वरलाल टुटेजा, सहायक प्रचारमन्त्री — भगवानदास हबीजा, पुस्तकाध्यक्ष—योगेश बिदानी, लेखानिरीक्षक—हरदेवसरदाना

आर्य वेदप्रचार मण्डल मेवात (गुड़गांव)

प्रधान—सतपाल आर्य गुड़गांवा, उपप्रधान—लक्ष्मणदास बल्लभगढ़ मन्त्री—पदमचन्द आर्य नगीना; उपमन्त्री—श्री शुगनचन्द जी पुनहाना, कार्यालय मन्त्री-मा० ओमप्रकाश जी फिरोजपुर झिरका; कोषाध्यक्ष—ला० भजनलाल जी।

आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

प्रधान—वेदप्रकाश गुप्त उपप्रधान-डा० ओ० पी० गुप्त, नरदेव शास्त्री, बोद्धराज नागपाल, प्रेमस्वरूप जी; मन्त्री—ईश्वरचन्द्र, प्रचारमन्त्री—लाजपतराय, उपमन्त्री—केवलकृष्ण काठपालिया, मा० जसवन्तसिंह, भोपालसिंह, कोषाध्यक्ष-आत्मदेव, लेखानिरीक्षक—बी० एल० महता।

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली

प्रधान-रामसूर्ति केला, उपप्रधान-सरदारीलाल वर्मा; रतनलाल सहदेव, हंसराज चोपड़ा, मन्त्री-धीरजलाल भाटिया; उपमन्त्री—ओमप्रकाश शर्मा, त्रिलोकी नाथ मित्र, बुद्धराम गुप्त, श्रीमती प्रकाशवती कुमार; कोषाध्यक्ष-[illegible], सहायक पुस्तकाध्यक्ष-अमरदास, अधिष्ठाता आर्य वीर दल-मा० हृदयराम जी।

शराबियों की फुलझड़ियों पर मुस्कराइये

१—एक पादरी शराब के विरोध में भाषण कर रहे थे। उन्होंने कहा। दोस्तो शराब हमारी सबसे बड़ी दुश्मन है। तुरन्त एक पियक्कड़ ने टोका : पर महाशय जी कल आप ही ने बताया था कि अपने शत्रु को भी गले से लगाना चाहिए। पादरी ने मुस्करा कर कहा—— हां, हां मैंने जरुर कहा था, पर दुश्मन को गले लगाने की बात कही थी न, जनाब यह तो नहीं कहा था कि आप उसे निगल जाइये।

२—शराबी (एक राहगीर से) रिक्शे वाले को बुला लाओ।

राहगीर : मैं रिक्शे वाला नहीं, ठेले वाला हूँ।

शराबी। कोई बात नहीं ठेला ही ले आओ।

३—एक आदमी को बिजली के खम्भे से बुरी तरह लिपटे देखकर सिपाही ने समझाया कि उसने शराब पी रखी है। वह उसकी ओर बढ़ा ही था कि खम्भे से लिपटा व्यक्ति चिल्लाकर बोला। अरे! नहीं इधर मत आना यह खम्भा बहुत अधिक पिये हैं। मैं इसे सम्भाले हूं कि कहीं गिर न पड़े।

४—मां : (बेटे से) बेटे क्यों रो रहे हो ?

बेटा : पिताजी शराब के नशे में नाली में गिर गये थे।

मां : यह तो हँसने की बात है, बेटा।

बेटा : मैं भी पहले हँसा था।

५—एक आदमी रोज शराब पीकर घर आता और अपनी पत्नी को पीटता था। उस दिन भी पीकर आया और औरत को पीटने के लिए झूमकर आगे बढ़ा।

पत्नी ने पहले उसे झाड़ू मारी फिर ढकेल कर दरवाजा भीतर से बन्द कर लिया और चिल्लाकर बोली :

'वे दिन लद गये जब मर्दों का जमाना था।'

६—एक शराबी ने दूसरे शराबी के चेहरे पर पटि्टयां बन्धी देख कर पूछा यह क्या हुआ ?

दूसरे ने जवाब दिया एक आदमी से कुछ कहा सुनी हुई और फिर हाथापाई हो गई थी।

अरे, तो तुमने किसी सिपाही को बुला लिया होता।

अरे, वह स्वयं सिपाही था। दूसरा बोला।

७—एक साहब ने अपने होने वाले दामाद से पूछा शराब पीते हो ?

युवक ने कुछ देर सोचने के बाद कहा पहले यह बताइये कि यह प्रश्न है या निमन्त्रण।

महेश प्रसाद साहू 'दद्दू' ६७, बेरूनी खन्दक
केशव भादुड़ी रोड, लखनऊ

"प्रवेश सूचना"

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी-दादरी जिला भिवानी जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३५ वर्ष से हिन्दी एवं संस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है, में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद (मध्यमा) शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जून १९८४ से आरम्भ है।

१—छात्र एवं छात्राओं को अलग अलग पढ़ाया जाता है।

२—छात्राओं के लिए छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

नोट—आठवीं पास छात्र एवं छात्राएं ५ वर्ष में सम्पूर्ण शास्त्री पास करें।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय
चरखी-दादरी (भिवानी)

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र



प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३१ १४ जुलाई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा की देश प्रेमी और धर्म प्रेमी जनता तथा आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं से अपील

साम्प्रदायिक शक्तियों और विदेशी ताकतों के षड्यन्त्र के कारण पंजाब में आतंकवादियों और देशद्रोहियों द्वारा निरपराध हिन्दुओं, निरंकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों की हत्यायें की जाती रही। अकालियों और उग्रवादियों ने जो लबादा ओढ रखा था, कुछ तथाकथित धार्मिक और आर्थिक राजनैतिक मांगों का वह अब जनता के सामने ही नहीं, बल्कि सारी दुनियां के सामने अकालियों का देशद्रोही रूप खुलकर सामने आ गया।

स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को बहाल करने और देश की एकता को सुरक्षित करने के लिए भारत सरकार को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। सेना के जवानों और अफसरों ने जिस अनुशासन संयम और वीरता का प्रदर्शन किया वह भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गया। यह गर्व की बात है कि राष्ट्र की एकता के इस महान् यज्ञ में आहुति देने वाले अधिकतर जवान हरयाणा में जन्मे थे जहां हमारे अनेकों जवान बलिदान हुए वहां बहुत से बुरी तरह घायल भी हुए। परन्तु उन्होंने राष्ट्र के टुकड़े होने से बचा दिया और राष्ट्र द्रोहियों के नापाक षड्यन्त्र को विफल कर दिया।

हताहत जवानों के परिवारों की सहायता के लिए सरकारी और जनता के नाम अपील निकली है। हरयाणा की जनता को अपने वीरों के परिवारों की सहायता के लिए दिल खोलकर धन देना चाहिये और इन परिवारों के पुनर्वास में सहायक होकर अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। इस उद्देश्य के लिए सभा ने एक निधि स्थापित करने का निर्णय किया है। १०० रुपये या इससे अधिक राशि देने वाले भाइयों के नाम हम सर्वहितकारी में प्रकाशित करेंगे। शिक्षा संस्थाओं तथा आर्यसमाजों की राशियों को भी सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

सहायता की राशि सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों द्वारा नकद, मनीआर्डर या चैकों द्वारा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक अथवा सभा के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैया लाल जी मेहता को ई-४१ नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद के पते पर भी भेजी जा सकती है। अधिक से अधिक धन १० अगस्त तक एकत्रित करके भेजने के लिए हम सबसे प्रार्थना करते हैं ताकि स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त के पर्व पर जवानों के परिवारों को पहली किस्त के रूप में हम कुछ भेंट कर सकें।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान—परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष—हरयाणा रक्षा वाहिनी
प्रधान— आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान् जी, सेवा में निवेदन यह है कि मैं आपका समाचार पत्र काफी समय से नित्य प्रति पढ़ता हूं। इसमें सभी लेख पढ़ने योग्य होते हैं। विशेषकर जब से स्वामी ओमानन्द सरस्वती के शराब के बारे में ऐतिहासिक लेख आने शुरू हुए हैं, तब से आपके समाचार पत्र की बिक्री बढ़ गई है, क्योंकि स्वामी ओमानन्द सरस्वती जो ऐतिहासिक सत्य देते हैं वह और कोई दूसरा नहीं दे सकता।

इसके अलावा जबसे प्रो० शेरसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान चुने गये है तब से आपके समाचार पत्र का प्रकार बढ़ गया है। प्रो० शेरसिंह की प्रधानता के जमाने में आर्यसमाज की तरफ से वे काम हुए हैं, जो आज तक नहीं हो सके। जहां तक हड़ताल का मामला है उनके कहने पर हर बार सफल हड़ताल हुई है।

मेरी शुभ कामना है कि दोनों व्यक्ति दीर्घ आयु तक हमारा पथ प्रदर्शन करते रहे ताकि हम इनके अधीन रहकर बहुत कुछ सीखें।

जयदेव गोयल पत्रकार, जीन्द

आर्यसमाजों से निवेदन

१—हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि प्रतिवर्ष की भांति वर्षा ऋतु में वेदप्रचार सप्ताह का आयोजन करें। अपनी सुविधानुसार तिथियां नियत करके सभा कार्यालय को उपदेशक तथा भजनोपदेशकों के प्रबन्ध के लिए शीघ्र पत्र लिखें ताकि समय पर आपकी इच्छानुसार व्यवस्था की जाये।

स्मरण रखें 'वेद सब विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परमधर्म है।" आर्यसमाज के इस नियम का पालन करने के लिए वेदप्रचार सप्ताह मनाकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। सर्वहितकारी की ओर से वैदिक सत्सग पद्धति विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है।

२—सभी आर्यसमाजें अपने आगामी सत्संग के अवसर पर राष्ट्र रक्षा हेतु शहीद सैनिकों को श्रद्धांजलि देवें तथा शहीद परिवारों की सहायता के लिए सभा द्वारा स्थापित शहीद परिवार निधि में अपने आर्यसमाज, अपने परिवार तथा अपने मित्रों से धन संग्रह करके सभा को भेजने की कृपा करें, ताकि स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त को इस निधि से शहीद परिवारों को पहली किस्त भेंट की जा सके।

३—१४ अप्रैल से ग्राम बालावास जि० हिसार में शराब का ठेका समाप्त कराने के लिए धरना निरन्तर जारी है, परन्तु सरकार ने अभी तक ठेका रद्द नहीं किया है। आर्यसमाजों के स्वयंसेवक अपना अमूल्य समय देकर इस धरने में कुछ समय के लिए ही भाग लेकर स्थानीय कार्यकर्त्ताओं का उत्साह बढावें। धरने पर प्रतिदिन यज्ञ, सत्सग तथा रात्रि को प्रचार होता है। ऋषि लंगर की भी व्यवस्था कर रखी है। आर्यसमाजें प्रस्ताव पास करके भी हरयाणा सरकार को भेजकर संगठन का परिचय देवें।

सभा मन्त्री

शराब से सर्वनाश

राजपूत राजाओं वा वंशों का शराब से नाश

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

राजस्थान के राजपूत क्षत्रियों में चित्तौड़ के महाराणाओं का सीसोदिया वंश सर्वोत्तम माना जाता है। इनमें बापा रावल, महाराणा कुम्भा, महाराणा सांगा, महाराणा प्रतापसिंह, महाराणा राजसिंह प्रथम, महाराणा सज्जनसिंह और महाराणा फतहसिंह अच्छे राजा माने जाते हैं। ये ऊंचे चरित्र के तथा वीर योद्धा थे।

मेवाड़ के महाराणाओं में महाराणा संग्रामसिंह महाराणा सांगा सबसे अधिक प्रतापी और योद्धा हुए हैं। अपने पुरुषार्थ के द्वारा इन्होंने मेवाड़ राज्य को उन्नति के शिखर पर पहुंचाया। इनकी सेना में एक लाख योद्धा और पांच सौ हाथी थे। सात बड़े बड़े राजा, नौ राव और १०४ रावत उनके आधीन थे। अपने समय में ये सबसे बड़े आर्य नरेश थे। बाबर बादशाह से युद्ध करने से पूर्व भी इन्होंने १८ बार बड़े बड़े युद्ध दिल्ली व मालवा के सुलतानों से किए थे। एक आंख युद्ध में चली गई थी, एक हाथ तलवार से कट गया था, एक पांव में तीर लगने से लंगड़े हो गये थे। मृत्यु के समय उनके शरीर पर कम से कम ८० निशान तलवारों और भालों के लगे हुए थे। वे वीर उदार, बुद्धिमान् और कृतज्ञ थे। वे भारत के अन्तिम नरेश थे, जिनके नेतृत्व में राजपूत नरेश विदेशियों को भारत से निकालने के लिए इकट्ठे हुये थे। स्वयं उनका शत्रु बादशाह बाबर उनकी प्रशंसा में लिखता है—

"राणा सांगा अपनी वीरता और तलवार के बल पर बहुत बड़ा हो गया था। मालवा, दिल्ली और गुजरात का कोई एक अकेला सुलतान उसे पराजित करने में असमर्थ था। उसने लगभग दो सौ नगरों की मस्जिदें गिराईं। बहुत मुसलमानों को कैद किया। उसके राज्य की वार्षिक आय १० करोड़ रुपये थी। उसकी सेना में एक लाख सैनिक थे। महाराणा सांगा के तीन उत्तराधिकारी वैसे ही योग्य होते तो मुगलों का राज्य भारतवर्ष में जमने ही न पाता।"

महाराणा सांगा के तीन पुत्र मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। पहला पुत्र महाराणा रतनसिंह था। वह वीर तो अपने पिता के समान था, किन्तु वह गृह-कलह के कारण अपने मामा सूरजमल द्वारा मारा गया।

इसके पश्चात् महाराणा विक्रमादित्य और महाराणा उदयसिंह क्रमशः गद्दी पर बैठे। ये दोनों ही अयोग्य थे। अपने पिता के समान इनमें कोई गुण नहीं था। चित्तौड़ का दुर्ग इनके समय में मुसलमानों के हाथों में चला गया। विक्रमादित्य तो अपने चचेरे भाई दासीपुत्र वणवीर के द्वारा कत्ल हुआ : उदयसिंह को अपने पुत्र की बलि देकर पन्नाधाय ने बचा लिया। किन्तु जब वे गद्दी पर बैठे तो उनमें अपने पिता राणा सांगा के समान वीरता और नीतिनिपुणता आदि गुण नहीं थे। समय पड़ने पर शत्रु का मुकाबला नहीं कर सकते थे। ये बड़े विलासी और विषयी थे। इसने हाजी खां मेव की कुछ सहायता की थी तो उससे उसकी एक सुन्दर वेश्या रंगराय नाम की अपने लिए मांगी। हाजी खां ने निषेध कर दिया। इसने वेश्या के लिए युद्ध कर दिया, इस प्रकार विलासी महाराणा की बहुत सी सेना वेश्या के लिए युद्ध में मारी गई। इस विलासी महाराणा ने चित्तौड़ का प्रसिद्ध दुर्ग अकबर से पराजित होकर खो दिया। यदि वह सुरा सुन्दरी का प्रेमी उदयसिंह महाराणा सांगा और राणा प्रताप के बीच में न होता तो बाबर के लेखानुसार मुगलों के पैर भारत में न जमते।

महाराणा प्रताप वीर शिरोमणि, स्वतन्त्रता के पुजारी और अपने कुल गौरव के रक्षक तथा आत्माभिमान की साक्षात्मूर्ति थे, जो जगत्प्रसिद्ध है। जब अन्य राजपूत नरेशों ने अपने राज्य बचाने के लिये अपनी बहिन बेटियां मुगलों को ब्याह दी और उनके दास बन गये, उस समय राजस्थान में एक महाराणा प्रताप ही ऐसा वीर था, जिसने अपने कुल की प्रतिष्ठा बनाये रखी और मृत्यु पर्यन्त बादशाह अकबर के आगे सिर नहीं झुकाया, और अन्त में बार बार आक्रमण करने पर भी बादशाह अकबर मेवाड़ को अपने आधीन करने के यत्न में विफल हो गया तो फिर आक्रमण करना छोड़ दिया। महाराणा प्रताप ने सिवाय चित्तौड़गढ़ व मांडलगढ़ के, अपना सारा प्रदेश अपने अधिकार में कर लिया। वह अपने दादा महाराणा सांगा के समान ऊंचे चरित्र का योद्धा था। सुरापान विषयभोग से दूर रहता था।

इसी प्रकार महाराणा राजसिंह प्रथम भी ऊँचे चरित्र के महाराणा थे। इसीलिये औरंगजेब जैसे अत्याचारी बादशाह से टक्कर लेते रहे। अजीतसिंह राठौर की रक्षा और सहायता जी-जान से की। हिन्दू धर्म के कट्टर भक्त होने से बादशाह के साथ इनकी सदा अनबन रही, अनेक युद्ध हुए और सब विघ्न बाधायें सहन कीं। महाराणा राजसिंह भी अपने पूर्वज महाराणा प्रताप की भांति सुरा और विलासिता से दूर रहते थे। इसी प्रकार इस वंश में जो अच्छे राजा हुए हैं वे शराब आदि से दूर रहे, जिसने शराब का सेवन किया उसने अपना तथा प्रजा का नाश किया। जैसे महाराणा शम्भूसिंह और महाराणा सज्जनसिंह को ही लेवें। महाराणा शम्भूसिंह अच्छे शासक थे। परन्तु सहज ही में हर किसी की बात मान लेते थे। इनकी बुद्धि स्थिर नहीं थी, क्योंकि ये मदिरा पीते थे, विषयी विलासी थे। इसी कारण इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और वे २७ वर्ष की आयु में इस संसार से चल बसे।

(क्रमशः)

"प्रवेश सूचना"

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी-दादरी जिला भिवानी जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३५ वर्ष से हिन्दी एवं संस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है, में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद (मध्यमा) शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जून १९८४ से आरम्भ है।

१—छात्र एवं छात्राओं को अलग अलग पढ़ाया जाता है।

२—छात्राओं के लिए छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

नोट—आठवीं पास छात्र एवं छात्राएं ५ वर्ष में सम्पूर्ण शास्त्री पास करें।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय
चरखी-दादरी (भिवानी)

सम्पादकीयः-

कश्मीर सरकार श्रीनगर में आर्यसमाज की सम्पत्ति की क्षति-पूर्ति करे

मुझे आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के प्रधान श्री योगेन्द्र कुमार जी शास्त्री की ओर से २-७-१९८४ का भेजा हुआ पत्र कार्यालय में ६ जून को प्राप्त हुआ है, जिसे पाठकों की जानकारी हेतु प्रकाशित कर रहा हूँ।

"७ जून को श्रीनगर में उग्रवादी सिखों तथा पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों ने मिलकर जहां अन्य स्थानों को जलाया वहां आर्यसमाज मन्दिर हजूरीबाग एवं आर्य पुत्री पाठशाला को जलाकर राख कर दिया। लगभग ५० लाख रुपये का भवन जलाकर ध्वस्त कर दिया गया। पुलीस तमाशा देखती रही। भवन में रह रहे पुरोहित श्री नेत्रपाल शास्त्री जी तथा कार्यालय में बैठे हुए मन्त्री श्री राजेन्द्र जी को जीवित जलाने का प्रयत्न किया। इस कार्यवाही का उद्देश्य अल्प सख्यक हिन्दुओं को आतंकित कर कश्मीर से भगाना है।"

इस पत्र को पढ़कर बहुत दुःख तथा चिन्ता हुई कि उग्रवादी सिखों और पाकिस्तान समर्थक मुसलमानों ने एक षड्यन्त्र रचकर आर्यसमाज जैसी धार्मिक तथा परोपकारी संस्था की ५० लाख रुपये की सम्पत्ति को बिना किसी कारण नष्ट कर दिया। वे भूल गये कि आर्यसमाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है। इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए वहां आर्यसमाज ने मन्दिर बनाया। वहां सत्सग का प्रबन्ध किया। धमार्थ औषधालय स्थापित किया तथा कन्याओं की शिक्षा के लिए कन्या पाठशाला चालू की। उग्रवादी ये भी भूल गये कि आर्यसमाज का संगठन सारे संसार में फैला हुआ है और इसकी शक्ति सर्वमान्य है। उन्हें स्मरण नहीं रहा कि सन् १९३९ में निजाम हैदराबाद ने आर्यसमाज के प्रचार कार्य पर पाबन्दी लगाई थी तो शान्तिप्रिय आर्यसमाज उस समय क्रान्तिकारी आर्यसमाज बनकर निजाम हैदराबाद के दान्त खट्टे करने के लिए मैदान में कूद पड़ा था और सारे देश से स्वयंसेवकों के जत्थे आर्यसमाज पर लगी पाबन्दी को हटाने के लिए हैदराबाद की स्टेट में पहुंच गये और उनकी जेल भर दी। जालिम निजाम ने उन पर अत्याचार ढाये परन्तु आर्य वीरों ने निजाम को झुकने पर विवश कर दिया था। इसी प्रकार सन् १९४३ में लोहारू के नबाब ने भी टांग उठाई थी और अपनी रियासत में आर्यसमाज के प्रचारकों के प्रवेश पर पाबन्दी लगा दी थी। उस समय भी हरयाणा की वीर जनता ने पाबन्दी को तोड़कर वहां आर्यसमाज के-प्रचार की धूम मचा दी थी और वहां आर्य समाज मन्दिर का निर्माण करके आर्यसमाज के प्रचार का स्थाई केन्द्र बना दिया।

सन् १९५६ में पंजाब के लोहपुरुष मुख्य मन्त्री कहलाने वाले सरदार प्रतापसिह कैरों ने भी पंजाब तथा हरयाणा में हिन्दी भाषा को पढ़ाई को समाप्त करने की योजना बनाई थी और आर्यसमाज ने हिन्दी रक्षा आन्दोलन पूरी शक्ति के साथ चलाकर उसे भी मुंह की खाने पर विवश कर दिया था।

जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्य मन्त्री शेखअब्दुल्ला ने भी एक बार अपने राज्य के पुस्तकालयों आदि से सत्यार्थप्रकाश को निकालने का आदेश दिया था, परन्तु जब आर्यसमाज ने उन्हें ललकारा तो वे शीघ्र ही सम्भल गये और अपने आदेश को वापिस ले लिया था। उन्हीं के सुपुत्र डा० फारूक अब्दुल्ला मुख्यमन्त्रीत्व के अन्तिम दिनों में उग्रवादी सिखों तथा पाकिस्तान समर्थकों को उकसाकर ७ जून को श्रीनगर में एक जलूस निकलवाकर आर्यसमाज मन्दिर तथा कन्या पाठशाला की ५० लाख की सम्पत्ति को जलवा दिया। जब आर्यसमाज की शिरोमणि सार्वदेशिक सभा के अधिकारी इसकी सूचना मिलने पर श्रीनगर पहुंचे और वहां जाकर सारी स्थिति का अवलोकन किया और उसके पश्चात् डा० फारूक अब्दुल्ला से मिलकर अपराधियों को पकड़ने तथा आर्य समाज की सम्पत्ति को क्षतिपूर्ति की मांग की तो फारूक साहब ने कहा कि श्रीनगर में आर्यसमाज के मन्दिर को जनता पसन्द नहीं करती अतः अब यहां पुनः मन्दिर बनाने का कष्ट न करें। परन्तु उन्हें पता नहीं था कि जम्मू कश्मीर की जनता उन्हें भी पसन्द नहीं कर रही और इसी कारण वहां के राज्यपाल ने कुर्सी से हटा दिया।

हमे आश्चर्य तो यही होता है कि सैनिक कार्यवाही में उग्रवादियों की किलाबन्दी समाप्त करने में अमृतसर के हरमन्दिर को क्षति पहुँची, उसकी पूर्ति का आदेश देने राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिह स्वयं अमृतसर पहुंच गये, परन्तु ज्ञानी जी को श्रीनगर में हुई आर्यसमाज की ५० लाख रुपये की क्षति पूर्ति का ध्यान आज तक नहीं आया। इसे भेदभाव नहीं तो और क्या कहा जाये ?

अतः हम आर्य जनता को एक बार फिर आह्वान करते हैं कि श्रीनगर में आर्यसमाज की ५० लाख रुपये से भी अधिक की सम्पत्ति की हानि की पूर्ति के लिए संगठित होकर आवाज उठावें और अपने अपने आर्यसमाजों के प्रस्ताव पास करके भारत सरकार तथा जम्मू कश्मीर सरकार को भेजकर क्षतिपूर्ति की मांग करें। कश्मीर सरकार को आर्य जनता के साथ न्याय करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा।

रणजीतसिह

वेद प्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का शराबबन्दी आन्दोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मार्ग दर्शन में वेद प्रचार मंडल जिला कुरुक्षेत्र ने शराबबन्दी का एक नया ढंग निकाला है जिसके अनुसार मण्डल किसी गांव के प्रतिष्ठित मद्यसेवन करने वाले के घर पहुँचते हैं और उससे आग्रह पूर्वक निवेदन करते हैं कि आप शराब छोड़ देवें जिससे आपको देखकर गांववासी भी शराब छोड़ सकें। जब तक वह व्यक्ति शराब छोड़ने को तैयार नहीं होता तब तक स्वामी रुद्रवेश की भजनमण्डली द्वारा भजन, विद्वानों द्वारा उपदेश उसके घर के आगे शराबबन्दी सम्मेलन चलता है जिसमें मण्डल के सभी लोग भूख हड़ताल करके बैठते हैं भूख हड़ताल तभी समाप्त होती है जब व्यक्ति शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करता है।

ऐसा ही एक कार्यक्रम लाडवा क्षेत्र में बनी गांव के सरपंच श्री फूलसिह जी के निवास स्थान पर किया गया जहां आचार्य देवव्रत जी ने यज्ञ करवाकर सरपंच से समस्त गांव के सामने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करवाई। उसी जलसे में सरपंच की धर्मपत्नी के नेतृत्व में गांव की कई औरतों ने कली (हुक्का) छोड़ने की प्रतिज्ञा भी की। सम्मेलन को आचार्य देवव्रत तथा मण्डल के मन्त्री धर्मदेव विद्यार्थी, स्वामी रुद्रवेश जी ने सफल बनाया।

प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद का देहान्त

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद का १२ जुलाई को उनके निवास स्थान जालन्धर छावनी में लम्बी बीमारी के बाद देहान्त हो गया है। वे दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर के स्नातक थे। उन्होंने आर्यसमाज सम्बन्धी कई पुस्तकों को लिखा तथा वैदिक धर्म साप्ताहिक का भी प्रकाशन किया। आप पंजाब सभा के विभाजन के बाद पंजाब सभा के मन्त्री चले आ रहे थे।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

केदारसिह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

सौ वर्ष से पहले की बात

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

एक बार स्वामी दयानन्द सरस्वती का शास्त्रार्थ स्काट नाम के पादरी के साथ हो रहा था। शास्त्रार्थ का विषय था क्या ईश्वर पाप क्षमा करता है? पाप क्षमा के विषय में स्काट ने कहा—यदि आपके मतानुसार ईश्वर पाप क्षमा नहीं करता तो उसकी स्तुति और प्रार्थना करने से क्या लाभ? उसे दयालु क्यों कहा जाए? स्वामी दयानन्द सरस्वती ने इसका उत्तर देते हुए कहा—

मनुष्य के लिए ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना परमावश्यक है। स्तुति से भगवान् में मनुष्य की प्रीति और आस्था बढ़ती है। इससे उसका ईश्वर में विश्वास बढ़ता चला जाता है। प्रार्थना से मनुष्य में अहंकार का नाश होकर आत्म-बल बढ़ता है और मनुष्य विनीत बनता है। अब रही ईश्वर के दयालु होने की बात। क्या यह उसकी दया नहीं कि वह माँ के पेट से मरणपर्यन्त हमारा पालन-पोषण और रक्षण करता है। क्या यह उसकी दया नहीं है कि वह हमारे पापों का दण्ड देकर हमारा सुधार करता है।

यह सुनकर स्काट पादरी ने कहा—दया और न्याय ये दोनों गुण परस्पर विरोधी हैं। यदि न्याय करे तो दया और दया करे तो न्याय छूट जाता है। क्योंकि न्याय उसको कहते हैं जो कर्मों के अनुसार न अधिक और न ही न्यून सुख और दुःख पहुँचाए। दया से अभिप्राय यह लिया जाता है कि जो अपराधी को बिना दण्ड दिए छोड़ देवे। स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सहज मुस्कान के साथ पादरी को उत्तर देते हुए समझाया—जैसे राजा एक डाकू को दण्ड देकर न्याय निभाकर अपनी प्रजा की रक्षा करके दया करता है। ठीक इसी प्रकार ईश्वर भी पापी को दण्ड देकर न्याय निभाता है और समस्त प्रजा पर दया भी करता है।

इस शास्त्रार्थ के अन्त में पादरी ने अपनी अन्तिम युक्ति प्रस्तुत करते हुए कहा—संसार के सारे पदार्थ ईश्वर के हैं। यह उसका अधिकार है कि वह अपनी वस्तु किसी को दे या न दे अथवा जिसको चाहे जितना दे। ऐसा करने से वह अन्यायी नहीं हो सकता। अपनी युक्ति की पुष्टि में पादरी ने दृष्टान्त दिया—आपके पास दो भिखारी आते हैं। आप एक को दो आने और दूसरे को चार आने देते हैं, तो क्या आपने एक भिखारी को कम पैसे देकर अन्याय किया? दूसरा दृष्टान्त लीजिए एक धनी किसान को मजदूरों की आवश्यकता पड़ी। वह पड़ोस के गांव में गया और उसने दो आदमियों को चार चार आने पर काम में लगा दिया। दो घण्टे बीतने पर किसान को दो आदमी और मिल गए। वह उन्हें भी काम पर लगा लेता है, सूर्यास्त होने से दो घण्टे पहले चार मजदूर कन्धे पर कुदाल रखे उसे मिल गए। किसान ने पूछा—तुम अभी से घर क्यों लौट रहे हो? उत्तर में मजदूरों ने कहा—आज कोई काम नहीं मिला। किसान ने कहा यदि तुम्हें आज कोई काम नहीं मिला, तो मेरे खेत में थोड़ी देर काम कर दो। भूखा क्या मांगे—दो रोटी! और वे काम पर लग गए। सूर्यास्त होने पर किसान ने सबको चार आने मजदूरी के दे दिए। अब आप बतलाइए कि क्या इस किसान ने सबको बराबर पैसे देकर पहले दो मजदूरों के साथ अन्याय किया।

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उत्तर दिया—स्टाक महोदय! आप अपने दृष्टान्तों पर गम्भीरता से विचार करें तो मान लेंगे कि पात्र और अपात्र तथा भिखारियों की अवस्था और आवश्यकता को जाने बिना मनमाना दान देना या मजदूरी देना विवेक रहित अल्पज्ञ और अव्यवहारिक मनुष्य का ही काम हो सकता है। परन्तु उस सर्वज्ञ विवेकी परमात्मा का काम नहीं माना जा सकता। इस प्रकार अल्पज्ञ पुरुष की तुलना सर्वज्ञ परमात्मा से करना युक्ति संगत नहीं है। अन्त में पादरी को स्वीकार करना पड़ा कि ईश्वर न्यायकारी होने के साथ साथ दयालु भी है।

रामेश्वरदास आर्य कन्या विद्यालय होली मोहल्ला, करनाल का शानदार परीक्षा परिणाम

इस वर्ष आर० डी० आर्य कन्या उच्च विद्यालय करनाल का मैट्रिक का परिणाम शतप्रतिशत रहा और इससे पहले भी इसी स्कूल का मिडल परीक्षा का परिणाम भी शतप्रतिशत रहा। इसके अतिरिक्त इसी वर्ष पांचवीं कक्षा के दो विद्यार्थियों ने छात्रवृत्ति प्राप्त की। मैट्रिक की एक छात्रा मीना गोयल ने ७०७ अंक प्राप्त करके मेरिट में स्थान प्राप्त किया। यह सब हमारे स्कूल के स्टाफ तथा मुख्याध्यापिका के कठिन परिश्रम का जीता जागता प्रमाण है। मैं आशा करता हूँ कि आने वाले समय में भी यह स्कूल और भी उन्नति के पथ पर रहेगा।

रतनसिंह राठर

प्रबन्धक आर. डी. आर्य कन्या उच्च विद्यालय करनाल

आर्य भाइयों को सूचना

अमृतसर का फौजी आपरेशन तथा आर्य वीरों का बलिदान श्रीनगर में जलते हुए मन्दिर तथा आर्य वीरों की अमर गाथाएं आप अपने नगर और ग्राम में चित्रपट पर दिखला कर देश और धर्म की भावनाओं को जागृत करें। इस प्रचार में जोशीले गीत भी आपको सुनने को मिलेंगे। बिजली का प्रबन्ध अवश्य हो।

आशानन्द भजनीक

संन्यास आश्रम, दयानन्द नगर

गाजियाबाद (यू० पी०)

आर्यावर्त्त युवक परिषद् के तत्वावधान में लगाये गये ब्र० प्रशिक्षण शिविरों का एक तूफानी दौर समाप्त

आर्यावर्त युवक परिषद् के तत्वावधान में ब्रह्मचारी महेन्द्रसिंह शास्त्री द्वारा गुड़गांवा शहर, सुल्ताली, वजीराबाद, खेड़ीसुलतान शाहदरा दिल्ली, बहादुरगढ़ में ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया तथा आखिर में बड़ा शिविर बादशाहपुर गुड़गांव में दिनांक १८ जून से २४ जून तक लगाया गया जो कि इस इलाके में एक सफल कार्यक्रम रहा है।

शिविर संयोजक

सजानसिंह आर्य अध्यापक

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षा में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता आर्यविद्या परिषद् हरयाणा

सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

आदर्श आर्य विवाह संस्कार



विवाह संस्कार के अवसर पर आज समाज में नाना प्रकार की कुरीतियां प्रचलित हैं। किसी सौभाग्यशाली परिवार में ही इस अवसर पर कुरीतियों का बहिष्कार कर सुरीतियों की रक्षा की जाती है। १७-६-८४ को गुरुकुल झज्जर एवं गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री आचार्य राजकुमार शास्त्री ग्राम सुनारियां (रोहतक) का विवाह-संस्कार नांगल कलां जिला सोनीपत निवासी श्री आर्यमुनि की सुपुत्री सावित्री देवी शास्त्री के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। यह संस्कार श्री शास्त्री के मामा महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य ग्राम मकड़ोली कलां के संरक्षण एवं निर्देशन में हुआ। विवाह दिवस से पांच दिन पूर्व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजनमण्डली के गायक श्री तेजपाल आर्य ने ग्राम मकड़ोली में वेदप्रचार किया। यज्ञ भी चलता रहा। इस अवसर पर महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य मकड़ोली कलां ने भी विभिन्न संस्थाओं को दिया। गुरुकुल झज्जर—१०१, गुरुकुल नरेला—१०१, गुरुकुल कालवा—१०१, आर्ष गुरुकुल खानपुर—१०१, आर्यसमाज मकड़ोली कलां—१०१, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा—३००, दयानन्द मठ रोहतक—२१, गोशाला—११ रुपया दान दिया गया। प्रीतिभोज में शुद्ध देशी घी का प्रयोग किया गया। बारात में पांच बाराती सम्मिलित हुए; जो सभी आर्यसमाज के नेता, विद्वान् तथा कार्यकर्त्ता थे। मार्ग में बारात के निवास स्थान पर श्री रामेहर जी एडवोकेट, डा० सुदर्शनदेव जी आचार्य तथा महाशय बलवन्तसिंह जी विवाह सम्बन्धी वैदिक सिद्धांतों पर विचार-विमर्श करते रहे। स्वामी योगानन्द जी ने संस्कार आदि की उत्तम व्यवस्था की। मिलनी बारौठी, पाटड़ाफेर, कन्यादान (रुपया, आभूषण आदि देना) गाड़ी का आधा किराया, दान, पचायती, मोदी, मनियारी, थापा, जुहारी, राम-रमी (विदाई) आदि सब अवैदिक प्रचलित विवाह सम्बन्धी कुरीतियों का बहिष्कार किया गया। आर्य समाज के उद्भट विद्वान् डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने वैदिक रीति से विवाह-संस्कार कराया। श्री रामेहर जी एडवोकेट ने संस्कार के उपरांत इस वैदिक संस्कार की विशेषता तथा इसके सामाजिक प्रभाव का वर्णन करते हुए नव-युगल को आशीर्वाद दिया। श्री महाशय बलवन्तसिंह जी आर्य ने आठ प्रकार के विवाहों में ब्राह्म, देव, प्राजापत्य और आर्ष विवाहों को उत्तम बतलाते हुए राष्ट्र के लिए उत्तम सन्तान के निर्माण के लिए ही गृहाश्रम की आवश्यकता बतलाई, आपने दहेजप्रथा का जोरदार खण्डन किया और उसे नारी जाति के अपमान का मूल कारण बतलाया। दान में केवल एक रुपया और गोदान ही स्वीकार किया।

कन्या पक्ष की ओर से श्री आर्यमुनि जी नांगलकलां (सोनीपत) निवासी भी आर्यसमाज के पुराने कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। उन्होंने आरम्भ से ही अपनी सुपुत्री सावित्री पर आर्य संस्कार की अनुपम छाप डाली है। कन्या ने विवाह संस्कार पर पर्दा (घूंघट) नहीं किया। घर पर कन्या गुरुकुल लोवा कलां (रोहतक) की सुयोग्य विदुषी ब्रह्मचारिणियों द्वारा यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया गया। ब्रह्मचारिणियों ने बारात के स्वागत में शिक्षाप्रद गान प्रस्तुत किया। श्री आर्यमुनि जी ने वेदप्रचार का कार्य करने वाला निम्नलिखित आर्य संस्थाओं, सभाओं, गुरुकुलों एवं व्यक्तियों को १०१ रुपये प्रति संस्था को दान किया। लोवा कलां, लडरावण, झज्जर, नरेला, गौतमनगर नई दिल्ली, कालवा, वेदप्रचार मण्डल सोनीपत, दयानन्दमठ रोहतक, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, सार्वदेशिक आर्य वीर दल दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरयाणा, कन्या गुरुकुल गणियार, कन्या गुरुकुल पाढ़ा, खानपुर, ब्राह्ममहाविद्यालय हिसार, सिंहपुरा, मटिण्डू, आर्यनगर घोरणवास। भजनमण्डली रामस्वरूप निडर, स्वामी वेदमुनि, ब्र० चन्द्रदेव आर्य, स्वामी योगानन्द, आचार्य सुदर्शनदेव, देवकर्ण वानप्रस्थी।

विदाई के अवसर पर दान में १ रुपया, एक सत्यार्थप्रकाश और हवनकुण्ड दिया गया। जो गृहस्थ जीवन में स्वाध्याय तथा यज्ञादि शुभ कर्मों के अनुष्ठान का प्रतीक है।

दोनों ग्रामों तथा सभी नर-नारियों पर इस आदर्श विवाह-संस्कार का अत्युत्तम प्रभाव रहा।

मन्त्री

आर्यसमाज मकड़ोली कलां जिला रोहतक

एक और आदर्श आर्य विवाह संस्कार सम्पन्न

तिथि आषाढ कृष्णा नवमी संवत् २०४१ तदानुसार २२ जून १९८४ को बहूअकबरपुर जिला रोहतक के निवासी श्री चौधरी खुशीराम आर्य की सुपुत्री तीर्थकौर आयु १८ वर्ष के साथ ग्राम सुबाणा (झज्जर) के श्री राजवीर एम० ए० आयु २४ वर्ष का शुभ विवाह वैदिक रीति से पंचायती नियमानुसार सदाचार सहित सम्पन्न हुआ। विवाह से पूर्व सगाई पर वर का अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश सहित एक रुपया भेंट किया और सारी क्रिया एक रुपये से पूरी करके दान स्वरूप १०१) दिए गए। पाणिग्रहण संस्कार आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपदेशक पं० सुरेश कुमार शास्त्री ने सम्पन्न कराया। इस शुभ अवसर पर सर्वखाप पंचायत हरयाणा (सोरम) के प्रधान श्री महावीरसिंह जस्टिस ने और चौधरी खुशीराम के मित्र मा० निहालसिंह आर्य व अन्य नर नारियों ने नव विवाहित दम्पति को दीर्घ जीवन तथा सम्पन्नता का आशीर्वाद दिया। बारात में २१ बाराती आए थे। किसी प्रकार का गाजा-बाजा वा नाच नहीं किया गया। देवियों के मंगल गान से सायंकाल विदा के समय डोली को हर्षसहित भेजा गया।

सायंकाल ग्राम की पुरानी बड़ी चौपाल में मा० निहालसिंह आर्य ने सर्वसज्जनों को वैदिक शिक्षा; प्राचीन आर्य संस्कृति एवं सर्वखाप पंचायत हरयाणा का इतिहास ११ बजे तक सुनाया और शराब के दोष बताकर पूर्ण मद्यनिषेध का प्रचार किया जिससे ग्रामीणों पर बहुत अच्छा प्रभाव पड़ा। चौधरी खुशीराम ने दान में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा को १०१) दान दिया। श्री राजवीर ने सदस्यता के लिए महाराजा सूरजमल शिक्षा संस्थान को ११०१) प्रदान किया।

जयकरण परिवार मुखिया

कुरुक्षेत्र में महर्षि दयानन्द वैदिक धाम में यज्ञशाला की आधार-शिला समारोह का दृश्य

भारत प्रसिद्ध तथा ऐतिहासिक तीर्थ स्थल कुरुक्षेत्र में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से महर्षि दयानन्द वैदिक धाम मार्केट का निर्माण किया जा रहा है। यहां सूर्य ग्रहण के अवसर पर सभा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन होता है। सभा की ओर से प्रचार कार्य को स्थिर तथा प्रभावशाली बनाने के लिए यहाँ दुकानों का निर्माण किया जा रहा है। इसी स्थान पर गत मास अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती ने यज्ञशाला की आधार-शिला रखी।



पहले चित्र में महाशय भरतसिंह जी वानप्रस्थी, स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती स्वामी रुद्रवेश, सभा के उपप्रधान चौ०



सत्यदेवसिंह तथा गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य देवव्रत जी अपने ब्रह्मचारियों के साथ यज्ञ कर रहे हैं।

दूसरे चित्र में स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती यज्ञशाला की आधार शिला रखते हुए दिखाई दे रहे हैं। उनके साथ स्वामी जगत्मुनि जी तथा आर्य वीर दल के स्वयंसेवक दिखाई दे रहे हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

महोदय,

निवेदन यह कि पिछले कुछ वर्षों में हिन्दी भाषा का सामर्थ्य काफी बढ़ा है और अब गहन से गहन विषयों को अभिव्यक्त करने की क्षमता हिन्दी में उत्पन्न हो गई है। भारत सरकार के वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग की ओर से लगभग सभी विषयों की शब्दावली भी प्रकाशित हो गई है। अब आवश्यकता इस बात की है कि हिन्दी भाषी प्रदेश पूरे संकल्प से हिन्दी को उच्चतम तकनीकी विषयों की शिक्षा का माध्यम बनाएं। हिन्दी भाषी प्रदेशों में कई वर्षों से सिविल इंजीनियरिंग, विद्युत इंजीनियरिंग, यांत्रिक इंजीनियरिंग और अन्य इंजीनियरिंग विषयों की पढ़ाई हिन्दी माध्यम से हो रही है। यह अनुभव किया जा रहा है कि हिन्दी माध्यम से डिप्लोमा करके निकलने वाले युवक इंजीनियरिंग विषयों का अच्छा ज्ञान रखते हैं और सफलतापूर्वक अंग्रेजी माध्यम से डिप्लोमाधारी इंजीनियर अंग्रेजी माध्यम से पढ़ाई होने के कारण इंजीनियरिंग विषयों में अंग्रेजी भाषा के समझने में काफी शक्ति लगा देने के कारण वे इंजीनियरी के अधकचरे ज्ञान से ही काम चलाते हैं। अब समय आ गया है कि इंजीनियरिंग के विभिन्न विषयों की डिग्री स्तर की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से कराई जाए। यह इसलिए भी आवश्यक है कि हिन्दी भाषी प्रदेशों में विज्ञान के विषय हिन्दी माध्यम से पढ़ाए जा रहे हैं। गणित भी हिन्दी माध्यम से पढ़ाया जा रहा है। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि हिन्दी भाषी प्रदेशों में इंजीनियरिंग विषय की डिग्री स्तर की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से की जाए। यह कार्य अब बिल्कुल भी कठिन नहीं रह गया है वैसे भी हिन्दी भाषी प्रदेशों में इंजीनियरिंग विभागों में काम करने वाले कार्यपालक अभियन्ता; अधीक्षक और मुख्य अभियन्तागण अपना तकनीकी कामकाज अपने तकनीकी विषय के श्रुतलेख आदि हिन्दी में ही दे रहे हैं। इसलिए यह बहुत आवश्यक है कि इंजीनियरिंग की डिग्री स्तर की पढ़ाई भी हिन्दी माध्यम से हो। इसलिए प्रार्थना है कि आप इस मामले पर ध्यान देने की कृपा करें और अविलम्ब डिग्री स्तर की पढ़ाई के माध्यम में जो असंगति है, उसे दूर करके हिन्दी माध्यम से डिग्री स्तर की पढ़ाई करा कर छात्रों की, व अपने प्रदेश की जनता, विशेषतः ग्रामीण जनता की कठिनाइयां दूर करके उल्लिखित असंगति को दूर करने की कृपा करें।

इस संबंध में आप जो भी आदेश दें उसकी जानकारी परिषद् को भी करवाने की कृपा करें।

भवदीय

जगन्नाथ संयोजक राजभाषा कार्य

आर्यसमाज जीन्द शहर के मन्त्री का सन्देश सर्वहितकारी में पढ़ा पौराणिकों द्वारा घरों में यज्ञादि कराना। महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों पर कुठाराघात है, ऐसे आर्यों को सदस्यता से निष्कासित कर देना चाहिए और यदि अपनी त्रुटियों को सुधार लेवें तो अच्छी बात है। आर्यसमाज का पुरोहित पूजनीय है अतः उसे ही कुलपुरोहित समझकर समस्त संस्कारादि क्रियाएं वैदिक रीति से करानी चाहिए।

विशाल आर्य

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ

लखनऊ (उ० प्र०)

कविता कुंज

छोड़ो हाला तोड़ो प्याला

वैदिकता के शुभ्र बसंत में, मत मदिरा मेघ राशि छाओ।
छोड़ो हाला तोड़ो प्याला नव पथ पर आ जाओ॥

पीते ही होती बुद्धि भ्रष्ट।
करे तुम्हें किंकर्त्तव्य विमूढ़॥
विष है मत पीना शराब,
मनु भूले बापू का मन्त्र गूढ़
धन मान हानि और चरति पतन
तन अक्षय अपराध बढ़ाती है।
यही तोड़ती कड़ी राष्ट्र की
रे नर, नारकीय बनाती है॥

हरे भरे चन्दन वन तन को मत मरुभूमि बनाओ।
छोड़ो हाला तोड़ो प्याला नव पथ पर आ जाओ॥

बापू, बुद्ध राम कृष्ण को
होकर के मधुमय सन्तान
तुम्हारा जगमग यह परिवार
बनाती क्षणभर में श्मशान
सुरा सुन्दरी के चक्कर में
भूल गये गीता उपदेश
बेच दिया घर निज तन को भी
छोड़ के अपना निज सात्विक वेश॥

जीवन के वैदिक फूल तोड़ मत पथ में शूल उगाओ।
छोड़ो हाला तोड़ो प्याला नव पथ पर आ जाओ॥

गीता, ग्रन्थ साहब, कुरान के
ऐ प्रज्ञावान विचारो।
कर रहा निवेदन अब भविष्य
शुचि कंठ से लहू न उतारो।
भूले बैठे हो अपनी शक्ति
भरो नस नस में अनुपम जोश
प्रण करो भगा दो राक्षसी प्रवृत्ति
बोलो संस्कृत हो आत्तोष॥

अरे सौम्य, मां बहिनों के अटल सुहाग का मत सिन्दूर धुलाओ।
छोड़ो हाला तोड़ो प्याला नव पथ पर आ जाओ॥

रे ऐसा नीरस समय देख
हंसते लता कुंज मुरझायेंगे।
मद्यपान की उष्ण धार से
अभिनव अंकुर मर जायेंगे॥
'प्रसाद' कब होगा नवल प्रभात
बहे जब शुभ्र प्रेम धारा।
मिटे मदिरा मलेच्छ की रात
हंसे जब रोता शिशु प्यारा॥

सुरा सुन्दरी विष कन्या से मत मन स्पर्श कराओ।
छोड़ो हाला तोड़ो प्याला नव पथ पर आ जाओ॥

सोता 'प्रसाद'
ग्राम : सिठारी, पत्रालय : कलौलर
जनपद हमीरपुर (उ० प्र०)

महर्षि दयानन्द

—महेन्द्र शर्मा

है निर्वाण वर्ष उस धर्मवीर महान् का,
मार्ग था जिसने दिखाया हमें सच्चे ज्ञान का।
हो रहा जब धर्म वैदिक कालिमा परिपूर्ण था,
व्यर्थ के आडम्बरादि कुरीतियों से पूर्ण था।
और सामाजिक व्यवस्था रो रही थी फूट कर,
जहर छुआछूत का जो भर दिया था कूट कर।
आगमन रवि ऋषि हुआ तो तिमिर सारा छंट गया,
आवरण अज्ञान का जो सामने से हट गया।
पूज्यवर ऋषि ने सिखाया मूर्ति-पूजा व्यर्थ है,
यह अटल विश्वास था बस ईश केवल एक है।
शून्य है आकार से जो यही सत्य विवेक है।
परिश्रम विधवा विवाहों के लिए करते रहे,
किन्तु बाल विवाह का प्रतिरोध भी करते रहे।
नारियां शिक्षित सभी हों हार्दिक यह चाह थी,
वेद ज्ञान प्रचार को पकड़ी अनोखी राह थी।
नारियों को जगा, कर दी दूर पर्दे की प्रथा,
कर अछूतोद्धार हर ली युगों की उनकी व्यथा।
सामना पाखण्ड दृढ़ता से सदा करते रहे,
रूढ़ियों से ग्रसित जन की वेदना हरते रहे।
पाठशाला, अनाथालय और गुरुकुल खोलकर,
देश को जिसने पिलाया ज्ञान अमृत घोलकर।
धर्म परिवर्तित जनों की शुद्धि कर आश्रय दिया,
देश गौरव-भाव भी जन-हृदय में भर दिया।
वचन जो गुरु को दिया वह पूर्ण करने के लिए,
प्राण तक अर्पित किये कर्त्तव्य पालन के लिए।
धन्य उनकी शीलता जो विनय का आगार था,
प्राण घातक के लिए भी जिस हृदय में प्यार था।

ऋषि-ऋण-तर्पण

धन धन भारतवर्ष, यहां के भाग्यशाली हैं नर नारी।
गृहस्थ ज्ञानी ध्यानी, त्यागी संन्यासी और ब्रह्मचारी॥

वेद रवि की प्रथम रश्मियां, आर्यावर्त छू कर हरषाई थी।
यज्ञ हवन की धूम मची, मन्त्रों की गूंजी नव शहनाई थी॥

राम कृष्ण अर्जुन मीरा ने, इसी भूमि से जन्म लिया था।
स्वयं धर्म को धारण करके, कर्मों का सद्उपदेश दिया था॥

अंधी श्रद्धा ने देश धर्म की, नाव समुद्र बिच डुबा डाली।
खान पान व्यवहार बिगड़े, मत पंथों की थैली मेली जाली॥

वेद भाष्य सब दूषित बन गए, यज्ञप्रथा बदनाम हुई।
भंग हुई आश्रम मर्यादा, रवि का अस्त अविद्या शाम हुई॥

सुसंस्कृति का लोप हुआ, अज्ञान ने भौंडा नाच दिखाया।
जैन ईसाई पुराणी कुरानी, सर्वत्र पाखण्डी वाद बिछाया॥

देव दयानन्द ऋषि आपने, किया वेद का पुनः प्रचार।
हुआ देश आजाद आपसे, मिटा अविद्या अज्ञान अपार॥

ओम् नमस्ते आर्य अभय, यह नारा सब हो मिल गाओ।
करो सदा उद्धार देश का, सत्यार्थप्रकाश को पढ़ो पढ़ाओ॥

कचरूलाल ओलहन, उज्जैन (म. प्र.)

होटलों में सत्यार्थप्रकाश रखा जाए

हरयाणा के प्रसिद्ध आर्यसमाजी नेता चौधरी प्रियव्रत ने सुझाव दिया है कि दिल्ली और चण्डीगढ़ के बड़े बड़े होटलों में ठहरने वालों के लाभार्थ वहां प्रत्येक कमरे में सत्यार्थप्रकाश की एक प्रति अवश्य रखी जाये। उन्होंने इस कार्य हेतु अपनी ओर एक हजार रुपये देने की घोषणा की।

और अब राणा प्रताप रेजीमेंट

हमारे सवाददाता द्वारा जम्मू, २७ जून। इस नगर को दीवारों पर कुछ पोस्टर पाये गये हैं जिनमें कहा गया है 'भूल जाओ खालिस्तान कुचल दो पाकिस्तान।'

हाथ से लाल स्याही द्वारा बडे-२ अक्षरों में लगाये ये पोस्टर जारी किए हैं 'राना प्रताप रेजीमेंट' ने। हालाकि सार्वजनिक रूप से इसका अस्तित्व सामने नहीं आया परन्तु लगता है कि इसका गठन पंजाब में कई हत्याओं के लिए खुद को जिम्मेवार घोषित करने वाली दशमेश रेजीमेंट के मुकाबले के लिए किया गया है।

इस बीच आल इंडिया सिख स्टुडेंट्स फेडरेशन के छः वर्करों को गिरफ्तार किया गया है परन्तु इनमें से कोई भी फेडरेशन का पदाधिकारी नहीं है।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

सरकार पिला रही है, गरीब पीनी छोड़ रहे हैं

सीकर, २८ जून (वार्ता)। राजस्थान सरकार अपने वित्तीय साधन बढ़ाने के लिए जहां नगरों व कस्बों में शराब की दुकानें खुलवा रही है, वहीं इस जिले में समाज के पिछड़े वर्गों ने अपने स्तर पर शराबबन्दी का अभियान छेड़कर मोहल्लों में शराब के ठेकेदारों के सामने दुकान बन्द करने की स्थिति पैदा कर दी है। जिले के खटीक समाज ने इस दिशा में पहल कर करीब पांच हजार परिवारों पर शराब पान प्रतिबंधित कर दिया है।

समाज द्वारा लिए गए निर्णयानुसार अब शराब पीने वाले व्यक्ति को २५१ रुपये का जुर्माना अदा करना पड़ता है तथा दो बार जुर्माने के बाद उसका सार्वजनिक रूप से सामाजिक बहिष्कार कर दिया जाता है। सीकर नगर में पिछले तीन महीनों मे सात व्यक्तियों पर जुर्माना व एक का सामाजिक बहिष्कार किया गया है।

खटीकों के मोहल्ले में शराब के दुकानदार का मानना है कि तीन महीने पूर्व जहां वह प्रतिदिन लगभग अढ़ाई हजार रुपये की बिक्री करता था, वहां अब यह घटकर ५०० रुपये से भी कम रह गई है। नायक समाज व प्रगतिशील राजपूत समाज ने भी अपने बिरादरी सदस्यों पर शराबबन्दी लागू कर दी है।

(पंजाब केसरी दिल्ली)

यमुनानगर में ६ और युवक बंदी ८ रिवाल्वर मिले

यमुनानगर, २८ जून (स)। स्थानीय पुलीस ने ६ और सिखों को गिरफ्तार करके स्थानीय एक सिनेमा की टिकट खिड़की पर और हनुमान मन्दिर पर हथगोला फेंकने के मामलों को हल कर दिया है।

पुलीस के अनुसार गिरफ्तार युवकों के कब्जे से आठ रिवाल्वर, ५ हथगोले और ४० कारतूस बरामद किये गये हैं। गिरफ्तार युवकों के नाम हैं—जसबीरसिंह, दलजीत सिंह, चरणजीत सिंह, रणजीत सिंह, दलीपसिंह और चरणजीत सिंह। इनके अतिरिक्त २० अन्य व्यक्ति गिरफ्तार किये गये हैं। इनमें दो शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी के सदस्य प्रिंसीपल सतबीरसिंह और जोगासिंह के राष्ट्रीय सुरक्षा एक्ट के अन्तर्गत नजरबंद किया गया है।



आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन: दयानन्दमठ: रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49   फाल ८८१९   सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म्   कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक–डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री   सम्पादक–वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३२   २१ जुलाई १९८४   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा की देश प्रेमी और धर्म प्रेमी जनता तथा आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं से अपील

साम्प्रदायिक शक्तियों और विदेशी ताकतों के षड्यन्त्र के कारण पंजाब में आतंकवादियों और देशद्रोहियों द्वारा निरपराध हिन्दुओं, निरंकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों की हत्यायें की जाती रही। अकालियों और उग्रवादियों ने जो लबादा ओढ रखा था, कुछ तथाकथित धार्मिक और आर्थिक राजनैतिक मांगों का वह अब जनता के सामने ही नहीं, बल्कि सारी दुनियां के सामने अकालियों का देशद्रोही रूप खुलकर सामने आ गया।

स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को बहाल करने और देश की एकता को सुरक्षित करने के लिए भारत सरकार को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। सेना के जवानों और अफसरों ने जिस अनुशासन संयम और वीरता का प्रदर्शन किया वह भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गया। यह गर्व की बात है कि राष्ट्र की एकता के इस महान् यज्ञ में आहुति देने वाले अधिकतर जवान हरयाणा में जन्मे थे जहां हमारे अनेकों जवान बलिदान हुए वहां बहुत से बुरी तरह घायल भी हुए। परन्तु उन्होंने राष्ट्र के टुकड़े होने से बचा दिया और राष्ट्र द्रोहियों के नापाक षड्यन्त्र को विफल कर दिया।

हताहत जवानों के परिवारों की सहायता के लिए सरकारी और जनता के नाम अपील निकली है। हरयाणा की जनता को अपने वीरों के परिवारों की सहायता के लिए दिल खोलकर धन देना चाहिये और इन परिवारों के पुनर्वास में सहायक होकर अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। इस उद्देश्य के लिए सभा ने एक निधि स्थापित करने का निर्णय किया है। १०० रुपये या इससे अधिक राशि देने वाले भाइयों के नाम हम सर्वहितकारी में प्रकाशित करेंगे। शिक्षा संस्थाओं तथा आर्यसमाजों की राशियों को भी सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

सहायता की राशि सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों द्वारा नकद, मनीआर्डर या चैकों द्वारा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक अथवा सभा के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैया लाल जी महता को ई-४१ नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद के पते पर भी भेजी जा सकती है। अधिक से अधिक धन १० अगस्त तक एकत्रित करके भेजने के लिए हम सबसे प्रार्थना करते हैं ताकि स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त के पर्व पर जवानों के परिवारों को पहली किस्त के रूप में हम कुछ भेंट कर सकें।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान—परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष—हरयाणा रक्षा वाहिनी
प्रधान—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

हरयाणा निवासियों के नाम खुला पत्र

वीर भूमि हरयाणा के बहादुर सपूतों की साख कसौटी पर

प्राचीन इतिहास जहां तक प्रकाश डालता है, पुण्य भूमि हरयाणा वीरों, योद्धाओं, ऋषियों, सन्तों की क्रीड़ा-स्थली रही है। आदि काल से ही हरयाणा वाले अपनी आन पर खरे उतरे हैं। अपनी साख को बट्टा नहीं लगने दिया आज के युग में भी अंग्रेजी शासन काल से लेकर आज तक भारतीय सेनाओं को जितने भी युद्ध लड़ने पड़े, हरयाणा के वीर जवानों ने अपूर्व शौर्य व बहादुरी का परिचय दिया, तथा राष्ट्र रक्षार्थ अपने प्राण निछावर करने में अग्रणीय रहे जिससे हरयाणा के जवानों के पराक्रम की गहरी छाप देशवासियों पर पड़ी।

पाकिस्तान बनने से पहले तथा बाद में भी, संयुक्त पंजाब में हरयाणा उपेक्षित व पिछड़ा रहा। यहां के निवासियों की न विद्या की, न भूमि की प्यास बुझती थी। अतः हरयाणा निवासियों ने अनुभव किया कि जब तक हरयाणा अलग राज्य नहीं बनता, यहां किसी प्रकार का विकास न हो सकेगा, यहां के निवासी उन्नति न कर सकेंगे, यह प्रदेश पिछड़ा ही रहेगा।

अतः हरयाणा निवासियों ने अकालियों की सहमति से पंजाब हरयाणा अलग राज्य बनाने का निश्चय किया और केन्द्रीय सरकार ने १ नवम्बर १९६६ को अलग राज्य स्थापित किया व दोनों राज्यों की सीमाओं का निर्धारण करने के लिए 'शाह आयोग' नियुक्त किया जिसने अपनी रिपोर्ट में चण्डीगढ सहित सारी खरड़ तहसील हरयाणे को दी, किन्तु सन्त फतेह सिंह ने चण्डीगढ़ पंजाब में मिलाने के लिए आत्मदाह की धमकी दी, तो अकाली नेताओं ने संत जी की जान बचाने के लिए चण्डीगढ़ पंजाब को देने के बदले में हिन्दी भाषी अबोहर फाजिल्का हरयाणे को देना स्वीकार किया। अकालियों की भावनाओं का सम्मान करते हुए तथा राष्ट्रहित की दृष्टि को सामने रखकर हरयाणा निवासियों ने चण्डीगढ़ पर अपना पूरा अधिकार मानते हुए भी चण्डीगढ़ पंजाब को देकर अबोहर फाजिल्का क्षेत्र लेना स्वीकार किया। अतः प्रधान मन्त्री ने अपने २९ जनवरी १९७० के ऐवार्ड में चण्डीगढ़ पंजाब को व अबोहर फाजिल्का शहर और उनके साथ लगते लगभग ११५ गांव हरयाणा को देने का निर्णय दिया, जिसे स्वीकार कर अकालियों ने दीवाली मनाई। किन्तु हरयाणा की जनता में, चण्डीगढ़ न मिलने से तीव्र प्रतिक्रिया हुई, बड़ा आन्दोलन हुआ तथा लगभग एक दर्जन युवक गोली का शिकार हुए। फिर भी हरयाणा निवासियों ने चण्डीगढ़ के बदले में अबोहर फाजिल्का लेकर संतोष किया तथा प्रधान मन्त्री के ऐवार्ड पर फूल चढाये।

राजनैतिक स्थिति के कारण आज ऐसे हालात बन गए जिससे हरयाणा निवासियों को साख कसौटी पर परखने का समय आ गया। पंजाब की सभी राजनैतिक

(शेष ५ पर)

शराब से सर्वनाश

महाराजा सज्जनसिंह

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

ये महाराणा सुधार प्रिय, विद्यारसिक, मिलनसार और शान्ति प्रिय थे। महाराणा ने आर्यसमाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती को निमन्त्रण देकर उदयपुर बुलवाया था और उनके उपदेश से मुग्ध होकर उनके अनन्य भक्त बन गये थे। उन्हें एकलिंग जी के मन्दिर का अधिष्ठाता भी बनाना चाहा, परन्तु मूर्ति पूजा पर मतभेद रहने पर निर्भीक सन्यासी ने स्वीकार नहीं किया, तिस भी पर महाराणा की श्रद्धा त्यागी सन्यासी के प्रति बनी रही और उनसे वैशेषिक दर्शन तथा मनुस्मृति आदि ग्रन्थ पढ़े व व्याख्यान सुने। ऋषि ने अपने उपदेश से महाराणा के कई दुर्व्यसन छुड़वाये। उदयपुर में ही स्वामी जी ने अपना जगद्विख्यात क्रान्तिकारी 'सत्यार्थप्रकाश' नामक अमर ग्रन्थ लिखकर समाप्त किया और अपनी वसीयत (स्वीकार पत्र) में परोपकारिणी सभा स्थापित करके उसका प्रधान महाराणा को बनाया। स्वामी दयानन्द का पहले अच्छा प्रभाव पड़ा, इसी कारण महाराणा सज्जनसिंह ने प्रजा हित के अनेक अच्छे अच्छे कार्य किये। इन्होंने दवाखाना, छापाखाना, साप्ताहिक समाचारपत्र निकालना, जनता का बाग, सज्जननिवास बाग नाहर मगरे का बाग, चिड़ियाघर आदि बनवाये। इसी प्रकार उदयपुर में हाई स्कूल और कन्या पाठशाला खोली। ग्रामों में भी स्कूल बनवाये। विद्वानों को आश्रय देते थे। 'सज्जन वाणी विलास' नाम का पुस्तकालय बनाया। बड़े बड़े विद्वानों को रखकर मेवाड़ राज्य का इतिहास लिखवाया। उसका नाम 'वीर विनोद' रखा। चित्तौड़गढ के दुर्ग की मुरम्मत के लिए २४ हजार रुपये वार्षिक व्यय करने की आज्ञा दी। वे नाच-रंग खेल-कूद, शिकार से दूर रहा करते थे। जहां तक हो, प्रजा की भलाई में अपना समय बिताते थे। इसका कारण यही था कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसे ऋषि का सत्संग, शिक्षा और विद्वानों से सम्पर्क रखते थे। स्वामी दयानन्द में ये बड़ी श्रद्धा रखते थे। इसी कारण इनकी जीवनचर्या नियमपूर्वक चलती थी। किन्तु स्वामी दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् अन्तिम वर्षों में शराब, अफीम व भोगविलास में लग जाने से इनका स्वास्थ्य बिगड़ गया और अल्पायु अर्थात् २५ वर्ष की भरी जवानी मे महाराणा का स्वर्गवास हो गया। शराब ने आर्य जाति के इस सूर्य को अस्त कर दिया।

इनके पश्चात् महाराणा फतहसिंह मेवाड़ की गद्दी पर बैठे। ये भी स्वामी दयानन्द के प्रमुख शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा के सत्संग से बहुत श्रेष्ठ शासक रहे। इन्हें मद्यपान, अफीम आदि नशीली वस्तुओं से घृणा थी। सबसे भारी गुण इनमें यह था कि वे सदा एक पत्नी व्रत रहे। ये पहले महाराणा थे, जिनके एक ही रानी रही। इनके चमकते हुए मुखमण्डल और प्रभावशाली व्यक्तित्व पर बड़े बड़े अंग्रेज यहाँ तक कि लार्ड कर्जन आदि भारत के वायसराय भी प्रभावित हुए। वास्तव में पुराने ढंग के आर्य नरेश की उदारता और शान का वे नमूना थे। वे स्नान, सन्ध्या, स्वाध्याय और व्यायाम नियमित रूप से करते थे। इसलिए उनका स्वास्थ्य मृत्यु पर्यन्त बड़ा अच्छा रहा। दान आदि धर्म कार्यों को दिल खोलकर करते थे। प्रजाहित में ही लगे रहते थे। उन्होंने महाराणा प्रताप के कुल को अपने पवित्र जीवन और सेवाओं से चार चाँद लगाये एवं ऊँचे चरित्र और पवित्र जीवन के कारण ८० वर्ष से अधिक दीर्घ आयु का भोग किया और ४५ वर्ष तक राज्य किया।

यही मद्यपान आदि के त्याग और उच्च जीवन का फल श्रेष्ठ व्यक्तियों को मिलता है।

राजपूतों के पश्चात् उनके निकटवर्ती राठौड़ भी देखा-देखी शराब और सुन्दरी से प्रेम करने लगे। यही प्रेम अन्त में उनके विनाश का कारण बना। (क्रमशः)

गोगा मेढ़ी के मेले पर चतुर्वेद पारायण-महायज्ञ

गोगामेढ़ी (राजस्थान) में यजुर्वेद पारायण यज्ञ के अन्तर्गत सर्वत्यागी सन्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज द्वारा वैदिक साधु आश्रम की आधारशिला सम्पन्न हुई। इस उपलक्ष पर वेदज्ञ सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी महाराज तथा पूज्य स्वामी ईशानन्द जी महाराज ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया। इस शुभावसर पर निर्णय किया गया कि दिनांक ११ अगस्त १९८४ से १० सितम्बर १९८४ तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ का आयोजन किया जाये। कार्यक्रम श्रावणी पूर्णीमा से भाद्रपद पूर्णीमा तक चलेगा जिसमें आर्य जगत् के अद्वितीय, साधु, संन्यासी, विद्वान् एवं महोपदेशक पधार रहे हैं।

आनन्दमुनि वानप्रस्थ गोगामेढ़ी (राजस्थान)

जरुरत है आर्य जवानों की

जरुरत है आर्य जवानों की,
धर्म रक्षक वीर बलवानों की ॥
जो देश धर्म पर तन मन वारे,
धर्मी कर्मी धनवानों की ॥१॥

तन मन जिनका वश में होवे।
जो सुख दुःख के अभ्यासी हों।
जो काल से भी भय न खायें।
सच्चे ईश्वर विश्वासी हों।
नित परोपकार के काम करें।
जरुरत ऐसे गुणवानों की ॥२॥

जो दानवी वृत्ति मिटा करके।
अविद्या का मेटें अंधियारा।
अनाचार भ्रष्टाचार मिटा।
वेदों का करदे उजियारा।
गरल पी करके अमृत बाटें।
ऋषि दयानन्द सम विद्वानों की ॥ ३॥

अनाथों की रक्षा करते को।
जो तन मन धन का दान करें।
गुरुकुल खोलें जो पढ़ने को।
हिन्दी भाषा का मान करें।
गोली छुरियों से नहीं डरें।
श्रद्धानन्द से दीवानों की ॥ ४ ॥

ललना लाल विधवाओं के।
जिसने दुःख को पहचाना हो।
शुद्धि का चक्र चलाने को।
प्रण मन में 'शादां' ठाना हो।
जो धर्म के हित खन्जर खायें।
लेखराम से परवानों की ॥५॥

कवि० बनवारीलाल 'शादां' वैद्य
श्री स्वतन्त्र भारत फार्मेसी १०८०२
मानिकपुरा नई दिल्ली—५

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है, परन्तु कुछ महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः विवश होकर उनके पास आगामी अंक से सर्वहितकारी भेजना बन्द करना पड़ रहा है।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

सम्पादकीयः-

आइये ! कृतज्ञता प्रकट करें।

लगभग गत दो वर्षों से पंजाब में अकालियों ने अपना धर्मयुद्ध आरम्भ कर रखा था और इसकी आड़ में अपने धार्मिक स्थानों को छावनियों का रूप देकर वहाँ घातक हथियार जमा करने लगे। उन्होंने भारत सरकार के पास अपनी ४२ मांगों का एक ज्ञापन प्रस्तुत किया था, जिन्हें हमने गत वर्ष सर्वहितकारी में प्रकाशित किया था और भारत सरकार तथा जनता को सावधान करते हुए अकालियों के इस धर्म युद्ध को पापयुद्ध बताया था, क्योंकि उनकी मांगें जिन्होंने भी पढ़ी, उन्हें ज्ञात हो गया कि उनकी मांगों में एकआध को छोडकर कोई भी मांग स्वीकार करने योग्य नहीं थी। वास्तव में अकालियों का उद्देश्य भारत के टुकड़े करके पृथक् खालिस्तान राज्य की स्थापना करना है। उन्होंने विदेशों से धन तथा हथियार प्राप्त किये और पंजाब में आतंकवाद फैलाकर गड़बड़ कराने के लिए अपने कार्यकर्त्ताओं को गुरमत की ट्रेनिंग देने के बहाने उन्हें हथियार चलाना सिखाया। इस कार्य में उनकी जम्मू-कश्मीर के पूर्व मुख्य मन्त्री डा० फारूक अब्दूल्ला के अतिरिक्त पाकिस्तान, चीन इंगलैण्ड, कनेडा तथा अमेरिका आदि देशों ने भी तन, मन, धन से भरपूर सहायता की। इस प्रकार ट्रेनिंग लेकर उन्होंने पंजाब में हिन्दुओं, निरंकारियों तथा राष्ट्रवादी सिखों का जीना दूभर कर दिया। समाचार पत्रों तथा आकाशवाणी के समाचारों में प्रतिदिन यही सुनने को मिलता कि आज उग्रवादियों ने······हत्याएं कीं······बैंक लूटे···बसों में हिन्दू सवारियों को उतार कर गोली मारी, रेलवे स्टेशन जला दिये इत्यादि। जब पंजाब पुलीस के कुछ कर्मचारी भी परोक्ष रूप से उनके साथ राष्ट्र द्रोही कार्यों में सम्मिलित हो गये और चारों ओर से त्राहि त्राहि मचने लगी तो प्रधान मन्त्री ने जनमत के आगे झुककर स्वर्णमन्दिर अमृतसर में सैनिककार्यवाही करनी पड़ी। भारतीय सेना के वीर जवानों ने ३, ४ दिनों में ही अकालियों व उग्रवादियों के किले अकाल तख्त से चुन चुन कर राष्ट्र द्रोही तथा अलगाववादी तत्त्वों को समाप्त कर दिया। उनके सेनापतियों ने वीर सैनिकों के आगे आत्म समर्पण कर दिया। सन्त भिण्डरवाला जो अपने आपको संसार का सबसे बड़ा जनरैल मानता था, उसके बुरे स्वप्नों के साथ नरक में पहुंचा दिया। इस कार्यवाही में हमारे सैनिकों ने भी वीर गति पाई। परन्तु वे राष्ट्र को टुकड़े होने से बचा गये और पंजाब की भयभीत जनता को राहत दिला गये। उन्होंने अपनी मूल्यवान् जवानी राष्ट्र हित के लिए बलिदान कर दी। वे अपने परिवारों को बिलखते हुए बेसाहरा छोड़ गये।

हरयाणा प्रदेश को गौरव प्राप्त रहा है कि वह राष्ट्र रक्षा कार्यों में सदा प्रथम पंक्ति में रहा है। इस सैनिक कार्यवाही में भी सबसे अधिक बलिदान हरयाणा में जन्मे वीर सपूतों ने दिया है।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा तथा प्रो० शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं सभा प्रधान, ने जनता के नाम अपील करते हुए सैनिक शहीद परिवारों की आर्थिक सहायता करने का आह्वान किया है। वीर सैनिकों ने अपने सुख और परिवारों की परवाह नहीं की अपितु राष्ट्र की एकता को बनाये रखने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी। अतः हम सभी का कर्त्तव्य है कि इनके परिवारों की सहायता करने के लिए उदारता पूर्वक धन देकर बलिदानी सैनिकों के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें।

रणजीतसिंह

ग्राम बालावास में शराब के ठेके के सामने धरने पर वेदसप्ताह का आयोजन

१४ अप्रैल से बालावास में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए चल रहा धरना स्थल पर दिनांक ५-७-८४ से १५-७-८४ तक वेद सप्ताह बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमें निम्न विद्वान् व उपदेशक पधारे। पूज्य स्वामी मेधानन्द जी सरस्वती पूर्व नाम तिलकराम आर्य वानप्रस्थ (मुजफ्फरनगर) महात्मा अग्निदेव जी (गुरुकुल धीरणवास) स्वामी मस्तानानन्द जी, श्री दुलीचन्द वानप्रस्थ, श्री प्रभुदयाल वानप्रस्थ (गुरुकुल सिंहपुरा), श्री भरतलाल शास्त्री पुरोहित आर्यसमाज हांसी, पं० अर्जुनदेव जी, कुंवर तेजपाल आर्य भजनोपदेशक, महाशय मनसाराम (कवारी), ब्रह्मचारी ओ३म् दर्शनार्य, डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा आदि विद्वानों के शराब विरोधी प्रभावशाली व्याख्यान हुये। सभी ने इतिहास के उदाहरण दे दे कर लोगों को अवगत कराया कि शराब से कितने रजवाड़ों और खानदानों का विनास हुआ। लोगों ने शराब न पीने की अपील की तथा एक जुट होकर इस आन्दोलन को सफल बनाने की भी प्रार्थना की। सायंकाल प्रतिदिन तेजपाल ने युवकों को भजनों के माध्यम से क्रान्तिकारी प्रोग्राम दिया और नवयुवकों को आह्वान किया कि इस शराब जैसी बिमारी को देश से खत्म करने के लिए आगे आओ। सभी वक्ताओं ने सरकार से पुरजोर मांग की कि जनता की धार्मिक भावनाओं का आदर करते हुए शीघ्र अतिशीघ्र इस ठेके को उठाया जाये। इसी में सरकार व जनता की भलाई है। महिलाओं ने भी बढ चढ कर भाग लिया। यज्ञ पर जनेऊ भी धारण किये। दो किलोमीटर पैदल चलकर ग्राम कंवारी से गीत गाती हुई महिलाय प्रचार में पधारी। निकटवर्ती गांव से सैकड़ों लोग प्रचार में पधारे। ११ जुलाई को सायंकाल ग्राम बालावास में जलुस निकला, बच्चों ने शराब विरोधी नारे लगाये। निकट के गाँव में कुछ भ्रष्ट तत्व ठेकेदार से मिली भगत कर रहे थे। परिणाम स्वरूप १२ जुलाई को साधुओं के साथ पैदल चलकर १५ आदमियों का जत्था ग्राम नराणा में गया वहां गाँव की पंचायत इकट्ठी की। श्री भरतलाल व स्वामी मेधानन्द ने लोगों को कहा कि तुम यहां शराब न खरीदें और न ही पीयें। बाद में कहा आप चूड़ियां पहन लो तीन महिने से क्रान्तिकारी जी ये आन्दोलन चला रहे हैं, आप इन्हें पूरा सहयोग देकर इस ठेके को बन्द नहीं करा सकते। इसी तरह १३ को ग्राम दुबेठा, बुरां में पैदल चलकर गये। १५ को कंवारी में मोहल्ले वार लोगों को इकट्ठा करके इस आन्दोलन को सफल बनाने की लोगों से प्रार्थना की। पैदल यात्रा अब भी जारी है। सरकार जब तक ठेका नहीं उठायेगी, हम धरना जारी रखेंगे।

पत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराबबन्दी समिति

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षा में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

रोहतक विश्वविद्यालय के उपकुलपति चौधरी हरद्वारीलाल को हार्दिक बधाई

१—विश्व में रोहतक (हरयाणा) में ही एक ऐसा विश्वविद्यालय है जिसके साथ युगप्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द का नाम जुड़ा हुआ है। महर्षि ने अपने सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में एक विशिष्ट प्राचीन पाठ विधि का उल्लेख किया है। आर्यसमाज के आदर्श संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द आदि ने उसी पाठविधि को आधार मानकर गुरुकुल कांगड़ी आदि शिक्षण संस्थाओं की स्थापना की। महर्षि ने भाद्रपद शुक्लपक्ष संवत् १९३६ में आज से लगभग १०२ वर्ष पूर्व सत्यार्थप्रकाश में उक्त पाठविधि का प्रतिपादन किया था। गत शताब्दी में कुछ एक गुरुकुल नामक संस्थाएं तो महर्षि की पाठविधि के अनुसार अपना आंशिक पठन-पाठन कार्य करती रही हैं, किन्तु किसी विश्वविद्यालय ने इस पाठविधि को नहीं अपनाया। इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता चौ० राममेहर जी एडवोकेट का ध्यान बहुत दिनों से आकृष्ट था। उन्होंने महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के सुयोग्य विद्वान् उपकुलपति श्री हरद्वारीलाल जी का इस ओर विशेष ध्यान दिलाया और उनके सामने यह प्रस्ताव रखा कि संस्कृत भाषा की प्राचीन शिक्षण पद्धति को सुरक्षित रखने का आज एकमात्र यही उपाय है कि उसे महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक अपना एक अंग बना ले। माननीय श्री हरद्वारीलाल जी ने श्रीमद्दयानन्दार्ष विद्यापीठ गुरुकुल झज्जर (रोहतक) का स्वयं जाकर निरीक्षण किया और पाया कि यही संस्कृत भाषा शिक्षण की एकमात्र सर्वोत्तम पद्धति है। इसकी सुरक्षा एवं विकास अत्यन्त आवश्यक है। अतः उन्होंने इसे अविकल रूप में रोहतक विश्वविद्यालय का एक विशिष्ट अंग मानकर इस विश्व-विद्यालय के नाम को सार्थक बनाया तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण किन्तु उपेक्षित पाठविधि को संरक्षण प्रदान कर अत्यन्त पुण्य का कार्य किया है।

२—महर्षि ने शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र/छात्राओं के लिए ईश्वर उपासना का विधान किया है और उसके लिए अपने 'संस्कार विधि' नामक कल्प ग्रन्थ में निम्न प्रकार से यज्ञशाला के निर्माण का उल्लेख किया है—

यज्ञदेश—

यज्ञ का देश पवित्र अर्थात् स्वच्छ वायु शुद्ध हो किसी प्रकार का उपद्रव न हो।

यज्ञशाला—

इसी को यज्ञमण्डप भी कहते हैं। यह अधिक से अधिक १६ हाथ सम चौरस चौकोण और न्यून से न्यून ८ हाथ की हो। यदि भूमि अशुद्ध हो तो यज्ञशाला की पृथिवी और जितनी गहरी वेदी बनानी हो उतनी पृथिवी दो दो हाथ खोद अशुद्ध मिट्टी निकाल कर उसमें शुद्ध मिट्टी भरें।

यदि १६ (सोलह) हाथ की सम चौरस हो तो चारों ओर बीस खम्भे और ८ (आठ) हाथ की हो तो १२ खम्भे लगा कर उन पर छाया करे। यह छाया की छत वेदी की मेखला से १० (दश) हाथ ऊंची अवश्य होवे और यज्ञशाला के चारों दिशा में ४ (चार) द्वार रखें, और यज्ञशाला के चारों ओर ध्वजा, पताका, पल्लव आदि बांधे।

(संस्कार विधि सामान्य प्रकरण)

माननीय उपकुलपति महोदय ने महर्षि के इस लेख के अनुसार १२ खम्भों वाली एक विशाल यज्ञशाला का विश्वविद्यालय के छात्रावासों के मध्य में निर्माण कार्य आरम्भ कर दिया है। इस पर लगभग पांच लाख रुपये की लागत आएगी। निर्माण के उपरान्त इसमें विश्वविद्या-लय के छात्र, छात्राओं को यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान- समाधि आदि योगाङ्ग की शिक्षा दी जाएगी।

३—महर्षि दयानन्द स्टैच्यू—

महर्षि दयानन्द इस युग के अद्वितीय समाज-सुधारक थे। उन्होंने अपने अद्भुत व्यक्तित्व, प्रचार तथा साहित्य रचना आदि कार्यों से धार्मिक- सामाजिक तथा राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में एक क्रान्ति-कारी परिवर्तन करके राष्ट्र का समुचित मार्ग दर्शन किया है। ऐसे महापुरुष का प्रतिमा दर्शन राष्ट्र के नर नारियों के हृदय में और विशेष रूप से नवयुवक छात्र/छात्राओं के चित्त में प्रगति की प्रेरणा भरता रहे इस भावना से समादरणीय उपकुलपति महोदय ने यह निर्णय किया है कि विश्वविद्यालय के परिसर में महर्षि दयानन्द सरस्वती का एक भव्य स्टैच्यू निर्माण कर लगवाया जाए। स्टैच्यू का निर्माण कार्य आरम्भ हो गया है। शिर पर पगड़ी, पांव तक लटकता हुआ चोगा, बाएं हाथ में वेद की पवित्र पुस्तक तथा दाएं हाथ की अंगुली से उपदेश इंगित करते हुए चरणों में पादुका धारण किए हुए एक कांस्य की भव्य कद-आदम प्रतिमा तैयार की जा रही है। इसकी ऊँचाई ९ फुट है। इस पर डेढ लाख रुपये के व्यय का अनुमान है। प्रयत्न किया जा रहा है कि यह कार्य दीपावली तक सम्पन्न हो जाए।

मुझे यह सब कार्य हरयाणा के प्रसिद्ध एडवोकेट चौ० राममेहर जी ने विश्वविद्यालय में ले जाकर दिखलाया। इस अत्युत्तम कार्य के लिए रोहतक विश्वविद्यालय के विद्वान् उपकुलपति चौ० हरद्वारीलाल जी समस्त आर्यजगत् के लिए बधाई के पात्र हैं।

सुदर्शनदेव आचार्य

"प्रवेश सूचना"

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी-दादरी जिला भिवानी जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३५ वर्ष से हिन्दी एवं संस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है, में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद (मध्यमा) शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जून १९८४ से आरम्भ है।

१—छात्र एवं छात्राओं को अलग अलग पढ़ाया जाता है।

२—छात्राओं के लिए छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

नोट—आठवीं पास छात्र एवं छात्राएं ५ वर्ष में सम्पूर्ण शास्त्री पास कर।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय
चरखी-दादरी (भिवानी)



श्री खुशीराम आर्य ग्राम बहू अकबरपुर जिला रोहतक की सुपुत्री तीर्थकौर का शुभ विवाह ग्राम सुबाणा जिला रोहतक के श्री राजवीर एम० ए० के साथ वैदिक रीति के साथ सम्पन्न हुआ।

वेदप्रचार सप्ताह तथा उत्सवों की सूचना

आर्यसमाज माडल टाऊन सोनीपत	२७ जुलाई से ३ अगस्त
भक्त फूलसिंह बलिदान उत्सव	२९, ३० जुलाई
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत	
आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द	११ से १८ अगस्त
,, सोनीपत शहर	१३ से २० ,,
,, भटगांव जिला सोनीपत	२१ से २३ सितम्बर
महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह	५, ६, ७ अक्तूबर
आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा हरयाणा जि. करनाल	
पानीपत आर्यसमाज स्थापना शताब्दी सामारोह	
(स्थान आर्य कालेज पानीपत जि० करनाल	६ से १४ अक्तूबर

जो आर्यसमाजें वेद प्रचार सप्ताह अथवा वार्षिक उत्सव अगस्त सितम्बर तथा अक्तूबर मास में रखना चाहते हैं, वे उपरलिखित तिथियों को छोडकर अपनी तिथियां निश्चित करके सभा को सूचित करें ताकि उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों का प्रबन्ध समय पर किया जा सके।

सभा मन्त्री

शराबबन्दी आन्दोलन के लिए दान सूची

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डलियां प्रांत के कोने-कोने में ग्रामों में शराबबन्दी प्रचार कर रहे हैं। प्रचार द्वारा जो दान सभा को प्राप्त हुआ है उसकी सूची प्रकाशित की जा रही है—

आर्यसमाज नांगलराय (दिल्ली)	२१)
,, सेवासदन बल्लबगढ जिला फरीदाबाद	१०१)
,, मेन बाजार ,, ,, ,,	५१)
,, सेक्टर ३ फरीदाबाद	५१)
,, एन० एच० ४ फरीदाबाद	५१)
,, नेहरू ग्राउण्ड ,,	१००)
,, सैक्टर २३ हाऊसिंग बोर्ड कालोनी फरीदाबाद	३१)
,, सैक्टर २१ ,, ,, ,,	५१)
(द्वारा पं० मुन्शीलाल जी भजनोपदेशक)	
आर्यसमाज नोखोखेड़ी जिला करनाल	५१)
,, नारायणगढ़ जिला अम्बाला	१००)
दयानन्द आदर्श विद्यालय नारायणगढ़ जिला अम्बाला	२००)
आर्यसमाज बरोली जिला अम्बाला	१०१)
द्वारा पं० हरिश्चन्द जी भजनोपदेशक)	

सभी आर्यसमाजों का सभा की ओर से धन्यवाद।

कन्हैयालाल महत्ता सभा कोषाध्यक्ष

सांघी जिला रोहतक में शराबबन्दी प्रचार

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक में सभा की भजन मण्डली पं० सुमेरसिंह, धर्मपाल ने १६, १७ जुलाई को शराबबन्दी प्रचार किया। भजनों द्वारा शराब से होने वाली हानियों पर प्रकाश डाला।

मन्त्री आर्यसमाज सांघी

छात्राओं के लिए प्रवेश सूचना

आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जिला फरीदाबाद (हरयाणा) में विश्वविद्यालय गुरुकुल कांगड़ी से मान्यता प्राप्त इस कन्या गुरुकुल में एक जुलाई से कक्षा ३ से कक्षा ६ तक प्रवेश प्रारम्भ हो गया है। भोजन शुल्क ५०) मासिक है। वस्त्र ऋतु अनुकूल सादे। शिक्षण शुल्क नहीं लिया जाता है। पठन पाठन के अतिरिक्त नियमित रूप से योगासन; बाणविद्या, शस्त्रविद्या आदि का भी प्रशिक्षण दिया जाता है। विशेष जानकारी हेतु प्रधानाचार्या से सम्पर्क करें।

विजयानन्द सरस्वती

संचालक आर्य कन्या गुरुकुल हसनपुर जि० फरीदाबाद

प्रधान-मन्त्री को बधाई सन्देश

हम रोहतक जिले के सभी भारत राष्ट्र के नागरिक, अपनी राष्ट्र नेता प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी के देर से उठाये, पंजाब के देशद्रोही तत्वों के विरुद्ध सैनिक कार्यवाही के कदम की हार्दिक सराहना करते हैं। भारत राष्ट्र की अखण्डता तथा प्रभुसत्ता के मूल्य पर किसी भी प्रभावशाली तथा विदेशियों से प्रेरित समर्पित संगठन को मान्यता न दी जावे। उग्रवादी तत्वों को जड़ से उखाड़ दिया जावे। पवित्र संविधान के अपमान का कठोरतम दण्ड दिया जावे। देश-भक्त वीर सैनिकों के खून का सम्मान करते हुए—उनकी प्राप्त सफलता को वार्ता की मेज पर कुर्बान न कर दिया जावे।

मन्त्री—आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक

(पृष्ठ १ का शेष)

पार्टियां चण्डीगढ पंजाब को देने तथा अबोहर फाजिल्का का क्षेत्र भी पंजाब में रखने की बात कर रही हैं, जो प्रधान मन्त्री के जनवरी १९७० के ऐवार्ड को स्पष्ट उल्लंघना है। यदि केन्द्रीय सरकार राजनैतिक दबाव में आकर चण्डीगढ हरयाणा को न दे जिस पर शाह-कमीशन के निर्णयानुसार उसका पूरा हक है और उसके बदले में अबोहर फाल्जिका क्षेत्र भी हरयाणा को न मिले तो क्या हरयाणा निवासी इस घोर अन्याय को सहन कर लेंगे ? उनकी साख को जो गहरी छाप देश वासियों पर है वह मिट्टी में न मिलेगी ? क्या हरयाणा निवासी राजनैतिक दबाव में आकर हर बार अपना हक छोड़ते चले जावेंगे। हरयाणा के वर्तमान शासक, नेता व विशिष्ट व्यक्ति हरयाणे के हितों को तिलांजलि देकर किस प्रकार हरयाणा की जनता के सामने सुखी हो सकेंगे ?

हरयाणा के प्रत्येक सच्चे सपूत के सामने यह प्रश्न चिन्ह है। समय की पुकार है कि हरयाणा की सभी पार्टियां, सभी संगठन, सभी नेता एक जूट होकर सांझे मच से केन्द्रीय सरकार से मांग करें कि प्रधान मन्त्री के जनवरी १९७० के ऐवार्ड के अनुसार अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को सौंपे बिना, चण्डीगढ पंजाब को न दिया जावे व सरकार को स्पष्ट शब्दों में चेतावनी दी जावे कि यदि जनवरी १९७० का ऐवार्ड ज्यों का त्यों लागू न कर, चण्डीगढ़ पंजाब को देकर अबोहर फाजिल्का क्षेत्र हरयाणा को न दिया गया, तो हरयाणा निवासी ऐसे फंसले को न मानेंगे, उसका डटकर विरोध करेंगे।

यदि हरयाणा के सभी लोकसभा व राज्यसभा सदस्य; केन्द्रीय मंत्री मण्डल में हरयाणा के प्रतिनिधि, हरयाणा विधान मण्डल के सभी मंत्री तथा विधायक एकमत होकर केन्द्रीय सरकार से जनवरी १९७० का ऐवार्ड ज्यों का त्यों लागू करें, तो कोई कारण नहीं कि केन्द्रीय सरकार हरयाणे की जनता व उनके चुने हुए प्रतिनिधियों को न्यायोचित मांग को ठुकरा कर हरयाणा के हितों के विरुद्ध कोई फंसला करे।

याद रखिए यदि हरयाणा के चुने हुए प्रतिनिधि, हरयाणा के नेता, किसी राजनैतिक दबाव में आकर अथवा व्यक्तिगत या दलगत मतभेद के कारण, सांझे मंच पर इकट्ठे होकर केन्द्रीय सरकार के सामने अपनी मांग न रख सके; तो वे हरयाणा की जनता; अपने मतदाताओं के साथ गद्दारी करेंगे, उनका विश्वास खो बैठेंगे। भावी पीढ़ी इस विश्वासघात के लिए उन्हें माफ न करेगी। भविष्य में उन्हें इसका फल भुगतना पड़ेगा क्योंकि समस्त हरयाणा में एक भी व्यक्ति ऐसा नहीं जो अबोहर फाजिल्का क्षेत्र को हरयाणा में मिलाये जाने के लिए परम उत्सुक न हो।

तेगराम

भू० पू० विधायक, अबोहर

आर्यसमाज अपना दृष्टिकोण बदले

लेखक—प्रतापसिंह शास्त्री

महर्षि दयानन्द ने कार्य क्षेत्र में पदार्पण करने के बाद जहां ईसाई मत और इस्लाम को जबरदस्त बाढ को रोका, वहां हिन्दू धर्म के नाम पर फैले अनेक मतमतान्तरों का पूरजोर खण्डन किया। महर्षि ने देखा जो मूर्ति पूजता है वह हिन्दू है, जो मन्दिर में जाता है, वह हिन्दू है, जो नहीं जाता वह भी हिन्दू है, जो अछूत है वह हिन्दू है जो अछूत नहीं वह भी हिन्दू है। इस प्रकार हिन्दू धर्म चूं चूं का मुरब्बा उन्हें प्रतीत हुआ। उन्होंने विविध मतमतान्तर वालों के सम्मुख एक प्रस्ताव रखा—"आप सब अपने अपने मतों को अच्छी बातें इकट्ठी करलो, लिखलो और फिर सभी इकट्ठे बैठकर वेद के अनुकूल उन पर विचार विमर्श करके धर्म का सच्चा स्वरूप निश्चित करेंगे और एक ओ३म् के झण्डे के नीचे आ कर सभी इकट्ठे सत्य का प्रचार करने में जुट जाओ।"

इस प्रस्ताव को सुनकर पाखण्डी, अन्धविश्वासी मठाधीश बौखला उठे, उन्होंने देखा यदि यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया गया तो हम मठाधीश नहीं रहेंगे, दास दासियां नहीं रख सकेंगे, मनमानी दक्षिणा नहीं ले सकेंगे। उस समय तो सच्चे विद्वान् की पूजा होगी और हमारी रोजी-रोटी समाप्त हो जाएगी। ये सब सोचकर पाखण्डियों ने, महर्षि का प्रस्ताव ठुकरा दिया। महर्षि ने तब आर्यसमाज स्थापित करने का विचार बनाया। महर्षि ने अपने जीवनकाल में ही भारतवर्ष के बड़े-२ राजघरानों में, राजाओं महाराजाओं में, बड़े २ नगरों में, बड़े २ ग्रामों में, बड़े २ रईसों में तथा गरीब मजदूर किसानों में आर्यसमाज के कार्यक्रम को फैलाया। हजारों की संख्या में लोग आर्यसमाजों के सदस्य बन गये, बड़ी भारी तादाद में आर्य सज्जन तन मन धन देकर वैदिक विचारधारा को फैलाना अपना कर्त्तव्य समझने लगे। ऋषि दयानन्द अपने ग्रन्थों, व्याख्यानों व शास्त्रार्थ द्वारा भारतवर्ष के कोने कोने में चर्चा का विषय बन गये, बस इन्हीं परिस्थितियों में विरोधियों ने गहरे षड्यन्त्र द्वारा वह प्यारा ऋषि हमसे सदा के लिए छीन लिया। महर्षि को अपनी मृत्यु का पूर्वाभास भी हुआ, उन्होंने राजस्थान की अन्तिम यात्रा पर प्रचारार्थ जाने से पूर्व मेरठ में आर्यसज्जनों से कहा था—"आर्यो तुम आत्मनिर्भर बनो, स्वावलम्बी बनो, ऋषिकृत ग्रन्थों का अध्ययन करो। मेरा यह शरीर न जाने कब नष्ट हो जाए, यह सदा नहीं रह सकता। तुम आपस में झगड़ते हो तो मुझे तुम्हें समझाना पड़ता है जब तुम्हें कोई शास्त्रार्थ के लिए ललकारता है तुम तार पर तार देकर मुझे बुलाते हो; मुझे आना पड़ता है, तुम स्वाध्याय करके स्वयं शास्त्रार्थ से विरोधियों का मुकाबला करो।"

वास्तव में इसके कुछ दिनों बाद महर्षि दयानन्द के निर्वाण के पश्चात् विविध मतमतान्तरों वाले व्यक्ति सोचते थे, अब सेनापति नहीं रहा, सेनापति के अभाव में सैनिकों के पांव उखड़ जाएंगे और हम इन आर्यसमाजियों को आसानी से जीत लेंगे। किन्तु आर्यसमाज की इस असहाय स्थिति ने आर्यसमाज को पहले से ही अधिक शक्तिशाली बना दिया।

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए० जैसे १९ वर्ष के नवयुवक ने महर्षि के निर्वाण के समय अन्तिम दर्शन करके एक संकल्प किया कि मैं महर्षि के सपनों को साकार करने में जीवन लगाऊँगा। अजमेर से आकर महर्षि के स्मारक के रूप में लाहौर आर्यसमाज के सम्मुख डी० ए० वी० स्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा और स्वीकृति पाकर तन मन धन से उसे कार्यान्वित करने में जुट गये। पं० गुरुदत्त अकेले नहीं थे अपितु सन् १८८१ में जब वे लाहौर राजकीय कालेज में पढ़ते थे तब छात्रावास में इनके सहपाठी थे—महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराय, चेतनानन्द आदि। लाहौर आर्यसमाज के उपप्रधान श्री सांईदास जी अक्सर छात्रावास का चक्कर लगाया करते थे ताकि नवयुवकों को आर्यसमाजी विचारों का बनाया जाये सांईदास जी हंसराज और गुरुदत्त व लाजपतराय से बड़ा स्नेह रखते थे।

सन् १८८१ में लाहौर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर जब इन्होंने सदस्यता फार्म पर हस्ताक्षर किये तब सांईदास जी उपप्रधान को ऐसा लगा जैसे त्रिलोकी का राज्य मिल गया हो।

वास्तव में यही तीनों सहपाठी आगे आर्यसमाज के महापुरुष बने। सन् १८८५ में लाहौर आर्यसमाज के वार्षिक उत्सव पर महात्मा मुन्शी राम (श्रद्धानन्द) जो वकालत की परीक्षा देने आये थे। वहां गुरुदत्त जैसे नवयुवक का ओजस्वी भाषण सुनकर उनके मित्र बन गये। पं० लेखराम ने महर्षि के जीवनकाल में ही पेशावर में आर्यसमाज स्थापित किया और सन् १८८६ में पं० गुरुदत्त को पेशावर आर्यसमाज की तरफ से डी० ए० वी० संस्था की प्रबन्ध कृत्रीसभा में प्रतिनिधि बनाकर भेज दिया। यह ऐसा समय था कि यदि ये महापुरुष न होते तो आर्यसमाज अपने वास्तविक स्वरूप को खो बैठता।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के नेताओं ने महात्मा गांधी की अपील पर यह घोषणा कर दी कि—"आर्यसमाज का राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है।" गांधी जी का नेतृत्व स्वीकार करके आर्यसमाज ने बड़ी भारी भूल की उसका परिणाम यह हुआ कि आज की बिखरी हुई राजनीति में आर्यसमाज की आवाज की कोई कीमत नहीं है। स्वतन्त्रता के बाद नैतिक मूल्य बड़ी तेजी से बदले। प्रत्येक व्यक्ति का दृष्टिकोण धन कमाने का बन गया। आर्यसमाजी व्यक्ति व संस्थाएं भी धन एकत्रित करने के दृष्टिकोण को अपनाने में लग गई और वेदप्रचार के मूल उद्देश्य को भूल गये। डी० ए० वी० संस्थाएं सहशिक्षा का प्रसार और प्रचार करने में सहायक हो गये, इनमें अधिकांश प्राध्यापक व अध्यापक गैर आर्यसमाजी होने से इन संस्थाओं द्वारा प्रचार कार्य करने का उद्देश्य शीशे की अलमारियों में बन्द हो गया हां चन्द लोगों को रोजी रोटी व चौधर अवश्य पैतृक सम्पत्ति बन गई। आर्यसमाज एक आन्दोलन था। लम्बे समय से पदों पर बैठे चन्द पूंजीपतियों के कब्जे के कारण यह आन्दोलन बिल्कुल समाप्त प्रायः सा हो चुका। आज विज्ञान से मिलकर चलने का युग है गुरुकुलों को अपने पाठ्यक्रम मे परिवर्तन करके देश के उच्चपदों की परीक्षाओं में अपने ब्रह्मचारियों को भेजना चाहिए। कालेजों विश्वविद्यालयों में आर्यसमाज के कार्यक्रम को फैला कर नवयुवकों को आकर्षित करने का मार्ग भी आर्यसमाज को अपनाना होगा। हमें अपने दृष्टिकोण को बदलना पड़ेगा। धन की बजाय चरित्र को त्याग और तपस्या को तथा वैदिक धर्म के प्रचार को अपना मिशन बनाना होगा। प्रत्येक आर्यसमाज मन्दिर व संस्था में ठहरने वाले अतिथि के लिए भोजन और रहन सहन की व्यवस्था सिखों के गुरुद्वारों की भांति करने का दृष्टिकोण अपनाना होगा। हम इन सब बातों के साथ नए भजनोपदेशक यदि तैयार नहीं करेंगे तथा रेडियो टैलिविजन द्वारा वैदिक विचारधारा नहीं फैलाएंगे तो हमें अपने उद्देश्य में सफलता नहीं मिल सकती। न ही हम आर्यसमाज को आगे ले जा सकते हैं।

प्राप्ति स्थान—सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर में स्वामी ओमानन्द जी की सिंहगर्जना

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र द्वारा वर्ष में १०० से अधिक जलसे सम्पन्न।

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र का वार्षिक अधिवेशन १० जून १९८४ को गुरुकुल कुरुक्षेत्र में सोत्साह सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत् के उच्चकोटि के तपस्वी संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी तथा आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सम्पत्ति अधिकारी म० भरतसिंह जी विशेष रूप से प्रतिनिधियों के मार्ग दर्शन करने पधारे थे। मण्डल द्वारा आयोजित डा० देवव्रत जी आचार्य सहसंचालक सा० आर्य वीर दल के निर्देशन में प्रशिक्षण प्राप्त आर्यवीरों द्वारा शहर में दफा १४४ तोड़कर जलूस निकाला गया जिसका नेतृत्व मण्डल के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने किया। प्रातः गाँवों मिर्जापुर, नहरकालोनी, विश्वविद्यालय कालोनियों से होता हुआ सैंकड़ों आर्य वीरों का जयघोष व क्रान्तिगीत गाता काफिला वैदिक धाम पहुँचा जहां स्वामी ओमानन्द जी द्वारा यज्ञशाला की आधारशिला रखी गई तथा दयानन्द मार्केट का उद्घाटन हुआ। वहां से भारी काफिला गुरुकुल पहुँचा जहां वेदप्रचार मण्डल का अधिवेशन आरम्भ हो गया। मण्डल के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी द्वारा गत वर्ष की कार्यवाही का ब्योरा प्रस्तुत किया गया। मण्डल के प्रधान श्री कृष्णलाल बधवा ने आय-व्यय का ब्योरा दिया जो सर्वसम्मति से पास हो गया। आगामी वर्ष के लिए १,१२००० का बजट पास किया गया तथा नई आर्यसमाजें खोलने, प्रचार पद यात्राएं व आर्यवीरों के शिविर लगाने तथा शराब एवं दहेज विरोधी आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया गया। चुनाव के समय त्याग की अपार महिमा दृष्टिगोचर हुई जब प्रधान एवं मन्त्री पद के लिए एक दूसरे को समर्पित करने की होड़ लगी तब सुलझे हुए अनुभवी आर्य महाशय भरतसिंह जी के प्रस्ताव पर श्री कृष्णलाल बधवा को प्रधान तथा चौ० बिशनसिंह व धर्मदेव जी को मन्त्री निर्वाचित घोषित कर दिया गया जिन्होंने प्रतिनिधियों के बड़े आग्रह पर पद स्वीकार किये।

सायंकाल २० दिन का प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ जिसका दीक्षान्त समारोह पूज्य स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। संचालन किया गुरुकुल के आचार्य देवव्रत जी ने तथा समस्त कार्यक्रम में चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व आई० पी० एस०, स्वामी रुद्रवेश, महाशय भरतसिंह, सुबेदार कुलवन्तराय और हरिराम कंथल का सहयोग सराहनीय रहा। अन्त में मण्डलाध्यक्ष श्रीकृष्णलाल जी बधवा द्वारा सभा का धन्यवाद किया गया। दिन भर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन अपने में अनुठी रचना रहा।

वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र की वर्ष १९८४-८५ की कार्यकारिणी निम्नलिखित घोषित की गई है।

श्री कृष्णलाल बधवा	कुरुक्षेत्र	प्रधान
ला० यशपाल आर्य	ठोल	वरिष्ठ उपप्रधान
लाला साधुराम	लाडवा	उपप्रधान
श्री उमेदसिंह	कैथल	,,
चौ० बिशनसिंह एडवोकेट	टयोंठा	महामन्त्री
श्री सजानसिंह	जाजनपुर	वरिष्ठ उपमंत्री
चौ० युधिष्ठिरपाल	फतेहपुर	उपमन्त्री
श्री गणेशदास	ध्यांगखा	,,
पंडित देवव्रत	गुरुकुल कुरुक्षेत्र	कोषाध्यक्ष

अन्तरंग सदस्य

(१) चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व आई० पी० एस०, (२) स्वामी रुद्रवेश, (३) चौ० समशेरसिंह फरल, (४) प्रिंसिपल सर्वदानन्द आर्य डी० ए० वी० कालेज पुण्डरी (५) लाला हरिराम कंथल (६) श्री राधाकृष्ण (प्रटेला) (७) धर्मसिंह (बरमाना) (८) डाक्टर ताराचन्द (कोल) (९) प्रोफेसर भागसिंह आर्य (खेडी मटूवा) (१०) डाक्टर ओमप्रकाश (पेहवा) (११) लाला जीवनदास (शाहबाद) (१२) रिसालसिंह (गुन्दयाणा) (१३) प्रीतमपाल एडवोकेट (कन्ड्रोली) (१४) चौधरी बनजीतसिंह (गुढा) (१५) रणवीरसिंह (धमीन) (१६) राजकुमार (रायपुर रोड़ान) (१७) जोगीराम (तितरम) (१८) जयसिंह (बन) (१९) फूलसिंह सरपंच (बनी) (२०) हीरासिंह सरपंच (रसीना)

नोट—जिला कुरुक्षेत्र की सभी आर्यसमाजों के प्रधान मण्डल के पदेन सदस्य होंगे।

धर्मदेव विद्यार्थी

आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

देहरादून, २६ जून। आर्यजगत् के सुप्रसिद्ध महात्मा दयानन्द जी महाराज ने आर्य युवकों की विशाल रैली को सम्बोधित करते हुए आह्वान किया कि वे राष्ट्र निर्माण में अपना उत्तरदायित्व निभायें। उन्होंने कहा—युवक, शहीदों के जीवन से प्रेरणा लें, जिन्होंने स्वयं कष्ट उठाकर भी देश आजाद कराया। वे स्थानीय वैदिक साधन आश्रम में केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश के दस दिवसीय शिविर के समापन समारोह में बोल रहे थे।

दिल्ली के विभिन्न भागों से शिविर में भाग लेने वाले ७५ आर्य युवकों ने यज्ञाग्नि के समक्ष जुआ न खेलने, शराब-मांस त्यागने, धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन, दुर्व्यसनों से बचने की प्रतिज्ञाएं लीं।

इस अवसर पर युवकों ने योगासन, दण्ड-बैठक, जूडो-कराटे, जिमनास्टिक, कुंग फू, बाक्सिंग, लाठी, तलवार के सुन्दर व्यायाम प्रदर्शन दिखाये तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ। बिना जातिगत भेदभाव विशाल लंगर का भी आयोजन किया गया।

शिविर संयोजक दिल्ली राज्य केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के महा सचिव श्री अनिलकुमार आर्य थे। स्वामी सत्यपति, ब्रह्मचारी सतीश, श्री धर्मवीर, श्री मुन्नालाल आर्य, श्री धर्मपाल आर्य ने युवकों को व्यायाम व बौद्धिक शिक्षण दिया।

चन्द्रमोहन आर्य
कार्यालय मन्त्री

ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

दादरी—सार्वदेशिक आर्य वीर दल हरयाणा प्रान्त के अन्तर्गत आर्य वीरों का प्रशिक्षण शिविर २३ मई से ३० मई तक चरखी गांव में श्री धर्मपाल 'धीर' शास्त्री की अध्यक्षता में बड़े उत्साहपूर्वक सफल हुआ जिसमें सौ आर्यवीरों ने जो कि आस पास के गांवों से भी आये हुए थे, प्रशिक्षण प्राप्त किया। शिविर का प्रभाव सारे गांव में हुआ। गांव में सभा के प्रचारक पं० तेजपाल, पं० रामरक्खा ने प्रचार कार्य से लोगों में जागृति पैदा की। कई युवकों ने शराब, मांस तथा सिग्रेट छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

सम्पादक के नाम पत्र

आर्यसमाज जीन्द शहर के मन्त्री का वक्तव्य सर्वहितकारी में पढ़ कर बड़ा आश्चर्य हो रहा है कि प्रथम तो आर्यसमाजी पुरोहितों का अकाल पड़ा है, और जो थोड़े से हैं भी उनसे संस्कारादि क्रियाएं न करा कर पौराणिकों से कराना कहां का सिद्धान्त है। ऐसे गिरगिट की तरह रंग बदलने वाले आर्यों को सदस्यता से निकाल देना चाहिए।

ब्रह्मप्रकाश वागीश
आर्यसमाज शालीमार बाग दिल्ली

स्वीकारो प्रभु ! ये मंगलमय कामनाएं

एल० एन० कड़लुषा 'निरंजन' एम० ए० विद्यारत्न

जन्म हमारा हुआ प्रभु ! इसे शुभ काम में लाना होगा ।
मति दे ऐसी धन्य हो मानव जीवन कुछ काम हमें आना होगा ॥
दया सुनीति की न होवे पराजय बल देके प्रभु, करो निर्भय
विपदाओं का भारी पहाड़ प्रभु ! हम पर आ धरना होगा
ले लो हमारे जीवन का इम्तहां निर्णय भी तुम्हें सुनाना होगा
दास हुए हैं तेरे प्रभु ! जब जन्म दिया तूने हमरा
सुत और शिष्य तुम्हें प्रभु ! धर्म से हमें अपनाना होगा ।
निर्माण धारी राष्ट्र नौका किस तरह डगमगा रही
बन पतवार राष्ट्र निर्माण नौका भय सिन्धु पार लगाना होगा ।
सुदृढ़ राष्ट्र सा भवन जो विध्वंस होता जा रहा
राष्ट्र की सुदृढ़ नींव का अटूट पाषाण बनाना होगा ।
अबोध शीशु जान हमें प्रभु ! गोद में अपनी खेलाना होगा ॥
स्वार्थ भावना से जो लबालब हृदय कुण्ड हरा है प्रभु
सिंचित जिससे अहम का उपवन मोह माया से हरा है प्रभु
सुख के जग में इस उपवन की काया पलट करना होगा
परहित कामना की प्रेमबेलि बो उपवन लहराना होगा ।
धर्म शुभ कर्मफल से प्रभु ! हर डाल झुकाना होगा ॥
हो मोहित हर मानव आए उपवन में ऐसे फल चखने
छोड़ व्यसन दुर्गुण सारे लगे वेद की वाणी सुनने
तुझे 'निरंजन' ओ३म् नाम का प्रखर प्रकाश चमकाना होगा ॥
प्रातः हवन हो घर घर अपने हो पूर्ण सब सुन्दर सपने
योगासान और प्राणायाम से लगे सभी तन मन सजने
वैदिक मन्त्र उच्चारे हर मानव 'ओ३म्' शब्द मुंह से निकले
करो प्रहार शक्ति का अपने वज्र हृदय भी आ पिघले
ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! का पाठ प्रभु ! आकर तुम्हें पढ़ाना होगा ।

आर्य वीर दल अधिष्ठाता
आर्यसमाज नागदा उज्जैन

जहर पी लेंगे--अनिल कुमार मंगला 'पिंकी'

जहर भी पी लेंगे हम ।
अगर दे दोगे प्यार से हमें ॥
नफरत से दी हुई ।
अमृत को भी ठुकरा देंगे हम ॥

प्यार के भूखें हैं हम ।
अमृत के प्यासे नहीं ॥
प्यार का जहर पीकर ।
हम शहीद हो जायेंगे ॥

नफरत का अमृत पीकर ।
युगों तक तड़पकर जीना कौन चाहेगा ॥
पक्षी हूं मैं खुले आसमान का ।
पिंजरा मुझे कैसे भायेगा ॥

भले ही पिंजरे में; अमृत मिलता हो ।
मगर गुलाम बनकर; जीना कौन चाहेगा ॥

मैं आजादी का हूं रखवाला ।
गुलाम कैसे बन जाऊंगा ॥
अमृत को ठुकरा दूंगा ।
जहर पीकर शहीद हो जाऊंगा ॥

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३३ २८ जुलाई १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में

सैनिक कार्यवाही में बलिदान हुए वीर सैनिकों को रोहतक में श्रद्धांजलि भेंट

सभा की ओर से बलिदानी परिवारों को आर्थिक सहायता दी जायेगी

रोहतक २२ जुलाई ८४ को (कार्यालय संवाददाता द्वारा) सायंकाल ८ बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में भिवानी स्टैण्ड पर शहीद भगतसिंह के स्टैच्यू के सामने एक श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन सनातन धर्म सभा के सहयोग से किया गया। इस समारोह की अध्यक्षता सभा प्रधान एवं हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री ने की। समारोह का आरम्भ सभा की भजनमण्डलियों पं० मुन्शीराम, पं० सुमेरसिंह तथा कुंवर तेजपाल के प्रभावशाली वीररस गीतों से हुआ।

समारोह का उद्घाटन करते हुए सनातन धर्म सभा के प्रचारमंत्री पं० श्यामसुन्दर ने कहा कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा बधाई की पात्र है जिसने इस महत्त्वपूर्ण कार्य की ओर सर्वप्रथम ध्यान देते हुए पंजाब मे धार्मिक स्थानों की पवित्रता तथा राष्ट्र की एकता की रक्षा करते हुए वीरगति को प्राप्त करने वाले वीर सैनिकों के सम्मानार्थ समारोह का आयोजन किया है और उनके परिवारों की सहायता करने का कार्यक्रम बनाया है। जो जाति अपने वीरों का सम्मान नहीं करती वह कृतघ्न होती है। आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक की ओर से वैद्य भरतसिंह आर्य ने श्रद्धांजलि भेंट करते हुए कहा कि भारतीय सेना के वीर सपूतों ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि वे संसार की सभी सेनाओं से अधिक वीरता तथा संयम का प्रदर्शन कर सकते हैं और राष्ट्र द्रोही तत्वों को समाप्त करने के लिए बड़े से बड़ा बलिदान करने से संकोच नहीं करते। चौधरी अमीरसिंह एडवोकेट प्रधान हरिजन दलितोद्धार सभा हरयाणा ने वीर सैनिकों को बधाई देते हुए कहा कि यदि अमृतसर में सैनिक कार्यवाही समय पर न की जाती तो राष्ट्र के पुनः टुकड़े हो जाते और हिन्दुओं तथा निरंकारियों के लिए पंजाब में रहना कठिन हो जाता। आर्य प्रादेशिक उपसभा हरयाणा के उपप्रधान चौ० निहालचन्द ने अपनी सभा की ओर से श्रद्धांजलि देते हुए अपने भाषण में कहा कि जलियाना बाग के बलिदानियों की भांति स्वर्णमन्दिर अमृतसर में भारत सरकार की ओर से बलिदान स्मारक बनाना चाहिए वीर सैनिकों ने स्वर्ण मन्दिर को राष्ट्रद्रोहियों द्वारा अपवित्र किए जाने से बचाने तथा राष्ट्र की रक्षार्थ ऐतिहासिक बलिदान किया है। शहीदाने वतन यादगार समिति के प्रधान श्री पूर्णचन्द आज़ाद ने श्रद्धांजलि देते हुए मांग की कि शहीदों की प्रत्येक जिले में सरकार यादगार बनाये।

हिन्दू सुरक्षा समिति के नेता श्री परमानन्द तुली ने वीर सैनिकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि पंजाब के गुरुद्वारों को किलों का रूप देकर वहां अपराधियों तथा बदमाशों का केन्द्र बना दिया था। निर्दोष हिन्दुओं की हत्या करके उग्रवादी वहां शरण लेते थे। पंजाब का हिन्दू वीर सैनिकों का सदा ऋणी रहेगा।

हरयाणा रक्षा वाहिनी के सहसंयोजक तथा आर्यनेता श्री राममेहर एडवोकेट ने अपने प्रभावशाली व्याख्यान में वीरगति प्राप्त करने वाले सैनिकों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि सेना के वीरों ने अपनी जान हथेली पर रखकर भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ दिया है। हरयाणा के एक सैनिक ने कार्यवाही में बुरी तरह जख्मी होने पर स्वर्गवास होने से पूर्व अपने अन्य साथी सैनिकों की सहायता हेतु खून की ३ बोतलें दान में देकर बलिदान का नया उदाहरण प्रस्तुत किया। आपने कहा कि सेना यदि स्वर्ण मन्दिर में प्रवेश करने में १, २ दिन की देरी कर देती तो उग्रवादी पृथक् राज्य खालिस्तान की घोषणा कर देते और पाकिस्तान, चीन, कनेडा तथा अमेरिका देश उसे मान्यता देकर अपनी सेनाएं उनकी सहायता के लिए भारतीय सीमा में भेज देते। इस प्रकार हमारे सैनिकों ने समय पर उग्रवादियों के किले पर अधिकार करके भारत की महान् सेवा की है। श्री राममेहर ने रोहतक जिले की हिन्दू तथा सिख जनता का भी धन्यवाद करते हुए कहा कि उग्रवादियों के आन्दोलन के दिनों में बहुत ही संयम का परिचय दिया है। यदि यमुनानगर, करनाल जीन्द तथा पानीपत की भांति जिला रोहतक में कोई छेड़ छाड़ हो जाती तो इसका परिणाम बहुत भयंकर होता। आपने बाबा सन्तासिंह की कार सेवा की कार्यवाही की सराहना करते हुए कहा कि अकाली ऐसे पवित्र कार्य के लिए उन्हें सिख पन्थ से क्यों निकाल रहे हैं? उन्होंने भिण्डरवाले तथा उनके सहयोगियों के विरुद्ध कोई पग नहीं उठाया, जब वे निर्दोष नरनारियों की हत्या कर रहे थे और वे स्वर्णमन्दिर में मांस, शराब, गांजा का प्रयोग कर रहे थे और ५०० के लगभग लड़कियों को बन्धक बनाकर उनके साथ अनैतिक कार्य कर रहे थे। यदि अकालियों की मांग पर अमृतसर को पवित्र शहर घोषित किया जाता है तो इसी प्रकार रोहतक तथा कुरुक्षेत्र जैसे ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरों में भी मांस शराब की दुकानें हटाकर भेदभाव दूर करना चाहिये।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान ने अपने अध्यक्षीय भाषण में सिंहगर्जना करते हुए कहा कि सिख बुद्धि जीवि तथा अकाली नेता प्रति दिन सिखों के घाव भरने तथा स्वर्णमन्दिर से सेना हटाने की बातें तो करते हैं, परन्तु स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को नष्ट होने से बचाने तथा राष्ट्र की रक्षा करने वाले अपना बलिदान देने वालों के प्रति सहानुभूति का एक भी शब्द मुँह से नहीं निकाल रहे। सेना को तब तक नहीं हटाया जाना चाहिए जब तक गुरुद्वारों से उग्रवादियों तथा उनके हथियारों का सफाया नहीं किया जाये। उग्रवादी अब भी तोड़ फोड़ की गति-विधियों में लगे हुये है। हरयाणा की जनता को आर्थिक हानि पहुँचाने के लिए दो बार भाखड़ा नहर को तोड़ चुके हैं।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

शराब से सर्वनाश

मद्यपान से राठौड़ों का नाश

स्वामी ओमानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

इसी प्रकार जोधपुर बीकानेर आदि के राजाओं के विषय में भी समझ लें। जैसे जोधपुर का महाराजा अजीतसिंह था वह अपने पुत्र बखतसिंह के द्वारा मारा गया। इसका कारण कामवर खां ने इस प्रकार लिखा है—"महाराजा अजीतसिंह के १७ रानियां थीं, फिर भी अपनी पुत्रवधू (बखतसिंह की पत्नी) के साथ अनुचित सम्बन्ध हो गया था। इस अपमान से लज्जित एवं दुःखी होकर बखतसिंह ने एक रात को जब अजीतसिंह शराब के नशे में गाफिल बेहोश पड़ा हुआ था, उसे मार डाला। शराबी, विषयी, व्यभिचारी का अन्त स्वयं उसके पुत्र ने किया। इस शराबी महाराजा में कुछ गुण तो थे, किन्तु अनेक दुर्गुण भी थे। वह अभिमानी, कान का कच्चा, अत्याचारी और कृतघ्न नरेश था। स्वार्थसाधन के लिए वह नम्र बन जाया करता था। वह अपने विरोधियों से सख्त बदला लेता था। कई को उसने छल से मरवा डाला। वह भीरू था। मुगल सेना की चढ़ाई होने पर उसने लड़ने का साहस नहीं किया, पीछे ही पीछे हटता चला गया और उसने मुसलमानों की कड़ी से कड़ी शर्तों को मान लिया और फर्रुखसीयर बादशाह को अपनी राजकुमारी इन्द्रकुंवरी का डोला दे दिया।

उसने अपने सच्चे सहायक और मारवाड़ के रक्षक, अदम्य साहसी एवं स्वार्थत्यागी वीर दुर्गादास को, जिसने उसके जन्म से ही उसका साथ दिया था, बुरे लोगों के बहकाने से बिना किसी अपराध के, बुढ़ापे में देश से निर्वासित कर दिया। उसकी यह कृतघ्नता की पराकाष्ठा थी जो उसके चरित्र पर कलङ्क की कालिमा के रूप में सदैव अङ्कित रहेगी। उसने ऐसा क्यों किया? इसका कारण यह था—"क्योंकि अपनी अपूर्व वीरता, स्वामी भक्ति, युद्ध कौशल, राजनैतिक योग्यता, एवं स्वार्थत्याग के कारण राठौड़ सरदारों और राजाओं आदि में दुर्गादास की प्रतिष्ठा बढ़ी हुई थी। उसकी यह बढ़ती हुई प्रतिष्ठा महाराजा को असह्य हो गई, तब महाराजा ने वि० सं० १७६५ के अन्त में दुर्गादास को मारवाड़ से निकाल दिया। विषयी लम्पट, शराबी व्यक्ति ऐसे ही ईर्ष्यालु और कृतघ्न होते हैं। इससे महाराजा की बड़ी बदनामी हुई। दुर्गादास मारवाड़ का परित्याग कर उदयपुर के महाराणा अमरसिंह द्वितीय की सेवा में चला गया। महाराणा ने उसे विजयपुर को जागीर देकर अपने पास रखा। उसके लिए पांच सौ रुपये प्रतिदिन नियत कर दिये। पीछे वह रामपुर का हाकिम हुआ। वहीं १२ नवम्बर १७१८ ई० को उसकी मृत्यु हो गई। शराबी कौनसा पाप नहीं करता, इसका नमूना महाराजा अजीतसिंह जोधपुर थे।

इसी प्रकार जिन राजपूतों ने अपना सर्वस्व बलिदान करके शत्रुओं से देश को बचाया था, उनका सन्तान जब मद्य-मांस का सेवन करने लगी तो अजीतसिंह के समान कुल-कलङ्कों की उत्पत्ति होने लगी। क्षत्रियों के बिगड़ने से सर्वनाश हो जाता है। क्योंकि क्षत्रियादि ही विद्या धर्म, राज्य और लक्ष्मी की वृद्धि करने हारे हैं, वे कभी भिक्षावृत्ति नहीं करते, इसलिये वे विद्या व्यवहार में पक्षपाती भी नहीं हो सकते और जब सब वर्णों में विद्या सुशिक्षा होती है तो मद्य मांसादि सेवन का अधर्म युक्त मिथ्या व्यवहार, जिससे राजा प्रजा का सर्वनाश हो जाता है: नहीं चला करता। ब्राह्मण क्षत्रिय सब मिलकर राष्ट्र की रक्षा करते हैं। क्योंकि क्षत्रिय आदि को नियम में चलाने वाले ब्राह्मण और संन्यासी होते हैं। इसलिए राजाओं के मन्त्री सदा से ब्राह्मण तथा गुरु सन्यासी रहे हैं। कभी दुष्ट लोग बढ़ते तथा उपद्रव करते और ब्राह्मण व संन्यासी की भी नहीं मानते तो वे क्षत्रिय के शस्त्र वा दण्ड से सन्मार्ग पर आते हैं। इसीलिये सन्यासी तथा ब्राह्मण को सुनियम में चलानेवाला क्षत्रियों को माना गया है। क्योंकि क्षत्रिय अन्याय; अधर्म का नाश करके न्याय धर्म की स्थापना करते हैं। जहां सच्चे क्षत्रिय होते हैं वहां अधर्म, अन्याय, मद्य, मदिरा (पापों की जड़) का स्थान कहां? सत्य तो यह है कि सच्चे क्षत्रियों के अभाव में सब पाप, अधर्म और अन्याय का साम्राज्य बढ़ता है। हरयाणे के प्रसिद्ध कवि चौ० तेजसिंह ने इसे बहुत अच्छे ढंग से इस प्रकार लिखा है—

> लाखों बार आजमाया लाखों बार लिया देख,
> गीता और महाभारत सब स्मृतियों का है यह लेख,
> क्षत्रिय और अन्याय भाइयो मेरे दोनों बात,
> हैं दोनों विपरीत गुण जो रहते नहीं एक साथ,
> होवेंगे क्षत्रिय जहां अन्याय न होवेगा वहां,
> होवेगा अन्याय तो फिर क्षत्रिय नहीं डटते वहां,
> सहने को अपमान, हमारी मान चाहे मत मान ॥१॥
> क्षत्रिय है वही जो जग की रक्षा इस प्रकार करे,
> न्याय से दुष्टों को दण्ड और श्रेष्ठों का सत्कार करे।
> सब प्रकार सबका पालन विद्या और धर्म का दान,
> धनादि पदार्थ सब सुपात्रों को देवे दान।
> विचार करके देवे, कभी बिना विचारे देवे नहीं,
> बिना प्रतिज्ञा पूरी करे कभी चैन लेवे नहीं।
> जग में शिवा समान, हमारी मान चाहे मत मान ॥२॥

इस गये बीते युग में प्रताप और शिवा दोनों आदर्श क्षत्रिय माने जाते हैं। उनके समान हमारी प्रान्तीय सरकारों और केन्द्रीय सरकार के सदस्यों को सच्चा क्षत्रिय होना चाहिए और सर्वनाश करने वाले मद्य-मांस-व्यभिचार आदि को तुरन्त राजनियम बनाकर समाप्त कर देना चाहिए। तभी इस ऋषियों के पवित्र देश में आर्य संस्कृति जीवित और सुरक्षित रह सकेगी।

ऐ राष्ट्र के कर्णधारों! यदि आपको आर्य संस्कृति से प्रेम नहीं और उसकी सुरक्षा का भी ध्यान नहीं तो अपने महापुरुषों के आदेश वा उपदेश पर चलने की कृपा करें, इसी में आपका कल्याण है। अपने प्राचीन साहित्य, अपने ऋषि महर्षियों, महात्माओं और नेताओं के उपदेश पर आचरण करके शराब को ही नहीं, सभी नशों को राजनियम बनाकर तुरन्त ही बन्द कर देना चाहिए, इसी में सबका हित है। वेद भी भगवान् भी कहता है—

हृत्सु पीतासो युध्यन्ते दुर्मदासो न सुरायाम्। ऋ० ८/२/१२

पापी लोग खूब जी भर कर सुरापान करके नशे के कारण उन्मत्त होकर परस्पर कलह करते हैं। ऐसा नहीं करना चाहिए।

सम्पादकीय:-

शहीद फण्ड में अपनी आहुति दीजिये

स्वर्ण मन्दिर अमृतसर तथा अन्य गुरुद्वारों से आतंकवादियों एवं देशद्रोहियों की राष्ट्र विरोधी गतिविधियों को समाप्त करने के लिए हमारी सेना के जवानों ने जिस शौर्य और सयंम का प्रदर्शन किया है, उसकी सर्वत्र प्रशंसा की जा रही है। हमारे जवानों को ज्ञात था कि स्वर्णमन्दिर में हथियार बन्द उग्रवादी हजारों की संख्या में छिपे बैठे हैं और वे गोलियों की बौछार करेंगे और उन्हें मन्दिर की पवित्रता का आदर रखते हुए उधर गोली चलाने का आदेश नहीं था। इस प्रकार उन्हें अपनी मृत्यु स्पष्ट दिखाई दे रही थी, परन्तु उन्होंने राष्ट्रहित को दृष्टि में रखते हुए अपने सेनापति के इशारे पर अपनी जान हथेली पर रखकर अपना पग आगे बढ़ाया और सकड़ों जवान उग्रवादियों की गोलियों के निशाने बन गये। परन्तु उन्होंने उग्रवादियों का दो दिन में सफाया कर दिया। उनका यह महान् बलिदान भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जायेगा। भारत की अखण्डता को बनाये रखने तथा स्वर्ण मन्दिर से आतंकवादियों को बाहर निकालने में वे सफल हो गये।

आश्चर्य है कि अकाली नेता उन नृशंस हत्यारों को शहीद मान रहे हैं जिन्होंने पंजाब में निर्दोष नरनारियों की हत्याएं की, बैंक लूटे, बसों से केवल हिन्दू यात्रियों को चुन चुन कर गोलियों का निशाना बनाया। इस प्रकार के भयंकर अपराधियों को वे शहीद मानते हैं क्योंकि वे हमारी सेना द्वारा मारे गये हैं। सेना ने तो उन आतकवादियों को मौत के घाट उतार कर स्वर्ण मन्दिर को अपवित्र होने से बचाया है। शहीद तो वे सैनिक हैं जिन्होंने राष्ट्र के टुकड़े करने वालों, स्वर्ण मन्दिर में शराब, मांस का सेवन करने वाले उग्रवादियों का सफाया किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा जो कि २२ जुलाई को सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में सम्पन्न हुई है; में महत्त्वपूर्ण निर्णय किया है कि राष्ट्र के इन महान् सुपुतों का सम्मान किया जावे और जिन परिवारों के जवान इस सैनिक कार्यवाही में शहीद हुए हैं या जो घायल हुए हैं उन्हें सभा की ओर से आर्थिक सहायता करने तथा स्वर्ण एवं रजतपदक देकर सम्मानित किया जावेगा सभा ने यह भी निश्चय किया है कि शहीद सैनिक परिवारों के बच्चों को सभा के गुरुकुलों तथा आर्य स्कूलों में निःशुल्क शिक्षा देने की सुविधा दी जावे। अभी तक सभा की अपील पर निम्नलिखित दानियों से दान प्राप्त हुआ है—

आर्यसमाज खोड़ा माडल टाऊन यमुनानगर जिला अम्बाला	१२००)
महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी दयानन्दमठ रोहतक	१००)
श्री पृथ्वीसिंह आर्य ग्राम मदाना जिला रोहतक	१००)
मन्त्री आर्यसमाज पुनाहाना जिला गुड़गांव	१०१)
मास्टर लालमणि आर्य ग्राम टटेसर जोन्ती (दिल्ली)	१०१)
प्रिंसिपल आर्य हायर संकण्डरी स्कूल सिरसा	१००)
मन्त्री आर्यसमाज बराड़ा जि० अम्बाला	१००)
वैद्य ताराचन्द आर्य गुरुकुल फार्मेसी खरखोदा जि० सोनीपत	११)
सर्व योग	१८१३

आर्यसमाजों, तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों व दानी महानुभावों से मेरा नम्र निवेदन है कि इस यज्ञ में आहुति भेजकर शहीदों के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें। सभा मन्त्री

हरयाणा की देश प्रेमी और धर्म प्रेमी जनता तथा आर्यसमाजों और शिक्षण संस्थाओं से अपील

साम्प्रदायिक शक्तियों और विदेशी ताकतों के षड्यन्त्र के कारण पंजाब में आतंकवादियों और देशद्रोहियों द्वारा निरपराध हिन्दुओं, निरंकारियों तथा पुलिस कर्मचारियों की हत्यायें की जाती रही। अकालियों और उग्रवादियों ने जो लबादा ओढ रखा था, कुछ तथाकथित धार्मिक और आर्थिक राजनैतिक मांगों का वह अब जनता के सामने ही नहीं, बल्कि सारी दुनियां के सामने अकालियों का देशद्रोही रूप खुलकर सामने आ गया।

स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को बहाल करने और देश की एकता को सुरक्षित करने के लिए भारत सरकार को सैनिक कार्यवाही करनी पड़ी। सेना के जवानों और अफसरों ने जिस अनुशासन संयम और वीरता का प्रदर्शन किया वह भारत के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ गया। यह गर्व की बात है कि राष्ट्र की एकता के इस महान् यज्ञ में आहुति देने वाले अधिकतर जवान हरयाणा में जन्मे थे वहां हमारे अनेकों जवान बलिदान हुए वहां बहुत से बुरी तरह घायल भी हुए। परन्तु उन्होंने राष्ट्र के टुकड़े होने से बचा दिया और राष्ट्र द्रोहियों के नापाक षड्यन्त्र को विफल कर दिया।

हताहत जवानों के परिवारों की सहायता के लिए सरकारी और जनता के नाम अपील निकली है। हरयाणा की जनता को अपने वीरों के परिवारों की सहायता के लिए दिल खोलकर धन देना चाहिये और इन परिवारों के पुनर्वास में सहायक होकर अपने पुनीत कर्त्तव्य का पालन करना चाहिये। इस उद्देश्य के लिए सभा ने एक निधि स्थापित करने का निर्णय किया है। इस निधि में राशि देने वाले भाइयों के नाम हम सर्वहितकारी में प्रकाशित करेंगे। शिक्षा संस्थाओं तथा आर्यसमाजों की राशियों को भी सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

सहायता की राशि सभा के उपदेशकों, भजनोपदेशकों द्वारा नकद, मनीआर्डर या चैकों द्वारा मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा दयानन्द मठ, रोहतक अथवा सभा के कोषाध्यक्ष श्री कन्हैया लाल जी महता को ई-४१ नेहरू ग्राउण्ड, फरीदाबाद के पते पर भी भेजी जा सकती है। अधिक से अधिक धन १० अगस्त तक एकत्रित करके भेजने के लिए हम सबसे प्रार्थना करते हैं ताकि स्वतन्त्रता दिवस १५ अगस्त के पर्व पर जवानों के परिवारों को पहली किस्त के रूप में हम कुछ भेंट कर सकें।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती
प्रधान—परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह
अध्यक्ष—हरयाणा रक्षा वाहिनी
प्रधान— आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

महर्षि दयानन्द की फिल्म क्यों ?

ऋषि दयानन्द ने अपनी फिल्म बनाने या नाटक बनाने के लिए बिल्कुल मना कर दिया था, वे उसको बहुत बुरा समझते थे। परन्तु आचार्य भगवानदेव जो संसद सदस्य भी हैं, इस फिल्म में रोल करने के बहुत ज्यादा इच्छुक हैं। परन्तु आचार्य जी को यह मालूम होना चाहिए, कि आर्य समाजी भी अपनी जिद् के पक्के हैं, यह फिल्म कभी बनाई नहीं जा सकती। लगभग १०० साल से आर्यसमाज का काम शुरू है, परन्तु इतने सदस्य बढते नहीं बल्कि ज्यादा सदस्य कम हो जाते हैं। आपस की फूट खुले आम नजर आ रही है। अनुशासन नाम की कोई वस्तु दिखाई नहीं देती, इसलिये या तो भगवानदेव अपनी जिद् से बाज आएं, वरना आर्यसमाजी भी अपनी जिद् के पक्के हैं, जिसका आचार्य भगवानदेव को अच्छी तरह से पता है।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

(पृष्ठ १ का शेष)

अकाली पंजाब से आने वाली बिजली को बन्द करने का यत्न कर रहे हैं तथा प्रधानमन्त्री ने अपने ऐवार्ड में हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा को दिया था। उस समय अकालियों ने इसके बदले में चण्डीगढ़ लेना मानकर घी के चिराग जलाये थे, परन्तु अब वे हरयाणा के अधिकारों पर कुठाराघात करने हेतु अबोहर फाजिल्का को भी पंजाब में रखने के आन्दोलन चला रहे हैं। आपने चेतावनी देते हुए कहा कि हरयाणा की वीर जनता अब जाग चुकी है और उग्रवादियों की हिंसक गतिविधियों का डटकर मुकाबला करेगी। उग्रवादी अकालियों को अंग्रेजों का समर्थन मिल रहा है। जिस जिस देश में भी अंग्रेज बैठे हैं वहीं खालिस्तान बनाने वालों को तन मन धन तथा हथियारों से सहायता दी जा रही है। कुछ मुसलमान देश भी इनकी कमर थपथपा रहे हैं। दिल्ली का इमाम अब्दुल्ला बुखारी आनन्दपुर साहब के गुरुद्वारे की अकालियों की बैठक में सम्मिलित हुआ था और वहीं पृथक् खालिस्तान की मांग का प्रस्ताव पारित हुआ था। अतः हमें अपने शत्रुओं से सावधान रहना पड़ेगा।

आपने सैनिक कार्यवाही वीरगति प्राप्त तथा जख्मी सैनिकों को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि हमारी सेना ने सैनिक इतिहास में एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। अमृतसर स्वर्ण मन्दिर की पवित्रता को बनाये रखने के लिए सैनिकों को आदेश दिया गया था कि स्वर्ण मन्दिर की ओर गोली किसी भी मूल्य पर नहीं चलानी है परन्तु स्वर्ण मन्दिर की ओर से उग्रवादी गोलियों की बोछाड़ कर रहे थे। इतना बड़ा बलिदान आज तक किसी भी राष्ट्र की सेना ने नहीं दिया। आपने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा कि बंगला देश के युद्ध के हीरो सरदार जगजीतसिंह अरोड़ा जैसे सेवा निवृत जनरल मांग कर रहे हैं कि पंजाब में सैनिक कार्यवाही की अदालती जाँच करवाई जाये। हम उनसे पूछना चाहते हैं कि क्या आप भी बंगला देश की सैनिक कार्यवाही की जाँच करवाने की मांग पर सहमत होंगे?

इस प्रकार की राष्ट्रद्रोही मांग करने वालों को स्मरण रखना चाहिए कि सेना तथा पुलीस के जवान राष्ट्र हितों की रक्षा के लिए ही अपनी जान हथेली पर रखकर कार्यवाही करते हैं। यदि बाद में उनकी कार्यवाहियों की जाँच करवाकर उन्हें दण्ड मिलने लगेगा तो फिर सिपाही राष्ट्र के नेताओं के आदेश पर क्यों कार्यवाही करेंगे। इस प्रकार सेना तथा पुलीस के जवानों का मनोबल समाप्त हो जायेगा।

अन्त में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा के निर्णय की घोषणा करते हुए कहा कि सभा की ओर से हरयाणा में जन्मे वीर शहीदों तथा जख्मी हुए सैनिकों के परिवारों की आर्थिक सहायता तथा सोने और चांदी के पदक देकर सम्मानित करेगी। उन सैनिक बलिदानी परिवारों के बच्चों को अपने आर्य स्कूलों तथा गुरुकुलों में निःशुल्क शिक्षा देने की भी सुविधा दी जायेगी। हम सारे देश के सैनिकों का पूरा सम्मान करते हैं। हमें गौरव है कि पंजाब की सैनिक कार्यवाही में बलिदान देने वालों में हरयाणा के सैनिकों की संख्या आधे से अधिक है।

समारोह की समाप्ति पर हरयाणा रक्षा वाहिनी के संयोजक महाशय भरतसिंह वानप्रस्थी ने समारोह में बोलने वाले नेताओं तथा सम्मिलित होने वालों का हार्दिक स्वागत किया।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

आवश्यक सूचना

वैदिक यति मण्डल के सब मान्य सदस्यों की सेवा में सूचनार्थ निवेदन है कि वैदिक यति मण्डल का सम्मेलन दयानन्द मठ दीनानगर में २५, २६ अगस्त १९८४ को होगा, जिसमें आगामी कार्य की योजना पर विचार किया जायेगा। अतः सब सदस्य महानुभावों से प्रार्थना है कि २४ अगस्त को सायंकाल तक मठ में पधारने की कृपा करें।

सोमानन्द मन्त्री वैदिक यति मण्डल

मानवीय मूल्य और समाज में 'अन्तःसम्बन्ध' पर राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स का आयोजन

हरिद्वार! (जुलाई)। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, दर्शन-विभाग के तत्वावधान में ७ सितम्बर १९८४ से ९ सितम्बर १९८४ तक मानवीय मूल्य और समाज में अन्तः सम्बन्ध पर राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स का आयोजन कर रहा है। इसका प्रारम्भ ७ सितम्बर ८४ को उद्घाटन समारोह से ही रहा है। इस अवसर पर उत्तर प्रदेश दर्शन परिषद् का दशम वार्षिक समारोह भी सम्मिलित रूप से मनाया जा रहा है। इसमें समस्त भारतीय विश्वविद्यालयों/महाविद्यालयों के प्राध्यापकगण, डी० ए० वी० कालेज एवं गुरुकुलों के प्राचार्य और प्राध्यापकगण का प्रतिनिधि रूप में भाग लेने हेतु आमन्त्रित किया गया है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के सतत् प्रयासों के परिणाम स्वरूप यह विश्वविद्यालय के इतिहास में द्वितीय बार राष्ट्रीय स्तर की कान्फ्रेन्स आयोजित की जा रही है। उनका यह दृढ़ विचार है कि वर्तमान वैज्ञानिक युग में मानवीय मूल्यों का ह्रास बहुत तीव्रता से हो रहा है। इस समस्या पर भारतीय मनीषी अपना गहन चिन्तन इस कान्फ्रन्स में प्रस्तुत करेंगे। निम्नलिखित विषयों पर विचार मन्थन प्रस्तुत किया जावेगा—

(१) वेद आधुनिक जीवन मूल्यों के सन्दर्भ में, (२) विज्ञान और जीवन मूल्य, (३) सामाजिक जीवन मूल्य, (४) सांस्कृतिक जीवन मूल्य (५) राजनैतिक जीवन मूल्य, (६) नैतिक जीवन मूल्य, (७) जीवन मूल्यों का क्रमिक विकास, (८) संचार तन्त्र का जीवन मूल्यों पर प्रभाव, (९) विकासशील बालक पर जीवन मूल्यों का प्रभाव, (१०) परिवर्तित जीवन मूल्यों के सम्बन्ध में विश्वविद्यालय प्राध्यापकों का दायित्व।

इस कान्फ्रेन्स में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति कान्फ्रेंस के निदेशक डा० जयदेव वेदालंकार से पंजीकरण फार्म मंगवा सकते हैं। शिक्षा शास्त्री और वैदिक विद्वान् उक्त विषयों पर अपना शोध-लेख भी भेज सकते हैं। इस अवसर पर एक विशिष्ट शोध-ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

डा० जयदेव वेदालंकार
निदेशक राष्ट्रीय कान्फ्रेन्स

"प्रवेश सूचना"

आर्य हिन्दी संस्कृत महाविद्यालय चरखी-दादरी जिला भिवानी जो महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक से सम्बन्धित है। ३५ वर्ष से हिन्दी एवं संस्कृत की लगातार सेवा कर रहा है, में हिन्दी की प्रभाकर एवं संस्कृत की प्राज्ञ, विशारद (मध्यमा) शास्त्री कक्षाओं का प्रवेश १ जून १९८४ से आरम्भ है।

१—छात्र एवं छात्राओं को अलग अलग पढ़ाया जाता है।

२—छात्राओं के लिए छात्रावास का पूर्ण प्रबन्ध है।

नोट—आठवीं पास छात्र एवं छात्राएं ५ वर्ष में सम्पूर्ण शास्त्री पास करें।

ऋषिपाल आर्य आचार्य
आर्य हिन्दी महाविद्यालय
चरखी-दादरी (भिवानी)

सर्वहितकारी के ग्राहकों से निवेदन

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है उनके पास पत्र लिखकर शुल्क भेजने का निवेदन किया गया है, परन्तु कुछ महानुभावों ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। अतः विवश होकर उनके पास आगामी अंक से सर्वहितकारी भेजना बन्द करना पड़ रहा है।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी साप्ताहिक
सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक

आर्य समाज की गतिविधियाँ

आर्य शिक्षण संस्थाएं ध्यान दें

नरवाना में गत लगभग तीस वर्षों से आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में शिक्षा का कार्य चल रहा है। आर्यसमाज के अधिकारियों की हार्दिक इच्छा होते हुए भी अपनी इस संस्था में धर्म शिक्षा की समुचित व्यवस्था न हो सकी थी। इसका एक मुख्य कारण आर्यसमाजी अध्यापकों का अभाव रहा है। इस कमी को दूर करने के लिए वेदों के प्रकांड पंडित प्रो० रत्नसिंह जी गाजियाबाद वाले को अपने अध्यापकों को धार्मिक प्रशिक्षण हेतु आमन्त्रित किया। उन्होंने १६ जुलाई से २२ जुलाई तक विद्यालय के समस्त अध्यापकों के सम्मुख प्रतिदिन तीन घंटे आर्यसमाज के सिद्धान्तों पर प्रभावोत्पादक भाषण दिये। प्रशिक्षण की व्यवस्था इस प्रकार की गई कि विद्यालय की पढ़ाई में कोई बाधा न आई। प्रोफेसर रत्नसिंह जी का अध्यापकों पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक सप्ताह में ही अध्यापकों को अधिकाधिक वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी मिल गई।

प्रबन्धक समिति द्वारा विद्यालय के अध्यापकों में से ही दस अध्यापकों का चयन करके धर्म शिक्षा अध्यापन का कार्य प्रारम्भ कर दिया गया। इस प्रकार एक बड़ी कमी को दूर करने में हम सफल हो सके। आर्यसमाज शिक्षण संस्थाओं में धर्म शिक्षा अध्यापन अवश्य होना चाहिए। जो संस्था धार्मिक शिक्षा आरम्भ करना चाहती हों वे परामर्श हेतु मुझसे सम्पर्क करें अथवा प्रो० रत्नसिंह जी से बी-१२ गांधीनगर, गाजियाबाद के पते पर सम्पर्क करने की कृपा करें।

रामकुमार आर्य
मन्त्री आर्यसमाज नरवाना

खिड़वाली में शराबबन्दी प्रचार

आर्यसमाज खिड़वाली जिला रोहतक में २०-२१ जुलाई को वार्षिक वेदप्रचार के अवसर पर सभा की भजन मण्डली पं० मुन्शीलाल तथा पं० सुमेरसिंह आर्य ने शराब की बुराइयों का खण्डन किया। आर्य समाज की ओर से सभा को १०१) वेदप्रचार ६८) दशांश तथा १५) सर्वहितकारी का शुल्क दिया गया।

इस अवसर पर आर्यसमाज का वार्षिक चुनाव भी निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ। प्रधान—श्री सुरतसिंह आर्य, मन्त्री—श्री जगेराम आर्य कोषाध्यक्ष—श्री रामभज आर्य

आर्यसमाज सांघी जिला रोहतक का चुनाव

प्रधान—श्री भलेराम आर्य, उपप्रधान— जिलेसिंह राठी, मन्त्री-सुरेन्द्रसिंह आर्य, उपमन्त्री—श्री रामफल, कोषाध्यक्ष—श्री मांगेराम, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामभज, प्रचारमन्त्री—पं० मनफूलसिंह आर्य

अन्तरंग सदस्य—स्वा० प्रेमानन्द, श्री अजीतसिंह सरपंच, श्री चत्तर सिंह, श्री जगबीरसिंह, श्री ओमप्रकाश आर्य

स्वास्थ्य में सुधार के लिए कामना

गुड़गांव के आर्य नेता श्री भीमसैन जी दीवान गत एक मास से हृदयरोग से पीड़ित हैं। आप १५ जून को मैडीकल इंस्टीच्यूट नई दिल्ली में उपचार के लिए दाखिल हुए थे। परमात्मा की कृपा से स्वास्थ्य में कुछ सुधार होने पर १७ जुलाई को अपने निवास स्थान शान्ताकुंज नई कालोनी गुड़गांव में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

इसी प्रकार सभा के महोपदेशक पं० चन्द्रसैन वैदिक मिशनरी भी गत एक मास से हृदयरोग से ही पीड़ित होकर सिविल हस्पताल सोनीपत में उपचार कराते रहे। ईश्वर कृपा से वे भी अपने निवास स्थान दिल्ली रोड़ सोनीपत में स्वास्थ्य लाभ कर रहे हैं।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दोनों विद्वानों को शीघ्र पूर्ण स्वस्थ्य करें ताकि वे पूर्ववत आर्यसमाज की सेवा कर सकें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

पं० वेदभूषण का मोरीशस प्रस्थान

अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान हैदराबाद के अधिष्ठाता एवं ख्याति प्राप्त आर्य नेता पं० वेदभूषण आगामी ५ अगस्त को हैदराबाद से वायुयान द्वारा बम्बई मार्ग से मोरीशस प्रस्थान करेंगे।

आप आर्य सभा मोरीशस के अनुरोध पर एक वर्ष के लिए जा रहे हैं। जहां आप अन्तर्राष्ट्रीय पुरोहित प्रशिक्षण हेतु एवं अन्य महत्त्व पूर्ण प्रचार योजनाओं को क्रियान्वित रूप प्रदान करेंगे।

विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार और आर्य संगठन के नए अयाम खुलेंगे। इस दृष्टि से पं० वेदभूषण की मोरीशस यात्रा को आर्यजगत् में महत्त्वपूर्ण माना जा रहा है।

कन्या गुरुकुल को अनुकरणीय दान

सेठ श्री बनवारीलाल जी आर्य प्रधान 'आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव' डा० गोपी जिला भिवानी के सद्प्रयत्नों से अन्य प्रान्तों में रहने वाले व्यापारी बन्धुओं से कन्या गुरुकुल पंचगांव जिला भिवानी को निम्नलिखित दान प्राप्त हुआ है। प्रबन्धकर्त्री सभा सभी दानियों का तथा प्रधान जी का हार्दिक धन्यवाद करती है।

१—मै० सिलीगुड़ी ओक्सन पार्टी सिलीगुड़ी	५१००)
२—सेठ श्री चान्दनमल जी मित्रुका गांधी रोड, सिलीगुड़ी	५१००)
३—सेठ श्री सत्यनारायण नवीन इंजीनियरिंग कम्पनी २६ गणेशचन्द्र एवनपुर दोतल्ला कलकत्ता-१३	५०००)
४—पं० रतिराम शर्मा देवराखिया राशभंडार नया बाजार सिलीगुड़ी	२१००)
५—सेठ श्री लालाराम जी प्यारेलाल जी कल्याण कंस्ट्रक्शन सी-३६ सीटी सैक्टर, बोकारो स्टील सीटी	२१००)
६—भारत टैक्सटाइल्ज गोमाता बाजार झरिया	२१००)
७—सेठ श्री मदनलाल मुरारीलाल टी मर्चेन्ट नया बाजार सिलीगुड़ी	११००)
८—सेठ श्री जगन्नाथ दयाकिशन आर्य सरलोया स्टील कार्पोरेशन, शिवाजी रोड खालपाड़ा सिलीगुड़ी	११००)
९—सेठ श्री सत्यदेव जी भगवानदास जी इण्डिया टी ट्रेडर्स नेहरू रोड, सिलीगुड़ी	११००)
१०—सेठ श्री जयनारायण जी जीतपुरिया (सन्तलाल पूनमचन्द महावीर स्थान सिलीगुड़ी)	११००)
११—श्री नोरंगलाल शर्मा भारवासिया (प्रकाश आटो मोबाइल हिलकार्ट रोड) सिलीगुड़ी	११००)
१२—श्री बच्चा बाबूजी स्वास्तिक, सिलीगुड़ी	११००)
१३—सेठ श्री मामनचन्द बुसानिया सुवकरोड सिलीगुड़ी	११००)

क्रमशः

प्रधानमन्त्री की कार्यवाही का स्वागत

अभी कुछ समय पूर्व प्रधान मन्त्री इन्दिरा गांधी ने पंजाब और कश्मीर राज्यों के सन्दर्भ में जो कदम उठाये हैं वे पूर्णतः राष्ट्रहित में हैं लेकिन यह बड़े आश्चर्य की बात है कि इस मामले में विपक्षी दलों ने अपना अलग रूख अपनाया है। इससे स्पष्ट है कि विपक्षी दलों को राष्ट्रीय एकता, अखण्डता और सुरक्षा की चिन्ता नहीं बल्कि उन्हें वोट प्राप्त करने की चिन्ता है क्योंकि उन्होंने कश्मीर और पंजाब में भारत सरकार के कदमों की भरपूर आलोचना की है। आज जबकि हमारा देश एक बड़े संकट से गुजर रहा है, भारत की समस्त जनता का यह कर्त्तव्य है कि वह विपक्षी दलों के झूठे और दूषित प्रचार का शिकार न बने, तथा राष्ट्र की एकता को बनाये रखने के लिए भारत सरकार की नीतियों का पूर्ण समर्थन करे।

रामानन्द सिंगला
उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

कन्या गुरुकुल गणियार में कन्या छात्रावास का शिलान्यास समारोह

रेवाड़ी—विलंब से प्राप्त समाचार के अनुसार १ जून १९८४ को कन्या गुरुकुल गणियार (महेन्द्रगढ़) में कन्या छात्रावास शिलान्यास समारोह बड़े उल्लासपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ है।

श्री राजबहादुर मन्त्री कन्या गुरुकुल गणियार ने जानकारी देते हुए बतलाया कि प्रातःकाल आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने एक वृद्ध महायज्ञ कराया। श्री बनवारीलाल हितैषी तथा कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के भाषण तथा भजन हुए और तपोमूर्ति स्वामी सेतानाथ जी ने कन्या छात्रावास का शिलान्यास वेदमन्त्रों के मधुर उच्चारण के साथ किया। गुरुकुल की आचार्या बहिन कलावती शास्त्री ने गुरुकुल का भावी कार्यक्रम तथा गुरुकुल के अधिकारियों का परिचय कराया। ब्रह्मचारी ओमस्वरूप महाशय सुबाराम, छोटेलाल ठेकेदार आदि महानुभावों ने गुरुकुल की तन, मन, धन से सहायता करने का संकल्प दोहराया। इस संस्था के लिए रेवाड़ी क्षेत्र आर्यों में बड़ा प्यार और उल्लास है।

(सैतीहार हितैषी रेवाड़ी से साभार)

कहावत यूँ बदली

जर, जोरू, शराब

नगरोटा बंगवा, ११ जुलाई (हि, स.)। पहले यह कहावत प्रचलित थी कि सभी झगड़ों की जड़ जर, जोरू और जमीन होती हैं; किन्तु वर्तमान में इस कहावत में थोड़ा फेरबदल हुआ है। अब जमीन का स्थान शराब ने ले लिया है क्योंकि जमीन के प्रश्न पर लोग अब न्यायालय की शरण लेने लगे हैं। अब यह कहावत विशुद्ध अंग्रेजी में परिवर्तित होती जा रही है कि झगड़े की जड़ होती हैं तीन डब्ल्यू अर्थात् 'वेल्थ वीमेन, एंड वाइन' उसका एक उदाहरण गत दिनों निकटवर्ती एक गांव में देखने को मिला, जब एक अवैध शराब विक्रेता और एक धनी व्यक्ति के मध्य शराब को लेकर झगड़ा हो गया। परिणामस्वरूप एक व्यक्ति को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

शोक समाचार

श्री जयकरण जी के सुपुत्र श्री रामकिशन जी का एक ट्रक दुर्घटना में घायल होकर १६-७-८४ को मृत्यु हो गई। आप दिल्ली पुलीस में सर्विस करते थे। एक मेहनती तथा ईमानदार और आर्यसमाज के कार्यों में पूर्ण रुचि लेते थे। परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना है कि आत्मा को शांति मिले। हरपाल शास्त्री

आर्यसमाज बादली जि० रोहतक

दिल्ली दरबार —चाणक्य

कनाडा से एक बड़े अकाली नेता के नाम आया एक पत्र गुप्तचरों ने पकड़ लिया। इसमें कहा गया है कि अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन तथा अन्य पश्चिमी देशों में रहने वाले सिख यह चाहते हैं कि अकाल-तख्त को टूटी फूटी हालत में हिन्दू साम्राज्य के विरुद्ध युद्ध में शहीद हुए लोगों की यादगार के रूप में रहने दिया जाय और नया अकाल तख्त स्वर्ण मन्दिर के परिसर में बनाया जाये। इसके लिए धन की व्यवस्था की जा रही है।

चर्चा है कि इसी पत्र के पकड़े जाने के बाद बाबा सन्तासिंह को कार—सेवा के लिए तैयार किया गया।

(साप्ताह्य टाइम्स नई दिल्ली से साभार)

श्री धर्मचन्द विद्यालंकार से सावधान रहें

श्री धर्मचन्द विद्यालंकार सभा में उपदेशक पद पर कार्य करते रहे हैं। उन्होंने सभा प्रधान जी से महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक में एम० फिल० परीक्षा की तैयारी करने की सुविधा देने की प्रार्थना की, और उन्होंने उदारता पूर्वक इन्हें सभा में सेवा करते हुए बिना अवकाश लिए दयानन्द मठ में निवास भोजन की भी सुविधा दे दी गई। जब इनको एम० फिल० की परीक्षा पूरी हो गई तो इन्होंने अपना स्वार्थ पूरा होने पर सभा को आंखें दिखानी आरम्भ कर दी और उच्चतम वेतन देने की मांग की। इनकी यह अनुचित मांग पूरी न होने पर प्रचार कार्यक्रम तोड़कर सभा के प्रचारकों की गुप्त बैठक पानीपत में करके उनके त्यागपत्र सभा को भिजवा दिये।

स्मरण रहे सभा की ओर से पूर्व ही सभा के सभी प्रचारकों तथा कार्यालय कर्मचारियों के नये वेतन स्वीकार करके ३५ से ९० रुपये तक की वेतन में वृद्धियां की जा चुकी थी, परन्तु इन्होंने सभा का कृतज्ञ होने के स्थान पर कृतघ्नता का सहारा लिया और सभा के संगठन को कमजोर करने हेतु आर्यसमाजों में जाकर भ्रामक प्रचार करना आरम्भ कर दिया। इस प्रकार सभा के विरुद्ध कार्यों में संलग्न होने तथा अनुशासन भंग करने के आरोप में सभा ने उन्हें सभा की सेवा से अलग कर दिया। परन्तु उन्होंने अब भी अपना सभा विरोधी प्रचार जारी रखा हुआ है। वे आर्यसमाजों में घूम घूम कर जात पात, शहरी देहाती तथा राजनैतिक का नारा लगाकर विभिन्न प्रकार की भ्रांतियाँ फैला रहे हैं। वे कहते हैं कि सभा के सभी उपदेशक सभा छोड़ चुके हैं, परन्तु उनके अतिरिक्त सभी उपदेशक, भजनीक यथापूर्व प्रचार कर रहे हैं।

आशा है आर्यसमाजें इस प्रकार के भ्रामिक प्रचारक से सावधान रहेंगी।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षा में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

प्रिंसिपल रामचन्द्र जावेद चले गये

पं० शान्तिप्रकाश उपदेशक ४५३ बरकत कालोनी, जयपुर

लाहौर दयानन्द उपदेशक विद्यालय के आचार्य भू० पू० श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और मुख्याध्यापक श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ थे। विद्यालय बड़ी शान से चल रहा था।

भारत भर से तथा अफ्रीकादि से चुने हुए युवक इस विद्यालय में प्रविष्ट हुए और स्नातक बनने के अनन्तर अपने अपने इलाकों में जाकर वैदिक धर्म प्रचार की धूम मचा दी।

इन स्नातकों में रामचन्द्र जावेद और कृष्णचन्द्र की जोड़ी भी थी। दोनों दाजल जिला डेरा गाजीखान से आये थे। स्नातक होने के पश्चात् पं० कृष्णचन्द्र जी आर्य प्रतिनिधि सभा लाहौर में उपदेशक बने। तब मैं लाहौर सभा वेद प्रचार विभाग का अधिष्ठाता था। कृष्णचन्द्र जी ने खूब कार्य किया। पुनः शास्त्री परीक्षा भी दे दी। वह भजन बोलने में भी सिद्धहस्त थे और व्याख्याता भी उच्चकोटि के थे। विभाजन के पश्चात् देहली में शिक्षक के कार्य पर रहते हुए एम० ए० परीक्षोत्तीर्ण होकर प्रिंसिपल बने।

श्री रामचन्द्र जावेद शुरू से ही शिक्षा विभाग से सम्बद्ध होकर विभाजन के पश्चात् एम० ए० करके विक्टर हायर सैकण्ड्री स्कूल जालन्धर छावनी के प्रिंसिपल बने और लड़कियों के लिए एक पृथक् स्कूल भी खोला। यह दोनों युवक राम और कृष्ण परस्पर साला बहनोई थे। प्रिंसिपल कृष्णचन्द की कई वर्ष पूर्व आकस्मिक मृत्यु पर प्रिंसिपल जावेद को बड़ा धक्का लगा था।

अब प्रिंसिपल रामचन्द्र जी जावेद के देहान्त की सूचना मैंने सर्वहितकारी में श्री केदारसिंह जी आर्य द्वारा पढ़ी तो मुझे दुःख हुआ। क्योंकि पंजाब विभाजन के पश्चात् वह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री पद पर आसीन थे।

पंजाब की विषम स्थिति समय में योग्य मन्त्री पद पर आसीन जावेद जी की आकस्मिक मौत पंजाब के आर्यसमाज और सभा के लिए हानिकारक है।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के वह दक्षिण हस्त थे। माननीय श्री पं० रघुवीरसिंह शास्त्री जब संयुक्त पंजाब सभा के मन्त्री थे तब जावेद जी सहायक मन्त्री बने थे और शास्त्री जी को इन्होंने पूरा सहयोग दिया था। उनके हाथ सभा का प्रकाशन विभाग था।

श्री जावेद जी ने उर्दू साप्ताहिक पत्र वैदिक धर्म निकाला था जो वर्षों चला, किन्तु कार्याधिक्य से उन्हें यह पत्र बन्द करना पड़ा। कुछ भी हो पंजाब से संस्कृत फारसी और अंग्रेजी के एक आर्य विद्वान् जो सभा को सुचारू रूपेण चला रहे थे, आकस्मिक चले गये।

पू० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी इनको विद्यालय में राम और कृष्ण की जोड़ी कहकर पुकारा करते थे। इस जोड़ी ने आयु पर्यन्त आर्य समाज का शानदार कार्य किया। दोनों कार्यक्षेत्र में इकट्ठे कूदे और सारा जीवन लगा दिया। दोनों सगे सम्बन्धी थे। परस्पर सुख दुःख के साथी थे। आर्यसमाज की सेवा में दोनों समर्पित थे परमात्मा आर्यसमाज पर दया करे कि आर्य महारथी कार्यभर से थक कर आकस्मिक मृत्यु के ग्रास न बनें।

भगवान् का नियम अटल है। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता अनथक परिश्रम करते करते छोटी आयु में ही परमात्मा के प्यारे होकर आकस्मिक काल कवलित हो जाते हैं किन्तु अउनके कार्य का महत्त्व बहुत होता है। श्री जावेद जी का माननीय सिद्धान्ती जी के साथ उठना-बैठना, मिलना जुलना बहुत था। उनके कैम्प पृथक् पृथक् थे। पुनरपि महाभारत काल की शान्ति समय समय पर परस्पर सहयोगी थे। दोनों ही परमात्मा के प्यारे हो गये। आज आर्यसमाज को सहस्रों नहीं—लाखों जीवन ज्योतियों की आवश्यकता है।

हरयाणा में संस्कृत अध्यापक उपेक्षित क्यों ?

हरयाणा में अंग्रेजो के समय के चले आ रहे काले कानूनों की छाया में शिक्षा विभाग में भी खूब भेदभाव बरता जा रहा है। विभाग ने दो शब्द घड़ रखे हैं एक मास्टर और एक टीचर शब्द तो ठीक हैं शब्दों का बेचारों का कोई दोष नहीं लेकिन हरयाणा शिक्षा विभाग शब्दों का भी शोषण करते हुए इन शब्दों के अर्थ का अनर्थ करके इनका गलत अर्थ में प्रयोग करता है। मान्य कोषों के अनुसार 'मास्टर' शब्द का अर्थ 'विशेषज्ञ' या 'निष्णात' है। लेकिन इस सही अर्थ की जगह मास्टर शब्द का अशुद्ध प्रयोग उन अध्यापकों के लिए किया गया है जो कि किसी विषय के विशेषज्ञ नहीं अपितु कई विषयों का स्पर्शमात्र जिन्होंने किया है। लेकिन दूसरी ओर वे अध्यापक हैं जो विषय विशेषज्ञ हैं जैसे सस्कृत, हिन्दी, कला, पंजाबी आदि के शिक्षक। लेकिन इन शिक्षकों को मास्टर न कहकर टीचर कहा जाता है जबकि ये अलग से विषय की विशेषता प्राप्त करते हैं। यह टीचर शब्द ही इन पर जुल्म ढाने वाला बना दिया गया है। मास्टर कहे जाने वाले अध्यापक पदोन्नत होते होते हैडमास्टर, लैक्चरार, बी० ओ०, एम० डी० इ० ओ० डी० इ० ओ० तक के पदों तक पहुँच जाते हैं, जबकि टीचर कहे जाने वाले अध्यापक के भाग्य में यह लिख दिया गया है कि उसकी किसी प्रकार पदोन्नति पूरी सेवा अवधि के दौरान नहीं होगी। संस्कृत एक पुरानी, समृद्ध, ज्ञान विज्ञान व मानव सभ्यता की आधारपूर्ण भाषा है तथा विशेष श्रम साध्य है। इसकी शिक्षा का विशेष प्रबन्ध कम है जहां पूर्णतया इसमें गति प्राप्त हो सकती हो। संस्कृत को पूर्ण रूप से जानने के लिए भी तपस्या करनी पड़ती है। इसी को देखते हुए हरयाणा सरकार ने शास्त्री ओ० टी० अध्यापकों को मास्टर के समान वेतनमान दिया हुआ है, लेकिन वेतन देकर भी उसे सम्मान नहीं दिया गया है। वह पूरे जीवनभर पदोन्नत नहीं किया जाता भले ही वह बी. ए., एम. ए, पी. एच. डी. की योग्यता प्राप्त कर ले। संस्कृत संसार की भाषाओं की ओर विशेष रूप से भारतीय भाषाओं की जननी है। संस्कृत में वह सब कुछ है जो विश्व को मार्ग दिखा सकता है। संस्कृत मनुष्य को सच मुच संस्कृत बनाती है। उसे संयम व अनुशासन में ढाल कर मानव से देवता बनाती है।

आजादी के बाद संस्कृत का जो स्थान पाठ्यक्रमों में होना चाहिए था वह नहीं है तथा संस्कृत अध्यापकों को जो सुविधा व सम्मान देना चाहिये था वह नहीं मिला। फलस्वरूप भारतीयता घटती गई और घटती जा रही है। यह सब अंग्रेजों की चाल थी कि अंग्रेजीयुक्त पाठ्यक्रमों को वरीयता दी गई। भारतीय शोर न मचायें इसलिए हिन्दी संस्कृत के अलग पाठ्यक्रम चला दिये और थोड़ी बहुत उन विषयों की आवश्यकता ऐसे पाठ्यक्रम पास अध्यापकों से पूरी की जाने लगी। न तो पाठ्क्रमों में हिन्दी संस्कृत को उचित स्थान दिया गया न ही अध्यापकों में हिन्दी संस्कृत के अध्यापकों का उचित स्थान व सम्मान दिया गया। सब जगह अंग्रेजी को अनिवार्य करार दे दिया गया। कुछ ऐसे भी साहसी, दृढ़ चरित्र, अपनी भाषा सभ्यता, देश व धर्म से अटूट प्रेम रखने वाले लोग थे जिन्होंने अंग्रेजी और अंग्रेजीयत को कभी भी स्वीकार नहीं किया। उन्होंने अलग ढंग की शिक्षा प्रणाली भी चलाई और अपने बच्चों को यह जानते हुए भी कि इस शिक्षा से उनके बच्चों को ऊँचा पद तो दूर नौकरी भी नहीं मिलेगी फिर भी अपनी भाषा की शिक्षा दी और आज भी दे रहे हैं। अंग्रेज के समय तो ये लोग घाटे में रहे ही लेकिन आजादी के बाद भी उसी अंग्रेजीयत में पले ऊपर से भारतीय लेकिन अन्दर से अंग्रेज से भी बड़े भारतीयता के दुश्मन। ये भारतीय अधिकारी हिन्दी संस्कृत व उनके अध्यापकों और सेवकों को फूटी नजर से भी देखकर खुश नहीं हैं। अब समय आ गया है जबकि भारतीय भाषाओं, विद्याओं, विद्याओं व उनके विद्वानों व शिक्षकों को उचित स्थान व सम्मान दिया जाये।

संस्कृत विकास परिषद्, हरयाणा

पुरोहित शिरोमणि पं० चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण का भव्य अभिनन्दन समारोह सम्पन्न

नई दिल्ली गत १५ जुलाई आर्यसमाज मन्दिर हनुमान रोड के विशाल हाल में आर्य पुरोहित सभा दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में ४५ वर्ष तक पुरोहित के महत्त्वपूर्ण दायित्व निभाने व विशिष्ट गरिमा स्थापित करने वाले पंडित चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण का भव्य अभिनन्दन किया गया, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली व विभिन्न आर्यसमाजों के पदाधिकारियों, राजधानी के वरिष्ठ नागरिकों, पत्रकारों, साहित्यकारों ने उन्हें फूल मालाओं से लाद दिया। आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता पंडित शिवकुमार शास्त्री भू० पू० सांसद ने पं० जी की कर्म निष्ठा तथा धर्म प्रेम की चर्चा करते हुए उनके जीवन से सम्बन्धित कई प्रेरक संस्मरण सुनाए। सुविख्यात साहित्यकार क्षेमचन्द सुमन ने पं० जी की व्यवहार कुशलता व शुद्ध मन्त्रोच्चारण के प्रभाव का उल्लेख करते हुए उन्हें तप व त्याग प्रतिमूर्ति बताया। राजधानी के वरिष्ठ पत्रकार व आर्यजगत् के सम्पादक श्री क्षितीश वेदालंकार ने उनके विलक्षण व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डालते हुए नई पीढ़ी के पुरोहितों को उनके आदर्श जीवन से प्रेरणा लेने; का आह्वान किया। स्वामी सत्यप्रकाश जी ने पं० जी को सहिष्णुता एवं माधुर्य का प्रतीक बताते हुए उनको सुलझे हुए तथा सन्तुलित विचारों के धनी बताया। पं० मेघश्याम वेदालंकार ने उनके निष्ठावान मधुर व्यक्तित्व का उल्लेख करते हुए सच्चा मार्ग दर्शक बताया। आर्य नेता श्री रामनाथ सहगल, सोमनाथ मरवाह, सरदारीलाल वर्मा, आचार्य विक्रम आदि ने पंडित जी की कर्त्तव्य परायणता, सरल और सादगी पूर्ण जीवन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। स्वामी सत्यप्रकाश महाराज ने इस अवसर पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ का विमोचन करते हुए प० जी के उज्जवल जीवन को आर्य समाजियो के लिए प्रेरणा लेने वाला बताया।

पं० चन्द्रभानु सिद्धान्तभूषण जी पर प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए प्रसिद्ध विद्वानों के लेख संग्रहीत हैं, जिसका मूल्य १५ रुपये है, निम्नलिखित पते पर उपलब्ध हैं।

पता—आर्यसमाज, लाजपत नगर–संकिण्ड नई दिल्ली–११००२४

वेदकुमार
मन्त्री

प्राप्ति स्थान—सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन; दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृ



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३४ ७ अगस्त १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अधिकारियों में कोई मत भेद नहीं

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

रोहतक—३० जुलाई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के मन्त्री डा० रणजीतसिंह ने एक प्रेस वक्तव्य में दैनिक पंजाब केसरी में प्रकाशित उस समाचार का खण्डन किया है जिसमें कहा गया था कि हरयाणा सभा दो फाड़ हो गई। सभा मन्त्री ने स्पष्ट किया है कि हरयाणा सभा के अधिकारियों मे कोई मतभेद नहीं है। पानीपत में वेद प्रचार मण्डल के गठन की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा है कि यदि जिला स्तर पर आर्यसमाज का कोई संगठन वेदप्रचार के प्रसार के लिए बनाया जाये तो सभा को कोई आपत्ति नहीं है।

गत दिनों १५ जुलाई को पानीपत तथा २२ जुलाई को गुड़गांव में वेदप्रचार मण्डल के गठन के लिए बैठकें की गई है और समाचार पत्रों में जो सूचना प्रकाशित हुई हैं वे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से नहीं बुलाई गई थी। बैठक के सयोजक ला० रामानन्द जी ने कार्यालय को फोन द्वारा तथा २२ जुलाई की अन्तरंग सभा का बैठक में अपने प्रतिनिधि द्वारा सन्देश भेजकर कहा है कि पानीपत मे बने वेद प्रचार मण्डल का आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सगठन से कोई टकराव नहीं होगा। तथापि अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार बैठक के संयोजकों से पत्र लिखकर इस सम्बन्ध में अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा गया है। यह कारण बताओ नोटिस नही है जैसा कि दैनिक पंजाब केसरी में समाचार छपा है।

आपने सभा के सगठन की चर्चा करते हुए कहा कि इस समय सभा से सा[illegible] ५५० आर्यसमाजें सम्बन्धित तथा ३ आर्य कालेज ३५ आर्य स्कूल तथा [illegible] गुरुकुल सभा के सहयोग से संचालित हैं। वेदप्रचार विभाग में इस [illegible] ४ उपदेशक तथा ६ भजन मण्डलियां वैतनिक रूप में प्रचार कार्य [illegible] रहे हैं। आर्यसमाज के अन्य विद्वान् भी सभा को वेदप्रचार कार्य में सहयोग दे रहे हैं।

[illegible]रा किसी सभा विरोधी संगठन से कोई संबंध नहीं

—दलीपसिंह आर्य

आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व प्रधान एव प्रसिद्ध आर्य नेता श्री दलीपसिंह आर्य पानीपत ने सभा मन्त्री के नाम अपने पत्र दिनांक २७-७-८४ लिखा है—

दैनिक पंजाब केसरी में हरयाणा सभा दो-फाड़ हो गई जो समाचार प्रकाशित हुआ है, वह सर्वथा भ्रम मूलक है। ऐसे किसी सगठन से मेरा अथवा आर्यसमाज पानीपत का कोई सम्बन्ध व समर्थन नहीं है जो सभा विरोधी हो। अतः सभा के विरोध में कोई संगठन बनाने का प्रश्न ही नहीं उठता।

हरमन्दिर की शान बचा दो

लोक कवि — ज्ञानीराम शास्त्री

वीर फौजियो छोड़ गये तुम अपनी खास निशानी
हरमन्दिर की शान बचा दी दे अपनी कुरबानी ॥ टेक ॥
दुनियां में नामी था अमृतसर का गुरुद्वारा
फीम चरस, हिरोईन तथा खोल दिया भंडारा
कर-२ छेद खोद के, खदक थोथा कर दिया सारा
फैलण लाग्या जहर, बहै थी जित अमृत की धारा
जोड़ लिए हथियार विदेशी चीनी पाकिस्तानी
हरमन्दिर की शान बचा दी·········

जिस मन्दिर मैं गूंजें थे, सदे वाह गुरु के टेक
दर्शन खातर भगतजनां के पड़े रहे थे लारे
उस मन्दिर मैं बैठे छुपके डाकू और हत्यारे
हिन्दू सिख थे भाई भाई कर दिये न्यारे न्यारे
ले कानून हाथ में अपनी करण लगे मन मानी
हरमन्दिर की शान बचा दी·········

बिना खोट के चलती फिरती जनता रोज मरै थी
अपनी जान बचावण खातिर छुपती पुलिस फिरै थी
डाके हत्या आगजनी की नई नई लिस्टें भरै थी
चोरां की माँ बैठी भीतर पैदा चोर करै थी
भूल गये सब गुरु वाणी में दर्ज फर्ज इन्सानी
हरमन्दिर की शान बचा दी·········

देश कौम के गद्दारां ने जाल रच्या था भारी
बनै निशाने नेता, अफसर, पत्रकार, व्यापारी
टुकड़े टुकड़े देश करण की कर ली पूर तैयारी
खालिस्तान झण्डे, सिक्के, पर्चे कर दिये जारी
दी चुनौती सेना नें हुई दुनियां नैं हैरानी
हरमन्दिर की शान बचा दी·········

ठीक वखत पै वीरो तुम ने आ पंजाब बचाया
घेरा पा कै हरमन्दिर का सबने शीश झुकाया
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई मिल कै हल्फ उठाया
हुक्म मिला जब फायर का तो लागे करण सफाया
ज्ञानीराम धर्म खातिर तुम कर गये अमर जवानी
हरमन्दिर की शान बचा दी·········

पानीपत की बैठक मे सभा के समानान्तर संगठन नही बना

सभा के उपप्रधान रामानन्द सिंगला ने अपने एक प्रेस वक्तव्य मे इस समाचार पर आश्चर्य प्रकट किया है कि पानीपत की १५-७-८४ को बैठक में वेदप्रचार मंडल के गठन होने पर हरयाणा सभा दो फाड हो गई। इस प्रकार का वक्तव्य व समाचार निराधार और शरारतपूर्ण है। इसकी जांच होनी चाहिए। हम सभी को संगठन को सुदृढ करने के लिए यत्नशील रहना चाहिए।

—रामानन्द सिंगला

शराब का नाग-पाश

मै एक ग्रामीण नवयुवक हूं। अपना व्यथा-कथा लिखते हुए मुझे हल्कापन महसूस हो रहा है। वह रात कितनी भयानक लगी मुझे, जब मेरे प्रतिष्ठित परिवार का सिर सरेआम कलम किया जा रहा था। मैं इसे घटना नहीं, दुर्घटना कहूँगा।

मेरी बहन का विवाह था। उस दिन चारों तरफ खुशियां ही खुशियां थी। बारात धूमधाम से आयी। खाना खाने तक की सभी औपचारिकतायें भले ढग से समाप्त हुई थीं। खाना खाने से पहले कुछ लोगो ने, जिन्हें मैं समाज के कथित ठेकेदार कहूँगा, शराब का प्रस्ताव मेरे सम्मुख रखा। मैंने साफ मना कर दिया कि हमें हाय-हुल्लड़ कतई पसन्द नहीं, लेकिन उन कथित समाजसेवियों ने बार बार शराब पर जोर दिया और कहा कि, "आजकल तो बिना शराब के खाने का मजा कहां ? फिर इसमें कोई हेठी तो है नहीं। सौ-दो सौ की बात है भइया। क्यूँ मुँह छिपाते हो ? बस यूं समझो, मजा आ जायेगा खाने का। लोग भी क्या याद रखेंगे।"

मैं तो अपनी हठ पर अड़ा रहा, पर पिताजी ने मेरी बात को नहीं गवारा किया। परिणामस्वरूप शराब की बोतलें खुलने लगी और जाम पर जाम चढ़ने लगे।

कुछ ही देर बाद नतीजा सामने आया। एक अजीब-सा तमाशा बन गया। शराब के पियक्कड़ लोग पी पी कर गाली-गलौज करने लगे। कुछ औंधे हो गये। कुछ बहकने लगे। सबसे ज्यादा क्रोध मुझे उस समय आया, जब वे लोग अपनी गन्दी जबान से मेरी बहन और मां-बाप पर कीचड़ उछालने लगे। मुझे लगा, ये लोग अपने गले के बदबूदार थूक से हमारी मान-मर्यादा पर पिच-पिच कर रहे हैं। इस तरह सरेआम अपने प्रतिष्ठित परिवार का गला कटते हुए मैं मुश्किल से सहन कर पाया था। उस रात शराब के इस घृणित चमत्कार से मैं अचंभित भी हुआ था। यदि शराब का असली रूप यह है तो फिर क्यों लोग इसे पीने से बाज नहीं आते ? क्यों पी पीकर अपनी और सबकी इज्जत नंगी करते हैं ?

वह दिन है और आज का दिन है, मैं शराब के घृणित चमत्कार को शायद ही कभी भूल पाऊं। अब पिताजी मुझसे भी कहीं अधिक नफरत करते हैं शराब से।

कालीचरण द्वारा श्रीरामलाल
ग्रा० पो०—मोरटा, जिला गाजियाबाद (उ० प्र०)

धरना स्थल पर महिलाओं का अद्भुत प्रदर्शन

ग्राम बालावास जिला हिसार में १४ अप्रैल से शराब के ठेके के सामने धरना निरन्तर जारी है। दिनांक २६-७-८४ को प्रेरणा व लगन से उत्साहित होकर १५० महिलाओं और स्कूली बच्चों ने दिन के दो बजे धरना स्थल पर पहुँचकर साढे पांच बजे तक ठेका के सामने शराब विरोधी नारे लगाये और आर्यसमाज अमर रहे, बाप शराब पीता है, बच्चे भूखे मरते हैं। शराब का ठेका बन्द करो। साथ में शराब विरोधी और ईश्वर भक्ति के गीत भी गाये। उपरोक्त महिलाओं में १०० महिला ग्राम बालावास श्रीमती लजावन्ती आर्या व भगवानी आर्या के नेतृत्व में ग्राम कंवारी से पधारी। धरना स्थल पर दृश्य देखते ही बनता था। जब एक शराबी ठेका की तरफ बोतल लेने गया तो महिलाओं का झुण्ड ठेके की तरफ दौड़ पड़ा। ठेकेदार बोखला उठा, डर गया। बाद में श्री मोहनलाल आर्य, महात्मा महानन्द जी आदि ने स्थिति को सम्भाला। महिलाओं ने हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि आप धैर्य रखें शान्त रहें। सरकार व ठेकेदार को एक अवसर और दो अगर बहरी सरकार ने अब भी ध्यान नहीं दिया, ठेकेदार अब समय रहते यहां से नहीं उठा तो हम ठेके की ईंट से ईंट से बजा देंगे। महिलाओं ने भी कटु शब्दों में भजनलाल सरकार की तीव्र आलोचना की। अब तक धरना स्थल पर श्री मोहनलाल आर्य जिसने शुरु से ही भोजन व पानी का कार्य पूरी लग्न से सम्भाल रखा है। मिठू पहलवान, सुबेदार हरचन्द आर्य, निहाल सिंह आर्य हेतराम आर्य, सहीराम, बहन फूलां जिसने बचपन से ही ब्रह्मचर्य व्रत धारण किया हुआ है, वे पुरुष वेश में रहती हैं। हरिकिशन आर्य व हरिसिंह आर्य, डा० ओमप्रकाश आर्य (कंवारी) भी पूरा सहयोग दे रहे हैं। उपरोक्त सभी आर्य वीर पूरी निष्ठा से मैदान में डटे हुये हैं। जब तक ये पाप का अड्डा यहां से नहीं उठेगा हम धरना जारी रखेंगे।

मत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान शराबबन्दी समिति जि० हिसार

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह

६ से १४ अक्तूबर ८४ आर्य कालेज पानीपत में होगा

हरयाणा की प्रसिद्ध आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जि करनाल को स्थापित हुए १०० वर्ष पूर्ण हो गये हैं। अतः इसका शताब्दी समारोह ६ अक्तूबर से १४ अक्तूबर १९८४ को आर्य कालेज पानीपत में मनाने की तैयारियाँ प्रारम्भ हो गई हैं। आर्य जगत् के विख्यात वैदिक विद्वान् प० वीरसेन जी वेदश्रमी यज्ञ के ब्रह्मा होंगे और दक्षिण भारत के वैदिक विद्वान् ऋषि दयानन्द की विधि के अनुसार यज्ञ करवायेंगे। समारोह के अवसर पर संस्कृत पाठशाला की स्थापना, पुरोहित कक्षाएं चलाना, वैदिक विद्वानों को पुरस्कृत करना, आर्यसमाज पानीपत का इतिहास एवं स्मारिका का प्रकाशन करना तथा पानीपत और निकट के ग्रामों में आर्यसमाज के प्रचार प्रसार कार्य करने की योजना बनाई गई हैं। शताब्दी समारोह पर आर्यसमाज के प्रमुख नेता एवं विद्वानों के पधारने की स्वीकृति मिल चुकी है।

आर्यसमाज पानीपत के अनुरोध पर यह समारोह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के सहयोग से मनाया जायेगा। अतः प्रदेश के आर्य नर-नारियों से निवेदन है कि इस समारोह को सफल करने के लिए ऊपर लिखित योजनाओं को पूरा करने हेतु उदारता पूर्वक सहयोग करें और भारी संख्या में सम्मिलित होकर अपने संगठन का परिचय देवें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

सम्पादकीयः-

प्रधानमन्त्री व रक्षामन्त्री के नाम खुले पत्र

आदरणीया प्रधान मन्त्री महोदया,

अब यह स्पष्ट हो गया है कि हरयाणा को हानि पहुंचाने के लिए अकाली कार्यकर्त्ता अपनी पूर्व घोषित योजना के अनुसार भाखड़ा नहर के तट बन्धनों को काट रहे हैं तथा बिजली की सप्लाई को रोकने का कुप्रयास कर रहे हैं। उन्होंने एक बार जून में तथा दूसरी बार जुलाई मास में भाखड़ा नहर में दरारें डाली हैं। नहर उन व्यक्तियों द्वारा काटी गई है जो कि सिंचाई तथा बिजली विभाग के कार्यों में दक्ष हैं क्योंकि नहर काटने से २ दिन पूर्व उत्तरी भारत में बिजली की सप्लाई बन्द करके जनता को परेशानी में डाला गया था। भाखड़ा नहर के दोनों तट बन्धन ऐसे स्थान से काटे गये जहां से पानी सतलुज नदी में जा सकता है और इस प्रकार पंजाब के ग्रामों को किसी प्रकार हानि नहीं हो पाती एवं जो पानी बहकर जाता है उसका पंजाब के लिए सदुपयोग किया जा सके। मुझे आशंका है कि इस बार पंजाब के उग्रवादी रोपड़ हैडवर्क्स से पानी काट देवें जहां से पानी बहकर नालों द्वारा भाखड़ा की मुख्य नहर को हानि पहुँच जावे। यह नहर हरयाणा के लिए जीवन दायिनी है। अतः सरकार को दिन रात निगरानी तथा चौकसी रखनी चाहिए।

उग्रवादियों द्वारा नहर तोड़ने पर जिला सिरसा, हिसार आदि में पानी का अकाल सा पडगया है। अकालियो की माग पर यदि पंजाब से सेना को हटा लिया गया तो उग्रवादी पंजाब से आने वाले पानी तथा बिजली की सप्लाई बन्द करके हरयाणा की जनता को इसी प्रकार हानि पहुंचाते रहेंगे। अत. सेना को पंजाब से न हटाना राष्ट्रहित में होगा।

इस समय कोई भी नेता इस अवस्था में नहीं है जो कि पंजाब की ओर से वार्ता कर सके। अतः सम्प्रति वार्ता होने की कोई संभावना नहीं है। सन्त फतेहसिंह के प्रस्ताव पर ही आपका १९७० का एवार्ड आधारित है। वे उस समय अकालियों के सर्वोच्च नेता थे और आपकी घोषणा होने पर उस समय के मुख्यमन्त्री सरदार गुरनामसिंह तथा अन्य अकाली नेताओं ने अबोहर फाजिल्का के बदले चण्डीगढ मिलने पर दीवाली मनाई थी। यदि उसी समय आपके ऐवार्ड पर अमल हो जाता तो उसी समय समस्या हल हो सकती थी। मैं समझता हूँ कि राष्ट्रहित इसी में है कि अबोहर फाजिल्का के क्षेत्र हरयाणा में तुरन्त मिला दिये जायें। हरयाणा के लिए नई राजधानी बनाने में कम से कम ५ वर्ष लग सकते हैं। उस समय तक हरयाणा को चण्डीगढ़ में कार्य करने की अनुमति दी जाये। हरयाणा सरकार को भी चाहिए कि हरयाणा के किसी अन्य स्थान पर राजधानी बनाने के लिए स्थान का चयन करे। केन्द्रीय सरकार इस कार्य हेतु हरयाणा को कम से कम एक करोड़ रुपये का अनुदान तथा इतना ही ऋण देवे। चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का को तुरन्त हरयाणा में स्थानांतरित किये जायें और पंजाब के अधिकारियों को चाहिए कि वे इस क्षेत्र का कब्जा हरयाणा के अधिकारियों को दे देवें। पंजाब, हरयाणा तथा हिमाचलप्रदेश राज्यों की अन्य मांगों पर निर्णय करने के लिए एक आयोग की नियुक्ति की जाये।

सतलुज यमुनालिंक नहर की खुदाई का कार्य युद्ध स्तर पर आरम्भ किया जाये ताकि इस वर्ष के अन्त तक पूरा हो सके। १९७६ के रावी व्यास नदियों के पानी के बटवारे के निर्णय के अनुसार हरयाणा को भी उसका भाग तुरन्त मिलना चाहिए।

भवदीय
प्रो० शेरसिंह

आदरणीय रक्षा मन्त्री महोदय,

जैसाकि लोकसभा भवन के कक्ष में कल आपसे मेरी बातें हुई थी, उसके अनुसार आपसे निवेदन है कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा आर्य शिक्षण संस्थायें अमृतसर की कार्यवाही में शहीद तथा जख्मी हुए सैनिक परिवारों की सहायता करना अपना कर्त्तव्य समझती है। उन वीरों ने राष्ट्र रक्षा तथा धार्मिक स्थानों की पवित्रता की सुरक्षा हेतु अपना बलिदान देकर महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। उन परिवारों के बच्चों को अपनाकर उनकी शिक्षा व्यवस्था अपनी संस्थाओं द्वारा करने की योजना है। अतः आप अपने कार्यालय को निर्देश करें कि हमें उन शहीद जवानों के घर के पत्ते सभा को भेज दें।

जिस प्रकार गत ५ वर्षों से किसी सैनिक को दुर्घटना में मुआवजा मिलता है इसी प्रकार सैनिक कार्यवाही में शहीद हुए जवानों के परिवारों को एक लाख रुपये का मुआवजा तथा अन्य पेन्शन और शेष सेवा काल का वेतन देने की व्यवस्था करें। इस प्रकार सैनिकों का मनोबल बढ़ेगा तथा इससे राष्ट्र का भी हित होगा।

भवदीय
दिनांक २१-७-८४ प्रो० शेरसिंह

प्रसन्नता की बात है कि सभा प्रधान जी के सुझाव पर रक्षा मन्त्री महोदय ने गत सप्ताह लोकसभा में घोषणा कर दी है कि सैनिक कार्यवाही में शहीद हुए सैनिक परिवारों को एक एक लाख रुपये का मुआवजा दिया जाएगा।

सम्पादक

आर्यसमाज गोण्डा (उ०प्र०) में शुद्धि समारोह

हाफिज मौलवी मोहम्मद मुस्तकीम साहब जो गोण्डा (उ. प्र.) के मुस्लिम मजहब के प्रभावशाली आदमी थे, उन्होंने १५ जुलाई १९८४ को वैदिक धर्म (हिन्दू धर्म) में प्रवेश करते समय आर्यसमाज मन्दिर में निम्नलिखित उद्‌गार प्रकट किए।

"मैं मुस्लिम घर में पैदा हुआ। उर्दू; अरबी, अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की और एक लम्बे अर्से तक इमाम के रूप में मुस्लिम जगत् की खिदमत भी की, लेकिन दिल और दिमाग को सकून हासिल न हुआ। ऐसा लगता था कि मैं अन्धेरे में भटक रहा हूं। मुझे पता चला कि मेरे दोस्त मौलाना सैयद खुर्शीद आलम साहब इस्लाम को छोड़कर अपने पुराने वैदिक हिन्दू धर्म को स्वीकार कर श्री जयप्रकाश आर्य बन चुके हैं। मैंने उनसे खतोकिताबत की। उन्होंने मुझे वेद और हिन्दू धर्म की कुछ पुस्तकें भेजीं। ईश्वर कृपा से उनके दो, तीन भाषण गोरखपुर, उत्तरौला, गोण्डा एवं लोकहवा में सुनने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ। आखिर मेरे हृदय से आवाज आई, तू क्यों अन्धेरे में भटक रहा है? फौरन वैदिक धर्म की शरण में आ।"

इसलिए मैं अपनी बीबी और बच्चों सहित इस्लाम छोड़कर वैदिक धर्म को स्वीकार करता हूं। अब मेरी सारी उम्र वैदिक धर्म की सेवा में ही बीतेगी। उम्मीद है सभी भारतवासी हिन्दू भाई-बहन हमें अपना कर खिदमत का मौका देंगे।

हाफिज मोहम्मद मुस्तकीम साहब जो अब ज्ञानेश्वर भारती के नाम से जाने जाएंगे। १५ जुलाई को अपनी पत्नी बच्चे और एक दोस्त के साथ शुद्ध हुए। शुद्धि आर्यसमाज दीवानहाल में हुई।

दयानन्द अनाथालय बालसदन अजमेर

यह अनाथालय सन् १८९५ ई० में स्थापित आर्यसमाज की पुरानी एवं प्रसिद्ध बालकल्याण संस्था है। इस सदन में १२० अनाथ एवं निराश्रित बालक-बालिकाओं के पालन पोषण और उच्च शिक्षा के साथ औद्योगिक प्रशिक्षण की समुचित व्यवस्था है। ६ से १२ वर्ष की आयु के अनाथ और निराश्रित बालक-बालिकाओं के लिए कुछ स्थान रिक्त हैं।

सभी दानी महानुभाव इस पुनीत कार्य में अधिक से अधिक दान देकर पुण्य के भागी बनें।

दत्तात्रेय आर्य
प्रधान— दयानन्द अनाथालय बालसदन अजमेर

आर्यसमाज बम्बई का प्रस्ताव

१—समस्त आर्यसमाजों की यह सार्वजनिक सभा भारत सरकार तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा उठाए गए पंजाब में सैनिक कार्यवाही का पूर्ण रूपेण समर्थन करती है। ठीक समय पर की गई इस कार्यवाही से देश को बहुत बड़े खतरे से बचाकर उन्होंने राष्ट्र की सच्ची सेवा की है। अतः यह सभा सरकार का धन्यवाद करती है।

२—इस सभा का यह भी दृढ मत है कि पंजाब से सेना तब तक न हटाई जाए जब तक वहां पूर्ण आतंकवादियों का सफाया न हो जाए और जब तक पंजाब में पूर्ण शान्ति स्थापित न हो जाए। यदि सेना को हटाया गया तो उग्रवादियों की प्रतिक्रिया पुनः आरम्भ होने को समस्याएं हैं। जो देश की अखण्डता के लिए खतरा बन सकती है।

३—यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि देश के सभी पूजास्थलों की तलाशी भी ली जाए। राष्ट्र विरोधी तत्त्व अन्य पूजा स्थलों पर भी सक्रिय हो सकते हैं। इस सभा का आग्रह है कि तलाशी के अन्तर्गत जिन स्थानों पर कानून और राष्ट्र विरोधी तत्त्व सक्रिय पाए जाएं उन संस्थाओं की कार्यकारिणी समिति को उत्तरदायी ठहराकर उनके विरुद्ध उचित कार्यवाही की जाए। भारत सरकार इस सम्बन्ध में आवश्यक अध्यादेश जारी कर उसको कानूनी स्वरूप भी प्रदान करे।

४—आर्यसमाज मन्दिर को श्रीनगर में जलाकर नष्ट कर देने पर यह सभा खेद पूर्वक रोष प्रकट करती है। इस घृणित काण्ड से समस्त आर्यजनों की धार्मिक भावनाओं को जान बूझकर आघात पहुंचाया गया है। इस कार्यवाही से सारे देश के आर्यों में आक्रोश पैदा हो गया है। भारत सरकार से हमारा आग्रह है कि श्रीनगर (जम्मु काश्मीर) आर्य समाज मन्दिर के पुनर्निर्माण हेतु आर्थिक मुआवजा दे ताकि आर्यसमाज के नष्ट हुए भवन का निर्माण किया जा सके। उन उग्रवादियों के विरुद्ध कड़ी कार्यवाही की जाए जिन्होने यह घृणित कृत्य करके आर्यजनों की भावनाओं से खिलवाड़ किया है।

५—पंजाब में सैनिक कार्यवाही के अन्तर्गत हरमन्दिर साहब की पवित्रता को बनाए रखने में जिन बहादुर सैनिकों का बलिदान हुआ वे इस देश के सच्चे सपूत हैं सरकार उनके पारिवारिकजनों के कल्याणार्थ पूरी सहायता करे और आर्यसमाजें इन परिवारों की सहायतार्थ धन संग्रह कर रक्षा मन्त्रालय को भेजें।

६—आर्यसमाजों की यह सभा शहीद हुए सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करती है और परमात्मा से प्रार्थना करती है कि दिवंगत आत्माओं को शान्ति एवं सद्गति प्रदान करें।

कैप्टिन देवरत्न आर्य महामन्त्री

राखी भेंट

राखी भेंट उन्हें जो भारत के सच्चे लाल।
बलिवेदी पर प्रान चढे असफल शत्रु कुचाल॥
स्वर्ग लोक में देखोगे भारत माँ का परिवर्धन।
मर्त्य लोक कर रहा शत शत अभिनन्दन॥
एक राखी मेजर दयाल को जिसका नेतृत्व भारी।
बढ गया गौरव देश का ले सफलता सुखकारी॥
एक राखी पुरी श्रेष्ठ को जिसके अमूल्य प्राण।
हो गए देश प्रेम की बलिवेदी हाय बलिदान॥
राखी सभी वीरों को जो भारत में वर्तमान।
वीरों! माता मांग रही है अभी भी बलिदान॥
मातृ मन्दिर को बालाएं लिए खड़ी राखी तार।
विजय तिलक दे रही गा गा मंगलाचार॥
पावन राखी तारों को वीर करो स्वीकार।
भस्मसात् शत्रु हो, गूंजे माँ की जय जयकार॥

वेद प्रचार सप्ताह पर विश्व-व्यापी वेद प्रचार की धूम

विश्व के मानव समाज के साहित्य संसार को धर्मवीर ग्रन्थमाला का अनुपम उपहार। ॐ ओ३म् की महिमा ॐ यह साहित्य सुधासार ५ अध्यायों में दो कलर में प्रकाशित हो गया है मूल्य १०) प्रति है। सूक्ति सुधासागर १९ अध्यायों में मूल्य १०) प्रति। संकल्प बल ४) प्रति गायत्री मन्त्र की महिमा ३) प्रति। नैतिक शिक्षा ४) प्रति। विद्यार्थी जीवन की उन्नति का चार्ट ६ कलर में काव्य में ३) प्रति।

थोक आर्डर पर २५ % छूट होगी, डाक व्यय अलग। विश्व की आर्यसमाजें और शिक्षण संस्थायें धर्मवीर ग्रन्थमाला की लाखों प्रतियां खरीदकर विश्वव्यापी वैदिक विचारधारा के प्रबल प्रचार में सहायक बनें।

वेद और विश्वशान्ति—यह ग्रन्थ रत्न ७ अध्यायों में प्रकाशित हो मूल्य ५) प्रति।

निवेदक
वेदपथिक धर्मवीर आर्य भंडाधारी
अध्यक्ष धर्मवीर ग्रथमाला प्रकाशन ६८५७ अहाता
ठाकुरदास सरायरुहेला नई दिल्ली-५ फोन ५८६५४५

गीत

देश तो लुट गया शराब पीने वालों से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥
शराब पीने वाले देखो कौड़ी के तीन हुए,
पागलों की भांति फिरे बुद्धि के हीन हुए,
पास पैसा न रहे भूखे नंगे दीन हुए,
मौत है पास खड़ी पर नशे में लीन हुए;
आशा तो टूट रही ऐ नौनिहालों से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥
नशे में चूर हुए घूमें बनके मतवाला
लटपट चाल से गिरता कहीं नाली नाला
धन बरबाद किया बच्चों को न देखा भाला
घर को उजाड़ दिया जीवन नष्ट कर डाला
घटाघट घूंट गया रंग रस निरालों से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥
शराब के पाने से रावण की दुर्दशा भारी
मिट गई लंका जब शराब की बोतल ढारी
वेद ज्ञाता था मति भंग की उसकी सारी
राम के बाणों से मारा गया अत्याचारी
नजर से छूट गया आज दुनियां वालों से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥
चाहो कल्याण ओ नशा के पीने वालो
जीवन सुखी बनाओ दुनियां में आने वालो
दुष्कर्म से बचो सदा सुख के चाहने वालो
दुनियां को फिर दिखा दो ज्योति जगाने वालो
पथिक तो डट गया डरता नहीं है कालों से।
डगमग चालों से दारू के प्यालों से॥

बांकेलाल 'आर्य पथिक' अवैतनिक प्रचारक
मद्यनिषेध एवं समाजोत्थान, इलाहाबाद

श्रावणी उपाक्रम वेद सप्ताह के अवसर पर

सर्वहितकारी का वैदिक उपासना पद्धति विशेषांक

११ से १८ अगस्त तक श्रावणी उपाक्रम वेद प्रचार सप्ताह बड़ी श्रद्धापूर्वक आर्यजगत् में मनाया जा रहा है। इस शुभावसर पर सर्वहितकारी की ओर से आगामी १४ अगस्त को 'वैदिक उपासना पद्धति विशेषांक' पुस्तक साइज में प्रकाशित किया जायेगा। इसमें १०० से अधिक पृष्ठ होंगे। इसके सम्पादक सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य हैं। वैदिक सन्ध्या, हवन मन्त्र अर्थ सहित तथा सत्संगों में गाए जाने वाले गीतों का अनुपम संग्रह किया गया है। स्वाध्याय करने तथा आर्यसमाज मन्दिर एवं परिवारों में वैदिक उपासना का विधान पाठकों के लिए बहुत उपयोगी होगा।

इस विशेषांक की तैयारी के लिए प्रस्तुत अंक केवल ६ पृष्ठ का प्रकाशित किया जा रहा है।

सर्वहितकारी के जिन ग्राहक महानुभावों का वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है, उनकी सेवा में यह विशेषांक नहीं भेजा जा सकेगा। अतः आज ही अपना शुल्क १५) मनीआर्डर द्वारा भेजकर इस विशेषांक को प्राप्त करके लाभ उठावें।

व्यवस्थापक

शहीद फण्ड में दान-दाताओं की सूची

मन्त्री दयानन्दमठ प्रबन्धकारिणी सभा रोहतक	५०१)
मन्त्री आर्यसमाज जगाधरी जि० अम्बाला	१३३)
प्रधान ,, मण्डी जगाधरी जि० रोहतक	५१)
मन्त्री ,, जेकमपुरा गुड़गांव छावनी	५०)
,, ,, खिड़वाली जि० रोहतक	५१)
आर्यसमाज लोहारू जि० भिवानी	१०१)

आर्यसमाज लोहारू के सदस्य श्री भरतसिंह शास्त्री ११) श्री प्योरामजी १०) श्री जागेराम जी १०) श्री सूरजभान जी १०) श्री चन्दनसिंह १०) श्री सुलतानसिंह १०) श्री भगवन्तसिंह १०) श्री जयसिंह ५) कुल १०६)

मा० मंगलीराम आर्य १००) श्री सुखलाल आर्य १००) श्री उमरावसिंह सुपुत्र श्री चन्दगीराम १००) श्री धर्मपाल सुपुत्र श्री श्रीचन्द १००) कप्तान गजेसिंह १००) कप्तान मांगेराम १००) श्री महासिंह सुपुत्र श्री रामजीलाल १००) श्री छोटूराम सुपुत्र श्री कूड़ेराम १००) सूबेदार छत्तरसिंह १००) श्री शिवनारायण सुपुत्र श्री धर्मचन्द १००) श्री मुखियाराम सुपुत्र श्री राजेराम १००) कप्तान दरयावसिंह १००) श्री सत्यनारायण सुपुत्र सूबेदार रूपराम १००) सूबेदार सुरजनसिंह हरीजन १००)

आर्यसमाज खेड़ीजट जिला रोहतक द्वारा १५००)

इस सप्ताह का योग २४६२)

गत सप्ताह का योग १८१३)

सर्वयोग ४३०५

आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा अन्य दानी महानुभावों से अपील है कि वे सैनिक शहीद निधि में अपना अपना योगदान सभा को उदारता पूर्वक भेजकर राष्ट्र की अखण्डता तथा धर्म स्थानों की पवित्रता को बनाये रखने हेतु वीरगति को प्राप्त होने वाले सैनिकों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करें।

सभा की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि वीर शहीद सैनिक परिवारों के बच्चों को अपनाकर उन्हें शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा की निःशुल्क सुविधा दी जाये और शहीद निधि से छात्र तथा छात्राओं को छात्रवृत्तियां दी जावें। अतः आप भी इसी सूची में अपना नाम अवश्यमेव लिखवाइये।

कन्हैयालाल महत्ता
सभा कोषाध्यक्ष



सैनिक शहीद सम्मेलन भिवानी स्टैण्ड रोहतक में सम्बोधित करते हुए सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के तत्वावधान में

श्रावणी पर वेद प्रचार सप्ताहों का कार्यक्रम

आर्यसमाज महेन्द्रगढ वार्षिक उत्सव	४-५ अगस्त
,, बालावास जि० हिसार	३ से ६ ,,
गुरुकुल झज्जर जि० रोहतक	१०-११ ,,
आर्यसमाज नरवाना जि० जीन्द	१० से १९ ,,
आचार्य कुल लोवाकलां जि० रोहतक	१०-११ ,,
आर्यसमाज सोनीपत शहर	१३ से २० ,,
,, मुवाना जि० जीन्द	११ से १९ ,,
आर्यसमाज खेड़ीजट जि० रोहतक	११, १२ ,,
,, खेल बाजार पानीपत जि० करनाल	११ स १४ ,,
,, सालवन ,, ,,	१४ से २० ,,
,, सी ५८५ सरस्वती विहार दिल्ली	१५ से २१ ,,

सभा के उपदेशक पं० चन्द्रसेन जी वैदिक मिशनरी, पं० सुरेशकुमार शास्त्री पं० अर्जुनदेव सिद्धान्त शास्त्री, पं० कुलवन्तराय आर्य एवं भजनोपदेशक पं० चिरञ्जीलाल, पं० मुन्शीलाल, पं० ईश्वरसिंह तूफान पं० हरिश्चन्द्र आर्य, पं० सुमेरसिंह आर्य, पं० तेजपाल आर्य, पं० शेरसिंह आर्य, वेदप्रचार हेतु हरयाणा का भ्रमण कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त सभा के अधिकारी एवं आदरी उपदेशक स्वामी ध्यानानन्द जी, पंडित ब्रह्मप्रकाश शास्त्री, प्रो० ओमकुमार आर्य, स्वामी धर्ममुनि जी, वेदप्रचार सप्ताहों के कार्यक्रम पर अपना अमूल्य समय दे रहे हैं। अतः आर्यसमाजें वेदप्रचार सप्ताह की तिथियां नियत करके सूचित करें ताकि समय पर प्रबन्ध किया जा सके।

सभा मन्त्री

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षा में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री है ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

निर्भय पचक

कार—सेवा

—निर्भय हाथरसी

दानव के कुकर्म तो मानवता के प्यार यहां पर है।
राक्षस कुल कलक है तो प्रभु के अवतार यहा पर हैं।
बुरा भला होना तो अन्तर्मन की विषय वृत्तियाँ हैं—
असरदार वेअर, हर तरह के सरदार यहां पर है।

कुछ सन्तों ने सन्तनाम रख हत्यारों का काम किया।
पावनतम मन्दिर को भी हथियारों का गोदाम किया।
मस्त मलगों के पापों को धोने को निहग निकला।
'सन्तो' ने बदनाम किया 'सन्तासिह' ने शुभ नाम किया।

सेवा धर्म निभाने में भी क्या कोई लाचारी है?
स्वयसेवकों का तो यह सारा जग ही आभारी है।
मन्दिर की सेवा करने में कौन किसी से क्यों पूछे?
स्वय कार सेवा करने का हर कोई अधिकारी है।

कर्त्तव्यों से डर लगता है जब थोथे अधिकारों को।
तब कुरेदने लगते हैं स्वार्थी साये अगारो को।
शुद्ध खालसा पथ के ऊपर चलना कोई खेल नहीं।
सोच समझकर पग रखना होगा सच्चे सरदारों को।

माना किसी धर्म मन्दिर में सेना जाना ठीक नहीं?
पर मन्दिर को भी तो हत्यास्थान बनाना ठीक नही।
जब तक उग्रवादियों का किंचित भी खतरा बाकी है।
तब तक मन्दिर के प्रांगण से फौज हटाना ठीक नहीं।

सम्पादक के नाम पत्र

आदरणीय सम्पादक जी, सादर नमस्ते।

आगे समाचार यह है कि सभा का मुख पत्र सर्वहितकारी वास्तव में सबका हित चाहने वाला है। इसमें आर्य विद्वानों व नेताओं के धार्मिक, क्रान्तिकारी तथा प्रभावशाली लेख छपते हैं, जिन्हें पढ़कर सर्वहितकारी के ग्राहकों को धर्म लाभ होता है। सर्वहितकारी वास्तव में अपनी सही भूमिका अदा कर रहा है।

महेन्द्रसिह आर्य
प्रधान आर्यसमाज झील जि० जीन्द

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ; रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49

दूरभाष ७२,६६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३६ २१ अगस्त १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके पर

शराबबन्दी सम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नेताओं के भाषण

शराबबन्दी समिति द्वारा ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके पर १४ अप्रेल से धरना चालू है। सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य जो निकट के राजकीय महाविद्यालय नलवा में प्राध्यापक हैं, के निर्देशन में सभा के प्रचारक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी तथा उनके अन्य नवयुवक साथी शराब के ठेके पर जो भी शराब लेने ग्राहक आते हैं, उन्हें शराब की बुराइयां समझाकर उन्हें बिना शराब खरीदे वापिस भेज रहे हैं। प्रतिदिन प्रातः धरने पर यज्ञ, सत्संग, स्वाध्याय तथा रात्रि को किसी न किसी सभा की अथवा स्वतन्त्र भजन मण्डली द्वारा शराब विरोधी प्रचार होता है। जैनमुनियों की भान्ति आर्यसमाज के प्रचारकों ने भी चतुर्मास तक वेदप्रचार करके नया कीर्तिमान स्थापित किया है।

६ अगस्त ८४ को इसी शराब के ठेके के सामने एक शराबबन्दी सम्मेलन आर्यसमाज उमरा के प्रधान श्री देशराज आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सड़क की एक ओर शराब का ठेका तथा दूसरी ओर ओम् के झण्डों से सज्जा हुआ आर्यसमाज का प्रचार केन्द्र सड़क से आने जाने वालों के लिए आकर्षण बना हुआ है। इस स्थान के एक ओर पहाड़ी तथा नलवा की शिक्षण संस्थायें दूसरी ओर लहराते हुए खेतों के बीच छानें वैदिक आश्रम का रूप धारण कर चुका है।

शराबबन्दी सम्मेलन वाले दिन कभी कभी तेज धूप तथा कभी बादलों की छाया थी। मंच के साथ सैंकड़ों नरनारी अपने आर्यनेताओं के विचार सुनने के लिए तीन तीन मील से पैदल चलकर आये हुए थे और तेज धूप की परवाह न करते हुए अपने संगठन का परिचय दे रहे थे।

सम्मेलन का उद्घाटन सभा की नवयुवक पं० सुमेरसिंह की भजन मण्डली एवं सभा के आदर्श उपदेशक तथा आर्यसमाज हिसार के पुरोहित प० सुखदेव शास्त्री ने शराब से होने वाली हानियां बताकर किया। आर्यसमाज उमरा के नेता डा० बारूराम मलिक ने शराब के ठेके पर धरना आरम्भ करने की पृष्ठ भूमि बताते हुए कहा कि निकट के ग्रामों की पंचायतों के प्रस्ताव भेजकर हरयाणा सरकार से आग्रह किया था कि इस ठेके को यहां से हटाया जाये क्योंकि किसान मजदूरों के अतिरिक्त नलवा की शिक्षण संस्थाओं मे पढ़ने वाले हजारों छात्रों पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है। परन्तु सरकार ने अभी इधर ध्यान नहीं दिया। आपने सभा के अधिकारियों के पधारने पर उनका अपने क्षेत्र की जनता की ओर से धन्यवाद किया। सभा के उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार ने अपने भाषण में ग्रामीण जनता से आग्रह किया कि आर्य समाज द्वारा चलाये जा रहे इस शराबबन्दी आन्दोलन में तन मन धन से सहयोग करें।

पं० चिरञ्जीलाल सभा भजनोपदेशक ने अपने प्रभावशाली गीत 'सज्जनियों शराब पीना छोड़ दे' को सुनाकर नरनारियों का मन्त्र मुग्ध कर दिया। डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री ने शराब के ठेके पर धरना तथा वेदप्रचार कार्यक्रम का विवरण सुनाते हुए बताया कि सर्वप्रथम २ अप्रैल को स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने यहां पधारकर शराबबन्दी सम्मेलन के अवसर पर यहां की आर्य जनता को इस महान् बुराई को समाप्त कराने हेतु धरना आरम्भ करने का आदेश दिया था। अतः १४ अप्रैल से विधिवत धरना, ऋषि लंगर, यज्ञ, सत्संग तथा वेद प्रचार एवं शराब विरोधी प्रचार निरन्तर चल रहा है। यहां के सभी ग्रामों के कार्यकर्ता धरने को सफल करने में सहयोग कर रहे हैं।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री ने इस अवसर पर भाषण देते हुए आर्य जनता तथा विशेषकर क्रान्तिकारी आर्य वीर श्री अत्तरसिंह आर्य की सराहना करते हुए कहा कि २०-२५ ग्रामों की पंचायतों के प्रस्तावों के आधार पर हरयाणा सरकार को शराब का ठेका तुरन्त हटा लेना चाहिए था, परन्तु लगता है कि शराब के ठेकेदार ने धन का जाल फैला रखा है और अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए ग्रामीण जनता का नैतिक पतन कर रहा है। अब समय आ गया है कि इस सामाजिक बुराई को समाप्त करने के लिए हमारी माताओं और बहनों को आगे आना होगा और उन्हें अपने परिवार के सदस्यों को शराब पीने से रोकना चाहिए।

आपने हरयाणा सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि ग्रामीण जनता की भावनाओं का आदर करते हुए इस ठेके को समाप्त किया जाए। अब इस ठेके को बन्द करवाने का कार्य सभा ने अपने हाथ में ले लिया है। श्री अत्तरसिंह आर्य की सभा ने सेवाएं प्राप्त कर ली हैं। इस ठेके के बन्द होने पर इसी प्रकार अन्य ग्रामों में भी धरने आरम्भ होंगे।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने आर्य जनता को इस शुभ कार्य के संचालन के लिए बधाई दी और आर्य कार्यकर्ताओं को संगठित होकर बालावास के ठेके का बन्द करवाने के बाद अन्य ठेकों पर धरने चालू करें। हम यदि इसी प्रकार लगन से कार्य करेंगे तो हरयाणा के सभी ठेके सरकार को बन्द करने होंगे। शराब के ठेकेदारों को सावधान करते हुए आपने कहा कि वे शराब के रूप में जनता को जहर पिलाकर पाप के भागी बन रहे हैं। इस पाप का दण्ड अवश्य भोगना पड़ेगा।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

सर्वहितकारी के पाठकों को सूचना

१४ अप्रैल को वैदिक उपासना पद्धति विशेषांक समय पर तैयार न होने के कारण २ दिन विलम्ब से भेजना पड़ा। अतः २१ अगस्त का प्रस्तुत अंक भी ४ पृष्ठ का ही निकाला गया है।

व्यवस्थापक

आर्यजाति के लेखनी सम्राट्

पूज्य उपाध्याय जी के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग

लेखिका—कु० प्रतिभा आर्या वेदसदन अबोहर (पंजाब)

ईश्वर ने मानवमात्र के लिये ही नहीं अपितु समस्त जीव मात्र के लिए कल्याणी वाणी वेद का ज्ञान दिया, युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द ने उस पावन वाणी 'वेद' का जन जन में प्रसार किया व आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के सम्पर्क व संसर्ग से कई युवकों के जीवन को नई दिशा मिली। उन उत्साही कर्मठ आर्य वीरों ने अपना तन, मन, धन लगाकर वेदज्ञान से संसार को आलोकित करने का प्रयास किया। जिन तपस्वियों ने पूरा जीवन इसके प्रचार प्रसार में यापन किया, उनमें से एक नर रत्न हमारे पूज्यपाद प० गंगाप्रसाद उपाध्याय जी थे।

इस विभूति का पूरा जीवन आर्यसमाज के प्रसार, लोकोद्धार के प्रति समर्पित था। पं० जी का जीवन प्रेरणाओं से परिपूर्ण है, पावन है, मन-भावन है, जितनी साहित्यिक देन पं० जी की है, उतनी शायद ही संसार में किसी अन्य की होगी।

परन्तु बड़े खेद का विषय है कि इतने बड़े साहित्यकार को हम भूलते चले जा रहे हैं। यदि पं० जी जैसी विमल विभूति किसी साम्य-वादी देश में होती तो उसके नाम पर विश्वविद्यालय व स्मारकों की स्थापना होती। कहने का भाव यह नहीं कि उनके प्रति श्रद्धा केवल स्मारकों को बनाने से ही होगा, अपितु सच्ची श्रद्धा व आदर यही है कि हम उनके साहित्य को पढ़ें उनके जीवन से कुछ प्रेरणा लें और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा सार्थक करें। मैं अपनी लेखनी के माध्यम से पं० जी के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंगों का उल्लेख कर रही हूँ। जिससे बाल, वृद्ध, अबोध को तो लाभ होगा परन्तु आज की युवा पीढ़ी को विशेष प्रेरणा मिलेगी। क्योंकि वर्तमान समय की यही पुकार जब युवकों में नव चेतना का संचार होगा तभी हम अपने विद्वानों के पद-चिन्हों पर चलकर वैदिक नाद बजा सकेंगे। अतः निम्न घटनायें अवश्य ही युवा पीढ़ी को प्रेरित करेंगी ऐसी मैं आशा करती हूँ।

पं० जी को देश, धर्म व जाति से कितना स्नेह था, उनके हृदय में कितनी तड़प थी, आप निम्नलिखित घटनाओं से अनुमान लगा सकते हैं।

बिस्तर में पड़े लेखन कार्य—

पं० मदनमोहन जी विद्यासागर सर्दियों में पं० गंगाप्रसाद जी को मिलने गये। उपाध्याय जी रजाई ओढ़े बैठे थे। मदन जी ने उनका कुशल क्षेम पूछा तो उपाध्याय जी ने कहा कि ऐसा मत सोचना कि मैं बिस्तर में पड़ा हूँ। मैं तो यहां भी लिखने पढ़ने का कार्य कर रहा हूँ। इस घटना से पता चलता है कि हमारे पूज्य उपाध्याय जी कितने कर्मठ व तपस्वी थे।

ईश्वर पर अटल विश्वास—

मैंने अपने पूज्य पिता जी से यह घटना सुनी। एक बार उपाध्याय जी बहुत रुग्ण हो गये, मेरे पिता जी उस समय देहली में थे। उन्होंने श्री लाला संतलाल जी से कहा कि आप पं० जी को चिकित्सा आदि के लिए यहीं बुला लें। पिता जी ने पत्र लिखा और लाला जी ने वह पत्र पं० जी को भेज दिया। उपाध्याय जी ने मेरे पिता जी को प्रत्युत्तर दिया—राजेन्द्र ईश्वर यहां से भी उतना निकट है जितना देहली से। उक्त घटना से पाठकगण अनुमान लगायें कि उपाध्याय जी को प्रभु की सर्वव्यापकता पर व उसकी न्याय व्यवस्था एवं दया पर कितना अडिग-अडोल विश्वास था।

सौजन्य की मूर्ति—

मेरे पिता जी के मित्र महाशय राज्यपाल जी ने उपाध्याय जी के पाण्डित्य व कीर्ति से प्रभावित होकर कहा कि मैं उनसे मिलना चाहता हूँ अतः जब पं० जी लेखराम नगर में आये तो 'सुमन' जी ने कहा मैं जिज्ञासु जी का मित्र हूँ। उपाध्याय जी ने सुमन जी के सिर पर हाथ फेरा और आर्यसमाज के प्रचार प्रसार के लिए भरपूर प्रेरणा दी। इस घटना से गंगाप्रसाद जी की सरलता व सौजन्य से स्वभाव का बोध होता है। न जाने उनके जीवन में ऐसी कितनी घटनायें घटी होंगी। आशा है पाठकगण भी उपरोक्त गुणों को अपने जीवन में ढालने का यत्न करेंगे।

साहित्य सृजन की लौ—

मेरे पिता जी ने हमें एक बार बताया कि वे 'वीर संन्यासी' पुस्तक लिख रहे थे उन्होंने अनेक सज्जनों को निवेदन किया कि स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन सम्बन्धी संस्मरण भेजें। पं० जी को भी पत्र लिखा। पं० जी को तब दुर्घटना ग्रस्त होने के कारण चोटें लगी थीं। परन्तु फिर भी उन्होंने मेरे पिता जी को प्रेरक संस्मरण भेजे। उक्त घटना से पता चलता है कि वैदिक साहित्य के सृजन की उन्हें दिन रात लौ लगी थी। वह पुरुषार्थ की जीती जागती मूर्ति थे। उनका रोग भी उनकी साहित्य साधना में बाधक न बन सका। प्रमाद तो उनके पास फटकता न था। उक्त घटना से हमें पुरुषार्थ व परमार्थ की प्रेरणा मिलती है। वैदिक साहित्य प्रकाशन की उनकी लगन बेजोड़ थी उनके हृदय में इसके प्रचार प्रसार के लिए तड़प थी। आर्यसमाज के इतिहास में इतना बड़ा साहित्यकार कोई नहीं हुआ।

मैंने पं० गंगाप्रसाद जी के जीवन की कुछ घटनायें पढ़ी व सुनी। मेरे मन में विचार आया कि ऋषि के लक्ष्य के लिए मुनिवर गुरुदत्त, पं० लेखराम, धुन के धनी स्वामी दर्शनानन्द के पथ के पथिक लौह लेखनी वाले उपाध्याय जी की सतत साधना, निष्काम सेवा, पवित्र चरित्र तथा जीवन ज्योति से क्यों न युवा पीढ़ी को भी अवगत कराया जाये।

पं० जी के नाम व काम से भला कौन आर्य अपरिचित होगा। हमें वाणी से ही उनको याद नहीं करना है, अपितु उनके जीवन से प्रेरणा लेकर अपने वर्तन से कुछ करके दिखाना होगा। आज के समय में वक्ताओं की तो कमी नहीं, कमी है तो केवल पुरुषार्थ व लगन की।

मैं आशा करती हूँ कि मेरे भारत का प्रत्येक युवक ऐसे मूर्धन्य साहित्यकार की रचनाओं से और उनके जीवन की घटनाओं से प्रेरणा पाकर कुछ नया कर दिखायेंगे। वेद का ज्ञान, संदेश जन जन तक पहुँचायेंगे और उपाध्याय जी की भांति Practically कार्य करके ऋषि के दिव्य स्वप्नों को साकार करेंगे, यही हमारी ऋषि भक्तों की अपने प्यारे ऋषि के प्रति व पूज्य विद्वानों के प्रति सच्ची श्रद्धा होगी। अन्त में सुप्रसिद्ध कवि प्रकाश की निम्नलिखित पंक्तियां लिखकर अपने भावों व कलम को विराम देती हूं।

धन्य जागृति का जिन्होंने किया सवेरा है।
ज्ञान दीपक से मिटाया असत् अंधेरा है।
उन प्राण वीरों को सादर प्रणाम मेरा है।

भूल सुधार

सर्वहितकारी के ७ अगस्त के अंक के तीसरे पृष्ठ में प्रधान मन्त्री के नाम पत्र में केन्द्रीय सरकार से हरयाणा की राजधानी निर्माण हेतु १०० करोड़रु० अनुदान तथा इतना ही ऋण देने के स्थान पर १ करोड़ रुपये भूलवश छप गया। अतः उसे १०० करोड़ पढ़ा जाये।

सम्पादक

आर्यसमाज और वेद

लेखक–यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर मुरादाबाद

आर्यसमाज की स्थापना के उद्देश्य की समीक्षा करने पर हम इस परिणाम पर पहुंचे हैं कि इसकी स्थापना मुख्य रूप से वेद के प्रचार प्रसार एवं संरक्षण के लिए की गई थी। बम्बई में सन् १८७५ ई० में प्रथम आर्यसमाज की स्थापना के समय तत्कालीन रजिस्ट्रार को इसके उद्देश्य विषयक जो घोषणा पत्र दिया गया था, वह इस बात की पुष्टि करता है। आर्यसमाज का तीसरा नियम भी इसी की पुष्टि करता है। महर्षि को आर्यसमाज से आशा भी यही थी कि वह वेद प्रचार को अपना मुख्य कर्त्तव्य समझता है, एवं इसके प्रचार के लिए भरसक प्रयत्न भी करता ही है। आर्यसमाज का मूलाधार वेद है। उसकी मान्यतायें वेद पर आधारित हैं। आर्यसमाज की वेद विषयक क्या मान्यतायें हैं–प्रस्तुत लेख में यही चर्चा अभीष्ट है।

आर्यसमाज की वेद विषयक मान्यतायें -

आर्यसमाज वेद को सत्य-सनातन, नित्य-निर्भ्रान्त अपौरुषय ईश्वरीय ज्ञान मानता है और उसकी यह मान्यता अपने में एक अनूठी विशेषता लिए हुए है। उसकी इस विशेषता का पता हमें तब चलता है कि जब हम वेद विषयक अन्यों की मान्यताओं की पड़ताल करते हैं। आज भी ऐसे लोगों की कमी नहीं जो वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानते हुए भी उन्हें विभिन्न कालों में विभिन्न ऋषियों द्वारा संचित ज्ञान राशि माने बैठे हैं। (विस्तार के लिए लेखक की पुस्तक 'वेदों वाला ऋषि' देखें) ऐसे लोगों की भी कमी नहीं कि जो वेद को तो ईश्वरीय ज्ञान मानते ही हैं, साथ में उपनिषदों, ब्राह्मण ग्रंथों यहां तक कि पुराणों को भी ईश्वरीय ज्ञान की कोटि में रख देते हैं। ईसाई और मुसलमान क्रमशः बाईबिल और कुरान को ईश्वरीय ज्ञान मानते हैं पर आर्य समाज की सुदृढ मान्यता है कि वेद और केवल वेद, (और वह भी केवल संहिता भाग) ही ईश्वरीय ज्ञान है। वेदानुकूल होने से उपनिषद् आदि ग्रन्थ आर्यसमाज को मान्य हैं पर ये सब ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। वेद ही केवल स्वतः प्रमाण ग्रन्थ हैं। स्वतः प्रमाण का अर्थ स्पष्ट है कि जो अपना प्रमाण आप ही हो। जैसे सूर्य को किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं इसी प्रकार वेद को भी किसी अन्य प्रमाण की आवश्यकता नहीं। संसार के अन्य सभी पदार्थों को तो हम सूर्य के प्रकाश से ही देखते हैं किन्तु सूर्य को देखने के लिए किसी अन्य पदार्थ की आवश्यकता नहीं।

आर्यसमाज की मान्यता है कि ईश्वर चूंकि स्वयं सर्वज्ञ और निर्भ्रान्त है अतः उसका ज्ञान भी निर्भ्रान्त ही है। ईश्वर नित्य है अतः उसका ज्ञान भी नित्य ही है। यहां यह भी समझ लेना चाहिये कि वेद का पुस्तक नहीं, ज्ञान (शब्द, अर्थ और सम्बन्ध) नित्य है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द की ऐसी मान्यता है कि शब्द के दो रूप होते हैं–एक नित्य दूसरा कार्य। इनमें जो शब्द, अर्थ और सम्बन्ध परमेश्वर के ज्ञान में हैं वे सब नित्य होते हैं और जो हम लोगों की कल्पना से उत्पन्न होते हैं वे कार्य होते हैं। ब्राह्मण ग्रन्थ, उपनिषद् आदि ग्रन्थ ऋषियों की कल्पना से उत्पन्न हुए होने से कार्य अतः अनित्य हैं जबकि वेद नित्य ईश्वर का नित्य ज्ञान है। आर्यसमाज की मान्यता है कि वेद का एक एक अक्षर अपरिवर्तनशील है। ये ऋषियों की कल्पना से उत्पन्न शब्द नहीं। महर्षि का इसमें कथन है कि "जैसे वादित्र को कोई बजावे या काठ की पुतली को चेष्टा करावे, इसी प्रकार ईश्वर ने उनको निमित्तमात्र किया था।" स्पष्ट है कि वेद के शब्द, अर्थ और सम्बन्ध ईश्वर ने अपने ही ज्ञान से उनके आत्मा में प्रकट किये थे। ईश्वर ने यह ज्ञान ऋषियों को शब्द, अर्थ और सम्बन्ध के रूप में दिया था, मसी कागज; पत्र, अक्षर आदि के रूप में नहीं। फिर उन चार ऋषियों ने अन्यों में अन्यों को बोलकर सुनाया। इसीलिये वेद का नाम भी श्रुति पड़ गया। आर्यसमाज की मान्यता है कि ईश्वर ने अपना ज्ञान भाषा सहित दिया था और उसके अर्थ और सम्बन्ध भी उसी ने ही ऋषियों को जनाये। यदि परमेश्वर अर्थों और सम्बन्ध का ज्ञान न कराता तो उस ज्ञान को कोई कैसे समझ सकता था। भाषा भावों का वाहन है। ऋषियों ने उस ज्ञान को भाषा के माध्यम से ही ग्रहण किया था और फिर अर्थों को जानकर अन्यों को बताया। यदि ईश्वर अर्थ बोध नहीं करता तो ऋषिगण भी उन्हें समझ नहीं पाते।

आर्यसमाज की सुस्पष्ट मान्यता है कि ईश्वरीय ज्ञान न तो किसी आसमानी पुस्तक द्वारा उतरा है, न ही किसी वीर पंगम्बर पर नाजिल हुआ है, न किसी को आकाशवाणी हुई और न ही यह ऋषि की कल्पना है। आर्यसमाज की यह भी मान्यता है कि ईश्वरीय ज्ञान सृष्टि के आदि में ही दिया जाता है और उसमें अनित्य इतिहास नहीं होता। वह किसी देश विशेष की भाषा में नहीं होता। वेद का ज्ञान सृष्टि नियम और बुद्धि के विपरीत नहीं होता। वह ज्ञान विज्ञान और तर्क सम्मत होता है। आर्यसमाज की यह भी मान्यता है वेद में मानव के लिए जितना उपयोगी एवं आवश्यक है, वह सब ज्ञान ईश्वर ने दे दिया है। आर्यसमाज की यह भी मान्यता है कि ईश्वर का ज्ञान अनन्त होते हुए भी मानव की सामर्थ्य एवं उपयोगिता को देखते हुए जितने ज्ञान की आवश्यकता थी उतना वेद के रूप में दे दिया गया है। आर्यसमाज वेद को सब ज्ञान विज्ञान और भाषा का आदि मूल मानता है और वह यह भी मानता है कि इसमें मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि की सम्पूर्ण योजना एवं विधि सन्निहित है।

आर्यसमाज की यह भी मान्यता है कि मध्यकालीन वेदभाष्यकारों ने वेदों के मनमाने अर्थ कर अर्थ का अनर्थ कर दिया था। तभी महर्षि दयानन्द ने वेदों का यथार्थ भाष्यकर, धूर्त, भाण्ड और निशाचरों की कृति कहे जाने वाले वेदों को ईश्वरीय ज्ञान की यथार्थ पदवी प्रदान की। आर्यसमाज प्रत्येक के लिये वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना परम धर्म मानता है। आर्यसमाज वेद का प्रचार ही नहीं करता वेदों पर मिथ्या आक्षेपों का निराकरण करना भी अपना कर्त्तव्य समझता है। तात्पर्य यह कि वेद ही आर्यसमाज का सार सर्वस्व है। यही उसका मूलाधार है। इसी का प्रचार प्रसार इसे अभीष्ट है। आर्यसमाज वेद का रक्षक और उपासक है। आवश्यकता इस बात की है कि लोग आर्यसमाज को ही नहीं, उसके मूलाधार वेद को भी समझें और उसके अनुसार अपना अपना जीवन यापन करें। यदि ऐसा हो सका तो विश्व आर्य बन जायेगा और यह धरा स्वर्ग। प्रभु करे कि वेद प्रचार सप्ताह में हम वेद के निकट आने में समर्थ हो सकें।

गढवाल में सत्यार्थप्रकाश वितरण

उत्तरप्रदेश के सीमान्त क्षेत्र गढ़वाल के चारों जिलों उत्तरकाशी चमोली, टिहरी और पौड़ी में वितरण के लिए सहस्रों सत्यार्थप्रकाश चाहियें। इस समय आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश का मूल्य ५०० रुपये सैकड़ा है। यदि १०० १०० रुपये देने वाले १०० दानी मिल जायें तो दो सहस्र सत्यार्थप्रकाश क्रय करके गढवाल प्रदेश में वितरित कराये जा सकते हैं। सत्यार्थप्रकाश के वितरण से उस क्षेत्र के निवासियों को आर्यसमाज की विचार धारा का तो परिचय मिलेगा ही —साथ ही उस क्षेत्र में फैली भयकर छुआछूत के निराकरण तथा ईसाईयत की बाढ़ को रोकने में भी सहायता मिलेगी। आर्य जन ध्यान देकर तुरन्त सहायता प्रदान करें। 'वैदिक संस्थान नजीबाबाद' के नाम से चैक या ड्राफ्ट द्वारा धन भेजने की सुविधा है। मनीआर्डर मन्त्री वैदिक संस्थान डाकखाना नजीबाबाद (उ० प्र०) के पत्ते पर भेजें।

वेदमुनि परिव्राजक
वैदिक संस्थान नजीबाबाद
जिला बिजनौर (उ० प्र०)

शहीद फण्ड में दान-दाताओं की सूची

आर्यसमाज जीन्द जक्शन	५०१)
,, ,, शहर	१०१)
,, पलडा जिला रोहतक	१०१)
श्री रामसिंह ग्राम खुंगाई जि० रोहतक	१००)
मन्त्री आर्यसमाज फतेहपुर जि० अम्बाला	१०१)
मन्त्री ,, फूंसगढ ,, ,,	१५०)
श्रीमती ईश्वरीदेवी यमुनानगर जिला अम्बाला	१०१)
प्रधान आर्यसमाज ,, ,, ,,	१०१)
श्री ला० हरिराम ,, ,, ,,	१००)
श्री अशोक कुमार ,, ,, ,,	२०)
श्री ओमप्रकाश ,, ,, ,,	१०)
स्त्री आर्यसमाज यमुनानगर	५१)
मन्त्री ,, दामला ,,	१०१)
,, ,, नारायणगढ ,,	१०१)
श्री मोहनलाल उपकारक ट्रस्ट नारायणगढ (अम्बाला)	५२)
मा० चमनलाल आर्य नारायणगढ ,,	१०)
देशबन्धु विश्वबन्धु ,, ,,	१०)
लाला सुन्दरलाल ,, ,,	५)
श्री बेणीप्रसाद आर्य ,, ,,	१०)
अध्यापक वर्ग आर्य कन्या विद्यालय कालका ,,	३१)
मन्त्री आर्यसमाज कालका ,,	२०१)
,, ,, कच्चा बाजार अम्बाला छावनी	५१)
,, ,, कबाड़ी बाजार अम्बाला छावनी	१०१)
,, ,, लालकुर्ती बाजार ,, ,,	५१)
,, ,, रजमेंट बाजार ,, ,,	५१)
आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल रजमेंट बाजार अम्बाला छावनी	६१)
मन्त्री आर्यसमाज आर्य गर्ल्ज कालेज ,, ,,	१०१
,, ,, शाहबाद मारकण्डा जि० कुरुक्षेत्र	१०१)
श्री रामनारायण ढींगड़ा मन्त्री आर्यसमाज टोहना (हिसार)	५१)
श्रीमती कुन्दनदेवी धर्मपत्नी वा० बृजमुनि कुन्दरा	१००)
प्रधान आर्यसमाज झज्जर रोड़ रोहतक	३००)
श्री भगवानदास प्रधान आर्यसमाज पिम्परी पूना-७	१००)
मन्त्री आर्यसमाज सोनीपत नगर	४५०)
मेघराज आर्य कथूरिया सोनीपत नगर	५१)
मन्त्री आर्यसमाज पलवल नगर जि० फरीदाबाद	१००)
,, ,, गन्नौर शहर	१००)
,, ,, आदमपुर जिला हिसार	५०)
आर्य उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिरसा	५००)
आर्यसमाज नई कालोनी गुड़गांव	५०१,
इस सप्ताह का योग	४६०५)
गत सप्ताह का योग	४३०५)
सर्वयोग	८९१०

कन्हैयालाल महत्ता
सभा कोषाध्यक्ष

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस,
रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49

सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री | सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३७ | २८ अगस्त १९८४ | वार्षिक शुल्क १५) | विदेश में ५ पौंड | एक प्रति ३० पैसे

गुरुकुल झज्जर में मुख्यमन्त्री का आगमन बलिदान भवन का शिलान्यास

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित आर्ष शिक्षा के प्रधान केन्द्र गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक में २६ अगस्त रविवार को दोपहर बाद हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल एक समारोह में पधारे। इस अवसर पर वर्षा होने के बावजूद भी निकट के ग्रामों से हजारों की संख्या में नरनारी उपस्थित हुए।

मुख्यमन्त्री महोदय ने गुरुकुल में हरयाणा पुरातत्व संग्रहालय गुरुकुल फार्मेसी तथा गोशाला का निरीक्षण किया तथा भारत को स्वतन्त्र कराने तथा स्वतन्त्रता की रक्षा करने वाले वीर बलिदानियों की स्मृति में बनाये जा रहे "बलिदान स्मारक भवन" की आधार शिला रखी।

समारोह की अध्यक्षता महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति श्री चौ० हरद्वारी लाल ने की। समारोह में पं० मुन्शीलाल जी, पं० ईश्वरसिंह तूफान सभा की भजन मण्डलियों के अतिरिक्त श्री रामरक्ष जी महाशय प्यारेलाल जी तथा श्री हरध्यानसिंह जी आदि के प्रभावशाली भजन हुए तथा कन्या गुरुकुल नरेला की छात्राओं ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। श्री राममेहर एडवोकेट ने मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल तथा कुलपति चौ० हरद्वारीलाल के गुरुकुल आगमन पर स्वागत करते हुए कहा कि स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (पूर्व आचार्य भगवान्देव) ने गुरुकुल झज्जर को सम्भालते हुए दृढ संकल्प किया था कि "महर्षि दयानन्द जी के स्वप्न को साकार करने के लिए आर्ष पाठ विधि को पुनर्जीवित किया जायेगा।" आपने इस उद्देश्य के लिए ४२ वर्ष की कठोर तपस्या की है और गुरुकुल शिक्षा की स्थाई मान्यता न मिलने पर अनेक बार संकटों से गुजरकर भी अपने मार्ग पर अडिग रहे। आज संस्कृत का सूर्य उदय हो गया है। महर्षि दयानन्द विश्व-विद्यालय द्वारा आर्ष पाठविधि को स्थायी मान्यता देकर गुरुकुलों के भविष्य को उज्ज्वल बना दिया है।

डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने संस्कृत भाषा में मुख्य मन्त्री महोदय को अभिनन्दन पत्र भेंट करते हुए संस्कृत भाषा की शिक्षा को प्रोत्सा-हित करने तथा हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का को हरयाणा में सम्मिलित करने की मांग की।

स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने गुरुकुल भूमि में मुख्यमन्त्री के आगमन का स्वागत करते हुए कहा कि आज बढ़ते हुए भ्रष्टाचार को रोकने के लिए गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अपनाना होगा। स्कूल कालेजों में पढ़ने वाले छात्र तथा छात्राएं पश्चिमी सभ्यता की ओर भाग रहे हैं। इस प्रकार वैदिक संस्कृति समाप्त होने का खतरा है। हमने हरयाणा का निर्माण इसी भावना से किया था कि ऋषि मुनियों की पावन भूमि है। यहां ही वैदिक सभ्यता सुरक्षित रह सकती है। अतः हरयाणा सरकार को देवभाषा संस्कृत प्रसार के लिए तथा गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को अधिक से अधिक अनुदान देना चाहिए। आपने कहा कि हरयाणा के उच्चपदों पर हरयाणा के ही निवासियों को नियुक्त करना चाहिए ताकि वे हरयाणा की पुरानी परम्पराओं को जीवित कर सकें। हरयाणा से बाहर के अधिकारी हरयाणावासियों की उपेक्षा करते हैं। राज्य सभा के सदस्य श्री सुलतानसिंह ने स्वामी ओमानन्द जी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करते हुए स्वामी जी को आर्यजगत् का ही नहीं अपितु संसार भर में श्रेष्ठ महापुरुष बताया। आपने कहा कि मैं बचपन से ही स्वामी जी के सम्पर्क में रहा हूं। मैंने इन जैसा त्यागी तपस्वी, वैदिक विद्वान् तथा आदर्श सुधारक नहीं देखा।

चौ० हरद्वारीलाल जी ने अपने भाषण में गुरुकुलों के स्नातकों की सराहना करते हुए कहा कि कालेजों में संस्कृत पढ़े एम० ए० पास छात्र गुरुकुलों में प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ने वालों का मुकाबला नहीं कर सकते। यह स्वामी ओमानन्द महाराज की घोर तपस्या तथा संस्कृत के प्रति उनकी श्रद्धा का ही फल है। इससे प्रभावित होकर ही मैंने आर्ष पाठ विधि को मान्यता दी है।

मुख्य मन्त्री चौ० भजनलाल ने गुरुकुल शिक्षा तथा आर्यसमाज के कार्यों का उल्लेख करते हुए कहा कि आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं ने स्वाधीनता संग्राम में सबसे अधिक बलिदान किये हैं और अब भी आर्य समाज ही राष्ट्र की रक्षा कर सकता है। आपने गुरुकुल के कार्यों के लिए हरयाणा सरकार की ओर से ५ लाख रुपये अनुदान देने की घोषणा की। समारोह के अन्त में गुरुकुल के कुलपति प्रो० शेरसिंह ने मुख्य मन्त्री का धन्यवाद करते हुए कहा कि गोशाला को भी अनुदान देकर गौ रक्षा करें तथा हरयाणा में शराब पर विशेषकर बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके को तुरन्त बन्द किया जाये। उन्होंने स्वामी ओमानन्द जी द्वारा लिखित ऐतिहासिक ग्रन्थ भी मुख्य मन्त्री को भेंट किये।

फरीदाबाद में आर्य कार्यकर्त्ताओं की बैठक

आर्यसमाज मन्दिर नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद में २६ अगस्त को प्रातः १० बजे आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने जिला फरीदाबाद के आर्य कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित करते हुए आह्वान किया कि आज राष्ट्र की सुरक्षा को खतरा है। उग्रवादी तथा राष्ट्र द्रोही तत्व भारत की एकता को नष्ट करने के लिए पृथक् खालिस्तान, कोहिस्तान तथा मुस्लिमस्तान की मांग कर रहे हैं तथा विदेशी शक्तियों का सहारा ले रहे हैं। आपने उन सरकारी अधिकारियों की निन्दा करते हुए कहा कि जो वेतन भारत सरकार से लेकर राष्ट्र द्रोहियों की सहायता करते हुए विमान अपहरण, नहरों के काटने तथा राष्ट्रीय सम्पत्तियों को नष्ट करने में सहयोग करते हैं।

पंजाब की सैनिक कार्यवाही में बलिदान देकर राष्ट्र द्रोहियों के किलों गुरुद्वारों से उनका सफाया करने वाले शहीद सैनिक परिवारों के बच्चों को अपनाते हुए उन्हें आर्यसमाज की शिक्षण संस्थाओं में निःशुल्क शिक्षा देने का कार्यक्रम सभा की ओर से बनाया गया है।

सम्पादकीयः-

सभा का वेदप्रचार विभाग

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का मुख्य उद्देश्य सभा के विधान के अनुसार इस सभा के सीमा क्षेत्र में तथा आवश्यकतानुसार अन्य प्रदेशों से मांग आने पर वैदिक धर्म प्रचार की व्यवस्था करना तथा वैदिक धर्म प्रचार व प्रसार हेतु साहित्य का निर्माण करना है।

सभा के गठन से ही सभा इस महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए प्रयत्नशील रही है। वेदप्रचार विभाग में योग्य उपदेशक जो कि उपदेशक विद्यालय तथा गुरुकुलों के स्नातक हैं और प्रभावशाली भजन मण्डलियां जो कि ग्रामों तथा नगरों में पूरा समय देकर प्रचार कार्य में सलग्न है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विभाजन के फलस्वरूप सांझे कोष से जो ३५ % धन हरयाणा सभा को मिलना निश्चित हुआ था, वह पंजाब सभा से एक नया पैसा भी हरयाणा सभा को बार बार मांगने पर भी प्राप्त नहीं हो सका। इस कारण सभा को आरम्भ से ही आर्थिक सकट का सामना रहा है। तथापि हरयाणा के आर्यसमाजों के सहयोग से सभा ने अपने मुख्य कार्य वेदप्रचार के कार्य में ढील नहीं आने दी। अपने उपदेशकों, भजनोपदेशकों तथा कार्यालय कर्मचारियों की कठिनताओं को दृष्टि में रखते हुए सभा की अन्तरंग सभा ने वर्तमान महंगाई के अनुसार नये वेतनमान बनाये है।

प्रतिवर्ष श्रावण मास में वेदप्रचार सप्ताह सारे आर्य जगत् में मनाया जाता है। अत. हरयाणा सभा की ओर से गत वर्षों की भांति प्रदेश के आर्यसमाजों में वेदप्रचार सप्ताह पर निम्नलिखित स्थानों पर प्रचार की व्यवस्था की।

१—आर्यसमाज महेन्द्रगढ में ४, ५ अगस्त को स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती आदि विद्वानों के प्रवचन तथा पं० सुमेरसिंह की भजन मण्डली के भजन हुए।

२—गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक में श्रावणी पर्व पर १०, ११ अगस्त को अन्य विद्वानों के प्रवचनों के अतिरिक्त प० हरिश्चन्द्र की भजनमण्डली के प्रभावशाली भजन हुए।

३—आर्यसमाज खेड़ीजट जिला रोहतक में ११ तथा १२ अगस्त को पं० हरिश्चन्द्र की भजन मण्डली के भजनों द्वारा वेदप्रचार किया गया।

४—आचार्यकुल लोवाकलां जिला रोहतक में श्रावणी पर्व पर पं० मुन्शीलाल की मण्डली के भजन हुए।

५—आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द मे ११ से २० अगस्त तक स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी के वेदप्रवचन तथा प० तेजपाल की मण्डली के वेदप्रचारार्थ संगीत हुए।

६—आर्यसमाज सोनीपत शहर में १३ से २० अगस्त तक पंडित ब्रह्मप्रकाश शास्त्री तथा पं० महेन्द्रसिंह शास्त्री सभा उपदेशक के प्रवचन एवं पं० हरिश्चन्द्र की मण्डली के भजन हुए।

७—आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द में ११ से १६ अगस्त तक पं० समरसिंह वेदालंकार के वेदप्रवचन तथा पंडित ईश्वरसिंह तूफान की मण्डली के भजन हुए।

८—आर्यसमाज सालवन जिला करनाल में १४ से २० अगस्त तक शास्त्रार्थ महारथी पं० शान्तिप्रकाश जी के वेद प्रवचन तथा पंडित चिरन्जीलाल के भजन हुए।

९—आर्यसमाज श्रद्धानन्द नगर पलवल जिला फरीदाबाद में २० से २६ अगस्त तक स्वामी जीवनानन्द जी के वेद प्रवचन हुए।

१०—आर्यसमाज चरखी दादरी जिला भिवानी में १८ से २० अगस्त तक श्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा के उपदेशक प० सुरेशकुमार शास्त्री विद्या वाचस्पति के वेदप्रवचन एवं प० मुन्शी लाल तथा प० तेजपाल की मण्डली के भजन हुए।

११- आर्यसमाज जीन्द शहर मे २१ से २४ अगस्त तक वेदसप्ताह पर प० तेजपाल की मण्डली के भजन हुए।

१२—आर्यसमाज सरस्वती विहार दिल्ली में १५ से २१ अगस्त तक सभा की भजन मण्डली प० सुमेरसिंह के भजन हुए।

इस प्रकार सभा अपने सीमित साधनों से प्रदेश के आर्यसमाजों की मांग के अनुसार वेदप्रचार की व्यवस्था कर रही है।

सभा की ओर से इसवर्ष वैदिक साहित्य द्वारा वेदप्रचार हेतु 'धर्म प्रवेशिका' आर्य स्कूलों में धर्म शिक्षा के पाठ्यक्रम के लिए तथा 'वैदिक उपासना पद्धति' आर्यसमाजों में सत्संगों की विधि पर पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

इस प्रकार सभा वेद प्रचार के कार्य को सुचारु रूप से चलाने मे प्रयत्नशील हैं। वेद प्रचार विभाग को और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए और अधिक उपदेशकों तथा भजनमण्डलियों की सेवायें प्राप्त करने के लिए पत्र व्यवहार किया जा रहा है। अतः आर्यसमाजों से निवेदन है कि उत्सवों तथा प्रचार के अवसरों पर सभा को वेदप्रचारार्थ उदारता पूर्वक सहयोग करें।

पानीपत तथा करनाल में समारोह

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत को स्थापित हुए १०० वर्ष हो गये हैं। अतः ६ से १४ अक्तूबर तक आर्य कालेज पानीपत के प्रांगण में स्थापना शताब्दी समारोह बड़ी धूमधाम से मनाने की तैयारी हो रही है। ६ अक्तूबर को महायज्ञ प्रारम्भ हो जायेगा जिसमें आर्य जगत् के विद्वान् भाग ले रहे हैं। १२ अक्तूबर को नगर में विशाल नगर कीर्तन निकाला जायेगा और १३, १४ अक्तूबर को कई महत्त्वपूर्ण सम्मेलनों का आयोजन किया गया है। वैदिक विद्वानों का सम्मान, पुरोहित कक्षायें आरम्भ करना, आर्यसमाज पानीपत के इतिहास तथा स्मारिका का प्रकाशन, संस्कृत पाठशाला की स्थापना आदि योजना बनाई गई हैं। आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि इस समारोह में अधिक से अधिक सख्या में पहुँच कर आर्यसमाज के संगठन का परिचय देवें और अपने पहुंचने की सूचना मन्त्री स्वागत समारोह आर्य कालेज पानीपत के पते पर शीघ्र भेज देवें ताकि आपके निवास तथा भोजन की व्यवस्था सुचारु रूप से की जा सके।

इसी मास ५-६-७ अक्तूबर को आर्य प्रादेशिक उपसभा हरयाणा की ओर से डी० ए० वी० महिला महाविद्यालय करनाल में महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह भी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर महिला सम्मेलन, शास्त्रार्थ सम्मेलन तथा राष्ट्र एकता सम्मेलन आदि आयोजित किये गये हैं। ६ अक्तूबर को शोभा यात्रा निकाली जायेगी। हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि महर्षि दयानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु इन समारोह में भारी संख्या में सम्मिलित होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

वैदिक उपासना विधि का प्रकाशन

आर्यसमाजों के सत्संग में एक रूपता लाने के लिए सभा की ओर से वैदिक उपासना पद्धति पुस्तक प्रकाशित की गई है। इसका सम्पादन सभा उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने किया है। संन्ध्या, हवन, यज्ञ अर्थ सहित तथा सत्संग में गाये जाने वाले उपयोगी भजनों का संग्रह किया है। इसका मूल्य ३-५० रुपये है। अधिक लेने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

साहित्य समीक्षा

लेखक–यशपाल आर्यबन्धु, आर्यनिवास, चन्द्रनगर, मुरादाबाद

आग के अक्षर—रचियता-प्रो० सारस्वत मोहन मनीषी, प्रकाशक किताबघर, गांधीनगर, दिल्ली ११००३२ मूल्य—बाईस रुपये

आधा कफन—रचियता—प्रो सारस्वत मोहन मनीषी, प्रकाशक—आर्य प्रकाशन मण्डल जगतनिवास, निकट महावीर चौक, गांधीनगर, दिल्ली ११००३२, मूल्य २५ रुपये

लेखन और प्रस्तुति दोनों में समान रूप से दक्ष, युवा पीढ़ी के प्रतिनिधि श्री सारस्वत मोहन 'मनीषी' काव्य जगत् के सुपरिचित आर्य कवि हैं। गत कई वर्षों से वे आर्य पत्र पत्रिकाओं एवं काव्य मंचों पर छाये हुए है। उनका काव्य क्या है? दहकते अंगारे हैं। सिद्धान्त का हनन करने वाली मिथ्या काल्पनिक उड़ाने भरने वाले कवियों के विपरित श्री मनीषी की कल्पना, कल्पना होते हुए भी सिद्धान्त को सर्वथा अक्षुण्ण रखने में पूर्ण सफल रही है। यह उनके काव्य की अपनी विशेषता है। चिन्तन और मनन का उनके संवेदनशील हृदय पर जो प्रभाव पड़ा है, वही कविता बनकर फूट पड़ा है। उनके काव्य में क्रान्ति का एक अनूठा आह्वान है, एक दर्द है, पीड़ा है, अपितु यूं कहिये कि प्रखर विद्रोह है अनीति और अनाचार के विरुद्ध। आकर्षक साज-सज्जा तथा उत्तम कागज पर सुन्दर छपाई से युक्त 'आग के अक्षर' और 'आधा कफन' श्री मनीषी की दो कृतियां हैं। दोनों ही काव्य संग्रहों की भूमिकायें आर्यजगत् के दो मूर्धन्य विद्वानों ने लिखी हैं। आधा कफन की भूमिका विद्वद्वर प० क्षितीश जी वेदालंकार, सम्पादक आर्यजगत् नई दिल्ली तथा आग के अक्षर की भूमिका महाकवि पंडित क्षेमचन्द 'सुमन' ने लिखी है। भूमिका क्या है? काव्य का कसौटी है। काव्य मूर्ति महादेवी वर्मा के अनुसार—'गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति कहकर विद्वानों ने गद्य को कविता की कसौटी मान लिया है और कसौटी तो किसी मूल्यवान धातु के खरे-खोटेपन की जांच के लिए होने के कारण धातु से अधिक महत्त्व की होती है।' फिर भी कसौटी चाहे कितनी ही मूल्यवान क्यों न हो, आकर्षण तो सदैव आभूषणों का ही होता है और लोग प्राय: उसे ही खरीदते हैं। पर जहां कसौटी और आभूषण दोनों ही एक ही स्थान पर उपलब्ध हों तो फिर उसके क्या कहने? कसौटी कार श्री पं० क्षेमचन्द्र सुमन जी कि कविगुरु हैं, सारस्वत मोहन मनीषी के लिए लिखते हैं कि–'कवि मनीषी ने वास्तव में कवि मनीषी परिभू: स्वयंम्' की आर्ष वाणी को चरितार्थ करते हुए अपनी इन रचनाओं से देश की जनता को जो सन्देश देने का क्रान्तिकारी कार्य किया है वह सर्वथा अभिनन्दनीय है। कवि के अन्तर्मन में देश की दुरावस्था और उसमें प्रचलित अनेक कुरीतियों, कदाचारों तथा विभीषिकाओं के प्रति जो सात्विक आक्रोष है उसी ने उसे ऐसी क्रान्तिकारी रचनायें लिखने को विवश किया है।

आग के अक्षर—नाम के अनुरूप ही मनीषी जी की साठ जलती कविताओं के इस अनूठे सग्रह का एक एक अक्षर वस्तुत: आग उगल रहा है। सोचता हूं कि अब इन क्षिप्त अंगारों में इतनी आग है तो उस भठ्ठी का क्या हाल होगा जिससे ये प्रसूत हैं। इस पर भी कवि की अहंकारशून्यता एवं नम्रता का यह आलम है कि स्वयं को कवि तक मानने में भी उसे सकोच है जैसाकि आत्मकथन में अपने लिए कवित लिखता है—'वे कोई और होगे जो कवि होने का दावा करते हैं……' किन्तु मनीषी भले ही यह दावा करें न करें, हम तो सगर्व दावा करते हैं–एक महान् कवि होने का (अपने लिए नहीं कविवर मनीषी के लिए) समालोच्य संग्रह की अधिकांश कवितायें गीत विद्या की अनुपम एवं मनोहारी छटा लिए हुए हैं और कुछ कवितायें तीखे किन्तु शिष्ट एवं स्वस्थ व्यंग का सुन्दरतम उदाहरण हैं। 'हाथ पकड़ तदबीर का' 'आसान न होने देंगे', 'इन्कलाब जिन्दाबाद', 'वतन तुम्हारा है', 'तब ही आजादी आई थी,' 'अब यह देश कहां जायेगा?' आदि कतिपय कवितायें तो धधकते अंगारे ही हैं। सुमन जी के अनुसार आज के इस भीषण सांस्कृतिक अन्धकार में कवि की ये रचनायें निश्चय ही देश की नई पीढी को एक अमर आलोक प्रदान करेगी।

आधा कफन—कविवर मनीषी की ६३ ओजस्वी कविताओं के इस सुन्दर संग्रह का नाम इसी शीर्षक की एक कविता पर रखा गया है जो महर्षि के जीवन की एक हृदय विदारक घटना पर आधारित है। सुमित्रा नन्दन पन्त का यथार्थ कथन है कि 'वियोगी होगा पहला कवि, आह से उपजा होगा गान। उमड़ कर आंखों से चुपचाप, बहीं होगी कविता अनजान।' कविता आधा कफन भी आह से उपजा गान है। कवि स्वय इस तथ्य को निम्न शब्दों में स्वीकारता है–कफन और वह भी आधा, कितना हृदय विदारक रहा होगा वह दृश्य, जिसने महर्षि को अठारह अठारह घण्टे के समाधि सुख को भी छोड़ने के लिए विवश कर दिया? कुछ लोग इस शीर्षक पर आपत्ति कर सकते हैं पर मुझे इस संकलन की सबसे प्यारी कविता 'आधा कफन' ही लगती है। कवि मित्र प्रो० सत्यपाल बेदार ने तो आर्यसमाज सीताराम बाजार के काव सम्मेलन के अवसर पर कहा था कि यह रचना समाधि के क्षणों की प्रसूति है। समाधि की बात मैं क्या जानूं। हां! इतना अवश्य याद है कि ऋषि का जीवन चरित्र पढते पढ़ते एक बार रोने लगा था। पता नहीं कब रोते रोते लिखने बैठ गया और जब रुदन रुका तो कविता कह रही थी अपनी मानस कन्या का नामकरण सस्कार नहीं करोगे? मैं उसके पूरे शरीर को सहला सहला कर लिख गया–'आधा कफन'। ऋषि उस दृश्य को देखकर फूट फूट कर रोये थे। पहले मैं रोया, आज श्रोता कविता को सुनकर रोते हैं। सुनकर ही नहीं, इन पंक्तियों का लेखक तो पढकर ही अपने रुदन को न रोक सका था। मार्मिकता और प्रभावोत्पादिकता इनकी कविताओं की अपनी विशेषता है। किसी व्यक्ति को लोक में तब तक कवि की मान्यता प्राप्त नहीं होती जब तक कि वह तत्वदर्शन के साथ साथ उसके वर्णन करने में भी निपुण न हो। वस्तुतः नवीन उन्मेषों से सुशोभित प्रज्ञा की प्रतिभा है। इस प्रतिभा की अनुप्राणता से सजीव वर्णनों में जो निपुण हो, वही कवि है और कविवर मनीषी इसमें पूर्ण निपुण हैं—ऐसा लिखने में हमें कोई संकोच नहीं। इनका काव्य क्या है? भावों का संगीत और आवेगों की भाषा है। मर्मस्पर्शिता इनके काव्य का अपना अनूठा चिरन्तन सौन्दर्य है। काव्य का स्वरूप–भाव, भाषा और अभिव्यक्ति की आकुलता, इन तीन रंगों में खिलता है। अभिव्यक्ति सामान्य रूप से वाणी का व्यापार है। इस सामान्य व्यापार को विशेष बनाकर सौन्दर्यमय करना कवि–कर्म है और इस कर्म में कविवर मनीषी पूर्ण सफल हुए हैं। अतः बधाई के पात्र हैं। प्रस्तुत सग्रह में कवि ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द के गौरव को उजागर करने का सफल प्रयास किया है। संकलन की एक एक कविता मनीषी की ऋषि भक्ति को मुखरित कर रही है। 'मां की कोख नहीं बटती' वस्तुतः समय की पुकार है। 'तैरना सीख लो' 'उठो दयानन्द के सिपाहियो', क्यों डर गये? 'जवानी कैसी होती है' आदि कतिपय ऐसी कवितायें हैं कि जिन्हें बार बार पढ़ने को मन करता है। भाव, भाषा और अभिव्यक्ति तीनों निखरी हुई हैं। हमारा विश्वास है कि महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज को समझने के लिए इन पुस्तकों का आलोडन आवश्यक है।

दोनों ही पुस्तकें आर्य गृहों की शोभा, पुस्तकालयों की अमूल्य निधि तथा काव्य प्रेमियों के लिए आवश्यक संग्रहणीय वस्तु है। आशा व विश्वास है कि आर्यजगत् में ही नहीं सर्वत्र इनका यथेष्ट स्वागत होगा। लेखक और प्रकाशक दोनों ही बधाई के पात्र हैं।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा चढती कला में

जब से प्रो० शेरसिंह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान चुने गए हैं। उन्होंने सभा को लोकप्रिय बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अकालियों का मुकाबला करने के लिए आपने रक्षा वाहिनी का गठन किया और जगह जगह इसका शाखाएं खोली। इसके इलावा हरयाणा में बिजली, पानी के लिए आपने लड़ाई लड़ी। हरयाणा में चण्डीगढ या अबोहर फाजिल्का को शामिल करने के लिए प्रधान मन्त्री को कई पत्र लिखे। इसी दौरान में प्रो० साहब के दिल में हरयाणा के प्रति जो शुभ कामनाएं व सद्भावनाएं हैं, हरयाणा वासियों ने भी उसका सही उत्तर दिया और जब भी आपने हड़ताल के लिए आह्वान किया हरयाणावासियों ने आपकी इच्छानुसार उस पर अमल किया। आपके दिल मे हरयाणावासियो के लिए बहुत जगह है। इसलिये हरयाणा के सिपाही जो सेना में थे और पंजाब में शहीद हो गए उनके परिवारों को हर प्रकार को सहायता देने के लिए शहीदी फण्ड जारी किया है। और आशा है कि यह फण्ड पूरी तरह से चलेगा और फौजियों के बच्चों को सहायता देगा। इसके इलावा जगह जगह जलसे व बैठकें करके आपने हरयाणावासियो का मनोबल भी ऊंचा किया और बहुत से लोगों से कार्य कराया। मेरा विचार है कि आर्य प्रतिनिधि सभा को इससे बढिया प्रधान कभी नहीं मिल सकता क्योंकि आपके पीछे आर्य समाज ही नहीं है बल्कि हरयाणा की जनता दिल से आपको प्यार करती है।

जयदेव गोयल
पत्रकार जीन्द

एक वास्तविकता

पिछले सप्ताह यहां न्यू कालोनी गुड़गांव आर्यसमाज में एक स्वतन्त्र सन्यासी व भजनमण्डली प्रचारार्थ आई हुई थी। हाजरी तो थोड़ी हुई पर स्वामी जी ने शहर की कन्या पाठशालाओं तथा समाजों में प्रवचनों द्वारा राशि एकत्र करके ये दौड़ धूप भी की। अपने विषय में कि उनके पास न तो कुर्ता है न धोती की अपील से धन बटोरने का प्रयास भी किया। यद्यपि उनकी वाणी कटु तथा तेज थी अपने बारे में अच्छा प्रभाव ना सके। जैकमपुर के कन्या पाठशाला के लिए प्रवन्धक जी से अनुमति प्राप्त कर तो गये परन्तु भजन वाले को अपने पहुँच जाने के पश्चात् आ जाने का आदेश देकर अपने लिए २१ रुपये की फीस प्राप्त की और साथी को राशि दिलवा दी। जब न्यू कालोनी वालों ने दक्षिणा पेश की तो थोड़ी रकम होने की वजह से अधिक राशि के ईशारा किया तब प्रधान जी ने ५ रुपये और बढा दिलवाये तो नोट ही फाड़कर टुकड़े कर डाला। गुस्सा खाते लड़ते बोलते चले गये। यह घटना शोचनीय है। ऐसे बोलने वालों का क्या प्रभाव पड़ सकता है तथा क्या लाभ? इसके इलावा वह ऐसे बेसूझ वाले थे कि महर्षि दयानन्द जी की भी निन्दा करते थे।

आर्यसमाजों के लिए बड़े शोक का विषय है जो ऐसे गैर जिम्मेदार कटु स्वभाव तथा न समझ वालों से वेदप्रचार कराते हैं तथा इस तरह वेद प्रचार को बदनाम कराके अयोग्य व्यक्तियों से सेवा लेते हैं इसका प्रभाव आर्य जनता पर बुरा पड़ता है। इसलिए उचित है कि वेदप्रचार का माध्यम आर्य प्रतिनिधि सभा को देकर इस शुभ कार्य में जन सेवा करें तथा सभा की से भी सिक्का बन्द तथा योग्य महानुभाव आर्यसमाज की सेवा में सुलभ हों। अन्यथा यह धर्म कार्य बदनाम हो जायेगा तथा जिसका जो चाहे गलत जानकारी से अपना स्वार्थ सिद्ध करने वालों की घटी हों तथा धर्म की ग्लानि न होने पाये। अब तो वेद प्रचार भी एक व्यापार का हेतु बनता जा रहा है एवं इस महान् संस्था की उपयोग्यता को दाग लग रहा है।

भीमसेन दीवान

शराब के ठेके पर वेदप्रचार



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब के ठेके को उठवाने के लिए १४ अप्रल से धरना जारी है। प्रस्तुत चित्र में ठेके के सामने सभा की भजन मण्डली कुंवर तेजपाल के वेदप्रचार द्वारा शराब का खण्डन किया जा रहा है उनके पीछे आर्यसमाज के नवयुवक तथा सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी खड़े हैं।

ईश्वर ही एक सहारा

यहां कौन किसी का प्यारा रे,
सब मतलब का व्यवहारा ॥ ध्रुव ॥
माता पिता थे प्यारे।
वे तो परलोक सिधारे।
यह सुना हुआ संसार रे, सब० ॥२॥
गुरुओं ने खूब पढ़ाया।
विद्या दे मान बढाया।
अब उनसे किया किनारा रे, सब० ॥३॥
भाई बहिना अरु यारे।
चाचा ताया ये सारे।
है सुख-दुःख सबका न्यारे रे, सब० ॥४॥
जाया के लाड़ लड़ाए।
बेटे थे खूब खिलाए।
अब सबसे हो गया खारा रे, सब० ॥५॥
शिष्य थे कितने पढ़ाए।
पढ़-लिखकर घर को धाए।
निन्दा का मिला उपहारा रे, सब० ॥५॥
'आचार्य' दुनियां फानी।
कहती है वेद की वाणी।
ईश्वर ही एक सहारा रे, सब० ॥६॥

सुदर्शनदेव आचार्य

भूल सुधार

सर्वहितकारी दिनांक १४ अगस्त के विशेषांक वैदिक उपासना पद्धति में डा० सुदर्शनदेव आचार्य का परिचय देते समय शीर्षक "सम्पादक का परिचय" भूल से लिखा गया। अतः पाठकों की जानकारी के लिए सूचना है कि सर्वहितकारी के सम्पादक पूर्ववत् डा० रणजीतसिंह तथा वेदव्रत शास्त्री ही हैं।

व्यवस्थापक सर्वहितकारी

समालोचना

आर्यसमाज का इतिहास—द्वितीय भाग (आर्यसमाज का प्रचार प्रसार सन् १८८३ से सन् १९४७ तक) लेखक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार तथा प्रो० हरिदत्त वेदालंकार, प्रकाशक आर्य स्वाध्याय केन्द्र ए/३२, सफदरजंग, एन्क्लेव, नई दिल्ली—२९ पृष्ठ संख्या ७६८ मूल्य १००)

आलोच्य ग्रन्थ सात सात सौ बड़े आकार के पृष्ठों के सात भागों में प्रकाशित किये जाने वाले आर्यसमाज के बृहद् इतिहास का द्वितीय भाग है, इससे पहले इसका प्रथम तथा तृतीय भाग प्रकाशित हो चुका है। इस भाग में आर्यसमाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द के निर्वाण (१८८३) से स्वतन्त्रता प्राप्ति तक के सात दशकों में भारत के विभिन्न प्रान्तों, प्रदेशों तथा देशी रियासतों में एवं विदेशों में स्थापित होने वाले आर्यसमाजों के कार्यकलापों तथा गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है।

इस पुस्तक में तीस अध्याय और तीन परिशिष्ट हैं। पहला अध्याय विषय प्रवेश के रूप में है। इसमें पिछली एक शताब्दी में आर्य समाज के प्रसार की तुलना बौद्ध, ईसाई तथा मुस्लिम धर्मों से करते हुए यह बताया गया है कि ये किन साधनों और परिस्थितियों में कई शताब्दियों में किस प्रकार विश्व धर्म बने हैं और उन्होंने अपने विशाल धार्मिक साम्राज्य स्थापित किये हैं। आर्यसमाज इन धर्मों की तुलना में शिशुमात्र हैं, फिर भी इस विषय में उसकी सम्भावनाओं पर इसमें अतीव विचारोत्तेजक व रोचक प्रकाश डाला गया है।

आर्यसमाज का प्रचार और विस्तार सर्वप्रथम पंजाब में हुआ। अतः दूसरे से छठे अध्याय तक इस प्रदेश में आर्यसमाजों के विकास एवं कार्यकलापों का विवेचन किया गया है, गुरुकुल पार्टी तथा कालिज पार्टी के विवादों का सर्वथा निष्पक्ष रीति से निरूपण किया गया है, आर्यसमाज के सुदृढ़ दुर्ग हरयाणा में आर्यसमाज के विस्तार का प्रतिपादन किया गया है और कुछ आर्यसमाजों का विस्तृत परिचय दिया गया है। सातवें आठवें अध्यायों में उत्तरप्रदेश के, नवें दसवें अध्यायों में बिहार के, ग्यारहवें अध्याय में बंगाल के, बारहवें से चौदहवें अध्याय में मध्य प्रदेश और मध्य भारत की आर्यसमाजों तथा इनके केन्द्रीय संगठनों व आर्य प्रतिनिधि सभाओं का वर्णन है। १५ वें से १८ वें अध्याय तक राजस्थान, बम्बई, सिन्ध, दक्षिणी भारत तथा उड़ीसा में आर्यसमाज के प्रचार का प्रामाणिक परिचय दिया गया है।

उन्नीसवें अध्याय में आर्यसमाज के सार्वभौम सर्वोच्च संगठन सार्वदेशिक सभा की स्थापना, प्रगति और कार्यकलापों का उल्लेख किया गया है। बीसवें अध्याय में १९२४ में मथुरा में आयोजित महर्षि दयानन्द जन्म शताब्दी महोत्सव का विवरण प्रस्तुत करते हुए उसकी उपलब्धियों का विस्तृत विवेचन किया गया है। इक्कीसवें अध्याय में आर्यसमाज के शुद्धि एवं हिन्दू संगठन के आन्दोलनों का परिचय दिया गया है। बाईसवें अध्याय में हैदराबाद राज्य में धार्मिक स्वतन्त्रता के अधिकारों की प्राप्ति के लिए निजामशाही के साथ किये गये आर्य समाज के उग्र एवं सफल संघर्ष का बड़ा सजीव एवं मार्मिक विवरण प्रस्तुत किया गया है। तेईसवें अध्याय में विभाजन से पहले सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थप्रकाश पर लगाई गई पाबन्दी और उसके निराकरण के लिए किये गये सफल आन्दोलन का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

चौबीसवें से तीसवें अध्याय तक भारत से बाहर विभिन्न देशों मारीशस, फीजी, दक्षिणी अफ्रीका, पूर्वी अफ्रीका, अमेरिका, यूरोप, दक्षिण पूर्वी और पश्चिमी ऐशिया में आर्यसमाज के प्रचार और प्रसार का परिचय दिया गया है।

इस पुस्तक को कई दृष्टियों से आर्यसमाज का महाभारत कहा जा सकता है। जिस प्रकार महाभारत में कुरुवंश के इतिहास का विस्तृत विवेचन है, उसी प्रकार इसमें आर्यसमाज के इतिहास का प्रामाणिक प्रतिपादन है। महाभारत हमारी प्राचीन संस्कृति और वाङ्मय का विश्वकोष है, उसके बारे में यह कहा जाता है कि—यदि हास्ति तदन्यत्र, यन्नेहास्ति न तत्क्वचित्। जो महाभारत में है, वही दूसरे ग्रन्थों में मिलता है, जो इसमें नहीं है, वह कहीं भी नहीं है। यही बात आर्य समाज के विषय में इस पुस्तक के सम्बन्ध में कही जा सकती है। इसमें आर्यसमाज का ऐसा सर्वांगीण सांगोपांग विस्तृत विवेचन किया गया है जैसा अब तक किसी अन्य ग्रंथ या भाषा में नहीं किया गया है। महत्त्व की दृष्टि से तथा आकार प्रकार में भारी होने के कारण जैसे वेदव्यास की रचना को महाभारत का नाम दिया गया था, इसी प्रकार सात सात सौ पृष्ठों के सात विशाल पोथे आर्यसमाज के आधुनिक महाभारत कहे जा सकते हैं।

आर्यसमाज १९ वीं शताब्दी का प्रमुख धार्मिक आन्दोलन था, उसने भारत में नवजागरण की प्रवृत्तियों का सूत्रपात किया, इसमें इन सब का विशद विवेचन है। इस प्रकार यह भारतीय पुनर्जागरण का आकर ग्रंथ है। इसमें हमें सभी आधुनिक धार्मिक एवं सामाजिक प्रवृत्तियों का सारगर्भित विवेचन मिलता है। वर्तमान भारत के किसी भी धार्मिक या सामाजिक आन्दोलन की अभी तक इतनी विस्तृत मीमांसा न केवल हिन्दी में, अपितु प्रादेशिक भाषाओं और अंग्रेजी में भी नहीं की गई है, इस दृष्टि से यह न केवल आर्यसमाज का, अपितु हिन्दी वाङ्मय का गौरव ग्रंथ है।

इस ग्रन्थ के प्रधान सम्पादक डा० सत्यकेतु विद्यालंकार और उनके प्रमुख सहयोगी प्रो० हरिदत्त वेदालंकार हिन्दी साहित्य के प्रतिष्ठित लेखक और सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक हैं। उन्होंने इसमें नवीनतम ऐतिहासिक पद्धति का अनुसरण करते हुए प्रामाणिक तथ्य प्राप्त करने के लिए बड़ी खोज की है, आर्यसमाजों तथा अन्य स्रोतों से प्राप्त सामग्री का समुचित मूल्यांकन करते हुए सब घटनाओं का यथार्थ रोचक, क्रमबद्ध और व्यवस्थित विवरण बड़ी सरल, सरस, सुबोध भाषा में तथा प्राञ्जल शैली में प्रस्तुत किया है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

त्र विश्वविद्यालय में आर्यसमाज स्थापित

आर्य जगत् के क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी रुद्रवेश जी तथा वेद मण्डल जिला कुरुक्षेत्र के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी के निरन्तर ों से कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरुक्षेत्र में आर्यसमाज की विधिवत ना की गई। इससे पूर्व गत दो वर्षों से विश्वविद्यालय के छात्रा- में कई बार प्रचार चलता रहा है परन्तु उन छात्रों के अतिरिक्त पक वर्ग ने भी इसमें भारी रुचि दिखाई है। प्रसिद्ध आर्य पिता योग्य सुपुत्र राजनीति विभाग में प्रोफेसर डा० ईश्वरसिंह चौहान विधि छात्र श्री मेहरसिंह के प्रयास से विश्वविद्यालय में आर्य ज स्थापित होने से युवकों में ऋषि दयानन्द के वैदिक सन्देश के र का मुख्य केन्द्र बन गया है। इनमें श्री अमृतसिंह, श्री दलबीरसिंह मेहरसिंह, श्री सुरेशकुमार तथा डा० अमीरसिंह आदि का सहयोग र रहता है। आर्यसमाज के चुनाव में सर्वसम्मति से डा० ईश्वरसिंह न को प्रधान बनाकर कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया गया आर्य-प्रतिनिधि सभा हरयाणा से सम्बन्ध की घोषणा की गई।

प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र

हीद फण्ड में दान-दाताओं की सूची

ंसमाज नेहरू ग्राउण्ड फरीदाबाद	१०००)
,, होली मोहल्ला करनाल	२०१)
,, घरोण्डा जिला करनाल	१११)
,, माडल टाउन करनाल	१०१)
बलदेवकृष्ण आर्य जी० टी० रोड करनाल	५१)
सुभाषचन्द आर्य अनाज मण्डी घरोण्डा जि० करनाल	५१)
० ज्ञानचन्द आर्य ,, ,, ,, ,,	५१)
देवराज आर्य ,, ,, ,, ,,	५१)
ऋषिपाल वधवा दिल्ली	५१)
राजीव वधवा ,,	५१)
मती सन्तोष महत्ता माडल टाउन करनाल	२५)
यंसमाज झज्जर जि० रोहतक	१०१)
,, श्रद्धानन्द नगर पलवल जि० फरीदाबाद	१०१)
जकीय माध्यमिक विद्यालय गन्नौर मण्डी जि० सोनीपत	१००)
अभी तक का संयोग	१०९९६)

आर्यसमाजों, आर्य संस्थाओं के अधिकारियों तथा अन्य दानी महा- वों से अपील है कि वे सैनिक शहीद निधि में अपना अपना योगदान र को उदारता पूर्वक भेजकर राष्ट्र की अखण्डता तथा धर्म स्थानों पवित्रता को बनाये रखने हेतु वीरगति को प्राप्त होने वाले सैनिकों ति श्रद्धांजलि अर्पित करें।

सभा की अन्तरंग सभा ने निश्चय किया है कि वीर शहीद सैनिक वारों के बच्चों को अपनाकर उन्हें शिक्षण संस्थाओं में शिक्षा की शुल्क सुविधा दी जाये और शहीद निधि से छात्र तथा छात्राओं को त्रवृत्तियां दी जावें। अतः आप भी इस सूची में अपना नाम अवश्य- लिखवाइये।

कन्हैयालाल महत्ता कोषाध्यक्ष

(पृष्ठ १ का शेष)

आपने आर्यसमाज के कार्यकर्ताओं को दहेज तथा शराब जैसी राई को भी समाप्त करने हेतु संघर्ष में कूदने का निर्देश दिया। श्री मेश्वरदत्त मंगला एडवोकेट पलवल, चौ० राजेन्द्रसिंह पूर्व विधायक लबगढ, श्री जयदेव शर्मा मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा फरीदाबाद ने भा प्रधान जी के कार्यक्रम का स्वागत किया। इस अवसर पर सभा कोषाध्यक्ष श्री कन्हैयालाल महत्ता ने आर्यसमाज नेहरू ग्राउण्ड रीदाबाद की ओर से सभा प्रधान जी को सैनिक शहीद निधि में एक जार रुपये भेंट किये।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

सभा में दो नये उपदेशक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वेदप्रचार के प्रसार के लिए ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति तथा श्री अतरसिंह आर्य क्रान्तिकारी को उपदेशक पद पर नियुक्त किया है। ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री मेवात मण्डल तथा श्री क्रान्तिकारी जी हिसार मण्डल में प्रचार कार्य सम्भालेंगे।

सभा मन्त्री

(पृष्ठ ६ का शेष)

आर्यसमाज का प्रचार प्रधान रूप से वीतराग सन्यासियों, धुन के धनी, सतोत्साही, कर्मठ कार्यकर्ताओं एवं प्रचारकों एवं उपदेशकों के माध्यम से हुआ है। अतः उसमें आर्यसमाजों के विकास के साथ सम्बद्ध प्रमुख व्यक्तियों के कर्तृत्व और जीवन पर भी प्रकाश डाला गया है। और उन कठिनाइयों तथा परेशानियों का भी उल्लेख किया गया है जो आर्यसमाज के प्रारम्भिक कार्यकर्ताओं तथा नेताओं को प्रायः उठानी पड़ती थी। इसका एक प्रसिद्ध उदाहरण श्री आत्माराम अमृतसरी द्वारा बड़ौदा में अछूतोद्धार तथा अस्पृश्य जातियों के बालकों की शिक्षा का है। ऐसे उदाहरण आयसमाज के भावी कार्यकर्ताओं के लिए अजस्र प्रेरणा का स्रोत है।

आर्यसमाज के इतिहास की योजना का इतिहास भी बड़ा रोचक है। लगभग आधी शताब्दी पहले इसके प्रधान सम्पादक डा० सत्यकेतु जी पेरिस में अध्ययन करते समय यह अनुभव किया था कि आधुनिक भारत के जागरण और नवनिर्माण में आर्यसमाज के कर्तृत्व को इसलिए नगण्य समझा जाता है कि उसका कोई विस्तृत विवरण नहीं लिखा गया है। उन्होंने इसे लिखाने का संकल्प किया, किन्तु इसकी पूर्ति का बीड़ा उन्होंने तब उठाया जब वे जीवन के ८० बसन्त पूरे करने पर भीषण बीमारी से उठे थे। ऐसे कार्य प्रायः बड़े विश्वविद्यालय और शोध संस्थायें सरकारी सहायता से करती हैं। उन्होंने इस योजना के लिए अपने पुरुषार्थ से संरक्षकों और प्रतिष्ठित सदस्यों से सहायता प्राप्त करके इस योजना को कार्यान्वित किया है। उनकी यह अखण्ड सारस्वत साधना आर्यसमाज के इतिहास में अनुपम है। हमारी भगवान से प्रार्थना है कि जीवेम् शरदः शतम् की वैदिक कामना के अनुसार वे शतायु हों और उससे भी अधिक समय तक जीवित रहें तथा आर्यसमाज के इस गौरवपूर्ण इतिहास की शोध तथा शेष खण्डों के लेखन मुद्रण और प्रकाशन की योजना पूरा करें।

यह कैसेट सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ, रोहतक से भी प्राप्त हो सकती हैं।

भक्त फूलसिंह जन्म-शताब्दी समारोह



अमर शहीद महात्मा भक्त फूलसिंह जी महाराज की प्रथम जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में २४ फरवरी १६८५ को कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत में एक भव्य समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

जो समाज अथवा जाति अपने शहीदों को भूला देती है वह कृतघ्नता के पाप की भागी होती है। शहीदों के बलिदान से समाज व जाति को बल एवं गौरव मिलता है। भक्त जी ने आर्य जाति की प्रतिष्ठा के लिए ही अपने जीवन की आहूति दी थी।

जन्म २४-२-१८८४
बलिदान १४-८-१६४२

भक्त फूलसिंह जी महाराज का कार्य-क्षेत्र बड़ा विस्तृत था। उनके द्वारा संस्थापित गुरुकुल भैंसवाल कलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां (जहां पर महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक से सम्बद्ध लड़कियों के लिए डिग्री कालेज, प्रशिक्षण महाविद्यालय तथा महिला आयुर्वेदिक महाविद्यालय एवं हरयाणा स्कूल बोर्ड से सम्बद्ध उच्च विद्यालय में लगभग दो हजार छात्राएं छात्रावास में रहकर विद्याध्ययन कर[illegible] और प्रतिदिन प्रातः सायं संध्या हवन करती हैं); के विभिन्न वि[illegible] को विस्तार देने के लिए विपुल धन की आवश्यकता है। गुरुकुल सभा के पास साधन सीमित हैं और इस अवसर पर निम्नलि[illegible] सार्वजनिक कार्यों के लिये २५ लाख रु० की योजनाओं पर व्यय [illegible] है, जो कि शताब्दी समारोह तक एकत्रित करना है। अब तक महानुभावों से सम्पर्क स्थापित किया है उन्होंने बड़ा सहयोग दिय[illegible] और उन द्वारा दान में दिये गये ग्यारह सौ रु० लेकर २१ हजार रु[illegible] राशि तक के धन से वांछित धन का पांचवां हिस्सा पूरा भी हो [illegible] है। सभी दानी महानुभावों से विनम्र निवेदन है कि वे भक्त ज[illegible] त्याग व बलिदान का आदर करते हुए अधिक से अधिक धन को [illegible]यता करने की कृपा करें।

इस अवसर पर एक "स्मारिका" का प्रकाशन भी किया [illegible] रहा है।

निवेदक

चौ० माडूसिह गुरुकुल सभा प्रधान तथा अन्य अधिकारी गण

पद्मश्री बहिन सुभाषिणी आच[illegible]

हरयाणा में वेदप्रचार सप्ताहों के [illegible]र्यक्र[illegible]

आर्यसमाज	मन्धार जिला कुरुक्षेत्र	१-२ सित[illegible]
,,	कालका ,, अम्बाला	२ से ६
,,	पिंजोर ,, ,,	१० से १२
,,	लाडवा ,, कुरुक्षेत्र	२ से ६
,,	रेलवे रोड अम्बाला शहर	३ से ६
,,	बीवाँ जिला गुड़गाँव	१-२
,,	मेवात मण्डल मेला प्रचार	७ से ६

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० PRTK-9 सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ३८ ७ सितम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा सरपंचों से निवेदन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से अप्रैल मास में प्रदेश में शराबबन्दी अभियान चलाया जा रहा है। इस वर्ष जिन ग्रामों में शराब के ठेके खुले हुए है, उन्हें बन्द करवाने के लिए आर्यसमाजों के कार्यकर्त्ताओं द्वारा प्रयत्न किया जा रहा है। सभा के प्रचारक ग्राम ग्राम में जाकर शराब के सेवन के विरुद्ध प्रचार करके शराब की बुराइयों से जनता को सचेत कर रहे हैं। स्थानीय पंचायतों तथा आर्यसमाजों के प्रयत्न से सालवन जिला करनाल, आसन जि० रोहतक आदि ग्रामों में शराब के ठेके बन्द हो चुके हैं। ग्राम बालावास जि० हिसार में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए १४ अप्रैल से शान्तिपूर्वक धरने का कार्यक्रम चालू है। यहां दो बार स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती तथा सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह जी आदि आर्य नेताओं ने शराबबन्दी सम्मेलन में कार्यकर्त्ताओं को सम्बोधित किया है। इसी प्रकार अन्य सामाजिक तथा धार्मिक नेता भी यहां पहुंच चुके हैं।

१४ अप्रैल से निरन्तर यहां शराब के ठेके पर प्रचार कार्य चलाया जा रहा है। सभा की भजन मण्डली के अतिरिक्त अन्य भजन मण्डलियां भी प्रचारार्थ आती रहती हैं। बालावास के निकट के ग्रामों की पचायतों ने भी इस ठेके को बन्द करवाने के लिए अपने प्रस्ताव हरयाणा सरकार को भेजे हैं। कई बार शिष्टमण्डल भी मुख्यमन्त्री तथा उच्च अधिकारियों को मिल चुके हैं। सभा के उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य के निर्देशन में सभा के प्रचारक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी इस ठेके को बन्द करवाने के लिए २४ घण्टे अपना निजी कार्य छोड़कर इस कार्य में जुटे हुए है। आशा है यह ठेका शीघ्र बन्द हो जाएगा इस क्षेत्र के विधायक चौ० अमरसिंह इस कार्य में सहयोग कर रहे हैं।

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन है कि जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, उन्हें बन्द करवाने के लिए ग्राम की पचायत से अभी से प्रस्ताव पास करवाने के लिए पंचों तथा सरपंचों से प्रेरणा करें, ताकि अगले वर्ष मार्च मास से पूर्व ही प्रस्ताव हरयाणा सरकार के पास भेजे जा सकें। जिन ग्रामों में शराब के ठेके नहीं हैं, वहां से भी प्रस्ताव भिजवाने चाहिए ताकि उन ग्रामों में ठेके न खोले जावें।

पंचायतों से जो प्रस्ताव पास करवाने हैं, उनका प्रारूप प्रकाशित किया जा रहा है।

प्रस्ताव का प्रारूप

माननीय मुख्यमन्त्री जी,
हरयाणा, चण्डीगढ़।

हमारे ग्राम..................जिला..........ग्रामसभा (पचायत) ने अपनी बैठक दिनांक...... में निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकार किया है—

"यह ग्रामसभा (पंचायत) शराब पीने की बढ़ती हुई प्रवृत्ति को ग्राम्य जीवन के लिए बहुत घातक समझती है। इस दुर्व्यसन से लोगों के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ता है। गांव में अनाचार, अशान्ति और अपराध फैलते हैं। धन का भी भारी विनाश होता है। ऐसी अवस्था में हरयाणा सरकार की शराबबन्दी नीति का स्वागत करते हुए यह पचायत मांग करती है कि हमारे क्षेत्र में चालू शराब की दुकान तुरन्त बन्द कर दी जाय ताकि उक्त बुराइयों से ग्राम्य जीवन की रक्षा हो सके।"

आशा है आप पंचायत की प्रार्थना को स्वीकार करते हुए यहाँ की शराब की दुकान को बन्द करने के लिए आवश्यक पग शीघ्र उठावें की कृपा करेंगे। सधन्यवाद!

ता०.............

विनीत
ग्राम पंचायत के सदस्य

प्रतिलिपि:—
१—प्रधानमन्त्री, भारत सरकार नई दिल्ली।
२—मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक।

हस्ताक्षर ग्रामवासी

नोट—

जिन आर्यसमाजों तथा ग्राम पचायतों को शराबबन्दी प्रस्ताव की छपी हुई प्रतियां चाहियें वे सभा को पत्र लिखकर मंगवा लेवें। इस प्रकार का प्रस्ताव पूर्व पहुँचने पर आपके ग्राम में अगले वर्ष शराब का ठेका स्वीकार नहीं होगा।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

मुख्य मन्त्री महोदय को धन्यवाद

ग्राम बालावास जिला हिसार में हरयाणा सरकार के द्वारा जबरन खोले गये शराब के ठेके के विरुद्ध १४ अप्रैल १९८४ से श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ग्राम कंवारी की अध्यक्षता में एक आर्य धरना का प्रभावशाली कार्यक्रम चल रहा है। ओ३म् के झण्डे तथा शराब विरोधी मोटों लगे हैं। महर्षि दयानन्द और महात्मा गांधी इन दोनों महापुरुषों के अनुयायी संन्यासी, विद्वान्, उपदेशक, राजनैतिक नेता तथा अन्य सभी समाज सुधारक नरनारी इस आर्य धरने पर समय समय पर पधारकर सुरापान आदि दुर्व्यसनों के परित्याग के लिए जनता को सम्बोधित करते रहते हैं।

श्री अत्तरसिंह आर्य तथा बीरसिंह सरपंच ग्राम बालावास इस क्षेत्र के विधायक श्री अमरसिंह जी को साथ लेकर और स्वतन्त्र रूप से हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल जी से अनेक बार मिल चुके हैं। दिनांक २६-८-८४ को डा० सुदर्शनदेव आचार्य, श्री अत्तरसिंह आर्य श्री बीरसिंह सरपंच व प्रो० शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के नेतृत्व में गुरुकुल झज्जर में मुख्यमन्त्री महोदय से मिले और उन्हें निकट के पांच गांवों की पचायतों की ओर से शराब ठेका विरोधी ज्ञापन दिया। मुख्य मन्त्री महोदय ने कहा कि मैं इस ठेके को उठाने के आदेश कर चुका हूं। प्रो० शेरसिंह ने अपने भाषण में मुख्य मन्त्री महोदय के इस प्रशंसनीय कार्य के लिये हार्दिक धन्यवाद किया। आशा है यह ठेका शीघ्र ही यहां से समाप्त हो जायेगा।

इन्द्रसिंह आर्य
मन्त्री आर्यसमाज कंवारी जि० हिसार

कृतं लोकं पुरुषोऽभिजायते

महर्षि शाण्डिल्य के इन शब्दों में कितना गूढ़ ज्ञान छिपा है, यह केवल विचार करने पर ही जाना जा सकता है। जितना गहन चिन्तन इसका किया जाएगा उतनी अधिक सामर्थ्य मनुष्य को अपने को समझने की प्राप्त होगी, परन्तु यह संसार तो परम पिता परमात्मा का बनाया हुआ है फिर मनुष्य अपने ही बनाए हुए संसार मे कैसे रहता है? यह एक विचित्र पहेली सो मालूम होती है परन्तु यह शाश्वत सत्य है, इसे निश्चय जानिए। तीन अनादि हैं—परमात्मा, जीव और प्रकृति। इनमें प्रथम प्रकृति को लीजिए। प्रकृति का केवल एक ही गुण है कि यह अनादि है, नित्य है। दूसरा है जीव, यह भी नित्य है और रहेगा परन्तु नित्यता के साथ साथ इसमें दूसरा गुण है ज्ञान का अर्थात् जीव अनादि है और ज्ञानवान भी। तीसरा है परमात्मा, परमात्मा अनादि है, ज्ञानवान है परन्तु उसका स्वरूप आनन्दमय है। अनादि, सर्वज्ञ और आनन्द का भण्डार है।

अपने कर्मों के अनुसार जीव विभिन्न योनियों में जन्म पाकर आनन्द की इच्छा करता है। वास्तविकता यह है कि परमात्मा की स्थिति उस चुम्बक की है जो अपनी आनन्द शक्ति के कारण सदैव जीव रूपी लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है। जीव को भी आनन्द प्राप्ति की कामना तो है परन्तु प्रकृति के प्रति जीव का असत्य और अज्ञानमय मोह उसे उस आनन्द की प्राप्ति से वंचित कर देता है। मनुष्य अपने लक्ष्य से भटक कर परमात्मा से प्राप्त साधन रूप प्रकृति को अपना साध्य मान लेता है और अपने लिए एक नई अपनी ही बनाई हुई सृष्टि में निवास करने लगता है।

जर को ही जिन्दगी का सहारा समझ लिया,
मल्लाह ने किश्ती को किनारा समझ लिया।
चुन्धिया गई हैं आंखें भोगों की चमक से,
भोगों को जिन्दगी का दुलारा समझ लिया॥

एक मकड़ी की तरह अपने लिए सुखमय जाल अपने ही शरीर से बुनकर तैयार करता है और उसी में फंस जाता है कोई मार्ग उससे बाहर आने का न पाकर उसमें अपने जीवन के अमूल्य क्षणों को खो बैठता है।

यह तो सत्य है कि संसार को परमात्मा ने रचा है परन्तु संसार जीवन के लिए कैसा हो इसका निर्णय तो जीव को स्वयं करना है इसलिये जैसा संसार मनुष्य अपने कर्मों के द्वारा अपने लिए बनाता है वैसे ही संसार में वह रहता है। इस लोक में ही नहीं अपने भावी जीवन का प्रारब्ध का निर्माता भी मनुष्य स्वयं है। परमपिता परमात्मा जीवन का सदा कल्याण चाहते हैं अतः कर्मों के अनुसार न्याय देकर बार बार इस संसार में जीव को विभिन्न योनियों में जन्म देते हैं यह जीव पर निर्भर है कि उसका यह संसार कैसा हो? ठीक ही कहा है—

तेरा करम तो आम है दुनियां के वास्ते।
मैं कितना पा सका यह मुकद्दर की बात है॥

इस स्वयं के द्वारा निर्मित संसार की रचना जीवन के द्वारा अपने विचारों के आधार पर होती है इसलिये हमारे जीवन का प्रथम आधार हैं हमारे विचार। विचार का आधार हैं हमारे संस्कार जो हम अपने समाज से अपने माता पिता, गुरुओं, सम्बन्धियों और पड़ोसियों से प्राप्त करते हैं। इन्हीं अच्छे संस्कारों की प्राप्ति ही शिक्षा का उद्देश्य है। धर्म का लक्ष्य भी मनुष्य के कर्मों को शुभ मार्ग पर प्रेरित करना है—

Religion provides a moral base for all the activities of a man

—Mahatma Gandhi

अच्छे संस्कारों से अच्छे विचारों की प्राप्ति और अच्छे विचारों से ही किए गए कर्मों का फल भी शुभ होता है। इन्हीं कर्मों के आधार पर हम अपने लिए नए संसार की रचना करते हैं इसलिए महर्षि के इन शब्दों में शाश्वत सत्य है। क्योंकि कहा है—

यन्मनसा ध्यायते तद्वाचा वदति यद्वाचा वदति तद् कर्मणा करोति यद् कर्मणा करोति तदपि सम्पद्यते।

हमारे प्रत्येक विचार का अन्त कहा है कर्म में और कर्म का परिणाम है हमारी प्रारब्ध, जिसे लोग प्रायः भाग्य का नाम देते है। मुकद्दर कह कर पुकारते हैं। वेद में आया है,

'क्रतु मयः पुरुषः"

यह मनुष्य अपने ही संकल्पों का बना है। प्रसिद्ध विद्वान् रोमा रोला के शब्दों में—

"Action is the end of thoughts, a thought which does not look towords action is an abortion and treachery,"

मनुष्य की परिभाषा देते हुए महर्षि दयानन्द ने स्पष्ट शब्दों में लिखा है—'मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझे।"

इसलिए मनुष्य यह अनमोल शरीर प्राप्त कर ऐसा कोई कर्म न करे जिससे वर्तमान और भविष्यत दोनों बिगड़ जाए और अपने द्वारा बनाये संसार में कष्टमय जीवन जीने पर विवश हो जाए।

नहीं देता कोई किसी को मजाए।
मजा बनके आता है अपनी खताए।

प्रभु न्यायकारी और दयालु हैं हमारे कर्मों के अनुसार फल देना यही उनकी सबसे बड़ी दया है। हमें मानव जन्म मिला है यह भोगयोनि है और कर्मयोनि भी। यहां हम जो बोते हैं बोए को काटते हैं आवश्यकता केवल मनुष्यता की, आदमीयत की है अगर यह नहीं तो कुछ भी नहीं क्योंकि—

दिल में उलफत नही तो कुछ भी नहीं।
गुल में नकहत नहीं तो कुछ भी नहीं॥
आदमी में हजार जोहर हों।
आदमीयत नहीं तो कुछ भी नहीं॥
और अन्त में इसाक वाट्स के शब्दों में—

"Your little hands were never made to tear each others eyes."

तुम्हारे छोटे छोटे और कोमल हाथ दूसरों की आंखें नोचने के लिए नहीं बनाए।

—प्रमानन्द श्रीधर एम० ए०
यशोदा निकेतन ३६/ई रणजीतसिंह मार्ग,
आदर्श नगर, दिल्ली—३३

सम्पादकीय-

पंजाब समस्या और हरयाणा

पंजाब को समस्या एक नया मोड़ ले रही है और ऐसा लगता है कि हल निकलना तो दूर रहा, बातचीत करना भी निकट भविष्य में सम्भव नहीं। इस सारी परिस्थिति का शिकार हो रहा है हरयाणा। हिन्दी भाषी फाजिल्का अबोहर क्षेत्र जिसको स्वयं अकालियों ने माना ही नहीं बल्कि चण्डीगढ के बदले में हरयाणा को देने की पेशकश की। परन्तु हरयाणा को हस्तांरित करने में अनुचित रूप से विलम्ब किया जा रहा है। दूसरी ओर सतलुज यमुना लिंक नहर बनाने का काम तो ठप्प ही कर दिया गया जो पानी भाखड़ा नहर से मिलता था, वह भी ६ जून के बाद नहीं मिल पाया है, जिसके फलस्वरूप जहां लोगों को पीने के पानी जैसी मौलिक सुविधा से वंचित होना पड़ा है, वहां कपास गन्ना, धान आदि फसलों को भी ५० करोड़ रुपये से अधिक मूल्य की हानि हो चुकी है। आगे चलकर फिर नहीं कटेगी इसका भरोसा लोगों के दिलों में नहीं रहा है। हरयाणा की अर्थ व्यवस्था को जो खतरा आज है वह कभी नहीं हुआ। यदि इसी प्रकार के आघात हरयाणा की जनता को झेलने पड़े तो अपने अधिकारों और अपनी अर्थ व्यवस्था को बचाने के लिए उनको डटकर मैदान में आना पड़ेगा। उसके लिए हरयाणा की जनता तैयारी पकड़े।

मैं दो साल से कहता आया हूं कि पंजाब की समस्या के पीछे विदेशी शक्तियों का हाथ है और देश के दूसरे साम्प्रदायिक तत्व भी अकालियों अतिवादी और तथाकथित उदारवादी अकाली सिख अलग कौम है और पंजाब में उसी का बोलबाला हो यह सुन कर कहते रहे हैं। कुछ तत्व एक दम अलग राष्ट्र को खालिस्तान के रूप में तुरन्त मांग कर रहे हैं तो बाकी पहली किस्त में आनन्दपुर साहब का प्रस्ताव और दूसरी किस्त में खालिस्तान चाहते हैं। इन सभी तत्वों से राष्ट्र की सुरक्षा और एकता दोनों को खतरा है। ऐसे लोगों से बिना जरूरी शर्तों के जिसमें देश की अखण्डता, गुरुद्वारों का हथियारों और मुजरिमों को पनाह देने में इस्तेमाल करना शामिल है (कोई बात करना अपने को धोखा देना) होगा और देश के विघटन को आमन्त्रित करना होगा।

देश जिस संकट में से गुजर रहा है, उसे उबारने के लिए कड़े से कड़े कदम उठाने मे संकोच नहीं करना चाहिए और पंजाब जैसे सीमावर्ती प्रदेश को विदेशी षड्यन्त्रों तथा देशद्रोही तत्वों से सुरक्षा प्रदान करने के लिए फौज को काफी सख्या में सब आधुनिक साधनों से लैस करके पंजाब में रखा जाए।

पंजाब के सभी राष्ट्रप्रेमी हिन्दुओं और सिखों से मेरी प्रार्थना है कि सीमावर्ती इस प्रदेश में वे देशद्रोही तत्वों को नंगा करने और दबाने में अपना पूरा सहयोग दें। देश की सुरक्षा और एकता का भार केवल सेना (फौज) पर छोड़ देना ठीक नहीं होगा, सेना का मनोबल भी जनता के सहयोग से बढता है और वह शत्रु को पराजित करने के लिए उत्साहित होती है। देश के नागरिकों को भी अपनी जिम्मेवारी हिम्मत के साथ निडर होकर निभानी चाहिए।

शेरसिंह अध्यक्ष हरयाणा रक्षा वाहिनी

शहीद फण्ड में दान-दाताओं की सूची

आर्यसमाज नीमीखेड़ी जिला करनाल	१०१)
„ वीर सुजा जि० कुरुक्षेत्र	१३८)
„ थानेसर „ „	५१)
„ राद्यौरी „ „	७८)
„ ईशरहेड़ी „ „	२१)
„ फिरोजपुर झिरका जि० गुडगांव	५०)
„ प्रह्लादपुर जि० कुरुक्षेत्र	४०)
गत सप्ताह का योग	१०९९६)
सर्वयोग	११६०६)

कन्हैयालाल महत्ता कोषाध्यक्ष

ग्राम बालावास में शराब विरोधी प्रचार

२९-८-८४ को स्वामी परमानन्द जी तथा महात्मा मनुदेव जी द्वारा ग्राम कंवारी में शराब विरोधी प्रभावशाली प्रचार तथा प्रातःकाल चोपाड़ में यज्ञ किया गया। इसी दिन धरने पर ग्राम बालावास में डा० सुदर्शनदेव आचार्य तथा ठाकर फतेसिंह आर्य, श्री गणपतसिंह आर्य घण्टाघर आर्यसमाज भिवानी के प्रभावशाली व्याख्यान हुए। आर्य प्रतिनिधि उपसभा भिवानी व महाशय रामकिशन की भजनमण्डली के भजन हुए।

३०, ३१ को भी धरने पर आचार्य जी के व्याख्यान तथा स्वामी परमानन्द जी, पं० रामरख जी व महात्मा मनुदेव जी के मधुर और शिक्षाप्रद भजन हुए। प्रतिदिन प्रातः यज्ञ किया गया। प्रचार में निकट के ग्राम नलवा एवं कवारी से भी नरनारी पधारे। प्रचार में महिलाओं ने भी बढ चढ कर भाग लिया स्वामी परमानन्द जी द्वारा निकट के अन्य गांव में भी शराब विरोधी प्रचार जारी है।

ग्राम नलवा में शराबबन्दी प्रचार

३१-८-८४ रात्रि को नलवा में शराबबन्दी प्रचार किया गया जिस में डा० सुदर्शनदेव आचार्य उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के समाज में बुराइयों के खिलाफ व पत्थरों में ईश्वर नहीं है, पर प्रभावशाली व्याख्यान हुए। नलवा ग्राम में मन्दिरों की बाढ आई हुई है। ढोंग का पाखण्ड हद से अधिक है। आपने आर्यसमाज के दूसरे नियम की व्याख्या भी की और स्वामी परमानन्द व महात्मा मनुदेव के शिक्षाप्रद भजन हुये। स्वामी जी ने शराब न पीने व बालावास के ठेके से शराब न खरीदने की अपील की। लोगों ने इस ठेके को उठवाने के बारे में तन मन धन का पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया।

अतरसिंह आर्य सभा उपदेशक

वैदिक उपासना पद्धति का प्रकाशन

आर्यसमाजों के सत्संग में एक रूपता लाने के लिए सभा की ओर से वैदिक उपासना पद्धति पुस्तक प्रकाशित की गई है। इसका सम्पादन सभा उपमन्त्री डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने किया है। संन्ध्या, हवन, यज्ञ अर्थ सहित तथा सत्संग में गाये जाने वाले उपयोगी भजनों का संग्रह किया है। इसका मूल्य ३-५० रुपये है। अधिक लेने पर २५ प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

निमंत्रण-पत्र

जाट एज्युकेशन सोसाइटी रोहतक का चुनाव २-१०-८४ को १२ बजे दोपहर

श्रीमान् सदस्य महोदय सप्रेम नमस्ते।

महासभा के आम अधिवेशन दिनांक २६-८-८४ को लिए गए निर्णय के अनुसार दिनांक २-१०-८४ को १२ बजे दोपहर A.I.J.H.M. College, रोहतक के हाल मे जाट Education Seciety Rohtak के पदाधिकारी प्रधान, उप-प्रधान, महासचिव और कोषाध्यक्ष के चुनाव महासभा के आजीवन सदस्यों द्वारा किया जाएगा।

महासभा ने अपने २६-८-८४ को आम बैठक में सर्वसम्मति से यह भी निर्णय किया था कि जाट एज्युकेशन सोसाइटी रोहतक की कार्य-कारिणी का काम सुचारू रूप से चलाने हेतु एवम् संस्था के हित को ध्यान में रखते हुए सोसाइटी के संविधान में प्रावधान के अनुसार २-१०-८४ को केवल प्रधान का चुनाव आजीवन सदस्यों द्वारा करके अन्य पदाधिकारियों की नियुक्ति का अधिकार भी चुने जाने वाले प्रधान को दे दिया जाए और इस प्रकार प्रधान द्वारा नियुक्त किए गए पदाधिकारी भी महासभा द्वारा चुने हुए माने जाएंगे।

आप अपने हस्ताक्षर या निशान अंगूठा ऊपर पूरे पते के साथ अपने गाव के सरपंच, हैडमास्टर हाईस्कूल या Gazetted Officer द्वारा प्रमाणित करवाकर साथ लायें। इस परिचय पत्र से आप चुनाव में भाग ले सकेंगे।

आप समय पर आकर कार्रवाई में भाग लें।

तारीख ३१-८-८४

आपके सेवक
संयोजक हजारीलाल M. sc.
P.E.S. Retd छारिया

सह संयोजक
आचार्य हरीश चन्द्र फरमानिया,
चन्दनसिंह राठी I.F.S. Retd.
प्रिंसीपल—हुकमसिंह
Lt. Comdr. इन्द्रसिंह मलिक,
वीर चक्र, आवली निवासी

सिद्धान्ती स्मारक भवन के लिए दान

आर्यसमाज नर्सरी स्कूल होली मोहल्ला करनाल की प्रबन्ध समिति ने सिद्धान्ती स्मारक सभा भवन रोहतक के लिए ५१०० रुपये का दान भेजा है। सभा की ओर से समिति का धन्यवाद।

श्री सिद्धान्ती जी की ८८ वीं जयन्ती दशहरे के दिन ४ अक्तूबर को सिद्धान्ती भवन में प्रतिवर्ष की भांति मनायी जा रही है। अतः जिन महानुभावों ने स्मारक के लिए अपना दान देने का वचन दे रखा है, उनसे निवेदन है कि वे अपना योगदान ४ अक्तूबर से पूर्व सभा कार्यालय दयानन्द मठ रोहतक में भेजने की कृपा करें।

सभा के प्रतिनिधियों की सेवा में निवेदन

सभा की अन्तरंग सभा के निश्चयानुसार सभा के विधान में आवश्यकता के अनुसार संशोधन करने के लिए एक उपसमिति का गठन किया गया है।

अतः सभा के प्रतिनिधि महानुभावों से निवेदन है कि विधान में संशोधन हेतु अपने लिखित सुझाव कार्यालय में भेजने का कष्ट करें, ताकि उपसमिति उन पर विचार कर सके और सभा की आगामी साधारण सभा में उन्हें स्वीकार करवाया जा सके जिनके पास विधान की प्रतियां न हों वे सभा के कार्यालय में पत्र लिखकर मंगवा लेवें।

सभा मन्त्री

सैनिक शहीदों को प्रणाम

कविवर 'प्रणव' शास्त्री, एम० ए०, महोपदेशक

वीर शहीदों के चरणों में बारम्बार प्रणाम हमारा।
बारम्बार प्रणाम हमारा सौ-सौ बार प्रणाम हमारा ॥१॥
उग्रवाद के तूफानों ने प्रेम सूर्य को घेर लिया था,
घोर घृणा, आतङ्क असुर ने मानवता का ढेर किया था,
नन्दन वन शमशान बन गया भीषणता का हुआ पसारा ॥२॥
गोला अरु गुरु ग्रन्थ लगे थे आपस में ही टकराने,
हरमन्दिर दरबार द्वार के कलश लगे थे शरमाने,
आग लगी थी अमृतसर में उफन रही विष की धारा ॥३॥
शैशव का संसार लुटा था और जवानी थर्रायी,
वृद्धावस्था बुद्धिवाद के सङ्ग सङ्ग ही दफनायी,
शान्ति, सुरक्षा, सहानुभूति भी ओढे कफन फिरी दारा ॥४॥
धन्य राष्ट्रपति ज्ञानीजी ने जान लिया कर्तव्य पुकारा,
रहे सुरक्षित पावनता यह 'दुर्गा' को कर दिया इशारा,
सेनापति रणजीत वीर ले राष्ट्र-द्रोह पर ललकारा ॥५॥
मात-पिता की ममता के मन्दिर को कर मिस्मार चले,
वनिता के सिन्दूर सिन्धु की लहरों को कर पार चले,
वीर बाँकुरे रणधीरों ने असिधारा का व्रत धारा ॥६॥
खा खाकर अरियों की गोली छलनी करली निज छाती
हरमन्दिर की रखा सुरक्षित समझ राष्ट्र की थाती,
अखण्डता के वट को सींचा बहा बहा रक्तिम धारा। ७॥
कुछ वैदेशिक गिद्ध, बकासुर बैठे घात लगाये थे!
भारतीय एकत्व, अखण्डित लक्ष्मी पर ललचाये थे,
उनकी दूषित मनोवृत्ति का टूट गया जीवन तारा ॥८॥
असुरों के आतङ्कवाद के पस्त हौसले कर डाले,
दुष्ट द्रोह के दीवाने सब काल-गाल में कर डाले,
बलिदानों की परम्परा ने विजय चरण को स्वीकारा ॥९॥

(परोपकारी पत्रिका से साभार)

शोक समाचार

१—आर्यसमाज कोका जिला रोहतक के मन्त्री महाशय उदयसिंह की माता जी का स्वर्गवास गत मास हो गया। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे। मन्त्री

२—आर्यसमाज गांधी नगर रोहतक के प्रधान श्री सुखदयाल निझावन की धर्मपत्नी श्रीमती सत्यवती की कुछ अज्ञात व्यक्तियों ने २६ अगस्त को निर्मम हत्या कर दी। वे आर्यसमाज के कार्यों में बहुत रुचि रखती थी। परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा परिवार को वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

१ सितम्बर को उनकी स्मृति में उनके निवास स्थान ६७ आर माडल टाउन रोहतक में यज्ञ किया गया। उनके परिवार की ओर से अन्य संस्थाओं के साथ दयानन्द मठ रोहतक को ५१) दान दिया गया। सभा मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

हरयाणा में वेदप्रचार सप्ताहों के कार्यक्रम

मेवात मण्डल कासम मेले पर	७ से ९ सितम्बर
आर्यसमाज नारनौल जिला महेन्द्रगढ	३ से ६ ,,
,, लाडवा जिला कुरुक्षेत्र	३ से ६ ,,
,, रेलवे रोड अम्बाला शहर	३ से ६ ,,
,, कालका जिला अम्बाला	२ से ६ ,,
,, पिंजोर ,, ,,	१० से १२ ,,
,, सेवासदन बल्लबगढ जिला फरीदाबाद	१० से १६ ,,
,, हसनपुर ,, ,,	१० से १६ ,,
,, घरोण्डा जिला करनाल	१५ से १७ ,,
,, भटगांव जिला सोनीपत	२१ से २३ ,,
,, फतेहपुर जिला कुरुक्षेत्र	२८ से ३० ,,
,, बेरी जिला रोहतक (मेला)	२८ से १ अक्तूबर

सभा मन्त्री

आर्यसमाज रामनगर में वेदप्रचार सप्ताह

आर्यसमाज रामनगर जिला गुड़गांव के अन्तर्गत में १६ से १९ अगस्त तक कार्यक्रम बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आर्यजगत् के युवा उपदेशक आचार्य ब्र० अर्जुनदेव ने लोगों को अपने जीवन की बुराई को दूर करने तथा वैदिक पुस्तकों का स्वाध्याय करते रहने की प्रेरणा दी। दूसरे ओजस्वी युवा नेता आचार्य वीरेन्द्र रत्नम ने समाज में फैली बुराईयों को दूर करने एवं श्री कृष्ण तथा महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला और उनकी शिक्षाओं से प्रेरणा लेने को कहा। मन्त्री

आर्यसमाज रामनगर गुड़गांव

ज्योतिसर में कट्टर पौराणिक गढ टूटा

वेदप्रचार मण्डल जि० कुरुक्षेत्र के प्रचार कार्य ने उस समय आश्चर्य मिश्रीत प्रशंसा उत्पन्न की जब क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी की प्रचार मण्डली ने प्रसिद्ध पौराणिक जगत् में आर्यसमाज का प्रचार कर हलचल मचा दी और पौराणिकों को अपनी जड़ हिलती नजर आने लगी जब ३ अगस्त को दोबारा फिर मण्डल की भजनमण्डली से दलबल आ गई। दो दिन के प्रचार में कई बार झगड़े की स्थिति भी पैदा हुई फिर भी स्वामी रुद्रवेश जी तथा मण्डल के मन्त्री श्री धर्मदेव विद्यार्थी ने पौराणिक नगर ज्योतिसर में आर्यसमाज की स्थापना ४ अगस्त सायं को विधिवत आर्यसमाज स्थापित कर चुनाव कराया गया। ज्ञातव्य है कि ज्योतिसर में गीता का उपदेश होने के कारण अधिक पाखण्ड है। श्री धर्मदेव विद्यार्थी के प्रयास से आर्य समाज का निर्वाचन इस प्रकार हुआ—धर्मवीरसिंह जी को प्रधान तथा श्री नरसिंह जी मन्त्री व श्री नाथुराम जी को कोषाध्यक्ष चुना गया। उपरोक्त सभी युवकों में भारी उत्साह दृष्टिगोचर हुआ। ज्योतिसर आर्यसमाज का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से किया गया।

प्रधान वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र

आर्य स्कूल सिरसा के समाचार

१—४ अगस्त १९८४ को जनता भवन में तुलसी जयन्ती का आयोजन भारतीय साहित्य परिषद् सिरसा शाखा द्वारा किया गया। इसमें तुलसी द्वारा रचित पद व छन्द गायन प्रतियोगिता हुई। इस विद्यालय के सातवीं कक्षा के छात्र प्रेमकुमार सैनी ने छन्द प्रतियोगिता में द्वितीय स्थान और सातवीं कक्षा के ही छात्र प्रेमचन्द ने पदगायन प्रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। दोनों छात्रों को आकर्षक पुरस्कार प्राप्त हुए।

२—१० अगस्त ८४ को संजय स्टेडियम सिरसा में खेल विभाग द्वारा ३ किलोमीटर की दौड़ प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसमें हमारे विद्यालय के नवम् कक्षा के छात्र देसराज ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस छात्र को ४० रुपया का नकद पुरस्कार दिया गया।

३—हमारे विद्यालय में प्रातःकाल नियमित रूप से हवन यज्ञ स्कूल लगने के तुरन्त बाद किया जाता है। इसमें बारी बारी से एक एक कक्षा भाग लेती है।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

सम्पादक के नाम पत्र

आर्यसमाज और वेद पढ़ा। वास्तव में हमारी संस्कृति के वेद ही दृढ आधार शिलायें हैं। हमारे धर्म के गोपनीय कोष हैं। हमारे दर्शन की सर्वोत्कृष्ट उपलब्धियां हैं जिनकी संसार में उपमा नहीं मिलती। इनके ही अनुसार चलने से मानव सुख, सम्पत्ति, ऐश्वर्य और ईश्वर का सुगमता से साक्षात् कर सकता है। प्रेषक

सत्यप्रकाश लोहान नारनौंद

लोगों को सस्ता सौदा चाहिए

श्रीमान जी,

इतने प्रचार के बावजूद भी सनातन धर्मियों की संख्या बढ रही है। लोग मन्दिरों में जाने वाले बहुत से हो गए हैं। यदि कोई व्यक्ति आर्य समाजी होता है तो उसको दोनों समय संध्या और यज्ञ हवन करना पड़ता है। जो लगभग सबके बस की बात नहीं है। दूसरी ओर मन्दिर में जाने वाले, मन्दिर में जाकर हरे राम, हरे कृष्ण करते हैं या शिव के पत्थर को जल चढाते हैं। इसके अलावा चौराहों पर पानी डालते हैं। इस प्रकार से भगवान् को पाने का बहुत सस्ता सौदा इन लोगों ने अपना रखा है। ऋषि दयानन्द की मृत्यु को १०० साल पूरे हो जाने पर भी पाखण्ड का बहुत बोलबाला है। पूजा की जो सही पद्धति है उसको न अपनाकर लोग पाखण्डियों के पीछे फिरते हैं।

आप देखिये कि बालयोगेश्वर, जयगुरुदेव, सांईबाबा, निरंकारी की क्या तुक है? सिवाय इसके कि ये लोग पाखण्ड फैला रहे हैं और कोई बात लोगों के समझ में नहीं आती।

मेरे विचार में आर्यसमाज के सभी पत्रों में एक कालम इस विषय का होना चाहिये जिसमें इन चीजों की आलोचना की जाए।

जयदेव गोयल, पत्रकार जीन्द

आदत छूटी

अब से कुछ वर्ष पूर्व, मित्र-मण्डली के चक्कर में पड़कर, मुझे शराब पीने की ऐसी बुरी लत पड़ गई थी कि प्रतिदिन सायंकाल मैं मदिरालय से शराब पीकर लुढ़कता-पुढ़कता घर आता और नशे में गाली-गलोच करता तथा बेहोश होकर गिर जाता।

पत्नीजी ने अनेक बार आग्रह किया कि मैं शराब पीना छोड़ दूं। पर प्रातःकाल उनसे वायदा कर लेता कि आज से शराब पीना छोड़ दूंगा, पर शाम को जब आफिस से घर लौट कर आता तो उसी दशा में। पत्नीजी बेचारी बहुत परेशान, और होतीं भी क्यों न ? कारण आये दिन उन्हें मेरे उल्टी से सने कपड़े धोने पड़ते और जब मैं भूखा ही बेहोश सो जाता तो उन्हें भी भूखा ही रहना पड़ता। तंग आकर एक दिन वे मुझ से बोली—मैं ही क्या, जो तुम्हारी शराब की आदत को छुड़ा न दूं।

वर्षा ऋतु के दिन थे। मैं आफिस से जब घर लौटा तो नशे की हालत में बेसुध हो पलग पर गिर गया। जब प्रातःकाल उठा तो हाथों और पैरों में गोबर सा लगा दिखाई दिया। सोचा, शायद कहीं गोबर के ढेर पर गिर गया, जो हाथों पैरों में लगकर रात भर में सूख गया। मैं उठकर बाहर नल पर उसे धोने हेतु पहुँचा क्योंकि घर में बम्बा नहीं था। वहां मेरी सूरत देखकर सभी स्त्री-पुरुष हस रहे थे, विशेष कर महिलायें अपने आंचल से मुंह दबाये व्यंगपूर्ण मुद्रा में मुस्करा रही थी, मानो नारद-मोह में नारद को देखकर शिवाजी के गण हस रहे हों। मैं बहुत देर तक समझ ही न सका कि आखिर बात क्या है ? तभी लाला विनोदीलाल ने आकर कहा—"जरा अपनी सूरत तो शीशे में देखकर आइये।"

मैं तत्काल घर वापस आया, शीशे में देखा मेरे क्लीनशेव्ड चेहरे पर भी वही गोबर जैसा पदार्थ लिपा था। हाथों से उसे मल कर छुड़ाया, तो पता चला कि चेहरे पर मेंहदी रचाकर दाढ़ी मूंछों की चित्रकारी की गई थी और हाथों व पैरों में महिलाओं जैसी मेंहदी रचाइ गई थी। मैं लज्जा के मारे कमरे से बाहर नहीं निकला क्योंकि यह कार्टूनिक सूरत लेकर कहां जाता, किन्तु पत्नीजी सवेरे से ही पड़ोसन के यहां जाकर बात करने लगी। ठीक साढे नौ बजे वह घर आई और बोली—आपको आफिस को देर हो रही है। चलिये, दोनों लोग पास के होटल में खाना खाये लेते हैं।

मैंने हाथ जोड़कर कहा—क्षमा कीजिये। मैं यह सूरत लेकर न तो आफिस जा सकता हूं और न ही होटल में भोजन करने।"

वे हंसीं और रसोईघर में जाकर भोजन बनाने लगी।

लगभग १५ दिन तक शरीर पर मेंहदी का असर रहा और इस पूरी अवधि में न तो मैं आफिस पहुँच सका और न ही बाजार। मैंने उस दिन से अपने कान पकड़े कि आज से शराब न पीयूंगा। अब न तो मैं किसी नाली में गिरता हूँ और न ही श्रीमती जी की फटकार सुनता हूँ। जो पत्नी नित्य दो-दो, चार-चार पैसों को तरसती थी वही अब सोने के आभूषणों से सजी लक्ष्मी सी दिखाई देती है। मेरे मदिरा-पान त्यागने से अब वास्तव में मेरा घर स्वर्ग हो गया है।

दयानन्द जड़िया 'अबोध'
आलमबाग, डाकघर, लखनऊ—५

पाणिनीय व्याकरण पर गोष्ठी का आयोजन

आर्यजगत् के विख्यात नेता पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की ८४ वीं जयन्ती के अवसर पर सिद्धांती भवन, दयानन्दमठ, गोहाना मार्ग रोहतक में आर्य विद्यासभा की ओर से ४ अक्तूबर ८४ को प्रातः ८ बजे से पाणिनीय व्याकर पर साहित्य गोष्ठी का आयोजन किया गया है।

अतः विद्वानों से निवेदन है कि 'पाणिनीय व्याकरण में वैदिक उद्धरण' तथा 'पाणिनीय व्याकरण में जनपद' विषय पर अपना निबंध लिखकर २२ सितम्बर तक भेजने की कृपा करें। —यज्ञवीर

शराब कितनी खराब

घर परिवार भाई बाप को भुलाई देत,
आज भी समाज करै मानते न दाब है।
झूमि झूमि घूमि घूमि करत बड़ाई पिये,
कहते सभी से स्वाद कैसा लाजबाब है।
घर की जमाई पूंजी घटि जात धीरे-धीरे,
धन हेतु मय मानो जलता तेजाब है।
आखिरी में भीख मांग मरते शराबी सभी,
सोचिये शराब मार कितनी खराब है।

—शिवाकान्त मिश्र 'कान्त विद्रोही'
प्रा० स्वा० के० इटियाथोक, गोंडा

शराब

कवि० बनवारी लाल शादां 'वैद्य'

अब नौजवानों देश की हालत खराब है।
ऐसी खराब है कि जहां देखो शराब है॥
इन्सान को हैवान अब इसने है कर दिया।
चोरी और जारी कत्ल कराती शराब है॥
खाते हैं मांस मछली और अण्डे सड़े सड़े।
नहरें बहां जहां दूध की अब तो शराब है॥
जिस जन नें मुंह लगाई बरबाद हो गया।
बीमारी यह लगाती है मिट्टी खराब है॥
शराब ना मुरादने घर लाखों मिटा दिये।
पीता जो इसको देख लो खाना खराब है॥
फालिज को पैदा करे फेफड़ा भी हो खराब।
पागल दिल की धड़कन बढाती शराब है॥
खांसी सिल तपेदिक आंत में हो जख्म।
पाचन शक्ति को दुर्बल बनाती शराब है॥
जहरीले असर से इसके दिल भी होता फेल।
इसके द्वारा मृत्यु बुलाती शराबी है॥
सेवन से इसके तन बने रोगों की खान।
स्वास्थ का सर्वनाश कराती शराब है॥
जो दूर रहता इससे वही अक्लमन्द है।
'शादां' है शक्ति उसमें चेहरे पर शबाब है॥

श्री स्वतन्त्र फार्मेसी
१०८०२ मानिकपुरा नई दिल्ली–५

मुक्तक

'नाज' सोनीपती

जुल्म करते हुए नहीं थकते,
वे जो जोर ओ जफा के आदि हैं।
आज भारत में जिस तरफ देखो,
उग्रवादी ही उग्रवादी हैं।
दिन दहाड़े जो डालकर डाके,
रोज करते हैं अपनी मनमानी।
अब वे अपने नहीं वह सपना था,
बन चुके हैं वे दुश्मने जानी।
इस कदर निर्दयी हुई दुनियां,
भाई भाई का भी गला काटे।
जो निहत्थों पे बोलकर धावा,
बेगुनाहों का भी लहू चाटे।
करके गैरों से सांठ गांठ अपनी,
कातिलाना रविश जो अपनाएं।
उनका चलता नहीं है बस, वरनां ?
ये तो अपने वतन बेच आएं॥

चौ० हरद्वारीलाल जी का भव्य अभिनन्दन

दिनांक ८ अगस्त १९८४ को महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के विद्वान् कुलपति श्री चौ हरद्वारीलाल जी आर्ष पाठविधि के प्रमुख कन्या शिक्षण संस्थान आर्ष गुरुकुल नरेला (दिल्ली) में भव्य अभिनन्दन समारोह सम्पन्न हुआ। गुरुकुल के मुख्य द्वार पर गुरुकुल की उच्च श्रेणी की ब्रह्मचारिणियों ने वेद मन्त्रोच्चारण के साथ पुष्प वर्षा से स्वागत किया। गुरुकुल की यज्ञशाला में अभिनन्दन समारोह यज्ञ से आरम्भ हुआ। कुलपति महोदय ने पहिले पवित्र यज्ञवेदी में अपने हाथ से आहूति दी तत्पश्चात् गुरुकुल की कन्याओं ने संस्कृत भाषा में अभिनन्दन गान प्रस्तुत किया। ब्रह्मचारिणियों के भाषण एवं संवाद अत्यन्त प्रभावशाली थे। श्री प० देवेन्द्रनाथ जी शास्त्री ने गुरुकुल का ओर से मान-पत्र संस्कृत भाषा में प्रस्तुत किया। दिल्ली प्रदेश के प्रमुख नेता चौ० हरिसिंह आदि महानुभावों ने कुलपति महोदय का माला अर्पण से स्वागत किया। स्वामी सुलक्षणानन्द जी तथा आचार्य हरिदेव जी ने गुरुकुल संस्थाओं की ओर से माला-अर्पण से कुलपति महोदय का अभिनन्दन किया। डा० सुदर्शनदेव आचार्य ने महर्षि दयानन्द वेदभाष्य भास्कर आदि अपनी रचनाएं कुलपति महोदय को भेंट की। स्वामी ओमानन्द सरस्वती ने कुलपति महोदय के गुरुकुल में पधारने का धन्यवाद किया और कहा कि आर्ष पाठविधि को मान्यता देकर कुलपति महोदय ने इस दिशा में अत्यन्त प्रशंसनीय कार्य किया है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध नेता चौ० रामेहर एडवोकेट ने कुलपति महोदय का परिचय दिया। आर्यसमाज तथा गुरुकुलों के महत्व को कुलपति महोदय को हृदयङ्गम करने का श्रेय चौ० राममेहर एडवोकेट को ही है।

महामहि कुलपति महोदय ने अपने भाषण में गुरुकुल शिक्षा पद्धति संस्कृत भाषा, विशेष रूप से झज्जर तथा नरेला के स्नातक-स्नातकियों के संस्कृत ज्ञान की सराहना की और यह घोषणा की कि मेरा प्रयत्न रहेगा कि रोहतक विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में इन्हें प्राथमिकता दी जाए। आर्ष पाठविधि के लिए विश्वविद्यालय की ओर से जैसा स्वामी जी महाराज चाहेंगे वैसे ही सब सुविधाएं कर दी जाएंगी। हम विश्वविद्यालय में महर्षि दयानन्द का भव्य स्टेचू लगा रहे हैं जिसका कार्य दीपावली तक पूर्ण हो जाएगा। महर्षि की विधि के अनुसार एक भव्य यज्ञशाला का निर्माण कार्य भी चल रहा है। मेरे पास आज समय कम है। फिर कभी तसल्ली से गुरुकुल को देखने की इच्छा है।

यह अभिनन्दन समारोह बड़ा प्रभावशाली एवं सफल रहा।

सत्यवीर शास्त्री अध्यक्ष संस्कृत विभाग
राजकीय महिला महाविद्यालय रोहतक

स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई —भजनलाल

रोहतक २६ अगस्त १९८४। देशवासियों को आजादी प्राप्त करने के लिए देशभक्तों द्वारा असंख्य कुर्बानियों को सदा याद रखना चाहिए। भारत की स्वतन्त्रता की लड़ाई में आर्यसमाज तथा विभिन्न गुरुकुलों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस आन्दोलन में गुरुकुलों के सैकड़ों शिक्षकों तथा विद्यार्थियों ने बहुत यातनायें सहीं। उनमें से कुछ गुरुकुलों को इस आन्दोलन के दौरान देशभक्तों ने सुरक्षित स्थान के रूप में प्रयोग किया। यह जानकारी हरयाणा के मुख्यमन्त्री चौ० भजनलाल ने यहां से ३५ किलोमीटर दूर गुरुकुल झज्जर के प्रांगण में शहीद स्मारक भवन का शिलान्यास करते हुए दी। दस लाख रुपये की लागत से बनने वाले इस भवन को संस्कृत तथा प्राचीन इतिहास के अन्वेषण केन्द्र के रूप में प्रयोग किया जाएगा तथा अन्वेषण छात्रों के लिए एक बड़ा पुस्तकालय भी उपलब्ध होगा।

तत्पश्चात् गुरुकुल में आयोजित विशाल जनसभा को सम्बोधित करते हुए मुख्यमन्त्री महोदय ने कहा कि छात्रों को गुरुकुलों में शिक्षा प्राप्त करने उपरान्त संस्कृत अध्यापक लगाने के लिए भविष्य में भरसक प्रयास किए जाएंगे। इस अवसर पर उन्होंने घोषणा की कि यदि गुरुकुल झज्जर के प्रबन्धक अपने संग्रहालय से सदियों पुराने सोने के सिक्के तथा हस्तलिखित सामग्री हस्तांतरित करने के लिए तैयार हों तो हरयाणा सरकार कुरुक्षेत्र में एक बहुत बड़ा संग्रहालय बनाने के लिए तैयार है।

गुरुकुल की मांगों का उल्लेख करते हुए मुख्यमन्त्री ने दो किस्तों में शहीद स्मारक भवन के निर्माण के लिए ५ लाख रुपये देने की घोषणा की। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री को सिक्कों से तोला गया जो कि उन्होंने गुरुकुल गऊशाला को वापिस देने की घोषणा की। उन्होंने झज्जर के महाराज अग्रसेन कन्या महाविद्यालय को हरसम्भव सहायता देने का वचन दिया।

इस अवसर पर महर्षि दयानन्द यूनिवर्सिटी रोहतक के उपकुलपति श्री हरद्वारीलाल ने रहस्योद्घाटन किया कि रोजगार देने के मामले में विश्वविद्यालय ने गुरुकुल के पाठ्यक्रम को मान्यता प्रदान कर दी है। उन्होंने आगे कहा कि यूनिवर्सिटी कैम्पस में स्वामी दयानन्द की ९ फुट ऊंची प्रतिमा स्थापित की जाएगी जिस पर ३ लाख रुपये खर्च होंगे। इसका अनावरण प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा इस वर्ष दिवाली के नजदीक किया जाएगा। विश्वविद्यालय ने ग्रामीण क्षेत्रों के लगभग १०० विद्यार्थियों के अतिरिक्त प्रशिक्षण देने के लिए ५० लाख रुपये निर्धारित किये हैं।

(लोक सम्पर्क हरयाणा प्रेस विज्ञप्ति)

पुरोहितों की आवश्यकता

आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द आर्यसमाज मण्डी डबवाली जिला सिरसा, आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जिला करनाल तथा आर्यसमाज नीलोखेड़ी जिला करनाल में सुयोग्य, वैदिक विचारधारा वाले तथा मिशनरी भावना से लगनशील पुरोहितों की आवश्यकता है।

अत: इच्छुक विद्वान् अपनी योग्यता; अनुभव आदि के विवरण के साथ अपने प्रार्थना पत्र भेजें।

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
सिद्धान्ती भवन गोहाना रोड़ रोहतक

आर्य विद्या परिषद् हरयाणा द्वारा आयोजित

धार्मिक परीक्षाओं में शीर्षस्थ स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राएं

धर्म प्रवेशिका पूर्णांक १००

अनुक्रमांक	नाम	स्कूल	प्राप्तांक	स्थान
६१६	कुमारी ललिता	ध. आ. क. उ. वि. रोहतक	८३	प्रथम
५७४	आशोष अग्रवाल	द. बा. वि. नारायणगढ(अ.)	८२	द्वितीय
००६	कु० सुनीतारानी	द. प. स्कूल जाखलमडी	८०	तृतीय

धर्माधिकारी पूर्णांक—१५०

६०	भूपेन्द्र	बा. म. द. मा. स्कूल सोनीपत	१२५	प्रथम
११६	रामअवतार	आ. उ. मा० वि. सिरसा	१२५	,,
५३	कु. सतबीर	आ. क. उ. वि. कालका	१२०	द्वितीय
६०	मनीष बसल	बा. म. द. मा. स्कूल सोनीपत	१२०	,,
६४	कपिल कुमार	,, ,, ,, ,, ,,	१२०	,,
७६	फूलाराम	आ. उ. मा. वि. सिरसा	१२०	,,
९०	राजेशकुमार	,, ,, ,, ,,	१२०	,,
११७	रामनिवास	,, ,, ,, ,,	१२०	,,
१७१	फूलचन्द	,, ,, ,, ,,	१२०	,,
१६५	श्यामलाल	,, ,, ,, ,,	११७	तृतीय

धर्म-ज्ञानी पूर्णांक—१५०

३३	कुमारी बिन्दु	आ. क. उ. वि. कालका	१२०	प्रथम
४४	रविन्द्रकुमार	डी. ए. वी. हाई स्कूल गुड़गांव	११५	द्वितीय
३१	कु० पूनम शर्मा	आ. क. उ. वि. कालका	१०५	तृतीय

सुरेशकुमार शास्त्री वेदमित्र
निरीक्षक एवं परीक्षक प्रस्तोता
आर्य विद्या परिषद् हरयाणा

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि० नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,९६,०८५३,०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ३९ १४ सितम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

गायत्री मन्त्र

ओ३म् भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्
भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

अर्थ—हे परमेश्वर ! हे सच्चिदानन्द स्वरूप ! हे नित्य शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव ! हे अजर निरंजन निर्विकार ! हे सर्व अन्तर्यामिन् ! हे सर्वाधार जगत्पते ! सकल जगत् उत्पादक ! हे अनादि विश्वम्भर सर्वव्यापिन् ! हे करुणामृत वारिधि ! आपका जो शुद्ध चेतन स्वरूप है उसी को हम धारण करें । इस प्रयोजन के लिए आप अन्तर्यामिन् स्वरूप हमारी आत्मा और बुद्धियों को दुष्टाचार और अधर्म के मार्ग से हटाकर श्रेष्ठ सत्य मार्ग पर चलाए । हम आपको छोड़कर किसी और वस्तु का ध्यान न करें क्योंकि न कोई आपके तुल्य और न ही अधिक है । आप ही हमारे पिता, राजा, न्यायाधीश और सब सुखों को देने वाले हैं।

वह कैसा कारीगर होगा

भला जो आदमी होगा, कभी वह सोचता होगा ।
बनायी जिसने ये दुनियां, वह कैसा कारीगर होगा ॥
ये सूरज, चांद और तारे, हैं पाते रोशनी सारे ।
धधकाता जो वडवानल वह कितना तेजोमय होगा ॥
ये नदियां, झील और सागर भरे हैं जिसने पानी से ।
जो करता वर्षा तूफां को वह कितना रुद्रतम होगा ॥
जो पाले चींटी-कुंजर को पशु पक्षी चराचर को ।
खुले रहते हैं भण्डारे वह दाता किस कदर होगा ॥
है करती याद कोयल नित, जिसे ऊँचे मधुर स्वर में ।
पपीहा पी-पी करता है वह कितना प्रियतम होगा ॥
जो हरता दुःख जीवों के, करे आनन्द की वर्षा ।
मुदित हो गीत गाते हैं, 'हरि' कैसा कवि होगा ॥

हरिदत्त वि० प्र०
बी यू १६०, विशाखा एन्कलेव, दिल्ली—३४

ईश-भक्ति के पद

प्रो० ओमकुमार आर्य जीन्द

सारा यह जगत् बनाया प्रभो तूने तुझको किसी ने बनाया नहीं,
सृष्टि में शक्ले सलोनी रचीं जबकि अपनी तेरी कोई काया नहीं,
जोगी जती सब ढूंढ के हारे पार तेरा कोई पाया नहीं,
नेति नेति कह वेद पुकारा कि अन्त तेरा कहीं आया नहीं ।१
निश दिन जाप किया कर बन्दे ओ३म् पिता अरु माता है;
तुझ नर का उस नारायण से युगों पुराना नाता है ।
कर्ता, धर्ता और संहर्त्ता वेद उसे बतलाता है;
काहे तू सोच करे पगले वह दाताओं का दाता है ।२
जीभ से नाम लिया तूने कभी हृदय से गुण गाया नहीं,
लोग दिखावा स्वांग रचा कभी मन में उसके ध्याया नहीं ।
जाने कहां पर भूल हुई जो कि मांगा हुआ तूने पाया नहीं,
उस दाता ने तो सच्चा याचक खाली हाथ लौटाया नहीं ।३
अगन-गगन में ईश बसे कोई ठौर न उससे खाली है,
यह दुनियां एक सुन्दर बगिया वह परमेश्वर माली है ।
दाता एक वही परमेश्वर बाकी तो जगत् सवाली है,
तू मांग रहा बन्दों से मूर्ख यूं तेरी झोली खाली है ।४
प्राणी तू साधक ब्रह्म-लोक का बहती अमृत धार जहां है,
बन्धन मुक्त हो विचरण करना सुखों का पारावार वहां है ।
पर तू चिपटा दुनियांदारी में भूल गया दिन चार यहां है,
कौड़ी के बदले में हीरा गंवाया रे काया के भोगों में सुख ही कहां है ।

ईश्वर प्रार्थना

टेक—भूमण्डल का करता धरता तू भगवान् बताया,
अगर नहीं करना था न्याय तो फिर क्यों जगत् रचाया
कल परसों जो मैंने देखा आटा मांगा करते
पेट भराई ना मिलता था आधे भूखे मरते,
कड़ी घास की छात बांस की टूटे फूटे घर थे ।
आज देखलो विमान में वह फिरते रोज विचरते,
नहीं हल्दी फटकड़ी लगी है चोखा रंग चढ़ाया ॥१॥
उनके कुत्ते मखमल ओढ़ें यहां नहीं मिले लंगोटा,
वहां दूध की गऊ भैंस यहां ठेला कटड़ा झोटा,
यहां चुल्लू से पानी पीते वहां चांदी का लोटा
वहां खांड घी फिरें बिखरते यहां प्याज का टोटा
वहां कुत्ते खां खीर खांड यहां दलियै पर जूत बजाया ॥२॥
या तो तू भगवान् नहीं तेरा जगत् में झूठा रुक्का
गर है तो मैदान में आ इस समय पे कैसे चुका
आठ पहर जो काम करे है वह रोटी से भुक्का
फिर भी बेचारे का रहता रोज फजीता थुक्का
इन मजदूर किसानों ने क्या तेरा बैल चुराया ॥३॥
मुंह बाये हम बाट तकें थे अपनी हकूमत आवेगी
इन मजदूर किसानों को मुफ्ती तालीम दिलावेगी
जहां नहर का पानी नहीं है वहां ट्यूबवैल लगावेगी
स्वपने में भी ध्यान नहीं था बाड़ खेत ने खावेगी
पृथ्वीसिंह बेधड़क ने यह रो रोकर भजन बनाया

फलगू मेले पर वैदिक धर्म प्रचार का आयोजन

कैथल के निकट ग्राम फरल जि० कुरुक्षेत्र में २२ से २४ सितम्बर को एक विशाल मेला भर रहा है, जिसमें देश के कोने कोने से लाखों की संख्या में नरनारी सम्मिलित होंगे। इस अवसर पर सभा की ओर से वेदप्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र के सहयोग से मेले में वैदिक धर्म प्रचार शिविर लगाया जा रहा है। सभा की भजन मण्डलियां पं० हरिश्चन्द्र जी, पं० मुन्शीलाल एवं सभा के उपदेशक पं० सुरेशकुमार विद्यावाचस्पति प्रचारार्थ पहुंच रहे हैं।

—रणजीतसिंह सभामन्त्री

यादरहे न रहे पर भूल न जाना

शूर शिरोमणि शेषराव जी बाघमारे

लेखक–प्राध्यापक राजेन्द्र 'जिज्ञासु' वेदसदन अबोहर

सर्वहितकारी के पाठक श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज का महात्मा आनन्दमुनि जी (शेषराव जी) पर एक सुन्दर लेख पढ़ चुके हैं। आर्य जाति अपने इस तपःपूत से वञ्चित हो गई है। मैं भी उन पर एक लेख देना चाहता था परन्तु इधर हमारा देश, धर्म, धन, मान और जीवन सब कुछ सङ्कट में था स्टेनगनें, बर्छे, भाले, गोले, किरपाणें हमें शिकार बनाने में लगे थे। ऐसी स्थिति पढना लिखना कुछ भी नियमित न था। पाठक हमारे हां की उस भयावह स्थिति की कल्पना भी नहीं कर सकते।

यद्यपि विलम्ब हो चुका है परन्तु मैं उस तेजस्वी प्रतापी महाप्राण पर कुछ न लिखूं तो यह एक अखरने वाली बात होगी। ऐसे पूज्य पुरुष का जीवन दूसरों के लिए सदा प्रेरणा स्रोत होता है। मैं क्या लिखूं वा क्या छोड़ूं ? संस्मरणों का भण्डार है। कहां से प्रारम्भ करूं? यही नहीं सूझ रहा।

जिनकी प्रशंसा हमारे लोह पुरुष ने भी की—

वह कैसे साहसी पुरुष थे, इसका अनुमान पाठक इस घटना से लगालें कि आर्य जाति के इतिहासज्ञ और अजयी विजयी सेनापति स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज किसी के जीवनकाल में उसका जीवन लिखने के पक्ष में न थे परन्तु हैदराबाद सत्याग्रह के इस सर्वाधिकारी (निज़ाम राज्य के आर्यों की ओर से) का जीवन उन्होंने विजय के पश्चात् साप्ताहिक 'आर्य' में लिखा था। वह लेख हमारे संग्रहालय में है। कभी खोजकर प्रकाशित करवायेंगे।

कारावास में सबको प्रभावित किया—

शेषराव जी का नाम व काम आर्यों को, देश सेवकों को और जातिभक्तों को सदा उभारता रहेगा। वह बहुमुखी प्रतिभा के व्यक्ति थे। विद्यार्थी जीवन में ही इस नरनामी के शौर्य की गाथायें सुनकर मैं अपने को धन्य मानता था। हिन्दी सत्याग्रह में वह हमारे लेखराम नगर कादियां के कुछ आर्यों के साथ रहे। वे लोग जेल से आकर शेषराव जी का गुण-गान गाते न थकते थे।

हमारी प्रथम भेंट—

फरवरी १९६३ ई० के अन्त में आर्यसमाज लातूर के वार्षिकोत्सव पर उनसे हमारी प्रथम भेंट हुई। मेरा व्याख्यान हुआ। श्रोताओं ने कहा बड़ा ओजस्वी प्रेरणाप्रद भाषण है। आबाल वृद्ध फड़क उठे। व्याख्यान के अन्त में मैंने ऋषि पर आचार्य चमूपति जी की प्रसिद्ध कविता— ऐ दुनियां बता— के कुछ पद बड़े जोश से सुनाए। उपस्थिति बहुत थी। व्याख्यान के बाद हमने शेषराव जी के जब टपटप अश्रु गिर रहे थे, के दामाद आचार्य वेदकुमार जी वेदालङ्कार से कहा, क्या शेषराव जी पधारे हैं ? आए हैं, तो पहले उनके दर्शन करवायें। उन्होंने कहा, "इस सभा में सबसे निराले शरीर वाले हमारे माता पिता जी ही होंगे। आप ही पहचान लें"। हमने चित्र देख रखा था। भारी शरीर वाला हाथी की मस्त चाल चलता एक तेजस्वी पुरुष हमारी ओर आता दिखाई दिया। हम समझ गये कि यही महान् शेषराव हैं। उनके नयन सजल थे। अश्रुधारा बह रही थी। यह अश्रु क्यों आए ? आचार्य चमूपति के इस पद पर—

ज़हरें भी पिलाई अपनों ने,
खंजर भी चलाए अपनों ने।
अपनों के ये अहसां क्या कम हैं,
ग़ैरों से शिकायत क्या होगी॥

व्याख्यान पर आशीर्वाद दिया। हमारे मन में तो वह पहले ही अनदेखे घुसे हुए थे। उस दिन से हम भी उनके हृदय में आसीन हो गये।

मैं अपना समय इन्हें देता हूँ—

अप्रैल १९८३ ई० को आर्यसमाज स्थापना दिवस पर काकवाड़ी बम्बई की विराट् सभा के भी एक मुख्य वक्ता थे। जब उनकी बारी आई, तो कुछ बोले और बहुत सुन्दर बोले अन्त में कहा 'प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु का अन्त में भाषण है। मैं भी उन्हें सुनने के लिए उत्सुक हूं अपना शेष समय उन्हीं के लिए छोड़ता हूं।'

ऐसा था उनका व्यक्तित्व ! यह थी उनकी ऋषि भक्ति। अपने बाद की पीढ़ी को प्रोत्साहन देने की यह ऊंची भावना कम ही लोगों में होती है।

वैदिक यति मण्डल की स्थापना पर वह दयानन्दमठ दीनानगर पधारे। एक दिन वहां यज्ञशाला के पास खड़े थे तो हमने कहा, महात्मा जी आपका एक दुर्लभ चित्र श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के साथ शोलापुर में खींचा गया था, हमारे पास है।

शेषराव तो मर चुका है—

यह सुनकर इकदम बोले, 'वह चित्र आनन्दमुनि का नहीं। आपका शेषराव मर गया।"

नांदेड़ में महाराष्ट्र प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन रखा गया। हम भी वहां गये। स्वामी ओमानन्द जी व ब्र० आर्य नरेश जी ने बारम्बार आर्यजनों को आश्रम परिवर्तन की प्रेरणा दी। इस पर सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि प्रो० हरिश्चन्द्र जी (शेषराव जी के दामाद) की पत्नी ने घोषणा की कि वह कुछ समय के लिए गृहस्थ छोड़कर आश्रम में रहेगी और वानप्रस्थ की तैयारी करेंगी। यह घोषणा शेषराव जी की बहिन ने (जो स्वयं वानप्रस्थी हैं) की। घोषणा करते हुए उन्होंने उसके नाम के साथ बाघमारे बोला।

मर्यादा यही है

इस पर महात्मा आनन्द मुनि बड़े जोश से खड़े होकर बोले कि– "इस देवी के पति यहां उपस्थित हैं, वह उनसे विचार करके यह प्रतिज्ञा करें ताकि कल को प्रतिज्ञा भंग न हो।" दूसरी बात यह कही कि— "उनके नाम के साथ बाघमारे क्यों लगाया गया।" कितना मर्यादा का ध्यान है।

वह फूट फूट कर रोये–

श्री पं० नरेन्द्र जी के नाम पर वहां सभा भवन बनाने के लिए अपील की गई। अपील करने के लिए आप ही आगे आए। महान् बलिदानी नरेन्द्र की चर्चा छेड़ते ही खड़े खड़े फूट फूट कर रोने लगे। उनकी इस सहृदयता वा भावुकता का सब पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि इन पंक्तियों के लेखक सहित सैंकड़ों स्त्री पुरुषों के नयन सजल हो गये।

(शेष ४ पर)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बावरा मोहल्ला रोहतक

प्रधान—श्री जयपाल आर्य, उपप्रधान—श्री जयचन्द, मन्त्री—श्री केसरदास आर्य, उपमन्त्री—आनन्दसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—महेन्द्रपाल, पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामदयाल।

आर्यसमाज भुरथला जिला रोहतक

प्रधान—गुरदयालसिंह, उपप्रधान—माहलाराम, मन्त्री—सरपंच सुरेन्द्रसिंह, उपमन्त्री—गणपतसिंह, कोषाध्यक्ष—सरजीतसिंह, निरीक्षक श्री भगवान् सिंह।

आर्यसमाज मुवाना जिला जीन्द

प्रधान—श्री कर्णसिंह, उपप्रधान—श्री नन्दुसिंह, मन्त्री—जोरसिंह, उपमन्त्री—निहालचन्द, कोषाध्यक्ष—नारायणदत्त शर्मा, प्रचारमन्त्री—सुरजभान, पुस्तकाध्यक्ष—श्री राजपाल।

आर्यसमाज अकालगढ जिला जीन्द

प्रधान—अजीतसिंह पूनियां, उपप्रधान—उमेदसिंह दलाल, मन्त्री श्री घासीराम सोलंकी, उपमन्त्री—श्री सूरजमल दलाल, कोषाध्यक्ष—श्री बारूराम बाजीत।

आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रधान—धर्मवीरसिंह विद्यालंकार, उपप्रधान—फूलकंवार, मन्त्री कृष्णपाल, उपमन्त्री—गंगाप्रसाद वशिष्ठ, कोषाध्यक्ष—उदयसिंह

आर्यसमाज बिलासपुर जिला अम्बाला

प्रधान—रामचन्द्र आर्य, उपप्रधान—जयप्रकाश आर्य (रिटायरड रेलवे इन्जीनियर) मन्त्री—रूवेलसिंह आर्य भजनोपदेशक, उपमन्त्री—कुलदीप आर्य, कोषाध्यक्ष—डा० अशोककुमार आर्य।

आर्यसमाज चरखीदादरी जिला भिवानी

संरक्षक—दुलीचन्द गुप्ता, प्रधान—सत्यनारायण शर्मा, उपप्रधान—विजयकुमार गुप्ता, मन्त्री—हुकमचन्द आर्य, उपमन्त्री—श्री हरिश्चन्द्र लाम्बा, कोषाध्यक्ष—श्यामसुन्दर अध्यापक, उपकोषाध्यक्ष—सतीश कुमार, याज्ञिक—महाशय कृष्णचन्द्र, वेदप्रचारमन्त्री—नेवराज।

आर्यसमाज श्रद्धानन्दपुरम (अर्बन एस्टेट) जिला गुड़गांव

प्रधान—ओमप्रकाश आर्य, उपप्रधान—शान्तिप्रकाश बिशनोई, मन्त्री—श्री सोमदत्त आर्य, प्रचारमन्त्री—सेवक रामदास, कोषाध्यक्ष—शीतल चावला, पुस्तकाध्यक्ष—पुरुषोत्तमदास लेखानिरीक्षक—सतपाल आर्य।

आर्यसमाज कीर्तिनगर नई दिल्ली—१५

प्रधान—शिवभगवान लाहौटी, उपप्रधान—रामलाल कथूरिया, श्री दयानन्द, हंसराज सहगल, मन्त्री—विश्वपाल, उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्र बुद्धिराजा; राजेन्द्र ओबरायै। कोषाध्यक्ष—गोपीनाथ ईसर, पुस्तकाध्यक्ष जितेन्द्र प्रकाश निभावन, भण्डाराध्यक्ष—डा० निरंजनदेव नारंग, लेखा निरीक्षक—वेदप्रकाश कथूरिया।

आर्यसमाज सान्ताकुंज पश्चिम बम्बई—५४

प्रधान—देवेन्द्रकुमार कपूर, उपप्रधान—सोहनलाल दुग्गल एवं ओंकारनाथ, महामन्त्री—कैप्टन देवरत्न आर्य, मन्त्री—विश्वभूषण आर्य एवं बालचन्द आर्य, कोषाध्यक्ष—कस्तूरीलाल मदान।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल शहर

नायक—सुरेशचन्द आर्य, उपनायक—शिवकुमार आर्य, मन्त्री—संजीव आर्य, उपमन्त्री—रमेश आर्य, संगठन मन्त्री—यशपाल आर्य कार्यालयाध्यक्ष—कमलकुमार आर्य।

आर्यसमाज हांसी जिला हिसार

प्रधान—जयकिशनदास आर्य, उपप्रधान—हंसराज आर्य; रामकर्ण आर्य, अमोरसिंह आर्य, मन्त्री—सतीशकुमार, उपमन्त्री—विजयकुमार कोषाध्यक्ष—वीरभान, सहायक कोषाध्यक्ष—राजेन्द्र आर्य, पुस्तकाध्यक्ष भरतलाल शर्मा एम० ए० पुरोहित।

आर्यसमाज साँजरवास जि० भिवानी

प्रधान—जगदीशचन्द आर्य, मन्त्री—सत्येन्द्रसिंह आर्य, कोषाध्यक्ष—श्री राजकुमार आर्य।

स्त्री आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र

प्रधान—श्रीमती सुशीला देवी, उपप्रधाना—यशोबाला, मन्त्री—सावित्री देवी, उपमन्त्री—रोशनी देवी, कोषाध्यक्षा—रुक्मिणी देवी।

सावित्री देवी मन्त्री

श्री रामगोपाल शालवाले के निवास स्थान पर आतंकवादियों के चक्कर

दिल्ली ४ सितम्बर।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की एक प्रेस विज्ञप्ति में यह बताया गया है कि सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के कृष्णनगर दिल्ली स्थित निवास पर कुछ सिख आतंकवादियों ने २ सितम्बर को मध्याह्न दो तीन चक्कर लगाए और मकान का ऊपर से नीचे तक निरीक्षण किया। आतंकवादियों की संख्या कुल छः थी जो एक कार में बैठे हुए थे। श्री शालवाले के सुरक्षा पुलीस गार्द जवानों ने उन्हें रोकने और पूछने का प्रयत्न किया तो वे भाग गए।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने इस घटना की सूचना प्रधान मन्त्री और गृहमन्त्री को देते हुए आशंका प्रकट की है कि बाहर के उग्रवादी लगता है अब दिल्ली में पहुंचकर आतंकवाद पैदा करने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने इसके लिए सरकार से सुरक्षा की बड़ी व्यवस्था का अनुरोध किया है और ऐसी दशा में पंजाब तथा अन्य स्थानों पर सुरक्षात्मक कार्रवाइयों में ढील न देने की ओर भी सरकार का ध्यान खींचा है।

प्रचार विभाग सार्वदेशिक सभा दिल्ली

सौ वर्ष से पहले की बात

डा० रणजीतसिंह सभा मन्त्री

संन्यास आश्रम में दीक्षित होने के उपरान्त स्वामी दयानन्द सरस्वती अपनी सारी शक्ति योगाभ्यास एवं विद्याध्ययन में लगा दी। इसी हेतु वे भिन्न भिन्न महात्माओं और स्थानों पर भी गए। एक बार सच्चे योगियों की खोज में घूमते हुए वे हिमालय के ओखीमठ नामक स्थान पर गये, मन्दिर के महन्त ने जब सुना कि कोई युवा, तेजस्वी साधु पर्वत से उतरकर नीचे आ रहे हैं तो उन्होंने अपने आदमियों से कहा कि ऐसे दर्शनीय साधु को मन्दिर में ले आओ।

ओखीमठ के महन्त ने युवा संन्यासी का बहुत आदर सत्कार किया। बातचीत में उन्होंने जान लिया कि यह कोई सामान्य साधु नहीं है। अतः वे उस पर मुग्ध हो गए और मन में संकल्प कर बैठे कि इस साधु को मैं अपना उत्तराधिकारी बनाऊंगा। प्रातःकाल होते ही युवा संन्यासी स्वामी दयानन्द जो मठ से चलने की तयारी करने लगे। इस बात को जानकर मठ के महन्त ने स्वामी जी से कहा—चलते हो, इतनी शीघ्रता क्या है। कुछ दिन और ठहरिए। सच बात तो यह है कि यदि आप मेरा शिष्य बनना स्वीकार करें तो इस मन्दिर की सारी की सारी आय आपकी होगी। आपको इधर-उधर भटकना न होगा और मान-सम्मान में भी वृद्धि होगी।

इन बातों को सुनकर स्वामी दयानन्द ने कहा—मेरे पिता की सम्पत्ति आपकी पूजा-पाठ से कमाई गई पूंजी से कहीं अधिक है। मैंने जब उसे ही मिट्टी के ढेले के समान छोड दिया तो आपकी गद्दी, कौन-सा कुबेर का धन है, जिसमें मैं बन्ध जाऊं। मेरे और आपके उद्देश्य में अन्तर है। आपका उद्देश्य पराये चढावे से उदरपूर्ति करना और मान-सम्मान प्राप्त करना है और मेरा उद्देश्य तत्वज्ञान द्वारा मुक्त प्राप्ति है। अतः ऐसी स्थिति में चेला बनना तो दूर रहा, मेरा आपके पास रहना भी असम्भव है। महन्त जी अपनी आशा के विपरीत संन्यासी के मुख से लक्ष्मी के प्रति तिरस्कार के वचन सुनकर स्तब्ध रह गए। धन्य है! हे योगीश्वर तेरे त्याग के प्रति।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक से छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ७२८७४, ७८४२३, ७८४

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी साप्ताहिक



आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४० २१ सितम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

जन साधारण को आत्म रक्षा के लिए हथियारों के लाईसेन्स दिये जायें

—प्रो० शेरसिंह

पंजाब में पुनः आंतकवाद फैलने पर हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने अपने वक्तव्य में कहा है कि पंजाब में उग्रवादियों द्वारा फिर एक वर्ग लोगों को छांट कर मारने की घिनोनी घटना ने यह सिद्ध कर दिया है कि केवल सरकारी सुरक्षा बलों से साधारण लोगों के जान-माल की रक्षा सम्भव नहीं है। पंजाब सरकार का आत्म रक्षा के लिए जन-साधारण को हथियारों के लाईसेन्स उदारता पूर्वक देने चाहिये और वहां के लोगों को भी अपनी रक्षा खुद करने के लिए तैयार होना चाहिये।

दुःख की बात यह है कि एक वर्ग के लोगों को दूसरे वर्ग के लोगों से बचाने में रुचि समाप्त होती जा रही है उस रुचि को फिर से जगाना होगा। यह काम जन-प्रतिनिधियों और सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं का है। सरकार को भी अपने सुरक्षा इन्तजाम मजबूत करने होंगे। यदि आंतकवादियों का सम्पर्क और सीमा के आर-पार आना जाना बन्द नहीं हुआ और उनकी गतिविधियां चलती रही तो राष्ट्र की सुरक्षा को गम्भीर खतरा उत्पन्न हो सकता है। पंजाब की सीमाओं की रक्षा के लिए अधिक फौज रखना आवश्यक हो गया है। नागरिक शासन से चाहे फौज धीरे-धीरे वापिस हट जाये, परन्तु सीमाओं को जो खतरा हो गया है उसके लिए पंजाब के क्षेत्र में अधिक सेनाओं का तैनात करना अनिवार्य हो गया है।

पंजाब की बेकसूर जनता और राष्ट्र की सुरक्षा के लिए जिन घटनाओं से खतरा बढ़ता है। उनकी भर्त्सना करनी चाहिये और पंजाब हरयाणा व हिमाचल की जनता को हड़तालों आदि के द्वारा अपना रोष प्रकट करना चाहिये।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

विदेशों में वैदिक धर्म प्रचारार्थ—

स्वामी ओमानन्द सरस्वती सिंहापुर, इण्डोनेसिया आदि की यात्रा

आर्य जगत् के त्यागी तपस्वी आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" वेद के आदेशानुसार २१ सितम्बर को प्रातः वायुयान से सिंहापुर प्रस्थान कर रहे हैं। उनके साथ उनके दो ब्रह्मचारी श्री विरजानन्द जी तथा श्री रामवीर जी भी होंगे और सिंहापुर के पश्चात् इण्डोनेशिया, जावा तथा सुमात्रा आदि देशों में वैदिक धर्म का प्रचार करेंगे। श्री स्वामी जी भारी संख्या में वैदिक साहित्य के वितरण के साथ-साथ प्रवचन भी करेंगे तथा उनके ब्रह्मचारी यौगिक प्रदर्शनों का आयोजन करेंगे। स्वामी जी ५ अक्तूबर को स्वदेश लौटेंगे।

स्वामी जी द्वारा प्रचार कार्य का विवरण सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

पितृ यज्ञ

[श्राद्ध और तर्पण]

(ले० डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री)

श्राद्ध की परिभाषा—

१- पितृ यज्ञ के दो भेद हैं, एक श्राद्ध और दूसरा तर्पण। 'श्रत्' सत्य का नाम है, श्रत्=सत्यं दधाति यथा क्रियया सा श्रद्धा, श्रद्धया यत् क्रियते तत्—श्राद्धम्। जिस क्रिया से सत्य का ग्रहण किया जाए उसको 'श्रद्धा' कहते हैं और जो 'श्रद्धा' से कर्म किया जाए उसका नाम 'श्राद्ध' है।

२- विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों की श्रद्धा पूर्वक सेवा करना 'श्राद्ध' कहाता है।

तर्पण की परिभाषा—

"तर्पेन कर्मणा विदुषो देवान्, ऋषिन्, पितृँश्च तर्पयन्ति=सुखयन्ति तत् तर्पणम्" जिस कर्म से विद्वान् रूप देव, ऋषि और पितरों को तृप्त करते हैं, सो 'तर्पण' कहाता है।

२- "तृप्यन्ति, तर्पयन्ति येन पितृ तत् तर्पणम्"। जिस जिस कर्म से तृप्त अर्थात् विद्यमान माता पिता आदि पितर प्रसन्न हों और प्रसन्न किए जाएं, उसका नाम तर्पण है।

यह श्राद्ध और तर्पण कर्म विद्यमान अर्थात् जीते हुए, जो प्रत्यक्ष हैं, उन्हीं में घटता है, मरे हुओं में नहीं। क्योंकि मृतकों का प्रत्यक्ष होना असम्भव है, इसलिए उनकी सेवा नहीं हो सकती, तथा जो कोई उनके लिए पदार्थ देना चाहे वह भी उनको नहीं मिल सकता। इसलिए केवल विद्यमानों की ही श्रद्धा पूर्वक सेवा करने का नाम श्राद्ध और तर्पण वेदों में कहा है। क्योंकि सेवा करने योग्य और सेवक इन दोनों के ही प्रत्यक्ष होने से यह सब काम हो सकता है, दूसरे प्रकार से नहीं।

तीन सत्कार के योग्य—

श्राद्ध और तर्पण से सत्कार करने योग्य तीन हैं—देव, ऋषि और पितर। इनकी व्याख्या निम्नलिखित है—

देव तर्पण—

१- "विद्वांसो हि देवाः" यह शतपथ ब्राह्मण का वचन है। जो विद्वान् हैं उन्हीं को देव कहते हैं। जो साङ्गोपाङ्ग चार वेदों को जानने वाले हों, उनका नाम 'ब्रह्मा' और जो उनसे न्यून पढ़े हों उनका भी नाम 'देव' अर्थात् विद्वान् है। उनके सदृश उनकी विदुषी स्त्री ब्राह्मणी देवी, और उनके तुल्य पुत्र और शिष्य तथा उनके सदृश उनके गण अर्थात् सेवक हों, जो उनकी सेवा करना है, उसका नाम देव श्राद्ध और देव तर्पण है। देवों में प्रमाण—

पुनन्तु मा देवजनाः पुनन्तु मनसा धियः।
पुनन्तु विश्वा भूतानि जातवेदः पुनीहि मा॥

यजु० १९।३९॥

(शेष पृष्ठ २ पर)

हे जातवेद! परमेश्वर! आप सब प्रकार से मुझे पवित्र कीजिए। और जो आपके उपासक, आपकी आज्ञा का पालन करते हैं, अथवा जो कि विद्वान् ज्ञानी पुरुष कहाते हैं, वे मुझे विद्या-दान से पवित्र करें। और आपके दिए विशेष ज्ञान से वा आपके विषय के ध्यान से हमारी बुद्धियां पवित्र हों। सब संसारी जीव आपकी कृपा से पवित्र होकर आनन्द में रहें।

मनुष्यों के दो भेद—

दो लक्षणों के पाए जाने से मनुष्यों की दो संज्ञा होती हैं, अर्थात् एक देव और दूसरी मनुष्य। उनमें यह भेद होने के सत्य और झूठ दो कारण हैं "सत्यमेव देवाः, अनृतं मनुष्याः" जो कोई सत्य भाषण, सत्य स्वीकार और सत्य कर्म करते हैं, वे 'देव' कहाते हैं। और जो झूठ बोलते हैं, झूठ मानते हैं और झूठ कर्म करते हैं, वे मनुष्य कहाते हैं। इसलिए झूठ को छोड़कर सत्य को प्राप्त होना, सबको उचित है। इस कारण से बुद्धिमान् लोग सदा सत्य ही कहें, मानें और करें। क्योंकि सत्यव्रत का आचरण करने वाले जो देव हैं, वे कीर्तिमानों में भी कीर्तिमान् होकर सदा आनन्द में रहते हैं। परन्तु उनसे विपरीत चलने वाले मनुष्य दुःख को प्राप्त होकर सब दिन पीड़ित ही रहते हैं। इससे सत्यधारी विद्वान् ही देव कहाते हैं।

ऋषि तर्पण—

जो ब्रह्मा के प्रपौत्र मरीचि आदि ऋषियों के सदृश विद्वान् होकर पढ़ावें, और जो उनके सदृश विद्यायुक्त उनकी स्त्रियां कन्याओं को विद्या दान देवें, उनके तुल्य पुत्र, शिष्य तथा उनके समान उनके सेवक हों उनकी सेवा और सत्कार करना 'ऋषितर्पण' कहाता है। इसमें प्रमाण:—

(क) त यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरुष जातमग्रतः।
तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च ये ॥ य० ३१।९ ॥

जो सब से पृथक् प्रकट था, जो सब जगत् का बनाने वाला है, और सब जगत् में पूर्ण हो रहा है, उस यज्ञ अर्थात् पूजने के योग्य परमेश्वर को मनुष्य हृदय रूप आकाश में अच्छे प्रकार से प्रेमभक्ति, सत्याचरण करके पूजन करता है, वही उत्तम मनुष्य है। ईश्वर का यह उपदेश सबके लिए है। उसी परमेश्वर के वेदोक्त उपदेशों से (देवाः) विद्वान् (साध्याः) ज्ञानी लोग (ऋषयः) ऋषि लोग जो वेदमन्त्रों के अर्थ जानने वाले (च) और अन्य भी मनुष्य जो परमेश्वर के सत्कारपूर्वक सब उत्तम ही कर्म करते हैं, वे ही सुखी होते हैं।

(ख) अथ एवानुब्रुवीत० ॥ शत० १।७।२।३ ॥

जो सब विद्याओं को पढ़कर औरों को पढ़ाता है, वह 'ऋषि कर्म' कहाता है, और उससे जितना मनुष्यों पर ऋण हो, उस सबको निवृत्ति उनकी सेवा करने से होती है। इससे जो नित्य विद्या-दान, अनुग्रह और सेवा कर्म करता है, यही परस्पर आनन्द कारक है और यही व्यवहार विद्या-कोष का रक्षक है।

(ग) आर्षेयं प्रवृणीते ॥ शत० १।४।२।३ ॥

विद्या पढ़कर सबको पढाने वाले ऋषियों और देवों की प्रिय पदार्थों से सेवा करने वाला विद्वान् बहुत पराक्रम युक्त होकर विशेष ज्ञान को प्राप्त होता है। इससे आर्षेय अर्थात् ऋषिकर्म को सब मनुष्य स्वीकार करें।

पितृ तर्पण—

सोमसद्। अग्निष्वात्त। बर्हिषद। हविर्भुक। आज्यपा। सुकाली। यम। पिता। पितामह। प्रपितामह। माता। पितामही। प्रपितामही। स्वपत्नी, सम्बन्धी। सगोत्र इत्यादि पितर कहाते हैं। इनकी व्याख्या निम्नलिखित है—

सोमसद्—ये सोमे=जगदीश्वरे पदार्थ विद्यायों च सीदन्ति ते सोमसदः। जो परमात्मा की प्राप्ति और पदार्थ विद्या में निपुण हों वे 'सोमसद्' नामक पितर कहाते हैं (आध्यात्मिक तथा वैज्ञानिक लोग)।

अग्निष्वात्त—यैरग्नेर्विद्युतो विद्या गृहीता तेऽग्निष्वात्ताः। जो अग्नि अर्थात् विद्युत् आदि पदार्थों के जानने हारे हों वे 'अग्निष्वात्त' पितर कहाते हैं (विद्युत् विभाग के कर्मचारी)।

बर्हिषद्—ये बर्हिषि=उत्तमे व्यवहारे सीदन्ति ते बर्हिषदः। जो उत्तम विद्यावृद्धि युक्त व्यवहार में स्थित हों वे 'बर्हिषद्' पितर कहाते हैं। (शिक्षा विभाग के कर्मचारी)

सोमपा—ये सोममैश्वर्यमोषधिरसं वा पान्ति पिबन्ति वा ते सोमपाः जो ऐश्वर्य के रक्षक और महौषधि-रस का पान करने से स्वयं रोगरहित और अन्यों के ऐश्वय के रक्षक तथा औषधियों को देकर रोगनाशक हों वे 'सोमपा' पितर कहाते हैं (रक्षा विभाग तथा चिकित्सा विभाग के कर्मचारी)।

हविर्भुक्—ये हविर्होतुमत्तुमह भुञ्जते भोजयन्ति वा ते हविर्भुजः। जो मादक और हिंसाकारक द्रव्यों को छोड़कर भोजन करने हारे हैं वे हविर्भुक पितर कहाते हैं। (मद्य आदि का सेवन न करने वाले शाकहारी)।

आज्यपा—य आज्यं=ज्ञातुं प्राप्तुं वा योग्यं रक्षन्ति वा पिबन्ति ते आज्यपाः। जो जानने व प्राप्त करने के योग्य वस्तु के रक्षक और घृत दुग्ध आदि खाने और पीने हारे हैं वे 'आज्यपा' पितर कहाते हैं (वस्तु आगार के रक्षक तथा घृत-दुग्ध का सेवन करने वाले जन)।

सुकाली—शोभनः कालो विद्यते येषां ते सुकालिनः। जिनका अच्छा धर्म करने का सुख रूप समय हो वे 'सुकाली' पितर कहाते हैं (धर्मात्मा लोग)।

यम—ये दुष्टान् यच्छन्ति=निगृह्णन्ति ते यमाः=न्यायाधीशाः। जो दुष्टों को दण्ड और श्रेष्ठों का पालन करने हारे न्यायकारी हों वे 'यम' नामक पितर हैं (न्यायाधीश लोग)।

पिता—यः पाति स पिता। जो सन्तानों का अन्न और सत्कार से रक्षक वा जनक हो वह 'पिता' नामक पितर है।

पितामह—पितुः पिता पितामहः जो पिता का पिता हो वह 'पितामहः' नामक पितर है (दादा)।

प्रपितामह—पितामह स्य पिता प्रपितामहः। जो पितामह का पिता हो वह 'प्रपितामह' नामक पितर है। (परदादा)।

माता—या मानयति सा माता। जो अन्न और सत्कारों (लाड़ प्यार) से सन्तानों का मान करे वह 'माता' नामक पितर है।

पितामही—या पितुर्माता सा पितामही। जो पिता की माता हो वह 'पितामही' नामक पितर है। (दादी)।

प्रपितामही। जो पितामह की माता हो वह 'प्रपितामही' नामक पितर है (परदादी)।

स्वपत्नी—अपनी स्त्री स्वपत्नी नामक पितर है।

भगिनी—अपनी बहिन तथा धर्म-बहिन आदि 'भगिनी' नामक पितर हैं।

सम्बन्धी—भाई, चाचा, चाची, ताऊ, ताई, मामा, मामी, नाना, नानी आदि 'सम्बन्धी' नामक पितर हैं।

सगोत्र—अपने गोत्र के लोग 'सगोत्र' नामक पितर हैं।

भद्रपुरुष—सब का कल्याण एव सुख चाहने वाले 'भद्रपुरुष' नामक पितर हैं।

वृद्ध—विद्या, बल, धन तथा आयु की दृष्टि से बड़े लोग 'वृद्ध' नामक पितर कहाते हैं।

इन सबको अत्यन्त श्रद्धा से उत्तम अन्न, वस्त्र, सुन्दर यान आदि देकर अच्छे प्रकार तृप्त करना अर्थात् जिस जिस कर्म से उनकी आत्मा तृप्त हो और शरीर स्वस्थ रहे उस उस कर्म से प्रीति पूर्वक उनकी सेवा करना है, वह श्राद्ध और तर्पण कहाता है। —क्रमशः

शराब तथा दहेज विरोधी सम्मेलनों में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह के भाषण

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षावाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने १४ सितम्बर रात्रि को आर्यसमाज रोहणा जि० रोहतक, १६ सितम्बर को आर्यसमाज सेवा सदन बल्लबगढ जि० फरीदाबाद १८ सितम्बर को दोपहर बाद आर्यसमाज गढी बोहर तथा रात्रि को आर्यसमाज मोखरा १९ को आर्यसमाज मदानी जि० रोहतक में शराब तथा दहेज विरोधी सम्मेलनों में भाषण देते हुए उपस्थित नर-नारियों से अनुरोध किया कि शराब तथा दहेज जैसी भयानक बुराइयों को दूर करने के लिए ग्रामों में पंचायतों का आयोजन करें तथा शराब पीने वालों तथा विवाह-शादियों के अवसर पर दहेज देने तथा लेने वालों का सामाजिक बहिष्कार करें एवं उन पर जुर्माना करके उस राशि को ग्राम के सामाजिक कार्यों में लगाकर उसका सदुपयोग करें। जिन ग्रामों में शराब के ठेके हैं, उन्हें बन्द कराने के लिए धरना देकर उनकी बिक्री बन्द करने का यत्न करें ताकि ठेकेदार स्वयं अपनी बोतलें उठाकर ग्राम छोड़ जावें।

पंचायतों को परामर्श देते हुए कहा कि अपने ग्रामों से शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए दिसम्बर मास तक अपने प्रस्ताव पारित करके हरयाणा सरकार को भेज देवें ताकि वहां अगले वर्ष से ठेका न उठाया जाये।

इन सम्मेलनों में सभा की भजन मण्डलियों पं० तेजपाल तथा पं० मुन्शीलाल के भी शराब तथा दहेज की बुराईयों पर भजन हुए।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी का आगामी सम्मेलनों पर कार्यक्रम निम्न प्रकार है।—

आर्यसमाज खरखोदा जि० सोनीपत २३ सितम्बर प्रातः ११ बजे
,, हुमायूंपुर जि० रोहतक ,, ,, दोपहर बाद ३ बजे
,, आसन जि० रोहतक ,, ,, रात्रि ९ बजे
,, टिटोली जि० रोहतक प्रातः ११ बजे २४ सितम्बर
,, सांघी जि० रोहतक रात्रि ९ बजे ,,
,, भटगांव जि० सोनीपत ३० ,,
सिद्धान्ती जी की ८४वीं वर्षी (जयन्ती) सिद्धान्ती भवन रोहतक ४ अक्तूबर
महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह ५ से ७ ,,
आर्यसमाज पानीपत जि० करनाल स्थापना समारोह १२ से १४ ,,
आर्यसमाज मारिशस (पूर्वी अफ्रीका) २० से ३० ,,

खेद प्रकाशन

आचार्य प्रिंटिंग प्रैस जहां सर्वहितकारी प्रकाशित होता है, अचानक प्रेस कर्मचारियों की हड़ताल हो जाने के कारण १४ सितम्बर का सर्वहितकारी केवल ४ पृष्ठों का ही छप सका। पाठक तथा ग्राहक महानुभाव इस विवशता पर क्षमा करें। सम्पादक

सिद्धान्ती जयन्ती पर पाणिनीय व्याकरण पर गोष्ठी

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की विद्या सभा की ओर से प्रति वर्ष की भांति आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री की ८४ वीं जयन्ती पर ४ अक्तूबर दशहरा के पर्व पर सिद्धान्ती भवन दयानन्दमठ रोहतक में पाणिनीय व्याकरण में वैदिक उद्धरण तथा जन पद विषय पर विद्वानों की गोष्ठी का आयोजन हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से किया जा रहा है।

— संयोजक यज्ञवीर
(संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक)

हरयाणा में आर्यसमाजों के वार्षिक उत्सवों के कार्यक्रम

आर्यसमाज फरल जि० कुरुक्षेत्र (फलगू मेला) २२, २३, २४ सितम्बर
,, रेलवे रोड सिरसा २२, २३, २४, ,,
आर्यसमाज माडल टाउन सोनीपत २१ से ३० ,,
आर्यसमाज भट गांव जि० सोनीपत २५ से ३० सितम्बर
,, फतेहपुर जि० कुरुक्षेत्र २८ से ३० ,,
,, बेरी जि० रोहतक ३० सितम्बर से १ अक्तूबर

जो आर्यसमाजें अक्तूबर मास में अपने उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार कार्यक्रम रखना चाहते हैं, उनसे निवेदन है कि वे अपनी तिथियां नियत करके शीघ्र सभा को सूचित करें ताकि सभा की ओर से उपदेशकों तथा भजन मण्डलियों का समय पर प्रबन्ध किया जा सके।

— रणजीतसिंह सभा मन्त्री

आर्यसमाज मन्दिर बीवां का निर्माण

२-९-८४ को आर्यसमाज मन्दिर बीवां (गुड़गावां) का भवन निर्माण कार्य पूर्ण होने पर उत्सव का कार्यक्रम बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुआ।

आर्य वेद प्रचार मण्डल मेवात के प्रधान श्री सतपाल जी आर्य ने मन्दिर में प्रवेश करके उद्घाटन की रस्म अदा की, प्रधान जी ने मन्दिर के निर्माणार्थ पांच हजार रु० (५००० रु०) दान देकर दो माह पहले ही आधारशिला रखी थी, स्थानीय सभी कार्यकर्ताओं ने इतने थोड़े समय में मन्दिर निर्माण करके अभूतपूर्व लगन, उत्साह का परिचय दिया, लगातार वर्षा होते हुए भी मण्डल के उपदेशक श्री मंगलदेव जी भजनीक व आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डली पं० सुमेरसिंह जी के प्रचार में जनता ने बढ़-चढ़कर भाग लिया तथा बहुत प्रभाव पड़ा।

बीमा कस्बे के नजदीक ग्राम चाटा बसई में भी मेवात मण्डल के सभी पदाधिकारियों ने पहुंचकर बन रहे आर्य समाज मन्दिर का निरीक्षण किया तथा मण्डल के प्रधान जी ने ग्यारह सौ रुपये दान देने की घोषणा की, ग्रामवासियों ने सभी लोगों का भरपूर हार्दिक स्वागत किया। मन्त्री

सुविचार—

क्रोधी व्यक्ति का मुख तो खुला रहता है किन्तु नेत्र बन्द रहते हैं।

—कीटो

सर्वहितकारी

21 सितम्बर, 84

राष्ट्रीय एकता और राष्ट्रपति शासन पद्धति

शासन पद्धति के बारे में आज देश में फिर से बहस चल पड़ी है। उधर राष्ट्रीय एकता का सवाल भी गम्भीर होता जा रहा है। संसदीय लोकतन्त्र के चलते देश में अनेक समस्याएं उठ खडी हुई हैं, और ऐसा लगने लगा है कि इस पद्धति में जो विकृतियां आ गई हैं उनके रहते लोकतन्त्र और राष्ट्रीय एकता दोनो ही खतरे में पड सकते हैं।

अंग्रेजों के शासन काल में ही संसदीय प्रणाली चालू हो गई थी, इसी लिए उसी को अधिक लोकतन्त्रात्मक बनाकर कायम रखना सुलभ था। इस में शक नहीं कि हमारा संविधान एक उत्तम राजनीतिक दस्तावेज है और संविधान के निर्माताओं ने भारत की परिस्थितियों, परम्पराओं तथा आकांक्षाओं को ध्यान में रखकर काफी प्रावधान भी किये थे। परन्तु जब अमल शुरु होता है तब संविधान के उद्देश्यों की पूर्ति में आडे आने वाले अनेक व्यवधानों और समस्याओं का अनुभव होता है। इसी लिए संविधानों में लचीलापन रखना जरुरी होता है। संविधान में संशोधन करने और जरुरी हो तो बुनियादी ढग के संशोधन करने को न तो संविधान के अपमान की ओर न ही दिग्गजों के अनुभवपूर्ण परिष्कृत विचारो की अवहेलना की सज़ा दी जा सकती है। संविधान साधन मात्र है, साध्य तो भारत के जन-जन को स्वस्थ एवं गरिमापूर्ण जीवन प्रदान करना ही है।

संसदीय लोकतन्त्र की पद्धति में स्वतः में कोई त्रुटि नहीं है। यदि विधायिका, कार्यपालिका और न्याय पालिका अपनी अपनी सीमाओं में रहते हुए, संविधान की मान्यताओं और उद्देश्यों की पूर्ति में एक दूसरे का सहयोग करें और पारस्परिक संतुलन में स्थायित्व बना रहे तो यह पद्धति निस्सन्देह उत्तम है। इसी भावना और संभावना से देश के महान मनीषियों ने संसदीय लोकतान्त्रिक पद्धति पर आधारित संविधान की रचना की। संविधान के लागू होने के पश्चात् सात आम चुनाव भारत में हो चुके है और शक्ति का हस्तांतरण बडे सहज और सरल भाव से होता रहा है। प्रदेशों में तो रंग बिरंगी सरकारें बनती ही रहीं, केन्द्र में भी 1977 में पहली बार कांग्रेस के स्थान पर जनता सरकार बनी और तीन वर्ष के भीतर ही 1980 में कांग्रेस की पुनः सरकार बन गई। 1977 और 1980 दोनो ही अवसरो पर शक्ति का हस्तातरण जिस सहजता से हुआ, उससे संसार के बहुत से राष्ट्र चकित हो गए। अनेक देशों के राजनीतिज्ञों के मनो में यह शका रही कि भारत में लोकतन्त्र के रहते विकास की गति बहुत धीमी होगी और यहां का लोकतन्त्र चरमरा जाएगा। परन्तु भारत की जनता ने यह सिद्ध कर दिया कि उनके हृदयो में लोकतन्त्र के प्रति गहरी आस्था है और लोग परम्परा से ही अपने सांस्कृतिक मूल्यों से इतने सिंचित है कि जो बात दूसरे सास्कृतिक वातावरण में पले लोगो को अत्यन्त कठिन और असम्भव सी लगती है, वह भारत में बड़ी सहजता और स्वाभाविकता से हो जाती है। गांधी जी के नेतृत्व में लड़ी गई भारत की आजादी की लड़ाई भी तो निराली ही थी!

अब संसार के सभी लोग मानने लगे हैं कि भारत में लोकतन्त्र की जडे बहुत गहरी हैं। जो काम चीन ने तानाशाही के रास्ते से अपने नागरिकों का जीवन ऊंचा उठाने और राष्ट्र की धाक और साख जमाने में किया, उससे कोई बहुत कम काम भारत ने लोकतन्त्र की सरणि

(शेष पृष्ठ 5 कालम 3 पर)

वेद प्रचार मंडल—

जिला कुरुक्षेत्र के बढ़ते कदम

—महाशय भरतसिंह वानप्रस्थ

आर्य समाज के कार्य को कुरुक्षेत्र जिला में और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए तथा युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी के सन्देश को जन जन तक पहुंचाने के लिये कुरुक्षेत्र जिला में किसी प्रभावशाली संगठन की आवश्यकता काफी लम्बे समय से थी। यद्यपि आवश्यकता तो सभी जिलों में प्रचार हेतु जिला सगठनों की है। इस लिए कुछ जिलों में प्रचार को अधिक प्रभावी बनाने के लिए भी कुछ कार्य हुआ है। अगर आर्य समाजों का जिला, तहसील स्तर पर गठन होगा तो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का सगठन और अधिक मजबूत होने की सम्भावना है। धार्मिक और ऐतिहासिक नगर कुरुक्षेत्र में अमर शहीद हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित गुरुकुल के होने के कारण जिला कुरुक्षेत्र का विशेष ऐतिहासिक महत्व है। मण्डल में पहले कुरुक्षेत्र नगर में एक प्रभावशाली आर्य समाज है। आज से तीस वर्ष पहले भू. पू. पुलिस अधीक्षक चौ. सत्यदेव सिंह जी के गुरुकुल के प्रधान बनने पर न केवल गुरुकुल में ही प्रगति हुई बल्कि आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ। इन्ही की प्रेरणा से गत वर्ष सुयोग्य आर्य युवक श्री धर्मदेव विद्यार्थी के नेतृत्व में जिला भर में 100 युवकों द्वारा प्रचार यात्रा का आयोजन किया जिस के माध्यम से जिला भर में एक सप्ताह में 25 जलसो द्वारा आर्य समाज का भारी प्रचार हुआ। परिणामस्वरुप 31 जुलाई 1983 को जिला भर की सभी आर्य समाजों के लगभग 150 प्रतिनिधियों ने मिलकर मण्डल का गठन किया जो आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का पूर्ण सहयोग करता रहेगा।

इसके प्रधान प्रसिद्ध आर्य समाजी श्री कृष्ण लाल वधवा तथा श्री बिशन सिंह एडवोकेट और धर्मदेव विद्यार्थी महामन्त्री व मन्त्री चुने गए। इन्ही को दोबारा फिर सर्वसम्मति से चुना गया। इन महानुभावों ने स्वामी रुद्रवेश की भजनमण्डली द्वारा जिला भर में प्रचार की धूम मचा दी। स्थान स्थान पर एक वर्ष में लगभग 100 से अधिक जलसे किये जिनमें श्री सत्यदेव सिंह श्री कृष्ण लाल वधवा, श्री बिशन सिंह जी व प्रो. भागसिंह आर्य तथा विद्वान आचार्य देवव्रत जी ने स्वयं पहुंच कर वेद प्रचार किया व अनेकों नई आर्य समाजें स्थापित कीं।

महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह अजमेर के अवसर पर पूज्य स्वामी ओमानन्द जी के आह्वान पर मण्डल के कार्यकर्त्ताओं ने दिन रात एक कर 9 बसे तथा एक मैटाडोर लोगों की भरकर शताब्दी में पहुंचा कर आर्य जगत को चकित कर दिया साथ मे 21 हजार रुपये तथा 55 बोरी आटा, दाल, चावल एकत्रित कर अजमेर की शताब्दी को सफल बनाने मे भारी योगदान दिया।

चौ सत्यदेवसिंह जी द्वारा गुरुकुल कुरुक्षेत्र मे प्रति छः मास पश्चात् आर्य वीर दल का शिविर लगाने के कारण युवको मे आर्य समाज का भी प्रचार हुआ। जिसके कारण गुरुकुल कुरुक्षेत्र का इस वर्ष का वार्षिकोत्सव आशा से अधिक सफल रहा। इन सभी शिविरो का निर्देशन सार्वदेशिक आर्य वीर दल के प्रधान उपसेनापति डा. देवव्रत जी आचार्य करते है। अब तक 6 शिविर लगाये गए हैं। मण्डल द्वारा भी 20 मई से 10 जून तक सार्वदेशिक आर्य वीर दल का एक विशाल शिविर डा देवव्रत व्यायामाचार्य के निर्देशन मे सम्पन्न हुआ जिसमें देहात भर के युवको ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमे पूज्य स्वामी ओमानन्द जी ने दीक्षान्त भाषण कर उभरती युवा शक्ति को आशीर्वाद दिया।

सामाजिक कुरितियो के निवारणार्थ मडल द्वारा दहेज तथा शराब विरोधी फार्म छाप कर हस्ताक्षर अभियान चलाया जा रहा है। लोक चेतना हेतु जलसे व साहित्य को भी अधिकाधिक प्रचारित किया गया है।

इस समय मडल द्वारा शराब बन्दी आन्दोलन चलाया जा रहा है जिसमें चौ. सत्यदेव सिंह, श्री बिशन सिंह, ला. यशपाल जी, श्री शमशेर सिंह फरल, श्री उमेद शर्मा कैंथल एवं श्री युधिष्ठर पाल फतेहपुर आदि के प्रयास से इलाके मे प्रभावशाली मद्य सेवनकर्त्ताओं के घर पर धरना दिया जाता है तथा जलसे मे शराब छोड़ने की घोषणा करवाई जाती है। दिनाक 5-8-84 की वेद प्रचार

(शेष पृष्ठ 5 पर)

नारी जगत—

समाज में नारी

—ब्र० दर्शना आर्या
कन्या गुरुकुल खरल, जीन्द।

प्राचीन भारत के इतिहास के पृष्ठ भारतीय विरांगनाओं की गौरव पूर्ण कीर्ति से भरे हुये हैं। 'गृहिणी गृहमित्याहुः न गृहं गृहमुच्यते' अर्थात् गृहिणी से ही घर होता है, बिना गृहिणी के घर को घर नही कहा जा सकता। नारी गृहस्थ जीवन रुपी नौका की पतवार होती है। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' के अनुसार जिस घर मे नारी की पूजा अर्थात् रक्षा होती है उस घर में एक तरह मे देवता निवास करते हैं।

भारतीय नारी का स्वरुप पहला गृहलक्ष्मी का होता है और दूसरा विनाश कारिणी काली का। यदि नारी चाहे तो घर को स्वर्ग बना सकती है और यदि चाहे तो घर को घोर नरक का रुप भी दे सकती है। नारी से केवल घर का ही बेड़ा पार नही होता है ये समाज और देश की भी कल्याणकारिणी होती है। नारी वीर प्रसवा माता के रुप मे देश के माना जाता हैं। जितना नाव के लिए पतवार का और खेतों के लिए जल का होना जरुरी है उतना ही समाज में नारी का। पतवार के बिना नाव भटक जाती है। जल के बिना खेती सूख जाती है। उसी प्रकार नारी के बिना जीवन स्रोत सूख जाता है।

त्याग इसका स्वभाव, प्रदान धर्म, सहनशीलता इसका व्रत और प्रेम इसका जीवन है। समाज के आचरण को बनाना, घर का प्रबन्ध करना, सहनशील्ता से जीवन की कठीन यात्रा को सरल तथा सुखी बनाना स्त्री का ही कार्य होता है।

परन्तु ससार परिवर्तनशील है। देश की स्वतन्त्रता के साथ 2 समाज मे चरित्र का भी अपहरण होता आ रहा है। नारियो का प्रेम, बलिदान तथा सर्वस्य समर्पण करने की भावना भी इनके लिए आज जहर की गोली बन गई है क्योकि

★ कन्या विद्यालय खोल देने से इनकी समस्या हल नहीं हो सकती। ★ शिक्षा प्रणाली में धर्म, सदाचार तथा व्यवहारिक ज्ञान के विषयों का समावेश होना अति आवश्यक है। ★ नारी दर्द भरा गीत है। ★ एक दुर्बोध प्रश्न, इससे बढ़कर न राजा है, न सन्यासो

रक्षक वीर पुत्रो को जन्म देती है। ये भक्त माताए ऐसी सन्तान को पैदा करती हैं जो कि भवसागर म डूबे हुए असख्य प्राणीयो को अपने ज्ञान और भक्ति के उपदेशो से पार लगा देते है।

ये विदुषी माता उन मेधावी पुत्रो को जन्म देती है जो अपनी विद्वता के आगे दूसरो को खडा नही रहने देते। ये त्यागी माताए ऐसे दानी पुत्रों को जन्म देती है जो अपना सर्वस्व देश और समाज की भलाई के लिए बलिदान कर देते हैं। भारतीय माता के बारे मे तो कहा भी गया है कि—

"नदियां भी यहाँ दूध पिला सकती हैं,
जल स्पर्श से मुर्दों को जिला सकती है।
वह देश है वह देश जहाँ माताए,
देवताओं को गोदी में खिला सकती हैं"।

वास्तव में यदि देखा जाए तो जितने भी देश में त्यागी, तपस्वी, देशभक्त, ऋषि-मुनी बने हैं उन सबका श्रेय नारी को ही जाता है या आधुनिक समय मे भारतीय पति की दृष्टि में नारी केवल एक सेविका मात्र है। समाज के अन्दर नारी के ऊपर अनेक कठोर प्रतिबन्ध लगाये जाते है जबकि पुरुष वर्ग पर कुछ भी रोक टोक नही होती है।

पति के दुराचार, अन्याय, अत्याचारो को नारी एक गूंगे पशु की तरह सहन करती रहती है। पति देवता की सेवा, बच्चो का पालन पोषण, किसका विवाह हुआ है, किसके घर बच्चा हुआ है, केवल इन्ही बातो तक ही नारी की सामाजिक भावना बनी रहती है।

विज्ञान क्या है, ससार क्या है। मानव किन परिस्थितियों में से गुजर रहा है। इन बातों से इनका विशेष सम्बन्ध नहीं होता है। ये तो केवल घर की ही दासी बनी रहती है। यदि हमने अपने देश, राष्ट्र को, समाज को ऊंचा उठाना है तो सबसे पहले नारी को आदर्श बनाना पड़ेगा।

नारी आदर्श तभी बन सकती है जब इनको शिक्षित किया जायेगा। केवल कन्या विद्यालय या महाविद्यालयों को खोल देने से ही इनकी शिक्षा की समस्या हल नही हो सकती जब तक शिक्षा प्रणाली मे धर्म सदाचार तथा व्यवहारिक ज्ञान के विषय मे नही बताया जायेगा। आज नारी को जो शिक्षा दी जा रही है वो तो इनको पतन के गड्ढे मे गिराने वाली है। आज नारी के अन्दर धर्माचरण के स्थान पर पापाचरण घर करता जा रहा है। आज नैतिक पतन के समुन्द्र मे गिरती जा रही है। इस आर्यावर्त देश भारत को विदुषी विरांगनाओं की आवश्यकता है।

नारी के विषय मे कहा गया है कि—

,,नारी तुम केवल श्रद्धा हो,
विश्वास रजत नग तल मे।
पीयूष स्त्रोत सी बहा करो,
जीवन सुन्दर समतल मे"॥

पति के लिए चरित्र, सन्तान के लिए प्यार, दुनिया के लिए दया और जीव मात्र के लिए करूणा सजोने वाली नारी ही होती है। नारी दर्द भरा गीत है, दुर्बोध प्रश्न है, वह धरती की बेटी है इससे बढ़कर न राजा है न सन्यासी।

स्वामी विवेकानन्द जी कहते थे कि–नारी ब्रह्म विद्या है श्रद्धा है शक्ति है, पवित्रता है, कला है वह सब कुछ है जो इस प्रकार सर्वश्रेष्ठ सौंदर्य के रुप दृष्टि गोचर होता है। वह अन्धकार युग था जिसमे सामन्तों का बोलबाला था उन्ही दुर्दिनों की देन है कि नारी देवी के सिंहासन से उतर कर कैदियों से भी गई गुजरी हालत मे पहुंचा दी गई है।

राष्ट्रपति शासन पद्धति...

(पृष्ठ 4 कालम 2 का शेष)

पर चल कर नहीं किया। इसलिए यह कहना यथार्थ ही है कि लोकतन्त्र का प्रयोग भारत मे सफल रहा है। परन्तु इसका यह अर्थ कदापि नही कि ससदीय लोकतान्त्रिक पद्धति से भी उतनी ही सफल रही है। गत 30 वर्षो मे किये गए संसदीय लोकतान्त्रिक पद्धति के प्रयोग का विश्लेशण करने पर स्पष्ट हो जाएगा कि इसके कारण शासन और जन-जीवन मे जो बुराइया और विकृतिया आती जा रही है, यदि समय रहते उन्हें रोका नही गया तो न केवल राष्ट्र की उन्नति ही अवरुद्ध हो जाएगी। बल्कि लोकतन्त्र का अस्तित्व भी सकट म पड जाएगा। ससदीय लोकतान्त्रिक पद्धति के कारण पिछले 35 वर्षों मे मुख्यतया पाँच बुराइयां हमारे प्रशासन और जन-जीवन मे आ गई हैं और उनके कारण प्रशासन चलाने वालों की विश्वसनीयता जनमानस मे क्षीण होती जा रही है। यदि यह प्रक्रिया चलती रही, तो इस व्यवस्था पर लोगों का भरोसा नहीं रह सकेगा। इस प्रकार यदि लोकतन्त्र एक बार लडखड़ा गया तो उसका पुनरुद्धार असम्भव हो जाएगा। पाकिस्तान इस का जीता जागता उदाहरण है।

(क्रमश)

—प्रो० शेर सिंह

वेद प्रचार के बढ़ते कदम

(पृष्ठ 4 कालम 4 का शेष)

मण्डली की बैठक मे उपस्थित मण्डल के सहयोगी रोड महा सभा के प्रधान नू. पू. एस. डी. एम चौ० रणधीर सिंह जी ने बैठक में घोषणा की कि रोड़ बिरादरी के सभी गाँवों में पूर्णत: शराब बन्दी करवाई जाएगी। यह अच्छा कदम है अगर सभी बिरादरियां इसे अपनाए तो देश मे पूर्ण शराब बन्दी सम्भव हो सकती है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा द्वारा कुरुक्षेत्र की पवित्र धरती पर महर्षि दयानन्द वैदिक धाम तथा दयानन्द मार्किट का निर्माण किया जिसका उद्घाटन आर्य जगत के उच्च कोटि के सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती द्वारा 10 जून को समारोहपूर्वक किया गया। कुरुक्षेत्र मे दयानन्द वैदिक धाम बनने से न केवल जिला भर मे बल्कि समस्त प्रान्त मे प्रचार की अधिक सम्भावना बढी है। इसके निर्माण मे कुरुक्षेत्र की आर्य जनता का भारी सहयोग मिल रहा है। निश्चय ही यह आर्य समाज का मुख्य केन्द्र सिद्ध होगा।

अब तक दयानन्द मार्किट मे 20 दुकाने बन कर तैयार हो गई है जिनकी आय केवल प्रचार कार्य पर ही व्यय होगी तथा शेष 50 दुकाने बन जाने पर सभा का वेद प्रचार विभाग अत्याधिक मजबूत होकर स्वावलम्बी हो जायेगा। ★

आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र द्वारा ऐतिहासिक कदम

रविवार दिनांक २ सितम्बर को आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र के नवनिर्वाचित अधिकारियों द्वारा स्त्री आर्यसमाज की स्थापना करके एक सर्वथा नया एवं ऐतिहासिक कदम उठाकर अपना प्रथम महत्त्वपूर्ण कार्य प्रारम्भ किया।

इस शुभावसर के दिन प्रातःकाल पं० तुलसीराम जी एम० ए० पी० एच० डी० तथा समाज प्रधान श्री धर्मवीर विद्यालंकार की अध्यक्षता में विशेष यज्ञ व बाहर से पधारे अनेकों लोगों व समस्त गुरुकुल कर्मचारियों का यज्ञोपवीत संस्कार किया गया। आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र के इतिहास में यह सर्वथा एक नया प्रयास था। तत्पश्चात् आर्यसमाज के पदाधिकारियों व सदस्यों के अनथक अहर्निश प्रयास से अपराह्न तीन बजे स्त्री आर्यसमाज की स्थापना पूर्व सभामन्त्री महाशय भरतसिंह जी तथा वर्तमान सभामन्त्री डा० रणजीतसिंह जी की देख-रेख की गई।

यज्ञ के ब्रह्मा पद को कुरुक्षेत्र के आचार्य पं० देवव्रत जी शास्त्री ने सुशोभित किया। आचार्य जी ने सभी स्त्रियों को यज्ञोपवीत धारण कराए तथा समस्त यज्ञ-विधियां उन्हीं के कर-कमलों से पूर्ण कराई।

समारोह के मुख्य आकर्षण आर्यजगत् में विख्यात भजनोपदेशक युगल दम्पत्ति प० जोरावरसिंह जी व माता प्रभावती जी रहीं। जिन्होंने अपने भजनों व उपदेशों से सभी को आनन्द विभोर किया।

कार्यक्रम के अपने अध्यक्षीय भाषण में महाशय भरतसिंह जी ने स्त्री समाज को पूरी तरह सभी प्रकार का सहयोग व सहायता देने का आश्वासन दिया तथा इस स्त्री आर्यसमाज को स्थापना करने के लिए पुरुष आर्यसमाज प्रधान श्री धर्मवीर विद्यालंकार व मन्त्री श्री कृष्णपाल जी की भूरि-२ प्रशंसा की तथा भविष्य में भी इसी प्रकार के नए-२ कार्य करने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के अन्त में आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान श्री धर्मवीर विद्यालंकार द्वारा सभी आगत महानुभावों का धन्यवाद किया गया।

तत्पश्चात् शान्तिपाठ के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

कृष्णपाल
मन्त्री आर्यसमाज गुरुकुल कुरुक्षेत्र

जीन्द में वेद प्रचार मण्डल का गठन

सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार हेतु आर्यसमाज जीन्द शहर, आर्यसमाज जीन्द जंक्शन तथा आर्यसमाज रोहतक रोड रामनगर के सभासदों द्वारा सर्व सम्मत्ति से वेद प्रचार मण्डल, जीन्द का गठन किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य आस पास के क्षेत्र में धार्मिक जागृति लानी है।

वेद प्रचार मण्डल जीन्द का चुनाव निम्न सभासदों को उत्तरदायित्व देते हुए सम्पन्न हुआ।

प्रधान :—श्री धर्मवीर जी आर्य। संयोजक :— श्री इन्द्रसिंह जी शास्त्री। सदस्य :—सर्व श्री बद्रीप्रसाद जी आर्य, छबीलदास जी आर्य, देशराज जी आर्य, वैद्य श्री राम जी, श्री प्रतापसिंह जी शास्त्री, श्री साधुराम जी आर्य, श्री हरगोविन्द जी आर्य, श्री देवराज जी आर्य।

संयोजक :—इन्द्रसिंह शास्त्री

आर्यसमाज भटगांव जिला सोनीपत का उत्सव

सोनीपत ९ सितम्बर वेद प्रचार मण्डल सोनीपत के कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक दिनांक ९ सितम्बर को ग्राम भटगांव जि० सोनीपत में श्री सूरजमल आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में निर्णय किया गया कि आर्यसमाज भटगांव में वार्षिकोत्सव २१ से २३ सितम्बर के स्थान पर २८ से ३० सितम्बर को धूमधाम से किया जाये।

उत्सव पर आर्यसमाज के उच्च नेताओं को आमन्त्रित किया गया है और इस अवसर पर वेद सम्मेलन, सम्मेलन तथा समाज शराबबन्दी सुधार आदि सम्मेलन होंगे।

महेन्द्रसिंह आर्य

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई द्वारा वेद प्रचार

आर्यसमाज सान्ताक्रुज बम्बई में वेद प्रचार सप्ताह १२-८-८४ से १९-८-८४ तक उत्साह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण महायज्ञ का भी आयोजन किया गया।

पूर्णाहुति के पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान आदरणीय लाला रामगोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता में राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

प्रो० बलराज मधोक ने मुख्य अतिथि पद को सुशोभित किया। इस समारोह में आचार्य आर्य नरेश श्रीमती राकेशरानी अध्यक्षा दयानन्द संस्थान दिल्ली, प्रो० बलराज मधोक अध्यक्ष भारतीय जनसंघ, श्री सियाराम "निर्भय" आरा (बिहार) श्री कल्याण सुन्दरम् प्रधान आर्यसमाज मद्रास, आदि के भाषण एवं भजनोपदेश हुए। समारोह का संयोजन आर्यसमाज के महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य ने किया। इस अवसर पर श्रीमती राकेशरानी को हिन्दु जाति की सेवार्थ सम्मान स्वरूप आर्यसमाज सान्ताक्रुज की ओर से १५०१ रु० का चैक भी भेण्ट किया गया।

मुख्य अतिथि पद से बोलते हुए प्रो० बलराज मधोक ने कहा राष्ट्र को धर्म से ऊपर मानने वालों को ही इस देश में रहने का अधिकार है। समस्त हिन्दु एक सूत्र में संगठित होकर राजनीति पर अपना प्रभाव डालें इसके लिए हिन्दु संगठनों का सांझा मंच "राष्ट्रीय हिन्दु मंच" बनाया गया है जिसमें सहयोग करना हर भारतीय का कर्त्तव्य है।

माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले ने अपने अध्यक्षीय भाषण में आर्यसमाज द्वारा राष्ट्रीय एकता में योगदान विषय पर जोशीले भाषण में बोलते हुए उग्रवादियों द्वारा श्रीनगर आर्यसमाज मन्दिर एवं कन्या विद्यालय को ध्वस्त किये जाने पर उग्रवादियों और जम्मु काश्मीर की तत्कालीन सरकार का तीव्र विरोध किया। उन्होंने कहा हमारे मन्दिरों को नष्ट कर हमारी भावनाओं को उभारा गया है। ऐसी स्थिति में सरकार सक्रिय हस्तक्षेप कर मन्दिरों को अपने कोष से पुनर्निर्माण कर हिन्दुओं की भावनाओं का सम्मान करें अन्यथा इसके दुरगामी परिणाम हो सकते हैं। उन्होंने जोरदार शब्दों में सरकार से अपील की हैदराबाद में साम्प्रदायिक दंगों की आड़ में हिन्दुओं की सम्पत्तियों पर आक्रमण हो रहा रहा है व उन्हें नष्ट किया जा रहा है। सरकार उनकी सम्पत्तियों को वापिस करे व नष्ट हुई सम्पतियों का मुआवजा दें व समस्त हिन्दुओं को जो गिरफ्तार हुए हैं उनके रिहा करने करने के आदेश जारी करे। उन्होंने कहा आर्यसमाज हिन्दु जाति का प्रहरी रहा है और मैं सरकार को याद दिलाना चाहता हूं कि हम अपने कर्त्तव्य को नहीं भूले हैं।

इस अवसर पर महामन्त्री कैप्टिन देवरत्न आर्य द्वारा निम्न प्रस्ताव रखे गये जिसे उपस्थित विशाल जन सभा ने अपने दोनों हाथ खड़े कर ओम् ध्वनि के साथ पारित किया।

प्रस्ताव सं० १ :—यह सभा प्रस्ताव पारित करती है कि काश्मीर में डाक्टर फारूक अब्दुल्ला की सरकार और उग्रवादी अकाली एवं पाकिस्तानी एजेन्टों द्वारा २७ हिन्दु मन्दिरों को तोड़-फोड़ विशेषकर आर्यसमाज मन्दिर हजूरी बाग एवं देवकी आर्य कन्या विद्यालय को जलाकर करोड़ों रुपये की सम्पत्ति को भस्मसात कर दिया है। यह सम्मेलन भारत सरकार एवं काश्मीर को जी० एम० शाह सरकार से अनुरोध करता है कि जिस प्रकार अकाल तख्त की मरम्मत के लिए सरकार सहायता कर रही है उसी प्रकार इन मन्दिरों की मरम्मत के लिए भी आर्थिक सहायता देकर पुनर्निर्माण में योगदान करे।

प्रस्ताव सं० २ यह सभा प्रस्ताव पारित करती है कि पिछले कई माह से हैदराबाद के पुराने शहर में मुस्लिमों द्वारा दंगे भड़काये जाने के कारण अनेक हिन्दुओं जो निरपराध थे गिरफ्तार किया गया और उनकी सम्पत्ति को लूटा गया है, उन हिन्दुओं को तुरन्त रिहा किया जाए और उनके मुकदमें वापिस कर उनकी नष्ट सम्पत्ति का उचित मुआवजा दिया जाए।

कैप्टिन देवरत्न आर्य
महामन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

कन्या गुरुकुल पंचगांव को दान

मै० इण्डियन ट्रांस्पोर्ट कम्पनी सिलीगुड़ी ११०० रुपये
सेठ श्री कन्हैलाल जी काकड़ोली वाले महावीर स्थान सिलीगुड़ी ११००
सेठ श्री हरिराम गुप्त बंगाल इन्टरप्राइजिज, सिवक रोड ,, ११००
सेठ श्री रामावतार मै० लालचन्द रामावतार नेहरु रोड, ,, ११००
मै. बी. एस. बी. के. ब्यूल हार्न बोकारो स्टील सीटी ,, ११००
सेठ श्री मुरारीलाल जी कृष्णकुमार जी चास जि. धनबाद, बिहार ११००
सेठ श्री हेमराज जी, श्री शिवदयाल जी देवरालिया
(श्री ओम् भण्डार कपड़ पट्टी) झरिया जि. धनबाद ११००
सेठ श्री सुरेन्द्रकुमार गोयल (बंगाल प्लाइवुड एजेंसी) सिलीगुड़ी ७०१
सेठ श्री जवाहरलाल जी आनन्ददेव जी आर्य देवरालिया ,, ७०१
सेठ रामविलास जी सीताराम जी खपकड़ी वाले ,, ५०१
तथा प्रति मास नलकूप व बिजली का खर्च
सेठ श्री रामशरणदास जी छोटेलाल जी (कल्याण कंस्ट्रक्शन)
सी-३६ मोटी सेन्टर सैक्टर-४ बोकारो स्टील सीटी ५०१
सेठ श्री महावीर प्रसाद आर्य सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री सत्यनारायण किशनकुमार सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री नारंगलाल जी रामपुरिया ,, ५०१
सेठ श्री रामजीलाल श्री केदारमल जी ,, ५०१
सेठ श्री रामकुमार श्री कैलाशचन्द ,, ५०१
सेठ श्री हरचन्दराम जी डालमिया (कन्हीराम शिवदत्तराय)
नेहरू रोड, सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री पालीराम जी पालमपुरिया (हिन्द ट्रेडर्स कार्पोरेशन)
एस. पी. मुखर्जी मार्ग, सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री कुन्दनमल मानहेरू वाले (विष्णु स्टोर)
मगतुराम कम्पाउण्ड सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री हरनारायण जी रामपुरिया सिलीगुड़ी ५०१
मै० गर्ग इन्टरप्राजिज नलोई वाले ,, ५०१
सेठ श्री मसानीलाल किसनलाल (एम. एल. अग्रवाल एण्ड ब्रा०)
चर्च रोड सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री प्रेम जी रालवासिया (इकोनोमिक ट्रांन्सपोर्ट आर्गेनाइजेशन
सिलीगुड़ी ५०१
श्रीमती मेवादेवी गुरेरे वाले सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री सुरजमल जी चुन्नीलाल महावीर स्थान सिलीगुड़ी ५०१
सेठ श्री लालचन्द मदनलाल जी ,, ,, ५०१
मै० नरेश टी कम्पनी ,, ,, ५०१
मै० अलका कंस्ट्रक्शन बोकारो सीटी धनबाद ५०१
श्री मती सुरुचि बोकारो स्टील ,, ,, ५०१
सेठ बी. एस. अग्रवाल चास, जि० ,, ५०१
बिसराम बारू एण्ड कम्पनी बोकारो सिटी धनबाद ५०१
कुलदीप टाकीज चास, जिला धनबाद ५०१
प्रकाश फैंसी स्टोर पसरीचा गन्नोर झरिया ५०१
सेठ श्री चन्दगीराम श्री हरिराम लालवासिया कलकत्ता ५००
सेठ श्री रामकिशन जी गोयल सिलीगुड़ी ४०१
सेठ श्री अमूरीलाल जी पवन टी कम्पनी सिलीगुड़ी २५१
सेठ श्री सत्यनारायण जी गुरेरिया नेहरू रोड, सिलीगुड़ी २५१
बहिन सत्यबाला जी सुपुत्री पं० रतिराम जी शर्मा देवरालिया
सिलीगुड़ी २५१
,, राजबाला जी सुपुत्री पं० रतिराम जी शर्मा देवरालिया ,, २५१
मै० हेर्लिया रोड़वेज सिलीगुड़ी २५१

क्रमशः

वेद प्रचार मण्डल कुरुक्षेत्र द्वारा

ऐतिहासिक प्रचार यात्रा

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी करनाल के अवसर पर धर्म और राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए देहात भर में एक सौ एक आर्य वीरों द्वारा विशाल जन जागरण यात्रा का आयोजन किया जा रहा है जिसमें निम्नलिखित गावों में भारी जनसभाएं और शोभायात्राएं निकाली जायेंगी यात्रा में आर्यजगत् के उच्चकोटी के सन्यासी विद्वान् व नेता भी जनसभाओं को सम्बोधित करेंगे।

तिथि	प्रातः	दोपहर	रात्रि
29-9-84	कंथल	नितरम	हरसोला
30-9-84	रनोगल	माजरा	शेखदा
1-10-84	भाणा	करोड़ा	पाई
2-10-84	फतेहपुर	पुण्डरी	बरसाना
3-10-84	सांच	रसोना	बस्तली
4-10-84	ओगद	गोन्दर	दादुपुर
5-10-84	डी. ए. वी. कालेज करनाल के विशाल मैदान में		

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा करनाल द्वारा आयोजित महर्षि बलिदान शताब्दी समारोह उपरोक्त गावों के अतिरिक्त रास्ते के सभी गावों में शोभायात्राएं होंगी।

नोट :—जनजागरण यात्रा में भाग लेने के इच्छुक तथा किसी प्रकार का भी आर्थिक सहयोग देने के इच्छुक महानुभाव गुरुकुल कुरुक्षत्र कार्यालय से सम्पर्क करें। यात्रा कार्यक्रम में परिवर्तन का अधिकार सयोजक का होगा। सयोजक

धर्मदेव विद्यार्थी

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह

आर्य समाज बड़ा बाजार पानीपत जिला करनाल हरयाणा प्रदेश में पुराने आर्यसमाजों में माना जाता है। इस समाज ने कई नेता तैयार किए हैं।

इस आर्यसमाज का स्थापना शताब्दी समारोह ६ अक्तूबर से वृहद यज्ञ के साथ आर्य महाविद्यालय निकट बस अड्डा पानीपत के प्रांगण में आरम्भ होगा। इसमें वैदिक विद्वान् भाग ले रहे हैं।

समारोह की तैयारी के लिये सभा की भजन मण्डलियां—पं० चिरजीलाल तथा प० मुन्शीलाल ग्रामों में प्रचार कर रही हैं। मुख्य समारोह १२ से १४ अक्तूबर को होगा जिसमें आर्यसमाज के प्रमुख विद्वान् तथा नेता भाग ले रहे है। —रामानन्द सिगला संयोजक

राष्ट्रपति शासन प्रणाली का औचित्य

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने अपने एक वक्तव्य में श्री बसन्त साठे तथा २१ सांसदों द्वारा प्रस्तुत राष्ट्रपति शासन प्रणाली की माग का स्वागत करते हुए कहा है कि यह मांग आर्यसमाज ने कई वर्ष पूर्व व्यक्त कर दी थी।

श्री शालवाले ने देश मे व्याप्त नैतिक, सामाजिक और राजनैतिक भ्रष्टाचार, नैतिक मूल्यो के अवमूल्यन, प्रशासनिक अस्थिरता, ढील, अकुशलता की ओर ध्यान आकर्षित करते हुए यह भी कहा कि—

वोटो की खातिर तुष्टीकरण की नीति से साम्प्रदायिक और अलगाववादी तत्त्वों के होसले बढ़े हुए है।

इसी के फलस्वरूप उपद्रवों एवं कुक्रों के रचने की हिम्मत बढ़ रही है। इसके अतिरिक्त निजी स्वार्थ (देशहित के लिए नही) की सिद्धि और सत्ता प्राप्ति के लिए नाममात्र के अनेक राजनैतिक दलों का विस्तार हो रहा है। इसी के एक दुष्परिणामस्वरूप बहुसख्य हिन्दुओं के हितों की बलि चढ़ाई जा रही है।

विदेश नीति की विकृति से विदेशी कुचक्र देश में पनप रहे हैं।

जिनसे देश की अखण्डता, एकता को ही नहीं अपितु देश की आजादी को भी खतरा पैदा होगया है। इस सबके परिपेदय में इस प्रणाली के अपनाए जाने का औचित्य सहज ही प्रतिपादित हो जाता है।

श्री शालवाले ने यह भी कहा कि वोटों को राजनीति के कारण प्रत्याशियों को धनपतियों एव सम्प्रदायवादियों के तलुवे सहलाने पड़ते हैं जिसके कारण देश का दूरगामी अहित होता रहा है और जनता के साथ अन्याय भी होता है।

राष्ट्रपति शासन प्रणाली के अन्तर्गत एक राष्ट्राध्यक्ष चुना जाता है। वेदों में स्थल-स्थल पर उसे इन्द्र की संज्ञा देकर राष्ट्राध्यक्ष के साथ सर्वोच्च सेनाध्यक्ष भी वर्णित किया गया है। ऐसे राष्ट्राध्यक्ष को राजद्रोह का अपराध प्रमाणित होने के सिवा उसे अवधि के भीतर हटाया नहीं जा सकता है। वह देश के योग्य व्यक्तियों के मन्त्रीमण्डल का गठन करने में स्वतन्त्र होता है और उसे लोकसभा के सदस्यों की ओर मुंह ताकने की जरूरत नही होती।

अन्त में सभा प्रधान ने कहा कि कोई भी संविधान अपने में अच्छा-बुरा नहीं होता, यह तो उसके कार्यान्वियन करनेवालों की योग्यता, ईमानदारी, देशभक्ति और संचालन-कुशलता पर निर्भर होता है और इसी से यह अच्छा बुरा बनता है। अतः अधिनायकवाद की आशंका करना समुचित नही है। आवश्यकता इस बात की है कि चरित्रवान् राष्ट्रहितैषियों एवं योग्य व्यक्तियों के हाथ में ही देश का शासन-सूत्र रहे तभी प्रगति एव स्थिरता देश में आ सकेगी और देश की स्वतन्त्रता चिरस्थायी रह सकेगी।

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह

प्रान्तीय स्तर पर महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह का आयोजन 5,6,7 अक्तूवर, 1984 को करनाल में निश्चित किया गया है। इस अवसर पर मुख्यमन्त्री, हरयाणा सरकार भी इस सम्मेलन की अध्यक्षता करेंगे। पाँच-पाँच सौ युवक तथा युवतियों के विशेष शिविर 28-9-84 से 4-10-84 तक भिन्न-भिन्न स्थानों पर योग प्रशिक्षण के लिए लगेंगे।

इस अवसर पर महात्मा दयानन्द जी की अध्यक्षता में 1-10-84 से 7-10-84 तक वृहद् यज्ञ होगा तथा भव्य शोभा यात्रा 6-10-84 को सारे नगर से निकलेगी। समारोह में निःशुल्क शुद्ध देसी घी के भोजन की भी व्यवस्था है।

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा पंजि नं० 23207/73 पंजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र



प्रधान सम्पादक—डा० रणबीरसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ४० २८ सितम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा के उचित अधिकारों की बलि चढ़ाकर कोई समझौता अकालियों के साथ किया गया तो हरयाणा में आन्दोलन होगा

—प्रो० शेरसिंह

रोहतक २३ सितम्बर (कार्यालय संवाददाता द्वारा) हरयाणा रक्षा वाहिनी एवं आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने ग्राम आसन जिला रोहतक में २३ सितम्बर को आयोजित एक सम्मेलन में बोलते हुए भारत सरकार को सावधान किया कि पंजाब के अकाली बार बार आन्दोलन करके अपनी अनुचित मांग मनवा लेते हैं और समझौता करके स्वयं ही मुकर जाते हैं। उनके साथ जब कभी भी समझौता होता है उसमें हरयाणा ही घाटे में रहता है। यदि इस बार कोई ऐसा समझौता किया जिसमें हरयाणा के हितों की हानि होगी तो हरयाणा में इसका प्रतिकार करने के लिए प्रबल जन आन्दोलन होगा। हैरानी की बात है कि जबकि अकालियों के हस्ताक्षर और अकाल तख्त पर हरयाणा के नुमाइन्दों से बैठकर किए गये फैसले तथा सन्त फतहसिंह द्वारा हरयाणा को हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का के आधार पर दिये गये जनवरी १९७० के फैसले की बातें सरकारी सूत्रों द्वारा की जाती हैं। स्वयं अकालियों द्वारा माने गये फैसले को बदलने की बात सुनने और उसपर पुनः विचार करने से बढ़कर हरयाणा के साथ और कोई अन्याय नहीं हो सकता।

प्रो० साहब ने अपना भाषण जारी रखते हुए कहा कि रावी व्यास नदियों का फालतू पानी पाकिस्तान को भेजा जा रहा है जबकि हरयाणा का किसान पानी के लिए तरस रहा है। सतलुज यमुना लिंक नहर जिसके द्वारा पानी हरयाणा में आना है, अकाली उसकी खुदाई में रुकावटें डाल रहे हैं और भाखड़ा की नहर को दो बार काट चुके हैं। अकाली यह भी मांग कर रहे हैं कि सिरसा, फतेहाबाद, कैथल, कुरुक्षेत्र, अम्बाला, करनाल आदि को भी पंजाब में मिला दिया जाए ताकि खालिस्तान की सीमा बढ़ सके। इस प्रकार अकालियों की मांगें जहां हरयाणा विरोधी हैं, वहां राष्ट्र की एकता के लिए भी खतरा हैं।

प्रो० शेरसिंह ने हरयाणा की जनता को अपने हितों की रक्षा के लिए तैयार रहने का परामर्श देते हुए कहा कि पंचायतों से प्रस्ताव करके प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री भारत सरकार से अनुरोध करें कि अकालियों से समझौता करते समय हरयाणा के हितों की अनदेखी न की जाये। यदि अकालियों के दबाव में आकर उनकी अनुचित मांगें स्वीकार की गई तो हरयाणा के वीर किसान भी अपने हितों की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने में संकोच नहीं करेंगे। प्रो. साहब ने आसन की सभा से पूर्व आर्यसमाज खरखोदा में भी आर्य कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए सामाजिक बुराईयों को दूर करने के लिए जुट जाने का आह्वान किया।

खरखोदा तथा आसन में सभा की भजनमण्डली पं० सुमेरसिंह आर्य के शराब तथा दहेज विरोधी प्रभावशाली भजन हुए।

पितृ यज्ञ

[श्राद्ध और तर्पण]

(ले० डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री)

(गतांक से आगे)

यह श्राद्ध और तर्पण नामक कर्म गृहाश्रम में निरन्तर चलता रहता है किन्तु आजकल श्राद्ध एवं तर्पण के लिए आश्विन मास के प्रथम १५ दिन निर्धारित है। इनमें गृहस्थ लोग खीर आदि उत्तम भोजन बनाकर ब्राह्मणों को खिलाते हैं, और यह विश्वास करते हैं कि ब्राह्मणों को कराया यह भोजन हमारे पूर्वजों, दिवंगत पितरों को पहुँचता है और इससे उनका पालन-पोषण होता है। इसके पक्षपाती लोग गरुड़ पुराण को प्रमाण मानते हैं।

प्र०—क्या गरुड़पुराण झूठा है ?

उ०—हां! झूठा है।

प्र०—फिर मरे हुए जीव की क्या गति होगी ?

उ०—जैसे उसके कर्म हैं।

प्र०—जो यमराज राजा चित्रगुप्त मन्त्री तथा उसके बड़े भयंकर काजल के पर्वत के तुल्य शरीर वाले गण (सेवक) जीव को पकड़ कर ले जाते हैं, उसे पाप-पुण्य के अनुसार नरक या स्वर्ग में डालते हैं, उसके लिए दान, पुण्य, श्राद्ध, तर्पण और गोदान आदि वैतरणी नदी तरने के लिए करते हैं, ये सब बातें झूठ क्योंकर हो सकती है ?

उ०—(१) ये सब बातें पोप-लीला के गपोड़े हैं। जो अन्यत्र के जीव वहां जाते हैं, उनका धर्मराज तथा चित्रगुप्त आदि न्याय करते हैं तो वे यमलोक के जीव पाप करें तो दूसरा यमलोक मानना चाहिए कि वहां के न्यायाधीश उनका न्याय करें।

(२) यदि पर्वत के समान यम-गणों के शरीर हों तो दीखते क्यों नहीं ? और मरने वाले जीव को लेने में छोटे द्वार में उनकी एक अंगुली भी नहीं जा सकती तथा सड़क और गली में क्यों नहीं रुक जाते ? जो कहो कि वे सूक्ष्म देह भी धारण कर लेते हैं तो प्रथम पर्वत के समान बड़े बड़े हाड़ पोपजी के बिना अपने घर में कहां धरेंगे।

(३) जब जंगल में आग लगती है तब एक दम कीड़ी आदि जीवों के शरीर छूटते हैं। उनको पकड़ने के लिए असंख्य यम के गण (सेवक) आवें तो वहां अन्धकार हो जाना चाहिए। और जब जीवों को पकड़ने को दौड़ेंगे तब कभी उनके शरीर आपस में ठोकर खा जायेंगे, तो जैसे पहाड़ के बड़े-बड़े शिखर टूटकर पृथिवी पर गिरते हैं, वैसे उनके बड़े-बड़े अवयव गरुड़ पुराण के बांचने तथा सुनने वाले आंगण में गिर पड़ेंगे और वे दब मरेंगे। अथवा घर का द्वार अथवा सड़क रुक जाएगी तो वे कैसे निकल और चल सकेंगे।

(४) श्राद्ध, तर्पण, पिण्डदान उन मरे हुए जीवों को तो नहीं पहुंचता किन्तु मृतकों के प्रतिनिधि पोप जी के घर, उदर और हाथ में पहुंचता है। (शेष पृष्ठ २ पर)

(५) जो वैतरणी के लिए गोदान लेते हैं, वह तो पोप जी के घर में अथवा कसाई आदि के घर में पहुंचता है। वैतरणी पर गाय नहीं जाती। पुन: किस की पूंछ पकड़ कर तरेगा? और हाथ तो यहीं जलाया वा गाड़ दिया वह फिर पूंछ को कैसे पकड़ेगा? यहां एक दृष्टान्त इस विषय में अत्यन्त उपयुक्त है—

एक जाट था। उसके घर में एक गाय बहुत अच्छी और बीस सेर दूध देने वाली थी। दूध उसका बड़ा स्वादिष्ट होता था। कभी कभी पोप जी के मुख में भी पड़ता था उसका पुरोहित यही ध्यान कर रहा था कि जब जाट का बुड्ढा बाप मरने लगेगा तब इसी गाय को संकल्प करा लूंगा। कुछ दिनों में दैव योग से उसके बाप का मरण का समय आया। जीभ बन्द हो गई और खाट से भूमि पर ले लिया अर्थात् प्राण छोड़ने का समय आ पहुंचा। उस समय जाट के इष्ट मित्र और सम्बन्धी भी उपस्थित हुए थे। तब पोप जी ने पुकारा कि यजमान! अब तू इसके हाथ से गोदान करा। जाट दस रुपया निकाल, पिता के हाथ में रखके बोला—पढ़ो संकल्प। पोप जी बोला—वाह, वाह! क्या बाप बार-बार मरता है? इस समय तो साक्षात् गाय को लाओ जो दूध देती है, बुड्ढी न हो, सब प्रकार उत्तम हो, ऐसी गौ का दान करना चाहिए।

जाट जी—हमारे पास तो एक ही गाय है, उसके बिना हमारे लड़के-बालों का निर्वाह न हो सकेगा। इसलिए उसको न दूंगा। लो बीस रुपये का संकल्प पढ़ देओ, और इन रुपयों से दूसरी दुधारू गाय ले लेना।

पोप जी—वाह जी वाह! तुम अपने बाप से भी गाय को अधिक समझते हो। क्या अपने बाप को वैतरणी नदी में डुबा कर दु:ख देना चाहते हो? तुम अच्छे सुपुत्र हुए? तब तो पोप की ओर सब कुटुम्बी हो गए, क्योंकि उन सबको पहिले ही पोप जी ने बहका रखा था और उस समय भी इशारा कर दिया। सब ने मिलकर हठ से उसी गाय का दान उस पोप जी को दिला दिया। उस समय जाट कुछ भी नहीं बोला। उसका पिता मर गया और पोपजी बच्छा सहित गाय और दोहने की बटलोई को लेकर, अपने घर में गौ को बांधकर पुन: जाट के घर आया और मृतक के साथ श्मशान भूमि में जाकर दाह कर्म कराया। वहां भी कुछ-कुछ पोपलीला चलाई। पश्चात् दशगात्र सपिण्डी आदि कराने में भी उसको मूंडा। महाब्राह्मणों ने भी लूटा और भुक्कड़ों ने भी बहुत सा माल पेट में भरा अर्थात् जब सब क्रिया हो चुकी तब जाट ने जिस किसी के घर से दूध मांग-मूंग कर निर्वाह किया।

जाट चौदहवें दिन प्रातःकाल पोप जी के घर पहुंचा। देखा तो गाय दुह, बटलोई भर, पोप जी के उठने की तैयारी थी। इतने ही में जाट जी पहुंचे। उसको देख पोपजी बोला—आइये यजमान बैठिये।

जाट जी—तुम भी पुरोहित जी इधर आओ।

पोप जी—अच्छा! दूध धर आऊं।

जाट जी—नहीं, नहीं, दूध की बटलोई इधर लाओ। पोप जी बिचारे जा बैठे और बटलोई सामने धर दी।

जाट जी—तुम बड़े झूठे हो।

पोप जी—क्या झूठ किया।

जाट जी—कहो तुमने गाय किस लिए ली थी।

पोप जी—तुम्हारे पिता के वैतरणी तरने के लिए।

जाट जी—अच्छा तो तुमने वैतरणी नदी के किनारे पर गाय क्यों नहीं पहुंचाई? हम तो तुम्हारे भरोसे पर रहे और तुम अपने घर बांध बैठे। न जाने मेरे बाप ने वैतरणी में कितने गोते खाए होंगे?

पोप जी—नहीं, नहीं। वहां इस दान के पुण्य के प्रभाव से दूसरी गाय बनकर उसको उतार दिया होगा।

जाट जी—वैतरणी नदी यहाँ से कितनी दूर और किधर को ओर है?

पोप जी—अनुमान से कोई तीस करोड़ कोस है, क्योंकि उन्चास कोटि योजन पृथ्वी है, और दक्षिण नैर्ऋत्य दिशा में वैतरणी नदी है।

जाट जी—इतनी दूर से तुम्हारी चिट्ठी वा तार का समाचार गया हो, उसका उत्तर आया हो कि वहां पुण्य की गाय बन गई, और अमुक के पिता को पार उतार दिया, दिखलाओ।

पोप जी—हमारे पास गरुड़ पुराण के लेख के बिना डाक का तार वर्की दूसरा कोई नहीं।

जाट जी—इस गरुड़ पुराण को हम सच्चा कैसे मानें?

पोप जी—जैसे सब मानते हैं।

जाट जी—यह पुस्तक तुम्हारे पुरुखाओं ने तुम्हारी जीविका के लिए बनाया है। क्योंकि पिता को बिना अपने पुत्रों के कोई प्रिय नहीं। जब मेरा पिता मेरे पास चिट्ठी-पत्री वा तार भेजेगा। तभी मैं वैतरणी नदी के किनारे गाय पहुंचा दूंगा, और उनको पार उतार पुन: गाय को घर में लाकर, दूध को मैं और मेरे लड़के-बाले पिया करेंगे। लाओ! दूध की भरी बटलोई, गाय, बछड़ा लेकर जाट जी अपने घर को चला।

पोप जी—तुम दान देकर लेते हो, तुम्हारा सत्यानाश हो जाएगा।

जाट जी—चुप रहो। नहीं तो तेरह दिन लों दूध के बिना जितना दुःख हमने पाया है, वह सब कसर निकाल दूंगा।

तब पोपजी चुप रहे और जाट जी गाय बच्छड़ा ले अपने घर पहुंचे। जब ऐसे ही जाट जी के से पुरुष हों तो पोप लीला संसार में न चले।

(६) जो ये लोग कहते हैं कि दशगात्र पिण्डों से, दश अङ्ग सपिण्डी करने से शरीर के साथ जीव का मेल होके, अंगुष्ठ मात्र शरीर बनके; पश्चात् यमलोक को जाता है, तो मरते समय यमदूतों का आना व्यर्थ होता है। तेरह दिन के पश्चात् आना चाहिए जो शरीर बन जाता हो तो अपनी स्त्री, सन्तान और इष्ट मित्रों के मोह से क्यों नहीं लौट आता है?

प्रश्न—स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता। जो दान दिया जाता है, वही वहां मिलता है। इसलिए सब दान करने चाहियें।

उत्तर—उस तुम्हारे स्वर्ग से यही लोक अच्छा है। जिसमें धर्मशाला है, लोग दान देते हैं, इष्ट मित्र और जाति में खूब निमन्त्रण होते हैं, अच्छे अच्छे वस्त्र मिलते हैं। तुम्हारे कहने के अनुसार स्वर्ग में कुछ भी नहीं मिलता। ऐसे निर्दय, कृपण, कंगले स्वर्ग में पोप जी जाकर खराब होवें। वहां भले मनुष्यों का क्या काम?

प्रश्न—जब तुम्हारे कहने से यमलोक और यम नहीं हैं तो मर कर जीव कहां जाता है? और इसका न्याय कौन करता है?

उत्तर—तुम्हारे गरुड़ पुराण का कहा यमलोक और यम् अप्रमाण हैं। किन्तु वेद के प्रमाण से 'यम' नाम वायु का है देखो यजुर्वेद २१।१३।। ३१।१० ॥ २०।४)। शरीर को छोड़कर वायु के साथ अन्तरिक्ष जीव रहते हैं, और जो सत्यकर्त्ता तथा पक्षपात रहित परमात्मा है 'धर्मराज' है, वही सबका न्यायकर्त्ता है।

प्रश्न—तुम्हारे कहने से ऐसा सिद्ध होता है कि गोदान आदि किसी को न देना चाहिए और न कुछ दान, पुण्य करना चाहिए?

उत्तर—यह तुम्हारा कहना सर्वथा व्यर्थ है, क्योंकि सुपात्रों को एवं परोपकारियों को परोपकारार्थ सोना, चांदी, हीरा, मोती, माणिक, अन्न, जल, स्थान, वस्त्र आदि का दान अवश्य करना चाहिए किन्तु कुपात्रों को कभी न देना चाहिए।

—क्रमशः

सम्पादकीय:-

पांच विकृतियां

मन्त्रिमण्डलों के सदस्यों की संख्या तथा लाभ के पदों का अन्धा धुन्ध विस्तार

(गतांक से आगे)

संसदीय लोकतान्त्रिक प्रणाली में प्रधान मन्त्री तथा मुख्यमन्त्री संसद या विधान सभा में बहुमत प्राप्त दल के नेता ही बन सकते हैं। इस नेता को सदन तथा दल का नेता बना रहने के लिए दोनों जगह अपना बहुमत बनाए रखना पड़ता है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद कुछ समय तक संसद और विधान मण्डलों के सदस्यों में यह भावना रही कि वरिष्ठ तथा योग्य सदस्य ही मन्त्रिमण्डल में आ सकते हैं, इसलिए मन्त्रिमण्डलों में प्रवेशार्थियों की संख्या सीमित रहती थी। शेष सदस्य अपनी सदस्यता पर ही सन्तोष कर लेते थे और मांग होती थी केवल सदन की तथा सरकार द्वारा नामजद की जाने वाली समितियों की सदस्यता की। संविधान के अनुच्छेद १९१/१/क के अनुसार लाभ के पदों पर विधायकों को नियुक्त करने के लिए बहुत ही कम पदों को विधि द्वारा घोषित किया गया था और कोई भी नया पद इस प्रकार घोषित किए जाने की बात ही नहीं सोची जाती थी। सत्तारूढ़ दल और विरोधी दलों की सदस्य संख्यों में अन्तर की कमी और दलबदल की आशंका के कारण मन्त्रिमण्डल लड़खड़ाने लगे और सदस्यों को सौदा करने की प्रवृत्ति और क्षमता बढ़ने लगी तथा जहां कहीं एक दल की सरकार बनना संभव न हुआ वहां कई दलों को मिलाकर सरकारें बनानी पड़ीं। सब घटकों को सन्तुष्ट करने के लिए मन्त्रिमण्डलों की सदस्य संख्या में वृद्धि करनी पड़ी। विभागों के बटवारे पर झगड़े होने लगे तो महत्त्वपूर्ण विभागों के न दे सकने की पूर्ति संख्या बढ़ाकर की जाने लगी। इस बाढ़ में वरिष्ठता और योग्यता बह गई और सरकार को हिला देने की क्षमता ही मापदण्ड बन गई। दलों और गुटों के भीतर भी छोटे छोटे गुट बनने लगे और अवस्था यह हो गई कि कोई किसी के साथ नहीं, सबको कुछ न कुछ मिलना चाहिए, यदि मन्त्रिमण्डल में स्थान नहीं तो किसी निगम की अध्यक्षता या कोई और लाभ का पद जिसमें टेलिफोन, निजी स्टाफ कार और अतिरिक्त वेतन की सुविधायें हों। बात अब यहां तक पहुंच चुकी है कि हस्ताक्षर मात्र ही जानने वाले सदस्य का मुंह बन्द करने के लिए जब कार की पेशकश की गई तो उसने उसे ठुकरा दिया और कहा कि केवल कार से सन्तोष नहीं होगा, कोई पद चाहिए और-उसके साथ बाकी सब सुविधायें भी। कौन पद अधिक "माल" का साधन हो सकता है, इसकी जानकारी मिलने पर 'एक अनार सौ बीमार' वाली बात भी सामने आने लगी। "माल" कम हो तो विदेशयात्रा की मांग होने लगी और यदि कोई किसी संस्थान का प्रबन्ध निदेशक विदेशयात्रा पर जाने लगे, तो अध्यक्ष को तो जाना ही चाहिए। अब सम्भवतः कोई लाभ का पद ऐसा नहीं रह गया जिसको पाकर विधायक की सदस्यता समाप्त हो सकने का भय रह गया हो। बहुत से नये नये पद की ढूंढ जारी है और मन्त्रिमण्डलों की स्थिरता के लिए मुख्यमन्त्री की यह योग्यता अब अनिवार्य होती जा रही है।

प्रत्येक स्तर पर क्षेत्रीय असन्तुलन

विधायकों की तुष्टि से मन्त्रिमण्डल चलने का प्रबन्ध तो हो गया, परन्तु एक खतरा बना रह गया। पांच वर्ष के पश्चात् जनता के दरबार में जाना पड़ता है। वहां चुनकर न आ सके तो सब रास्ते बन्द, इसका इलाज सोचा गया। अपने निर्वाचन क्षेत्र में यदि विकास का काम और क्षेत्रों की अपेक्षा बहुत अधिक और उस क्षेत्र के बेरोजगार नौजवानों को दूसरों से अधिक रोजगार मिल जाएं तो दोबारा चुनकर आने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। मन्त्रिमण्डलों के सदस्यों ने अपने निर्वाचन क्षेत्रों में ऐसा ही अभियान आरम्भ कर दिया। अब साधारण सदस्यों को चिन्ता होने लगी। नेता ने भी मौका देखकर विधायकों के सामने विकल्प रखने शुरु कर दिए कि या तो 'अपना' विकास कर लो या अपने 'निर्वाचन क्षेत्र' का। कहीं कहीं यह सूत्र चलाया, परन्तु बहुत थोड़े विधायक ही 'मूर्ख' बने और विधायकों की दोनों मांगें एक साथ होने लगीं। इसका परिणाम यह हुआ कि विरोधी दलों के सदस्यों के निर्वाचन क्षेत्र और अपने ही दल के असन्तुष्टों के क्षेत्र 'अछूत' बन गए। राष्ट्र की पंचवर्षीय योजना बनाते समय यह विचार किया जाता है कि भिन्न भिन्न क्षेत्रों के विकास में असन्तुलन को समाप्त करने के लिए योजना में पिछड़े क्षेत्रों के विकास के लिए अधिक धन दिया जाए। एक और यह चिन्तन और दूसरी ओर यह चिन्तन कि हर जिले और हर तहसील में कुछ विशेष क्षेत्रों का विशेष विकास और शेष की अवहेलना की जाए जिससे जिले और तहसील के स्तर पर भी असन्तुलन पैदा हो रहा है।

कर्मचारियों के तबादले

विशेष क्षेत्रों में विशेष प्रयोजन के लिए विशेष प्रकार के अधिकारी और कर्मचारी चाहिएं। उनकी विशेष कारगुजारी में यह भी सम्मिलित है कि विभिन्न आयोजनों तथा सम्मेलनों में लोगों की भीड़ इकट्ठी करें और विरोधी समझे जाने वाले लोगों को परेशान करते रहें, अन्यथा बार बार स्थानान्तरण के लिए तैयार रहें। ऐसी स्थिति में कर्मचारियों में भी लाभ उठाने की प्रवृत्ति अनायास ही उभर आई और अच्छी आय के स्टेशन पाने के बदले वरिष्ठ अधिकारियों, विधायकों और सम्भव हो सके तो मन्त्री तक को शामिल करने की योजना बन गई। आज वरिष्ठ अधिकारियों, विधायकों और मन्त्रियों के लिए सबसे बड़ा काम तबादलों का ही रह गया है। इससे सभी लोग क्षुब्ध हैं, परन्तु निकलने का कोई मार्ग ही नहीं सूझता। व्यक्तियों के साथ जुड़ जाने पर जनता और देश राम भरोसे रह गए। वर्तमान पद्धति में इस दुष्चक्रव्यूह को भेदने का मार्ग दिखाई नहीं दे रहा।

विधान-विधायक सम्बन्ध

उपर्युक्त विकृतियों के वातावरण में विधायकों से विधि निर्माण सम्बन्धी कार्य में रुचि लेने की आशा समाप्त हो चुकी है। मन्त्रिमण्डल भी विधायकों की विविध मांगों, धमकियों और सदन में होने वाले गर्ज तर्ज से शीघ्र मुक्ति पाने के लिए दो चार दिन में ही अधिवेशन समाप्त करने में बचाव समझने लगे। अब विधान सभाओं के बजट अधिवेशन भी एक सप्ताह या दस दिन में समाप्त हो जाते हैं और छः महीने में एक बार अधिवेशन करने की विवशता से छुटकारा पाने के लिए बुलाये गए अधिवेशन दो चार दिन ही चलते हैं। एक दिन में दस दस विधेयक पास हो जाते हैं। कुछ विधायक जरूर आज भी ऐसे हैं जो अपने कर्त्तव्य की ओर ध्यान देते हैं, परन्तु उनके भाषण कोरम के लिए तरसते रह जाते हैं।

प्रो० शेरसिंह

क्रमशः

शराबबन्दी सम्मेलनों में प्रो० शेरसिंह का कार्यक्रम

आर्यसमाज भटगांव जिला सोनीपत	३० सितम्बर	
,, बादली जिला रोहतक	२ अक्तूबर प्रातः	
,, कोसली जिला रोहतक	२ अक्तूबर दोपहर बाद	
सिद्धान्ती भवन्ती दयानन्दमठ रोहतक	४ ,,	प्रातः
आर्यसमाज टिटोली जिला रोहतक	४ ,,	रात्रि
महर्षि दयानन्द बलिदान समारोह करनाल	५ ,,	
कन्या गुरुकुल पंचगांव जिला भिवानी	६ ,,	
आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह	१२ ,,	
,, मारीशस (पूर्वी अफ्रीका)	२० से ३१ अक्तूबर	

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

हवन यज्ञ महिमा

लेखक–(यशपाल आर्यबंधु, आर्य निवास, चन्द नगर, मुरादाबाद २४४०३२

वेदों और वैदिक ग्रन्थों में हवन यज्ञ की अपार महिमा बखानी गई है वेद यज्ञ को भुवनस्य नाभि कहते हैं तो ब्राह्मण ग्रन्थ श्रेष्ठतम कर्म। पर्यावरण शोधन का इस से बढ़कर कारगर उपाय संसार खोज नहीं पाया। शतपथ ब्राह्मण में कहा है 'अनताय यज्ञों भवतीतिपुष्ट, वर्धन, सुगन्ध प्रसार और नरोग्य ये चार उपयोग होम अर्थात् हवन करने से होते हैं। ये लाभ उपदिष्ट रीति से होम होने पर ही होते हैं। महर्षि दयानन्द का कथन है कि—"ब्रह्माण्ड में संचार करने वाला जो वायु है वही जीव का हेतु है। अन्तर वायु द्वारा ठीक-ठीक व्यापार होवे इसलिये बाहर का ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध रहना चाहिये। ब्रह्माण्ड वायु शुद्ध करने के लिए यज्ञ कुण्ड में घृत, कस्तूरी केशरादि सुगन्धित, पुष्टि कारक द्रव्यों का हवन करना चाहिये। सुगन्धित द्रव्यों के दहन से ब्रह्माण्ड वायु को दुर्गन्धि का नाश होता है। इस हवन के कारण जो सुगन्धि उत्पन्न होती है, उस सुगन्धि के सम्मुख वायु के सब दुष्ट दोष दूर होकर नरोग्य उत्पन्न होता है।" (देखें–पूना प्रवचन, यज्ञ एवं संस्कार विषयक)।

हवन यज्ञ एक छोटा दीखने वाला कृत्य है। परन्तु उपयोगिता की दृष्टि से यह बहुत बड़ा है। लोग इस के महत्त्व को समझ नहीं पाते इस लिए शंका करने लगते हैं कि—"होम एक छोटी सी कृति है, इससे ब्रह्माण्ड वायु कैसे शुद्ध होगी, समुद्र में एक चमच भर कस्तूरी डालने से क्या सारा समुद्र सुगन्धित और शुद्ध होगा ?" इसका समाधान महर्षि दयानन्द के ही शब्दों में यह है कि सौ घड़े रायते में थोड़ी सी ही बघार से रुचि आ जाती है यह प्रत्यक्ष है। इसकी जैसी उपपत्ति समझी जाती है, तद्वत् ही यह प्रकार भी है कोई ऐसी शंका करे कि होम तो यहां करो और अमेरिका में उसका परिणाम कैसे होगा ? तो इसका समाधान यह है कि वायु द्वारा शुद्धि सर्वत्र फैले यह वायु का धर्म है। सिवाय–यदि सब लोग अपने-अपने घर में आर्य सम्मत रीति से हवन करें तो यह शंका ही नहीं सम्भव होती। पहले आर्य लोगों का ऐसा सामाजिक नियम था कि प्रत्येक पुरुष प्रातःकाल स्नान कर बारह आहुति देता था। क्योंकि प्रातःकाल में जो मल मूत्रादिकों की दुर्गन्धि उत्पन्न होती थी वह इस प्रातःकाल के हवन से दूर होती थी। इसी तरह सायंकाल में हवन करने से दिन भर की जमी हुई जो दुर्गन्धि उसका नाश होकर रात भर वायु निर्मल और शुद्ध चलती थी। प्राचीन आर्य लोग बड़े ही युक्तिमान थे इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं। फिर अमावस्या और पूर्णमासी के दिन समस्त भरतखण्ड में होम होता था। उससे भरतखण्ड में वायु के कितने साधन उत्पन्न होते थे। इसका विचार करने से यह छोटा सा प्रकार है, ऐसा किसी को भी प्रतीत न होगा। अब वायु शुद्ध रहने से वृष्टि का जल भी शुद्ध रहता है वृष्टि से और वायु से बड़ा ही घनिष्ट सम्बन्ध रहता है और सब देश का जल वृष्टि से उत्पन्न होता है। जब स्वच्छ और वायु के भी स्वच्छ रहने से वृक्षों के फल, पुष्प, रस भी बड़े ही शुद्ध और पुष्टिकारक होते हैं।" (पूना प्रवचन–वही)

आज जिस तेजी से मानव स्वास्थ्यप्रद वायु देने वाले वनों को काट रहा है, एवं स्वयं वायु प्रदूषण कर रहा है, उस से यह शंका होने लगी है कि निकट भविष्य में सांस लेने के लिये शुद्ध वायु भी मिल पायेगी कि नहीं। अभी-अभी ६ मार्च के नवभारत टाइम्स में जो समाचार छपा है वह चौंका देने वाला है। उसके अनुसार सारणी ताप बिजली घर से प्रतिदिन उड़ने वाली एक हजार टन कोयले की राख तथा सल्फर डाइआक्साइड गैस आस-पास के वनों के लिए खतरा पैदा किए हुए है। यह मत मध्यप्रदेश कौंसिल आफ साइंस एण्ड टेकनालोजी के सचिव तथा विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन की वनस्पति शास्त्र की अध्ययनशाला के प्रमुख डा० प्रेम शंकर दुबे ने व्यक्त किये हैं। ऐसा ही चौंकाने वाला एक अन्य समाचार राजस्थान का भी है जिसका पता हमें बोर्ड आफ इन्डियन मेडिसन, राजस्थान के अध्यक्ष वैद्य श्री ब्रह्मानन्द त्रिपाठी के निम्न वक्तव्य से चलता है। अजमेर में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी के अवसर पर वेद परिषद् के अध्यक्ष पद से बोलते हुए श्री त्रिपाठी ने कहा था कि— "अभी कुछ वर्ष पूर्व वियतनाम युद्ध हुआ था। उत्तर वियतनाम और दक्षिण वियतनाम युद्ध ग्रस्त थे। उत्तर में वहां के स्वतन्त्रता प्रेमी लोग थे और दक्षिण में सहायता के नाम पर अमेरिका की सेनाएं युद्ध के कष्टों से हार कर दोनों में एक सन्धि हुई कि दोनों के बीच में एक युद्ध रहित क्षेत्र बना लिया जावे। ऐसा क्षेत्र बन तो गया। परन्तु उत्तर वियतनाम के लोग क्षेत्र से परिचित होने के कारण लुक छिप कर आते और अमेरिकी लोगों पर प्रहार करके भाग जाते। इस शान्ति क्षेत्र में घने जंगल थे। उनके कारण उत्तरी लोगों की गति-विधि देखी नहीं जा सकती थी। फलत: अमेरीकी लोगों ने घने वृक्षों के पत्रों को नष्ट करने के लिए अनेक प्रकार के रासायनिक द्रव्यों का छिड़काव किया। उन रासायनिकों के विष से उस क्षेत्र के वायु, जल और भूमि विषमय हो गये। कुछ समय बाद वहां के लोगों की सन्तान विकलांग उत्पन्न होने लगी। यहां तक ८२-८४ प्रतिशत तक बालक विकलांग जन्मने लगे। किसी का हाथ, तो किसी का पैर, तो किसी का मस्तिष्क विकृत होने लगा। वहां के लोगों ने इसे दैवी प्रकोप समझा। परन्तु अमरीकी लोगों ने इसका कारण समझने के लिये अपने देश में परीक्षण किये। वियतनाम जैसे ही दूषित वातावरण में ही कुछ चूहों को रखा गया। जब उनकी सन्तान हुई तो वह भी ८४ प्रतिशत तक विकलांग पाई गई। तब यह निश्चित हुआ कि यह दूषित वातावरण ही विकलांग सन्तान उत्पन्न होने का कारण है। वातावरण की शुद्धि से इस आपत्ति से बचा जा सकता है। चरक संहिता के जनपदोद्ध्वंसनीय अध्याय में वायु, जल, देश और काल के दूषित होने से पूरे के पूरे जनपदों का महामारियों से नाश हो जाता है। इसका विस्तार से वर्णन है। प्राचीन आर्यों को यह अच्छे प्रकार विदित था कि ऐसे प्रदूषण से सन्तान विकृत होती है और प्राणिविनाश होता है। उन्हें यह भी ज्ञात था कि उससे बचने के लिये और अच्छी सन्तान, अच्छे पशु, अच्छे अन्न यहां तक कि ब्रह्मवर्चस की प्राप्ति और वृद्धि का साधन अग्निहोत्र है।" (देखें—परोपकारी का महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी विशेषांक, पृष्ठ ७६)।

स्पष्ट है कि हवन यज्ञ से जल—वायु के शोधन का इस से बढ़कर अन्य कोई उपाय कारगर सिद्ध नहीं होता। सुगन्धित पदार्थों के घर में रखने से यह कार्य कदापि सिद्ध नहीं होता। यह कार्य अग्निहोत्र के द्वारा ही सम्भव है। अग्निहोत्र से ही वायु का छेदन-भेदन होता है और वायु शुद्ध होता है। दुःख है कि आज मानव इसे भूल बैठा है। हम आर्य-गण भी लीक पीट रहे हैं। महर्षि दयानन्द ने न्यून से न्यून ६ माशे की आहुति का विधान किया है। पर हम हैं कि बून्द-बून्द घी टपका कर ही सन्तोष कर लेते हैं। अपने उत्सवों पर हजारों रुपया व्यय कर देते हैं पर यज्ञ में कठिनता से सौ ग्राम घी निकाल पाते हैं और फिर चाहते हैं कि यज्ञ हवन अपना पूर्ण प्रभाव डालें। यह कैसे हो सकता है ? अतः हमें इस ओर ध्यान देना चाहिये और आर्यसमाजों को यज्ञ हवन में कोई कंजूसी नहीं दिखानी चाहिये।

इत्योम् शम्

(यशपाल आर्यबंधु) आर्य निवास, चन्द नगर मुरादाबाद–२४४०१२

पाणिनीय व्याकरण गोष्ठी

प्रतिवर्ष की भांति आर्य नेता पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की "८४ वीं जयन्ती" पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से ४ अक्तूबर' ८४ को प्रातः ८ से १२ बजे तक दयानन्दमठ रोहतक में पाणिनीय व्याकरण पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया है जिसमें वैदिक विद्वान् भाग ले रहे हैं।

संयोजक

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह का निमन्त्रण

हरयाणा प्रदेश में आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत प्रथम समाज है जिसे स्थापित हुए एक सौ वर्ष पूर्ण हो गये हैं। ६ से १४ अक्तूबर को यह आर्यसमाज शताब्दी का आयोजन कर रहा है। एक विशुद्ध धार्मिक संस्था होने के नाते जन-हित के लिए अतीत में उसने क्या किया, उसको उपलब्धियां क्या रही यह सर्वविदित है। यह समाज वर्तमान में जन हितार्थ योजना बद्ध कार्यक्रम के साथ पुनः अग्रसर हो रहा है। इस शताब्दी के माध्यम से हम सबको ज्ञानवर्धक धार्मिक एवं राजनैतिक नवीन चेतना मिलेगी। भारत भर से आमन्त्रित उच्चकोटि के विद्वान पधार रहे हैं। समस्त भारत क्योंकर अखण्डित रह सकता है, हम शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति कैसे कर सकते हैं? यह वेद के दृष्टिकोण से विद्वानों द्वारा आप जान पायेंगे।

यज्ञ हमारा सर्वश्रेष्ठ एवं पवित्रतम कार्य है। इस सुअवसर पर सामवेद पारायण बृहद् यज्ञ आयोजित किया जा रहा है। जो शास्त्रोक्त एवं दर्शनीय होगा। आचार्य प्रवर श्री वीरसेन जी वेद श्रमी इसके ब्रह्मा होंगे।

इसके अतिरिक्त आर्यसमाज के इतिहास में प्रथम बार श्रौत पूर्णमासेष्टि: एवं आग्रयणेष्टि सम्पन्न होंगी। इसके ब्रह्मा महाराष्ट्र के वैदिक विद्वान होंगे। यह यज्ञ किस प्रकार से होता है यह देखने एवं श्रवण करने की बात है। अतः इष्ट मित्रों सहित अवश्य पधारें।

शताब्दी की अन्य विशेषताएं:—

१. आर्यसमाज की ओर से प्रथम बार नेत्रहीनों के लिए ब्रेन लिपि में प्रकाशित वैदिक साहित्य (ऋषि दयानन्द प्रणीत) आर्याभिविनय का विमोचन।

२. संस्कृति और धर्म नाम से युक्त उच्चकोटि के ग्रन्थ का विमोचन:—

आर्यसमाज ने इस ग्रन्थ में अनेक विद्वानों के उच्चकोटि के लेखों का संपादन कराया है। जो हमारी ज्ञानवृद्धि एवं स्वाध्याय के अत्युत्तम होंगे।

३. आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत के शतवर्षीय इतिहास नामक प्रकाशित ग्रन्थ का विमोचन:—

४. भारत के चुने हुए आर्यसमाज एवं आर्यसमाजेतर कतिपय बीस, इक्कीस वैदिक विद्वानों का नागरिक अभिनन्दन एवं सम्मान।

५. शंका-समाधान एवं शास्त्रार्थ के लिए अन्य मतावलम्बियों का आह्वान।

६. ईश्वरीय ज्ञान वेद की महत्ता पर प्रवचन।

७. वैदिक-विद्वानों में वैदिक मन्तव्यों पर विचार गोष्ठी।

८. ऋषि दयानन्द की 'संस्कार विधि' में वर्णित यज्ञ पात्रों की एक प्रदर्शनी। —रामानन्द सिंगला संयोजक

शराब कितनी खराब?

मद परिवार माई बाप की भुलाई देत,
लाज औ समाज कर मानते न दाब है।
झूमि-झूमि घूमि-घूमि करत बड़ाई पियें,
कहते सभी से स्वाद कैसा लाजबाब है।
घर की जमाई पूंजी घटी जात धीरे-धीरे,
धन हेतु मद मानो जलता तेजाब है।
अन्त्रिली में भीख मांग मरते शराबी सभी,
सोचिये शराब मार कितनी खराब है।

—शिवाकान्त मिश्र 'कान्त विद्रोही'
प्रा० स्वा० के० इटियाथोक, गोंडा

कन्या गुरुकुल पंचगांव को दान

मं० श्री रामपुरिया क्लाथ स्टोर सिलोगुड़ी	२५१ रुपये
सेठ श्री बल्लूराम कांशीराम ,,	२५१
मै० अग्रवाल ट्रेनिंग कम्पनी ,,	२५१
सेठ श्री हृषिकिशनदास सुशीलचन्द बखिशाली वाले सुवक रोड सिलीगुड़ी	२५१
सेठ श्री सत्यनारायण जी भट्टू वाले नया बाजार ,,	२५१
सेठ श्री देवीदत्त जी बहल वाले कलकत्ता	२५१
सेठ श्री हजारासिंह इन्द्रसिंह सिलीगुड़ी	२५१
सेठ श्री मदनलाल अग्रवाल (संजय टी कम्पनी) सिलीगुड़ी	२५१
गुप्ता मेडिकल हाल सिलीगुड़ी	२०१
सेठ श्री तेजराम गोबिन्दराम कलकत्ता	२०१
सेठ चमनलाल जी दिनेश कुमार जी, चास जि० धनबाद	२०१
मं० इस्ट इण्डिया हालपोई सिलीगुड़ी	१५१
सेठ श्री महेन्द्र कुमार दार्जिलिंग वाले सिलीगुड़ी	१०१

हरिसिंह
मन्त्री आर्य कन्या गुरुकुल पंचगांव

श्रीमद् दयानन्द धमार्थ आयुर्वेदिक औषधालय अम्बाला का महत्वपूर्ण निर्णय

श्रीमद्दयानन्द धर्मार्थ औषधालय अम्बाला शहर में M/s मथुरा दास, पन्नालाल की दो हुई बिल्डिंग में लगभग ४५ वर्ष से चल रहा है जो उन्होंने सभा को केवल १० रु० मासिक के किराये पर बहुत विशाल बिल्डिंग दे रखी थी। आज यह संस्था हरयाणा में बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है। इस बिल्डिंग के मालिकों को परिवार के बढ़ जाने के कारण तथा बाजार के मध्य में इनको अपनी बिल्डिंग के साथ लगती है। उनको अपने बच्चों की रिहाईश के लिए जरूरत पड़ी। ६ महीने से आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा से पत्र व्यवहार भी चल रहा था।

महाशय भरतसिंह जी ने आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्पति संरक्षक के रूप में निर्णय किया कि आपके बुजुर्गों ने आर्यसमाज के प्रति एक सद्भावना व श्रद्धा से ३५००० रु० नकद तथा यह बिल्डिंग आर्य प्रतिनिधि सभा को किराये पर दी थी। आर्यसमाज नहीं चाहता कि किसी प्रकार का लोभ लालच करते हुए कोई शर्त रखी जाय। हम इसको भी बिना शर्त खाली करने को तैयार हैं। दानी बुजुर्गों के बच्चों ने उदारता दिखाई कि उनका परिवार नहीं चाहता कि एक शुभ कार्य को रोका जाए और औषधालय हमेशा के लिए बन्द हो जाए। उन्होंने दूसरे स्थान पर १० रुपये किराए पर ही सभा को औषधालय चालू रखने के लिए स्थान देने की घोषणा की है।

पन्नालाल संयोजक आर्य औषधालय

शराब विरोधी आर्य धरना बालावास के स्तम्भ

बहिन फूलां देवी (पुरुष वेश में)



बहिन फूलांदेवी का जन्म ग्राम बालावास जि० हिसार में सन् १९१४ में हुआ। आपके दादा का नाम तुलसीराम पिता का नाम चुन्नी लाल तथा माता का नाम सोनादेवी था। आपकी शिक्षा निकटवर्ती ग्राम नलवा में कन्या स्कूल में हुई। आपने यहां से ५वीं कक्षा पास की। आप छः बहने हैं। चार आपसे बड़ी हैं और एक छोटी है। भाई के अभाव में आपने निश्चय किया कि नर-नारी यह तो शरीर का धर्म है, आत्मा का नहीं। आत्मा नर-नारी दोनों में समान है। अतः मैं अपने जीवन में अपनी बहिनों के लिए भाई का स्थान पूरी करूंगी। अतः आपने निर्णय लिया कि इस के लिए उत्तम मार्ग यही होगा कि मैं आजीवन ब्रह्मचर्य-व्रत धारण करके अपने परिवार की सेवा करूं। माता-पिता एवं सम्बन्धी लोगों ने बहुत दबाव डाला कि यह मार्ग बड़ा कठिन है, इस मार्ग पर कदम कदम पर विशेषतः नारी के लिए बड़ी बाधायें हैं अतः तुम लोक-परम्परा के अनुसार गृहस्थ-जीवन व्यतीत करो। किन्तु आप अपने निश्चय पर अडिग रहीं। आपने ऋषि-मुनियों के पवित्रतम ब्रह्मचर्य व्रत के पालन को ही सर्वश्रेष्ठ समझा और आज तक आपके चरित्र का लोहा सारा ग्राम मानता है। आप पगड़ी, कुर्ता, पायजामा पुरुषवेश में रहती हैं।

जब आप २५ वर्ष की थीं तब आपके माता और पिता का स्वर्गवास होगया। उनके पश्चात् अपने विवाहित पाँच बहिनों को आप ही पर्व आदि पर बुलाती हैं तथा उनके गृह-उत्सव विवाह शादी आदि में आदि में सब लोक-व्यवहार का कार्य एक भाई के तुल्य निभा रही हैं। आपके व्यवहार से सब सब सम्बन्धी प्रसन्न हैं।

आपके पिता के पास १२ एकड़ (६० बीघा) जमीन थी। उनके स्वर्गवास के पश्चात् सब बहिनों ने मिलकर सारी जमीन आपके नाम करादी। पैतृक-सम्पत्ति पर आपका ही अधिकार है।

प्रातःकाल स्नान, ईश्वरभक्ति और कृषि-कार्य यही प्रधान काम है। ग्राम के सभी दुर्व्यसनों से पृथक् रहकर धार्मिक जीवन व्यतीत करती हैं। आरम्भ से ही गोपालन तथा गाय के ही घी, दूध आदि पदार्थों का सेवन करती हैं। समय-समय पर महिलाओं में धार्मिक-सत्संगों का भी आयोजन करती रहती हैं।

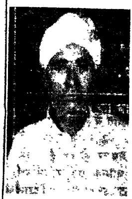
श्री अत्तरसिंह आर्य ने १४ अप्रैल १९८४ से ग्राम बालावास में शराब के ठेके के विरुद्ध पर्ण कुटीर बनाकर जो आर्य धरना लगाया है उसमें आपका बड़ा सहयोग है। समय समय पर पानी भरना, भोजन पकाना, गांव से महिला-वर्ग को साथ लाना, रात्रि के समय उनके साथ जाना, महिला-वर्ग में धूम्रपान आदि के दुर्व्यसनों के परित्याग के लिए प्रचार करना आपका मुख्य कार्य है।

आपका जीवन महिला-वर्ग के लिए आदर्श जीवन है। नारी जाति आपके जीवन से बहुत कुछ प्रेरणा ले सकती है।

—सुदर्शनदेव आचार्य

आर्य धरणा बालावास के कर्मठ कार्यकर्ता

श्री हवलदार मोहनलाल



आपका जन्म ग्राम बालावास (हिसार) में सन् १९२४ में हुआ। आपकी माता का नाम केसरदेवी तथा पिता का नाम नरसिंह था। आप ने स्वयंपाठी के रूप में शिक्षा प्राप्त की। सन् १९४२ में आप जेल वार्डर के लिए भर्ती हो गए और अपनी कार्यकुशलता से शिक्षा के अभाव में भी हवलदार पद तक पहुंचे और सन् १९७८ में रोहतक जेल से पेंशन आ गए। सन् १९६० में आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् पण्डित बुद्धदेव जी विद्यालंकार (स्वामी समर्पणानन्द सरस्वती के कर कमलों से यज्ञोपवीत धारण कर महर्षि दयानन्द सरस्वती के दृढ़ अनुयायी बन गए। आर्यसमाज के वैदिक-सिद्धान्तों का श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ स्वाध्याय, चिन्तन, मनन करने लगे। रामायण, महाभारत तथा महर्षिकृत सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों में आपकी बहुत अच्छी गति है।

आप ग्रामीण परम्परा के अनुसार यदा-कदा धूम्रपान कर लिया करते थे। सन् १९८४ में ग्राम कंवारी आर्यसमाज के महोत्सव में पण्डित सुदर्शनदेव आचार्य की अध्यक्षता में सम्पन्न महायज्ञ में व्रत-आहुति डाल कर धूम्रपान का सदा के लिए परित्याग कर दिया। और दुर्व्यसन में वृथा जाने वाले अमूल्य समय को ईश्वरभक्ति, स्वाध्याय, एवं धर्मप्रचार में लगाने लगे।

दिनांक १४ अप्रैल से श्री अत्तरसिंह जी आर्य की अध्यक्षता में ठेका शराब विरोधी आर्य धरणा पर जी-जान से जुटे रहते हैं। पानी भरना, खाट, बिस्तर, वस्त्र, प्रकाश आदि कार्यों के अतिरिक्त धरने पर पधारने वाले विद्वान् तथा उपदेशक आदि महानुभावों के लिए अपने हाथ से रोटी पकाना तथा उन्हें भोजन आदि भी कराना है। आपको सब धारणा की 'मां' समझते हैं।

ऋषि ग्रन्थों का स्वाध्याय, ईश्वर भक्ति और विद्वानों की सेवा आपके जीवन के मुख्य अंग हैं।

—धीरसिंह सरपंच

गोरक्षा प्रचार पदयात्री गुरुकुल कुरुक्षेत्र में

१४ सितम्बर को प्रातः ७ बजे सातवर्षीय अखिल भारत गोरक्षा प्रचार पदयात्री श्री प्रकाशचन्द्र जोशी (उत्तरप्रदेश), श्री सिद्धराम गुरुजी (कर्नाटक) सहयात्री श्री सुरेश कुमार वत्स (हिसार) श्री ब्रह्मपाल जी (करनाल) श्री हरदेव साहू (हिसार) गुरुकुल कुरुक्षेत्र पहुंचे, यहां पहुँचने पर मुख्य संरक्षक श्री धर्मदेव विद्यार्थी जी व ब्रह्मचारियों ने यज्ञ मण्डप पर स्वागत किया, कुरुक्षेत्र खादी ग्राम के संचालक श्री सुन्दरलाल जी ने पदयात्रियों का परिचय दिया।

(शेष दूसरे कालम में नीचे)

शाम को ३ बजे से ५ बजे तक हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री डा० रणजीतसिंह जी की अध्यक्षता में गोरक्षा सभा हुई। इस सभा को सम्बोधित करते हुए पदयात्रा दल के संयोजक श्री प्रकाशचन्द्र जोशी ने कहा कि पू० महर्षि दयानन्द जी, महात्मा गान्धी, सन्त विनोबा जी की हार्दिक इच्छा थी कि कृषि प्रधान भारत में सम्पूर्ण गोहत्या बन्द हो, आज ४० हजार गायें-बैलों की हत्या प्रतिदिन भारत में हो रही है गो मांस और खाल अरब देशों को निर्यात करके सरकार विदेशी मुद्रा अर्जित कर रही है जिस के कारण आज दूध, घी, मक्खन का अभाव हो रा है। साथ ही बैल महंगे होते जा रहे हैं। ऊर्जा का संकट बढ़ता जा रहा है, प्राणी हिंसा, मांसाहार और शराब से आज देश और दुनियां में अशान्ति फैल रही है।

अभी तक १८८०० कि.मी. की पदयात्रा हुई। केवल, हिसार, भिवानी, रोहतक महेन्द्रगढ़, गुड़गांव जिले की पदयात्रा करेंगे। १९८७ तक यह पदयात्रा चलेगी।

—प्रकाश जोशी

महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी समारोह करनाल का कार्यक्रम

स्थान:— डी.ए.वी. हायर सेकण्डरी स्कूल करनाल (नजदीक बस स्टैण्ड)

शुक्रवार ५-१०-८४

यज्ञ प्रात: ७ से ९ बजे तक, ध्वजारोहण प्रात: ९ से ९-३० तक ला० रामगोपाल शाल वाले प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली

ध्वजगीत:—आर्य वीरों एवं आर्य विरांगनाओं द्वारा।

भजन: —९-३० से ९-४५ तक श्री दुर्गासिंह एवं जगतराम व बस्ती राम

९-४५ से १२-३० तक शिक्षा सम्मेलन

अध्यक्ष: पूज्य स्वामी सत्य प्रकाश महाराज, संजोजक: श्री दरबारी लाल, कार्यकर्ता: प्रधान आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा।

उद्घाटन: श्री इन्द्र राज प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तरप्रदेश।

मुख्य वक्ता:— प्रि. कृष्णसिंह आर्य चण्डीगढ़, प्रो. राम विचार हिसार, प० ओमप्रकाश आर्य जालन्धर, श्री गुलाबसिंह राघव नई दिल्ली, श्री जगदीश नेहरा शिक्षामन्त्री हरयाणा, प्रो. रत्नसिंह गजियाबाद, डा. भवानीलाल भारतीय, डा. रणजीतसिंह मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा।

३-०० से ५-३० बजे तक वैदिक राष्ट्रोत्थान सम्मेलन

अध्यक्ष: प्रो. वेद व्यास प्रधान प्रादेशिक सभा

मुख्य अतिथि:— चौ० भजनलाल मुख्यमन्त्री, संयोजक: डा. गणेशदास आर्य मन्त्री उप सभा हरयाणा, स्वागत भाषण: चौ. शिवराम वर्मा, स्वागत: चौ. वेदपाल उपाध्यक्ष हरयाणा विधान सभा, उद्घाटन: ला. राम गोपाल शालवाले, मुख्य वक्ता: पं. क्षितीश कुमार वेदालंकार, डा. रणधीरसिंह एडवोकेट, श्री लक्ष्मणसिंह बेमोल उत्तर प्रदेश, प्रो. शेरसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, श्री वीरेन्द्र प्रधान आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब

रात्रि

८-०० बजे से ८-३० तक भजन, चौ० हरलाल जी, आर्य वीर सम्मेलन।

अध्यक्ष—ब्र० आर्य नरेश आचार्य। मुख्य अतिथि—श्री आनन्द सागर आर्य जालन्धर। संयोजक—ब्र० अनिल कुमार आर्य मन्त्री आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली। उद्घाटन—ब्र० धर्मदेव विद्यार्थी गुरुकुल कुरुक्षेत्र। मुख्य वक्ता—आचार्य देवव्रत गुरुकुल कुरुक्षेत्र, प्रो० वेद सुमन वेदालंकार, प्रि० सर्वदानन्द आर्य पुण्डरी, प्रो० सारस्वत मोहन मनिषी अबोहर, बहिन कलावती आर्या, प्रो० उत्तम चन्द शरर, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, स्वामी सच्चिदानन्द।

१०-३० बजे से ११-०० बजे तक आर्य युवकों द्वारा योग आसन एवं शारीरिक शक्ति प्रदर्शन

६-१०-८४ प्रात: ७ बजे से ९ बजे तक यज्ञ व ९ बजे से ९-३० बजे तक भजन श्री लक्ष्मण सिंह बेमोल

९-३० से १२-३० बजे तक आर्या महिला सम्मेलन

अध्यक्ष—बहिन सविता अखिल भारतीय समाज कल्याण विभाग मुख्य अतिथि—डा० विद्यावती प्रधाना महिला समाज। संयोजिका—प्रो० रुप रेखा। उद्घाटन—बहिन कमला आर्या मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब। मुख्य वक्ता—बहिन दर्शना आचार्या कन्या गुरुकुल खरल (जीन्द), श्रीमती राजबाला हरयाणा आर्या महिला संगीत मंडली ब्र० कलावती आर्या, श्रीमती सन्तोष कपूर एम० एल० सी० लखनऊ।

मध्याह्नोतर २-३० से ५-३० बजे तक शोभा यात्रा

मुख्य प्रबन्धक—डा० गणेश दास आर्य करनाल, श्री वेद प्रकाश आर्य रोहतक, श्री बलदेव कृष्ण आर्य करनाल, श्री लाजपत राय आर्य करनाल, आदि।

८-०० से ११ बजे तक धर्म रक्षा अभियान एवं शास्त्रार्थ सम्मेलन

अध्यक्ष—अमर स्वामी जी महाराज। मुख्य अतिथि—श्री सत्यानन्द मुंजाल मालिक हिरो साईकिल। संयोजक—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु। स्वागत—प्रि० मेला राम बर्क। उद्घाटन—पं० ओमप्रकाश जी खतौली वाले. श्री जीवन मित्र भूतपूर्व पादरी, पं० जयप्रकाश आर्य भूतपूर्व इमाम, डा० अमरेश भूतपूर्व इमाम दक्षिण भारत, श्री राणा बीर सिंह जी संसद सदस्य, श्री ओम प्रकाश त्यागी महामन्त्री सार्वदेशिक प्रतिनिधि सभा, पं० शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी।

प्रात: ७ से ९ बजे तक यज्ञ पूर्णाहूति ७-१०-८४ ९ से ९-३० बजे तक भजन श्री गुलाब सिंह राघव एवं चौ० नत्था सिंह जी।

९-३० से १२-०० बजे तक वेद सम्मेलन

अध्यक्ष—डा० सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार। संयोजक—प्रो० वेद सुमन वेदालंकार। स्वागत—रा० सा० चौ० प्रताप सिंह प्रधान उपसभा हरयाणा। उद्घाटन—पं० शिव कुमार शास्त्री। मुख्य वक्ता—आचार्य राम प्रसाद जी. आचार्य सुदर्शनदेव उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, आचार्य उदय वीर शास्त्री, डा० भवानी लाल भारती, आचार्य प्रियव्रत जी, पं० शान्ति प्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी।

मध्याह्नोतर ३ से ५-३० तक सामाजिक क्रान्ति सम्मेलन

अध्यक्ष—डा० कर्ण सिंह जी संसद सदस्य। संयोजक—श्री राम नाथ सहगल मन्त्री प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा। उद्घाटन—श्री पृथ्वीसिंह आजाद। मुख्य वक्ता—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री देवी दास आर्य ज्ञानपुर, स्वामी ओमानन्द जी महाराज, श्री एल. एम. सिंघवी एडवोकेट सुप्रीम कोर्ट।

५-३० से ६-०० बजे तक धन्यवाद—डा० गणेश दास जी एवं प्रो० वेद व्यास।

नोट :—२८-९-८४ से आर्य युवकों एवं विरागनाओं के विशेष प्रशिक्षण शिविर अलग-अलग स्थानों पर लगाए जा रहे हैं (२) महर्षि दयानन्द के जीवन एवं आर्य समाज के इतिहास के सम्बन्ध में प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। वेद सुमन वेदालंकार संयोजक

ग्राम बेरी जि० रोहतक में १ नवम्बर को सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का ऐतिहासिक आयोजन

विवाह शादियों के अवसर पर कम खर्च एवं समाज से दहेज रूपी दानव को समाप्त करने के लिए हरयाणा स्थापना दिवस १ नवम्बर १९८४ के शुभावसर पर स्वामी ओमानन्द सरस्वती की अध्यक्षता में प्रसिद्ध ग्राम बेरी जि० रोहतक के राजकीय हायर सैकेण्डरी स्कूल बेरी के मैदान में प्रात: १० बजे ऐतिहासिक सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का आयोजन किया गया है। अत: सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा प्रमुख पंच तथा सरपंचों से निवेदन है कि इस अवसर पर अधिक से अधिक संख्या में पधारें और अपने सुझाव देकर सामाजिक बुराइयों को दूर करने में सहयोग प्रदान करें।

भगवानसिंह महासचिव काद्यान पचायत खाप

दिल्ली विश्वविद्यालय में वेद संगोष्ठी

दिल्ली विश्वविद्यालय में ११ सितम्बर १९८४ को डा० प्रहलाद कुमार स्मारक समिति द्वारा स्व० डा० प्रहलाद कुमार की ३९वीं जयन्ती के अवसर पर वेद संगोष्ठी का आयोजन किया गया। मुख्य वक्ता डा० सत्यकेतु विद्यालंकार थे। "वेदों में इतिहास की समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए उन्होंने कहा कि यह एक अत्यन्त जटिल प्रश्न है। उनके मतानुसार जबकि वेद के कुछ स्थलों पर इतिहास के चिह्न प्रतीत होते हैं, अधिकांश स्थलों पर यौगिक अर्थों का आधार लेकर ही वेद के संगत अर्थ सम्भव हैं। उन्होंने अनेक वैदिक उद्धरणों द्वारा अपने मन्तव्य की पुष्टि की। उन्होंने प्रश्नकर्ताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

मुख्य अतिथि राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के निदेशक एवं श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के प्रधानाचार्य डा० मण्डन मिश्र मीमांसा शास्त्र के आधार पर वेदों में इतिहास का खण्डन किया।

सभा की अध्यक्षता शिवाजी कालेज के प्रधानाचार्य डा. सूबेसिंह राणा ने की। इस अवसर पर उन्होंने इस वर्ष के वेद-विकल्प लेकर एम.ए. संस्कृत का अध्ययन करने वाले चार छात्रों को छात्रवृत्ति का वितरण भी किया। डा० राणा ने अपने अध्यक्षीय भाषण में डा. प्रह्लाद को स्मरण किया और वेद प्रचार में समिति के योगदान की सराहना की।

संस्कृत विभाग; दिल्ली वि० वि० के उपाचार्य डा० सत्यपाल नारंग ने सभी प्रमुख अतिथियों तथा उपस्थित श्रोताओं का धन्यवाद किया। उन्होंने डा० प्रह्लाद के प्रतिभा सम्पन्न व्यक्तित्व पर भी प्रकाश डाला।

आरम्भ में डा० प्रशान्त वेदालंकार ने प्रमुख अतिथियों तथा अन्य अभ्यागतों का स्वागत किया। तत्पश्चात् समिति के सचिव प्रो० कृष्णलाल ने समिति का परिचय दिया।

सभा का प्रारम्भ श्री वीरेन्द्र कुमार शर्मा द्वारा वैदिक मन्त्रों के सस्वर पाठ से और समापन शान्ति-पाठ से हुआ। सभा की विशेषता यह थी कि उसमें अध्ययन-अध्यापन करने वाले प्रबुद्ध श्रोता उपस्थित थे। दिल्ली से बाहर से आने वाले श्रोताओं की भी पर्याप्त संख्या थी। यह उल्लेखनीय है कि वेदाध्ययन छात्रवृत्तियों के लिए महाशय धर्मपाल जी २०० रु० प्रतिमास तथा एक अन्य महानुभाव भी इतनी ही राशि डा० प्रह्लाद कुमार स्मारक समिति को प्रदान कर रहे हैं।

—प्रशान्त वेदालंकार, उत्तरापेक्षी: प्रह्लादकुमार स्मारक समिति, दिल्ली

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पंजि० नं० फोन ४८१२ सृष्टि संवत् १,६६,



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४१ ७ अक्तूबर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

आर्य कार्यकर्त्ता शराब तथा दहेज विरोधी सामाजिक बुराईयों को समाप्त कराने हेतु रचनात्मक कार्यों में जुट जायें --प्रो० शेरसिंह

३० सितम्बर को जिला सोनीपत के प्रसिद्ध ग्राम भटगांव में आर्य समाज के वार्षिक उत्सव पर आयोजित शराबबन्दी सम्मेलन का उद्-घाटन करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा एवं रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने आर्यसमाज के युवा कार्यकर्ताओं को आह्वान किया कि अब समय आ गया है कि समाज से शराब तथा दहेज जैसी भयानक बुराइयों को समाप्त कराने के महत्त्वपूर्ण कार्यों में जुट जायें। आपने शराब की बुराइयों से होने वाली हानियों को विस्तार पूर्वक बताते हुए कहा कि आज से ५० वर्ष पूर्व ग्राम में कोई एक-आध शराब पीने वाला होता था, जिसे बहुत ही घृणा की दृष्टि से देखा जाता था, परन्तु आज ग्राम में सम्भवतः कोई एक आध घर ही ऐसा मिलेगा जिसके परिवार में कोई भी सदस्य शराब आदि का सेवन नहीं करता। प्रायः महमानों को जब तक शराब की बोतल प्रस्तुत नहीं की जाती तब तक वे महमाननवाजी नहीं मानते। दफ्तरों में शराब की बोतल मिलने पर ही एक फाइल एक मेज से दूसरी मेज तक सरकती है। भ्रष्ट सरकारी कर्मचारी खुल्लम खुल्ला शराब के लिए पैसे मांगते हैं। विवाह शादियों पर शराब पीकर झगड़ा डालकर नाचने तथा अश्लील हरकतें आम की जाती हैं। शरीफ आदमी इन्हें टोकने तथा रोकने की बजाय अपनी इज्जत बचाकर दूर से निकल जाते हैं। इस प्रकार शराब पीने से जहां नैतिक पतन हो रहा है वहीं आर्थिक हानि भी हो रही है। शराब का आदी बनने पर उसे प्राप्त करने के लिए खून पसीने से कमाई जाने वाली आमदनी शराब के खरीदने में नष्ट हो रही है। जमीनें गिरवी रखकर जमींदार गैर जमींदार बनते जा रहे हैं। हरयाणा सरकार को शराब की बिक्री से करोड़ों रुपये की आय होती है और शराब के ठेकेदार मालामाल हो रहे हैं। गरीब किसान तथा मजदूर शराब की लत से कंगाल होता जा रहा है। यदि यही अवस्था जारी रही तो हरयाणा का किसान मजदूर सरकारी बैंकों का कर्जदार होकर बर्बाद हो जायेगा।

प्रो० साहब ने शराब के साथ दहेज की बुराई को समाप्त कराने के लिए ग्रामों में पचायतें करने पर बल देते हुए कहा कि जो व्यक्ति शराब की बुराई से बच जाते हैं, वे प्रायः दहेज के चक्र में फंसकर रहा सहा धन लुटा देते हैं और अमीरों की नकल करके लड़की के विवाह पर ऋण लेकर दहेज के लोभियों की मांग को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। मांग पूरी न होने पर लड़कियों को जलाकर मार दिया जाता है अथवा वे आत्महत्या कर लेती हैं।

१ नवम्बर को बेरी जिला रोहतक में सर्वखाप पंचायत की विशाल पंचायत के आयोजन की सूचना देते हुए प्रो० शेरसिंह ने सभी जातियों की खापों से अपील की कि वे इस ऐतिहासिक पंचायत में सम्मिलित होकर शराब तथा दहेज की बुराइयों को समाप्त करने के लिए योगदान देवें। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को इन रचनात्मक कार्यों में जुट जाना चाहिए। आर्यसमाज सुधार के कार्यों में सदा अग्रणी रहा है। अतः यह समाज सुधार करने का शुभावसर है। साधारण लोग शराब तथा दहेज की बीमारियों से तंग आ चुके हैं। सभा की ओर से सभी आर्यसमाजों को शराब ठेके बन्द करवाने के प्रस्ताव भेज दिये गये हैं। दिसम्बर से पूर्व ही पंचायतों से प्रस्ताव पारित करवाकर सरकार को भेज देने चाहिएं ताकि उन ग्रामों से नये वर्ष में ठेका न खुले।

आर्यसमाज भटगांव के उत्सव पर २८ सितम्बर को शोभायात्रा २६ सितम्बर को गोरक्षा तथा शिक्षा सम्मेलन भी किये गये। इन सम्मेलनों में स्वामी रामेश्वरानन्द जी ज्वालापुर वाले स्वामी ओमानन्द जी पं० सुखदेव शास्त्री, म० टेकचन्द आर्य, श्री सुमेरसिंह आर्य, श्री राम गोपाल आर्य, श्री करतारसिंह (नवयुवक सभा) श्री सूरजमल आर्य प्रधान वेदप्रचार मण्डल सोनीपत, स्वामी मस्ता जी आदि के व्याख्यान तथा सभा की भजन मण्डली पं० सुमेरसिंह आर्य, पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० विद्याभूषण, पं० शेरसिंह तथा पं० तेजपाल और उत्तरप्रदेश की प्रसिद्ध मण्डली श्री खेमसिंह सोटे वाले एवं श्री ओमप्रकाश हैडमास्टर के प्रभावशाली भजन हुए।

आर्यसमाज के उत्सव पर सबसे आकर्षक कार्यक्रम ३० सितम्बर की रात्रि को हुआ। गुरुकुल झज्जर के मुख्य अध्यापक ब्रह्मचारी श्री विजयपाल जी ने शारीरिक प्रदर्शन किया। इस अवसर पर उत्सव स्थान हजारों नर नारियों से खचा-खच भरा हुआ था। ब्रह्मचारी जी ने अपनी छाती पर भारी पत्थर रखवाकर हथौड़े लगवाये। लोहे की बेले तोड़ी तथा ५ सूत के गज को गर्दन से मोड़कर सभी को चकाचौन्द कर दिया। उन्होंने अपने भाषण में उपस्थित नर-नारियों से अनुरोध किया कि अपने बच्चों को चरित्रवान् बलवान् तथा वेदों के विद्वान् बनाने हेतु गुरुकुल झज्जर में पढ़ावें। आर्यसमाज के मन्त्री श्री महेन्द्रसिंह आर्य ने सभा को ६०० रुपये वेदप्रचार तथा शराबबन्दी के लिए दान दिये।

केदारसिंह आर्य

हरयाणा में आर्यसमाजों के वेदप्रचार कार्यक्रम

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समारोह	६ से १४	अक्तूबर
,, जीन्द शहर	१९ से २१	,,
,, रेलवे रोड़ यमुनानगर जिला अम्बाला	२० से २४	,,
,, चरखी दादरी जिला भिवानी	२० से २४	,,
,, होली मोहल्ला करनाल	१९ से २४	,,
कुरुक्षेत्र गौशाला कैथल	२९ से ३१	,,
सर्वखाप पचायत बेरी जिला रोहतक	१	नवम्बर
आर्यसमाज फिरोजपुर झिरका जिला गुड़गांव	२ से ४	,,
,, बल्लबगढ़ जिला फरीदाबाद	३, ४	,,
मेला कपाल मोचन जिला अम्बाला	५ से ८	,,
आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल जि० फरीदाबाद	९ से ११	,,
,, गोपी कालोनी सेक्टर १९ फरीदाबाद	९ से ११	,,

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

विश्व को विविध प्रकार से संस्कारित करने में संस्कार विधि का महत्त्व

ले० पं० श्री वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य वेदसदन महारानी पथ इन्दौर

संस्कार विधि का महत्त्व

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा निर्मित संस्कार विधि अत्यन्त महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है। प्रत्यक्ष रूप से तो यही ज्ञात होता है कि इसमें मनुष्य के लिए १६ संस्कारों का वर्णन है जो शरीर और आत्मा को संस्कृत करके धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति में सहायक होते हैं। परन्तु परोक्ष रूप से अन्य भी अनेक महत्त्वपूर्ण ज्ञान एवं कर्मों का भी उससे दिग्दर्शन होता है।

सोलह संस्कारों से षोडश कलावान् बनें

प्रश्नोपनिषद् के छठे प्रश्न में सुकेशा भारद्वाज ने भगवान् पिप्पलाद ऋषि से पूछा–षोडश कलं पुरुषंपृच्छामि मैं सोलह कलायुक्त पुरुष को जानना चाहता हूं। यह जिज्ञासा सदा ही होनी चाहिए। जिस प्रकार प्रत्येक में सोलह कलावान् परमात्मा विद्यमान है उसी प्रकार इस देह व अन्तरात्मा को भी षोडश कलावान् बनाने के लिए सोलह संस्कारों से सुशोभित करना चाहिये।

संस्कारों का स्थायी प्रभाव होता है

मनुष्य को संस्कार विधि में बताये सोलह संस्कारों से सोलह कलावान् बनकर पूर्ण सुसंस्कृत होना चाहिये। इन सोलह संस्कारों का प्रभाव शरीर व आत्मा पर होता है, जिससे इस जन्म और परजन्मों पर उसके उत्तम संस्कारों का उद्‌बोधन होता है। संस्कार हीन शरीर और आत्मा पशुवत् है। अतः सोलह संस्कार परम आवश्यक हैं।

कुसंस्कारों का व्यापक प्रसार

वर्तमान समय में शरीर और आत्मा को कुसंस्कृत करने के प्रयत्न अहर्निश कार्यरत हैं। उनके सैकड़ों व सहस्रों आकर्षक मनोहारी पाश क्रियाशील हैं। उनमें मानवजाति फंसती जा रही है। यदि कुसंस्कारों के पर्यावरण रूपी महासमुद्र में डूबती मानवता के बचाने के लिए सोलह संस्कारों की यज्ञमय पर्यावरण की नौका को निर्मित न किया गया तो अत्यधिक कर्म प्रदूषित पर्यावरण से स्वास्थ्य तथा शरीर का अस्तित्व उत्तरोत्तर क्षीण होता जायेगा तथा कुसंस्कारों कुचक्रों के प्रभाव से मन और आत्मा कुसंस्कृत होकर पाप कर्मों में प्रवृत्त होकर जन्म जन्मान्तर तक विविध नीच योनियों को प्राप्त होकर दुःख भोगती रहेगी।

गर्भ एवं बाल्यावस्था में संस्कारों से लाभ

बीजानुसार जिस प्रकार वृक्ष, पुष्प रूप रस, गन्ध व फल की उत्पत्ति होती है तथा उसी को संस्कारित कर देने से उसके गुणों में विशेष वृद्धि हो जाती है उसी प्रकार गर्भावस्था से ही मनुष्यों के लिये संस्कारों का ऋषियों ने विधान किया। सोलह संस्कारों में तीन संस्कार गर्भावस्था में होते हैं और पांच संस्कार पांच वर्ष तक की अवस्था में होते हैं अर्थात् सोलह संस्कारों में आठ संस्कार अत्यन्त अबोध अवस्था में ही होते हैं। इनका प्रभाव शरीर और आत्मा दोनों पर महत्त्वपूर्ण होता है यह निश्चित है।

संस्कारों से सदाचार की वृद्धि

सोलह संस्कारों के प्रचार तथा उसके आचरण से आचार भी प्रतिष्ठा होगी। अनेक सुसंस्कृतों में सुसंस्कार युक्त कर्मों की वृद्धि होगी तथा कुसंस्कार जन्य कुकर्मों की निन्दनीय श्रेणी में गणना होने से उन की ओर सर्वसामान्य की प्रवृत्ति का ह्रास ही होगा। सोलह संस्कारों का अधिकाधिक प्रचार अत्यन्त आवश्यक है। अतः संस्कार विधि में प्रधान रूप से सोलह संस्कारों का प्रतिपादन किया गया है।

विश्व को संस्कारित करने के लिए बड़े यज्ञ हो

जिस प्रकार मनुष्यों पर सोलह संस्कारों से श्रेष्ठता का विश्व में पर्यावरण निर्मित होता है उसी प्रकार सृष्टि या परिदृश्यमान रचना को भी संस्कारित करने के उद्देश्य से महर्षि ने संस्कार विधि में प्रथं सामान्य प्रकरणम् शीर्षक में यज्ञदेश, यज्ञशाला, यज्ञकुण्ड का परिमाण लिखा है। इसमें कम से कम सवाहाथ का चौड़ा, गहरा, समचौरस से छह हाथ परिमाण का चौड़ा, गहरा, समचौरस कुंड का महर्षि ने विधान किया और दो लक्ष आहुति का उल्लेख किया। वह न तो संस्कार यज्ञ कर्मों से सम्बन्धित है और न दैनिक अग्निहोत्र तथा श्रौत यज्ञों से ही सम्बन्धित है। श्रौत यज्ञों के कुण्ड और वेदी अन्य ही प्रकार की होती हैं। अतः ज्ञात होता है कि यह विधान किन्हीं बड़े यज्ञों से ही सम्बन्धित है जिनमें कम से कम १ हजार से २ लाख आहुतियां होती हैं।

बड़े बड़े यज्ञों से विशेष लाभ होते हैं

संस्कार यज्ञ संस्कार कर्मों से सम्बन्धित हैं। यज्ञ श्रौत कर्म काण्ड प्रधान हैं उनमें आहुतियां बहुत थोड़ी होती हैं। कर्म काण्ड ही अधिक हैं। इन बड़े कुण्डों के यज्ञ में आहुतियां ही प्रधान हैं। इस प्रकार के बड़े यज्ञों से विश्व के समस्त पर्यावरण पर प्रभाव पड़ता है। यज्ञ के घृत तथा हवि आदि पदार्थों से पर्यावरण पूर्ण होकर शुद्ध तथा पुष्ट होता है एवं आरोग्यप्रद बनता है। समष्टि मन में भी शान्ति के भाव उत्पन्न होने से क्रूर भावों का स्वभावतः नाश होता है और सात्विकता की वृद्धि होती है। कृषि, वृक्ष, वनस्पतियों की उत्पत्ति में वृद्धि फलों की उत्पादकता, पौष्टिकता तथा आरोग्यता में वृद्धि होती है। इस प्रकार के यज्ञों से सुवृष्टि भी होती है। बाढ़, आंधी, तूफान आदि उत्पातों की शान्ति भी होती है। क्रमशः

सम्पादकीयः-

राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रपति पद्धति अधिक उपयुक्त

(गतांक से आगे)

चुनावों मे बढ़ते व्यय

विधायकों के लिए आय के इतने स्रोत खुलने पर लोगों को ऐसा दीखने लगा कि विधायक बनना तो लाटरी खुलने से भी बढ़कर है। इसलिए चुनाव के खर्चे भी अन्धाधुन्ध बढ़ गए। १९५२ में विधान सभा के अधिकतर चुनाव क्षेत्रों में चुनाव पर पाच हजार रुपये से भी कम व्यय होता था कोई कोई धनी प्रत्याशी अधिक व्यय करता था। जिस प्रकार का रंगीन धन आज चुनावों में लगता है उससे कौनसा तन्त्र पलता है यह अनुमान का ही विषय है। इस वातावरण में चारो ओर से उठने वाली समाजवाद की टेक गरीब जनता के साथ क्रूर उपहास नहीं तो और क्या है?

संसदीय लोकतान्त्रिक पद्धति के चलते पिछले ३० वर्षों में जो बुराइयां इस पद्धति के कारण हमारे राष्ट्रीय जीवन में आ गई हैं उन का यह चित्रण सम्भवतः कुछ नग्न सा लगे परन्तु मेरी चेष्टा केवल यह है कि हम इसमें अपने अन्धकारमय भविष्य की झलक पा सकें जिससे ये विकृतियाँ दूर हो सके। गिरधर कविराय ने ठीक ही कहा है—

"पुण्य करिये न कहिये, पाप करिये प्रकास।
कहिवे ते दोऊ घटत हैं बरनत गिरधर दास॥"

यह ठीक है के ये विकृतियां बड़े प्रदेशों की अपेक्षा छोटे प्रदेशों में अधिक आई हैं। इसका कारण यही है कि एक एक विधायक की सरकार को हिला देने की क्षमता छोटे प्रदेशों में अधिक और बड़े प्रदेशों में कम। इसलिये विधायक की कीमत में उसी अनुपात से अन्तर है, और चुनाव में होने वाले व्यय में भी। यह अच्छी बात है कि केन्द्रीय स्तर पर ये बाते नही आ पाई हैं। कारण स्पष्ट हैं, क्योंकि संसद के एक एक सदस्य की सरकार को हिलाने की क्षमता शून्य के बराबर रही है। १९७९ में जब जनता पार्टी टूटी, तब सदस्यों की बोलियां लगने लगी थी परन्तु तत्काल लोकसभा भंग होने के कारण (चाहे उसका औचित्य संदग्ध रहा हो) वह चेष्ठा समाप्त हो गई और देश की जागरूक जनता ने नये चुनावों में ससद में दो तिहाई बहुमत देकर एक मजबूत सरकार बना दो। यह स्थिति कब तक रह पायेगी, कौन जानता है। जिस दिन यह बीमारी केन्द्र में आ जायेगी तब किसी जरखरीद (संट्ज सरकार बनने का रास्ता साफ हो जाएगा, और वह जरखरीद सरकार लोकतन्त्र की कब्र पर बनेगी। इस नग्न विभीषिका को देखते हुए अब केवल राष्ट्रपतीय पद्धति ही लोकतन्त्र को बचाने का उपाय प्रतीत होती है। प्रायः यह शंका उठाई जाती है कि राष्ट्रतीय पद्धति तो अधिनायकवाद का ही एक रूप है। आरम्भ में भी इस शंका से प्रभावित था, परन्तु जब मैंने ससदोय लोकतन्त्र के गत ३५ वर्षों के इतिहास पर नजर दोड़ाई और गहरा चिन्तन किया तो प्रतीत हुआ कि राष्ट्रपतीय पद्धति को लागू करके ही देश में लोकतन्त्र को बचाया जा सकता है। संसदीय तथा राष्ट्रपतीय रूप मे संसार में आज दो प्रकार की लोकतन्त्री पद्धतियां प्रचलित हैं। इनमें से एक की विफलता प्रतीत होने पर दूसरी पद्धति का अवलम्बन सब दृष्टियों से वांछनीय है।

जो पांच बड़ी बड़ी विकृतियां संसदीय लोकतन्त्र के कार्यान्वयन की प्रक्रिया मे उभर कर आई हैं, यदि राष्ट्रपतीय पद्धति के लोकतन्त्र को भारत अपना ले तो इन बुराइयों और विकृतियों की बुनियाद ढह जाती है। यदि मन्त्रिमण्डलों को गिराने की शक्ति विधायकों और संसद सदस्यों के हाथ में नहीं रहेगी, तो न तो मन्त्रिमण्डलों का अन्धाधुन्ध विस्तार करने की बाध्यता रहेगी और न ही अनुभवहीन और अयोग्य व्यक्ति मन्त्रिमण्डलों में आ सकेंगे। विधायकों की तुष्टि के लिए लाभ के पद देने की नौबत ही नहीं आयेगी।

राष्ट्रपति, राज्यपाल और उनके मन्त्रिमण्डल के लोग किसी एक निर्वाचन क्षेत्र से चुनकर नहीं आयेंगे, इसलिये देश और प्रदेशों के स्तर से नीचे उतरकर जिला और तहसील के स्तर पर क्षेत्रीय असन्तुलन की नई समस्या खड़ी हो नहीं होगी। जिनके हाथ में कार्य पालिका (Executive Power) होगी वे सारे देश के या अपने अपने पूरे प्रदेश के प्रतिनिधि होंगे। उनको तो उल्टा यह डर लगा रहेगा कि यदि किसी क्षेत्र विशेष के लिए अन्य क्षेत्रों के मुकाबले बढ़कर काम किया तो इसी के कारण वे इतने बड़े पद पर फिर नही चुने जा सकेंगे। संसदीय लोक तान्त्रिक प्रणाली लागू होने के कारण समूचे देश और प्रदेश के लिए सोचना और करना ही मुश्किल हो रहा है। आज ऐसे लोग भी हैं जो पं० जवाहरलाल नेहरू पर यह आक्षेप लगाने लगे हैं कि उनको चुनकर तो सदा उत्तर प्रदेश ने भेजा और प्रधान मन्त्री बनाया, परन्तु उन्होंने बदले में उत्तर प्रदेश को दिया ही क्या? देश के लिए उन्होंने क्या किया ऐसे लोग इस बात को आसानी से धुला देते हैं।

इस प्रकार के संकीर्ण दृष्टिकोण के पनपने के कारण ही देश में क्षेत्रीय (इलाकाई) तथा साम्प्रदायिक पार्टियों की बन आई है। इलाकाई पार्टियां तो निश्चित रूप से अधिक ताकत अपने हाथ में लेना चाहेंगी, यही आज देश में हो रहा है। अकाली दल तो चार विभागों को छोड़कर (विदेश, रक्षा, वित्त, यातायात) सभी विभाग पंजाब सरकार को दिए जाएं यह मांग कर रहा है। कुछ अतिवादी खालिस्तान की ही मांग कर रहे हैं। द्राविड़स्तान, कोल्हानिस्तान, पता नहीं कितने स्तानों की मांगें भी खड़ी की जाती रही है। केन्द्रीय सरकार की मजबूती और राष्ट्रीय दृष्टिकोण के बिना क्या देश की एकता बनी रह सकेगी? आज यह एक गम्भीर प्रश्न बनता जा रहा है। संसदीय लोकतन्त्र में न केन्द्रीय सरकार मजबूत रह पा रही और न ही राष्ट्रीय दृष्टिकोण टिक पा रहा है। राष्ट्रपति पद्धति में ये दोष नहीं हैं। प्रो० शेरसिंह

क्रमशः

आर्यावर्त्त युवक परिषद् का चुनाव

अध्यक्ष—ब्र० महेन्द्रसिंह शास्त्री, उपाध्यक्ष— चन्द्रदेव शास्त्री, जयप्रकाश आर्य, मन्त्री खजानसिंह अध्यापक, उपमन्त्री—ब्र० नचिकेता नारायण आर्य, कोषाध्यक्ष—वेदप्रकाश, कार्यालयाध्यक्ष—चन्द्रशेखर, प्रचारमन्त्री—जितेन्द्र कुमार।

१२ से १४ अक्तूबर को स्थापना शताब्दी के अवसर पर

आर्यसमाज पानीपत का संक्षिप्त परिचय

स्थानीय अनुश्रुति के अनुसार लुधियाना से दिल्ली आते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती पानीपत होकर गये थे, पर वह वहां ठहरे नहीं थे। रेलवे के निर्माण से पूर्व जाने आने के लिए प्राय: घोड़ा गाड़ियों और ऊंट गाड़ियों का उपयोग किया जाता है। दिल्ली से पंजाब जाने वाले ग्राण्ट टंक रोड पर तब ऊंट गाड़ियां चला करती थीं और डाक भी उन्हीं द्वारा भेजी जाया करती थी। महर्षि जब इसी प्रकार यात्रा करते हुए पानीपत पहुँचे, तो उनकी भेट वहां के प्रसिद्ध रईस रायबहादुर लाला ताराचन्द से हो गई। उन्होंने महर्षि से प्रार्थना की कि वह पानीपत रुककर उस नगरी को पवित्र करें, पर महर्षि को जल्दी दिल्ली पहुंचना था। पानीपत के लिए वह समय नहीं निकाल सके। पर जो कुछ समय के लिए लाला ताराचन्द महर्षि के सम्पर्क में आये, उसी से उन पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा और उनके तथा उनके परिवार में वैदिक धर्म के प्रति आस्था का बीज अंकुरित हो गया। इन्हीं लाला ताराचन्द के सुपुत्र रायजादा लाला योगध्यान थे जिनके सहयोग से सन् १८८३ में पानीपत में आर्यसमाज की स्थापना हुई।

पानीपत आर्यसमाज की प्रगति तथा आर्थिक साधनों को जुटाने में सबसे अधिक सहयोग सपाट्र वाले सिगला परिवार से प्राप्त हुआ। इस परिवार ने आर्यसमाज को अनेक ऐसे व्यक्ति प्रदान किये, जिनके कारण पानीपत नगर तथा समीपवर्ती क्षेत्र में वैदिक धर्म का बहुत प्रचार हुआ। इनमें लाला खेमचन्द रईस, लाला अनूपचन्द अफताब, लाला चतुर्भुज, श्री ओमप्रकाश सिगला और श्री रामाचन्द सिगला के नाम उल्लेखनीय हैं।

हरयाणा और इसके साथ लगे हुये क्षेत्र में आर्यसमाज का जो प्रचार-प्रसार हुआ, उसमें पानीपत के समाज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इसी समाज के सम्पर्क में आकर चौ० फूलसिंह वैदिक धर्म के अनुयायी बने और आर्यसमाज के लिये उन्होंने अपने जीवन को बलि दे दी। श्री फूलसिंह ने पटवारी के कार्य का प्रशिक्षण पानीपत में प्राप्त किया था और सन् १९०८ में अपने मित्र पटवारी प्रीतसिंह के साथ कुछ समय वह पटवारी से सम्बन्धित कार्य के लिए पानीपत में रहे भी थे। प्रीतसिंह आर्यसमाजी थे और समय-समय पर वह फूलसिंह जी को आर्यसमाज विषयक पुस्तकें पढ़ने की प्रेरणा देते रहते थे। इसी के परिणामस्वरूप चौ० फूलसिंह के जीवन में परिवर्तन आया और उन्होंने आर्यसमाजी बनने का निश्चय कर लिया। वह पानीपत आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर गये और पण्डित ब्रह्मानन्द से यज्ञोपवीत ग्रहण कर उन्होंने समाज में प्रवेश ले लिया। भक्त फूलसिंह जैसे महान् आर्य नेता के जीवन में परिवर्तन लाने का श्रेय इसी समाज को प्राप्त है। हरयाणा में सोंख पाथरी के आर्यसमाज का विशेष महत्त्व है। उसकी स्थापना एक ऐसे व्यक्ति ने की थी जो अपने इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। मुमला नाम का यह व्यक्ति पानीपत समाज के सम्पर्क में आया, जिसके कारण डकैती सदृश कुकृत्यों का परित्याग कर वह आर्यसमाज की सेवा में लग गया और उसी द्वारा सींख पाथरी में समाज की स्थापना हुई। चौधरी मामनसिंह एक अन्य सज्जन थे, जिन्होंने पानीपत समाज से प्रेरणा प्राप्त कर अपना जीवन वैदिक धर्म के प्रचार में लगा दिया था। यमुना नदी के पूर्वी तट साथ का जो प्रदेश हरयाणा के साथ लगा हुआ है चौधरी साहब ने उसे अपना कार्यक्षेत्र बनाया और वहां अनेक आर्यसमाजों की स्थापना की।

पानीपत आर्यसमाज ने वैदिक प्रचार के लिये जिन साधनों को अपनाया उनमें स्त्री-शिक्षा, शास्त्रार्थ और उपदेश प्रधान थे। स्त्री-शिक्षा के लिये उस द्वारा आर्य कन्या पाठशाला मोहल्ला अन्सार; आर्य कन्या हाई स्कूल वीर भवन और आर्य गर्ल्स कालिज ग्रांट ट्रंक रोड की स्थापना की गई। इन शिक्षण संस्थाओं के कारण जहां बालिकाओं को सुशिक्षित होने का अवसर मिला वहाँ साथ ही वैदिक धर्म से भी उन्होंने परिचय प्राप्त किया। बालकों की शिक्षा संस्थायें भी इस समाज द्वारा चलाई गई। वैदिक धर्म के प्रचार के प्रयोजन से जिन अनेक शास्त्रार्थों का इस समाज द्वारा पानीपत में आयोजन किया गया उनमें कुछ महत्त्व के हैं। पहला महत्त्वपूर्ण शास्त्रार्थ अप्रैल सन् १९२३ में ईसाइयों से हुआ जिसमें आर्यसमाज की ओर से पण्डित रामचन्द्र देहलवी थे और ईसाइयों की ओर से पादरी हरनन्द राय। शास्त्रार्थ की अध्यक्षता रायबहादुर लाला लक्ष्मीचन्द जैन ने की थी और इसमें आर्यसमाज को विजयी घोषित किया गया था। इसके कुछ दिन पश्चात् एक शास्त्रार्थ फिर ईसाइयों के साथ हुआ, जिसका विषय "सृष्टि की उत्पत्ति एवं इल्हाम" था। दोनों पक्षों का प्रतिनिधित्व वही विद्वान कर रहे थे, जिन्होंने कुछ दिन पूर्व शास्त्रार्थ किया था। तीसरा शास्त्रार्थ सन् १९२७ में आर्यसमाज के वार्षिकोत्सव पर मुसलमानों से हुआ। इसमें भी आर्यसमाज का प्रतिनिधित्व पं० रामचन्द्र जी देहलवी ने किया। पानीपत में मुसलमानों की बहुत अधिक संख्या थी, और उनकी ओर से मौलवी मुहम्मद इस्माईल आदि अनेक विद्वानों ने शास्त्रार्थ में भाग लिया था। इस शास्त्रार्थ का इतना अधिक प्रभाव हुआ कि मुसलमानों पर भी वैदिक धर्म की युक्तियुक्तता का सिक्का जम गया। सन् १९३१ में जैनियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ, जो चार दिनों तक चलता रहा। शास्त्रार्थ का विषय था "क्या वेद ईश्वरीय ज्ञान है?" जैनियों का कहना था, कि वेद को ईश्वरीय ज्ञान मानना सृष्टि के नियम के अनुकूल नहीं। आर्यसमाज की ओर से इस शास्त्रार्थ में पण्डित देवेन्द्रनाथ शास्त्री, पं० रामचन्द्र देहलवी, पं० ब्रह्मदेव विद्यालंकार तथा श्री मकानन्द थे और जैनियों की ओर से श्री मक्खनलाल शास्त्री, श्री राजेन्द्रकुमार शास्त्री और श्री माणकचन्द वर्णी आदि एक दर्जन पण्डित थे। जैनियों से हुये इस शास्त्रार्थ में "क्या सृष्टि कर्त्ता कोई ईश्वर है" यह भी एक विषय था। इनमें दोनों की युक्तियां सुनकर जनता इस परिणाम पर पहुंची कि आर्यसमाज के मन्तव्य सही व तर्कसंगत हैं। पानीपत में मुसलमानों का पर्याप्त जोर होने के कारण समय-समय पर आर्यसमाज से उनका टकराव होता रहता था। इस्लाम के अन्यतम सम्प्रदाय अहमदियों से पानीपत में अनेक बार शास्त्रार्थ हुये जिनमें आर्यसमाज का जो वर्चस्व प्रकट हुआ, उससे कुछ मुस्लिम विद्वान् अपने ऊपर काबू नहीं रख सके। गुलाम हुसैन कादियानी नामक पानीपत के एक अध्यापक ने "स्वामी दयानन्द और उसकी तालीम" नाम से एक पुस्तक लिखी, जिसमें महर्षि पर अनेक असत्य आक्षेप किये गये और जिसकी भाषा भी अमर्यादित थी। इसका उत्तर पानीपत के आर्यसमाज के तत्कालीन प्रधान लाला अनूपचन्द आफताब ने "ऋषि का बोलबाला" नामक पुस्तक लिखकर दिया। इस पुस्तक में गुलाम हुसैन कादियानी के आक्षेपों का ऐसा मुंह तोड़ उत्तर दिया गया था कि फिर उन्होंने महर्षि के विरुद्ध जबान नहीं खोली।

आर्यसमाज के प्राय: सभी संन्यासी, महात्मा और विद्वान् समय समय पर वैदिक धर्म के प्रचार के लिये पानीपत आते रहते हैं। इनमें स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी सर्वदानन्द, पण्डित गणपति शर्मा, महात्मा नारायण स्वामी, स्वामी वेदानन्द तीर्थ, स्वामी स्वतन्त्रानन्द, स्वामी केवलानन्द, लाला लाजपतराय, स्वामी भीष्म जी, ठाकुर अमरसिंह (महात्मा अमर स्वामी) कुंवर सुखलाल और श्री रामचन्द्र देहलवी के नाम उल्लेखनीय हैं। इन महात्माओं तथा सुयोग्य प्रचारकों के कारण पानीपत आर्यसमाज वैदिक धर्म के प्रचार प्रसार का समर्थ केन्द्र बना रहा।

विधवा विवाह, अन्तर्जातीय विवाह, दलितोद्धार, दहेज प्रथा तथा मृतक भोज का विरोध, परदा प्रथा एवं बाल विवाह का विरोध, मद्य सेवन के विरुद्ध प्रचार और अन्य विविध सामाजिक कुरीतियों के निवारण आदि सभी सुधार कार्यक्रमों में पानीपत आर्यसमाज का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आर्यसमाज की ओर से समय-समय पर धार्मिक अधिकारों की रक्षा के लिये जो भी संघर्ष किये गये, उन सब में पानीपत आर्यसमाज के सदस्य उत्साहपूर्वक भाग लेते रहे हैं।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

अकालियों से लिखित आश्वासन मिलने पर ही वार्ता की जाये

रोहतक २ अक्तूबर (कार्यालय संवाददाता द्वारा) आर्यसमाज बादली तथा कोसली में सार्वजनिक सभाओं में भाषण करते हुए आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान एवं रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने भारत सरकार को सावधान किया है कि जब तक अकाली लिखित रूप में आश्वासन न देवें कि गुरुद्वारों में अपराधियों को शरण नहीं दी जायेगी और वहां राष्ट्र विरोधी गतिविधियां नहीं होंगी तब तक उनके साथ समझौता वार्ता प्रारम्भ नहीं की जाये। पंजाब से सेना को हटाना उग्रवादियों के लिए हिंसा का मार्ग आसान करना होगा। अकाली हरयाणा की कीमत पर समझौता करना चाहते हैं। उन्होंने अब तक जितने समझौते किये हैं वे अब उनसे मुकरते जा रहे हैं। अतः लिखित आश्वासन लेना आवश्यक है। गुरुद्वारों के मुख्य ग्रन्थियों की आलोचना करते हुए आश्चर्य प्रकट करते हुये कहा कि उन्होंने ज्ञानी जैलसिंह को तो क्षमा कर दिया परन्तु सरदार बूटासिंह को मजहबी सिख होने के कारण क्षमा नहीं किया। इसी प्रकार बाबा सन्तासिंह द्वारा कार सेवा का विरोध करके सिद्ध कर दिया है कि अवसरवादी सिख गुरुओं के अनुयायी छुआछात मानने लग गये हैं जिस प्रकार वाराणसी के ब्राह्मणों ने बाबू जगजीवन द्वारा मूर्ति का अनावरण करने पर उसे गंगाजल द्वारा पुनः धोया था, इसी भान्ति मुख्य ग्रन्थियों ने भी स्वर्णमन्दिर में पुनः कारसेवा आरम्भ करवाई है।

प्रो० साहब ने उपस्थित नरनारियों से अनुरोध किया कि सभा द्वारा चलाए जा रहे शराबबन्दी आन्दोलन में तन मन धन से पूरा सहयोग देवें और ग्रामों की पंचायतों से शराब के ठेके बन्द करवाने हेतु प्रस्ताव करके सरकार को दिसम्बर तक भिजवा देवें। बादली तथा कोसली के सम्मेलनों में सभा की भजनमण्डलियों में पं० ईश्वरसिंह तूफान, पं० हरिश्चन्द्र एवं पं० मुन्शीलाल के प्रभावशाली भजन हुए।

आवश्यक सूचना

सभी आर्य नर नारियों को यह जानकर बड़ी प्रसन्नता होगी कि भक्त फूलसिंह जन्म शताब्दी समारोह के अवसर पर एक "स्मारिका" का प्रकाशन किया जा रहा है। जिन महानुभावों का भक्त फूलसिंह जी महाराज के साथ निकट का सम्बन्ध रहा है उनसे मेरी करबद्ध प्रार्थना है कि वे अपने संस्मरण सम्पादक के पास अविलम्ब भेजने की कृपा करें ताकि उनके अमूल्य विचार छापे जा सकें। जिन बैंकों ने, फैक्टरियों ने तथा अन्य व्यापारिक संस्थाओं ने अपने विज्ञापन छपवाने हैं, वे भी शीघ्र पत्र व्यवहार करें। स्मारिका नवम्बर मास में छपने के लिये दी जावेगी और २४-२-८५ को इसका विधिवत् विमोचन करवाया जावेगा।

पत्र व्यवहार का पता
प्रकाशवीर विद्यालंकार
सम्पादक सेनाक भवन, कामधेनु मार्ग,
३२, चाणक्यपुरी, रोहतक

महर्षि दयानन्द पर फिल्म का विरोध

आर्यसमाज सालवन जिला करनाल ने अपनी बैठक में श्री भगवान् देव सांसद द्वारा बनाई जा रही महर्षि दयानन्द पर फिल्म का कड़ा विरोध किया है। इस फिल्म को महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों के विपरीत बताते हुए कहा है कि अपने बुजर्गों की बनावटी नकल न उतार कर उनके आदर्शों पर आचरण करना चाहिए। उनकी नकल उतारने वाले अभिनेताओं में मांस शराब का सेवन करने वाले तथा भ्रष्टाचारी तत्व सम्मिलित हैं। इस प्रकार ऋषि की फिल्म अनुचित है।

सत्यपालसिंह आर्य प्रधान आर्यसमाज

मेला कपाल मोचन पर वैदिक धर्म प्रचार तथा यज्ञ का आयोजन

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा सम्वत् २०४१ दीवाली के शुभ अवसर पर ५ से ८ नवम्बर १९८४ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार तथा चारों वेदों से महायज्ञ करने का आयोजन किया गया है। इस मेले पर हरयाणा, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तर प्रदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु नर नारी आते हैं। अतः यह प्रचार के लिए उपयुक्त स्थान है। मेले में सभा की ओर से प्रचार का संयोजक श्री पं० हरिश्चन्द्र आर्य भजनोपदेशक को नियुक्त किया है। सभा के युवा विद्वान् पं० सुरेशकुमार शास्त्री एम० ए० विद्यावाचस्पति तथा पं० तेजपाल जी, पं० मुन्शीलाल एवं पं० कृष्णलाल रंगीला आदि की भजन मण्डलियां प्रचारार्थ पहुँच रही हैं।

आर्यसमाजों से निवेदन है कि मेले में वैदिक धर्म प्रचार के शुभ कार्य में आर्थिक सहयोग प्रदान करें। निवेदक

ओमानन्द सरस्वती	रणबीरसिंह	प्रो० शेरसिंह
प्रधान परोपकारिणी सभा	मन्त्री	प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

(पृष्ठ ४ का शेष)

हैदराबाद सत्याग्रह में लाला हरगुलाल, लाला सुगनचन्द, लाला ज्योतिप्रसाद, श्री लालचन्द पालीवाल और लाला कैलाशचन्द आदि कितने ही आर्य सभासदों ने पानीपत समाज की ओर से भाग लिया था। इसी प्रकार गोरक्षा आन्दोलन आदि में भी इस समाज के सदस्य सक्रिय रूप से भाग लेते रहे।

लाला देशबन्धु गुप्त केवल राजनीतिक नेता ही नहीं थे, वह आर्य समाज के भी उत्साही कार्यकर्ता थे। स्वामी श्रद्धानन्द उन्हें सार्वजनिक जीवन में लाये थे और उनके अनुयायी के रूप में उन्होंने दलितोद्धार आदि के लिए महत्त्वपूर्ण कार्य किया था। देशबन्धु जी पानीपत के निवासी थे, और वहाँ के आर्यसमाज से ही उन्होंने देशभक्ति और धर्म प्रेम की शिक्षा ग्रहण की थी।

पानीपत आर्यसमाज की एक अन्य विशेषता भी उल्लेखनीय है। उसका पुस्तकालय इस दृष्टि से बहुत समृद्ध है, कि उसमें पुरानी पुस्तकों तथा हस्तलिखित ग्रन्थों का बहुत बड़ा संग्रह है। वहां अनेक ऐसी पुस्तकें विद्यमान हैं जो अन्यत्र कहीं प्राप्तव्य नहीं हैं। भारत के इतिहास में पानीपत का विशिष्ट स्थान है क्योंकि उसके रणक्षेत्र में अनेक ऐसे युद्ध लड़े गये जो ऐतिहासिक दृष्टि से निर्णायक सिद्ध हुए। आर्यसमाज के क्षेत्र में भी पानीपत का कम महत्त्व नहीं है। हरयाणा में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार में उसका योगदान विशेष स्थान रखता है।

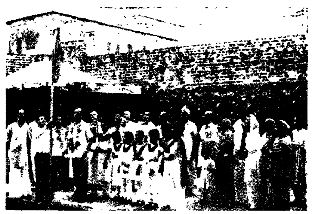
(आर्यसमाज का इतिहास लेखक पं० सत्यकेतु विद्यालंकार से साभार)



धनवन्ती आर्य कन्या विद्यालय रोहतक की छात्रा कुमारी ललिता आर्या ने आर्य विद्या परिषद् द्वारा आयोजित धार्मिक परीक्षा की धर्म प्रवेशिका में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

आर्यसमाज कालका जिला अम्बाला में वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न









आर्यसमाज कालका जिला अम्बाला में वेद प्रचार सप्ताह २ सितम्बर से ९ सितम्बर तक बड़े हर्षोल्लास पूर्वक मनाया गया जिसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के योग्य युवा विद्वान् श्री सुरेश कुमार शास्त्री एम० ए० तथा पं० हरिश्चन्द्र जी को भजन मण्डली पधारी। इसके साथ ही गुरुकुल कुरुक्षेत्र के आचार्य श्री देवव्रत शास्त्री एम० ए० भी पधारे।

उपरोक्त सभी विद्वानों के बड़े मार्मिक तथा वेद, भारतीय संस्कृति रामायण, महाभारत सम्बन्धी अनुसन्धानात्मक प्रवचन हुए।

५ सितम्बर को उत्सव का मुख्य प्रदर्शन नगर कीर्तन हुआ जिसकी जनता जनार्दन ने भूरी भूरी प्रशंसा की। स्थानीय विद्वान् ब्रह्मचारी रामप्रकाश जी के पूर्ण सहयोग से ९ सितम्बर को समापन के अवसर पर सभी विद्वानों को पुष्पमालाओं के साथ अभिनन्दन किया गया जिनके कुछ चित्र झलकी रूप में प्रस्तुत हैं तथा ऋषि लंगर के साथ वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ जिसकी छाप नगरनिवासियों के हृदय पर अमिट रहेगी।

सुरेन्द्रपाल शर्मा
मन्त्री आर्यसमाज कालका

पितृ यज्ञ

[श्राद्ध और तर्पण]

(ले० डा० सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री)

(गतांक से आगे)

प्रश्न—कुपात्र और सुपात्र का क्या लक्षण है ?

उत्तर—जो छलनी, कपटी, स्वार्थी, विषयी, काम-क्रोध-लोभ-मोह से युक्त: पराहीन करने वाले, लम्पटी, मिथ्यावादी, अविद्वान्, कुसंगी, आलसी, जो कोई दाता हो उनके पास बार बार मांगना, धरना देना ना किए पश्चात् भी हठता से मांगते ही जाना, सन्तोष न होना, जो न दे उसकी निन्दा करना, शाप और गाली आदि देना, अनेक बार जो सेवा करे और एक बार न करे तो उसका शत्रु बन जाना, ऊपर से साधु का वेश बनाकर लोगों को बहाकर ठगना, और अपने पास पदार्थ हो तो भी मेरे पास कुछ भी नहीं है, ऐसा कहना, सबको फुसला-फुसला कर स्वार्थ सिद्ध करना, रात दिन भीख मांगने में ही प्रवृत्त रहना, निमन्त्रण देने पर यथेष्ट मांग आदि द्रव्य खा-पीकर बहुत सा पराया पदार्थ खाना, पुनः उन्मत्त (पागल) होकर प्रमादी होना, सत्य मार्ग का विरोध और झूठे मार्ग में अपने प्रयोजनार्थ चलना, वैसे ही अपने चेलों को केवल अपनी ही सेवा करने का उपदेश करना, अन्य योग्य पुरुषों की सेवा करने का नहीं, सद्विद्या आदि प्रवृत्ति के विरोधी, जगत् के व्यवहार अर्थात् स्त्री, पुरुष, माता, पिता, सन्तान, राजा, प्रजा, इष्ट मित्रों में अप्रीति कराना कि ये सब असत्य हैं, और जगत् भी मिथ्या है, इत्यादि दुष्ट उपदेश करना आदि कुपात्रों के लक्षण हैं।

और—जो ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय, वेदादि विद्या के पढने-पढ़ाने हारे, सुशील सत्यवादी, परोपकारी प्रिय, पुरुषार्थी, उदार, विद्याधर्म की निरन्तर उन्नति करने वाले, धर्मात्मा, शान्त, निन्दा स्तुति में हर्ष और शोक से रहित, निर्भय, उत्साही, योगी, ज्ञानी, सृष्टिक्रम, वेदाज्ञा और ईश्वर के गुण कर्म स्वभाव के अनुकूल वर्त्ताव करने वाले, न्याय की रीति से युक्त, पक्षपात रहित, सत्योपदेश और सत्यशास्त्रों के पढ़ने पढ़ाने हारे के परीक्षक, किसी को लल्लो पत्तों न करें, प्रश्नों के यथार्थ समाधान कर्त्ता, अपने आत्मा के तुल्य अन्य का भी सुख दुःख, हानि लाभ समझने वाले, अविद्या आदि क्लेश, हठ, दुराग्रह, अभिमान से रहित, अमृत के समान मान को समझने वाले, सन्तोषी, जो कोई प्रीति से जितना देवे उतने से ही प्रसन्न, एक बार आपत्काल में मांगने पर न देने वा वर्जन पर भी दुःख व बुरी चेष्टा न करना, वहां से झट लौट जाना, उसकी निन्दा न करना, सुखी पुरुषों के साथ मित्रता, दुःखियों पर करुणा, पुण्य आत्माओं से आनन्द और पापियों से उपेक्षा अर्थात् राग द्वेष से रहित रहना, सत्यमानी, सत्यवादी, सत्यकारी, निष्कपट, ईर्ष्या और द्वेष से रहित, गम्भीर आशय, सत्यपुरुषों के धर्म से युक्त और सर्वथा दुष्टाचार से रहित, अपने तन मन धन को परोपकार में लगाने

(शेष पृष्ठ ८ पर)

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत स्थापना शताब्दी का कार्यक्रम

स्थान—आर्य कालेज पानीपत ६ अक्तूबर से १४ अक्तूबर तक

शनिवार ६ अक्तूबर १९८४

प्रातः ४ से ६-३० तक यज्ञ ब्रह्मा श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी
८-३० से ८-४५ तक भजन
८-४५ से ९-३० तक प्रवचन आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-५० तक भजन
५-५० से ६-३० तक प्रवचन स्वामी रामेश्वरानन्द जी

रविवार ७ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ८-३० तक यज्ञ सामवेद ८-३० से ९ तक भजन
९ से ९-४५ तक प्रवचन श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश
९-४५ से १०-३० तक प्रवचन श्री पं० विश्वश्रवा जी व्यास
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-५० तक भजन
५-५० से ६-३० तक प्रवचन आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री

सोमवार ८ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ८-३० तक यज्ञ सामवेद ८-३० से ८-४५ तक भजन
८-४५ से ९-३० तक प्रवचन आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-४५ तक भजन
५-५० से ६-३० तक प्रवचन स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी

मंगलवार ९ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ७ तक केवल दैनिक-यज्ञ-आहुतियां ७ से १० तक श्रौत आग्रयणेष्टि (नवसस्येष्टि) (पृथक् यज्ञशाला में दाक्षिणात्य वैदिक-विद्वानों द्वारा प्रारम्भ) १० से १०-३० तक प्रवचन आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-५० तक भजन
५-५० से ६-३० तक प्रवचन श्री स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी

बुद्धवार १० अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ७ तक दैनिक यज्ञ आहुतियां ७ से १० तक श्रौत पौर्णमासेष्टि यज्ञ (पृथक् यज्ञशाला में)
१० से १०-३० तक प्रवचन पं० शिवपूजनसिंह कुशवाह
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-४५ तक भजन
५-४५ से ६-३० तक प्रवचन श्री स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी

बृहस्पतिवार ११ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ८-३० तक यज्ञ सामवेद ८-३० से ९-३० तक भजन
९-३० से १०-१५ तक प्रवचन डा० प्रज्ञादेवी जी, व्याकरणाचार्या आचार्या कन्या महाविद्यालय, वाराणसी
मध्यान्होत्तर ३ से ४ तक विद्वद् गोष्ठी
सायं ४ से ५-३० तक यज्ञ सामवेद ५-३० से ५-५० तक भजन
५-५० से ६-३० तक प्रवचन आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

शुक्रवार १२ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ८-३० तक यज्ञ सामवेद ८-३० से ८५० तक भजन श्री नत्थासिंह जी ८-५० से ९-३० तक प्रवचन आचार्य विश्वश्रवा जी व्यास
१० बजे ध्वजारोहण प्रो० शेरसिंह जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

मध्यान्होत्तर १ बजे से शोभायात्रा आर्य कालेज से प्रारम्भ होगी

रात्रि ७-३० से ८-३० तक भजन श्री ओमप्रकाश जी वर्मा संगीताचार्य एवं श्री नत्थासिंह जी ८-३० से ९-४५ तक व्याख्यान डा० प्रज्ञादेवी जी
९-४५ से १०-३० तक व्याख्यान पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

शनिवार १३ अक्तूबर १९८४

प्रातः ६-३० से ७ तक यज्ञ दैनिक-यज्ञ-आहुतियां ७ से ८-३० तक श्रौत पौर्णमासेष्टि यज्ञ का प्रदर्शन (दाक्षिणात्य वैदिक विद्वानों द्वारा)
८-३० से ९ तक भजन श्री ओमप्रकाश जी वर्मा ९ से ९-४५ तक प्रवचन अमर स्वामी जी महाराज ९-४५ से १०-३० तक व्याख्यान श्री पण्डित शिवकुमार जी शास्त्री ११ से २ तक भोजन विश्रामादि।
मध्यान्होत्तर २ से ३-३० तक भजन श्री नत्थासिंह जी एवं श्री वर्मा जी
३-३० से ४-१५ तक व्याख्यान डा० प्रज्ञादेवी जी
४-१५ से ५ तक „ डा० रामप्रकाश जी

५ से ७-३० तक भोजन विश्रामादि

रात्रि ७-३० से ८-३० तक भजन श्री वर्मा जी एवं श्री नत्थासिंह जी
८-३० से ९-१५ तक व्याख्यान श्री प० शिवकुमार जी शास्त्री
९-१५ से १० तक „ „ पं० बिहारीलाल जी शास्त्री

रविवार १४ अक्तूबर १९४८

प्रातः ६-३० से ८-३० तक यज्ञ सामवेदको पूर्णाहुति
८-३० से ९-१५ तक भजन श्री ओमप्रकाश जी वर्मा एवं श्री नत्थासिंह
९-१५ से १० तक प्रवचन महायाज्ञिक पण्डित विश्वनाथ जी श्रौती नेलोर
१० से १०-४५ तक व्याख्यान श्री वैद्यनाथ जी आचार्य

११ से २ तक भोजन विश्रामादि

मध्यान्होत्तर २ से ३-१५ तक भजन श्री ओमप्रकाश जी वर्मा एवं श्री नत्थासिंह जी ३-१५ से ५ तक (समस्त भारत से पधारे आर्यसमाजी व समाजेतर विशिष्ट वैदिक विद्वानों का नागरिक अभिनन्दन एवं सम्मान)
अध्यक्ष —स्वामी सर्वानन्द जी महाराज

५ से ७-३० तक भोजन विश्रामादि

रात्रि ७-३० से ८-३० तक भजन श्री नत्थासिंह जी एवं श्री वर्मा जी
८-३० से ९-१५ तक व्याख्यान डा० प्रज्ञादेवी जी
९-१५ से १० तक „ पं० शिवकुमार जी शास्त्री
१० से १०-३० तक रिपोर्ट एवं धन्यवादादि शान्तिपाठ

रामानन्द सिंगला
संयोजक शताब्दी समारोह

हरयाणा के आर्यसमाजों तथा आर्य शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से अनुरोध है कि इस समारोह में अपने सदस्यों सहित अधिक से अधिक संख्या में पानीपत पहुँचकर अपने संगठन का परिचय देवें।

रणजीत सिंह
सभा मन्त्री

(पृष्ठ ६ का शेष)

वाले, पराये सुख के लिए अपने प्राणों को भी समर्पित करने वाले इत्यादि लक्षणों से युक्त सुपात्र होते हैं। परन्तु—दुर्भिक्ष आपात्काल में अन्न, जल, वस्त्र और औषध, पथ्य, स्थान आदि के अधिकारी सब प्राणी मात्र हो सकते हैं।

प्रश्न—दाता कितने प्रकार के होते हैं ?

उत्तर–उत्तम, मध्यम और निकृष्ट भेद से दाता तीन प्रकार के होते है। उत्तम दाता उसको कहते हैं जो देश, काल और पात्र को जान कर सत्यविद्या, धर्म की उन्नति रूप परोपकार के लिए दान देवे। मध्यम वह है जो कीर्ति वा स्वार्थ के लिए दान करे। नीच (निकृष्ट) वह है जो अपना व पराया कुछ उपकार न कर सके किन्तु वेश्यागमन आदि वा भांड, भाट आदि को देवे, देते समय तिरस्कार, अपमान आदि कुचेष्टा भी करे। पात्र, कुपात्र का कुछ भी भेद न जावे किन्तु 'सब अन्न बारह पसेरी' बेचने वालों के समान विवाद लड़ाई, दूसरे धर्मात्मा को दु:ख देकर सुखी होने के लिए दिया करे, वह अधम दाता है।

जो परीक्षा पूर्वक विद्वान् धर्मात्माओं का सत्कार करे वह उत्तम और जो कुछ परीक्षा करे वा न करे परन्तु अपनी जिसमें प्रशंसा हो उसको मध्यम और जो अन्धाधुन्ध परीक्षारहित निष्फल दान दिया करे वह नीच दाता कहाता है।

प्रश्न—दान के फल यहां होते हैं वा परलोक में ?

उत्तर—सर्वत्र होते हैं।

प्रश्न–स्वयं होते हैं, वा कोई फल देने वाला है ?

उत्तर–फल देने वाला ईश्वर है। जैसे कोई चोर डाकू स्वयं बन्दी घर में जाना चाहता, राजा उसको अवश्य भेजता है, धर्मात्माओं के सुख की रक्षा करता, डाकू आदि से बचाकर उनको सुख में रखता है, वैसे ही परमात्मा सबको पाप पुण्य के दु:ख और सुख रूप फलों को यथावत् भुगाता है।

प्रश्न–जो ये गरुड़ पुराण आदि ग्रन्थ हैं वेदार्थ वा वेद की पुष्टि करने वाले हैं व नहीं ?

उत्तर–नहीं, किन्तु वेद के विरोध और उलटे चलते हैं, तथा तन्त्र भी वैसे ही हैं। जैसे कोई मनुष्य एक का मित्र और सब संसार का शत्रु हो, वैसे ही पुराण और तन्त्र को मानने वाला पुरुष होता है; क्योंकि एक दूसरे से विरोध कराने वाले ये ग्रन्थ हैं। इनका मानना किसी मनुष्य का काम नहीं किन्तु इनको मानना पशुता है।

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 पत्रि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१९ सृष्टि सं० ...०८४



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४२ १४ अक्तूबर १९८४ वार्षिक शुल्क १२) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

सभा उपप्रधान चौ० माडूसिंह जी मलिक ७ अक्तूबर को स्वर्गवास हो गये

रोहतक ७ अक्तूबर (कार्यालय संवाददाता द्वारा) आर्य नेता चौ० माडूसिंह मलिक ६ अक्तूबर को फरीदाबाद तथा दिल्ली होकर सायंकाल अपने निवास स्थान शान्ति निवास आर्यनगर रोहतक आ गये और भोजनादि से निवृत होकर अपने सुपुत्र श्री भूपेन्द्रसिंह एडवोकेट से कहा कि मैंने प्रातःकाल ही खानपुर जाना है, जहां वैद्य धर्मपाल जी द्वारा आयोजित वार्षिक यज्ञ की पूर्णाहुति है, कहकर सो गये। परन्तु जब वे नित्यप्रति की भान्ति प्रातःकाल ४-५ बजे तक सैर को जाने के लिये नहीं उठे, तो उनके सुपुत्र ने उनके शयन कक्ष में जाकर जगाना चाहा तो उन्हें मृत पाया। तुरन्त फोन करके डा० ओमप्रकाश जी गुप्त को बुलाया गया। डा० ने देखते ही कहा कि ५ घण्टे पूर्व इनका स्वर्गवास हो चुका है। यह सुनकर सारा परिवार स्तब्ध रह गया क्योंकि सायंकाल सोते समय वे पूर्ण स्वस्थ प्रसन्न थे। इस दुखद समाचार को सुनकर नगरवासियों का शान्ति निवास पर तांता सा लग गया और सभी के मुख से यह शब्द निकल रहे थे कि चौधरी साहब का जीवन जितना शानदार रहा है, उनकी मृत्यु भी उतनी ही शानदार रही। अपने शरीर को छोड़ते समय किसी को भी कष्ट नहीं दिया और एक योगी की भान्ति समाधि लेकर चुपचाप (हृदयगति बन्द होने पर) इस संसार से विदा हो गये। मृत्युशैय्या पर लेटे हुए जिसने भी उनके अन्तिम दर्शन किये उनके चेहरे को पूर्व की भान्ति शान्त तथा गम्भीर अवस्था में देखा।

चौ० माडूसिंह जी का अन्तिम संस्कार उनकी इच्छानुसार कन्या गुरुकुल खानपुर की पावन भूमि में सायंकाल वैदिक रीति के अनुसार किया गया। इससे पूर्व रोहतक निवास स्थान पर अनेक नेताओं तथा नरनारियों ने दिवंगत नेता को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। सायंकाल ४ बजे के लगभग शवयात्रा प्रारम्भ हुई। एक मैटाडोर में चौधरी साहब का शव जिसे ओ३म् के झण्डों से सजाया गया था। उनके पीछे उनके परिवार तथा अन्य श्रद्धालुओं की कारें थी। अन्य कारों में सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह जी, सभा मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी, रोहतक के पूर्व विधायक सेठ श्री कृष्णदास जी, मर्तसिंह भूतपूर्व विधायक चौ० राममेहर एडवोकेट, ठेकेदार जयसिंह आदि नेता शव यात्रा के साथ थे। रोहतक से खानपुर तक मार्ग में आने वालों ग्रामों में शवयात्रा को रुकवाकर हजारों नरनारियों ने अपने दिवंगत नेता के अन्तिम दर्शन किये।

सायंकाल ५ बजे कन्या गुरुकुल खानपुर के प्रांगण में जहां वार्षिक उत्सव होता है, भारत के पूर्व रक्षा मन्त्री चौ० बन्सीलाल जी तथा पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री प्रो० शेरसिंह जी ने अर्थी को कन्धा दिया और ५, ६ हजार आर्य नरनारियों की भीड़ में चौधरी साहब का अन्तिम संस्कार वेदमन्त्रों के उच्चारण के साथ किया गया।

इस अवसर पर चौ० राजेन्द्रसिंह मन्त्री हरयाणा, श्रीमती करतार देवी मन्त्री हरयाणा, चौ० मुख्त्यारसिंह सदस्य राज्य सभा आदि राजनैतिक नेता तथा हरयाणा के कोने कोने से पधारे सैकड़ों प्रमुख आर्य कार्यकर्त्ता उपस्थित थे। गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर की महासभा के अधिकारी कर्मचारियों तथा छात्र एवं छात्राओं ने अश्रुधारा के साथ अपने मार्ग दर्शक लोकप्रिय नेता को सदा के लिए विदाई दी।

श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन

दिवंगत आर्य नेता चौ० माडूसिंह जी को श्रद्धांजलि देने के लिए १८ अक्तूबर को प्रातः ११ बजे शान्ति निवास आर्य नगर निकट वैदिक भक्ति आश्रम रोहतक में तथा २१ अक्तूबर रविवार को प्रातः ११ बजे कन्या कुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत में श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन हवन यज्ञ के साथ प्रारम्भ किया जायेगा। इन सभाओं में राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक नेता पहुँच रहे हैं। अतः सुविधानुसार इन सभाओं में पहुंचकर अपने प्रिय नेता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करें।

स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का सन्देश

मैं सिंहापुर, जावा, सुमात्रा आदि विदेशों में प्रचारार्थ गया हुआ था। वापस लौटने पर समाचार पत्रों में पढ़ने से अत्यन्त दुःख हुआ कि आर्यसमाज और हरयाणा का बहुत ईमानदार, निष्ठावान तथा सादगी के प्रतीक चौ० माडूसिंह जी का निधन हो गया। आपने भक्त फूलसिंह जी के बलिदान के बाद गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर का संचालन बहुत ही परिश्रम तथा लगन के साथ किया। १९७६ में हरयाणा आर्यसमाज शताब्दी समारोह आपकी अध्यक्षता में सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। उन दिनों एमरजेंसी का समय था और हरयाणा मन्त्रीमण्डल में शिक्षा मन्त्री थे। आपने साहस पूर्वक समारोह में आने वाली विघ्न बाधाओं को दूर किया। जब कभी मैं अस्वस्थ हुआ तो मिलने के लिए मेरे पास पहुँचते। परमात्मा से प्रार्थना है कि उन द्वारा संचालित संस्थाएं फलती फूलती रहें। उनके रिक्त की पूर्ति होना असम्भव है।

सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह का सन्देश

चौ० माडूसिंह जी सौम्यता और विनम्रता की साक्षात् मूर्ति थे। उन्होंने जीवन पर्यन्त गरीब किसानों तथा आर्यसमाज की सेवा की। शिक्षा संस्थाओं से उनका विशेष लगाव था और उन्होंने अमर शहीद भक्त फूलसिंह जी द्वारा स्थापित गुरुकुल भैंसवाल और कन्या गुरुकुल खानपुर की उन्नति में पूरी शक्ति लगाई। आज जो विस्तृत और बृहत् रूप इन संस्थाओं का देखने को मिलता है वह उनके प्रयासों की बोलती तस्वीर है। शिक्षा मन्त्री के रूप में हरयाणा प्रदेश शिक्षा प्रसार के लिए उनका योगदान चिरस्मरणीय रहेगा। भगवान् से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति तथा सद्गति प्रदान करें।

सावांग होटल,
जकार्ता (इण्डोनेसिया)
तिथि २६-९-८४

सम्पादक के नाम पत्र

श्रीमान् माननीय प्रियवर पं० वेदव्रत जी,

सप्रेम नमस्ते।

हम दिल्ली से विमान द्वारा २१ को रात्री को चलकर प्रातःकाल २२ सितम्बर को पौने सात बजे थाईदेश (श्याम) की राजधानी बेंकांक में पहुँच गये। वहां पर २२, २३, २४ को रहे और २५ को रात्री को लगभग ९ बजे सिंगापुर होते हुये इण्डोनेसिया की राजधानी जकार्ता में पहुंच गये। यहां सवांग होटल में ठहरे हैं। हमारी यात्रा मण्डली में ७ बहनें तथा १३ पुरुष सभी आर्यसमाजी हैं। मैं, ब्र० विरजानन्द ब्र० रामवीर जी तथा कन्या गुरुकुल नरेला की स्नातिका कु० सुषमार्या (मुरादाबाद) है। डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार तथा विवाडोव एक अन्य गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक हैं। वैरागी जी अच्छे घुमक्कड़ तथा लेखक हैं। श्री दयानन्द जी वकील आगरे के आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आर्य केन्द्रीय सभा आगरेके प्रधान लखनऊ, कानपुर, तथा बगलोर, कर्नाटक के सज्जन हैं। सभी शिक्षित तथा सम्भ्रान्त व्यक्ति हैं। सभी बोलना जानते हैं। कुछ पहले भी विदेशों की यात्रा बहुत बार कर चुके हैं। बंकॉक (थाईदेश) में आर्यसमाज का एक विशाल मन्दिर है। हिन्दू सभा का भी विष्णु मन्दिर है वह और भी अधिक विशाल है। सब आर्यसमाजी तथा सनातनधर्मी भाई मिलकर रहते हैं। हमारे व्याख्यान दोनों स्थानों पर ही हुये। व्याख्यानों का अच्छा प्रभाव रहा। सबने पुष्पमालाओं तथा प्रीतिभोज द्वारा अच्छा स्वागत किया। ब्र० रामवीर तथा ब्र० विरजानन्द दोनों ने योग के आसनों का प्रदर्शन किया। अच्छा प्रभाव रहा। प्राचीन काल में वैदिक संस्कृति बौद्ध धर्म का विशेष प्रचार इन सभी दक्षिण पूर्वी देशों में खूब रहा है। थाईदेश में रामायण का भित्ति चित्रों वाला मन्दिर दर्शनीय स्थान है। हजारों बौद्ध मन्दिर हैं जिन में हजारों की संख्या में बौद्धभिक्षु आजकल भी रहते हैं। भिक्षा पर इनका निर्वाह होता है। प्रातः सूर्योदय के समय नंगे पैर नंगे सिर भिक्षापात्र लिये भिक्षा के लिए सभी भिक्षु समूह पंक्तिबद्ध होकर गृहस्थियों के घरों के आगे से निकल जाता है। सभी गृहस्थ मातायें श्रद्धानुसार भिक्षुओं के पात्र में भिक्षा प्रदान करती हैं। भिक्षु नीचे दृष्टि किये हुए चले जाते हैं। भिक्षा लेकर सभी अपने बिहारों और मन्दिरों में लौट आते हैं। सभी भिक्षु पीत (पीले) वस्त्र धारण करते हैं। इस देश के नियम है कि प्रत्येक पुरुष को एक बार तो अवश्य भिक्षु बनना ही पड़ता है, चाहे वह राजपुत्र ही क्यों न हो। उन्हें सारी आयु भिक्षु अनिवार्य रूप से नहीं रहना पड़ता। वे एक मास ही भिक्षु रहकर घरों को लौट सकते हैं। हम बहुत से भिक्षुओं से अनेक मठों में मिले। वे थाई भाषा ही केवल जानते हैं। संस्कृत वा अन्य विदेशी भाषा अंग्रेजी प्रायः नहीं जानते। इसलिये उनके साथ बात करने तथा उनके हाव-भाव समझने में सब से बड़ी यही बाधा है। मन्दिरों में प्राचीन बड़ी भारी-भारी मूर्तियां भगवान् बुद्ध की मिलती हैं। सोने की भारी मूर्तियों के दर्शन भी हमने वहां किये। महात्मा बुद्ध के विचारों का प्रचार पर्याप्त है। किन्तु इस थाई देश में मांस मदिरा का अत्यन्त प्रचार है। इसी कारण व्यभिचार का भी बाहुल्य है। पट्टाया के समुद्र तट पर खुले मदिरालय वेश्यालयों (व्यभिचार के अड्डों) को देखकर हृदय कांप जाता। ऐसा प्रतीत होता है कि महात्मा बुद्ध के अहिंसा ब्रह्मचर्य आदि महाव्रतों का आचरण यहां नाममात्र भी नहीं।

वैसे तो महात्मा बुद्ध के उपदेशों की पुस्तकें थाई और आङ्गलभाषा में प्रत्येक होटल के कमरे में रखी हैं। एक पुस्तक मैंने वहां से ली है। धर्म का प्रचार दिखावे मात्र का है। बहुत से पर्यटन-कारी यात्री अनेक देशों से इन देशों में मद्य मांस व्यभिचार (भोग-विलास) के लिए ही यहां आते हैं। जो वस्तुएं थाई देश में दुकानों वा मन्दिरों पर बिकती हैं। उनका वे तिगुणा चौगुणा मूल्य तो अवश्य कहते। भोले यात्री खूब ठगे जाते हैं। १२००) मूल्य के थाई देश की मुद्राएं ४५०) में हमने खरीदीं। सभी वस्तुओं के क्रय करने में बहुत धोखा होता है। मेरी इच्छा थी थाई देश का कोई इतिहास ग्रन्थ खरीदूं किन्तु बहुत यत्न करने पर भी इस विषय का कोई ग्रन्थ मिला नहीं। जो पुस्तकें मिलती थी वे भी बहुत मंहगी। गाय का दूध भी नहीं मिलता। भोजन होटल-निवास सभी मंहगे हैं। भारत देश से तो सब कुछ मंहगा दिखाई दिया। किन्तु यह सुनने में आया कि कपड़े कुछ सस्ते हैं। कपड़े हमने खरीदने नहीं थे अतः उनके मूल्य का कुछ पता नहीं चला।

मेरा तो पहली यात्रा में सब कुछ देखा भाला था। ब्र० विरजानन्द ब्र० रामवीर जी नये यात्री विदेश यात्रा के लिये आए थे। कुमारी सुषमार्या तथा कुछ भाई और बहन नए ही थे जो कभी विदेश यात्रा में नहीं गये थे। इनकी विदेश यात्रा की रुचि के कारण मैं भी इनके साथ आया था। एक मेरी इच्छा यह भी थी इस बार यदि भविष्य में वैदिक धर्म प्रचार की कोई स्थायी योजना बन सके तो मेरी यह यात्रा सफल होगी। इसी कारण विदेशों में रहने वाले प्रवासी आर्यसमाजियों से मैं निरन्तर सम्पर्क बढ़ाने का यत्न करता आ रहा हूं। मेरी नैरोबी यात्रा, लन्दन तथा अमेरिका की यात्रा भी इसी उद्देश्य को सम्मुख रखकर की गई थी।

विदेश की यात्राओं में धन तो अधिक व्यय होता है और प्रचार की दृष्टि से जो लाभ होना चाहिये वह लाभ नहीं होता। अब मेरा स्वास्थ्य युवावस्था के समान तो अच्छा है नहीं। किसी साथी ब्रह्मचारी को साथ लेकर ही मैं अच्छा प्रचार कर सकता हूं। इसीलिये इस यात्रा में कई साथियों के साथ मैं इन देशों में आया हूं। आगे का अनुभव ही बता[illegible] मुझे तथा मेरे ब्रह्मचारियों को प्रचार की योजना में कितनी सफलता मिलगी। कल प्रातः जकार्ता से जोग्यकर्ता जा रहे हैं फिर बाली द्वीप जाएंगे। सम्भवतः ५ अक्तूबर को लौटें। सबको नमस्ते। बच्चों को प्यार।

भवदीय ओमानन्द सरस्वती

ओ३म्

(योग्यकार्ता इण्डोनेसिया)
तिथि २८-९-८४

आदरणीय पं० वेदव्रत जी,

सादर नमस्ते।

हम २० लोग बेंकाक, पटाया, जकार्ता होते हुए कल यहां पहुंच गये थे। आज बाली द्वीप में जाना है। इधर मुस्लिमों के मध्य भारतीय संस्कृति और संस्कृत भाषा अभी तक सुरक्षित है इसे सुरक्षित करना बहुत आवश्यक है। इधर मद्य मांस का प्रबल साम्राज्य है अंग्रेजी भाषा कोई नहीं जानता। पुनरपि विश्वसम्पर्क का एक मात्र माध्यम आज यही भाषा है। शेष फिर मिलने पर।

भवदीय
विरजानन्द देवकरणि

सम्पादकीयः-

राष्ट्रीय एकता के लिए राष्ट्रपति पद्धति अधिक उपयुक्त

(गतांक से आगे)

कार्यपालिका के काम में प्रत्यक्ष रूप से विधायकों का हस्तक्षेप न हो तो अधिकारियों और कर्मचारियों के रोज रोज के तबादलों का झगड़ा हो खत्म हो जाएगा, अधिकारी अपने काम में लगेंगे और उनका मूल्यांकन भी उसी के अनुसार होगा। विधायकों को इन सब कामों से छुट्टी मिलेगी तो विधायक अपने विधि सम्बन्धी कामों में ध्यान लगायेंगे अपनी अपनी रुचि के अनुसार अलग अलग विभागों की समितियों के सदस्यों के रूप में वे गहरा चिन्तन करेंगे और कार्यपालिका और न्याय पालिका को कानून के अनुसार काम करने और कानूनों की सही व्याख्या करने में सहायता दे सकेंगे। लोकतन्त्र के ये तीनों ही यन्त्र स्वतन्त्र हो कर अपनी अपनी परिस्थियों में काम करेंगे, सबकी महत्ता का अनुपात बना रहेगा। अपने अपने गुणों के आधार पर अपने अपने क्षेत्रों में सब की महत्ता का तारतम्य भी बना रह सकेगा।

प्रत्येक विधायक का अपने कर्त्तव्य पालन के अनुसार सम्मानपूर्ण स्थान जनता में रहेगा तो धन खर्च करके चुनाव जीतने की होड़ या चुनाव बढ़ने की बुराई समाप्त हो जाएगी। केवल आम मंहगाई बढ़ने का ही प्रभाव पड़ सकेगा। ऐसी अवस्था में रंगीन धन की लीला का अन्त होकर नागरिक मात्र के लिए चुनाव सुगम हो जाएगा। आज तो योग्य होने पर भी साधनहीन व्यक्ति को चुनाव की दहलीज की ओर ताकने की भी हिम्मत नहीं होती। संसदीय लोकतान्त्रिक पद्धति की विकृतियों से बचने के और लोकतन्त्र के सफल संचालन के हेतु यह आवश्यक प्रतीत होता है कि समय रहते भारत राष्ट्रपतीय लोकतान्त्रिक पद्धति को अपनालें। अमरीका, फ्रांस आदि में प्रचलित इस पद्धति में कौनसी अधिक उपादेय है इस पर देश के मनीषि विचार कर सकते हैं।

यहां यह स्पष्ट करना भी प्रासंगिक ही है कि किसी संविधान या शासन पद्धति के प्रावधान अथवा रूपरेखा कभी अन्तिम अक्षर या अपरिवर्तनीय नहीं हो सकते, समय समय पर उनमें परिवर्तन-संशोधन होता रहा है और होता रहेगा। विज्ञान और बुद्धिवाद के इस युग में निरन्तर परिवर्तनमान सामाजिक परिस्थितियों की गतिशीलता सदा ऐसी प्रेरणायें पैदा करती रहेंगी। आज केवल इतना ही कहा जा सकता है कि इस समय क्या उपादेय या उचित है ?

पद्धति विशेष की जिद्द तो मूर्ख ही किया करते हैं, जो उत्तम प्रशासन दे वही उत्तम पद्धति है।

संविधान और शासन पद्धतियां तो हथियार हैं, कौन उनका उपयोग करने का अधिकार हथिया लेता है और किस प्रकार वह उसका उपयोग करता है, यही सबसे महत्त्वपूर्ण बात है। कोई भी पद्धति सफल तभी होती है जब उसके चलाने वाले लोग योग्य, गुणी और चरित्रवान् हों।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

चौ० माडूसिंह के अन्तिम दर्शन

हरयाणा की पवित्र भूमि ने आर्यसमाज के क्षेत्र में अनेक दिव्य विभूतियों को जन्म दिया है। इन विभूतियों में दादा बस्तीराम, स्वामी नित्यानन्द जैसे धर्म प्रचारक भक्त फूलसिंह जैसे महामना महात्मा जगदेवसिंह सिद्धान्ती तथा प्रो० शेरसिंह जैसे लब्ध प्रतिष्ठ तथा निष्णात विद्वान् अपने अपने क्षेत्र में धर्म धुरीण रहे हैं। इसी कोटि के मान्य नेताओं में चौ० माडूसिंह का नाम आता है। ७८ वर्ष की आयु में ७ अक्तूबर को आपका हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। आपके हृदय में आर्यसमाज के प्रति एक अगाध श्रद्धा थी। बचपन में अंकुरित आर्य विचार वट वृक्ष बनकर इनके गौरव को तथा व्यक्तित्व को निरन्तर सौम्यता एवं सहिष्णुता प्रदान करते रहे।

४ अक्तूबर १९८४ को चौ० माडूसिंह का अन्तिम सार्वजनिक अध्यक्षीय भाषण दयानन्द मठ में सुनने को मिला। ४ अक्तूबर को सभा भवन (रोहतक) में स्वर्गीय सिद्धान्ती जी की जयन्ती मनाई जा रही थी और इसी के साथ पाणिनीय व्याकरण पर एक गोष्ठी का भी आयोजन किया गया था। इस सम्पूर्ण आयोजन की अध्यक्षता चौ० माडूसिंह ने की। आपने अपने अध्यक्षीय भाषण में दुःख भरे शब्दों में कहा कि श्री सिद्धान्ती जी एक कमठ आर्य नेता थे। उन्होंने आयु पर्यन्त निस्वार्थ भाव से आर्यसमाज की सेवा की। परन्तु आज उनकी जयन्ती पर जितनी उपस्थिति होनी चाहिए, उतनी नहीं है। अतः आगामी वर्ष धूमधाम से मनानी चाहिए।

चौ० माडूसिंह की महानता का अन्तिम उदाहरण भी ४ अक्तूबर को देखने को मिला। आर्यसमाज के प्रतिष्ठित सदस्य होने के कारण उनके पास सर्वहितकारी निःशुल्क भेजा जाता था। उन्होंने ४ अक्तूबर को कार्यालय में आते ही केदारसिंह को बुलाकर कहा कि पहले सर्वहितकारी का १५ रुपये वार्षिक चन्दा मेरे नाम से जमा करके रसीद काट दें। कार्यालयाध्यक्ष के मना करने पर भी अपना शुल्क दे दिया और कहने लगे कि प्रत्येक आर्य को अपना चन्दा देना ही चाहिए।

सभा के विधिवत् आरम्भ होने से पूर्व उन्होंने मुझ से लगभग आधा घण्टा बातचीत की तथा मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूरी पूरी जानकारी ली। मुझ से इतनी आत्मीयता से बातें हुई कि वे भुलाये से नहीं भूलती। इसी सिलसिले में उन्होंने गरीबदास से सम्बन्धित मेरे लेखों को पढ़ने की इच्छा की और मैंने भी उन्हें यह आश्वासन दिया कि लेख माला आपको भेज दूंगा।

चार अक्तूबर को जो सबसे विशेष बात हुई वह थी, भक्त फूलसिंह जी की स्मारिका के विषय में। इस विषय में उन्होंने मुझ से सुझाव मांगे और मैंने उन्हें अपने सुझाव भी दिए। चौ० माडूसिंह जी अपने जीवन के अन्तिम समय तक आर्यसमाज के कार्य में लगे रहे।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

चौ० माडूसिंह जी का रोहतक में निधन

दिल्ली ७ अक्तूबर। हरयाणा के भू० पू० शिक्षा मन्त्री चौधरी माडूसिंह जी का अचानक निधन हो जाने से आर्यसमाज के क्षेत्रों में शोक व्याप्त हो गया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले और महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी ने सार्वदेशिक सभा के कार्यालय में शोक सभा में स्व० चौधरी साहब को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि श्री चौधरी माडूसिंह जी आर्यसमाज के अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ता थे। राष्ट्रीय स्वाधीनता आन्दोलन के वे सिपाही थे। अनेक संस्थाओं के निर्माता और शिक्षण संस्थाओं के स्तम्भ थे। वे एक सच्चे व ईमानदार देशभक्त थे। कई वर्षों से वे सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान थे। उनके निधन से जहां राष्ट्रीय क्षति हुई है। विशेष कर हरयाणा में आर्यसमाज का एक स्थिर स्तम्भ गिर गया है।

शोक सभा में शोक प्रस्ताव पारित करते हुए दिवंगत आत्मा को सद्गति के लिए प्रार्थना की गई और शोकाकुल परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना प्रकट की गई।

सच्चिदानन्द शास्त्री
संयुक्त मन्त्री

वेद में चोटी का विधान

(पं० धर्मदेव 'मनीषी' वेदतीर्थ गुरुकुल कालवा)

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है और आर्य जाति का सर्वस्व वेद है। 'धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः' जो धर्म को जानना चाहे उसके लिये परम प्रमाण श्रुति वेद ही है। संस्कृत में चोटी को शिखा कहते हैं। वेद भगवान् शिखा के विषय में इस प्रकार लिखते हैं—

आत्मन्नुपस्थे न वृकस्य लोम मुखे श्मश्रूणि न व्याघ्रलोम।
केशा न शीर्षन्यशसे श्रियै शिखा सिंहस्य लोमत्विषिरिन्द्रियाणि ॥
(यजुर्वेद अ० १९। मन्त्र ९२)

इस युग के वेदों के प्रकाण्ड पण्डित महर्षि देव दयानन्द इस मन्त्र का अर्थ इस प्रकार करते हैं—

हे मनुष्यो ! जिसके (आत्मन्) आत्मा में (उपस्थे) समीप स्थित होने में (वृकस्य) भेड़िये के (लोम) बालों के (न) समान (व्याघ्रलोम) बाघ के बालों के (न) समान (मुख) मुख पर (श्मश्रूणि) दाढ़ी और मूंछ (शीर्षन्) सिर में (केशाः) बालों के (न) समान (शिखा) शिखा चोटी (सिंहस्य) सिंह के (लोम) बालों के समान (त्विषिः) कान्ति=शोभा और (श्रियै) लक्ष्मी के लिये प्राप्त होने को समर्थ होता है।

भावार्थ—जिस प्रकार भेड़िये, व्याघ्र और सिंह के बाल दाढ़ी और मूछों उनकी शोभा कान्ति आदि गुणों को बढ़ाने वाले हैं। उसी प्रकार मनुष्य के शिर पर उसकी शिखा वा चोटी कान्ति तेज वा शोभा और लक्ष्मी ऐश्वर्य को बढ़ाने वाली है। सिंह व्याघ्र आदि का रोब, दबदबा, तेज कान्ति उसके लम्बे केशों, जो दाढ़ी मूंछ और शिखा के रूप में हैं। इसी प्रकार मनुष्य की शोभा और कान्ति भी शिखा द्वारा प्राप्त होती है।

उव्वट तथा महीधर दोनों ने अपने भाष्य में माना है कि चोटी को रखने से यश और शोभा की प्राप्ति होती है। इस मन्त्र से स्पष्ट सिद्ध होता है कि बुद्धि और यश के लिए शिखा रखनी चाहिये। अथर्ववेद (१९।२२।१५) में "शिखिभ्यः स्वाहा" शिखा रखने वालों का कल्याण हो। पं० क्षेमकरण वेदभाष्यकार ने लिखा है, चोटी रखने वालों की वाणी सुन्दर हो।

इस विषय में पं० धर्मेन्द्रनाथ जी शास्त्री जो आयुर्वेदशास्त्र के बहुत बड़े विद्वान् और सफल वैद्य हैं वे अपनी "चोटी का महत्व" पुस्तक में सप्रमाण लिखते हैं कि—आयुर्वेद की चिकित्सा पद्धति सबसे प्राचीन और पूर्ण वैज्ञानिक है। आयुर्वेद के ग्रन्थों में लिखा है, सबसे अधिक रक्षा मर्म स्थानों की करनी चाहिये। "मर्माणि जीवधराणि प्रायेण मुनयो जगुः"।

शार्ङ्गधर में लिखा है—जिन स्थानों पर आघात (चोट) लगने से मनुष्य शीघ्र मर जाता है वे मर्म स्थान हैं। ऊपर का श्लोक इसका साक्षी है। इसमें तो बहुत स्पष्ट कहा है कि जीव धारण के अधिकतर स्थान मर्मस्थान ही हैं। ऋषि मुनियों की यही मान्यता है। उन मर्म स्थानों में लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र भी है।

सन्निपातः शिरास्नायु-संधि-मांसास्थि-संभवः।
मर्माणितेषु तिष्ठन्ति प्राणाः खलु विशेषतः॥
(भावप्रकाश पूर्वखण्ड १)

शिरा, स्नायु, सन्धि, मांस और अस्थि जहां एक स्थान पर होती हैं उसको मर्मस्थान कहते हैं। क्योंकि वहां पर विशेष रूप से प्राण रहते हैं। इससे सिद्ध होता है कि इन मर्मस्थानों पर लगी चोट प्राण घातक होती है। अतः इन मर्मस्थानों की रक्षा करना अत्यावश्यक है। शिवसंहिता में लिखा है—

अत ऊर्ध्वं तालुमूलं सहस्रार शिरोरुहम।
अस्ति यत्र सुषुम्णानां मूलं सविस्तरं स्थितम् ॥१५६॥

इससे आगे तालु के मूल से जहां सहस्रों शाखायें शिर के उस भाग में एकत्रित होती हैं, जहां कि सुषुम्णा का मूल स्थान है वही शिखा (चोटी) रखने का स्थान है।

तालुस्थानं च यत् पद्मं सहस्रारं पुरोहितम्।
तत् कन्दयोनिरेकोऽस्थि पश्चिमाभिमुखं यत् ॥१६१॥

तालु के उस ऊपर के भाग में जहां हजारों केन्द्रगामी तारों का स्थान है, वहां कन्द नाम की एक अस्थि वा हड्डी है। यह सिर के पश्चिमी भाग में होती है।

तस्या मध्ये सुषुम्णाया मूलं सविस्तरं स्थितम्।
ब्रह्मरन्ध्रं तदेवोक्तं मूलाधारपंकजम् ॥१६२॥

उसके मध्य में सुषुम्णा का स्थान है। इसी को ब्रह्मरन्ध्र कहते हैं। मनुष्य के शरीर में १०७ मर्मस्थान होते हैं। उनमें से कुछ मर्मस्थान ऐसे हैं कि जिन पर चोट लगने से मनुष्य बहुत शीघ्र मर जाता है। सुषुम्णा का स्थान भी ऐसा ही है। वेद भगवान् भी मर्मस्थानों की रक्षार्थ आदेश देता है—

मर्माणि ते वर्मणा छादयामि।
सोमस्त्वा राजामृतेनानुवस्ताम् ॥ सामवेद उ० अ० ३१॥

मर्मस्थानों की रक्षार्थ वेद ने कवच धारण करने की आज्ञा दी है। युद्ध में इसीलिये कवच आदि धारण करते हैं। सभी उपायों से मर्मस्थानों की रक्षा करनी चाहिये। जो बातें शरीर विज्ञान में हैं वही आयुर्वेद तथा वेद से भी पुष्ट होती हैं। यहां जिन स्थानों को सुषुम्णा केन्द्र बताया है वही स्थान ब्रह्मरन्ध्र है। इसी स्थान को ज्ञानपथ भी कहते हैं और इसी स्थान पर शिखा धारण की जाती है।

सद्य प्रसूत=तुरन्त ब्याई हुई गाय के बछड़े के पैर के खुर की जितनी चौड़ाई और मोटाई होती है उतने स्थान पर चोटी रखनी चाहिये क्योंकि लघु मस्तिष्क और सुषुम्णा केन्द्र का भी इतना ही स्थान होता है। इसमें वेद की शाखा का प्रमाण है—

"याज्ञिकैर्गोदाणि मार्जिन गोक्षुरवच्च शिखा"
(यजुर्वेदीय कठ शाखा)

अर्थात् गोक्षुर के समान चोटी रखनी चाहिये, लघु मस्तिष्क की लम्बाई तथा चौड़ाई और उसकी आकृति गौ के खुर से बहुत कुछ मिलती है: प्रतीत होता है कि इसीलिये शास्त्र ने गौ के खुर के समान चोटी रखने का आदेश दिया है इसी स्थान के माप की विधि निम्न प्रकार से वैद्य धर्मेन्द्रनाथ शास्त्री ने अपनी पुस्तक 'चोटी का महत्व' में लिखी है। माथे के ऊपर के उस भाग से जहां से शिर के बाल उगने आरम्भ होते हैं और गर्दन के उस भाग तक जहां कि शिर के बालों का अन्त होता है, नाप लो और इस माप के चार भाग कर लो। माथे की ओर के दो भाग कर दो और एक भाग गर्दन की ओर छोड़ दो, जितना स्थान बाकी माप के चौथे हिस्से का हो उतने स्थान में चोटी रखो। वह सद्योत्पन्न गाय के बछड़े के समान ही होता है।

महर्षि दयानन्द जी सत्यार्थ प्रकाश में लिखते हैं—"जो विद्या का चिह्न यज्ञोपवीत और शिखा को छोड़ मुसलमान ईसाइयों को सदृश बन बैठना व्यर्थ है। जब पतलून आदि आदि वस्त्र पहिरते हो और तमगों की इच्छा करते हो तो क्या यज्ञोपवीत आदि का कुछ बड़ा भार हो गया था"। इससे यही सिद्ध होता है कि (शिखा) चोटी और (यज्ञोपवीत) जनेऊ सबको धारण करना चाहिये, बिना इसके नहीं रहना चाहिये, क्योंकि ये हमारी संस्कृति के प्रतीक हैं।

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली पर आकाशवाणी रोहतक से वार्ता

आकाशवाणी रोहतक से दिनांक २१ अक्तूबर को रात्रि ९-३० बजे "आधुनिक युग के परिपेक्ष्य में गुरुकुल शिक्षा पद्धति" पर एक वार्ता प्रसारित होगी, इसमें आचार्य सुदर्शनदेव, श्री राममेहर एडवोकेट, डा० रामप्रकाश तथा डा० शास्त्री परिचर्चा में भाग लेंगे।

स्व० चौधरी माड़ूसिंह जी के जीवन संस्मरण

(आचार्य विष्णुमित्र विद्यामार्तण्ड, उपकुलपति
कन्या गुरुकुल खानपुर जिला सोनीपत)


स्व० चौ० माड़ूसिंह

१९३५ या १९३६ को यह घटना रही होगी मैं प्राईवेट रूप से मैट्रिक की इगलिश पेपर की परीक्षा देकर गुरुकुल में आया था। यह पेपर रोहतक में दिया था। एक बुजुर्ग इंगलिश अध्यापक अपने छात्रों को इंगलिश पोयम इंगलिश टु इंगलिश में पढ़ा रहे थे, तब मैंने भी संकल्प किया कि मैं भी अपने छात्रों को गुरुकुल भैंसवाल में जा संस्कृत से संस्कृत में श्लोक पढ़ाऊंगा।

इसी आधार पर मैंने 'भर्तृहरिशतक' के श्लोक छात्रों को पढ़ाने प्रारम्भ किये। जब मैं पढ़ा रहा था तब गुरुकुल में चौधरी माड़ूसिंह जी उस श्रेणी में आये और उन्होंने नीतिशतक के श्लोकों का अर्थ छात्रों से पूछा तो छात्रों ने संस्कृत श्लोकों का संस्कृत में ही उत्तर दिया, इससे वे बहुत प्रभावित हुए। उन्होंने भक्त जी के सामने इसका वर्णन किया।

गुरुकुल भैंसवाल में बैलों की चोरी हो गई थी, यह भी बहुत पुरानी बात है। भक्त जी चौधरी माड़ूसिंह जी साथ आये और उन्होंने वह स्थान देखा जहां से बैल निकाले गये थे। उन्होंने युवा चौधरी माड़ूसिंह जी की ओर देखकर कहा कि मैं उस दिन की प्रतीक्षा में हूं कि ऐसे पापियों का इसी स्थान पर वध किया जावे और भाई माड़ूसिह जी जैसे युवा वकील इस स्थान पर वकालत करते दिखाई दे। चौधरी माड़ूसिंह भक्त जी की बात को बड़े ध्यान से सुनते और मुस्कराते रहे।

जब चौधरी माड़ूसिंह जी चौ० छोटूराम जी के मन्त्री काल में कर्जा बोर्ड के प्रधान बनकर सोनीपत में रहते थे। भक्त जी उनकी कोठी पर पहुंचे। उनके घर में सफेद रसगुल्ले रखे हुए थे। भक्त जी ने रसगुल्लों को अण्डे समझा और उन्होंने आपसे कहा—हे भाई ! तुम भी अण्डों का प्रयोग करने लगे। उनकी बात को सुनकर आपने भक्त जी से कहा—क्या कोई वैदिक धर्मी होकर इस घृणित भोजन का प्रयोग सकता है। ये तो रसगुल्ले हैं। इस पर भक्त जी बहुत प्रसन्न हुए।

भक्त जी के बलिदान के पश्चात् आपके ऊपर दोनों गुरुकुलों का भार कमेटी ने डाला। नम्रता दिखलाते हुए आपने कहा कि मुझ में भक्त जी इतना तप तो नहीं है परन्तु मैं अपनी शक्ति के अनुसार गुरुकुलों की और समाज की सेवा करता रहूंगा। अपने इस वचन का आपने जीवन पर्यन्त पालन किया।

जब आप चौधरी बंसीलाल की सरकार में शिक्षा मन्त्री बने तब उनके प्रेमी तथा भाई बन्धु बहुत काम लेकर उनके पास जाते थे। इससे वे उन पर क्रुद्ध हो जाते थे। उनके प्रेमियों ने मुझसे तथा महेश्वर जी से कहा कि चौ० माड़ूसिंह जी को जब कोई काम हम कहते हैं तो बहुत क्रुद्ध होते हैं। उनकी इस बात को हमने उनसे कहा। उन्होंने हमसे कहा कि मैं आगे ध्यान रखूंगा। उन्होंने पुनः इस बात पर सदा ध्यान रखा।

चौ० माड़ूसिंह जी के पिता का बाल्यकाल में ही स्वर्गवासी हो गये थे, दादा जी जीवित थे। आपके दादा ने दूसरों की जमीन खरीद ली थी। आपके साथ जिनकी जमीन आपके दादा ने खरीदी थी उनका लड़का साथ में पढ़ने जाता था। उसने चौधरी माड़ूसिंह से कहा कि भाई ! हमारी जमीन तो तुम्हारे दादा ने सारी बै ले ली है। तुम उस जमीन को अपने दादा से कह कर गहने में कराओ। चौ० माड़ूसिंह जी अपने दादा से कहा कि दादा जी ! अपनी जमीन के बै नामे को गहने में बदल लें, तभी मैं भोजन खाऊंगा। दादा जी ने अपने पोते माड़ूसिंह की बात को स्वीकार कर लिया।

जब आपकी जमीन का इस्तेमाल कहराबर में होने लगा तो इससे माल वाले तहसीलदार ने पूछा आपको जमीन को कहां लगाऊं। यह सुनकर आपने कहा कि मेरी जमीन वहां लगाओ, जहां की जमीन को कोई न लेता हो। तहसीलदार ने आपकी जमीन तालाब में लगा दी। आपने उसे स्वीकार किया। आज उस जमीन के एक सार होने से वहां फसल उत्तम होती है। इसे कहते हैं कि धर्म की जड़ हरि होती है।

चौधरी साहब को स्वयं वकील होते हुए भी वैदिक संस्कृति, सभ्यता तथा संस्कृत और गुरुकुलों से बड़ा प्रेम था। जब आप शिक्षा मन्त्री बने तब गुरुकुल के स्नातकों तथा संस्कृतज्ञ शास्त्री के विद्वानों का डेपुटेशन उनसे मिला। उनसे प्रार्थना की गई कि आप ग्रेजुएटों की तरह संस्कृतोत्तीर्ण शास्त्री भी तो ग्रेजुएट हैं, उन्हें भी उनके समान वेतन मिलना चाहिए।

उन्होंने इस बात को ध्यान से सुना और उस समय के मुख्य मन्त्री चौधरी बन्सीलाल जी से सलाह करके शास्त्रियों को भी B. A. के समकक्ष वेतन दिलाया। यह उनका संस्कृत के लिए महान् कार्य था।

जब तक आप कांग्रेस में सम्मिलित नहीं हुए थे तो एक बार इलेक्शन में पराजित हो गये थे, इससे धन तथा मान की भी बड़ी हानि हुई। इससे उनके प्रेमी बहुत घबराये परन्तु आपने साहस पूर्वक कहा कि घबराने की कोई बात नहीं। जय पराजय तो लगी ही रहती हैं। इससे आपको और मुझे भी नहीं घबराना चाहिये, इस प्रकार अपने प्रेमियों को उन्होंने धैर्य बन्धाया। साथ में कहा—'सुख दुःखे समेकृत्वा' करके संसार की यात्रा हमको करनी है तभी सफलता मिलेगी।

उनको इस बात की बड़ी चिन्ता रहती थी कि कहीं पार्टीबाज़ी होकर संस्थाओं को हानि न हो जावे। अब की बार १९८४ में जब हम गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव में गये। उन्होंने भी कपिलदेव को डाक्टर हर्षवर्धन की कोठी में जो गङ्गानदी के किनारे पर है–प्रातःकाल कहा कि कपिलदेव। आपस के मतभेद को भुलाकर मिलकर काम करोगे तो ही संस्थाओं बचा सकोगे। कपिलदेव जी ने कहा चौधरी साहब मुझे यह स्वीकार है। इस प्रकार प्रतीत होता है कि उनको संस्थाओं के विषय में कितनी चिन्ता रहती थी। भक्त शताब्दी समारोह को सफल बनाने की उनको बड़ी चिन्ता रहती थी, जहां भी उनको चलने के लिए कहा था, वहीं पर जाने को उद्यत हो जाते थे। इसके लिए आप सबको सक्रिय रखने के लिये बार बार चेतावनी देते रहते थे।

गांवों में बढ़ते हुए शराब के दौर से, युवाओं के गिरते हुए आचरण से, कन्याओं के बढ़ते हुए विविध प्रकार फेशन से आप बड़े दुःखी रहते थे। बातों बातों में कहा करते थे कि पता नहीं यह देश कहां जाकर ठहरेगा। हम सबको मिलकर आर्यसमाज के कार्य को आगे बढाना चाहिये। इस बुराई को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये था।

कन्या गुरुकुल खानपुर में आकर गुरुकुलीय प्राध्यापिकागण तथा कार्यकर्त्ताओं को इकट्ठा करके बार बार प्रेरणा देते रहते थे कि सादगी का जीवन छात्राओं का बनाओ नहीं तो आप सबका उद्देश्य पूरा न हो सकेगा।

कुछ दिन हुए कन्या गुरुकुल खानपुर आये वहां विशेष रूप से बहन सुभाषिणी को कहा—बहन जी ! छात्राओं की रक्षा के लिये तथा उनके चरित्र निर्माण के लिए आप विशेष प्रोग्राम बनावें इसमें शिथिलता न आने दें।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

श्री रामस्वरूप द्वारा लिखित पुस्तक

ऋषि दयानन्द और मानव एकता

ऋषि दयानन्द और मानव एकता का मैंने ध्यान पूर्वक अध्ययन किया है। ऋषि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के आधार पर इस पुस्तक का प्रकाशन हुआ है। सत्यार्थप्रकाश के मूल सिद्धान्तों को भली प्रकार समझने जानने में यह पुस्तक जन साधारण तथा मननशील युवकों तथा अनेकों धर्म-परायण व्यक्तियों के लिए बड़ी सहायक सिद्ध होगी, इसमें कोई सन्देह नहीं।

धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष के मूल भूत सिद्धान्तों का उद्धरण करके आदर्श जीवन व्यतीत करने का पथ प्रदर्शित किया गया है। सृष्टि की उत्पत्ति, ईश्वरीयज्ञान, दाम्पत्य जीवन शिक्षा, राजनीति आदि कोई भी ऐसा विषय नहीं जिसका विश्लेषण न किया गया हो।

आज के अर्थ प्रधान युग में जब व्यक्ति भौतिकता की चकाचौंध में पथभ्रष्ट हो रहा है। ऋषि दयानन्द का सत्य पर आधारित अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश ही वेद की उक्ति 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' का अनुसरण करने का मार्ग प्रशस्त कर सकता है।

सभी बुराइयों का मूल आधार अज्ञान है। अज्ञान के कारण ही व्यक्ति पथभ्रष्ट होता है। ईश्वर सृष्टि सांसारिक विषयों का सच्चा ज्ञान केवल ठीक प्रकार की शिक्षा से ही प्राप्त हो सकता है। शिक्षा से व्यक्ति का मानसिक विकास होता है। मानसिक विकास होने पर व्यक्ति अपना समाज का राष्ट्र का तथा प्राणिमात्र के हित अहित की बात सोच समझकर उस पर आचरण कर सकता है। समाज में फैले हुए अनाचार, दुराचार तथा भ्रष्टाचार का स्रोत विकृति बुद्धि ही है।

श्री रामस्वरूप का प्रयास सराहनीय है। वह एक उत्साही व्यक्ति हैं। आर्यसमाज और ऋषि दयानन्द को फलीभूत करने में उनकी निष्ठा और अथक परिश्रम सराहनीय है। भगवान् उन्हें शक्ति प्रदान करे कि वह अपना कार्य करते रहें। पुस्तक का मूल्य ८ रुपये है और प्रकाशक कु० मन्जु गणेश कुटीर, गेन्दालाल मार्ग अजमेर (राजस्थान) है।

नोट—स्वर्गीय चौ० माड़ूसिंह जी द्वारा लिखित उपरोक्त समालोचना आर्य जनता के लिए उनका अन्तिम लिखित सन्देश है। चौधरी साहब ने ४ अक्तूबर को यह समालोचना लिखकर सर्वहितकारी में प्रकाशनार्थ दी थी।

व्यवस्थापक

बालावास में शराब का ठेका बन्द आर्यसमाज की शानदार विजय

आर्य जनता को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि १४ अप्रैल से ग्राम बालावास जिला हिसार में शराब का ठेका बन्द करवाने के लिए आर्यसमाज की ओर से धरना चालू किया गया था। जो भी शराब खरीदने आता उसे समझा बुझाकर वापस भेज दिया जाता। शराब के ठेके के सामने छानें डालकर शिविर लगाया गया। वहां प्रातःकाल यज्ञ दिन में सत्संग तथा रात्रि को व्याख्यान तथा भजनों का कार्यक्रम चलाया जाता रहा। ग्राम में शराब के विरोध में प्रभातफेरियां निकाली गईं। अनेकों सामाजिक तथा धार्मिक नेताओं ने यहां पधार कर शराब बन्दी पर व्याख्यान दिये।

सभा की भजन मण्डलियों तथा स्वतन्त्र भजन मण्डलियों ने भी समय समय पर रात्रि को प्रभावशाली प्रचार किया। सभा उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी के संयोजन में दो बार शराबबन्दी सम्मेलन हुए जिनमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, सभा के उपमन्त्री प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार आदि आर्य नेताओं ने शराब के ठेकेदारों तथा हरयाणा सरकार से इस ठेके को बन्द करने के लिए चेतावनी दी।

सभा के उपदेशक श्री अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी ने अपने सहयोगियों सहित निरन्तर ६ मास तक धरने को चालू रखा। बिक्री नहीं होने दी। अन्त में ८ अक्तूबर को हरयाणा सरकार के आदेश से शराब का ठेकेदार ठेका बन्द करके भाग गया। अब १४ अक्तूबर को आर्य विजय दिवस मनाया जा रहा है। इसमें आर्यनेता पधार रहे हैं।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

स्वर्ण जयन्ती समारोह

श्रीमद्दयानन्द वेद विद्यालय ११९ गौतमनगर, नई दिल्ली–४९ में दिनांक ८-९ दिसम्बर १९८४ को बड़ी धूमधाम के साथ मनाया जा रहा है। इस उपलक्ष्य में रविवार १८ नवम्बर से पूज्यपाद श्री स्वामी दीक्षानन्द जी की अध्यक्षता में चतुर्वेद ब्रह्म पारायण महायज्ञ का आयोजन भी पूर्व वर्षों की भांति किया जाएगा, जिसकी पूर्णाहुति ९ दिसम्बर रविवार को होगी। ८ दिसम्बर को नवीन स्नातकों का दीक्षान्त समारोह प्रातः १० से १२ बजे तक होगा। स्वर्ण जयन्ती के पावन दिनों में विद्वानों द्वारा गोष्ठियां एवं सार्वजनिक सम्मेलनों का आयोजन भी किया जायेगा। अतः आपसे प्रार्थना है कि अधिक से अधिक यजमान बनकर सहयोग दें और दिलावें।

इस अवसर पर जो सज्जन उक्त प्रकार से सहयोग करेंगे वे स्वर्ण जयन्ती समारोह समिति के क्रमशः सहयोगी, सम्पोषक, संरक्षक और कुबेरदानी सदस्य कहलायेंगे।

११०० रुपये देने वाले सहयोगी सदस्य,
२१०० रुपये देने वाले सम्पोषक सदस्य,
५१०० रुपये देने वाले संरक्षक सदस्य,
११००० रुपये देने वाले या इससे अधिक देने वाले कुबेर दानी सदस्य कहलायेंगे। इस प्रकार के सहयोगी महानुभाव वेद विद्यालय की संरक्षक सभा के भी सदस्य होंगे। सभी प्रकार की सहायता चैक/ड्राफ्ट या मनीआर्डर आदि आचार्य दयानन्द वेद विद्यालय के नाम भेजें।

धूम्रपान विरोधी सम्मेलन

आजकल भारत के युवकों का चरित्र धीरे धीरे पतन की ओर जा रहा है। उनमें अनेक प्रकार की बुराइयां आती जा रही हैं। धूम्रपान की बुराई भी धीरे २ उनमें फंसती जा रही है। अतः आर्य वीर दल पलवल दिनांक २५ अक्तूबर १९८४ को पलवल के कानूनगो मौहल्ले में एक धूम्रपान विरोधी सम्मेलन का आयोजन कर रहा है। सम्मेलन में मुख्य अतिथि युवा नेता श्री सुभाष कतियाल होंगे। सम्मेलन की अध्यक्षता कर्नल रामजीलाल मंगला करेंगे।

मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल शहर

(पृष्ठ ३ का शेष)

इस प्रकार बार बार प्रेरित करके ७ अक्तूबर १९८४ को रोते बिलखते अपने विशाल कुटुम्ब को छोड़कर निस्पृह की तरह स्वर्गलोक में जा पहुँचे।

ऐसे व्यक्ति विरले होते हैं। पच्चास वर्ष तक टक, एक भावना से गुरुकुलों की सेवा करते हुए परमधाम में चले गये। उनकी याद भुलाने पर भी न भुलाई जावेगी। प्रभु का भक्त प्रभु की गोद में जा बैठा।

महर्षि का वेदभाष्य

क्या वेद एक मुक्तक काव्य है ?

(आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री उत्तर दें)

—सुदर्शनदेव आचार्य सभा उपमन्त्री

श्री आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री के सम्पादकत्व में प्रकाशित वेद-ज्योति नामक पत्रिका का मास सितम्बर १९८४ का अंक देखने को मिला। इसके सम्पादकीय लेख में 'महर्षि वेदभाष्य की संगति' नामक शीर्षक से एक लेख आचार्य जी ने मेरे ७ मार्च १९८४ को आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के साप्ताहिक पत्र सर्वहितकारी में प्रकाशित 'बहिन कविता आर्या उत्तर दें' शीर्षक से लिखे एक लेख के उत्तर में प्रकाशित किया है। इसमें श्री आचार्य जी ने आर्य विद्वानों से किए महर्षि वेदभाष्य सम्बन्धी दो प्रश्नों का उत्तर देने का प्रयास किया है किन्तु उनके इस उत्तर से महर्षि के वेदभाष्य के सम्बन्ध में और नई उलझनें उत्पन्न होने की सम्भावना है।

मैंने विद्वानों की सेवा में पहिले लिखा था कि महर्षि के वेदभाष्य में प्रकरण और पूर्वापर अध्याय एवं सूक्त की संगति यह गम्भीर विचारणीय विषय हैं। श्री आचार्य जी लिखते हैं "महर्षि के वेदभाष्य में मन्त्रों का अर्थ प्रकरण के अनुसार ही है। यदि कोई अल्पज्ञ पाठक प्रकरण विशेष का अनुभव नहीं करता यह उसी का दोष है, न कि भाष्यकार महर्षि का। नैष स्थाणोरपराधो यदेन मन्धो न पश्यति (निरुक्त)"।

माननीय आचार्य जी के इतना लिखने मात्र से शंका का समाधान नहीं हो जाता। इसमें आचार्य जी ने प्रतिज्ञा मात्र को दोहराया है। अपनी प्रतिज्ञा की सिद्धि के लिए हेतु, उदाहरण आदि परम आवश्यक है। जब पाठक इन्द्र आदि एक ही देवता वाले सूक्त में राजा, विद्वान्, अध्यापक, उपदेशक, सेनापति आदि विभिन्न अर्थ देखता है तो वह जानना चाहता है कि यहां प्रकरण किसका है। एक सामान्य लेखक भी अपनी रचना में अध्यायों में विषय-वस्तु को बांधकर लिखता है। महर्षि के सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थ प्रकरण बद्ध हैं।

श्री आचार्य जी का यह कहना भी महर्षि के मन्तव्य के प्रतिकूल है कि इन्द्र देवता के राजा, विद्वान्, अध्यापक, उपदेश, सेनापति, सभापति आदि अर्थ आधिभौतिक प्रक्रिया में जनोपयोगी दृष्टि से किए गए हैं। जब महर्षि आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक इन तीन प्रकार के मन्त्रार्थों का उल्लेख न करके यह बतलाते हैं कि मन्त्रों के पारमार्थिक और लौकिक दो ही प्रकार के अर्थ हैं। वेदार्थ में यह त्रिविध प्रक्रिया की कल्पना आर्य विद्वानों की है, महर्षि के शिर क्यों मंढी जा रही हैं। यह मेरी समझ में नहीं आता।

आचार्य जी आगे लिखते हैं—"एक देवता के जितने अर्थ (आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक) हो सकते हैं उन्हें संक्षेप से पदार्थ में दिखाने का प्रयत्न किया गया है। अन्वय में तीन तीन अर्थ भी सांकेतिक हैं। अब यह पाठक का काम है कि वह पूरे सूक्त में सभी मन्त्रों के अनेक अर्थ समझने का यत्न करे"।

मैंने महर्षि के यजुर्वेदभाष्य तथा ऋग्वेदभाष्य पर भास्कर नामक व्याख्या लिखी हैं। महर्षि के भाष्य में यह बात कहीं देखने को नहीं मिलती कि महर्षि मन्त्र के पदार्थ एवं अन्वय नामक सन्दर्भ में आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक एवं सांकेतिक अर्थ कर रहे हैं और न ही उन्होंने अपनी ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में कोई ऐसा संकेत किया है। अपितु इसके विरुद्ध महर्षि प्रत्येक मन्त्र के ऊपर मन्त्रार्थभूमिका नामक सन्दर्भ में मन्त्र के ईश्वर आदि प्रतिपाद्य विषय का निर्देश करते हैं। यदि आचार्य जी की बात को मान लिया जाए तो महर्षि का मन्त्रार्थभूमिका नामक सन्दर्भ व्यर्थ हो जाएगा।

जहां महर्षि का एक मन्त्र के अनेक अर्थ दर्शाने का अभिप्राय होता है वहां श्लेषालङ्कार का स्पष्ट उल्लेख करते हैं और मन्त्र के एक से अधिक दर्शाते हैं। केवल ऐसे स्थल में ही पदार्थ अनेक अर्थ महर्षि दर्शाते हैं; अन्यत्र नहीं। महर्षि लोगों का भाष्य एवं आशय अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट होता है। ऐसा नहीं कि वे सांकेतिक अर्थ करके चले जाएं और पीछे से पाठक उलझे रहें। कई आर्य विद्वान् मन्त्र के किसी पद का अर्थ आध्यात्मिक, किसी पद का अर्थ आधिदैविक और किसी पद का अर्थ आधिभौतिक मानकर महर्षि के वेदभाष्य में टिप्पणी दे रहे हैं। श्री आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री ने सांकेतिक अर्थ और नया बतलाया है। कोई कहते हैं कि महर्षि ने वेदार्थ की शैली बतलाई है। महर्षि ने ऐसी प्रतिज्ञा कहीं नहीं की कि मैं इस प्रकार का भाष्य बना रहा हूं। यह सब आर्य विद्वानों की कल्पना मात्र है। इसके विपरीत महर्षि ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में स्पष्ट लिखते हैं—

मन्त्रार्थ भूमिका ह्यत्र मन्त्रस्तस्य पदानि च।
पदार्थान्वयभावार्थाः क्रमाद्बोध्या विचक्षणैः॥

भावार्थ—इस मन्त्र भाष्य में इस प्रकार का क्रम रहेगा कि प्रथम तो मन्त्र में परमेश्वर ने जिस बात का प्रकाश किया है, फिर मूल मन्त्र उसका पदच्छेद, क्रम से प्रमाण सहित मन्त्र के पदों का अर्थ, अन्वय अर्थात् सम्बन्ध पूर्वक योजना और छठा भावार्थ अर्थात् मन्त्र का जो मुख्य प्रयोजन है। इस क्रम से मन्त्रभाष्य बनाया जाता है (ऋग्वेदादि)

श्री आचार्य जी ने वेद को मुक्तक काव्य बतलाकर शंका—समाधान से मुक्त होने का प्रयास किया है। मुक्तक काव्य का यह अभिप्राय समझा जाता है कि वह पूर्व-अपर प्रकरण से मुक्त होकर पृथक् पृथक् विषयों का प्रतिपादन करता है। फिर आचार्य जी महर्षि के वेद भाष्य में पूर्व-अपर संगति वाली बात को कैसे सिद्ध कर सकते हैं।

मेरा माननीय आचार्य जी से निवेदन है कि उनके पास अपनी वेदज्योति पत्रिका है। इस प्रकृत विषय को कुछ पंक्तियां लिखकर स्पष्ट नहीं किया जा सकता। महर्षि के वेदभाष्य से कोई भी अध्याय एवं सूक्त लेकर प्रकरण और पूर्व-अपर संगति की बात को स्पष्ट करने का कष्ट करें।

श्रद्धेय आचार्य जी ने इस विषय को आगे बढ़ाने का प्रयास किया है, तदर्थ हार्दिक धन्यवाद है।

श्रीमती वीरादेवी मेहता द्वारा टंकारा ट्रस्ट के लिए ६ हजार रु० दान

नई दिल्ली। आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि श्रीमती वीरादेवी मेहता धर्मपत्नी स्व० श्री जी० आर० मेहता (मैनेजिंग ट्रस्टी टंकारा ट्रस्ट) ने अपने अथक परिश्रम से ६००० रुपये का दान टंकारा ट्रस्ट को दिया है। यह राशि मान्या माता जी ने एक एक रुपया लोगों से एकत्र किया था। उन्होंने यह भी आश्वासन दिया है कि आगामी वर्ष में होने वाली रजत जयन्ती तक कम से कम १५ हजार रु० एकत्र करके टंकारा ट्रस्ट को भेजेंगी।

क्यों ?

वादे ये इरादे तेरे नापाक हैं।
क्यों ? अपनी बेवकूफी को हिंद पर आजमा रहा है तू ॥
काले गन्दे बादल तेरे अन्धे हैं।
क्यों ? हिन्द पर्वत से टकरा रहा है तू ॥
नये जोश ये जवानी तेरी अधुरी है।
क्यों ? पूर्ण हिन्द पर जोर लगा रहा है तू ॥
तलवार, बन्दूक, तोप तेरे बेकार हैं।
क्यों ? हिंद की हवाओं पर वार कर रहा है तू ॥
बाजु, दिमाग, पैसा तेरा पागल है।
क्यों हिन्द आसमान के टुकड़े की सोच रहा है तू ॥
चल हिंद के नक्शे कदम तेरी भलाई है।
क्यों ? हिंद को नहीं अपना रहा है तू (अज्ञानी) ॥

अनिल कुमार मंगला 'पिंकी' (बम्बई)

शोक समाचार

आर्य जगत् के विख्यात् वैदिक विद्वान् स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह जी सिद्धान्ती की धर्मपत्नी नानवती का स्वर्गवास चण्डीगढ में दिनांक २१ सितम्बर ८४ को हो गया। श्री सिद्धान्ती जी ने भरी जवानी में ही वानप्रस्थ का जीवन व्यतीत करके आर्यसमाज को अपना जीवन समर्पित कर दिया था। अतः उनकी धर्मपत्नी तभी से श्री सिद्धान्ती जी के छोटे भ्राता श्री वेदमित्र जी के परिवार में रह थी। उनका जीवन भी तपस्या से ओत-प्रोत था।

चौ० वेदमित्र जी ने उनकी स्मृति में सिद्धान्ती स्मारक रोहतक को १०१ रु० कन्या गुरुकुल नरेला १०१ रु० आर्यसमाज सैक्टर २२ चण्डीगढ की पुरुष शाखा को ५१ रु० स्त्री शाखा को ५१ रु० का दान भेजा है।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

आर्यसमाजों के आगामी वार्षिक उत्सव

आर्यसमाज बिरोहड़ जिला रोहतक	१८ अक्तूबर
,, जोन्द शहर	१९ से २१ ,,
,, चरखी दादरी जिला भिवानी	२० से २४ ,,
,, रेलवे रोड यमुनागर जिला अम्बाला	१९ से २४ ,,
,, होली मोहल्ला करनाल	२४ ,,
,, मुरथला जिला रोहतक	२५ से २७ ,,
कुरुक्षेत्र गोशाला कंथल	२९ से ३१ ,,
सर्वखाप पंचायत बेरी जिला रोहतक	१ नवम्बर
आर्यसमाज बल्लबगढ जिला फरीदाबाद	३ से ५ ,,
,, फिरोजपुर झिरका जिला गुड़गांव	२ से ४ ,,

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 राज० न० P/RTK 49

ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११, अङ्क ४३ २१ अक्तूबर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

ऋषि निर्वाण विशेषांक

महर्षि दयानन्द

सारस्वत मोहन 'मनीषी' प्राध्यापक हिन्दी विभाग
डी० ए० वी० कालेज अबोहर (पंजाब)



एक जंगल में नई बस्ती बसा दी तूने।
वक्त पत्थर पे सफल जोंक लगा दी तूने ॥

लोग माने या न मानें था करिश्मा कोई,
अर्थियां जितनी चली डोली बना दी तूने।

सोच तो ये है कि किया काम निराला ऐसा,
आग पानी में दयानन्द लगा दी तूने।

रात किया दिन में उड़े ऐसे नशे से नफरत,
जिसका टूटे न नशा ऐसी पिला दी तूने।

जिनके शासन का न छिपता था यहां सूर्य कभी,
सच तो यह है कि वो कुर्सी भी हिला दी तूने।

दूसरा कृष्ण तुम्हें कहने को मन करता है,
बांसुरी वेद की दुनियां को सुना दी तूने।

ढोंग कैं भाग गये जितने थे रावण बसते,
घोर अज्ञान की लंका ही जला दी तूने।

चांद सूरज व सितारे थे कभी कैद जहां,
ऐसे अम्बर में पुनः धूप उगा दी तूने।

जिनके पांव मे न पायल थी न बिन्दिया मुख पर,
ऐसी अबलाओं की फिर मांग सजा दी तूने।

ढूंढ़ इतिहास को देखा न मिला तुम जैसा,
अपने कातिल को भी जीने की दुआ दी तूने।

भूल पाएंगे न सदियों ओ मनीषी तुमको,
जाते जाते भी दीवाली ही दिखा दी तूने।

हरयाणवी तर्ज में ऋषि महिमा गीत

टेक—कांशी के मैं रुक्का पड़ग्या यु कुण स्वामी आग्या।
रै अठारह पुराणां में काडणियां खाम्मी आग्या॥
चार वेद छः शास्त्र स्मृति साधु के याद बतावें।
ईश्वर और वेद मार्ग पे इसका इदकाद बतावै
बरणी गई शराहद बतावै, बन्द करण तेरामी आग्या ॥१॥
सीता राम और राधेश्याम शिवजी और गंगे माई
तीर्थ यात्रा व्रत वर्तणे यु सबकी करै बुराई
कर्म काण्ड की करै सफाई कोई धर्म हरामी आग्या ॥२॥
पैर खड़ाऊं भगमा बाणा कमण्डल और लंगोटी
पहलवान कैसी आकृति किसी रान भुजा सै मोटा
गले जनेऊ ना सिर पे चोटी कोई दीन इस्लामी आग्या ॥३॥
कुरान शरीफ खुदा मोहम्मद की यु करता घणा बुराई
काजी मुल्ला कई पछाड़े कर तौबा पिण्ड छुटाई
यु सै कोई जासुस ईसाई बिन पेंट पजामी आग्या ॥४॥
ईसू मरयम बाईबल का यु खण्डन करता बाधू
यु से कोई सेवड़ा स्याणा या फिरै चलता जादू
यु सै कोई जैन का साधु, यु तूड़ा लगामी आग्या ॥५॥
[illegible]
युक्ति और प्रमाण अजब के जो सुणै वही घबराजा
यु सै कोई कुफियां में राजा यु बिना सलामी आग्या ॥६॥
रजो तमो गुण हो राजा में चाहे लो संन्यासी हारके
यु भरी जवानी के मां आया मन इन्द्री क्रोध मार के
यु विष्णु अवतार धार के म्हारी खोण गुलामी आग्या ॥७॥
विष्णु कै संग होवै लक्ष्मी या पक्की बात सनद की
यु कोनी दूर रहे बीरां तै ना परवाह कृष्ण आनन्द की
यु विश्वमित्र हरिश्चन्द्र की यु करण लिलामी आग्या ॥८॥
यु सै आर्य पुराण धर्म की बुनियाद हलाक जागा
बल विद्या ते दूध छटी का थारे याद दिलाके जागा
वैदिक धर्म फैलाके जागा वेदों का हाम्मी आग्या ॥९॥
मंगल वैद्य का गाणा सुणकै रोजाना जिक्र करां थे
कदे दयानन्द कांसी आज्या हम युहे फिकर करां थे
जुणसे डरते रोज डरां थे वोहे डर दयामी आग्या ॥१०॥

पाणिनी व्याकरण गोष्ठी सम्पन्न



डा० यज्ञवीर संयोजक

संस्कृत भाषा के मूर्धन्य विद्वान् पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती की ८४ वीं जयन्ती समारोह के अवसर पर हरयाणा साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से आर्य प्रतिनिधि सभा, हरयाणा ने ४ अक्तूबर १९८४ को उक्त गोष्ठी का आयोजन किया। संस्कृत व्याकरण रसज्ञ अनेक विद्वानों ने इसमें भाग लिया। प्रा० दयानन्द जी (हिसार) ने पाणिनीय व्याकरण में जनपद विषय को लेकर एक सुन्दर निबन्ध पढा। पं० वेदव्रत जी रोहतक ने पाणिनीय व्याकरण की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए इसे इतर व्याकरणों से श्रेष्ठ बतलाया पं० सुदर्शनदेव जी ने 'पाणिनि व्याकरण में अयोगवाह' नामक लेख पढ़ा तथा उन्होंने अयोगवाह के सम्बन्ध में जिज्ञासु भाव से एक शङ्का उपस्थित की जिसका यथोचित् उत्तर उनके तुरन्त पश्चात् वक्ता पं० महावीर जी दिल्ली विश्वविद्यालय ने बड़े ही सुन्दर ढंग से दिया जिससे पं० सुदर्शनदेव जी सन्तुष्ट हो गये। इसी प्रकार गोष्ठी में अनेक शंकायें उपस्थित हुईं एवं मान्य विद्वानों ने उनका बड़ा ही सुन्दर समाधान प्रस्तुत किया। पं० विद्यानिधि शास्त्री गुरुकुल भैंसवाल ने पाणिनीय व्याकरण में आये अनेक वैदिक उद्धरणों को स्पष्ट किया तथा अपने प्रवचन द्वारा सभा के सदस्यों को मुग्ध कर दिया। मैंने 'पाणिनीय व्याकरण में आम्नाय साहित्य' नामक निबन्ध पढ़ा तथा पाणिनि के विषय में पाश्चात्य विद्वानों के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हुए पाणिनि को सर्वश्रेष्ठ वैदिक भाषाविज्ञ बतलाया। तत्पश्चात् इस गोष्ठी के अध्यक्ष पण्डित तुलसीराम जी (अध्यक्ष अंग्रेजी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक) ने अध्यक्षीय भाषण में योगसूत्रों की व्याकरण करते हुए पाणिनीय सूत्रों की रचना को अधिक जटिल बतलाया।

इस गोष्ठी का आकर्षण केन्द्र विद्वानों द्वारा पढ़े जाने वाले निबन्ध एवं उन पर उठाई जाने वाली शङ्काएं तथा उनका यथोचित् समाधान रहा। शंका समाधान के समय व्याकरण गोष्ठी अत्यन्त गम्भीर हो जाती थी। समय का अभाव हमेशा खटकता रहा। कुछ विद्वानों ने इसे और अधिक देर तक चलाए जाने की मांग की। व्याकरण को एक शुष्क विषय माना जाता है परन्तु विद्वानों के बार बार आग्रह पर कि समय और बढाया जाये तथा यह गोष्ठी सायंकाल तक चलनी चाहिए को देखकर लगा कि व्याकरण अब शुष्क विषय नहीं रहा अपितु इसमें रस अनुभव होने लगा है। इस गोष्ठी के सफल आयोजन एवं विद्वतापूर्ण लेखों को सुनकर सम्पूर्ण श्रोतावृन्द इस पक्ष में था कि इस प्रकार की गोष्ठियों का आयोजन समय समय पर होते रहना चाहिए।

इस गोष्ठी के सफल आयोजन का सम्पूर्ण श्रेय सभा के महामन्त्री प्रिंसिपल रणजीतसिंह जी को जाता है। समय समय पर अपने बहुमूल्य सुझाव देकर हमें अनुगृहीत किया तथा अस्वस्थ होते हुए भी सभा में उपस्थित होकर इसे सफल बनाने में पूर्ण योगदान दिया। प्रिंसिपल साहब ने सभा में आए हुए सभी प्रतिनिधियों का धन्यवाद किया तथा शान्तिपाठ के साथ सभा विसर्जित हुई।

गोष्ठी संयोजक

डा० यज्ञवीर दहिया

संस्कृत विभाग महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक

नहीं भुलाए जा सकते हैं ऋषि दयानन्द उपकारतेरे

जब ऋषि दयानन्द का समाज में पदार्पण हुआ उस समय लोला जोरों पर थी बहुत से पाखंड ऐसे थे जिन्होंने समाज में घर कर लिया था और उनसे छुटकारा पाना बहुत कठिन था। परन्तु ऋषि दयानन्द ने हिम्मत करके इन पाखण्डों के विरुद्ध आवाज उठाई और उसमें सफल हुए।

१—विधवा विवाह

स्वामी दयानन्द के आने से पहले विधवा महिलाओं की हालत बहुत खराब थी। कोई विधवा जेवर आदि नहीं पहन सकती था, बल्कि २४ गण्टे उनको बहुत बुरा जीवन व्यतीत करना पड़ता था। विधवा विवाह का प्रचार करके ऋषि दयानन्द ने समाज पर बड़ा भारी उपकार किया।

२—महिला शिक्षा

इससे पहले औरतों को पढ़ाना बेकार समझा जाता था वेदों के बहाने यह समझा जाता था कि हरिजनों व महिलाओं को वेद पढ़ने का कोई अधिकार नहीं है जबकि ऋषि दयानन्द ने साफ तौर से कहा कि वेद हर व्यक्ति पढ़ सकता है और हर एक व्यक्ति को पढ़ने का अधिकार है। महिला शिक्षा की बदौलत महिलाएं लगभग हर पोस्ट पर कार्य कर रही हैं।

३—हरिजनों का उद्धार

ऋषि दयानन्द ने हरिजनों को सम्मान के जीना भी सिखाया। अछूत शब्द का नामोनिशान मिटाया और हरिजनों को हिन्दुओं के साथ बराबर हक देकर जीवित रखा। इससे पहले समाज में हरिजनों की हालत बहुत पतली थी। ऋषि दयानन्द ने उनको बराबर के हक देकर जीना सिखाया। इसके इलावा ऋषि दयानन्द के उपकार भुलाए नहीं जा सकते।

सरला गोयल

मन्त्राणी, स्त्री समाज, आशंरी गेट जीन्द

आवश्यक सूचना

वैदिक यति मंडल का सम्मेलन १०, ११ नवम्बर ८४ को वैदिक संन्यास आश्रम दयानन्दनगर गाजियाबाद में होगा। अतः निवेदन है कि सब मान्य यतिवर्ग (संन्यासी नै० ब्रह्मचारी, वानप्रस्थी) समय पर पधारने की कृपा कीजिये।

निवेदक

सोमानन्द मन्त्री

सम्पादकीयः-

आर्यजनता के नाम सन्देश

महाशक्तियों की स्पर्धा और विश्व पर छा जाने की लालसा के कारण आज मानव का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया है। विश्व के दो तिहाई नागरिक भूखे नंगे बेघर और बेसहारा हैं, परन्तु मानवोचित जीवन के लिये न्यूनतम सुविधायें देने की ओर राष्ट्रों का ध्यान नहीं है, सारी शक्ति भयंकर से भयंकर अस्त्रशस्त्र बनाने में तथा एक दूसरे को युद्ध में मात देने में लगी है। बड़े से बड़े राष्ट्रों के नेता यह समझकर भी कि इस बार युद्ध में विजय किसी की नहीं हो सकती, विध्वंशकारी गतिविधियों को रोकने का साहस नहीं बटोर पा रहे। स्वामी दयानन्द सभी सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं, धर्माचार्यों और राजनीतिज्ञों को इकट्ठा करके मानव को सब प्रकार के शोषण से मुक्ति दिलाना चाहते थे। वे चाहते थे कि इस पृथ्वी पर भूखा, नंगा, बेघर, निरक्षर और बेसहारा न रहे, और यह तभी सम्भव हो सकता है जब सभी बुद्धिमान् लोग तथा समाज सेवी अपने साधन एक जुट मिलकर मानव के इन दु:खों का निराकरण करें। अभाव, अन्याय तथा अज्ञान के द्वारा दु:खी समाज को सुखी बनाने के लिये ही वर्णव्यवस्था के द्वारा समाज को सगठित करने का प्रयास भारत के मनीषियों ने किया था। मानव के सब प्रकार के दु:खों की जड़ अभाव, अन्याय और अज्ञान ही तो है, इनसे समाज को छुटकारा दिलाने के लिये ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य व्रत लेकर अपने अपने कर्त्तव्य में जुटें तो मानव समाज जिन दु:खों से पीड़ित है उन्हें यदि पूर्ण रूप से समाप्त न कर पायें तो भी बहुत हद तक कम कर सकेंगे।

उस व्यवस्था को आज लागू करना असम्भव सा लगता है। परन्तु विज्ञान और तकनीकी के इस युग में, प्राकृतिक ससाधनों का वैज्ञानिक ढंग से उपयोग करके मनुष्य की न्यूनतम आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये अधिक से अधिक उत्पादन हो सकता है। व्यवस्था का नाम कुछ रखें और चाहे कोई नाम भी न रखें, परन्तु ऐसी व्यवस्था की जाये जिस से प्रत्येक मनुष्य को गरिमा का जीवन व्यतीत करने का पूरा अवसर मिल सके और चन्द चालाक शक्तिशाली तथा अनैतिक तत्त्व उनको शोषण कर न सकें।

महर्षि दयानन्द का यही सन्देश मानव के लिये था और मैंने दो शब्दों में उसी सन्देश को दोहराने का प्रयास किया है।

प्रो० शेरसिंह

महर्षि दयानन्द का सन्देश

महर्षि दयानन्द एक ऐसे युग पुरुष थे, जो कि भारतीय समाज के सामयिक बोध को ठीक ढग से जानते थे। महर्षि दयानन्द के समय में भारतीय समाज में धर्म के नाम पर धर्माडम्बर, आर्षग्रन्थों के स्थान पर अनार्ष ग्रंथों का प्रचलन एवं नैतिकता के स्थान पर अनैतिकता का प्रचार और प्रसार हो रहा था।

समाज में छाई हुई उपर्युक्त कुरीतियों को दूर करने के लिए महर्षि दयानन्द ने सन्देश दिया। महर्षि के सन्देश में एक धर्म, एक वेद, एक राष्ट्र और एक भाषा का बड़ा भारी महत्त्व है। धर्म के विषय में हमें महर्षि के सन्देश में दो स्थितियां मिलती हैं। प्रथम स्थिति आचार संहिता सम्बन्धी मानव धर्म से सम्बन्धित है तथा दूसरी स्थिति मानव धर्म से पुष्ट होकर धर्म के प्राणाधार ईश्वर से सम्बन्धित है।

महर्षि के विचार में एकमात्र ईश्वर को स्वीकार कर लेने पर भारतीय समाज की धार्मिक आस्था एक समान हो सकती है। ईश्वर के विभिन्न मूर्ति स्वरूप हिन्दू संस्कृति में बिखराव उत्पन्न करते हैं। अत: महर्षि के मतानुसार ईश्वर का स्वरूप निराकार ही होना चाहिये। इससे सब धर्मों की समन्वयता में वृद्धि हो सकती है।

महर्षि दयानन्द वैदिक साहित्य के अध्ययन में अन्य सम्पूर्ण शिक्षण प्रणालियों को छोड़कर आर्ष प्रणाली के पक्ष में थे क्योंकि आर्ष प्रणाली के माध्यम से कम से कम समय में वेदों के तत्वार्थ को समझा जा सकता है।

महर्षि दयानन्द के समय में हिन्दू समाज में अनेक प्रकार के अवैदिक ग्रन्थों के प्रणयन से सामाजिक, नैतिक और धार्मिक मान्यताओं का परस्पर खुला सघर्ष हो रहा था। इसका परिणाम यह हुआ कि समाज में अनेक विकृत साम्प्रदायों का प्रादुर्भाव हो रहा था। हिन्दू जाति को परस्पर विभाजित करने वाले सम्पूर्ण ग्रन्थों को छोड़कर महर्षि ने एक मात्र वेदों को अपनाने का सन्देश दिया। इसके पीछे हिन्दू जाति को सामूहिक रूप में एक सी चिन्तन विधि देने का उद्देश्य था।

महर्षि की दृष्टि में एक समान चिन्तन करने से एक राष्ट्र की धारणा का सिद्धान्त पुष्ट होता है। एक राष्ट्र की धारणा द्वारा महर्षि दयानन्द भारत के लुप्त गौरव को पुनर्जीवित करना चाहते थे। एक धर्म, एक वेद और एक राष्ट्र की कल्पना एक भाषा की कल्पना के बिना निष्प्रयाजन है। अत: महर्षि के सन्देश में भारत एक सूत्र में पिरोने के लिये देवनागरी लिपि में लिखित हिन्दी ही समर्थ भाषा है। इसके सार्वजनिक महत्त्व को स्वीकार करते हुए स्वामी दयानन्द ने संस्कृत माध्यम से प्रचार करने की अपेक्षा हिन्दी को प्रचार का माध्यम बनाया। अत: महर्षि के एक धर्म, एक वेद, एक राष्ट्र और एक भाषा के सन्देश को जन-जन तक पहुंचाना प्रत्येक आर्यसमाजी का कर्त्तव्य है।

रणजीतसिंह

आर्यसमाजों से आवश्यक निवेदन

१—ऋषि निर्वाण दिवस (दीपावली) पर प्रतिवर्ष की भान्ति आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि वेदप्रचार के प्रसारार्थ प्रत्येक आर्य सभासदों से चार आना निधि में १-१ रुपया संग्रह करके भेजने का कष्ट करें। हरयाणा में सभा से सम्बन्धित ५०० से अधिक आर्यसमाजें हैं, और उनके २० हजार से अधिक आर्य सभासद हैं। यदि प्रत्येक सभासद १-१ रुपया संग्रह करके भेज देवें तो सभा को २० हजार रुपया प्राप्त हो सकता है। इस प्रकार प्रदेश में वेदप्रचार के कार्य के प्रसार के लिये और अधिक प्रभावशाली उपदेशक तथा भजनोपदेशकों की सेवाएं सभा ले सकती है।

आशा है आर्यसमाजें ऋषि निर्वाण दिवस पर अपने सभासदों को प्रेरणा करके धन संग्रह करके वेदप्रचार के आवश्यक कार्य में सभा को सहयोग देंगे।

२—सभा कार्यालय की ओर से सभी आर्यसमाजों के पास डाक द्वारा शराब के ठेके बन्द कराने तथा हरयाणा के हितों की रक्षा के लिये प्रस्तावों के प्रारुप भेजे गये थे। अभी तक बहुत कम आर्यसमाजों ने प्रस्ताव पास करके सरकार को भेजे हैं, आर्यसमाजों के अधिकारियों से पुन: निवेदन है कि दिसम्बर मास तक अपने ग्रामों की पंचायतों को प्रेरणा करके आगामी वर्ष से शराब का ठेका बन्द करवाने का प्रस्ताव करवाकर हरयाणा सरकार को अवश्य भिजवा देवें ताकि अप्रैल १९८५ में आपके गांव में ठेका न खोला जाये।

इसी प्रकार दूसरा प्रस्ताव पास करवाकर भारत सरकार को भेज कर मांग करें कि अकालियों के दबाव में आकर हरयाणा के हितों के विरुद्ध कोई समझौता न करें।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

अप्रतिम-महर्षि दयानन्द

ले०—पं० वीरसेन वेदश्रमी, वेदविज्ञानाचार्य वेद सदन, महारानी पथ-इन्दौर—७

१—महान् वैज्ञानिक

महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक थे। उसने विश्व के पर्यावरण को शुद्ध कर प्राणिमात्र को जीवन देने के लिए रूढ़िवादी यज्ञ पद्धतियों की बजाय वैज्ञानिक अग्निहोत्र पद्धति को व्यावहारिकता प्रदान की। प्रदूषित सक्ल्प एव विचारों तथा रूढ़िवादी चिन्तन ग्रस्त मानव जाति को मुक्ति दिलाकर शिव संकल्प के विशाल क्षेत्र में विचरण करने को अग्रसर किया। विश्व शान्ति के लिए शिव संकल्पमय अमृतरूपी वेद वाणी के अध्ययनाध्यापन का अधिकार सबको प्रदान किया।

२—महान् विश्व भिषक

महर्षि दयानन्द महान् विश्वचिकित्सक थे। त्रिविध तापों–आध्यात्मिक, आधिभौतिक एव आधिदैविक दुःखों से प्राणिमात्र को मुक्त करने के लिए शारीरिक, सामाजिक, मानसिक एवं आत्मिक क्लेशों को दूर करने के लिए आसन, प्राणायाम, ध्यानादि की योग चिकित्सा पद्धति का सन्ध्या के द्वारा अनुष्ठान प्रचलन किया तथा भेषज चिकित्सा द्वारा रोगादि निवृत्ति तथा शारीरिक बल बुद्धि की वृद्धि के लिए अग्निहोत्र सरल सर्वश्रेष्ठ, अतिशीघ्र प्रभावकारी कार्य को नित्य सायं प्रातः करने और यज्ञ शेष घृतादि पदार्थों के सेवन का सुलभ मार्ग बताया।

३—महान् इंजीनियर

महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक एवं यान्त्रिक इंजीनियर थे। अग्नि, वायु, विद्युत, जल आदि के द्वारा यन्त्रों के संचालन, कल कारखानों के निर्माण, औद्योगिक प्रगति करने को उसने अपने वेदभाष्य में सर्वाधिक बल दिया। जब विमानों का निर्माण भी नहीं हुआ था उससे अनेक वर्षों पूर्व विमानों के निर्माण का वेदों से प्रतिपादन किया। पृथिवी, अन्तरिक्ष और समुद्र तीनों स्थानों में एक ही प्रकार के विमान से गमनागमन करने की प्रेरणा महर्षि दयानन्द ने सन् १८७५ में दी।

४—महान् यन्त्राविष्कर्त्ता

महर्षि दयानन्द यन्त्रों के महान् आविष्कर्त्ता थे। सेम नः काममापृण गोभिरश्वैः—ऋग्वेद के इस मन्त्र में गोभिरश्वैः इन शब्दों से सर्वोत्तम विमानादि युक्त अश्वविद्या की प्रेरणा यन्त्र निर्माण के लिए महर्षि ने प्रदान की है। यजुर्वेद अध्याय के तीन के चौंतीसवें मन्त्र में–श्येनोभूत्वा परापत यजमानस्य गृहान्गच्छ तन्नौ संस्कृतम्—इसका भाष्य करते हुए महर्षि लिखते हैं कि यजमान और वेदज्ञ ऋत्विजों, ब्रह्मादि द्वारा निर्मित सुसंस्कृत विमान यजमान के गृह पर उतरे, पहुँचे, ठहरे यह भाव प्रकट कर छोटे और हलके विमानों के निर्माण और उनके ऊपर से सीधे नीचे बाज पक्षी के समान उतरने की कुशलता का ज्ञान आज से ११० वर्ष पूर्व तथा विमानों के प्रथम आविष्कार से लगभग २५-३० वर्ष पूर्व महर्षि ने दिया। अतः निःसन्देह महर्षि दयानन्द महान् वैज्ञानिक महान् यान्त्रिक तथा महान् आविष्कर्त्ता थे।

५—महान् शिक्षक

महर्षि दयानन्द महान् शिक्षक थे, आचार्यों के भी आचार्य, प्राचार्यों के भी प्राचार्य और कुलाधिपतियों के कुलाधिपति थे। उन्होंने उस शिक्षा की स्थापना का प्रबल प्रतिपादन किया जिसके द्वारा शारीरिक, सामाजिक और आत्मिक उन्नति संसार की हो सके। बालकों को गर्भावस्था में ही संस्कारित एवं सुशिक्षित करने के लिए, उनके मन तथा आत्मा को मोक्षाभिमुख बनाने के लिये सोलह संस्कारों का सुपथ मानव जाति को प्रदर्शित किया।

६—सर्वोच्च साम्यवादी

महर्षि दयानन्द महान् समाजवादी थे। उनका समाजवाद वैदिक आदर्शों पर आधारित था। परिस्थितियों से प्रताड़ित होकर जो भी समाजवाद या अन्य कोई वाद उत्पन्न या विकसित होगा वह प्रतिक्रियात्मक एवं एकांगी ही होगा। अतः वह कभी सर्वांगीण उन्नति का आदर्श तथा पथप्रदर्शक नहीं हो सकता। महर्षि ने परिस्थितिवश समाजवाद की स्थापना नहीं की थी–अपितु वेद में परमात्मा ने यह सुपथ प्रतिपादित किया है जो शाश्वत उन्नति का आदर्श है इस दृष्टि से वैदिक मार्ग का प्रतिपादन किया था। सारे समाजवादी या साम्यवादी विचारक वैदिक समाजवाद या साम्यवाद के सम्मुख जुगनू की भांति ही महान्धकार में भटक रहे हैं। अतः महर्षि साम्यवादियों में शिरोमणि हैं।

७—सर्वश्रेष्ठ साम्यवादी

महर्षि दयानन्द ने समाजवाद या साम्यवाद अथवा समत्वभाव की स्थापना एवं प्रचार के लिये आर्यसमाज की स्थापना की और उसमें सबको समान अधिकार देकर–प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से सन्तुष्ट न रहकर सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिये–यह आर्य समाज का नवम नियम घोषित किया। गुरुकुलादि शिक्षण संस्थाओं में राजा और निर्धनजनों के बालकों के वस्त्र, रहन सहन, खानपान व्यवहार आदि में बिना भेदभाव के एक समान बर्ताव रखने का महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में तीन शब्दों में प्रतिपादन किया। राज्य की ओर से ही सबकी शिक्षा की समान व्यवस्था बिना जाति भेद एवं गरीब अमीर या राजा पुत्र भेद के समान करने का महर्षि ने प्रतिपादन किया। शिक्षा के लिये किसी वर्ग का व्यक्ति विशेष को सुविधा न देकर सभी को समान अवसर महर्षि दयानन्द प्रदान करते हैं। विलासमय, शानशोकत के विद्यार्थी जीवन को तप, सादगी तथा ब्रह्मचर्य पूर्ण बनाने का महर्षि ने सन्देश दिया।

८—महान् गुरु

वर्तमान समय की शिक्षा और विद्यार्थी जीवन में सदाचार, ब्रह्मचर्य एवं संयम अवांछनीय तथा उपहास योग्य माने जाते हैं। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध भाव विरला ही दृष्टिगोचर होता है। गुरुओं में गुरुत्व की गरिमा का प्रायः अभाव ही है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे और तीसरे समुल्लास में शिक्षा के मूल सिद्धान्त और आदर्शों का प्रतिपादन करते हुए–मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवो भव की भावना युक्त होने का सन्देश दिया। यान्यस्माकं सुचरितानि तानि त्वयोपास्यानि, नो इतराणि—अर्थात् हमारे जो अच्छे

(शेष पृष्ठ ६ पर)

दीपावली के अवसर पर आर्यों का कर्त्तव्य

(ले० पं० चन्द्रसैन आर्य वैदिक मिश्नरी, सोनीपत)

आर्य बन्धुओ ! हमारे पूर्वज भी दीपावली मनाते थे और अब हम भी मनाते हैं। ये दीपावली हर्ष एवं उल्लास का पर्व है।

वैसे ये ऋतु पर्व नये अन्न के लाने वाले सर्वपर्वों का सरताज ही है। इसमें लाखों वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम राम का अयोध्या लौटने पर हर्ष से दीपावली मनाई गई। भगतों ने लाखों दीपक जलाकर प्रसन्नता प्रकट की। ये भी इसी में सम्मिलित है। उन्नसवीं शताब्दी में राष्ट्र निर्माता वेद प्रचारक सुधारक शिरोमणि सन्त महर्षि दयानन्द सरस्वती जिन्होंने कलयुग को हिला के रख दिया, इसी दीपावली अक्तूबर सन् १८८३ में वैदिक धर्म प्रचार के लिए हर आडम्बरों से टक्कर ली। जिन्हें भारत के नादान लोगों ने इन्हें हजारों प्रकार के कष्ट दिये। १७ बार जहर भी दिया। इस मनहूस घड़ी में सन्त परलोक सिधारे। जिस विशाल रूपी शरीर की अर्थी को सोलह-सोलह व्यक्तियों ने उठाया। मानो व्याकरण वैदिक धर्म प्रसारक रूपी सूर्य अस्त हो गया। विधर्मी मजहबों की जड़े हिला के रख दी। इस सन्त की दलीलों के सामने उस जमाने के मजहबों के रहनुमा भी न टिक सके। मैंने अपने ४२ वर्ष के अन्दर वैदिक धर्म प्रचार कार्य में अनेकों सज्जनों के दर्शन किये, जिन्होंने महर्षि दयानन्द सरस्वती के दर्शन किये हैं उनसे दिल को हिला देने वाली अनेको घटनाएं सुनी। सत्यार्थप्रकाश जो लाईट हाऊस का काम देता है। अन्य बीसियों ग्रन्थ लिखे। व्यक्तिवाद की पूजा के बदले एक ईश्वरवाद को फैलाया। इसी वास्ते अपने नाम का मत या मजहब न चलाकर अप्रैल मास के पहले सप्ताह में सन् १८७५ में भारत की सुन्दर नगरी बम्बे में आर्यसमाज नाम की संस्था स्थापित की जो आर्यसमाज वास्तव में संसार के लिए पथ-प्रदर्शक हैं। महर्षि के परलोक सिधारने के बाद बीसियों नवयुवक विशेषकर ला० मुन्शीराम जो बाद में कई वर्षों बाद वानप्रस्थी बने फिर संन्यासी रूप में वे स्वामी श्रद्धानन्द कहलाए। पंजाब केसरी ला० लाजपतराय, पूज्य महात्मा हंसराज जी, गुरुदत्त एम० ए० विद्यार्थी, श्री कृपाराम जो बाद में स्वामी दर्शनानन्द कहलाए। इसी प्रकार अनेकों ऋषि भक्त हुए।

ऋषि दयानन्द के बलिदान के बाद विधर्मी सिर उठाने लगे। इन दीवानों ने आर्यसमाज के लिए सिर धड़ की बाजी लगा दी। पंडित लेखराम जी आर्य मुसाफिर, प० गणपति शर्मा, पं० धर्मभिक्षु जो, पं० चमूपति जी एम० ए०, आचार्य रामदेव जो सरीखे विद्वानों ने आर्यसमाज के नाम को चार चांद लगाये। सन् १८८३–८४ में डी० ए० वी० आन्दोलन चला और गुरुकुलों का जाल बिछा। भारत की स्वाधीनता में आर्य समाज कांग्रेस पार्टी का दायां बाजू बना। अंग्रेज सत्ता कांग्रेस से नहीं आर्यसमाज से भय खाती थी। आर्यसमाज ने धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक बुराइयों को दूर करने में कोई कसर नहीं रखी। मैंने आर्य समाज और कांग्रेस के हर आन्दोलन में हिस्सा लिया और जेलों में भी गया।

आर्यसमाज की स्थापना को हुए १०४ वर्ष होने को आए, इस समाज का इतिहास प्रति गौरवमय रहा है।

आर्यो ! समय की कठिनाई पर ध्यान दें। आर्यसमाज को सही आर्यसमाज बनायें। स्वार्थ से ऊपर उठकर अपना कीमती समय निकाल कर आर्यसमाज को ऊंचा उठायें। यही दीपावली की याद तथा ऋषि भक्ति होगा। अपने कर्त्तव्य को समझे। स्वार्थ आदि को भुला, समाज की सेवा में जुट जायें। आर्य वीर दल आदि बनायें और आर्यसमाज में युवकों को आगे लाएं।

मेला कपाल मोचन पर

वैदिक धर्म प्रचार तथा यज्ञ का आयोजन

प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी कार्तिक पूर्णिमा सम्वत् २०४१ दीवाली के पश्चात् मेला कपाल मोचन निकट जगाधरी जिला अम्बाला में ५ से ८ नवम्बर १९८४ तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से वैदिक धर्म प्रचार तथा चारों वेदों से महायज्ञ करने का आयोजन किया गया है। इस मेले पर हरयाणा, पंजाब, राजस्थान तथा उत्तरप्रदेश से लाखों की संख्या में श्रद्धालु नर-नारी आते हैं। अतः यह प्रचार के लिए उपयुक्त स्थान है। मेले में सभा की ओर से प्रचार का संयोजक श्री प० हरिश्चन्द्र आर्य भजनोपदेशक को नियुक्त किया है व पूज्य स्वामी सदानन्द जी महाराज, स्वामी गुरुदत्त मुनी चौ० नत्थासिंह जी, प० बाबूराम भजनोपदेशक तथा सभा के युवा विद्वान् प० सुरेश कुमार शास्त्री एम० ए० विद्यावाचस्पति तथा पण्डित तेजपाल जी, प० मुन्शीलाल एवं प० कृष्णपाल रंगीला आदि की भजनमण्डलियां प्रचारार्थ पहुँच रही हैं।

आर्यसमाजों से निवेदन है कि मेले में वैदिक धर्म प्रचार के शुभ कार्य में आर्थिक सहयोग प्रदान करें। निवेदक

रणजीतसिंह मन्त्री प्रो० शेरसिंह प्रधान

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

ओमानन्द सरस्वती प्रधान परोपकारिणी सभा

प्रो० शेरसिंह मारीशस के भ्रमण पर

सभा के प्रधान माननीय प्रो० शेरसिंह जी पूर्व रक्षा राज्य मन्त्री २२ अक्तूबर को विमान द्वारा मारीशस की सरकारी यात्रा पर जा रहे हैं। उनके साथ आर्य नेता स्वामी सत्यप्रकाशानन्द जी, प्रो० वेदव्यास जी, श्री रामनाथ सहगल आदि भी शिष्ट मण्डल में सम्मिलित हैं। आप ३० अक्तूबर को भारत वापिस लौटेंगे।

मारीशस में भारतवासियों के १५० वर्ष पूर्ण होने पर यह समारोह होगा। स्मरण रहे मारीशस में आर्यसमाज के प्रचार का बहुत प्रभाव है। आर्यसमाज की ओर से अनेक संस्थाओं का भी संचालन हो रहा है। सभा प्रधान द्वारा वहां के भ्रमण का विवरण सर्वहितकारी में प्रकाशित किया जायेगा।

ऋषि–सन्देश

देशराज खीरबांट २९० इन्दिरा कालोनी, रोहतक

हम सब आर्यसमाज के सदस्य हैं और अपने आपको आर्य कहने कहलवाने में प्रसन्ता अनुभव करते हैं और इस बात की घोषणा करते हैं कि सारे संसार को आर्य बनाना है तो सर्वप्रथम इस विषय पर विचार करेंगे कि आर्य किसको कहते हैं ? आर्य शब्द ऋ धातु से बनता है जिसका अर्थ है ऋत को रक्षा करने वाला। प्रश्न उठता है कि ऋत क्या है ? ऋत (सत्य ज्ञान अथवा वेद)।

वैदिक साहित्य में ऋत तथा सत्य–ये दो शब्द पाये जाते हैं। ऋतं च सत्यं चाभीद्धात्तपसोऽध्यजायत—तपोमय ब्रह्म से ऋत तथा सत्य प्रकट हुए।

ऋत का अर्थ है—निरपेक्ष सत्य तथा का अर्थ है सापेक्ष सत्य, सत्य तो परिस्थिति के अनुसार बदल जाता है परन्तु ऋत परिस्थिति पर आधारित नहीं क्योंकि वेद ईश्वरीय ज्ञान है जो काल और परिस्थिति में बदलता नहीं, क्योकि ईश्वर अनादि है और नित्य है इसलिए उसका ज्ञान भी नित्य है और अनादि है। वेद ईश्वरीय विधान है और जब जब परमात्मा सृष्टि की रचना करता है तो पहले की भान्ति इस विधान को मनुष्यों को जना देता है जिसके द्वारा मनुष्य संसार में सुख की व्यवस्था करता हुआ अपने आपको परमात्मा को अर्पण कर दें।

वेदों के आधार पर ऋषियों द्वारा लिखे ग्रन्थ उपनिषद्, दर्शन-शास्त्र ब्राह्मण ग्रन्थ, सत्यार्थ प्रकाश आदि ऋत हैं।

स्वामी जी ने सब ग्रन्थों को पढ़के सत्यार्थप्रकाश की रचना करके हमारे सामने एक सत्य मार्ग रखा, जिसके अनुसार हम अपने जीवन को बना सकें। जो सोचने की बात है कि हम अपने आपको आर्य कहने वाले थोड़ा सा भी कभी विचार करते हैं कि हमारा जीवन क्या है ?

वेदप्रचार का अर्थ है कि मनुष्य पात्र वेदज्ञान को पढ़कर उसके अनुसार अपने जीवन को बनावें जैसा कि यजुर्वेद अध्याय ४, मं० छट्ठा। मनुष्य ने जो वेद की रीति और मन, वचन, कर्म से अनुष्ठान किया हुआ यज्ञ है। केवल ज्ञान को जान लेने से कार्य पूरा नहीं होता, जब तक कि उस ज्ञान के आधार पर कार्य न किया जावे तो ज्ञान का कुछ लाभ नहीं। वेद उपदेश भी है कि विद्वान् यदि अपने ज्ञान के अनुसार कार्य नहीं करता तो वह उस बोझा ढोने वाले पशु के समान है जिस पर अमूल्य ग्रंथ लदे हो। आर्यजनो ! यदि आप वेदप्रचार करना चाहते हैं कि संसार को आर्य बनावें तो अपने आपको आर्य बनाना होगा। केवल नाममात्र से आर्य कहने कहलवाने से कुछ नहीं होता। सर्वप्रथम—'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद' के वचन के आधार पर हम अच्छी माता, अच्छे पिता और अच्छे आचार्य बनें जिसके संतान उत्तम हो और हम अपने जीवन को यज्ञमय बना पावें। अस्तु !

(पृष्ठ ४ का शेष)

आचरण हैं जो धर्मयुक्त कार्य हैं उनका शिष्य नित्य अनुष्ठान करें जो निन्दित कर्म हैं उनका अनुष्ठान या आचरण कदापि न करें यह प्राचीन ऋषियों का आचार घोष महर्षि ने पुन: शिक्षा के क्षेत्र में घोषित किया। विद्या एवं विज्ञान पर पीड़न के लिये नहीं अपितु दुःखियों के दुःख दूर करने के लिये शान्ति और सबको सुखी करने के लिए है इस भावना के साथ विद्या की वृद्धि करने तथा अविद्या के विनाश करने का आर्यसमाज का आठवां नियम बनाया।

९—अक्षर तत्त्व का दर्शक

साक्षर होने से अविद्या का नाश नहीं होता है और न विद्या की वृद्धि होती है। साक्षरता एवं उच्च शिक्षा की व्यवस्था होने पर भी विद्या क्या है और अविद्या क्या है इसका ज्ञान प्राय: नहीं होता। स्कूल कालेज, विश्वविद्यालयों के माध्यम से साक्षरता बढ़ती है, परन्तु अक्षर तत्त्व का बोध नहीं होता है। अक्षर तत्त्व के बोध के अभाव में साक्षरता राक्षस भाव में परिणत होती जाती है। अत: महर्षि ने अविद्या का नाश और जिस विद्या की वृद्धि के लिये कहा है वह पराविद्या है। उसी के लिये उपनिषद् में कहा—यया तदक्षरमधिगम्यते-अर्थात् शिक्षा के साथ पराविद्या की प्राप्ति के द्वारा उस अक्षर अविनाशी तत्त्व, परमात्मा की प्राप्ति करनी चाहिये। वर्णात्मक अक्षर से वर्णनातीत अक्षर तत्त्व के वर्ण करने की साधना का उपदेश महर्षि दयानन्द ने-तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गोदेवस्य धीमहि इस गायत्री मन्त्र से करने का प्रचार किया।

सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य भावना प्रसारक

महर्षि दयानन्द ने व्यक्ति, समाज, राष्ट्र के साथ सार्वत्रिक उन्नति के लिए सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापित करने के लिये आर्यों को प्रेरणा दी। बिना आर्य बने संसार के उपकार की भावना उदय नहीं होगी। स्वार्थी को सार्वजनीय उन्नति के आगे त्याकर कार्य करने का आदर्श महर्षि ने आर्यसमाज के दसवें नियम द्वारा ग्रहण करने का आदेश दिया कि सब मनुष्यों को सामाजिक, सर्वहितकारी, नियम पालन में परतन्त्र रहना चाहिये—ऐसी सार्वजनिक, सार्वभौम, सर्वहितकारी भावना का महर्षि ने उद्घोष करके क्षुद्र जातीय साम्प्रदायिक ता क्षेत्रीय सीमित राष्ट्र की भावना के बदले सार्वभौम भावना का मन्त्र प्रदान किया। वेदभाष्य एवं आर्याभिविनय के प्रार्थना के मन्त्रों में बार बार सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य स्थापना का महाघोष प्रदान किया।

महर्षि की तुलना किसी से नहीं की जा सकती

महर्षि दयानन्द की तुलना न भूतो न भविष्यति किसी से नहीं की जा सकती है। सूर्य की तुलना क्या दीपक से हो सकती है। सुवर्ण की तुलना पीतल से कभी नहीं हो सकती। ब्रह्मचारी की तुलना विलासी जनों से नहीं की जा सकती है। विद्वान् की तुलना मूर्खों से नहीं की जा जा सकती। आदर्शवादी की तुलना अवसरवादियों से नहीं की जा सकती। ऋषि की तुलना अनार्यों से नहीं की जा सकती। देवता की तुलना दानवों से नहीं की जा सकती। ऋषि तो ऋषि ही था। वह महर्षि था, महायोगी था, परम तपस्वी था, परम ज्ञानी था, समाधि सिद्ध था। भर्गोदेवस्य धीमहि–की स्थिति में स्थित प्रज्ञ होकर प्रज्ञा के आलोक से विश्व का आलोकित करने वह इस धरा पर आया था। महर्षि की तुलना में सर्वांगीण व्यक्तित्व वाला तो कोई है ही नहीं, परन्तु आंशिका रूप से भी उस उच्चता का स्पर्श भी कोई नही कर सकता। न तस्य प्रतिमा अस्ति उस महर्षि दयानन्द का कोई प्रतिमान प्रतीत नहीं होता।

दिव्य ज्ञान चक्षु प्रदाता

वेद के दिव्य सन्देश को देने के लिए उसने अपने जीवन को अर्पित कर दिया था। संसार के उपकार के लिए वह जीया और संसार के उपकार के लिये ही वह मरकर अमर हो गया तथा मरती हुई मानवता को अमरत्व का सन्देश दे गया। वह क्रान्ति का पुंज था। साम्प्रदायिकता के दुर्भेद्य किलों को वैचारिक क्रान्ति से उसने ध्वस्त किया। अज्ञानता एवं रूढ़िवाद के भंवर से मानव जाति का उसने उद्धार किया। आंखें होते हुए भी ज्ञान दृष्टि के अभाव में मानव जाति भटक रही थी–महर्षि ने उसे ज्ञान दृष्टि रूपी दिव्य चक्षु प्रदान की। महर्षि ने मनु के दशकं धर्म लक्षणम्–के रूप में आर्यसमाज के १० नियम प्रदान किये। यही दससूत्री कार्यक्रम वर्तमान समय के लिये सर्वथा ग्राह्य है तथा सर्वांगीण उन्नति का कार्यक्रम है।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र प्रारम्भ किया जा रहा है।

अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र—'मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिये।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिए। चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास को निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

सैनिक शहीद सहायता निधि

हरयाणा के आर्यसमाजों को परिपत्र भेजकर सैनिक शहीद सहायता निधि में अधिक से अधिक राशि भेजने को अपील की गई थी जिन आर्यसमाजों ने इस निधि में धन भेजा है, उसकी सूची सर्वहितकारी में क्रमशः प्रकाशित की जा रही है। इस निधि से सैनिक शहीद परिवारों की सहायता के लिये उनके बच्चों को गुरुकुलों तथा आर्य स्कूलों में शिक्षा दिलाने की व्यवस्था हेतु छात्रवृत्तियां दी जायेंगी। अतः आर्य समाजों के अधिकारियों से अनुरोध है कि जिन्होंने अभी तक अपना योगदान नहीं भेजा है वे इस सेवा महायज्ञ में अपनी आहुति भेजकर राष्ट्ररक्षा के लिए बलिदान करने वाले सैनिकों के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट कीजिए।

गत सप्ताहों में निम्नलिखित स्थानों से इस निधि में धन प्राप्त हुआ है—

चौ० धर्मसिंह राठी पूर्व विधायक आर्यसमाज मनाना जि० करनाल	५००)
ब्र० रामवीर शास्त्री गुरुकुल झज्जर जिला रोहतक	१०१)
ठा० लक्ष्मणसिंह प्रधान आर्यसमाज सालवन जि० करनाल	१००)
श्री गुरदयालसिंह आर्यसमाज सुरखला जिला रोहतक	३१)

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

बेरी जिला रोहतक में सर्वखाप पंचायत

जिला रोहतक के प्रसिद्ध कस्बे बेरी में हरयाणा दिवस पर एक नवम्बर को १० बजे राजकीय हायर सेकण्डरी स्कूल के मैदान में सर्व-जातीय सर्वखाप पंचायत की एक विशाल बैठक हो रही है, जिसमें सभी खापों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं, पंचों, सरपंचों को आमन्त्रित किया गया है। इस पंचायत में विवाह शादियों के अवसर पर कम से कम खर्च करने तथा शराब पर पाबन्दी लगाने पर कार्यक्रम तैयार किया जायेगा। अतः इच्छुक महानुभाव समय पर पधारें।

गजल

गिरते गिरते गिर गया कहां आज का इन्सान है।
ना रही नेकी बदी की भी इसे पहचान है॥
बागवां ने था किया सरसब्ज जिसको एक दिन।
आज देखो हो गया गुलशन वही वीरान है ॥१॥
करते जो नित खोज औरों को मिटाने के लिए!
गर्व से कहते हैं फिर यह आज का विज्ञान है ॥२॥
साथ रावण का रहा दे भाई वह लक्ष्मण यती।
देख कर यह आचरण खुद राम हो हैरान है ॥३॥
मत सता निर्धन को ना खुदगर्ज लमहे का पता।
चार दिन की जिन्दगी सौ वर्ष का सामान है ॥४॥
आज दे किसको मदद वह योग का साधक कृष्ण।
पाण्डवों ने खुद किया पाञ्चाली का अपमान है ॥५॥
फर्श से ले अर्श तक क्या है अन्धेरे का सबब।
"चन्द्र" की क्या रोशनी का हो गया अवसान है ॥६॥

चन्द्रपाल शास्त्री
दयानन्द आदर्श माध्यमिक विद्यालय नारायणगढ़ (अम्बाला)

आर्यसमाज पानीपत स्थापना शताब्दी समरोह सम्पन्न

हरयाणा प्रदेश में सर्वप्रथम स्थापित आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जिला करनाल का स्थापना शताब्दी समारोह ६ से १४ अक्तूबर तक सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर भारत भर के वैदिक विद्वानों को आमन्त्रित किया गया और उन्हे सम्मानित करते हुए १५०० की दक्षिणा के अतिरिक्त आर्यसमाज द्वारा प्रकाशित धर्म और संस्कृति एक ग्रन्थ, आने जाने का मार्ग व्यय, एक एक गरम शाल भेंट की गई। दक्षिण के विद्वानों द्वारा यज्ञ का कायक्रम बहुत आकर्षक रहा।

१२ अक्तूबर को प्रात: दस बजे ध्वजारोहण करते हुए सभा प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्यजनता को आह्वान किया कि आर्यसमाज के सिद्धान्तो के प्रचार तथा समाज सुधारो के कार्यों के विस्तार के लिये और अधिक परिश्रम तथा लगन के साथ कार्य करें। उसी दिन दोपहर को नगर में शानदार शोभायात्रा का आयोजन किया गया इसमें आर्य शिक्षण संस्थाओं तथा गुरुकुलो के छात्र एवं छात्राएं जयघोषो से ऋषि गुणगान और सभा की भजन मण्डलियां पं० चिरन्जोलाल, पं० मुन्शी लाल, प० ईश्वरसिंह तूफान और उत्तरप्रदेश के प्रभावशाली भजनोपदेशक पं० पन्नालाल पीयूष, प० ओमप्रकाश वर्मा, चौ० नत्थासिंह आदि के प्रभावशालो गीत सुना रहे थे। ग्रामों से आये हुए ट्रेक्टरों में सवार आर्य नरनारो भी बहुत ही श्रद्धा से शोभायात्रा मे सम्मिलित हुए। आर्यसमाज की ओर से जो० टी० रोड़ मार्ग पर ध्वनि विस्तारक यन्त्र लगा रखे थे जिससे मंच से प्रसारित होने वाला कार्यक्रम दूर दूर तक सुनाई देता था।

समारोह में पं० वोरसेन जी वेदश्रमी, आचार्य विश्वश्रवा, पण्डित सत्यानन्द वेदवागीश, आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री, स्वामी सत्यप्रकाश जी, पं० शिवपूजनसिंह कुशवाह, पं० युधिष्ठिर जी मीमांसक, डा० प्रज्ञादेवी व्याकरणाचार्या, पं० विश्वनाथ श्रोती, स्वामी अमरस्वामी जी महाराज स्वामी ओमानन्द जी महाराज, पं० शिवकुमार शास्त्री, डा० रामप्रकाश जी, स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (दीनानगर) आदि विद्वानों के प्रवचन हुए।

समारोह के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपप्रधान व कुलपति गुरुकुल भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर के निधन पर शोक प्रस्ताव पास करते हुए उन द्वारा किये गये कार्यों की सराहना की गई। एक अन्य प्रस्ताव द्वारा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती ने उपस्थित जनता से हाथ उठवाकर संकल्प करवाया कि आने वाले चुनाव के अवसर पर उसी प्रत्याशी को मत दें जो कि शराब तथा गोहत्याबन्दी का वचन देवे। वैदिक विचारधारा का प्रचार करने के लिये वैदिक विद्वत परिषद् का भी गठन किया गया। इसके अध्यक्ष स्वामी विद्यानन्द जी को चुना गया।

इस शताब्दी समारोह पर सभा की ओर से ऋषि दयानन्द की जीवनी तथा हरयाणा में आर्यसमाज के कार्य विस्तार पर एक प्रदर्शिनी का एवं वैदिक साहित्य की दुकान लगाई गई। आर्यसमाज पानीपत ने भी प्रदर्शिनी में पानीपत से ऋषि दयानन्द के नाम लिखे गये १३ पत्र तथा अन्य अमूल्य हस्तलिखित पुस्तकें रखी गई। अन्धों के लिये ब्रेन लिपि में आर्याभिविनय पुस्तक का प्रथम बार प्रकाशन किया गया।

रामानन्द सिंगला संयोजक समारोह

रोहतक तथा खानपुर में चौ० माडूसिंह को श्रद्धांजलि अर्पित

१८ अक्तूबर को रोहतक तथा २१ अक्तूबर को कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत में स्वर्गीय आर्य नेता चौ० माडूसिंह जी मलिक को श्रद्धांजलियां देते हुए उन्हें एक ईमानदार, मिलनसार, सादगी का प्रतोक, शिक्षा प्रेमी, आर्यसमाज का मूर्धन्य नेता तथा महान् समाज सुधारक बताया। रोहतक की शोक सभा में हरयाणा के मुख्य मन्त्री चौ० भजनलाल, पूर्व मुख्य मन्त्री चौ० बन्सोलाल, लाला बनारसोदास, हरयाणा विधान सभा के उपाध्यक्ष श्री वेदपाल, हरयाणा की मन्त्री प्रसन्नीदेवी, चौधरी मुख्त्यारसिंह मलिक, पं० चिरन्जोलाल शर्मा, श्री प्रतापसिंह दोलता, श्रीमती बसन्तीदेवी M. L. A., श्री किताबसिंह M. L. A., श्री राममेहर एडवोकेट, सभा के प्रधान प्रो० शेरसिंह, स्वामी कर्मपाल, श्रीमती शारदारानी आदि नेताओं ने दिवगत नेता के प्रति अपनी श्रद्धांजलि भेंट की।

इस शोक सभा में ५ हजार की संख्या में उनके श्रद्धालु नर-नारी सम्मिलित हुए। इससे पूर्व प्रात: यज्ञ का आयोजन किया गया।

इसी प्रकार २१ अक्तूबर को कन्या गुरुकुल खानपुर की शोक सभा में स्वामी ओमानन्द सरस्वती आदि अनेक आर्य नेताओं ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। समारोह के अध्यक्ष चौ० हरद्वारोलाल जी थे।

सिगरेट के विरुद्ध नया जेहाद

वाशिंगटन, १४ अक्तूबर (रा)। अमेरिका में सिगरेट के विज्ञापनों और पैकटों पर अंकित की जाने वाली चेतावनी मे अब धूम्रपान से स्वास्थ्य को संभावित खतरों का चित्रण और प्रभावशालो एव सुस्पष्ट शब्दों में किया जाएगा।

राष्ट्रपति रीगन ने कल इस आशय के एक विधेयक को अपनी स्वीकृति प्रदान कर दी। अभी तक अमेरिका में सिगरेट के विज्ञापनों और पैकेटों पर अंकित की जाने वाली चेतावनी इस प्रकार है—सर्जन जनरल के अनुसार धूम्रपान स्वास्थ्य के लिये हानिप्रद है।

इस चेतावनी का स्थान अब चार नये वाक्य लेंगे। प्रत्येक वाक्य तीन तीन महीने बारी बारी से अंकित किया जाएगा। ये चार नये वाक्य हैं—

१—धूम्रपान से फेफड़ों का कैंसर, हृदयरोग और वायुरोग उत्पन्न होता है तथा गर्भ विकार भी उत्पन्न हो सकता है

२—धूम्रपान छोड़ देने से स्वास्थ्य के लिये अनेक गम्भीर खतरे स्वत: समाप्त हो जाते हैं। गर्भवती महिलाओं द्वारा धूम्रपान से भ्रूण नाश और समयपूर्व प्रसव का खतरा उत्पन्न होता है और नवजात शिशु का वजन असामान्य रूप से कम होने की आशका बनी रहती है।

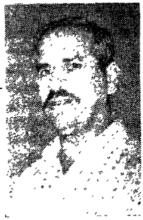
३—सिगरेट के धुएं में कार्बनमनोक्साइड होती है।

४—विधेयक के प्रस्तावकों के अनुसार अमेरिका के सर्जन जनरल ने पता लगाया है कि धूम्रपान से अमेरिका में प्रति वर्ष तीन लाख लोग अकाल मृत्यु का शिकार होते हैं। कैंसर तथा कई अन्य घातक रोगों का प्रमुख कारण धूम्रपान हो पाया गया है।

(दैनिक ट्रिब्यून से साभार)

केवल दो शिक्षाएं

श्री बलदेवकृष्ण आर्य पुस्तकाध्यक्ष आ० प्र० सभा हरयाणा



श्री बलदेवकृष्ण आर्य

महर्षि दयानन्द के जीवन से हमें अनगिनत शिक्षाएं मिलती हैं, लेकिन इस लेख में केवल दो शिक्षाओं का ही वर्णन करूंगा।

पहली शिक्षा अहिंसा और दया—

महर्षि दयानन्द अहिंसा के अवतार और दया की मूर्ति थे। संसार की उत्पत्ति से लेकर आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं उन सबके जीवन चरित्र को यदि आप पढ़ें तो उनमें कई ऐसे महापुरुष भी मिल जाएंगे जिन्होंने अपने कातिलों का माफ कर दिया हो लेकिन किसी ऐसे महापुरुष का जीवन चरित्र आपको पढ़ने को नहीं मिलेगा जिसने सिर्फ अपने कातिल को माफ ही किया हो बल्कि उसे बचाने की भी चिन्ता की हो और जिसने अपने कातिल को पैसे देकर बचने के लिए बहुत दूर भाग जाने की सम्मति दी हो।

महर्षि दयानन्द को कई बार जहर दिया गया एक ब्राह्मण ने विष युक्त पेड़े महाराज के सामने रखे। योगी ने परीक्षा करके भांप लिया ब्राह्मण घबरा गया परन्तु दयालु दयानन्द ने उसे उपदेश देकर विदा किया।

ऋषि भक्त मुसलमान तहसीलदार ने स्वामी जी को जहर देने वाले कातिल को पकड़ा और उस पर अन्य अपराध लगाकर उसे छः मास कारावास की सजा दी। तहसीलदार अपनी कारगुजारी की दाद लेने आया। महर्षि ने मुंह फेर लिया फिर पूछने पर उत्तर दिया कि मैं किसी को कैद कराने नहीं आया बल्कि संसार को अविद्या, अन्धकार रूपी कारावास से छुड़ाने आया हूं।

आखिरी बार जोधपुर में जगन्नाथ ने दूध में बारीक पिसा हुआ कांच मिलाकर ऋषि को दिया। थोड़ी देर के बाद आप के पेट में सख्त दर्द होने लगा ऋषि समझ गए और जगन्नाथ को बुलाकर पूछा ऋषि के ब्रह्मतेज के प्रभाव से जगन्नाथ घबराया और अपने जुर्म का इकबाल करते हुए श्री चरणों में गिर पड़ा। महर्षि ने उसे उठाया बड़े प्यार के साथ समझाया धैर्य दिया और पास से कुछ रुपये देकर कहा कि जो कुछ होना था सो हो चुका अब तू अपनी जान बचाने के लिये यहां से दूर बहुत दूर कहीं भाग जा वरना तेरा बचना मुश्किल है। वाह रे दयालु दयानन्द कितना विशाल हृदय था तुम्हारा क्यों न संसार के लोग श्रद्धा से आपके आगे सिर झुकाएं। दयानन्द की दयालुता का लेशमात्र भी हममें आ जाए तो हमारे मन से ईर्ष्या द्वेष का नामो निशान मिट जाए अगर संसार के वैज्ञानिकों के मन में ऐसी अहिंसा की उच्च भावनाएं जागृत हो जाए तो वे संसार के विनाश के लिए आणविक बम्बों का निर्माण न करें तब संसार की शान्ति कभी भी भंग न हो।

दूसरी शिक्षा ब्रह्मचर्य—

करणवास में राव करणसिंह ने म्यान से तलवार निकालकर महाराज का सिर काटने के लिये हमला करना चाहा परन्तु महाराज ने एक ही झटके से उसके हाथ से तलवार छीन कर जमीन पर मारकर तलवार के दो टुकड़े कर दिये।

काशी निवास के समय एक दिन स्वामी जी भ्रमण करने जा रहे थे क्या देखते हैं कि एक छकड़ा सामान से लदा हुआ कीचड़ में फंसा खड़ा है और गाड़ीवान बैलों को, जो बावजूद हृष्ट-पुष्ठ होने के छकड़ा कीचड़ की दलदल से बाहर निकालने में असमर्थ हो रहा है। बार बार कोड़े मार रहा है। दयालु दयानन्द से यह दशा देखी न गई स्वयं कीचड़ में घुस गए और सामान के लदे हुए छकड़े को जो हृष्ट-पुष्ठ बैलों से भी बाहर न निकल रहा था सड़क पर ला खड़ा करके आगे सैर को चल दिए।

जालन्धर निवास के समय एक दिन राजा विक्रमसिंह ने महाराज से कहा सुनते हैं कि ब्रह्मचर्य से बहुत बल बढ़ता है महाराज ने कहा कि यह बिल्कुल सत्य है तो राजा ने कहा कि शास्त्रों के कथन का सिद्ध होना कठिन है आप भी तो ब्रह्मचारी हैं परन्तु इतना प्रतीत नहीं होता महाराज उस समय तो चुप हो गए परन्तु जब सरदार साहब अपने दो घोड़े गाड़ी पर सवार होकर चलने लगे तो स्वामी जी ने चुपके गाड़ी का पहिया लिया कोचवान ने गाडी को चलाना चाहा लेकिन घोड़े न चल सके फिर अपने घोडों को चाबुक मारा चाबुक खाने पर घोड़ों ने बहुत जोर लगाया किन्तु वह चल न सके तो कोचवान और राजा साहब ने पीछे मुड़कर देखा कि स्वामी जी महाराज गाड़ी का पहिया पकड़े खड़े थे तब स्वामी जी ने राजा साहब की ओर देखते हुए कहा कि मैंने ब्रह्मचर्य के बल का परिचय दे दिया है तब राजा विक्रमसिंह ने महाराज के चरण छुए और चले गए।

सख्त सर्दी के मौसम में गंगा के किनारे सिर्फ एक लंगोट बांधकर ऋषि ने कई रातें गुजारी। महर्षि ने हजारों ग्रन्थ पढ़े संसार के सभी मतवादियों के मूल ग्रन्थों को भी पढ़ा उनकी आलोचना में और वैदिक धर्म की पुष्टी में कई ग्रंथ लिखे। यजुर्वेद और ऋग्वेद का भाष्य किया इसके साथ स्थान स्थान पर घूमकर वैदिक धर्म प्रचार किया शास्त्रार्थ किये व्याख्यान दिये थोड़े से समय में महाराज ने इतना कार्य किया जो हजारों इन्सान नहीं कर सकते। बुद्धि को चकित करने वाला ऐसा अनुपम कार्य केवलमात्र एक बाल ब्रह्मचारी ही कर सकता है।

आखिरी घातक जहर से ऋषि के शरीर पर फोड़े निकल आए डाक्टर आया देखकर हैरान रह गया। अंगुली मुंह में दबा ली इतने कष्ट में कौन इन्सान जिन्दा रह सकता है। परन्तु इस महान् कष्ट में भी आनंदकंद ऋषि दयानन्द मुस्करा रहे हैं। चेहरे से तेज और ओज बरस रहा है। वेद मन्त्रों का उच्चारण करते हुए 'ईश्वर तेरी इच्छा पूर्ण हो' कहकर इस फानि जिस्म को छोड़कर परमपिता परमात्मा की गोद में चले जाते हैं। ये आत्मिक शक्ति यह आत्मिक बल इसकी नींव भी तो ब्रह्मचर्य पर रखी हुई है। आत्मिक शक्ति के विकास के लिए ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करना अति आवश्यक है। वर्तमान समय के नौजवानों! ऋषि के जीवन से ब्रह्मचर्य की शिक्षा लो यदि अपने जीवन को सफल बनाना चाहते हो तो शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों को विकसित करना चाहते हो तो विलासता के जीवन को त्यागकर ब्रह्मचर्य का व्रत धारण करो।

मेरे स्वामी तूने हमपे बड़ा उपकार किया है,
सोई हुई इस कौम को बेदार किया है।
गो तुझको चमत्कारों में विश्वास नहीं था।
लेकिन जो किया है वह चमत्कार किया है।

महर्षि का लक्ष्य—

ये सिद्धान्त सृष्टि में शीघ्र ही सर्वत्र प्रवृत्त हो जावें जिससे मानवता को धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष का आनन्द प्राप्त हो।

अतः सभी आर्यजनों को चाहिये कि वे महर्षि के मत को अपने जीवन में उतारें, ताकि उनके सद्जीवन का सब अनुकरण करें।

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

बालावास में शराब का ठेका बन्द होने पर आर्य विजय महोत्सव

आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं की ओर से ग्राम बालावास जिला हिसार में १४ अप्रैल से शराब के ठेके पर धरना आरम्भ किया गया था। यह धरना निरन्तर ६ मास तक जारी रहा और धरना स्थल पर प्रतिदिन यज्ञ, सत्संग तथा शराब के विरुद्ध प्रचार किया गया। इस प्रकार शराब की बिक्री बन्द हो गई। हरयाणा के इतिहास में यह इस प्रकार का एक प्रथम उदाहरण है।

अन्तत: जनशक्ति के सामने शराब के ठेकेदार तथा सरकार ने ८ अक्तूबर को इस ग्राम से ठेका बन्द कर दिया। इसी उपलक्ष में बालावास में १४ अक्तूबर को आर्य विजय महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर हांसी, लाडवा, कंवारी, मुजादपुर, उमरा, सुलतानपुर, धमाना, भोजराज, गारनपुरा कलां, नूरां, नलवा, दुमेठा, डोभी, मुकलान, धीरणवास, आर्यनगर, दौराला, मामशाम, तोशाम, शाहपुर, सांगा, हिसार, दिल्ली, रोहतक, भिवानी, सिवानी आदि स्थानों से भारी संख्या में नरनारी उपस्थित हुए।

प्रात:काल यज्ञ के पश्चात् भगत रामेश्वरदास की अध्यक्षता में आर्य विजयोत्सव की कार्यवाही आरम्भ हुई। आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव, महात्मा चेतनदेव गुरुकुल धीरणवास, स्वामी अग्निदेव भीष्म, श्री बारूराम, श्री कोकचन्द शास्त्री, श्रीमती कौशल्या शास्त्री, स्वामी मेधानन्द, श्री ओमप्रकाश सिद्धान्त शिरोमणि, डा० मदनगोपाल, श्री सीताराम आर्य, श्री बरतलाल पुरोहित, श्री मनोराम, श्री हनुमान आर्य, प्रो० आर० एस० गुप्त आदि के व्याख्यान तथा सभा की भजन मण्डली पं० मुन्शीलाल, श्री धर्मचन्द के शराब विरोधी गीत हुए। मुख्य अतिथि के रूप में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह ने आर्य धरना के संयोजक श्री अत्तर सिंह आर्य तथा उनके सहयोगियों को इस शानदार सफलता पर बधाई देते हुए कहा कि यह राज्य शक्ति पर जनशक्ति की विजय है। हरयाणा सरकार करोड़ों रुपये की शराब की से बिक्री आय के लालच में जनता के चरित्र तथा धन को नष्ट कर रही है। शराब पर पाबन्दी लगा दी जाये तो शराब के सेवन से होने वाली हानियों से बचा जा सकता है। इस अवसर पर ग्राम पंचायत ने एक एकड़ भूमि आर्यसमाज मन्दिर बनाने के लिये दान दी है। समारोह के अन्त में प्रो० शेरसिंह ने स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की ओर से मन्दिर की आधार-शिला रखी।

प्रधानमन्त्री का कथन चंडीगढ़ पंजाब का ही है, अर्ध-सत्य है प्रो० शेरसिंह

समाचार पत्रों में प्रकाशित प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के उस वक्तव्य पर जिसमें उन्होंने कहा है कि 'चण्डीगढ़ तो पंजाब का ही है' पर अपनी प्रतिक्रिया करते हुये हरयाणा रक्षा वाहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने प्रधानमन्त्री के कथन को अर्ध सत्य कहा है। उन्होंने स्मरण करवाया है कि प्रधान मन्त्री ने चण्डीगढ के बदले अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का ऐवार्ड दिया था। अत: चण्डीगढ़ पंजाब को दिया जाता है तो अबोहर फाजिल्का पर हरयाणा का पूरा अधिकार है। आपने स्पष्ट किया कि शाह-कमीशन के फैसले के अनुसार चण्डीगढ़ को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर हरयाणा में शामिल करने का निर्णय था, परन्तु प्रधान मन्त्री ने अकाली नैता सन्त फतेहसिंह की जान बचाने के लिये ही शाह-कमीशन के निर्णय को बदलकर चण्डीगढ़ पंजाब को तथा अबोहर-फाजिल्का हरयाणा को देने का ऐवार्ड दिया था।

प्रो० शेरसिंह ने अपने वक्तव्य में प्रधानमन्त्री को सुझाव दिया है कि चण्डीगढ़ पंजाब को देने से पूर्व अबोहर फाजिल्का हरयाणा को सौंपा जाये, अन्यथा हरयाणा की जनता इस अन्याय को सहन नहीं करेगी। चण्डीगढ के नागरिक भी पंजाब में शामिल नहीं होना चाहते। इसी कारण आपका यह कथन कि 'चण्डीगढ़ पंजाब का ही है' अर्ध सत्य है। पूर्ण सत्य तो तब होगा जब अबोहर फाजिल्का भी हरयाणा का ही होगा।

प्रो० शेरसिंह ने सिखों के घावों पर मरहम लगाने की चर्चा करते हुये कहा है कि मरहम तो पंजाब के उन शहीद हिन्दू परिवारों को ही लगानी चाहिये जो उग्रवादी सिखों द्वारा गोलियों से भूने गये हैं। जब भी अकालियों के साथ कोई समझौता किया गया है, उसमें हरयाणा को ही घाटा रहा है। अकाली हरयाणा को सतलुज व्यास नदियों का पानी न देने के लिये बाधाएं डाल रहे हैं, बार बार भाखड़ा नहर को काटते हैं तथा हरयाणा के हितों को हानि पहुंचाने के लिये आन्दोलन कर रहे हैं। अत: हरयाणा की जनता को अपने हितों की रक्षा के लिये तैयार रहना होगा।

केदारसिंह आर्य कार्यालयाध्यक्ष

शोक प्रस्ताव

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने सभा कार्यालय में एक शोक सभा में स्व० चौधरी माड़ूसिंह भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री, सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान, स्वाधीनता आन्दोलन के अग्रणि सिपाही, शिक्षण संस्थाओं के स्तम्भ, आर्यसमाज के अग्रिम पंक्ति के कार्यकर्त्ता के अकस्मात् निधन पर श्रद्धांजलि और संवेदना व्यक्त की गई।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा शोकाकुल परिवार को इस महान् दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

श्री माड़ूसिंह जी के चले जाने से आर्यसमाज तथा हरयाणा सभा को जो क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

डा० धर्मपाल आर्य महामन्त्री

आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल का शोक प्रस्ताव

आर्यसमाज जवाहरनगर पलवल के सदस्यों ने १४-१०-८३ को साप्ताहिक सत्संग में श्री माड़ूसिंह जी मलिक के देहावसान पर निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया।

"यह सभा माड़ूसिंह जी मलिक भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री, उपप्रधान सार्वदेशिक सभा एवं हरयाणा सभा के देहावसान पर शोक प्रकट करती है और प्रभु से प्रार्थना करती है कि उनकी आत्मा को शान्ति प्राप्त हो।'

इस अवसर पर श्री आनन्द स्वरूप भाटिया तथा जयप्रकाश आर्य ने उनके द्वारा आर्यसमाज तथा देश के प्रति किये गए कार्यों पर प्रकाश डाला।

आनन्द स्वरूप भाटिया
मन्त्री आर्यसमाज जवाहर नगर पलवल

ऋषि-महिमा

प्रो० ओमकुमार आर्य जीन्द

कपिल कणाद् की यह भूमि भूली थी अपने ऋषियों को
यम नियम कहीं थे बचे नहीं सिर चढ़ा लिया था विषयों को
जाति पांति के घेरों में सड़ता थो जाति पड़ो हुई
रुढ़ि की बाधक दीवारें थीं कदम कदम पर खड़ी हुई।
'वेदों में इतिहास भरा' ढोंगी पण्डित यूँ कहते थे
जादू टोने बतला बतला जनता को ठगते रहते थे।
गैरों का दास बना भारत अपनी किस्मत को रोता था
जो चक्रवर्ती रहा कभी वह कायर बनकर सोता था।
दुनियां के नभ मण्डल पर अधर्म के बादल छाये थे
भटक रही थी मानवता जिस वक्त दयानन्द आए थे।
गुरु विरजानन्द के चरणों में योगी ने वह शिक्षा पाई
एक बार जमाना हिला दिया करामात अनूठी दिखलाई।
सुप्त तर्क फिर जाग उठा पाखण्ड धरा का चूर हुआ
सदियों से जो तम छाया था वह पलक झपकते दूर हुआ।
भूत प्रेतों की बस्ती आनन फानन में उजड़ गई
पोंगा पंथी सब सहम गये मतवादों की जड़ उखड़ गई।
जादू ब्रह्मचर्य शक्ति का दुनियां को फिर से दिखा दिया
भूले जिसको लोग वही समझा वेदार्थ बता दिया।
ईश्वर भक्त उस ऋषिवर ने देखो हुंकार लगा करके
रुण्डा मुण्डा चामुण्डा सब भागो दुम दबा करके।
खलखला उठी जंजीरें सब योगी का धक्का खा करके
जगती का मानव चमक उठा अमोक वेद का पा करके।
आर्यसमाज बना करके ऋषि ने कितना उपकार किया
मझधार में अटक रही नैया के योगी ने परले पार किया।
सब एक स्वर में बोल उठे भारत जग का वह कोना है
जिसकी तुलना में देखें तो समस्त विश्व एक बौना है।
भारत को उसका गौरव दे फिर वह सन्यासी चला गया
क्या घटित अचानक हुआ और इतिहास ठगा सा खड़ा रहा
उसको खोकर धरती गई अम्बर ने आंसू टपकाये
लगता था युग अनाथ हुआ कि कौन रास्ता बतलाये।

दयानन्द महिमा वर्णनम्:

आचार्य सुशीलचंद शास्त्री, दर्शनाचार्य विद्यानिधि
आर्यसमाज कृष्णनगर दिल्ली—५१

सुशास्त्रज्ञानमण्डितः तथैव वेद-पण्डितः।
कदापि नैव खण्डितो दयामयो जयी भवेत्॥
पुराणवादखण्डने तथैव वेदमण्डने।
स्वजीविते खोऽभवत् दयामयो जयी भवेत्॥
पवित्रराष्ट्रभाषया, स्ववाङ्मयप्रकाशकः।
स्वदेशजातिरक्षको दयामयो जयी भवेत्॥
विरुद्धसम्प्रदायिने प्रपञ्चके च मायिने।
सुबुद्धिदानदायको दयामयो जयी भवेत्॥
दयाकरः सुधाकरः प्रभाकरः सुपण्डितः।
समस्तविश्वप्रेरको दयामयो जयी भवेत्॥
न हि विचलितमार्गः प्राप्य प्रकृष्टलोभ—
मपि च सरलवक्ता वेदज्ञानस्य लोके।
अभवदिह न योगी देवतुल्यो युगेस्मिन्,
विजयतु! गुरुदेवो श्री दयानन्द स्वामी॥

ईश्वर की सत्ता

मान ले अनाड़ी, मान ले ईश्वर की सत्ता मान ले।
छोड़ दे इस 'मैं' को उसको तू कर्त्ता धर्त्ता जान ले॥
जब तू आता गर्भ से बाहर तब लेता है पहला प्राण।
कौन देव देता है शक्ति कान करें तेरे आंख और कान।
हृदय में प्रकाश है किसका किसे होता आत्म ज्ञान।
जो इन सबको शक्ति देता, उसको ही तू ब्रह्म जान।
ऐसा है वो अन्तर्यामी तेरे भी मन की बात जान ले।
मान ले……

मैं ईश्वर को जानता हूं कुछ देते ऐसे व्याख्यान।
है तो कहां? दिखाओ ईश्वर? कुछ मांगे ऐसे प्रमाण।
पूर्ण रूप से नहीं जानता समझो उसको है पहचान।
चंचल मन जब ठहर चुका हो, तब करना है अमृतपान।
अनेक बिन ये काया माटी, इससे अच्छा क्या दें प्रमाण।
मान ले………

ब्रह्म जो शक्ति खींच ले अपनी, अग्नि में प्रकाश नहीं।
क्या सुन लेगा कर्ण जहां पर वायु तक का सांस नहीं।
रहे जीव की कौन अवस्था जब तक हो जड़ पास नहीं।
कैसे जाने 'अज्ञेय' को जब तक बुद्धि पर विश्वास नहीं।
अज्ञेय पर कर विश्वास, ओ बन्दे, अहं को ठिकाने लाना ठान ले।
मान ले………

आज बना जीवन को 'मन्दिर' जिसमें ना कोई छेद हो।
'तप' की गारा, गारा, 'दम' की ईंटें, 'कर्म' की करनी सफेद हो।
'ब्रह्म विद्या' की छत के नीचे, चार दिवारी 'वेद' हो।
'सत्य पूजा' में 'मन' का पुजारी, रखता ना कोई भेद हो।
कह 'इन्द्रसिंह दलाल' मिलेगा आनन्द ओ३म् का नाम ले।
मान ले अनाड़ी मान ले ईश्वर की सत्ता मान ले।
छोड़ दे इस "मैं" को, उसको तू कर्त्ता धर्त्ता जान ले॥

संग्रहीता—अत्तरसिंह आर्य क्रान्तिकारी
प्रधान आर्यसमाज कंवारी

परोपकारी महर्षि दयानन्द सरस्वती

वैद्य चिरंजीलाल 'जीव' थम्बड़वी बराड़ा

दुनियां में धाक मच रही स्वामी के काम की।
दिन रात माला रट रहे सब उसके नाम की॥
सबके भले में दिन रात रहता था वह लगा।
चिन्ता नहीं थी कुछ उसे अपने आराम की॥
वह चाहता था सारा ही संसार हो सुखी।
तकलीफ जाए दूर हो-हर खास व आम की॥
गुमराह थे अन्धेरा था खाते थे ठोकरें।
माजूर देखने से थी आखें अवाम की॥
आ करके उसने रोशनी बख्शी जहान को।
होने लगी तमीज सबो सुबह व शाम की॥
दिखलाया "जीव" उसने गुमराहों को रास्ता।
बेड़ी लगाई पार कर हिम्मत तमाम को॥

आचार्य सुदर्शनदेव जी को देवरत्न की उपाधि

विश्ववेद परिषद् लखनऊ की ओर से सभा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी को उन द्वारा लिखित दयानन्द यजुर्वेद भाष्य भास्कर, दयानन्द ऋग्वेद भाष्य भास्कर, व्याकरणकारी का प्रकाश आदि वैदिक साहित्य में योगदान करने के उपलक्ष्य में वेदरत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया है।

सभा मन्त्री

निर्वाण उत्सव

कवि—बनवारीलाल 'शादां' वैद्य

दिवाली पर्व निर्वाण स्मारक।
मिलकर आओ याद मनालें॥
ऋषि दयानन्द का निधन हुआ था!
जीवन के गुण हम अपना लें॥

देश में जागृती लाने को।
ऋषि ने पीड़ा बहु झेली थी॥
पाखण्डी धूर्त जब लाखों थे।
ऋषिवर की जान अकेली थी॥

योग ध्यान था मन में ऋषि के।
मस्तक ऋषि के भरा था ज्ञान॥
स्वयंग सभी घर बार को छोड़ा।
प्रभु की खोज लगाया ध्यान॥

आर्यसमाज स्थापित करके।
ऋषि ने बहुत उपकार किया॥
आर्य बनाओ सारे जग को।
वेदों का बहुत प्रचार किया॥

कुल फूट से झुलसा भारत।
दीखे नहीं थी हरियाली॥
लता पुष्प कलियों को सींचा।
भारत देश का बनकर माली॥

सत्यार्थप्रकाश लिखा लासानी।
सत्य असत्य को कर बखानी॥
ऋषि का यह अनमोल ग्रन्थ है।
पढ़ता जो जन बनता ज्ञानी॥

लाखों करोड़ों दुःखी जनों का।
दर्द था ऋषिवर के मन में॥
ईट खाई जहर पीया पर,
हंसते रहे थे वो मुश्किल में॥

दिवाली के दिन यह करें प्रतिज्ञा।
ऋषि सन्देश का राखें ध्यान॥
"शादां" तुम्हें सुनाने होंगे।
ऋषिवर के फिर गौरव गान॥

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

हरयाणा सरकार द्वारा रजि नं० 23807/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४५ सृष्टि संवत् १,९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४४ २८ अक्तूबर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

हरयाणा दिवस अंक

हरयाणा शब्द वेदमूलक है

स्वर्गीय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती शास्त्री

१—सर्वेषां तु स नामानि कर्माणि च पृथक्-पृथक्।
वेदशब्देभ्य एवादौ पृथक्संस्थाश्च निर्ममे ॥
(मनुस्मृति: प्रथमोऽध्याय: २१श्लोक:)

भावार्थ—(स:) परमात्मा ने (सर्वेषाम्) समस्त पदार्थों के (नामानि) नाम=संज्ञाएं (च) और (कर्माणि) उनके कर्त्तव्य=कार्य (आदौ) प्रत्येक कल्प-सृष्टि के आरम्भ में सदा (वेदशब्देभ्य:) वेद के शब्दों से (एव) ही (निर्ममे) निर्माण किया=देता है=रखता है (च) और (संस्था:) संस्थान—जीवों और भौतिक पदार्थों के शरीर अवयव आदि तथा आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथिवी आदि के आकार आदि का भी (पृथक्) अलग अलग रूपों में (निर्ममे) बनाता है। सभी चेतन पदार्थों के कर्मों के अनुसार पाप-पुण्य रूप में भौतिक पदार्थों के द्वारा भोग कराता है।

२—हरयाण: संज्ञा तथा सीमा—

"हरयाणे" ऋग्वेद मण्डल ८, सूक्त २५, मन्त्र २२

ऋज्रमुक्षण्यायने रजतं हरयाणे। रथं युक्तमसनाम सुषामणि ॥

३—निरुक्त नैगम काण्ड में अ० ५ पा० ३, खण्ड १५ में ५६ संख्या लिखा है—

"हरयाणो हरमाणयान:" गमनशीलयान।।

४—उपर्युक्त मन्त्रार्थ:—ऋज्रम् उक्षण्यायने—उक्षाणो वृषभादय: कृषिकर्मोपयोगिन: पशवो यान्ति यस्मिन् भूखण्डे स उक्षण्यायन:, तस्मिन् हरयाणे हरमाणयानि हरमाणानां गतिमतां यानि गमने स्थाने सुषामणि सुशोभनो गमनशीलानां जनपदवादीनाम् यस्मिन्-तस्मिन् भूप्रदेशे युक्तं रथं रथादियानम् ऋजुगामिनम् रजत धवलं रजतवत् शुभ्रम् श्वेतवर्णम् असनाम् संभजेमहि ॥ —लेखक

५—भावार्थ—जिस प्रकार (उक्षण्यायने) बलवान् बैल वा अश्व से जाने योग्य, यत्र (हरयाणे) हरणशील वेगवान् अश्वों या मन्त्रों से जाने योग्य (सु-सामनि) उत्तम समभूमियुक्त मार्गों में (ऋज्रम्) ऋजु बैल से जाने वाले (रजतम्) सुन्दर, (युक्तम्) अश्वों से जुते (रथम्) रथ को (असनाम) उपयोग करते हैं।

इसी प्रकार हम लोग (सु-सामनि) सबके प्रति समान भाव से रहने वाले, सुखप्रद, (उक्षण्यायने) बलवान् सुख-सेचक पुरुषों के भी आश्रय स्थान (हरयाणे) दु:खों के हरने वाले, प्रभु के अधीन हम (युक्तम्) इन्द्रियादि अश्वों से युक्त, रथवत् (ऋज्रम्) ऋजु धर्म मार्ग में चलने वाले इस देह को (असनाम) प्राप्त करें और उसका सुख भोग करें।

६—अयं ते शर्यणावति सुषोमायामधि प्रिय:।
आर्जीकीये मदिन्तम:॥ ऋ० मं० ८, सू० ६४, मं० ११

अर्थ—(अयम्) यह तेरा अभिषेक है राजन् (आर्जीकीये) ऋजु सरल धर्ममार्ग में वर्तमान (शर्यणावति) शर अर्थात् बाण धनुषादि शस्त्रास्त्र में कुशल जनों से समृद्ध जनपद में (सु-सोमायाम्) उत्तम ऐश्वर्ययुक्त या जल अन्न से समृद्ध भूमि के ऊपर (प्रिय:) अतिप्रिय और (मदिन्तम:) अतिहर्षजनक हो ॥※

उपरोक्त दोनों मन्त्रों के अर्थ श्री पण्डित जयदेव शर्मा विद्यालंकार मीमांसा तीर्थ ने किए हैं।

७—हरयाणा और वेद में नदियों के नाम—

इमं मे गंगे यमुने सरस्वति शुतुद्रि स्तोमं सचता परुष्ण्या।
असिक्न्या मरुद्वृधे वितस्तयार्जीकीये शृणुह्या सुषोमया ॥
ऋ० मं० १०, सू० ७५, मं० ५

इस मन्त्र को निरुक्त में यास्क मुनि ने उद्धृत किया है। उससे प्रतीत होता है कि पर्वत से आकर समभूमि में बहने वाली सरस्वती नदी को वेद नाम से कुरुक्षेत्र के पास नाम दिया। यहां सरस्वती नदी के तट पर ऋषियों के आश्रम थे। वेदाध्ययन और यज्ञ होते थे। दूर दूर से क्षत्रिय राजा यहां आते थे। सौराष्ट्र से एक राजा आये और इस आश्रम से एक सहस्र सामवेदी ब्राह्मणों को अपने राज्य में ले जाकर बसाया। ये उदीची दिशा से आने के कारण औदोच्य कहलाए। इन्हीं में महर्षि दयानन्द सरस्वती के पूर्वज भी वहां पहुँचे थे। वे सामवेदी ब्राह्मण थे परन्तु बालकपन में मूलशङ्कर (ऋषि का पूर्व नाम) को यजुर्वेद पढ़ाया गया था। सौराष्ट्र गुजरात में मेहसाना एक बड़ा क्षेत्र है। वहां के एक लोकसभा के सदस्य ने मुझे लोकसभा में कहा था कि हमारे पूर्वज हरयाणा से आये थे। उनको यहां 'पटेल' कहते हैं। हरयाणा में उनको जमींदार कहा जाता है। पूज्य स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज ने भी यह बात हमें सुनाई थी। हरयाणा का विस्तार जानने के लिये महाभारत ग्रन्थ के भिन्न भिन्न पर्वों को पढ़ना चाहिये।

※ सरल भूमि वाले प्रदेश में उत्तम जलयुक्त शरकाण्ड वाली भूमि में उत्पन्न सोमलता का रस अति आह्लादजनक, पौष्टिक, मनभावना होता है। यह वेद ने स्पष्ट कहा। आर्जीकीया नदी विपाशा नाम से प्रसिद्ध है ऐसा यास्क का मत है। सायण के मत से कुरुक्षेत्र के दक्षिणार्ध भाग में वह स्थान है। प्राय: जहां भी हिमवती नदियां पर्वतों से निकल कर समभूमि भाग में आती हैं वहां वेद के बतलाये लक्षण पाये जाते हैं। उन्हीं स्थलों पर ब्राह्मी गुणवती औषधियां प्रचुर मात्रा में होती हैं। सोम का भी उन स्थानों में पाया जाना सम्भव है।

हरयाणा दिवस पर बेरी में सर्वखाप पंचायत

विवाह शादियों पर कम से कम खर्च करने तथा शराब के सेवन पर पाबन्दी लगाने के लिए १ नवम्बर ८४ को प्रातः १० बजे बेरी जिला रोहतक में सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का विशाल आयोजन अन्तर्राष्ट्रीय ख्याती प्राप्त आर्य संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में हो रहा है।

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की भजन मण्डलियां कुंवर तेजपाल तथा पं० ईश्वरसिंह तूफान के भी इन बुराइयों को दूर करने के लिए भजन होंगे।

हमारी पूर्वी देशों की यात्रा

ब्र० रामवीर शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

मैं बाल्यकाल से ही भ्रमण में रुचि रखता हूं। जब मैं चौथी पांचवी श्रेणी में पढ़ता था, उस समय का मुझे स्मरण है कि कोई भी उत्सव चाहे वह राजनैतिक हो या धार्मिक अथवा अन्य किसी भी प्रकार का हो उसकी सूचना छोटे बड़े समाचार पत्रों से, पोस्टरों से अथवा गांव में सूचना देने में जिन साधनों का उपयोग होता है उनके द्वारा सूचना मिलते ही प्रायः पैदल ही जाता था, मुझे अच्छी तरह याद है कि कई बार रोहतक, सांपला, खरखोदा तथा एक बार सोनीपत भी अपने ग्राम कन्साला से पैदल ही कई उत्सवों को देखने गया था। वह बचपन की प्रवृत्ति आज भी वैसी ही है, सौभाग्य से मुझे ऐसे ही भ्रमण शील आर्य समाज के सर्वोच्च नेता गुरुकुल झज्जर के आचार्य पूज्य पाद श्री स्वामी ओमानन्द जी महाराज का संसर्ग मिला, जो कि निरन्तर वर्ष भर दिन रात भारत के प्रत्येक भाग में आर्यसमाज के प्रचारार्थ भ्रमण करते रहते हैं। जब से मैं गुरुकुल में आया हूं, तभी से स्वामी जी महाराज के स्नेही सानिध्य में निरन्तर १२ वर्ष से अपने देश के विभिन्न प्रान्तों में भ्रमण करता रहा, विविध यानों की सवारी की केवल एक ही यान वायुयान की सवारी शेष थी, हमारे गुरुकुल के ऊपर से दिल्ली से पश्चिम की ओर जाने वाले वायुयानों का मार्ग है, दिन में बहुत बार जहाजों का आना जाना देखते हैं तो इच्छा होती थी कि इसकी भी सवारी करनी चाहिए। जब कभी हवाई अड्डे के पास से होकर आना जाना होता तो उनकी ओर ध्यान से देखता, कैसे उड़ते हैं कैसे उतरते हैं। श्री स्वामी जी महाराज देखते तो हमें टोकते भी थे, कई बार प्रेम से कहते कि इसमें भी अपने बेटे को बिठाऊंगा। वह इच्छा भी स्वामी जी महाराज ने हमारी पूर्ण कर ही दी।

गुरुकुल में आने के बाद कभी एक श्लोक पढ़ा था—

विद्यावित्तं शिल्पं तावत् नाप्नोति मानवः सम्यक्।
यावत् व्रजति न भूमौ देशाद्देशान्तरम् हृष्टः॥

अर्थात्—विद्या, धन और शिल्प को मनुष्य तब तक अच्छी तरह नहीं प्राप्त कर सकता, जब तब कि वह प्रसन्नचित्त होकर देश देशान्तर का भ्रमण न कर ले। यह छोटा-सा श्लोक अपने में गूढ़ रहस्यों को छिपाये हुए है। हमारे पूर्वजों का चक्रवर्ती राज्य रहा है, सारा संसार इस भारत को विद्या और शिल्प में गुरु मानता तथा संसार इसे सोने की चिड़िया कहकर पुकारता था, पुराने समय में जितने भी विदेशी पर्यटक आये, उन्होंने अपने यात्रा के वृतान्त लिखे हैं, उन सभी ने भारत-वर्ष की बड़ी प्रशंसा की है। आधुनिक समय में भी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज जिन्होंने प्रायः विश्व का भ्रमण किसी विशेष उद्देश्य से किया है, उनके द्वारा लिखे गये यात्रा विवरणों ने भी मुझे बहुत आकृष्ट किया, उनके पढ़ने से जहां ज्ञानवृद्धि होती है वहां कुछ मनोरंजन भी होता है और कुछ कर दिखाने की भावना भी उत्पन्न होती है।

विदेश यात्रा को लेकर कई बार साथियों में चर्चा होती कई बार पूज्य स्वामी जी महाराज से भी चर्चा हुई। महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर के पश्चात् नैरोबी (अफ्रीका) से निमन्त्रण आया उनसे पत्र व्यवहार होता रहा। उन्होंने टिकट के लिए पासपोर्ट नम्बर नाम, पते आदि भी मंगवा लिये, किन्तु जो व्यक्ति हमें बुला रहा था उसका कहीं दूर स्थानान्तरण हो गया अतः वह कार्यक्रम स्थगित हो गया। उसके पश्चात् श्री स्वामी जी के शिष्य ने आस्ट्रेलिया में बुलाना चाहा, उससे भी पत्र व्यवहार चलता रहा। इसी मध्य डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने कुछ पूर्वी देशों में हिन्दू लोगों से सम्पर्क करके उन्हें अपनी भावनाओं से अवगत कराकर आर्यसमाज बनाने के उद्देश्य से एक सामूहिक यात्रा की चर्चा की, वह पूज्य स्वामी जी महाराज को अच्छी लगी। अतः और सब चिन्ताएं छोड़कर इसी यात्रा में सम्मिलित होना स्वीकार किया, इस वार्ता से डा० साहब बहुत प्रसन्न हुए। जो इतिहास में रुचि रखने वाले लगभग समानवय वाले व्यक्ति जिनका उद्देश्य हो वैदिक धर्म का प्रचार है, उनके लिए इससे अच्छा और क्या संयोग होगा। ऊहापोह के पश्चात् कार्यक्रम को अन्तिम रूप दे दिया गया और पूज्य स्वामी जी महाराज ने अपने तथा मेरे भी मार्ग व्यय आदि की निश्चित राशि २५२००) रुपये डा० सत्यकेतु जी के पास जमा करा दिये। हमारी इस यात्रा का जब श्री विरजानन्द जी को पता लगा तो उन्होंने भी इस यात्रा में सम्मिलित होने के लिए सब आवश्यक कार्यवाही कर ली, उनकी विदेश यात्रा करने की तीव्र इच्छा थी, अतः श्री स्वामी जी महाराज ने उन्हें भी बड़े प्रेम से अपने साथ रखा।

मैं भी विदेश यात्रा के स्वप्न को अपने अन्तकरण में संजोये हुये था, इस निश्चय से बहुत प्रसन्न हुआ, और उस अव्यक्त प्रसन्नता को अपने ही भीतर समाये हुए न चाहते हुए भी बड़ी प्रसन्नता से स्वामी जी महाराज के साथ दिल्ली की सड़कों पर घूमता रहा। पास पोर्ट आदि सभी आवश्यक कार्यवाहियां करके हम गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली में ही रात्रि में रहे। फिर भी कुछ अर्थ जुटाने की इच्छा से तथा 'दयानन्द गाली पुराण' जो कि एक जैनी धूर्त ने लिखी है। उसका उत्तर युक्ति पूर्वक एक वैदिक विद्वान् श्री शिवपूजन जी कुशवाह से लिखवाकर उसे छापने हेतु दिया तथा उस पर होने वाले व्यय का भी विविध व्यक्तियों से धन संग्रह किया। ये सब प्रबन्ध करके हम अपनी यात्रा की पूर्ण तैयारी गुरुकुल झज्जर से करके बीस सितम्बर को दिल्ली आ गये, २१ को हमारी उड़ान थी, डा० सत्यकेतु जी से मिले तो उन्होंने बताया की २१ और २२ की रात्रि में २. १०. पर हमारी उड़ान है, हमें ११ बजे पालम हवाई अड्डे पर पहुंच जाना चाहिये। सब जानकारी लेकर हम नरेला कन्या गुरुकुल में आ गये। वहां पता चला कि पूज्या आचार्या सुमित्रा जी रुग्ण हैं और वे पानीपत के नरसिंह हस्पताल में हैं। समय का अभाव होते हुए भी १२ बजे लोधी होटल में जहां पर सभी यात्रियों को आवश्यक जानकारी दी गई थी वहां से निवृत होकर पानीपत पहुंचे। उनसे मिलकर नरेला में आये और वहां से बहनों द्वारा बनाई गई खाद्यसामग्री को लेकर नित्यकर्मों से निवृत्त हो हम साढे दस बजे ही पालम हवाई अड्डे पर पहुँच गये, जहां पर श्री विरजानन्द जी और यशपाल जी शास्त्री हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे। शनैःशनैः ११ बजे हम विदेश जाने वाले सभी यात्री एकत्रित हो गये।

क्रमशः

सम्पादकीयः-

हरयाणा दिवस और हमारा कर्त्तव्य

१ नवम्बर को हरयाणा दिवस धूमधाम से मनाया जाता है। राजकीय स्तर पर प्रत्येक जिले में समारोह आयोजित किये जाते हैं।

प्राचीन काल से भारत के मानचित्र में हरयाणा प्रदेश किसी न किसी रूप में रहा है। इसकी सीमा वर्तमान हरयाणा के अतिरिक्त पश्चिमी उत्तर प्रदेश की मेरठ तथा आगरा कमिश्नरियाँ, राजस्थान का पूर्वी भाग तथा पंजाब में लुधियाना तक का क्षेत्र हरयाणा का भाग रहा है। इस सारे प्रदेश की एक भाषा तथा एक संस्कृति खान-पान व रहन सहन सांझा था। सन् १८५७ के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में यहां की वीर जनता ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत करने में पूरी शक्ति के साथ भाग लिया था। इसी कारण इसके संगठन को कमजोर करने के लिये अंग्रेज सरकार ने इसकी जनता को भिन्न भिन्न प्रदेशों में सम्मिलित कर दिया।

वर्तमान हरयाणा सन् १९६६ तक पंजाब का एक भाग रहा। पंजाब सरकार हरयाणा क्षेत्र के साथ भेदभाव रखती थी और विकास के कार्यों के लिए बजट का ७५ प्रतिशत से भी अधिक धन पंजाब में ही खर्च किया जाता था। इस भेदभाव तथा पक्षपात को दूर करने के लिए हरयाणा के नेताओं ने जिनमें स्वामी ओमानन्द सरस्वती, पं० जगदेव सिंह सिद्धान्ती, पं० रघुवीरसिंह शास्त्री, चौ० लहरीसिंह, चौ० देवीलाल प्रो० शेरसिंह, ला० मूलचन्द जैन तथा पं० श्रीराम शर्मा आदि प्रमुख थे, हरयाणा प्रदेश पृथक् बनवाने के लिए संघर्ष किया। उसके फल-स्वरूप सन् १९६६ में हरयाणा राज्य पुनः वर्तमान रूप में संसार के सामने आ गया। थोड़े ही दिनों में इसका विकास होना आरम्भ हो गया। प्रत्येक क्षेत्र में नहरों का पानी, बिजली, सड़क, उद्योग तथा शिक्षण संस्थाओं का जाल सा बिछ गया।

पंजाब हरयाणा का विभाजन होते समय हरयाणा को जितना पानी तथा बिजली मिलनी चाहिये थी, उतनी नहीं मिल सकी। इसके लिए अब भी हरयाणा सरकार ने अपना अधिकार लेने के लिए भारत सरकार से मांग कर रखी है। पंजाब के उग्रवादी अकालियों ने सतलुज व्यास लिंक नहर की खुदाई को रोकने के लिए आन्दोलन का मार्ग अपना रखा है। उन्होंने हरयाणा की जनता को हानि पहुंचाने के लिये भाखड़ा नहर को दोबारा काटकर सिद्ध कर दिया है कि वे पाकिस्तान को तो मुफ्त में पानी दे सकते हैं परन्तु हरयाणा जो इस नहर के निर्माण कार्य में करोड़ों रुपया पंजाब को दे चुका है, की धरती को प्यासा रखना चाहते हैं।

अकाली नेता सन्त फतेहसिंह ने चण्डीगढ को पंजाब में सम्मिलित करने के लिये आमरण अनशन किया था। उसकी जान बचाने तथा हरयाणा पंजाब में होने वाले संघर्ष को टालने के लिए प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने सन् १९७० में शाह-कमीशन की रिपोर्ट को रद्द करके चण्डीगढ पंजाब को तथा इसके बदले हिन्दी भाषी क्षेत्र अबोहर फाजिल्का हरयाणा को देने का ऐवार्ड दिया था। उस समय तो अपने सन्त की जान बचने पर प्रधान मन्त्री के ऐवार्ड पर पंजाब में दीपावली मनाई गई परन्तु थोड़े दिनों के बाद अकालियों के मन में पाप आ गया। चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का को हरयाणा को सौंपने का विरोध करने लग गये। अकालियों ने पंजाब में हिंसक आन्दोलन प्रारम्भ कर दिया। भारत सरकार ने कई बार उनके साथ समझौता करने के लिये वार्ता की। परन्तु वे अपनी अनुचित तथा राष्ट्रद्रोही मांगों पर अड़े हुये हैं। चण्डीगढ़ के बदले अबोहर फाजिल्का तो देना दूर रहा, उन्होंने हरयाणा के सिरसा, अम्बाला तथा करनाल के कुछ भागों पर भी अपना दावा कर दिया।

हरयाणा की जनता सदा से ही शान्ति प्रिय रही है, परन्तु उग्रवादी अकाली इसका अनुचित लाभ उठाना चाहते हैं। अब समय आ गया है जबकि हमें अपने उचित अधिकारों की प्राप्ति के लिए जागरूक होना होगा। शाह-कमीशन ने चण्डीगढ़ तथा खरड तहसील को हिन्दी भाषी क्षेत्र मानकर इसे हरयाणा में मिलाने का निर्णय किया था। चण्डीगढ की जनता ने भी पंजाब में सम्मिलित होने से इन्कार कर दिया है। प्रधान मन्त्री के ऐवार्ड को अकाली स्वीकार नहीं करते तो हरयाणावासियों को भी अबोहर फाजिल्का तथा चण्डीगढ पर अपना अधिकार नहीं छोड़ना चाहिये। अबोहर फाजिल्का की हिन्दी भाषी जनता भी पंजाब में नहीं रहना चाहती। परन्तु अकाली दोनों स्थानों पर धींगा मस्ती करने पर उतारू हैं। वे भूल रहे हैं हरयाणा के वीर जवान उनसे कमजोर नहीं हैं। उन्हें पता होना चाहिए कि मांसाहारी से शाकाहारी जवान अधिक शक्तिशाली होता है। जब तक वह शान्त रहता है तब तक ही गीदड़ भभकियां दी जाती हैं परन्तु वास्तविक रूप में आने पर उसका मुकाबला करना कठिन हो जाता है। अतः हरयाणा के वीर समय आने पर अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए तैयार रहें। हमने हरयाणा इसलिए नहीं बनाया था कि हमारे अधिकारों पर राष्ट्रद्रोही अकाली छापा मारें। हमारे हिस्से के पानी तथा बिजलीपर अपना अधिकार जमावें और हमारी धरती पानी की बूंद के लिये तरसती रहे।

हरयाणा दिवस पर हरयाणा में रहने वाले प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है कि वह अपने प्रदेश को पुनः दूध दही का खजाना बनाने के लिये अपने अधिकारों की प्राप्ति के लिए संघर्ष करें।

हरयाणा प्रदेश प्राचीन काल से ही वैदिक संस्कृति का केन्द्र रहा है। अतः यहां मांस शराब की बिक्री बन्द होनी चाहिए। दोनों के सेवन करने से बुद्धि तथा शक्ति नष्ट होती है। हमें विवाह शादियों के अवसर पर फिजूल खर्ची बन्द करनी चाहिए। ग्रामों में सर्वखाप की पंचायतें करके विवाहों में अधिक खर्च करने वालों तथा शराब आदि का सेवन करने वालों पर पाबन्दी लगाने के नियम लागू करने चाहिएं।

आज हरयाणा दिवस पर अपने प्रदेश को पुनः खुशहाल तथा वैदिक संस्कृति का केन्द्र बनाने के लिए अपने संगठन को सुदृढ़ करने पर विचार करना चाहिए। खुशहाली तभी आयेगी जबकि हरयाणा की चप्पा चप्पा भूमि को पानी मिलेगा और फिजूल खर्च को कम करके अन्य कार्यों में धन का सदुपयोग किया जायेगा।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर सम्मेलन

हरयाणा प्रान्तीय आर्यवीर दल का वार्षिक सम्मेलन ३, ४ नवम्बर ८४ को आर्यसमाज भीमनगर गुड़गांव के प्रांगण में धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर स्वामी जीवनानन्द जी सरस्वती, श्री ओमप्रकाश त्यागी, प्रो० उत्तमचन्द शरर, पं० बाल दिवाकर हंस, स० कुशतारसिंह जी, डा० रामप्रकाश जी, श्री वेदराज बहल, प्रो० रूपरेखा जी, डा० गणेशदास जी, पंडित क्षितीश कुमार वेदालंकार, प्रो० राम विचार जी, पं० सत्यप्रिय शास्त्री, प्रो० ओमकुमार आर्य, डा० आनन्द सुमन, लाला रामगोपाल शालवाले, डा० वेदप्रताप वैदिक, श्री बीरूराम आर्य तथा महेन्द्रपाल भजनोपदेशक श्री कांशीराम कन्नड़ की भजन मण्डली कार्यक्रम है।

वेदप्रकाश आर्य
मन्त्री

महर्षि दयानन्द पर हरयाणा का प्रभाव

(डा० महावीर दिल्ली विश्वविद्यालय)

महर्षि दयानन्द जन्म से औदीच्य ब्राह्मण थे। औदीच्य ब्राह्मण उत्तर भारत के रहने वाले थे जो बाद में दक्षिण भारत में गये। ऋषि दयानन्द के पूर्वज भी उत्तर भारत से गुजरात गये थे। उत्तर भारत में औदीच्य ब्राह्मण सरस्वती नदी के आस पास रहते थे जो कुरुक्षेत्र में है। कुरुक्षेत्र क्योंकि हरयाणा में है अतः औदीच्य ब्राह्मण अथवा ऋषि दयानन्द के पूर्वज भी मूलतः हरयाणवी थे।

हरयाणा का ऋषि दयानन्द के साथ यह रक्त का सम्बन्ध उनकी चारित्रिक विशेषताओं में विशेष रूप से उभर कर प्रकट हुआ। हरयाणा के लोगों की निर्भीकता, बिना लाग लपेट खरी खरी सुनाना और अपनी बात (सच्ची) पर अडिग रहने की विशेषतायें विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। ऋषि दयानन्द में ये विशेषताये कूट कूट कर भरी हुई थीं।

बचपन में ही शिवलिङ्ग पर चूहा चढ़ने की घटना देखकर मूलशंकर के दिल में जो अश्रद्धा पैदा हुई, उसे उनके पिता लाख यत्न करने पर भी न रोक सके। सच्चाई की खोज के लिये माता पिता की भी परवाह न की। कुलपरम्परागत रूढियों और अन्धविश्वासियों को एकदम तोड़ दिया।

कार्यक्षेत्र में उतरकर दुनियां भर का अकेले ऋषि दयानन्द ने मुकाबला किया। सच्चाई पर अडिग रहकर सबको खरी खरी सुनाई, सब झूठों की पोल खोली, किसी को भी नहीं बख्शा।

हरयाणा की एक और विशेषता है और वह यह है सहज तर्कभाव जन्मना था। उनका सारा जीवन इसी सहज तर्कभाव पर आधारित है। इसी तर्कभाव के आधार पर उन्होंने एक के बाद एक संसार की सब बातों को कसोटी पर रखा और झूठा सिद्ध होने पर उसी का खण्डन किया।

हरयाणा के लोगों में यह सहज तर्कभाव अनायास सुलभ हैं। यहां के लोगों पर पोपलीला, मिथ्या बहकावा और ढोंग जम ही नहीं सकता। अतः यहां के लोग अनायास ही आर्यसमाजी हैं और आर्यसमाज के लिए हरयाणा एक खुला और निष्कण्टक मैदान है जहां आर्यसमाज बिना किसी विशेष प्रयास के फलीभूत हो सकता है। महर्षि दयानन्द हरयाणा की इस विशेषता पर अत्यन्त मुग्ध थे। यहां के जाटों की सहज तार्किक बुद्धि को देखकर वे लट्टू हो गये और उन्हीं को संसार के सामने कपोल कल्पनाओं का भण्डा फोड़ करने के लिये आदर्श के रूप में रखा।

सत्यार्थप्रकाश के ११ वें समुल्लास में श्राद्ध आदि का खण्डन करते हुये उन्होंने एक जाट का उदाहरण दिया है। जाट के घर में एक दुधारू गाय थी जिस पर पोप की नजर थी। जाट के पिता की मृत्यु के समय पोप ने जाट से यह कहकर गाय दान में ले ली कि गाय का दान कर दो ताकि तेरे पिता गाय की पूंछ पकड़कर वैतरणी नदी से पार उतर जायें। मृत्यु के चौदहवें दिन जाट पोप के घर पहुंचा तो देखा कि गाय पोप के घर है और पोप गाय को दुह रहा है। दूध की बाल्टी भरकर जब पोप उसे लेकर अपने घर के अन्दर जाने लगा तो जाट ने दूध की भरी बाल्टी को वहीं रखवाकर पोप से प्रश्नोत्तर किये। जाट ने जो प्रश्न पोप से इस विषय में किये वे जाट की उस सहज बुद्धि का परिचय देते हैं जो एक दार्शनिक या वकील में होती है जो दूध का दूध और पानी का पानी छानता है। जाट के प्रश्नों से पोप निरुत्तर हो गया और जाट अपनी गाय और दूध की भरी बाल्टी अपने घर वापस ले आया।

ऋषि दयानन्द ने यह घटना इतने भावविभोर होकर लिखी है जैसे उनके सब सुधार कार्यों का रहस्य इसी घटना में छुपा हो। हरयाणा के जाट का सही चित्रण इससे बढकर नहीं हो सकता जो मानो ऋषि दयानन्द के स्वप्नों का मूर्तरूप हो।

महर्षि दयानन्द हरयाणा की संस्कृति से इतने प्रभावित हुये कि इस घटना को देते समय ऋषि दयानन्द ने ठेठ भाषा हरयाणा की भाषा व लहजे में ही लिख दिया। इस घटना में स्वामी दयानन्द ने और सब जगह जाट के साथ जी शब्द का प्रयोग किया है किन्तु जब जाट ने पोप को गाय दी उस बात को लिखते समय ऋषि दयानन्द ने सीधे हरयाणा के लहजे में लिखा है जाट ने गाय दे दी। यहां की लट्ठ मार भाषा को भी ऋषि दयानन्द पोपलीलाओं के खण्डन के लिये एक सशक्त साधन समझते थे।

इस घटना को एक आदर्श के रूप में देते हुए ऋषि दयानन्द ने सारे संसार को चैलेञ्ज किया है कि यदि ऐसे जाट संसार में हो जावें तो झूठी पोपलीलाएं संसार में न पनपें। ऋषि दयानन्द की यह समूचे हरयाणा और यहां की जाट जाति को ऐसी श्रद्धांजलि है जो इसे तब तक अमर रखेगी जब तक संसार में सत्यार्थप्रकाश और सच्चाई है। जाट जाति के चरित्र को चार चांद लगाकर संसार के सामने रखा। क्या यह ऋषि दयानन्द का जाटों पर कम अहसान है। शूद्रों के समान माने जाने वाले जाटों को तर्क के क्षेत्र में ब्राह्मणों का गुरु बनाकर रखना; यह ऋषि दयानन्द की समूचे हरयाणा को अमर श्रद्धांजलि है।

आवश्यकता

आर्यसमाज, झज्जर मार्ग को एक प्रचारक पुरोहित की आवश्यकता है, जिसका मुख्य आर्य समाज का संचालन, जन-सम्पर्क और प्रचार कार्य होगा। वेतनमान ४२०/६००। कार्य के अनुसार अधिक राशि संभव आवास आदि निःशुल्क। पत्र-व्यवहार करें — मन्त्री आर्यसमाज

झज्जर मार्ग बहादुरगढ़ शहर जिला रोहतक

आकाशवाणी दिल्ली से सुनिये

४ नवम्बर रविवार को रात्रि ८-१५ बजे आकाशवाणी के दिल्ली 'ए' केन्द्र से प्रो० जयदेव आर्य की १४ मिनट की वार्ता प्रसारित होगी— स्वराज्य मन्त्र के प्रथम उद्गाता—महर्षि दयानन्द सरस्वती।

आर्यसमाज महम में ऋषि निर्वाण दिवस

आर्यसमाज महम जिला रोहतक में आचार्य राजकुमार शास्त्री एम० ए० के प्रयत्न से २३-२४ अक्तूबर को ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। प्रातः नगर में प्रभातफेरी, यज्ञ, उपदेश होता रहा। इसी प्रकार रात्रि को श्री प० तेजपाल जी ने ऋषि दयानन्द के जीवन पर प्रभावशाली भजनों द्वारा प्रकाश डाला। प्रभातफेरी को सफल करने के लिये आर्यसमाज के मन्त्री श्री रतनप्रकाश आर्य ने अपने सभी साथियों के साथ बहुत परिश्रम किया। समाज के प्रधान वैद्य बलराज जी ने अपने ग्राम बडाली में भी प्रचार करवाया। इस अवसर पर सभा को २५०) वेदप्रचारार्थ भेंट किये गये।

मन्त्री आर्यसमाज

आर्यसमाज यमुनानगर में वेदसप्ताह

१९ से २४ अक्तूबर तक आर्यसमाज रेलवे रोड यमुनानगर जिला अम्बाला में सभा के उपदेशक पं० सुरेशकुमार शास्त्री के वेद प्रवचन तथा पं० विद्याभूषण, शेरसिंह के भजन हुए। सभा को वेद प्रचारार्थ ७००) प्राप्त हुए।

आर्यसमाज जगाधरी में रामायण सप्ताह

आर्यसमाज जगाधरी जिला अम्बाला में वेद प्रचार सप्ताह १५ से २१ अक्तूबर तक धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर आचार्य योगेश्वरदत्त जी द्वारा रामायण की कथा तथा पं० शेरसिंह जी के मनोहर भजन हुए। आर्यसमाज की ओर से सभा को ३०१) रु० दान दिया गया।

मन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

टंकारा में १६, १७, १८ फरवरी ८५ को रजत जयन्ती समारोह व भव्य ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के ट्रस्टियों की एक विशेष बैठक २ अक्तूबर ८४ को प्रातः ११ बजे आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में श्री रत्नचन्द जी सूद कार्यकर्त्ता प्रधान-टंकारा ट्रस्ट की अध्यक्षता में हुई, जिसमें निश्चय हुआ कि हर वर्ष की भांति ऋषि मेला १६, १७, १८ फरवरी ८५ को महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टंकारा में मनाया जाये।

इस बैठक में यह भी निश्चय हुआ कि ऋषि मेला को मनाते हुए २५ वर्ष हो गये हैं, इसलिये इस बार का ऋषि मेला रजत जयन्ती मेला होगा।

इस अवसर पर एक विशेष स्मारिका भी प्रकाशित होगी जिसमें टंकारा ट्रस्ट विषय/इतिहास तथा अन्य विषयों पर विद्वानों के लेख होंगे।

दिल्ली से स्पेशल ट्रेन का प्रबन्ध किया जा रहा है, जिसके लिए ट्रस्ट ने एक उपसमिति बनाई है। इसमें श्री शान्तिप्रकाश बहल, श्री रामलाल मलिक, श्री हरवंशसिंह खेर, श्री रामभज बत्रा नियुक्त किये गये हैं। इसके संयोजक श्री रामलाल मलिक बनाये गये हैं। जो व्यक्ति उपरोक्त ऋषि मेला में जाना चाहें वे टंकारा जाने के लिए अभी से तैयारी शुरु कर देवें।

रामनाथ सहगल
मन्त्री टंकारा ट्रस्ट

आर्य स्पेशल ट्रेन का कार्यक्रम

महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा के तत्वावधान में टंकारा ट्रस्ट की रजत जयन्ती फरवरी १९८५ में मनाई जा रही है। इस रजत जयन्ती में भाग लेने के लिए महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट द्वारा एक आर्य स्पेशल ट्रेन का प्रोग्राम बनाया जा रहा है। दिल्ली से १३ फरवरी को सुजानगढ़, जोधपुर; आबूरोड. माउण्ट आबू, राजकोट, टंकारा, जामनगर, द्वारका, ओखा पोरबन्दर, सोमनाथ, साबरमती आश्रम (अहमदाबाद) उदयपुर, चित्तोड़, अजमेर वापस दिल्ली।

विवरण एवं सीट सुरक्षित कराने के लिये सम्पर्क करें—मन्त्री महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा, आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली दूरभाष–३४३७१८ अथवा संयोजक श्री रामलाल मलिक फोन ५६२५१०

मिनी आर्य विदेश यात्रा

प्रस्थान—दिल्ली पालन—१९-१-८५ रात्रि
वापस—दिल्ली— २९-१-८५ रात्रि

दिल्ली से बेंकाक (थाईलैंड) हालैण्ड (हालैण्ड) पिनांक (मलेशिया) सिंगापुर (सिंगापुर)

सीट सुरक्षित कराने की अन्तिम तिथि १-१-८५ है। सीट सुरक्षित कराने एवं विवरण के लिए आर्यसमाज करोलबाग, नई दिल्ली, फोन ५६०४५८ एवं आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली, फोन ३४३७१८ से सम्पर्क करें।

रामलाल मलिक संयोजक

शोक प्रस्ताव

१—आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के माननीय उपप्रधान चौ० माडूसिंह जी मलिक के आकस्मिक निधन से आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांवको गहरा दुःख हुआ। अपनी २१-१०-८४ की बैठक में आर्य केन्द्रीय सभा के सदस्यों ने मौन धारण कर शोक प्रकट किया और शोक प्रस्ताव भी पारित किया–'आर्य केन्द्रीय सभा गुड़गांव के सभी सदस्य चौ० माडूसिंह के आकस्मिक निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हैं। इनके निधन से हरयाणा आर्य जगत् को जो क्षति हुई है कि उसका पूरा होना असम्भव है। परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को सद्गति तथा परिवार और आर्यजगत् के सदस्यों को इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।'

किशनचन्द चोटानी

२—२१-१०-८४ को प्रातः साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर आर्य समाज नारनौल की साधारण सभा में चौ० माडूसिंह मलिक कुलपति गुरुकुल खानपुर व गुरुकुल भैंसवाल तथा उपप्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के निधन पर गहरा शोक प्रकट करते हुए परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार जनों और उनके इष्टमित्रों को प्रभु इस दुःख को सहन करने की शक्ति दें।

वैद्य हरिश्चन्द
प्रधान आर्यसमाज नारनौल

श्रद्धांजलि

यह जानकर बड़ा दुःख हुआ कि चौ० माडूसिंह जी हमारे बीच नहीं रहे। उनकी अचानक मृत्यु से हरयाणा को हरयाणा वासियों को एवं आर्य सज्जनों को बड़ी क्षति हुई है।

चौ० साहब नेक, ईमानदार व शरीफ इन्सान थे। वे बड़े मिलनसार एवं मधुरभाषी थे। उन्होंने आयु पर्यन्त हरयाणा के लिये जो काम किया है उसे हरयाणावासी कभी नहीं भुला पावेंगे।

चौ० साहब एक योग्य वकील, ईमानदार राजनीतिज्ञ, बड़े शिक्षा शास्त्री थे। वे कट्टर आर्यसमाजी थे। उन्होंने अपने जीवन में आर्य समाज के नियमों का पालन किया तथा आर्यसमाज के लिये काफी काम किया।

हम परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि चौ० साहब की आत्मा को शान्ति प्रदान करे तथा परिवार व प्रियजनों को यह सदमा सहन करने की शक्ति दें।

ओमप्रकाश दहिया रोहतक

१९६५ के वीर शहीदों की स्मृति में–

प्रो० ओमकुमार आर्य जीन्द

वीर विकराल बनकर, साक्षात् काल बनकर
कौन थे जो दुश्मनों से जूझने को चले थे
बीस नहीं तीस नहीं, पांच या पच्चीस नहीं
दुश्मन के टिड्डी दल पैरों तले दले थे
टैंक अगर उगलते थे नभ से शोले बरसते थे
कौन थे जो फिर भी निज ध्येय से न टले थे
राम पले, कृष्ण पले, पले शिवराज जहां
उसी वीर जननी की गोद में वे पले थे ॥१॥

भारत की शान क्या है, राजपूती आन क्या है–
एक बार फिर सो यह जंग को दिखाये गये
हिम गिरि झुकता नहीं, वीर कभी रुकता नहीं
भूली हुई दुनियां को तथ्य यह बता गये
कश्मीर हड़पने के, भारत को कुचलने के
तानाशाही मंनसूबे, मिट्टी में मिलाय गये
युद्ध किया डटकर, वीर कट–कट कर
कीमत मां के दूध की निज खून से चुकाय गये ॥२॥

भूल सुधार

सर्वहितकारी दिनांक २१ अक्तूबर के पृष्ठ ८ के कालम १ के पेरा नं० ४ की दूसरी पंक्ति में गुरुकुल खानपुर के कुलपति चौ० माडूसिंह जी का नाम भूलवश प्रकाशित होने से रह गया।

व्यवस्थापक

आर्यो सावधान !

स्वामी वेदमुनि परिव्राजक, वैदिक संस्थान नजीबाबाद, उ.प्र.

आर्यसमाज की यह निर्बलता रही है कि वह जाति बन्धन नहीं तोड सका और महर्षि दयानन्द सरस्वती के शब्दों में 'वर्तमान जाति भेद को समाप्त किये बिना वर्णव्यवस्था का क्रम ठीक नहीं हो सकता।'

हम दिन-रात वर्ण-व्यवस्था के गुणकर्मानुसार होने के विषय में धुआंधार भाषण करें और लेख लिखें तथा जन्मगत जाति भेद का खण्डन करें किन्तु जाति भेद को तोड़ने के लिये तैयार कदापि न हों तो हम ऋषिवर दयानन्द के शिष्य और वेद के भक्त नहीं अपितु द्रोही प्रमाणित हो जाते हैं।

वैदिक संस्थान नजीबाबाद ने मार्च सन् १९८३ में सैंकड़ों आर्य समाजों को अपने जाति भेद निवारक विभाग की नियमावली व विज्ञप्ति भेजी थी। परन्तु खेद यह है कि किसी एक भी आर्यसमाज का इस कार्य में सहयोग प्राप्त नहीं हुआ हो सो ही नहीं अपितु प्रतिक्रिया भी उपलब्ध नहीं हुयी।

संस्थान ने अपनी उक्त विज्ञप्ति को समाजों को इसलिये भेजा था कि आर्यसमाजें अपने अपने क्षेत्र से एक-एक, दो-दो सदस्य भी संस्थान के जातिभेद निवारक विभाग के लिये बना देंगी तो सहस्रों न सही सैंकड़ों सदस्य तो बन ही जायेंगे और इस प्रकार जातिभेद निवारण की ओर हमारा यह एक पग होगा।

व्यवस्था यह बनाई गई है कि जो व्यक्ति अपनी सन्तानों के विवाह जाति बन्धन तोड़कर करना चाहें, वह सदस्य बनें तथा ऐसे व्यक्ति जिनके सम्मुख बच्चों के विवाह का प्रश्न शेष न हों, इस कार्य में सहायतार्थ सदस्य बने। सदस्यता शुल्क १००) रुपये वार्षिक अथवा १०) रुपये मासिक रखा गया है। साथ ही यह सूचना भी दी गई थी कि कम से कम २५०) रुपये एक बार देकर वैदिक संस्थान के आजीवन सदस्य बनने वाले सज्जन जाति भेद निवारक विभाग के संरक्षक माने जायेंगे। यदि कुछ आर्यसमाजें ऐसी हों जो जाति भेद तोड़कर अपनी सन्तानों के विवाह कर सकने का साहस करने वाले तथा धन द्वारा इस कार्य को प्रोत्साहन देने वाले सदस्य भी न दे सकें तो कम से कम २५०) रुपये भेजकर वह समाजें स्वयं तो सदस्य बन सकती थीं किन्तु ऐसा भी किसी एक भी समाज ने नहीं किया।

आर्यजन स्वयं भी सोचें और अपनी समाज के साप्ताहिक और अन्तरंग अधिवेशन में भी इस प्रश्न पर विचार करें कि वर्तमान परिस्थितियों में, जब इस्लाम और ईसाइयत हमें हड़पने को पूरी शक्ति के साथ जुटे हुए है, बिना इस प्रकार के ठोस पग उठाये क्या साप्ताहिक और वार्षिक अधिवेशन और उनमें होने वाले धुआंधार भाषण हमें बचा सकेंगे ?

जब कहीं से भी कोई प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं हुई तो मन को बड़ी ठेस लगी। हमारे जीवन में कोई वैदिक आचार नहीं, वेद का स्वाध्याय हम करते नहीं। वैदिक संस्कार और आर्य-पर्व-पद्धति के अनुसार पर्व हमने अपनाये नही तथा जाति भेद तोड़कर हम-सन्तानों के विवाह करने को तैयार नहीं तो "कृण्वन्तो विश्वमार्यम्" के घोष लगाने मात्र से क्या होगा ?

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने लिखा है कि "चौका लगाते लगाते राज्य-पाट, धन-धाम सब पर तो चौका लगा दिया और कहीं जाकर बस भी करोगे।" सोचना पड़ता है कि यदि गुरुवर आज होते और हमारी इस शोचनीय पीड़ादायक स्थिति को देखते तो कह उठते कि "स्वाहा स्वाहा करते करते सभ्यता संस्कृति, आचार व्यवहार सब कुछ तो स्वाहा कर बैठे और कहीं जाकर बस नहीं करोगे। क्या आर्यजन इस दिशा में विचार करने को तैयार हैं ? यदि हां तो दृढ़ निश्चय के साथ आगे बढ़िये आपका स्वागत है। यदि नहीं तो परिणाम भोगने और इतिहास के पृष्ठों पर यह अंकित कराने को तैयार रहिये कि विष-दाता जगन्नाथ ने तो महर्षि दयानन्द के नश्वर शरीर की हत्या की थी; उनके वास्तविक हत्यारे तो उनके मिशन की हत्या करने वाले उनके शिष्य ही हैं, जो घोष तो 'महर्षि दयानन्द की जय'; वैदिक धर्म की जय और आर्यसमाज अमर रहे" के लगाते रहे किन्तु आचरण द्वारा यह सिद्ध करते रहे कि वास्तव में हम न तो महर्षि दयानन्द के शिष्य हैं न आर्यसमाजी ही हैं।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पं० पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है।

अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र-'मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक' के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिये।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिए। चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ रोहतक

स्वस्थ और निरोग रहने के उपाय

१—खांसी और जुकाम में, दही न करो प्रयोग।
खट्टी चीजें वर्फ जल, अधिक बढ़ावें रोग॥

२—दस्तों में खाइये, दूध अरहर की दाल।
गर्म मसाले चटपटे, रखिये इतना ख्याल॥

३—कब्जी में खाओ नहीं, घुइया और जौ ज्वार।
गर नहीं किया परहेज तो, होय अधिक बीमार॥

४—मूंगफली, घृत, तेल, तिल, चाय; काफी अमरूद।
ठण्डा जल पीना मना; जब गर्म पिया हो दूध॥

५—करो ना रात्रि के समय, सत्तू का उपयोग।
काल विरोधी समझिये, बढ़े कब्ज का रोग॥

६—कभी साथ न खाइये, खिचड़ी, मट्ठा, खीर।
दुग्ध साथ इमली नहीं; सतू के संग क्षीर॥

ले० स्वामी स्वरूपानन्द सरस्वती (आयुर्वेदाचार्य)
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
१५ हनुमान रोड़ नई दिल्ली—१

आर्यसमाज जीन्द शहर का वार्षिक उत्सव

१९ से २१ अक्तूबर तक वार्षिक उत्सव पर सभा के उपमन्त्री आचार्य सुदर्शनदेव जी, सभा उपदेशक पं० महेन्द्रसिंह शास्त्री विद्यावाचस्पति आदि के व्याख्यान तथा पंडित हरिश्चन्द जी एवं पं० तेजपाल की मण्डलियों के प्रभावशाली भजन हुये। आर्यसमाज ने सभा को ५०१) वेदप्रचारार्थ भेंट किये।

जिन्हें हम भुला न सकेंगे—

देवता स्वरूप स्वर्गीय चौ० माड़ूसिंह

प्रो० सत्यवीर विद्यालंकार उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

७ अक्तूबर ८४ को श्री माड़ूसिंह मलिक के स्वर्गवास का समाचार सुनकर समस्त आर्यजगत् सन्न रह गया। चौधरी साहब देवता स्वरूप थे। उनका जीवन सादा था तथा विचार ऊंचे थे। उनमें किसी प्रकार का दिखावा न था। उनका खान-पान सात्विक था। प्रातःकाल ४ बजे उठने का उनका अटल नियम था। आलस्य से वह कोसों दूर थे। वह सब प्रकार के नशों से बचे हुए थे। सायंकाल भ्रमण के लिये पार्क में अवश्य जाया करते थे। उनकी दिनचर्या एक तपस्वी जैसी थी। ईश्वर पर उनका अटूट विश्वास था। उन्हें धन का आकर्षण न था तथा आधुनिक चकाचोंध से वह बहुत दूर थे।

राजनीति में लम्बे समय तक अनेक महत्त्वपूर्ण पदों पर रहते हुए भी उनमें अहंकार न था। पंचायत प्रणाली में उनका विश्वास था परन्तु आजकल के भद्दे पंचायती कारनामों से उन्हें नफरत थी। सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिये विशाल स्तर पर पंचायतों का आयोजन उन्हें विशेष लाभकारी प्रतीत होता था। देहात के किसान तथा मजदूर की कमजोर आर्थिक स्थिति की उन्हें बराबर चिन्ता थी। लोगों के मुकद्दमे आपसी सहमति से निपटाने में उनका विश्वास था। आजीविका के लिए वकालत करते हुए भी मुवक्किलों को लूटना उन्हें बिल्कुल पसन्द न था। वह दोनों पार्टियों का समझौता करवाने के लिये पूरा जोर लगाते थे तथा उन्हें अपनी लुटाई से बचने के लिए समझाते थे। पारस्परिक कलह के मामलों को निपटाने के लिए रोहतक में उनसे अच्छा कौन हो सकता था? आपस में पीढ़ियों से कत्ल के मुकद्दमे तथा परस्पर की धन-जन की हानि को बचाने की उनमें अनूठी कला थी। वह स्वयं अजातशत्रु थे तथा जानी-दुश्मनों को परस्पर मिलाने का शुभ कार्य जीवन पर्यन्त करते रहे। वह शान्ति तथा अहिंसा के पुजारी थे। वह आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान थे। वैदिक सिद्धान्तों में उनकी गहन निष्ठा थी।

आपने शिक्षा के प्रचार और प्रसार के लिए अमर शहीद भक्त फूलसिंह जी महाराज से प्रेरणा ग्रहण की थी। विशेषकर लड़कियों की शिक्षा के लिये लोगों को प्रेरणा देना उनका स्वभाव बन गया था। सर छोटूराम के मार्ग दर्शन में श्री उदयसिंह मान तथा चौ० बलदेवसिंह के साथ मिलकर आपने रोहतक की शानदार जाट संस्थाओं का निर्माण किया। लम्बे समय तक आप इन संस्थाओं की प्रबन्धकर्त्री सभा के सदस्य तथा प्रधान आदि मुख्य पदों पर कार्य करते रहे। गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा भैंसवालकलां तथा कन्या गुरुकुल खानपुरकलां (सोनीपत) के निर्माण तथा प्रगति का श्रेय आपको ही है। बहिन सुभाषिणी देवी का इन विशाल संस्थाओं के निर्माण के लिए लग्न और उत्साह आपके सहयोग तथा मार्गदर्शन पर निर्भर रहा है। उक्त दोनों संस्थाओं से कई हजार स्नातक स्नातिकायें बनकर विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। सन् १९१३ ई० से आप इन संस्थाओं के मन्त्री रहे तथा गत ३० वर्ष से प्रबन्धक सभा के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

दीनबन्धु सर छोटूराम के जीवन तथा विचारधारा का उन पर गहरा प्रभाव था। आपने निरन्तर कई वर्षों तक उनके साथ रहकर समाज सुधार एवं शिक्षा का प्रसार कार्य करते हुए राजनीति में भी बढ़चढ़ कर भाग लिया था। दीनबन्धु छोटूराम का आप पर पूरा विश्वास था और वे आपके साथ पुत्रवत् व्यवहार करते थे। उनके नैतिक गुणों की छाप आप पर थी। आपको राव बहादुर चौ० धासीराम, चौ० टीकाराम व स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के साथ काम करने का सुअवसर मिला था। लगभग ५५ वर्ष के लम्बे समय तक राजनैतिक तथा समाज सेवा के क्षेत्र में कार्य करने पर भी आपका जीवन बेदाग था। विरोधियों को भी आपके नैतिक गुणों का लोहा मानना पड़ता था।

चौधरी साहब पंजाब और हरयाणा की विधान सभा के कई बार सदस्य बने और शिक्षा विभाग व राजस्व विभाग के वर्षों तक मन्त्री रहे। अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वे सर छोटूराम के सम्बन्ध में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखित पुस्तकों का पुनः अध्ययन कर रहे थे। उनके स्वर्गवास जो से क्षति हुई है उसकी पूर्ति होनी कठिन है। उनकी मृत्यु से एक ईमानदार और सुलझी हुई विचारधारा वाला महान् व्यक्ति हमसे विदा हो गया है। हमारा आश्रयदाता व सन्मार्ग दर्शक हमसे छीन गया है जिसे हम कभी भुला न सकेंगे।

खानपुर कलां में विशाल सामवेद यज्ञ

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी २ अक्तूबर १९८४ को वैद्य धर्मपाल जी ने चतुर्थ सामवेदीय यज्ञ करवाया। ब्रह्मा का स्थान प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् तथा व्याकरण के पण्डित श्री विद्यानिधि जी व्याकरणाचार्य ने ग्रहण किया। दोनों समय प्रसिद्ध प्रवचनकर्त्ता आचार्य विष्णुमित्र जी, पण्डित अभिमन्यु जी तथा श्री सुखदेव शास्त्री के प्रवचन होते रहे। ब्राह्मण से लेकर हरिजन भाई तक इस यज्ञवेदी में अभेदभाव से सहयोग लेते रहे।

इस शुभ अवसर पर हरयाणा आर्य प्रतिनिधि सभा की भजन मण्डली के प्रसिद्ध गायक तेजपाल जी के मधुर और शिक्षाप्रद भजन हुए। इसके साथ उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध गायक श्री सुखपाल आर्य भजनोपदेशकके भजनों से नवीन जीवन का जागरण हुआ।

इस यज्ञ में हरयाणा सरकार की मन्त्री बहन प्रसन्नी देवी, बहन करतार देवी तथा भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री बहन शान्ति राठी भी सम्मिलित हुई। यज्ञ के उपरान्त वैद्य जी ने उपस्थित गांव के नरनारियों तथा बाहर से आए आर्यजनों को मधुर मिष्ठान का भोजन कराया।

इस यज्ञीय पर्व पर लोकोपकार के लिए वैद्य धर्मपाल जी ने बीस हजार रुपया व्यय करके आर्यसमाजके कार्य को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दी। विद्वानों तथा भजनोपदेशकों का भी वैद्य जी ने समुचित सत्कार किया। प्रभु से प्रार्थना है कि ऐसे उपकारी दानी वैद्य धर्मपाल जी को लम्बी आयु प्रदान करे।

जगन्नाथ वैद्य
संयोजक यज्ञ समिति

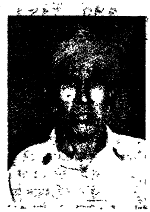
शराब के ठेके के विरुद्ध आर्य धरना बालावास को सफल करने वाले क्रान्तिकारी



श्री हेतराम आर्य

आपका जन्म ग्राम बालावास जिला हिसार में सन् १९३८ ई० में हुआ। आप आरम्भ से हो धार्मिक पवित्र के व्यक्ति हैं। आपकी पत्नी भी विद्वान् तथा आर्य अतिथि महानुभावों की बड़ी श्रद्धा से भोजन आदि से सेवा करती है। ग्रामीण दुर्व्यसनों के अनुसरण में आप भी धूम्रपान करने लगे। आर्यसमाज नलवा के प्रथम वार्षिक महोत्सव दिसम्बर १९८३ में आर्यजगत् की विदुषी बहिन कलावती आचार्या कन्या गुरुकुल गणियार को अपने घर पर निमन्त्रित करके यज्ञ एवं पारिवारिक सत्संग कराया और उनके हाथ से यज्ञोपवीत धारण करके धूम्रपान आदि दोषों का सदा के लिए परित्याग कर दिया। आप कभी कभी घर पर आने वाले लोगों के लिए हुक्का भर दिया करते थे किन्तु मुझ से शंका-समाधान कर वह भो छोड़ दिया और दृढ आर्य बन गए। दुर्व्यसनों का समय सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय, सन्ध्या एवं विद्वानों की सेवा में लगाने लगे।

दिनांक १४-४-८४ से श्री अत्तरसिंह आर्य के साथ आर्य धरणा स्थल पर तन, मन, धन से जुटे हुए हैं। आपकी धर्मपत्नी भी महिला वर्ग में आर्य विचार धारा के प्रसार में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रही है।



सूबेदार हरिन्द्र आर्य

आपका जन्म ग्राम बालावास जिला हिसार में सन् १९०५ में हुआ। आपने ११½ वर्ष फौज में सेवा की। सन् १९३९ की लड़ाई में आपने पूर्ण वीरता का परिचय दिया। सन् १९४२ में सीलोन में आप जमादार जिसे आज सूबेदार कहते हैं, सम्मानित पद पर पहुँचे।

आपके पास २० किला (१०० बीघा) जमीन है। आप १० वर्ष सर्वसम्मति से गांव के सरपंच रहे। कृषि और समाज सेवा आपका मुख्य कार्य है। ग्राम की पद्धति के अनुसार कभी कभी धूम्रपान कर लिया करते थे। स्वामी ओमानन्द सरस्वती की प्रधानता में सम्पन्न महर्षि निर्वाण शताब्दी अजमेर में सर्वदा के लिए धूम्रपान का परित्याग कर दिया और उस समय का उपयोग अब आप महर्षि कृत सत्यार्थ प्रकाश आदि ग्रन्थों के स्वाध्याय में व्यतीत करते हैं। ग्राम में वेदप्रचार आदि कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। दिनांक १४-४-८४ से श्री अत्तरसिंह आर्य की अध्यक्षता में चले ठेका शराब विरोधी आर्य धरणा पर तन-मन-धन से सहयोग दिया। सादा जीवन और उच्च विचार का आदर्श आपके जीवन में साफ दिखाई पड़ता है। क्रमश:

सुदर्शनदेव आचार्य
सभा उपमन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 231 ... नं० P/RTK 49 ... फोन ४२१९



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुख पत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४५   ७ नवम्बर १९८४   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

उग्रवादियों द्वारा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी पर आक्रमण सारे राष्ट्र को चुनौती —प्रो० शेरसिंह

(कार्यालय संवाददाता द्वारा)

बेरी जिला रोहतक १ नवम्बर ८४ : आज यहां एक प्रैस वक्तव्य में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा तथा रक्षा वहिनी के अध्यक्ष प्रो० शेरसिंह ने कहा है कि सिख उग्रवादियों द्वारा भारत के प्रधानमन्त्री पर आक्रमण हमारे राष्ट्र के लिये एक चुनौती है।

सिख उग्रवादियों द्वारा भयंकर आतंकवाद फैलाने पर आम धारणा बनती जा रही है कि जब राष्ट्र के सर्वोच्च सत्ताधारी नेता की हत्या की जा सकती है तो साधारण आदमी को रक्षा कैसे होगी ?

हमने काफी समय पूर्व ही भारत सरकार को सावधान कर दिया था कि सिख उग्रवादी विदेशी शक्तियों के संकेत पर भारत में गड़बड़ करके खालिस्तान की स्थापना करने का षड्यन्त्र कर रहे हैं। पाकिस्तान में सिख उग्रवादियों को तोड़ फोड़ करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इंग्लैंड, कनेडा, अमेरिका तथा अरब आदि देशों से इन्हें निरन्तर करोड़ों रुपये की आर्थिक सहायता तथा हथियार भेजे जाते हैं। आतंकवादियों को प्रशिक्षण देकर भारत में भेजा जाता है ताकि वे आतंक फैलाकर पुन: इसका विभाजन कर सकें।

आपने कहा कि पंजाब की नदियों का फालतू पानी पाकिस्तान को मुफ्त देकर पाकिस्तान से मित्रता तथा हरयाणा को हानि पहुंचाने वाली बात है।

आपने गुप्तचर विभाग की आलोचना करते हुए कहा कि इसमें भी राष्ट्रद्रोही तत्त्व सम्मिलित हो गये हैं, वे वेतन सरकार से लेते हैं, परन्तु राष्ट्रद्रोहियों के षड्यन्त्रों को सफल करने में संलग्न रहते हैं। यही कारण है कि सिख उग्रवादी भारत पाक सीमा आसानी से आर-पार करते रहते हैं। प्रधान मन्त्री पर हुए घातक आक्रमण से सिद्ध हो गया है कि सिख उग्रवादी हिंसात्मक व आतंकवाद से सरकार पर दबाव डालकर अपनी अनुचित तथा राष्ट्रद्रोही मांगें मनवाकर एक बार पुन: राष्ट्र का विभाजन करना चाहते हैं।

आपने भारत के नये प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी से अनुरोध किया है कि किसी भी मूल्य पर अकालियों से समझौता करके उनकी अनुचित तथा राष्ट्रद्रोही मांगें न मानें और राष्ट्र की एकता को बनाए रखने के लिये उग्रवादी तत्त्वों के विरुद्ध कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें। उग्रवादियों की वर्तमान हिंसात्मक गतिविधियां राष्ट्र की सुरक्षा के लिये एक चुनौती है।

आपने अपने प्रैस वक्तव्य के अन्त में हरयाणा की जनता से अपील करते हुए कहा कि राष्ट्ररक्षा के लिये देश द्रोहियों से सावधान रहें और अपने संगठन को सुदृढ करें ताकि उग्रवादी अकाली हरयाणा के हितों को हानि न पहुँचा सकें।

सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत बेरी के सम्मेलन में

श्रीमती इन्दिरा गान्धी को श्रद्धांजलि

बेरी जिला रोहतक : १ नवम्बर को सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत के सम्मेलन में प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी की सिख उग्रवादियों द्वारा निर्मम हत्या किये जाने और राष्ट्रीय शोक दिवस होने के कारण कार्यवाही शोक प्रस्ताव पारित करने के पश्चात् स्थगित कर दी गई।

इस पंचायत में २७ खापों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। सम्मेलन प्रारम्भ होते ही प्रो० शेरसिंह ने सूचित किया कि सर्वखाप पंचायत के प्रतिनिधियों ने धारा १४४ लगाये जाने व राष्ट्रीय शोक दिवस में सम्मिलित होने के लिये विवश होकर पंचायत की कार्यवाही को स्थगित करने का निर्णय किया है।

पंचायत में उपस्थित प्रतिनिधियों से आज ही पंचायत के नियम लागू करने का अनुरोध किया और आवश्यकतानुसार नियमों में संशोधन आदि के लिये अपने प्रस्ताव लिखित रूप में भेजने का परामर्श दिया।

यह पंचायत खाप कादान व सतगांवा बालन्द की ओर से बुलाई गई थी। इस अवसर पर सभी प्रतिनिधियों ने खड़े होकर दो मिनट के लिये मौन धारण किया और निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किया।

प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की उनके अंगरक्षकों द्वारा निर्मम हत्या देश की एकता और अखण्डता के लिए ही नहीं बल्कि मानवता के लिए भी बहुत बड़ी चुनौती है। साम्प्रदायिकता के जहरीले रंग में रंगे हुये एक सम्प्रदाय के लोगों के हाथों विश्व की महान् नेता की हत्या एक अक्षम्य अपराध और देश की अस्मिता और एकता पर गहरी चोट है। सर्वजातीय सर्वखाप पंचायत का यह सम्मेलन इस दूषित अपराध और षड्यन्त्र की घोर निन्दा करता है। यह सम्मेलन जहां भगवान् से दिवंगत आत्मा की शांति और अमरता के लिये प्रार्थना करता है वहां राष्ट्र के सभी नेताओं और जनता से जोरदार शब्दों में अनुरोध करता है कि वे एक जुट होकर देश की अखण्डता और अस्थिरता की रक्षा करें।

सुभाषचन्द्र शास्त्री — उपप्रधान
भगवानसिंह — महासचिव
खाप कादान सतगांवा बालन्द, (बेरी) जिला रोहतक

हमारी पूर्वी देशों की यात्रा

ब्र० रामवीर शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

(गतांक से आगे)

सबके एकत्रित हो जाने पर जब हमारा अन्दर एयर पोर्ट में घुसने का समय हुआ तो हमारे स्वागत के लिये आये हुये बहुत से व्यक्तियों ने हमारी विदेश यात्रा सफल और सुखमय हो इसकी शुभकामनायें करते हुए एक विदाई समारोह का रूप हो गया, जिनमें कुछ प्रमुख व्यक्ति नरेला से भी आये थे। यथा-वैद्य कर्मवीर जी, मा० पूर्णसिंह, मा० सत्यवीर जी आदि थे। कन्या गुरुकुल की मान्या स्नातिकाओं और छात्राओं का प्रतिनिधित्व करते हुए आचार्या कुमारी सुमित्रा जी आर्या ने पूज्य स्वामी जी महाराज को "ओ३म् स्वस्ति पन्थामनु चरेम०"— वेद मन्त्र का उच्चारण करते हुये रुपयों की माला पहनाई की तथा मुझे भी रुपयों की माला का एक हार भेंट देते हुए मेरी विदेश यात्रा शुभकरा और सुखमय हो ऐसी शुभ कामनाये प्रकट की। गुरुकुल झज्जर से भी कुछ प्रमुख व्यक्ति यातायात के साधनो का अभाव होते हुये भी हमारे विदाई समारोह में सम्मिलित हुये जिनमें गुरुकुल के मुख्याध्यापक ब्र० विजयपाल जी योगार्थी तथा वा० सहदेव जी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी जीवनानन्द जी वेदाचार्य आदि प्रमुख थे तथा दयानन्द वेद विद्यालय गौतमनगर दिल्ली के आचार्य ब्र० हरिदेव जी अपने सहयोगी अध्यापकों और छात्रों सहित विमान क्षेत्र पर स्वागत समारोह में पहुँचे थे। गुरुकुल झज्जर तथा गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली के आचार्य व छात्रों ने हमें फूल मालाओं से लाद दिया, जब यह सब कुछ हो रहा था तब दर्शक भी बहुत आ गये थे, विमान क्षेत्र में इस तरह का स्वागत एक समारोह से का रूप ले रहा था, दर्शनीय दृश्य बना हुआ था। अपने स्नेही जनों से पृथक् न होने की इच्छा होते हुये भी, विदेश यात्रा की उत्सुकता हमें उनसे पृथक् कर रही थी, जैसे ही हम यात्रियों के प्रवेश और अन्यों के लिए वर्जित क्षेत्र में पहुँचे तो हमारे सभी शुभ चिन्तकों की निगाहें हमें कुशल पूर्वक लौट आने की आशा से बड़े प्रेम से देख रही थी, शनैः शनैः वे हमसे तथा हम उनसे इतने दूर हो गये कि हम एक दूसरे को देख नहीं सके। जब हम अपने पास पोर्ट आदि चैक करवा रहे थे तो हमारा २० व्यक्तियों का एक ग्रूप एकत्रित हुआ जिसमें सबका परस्पर परिचय हुआ और उनमें एक दो ऐसे परिचित चेहरे भी थे जिन्हें हम यह समझने थे कि हमें विदाई देने आये हैं और वे थे हमारे सहयात्री ही। हम सबने इकट्ठे होकर पास पोर्ट आदि का निरीक्षण कराकर टिकट लिया, टिकट लेकर हम आगे बढे, जहां कि विमान की प्रतीक्षा की जाती है, केवल यात्री ही वहां बैठते हैं। कुछ देर बैठने के बाद दरवाजा खुला हमारा समान जो हाथ में था वह भी देखा गया। हमारे थैलों को मशीन पर रखा गया जिससे कि उसके अन्दर के समान का सब फोटो वहां आ जाता है। यदि कोई आपत्तिजनक वस्तु हो तो वह निकाल दी जाती है। हमारे शरीर पर भी मशीन लगा लगा कर निरीक्षण किया गया, जहां मशीन कुछ बताती, वहीं से जो सामान हो वह निकलवाकर देखा जाता। ये सब होने के बाद हम अपने विमान की ओर बढे जो कि लगभग ४०० यात्रियों को बैठाकर उड़ता है जिसका नाम टी० जी० ५०४ थाई एयर लाइनंस था. विमान की ओर जाने से पूर्व हमें श्रीमती उषात्तिखा जो कि ट्रेवल ऐजण्ट होने के साथ हमारे ग्रुप की अध्यक्ष भी थी, उन्होंने हमारे यात्रा टिकटों का संग्रह करके पासपोर्ट वीसा आदि प्राप्त करके हमें आवश्यक व्यय हेतु लगभग २५ डोलर पूर्व प्राप्त ५०० डोलरों से अतिरिक्त मिले। पुनः सुरक्षा जांच पड़ताल के समीप ही प्रतीक्षा गृह में बैठाया गया, कुछ ही देर बाद टेलिविजन और रेडियो के माध्यम से यह घोषणा की गई कि बैंकाक जाने वाले विमान की उड़ान २.१० बजे होगी, यात्री तैयार होकर गेट नम्बर पांच से होकर प्रस्थान करें और अपने टी. जी. ५०४ विमान में स्वस्थान ग्रहण करें।

जैसे-जैसे हम गेट से निकलकर जहां बहुत सारे विमान खड़े थे वहा पहुँचे तो हमारे सामने ही एयर इण्डिया बसें खड़ी थी उन बसों में हम बैठ गये। ये बस भी विशेष तरह से निर्मित हैं इन बसों में १०० से कुछ अधिक ही यात्री बैठ या खड़े हो सकते हैं। इन बसों द्वारा हमें टी. जी. ५०४ विमान के पास पहुंचा दिया गया, जहां विमान पर चढ़ने हेतु सीढियां लगी हुई थी उन सीढ़ियों से विमान पर चढ़ते हुए अपने अपने अधकटे बोर्डिंग कार्ड जिन पर हमारी सीटों के नम्बर अंकित थे उन्हें दिखाते हुए हम विमान पर पहुंच गये। वहां गेट पर ही बहुत ही आकर्षक वेशाभूषा में सुसज्जित प्रसन्नचित्त नमस्ते मुद्रा में हाथ जोड़े हुए एक सुन्दर नवयुवति (जिसे वायु स्वागतिका भी कहते हैं) खड़ी हुई प्रत्येक यात्री का अभिवादन करती हुई अन्दर सीट की ओर जाने का संकेत कर रही थी।

अन्दर विमान में प्रवेश कर लेने के बाद दूसरी ऐयर गर्ल (वायु कन्या) ने बोर्डिंग टिकटों पर अंकित सीट नम्बरों को देख देखकर सब यात्रियों को यथास्थान बैठा दिया। इन वायु कन्याओं में कितनी नम्रता, शालीनता आत्मीयता और अनुशासन बद्धता थी वह देखते ही बनता था, उनके चेहरे पर मधुर मुस्कान, रिजूस्वभाव, शान्तचित्त और प्रसन्न मुद्रा थी, कुछ देर में विमान यात्रियों से पूर्ण हो गया। कोई सीट दूर तक रिक्त दिखाई नहीं दे रही थी। सभी यात्री शान्त होकर अपनी-२ सीटों पर बैठ गये। थोड़ी ही देर में विमान का दरवाजा बन्द हो गया। और विमान शनैः शनैः ठीक २. १०. पर ही चलने लगा। विमान के चलते ही सभी यात्रियों का विमान में स्थित दूर ध्वनि यन्त्र से अत्यन्त मधुर स्वर में किसी देवबाला ने आंग्लभाषा में सविनय स्वागत करते हुये कहा कि कृपया आप अपनी सीट की पट्टी (बेल्ट) से अपने को बांधने का कष्ट करें जैसे कि आपको दिखाया जा रहा है।

क्रमशः

सम्पादकीय:-

आर्यसमाजों के लिए रचनात्मक कार्यक्रम

हरयाणा के आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि सभा के पूर्व परिपत्र के अनुसार अपने क्षेत्र के ग्रामों की पंचायतों से शराबबन्दी तथा हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु प्रस्ताव पारित करवाकर भारत के प्रधानमन्त्री तथा हरयाणा के मुख्यमन्त्री को भिजवाने का कष्ट करें। आर्यसमाजों के लिए यह एक रचनात्मक ठोस कार्यक्रम है। स्मरण रखें दिसम्बर तक जिन ग्रामों से शराब का ठेका न खोले जाने का प्रस्ताव सरकार के पास पहुंच जायेगा उन ग्रामों में आगामी वित्तीय वर्ष अप्रैल से ठेका नहीं खोला जा सकता। अतः इस महत्त्वपूर्ण समाज सुधार कार्य में ढील नहीं आनी चाहिये। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को ग्राम के सरपंचों, पंचों आदि से सम्पर्क करके उन्हें इस काय में सहयोग करने की अपील करनी चाहिये। जिन ग्रामों में एक वर्ष तक शराब का ठेका रह जाता है, उनमें लगभग कम से कम ५ लाख रुपये की शराब की बिक्री होती है। यदि इस राशि को बचाकर ग्राम के किसी सुधार काय में लगाया जावे तो ग्रामों में भी नगरों जैसे सुविधाएं उपलब्ध हो सकती हैं। इसके अतिरिक्त शराब के सेवन करने से जो शारीरिक, मानसिक तथा सामाजिक हानियां होती हैं, उनसे भी बचा जा सकता है।

इसी प्रकार शराबबन्दी प्रस्ताव के साथ पचायतों से हरयाणा के हितों की रक्षा के लिये भी प्रस्ताव पास करवा कर सरकार को सावधान करना चाहिये, ताकि सरकार उग्रवादी अकालियों के आतंकवादी आन्दोलन के दबाव में आकर उनसे कोई ऐसा समझौता न कर सके, जिस से हरयाणा के हितों को हानि पहुँचे।

समाचार पत्रों से उग्रवादियों की भयकर तथा राष्ट्र द्रोही गतिविधियों की जानकारी मिलती है। वे कभी भाखड़ा नगर को काटते हैं जिसके कटने से हरयाणा की फसलों को करोड़ों रुपये को हानि तथा पानी पीने की परेशानी का सामना हरयाणा की जनता को करना पड़ता है। कभी वे हरयाणा के सिरसा, हिसार, कुरुक्षेत्र तथा करनाल के भाग को पजाब में मिलाने की मांग करते हैं और इन अनुचित मांगों को सरकार से मनवाने के लिए हिंसक गतिविधियां करके आतंक फैलाते हैं। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए सिख उग्रवादियों ने प्रधानमन्त्री पर भी घातक आक्रमण करने का दुस्साहस किया है। अतः हरयाणा की जनता को जागरूक रहना चाहिए। आर्यसमाज सदा से ही राष्ट्र का प्रहरी रहा है।

हरयाणा के आर्यसमाजों से यह भी निवेदन है कि वेद प्रचार कार्य को निरन्तर चालू रखें। जिन आर्यसमाजों में इस वर्ष अभी तक प्रचार कार्य नहीं हुआ है, वे सभा को पत्र लिखकर उपदेशक तथा भजन मण्डलियों का कार्यक्रम बनवा लेवें। सभा का वार्षिक चुनाव शीघ्र होने वाला है, जिन आर्यसमाजों से वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी का वार्षिक चन्दा प्राप्त हो जायेगा, उन आर्यसमाजों के स्वीकृत प्रतिनिधि ही सभा के चुनाव में भाग ले सकते हैं। अतः आर्यसमाजें अपने आर्य सभासदों से वार्षिक शुल्क उनकी वार्षिक आय का १०० वां भाग प्राप्त करने का यत्न करें। इस प्रकार जहां आर्यसमाज को आर्थिक अवस्था में सुधार होगा, वहां सभा की भी दशांश की आय में वृद्धि होगी।

आशा है आर्यसमाजों के अधिकारी अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुये शराबबन्दी तथा हरयाणा के हितों की रक्षा के लिये प्रस्ताव पास करवाकर सरकार को भेजेंगे और हरयाणा में आर्यसमाज के सगठन को सुदृढ करने के लिये वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी की प्राप्तव्य धन राशि सभा को भिजेंगे, ताकि प्रतिनिधि सभा के आगामी चुनाव में भाग ले सकें और आर्यसमाज के सामूहिक हित के लिये अपने सुझाव देकर रचनात्मक कार्यों में योगदान कर सकें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

अस्थिरता पैदा करने वाली विभाजक शक्तियां

(श्री रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा)

लगभग गत दस वर्षों से हमारे देश को छोटे छोटे टुकड़ों में बांटने का षड्यन्त्र देश के शत्रुओं द्वारा किया जा रहा है। इस बात के पुष्ट प्रमाण हैं कि इन विभाजनकारी शक्तियों को कतिपय देशों से शस्त्रों का प्रशिक्षण तथा गोला बारूद की सप्लाई और धन मिल रहा है।

इस सभा के नेताओं ने न केवल इस देश के सब भागों में ही नहीं अपितु अमेरिका, इंगलैंड और पश्चिमी जर्मनी में भी घूमकर देखा है और पाया है कि इस बारे में गहरे षड्यन्त्र किये जा रहे हैं।

इस सम्बन्ध में १७ अक्तूबर १९७३ को अकाली सिखों ने आनन्दपुर साहब में प्रस्ताव पास करके अपना ध्येय ऐसी परिस्थितियों का निर्माण घोषित किया था जिसके द्वारा सिखों की कौमी भावनाओं और आकांक्षाओं की पूरी अभिव्यक्ति हो सके। गत १० वर्षों में इस ध्येय को पाने के लिये जो कुछ हुआ और अन्त में सैनिक कार्रवाई करनी पड़ी, उसका भी अभीष्ट परिणाम नहीं निकला।

इसी प्रकार खाड़ी देशों द्वारा देश में पहुँचे धन से और धर्मान्तरण के द्वारा तथा साम्प्रदायिक दगों के माध्यम से कट्टरतावादी मुस्लिम इस देश का शासन अपने हाथ में लेने के लिए दबाव डाल रहे हैं।

उत्तर पूर्वी क्षेत्र में जन-जातियां विद्रोह के लिए अधिक संगठित हैं। नागालैण्ड और मिजोरम में स्वायत राज्य बनाने की उनकी कार्रवाई तेजी पर है। वहां भी पंजाब को भांति कठिन परिस्थितियां बन गई हैं। लालडेंगा द्वारा मिजोरम में हिंसात्मक कार्रवाइयों को इकतरफा बन्द करके केन्द्रीय सरकार से बातचीत के लिए भारत आने का कदम इसी दिशा में उठाया गया है। यह एक चतुरतापूर्ण सैनिक पग है। नागालैंड की प्रतिबंधित सरकार के तथाकथित राष्ट्रपति ब्रिगेडियर थिङ्गुम्या भारत बर्मा सीमा के उस पार से अपनी शत्रुतापूर्ण कार्रवाइयों का सचालन कर रहे हैं। वे भी केन्द्रीय सरकार से बातचीत करने के इच्छुक हैं।

पिछले अनुभवों के आधार पर हमें इन मामलों में सावधानी बरतने की जरूरत है। क्षेत्रीयता और कठमुल्लापन की प्रवृत्ति देश में बढ़ रही है। १९४७-४८ में जिस प्रकार हैदराबाद के निजाम ने प्रतिरक्षा संचार और विदेश नीति के अलावा अन्य विषयों पर भारत के साथ स्वाधीनता का प्रस्ताव रखा था, वैसी ही मांगें देश में अलग अलग रूपों में सिर उठा रही है। इन सबका कठोरता से दमन किया जाना चाहिए।

पाकिस्तान की भांति दक्षिण में श्रीलंका विदेशी शक्तियों को आधार देकर भारत के विरोध में कार्य कर रहा है। इस प्रकार देश के चहुँ ओर हम लोग दुश्मनों से घिरे हुए हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का सुझाव है कि देश की समस्त राजनैतिक पार्टियां विरोधी एवं शासक दल अपने मतभेदों को भुलाकर और एक जगह बैठकर इन मौजुदा परिस्थितियों पर देशभक्ति की भावना से विचार करें।

आर्यवीर दल का शोक प्रस्ताव

प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के अकस्मात निधन पर आर्य वीर दल हरयाणा प्रान्तीय सम्मेलन गुड़गावां की स्वागत समिति की विशेष बैठक बुलाई गई। गुड़गांव में ३,४ नवम्बर को होने वाला सम्मेलन स्थगित किया गया। इस बैठक में उनकी जघन्य हत्या पर गहरा शोक प्रकट किया। दिवंगत आत्मा को मौन श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए परमपिता परमेश्वर से महान् नेता की सद्गति की प्रार्थना की गई।

रामचन्द्र आर्य स्वागत मन्त्री

सामाजिक बुराईयों के विरोध में आर्य समाज के प्रचार हेतु जनजागरण यात्रा

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए०, बी० एड० कुरुक्षेत्र

२६-८-८४ को गुरुकुल कुरुक्षेत्र की प्रबन्ध समिति व वेदप्रचार मण्डल जिला कुरुक्षेत्र की एक आवश्यक बैठक थी उस दिन यह विचार सभा सदस्यों की सेवा में रखा कि सितम्बर में कालेजों की छुट्टियां हैं क्यों न आर्यसमाज को एक प्रचार यात्रा निकाली जाए और गांवों में आर्यसमाजों की स्थापना कर नवयुवको को आर्यसमाज में संगठित किया जाये। सुझाव को सभी ने पसन्द किया, परन्तु जब हमने कहा कि काम के साथ साथ साधन जुटते जाते हैं तो चौ० सत्यदेवसिंह जी ने कहा कि ठीक है आप युवकों से सम्पर्क करे और यात्रा अवश्य की जायेगी। इसके बाद महाशय भरतसिंह जी व सभा मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी जो उन दिनो कुरुक्षेत्र में ही थे। इनसे सम्पर्क किया तो उन्होंने भी इस कार्य में पूर्ण सहयोग देने का आश्वासन देकर प्रोत्साहित किया। संयोगवश उन्हीं दिनों पूज्य स्वामी ओमानन्द जी का भी गुरुकुल में शुभागमन हुआ तो विचार जानकर उन्होंने नई आर्यसमाज खोलने, साहित्य बांटने का सुझाव दिया। इस प्रकार सभी आर्य महानुभावों का आशीर्वाद प्राप्त कर फल्गु के ऐतिहासिक फल्गु तीर्थ पर जिला की सभी आर्य समाजों की बैठक यात्रा की तैयारी हेतु बुलाई गई जहां लाला भगवान दास जी की अध्यक्षता में यात्रा में पूर्ण सहयोग देने का प्रस्ताव पारित किया गया तथा इस यात्रा के संयोजन व संचालन का कार्यभार श्री धर्मदेव जी को ही सौंपा गया। इस आदेश को शिरोधार्य कर हमने गांवों में घूम घूम कर यात्रा का प्रचार कर ८० युवकों को यात्रा में भाग लेने के लिये तैयार पाया और सभी आर्यों ने विशेष उत्साह दिखाया। स्वामी रुद्रवेश जी ने उदारता पूर्वक यात्रा में समय देना स्वीकार किया तो यात्रा की सफलता में कोई सन्देह प्रतीत न हुआ। लेकिन अब मुख्य समस्या आर्थिक साधनों की थी, इसके लिए गुरुकुल कुरुक्षेत्र के प्रधान चौ० सत्यदेवसिंह ने गुरुकुल की ओर से सीमाओं के अन्दर रहते पूर्ण सहायता का आश्वासन देकर हम युवकों को कुछ आशा बन्धाई। श्री धर्मदेव जी तथा गुरुकुल के आचार्य श्री देवव्रत जी आर्यसमाजी नेता चौ० बिशनसिंह, प्रो० भागसिंह आर्य को मिले तो चौ० बिशनसिंह जी ने उदारता पूर्वक अपना ट्रैक्टर ट्राली यात्रा में देना स्वीकार किया। इसी समय करनाल में मनाई जाने वाली महर्षि दयानन्द बलिदान शताब्दी के आयोजकों ने भी कुछ सहयोग का आश्वासन दिया तथा पाई गांव के चौ० गजेसिंह ने भोजन व्यवस्था में सहयोग का आश्वासन दिया। योजना बोर्ड हरयाणा के अध्यक्ष चौ० ईश्वरसिंह एम० एल० ए० ने यात्रा की सफलता के लिए मनवांछित सहयोग देने का वायदा किया। इस प्रकार इस यात्रा के समस्त साधन परमात्मा की कृपा से जुटते चले गये।

चौ० सत्यदेवसिंह पूर्व पुलिस अधीक्षक तथा वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री कृष्णलाल बधवा तथा आर्य नेता म० भरतसिंह जी ने इस यात्रा को विशुद्ध आर्यसमाजी रखने का सुझाव दिया और कहा कि जो भी व्यक्ति आर्यसमाज का प्रचार करने की इच्छा रखता है उसका सहयोग यात्रा में लिया जाये चाहे वह किसी राजनैतिक पार्टी या आर्य समाज के धड़े से सम्बन्धित क्यों न हो इसलिये हमने सभी धड़ों के नेताओं को बिना किसी भेदभाव के यात्रा में होने वाली जनसभाओं में आमन्त्रित किया।

यात्रा आरम्भ होने से एक दिन पूर्व विद्यार्थी जी आर्यसमाज मन्दिर कैथल में पहुंचे जहां भाई उमेदसिंह जी हमारा इन्तजार कर रहे थे। उस समय विद्यार्थी जी को तेज बुखार था फिर भी दवाई आदि लेकर और उमेद जी गांवों में युवकों को लाने चले गये जब लौटकर आये तो उस समय तक लगभग ५० युवक मन्दिर में पहुंचे चुके थे। मण्डलपति ला० हरिराम जी तथा आर्यसमाज के मन्त्री जी बड़े उत्साह से यात्रियों की आवभगत में लगे हुए थे इन युवकों में कुछ युवक जीन्द जिला के मलेवा गांव के थे। शेष सभी कुरुक्षेत्र व करनाल जिला के चायपुर गांव के भी थे। सभी उस दिन रामायण पाठ सुनकर मन्त्रोच्चारण के साथ सोने चले गये।

प्रातः चौ० सत्यदेवसिंह जी की अध्यक्षता में जनजागरण यात्रा उद्घाटन समारोह का आरम्भ हुआ यज्ञ के उपरान्त श्रीमती राजबाला के मधुर भजन हुए। तत्पश्चात् चौ० बिशनसिंह एडवोकेट, डा० मनोहर लाल, आचार्य देवव्रत जी के व्याख्यान हुए। समारोह के मुख्य अतिथि चौ० ईश्वरसिंह जी मन्त्री योजना बोर्ड ने उद्घाटन स्वरूप हमें जलती हुई मशाल भेंट की तथा सहायतार्थ ११०० रुपये की नकद राशि भेंट की। प्रस्थान के समय कैथल आर्य वीर दल की ओर से १०१ रुपये और बहुत सा साहित्य ला० हरिराम जी ने रास्ते में मुफ्त बांटने के लिये भेंट किया। चलने से पहले हमने अपने जत्थे को छः भागों में बांट कर उनके नेता निश्चित किये व साईकिल वाले जत्थे का नेतृत्व शिक्षक कृष्णपाल को सौंपा जिनके पास साईकिलें नहीं थी उनका नियन्त्रण पं० उमेदसिंह को दिया गया और इस प्रकार कैथल के मुख्य बाजारों में गीत गाते व नारे लगाते हुए हमारा जत्था मंजिल की ओर बढ चला। साईकिलों पर लहराते ओ३म् ध्वज और आदर्श वाक्यों के पट्टों को लिये २७-२८ वर्ष के प्रोफेसरों, इन्जिनियरों व विद्यार्थियों को देखने बाजारों में लोग उमड़ पड़े और महर्षि दयानन्द की जय-जयकार करने लगे।

हमारा पहला पड़ाव तितरम गांव में था जहां चौ० जोगीराम आर्य ने सब व्यवस्था का उत्तम प्रबन्ध किया था वहां भोजनादि के बाद एक विशाल जनसभा कर आर्यसमाज की स्थापना कर दी गई परन्तु जब हम चलने लगे तो हमारे साथ चलने वाला ट्रैक्टर खराब था तो जोगीराम जी ने अपना ट्रैक्टर जाखोली तक देकर समस्या को हल कर दिया।

क्रमशः

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

१०, ११, १२ नवम्बर ८४ को

जोधपुर में महर्षि निर्वाण शताब्दी

समस्त राजस्थान के श्रद्धालु नर नारी आबाल-वृद्ध आयोजन में सम्मिलित होंगे। उच्चकोटि के विद्वान् संन्यासी उपदेशक भजनमण्डलियां आमन्त्रित हैं।

केन्द्रीय और प्रान्तीय नेताओं का शुभागमन होगा। खुले हृदय और मुक्त हस्त से दान राशि देवें। ऐसे अवसर जीवन में बार बार नहीं आते। स्थान :

महर्षि दयानन्द सरस्वती स्मृति भवन, जसवन्त कालेज के पास, दयानन्द मार्ग, जोधपुर (राजस्थान)

मन्त्री—रतनलाल द्विवेदी एडवोकेट

दीपावली के शुभावसर पर

आर्यसमाज कंवारी में विशेष समारोह

दीपावली के अवसर पर सायं ४ बजे यज्ञ से सभा प्रारम्भ हुई जिसमें प्रधान श्री अतरसिंह आर्य ने महर्षि दयानन्द के जीवन पर प्रकाश डाला तथा आज के शुभ अवसर पर सभी से कोई एक बुराई घटाने का संकल्प लेने का आह्वान किया। [illegible] सिंह मुन्शीराम जी के भजनोपदेश हुए। मन्त्री

आर्यसमाज कंवारी जि० हिसार

धूम्रपान विरोधी सम्मेलन सम्पन्न

गत दिनों पलवल के कानूनगो मोहल्ले के ऐतिहासिक 'बिहारी भवन' में आर्य वीर दल पलवल शहर के तत्वावधान में एक विशाल धूम्रपान विरोधी सम्मेलन आयोजित किया गया गया। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री सुभाष कतियाल ने युवकों से धूम्रपान की बुराई त्यागने का आह्वान किया। सम्मेलन के अध्यक्ष पद से बोलते हुए कर्नल रामजीलाल मंगला ने कहा कि आर्य वीर समाज में फैली कुरीतियों को दूर करने में आगे आएं।

उपमन्त्री सार्वदेशिक आर्य वीर दल पलवल शहर

वैदिक विवाह सम्पन्न

तिथि कार्तिक शुक्ला द्वितीय संवत् २०४१ तदानुसार २६ अक्तूबर १९८४ को श्री रत्नप्रकाश कानूनगो महम जिला रोहतक निवासी की सुपुत्री आयुष्मती नीलम के साथ श्री विनोदकुमार सुपुत्र श्री कृष्णगोपाल जीन्द निवासी का शुभ विवाह प्रत्येक प्रकार के दिखावे बाह्य-आडम्बरों एवं दहेज को तिरोहित करके वैदिक रीति पूर्वक संस्कार सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर आर्यसमाज महम के प्रधान श्री वैद्य बलराज ने इस वैदिक संस्कार की विशेषता और महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए नव-युगल को आशीर्वाद दिया। आर्यसमाज महम को श्री रत्नप्रकाश जी ने ५१ रुपये दान दिया।

दोनों पक्ष के सभी नर नारियों पर इस आदर्श विवाह संस्कार का अत्युत्तम प्रभाव रहा। आचार्य राजकुमार एम० ए०

आर्यसमाज महम जिला रोहतक

जिला विज्ञान मेला

आर्य उच्चतर मा० विद्यालय सिरसा में जिला विज्ञान मेला दिनांक १०-१०-८४ को लगा। इस मेले का उद्घाटन विद्यालय प्रबन्धक डा० आर० एस० सांगवान ने किया। विद्यालय के प्रिंसिपल श्री द्वारका प्रसाद जिन्दल, जिला विज्ञान विशेषज्ञ श्री दर्शन दयाल शर्मा व जिला शिक्षा अधिकारी श्री रामप्रकाश गिरधर ने विज्ञान मेले का सर्वेक्षण व निरीक्षण किया। इसमें जिले के ६० विद्यालयों ने भाग लिया।

जिला विज्ञान मेले का समापन समारोह ११-१०-८४ को जिला शिक्षा अधिकारी की अध्यक्षता में हुआ। इस अवसर पर गुड़गांव से आए प्रो० बलबीर शर्मा, डा० आर.एस. सांगवान, श्री गिरधर तथा प्रिंसिपल श्री द्वारका प्रसाद ने विज्ञान का महत्त्व समझाया। पुरस्कार हमारे विद्यालय सिरसा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

द्वारका प्रसाद जिन्दल

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना आवेदन पत्र "मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक" के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिए।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिये।

चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक—१२४००१

शोक समाचार

१—आर्यसमाज होली मोहल्ला करनाल के अन्तरंग सदस्य एवं रमेश्वरदास कन्या पाठशाला की प्रबन्धक समिति के सदस्य श्री रूपलाल जी बजाज का १५-१०-८४ को कुछ दिन बीमार रहने के पश्चात् निधन हो गया। वे आर्यसमाज के कार्यों में सदा अग्रणी रहते थे।

२—आर्यसमाज के उपप्रधान तथा आर० डी० कन्या पाठशाला की प्रबन्धक समिति के उपप्रधान श्री नरदेव जी शास्त्री के भाई का २७-१०-८४ को सोनीपत में निधन हो गया। आप भी आर्यसमाज के कार्यों में सराहनीय सहयोग देते थे।

३—आर्यसमाज माडल टाउन करनाल के कोषाध्यक्ष श्री विशम्भरनाथ जी महता का २८-१०-८४ को देहावसान हो गया। उनके निधन से करनाल आर्यसमाज की गतिविधियों को भारी धक्का लगा है।

परमपिता परमात्मा से प्रार्थना है कि इन दिवंगत आत्माओं को शान्ति प्रदान करे और इनके परिवारजनों को यह दुःख सहन करने की शक्ति प्रदान करे। रामदेव कृष्ण आर्य

सभा अन्तरंग सदस्य

४—आर्यसमाज मोरा रसूलपुर जिला सोनीपत के मन्त्री श्री ज्ञानीराम आर्य के पिता श्री [illegible] जी का २७ अक्तूबर को निधन हो गया। आपने अपने ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना करने व शुद्धि आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया था। परमात्मा से प्रार्थना है कि इनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे। ओमप्रकाश आर्य

हत्या के षड्यन्त्र में दो और सुरक्षाकर्मी भी

(हमारे कार्यालय संवददाता द्वारा)

नई दिल्ली, ५ नवम्बर। जांच अधिकारी दिल्ली पुलिस के उन दो सुरक्षा अधिकारियों से पूछताछ कर रहे हैं जिनका श्रीमती इन्दिरा गांधी के कायर हत्यारों से सम्बन्ध था। ये दोनों अधिकारी उच्चपद पर नहीं हैं, लेकिन पता चला है कि जिस दिन नई दिल्ली के एक गुरुद्वारे में हत्यारों ने अमृत छक कर श्रीमती गांधी की हत्या का संकल्प लिया था, ये दोनों अधिकारी उस समय उपस्थित थे।

जांच में पता चला है कि सतवन्तसिंह ने ग्रन्थ साहब पर हाथ रखकर कसम खाई थी, जबकि बेअन्तसिंह ने अमृत छका था। सूत्रों के अनुसार इन दोनों की सदरबाजार के आदा किनारो में निरन्तर मुलाकात होती थी। गुरुद्वारे में इन दोनों को अशोक विहार के एक ज्ञानी ने शपथ दिलाई थी।

सूत्रों के अनुसार बेअन्तसिंह को थाने में ले जाकर गोली नहीं मारी गई जैसा कि बी०बी० सी० ने कहा बताते हैं। बेअन्तसिंह श्रीमती गांधी पर गोली चलाने के बाद भाग खड़ा हुआ, लेकिन अन्य सुरक्षा गार्डों ने उसे पकड़ लिया। इस बीच बेअन्तसिंह ने फिल्मी स्टाईल से अचानक झपटा मारकर एक अन्य सुरक्षा गार्ड की स्टेनगन छीन ली। स्टेशनगन छीनकर जसे ही उसने ललकारा, तत्काल दूसरे सुरक्षा गार्ड ने उस कायर को भून दिया।

दूसरी ओर हस्पताल के सूत्रों के अनुसार दूसरा हत्यारा सतवन्त सिंह खतरे से बाहर नहीं है। उसके लीवर में पन्चर है। उसे टयूबादि से भोजन दिया जा रहा है। सुरक्षा की दृष्टि से उसको स्थानान्तरित किए जाने की सम्भावना है।

डा० उसे बचाने का पूरा पूरा प्रयास कर रहे हैं। अभी तक उसका कोई भी मित्र या सम्बन्धी उससे मिलने नहीं आया है। अस्पताल के चारों ओर कड़ी सुरक्षा के प्रबन्ध हैं।

सतवन्त को शपथ दिलाने वाले एक ट्रांसपोर्ट कम्पनी के मालिक ज्ञानी के दामाद ने रहस्योद्घाटन किया है कि उसका ससुर उग्रवादियों की सहायता के लिये प्रतिमास कुछ रुपया अमृतसर में किसी उच्चाधिकारी को भेजा करता था। इस ज्ञानी की गतिविधियां संदिग्ध बताई जाती है।

सूत्रों के अनुसार हत्यारे सतवंतसिंह के बाद पुलीस एवं गुप्तचर विभाग के लिए हत्या के षड्यन्त्र की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी यही ज्ञानी है। इसके अशोक विहार स्थित घर पर छापा मारा गया है।

(हिन्दुस्तान ६ नवम्बर ८४ से साभार)

कपूत पैदा होरे

कपूत पैदा होरे, धर्म को खोरे, लज्जा दिया हे देश हरयाणा
धर्म और कर्म, लाज और शर्म, डुबो दिया हे ना ठोड़ ठिकाना
गुंडे बुलवाके, मूंछ कटवाके, बना दिया हे जनाना बाना
बहन बेटियां को, बड़ी छोटियों को, सिखा दिया हे कुकर्म कराना
सारे नर नारी, बने व्यभिचारी, बता दिया हे कि गर्भ कढाना
और देखो चाला, नाम गोशाला, खुला दिया हे दुष्ट गोखाना
शराब और अंडे, उड़ा रहे गुंडे, जता दिया हे कि मौस उड़ाना
लफंगे लुच्चे, फिरें गली कूचे, बना लिया हे चिलम का बहाना
मुस्लों को संग लेके, रुपये दे दे के, बढा दिया हे गौ कटवाना
अपनों से तकरार है, गैरों से प्यार, लड़ा दिया हे ग्राम ठोला पाना
माता को धिक्कार, है पिता को फटकार, पैदा किये हे कि कोम लजाना
'नित्यानन्द' आओ, आर्य बन जाओ, सुना दिया हे ऋषि का आना

क्या देवयज्ञ त्रेता युग की कल्पना है

श्री युधिष्ठिर जी मीमांसक ने अपनी वैदिक स्वर मीमांसा पुस्तक के पृष्ठ ८७ पर लिखा है कि वेदार्थ का आधि दैविक तथा आध्यात्मिक जगत् है, परन्तु कालान्तर में इनके साथ वेदार्थ का एक गौण क्षेत्र यज्ञ भी सम्मिलित हो गया। मनुष्यों की बुद्धि का ह्रास देख कर ऋषियों त्रेतायुग के आरम्भ में अग्नि होत्र दर्श पौर्णमास विविध श्रौत यज्ञों की कल्पना की। उत्तर काल में वेद के वास्तविक अर्थ लुप्त हो गये और गौण याज्ञिक अर्थ ही प्रधान हो गये। मन्त्रों को यज्ञ कर्म के साथ काल्पनिक गठबन्धन कर्मकाण्ड में मन्त्रों का जो विनियोग किया गया वह इस प्रकार काल्पनिक है—जैसे रामचरित निदर्शन के लिये रची गई। रामायण की चौपइयों का रामलीला के पात्रों के साथ गठ बन्धन है। अतः यज्ञों के पदार्थ होने के कारण याज्ञिक अर्थ गौण है। मन्त्रों का याज्ञिक अर्थ तो ऊपर से जोड़ा गया है। इसका वेद के साथ कोई सम्बन्ध नहीं, साक्षात् कोई सम्बन्ध नहीं है क्योंकि यज्ञों का आरम्भ त्रेता युग के आरम्भ में हुआ। अतः पूर्व भावी वेद में पश्चात् भावी यज्ञों का विधान कैसे हो सकता है। अतः वेद के जिन मन्त्रों यज्ञ इष्टि ऋतु आदि शब्दों का निर्देश है। उनमें भी त्रेता युग के आरम्भ किये गये। द्रव्यमय यज्ञो का वर्णन नहीं है।

श्रीमान् जी यदि यज्ञ कर्म त्रेता युग के ऋषियों की कल्पना है, तो श्री स्वामी दयानन्द जी, ने अपने सत्यार्थ प्रकाश संस्कार विधि आदि पुस्तकों में यज्ञ करने का विधान क्यों किया है और यज्ञ के लाभ तथा वेदमन्त्र क्यों लिखे हैं तथा आर्यवर्त्त शिरोमणि राजे-महाराजे ऋषि महर्षि सब यज्ञ करते थे। यदि अब भी यज्ञ करें तो सब सुखी हो जावें।

स्वामी रामेश्वरानन्द गुरुकुल घरोंडा करनाल

सुखी वही नर-नारी

सुखी वही नर-नारी, जिस घर में पले गौ माई। टेक
भोग रहे सुख भारी, खावें घी दूध मलाई।
नहीं हो बिमारी मूत्र की बने दवाई।
गोबर मिट्टी से गर लिपता रहे सफाई।
सीत वही दूध खाती घर में खुश रहे बिलाई।
जो बिल्ली घर में रहे मुस्सों पर आवे तबाई।
गौ का दूध पीकर मिलकर रहें भाई भाई।
प्रेम से कुटुम्ब रहें आपस में ना करें लड़ाई।
मुफ्त में बैल मिलें न खर्च हो एक पाई।
बैल हल में चलें खेती की करें कमाई।

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जो कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

भारत सरकार द्वारा पंजीकृत पत्र सं० 23207/73 पंजि० सं० P/RTK 49 फोन ३६२२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४७ १४ नवम्बर १९८४ वार्षिक शुल्क १५) विदेश में ५ पौंड एक प्रति ३० पैसे

पहली भेंट

जरा संभल के

लेखक—श्री भीमसैन दीवान गुड़गांव

हमारे देश ने स्वतन्त्रता उपरान्त बहुत कुछ बढाया है। उपज भी, निर्यात भी, दस्तकारी भी, शिल्प भी, शिक्षा भी यदि कमी रह गई है तो वह चरित्र की, जिसे हमने खोया ही खोया है। दैनिक "हिन्दुस्तान टाइम्स" दिनाक २५-७-८४ के अनुसार पंजाब यूनिवर्सिटी की परीक्षाओं की देखरेख हेतु भारत सरकार ने सेना को -५ बटालियन रखी हैं। यह एक अकाट्य प्रमाण है इस बात का कि अब सिविल प्रबन्ध की अपेक्षा सैनिक प्रबन्ध ही प्रिय बन रहा है। इस पहलू में सन् १९४७ से १९८४ तक सैनिक प्रबन्ध में वृद्धि ध्यान देने योग्य है। ब्रिटिश गवर्नमैंट समस्त भारत में शान्ति व्यवस्था हेतु केवल दस हजार सिपाही रखती थी। अब पुलिस की भर्ती पर दृष्टि डालें तो कानों को हाथ लगाने पड़ते हैं। इन सैंतीस वर्षों में कितनी गुणा पुलिस फोर्स बढ चुकी है। रेलवे में देखें तो रेलवे पुलिस तथा स्पेशल पोलिस है है। एक C. R. P. F. (सेंट्रल-रिजर्व पुलिस फार्स) दूसरी B. S. F. (बार्डर स्क्योर्टी फोर्स) आन्तरिक शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए एक और फोर्स—होम गार्डज, नेशनल गार्डज आदि आदि बन गई हैं। ऐसा समय आ गया है कि पोलिस की नाक के नीचे खुले बन्दों अपराध हो रहे हैं। चौंक पर पुलिस ट्रफिक कण्ट्रोल के लिये खड़ी है, परन्तु उनके देखते ही देखते ट्रैफिक रूल्ज का उल्घन हो रहा है।

मुझे एक बार गुड़गावां में पुलिस लाइन्ज में एस. एस. पी. की प्रधानता में हुए जलसे में भाषण देने का अवसर मिला, जिसमें मैंने बर-मला कह दिया कि चौंक पर खड़ा ट्रैफिक कांस्टेबल यार दोस्तों से गप शप लगाता रहता है। उसकी उपस्थिति वह न होने के समान है, जबकि उसकी उपस्थिति में ही ट्रैफिक रूल्ज की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं। यही कारण है कि दुर्घटनाए बढ रही हैं। न किसी को कोई जिम्मेदारी रही न ही दिलचस्पी।

औद्योगिक संस्थाओं की देखरेख के लिए पृथक् पुलिस है। इसके अतिरिक्त अन्य विभागों-ऐक्साइज, पिसजर टैक्स आदि कई प्रकार के यूनट बन गए हैं। वेतनों का बोझ बढ रहा है। उच्च अधिकारियों और मन्त्रियों सुरक्षा हेतु पुलिस अलग है। न्यायालयों के लिए भी अलग पुलिस व्यवस्था है। यहां तक प्रत्येक विभाग अपनी सलामती के लिये पुलिस की मांग करता है।

इतना कुछ होने पर अपराधों में कोई कमी नहीं हो रही, प्रत्युत वे बढ ही रहे हैं। अच्छे होसोहवास रखने वाला पुलिस के सामने किसी निरपराध की हत्या करके नो दो ग्यारह हो जाता है। रात्रि को ट्रैफिक के लिये प्रकाश की समुचित व्यवस्था होने पर ट्रकों, कारों, मोटरसाइकिलों का बिना बत्ती के निकल जाना आम बात हो गई है। इसे कला और उस्तादी समझा जाता है। यह सीना जोरी और दुःसाहस नहीं तो और क्या है? किसी के दिल में कानून का सम्मान नहीं है। कानून लागू करने वाले खुद ही अपराधी हैं बेखबर हैं, बेपरवाह हैं, तो सुव्यवस्था कैसे बर करार रहे?

पंजाब में जो हालत हुई, सभी ने देख ली। निदान सेना को ही बुलाना पड़ा। अब समय यह सबक पेश कर रहा है कि अब सेना ही शेष रह गई है, जिस पर भरोसा किया जा सकता है। वस्तुतः सेना ने ही हालात को काबू किया। अन्य सभी यूनट बेबस होकर रह गये थे। बैंकों में कैश का लूटना रोज का सिलसिला बन गया है। इसी से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि व्यवस्था की कहा तक मिट्टी पलीत हो चुकी है। पुलिस से विश्वास हटा, हथियारों का भी निरादर हुआ। शुक्र है कि सेना में पार्टी बाजी की की बीमारी नहीं पहुँची। सेना पर बोझ पड़ने से न मालूम हालात कहां से कहां ले जाएगे, यह समय ने ही बताना है।

पाकिस्तान ने जो मिलट्री रूल की शक्ल पेश की है वह छिपाई नहीं जा सकती। वहां सैनिक दस्तों का जनता के प्रति रवैया, निगरानी एक दोनी किस्म की शक्ल ले रही है। वहां तो सेना ही सेना चारों तरफ छा जाने से, अपने महत्त्व को ही कम कर रही है। हमारे यहां जन तन्त्र (डेमोक्रेसी) अपने सम्मान को खो रहा है। अब तो यह हालत है, कि सेना बुलाओ और काम चलाओ वाली स्थिति बनती जा रही है। कहाँ पहले एक जमादार, थानेदार, फिर एस० एच० ओ० अपनी कार्य क्षमता के बल पर कानून शिकनी नहीं होने देता था। कहाँ आज की हालत कि जितनी पुलिस अधिक हो गई है, लूटमार उससे भी अधिक हो गई है। किसी में यह हिम्मत नहीं कि किसी अनैतिक तत्त्व के सम्मुख चूं भी कर सके।

वह भी समय था जब सन् १९६२ में चीन के साथ युद्ध के दौरान सेना के जवानों की पीठ ठोंक कर लोगों ने कितना उत्साह दिखाया था। सन् १९७१ के भारत-पाक युद्ध के समय भी जनता ने सेना का मनोबल बढ़ाकर यह बना दिया था कि सारा देश उनकी पीठ पर है। इसी कारण हमारी शानदार विजय हुई। इन घटनाओं से पोलिस की भांति सेना आगे आई। कहीं उसकी कीमत न गिर जाए, यह सवाल सोचने का है। एक समय था, जब सरपंच कस्बा या ग्राम का प्रमुख चौधरी अपने इलाके में गलत को गलत बतलाकर अपनी नैतिकता की बिना पर शरारत को दबा देता था तथा अपने उचित निर्णय से शान्ति बनाए रखता था जबकि अब शहर का चौधरी ही किसी गलत बात का समर्थन कर अपना रसुख बढ़ा लेता है। अपने दब दबे और प्रभाव का प्रयोग कर लेता है। इस प्रकार वह अपने देखते ही देखते गलत परम्पराओं को पनपने का अवसर देता है। इस प्रकार वह अपने निहित स्वार्थों की पूर्ति हेतु समाज में अव्यवस्था, बेचेनी को उभारने का निन्दनीयकर्म करता है।

(शेष ६ पर)

हमारी पूर्वी देशों की यात्रा

ब्र० रामवीर शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

(गतांक से आगे)

थोड़ी थोड़ी दूर पर खड़ी हुई वायु कन्यायें ये सब क्रियायें करके दिखा रही थी, जो कि खतरे की घंटी बजने पर आवश्यक होती हैं, प्रत्येक की सीट के नीचे एक सुरक्षित छतरी के आकार की वस्तु होती है, जिसे विमान में दुर्घटना या कोई इंजन की न्यूनता होने पर करना चाहिए, वे सब दिखा दिखाकर बता रही थी, ऐसी अवस्था में आक्सीजन कैसे लिया जाता है और अपने को कैसे सुरक्षित रखा जा सकता है। ये सब बातें हमें बताई जा रही थी तो सारे विमान में एक तरह की स्तब्धता सी छाई थी, जो इस तरह की यात्रा के अभ्यस्त थे, वे तो सहज ही दिखाई दे रहे थे लेकिन हमारे जैसे नवीन यात्रियों की मनः स्थिति कुछ उद्वेग और विह्वल सी थी। हमें ऐसा लग रहा था कि मानो ये सारे नियम और तरीके घोलकर पिलाये से जा रहे हों। ये सब हवाई सूत्र और संहिताएँ बरबस कण्ठ के नीचे उतर रही थी हमारे जैसे नवीन यात्रियों का चित्त एकदम अपनी सब चंचल वृत्तियों को छोड़कर उन वायु कन्याओं के द्वारा दिखाये जा रहे प्रत्येक संकेत पर ही केन्द्रित था।

उपरोक्त सब नियमादि बताने के बाद सभी यात्रियों से यह अनुरोध किया गया कि वे धूम्रपान न करें। अभी हम दिल्ली से बैंकाक के लिए प्रस्थान कर रहे हैं। हमारी यात्रा निर्विघ्न सम्पन्न हो ऐसी अपने भगवान् से प्रार्थना करें। हमारी यात्रा केवल साढे चार घण्टे की है। कृपया आप शान्ति पूर्वक बैठे रहें। जैसे ही दूरध्वनी यन्त्र से ये वार्ता समाप्त हुई हमारे सामने सुन्दर सुन्दर गिलासों में जूस, चाय, बीयर आदि लेकर वायु कन्यायें उपस्थित हो गई जिसको जो चाहिए वह उसे ले लेता। हमने केवल दो दो गिलास जूस पिया। हमें कुछ ऐसा अनुभव हो रहा था कि मानो हम अपने स्वप्न लोक में किसी परिदेश का भ्रमण कर रहे हों। कभी कहानियां पढ़ी थी कि ऐसा ऐसा होता है। प्रत्यक्ष में देखा तो वे कहानियां न होकर कहानियों में रंग बिरगे विचित्र पात्र भी थे जिन्हें देखते ही बनता था। हमारे देश की विशाल राजधानी दिल्ली के पालम हवाई अड्डे से जब हम ऊपर उड़े तो यह विशाल महानगरी छोटी सी दिखाई देने लगी जिस तरह नीचे से आकाश में तारे दिखाई देते हैं। वैसे ही विशाल नगरों में रात्रि के प्रकाशक दिखाई दे रहे थे। कुछ ही क्षणों में हम दिल्ली से दूर बहुत दूर हो गये। ४०० यात्रियों से सवार यह विशाल विमान लगभग ३५००० फुट की ऊंचाई पर १२०० किलोमीटर प्रति घण्टा की गति खुले नभमण्डल में उड़ता हुआ जा रहा था, बराबर में लगी शीशे की बन्द खिड़की से नीचे देखने पर रात्रि में कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, कहीं कहीं छोटी या बड़ी बस्ती मे प्रकाश के कुछ चिन्ह दिखाई देते थे। जैसे जैसे हम आगे बढते गये दिन का प्रकाश होने लगा। ध्यान से देखा तो गहरे नीले समुन्द्र में छोटे-बड़े समुन्द्री विमान या नौकायें दिखाई दे रही थी किनारो के कुछ दूर तक। आगे बढे तो केवल नीला समुद्र ही दिखाई दे रहा था। कहीं कहीं बादल नीचे दिखने में बाधक होते थे, बहुत लम्बे समुद्र में एक दो जगह विशाल समुद्री यान दिखाई देते थे, वे विशाल होते हुए भी ऊपर से छोटे ही दिखाई देते थे, अनुमान से जाना जाता था कि इतनी दूर केवल बड़ा विमान ही हो सकता है और कुछ नहीं। हमारे विमान की गति से दिल्ली और बैंकाक (थाईलैण्ड की राजधानी) की दूरी का अनुमान सरलता से लगाया जा सकता है।

क्योंकि हमारा यह विमान अविराम गति से दिल्ली और बैंकाक के मध्य कहीं नहीं रुका, चलता ही रहा। लेकिन आश्चर्य होता है आज के मानव मस्तिष्क पर जिसने वर्षों की दूरी को महीनों में और महिनों की दूरी को दिनों में तथा दिनों की दूरी को घण्टों में व घण्टों की दूरी को मिनटों और सैकिण्डों में तय कर दिया। प्रणाम है उन वैज्ञानिकों की कल्पना बुद्धि को, जिसने अपने ज्ञान और विज्ञान के कौशल से इन लम्बी दूरियों को समेट कर रख दिया है।

हमारे उस विशाल विमान की बनावट और साज सज्जा का अनुमान केवलमात्र इस बात से लगाया जा सकता है कि जब हम एयर इण्डिया बस से उतरकर विमान पर चढ़ने लगे तो विमान के प्रवेश द्वार तक ३५ के लगभग सीढ़ियां थीं। विमान की सीटें कई तरह विभिन्न श्रेणियों में बटा हुआ होता है। सबसे आगे प्रथम श्रेणी उससे पीछे द्वितीय श्रेणी इनके मध्य आधुनिक उपकरणों से निर्मित दो दो शौचालय हाथ धोने हेतु साबुन, पानी आदि। इनके साथ ही नवीन उपकरणों से सुसज्जित रसोईघर और रसोईघर के साथ ही एक स्टोर रूम जिसमें एक बड़ा तहखाना है जिसमें खाद्य सामग्री, पेय पदार्थ, हीटर बाक्स, रैफ्रीजेटर आदि सब तरह का सामान व्यवस्थित ढंग से रखा हुआ होता है जिसमें से समय समय पर यात्रियों को खाद्य व पेय सामग्री उपलब्ध होती रहती है। विमान परिचारिकायें कभी जल, कभी जूस, चाय, बीयर आदि देती है, उनके कुछ देर बाद हल्का प्रातराश (नास्ता) देती हैं। पुनः कुछ देर बाद सामिष-निरामिष (शाकाहार-माँसाहार) यात्रियों की इच्छा के अनुसार देती हैं। यात्रियों के मनोरंजन के लिये विमान में टेपरिकार्ड, फिल्म आदि के साधन होते हैं, जिन्हें सुनना हो कानों में लगाकर सुन सकते हैं। वह साधन सबको वायु कन्याओं द्वारा वितरित कर दिया जाता है। इस तरह लम्बी यात्रा सुगम ढंग से व्यतीत हो जाती है, जिसका यात्री को भान भी नहीं हो पाता।

हमारे विमान के बैंकाक पहुंचने से पूर्व हमें सूचित किया गया कि अब आप कुछ ही देर में बैंकाक पहुँचने वाले हैं, सावधान हो जावें तथा अपनी अपनी घड़ियां एक घण्टा चालीस मिनट आगे कर लेवें, जब कि भारतीय समय के अनुसार हम बैंकाक में ६.१५. पर उतरे थे। वहां आठ बजे थे। हमारे देश में उस समय सूर्योदय का समय था और वहां दिन बहुत चढा हुआ था। विमान से उतरने से पहले घोषणा पत्र वितरित कर दिया गया था जिसको पूर्ण करके अपने पास रख लिया जाता है और विमान से उतरकर विमान क्षेत्र से बाहर जाते समय दिया जाता है। उसके बिना दिये बहार नहीं जा सकते।

जैसे जैसे विमान शनैः शनैः बैंकाक के एयर पोर्ट पर उतरने लगा तो हमने ऊपर से बैंकाक शहर का पूर्ण नक्सा देखा। ऊपर से पूर्ण शहर का साफ नक्सा दिखाई दे रहा था, बड़े ऊंचे ऊंचे भवन तथा छोटे छोटे खपरैलों की छतों वाले घर भी ऊपर से दर्शनीय लगते थे। प्रातःकाल का चढता हुआ सूर्य शहर की आभा को और भी अधिक बढा रहा था हरे हरे पेड़ों से युक्त और ऊपर से प्रातः कालीन सूर्य की ज्योत्स्ना ने शहर को दर्शनीय सा बना रखा था फिर शहर के ऊपर मण्डराता हुआ हमारा विमान और उसमें प्रथम बार यात्रा करने वाले यात्रियों को स्वतः ही अच्छा लगता था। जैसे ही विमान ने बैंकाक की भूमि को स्पर्श किया।

क्रमशः

घनाक्षरी

तन को करत नाश, धन को करत नाश,
दुःख को निवास सुख जरबे को डर है,
दारू पी परे हैं वहीं, नाली में डरे हैं वही,
जीवित मरे हैं, खाट, परबे को डर है।
सड़ के बनी शराब, अन्न के बनी शराब,
बनी है बिगर के, बिगरबे को डर है,
इन्दु नित आवै दोष, कितनै गिनावै दोष,
विष की बाहिनी बड़ी, मरबे को डर है।

—भारतेन्दु, 'इन्दु' महोबा (हमीरपुर)

सम्पादकीय:-

सिख मुख्य ग्रंथियों की राजनैतिक भूमिका

दरबार साहब अमृतसर के प्रमुख ग्रंथियों की चर्चा आजकल आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों में हो रही है। जिस प्रकार मन्दिरों में पुरोहित होते हैं, उसी प्रकार गुरुद्वारों में ग्रन्थी नियुक्त किये जाते हैं। उन्हें शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी से वेतन तथा पूरा सम्मान मिलता है। वास्तव में पुरोहितों तथा ग्रंथियों को जितना भी सम्मान दिया जाये उतना ही थोड़ा है क्योंकि पुरोहित का कार्य पर-हित करना तथा ग्रन्थियों का कार्य सिख ग्रंथों के अनुसार उनका धर्मप्रचार (पाठ) करना है। धर्म मनुष्यों को मार्ग दिखाता है, बुरे कर्म करने से बचाता है। जिन मनुष्य में धार्मिकता नहीं, वह पशु समान है। इसी कारण ग्रंथियों को धर्म प्रचार के कारण सम्मान की दृष्टि से देखा जाता रहा है, परन्तु वर्तमान ५ मुख्य ग्रन्थी अपना धर्म प्रचार कार्य छोड़कर राजनीति की दलदल में फंसने लगे हैं। उन्होंने हाल ही में शिरोमणी अकाली दल की तदर्थ समिति को भंग करके नई तदर्थ समिति का गठन किया है। सभी जानते हैं कि अकाली दल एक राजनैतिक दल है जिसने गत ३ वर्षों से भारत सरकार से अपनी अनुचित तथा राष्ट्रद्रोही मांगे मनवाने के लिए हिंसक आन्दोलन चला रखा है। उनके आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव में पृथक् खालिस्तान की बू आ रही है। यह जानते हुए भी ५ सिख मुख्य ग्रन्थियों ने धर्म प्रचार कार्य छोड़कर राजनीति में प्रवेश करते हुए अपनी पसन्द की कमेटी बनाई है। सरदार प्रकाशसिंह मजीठा कार्यकर्त्ता प्रधान को इसलिये हटाया है क्योंकि उन्होंने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन पर शोक सन्देश भेजा था। इसके विपरीत आकाशवाणी तथा समाचार पत्रों में इन मुख्य ग्रंथियों की ओर से श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन पर शोक सन्देश प्रसारित होने पर सहमति प्रकट करने की बजाय इस समाचार का प्रतिवाद कर दिया। नैतिकता का तकाजा तो यह था कि वे कहते कि हम भी अन्य भारत-वासियों के साथ प्रधानमन्त्री की हत्या पर शोक संवेदना प्रकट करते हैं परन्तु उन्होंने कहा कि "हमने कोई शोक सन्देश जारी नहीं किया"। सभी अनुभव करते हैं कि पाकिस्तान, चीन तथा इंग्लैण्ड आदि देश भारत में एकता तथा शान्ति का वातावरण नहीं देखना चाहते। अवसर मिलते ही वे भारत को हानि पहुंचाने के दाव में रहते हैं। परन्तु श्रीमती इन्दिरा गांधी की जघन्य हत्या पर उन्होंने भी अपनी शोक संवेदना प्रकट करने के लिए अन्तिम संस्कार में भाग लिया और उग्रवादी तत्वों की निन्दा की।

परन्तु इन मुख्य ग्रन्थियों ने इस अवसर पर अपनी उदारता का परिचय नहीं दिया और उग्रवादियों की निन्दा करना तो दूर रहा, शोक संवेदना भी प्रकट नहीं की।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की उग्रवादियों द्वारा हत्या करने पर अनेक स्थानों पर उग्रवादियों के समर्थकों ने अपने घरों तथा दूकानों पर दीपमाला की तथा मिठाइयां बांटी। यह उनकी स्पष्ट देशद्रोह की कार्यवाही थी। उनकी इस राष्ट्रद्रोही कार्यवाही से ही राष्ट्रप्रेमी जनता में रोष फैलना स्वाभाविक ही था। इसी कारण जिन घरों तथा दुकानों पर दीपमाला की गई, उनमें आग लगाई गई। इसमें सन्देह नहीं कि इस अवसर पर असामाजिक तत्वों ने भी आग लगाने तथा लूटमार करने में अपने हाथ रंगे। इसकी भर्त्सना होनी चाहिए और इस प्रकार के अपराधियों को दण्ड भी मिलना चाहिए।

परन्तु सिख मुख्य ग्रन्थी उन दिनों चुपी क्यों साधे बैठे थे। जिन दिनों भिण्डरवाला के समर्थक पंजाब में बसों में से एक ही समुदाय की सवारियों को नीचे उतारकर उन्हें गोलियों से भून रहे थे? हरयाणा की जनता को हानि पहुंचाने के लिए पंजाब की सीमा में बनने वाली सतलुज व्यास लिंक नहर की खुदाई को रोकने के लिए आन्दोलन कर रहे थे और इन्हीं उग्रवादियों ने भाखड़ा नहर को दो बार काटकर हरयाणा में करोड़ों रुपये की फसलों को बर्बाद किया तथा कई स्थानों पर पानी पीने तक की अप्राप्ति की नौबत लाई। उग्रवादियों ने दो बार विमानों का भी अपहरण किया। परन्तु इन ग्रंथियों ने इस राष्ट्र विरोधी कार्यवाही की निन्दा करने का साहस नहीं किया। गुरुद्वारों में हिंसक अपराधियों को शरण दी गई और वहां राष्ट्र विरोधी खुलम-खुल्ला गतिविधियां की गई। परन्तु मुख्य ग्रंथियों ने उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही न करके अपने धार्मिक कर्त्तव्यों का पालन नहीं किया। इससे सिद्ध हो रहा है कि ये ग्रन्थी राजनैतिक दलदल में फंसने लगे हैं। धार्मिक प्रवचन करने के स्थान पर राजनैतिक वक्तव्य दे रहे हैं। वे उदारवादी अकालियों की उपेक्षा करके उग्रवादी अकालियों की ओर झुकने लगे हैं और परोक्ष रूप में उग्रवादियों के साथ सहानुभूति रखके उनकी सहायता कर रहे हैं। इसी कारण भारत सरकार ने गत सप्ताह उनके दिल्ली आगमन पर रोक लगा दी थी, परन्तु वे आगामी सप्ताह पुनः दिल्ली आने की तैयारी कर रहे हैं।

अतः हमारी सरकार से मांग है कि उनके साथ अब उग्रवादी अकालियों जैसा ही व्यवहार किया जावे और उन्हें पूर्व की भांति धार्मिक सुविधाएं न दी जावें। राष्ट्र की रक्षा करने तथा एकता को बनाये रखने के लिए पूरी सावधानी बरतने की आवश्यकता है। उग्रवादी अकाली अपना विश्वास खो बैठे हैं।

प्रो० शेरसिंह
सभा प्रधान

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों में ५ वीं तथा ६ वीं कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठावें।

प्राप्ति स्थान
प्रस्तोता आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक

शोक समाचार

ग्राम हिमायूंपुर जिला रोहतक के सरपंच श्री सूबेसिंह आर्य पहलवान की गतसप्ताह गांव गढ़ी सिसाना जिला सोनीपत में कुछ अज्ञात सशस्त्र व्यक्तियों द्वारा दिन दहाड़े हत्या किये जाने की सूचना मिली है।

पुलिस ने हत्या का केस दर्ज करके हत्यारों की खोज आरम्भ कर दी है आप आर्यसमाज हिमायूपुर के प्रधान भी थे और आर्यसमाज की गतिविधियों में रुचि रखते थे। हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने बढ़चढ़ कर भाग लिया था।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

सभा मन्त्री

डा० गर्ग की झूठी गरिमा का भाण्डाफोड़

—यशपाल आर्य

किसी-किसी व्यक्ति मे प्रसिद्ध होने की महत्त्वाकाक्षा इतनी प्रबल होती है कि उसे प्रसिद्ध होने की प्रक्रिया से समाज पर पड़ने वाले सभी कुप्रभाव, कुपरिणाम, दोष और हानियाँ दिखाई नही देती और वह अपनी कुख्याति को ख्याति समझने लगता है। महत्वाकांक्षा के इस रोग से बुरी तरह से ग्रसित एक सज्जन, नही नही उसे तो दुर्जन कहना ही सभी प्रकार से कहीं अधिक उपयुक्त होगा। उसके साथ सज्जन शब्द का प्रयोग करना सज्जन शब्द का भी अपमान करना है। वह है तथाकथित डा० राजेन्द्र कुमार गर्ग। वैसे गर्ग कहता तो यही है कि—"हमारा उद्देश्य आर्यसमाज की आलोचना करना नही है, प्रत्युत आर्यसमाजियो को वास्तविकता से परिचित करना है। अपने इस सकल्पित उद्देश्य की पूर्ति हम तीन प्रकार से करना चाहते है (१) वेदों के वास्तविक अर्थ एव तात्पर्य को उद्घाटित कर, (२) आर्यसमाज के अनौचित्य को सिद्ध कर, और (३) दयानन्दविषयक मिथन को तोड़कर।" (गीता स्वरूप निर्णय, प्राक्कथन पृष्ठ ६) लेकिन गर्ग सभी को अपने जैसा निम्न मानसिक स्तर वाला क्यो समझते है? क्या इन तीनो बातों से यह स्पष्ट अभिव्यक्त नही होता कि इन तीनों प्रकारों से गर्ग वास्तविकता से तो नहीं पर अपनी कलुषित मनोवृत्ति और नीचता की पराकाष्ठा से अवश्य परिचित करा देगे। इसका उदाहरण देखिये, गर्ग कहता है कि "धर्मध्वजी दयानन्द और दयानन्दी वेदमाता की दिन दहाड़े लाज लूटकर भी उसके एकमात्र हिमायती बने बैठे है।" (वही) वेदमाता की दुहाई देने वाले इस गर्ग महोदय से जरा मै पूछना चाहता हू कि दयानन्द और आर्यसमाज से पूर्व तुम तथा तुम्हारे पूर्वज कहां सोये पड़े थे? क्या दयानन्द से पूर्व तुम्हारे बाप दादाओं ने वेद ज्ञान और वेद की पुस्तक को कभी सुना या देखा था? क्या दयानन्द से पूर्व भगवान् द्वारा सब के लिए समान रूप से दिये गये इस वेद ज्ञान को सभी पढ व सुन सकते थे? "वेद" इस दो अक्षर के नाम से अधिक वेद के विषय में कोई कुछ नही जानता था। वेद मन्त्रों के नाम पर दोहे और चौपाइयां गुरु मन्त्र कहकर दिये जाते थे। जो मन में आया "वेद शास्त्रों मे ऐसा आया है" कहकर धर्म के ठेकेदार गरीब जनता को ठगकर अपना उल्लू सीधा किया करते थे। बस दयानन्द और आर्यसमाज ने यही गलती की है कि गर्ग जैसे धर्मान्ध धर्म के ठेकेदारो की उस प्रवृत्ति मे विघ्न डाल दिया जिसमे वे गरीब जनता का खून चूसकर धर्म के नाम पर अपनी दमित वासनाओं और स्वार्थ वृत्ति को पूरा करने मे लगे थे। जब वेदों के आधार पर आर्यसमाज मूर्तिपूजा, अवतारवाद, मृतकश्राद्ध, देवतावाद, नामस्मरण, फलितज्योतिष, श्राद्ध और फलित ज्योतिष आदि का खण्डन करता है तो गर्ग को वेद माता की लाज दिन दहाड़े लुटती नजर आती है। क्या कहें इस नादान को। क्या करे बेचारे ने जब तो कभी वेद का रास्ता भी नही देखा जो अब जानते। अन्यथा सच तो यह है कि गर्ग जैसे हजारों ढोंगियो की दयानन्द और आर्यसमाज के कारण रोजी रोटी छिन गई है।

दूसरा प्रकार गर्ग कहते है कि आर्यसमाज का अनौचित्य सिद्ध करना। गर्ग साहब! जब तक तेरे जैसे पामर नीच प्रवृत्ति के लोग अज्ञान, अन्धकार और अन्याय को फैलाने में लगे है कम से कम तब तक तो आर्यसमाज का औचित्य समाप्त होता नही और यदि तुम्हारे जैसे गीदड़ों की धमकियो से आर्यसमाज डरता तो एक शताब्दी से आर्यसमाज द्वारा जो दाल तुम्हारी छातियो पर दली जा रही है, वह न दली जाती। आर्यसमाज का जन्म वेद के सच्चे ज्ञान के प्रसार और समस्त कुरीतियो, कुप्रथाओं, अन्धविश्वासो, अन्यायो, अज्ञानों को मिटाने हेतु हुआ था, न कि तुम जैसे कृतघ्नों से समझौता करके धर्म की दुकान चलाने हेतु। जब तक ये समस्त कारण विद्यमान है तब तक आर्यसमाज की अनौचित्यता का कोई प्रश्न ही नही उठता।

गर्ग की नीच मनोवृत्ति का एक और नमूना देखिये। वह कहता है कि देश का विभाजन और सभी साम्प्रदायिक दंगे आर्यसमाज और दयानन्द के कारण हुए। तथा दयानन्द हिन्दू धर्म, हिन्दी भाषा और हिन्दुस्तान का कट्टर शत्रु था। क्या हिन्दू धर्म की त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करना हिन्दू धर्म से शत्रुता करना है? क्या मातृभाषा गुजराती होते हुए और संस्कृत भाषा के प्रकाण्ड पण्डित होते हुए हिन्दी में ही सब व्यवहार करना और हिन्दी का प्रचार करना हिन्दी भाषा से शत्रुता है? क्या सदियों से परतन्त्रता की चक्की में पिस रहे हिन्दुस्तानियों को सर्वप्रथम यह सिखना हिन्दुस्तान केवल हिन्दुस्तानियों के लिए है, हिन्दुस्तान से शत्रुता करना है? अगर इन्ही सब को गर्ग शत्रुता कहता है तो हम तो शत्रु ही अच्छेहै। रामप्रसाद बिस्मिल की ये दो पक्तिया गर्ग को इस अवसर पर कह देना चाहता हू कि—इस बिगड़े दिमागो में खुशियो के लच्छे हैं। हमें पागल ही रहने दो हम पागल ही अच्छे हैं॥ एक स्थान पर गर्ग स्वामी दयानन्द को सम्प्रदायवादी कहते हुए लिखता है कि—"आज जो सम्प्रदायवादी का जहर देश में फैल रहा है उसके लिए जिम्मेदार यदि कोई व्यक्ति है तो वह है—दयानन्द।" (गीता स्वरूप निर्णय पृष्ठ १०१) गर्गसाहब! मैं बहुत अच्छी तरह जानता हू कि आप बहुत कायर और नामर्द हैं। अत दंगो मे सक्रिय होने का तो प्रश्न ही नही पैदा होता। चाहे उस दंगे मे आपकी बहन, बेटी की लुटती इज्जत को बचाना ही मूल कारण क्यो न हो। पर आपको तो शायद शान्त हो चुके दगों की चर्चा करने व सुनने मे भी डर लगता है। क्योंकि यदि यह बात न होती तो आपको पता होता कि ये साम्प्रदायिक दंगे एवं सम्प्रदायवाद का जहर मुसलमान और उग्रवादी कहेजाने वाले कुछ सिख फैलाते हैं या आर्यसमाजी कहे जाने वाले हिन्दू। दगे फसाद वही होते है जहां अत्याचारियों उग्रवादियों और मनुष्य के नाम पर पल रहे राक्षसों की मनमानी नहीं होने दी जाती। यदि गर्ग जैसे सभी नामर्द हो तो दंगे हो ही नहीं सकते। क्योंकि वे इनकी बहन बेटियो को छेड़ेगे। उठा कर ले जाएंगे, धन सम्पत्ति हड़पना चाहेंगे। मन्दिरों मे मांस फैंकेंगे और ये क्योकि गर्ग जैसे कायर, कमजोर असमर्थ हिजड़े है अत. सब कुछ होता हुआ देखकर भी चुप रह जाएगे। आर्यसमाज इन अत्याचारो को कभी सहन नही कर सकता इसलिए गर्ग को दयानन्द और आर्यसमाज सम्प्रदायवादी नजर आते हैं। गर्ग मुसलमानों का समर्थन करने तो बैठ गया लेकिन उसने कुरान की उन आयतों को नहीं पढ़ा जिनमें साम्प्रदायिक दगो के स्पष्ट आदेश है। यथा—"जब अदब के महीने निकल जाए तो मुशरिको को जहां पाओ कत्ल करो उनको घेर लो और हरथान की जगह उनकी ताक में बैठो। मुसलमानो! आस-पास के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे सख्ती मालूम करे।" १०३। कु० पा० १० सू० तोबा॥ भला जिस सम्प्रदाय की धार्मिक पुस्तक मे ऐसे जहरीले आदेश होंगे वह साम्प्रदायिक जहर फैलाता है या सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुःखभाग्भवेत्॥ का उद्घोष करने वाला आर्यसमाज? इस्लाम के उन आदेशो जैसी भ्रष्ट बातों का समर्थन करने और दयानन्द को गाली देने से यही सिद्ध होता है कि या तो गर्ग किसी भ्रष्ट मुसलमान के दूषित वीर्य से उत्पन्न हुआ है या इसे भिक्षा में गुजारे के लिए कुछ मिलता होगा।

तथाकथित गर्ग महोदय की "दयानन्द गाली पुराण" के बाद दूसरी पुस्तक "गीता स्वरूप निर्णय" प्रकाशित हुई है। पाठक पुस्तक के नाम से समझे होगे कि शायद योगिराज कृष्ण की अमरवाणी और हिन्दुओं की आत्मा समझी जाने वाली उस गीता के स्वरूप का सही-सही दिग्दर्शन कराया होगा जिस गीता को पढकर कोई भी कृतकृत्य हो जाता है। लेकिन सक्षेप में इस पुस्तक का सार यदि कोई कहना चाहे तो यह कह सकता है कि गीता स्वरूप निर्णय में कृष्ण को परमेश्वर सिद्ध करने

(शेष पृष्ठ ६ पर)

प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र

श्रीमद्दयानन्द वेदविद्यालय ११९ गौतमनगर नई दिल्ली—४९

भारत राजधानी दिल्ली यमुनानदी के तट पर सन् १९३४ में प्राचीन भारतीय संस्कृति का प्रमुख केन्द्र दयानन्द वेदविद्यालय की स्थापना हुई। इस यमुना के किनारे वेद विद्यालय में प्रातः सायं वेदमन्त्रों की ध्वनि गुंजायमान होती रही तो त्रिवेणी संगम का एक अंग स्वयं यमुना को भी अपनी पुरानी भारतीय संस्कृति तथा गौरव का आभास होता है जिस गरिमा को प्राचीन ऋषि मुनियों ने निर्माण किया था, परिवर्तन के संक्रमण काल में वह गौरव शनैः शनैः बदलता गया और आज उसका केन्द्र गौतमनगर (यूसुफसराय) बन गया है। किन्तु आज भी यह अपनी प्राचीन संस्कृति को लेकर चल रहा है।

इसके संस्थापक श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी सरस्वती तथा वर्तमान श्री हरिदेव जी के आचार्यत्व में लगभग १२० ब्रह्मचारी ऋषि का अमर सन्देश वेद विद्या के अतीत गौरव को जीवन्त रूप देने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील है। इन ब्रह्मचारियों के कार्यकलापों को देखकर पुरानी संस्कृति की याद आती है। जिस संस्कृति या आश्रमों में जिज्ञासु शिष्य शिक्षा प्राप्ति की इच्छा से शिक्षाव्रती तथा समित्पाणी होकर जाया करते थे, ठीक वैसा ही वातावरण दिल्ली जैसी नगरी के विद्यालयीय परिसर में दृष्टिगोचर होता है। यहां का परिवेश ऋषि महर्षियों की संस्कृति को फिर से याद दिलाता है। प्राचीन संस्कृति के संपोषक श्री आचार्य हरिदेव जी तथा योग्य अध्यापकों के छत्र-छाया में अध्ययन रत ब्रह्मचारी पाश्चात्य शिक्षा पद्धति में भटकना नहीं चाहते, इसलिये ये ब्र० संस्कृति के जड़ को मजबूत करने में रत है। वे जानते है कि सांस्कृतिक भवन की नींव प्राचीन संस्कृति ही है। जिस भवन पर सशक्त रूप से निर्माण किया जा सकता है। इस विद्यालय में प्राचीन गुरुकुलों की पद्धति पर प्रातः चार बजे सभी ब्र० गुरुकुल के प्रांगण में वेदमन्त्रों का उच्चारण प्रारम्भ कर देते हैं। यह कर्म सर्दी-गर्मी-वर्षा सभी ऋतुओं में एक सा ही चलता है। यहां वैदिक पद्धति के अनुसार नित्यप्रति प्रातः सायं तपस्यात्मक दैनिक कार्य सरल एवं सहज भाव से सम्पादित होते हैं। यहां समय समय पर विविध विश्वविद्यालयों, शिक्षण संस्थाओं तथा क्रीड़ा के क्षेत्रों में भी ब्रह्मचारियों को प्रतियोगितार्थ भेजा जाता है। जिसमें प्रथम स्थान रखकर विद्यालय के गौरव को बढाते हैं। वेद विद्या को स्थायी रूप देने के लिये यहां के कुछ छात्रों ने (वेद) सम्पूर्ण यजुर्वेद तथा सामवेद कण्ठस्थ कर लिया है। गत वर्ष १९८३ में अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी अजमेर में ४ ब्रह्मचारियों ने श्रुतिशास्त्र वेद को कण्ठाग्र सुनाकर ४,००० (चार हजार रुपये) का पुरस्कार पाकर विद्यालय के गौरव को सम्मान दिया है। यहां का प्रमुख आकर्षण चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ है जो निरन्तर ४ वर्षों से होता आ रहा है।

इस वर्ष इसकी स्वर्ण जयन्ती है। ८, ९ दिसम्बर ८४ को स्वर्ण जयन्ती समारोह मनाया जा रहा है। पूर्व वर्षों की भांति इस वर्ष भी १८ नवम्बर से चतुर्वेद ब्रह्मपारायण महायज्ञ का आयोजन श्री स्वामी दीक्षानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में किया जा रहा है जिसकी पूर्णाहुति ९ दिसम्बर को होगी। इसमें एक श्रुति वेदमन्त्रों का सस्वर पाठ वेद विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा होगा। ८, ९ दिसम्बर को नवीन स्नातकों का दीक्षान्त समारोह भी है, जिसमें देश के प्रमुख गणमान्य विद्वान्, महात्मा, उपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। अतः अधिक से अधिक संख्या में पहुँचकर आयोजन को सफल बनायें।

जगन्नाथ शास्त्री

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सर्वहितकारी के गतांक में हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन किया गया था कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने यहां वार्षिक उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार नहीं करवाया है, वे सभा को पत्र लिखकर प्रचार की व्यवस्था करवा लेवे। वेदप्रचार तथा दशांश का वर्ष समाप्त होने जा रहा है। अतः आर्यसमाजें वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी आदि का प्राप्तव्य धन सभा प्रचारकों अथवा मनीआर्डर द्वारा १५ दिसम्बर तक सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें, ताकि चुनाव की तिथि निश्चित करने पर प्रतिनिधियों को समय पर ऐजण्डा आदि भेजा जा सके।

जिन आर्यसमाजों से अभी तक प्राप्तव्य धनराशि प्राप्त नहीं हुई है, उनके पास सभा कार्यालय से पत्र लिखे जा रहे हैं।

आर्यसमाजों का अपने क्षेत्र के ग्रामों से शराबबन्दी तथा हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु प्रस्ताव भी पास करवाकर शीघ्र सरकार के पास व एक प्रति सभा कार्यालय में भिजवाने का यत्न करें। दोनों प्रस्तावों का प्रारूप आर्यसमाजों को डाकद्वारा पूर्व भेज दिया गया था। आशा है आर्य समाजें इस ओर अवश्य ध्यान देंगे।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

श्रीमती गांधी की हत्या पर शोक संदेश

श्रीमती इन्दिरा गांधी की निर्मम हत्या को मैं गहरे षड्यन्त्र का नतीजा मानता हूं। देश को अस्थिर करने तथा तोड़ने के लिए काफी समय से यह षड्यन्त्र चल रहा था। चिन्ता की बात तो यह है कि बाड़ ही खेत को खा गई। मूल रूप से हिन्दू सिख एक रहे है उनकी प्रेरणाओं आस्थाओं के एक स्रोत रहे हैं और इस अग्नि परीक्षा में भी आम हिन्दुओं ने सिखों की रक्षा का व सद्भाव दिखाया और अपनी आन्तरिक एकमता का परिचय दिया। मैं आशा करता हूं कि सभी सिख संगठन मिलकर गुरु पर्व के पावन अवसर पर अलगाववाद और अलगाववादियों से छुटकारा पाने का संकल्प लेंगे।

अमर शहीद श्रीमती इन्दिरा गांधी को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि देश के लोग मिलकर अलगाववाद और अलगाववादी भावना को इतना गहरा दफना दें कि वह फिर कभी भारत भूमि पर सिर न उठा सकें। अलगाववाद को समाप्त करने तथा राष्ट्र की एकता और अखंडता को बचाने के लिए ही उस महान् देवी ने अपना बलिदान दिया है। देश में स्थिरता को मजबूत करने और एकता बनाये रखने के लिए राष्ट्र के सभी लोगों और दलों को प्रधानमन्त्री श्री राजीव गांधी को पूरा समर्थन व सहयोग देना चाहिए और राष्ट्र व संस्कृति की एकता का उद्घोष करना चाहिए।

प्रो० शेरसिंह सभा प्रधान

सत्यकथा में हमने पढ़ा है

कोई शराबी, शराब पीकर शराब खाने से चल पड़ा है।
लगा झूमने और गाली बकने जब उसके सिर पर नशा चढ़ा है॥
घूम रहा है होश गवाये, अपने को मलखान बताये।
आये मुकाबिल गरज के बोला गर कोई ताकत वाला बड़ा है॥
भगा वहां से फिर बकता गाली, गिरा वहीं पे थी एक नाली।
लगा बदन मे जो गन्दा पानी, समझ गया रागन खपड़ा है॥
मिले एक साहब उन्हे पकड़ कर, लगा चूमने तू मेरी दिलवर।
साहब बहादुर नाराज होकर, कई तमाचा उसे जड़ा है॥
पहुँच गया फिर मकान के अन्दर, लगा है कहने कहो थी दुख्तर।
लगा ले सोने मिटा दे अरमा, खड़ा सामने ये छोकड़ा है॥
लगा मारने है लड़की औरत मिटा दी तूने है घर की इज्जत।
किकी इसी में जमीन सारा, बिका इसी मे कगन तड़ा है॥
बुरा न मानो कहूं मैं राजा, सच कहते है "मुबीन काजी"।
करें भोग ये बेटी बहू से, 'सत्यकथा' मे हमने पढ़ा है॥

–काजी मुबीनुल हक
मौजा फरदा खुर्द, पोस्ट–ब्लाक बजनगोति, जि० गोण्डा

(पृष्ठ १ का शेष)

विद्यालयों पर नजर डालिये। कालेजों की ओर जरा झांकिये, फैक्ट्रियों का दौरा कर लीजिये—आपको धींगामस्ती और सीनाजोरी के अतिरिक्त और कुछ देखने को नही मिलेगा, क्योंकि चरित्र का सम्मान नही। शराफत पंख लगाकर उड़ गई है, नैतिकता को लकवा मार गया, लज्जा, सङ्कोच, विनम्रता आदि सद्गुण किसी कोने मे खड़े सिसक रहे हैं। उत्तम चरित्र का उदाहरण उपस्थित करने वाले डर के मारे सामने नहीं आते। इस समय सेना पर पूर्ण विश्वास और पुलिस पर अविश्वास न मालूम क्या गुल खिलाएगा?

यह प्रश्न समय का है। इसके विषय में कुछ लिखना किबल-अज वक्त (समय से पूर्व) ही होगा। मगर एक बात सर्वथा स्पष्ट है कि जब तक हमारे मध्य, हमारी जमात में अपने ईमान और इरादे की पवित्रता नहीं आएगी, तब तक बात बनेगी ही नहीं।

चाहे कितनी फोर्स, कितने इदारे, कितने वर्दी उच्च-अधिकारी कितनी ऊंची हवाओं वाले मैदान क्यों न लाए जाए, खर्च बढता जाएगा, रसूख घटता जाएगा। इस प्रकार एक और तमाशे का दृश्य (सीन) तैयार होता जाएगा। परिणाम वही 'ढाक के तीन पात"। अशान्त और दुश्चरित्र ही सच्चरित्रता, नेकता के ठेकेदार बने नजर आएंगे। शेष सभी भाग ही जाएंगे।

यह एक सबक (Lesson) है. जो लिखा और पढ़ा जा सकेगा। इसलिए 'जरा सम्भल के' ही अपना व्यक्तित्व पैदा करने, अमल में लाने की जरुरत है, गरीब मुल्क का तकाजा है। समाज का अतीत रवैया अनुभव, वृद्धजनों की सूझ-बूझ को अपनाना ही समय की सबसे बड़ी जरुरत है।

मेरे मित्र सरदार कुलदीपसिंह वरक अमृतसर सीटी-मैजिस्ट्रेट थे। जब मैं वहां परिवहन का महा प्रबन्धक (G. M.) था। वह सायं के समय मालरोड़ पर सैर को निकले और राह गुजरती किसी नवयुवति को बिना दुपट्टा देखते, तो उसे खड़ा करके लज्जित करते और भविष्य में दुपट्टा पहनकर भ्रमण करने की हिदायत करते। परिणाम यह निकला कि वहां उन दिनों किसी देवी को साहस न होता कि वह बिना दुपट्टे या नंगे सिर सड़क पर चलती नजर आए। एक ऐसी हवा बन गई कि प्रचार हो गया, दस्तूर बन गया कि लड़कियों और औरतों का बिना दुपट्टा बाहर घूमना पाप और गलत बात समझा जाने लगा। यह असली सबक जिसे हमने समझना है।

क्रमशः

पृष्ठ ४ का शेष

की कुचेष्टा और दयानन्द एव आर्यसमाजियों को गालियां देने के अतिरिक्त कुछ नही है। एक स्थान पर गर्ग ने लिखा है कि—"कृष्ण चरित पर कीचड उछालने वाले आर्यसमाजी एव साम्यवादी बन्धुओं को हम बतला देना चाहते है कि श्री कृष्ण की बाल्यलीलाएं एव यौवन चरित्र यदि घटित न हुए होते तो जन-जन के हृदय सम्राट् श्री कृष्ण साक्षात् भगवान् अथवा परात्परब्रह्म के पूर्णावतार न कहलाते।" (गीता स्वरूप निर्णय पृष्ठ ८६)। गर्ग ने कृष्ण के चरित्र पर कीचड़ उछालने का दोष लगाते समय आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की ये पंक्तियां नही पढी—"देखो! श्री कृष्ण जी का इतिहास महाभारत मे अत्युत्तम है। उनका गुण-कर्म-स्वभाव और चरित्र आप्त पुरुष के सदृश है। जिसमें कोई अधर्म का आचरण श्री कृष्ण जी ने जन्म से मरण पर्यन्त बुरा काम कुछ भी किया हो नहीं लिखा" (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास)। अब पाठक स्वयं निर्णय करें कि एक ओर तो महर्षि दयानन्द और आर्यसमाज सम्मत उपरोक्त कृष्ण चरित्र तथा दूसरी ओर गर्ग जैसे कामी, रागी, द्वेषी, स्वार्थी लोगों द्वारा वर्णित कृष्ण चरित्र, जिसमे कर्मयोगी श्री कृष्ण को चोर, जार, सुरा सुन्दरी के सहवास में मग्न और व्यभिचारी कहा गया है। भला चोर और व्यभिचारी जिस महापुरुष को कह दिया, उसके चरित्र पर कीचड़ उछालना और शेष ही क्या रह गया। आश्चर्य की बात यह है कि एक ओर श्री कृष्ण को भगवान् कहते है तथा दूसरी ओर उन्हे व्यभिचारी तक कहने में बेशर्म हो जाते है। और दोष देते हैं आर्यसमाज को। क्या कहने गर्ग साहब के. उल्टा चोर कोतवाल को डाटे। ओ रण्डीबाजो! वेश्यागामियो!! व्यभिचारियो!!! क्या तुम श्री कृष्ण को भगवान् सिद्धकर और उसे बहुस्त्रीगामी, चोर और व्यभिचारी कहकर अपनी करतूतों के लिए मार्ग साफ करना चाहते हो। दया करो भारत की भावी संत तियर। भला सोचो वह तुम्हारे व तुम्हारे द्वारा वर्णित श्री कृष्ण जैसे चरित्रो से क्या सीखेगी? अरे ओ जंगली गर्ग! क्या तूने कभी सोचा है कि तूमने कृष्ण के स्वरूप को कंस से भी बदतर बना दिया है। आज तक यदि किसी ने श्री कृष्ण के चरित्र को सही ढंग से दर्शाया है तो वह दयानन्द और आर्यसमाज ने।

गर्ग की लिखी पुस्तक "गीता स्वरूप निर्णय" के कुल सात अध्याय है। जिनमे चार अध्यायों मे गीता विषयक कुछ नही लिखा और शेष तीन में भी गर्ग की धूर्ततापूर्ण गालियों की ही प्रधानता है। पर बेचारा करे भी क्या उसने अपने पूर्वजों से सीखा भी यही है। और फिर मेरठ के वेश्यालयो से सम्बन्धित होने से वही रण्डियों वाली ताली बजा-बजाकर गालिया देनी सीखी है। फिर वह गीता को क्या जाने? आजकल गीता में लगभग सात सौ से ऊपर श्लोक हैं। जबकि आज से तीन हजार वर्ष पूर्व कुल सत्तर श्लोक थे। जो कि बाली द्वीप में बने मन्दिर मे दीवारो पर खुदे आज भी देखे जा सकते हैं। वर्तमान गीता मे तेरे जैसे धूर्तों ने अन्य शास्त्रों से लेकर या नये श्लोक बनाकर कृष्ण को परमात्मा बनाने की स्पर्धा और अपना उल्लू सीधा करने के लिए घुसेड दिये है।

गर्ग! जब तुझे किसी विषय का पता ही नही तो उसके विषय में लिखने क्यों बैठ गया? क्या गालियां लिखकर ही विद्वान् कहलवाना चाहता है? तेरी दोनों पुस्तकों को देखकर आचार्य डा० श्रीराम शर्मा द्वारा तुम्हारे लिए जंगली कुत्ता विशेषण बिल्कुल ठीक दिया है। क्योंकि ये दोनों पुस्तके पागल जंगली कुत्ते की तरह भौंकने के समान ही हैं। अच्छा हो यदि तुम आचार्य डा० श्रीराम शर्मा कासगंज से या किसी अन्य आर्य विद्वान् से अपने इस निरे जंगलीपन को छोड़कर कुछ सीख लो। अभी तक तुम मानवता पर कलंक हो। यह भड़ुवापन साक्षर व्यक्तियों को शोभा नही देता।

पता—मदाना खुर्द रोहतक (हरयाणा)

सामाजिक बुराईयों के विरोध में आर्य समाज के प्रचार हेतु जनजागरण यात्रा

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए०, बी० एड० कुरुक्षेत्र

(गतांक से आगे)

जब हम जखोलो की ओर चले तो देवबन गांव में ही जखोली के लोग ट्रैक्टर पर ओ३मृध्वज लगाये स्वागत के लिये मौजूद थे। उनकी आगवानी में जब जखोली पहुँचे तो मानो सारा गांव आर्यसमाज और देवदयानन्द के नारों से गुंज उठा। चौ० मनोराम जी ने समस्त व्यवस्था की और यहां बड़ा भारी जलसा हुआ अनुमान है कि इस जलसे में पांच हजार लोगों ने अवश्य भाग लिया जहां स्वामी रुद्रवेश जी के भजनों ने समाज सुधार की आग लगा दी। श्री धर्मदेव विद्यार्थी के अतिरिक्त भाई उमेद जो का भी व्याख्यान हुआ। सभी जलसों में यही क्रम होता था। यात्रा संयोजक के नाते मेरा तथा उमेद शर्मा जी का व्याख्यान होता था व स्वामी जी के भजन होते थे।

दिनांक ३०-९-८४

चौ० मनीराम जी का ट्रैक्टर हमें अगले पड़ाव की ओर ले चला। यह कछाणा गांव था जहां शायद ही कोई आर्यसमाज का प्रचारक कभी गया हो। गांव वालों ने बड़ी आवभगत की यज्ञ पर अनेक व्यक्तियों ने बीड़ी के बंडल तोड़२ कर फेंक दिये और यज्ञोपवीत धारण किये। बड़े उत्साहपूर्ण वातावरण में आर्यसमाज की स्थापना कर लाला खजान्चीदास को प्रधान बनाया गया मा० हरिपाल जी को मन्त्री और ११ सदस्य बनाये गये।

यहां से हम कोटड़ा पहुंचे तो वहां हमारे युवा साथी राधाकृष्ण जो सेबों का टोकरा लेकर पहले से ही पहुंचे थे। यहां सरपंच साहब ने सब व्यवस्था की थी। दोपहर में जलसा किया तो स्वामी रुद्रवेश जी की प्रेरणा से १५ युवकों ने यज्ञोपवीत धारण किया और आर्यसमाज बनाई जिसमें सिख युवक भी यज्ञोपवीत लेकर सदस्य बने जब जलसा समाप्त हुआ तभी शेरदा ग्राम के सुबेदार जुगलाल जी कई ग्रामवासियों को लेकर पहुँचे और अपनी आगवानी में हमें शेरदा लेकर गये जहाँ सरपंच साहब ने भव्य स्वागत किया। शेरदा एक ऐतिहासिक ग्राम है जहां के चार सत्याग्रहियों ने हैदराबाद आन्दोलन में भाग लिया था और एक युवक श्री फकीरचन्द ने अपनी शहादत दी थी। हमने शेष दो सत्याग्रहियों का रात्रि जलसे मे सार्वजनिक अभिनन्दन किया। यहां भी ३००० के लगभग उपस्थिति रही होगी। प्रातः यहां आर्यसमाज की स्थापना कर दी गई। हमने अपने भाषण में गांव की जनता से अपील की कि शहीद फकीरचन्द की याद में यहां पर कोई स्मारक बनाया जाये जिसका ग्रामवासियों ने करतल ध्वनि से स्वागत किया।

१-१०-८४

प्रातः सरपंच साहब के ट्रैक्टर सहित हमारा साईकिलो का जत्था भाणा गांव में पहुंचा। यहां गांव की पचायत ने सुन्दर प्रबन्ध किया था यज्ञादि के पश्चात् चौ० बिशनसिंह जी व मेरा (धर्मदेव विद्यार्थी) का सारगर्भित व्याख्यान हुआ। बिशनसिंह जी के पहुंचने से हमारा काफी उत्साहवर्धन हुआ। इसके बाद करोड़ा गांव मे पहुँचे यहां सूचना समय पर न मिलने के कारण भोजनादि में देरी हो गई जिससे जलसा भी देर से समाप्त हो सका। यहाँ चौ० बिशनसिंह एडवोकेट का व्याख्यान हुआ और स्वामी रुद्रवेश जी के शराब एवं दहेज विरोधी भजनों ने जनता को बांधकर रख दिया।

इसके पश्चात् हम पाई गांव में पहुंचे अब तक के सभी गांव बहुत बड़े बड़े गांव थे। पाई भी बड़ा गांव है जहां चौ० गजेसिंह ने इतने उत्तम भोजन की व्यवस्था की जिसकी सराहना किये बिना कोई भी यात्री न रह सका। रात्रि को जलसे में चौ० बिशनसिंह जी ने लोगों को सामाजिक बुराइयां छोड़ने का आह्वान किया व स्वामी जी का क्रान्तिकारी कार्यक्रम चला। चौ० गजेसिंह की देखरेख में इस गांव में आर्यसमाज की स्थापना कर दी गई।

२-१०-८४

२ अक्तूबर प्रातः हम सभी फतेहपुर पहुँचे जहां यज्ञ पर प्रोफेसर भागसिंह आर्य के पहुँचने से हमारा उत्साह और अधिक बढा फतेहपुर-पुण्डरी दो मिले हुए कस्बे हैं उनके बीच में अनाज मण्डी में ९ बजे भारी जनसभा का आयोजन किया गया जिसमें योजना मन्त्री चौ० ईश्वरसिंह ने पधारकर लोगों को आर्यसमाज में आने का आह्वान किया और स्वामी दयानन्द को हरयाणा प्रदेश की जनता का एकमात्र गुरु बताया और हरयाणा में जागृति का श्रेय देवदयानन्द को ही दिया। समय का लाभ उठाते हुए श्री धर्मदेव विद्यार्थी जी ने दो प्रस्ताव जनता के सामने रखे प्रथम देश में पूर्ण नशाबन्दी और गऊ हत्या बन्दी का दोनों ही प्रस्ताव उपस्थित जनता ने सर्वसम्मति से हाथ उठाकर पास कर दिये जिन्हें चौ० ईश्वरसिंह एम० एल० ए० को कार्यवाही हेतु दिया गया। उन्होंने सरकार के सामने रखने का आश्वासन देते हुए जनता से अपील की कि वे स्वयं इसमें सहायक होवें। यहां समस्त व्यवस्था चौ० युधिष्ठिर पाल, सुभाष एडवोकेट व देशबन्धु आर्य ने आर्यसमाज की ओर से की।

इसके बाद फतेहपुर पुण्डरी में शोभायात्रा करते हुए रात को बरसाना गांव में पहुँचे जहा आर्यसमाज की ओर से सुन्दर प्रबन्ध था व श्रद्धा भी थी। मार्ग की सब थकावट जाती रही। रात्रि को जब जलसा करने लगे तो पता लगा कि लाउडस्पीकर की बैटरी पुण्डरी अनाजमंडी में या जीप में रह गई। यह परमात्मा का ही आशीर्वाद था कि सार्वजनिक स्थल पर बैटरी तथा एक अटैची कई घण्टे पड़े रहे और मिल गये। बरसाना में चौ० बिशनसिंह एडवोकेट व प्रो० भागसिंह आर्य ने जनता को आर्यसमाज में संगठित होकर बुराइयों को छोड़ने का आह्वान किया भारी भीड़ ने स्वामी रुद्रवेश के भजनों का आनन्द लिया। यहां भी आर्यसमाज बना दी गई है।

क्रमशः

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र "मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक" के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच मे होनी चाहिए।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिये।

चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह

मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा

दयानन्द मठ, रोहतक—१२४००१

शराब के ठेके के विरुद्ध आर्य धरना बालावास को सफल करने वाले क्रान्तिकारी

श्री वीरसिंह सरपंच

आपका जन्म सन् १९४९ में ग्राम बालावास (हिसार) में हुआ। जब आप २५ वर्ष के थे तब आपके पिता जी का स्वर्गवास हो गया। आप बी० ए० परीक्षा पास करके ग्राम की सेवा में ही लग गए। ग्राम की सेवा का फल यह हुआ कि आप १९७८ में निर्विरोध ग्राम के सरपंच चुने गए। आज भी आप ग्राम के सम्मान के योग्य सरपंच पद पर ग्राम की सेवा कर रहे हैं।

ग्राम में सत्संग के अभाव तथा कुसंग की अधिकता के कारण आप ग्रामीण पद्धति के अनुसार सुरापान आदि दुर्व्यसनों में फंस गए थे किन्तु दिनांक २८-४-८४ को आपके प्रबन्ध में सात गांव की एक पंचायत ग्राम की धर्मशाला में ठेका शराब के विरोध में हुई। इसमें आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा के प्रधान प्रो० शेरसिंह तथा स्वामी ओमानन्द सरस्वती के प्रभावशाली भाषण सुनकर उसी दिन से उक्त दुर्व्यसनों का परित्याग कर दिया और श्री अत्तरसिंह आर्य के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर समाज सुधार के कार्यों में लगे हुए हैं। श्री अत्तरसिंह आर्य आपके बल पर ही आपके ग्राम बालावास में आर्य धरणा का सफलता पूर्वक संचालन कर रहे हैं। आपने अपने गांव में चौपाल, गली, कुए का निर्माण और जोहड़ की खुदाई आदि प्रशंसनीय कार्य किए हैं।

निहालसिंह आर्य

आपका जन्म सन् १९१४ में ग्राम बालावास (हिसार) में हुआ। आपकी शिक्षा ग्राम नलवा में पांचवी कक्षा तक हुई। आप अपने तीन भाइयों में सबसे बड़े हैं। आप १४-४-८४ से श्री अत्तरसिंह आर्य के साथ आर्य धरना पर पूर्ण मनोयोग से सेवा कर रहे हैं। धरना पर वैदिकधर्म के प्रचार से प्रभावित होकर आर्योपदेशक पं० चन्द्रभानु जी से यज्ञ एवं यज्ञोपवीत धारण कर लिया। शराब और धूम्रपान आदि दुर्व्यसनों को छोड़कर सत्संग और श्रेष्ठ पुरुषों की सेवा में ही अपना समय लगा रहे हैं। आपके पास २४ एकड़ जमीन है। आपकी आजीविका का साधन कृषि है।

मीठूराम पहलवान

आपका जन्म सन् १९३२ में गांव पन्तालीस चैक तहसील उकहाड़ा जिला मिन्टगुमरी (पंजाब पाकिस्तान) के राजपूत कुल में हुआ था। आपके पिता जी देश विभाजन के उपरान्त यहां ग्राम बालावास (हिसार) में आबाद हो गए। पिता जी अपनी कार्य कुशलता से गांव के सरपंच रहे और जब तक जीए तब तक पंचायत के मेम्बर रहते रहे। कृषि तथा पशुपालन आपका मुख्य व्यवसाय है।

आपने हिसार, भिवानी, गाजियाबाद में मांस की दुकान की थी। शराब, मांस, धूम्रपान आदि दुर्व्यसनों में फंसे हुए थे। श्री अत्तरसिंह आदि आर्य पुरुषों के संग से आपने उक्त सब दुर्व्यसन त्याग दिए और अब एक आर्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आर्य धरना बालावास में श्री अत्तरसिंह जी को तन, मन, धन तथा जन का पूरा पूरा सहयोग देते हैं। आपके रहते किसी गुण्डे की चूं करने की हिम्मत नहीं। आपकी बिरादरी के लोग आपके आदेश को शिरोधार्य मानते हैं।

सुदर्शनदेव आचार्य
सभा उपमन्त्री

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय प० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।

भारत सरकार द्वारा रजि नं० 23207/73 रजि० नं० P/RTK 49 फोन ४८१२



ओ३म् कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

सर्वहितकारी रोहतक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा का साप्ताहिक मुखपत्र

प्रधान सम्पादक—डा० रणजीतसिंह, सभा मन्त्री   सम्पादक—वेदव्रत शास्त्री

वर्ष ११ अङ्क ४८   २१ नवम्बर १९८४   वार्षिक शुल्क १५)   विदेश में ५ पौंड   एक प्रति ३० पैसे

दूसरी भेंट

जरा संभल के

लेखक—श्री भीमसैन दीवान गुड़गांव

समाचार पत्र पढ़े जाते हैं, वे भी सम्भवत: मनोरंजन की खातिर। यदि समाचारों पर ध्यान हो जाए तो यथा-समय मिली सूचना भविष्य का भविष्य बदल सकती है। उपेक्षा वृत्ति हमारे स्वभाव एक भाग बन रही है, जो कि एक अत्याचार और अपराध है।

अक्तूबर १९८२ के 'रैड-डाईजेस्ट' के प्रेस सेक्शन में एक समाचार प्रकाशित हुआ था, कि मुरादाबाद में बन्दूकें बनाई जा रही हैं। उस समय 'इण्डियन ऐक्सप्रेस के अनुसार इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने यह समाचार प्रकाशित करते उसके भयंकर परिणामों से सूचित किया था, कि अब समय है कि समाचार की छानबीन की जाए। यही छान-बीन मामले को कहीं से कहीं ले गई है।

मुझे मुरादाबाद से इतना लगाव नहीं, जितना कि अपने राष्ट्र से है। देखा देखी यह शौक हरकत शरारत का रूप धारण कर कहाँ की कहाँ तबाही और भय का मातम बपा कर चुकी है। इसलिये प्रार्थना की है कि सम्भल कर पढ़ना, उस पर गौर करना भी एक सिफत (गुण) है। हर काम को हल्के-पन से देखना, पढ़ना, सरसरी नजर डालना अर्थात् विहंगावलोकन करना एक तबीयत बन रही है, जिसका अनुमान लगाना कठिन है। समय ने दिखा दिया है कि यह रोग बढ़ते बढ़ते हजारों की संख्या में आ पहुँचा है। अब उसका कुफल समस्त देश को भुगतना पड़ रहा है। बल्कि देश की सलामती और सुरक्षा को भी खतरा पैदा हो चुका है। लायसेंसों का अधिक संख्या में जारी होना देश के लिए खतरे का कारण बन गया है। विधान की उपेक्षा और दुरुपयोग सीमा का अतिक्रमण कर चुका है। अब भी न जाने कितने अनैतिक तत्त्व इन अस्त्र शस्त्रों को छिपाकर अपने कुत्सित इरादों की पूर्ति के बाट जोह रहे हैं। ब्रिटिश सरकार की कानून व्यवस्था का क्या कहना? प्रत्येक थानेदार (S. H. O.) ग्राम चौकीदार हर प्रकार की अवैधानिक गतिविधियों से पूर्णतया अवगत होता था। बस्ता 'ब' के लोगों से पूर्ण परिचय। उनकी प्रतिदिन रात्रि के समय उपस्थिति—एक ऐसा अमर (शानदार काम) था कि अपराध पूर्णतया नियन्त्रण में थे। अब तो बस्ता 'ब' के हाथ पाँव ही टूट गए हैं। लूट खसूट, छीना झपटी ठगी चोरी दिन दहाड़े के बिजनिस बन गए हैं। कानून व्यवस्था का उल्लंघन या निरादर न्यायालयों तक में जज (न्यायाधीश) के सम्मुख किया जा रहा है।

एक रिपोर्ट छपी है कि आठ आने के लिए हत्या कर डालना एक साधारण सी प्रथा बन गई है। लोगों का खान पान यहां तक अपवित्र हो चुका है कि खुम मद्यों अखाद्य पदार्थों का सेवन करके और दिहाड़े नशे में धुत होकर भले आदमियों की इज्जत पर हाथ डालना। राह चलती साध्वी देवियों से छेड़-छाड़, गन्दी एवं कामुक भाषा में वार्तालाप। ये दिनचर्या ही बन गई है। स्वतन्त्रता ने उलटकर अपने हाथ पाँव काट डालना भी अधिकार बना लिया है। अनुशासन हीनता तो अपनी चरम सीमा तक जा पहुँची है। कार्यालयों, विद्यालयों, औद्योगिक संस्थानों यहां तक कि बाजारों में भी अनुशासन की खुले आम धज्जियां उड़ाई जा रही हैं।

सन् १९८२ के 'रैड डायि जस्ट" के अनुसार बाबू लोगों का देर से दफ्तरों में आना। उच्च अधिकारियों का अपनी कुर्सी से अनुपस्थित होना एक सेवा (साधारण काम) बन चुका था। न तो गवर्नमेंट ने ही और न ही जनता ने इस का नोटिस लिया। "मरज बढ़ता गया, ज्यों ज्यों दवा की" के अनुसार अब तो बाड़ ही खेत को हड़प लेने में मजा लेती है। यथा समय ऐक्शन वहां सुप्रबन्ध है, वहां बुद्धिमता से प्रथम कर्त्तव्य और राष्ट्र की पुनीत सेवा है।

विश्व पटल पर यह भी तो एक सच्ची घटना है कि जापान में कुछ वर्ष पूर्व में एक बहुत प्रसिद्ध मुकद्दमा (केस) चला था, जिसके अनुसार एक पिता ने अपने बेटे को गोली से दाग दिया था। पिता गिरफ्तार कर लिया गया। ज्यूरी के सम्मुख पेश हुआ। अपराध स्वीकार कर लिया गया। ज्यूरी कड़ा दण्ड देने के पक्ष में थी, किन्तु बाप ने ज्यूरी के सामने एक लिखित प्रार्थना की कि अपराध की पृष्ठ-भूमि (Back Ground) और वस्तु स्थिति पर भी ध्यान दिया जाए। ज्यूरी के आदेश दिये जाने पर बाप ने अपने अपराध को स्वीकार करते हुए बताया कि उसका नौजवान पुत्र घर भर में ला कानूनी और अनैतिकता का आदी (अभ्यस्त) हो चुका था। अपनी माँ को पीटता था। मुझ पर भी हाथ उठाता था। घर के किसी सदस्य पर वह दया या रहम न खाता था। सभी का नाक में दम कर रखा था। सभी परेशान एवं दु:खी थे। उसकी इन बढ़ती हुई आदतों को रोकने की खातिर। देश में एक बुरे उदाहरण के उन्मूलन हेतु तथा देश की सेवा को दृष्टिगत रख कर मानवता को बचाए रखने की इच्छा से मैंने यह घिनौना और जघन्य अपराध किया है। मेरी मजबूरी थी, और कोई इसके अतिरिक्त रास्ता ही न था। मैंने मानवता को जीवित रखने के लिये ही अपने बेटे से जीवन (जिन्दगी) का हक छीन लिया। उसका भूतल पर जीवित रहना मानवता की हत्या थी। अत: मैंने अपने पुत्र को गोली से उड़ाकर एक उदाहरण प्रस्तुत कर दिया। मैंने एक तहजीब की सुरक्षा के लिये यह पग उठा लिया जो कि अनुशासन की दृष्टि से सर्वथा उचित और मुनासिब था।

ज्यूरी ने वस्तु स्थिति को समझा, उस पर विचार किया। उसने उस बाप को जिसके गले में फांसी का फन्दा पड़ने वाला था, साफ बरी (अपराध-मुक्त) कर दिया। बुद्धि नहीं मानती कि ऐसे सन्तुलित मस्तिष्क और साहस वाला व्यक्ति भी हो सकता है। उसने धरती पर एक पुनीत उदाहरण छोड़ा कि कहीं मानवता को दाग न लग जाए। ऐसे व्यक्ति से जीवन का अधिकार छीन लिया जाए, जो मानवता की जड़ों में तेल देने का दुस्साहस करे।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

हमारी पूर्वी देशों की यात्रा

ब्र० रामवीर शास्त्री, गुरुकुल झज्जर

(गतांक से आगे)

हमारी विमान परिचारिका ने मधुरस्वर में कहा कि आप थाईलैंड की राजधानी बेंकाक में ईशकृपा से कुशल पहुँच गये हैं। आप सबका धन्यवाद। सभी यात्री अपनी पेटियाँ खोलकर खड़े हो गये और अपना अपना सामान उठाया तब तक विमान में सीढ़ियाँ भी लग गई और दरवाजा खुल गया, शनैः शनैः सभी यात्री पंक्तिबद्ध नीचे उतरने लगे, नीचे उतरते हुओं को वायु कन्या हाथ जोड़कर खड़ी हुई बाय बाय कह कर स्वागत कर रही थी। विमान से बाहर निकलकर निकास द्वार पर कस्टम अधिकारियों का अपना कार्ड, पासपोर्ट, वीसा आदि दिखा कर मोहर लगवाकर हम सब विमान क्षेत्र से बाहर आ गये। जैसे ही हम विमान क्षेत्र से बाहर आये बेंकाक आर्यसमाज के अधिकारी फूल मालायें लिये हुये हमारे स्वागत करने की प्रतिक्षा में खड़े थे, विशेष तरह की फूल मालाओं और जयघोषों से हमारा स्वागत किया गया, जो कि वहां के लोगों के लिए एक दर्शनीय दृश्य बन गया था। आर्य बन्धुओं के स्वागत कर लेने पर वहाँ के ट्रेवल एजेण्ट मनोहरा होटल से आये व्यक्तियों ने भी स्वागत किया और हमारा प्रतीक्षा कर रही बस में हमें बैठाकर वहां के दर्शनीय स्थानों और अपने देश की प्रशंसा करते हुए हमें मनोहरा होटल में ले गये। हमारा सारा सामान दूसरी गाड़ी में पहले ही होटल पहुँच चुका था, जिस बस में होटल पहुंचे वह बस हमारे यहां से विशेष थी, उसमें वातानुकूलित यन्त्र थे, दूरध्वनि यन्त्र से हम सबको गाईड अंग्रेजी में समझा रहा था। टेलिविजन और फोन भी गाड़ी में लगे हुए थे। इस गाड़ी से हम होटल में पहुँच गये और अपने अपने कमरों की कुञ्जी (चाबी) लेकर कमरों में चले गये। एक कमरे में दो ही व्यक्ति ठहर सकते थे। मैं तो स्वामी ओमानन्द जी के साथ हो गया और विरजानन्द जी डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार के साथ हो गये। इसी प्रकार अन्यों ने भी अपने विचारों वालों के साथ सैटिंग कर ली। हमारा सबका सामान हमारे कमरों में ही पहुँचा दिया गया। वहां पर प्रातः कालीन नित्य कर्मों से निवृत होकर हम हम तैयार हो गये। प्रातः राश के लिए प्रातःराश (नास्ते) में हमें कुछ फल व जूस दिया गया। प्रातः राशोपरान्त हम सब घुमने गये एक बस विशेष के द्वारा। उसमें हमारा वही गाईड था जो कि हवाई अड्डे से यहां होटल तक हमें वहां के विषय में बताता हुआ आया था। उसने हमें निम्न जानकारी दी।

यहां बेंकाक (थाईलेण्ड) में ९५ प्रतिशत बौद्ध धर्मी रहते हैं। स्त्री और पुरुष बराबर संख्या में हैं। सभी को समान अधिकार है। बेंकाक में एक बौद्ध मन्दिर देखा जिसमें १० फुट ऊंची साढ़े पाँच टन सोने की महात्मा बुद्ध की मूर्ति सिद्धासन में साधना करते हुए दिखाई गई है जो कि ७०० वर्ष पुरानी है, एक बार ब्रह्मा देश ने इस देश पर आक्रमण कर दिया था तो इस मूर्ति की सुरक्षा के लिए इस पर सिमेण्ट का पलस्तर कर दिया गया था, जिसके अवशेष अब तक वहीं पर रखे हुए हैं। इस प्रकार से यहां के लोगों ने इस मूर्ति की रक्षा की थी। इस मन्दिर में एक दानपात्र रखा है जिसमें श्रद्धालु आकर नोट डालते हैं। वह शीशे का है, लगता था उसमें हजारों नोट हों। इस मन्दिर में आने वाले श्रद्धालु २ कमल के फूल कुछ अगरबतियाँ और कुछ सोने के पत्र (वर्क) जैसे हमारे यहां चाँदी के मिठाईयों पर लगाते हैं वैसे ही वहां सोने के वर्क मूर्ति पर अपने हाथ से लगाकर वहीं अगरबतियों को भी लगाते थे और कमल के फूलों को वहां मूर्ति के सामने रख देते थे, वहां वे उस मूर्ति पर इतना कुछ करते हैं उनके साथ ही वहां हजारों कबूतरों के लिए अन्न भी डालते हैं। लगता था उनके वे कबूतर पालतू से हों। हम ने कमल के फूल का भाव (मूल्य) पूछा तो उन्होंने बताया वह सुनकर हम आश्चर्य में पड़ गये। हमारे भारतीय रुपये के अनुसार १० रुपये का एक फूल, अगरबत्तियां भी बहुत मूल्य की थी। इसी मन्दिर के एक ओर बौद्ध बिहार था जिसमें छोटे बड़े ३०० साधु रहते थे। पूज्य स्वामी जी महाराज तथा अन्य कुछ लोगों ने बात करनी चाही तो वे लोग हिन्दी तो समझते ही नहीं थे, हमने सोचा शायद अंग्रेजी समझते हों, अंग्रेजी बोलना प्रारम्भ किया तो उसे भी वे नहीं समझ सके। मैंने सोचा साधु हैं ब्रह्मचर्य वाली गुरुकुलीय वेश-भूषा में रह रहे हैं शायद संस्कृत समझते हों, ये समझकर मैंने संस्कृत बोलना आरम्भ किया तो वे संस्कृत भी नहीं समझ सके। केवल एक वाक्य रटा हुआ है कि "बुद्धं शरणं गच्छामि" इसी से वे सन्तुष्ट हैं। इसी मन्दिर के एक ओर शमशान घाट भी है।

बेंकाक अकेले शहर में ३८५ बौद्ध मन्दिर हैं। वहां पर एक बाजार चीनियों का है। एक बाजार में अधिकतर भारतीय हैं। बड़े ऊंचे ऊंचे बहुमञ्जिले कुछ मकान हैं। यहां के राजा को राम कहते हैं। अब वर्तमान समय में ९ वाँ रामराज्य कर रहा है। एक और बौद्ध मन्दिर देखा जिसे प्रथम राम का बनाया हुआ बताते हैं।

क्रमशः

हरयाणा आर्य वीर दल सम्मेलन गुड़गांव

हरयाणा आर्य वीर दल का सम्मेलन जो कि ३, ४ नवम्बर को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के निधन होने के कारण स्थगित हो गया था, अब १, २ दिसम्बर को गुड़गांव में ही होगा। १ दिसम्बर को शोभायात्रा, तथा २ दिसम्बर को पूर्व कार्यक्रमानुसार आर्य नेताओं के व्याख्यान होंगे। वेदप्रकाश आर्य मन्त्री

सम्पादकीय:-

लोकसभा के चुनाव और आर्यसमाज

२४ दिसम्बर को लोकसभा के चुनाव हो रहे हैं। अभी राजनतिक दल अपने अपने प्रत्याशी खड़े करने की तैयारी कर रहे हैं। कुछ क्षेत्रों में स्वतन्त्र प्रत्याशी भी अपने भाग्य को आजमाने के दाव में मैदान में कूद रहे हैं।

आर्यसमाज राजनैतिक संस्था नहीं है, परन्तु राजनीति का प्रभाव आर्यसमाज पर भी पड़ता है। यदि कोई प्रत्याशी सफल होकर परोपकारी तथा समाज सुधार और लोकहित के कार्य करता है, तो उसके साथ आर्यसमाज की सहानुभूति बन जाती है, चाहे वह किसी भी राजनैतिक दल से सम्बन्ध क्यों न रखता है और समाज विरोधी, भ्रष्टाचार तथा स्वार्थ पूर्ति करने वालों का आर्यसमाज के क्षेत्रों का सदा विरोध किया जाता है। प्राय: आर्यसमाज के उत्सवों तथा सम्मेलनों पर भी आर्यसमाज समर्थक नेताओं को आमन्त्रित किया जाता है।

चुनाव के परिणाम घोषित होने तथा उसके पश्चात् सफल होने वालों लोकसभा तथा विधान सभाओं के सदस्यों के कार्यकलापों पर प्रतिक्रिया आरम्भ हो जाती हैं और जो आर्यसमाज की विचारधारा के विरुद्ध होंगे उनको आलोचना आरम्भ होना स्वाभाविक है।

अत: चुनाव से पूर्व ही आर्य जनता को निश्चय कर लेना चाहिए कि उन्हें किस प्रत्याशी का समर्थन तथा विरोध करना है। आर्यसमाज के संगठन में प्राय: सभी राजनैतिक दलों के सदस्य हैं और आर्यसमाज के सदस्यों को भी खुली छूट है कि वे अपने पसन्द के प्रत्याशी का समर्थन करें चाहे वह किसी भी दल का टिकट से चुनाव क्यों न लड़ रहा हो। एक ही किसी राजनैतिक दल से आर्यसमाज को सम्बन्ध करना उचित नहीं है। आजकल राजनैतिक दल भी बदल रहे हैं। यदि गत वर्ष उस दल का नाम कुछ था तो आज कुछ और है। किसी एक दल से आर्यसमाज का सम्बन्ध करने से आर्यसमाज के संगठन को भी हानि होगी क्योंकि जिस राजनैतिक दल का विरोध किया जाएगा, उस दल के कार्यकर्त्ता भी आर्यसमाज के संगठन से दूर हो जावेंगे और वे आर्यसमाज के कार्यों में समर्थन करने के स्थान पर खुलकर विरोध करेंगे। इस प्रकार आर्यसमाज के संगठन में एक ही विशेष दल के सभासद रह जायेंगे। परन्तु आर्यसमाज एक सार्वभौमिक संस्था है। इसके द्वार सभी के लिये खुले हुये हैं।

अतः आर्यसमाज के कार्य कर्त्ताओं से हमारा परामर्श है कि वे आगामी लोकसभा के चुनाव में किसी एक राजनैतिक दल से न जुड़ें और जिस किसी भी दल की ओर से ऐसा प्रत्याशी खड़ा किया जाता है जो कि सदाचारी, परोपकारी तथा समाज सुधार कार्यों में रुचि रखता है और आर्यसमाज द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में भी अपने दल के अनुशासन की परवाह न करते हुए बढ़चढ़ कर भाग लेता है, उसका समर्थन करना चाहिए।

जो प्रत्याशी स्वयं शराब पीने वाला चुनाव अभियान में शराब की बोतलें बांटने वाला हो और उसका पिछला रिकार्ड भी भ्रष्टाचार तथा स्वार्थपूर्ति से कलंकित हो और उसने आर्यसमाज की विचारधारा का विरोध किया है, इस प्रकार के प्रत्याशी का खुलकर विरोध करना चाहिये। चाहे वह किसी भी दल से चुनाव क्यों नहीं लड़ रहा हो। यदि हम किसी विशेष दल से सम्बन्धित होने के कारण इस प्रकार के भ्रष्ट आचरण के प्रत्याशी का समर्थन तथा सहयोग करेंगे तो बाद में अवश्य पश्चाताप करना पड़ेगा।

भारत के नव प्रधान मन्त्री श्री राजीव गांधी ने भी घोषणा की है कि वे चरित्रवान, कार्यकुशल एवं ईमानदार व्यक्तियों को ही लोकसभा के चुनाव में टिकट देंगे। इसी प्रकार की घोषणाएं अन्य राजनैतिक दलों के नेता भी कर रहे हैं। सम्भव है जब तक सर्वहितकारी का यह अंक पाठकों तक पहुँचेगा तब तक सभी दलों के प्रत्याशियों के नामों की सूची समाचार पत्रों में प्रकाशित हो जायेगी।

अत: आर्यसमाज के कार्यकर्त्ता मेरे सुझाव पर गम्भीरता पूर्वक मनन करके उन्हीं प्रत्याशियों का समर्थन तथा सहयोग करें जो कि आर्यसमाज के कार्यों में आस्था रखते हैं तथा उनका दामन साफ हो और उन्होंने अपने स्वार्थों को त्यागकर जनहित के कार्य किये हों। वे बिकाऊ माल नहीं होने चाहिएं। अभी तक राज्यों में ही बिकाऊ विधायक हैं। यदि केन्द्रीय सरकार में भी इस प्रकार बिकने वाले व्यक्ति (संसद में) पहुँच गये तो राष्ट्रीय एकता को खतरा हो जायेगा। आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को चाहिए कि वे इस चुनाव में जनता का मार्ग दर्शन करके सत्य को सत्य तथा असत्य को असत्य का प्रकाश करें।

रणजीतसिंह सभा मन्त्री

पानीपत में पुरोहित प्रशिक्षण

आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जिला करनाल की ओर से पुरोहितों की कमी को पूरा करने के लिए पुरोहित प्रशिक्षण की श्रेणियाँ लगाने का कार्यक्रम बनाया है।

इच्छुक महानुभाव ३० नवम्बर तक अपने प्रार्थना पत्र भेजकर अपना स्थान सुरक्षित करा लेवें। प्रत्याशी की योग्यता मैट्रिक पास होनी चाहिये। भोजन तथा आवास आदि का प्रबन्ध आर्यसमाज की ओर से होगा। प्रशिक्षण केवल २ या ढाई मास का होगा।

रामानन्द सिंगला प्रबन्धक
पुरोहित प्रशिक्षण आर्यसमाज बड़ा बाजार पानीपत जि० करनाल

शराबबन्दी प्रस्ताव भिजवायें

जो आर्यसमाजें अपने यहां वार्षिक प्रचार करवाना चाहते हों वे शीघ्र सभा को पत्र लिखकर प्रचार प्रबन्ध करा लेवें। अपनी पंचायतों से भी शराबबन्दी के प्रस्ताव पारित करवाकर प्रधानमन्त्री तथा मुख्य मन्त्री को भिजवाने का कष्ट करें।

अन्तरंग सभा की बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की अन्तरंग सभा की बैठक २५ नवम्बर १९८४ को प्रातः ११ बजे सभा के कार्यालय सिद्धान्ती भवन दयानन्द मठ रोहतक में हो रही है। अन्तरंग सभा के सदस्यों से अनुरोध है कि वे यथासमय बैठक में पधारें।

सभा मन्त्री

शोक समाचार

आर्यसमाज चबूतरों जिला अम्बाला के मन्त्री श्री मामचन्द आर्य के पिता चौ० सरदाराम जी का ६ नवम्बर को स्वर्गवास हो गया। आप आर्यसमाज के कार्यों में श्रद्धा पूर्वक भाग लेते थे।

आर्यसमाज ने उनके निधन पर एक शोक प्रस्ताव करते हुए दिवंगत आत्मा को सद्गति तथा उनके परिवार को उनके वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की गई है।

बीरसिंह उपमन्त्री

आर्यसमाज की गतिविधियाँ

हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन

सर्वहितकारी के गतांकों में हरयाणा के आर्यसमाजों से निवेदन किया गया है कि जिन आर्यसमाजों ने अभी तक अपने यहां वार्षिक उत्सव अथवा वार्षिक प्रचार नहीं करवाया है, वे सभा को पत्र लिखकर प्रचार की व्यवस्था करवा लेवें। वेदप्रचार तथा दशांश का वर्ष समाप्त होने जा रहा है। अतः आर्यसमाजें वेदप्रचार, दशांश तथा सर्वहितकारी आदि का प्राप्तव्य धन सभा प्रचारकों अथवा मनीआर्डर द्वारा यथाशीघ्र सभा कार्यालय में भेजने का कष्ट करें, ताकि चुनाव की तिथि निश्चित करने पर प्रतिनिधियों को समय पर ऐजण्डा आदि भेजा जा सके।

जिन आर्यसमाजों से अभी तक प्राप्तव्य धनराशि प्राप्त नहीं हुई है, उनके पास सभा कार्यालय से पत्र लिखे जा रहे हैं।

आर्यसमाजों को अपने क्षेत्र के ग्रामों से शराबबन्दी तथा हरयाणा के हितों की रक्षा हेतु प्रस्ताव भी पास करवाकर शीघ्र सरकार के पास व एक प्रति सभा कार्यालय में भिजवाने का यत्न करें। दोनों प्रस्तावों का प्रारूप आर्यसमाजों को डाकद्वारा पूर्व भेज दिया गया था। आशा है आर्य समाजें इस ओर अवश्य ध्यान देंगे। रणजीतसिंह

सभा मन्त्री

हिमाचल प्रदेश में वेदप्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश की प्रार्थना पर दिल्ली निवासी आर्यजगत् के प्रसिद्ध विद्वान् पं० ब्रह्मप्रकाश जी शास्त्री, विद्यावाचस्पति ने लगभग १ मास तक अपने ओजस्वी तथा सुमधुर भाषणों के द्वारा अनेक आर्यसमाजों में प्रचार कार्य किया। शास्त्री जी ने झूठे भगवानों तथा देवियों का पुरजोश खण्डन करते हुए एकेश्वरवाद का प्रतिपादन किया। सुन्दर नगर तथा स्वाटू के सनातन धर्म मन्दिरों में भाषण देते हुए महोपदेशक जी ने बतलाया कि आर्यसमाज एक क्रान्तिकारी आन्दोलन है, जिसका कार्य वैदिक संस्कृति की रक्षा करना है।

आर्यसमाज लोअर बाजार शिमला, कसौली, धर्मपुर, अर्कीमण्डी तथा कुल्लू की आर्यसमाजों में वेदोपदेश के द्वारा प्रभावशाली कार्यक्रम हुआ। ठियोग में आर्यसमाज की स्थापना का कार्य भी सम्पन्न हुआ।

मन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश

स्वामी रुद्रवेश जी द्वारा ग्रामों में वेदप्रचार

१, २ नवम्बर खरककलां, ३, ४ नवम्बर को बोंदकलां ५, ६ बोंद खुर्द, ७ को रणकोली, ८, ९ को सांजरवास, १०, ११ को कलिङ्गा में वैदिक धर्म का प्रचार हुआ। यज्ञ के ऊपर अनेक लोगों ने शराब हुक्का आदि दुर्व्यसनों को छोड़ने की प्रतीज्ञा की एवं माता बहनों ने भी हुलास तम्बाकू आदि बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा की। ग्राम कलिङ्गा में आर्यसमाज की स्थापना की गई। लोगों ने बड़े उत्साह से प्रचार की भूरी भूरी प्रशंसा की। नवयुवकों ने बड़े उत्साह से प्रचार के प्रबन्ध का संचालन किया। इधर प्रचार की बड़ी भारी आवश्यकता है और लोगों की माँग भी बड़ी भारी है। गणपतसिंह आर्य भिवानी

पं० गणपति शर्मा की प्रतिमा की स्थापना

चूरू २८ अक्तूबर। आर्यजगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि शास्त्रार्थ महारथी पं० गणपति शर्मा की आवक्ष प्रतिमा उनके जन्म स्थान राजस्थान चूरू नगर के इन्द्रमणि पार्क में स्थापित की गई है। पं० गणपति शर्मा पुरानी पीढ़ी के आर्य विद्वान् तथा अपूर्व वक्ता थे। उनका निधन १९१२ में हुआ था। इस प्रतिमा की स्थापना चूरू नगर की एक सांस्कृतिक संस्था नगर ने की है। प्रतिमा के लिये नगर पालिका चूरू ने प्रमुख सार्वजनिक उद्यान में स्थान उपलब्ध कराया व नगर के धनी मानी सज्जनों ने उन्मुक्त रूप से धन प्रदान किया। यह स्मरणीय है कि इस नगर में आर्यसमाज भी नहीं है।

प्रतिमा का अनावरण आर्यसमाज के प्रमुख शोध विद्वान् डाक्टर भवानीलाल भारतीय ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए उन्होंने पं० गणपति शर्मा के वैदुष्य पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला तथा नगर वासियों को पंडित जी की स्मृति को चिरस्थायी बनाने के लिये धन्यवाद दिया। नगर श्री के मन्त्री प्रसिद्ध पुरातत्त्वविद् और अन्वेषक श्री सुबोध अग्रवाल ने सभा का संचालन किया और समारोह की अध्यक्षता डा० ब्रह्मानन्द शर्मा (पूर्व अध्यक्ष प्राच्य विद्या प्रतिष्ठान जोधपुर) ने की। श्री सुबोध अग्रवाल ने विश्वास दिलाया कि निकट भविष्य में नगर श्री के द्वारा पं० गणपति शर्मा के जीवन एवं व्यक्तित्व को मरु श्री नामक पत्रिका के एक विशेषांक के रूप में प्रकाशित किया जाएगा। यह भी स्मरणीय है कि आर्य सामाजिक मर्यादा को ध्यान में रखते हुए प्रतिमा पर फूलमालायें अर्पित नहीं की गई और समारोह एक इतिहास पुरुष की स्मृति को सुरक्षित रखने की भावना से ही सम्पन्न किया गया।

सुबोध अग्रवाल

मन्त्री नगर श्री चूरू

टंकारा में ऋषि मेला

महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा ट्रस्ट की ओर से भव्य ऋषि मेला हर वर्ष की भांति १६, १७, १८ फरवरी १९८५ को मनाया जा रहा है। इसके लिए प्रारम्भिक तैयारी आरम्भ हो गई है। दिल्ली से एक विशेष रेलगाड़ी का प्रबन्ध किया जा रहा है। भारत सरकार से इस सम्बन्ध में पत्र व्यवहार चल रहा है। सूचना आने पर सब पत्रों में विवरण दे दिया जायेगा। मेरी समस्त आर्य जनता एवं ऋषि भक्तों से प्रार्थना है कि वे इस शुभ अवसर पर सपरिवार टंकारा जाने का अवश्य प्रोग्राम बनायें। इस समय ऋषि दयानन्द जन्मस्थली टंकारा में अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय, गौशाला, बाहर से आने वाले अतिथियों के लिए अतिथि गृह आदि कार्य सुचारू रूप से चल रहे हैं।

रामनाथ सहगल

दिवंगत प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी के निधन पर आर्यसमाजों के शोक प्रस्ताव

दिवंगत प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी की दो सिख उग्रवादियों द्वारा निर्मम हत्या किये जाने पर आर्यसमाजों की ओर से शोक प्रस्ताव निम्न प्रकार प्राप्त हुए हैं—

१—आर्यसमाज बारवन जिला अम्बाला

२—आर्यसमाज सफीदों जिला जीन्द

३—गुरुकुल विद्यापीठ हरयाणा, भैंसवाल तथा कन्या गुरुकुल खानपुर कलां जिला सोनीपत

४—आर्य केन्द्रीय सभा करनाल

५—आर्यसमाज मौहल्ला संघीवाड़ा नारनौल जिला महेन्द्रगढ़

६—आर्य केन्द्रीय सभा रोहतक

दयानन्द संस्थान हरध्यानसिंह मार्ग नई दिल्ली

८—आर्यसमाज नरेला दिल्ली

९—आर्यसमाज झज्जर रोड़ रोहतक

१०—आर्यसमाज नरवाना जिला जीन्द

हैदराबाद के सत्याग्रहियों को स्वाधीनता सेनानी सम्मान देना होगा

(रामगोपाल शालवाले, प्रधान सार्वदेशिक सभा)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १९३८ में एक विशाल आर्य महासम्मेलन दिल्ली में लोकनायक माधव श्रीहरिअणे के के सभापतित्व में हुआ था। इसमें सारे देश के आर्यसमाजी नेताओं के अतिरिक्त राष्ट्रीय नेताओं ने भी उसमें भाग लिया था। आर्य हिन्दू जनता का उत्साह और मनोबल उस अवसर पर तरंगें ले रहा था। सब प्रकार के संवैधानिक उपायों के असफल होने पर राष्ट्र नेताओं ने सलाह और सहयोग के बाद सन् १९३९ में शक्तिशाली अंग्रेजी सत्ता के परम मित्र एवं देशी नरेशों में सर्वोपरि हिज एग्जाल्टेड निजाम की सरकार के विरुद्ध सार्वदेशिक सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सत्याग्रह तब चलाया था। आर्यसमाज के रियासती कार्यकर्त्ता उससे पूर्व ही इस मुगलिया वंश की शासकों की सरकार की क्रूर धर्मान्धता अन्याय और अत्याचार के शिकार हो चुके थे। बड़ा कठोर संघर्ष था। परन्तु महर्षि दयानन्द के अनुयायियों और आर्य हिन्दू जनता की त्याग और बलिदान की भावना ने हार मानना नहीं जाना। इससे पूर्व पटियाला और धौलपुर रियासतों के अलावा अंग्रेजों के भारत में भी आर्यसमाज ने अपने सम्मान पर कभी आंच नही आने दी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के पूज्य प्रधान महात्मा नारायण स्वामी जी ने सर्वप्रथम सत्याग्रह द्वारा उस आन्दोलन का श्रीगणेश किया था। इसके बाद राजस्थान प्रतिनिधि सभा के प्रधान कुंवर चांदकरण शारदा पंजाब से मिलाप के सम्पादक और प्रादेशिक सभा के प्रधान लाला खुशहालचन्द, उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान राजगुरु पं० धुरेन्द्र शास्त्री पंजाब से महाशय कृष्ण जी, पंडित बुद्धदेव विद्यालंकार, गुजरात से पं० ज्ञानेन्द्र जी के नेतृत्व में हजारों व्यक्तियों ने सत्याग्रह में भाग लिया। फीजी, स्याम (थाईलैंड) और बर्मा तक के प्रवासी और सभी प्रदेशों व धर्मावलम्बियों ने इसमें भाग लिया था। कुल मिलाकर १२ हजार व्यक्ति जेल में पहुँचे, और जब आठवें नायक बैरिस्टर विनायकराव विद्यालंकार अपने विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रहियों में जाने वाले थे। निजाम ने आर्यसमाज की मांगों को स्वीकार करके सत्याग्रहियों को रिहा कर दिया। उस काल में बहुत से आर्यवीर शहीद हो गये। स्वर्गीय सरदार पटेल ने ठीक ही कहा था— यदि आर्यसमाज का यह सत्याग्रह न होता तो निजाम रियासत का भारत में विलय इतनी आसानी से नहीं होता।

स्वाधीनता के बाद आशा हुई थी कि भारत सरकार और राज्य सरकारें इन वीरों का उचित सम्मान करेंगी, यद्यपि आर्य वीरों ने इस कामना से इसमें भाग नहीं लिया था। बाद में सम्मानार्थ पेंशन की योजना भी १९७२ में लागू हुई। उसमें हिंसावादी साम्प्रदायिक आन्दोलन खिलाफत तहरीक, मोपला विद्रोह के अलावा रियासत में नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन के लिये काम करने वाली शेख अब्दुला की मुस्लिम कांफ्रेंस एवं सिखों के धार्मिक अकाली आन्दोलनों, यथा जैतो (नाभा) को भी सरकार ने स्वाधीनता सेनानी सम्मान के लिये स्वीकार कर लिया, परन्तु आर्यसमाज द्वारा अंग्रेजी शासनकाल में सिंध में सत्यार्थप्रकाश की रोक तथा धौलपुर और पटियाला रियासतों में धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये सरकार के विरुद्ध किये गये आन्दोलन को इस श्रेणी में अब तक नहीं रखा गया।

सार्वदेशिक सभा ने इस दिशा में लगातार सरकार से सम्पर्क रखा है और हैदराबाद के आर्यसमाज के सत्याग्रहियों की अन्य रियासती आन्दोलनों भांति पेंशन व सम्मान देने की मांग की है। प्रधानमन्त्री व गृहमन्त्री को इस हेतु पत्र लिखे गये। परन्तु अब तक इस विषय में इस को अनिर्णित ही बताया जा रहा है। यह बड़े खेद की बात है कि इन ४५ वर्षों में अधिकांश आर्यवीर मर खप गये और जो जीवित हैं वे भी ६२, ८० साल की आयु के हो चुके हैं। राजनैतिक दलों की भेदभाव पूर्ण नीति इसमें मुख्य कारण है।

सार्वदेशिक सभा की यह प्रबल कामना और प्रयत्न रहा है कि इस चुनाव वर्ष में आर्यसमाज के उन सत्याग्रहियों को भी राष्ट्रीय सम्मान मिले। इस सम्बन्ध में बराबर प्रयत्न किये जा रहे हैं और आशा है कि ईश्वर कृपा व आप सबके सहयोग से उसमें सफलता मिलेगी। मामला विचाराधीन तो है ही। इस आर्य सत्याग्रह में भाग लेने वालों को इस विषय में अपना पूर्ण विवरण यथा नाम पिता का नाम सत्याग्रह के समय और अब का निवास स्थान गिरफ्तार होने की और छूटने की तिथि, तथा न्यायालय के आदेश की प्रमाणित प्रति और जेल में रहने व छूटने का प्रमाण पत्र और अन्य आवश्यक विवरण इस सभा में भेज देना चाहिये, जिससे कि सरकारी घोषणा के बाद यथा सम्भव शीघ्र यह कार्यवाही की जा सके। यदि इस विषय में राज्य केन्द्र सरकार को आवेदन पत्र दिया गया हो या उस पर जो निर्णय हुआ हो, उसकी प्रति भी सभा में भेजना उपयोगी होगा। प्रतिनिधि सभाओं, आर्य समाजों और संस्थाओं को इस विषय में सचेष्ट होकर सबको सूचना देनी चाहिये।

पण्डित ब्रह्मदत्त स्नातक जो उक्त सत्याग्रह में भाग लेने के बाद १९७६ में भारत सरकार में एक ऊँचे पद से रिटायर हो चुके हैं, वे भी १९६५ से इस बारे में आवश्यक प्रयत्न करते रहे हैं। सभा के पते पर उनसे पत्र व्यवहार किया जाना चाहिये। आगे की सूचना के लिये प्रतीक्षा कीजिये।

अपने बच्चों को धार्मिक बनायें

धर्म प्रवेशिका का प्रकाशन

आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की आर्य विद्या परिषद् की ओर से आर्य स्कूलों मे ५ वीं तथा ६ वी कक्षाओं में धार्मिक शिक्षा पढ़ाने के लिए "धर्मप्रवेशिका" पुस्तक का प्रकाशन किया गया है। इसका लेखन सभा के सुयोग्य मन्त्री डा० रणजीतसिंह जी कि शिक्षा शास्त्री हैं ने किया है। एक प्रति का मूल्य २ रुपये है। अतः अपने बच्चों को धार्मिक शिक्षा देने के लिए इस पुस्तक को मंगवाकर धर्म लाभ उठाव।

प्राप्ति स्थान

प्रस्तोता, आर्य विद्या परिषद् हरयाणा
सिद्धान्ती भवन, दयानन्द मठ, रोहतक

दक्षिण-पूर्वी एशिया की सांस्कृतिक यात्रा

(लेखक—डा० सत्यकेतु विद्यालंकार)

हजारों पर्यटक प्रतिमास भारत से थाईलेंड और सिंगापुर जाते हैं। उनमें से कुछ पूर्व दिशा में और आगे बढ़कर हांगकांग तक चले जाते हैं और कुछ जापान तक पर्यटकों के लिए ये देश विशेष आकर्षण रखते हैं। सिंगापुर और हांगकांग कस्टम्स फ्री (आयात कर से मुक्त) नगर हैं। वहां टेलीविजन, घड़ियां, ऊनी वस्त्र और वीडियो आदि सस्ते मूल्य पर प्राप्त किये जा सकते हैं। आधुनिक भौतिक सभ्यता का चरम उत्कर्ष जापान में देखने को मिलता है और हांगकांग तथा पटाया (थाइलेंड की एक नगरी) विलासिता के प्रसिद्ध केन्द्र हैं। इन सबकी ओर पर्यटकों का आकृष्ट होना सर्वथा स्वाभाविक है।

पर सिंगापुर के दक्षिण पूर्व में इन्डोनेशिया के जो बहुत से द्वीप हैं। उनकी ओर भारत के पर्यटकों का अभी तक ध्यान नहीं गया। प्राकृतिक की रमणीयता तथा आधुनिक सुख साधनों की दृष्टि से ये द्वीप विश्व के किसी भी पर्यटक स्थल से कम नहीं हैं। बाली द्वीप में अमेरिका आस्ट्रेलिया, जापान और यूरोप से लाखों पर्यटक भ्रमण के लिये आते हैं, और दक्षिण पूर्वी एशिया में एक पर्यटक या यात्री वहां नहीं जाते। यह बात इस कारण और भी आश्चर्य की है, क्योंकि बाली द्वीप के ९५ प्रतिशत निवासी हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, और धर्म तथा संस्कृति की दृष्टि से भारत के साथ उसका घनिष्ट सम्बन्ध है। केवल बाली में ही नहीं, अपितु इन्डोनीसिया के जावा व लम्बक आदि द्वीपों में भी लाखों हिन्दुओं का निवास है, और ये सब द्वीप सांस्कृतिक दृष्टि से अब तक भी भारत से प्रभावित हैं। सोलहवीं सदी के प्रारम्भ तक इन्डोनीसिया के प्राय. सभी द्वीपों में हिन्दू धर्म का प्रचार था और वहां के राजा हिन्दू धर्म के अनुयायी थे। उस समय तक दक्षिण पूर्वी एशिया का यह क्षेत्र बृहत्तर भारत का ही अंग था। पिछली चार सदियों में इन्डोनीसिया के बहुसंख्यक निवासी इस्लाम को अपना चुके हैं, पर अपनी प्राचीन सांस्कृतिक परम्पराओं का उन्होंने परित्याग नहीं किया है। वहां की भाषा, कला, रीति-रिवाज, त्योहार, उत्सव, मनोरंजन आदि सब पर भारत का पूरा पूरा प्रभाव आज तक भी विद्यमान है। हिन्दू धर्म का भी अभी वहां लोप नहीं हुआ है। इन्डोनीसिया के जो लोग हिन्दू धर्म के अनुयायी हैं, उनकी संख्या पस्सी लाख के लगभग हैं, जिनमें से पच्चीस लाख के लगभग बाली द्वीप में निवास करते हैं, और दस लाख के लगभग लम्बक द्वीप में। इन्डोनीसिया के ये हिन्दू फीजी, मारीशस, सुरीनाम और केनिया आदि के हिन्दुओं के समान गत सौ डेढ सौ वर्षों में वहां जाकर नहीं बसे हैं। भारतीय हिन्दुओं के समान वे भी हजारों वर्षों से हिन्दूधर्म का अनुकरण कर रहे हैं। बाली द्वीप तो सच्चे अर्थों में हिन्दू प्रदेश या आर्य राज्य हैं। कोई कोई भारतीय हिन्दू पिछली सदी में वहां अवश्य गये हैं, और वहां के भी कोई कोई विद्यार्थी शान्ति निकेतन व हिन्दू विश्वविद्यालय सदृश संस्थाओं में शिक्षा के लिये आये हैं। पर सुदूर दक्षिण पूर्वी एशिया के इन लाखों हिन्दुओं के साथ भारत का सम्बन्ध नाममात्र का ही रहा है। गुप्तवंश के काल (चौथी–छठी सदी) के पश्चात् विद्वानों व पण्डितों की कोई भी मण्डली इस क्षेत्र में नहीं गई, जिसके कारण इन्डोनीसिया के धर्म का भारत के हिन्दूधर्म के साथ सम्पर्क नहीं रह गया, और मध्यकाल में भारत में जिस भक्ति आन्दोलन का प्रादुर्भाव हुआ, और कृष्ण ने विष्णु के अवतार के रूप में जो महत्वपूर्ण स्थान इस देश के हिन्दूधर्म में प्राप्त कर लिया, इन्डोनीसिया के हिन्दू उसके अपरिचित रहे।

यह प्रसन्नता की बात है कि इस क्षेत्र के हिन्दुओं के साथ सम्पर्क स्थापित करने की ओर कतिपय महानुभावों का ध्यान गया, जिसके परिणाम स्वरुप हिन्दू पर्यटकों की एक मण्डली भारत में दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा के लिये गई और थाईलेण्ड तथा सिंगापुर के साथ-साथ वह जावा और बाली द्वीपों में भी गई। इस मण्डली में बीस नर नारी थे, जो सभी सुशिक्षित एवं उदबुद्ध वर्ग के थे। परोप-कारिणी सभा के प्रधान स्वामी ओमानन्द सरस्वती (अपने दो उच्च शिक्षित शिष्यों तथा एक शिष्या के साथ) चित्रकला के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त कलाकार श्री बेन्दरे, धर्मस्थल कर्नाटक के प्रतिनिधि श्री लक्ष्मीनारायण आल्वा, विश्व हिन्दू परिषद् के प्रचार मन्त्री दत्तात्रेय तिवारी, आर्य वानप्रस्थ आश्रम हरिद्वार के डा॰ मेहता, लखनऊ विश्व-विद्यालय की प्रोफेसर डा॰ शान्ति देवबाला, कानपुर के प्रसिद्ध पत्रकार श्री सत्यनारायण जायसवाल, डा॰ कमला प्रधान श्रीमती रुक्मिणी देवी, श्री रामाज्ञा ठाकुर आदि कितने ही सम्भ्रान्त व सुशिक्षित नर-नारी इस यात्रा मण्डली में सम्मिलित हुए थे। मैं भी इस यात्रा में साथ गया था यात्रा की सब व्यस्था ट्रेवल ट्रस्ट (बी, २४ निजामुद्दीन ईस्ट. नई दिल्ली द्वारा की गई थी, और इस कम्पनी की ओर से यात्रा का प्रबन्ध श्रीमती उमा त्रि[illegible] के हाथों था। इन्डोनीसिया की यात्रा पर गई इस पर्यटक मण्डली को सच्चे अर्थों में भारतीय हिन्दुओं का प्रतिनिधि कहा जा सकता है। तीन दिन बैंकाक तथा पटाया का परि-भ्रमण कर २५ सितम्बर १९८४ की रात के ९ बजे हम जकार्ता पहुँचे। जकार्ता जावा का सबसे बड़ा नगर है, और इन्डोनीसिया की राजधानी है। उसकी जनसंख्या ७५ लाख से भी अधिक है। शान शौकत और सांस्कृतिक पैमाने में वह किसी भी आधुनिक नगर से पीछे नहीं है। जकार्ता की भूमि पर पर रखते ही मुझे राजा पूर्ण वर्मा का ध्यान आया जो छठी सदी में इस प्रदेश का शासक था उस समय इस नगरी का नाम जकार्ता न होकर तारूम था। राजा पूर्ण वर्मा ने वहां एक नहर का निर्माण कराया था, जिसका नाम गोमती था। चन्द्रभागा नाम की एक नहर वहां पहले से विद्यमान थी, जिसे पूर्ण वर्मा के पिता राजा धिराज ने बनवाया था। गोमती नहर के निर्माण के पूरा हो जाने पर राजा पूर्ण वर्मा ने एक हजार गौवें ब्राह्मणों को दक्षिणा में प्रदान की थीं। मैं तारूम नगरी के प्राचीन शिला-लेखों के स्मरण में मग्न था कि नमस्ते शब्द सुनकर मेरा ध्यान भंग हुआ। सामने देखा, तो इन्डोनी-सिया के पालियामेंट के हिन्दू सदस्य श्री पुण्यात्मज हमारा स्वागत करने के लिये खड़े थे। भारत से आये इतने विद्वानों को अपने देश में देखकर उन्होंने प्रसन्नता प्रकट की, और अगले दिन का कार्यक्रम निर्धारित कर हम अपने होटल में चले गये। जकार्ता में हमने बहुत कुछ देखा, पर ६५ एकड़ के विस्तृत क्षेत्र में निर्मित लघु इन्डोनीसिया ने हमें विशेष रूप से आकृष्ट किया।

इन्डोनीसिया का निर्माण बहुत से छोटे बड़े द्वीपों से मिलकर हुआ है। इनके निवासियों की सभ्यता संस्कृति, रहन सहन तथा खान पान आदि में बहुत अन्तर है। लघु इन्डोनीसिया में विविध द्वीपों की संस्कृति को सजीव रूप से प्रस्तुत किया गया है। जावा, बाली, सुमात्रा, कलिमन्थन (बोर्नियो) आदि सभी द्वीपों के लिये उसी शैली के भवन बनाये गये हैं। उन्हीं वस्त्रों को धारण किये हुए नर नारी वहां रखे गये हैं, और उसी प्रकार के भोजन आदि की वहां व्यवस्था की गई है, जैसे कि उन द्वीपों में यथार्थ में पाये जाते हैं। उनके प्राकृतिक दृश्य भी वास्तविकता के अनुरूप हैं। मिनी इण्डोनीसिया का अवलोकन कर सारे देश का यथार्थ स्वरूप आंखों के सामने प्रकट हो जाता है।

क्रमशः

शोक समाचार

आर्यसमाज पेटवाड़ जिला हिसार के प्रधान चौ० कालूराम आर्य का २८ अक्तूबर ८४ को स्वर्गवास हो गया। आपकी आयु लगभग ७५ वर्ष थी और वे काफी समय से बीमार थे। उन्होंने अपने ग्राम तथा निकट के क्षेत्र में आर्यसमाज के कार्यों में बढ चढ कर भाग लिया।

परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

रणजीतसिंह
सभा मन्त्री

सामाजिक बुराईयों के विरोध में आर्य समाज के प्रचार हेतु जनजागरण यात्रा

धर्मदेव विद्यार्थी एम० ए०, बी० एड० कुरुक्षेत्र

(गतांक से आगे)

३-१०-८४ को हमारा काफिला सायं को गांव में पहुँचा जहां यज्ञ पर भारी भीड़ में भाई उमेदसिंह जी का यज्ञोपवीत के विषय में भाषण हुआ। स्वामी रुद्रवेश जी की प्रेरणा से बीसियों युवकों ने यज्ञोपवीत लिये। धर्मदेव विद्यार्थी के आह्वान पर यहां विधिवत आर्यसमाज का चुनाव कर आर्यसमाज व आर्यवीर दल का गठन कर दिया गया। यहां से १० युवक हमारे जत्थे में मिल गये। आर्य स्कूल पुण्डरी के १० युवक भी हमारे जत्थे में थे, वे अब वापस चले गये। दोपहर को रसीना गांव में प्रचार हुआ जहां प्रो० भागसिंह आर्य, बिशनसिंह जी, स्वामी रुद्रवेश जी के भजन हुए। यहां का समस्त प्रबन्ध गांव के सरपंच व नवनिर्वाचित आर्यसमाज के प्रधान चौ० हीरासिंह जी ने किया।

रात्रि को बरसली गांव में पहुँचे जहां गांववासियों ने समुचित व्यवस्था कर दी और रात्रि को होने वाले जलसे में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता वेदसुमन वेदालंकार करनाल से एक मेटाडोर भरकर पहुंचे उन्होंने ग्रामवासियों से करनाल शताब्दी में भाग लेने की अपील की।

४-१०-८४ को प्रातः चौ० परमालसिंह के ट्रैक्टर में सामान रख कर हमारा काफिला गोन्दर गांव की ओर चला परन्तु दुर्भाग्य से नोसंग गांव में एक कटड़ा ट्रैक्टर के नीचे आ गया जिससे एक भयंकर बाधा उत्पन्न हुई फिर भी चौ० परमालसिंह जी की सहायता से हम क्षमा याचना कर तथा कटड़े का मूल्य देकर आगे बढ़े तो निराशा सी आने लगी जिससे हमें गोन्दर पहुँचने में देर हो गई। गोन्दर आर्यसमाजियों का गांव है वहां सुबह से ही सारा गांव वालों की इन्तजार में भारी भीड़ एकत्रित थी। उनका उत्साह व प्रबन्ध देखकर सब में उत्साह भर गया। यहां कुरुक्षेत्र के सुयोग्य आचार्य श्री देवव्रत जी ने पहुंचकर हम सबको उत्साहित किया। यज्ञ पर अनेकों युवकों ने अपनी बुराइयां त्यागकर यज्ञोपवीत धारण किये। चौ० मोलड़सिंह और शिशुपाल जी आदि की सुन्दर व्यवस्था देखकर लगा कि आर्यसमाज का सुनहरी युग लौटाया जा सकता है। यहां पर धौमंद के वकील भाई शौसिंह जी पहुंचे थे। प्रसन्नता पूर्वक हमें अपने गांव ले चले, अब तक रास्ते में जहां जहां भी शराब के ठेके थे। उन सबके सामने तब तक प्रदर्शन किया जाता था जब तक ठेके वाला ठेका बन्द नहीं करता था। यहां भी ऐसा ही किया गया। धोमंद गांव में दोपहर को भारी जलसा हुआ जहां सरपंच महोदय और वकील शौसिंह ने सब व्यवस्था सम्भाली।

इसके बाद दादुपुर के योग प्रदर्शनकारी ब्र० रामस्वरूप जी अपने गांव दादुपुर लेकर पहुँचे जहां आर्यसमाज के अधिकारियों ने सब व्यवस्था कर दी। रात को करनाल से स्वामी सच्चिदानन्द जी और शिक्षक धर्मपाल जी पधारे जहां आचार्य देवव्रत शास्त्री का सारगर्भित व्याख्यान सुनकर जनता भावातिरेक से भरकर जय जय कार करने लगी।

५-१०-८४ को प्रातः एक ट्रैक्टर एक फोरव्हीलर तथा साईकिलों का विशाल जलूस दादुपुर से चलकर जब करनाल पहुँचा तो करनाल की जनता आश्चर्य से देवदयानन्द की महिमा को निहारने लगी। करनाल के सब छोटे बड़े बाजारों में झूमता गाता जब ये जलुस गुजरता तो खड़े हुए लोग दयानन्द की जय जयकार करने लगते। स्वामी रुद्रवेश और आचार्य देवव्रत का का जोश देखते ही बनता था। सारी यात्रा में हजारों युवकों के आर्यसमाज में आने की प्रबल आशा दिखाई दी। शताब्दी समारोह के पण्डाल में एक अजब ही उत्साह व भावपूर्ण समा बना। जय जयकार के नारों से धरती झूम उठी। इस यात्रा ने यह सिद्ध कर दिया कि अगर आर्य नेता अपने सब छोटे बड़े मतभेद भुलाकर एक हो जायें तो वह दिन दूर नहीं जब शीघ्र ही दयानन्द के आदर्शों पर चलकर वैदिक आर्य राष्ट्र का निर्माण सम्भव होगा, क्योंकि आज भी आर्यसमाज के नाम पर धन जन की कमी नहीं है। आवश्यकता केवल निस्वार्थ कार्यकर्त्ताओं की है। ज्ञातव्य है कि गत वर्ष भी जिला कुरुक्षेत्र में ऐसी ही ५० युवकों की प्रचार यात्रा धूमधाम से निकाली गई थी, परन्तु यह यात्रा उससे कहीं अधिक सफल रही जिससे कुरुक्षेत्र जिला में आर्यसमाज की उन्नति की अधिक आशा बनी है।

दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर के भजनोपदेशक विभाग में प्रवेश

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि श्री पन्नालाल जी पीयूष संगीताचार्य के आचार्यत्व में आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा की ओर से दयानन्द उपदेशक विद्यालय यमुनानगर में संगीत (भजनोपदेशक) का शिक्षण शीघ्र आरम्भ किया जा रहा है। अतः इच्छुक व्यक्ति जो वैदिक धर्म प्रचार में रुचि रखते हों वे अपना प्रार्थना पत्र "मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा, दयानन्दमठ, रोहतक" के पते पर शीघ्र भेजें।

प्रत्याशी की आयु १६ से ३० वर्ष के बीच में होनी चाहिए।

शिक्षा—संस्कृत विषय के साथ हाई स्कूल और उसके समकक्ष होनी चाहिये।

चयन के उपरान्त प्रविष्ट किये जाने वाले छात्रों को भोजन तथा आवास की निःशुल्क सुविधा प्रदान की जायेगी।

प्रार्थना पत्र भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर १९८४ है।

रणजीतसिंह
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरयाणा
दयानन्द मठ, रोहतक—१२४००१

(पृष्ठ १ का शेष)

आज हमारे सामने अपराध प्रतिदिन बढ़ रहे हैं। ऐसे जघन्य अपराध जिनकी गिनती नही, कोई सीमा नही नित्य प्रति नए नए अपराध पनप रहे हैं, मगर उनकी रोकथाम के लिए कोई समुचित एवं क्रियात्मक पग नही उठाया जा रहा है, जिसके कारण दसों दिशाओं से भान्ति-२ का निनाद उठ रहा है। मानव जीवन भेड़ बकरी के जीवन से भी सस्ता हो गया है।

"हिन्दुस्तान टाइम्स" दिनांक २५-७-८४ को एक पालीटेशियन साहब खुद मान रहे हैं कि आज का पालीटिक्स (राजनीति) सच्चाई को मानने से इन्कारी है। विद्या कुछ और है इल्म कुछ और तथा अक्ल भी कुछ और। कानून भी कुछ और ही अपनी स्थिति रखता है। प्राचीन काल में जो विद्वान् थे, वही व्यवस्थापक भी थे। वही गवाह भी थे और उस्ताद भी थे। मगर हब्शी लोग ही एक ऐसा सम्प्रदाय था, जो पढ़ाई लिखाई को अपने दिल और दिमाग में जगह नहीं देता था, किन्तु वह इखलाक (नैतिकता) का बड़ी सख्ती के साथ पालन करता था। आज जो नैतिकता एव सदाचार के सरक्षक थे, शनैः शनैः लुप्त प्राय होते जा रहे हैं। इसलिये बार बार प्रार्थना कर रहा हूं कि सम्भल कर बढ़। सम्भल कर विचार करें। सम्भल के ही अपने कदम उठाएं। उस परम पिता को साक्षी (हाजिर नाजिर) बनाकर अपनी विद्या और अनुभव को स्थान दें। कहीं तो बाबा कुछ विचारें और फिर आज न तो लड़की की, न मां की, न ही पिता की इज्जत सुरक्षित है। धर्म, कर्म, दया, पुरानी आदर्श परम्पराए चौराहे पर दम तोड़ रही हैं। समाचार पत्र भी बढ़ रहे और अपराध भी उतनी ही तीव्रगति से बढ़ रहे हैं। अपराधों की संख्या बढ रही है। पुलिस और सरकार स्वयं गर्दिश में है। सच्चाई का नाम नही। अपनी जिन्दगी में केवल कमी है चरित्र की, भगवान् से डर की। सरकार क्या कर सकती है? जब तक हम खुद अपने दामन में नही झांकते। खुद ही अपने ही आश्रय दाता नहीं बनते। अपने धर्म ईमान के संरक्षक नहीं होते। अपने कर्मों को खुद नहीं तोलते और जायजा लेते।

क्रमशः

वेदों का डंका

टेक—वेदों का डंका बजा दिया ऋषि दयानन्द ने

सब भारतवासी सोवें थे, उन्हें हाथ पकड़कर उठा दिया
जो जाति के अभिमानी थे, उनको नीचा दिखा दिया
जिनको शूद्र बतलाते थे, ब्राह्मण और क्षत्री बना दिया
स्त्रियों को नहीं पढ़ावें थे, कन्या विद्यालय खुला दिया
जो मुफ्तो माल उड़ावें थे, अब उनको काम पै लगा दिया
सब ईसाई यवन घबराये, हिन्दुओं का हाजमा बढ़ा दिया
घर घर में डैरूं बाजें थे, भक्तों का कूदना छुड़ा दिया
कही पोप बैठते वरण में, गरुड़ ठिकाने धरा दिया
कही विधवा गर्भ कढावें थीं, उनका पुनर्विवाह रचा दिया
कहीं पोप मोल जप बेचें थे, अब गायत्री को जपा दिया
सब मिलन लगे भारतवासी, इस फूट आग को बुझा दिया
'नित्यानन्द' आल्हा गाया करते, आर्यों का भजनी बना दिया

आर्यप्रतिनिधि सभा हरयाणा के लिए मुद्रक और प्रकाशक वेदव्रत शास्त्री द्वारा आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, रोहतक में छपवाकर सर्वहितकारी कार्यालय पं० जगदेवसिंह सिद्धान्ती भवन, दयानन्दमठ, रोहतक से प्रकाशित।